श्री गुरु ग्रंथ साहिब

(मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद)

तीसरी सैंची

डॉ० जोध सिंह

श्री गुरु ग्रंथ साहिब

(मूल पाठ एवं हिन्दी अनुवाद)

तीसरी सैंची

डॉ. जोध सिंह
प्रोफैसर, सिक्ख धर्म एवं दर्शन
मैंवर, इंडियन कौंसिल ऑफ फिलासोफीकल रिसर्च (ICPR)
मुख्य सम्पादक, सिक्ख धर्म विश्वकोष
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला (पंजाब)

द सिक्ख हैरीटेज पब्लीकेशन्स,
पटियाला – 147 002

प्रकाशकः

द सिक्ख हैरीटेज पब्लीकेशन्स

12 बसन्त विहार (पीछे हेम कुंट पम्प), सरहिन्द रोड, पटियाला–147 002

टैलीफोन: 0175-2353102, 98159-14691

प्रथम संस्करण : 2003

द्वितीय संस्करण : 2006

तृतीय संस्करण : 2011

चार जिल्दों का पूरा सैट : 2100 रुपये

मुद्रक

दी डॉन प्रैस,

कटड़ा शेर सिंह, अमृतसर।

टैलीफोन: 2541312, 2554735

१ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि

राग–सूची

सैंची पहली

सैंची दूसरी

सैंची तीसरी

सैंची चौथी

विशेष आभार

परम पिता परमात्मा के प्रति मैं आभारी हूँ जिसने यह अनुवाद कार्य मुझसे कराया । मैं विशेष आभारी हूँ

सरदार राजिन्दर सिंह चाहल
सरदारनी जोगिन्दर कौर चाहल | M/s J.K. Diesels Dhanbad
एवं सम्पूर्ण चाहल परिवार का

जिन्होंने इस अनुवाद कार्य को पाठकों तक पहुँचाने के लिए सभी साधन जुटाए और मेरी मेहनत को सार्थक बनाने में पूर्ण योगदान दिया ।

समर्पण

अठारहवीं सदी के उन लाखों
शहीद योद्धाओं को
जिन्होंने तत्कालीन शासकों द्वारा
सिक्खों के सिरों की कीमत
निर्धारित कर दिए जाने के बावजूद
सिक्ख स्वरूप का त्याग नहीं किया,
भारत की अस्मिता, सिक्ख नैतिक मूल्यों तथा
गुरु ग्रंथ साहिब के सर्वधर्म समभाव
की प्रखरता की रक्षा के लिए
पूर्ण कर्त्तव्य निष्ठा के साथ
प्राणों की आहुति दी।

सिक्ख पारिभाषिक शब्दावली

1. **अनंद** : आनन्द, परम प्रसन्नता ।
2. **अमर (अम्र)** : हुकुम
3. **अमृतवेला** : रात्रि का चौथा प्रहर अर्थात् भोर ।
4. **अरदास** : विनती, प्रार्थना ।
5. **आदेसु** : प्रणाम ।
6. **करम** : कर्म, कृपा ।
7. **कुदरति** : दिव्य शक्ति, प्रकृति, माया ।
8. **गुरमति** : गुरु प्रदत्त विवेक बुद्धि ।
9. **गुरमुख** : गुरु की आज्ञा के अनुरूप कार्यशील बना रहने वाला ।
10. **गुरु/गुरू** : आध्यात्मिक रूप से जीवित बनाए रखने वाला ।
11. **घालि** : परिश्रम, मेहनत ।
12. **धरमसाल** : कर्त्तव्य कर्म का स्थान ।
13. **धरमु** : कर्त्तव्य निष्ठा, उत्तरदायित्व ।
14. **नदरि** : कृपादृष्टि ।
15. **नाम** : सम्पूर्ण अस्तित्व रूप में सर्वत्र व्याप्त दिव्यता ।
16. **पंच** : आध्यात्मिक गुणों के कारण सर्वप्रतिष्ठित व्यक्ति ।
17. **मनमुख** : भ्रष्ट करने वाली मन की वासनाओं के पीछे लगने वाला ।
18. **माई** : माया / माँ ।
19. **रहाउ** : रुको और पूर्व पद का गहन चिन्तन करो ।
20. **राम** : सर्वत्र रमण करने वाला प्रभु ।
21. **वारना (वारिआ)** : बलिहारी जाना, कुर्बान होना ।
22. **विगसणा** : खिलना, विकासशील बने रहना।
23. **सचिआर** : सत्याचरण करने वाला ।
24. **सतसंगति (संगत) साधसंगत** : सद्संगत, जहां ऊंच नीच, छुआछूत भेद मिटाकर सभी मिल बैठकर आध्यात्मिक प्रवचन सुनते हैं और सत्याचरण की ओर अग्रसर होते हैं ।
25. **सती** : त्यागी, दानी ।
26. **सबद** : नाम का क्रियाशील रूप ।
27. **साकत** : एक प्रभु से टूटा हुआ, शाक्त मतावलंबी ।
28. **सिख (सिक्ख)** : सदा सीखने की जिज्ञासा बनाए रखने वाला ।
29. **हउमै** : अहम्, अहंकार ।
30. **हदूरि** : सामने, प्रत्यक्ष, समक्ष ।
31. **हुकमु, हुकुम** : आज्ञा, अंतर्निहित विधान ।

विशेष सूचना

- मूल पाठ के लिप्यन्त्रण का आधारः शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा प्रकाशित श्री गुरु ग्रंथ साहिब ।

- मूल पाठ के शब्दों के अंतिम व्यंजन के साथ लगी ह्रस्व 'इ' (ि) और ह्रस्व 'उ' (ु) मात्रा का उच्चारण नहीं किया जाता है ।



पृष्ठ 728 से 1106 तक का मूलपाट एवं अनुवाद

੧ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु सूही महला १ चउपदे घरु १

भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥ दूधु करम फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥ १ ॥ जपहु त एको नामा ॥ अवरि निराफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै ॥ रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अंम्रितु पावहु ॥ २ ॥ मनु संपटु जितु सत सरि नावणु भावन पाती त्रिपति करे ॥ पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु रवतु रहै ॥ ३ ॥ कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई ॥ भगति हीणु नानकु जनु जंपै हउ सालाही सचा सोई ॥ ४ ॥ १ ॥

सूही महला १ घरु २ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥ अंम्रितु छोडि काहे बिखु खाइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥ होवहु चाकर साचे केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु सभु कोई रवै ॥ बांधनि बांधिआ सभु जगु भवै ॥ २ ॥ सेवा करे सु चाकरु होइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सोइ ॥ ३ ॥ हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

१ ओअंकार सति नामु करता पुरख निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

रागु सूही महला १ चौपदे घरु १

बर्तन को धोकर बैठकर उसे सुगन्धित करो और तब उसे लेकर दूध लेने के लिये जाओ। दूध हमारे कर्म (कर्तव्य) हैं, हमारी सुरति चेतना उस दूध को जमाने के लिये जामन है और इस प्रकार निष्काम भाव से उस कर्म रुपी दूध को जमाओ।। १ ।। केवल एक प्रभु-नाम का ही जाप करो और अन्य सभी कार्यो को निष्फल जानो।। १ ।। रहाउ।। इस मन को मथानी की रस्सी की गोटियाँ बनाकर हाथ से पकड़ लो और फिर इस प्रकार से उस रस्सी को चलाओ कि आलस्य और अविद्या की नींद ना आने पाए। अपनी जीभ से प्रभु-नाम का जाप करते हुए अपने आप का मन्थन करो और इस प्रकार मक्खन रुपी अमृत प्राप्त करो ।। २ ।। मन को प्रभु के निवास का डिब्बा अथवा स्थान बनाओ और उसे सत्संग रुपी नदी में स्नान करते हुए श्रद्धा रुपी पत्र-पुष्प चढ़ाए जाएँ और उस प्रभु को प्रसन्न किया जाना चाहिए। प्राण तक न्यौछावर करके यदि सेवक उस प्रभु की सेवा करे तो ऐसी पूजा से वह मालिक प्रभु के साथ रमण का आनन्द लेता रहेगा।। ३।। कहने वाले तो हे प्रभु, तेरी महिमा कहते चले जाते हैं और कहते कहते ही इस संसार से कूच कर जाते हैं; परन्तु तेरे बराबर अन्य कोई नहीं। भक्ति से विहीन दास नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मैं तुझ सच्चे प्रभु का गुणानुवाद ही करता रहूँ ।। ४ ।। १ ।।

सूही महला १ घरु २   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

हे जीव, वह तेरे अन्दर ही बसता है और कभी भी तुझसे दूर नहीं होता। तू उस अमृत रुपी प्रभु को छोड़कर क्यों विष खाता रहता है।। १ ।। हे मेरे मन, इस प्रकार के ज्ञान का जाप करो कि उस सच्चे प्रभु के सेवक बन जाओ।। १ ।। रहाउ।। ज्ञान ध्यान की बातें तो सभी करते हैं, परन्तु फिर भी बन्धनों में बंधा हुआ सारा संसार भटकता रहता है।। २ ।। जो सेवा करता है वास्तव में उसे ही सेवक कहा जाता है और वही यह जानता है कि वह प्रभु जल, स्थल तथा अन्तरिक्ष में सब ओर व्याप्त है।। ३ ।। हमें यह मानना चाहिये कि न तो केवल हम ही अच्छे हैं और ना ही कोई दूसरा बुरा है। नानक विनती करता है कि वह प्रभु ही जीव को पार उतारता है अन्यथा व्यक्ति स्वयं तो कभी भी पार नहीं उतर सकता।। ४ ।। १ ।। २ ।।

सूही महला १ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥ धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥ १ ॥ सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥ ढठीआ कंमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥ २ ॥ बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंन्हि ॥ घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि ॥ ३ ॥ सिंमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंन्हि ॥ से फल कंमि न आवन्ही ते गुण मै तनि हंन्हि ॥ ४ ॥ अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥ ५ ॥ चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥ नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥ ६ ॥ १ ॥ ३ ॥ सूही महला १ ॥ जप तप का बंधु बेड़ुला जितु लंघहि वहेला ॥ ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥ १ ॥ तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजन चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥ जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥ २ ॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥ आवा गउणु निवारिआ है साचा सोई ॥ ३ ॥ हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥ गुर बचनी फलु पाइआ सह के अंम्रित बोला ॥ ४ ॥ नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥ हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥ सूही महला १ ॥ जिन कउ भांडै भाउ तिना सवारसी ॥ सूखी करै पसाउ दूख विसारसी ॥ सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥ १ ॥ तिन्हा मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ ॥ अंम्रितु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥ चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥ २ ॥ जा कउ महलु हजूरि दूजे निवै किसु ॥ दरि दरवाणी नाहि मूले पुछ तिसु ॥ छुटै ता कै बोलि साहिब नदरि जिसु ॥ ३ ॥ घले आणे आपि जिसु नाही दूजा मतै कोइ ॥ ढाहि उसारे साजि जाणै सभ सोइ ॥ नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥

सूही महला १ घरु ६ १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

काँसे की धातु सफेद और चमकीली होती है, परन्तु यदि उसे रगड़ा जाए तो वह काली स्याही वाली हो जाती है। उसे बेशक सैकड़ों बार धोया जाए परन्तु उसकी कालिख अर्थात जूठन दूर नहीं होती।। १।। सज्जन व्यक्ति तो वही होते हैं जो जहाँ भी जाया जाए वहीं सच्चे साथी बनकर साथ चलते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों से तो जहाँ भी लेखा-जोखा माँगा जाए वे सब कुछ देने के लिये सदैव तैयार दिखाई देते रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। बड़े बड़े मकान, मण्डप और महल जिन पर बाहर सुन्दर चित्रकारी बनी हो जब वे गिर जाते हैं तो अन्दर से खाली होने के कारण किसी भी काम नहीं आते हैं अर्थात बाहर की भव्यता अन्दरूनी खोखलेपन को नहीं ढक सकती।। २ ।। बगुलों के सफेद वस्त्र (पंख) होते हैं और वे तीर्थों के सरोवरों में निवास भी करते हैं, परन्तु वे अपनी चोंच में दबाकर जीवों को खाते रहते हैं और ऐसे सफेदपोश बगुला भक्तों को निर्दोष नहीं कहा जा सकता ।। ३ ।। मेरा शरीर तो सिम्बल के वृक्ष जैसा है जो बाहर से बहुत बढ़िया दिखाई देता है और उसे देखकर लोग धोखा खा जाते हैं परन्तु इस वृक्ष के फल किसी काम नहीं आते और वास्तव में ऐसे ही दिखावे के गुण मेरे शरीर में भी हैं।। ४ ।। अंधे व्यक्ति ने जीवन का बोझ उठाया हुआ है लेकिंन उपर नीचे जाने वाले रास्ता बहुत ही लम्बा है। आँखों से रास्ता टटोलने पर भी वह रास्ता दिखाई नहीं देता तो मैं भला किस प्रकार पहाड़ पर चढ़कर पार उतरूं।। ५।। प्रभु के नाम के बिना अन्य सेवाए नेकियाँ और चतुराईयाँ भला किस काम की है। हे नानक, तू प्रभु-नाम का सुमिरन कर ताकि साँसारिक बन्धनों में तुझ बंधे हुए को छुटकारा मिल जाए॥६ ॥१॥३॥ सूही मः १ ।। तू जाप और चिन्तन का बेड़ा बना ले जिससे तू जल्दी ही पार उतर जाएगा। तेरा रास्ता इतना आसान हो जाएगा और तुझे ऐसा लगेगा कि जैसे विषय विकारों का समुद्र तो है ही नहीं और यदि वह होगा भी तो उसमें लहरों की उछल कूद नहीं होगी।। १ ।। हे प्रभु, तेरा एक नाम ही मजीठी रंग है जिसके साथ मेरे मन का चोला रंगा हुआ है और सदैव रंगा रहने वाला बन गया है।। १ ।। रहाउ।। सभी भले लोग अपने प्यारे प्रभु की ओर चल निकले हैं। उससे मेल कैसे होगा। वास्तव में जिसके पल्ले गुणों की गठरी होगी वही उसे मिल सकेगा।। २ ।। यदि कोई वास्तव में उस प्रभु से मिल जाए तो वह फिर कभी नहीं बिछुड़ता। वही सच्चा प्रभु है जिसने मेरे आवागमन को समाप्त कर दिया है।। ३ ।। जिसने अंहकार को मारकर दूर कर दिया है उसी ने ही वास्तव में पति परमेश्वर को मिलने के लिए इस चोले की सिलाई की है। उसी को ही गुरु के उपदेश के माध्यम से प्रभु के मीठे वचन फलस्वरूप प्राप्त हुए हैं॥४॥ नानक कहता है कि हे सत्संगी सहेलियो, वह पति प्यारा भी है और खरा भी है। वही हमारा सच्चा मालिक है और हम उसी पति प्रभु की दासियाँ हैं।। ५।। २ ।। ४ ।। सूही महला १।। जिनके पास प्रेम का बर्तन है प्रभु उन्हीं के काम संवारता है। उन्हीं को वह सुख देता है और उनके दुख दूर करता है। उन्हें अब कोई भय नहीं रहता और उन्हें वह शीघ्र पार उतार देता है।। १।। जिनके भाग्य में लिखा है उन्हें तो गुरु स्वयं आकर मिलता है और अमृत रुपी प्रभु-नाम की शिक्षा देता है। जो सच्चे गुरु के अनुरूप चलते हैं उन्हें भिक्षा माँगने के लिये इधर उधर नहीं जाना पड़ता।। २ ।। जिसका ठिकाना प्रभु के सामने ही है वह भला किसी दूसरे के सामने क्यों झुकेगा। प्रभु द्वार पर भी उसे बिल्कुल ही कोई टोकने वाला नहीं होता। जिस पर मालिक की कृपा दृष्टि हो जाती है उसके बोलने से ही व्यक्ति बन्धन मुक्त हो जाते हैं।। ३ ।। हमें भेजने और बुलाने वाला वह स्वयं ही है और वह किसी की सलाह नहीं लेता। वह स्वयं ही सबको बनाता और गिराता है तथा सबको ही जानता है। हे नानक, उसके नाम से ही दान मिलता है और उसकी कृपा दृष्टि ही कर्म करवाती है।।

४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ सूही महला १ ॥ भांडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥ भांडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥ गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥ मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥ मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥ जेहे करम कमाइ तेहा होइसी ॥ अम्रितु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥ चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा वाइसी ॥ माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥ नानक आपि निहाल सभि कुल तारसी ॥ १ ॥ ४ ॥ ६ ॥ सूही महला १ ॥ जोगी होवै जोगवै भोगी होवै खाइ ॥ तपीआ होवै तपु करे तीरथि मलि मलि नाइ ॥ १ ॥ तेरा सदड़ा सुणीजै भाई जे को बहै अलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सु खाइ ॥ अगै पुछ न होवई जे सणु नीसाणै जाइ ॥ २ ॥ तैसो जैसा काढीऐ जैसी कार कमाइ ॥ जो दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाइ ॥ ३ ॥ इहु तनु वेची बै करी जे को लए विकाइ ॥ नानक कंमि न आवई जितु तनि नाही सचा नाउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

सूही महला १ घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥ जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ १ ॥ गली जोगु न होई ॥ एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥ जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईऐ ॥ निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही परचा पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ ३ ॥ नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥ वाजे बाझहु सिंङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति तउ पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ सूही महला १ ॥ कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा

४ ।। ३ ।। ५।। सूही महला १।। शरीर रूपी वही बर्तन अच्छा है जो उसे अच्छा लगता है। जो बर्तन बहुत मैला हो जाए वह धोने से भी ठीक नहीं होता। गुरु के द्वार पर पहुँचने से ही जीव को सूझ बुद्धि प्राप्त होती है और इस द्वार पर पहुँच कर ही शरीर रुपी बर्तन को धोने से वह स्वच्छ होता है। मैले और अच्छे का विचार भी वह स्वयं ही समझाता है और किसी को यह भी नहीं मान लेना चाहिए कि उसे आगे जाकर जरूर ही अच्छा स्थान प्राप्त हो जाएगा अर्थात कर्मो के फलों का निर्णय व्यक्ति स्वयं नहीं कर सकता केवल परमात्मा ही करता है। वास्तव में व्यक्ति जैसे कर्म करेगा वह वैसा ही बन जाएगा। प्रभु का अमृत रूपी नाम वह स्वयं ही देता है और जिसे वह देता है वह अपने जीवन को सँवार कर सम्मान पूर्वक अपनी प्रसिद्धी का डंका बजाते हुए यहाँ से जाता है। उसका डंका मानव लोक तो क्या तीनों लोकों में ही सुनाई देता है। हे नानक, वह स्वयं तो निहाल होता ही है अपने सम्पूर्ण कुल का भी उद्धार कर देता है।। १ ।। ४ ।। ६ ।। योगी योगाभ्यास करता है और भोगी खाता पीता रहता है। इसी प्रकार तपस्वी तप साधना करता है और मल-मल कर तीर्थ स्नान करता है।। १ ।। हे मेरे प्रभु, मैं तो तेरा संदेश ही सुनना चाहता हूँ यदि कोई मुझे बैठकर सुना सके ।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति जो बोता है वही काटता है और जैसी कमाई करता है उसी को खाता है। यदि जीव को मेरे प्रभु के नाम का चिन्ह प्राप्त हो जाए तो आगे जाने पर फिर उसकी और जाँच पड़ताल नहीं होती।। २ ।। व्यक्ति जिस प्रकार का आचरण करता है उसे उसी प्रकार का समझा जाता है। जिस श्वास के साथ वह प्रभु याद नहीं आता वास्तव में वह श्वास व्यर्थ ही जाता है।। ३ ।। यदि मेरे शरीर का कोई खरीददार हो तो मैं तो उसे बेचने को तैयार हूँ क्योंकि हे नानक, जिस शरीर में प्रभु का सच्चा नाम नहीं है वह किसी काम का नहीं है।। ४ ।। ५ ।। ७।।

सूही महला १ घरु ७   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

योग ना तो गुदड़ी में है ना डंडे में है और ना ही भभूत लगाने में है। योग ना तो मुद्राओं में है, न सिर मुँडाने में है और ना ही सिंगियाँ बजाने में है। योग की युक्ति तो पाई जा सकती है यदि व्यक्ति कालिमा से भरे इस संसार में रहता हुआ भी साफ और शुद्ध बना रह सके।। १ ।। केवल बातें बनाने से ही योग नहीं होता। जो सबको समान समझते हुए एक ही दृष्टि से देखने वाला होता है वास्तव में उसे ही योगी कहा जाता है।। १ ।। रहाउ।। योग ना तो बाहर शमशान में होता है और केवल समाधि लगाने को भी योग नहीं कहा जाता। देश-देशान्तरों में भटकते रहने को भी योग नहीं कहते और न ही तीर्थों पर स्नान करने को योग कहा जाता है। अंजन रूपी इस संसार में रहते हुए भी यदि निरंजन बन कर रहा जा सके तो वास्तव में योग की युक्ति प्राप्त होती है।। ३ ।। हे नानक, विषय विकारों की ओर से मरकर जीवित रहना वास्तव में योग है जिसकी साधना की जानी चाहिए। वाद्य के बिना ही यदि सिंगी बजती रहे अर्थात प्रभु नाम की धुन अन्तर्मन में चलती रहे तभी निर्भय पद को प्राप्त किया जाता है। अंजन के साथ रहते हुए निरंजन बनकर रहा जाए तो वास्तव में योग की युक्ति प्राप्त होती है।। ४ ।। १।। ८ ।। सूही महला १ ।। हे प्रभु, तेरे लिये कौन सी तराज़ू, कौन सा तौलने वाला और तुझे जानने वाला कौन सा दुकानदार बुलाया जाए। मैं किसे गुरु बनाऊँ और किससे उपदेश लूं और किसको तेरा मूल्य आँकने के लिये कहूँ अर्थात कोई भी तुझे जानने में समर्थ नहीं है।। १।।

॥ १ ॥ मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥ ३ ॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥

रागु सूही महला ४ घरु १   १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि राम नामु आराधिआ गुर सबदि गुरू गुर के ॥ सभि इछा मनि तनि पूरीआ सभु चूका डरु जम के ॥ १ ॥ मेरे मन गुण गावहु राम नाम हरि के ॥ गुरि तुठै मनु परबोधिआ हरि पीआ रसु गटके ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगति ऊतम सतिगुर केरी गुन गावै हरि प्रभ के ॥ हरि किरपा धारि मेलहु सतसंगति हम धोवह पग जन के ॥ २ ॥ राम नामु सभु है राम नामा रसु गुरमति रसु रसके ॥ हरि अंम्रितु हरि जलु पाइआ सभ लाथी तिस तिस के ॥ ३ ॥ हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के ॥ जन नानक नामु परिओ गुर चेला गुर राखहु लाज जन के ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि हरि नामु भजिओ पुरखोतमु सभि बिनसे दालद दलघा ॥ भउ जनम मरणा मेटिओ गुर सबदी हरि असथिरु सेवि सुखि समघा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम अति पिरघा ॥ मै मनु तनु अरपि धरिओ गुर आगै सिरु वेचि लीओ मुलि महघा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति राजे रंग रस माणहि बिनु नावै पकड़ि खड़े सभि कलघा ॥ धरम राइ सिरि डंडु लगाना फिरि पछुताने हथ फलघा ॥ २ ॥ हरि राखु राखु जन किरम तुमारे सरणागति पुरख प्रतिपलघा ॥ दरसनु संत देहु सुखु पावै प्रभ लोच पूरि जनु तुमघा ॥ ३ ॥ तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मोकउ कीजै दानु हरि निमघा ॥ जन नानक नामु मिलै सुखु पावै हम नाम विटहु सद घुमघा ॥ ४ ॥ २ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥ गुरि तुठै हरि रंगु

।। १।। हे मेरे प्रभु, तेरे ओर छोर को नहीं जाना जा सकता। तू जल, स्थल और अन्तरिक्ष में भरपूर रूप से व्याप्त है और तू ही सबमें समाया हुआ है।। १।। रहाउ।। मन को तो तराज़ु बनाया जाए और चित्त को तौलने वाला बनाया जाए। तेरी सेवा ही मेरा दुकानदार हो, हृदय के अन्दर ही मैं तेरी परख करता रहूँ और इस प्रकार अपने चित्त को शान्त बनाए रखूं।। २ ।। वास्तव में वह प्रभु स्वयं ही तराजू के बीचों बीच बना हुआ काँटा है, वह स्वयं ही तौल है और स्वयं ही अपने आप को तौलने वाला है। वह स्वयं ही देखता, अपने आपको जानता तथा स्वयं ही बहुत बड़ा व्यापारी है।। ३।। मेरा अंधा मन बहुत ही नीच और बेगाना है। यह क्षण भर के लिये भी टिकता नहीं। नानक तो ऐसे मन की संगत में रहता है फिर भला यह मूर्ख कैसे उस प्रभु को प्राप्त कर सकता है।। ४।। २।। ६।।

रागु सूही महला ४ घरु १   १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि।।

गुरुओं के गुरु शब्द-गुरु के माध्यम से मेरे मन ने प्रभु-नाम की आराधना की। मेरे तन मन की सभी इच्छाएं पूरी हो गई और मौत का भय समाप्त हो गया।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु के नाम का गुणगान करो। गुरु के प्रसन्न होने पर मेरा मन प्रबुद्ध (समझदार) हो गया और मैंने प्रभु-प्रेम का रस गटागट पी लिया।। १ ।। रहाउ।। सच्चे गुरु की सत्संगत उत्तम है जिसमें व्यक्ति प्रभु के गुणों का गान करता है। हे प्रभु, कृपा करके हमें सत्संगत से मिला दो ताकि हम सेवकों के चरण धो सकें ।। २ ।। सब ओर प्रभु का नाम ही स्थित है और इसके रस का गुरमति के माध्यम से ही स्वाद चखा जाता है। प्रभु के अमृत रूपी जल को प्राप्त करके मुझ प्यासे की प्यास बुझ गई।। ३।। हमारी जात-पात तो सच्चा गुरु ही है और हमने अपना सिर गुरु को अर्पण कर दिया है। दास नानक का नाम तो हे प्रभु, तुम्हारा चेला पड़ गया है, अब तुम ही इस सेवक की लाज बचाओ।। ४ ।। १ ।। सूही महला ४।। सबसे उत्तम पुरुष प्रभु का नाम सुमिरन मैंने किया है और मेरी दरिद्रता के समूह का नाश हो गया है। शब्द-गुरु के माध्यम से मेरे जन्म मरण का भय मिट गया है और अटल प्रभु का सुमिरन करते हुए हम सुख में लीन हो गए है।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्यारे राम नाम का सुमिरन कर। मैंने मन तन गुरु को अर्पण कर दिया है और प्रभु के नाम को सिर देकर मंहगे भाव प्राप्त किया है।। १ ।। रहाउ।। मनुष्यों के स्वामी राजागण आनन्द का उपभोग करते हैं परन्तु नाम-विहीन होने के कारण सबको काल पकड़े रहता है। धर्मराज ने सिर पर डंडा लगा दिया तब किये हुए कर्मो का फल ही हाथ लगने से लोग पछताते रहते हैं।। २।। हे प्रभु, हम तुम्हारे ही नाचीज़ जीव हैं। तुम ही पालन करने वाले पुरुष हो। हम तेरी ही शरण में आए हैं। हे प्रभु, मैं तुम्हारा दास हूँ। मेरी मनोकामना पूरी करो तथा सन्त पुरुषों के दर्शन कराओ ताकि यह सेवक सुख प्राप्त कर सके।। ३।। तुम बड़े महान, स्वामी, समर्थ पुरुष हो, मुझे एक निमेष मात्र के लिये ही यह दान प्रदान कर दो। दास नानक को तो प्रभु-नाम मिलने से ही सुख प्राप्त होता है और हम तो सदैव प्रभु-नाम पर ही बलिहारी जाते हैं।। ४।। २।। सूही महला ४।। प्रभु का नाम तो प्रभु का प्यार है। यह प्रभु का प्यार तो वास्तव में पक्के मजीठ रंग जैसा है। प्रभु ने प्रसन्न होकर प्रभु का यह रंग

चाड़िआ फिरि बहुड़ि न होवी भंङु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि राम नामि करि रंङु ॥ गुरि तुठै हरि उपदेसिआ हरि भेटिआ राउ निसंङु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुंध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाणा अंङु ॥ हरि प्रभु चिति न आइओ मनि दूजा भाउ सहलंङु ॥ २ ॥ हम मैलु भरे दुहचारीआ हरि राखहु अंगी अंङु ॥ गुरि अंम्रित सरि नवलाइआ सभि लाथे किलविख पंङु ॥ ३ ॥ हरि दीना दीन दइआल प्रभु सतसंगति मेलहु संङु ॥ मिलि संगति हरि रंगु पाइआ जन नानक मनि तनि रंङु ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥ अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥ १ ॥ गिआनी गुर बिनु भगति न होई ॥ कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥ अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइ खुआई ॥ २ ॥ बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसि धावै ॥ हउमै बिआपिआ सबदु न चीन्है फिरि फिरि जूनी आवै ॥ ३ ॥ नानक नदरि करे सो बूझै सो जनु नामु धिआए ॥ गुर परसादी एको बूझै एकसु माहि समाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

सूही महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमति नगरी खोजि खोजाई ॥ हरि हरि नामु पदारथु पाई ॥ १ ॥ मेरै मनि हरि हरि सांति वसाई ॥ तिसना अगनि बुझी खिन अंतरि गुरि मिलिऐ सभ भुख गवाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावा जीवा मेरी माई ॥ सतिगुरि दइआलि गुण नामु द्रिड़ाई ॥ २ ॥ हउ हरि प्रभु पिआरा ढूढि ढूढाई ॥ सतसंगति मिलि हरि रसु पाई ॥ ३ ॥ धुरि मसतकि लेख लिखे हरि पाई ॥ गुरु नानकु तुठा मेलै हरि भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि क्रिपा करे मनि हरि रंगु लाए ॥ गुरमुखि हरि हरि नामि समाए ॥ १ ॥ हरि रंगि राता मनु रंग माणे ॥ सदा अनंदि रहै दिन राती पूरे गुर कै सबदि समाणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रंग कउ लोचै सभु कोई ॥ गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥ २ ॥ मनमुखि मुगधु नरु कोरा होइ

हम पर चढ़ा दिया है और यह ऐसा रंग है जो फिर कभी उतरता नहीं।। १।। हे मेरे मन, प्रभु-नाम में ही रंगा रह अर्थात, इसे ही प्यार करता रह। गुरु ने प्रसन्न होकर जब प्रभु का उपदेश दिया तो निःसंदेह रूप से प्रभु रूपी राजा से हमारा मिलाप हो गया।। १।। रहाउ।। जीव रूपी स्त्री नासमझ और मन के पीछे चलने वाली है, इसलिये बार-बार आना जाना उसके साथ बना रहता है। उसके हृदय में प्रभु की कभी याद नहीं आई क्योंकि उसका मन द्वैतभाव में लगा हुआ है।। २ ।। हम मैल से भरे हुए दुराचारी हैं इसलिये हमारा पक्ष लेने वाले हे प्रभु, हमारी सहायता करके हमारी रक्षा करो। गुरु के माध्यम से हमने अमृत के सरोवर में स्नान किया है और हमारे सभी पाप और विकारों के कीचड़ उतर गए हैं।। ३ ।। हे दीनानाथ दयालु प्रभु, हमें सत्संगत से मिला दो। संगत से मिलकर हमने हरि-रंग प्राप्त किया है और दास नानक का मन तन उसमें रंग गया है।। ४।। ३।। सूही महला ४।। मुँह से तो सदैव हरि हरि करते रहें और यदि सदैव कपटी भी बने रहें तो इस प्रकार हृदय शुद्ध नहीं होगा। व्यक्ति इस प्रकार प्रतिदिन अनेकों कर्म करता है परन्तु सपने में भी उसे सुख नहीं मिल सकता।। १।। ज्ञानवान गुरु के बिना भक्ति नहीं होती। बिल्कुल कोरा बने रहने से कभी भी रंग नहीं चढ़ता बेशक कोई कितना भी इसकी इच्छा क्यों ना करे।। १।। रहाउ।। मनमुख व्यक्ति जप, तप, व्रत और अनेकों प्रकार के संयम करता है परन्तु उसका रोग समाप्त नहीं होता। उसके अन्दर अभिमान का महारोग बना रहता है और वह द्वैतभाव में पड़ा हुआ बर्बाद हो जाता है।। २।। व्यक्ति बाहर तो भला वेश बनाए रखता है परन्तु बहुत सी चतुराईयाँ करने के फलस्वरूप उसका मन दसों दिशाओं में भागता रहता है। अहंकार में लीन ऐसा व्यक्ति शब्द को नहीं पहचानता और बार-बार योनियों में आता रहता है।। ३।। हे नानक, जिस पर प्रभु कृपा दृष्टि करे वही इस रहस्य को बूझता और वही प्रभु के नाम का सुमरिन करता है। गुरु की कृपा से वह एक प्रभु पहचान लेता है और उस एक प्रभु में ही लीन हो जाता है।। ४ ।। ४।।

सूही महला ४ घरु २   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

गुरु की मति के माध्यम से शरीर रूपी नगरी की जब गहरी खोज की गई तो उसी में ही प्रभु-नाम रूपी पदार्थ प्राप्त हो गया।। १।। हे मेरे मन, प्रभु रूपी शान्ति जब अन्दर बसा ली गई तो मेरी तृष्णा की अग्नि क्षण भर में बुझ गई और गुरु से मिलाप होने पर मेरी सारी भूख समाप्त हो गई।। १ ।। रहाउ।। हे मेरी माँ, मैं प्रभु के गुण गाकर ही जीवित बना रहता हूँ। मेरा सच्चा गुरु दयालु है जिसने मुझे प्रभु का नाम और उसके गुणों के बारे में समझाया है।। २।। मैंने प्यारे प्रभु को बहुत खोजा है परन्तु सत्संगत में मिल बैठकर ही मुझे हरि रस प्राप्त हुआ है।। ३ ।। प्रारम्भ से ही मेरे माथे पर लिखे हुए लेखों के अनुसार मैंने प्रभु को पा लिया है। गुरु नानक जब प्रसन्न हो गए तब हे भाई, मेरा प्रभु से मिलाप हो गया।। ४।। १।। ५।। सूही महला ४।। यदि प्रभु कृपा करे तभी यह मन प्रभु के रंग में लीन होता है। गुरमुख बनकर व्यक्ति प्रभु-नाम में ही समा जाता है।। १ ।। प्रभु के रंग में लीन मन उसके रंग का आनन्द पाता रहता है। वह दिन रात आनन्दित बना रहता है और पूर्ण गुरु के शब्द रूपी उपदेश में लीन हो जाता है।। १।। रहाउ।। प्रभु के रंग को तो सभी चाहते हैं परन्तु गुरुमुख बनकर ही वह लाल रंग प्राप्त होता है।। २।। मनमुख व्यक्ति मूर्ख व्यक्ति है जो सदैव कोरा ही बना रहता

॥ जे सउ लोचै रंगु न होवै कोइ ॥ ३ ॥ नदरि करे ता सतिगुरु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि रंगि समावै ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥ सूही महला ४ ॥ जिहवा हरि रसि रही अघाइ ॥ गुरमुखि पीवै सहजि समाइ ॥ १ ॥ हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥ तउ कत अनत सादि लोभाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति रसु राखहु उर धारि ॥ हरि रसि राते रंगि मुरारि ॥ २ ॥ मनमुखि हरि रसु चाखिआ न जाइ ॥ हउमै करै बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ नदरि करे ता हरि रसु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि गुण गावै ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

सूही महला ४ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥ पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥ १ ॥ हरि की अकथ कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥ पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥ २ ॥ नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥ खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥ ३ ॥ जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीरथ तिन तिलकु कढाइ ॥ जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे क्रिपा करे हरि राइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ सूही महला ४ ॥ तिन्ही अंतरि हरि आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु लिलारा ॥ तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अंगु करे मेरा हरि करतारा ॥ १ ॥ हरि हरि धिआइ मन मेरे मन धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुरि भगत जना कउ बखसिआ हरि अंम्रित भगति भंडारा ॥ मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति मुहु कारा ॥ २ ॥ से भगत से सेवका जिना हरि नामु पिआरा ॥ तिन की सेवा ते हरि पाईऐ सिरि निंदक कै पवै छारा ॥ ३ ॥ जिसु घरि विरती सोई जाणै जगत गुर नानक पूछि करहु बीचारा ॥ चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै न पाइओ हरि सेवक भाइ निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥ सूही महला ४ ॥ जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु

है। वह बेशक सैकड़ों बार चाहे तब भी प्रभु रंग उस पर नहीं चढ़ता।। ३।। प्रभु कृपादृष्टि करे तो सच्चा गुरु पाया जाता है और हे नानक, व्यक्ति प्रभु के रस के माध्यम से ही प्रभु के रंग में रंगा जाता है।। ४ ।। २।। ६।। सूही महला ४।। मेरी जीभ प्रभु के रस से सन्तुष्ट हो गई। गुरुमुख व्यक्ति इस रस को सहज भाव में लीन होकर पीता है।। १ ।। हे भाई, यदि सेवक बनकर प्रभु के रस का पान करोगे तो फिर भला तुम कैसे दूसरे स्वादों का लोभ बनाए रख सकते हो।। १ ।। रहाउ।। गुरमत का रस हृदय में धारण करके रखो क्योंकि जो प्रभु के स्वाद में लीन बने हुए हैं वे प्रभु के आनन्द में ही आनन्दित बने रहते हैं।। २ ।। मनमुख व्यक्ति प्रभु के रस को नहीं चख पाता। वह अभिमानी बना रहता है और उसे बहुत अधिक सजा झेलनी पड़ती है।। ३ ।। यदि प्रभु कृपा दृष्टि करे तभी जीव को हरि नाम का रस प्राप्त होता है और हे नानक, हरि के रस के माध्यम से वह प्रभु के गुण गाता रहता है।। ४ ।। ३ ।। ७।।

सूही महला ४ घरु ६   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

तथाकथित नीची जाति वाला प्रभु का जाप करता हुआ उत्तम पदवी पा जाता है। इस बात को यदि जानना हो तो दासी के पुत्र विदुर से पूछो जिसके घर पर कृष्ण जी जाकर रहे थे ।। १ ।। हे प्यारे भाई, प्रभु की अकथनीय कथा को सुनो जिसके सुनने से भ्रम, दुख, भूख आदि सभी समाप्त हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। चमड़े का काम करने वाला रविदास उस प्रभु की स्तुति करता था और क्षण भर के लिए प्रभु की कीर्ति का गुणानुवाद करता था। तथाकथित नीची जाति वाला वह भक्त उत्तम बन गया और चारों वर्णों के लोग उसके चरणों में आ गिरे।। २ ।। नामदेव को लोग छीपा कह कर पुकारते थे परन्तु उसकी प्रीति प्रभु के साथ लग गई। प्रभु ने क्षत्रिय, ब्राह्मण इत्यादि को तो पीठ के पीछे कर लिया परन्तु नामदेव को अपने सामने ही बनाए रखा ।। ३ ।। जितने भी प्रभु के सेवक और भक्त हैं उनके मुख पर अड़सठ तीर्थ स्वयं तिलक लगाते हैं। यदि प्रभु कृपा करे तो दास नानक दिन रात ऐसे सेवकों के दर्शन करता रहेगा।।४ ।।१ ।।८।।सूही महला ४।। जिनके मस्तक पर प्रारम्भ से ही लेख लिखा होता है वे अन्तर्मन में प्रभु का सुमिरन करते रहते हैं। जिनका पक्ष प्रभु स्वयं ले लेता है उनकी भला कोई निन्दा क्या कर सकता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू बार बार उस प्रभु-नाम की आराधना कर क्योंकि प्रभु ही जन्म जन्मान्तरों के सभी दुखों को दूर करने वाला है।। १ ।। रहाउ।। भक्तजनों को प्रभु ने शुरू से ही अमृत भक्ति का भण्डार दिया हुआ है। जो उनकी बराबरी करता है वह मूर्ख है और इस लोक तथा परलोक में उनका मुँह काला होता है।। २ ।। वही भक्त हैं और वही सेवक हैं जिन्हें प्रभु-नाम प्यारा लगता है। उन्हीं की सेवा से प्रभु प्राप्त होता है और निन्दक के सिर पर तो राख ही पड़ती है।। ३ ।। जिस घर में यह बात हो चुकी हो वही जानता है और जगतगुरु नानक से पूछ कर इस तथ्य का चिंतन करो कि गुरु नानक से लेकर चौथे गुरु रामदास जी तक के सेवक परिवारों में किसी को भी ईर्ष्या करने से कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ केवल समर्पण भाव से ही प्रभु पार उतारता है।। ४ ।। २ ।। ९।। सूही महला ४।। प्रभु का जहाँ भी सुमिरन किया जाए वह मित्र बनकर वहीं

सहाई ॥ गुर किरपा ते हरि मनि वसै होरतु बिधि लइआ न जाई ॥ १ ॥ हरि धनु संचीऐ भाई ॥ जि हलति पलति हरि होइ सखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगती संगि हरि धनु खटीऐ होर थै होरतु उपाइ हरि धनु कितै न पाई ॥ हरि रतनै का वापारीआ हरि रतन धनु विहाझे कचै के वापारीए वाकि हरि धनु लइआ न जाई ॥ २ ॥ हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धनै नालि अंम्रित वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई ॥ हरि धनु अंम्रित वेलै वतै का बीजिआ भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई ॥ ३ ॥ हरि धनु निरभउ सदा सदा असथिरु है साचा इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीऐ जमदूतै किसै का गवाइआ न जाई ॥ हरि धन कउ उचका नेड़ि न आवई जमु जागाती डंडु न लगाई ॥ ४ ॥ साकती पाप करि कै बिखिआ धनु संचिआ तिना इक विख नालि न जाई ॥ हलतै विचि साकत दुहेले भए हथहु छुड़कि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगह ढोई न पाई ॥ ५ ॥ इसु हरि धन का साहु हरि आपि है संतहु जिस नो देइ सु हरि धनु लदि चलाई ॥ इसु हरि धनै का तोटा कदे न आवई जन नानक कउ गुरि सोझी पाई ॥ ६ ॥ ३ ॥ १० ॥ सूही महला ४ ॥ जिस नो हरि सुप्रसंनु होइ सो हरि गुणा रवै सो भगतु सो परवानु ॥ तिस की महिमा किआ वरनीऐ जिस कै हिरदै वसिआ हरि पुरखु भगवानु ॥ १ ॥ गोविंद गुण गाईऐ जीउ लाइ सतिगुरू नालि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो सतिगुरू सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईऐ परम निधानु ॥ जो दूजै भाइ साकत कामना अरथि दुरगंध सरेवदे सो निहफल सभु अगिआनु ॥ २ ॥ जिस नो परतीति होवै तिस का गाविआ थाइ पवै सो पावै दरगह मानु ॥ जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे उन का उतरि जाइगा झूठु गुमानु ॥ ३ ॥ जेता जीउ पिंडु सभु तेरा तूं अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥ दासनि दासु कहै जनु नानकु जेहा तूं कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥

सहायता करता है। उस गुरु की कृपा से ही वह प्रभु मन में बसता है अन्य किसी विधि से उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता।। १ ।। हे भाई, प्रभु रूपी धन का संचय करो इसी से इस लोक और परलोक में प्रभु सखा रूप में प्राप्त होगा।। १ ।। रहाउ।। सत्संगत में ही प्रभु-धन कमाया जाता है और इस हरि धन को अन्य किसी भी उपाय से कहीं से भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। प्रभु रूपी रत्न का व्यापारी प्रभु रत्न रूपी धन का ही व्यापार करता है। कच्चा अर्थात निरर्थक सामान का व्यापारी बातचीत में ही लगा रहता है और प्रभु रूपी धन उससे लिया नहीं जाता।। २ ।। प्रभु रूपी धन ही रत्न, जवाहिर और माणिक है और प्रभु धन के साथ ही अमृत बेला में प्रभु की भक्ति में लौ लगाई जाती है। अमृत बेला का बोया हुआ हरि धन भक्त जन खाते और खर्चते रहते हैं परन्तु यह कभी कम नहीं पड़ता। भक्त जनों को इस लोक और परलोक में प्रभु रूपी धन का ही बड़प्पन प्राप्त होता है।। ३ ।। प्रभु रूपी धन सदा स्थिर बना रहने वाला और निर्भय बनाने वाला है और प्रभु रूपी यह सच्चा धन अग्नि, चोर, पानी और यमदूत आदि किसी द्वारा भी नष्ट नहीं किया जा सकता। प्रभु रूपी धन को कोई चोर उचक्का उठा ले जाने के लिये पास भी नहीं आता क्योंकि यम रूप चुंगी लेने वाला उस पर भारी जुर्माना लगाता है।। ४ ।। माया में फंसे हुए व्यक्ति पाप करते हुए विषय विकारों के धन को इकट्ठा करते हैं और उनके साथ यह एक कदम भी नहीं चलता। इस संसार में भी माया के पीछे चलने वाले लोग दुखी होते हैं क्योंकि यह प्रभु रूपी धन उनके हाथ से छिटक गया होता है और आगे ऐसे मनमुख व्यक्ति को प्रभु दरबार में कोई ठौर ठिकाना नहीं मिलता।। ५ ।। हे सन्त जनों, इस प्रभु रूपी धन का मालिक प्रभु स्वयं है वह जिसे यह देता है वह ही प्रभु रूपी धन को लाद कर यहाँ से ले जाता है। इस प्रभु रूपी धन में कभी कमी नहीं आती। इस प्रकार की सूझ दास नानक को गुरु के माध्यम से प्राप्त हुई है।। ६ ।। ३।। १०।। सूही महला ४।। जिस पर प्रभु प्रसन्न होता है वही प्रभु के गुणों का उच्चारण करता है और वही भक्त वास्तव में स्वीकार्य होता है। उसकी महिमा का क्या वर्णन किया जाए जिसके हृदय में सर्वत्र रमण करने वाला प्रभु बस गया है।। १ ।। सच्चे गुरु में ध्यान टिका कर प्रभु के गुणों का गायन किया जाना चाहिए।। १ ।। रहाउ।। वही सच्चा गुरु और उस सच्चे गुरु की सेवा सफल है जिससे सारे सुखों का ख़ज़ाना प्राप्त किया जाता है। द्वैतभाव में लगे हुए अपनी कामनाओं के वशीभूत गंदे विचारों को जो मन में बनाए रखते हैं वे सभी अज्ञानी हैं और उनका जीना निष्फल है। जिसके मन में प्रेम लग जाता है उसी का गुणानुवाद सफल होता है और वही प्रभु दरबार में सम्मान प्राप्त करता है। जो कपटी व्यक्ति प्रेम से विहीन बने रहकर झूठमूठ ही आँखों को बंद किए रहते है उनका झूठा अभिमान एक दिन उतर ही जाता है।। ३ ।। हे अन्तर्यामी सर्वत्र रमण करने वाले प्रभु, मेरे प्राण तथा मेरा शरीर सब तेरे ही हैं। दासों का भी दास सेवक नानक कहता है कि हे प्रभु, जैसा तू कराता है मैं वैसा ही कथन करता हूँ।। ४ ।। ४।। ११ ।।

सूही महला ४ घरु ७ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥ तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु धर सोई ॥ जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥ मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥ २ ॥ विचे धरती विचे पाणी विचि कासट अगनि धरीजै ॥ बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ॥ ३ ॥ हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाए ॥ जिउ धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तिउ नानक साध जना जगतु आणि सभु पैरी पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥ सूही महला ४ ॥ तूं करता सभु किछु आपे जाणहि किआ तुधु पहि आखि सुणाईऐ ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै जेहा को करे तेहा को पाईऐ ॥ १ ॥ मेरे साहिब तूं अंतर की बिधि जाणहि ॥ बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै तुधु भावै तिवै बुलावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु मोहु माइआ सरीरु हरि कीआ विचि देही मानुख भगति कराई ॥ इकना सतिगुरु मेलि सुखु देवहि इकि मनमुखि धंधु पिटाई ॥ २ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का मेरे करते तुधु सभना सिरि लिखिआ लेखु ॥ जेही तूं नदरि करहि तेहा को होवै बिनु नदरी नाही को भेखु ॥ ३ ॥ तेरी वडिआई तूंहै जाणहि सभ तुधनो नित धिआए ॥ जिस नो तुधु भावै तिस नो तूं मेलहि जन नानक सो थाइ पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥ सूही महला ४ ॥ जिन कै अंतरि वसिआ मेरा हरि हरि तिन के सभि रोग गवाए ॥ ते मुकत भए जिन हरि नामु धिआइआ तिन पवितु परम पदु पाए ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन आरोग भए ॥ गुर बचनी जिना जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी विचि हउमै कार कमाई ॥ जिनि कीए तिसहि न चेतहि बपुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई ॥ २ ॥ हउमै रोगि सभु जगतु बिआपिआ

सूही महला ४ घरु ७ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, तू तो गुणों का भण्डार है मैं भला तेरे कौन कौन से गुणों को कहता हुआ तेरे गुणों का गायन करूं। मैं तेरी महिमा का वर्णन नहीं कर सकता क्योंकि तू बहुत ही ऊँचा भगवान है।। १ ।। मेरे लिये तो प्रभु का नाम ही एक आसरा है। हे प्रभु, तुझे जैसे अच्छा लगे, तू मेरी रक्षा कर क्योंकि मेरा तो तेरे बिना दूसरा कोई नहीं है।। १ ।। रहाउ।। हे मेरे स्वामी, मेरा बल और मेरा आसरा तू ही है तथा मेरी अरदास तो तेरे ही सामने है। मेरे लिये अन्य कोई स्थान नहीं है जहाँ पर मैं विनती करूं। मेरा दुख सुख तो सब तेरे ही सामने है।। २ ।। हे प्रभु, पानी और धरती, लकड़ी तथा आग को तू एक दूसरे में ही स्थित किए रहता है। हे प्रभु, बकरी और शेर को भी तू एक ही स्थान पर रख लेता है इसी लिए हे मेरे मन, तू अपने भ्रम दूर करके प्रभु का जाप कर ।। ३।। हे संतजनों, प्रभु का बड़प्पन देखो। वह सम्मानहीन लोगों को ही सम्मान दिलाता है जैसे कि धरती की धूल पैरों के नीचे रहती हुई अन्ततः ऊपर की ओर आती है। इसी तरह हे नानक, साधुजनों के चरणों में भी सारा संसार आन पड़ता है ।। ४ ।। १ ।। १२ ।। सूही महला ४ ।। तुझे क्या कहकर सुनाया जाए क्योंकि तू ही कर्ता है और तू स्वयं ही सब कुछ जानता है। तू सब प्रकार के बुरे भले को जानता है और हे प्रभु, जैसा कोई करता है वैसा ही फल पाता है।। १।। हे मेरे साहिब, तू हमारे अन्तर्मन की हालत जानता है। हमारा बुरा भला तुझे सब पता है, तुझे जैसा अच्छा लगता है वैसे ही हमें अपने पास बुलाता है।। १ ।। रहाउ।। माया मोह से बना यह शरीर प्रभु ने उत्पन किया है और इस देह के माध्यम से ही वह भक्ति करवाता है। कईयों को तू गुरु मिलाकर सुख देता है और कईयों को जो कि मनमुख है तू साँसारिक धंधों में उलझाए रहता है।। २ ।। हे मेरे कर्ता प्रभु, सब कुछ तेरा है और तू ही सबका है। तूने ही सबके मस्तक पर लेख लिखे हैं। जिस प्रकार की दृष्टि तू लोगों पर डालता है वे वैसे ही हो जाते हैं। तेरी इस दृष्टि के बिना कोई किसी प्रकार का वेश नहीं बना सकता।। ३ ।। तेरे बड़प्पन को प्रभु तू ही जानता है और सभी सदैव तेरा ही सुमिरन करते हैं। हे प्रभु, जिसे तू चाहता है उसी को तू मिला लेता है और हे दास नानक, ऐसा ही व्यक्ति उस प्रभु के सामने स्वीकृत होता है।। ४ ।। २।। १३।। सूही महला ४।। जिनके अन्तर्मन में मेरा प्रभु बस गया है उनके सभी रोग दूर हो गए हैं। जिन्होंनें प्रभु-नाम का सुमिरन किया है वे मुक्त हो गये और उनको पवित्र परमपद प्राप्त हो गया है।। १ ।। हे मेरे राम, प्रभु के सेवक सभी रोगों से मुक्त हो गए हैं। गुरु के उपदेश के माध्यम से जिन्होंनें मेरे प्रभु का सुमिरन किया है उनके अहंकारजनित सभी रोग नष्ट हो गए हैं।। १ ।। रहाउ।। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ने तीनों गुणों से ग्रस्त होकर अहंकारी बनकर कार्य किए। जिस प्रभु ने इनकी सृष्टि की है इन बेचारों ने उसका सुमिरन नहीं किया। प्रभु की सूझ तो गुरुमुख बनकर ही प्राप्त होती है।। २ ।। इस सारे संसार में जिनको अहंकार का रोग लगा है

तिन कउ जनम मरण दुखु भारी ॥ गुर परसादी को विरला छूटै तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ ३ ॥ जिनि सिसटि साजी सोई हरि जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक आपे वेखि हरि बिगसै गुरमुखि ब्रहम बीचारो ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥ सूही महला ४ ॥ कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥ आपणा कीता किछू न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥ १ ॥ मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ॥ असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ ॥ जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥ २ ॥ पंच ततु करि तुधु स्रिसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ॥ इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि इकि मनमुखि करहि सि रोवै ॥ ३ ॥ हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २४ ॥

रागु सूही महला ५ घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ नाना रूप भेख दिखलाई ॥ सांगु उतारि थंम्हिओ पासारा ॥ तब एको एकंकारा ॥ १ ॥ कवन रूप द्रिसटिओ बिनसाइओ ॥ कतहि गइओ उहु कत ते आइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥ कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥ बीजु बीजि देखिओ बहु परकारा ॥ फल पाके ते एकंकारा ॥ २ ॥ सहस घटा महि एकु आकासु ॥ घट फूटे ते ओही प्रगासु ॥ भरम लोभ मोह माइआ विकार ॥ भ्रम छूटे ते एकंकार ॥ ३ ॥ ओहु अबिनासी बिनसत नाही ॥ ना को आवै ना को जाही ॥ गुरि पूरै हउमै मलु धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो प्रभ होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जो जनु सेवे तिसु पूरन काज ॥ दास अपुने की राखहु लाज ॥ १ ॥ तेरी सरणि पूरन दइआला ॥ तुझ बिनु कवनु करे प्रतिपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरि ॥ लोक पतीआरै कछू न पाईऐ ॥ साचि

उन्हें जन्म मरण का भारी दुख लगा रहता है। गुरु की कृपा से कोई बिरला ही इस रोग से बचता है और ऐसे सेवक पर मैं बलिहारी जाता हूँ।। ३ ।। जिसने सृष्टि पैदा की है वही प्रभु इसके बारे में जानता है और उसी का ही रूप अपरम्पार है। हे नानक, इस रचना को देख देख कर प्रभु स्वयं ही खुश होता है और इस ब्रह्म विचार को गुरमुख बनकर ही पाया जाता है।। ४।। ३।। १४।। सूही महला ४।। सब कुछ उस प्रभु की रज़ा में ही होता है। हम स्वयं तो तब कुछ करें यदि हममें कुछ करने की शक्ति हो। अपना किया हुआ कुछ नहीं होता और जैसा प्रभु को भाता है वह वैसा ही हमें रखता है।। १ ।। हे प्रभु, सब कुछ तेरे ही वश में है। हम कुछ भी कर सकें ऐसा बल हममें नहीं है। तुझे जैसा अच्छा लगे तू हम पर दया कर।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, यह प्राण और शरीर सब कुछ तूने ही दिया है और तूने ही हमें कार्यों में लगाया हुआ है। जैसा हुकुम तू करता है और जैसा तूने शुरू में लेख लिखा है जीव वैसे ही कर्म करता रहता है।। २ ।। पाँच तत्वों से तूने सारी सृष्टि की रचना की है। यदि कोई कुछ कर सकता हो तो छठा तत्व बना कर दिखाए। कईयों को तो सच्चे गुरु से मिलाकर इस रहस्य को समझा देता है और कईयों को तू मनमुख बना देता है जिससे वे रोते रहते हैं।। ३ ।। प्रभु के बड़प्पन का मैं वर्णन नहीं कर सकता क्योंकि मैं मूर्ख, नासमझ और नीच हूँ। हे मेरे प्रभु, दास नानक का उद्धार कर दे क्योंकि यह अनजान तेरी शरण में पड़ा है।। ४।। ४।। १५।। २४।।

रागु सूही महला ५ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

नट बाजी लगाता है और विभिन्न वेशों के माध्यम से अनेकों रूप दिखाता है। जब वह अपना स्वाँग उतार कर खेल बंद कर देता है तब वह एकंकार रूप में प्रभु रूपी नट ही बाकी रह जाता है अर्थात अपने में से ही प्रभु विभिन्न रूपों वाला संसार पैदा करता है और उसे समेट लेने पर स्वयं ही अकेला बचा रहता है।। १ ।। उसने अनेकों ही रूप दिखाए और उन्हें नष्ट कर दिया है। वह कितनी ही ओर गया और कितनी ही ओर से वापिस आ जाता है।। १ ।। रहाउ।। जल में से अनेकों तरंगे उठती हैं। सोने से विभिन्न रंग रूप वाले आभूषण बनते हैं। इसी तरह अनेकों प्रकार के बीजों को बोकर अर्थात सृष्टि रचना करके वह उसे देखता है। फल जब पक जाते हैं तो उनमें उसी आकार के बीज फिर दिखाई देने लग जाते हैं।। २।। हजारों घड़ों में एक ही आकाश का बिम्ब दिखाई देता है और जब वह घड़े फूट जाते हैं तो आकाश का प्रकाश हमें वैसे का वैसा ही दिखाई देता रहता है। इसी प्रकार भ्रम, मोह, लोभ और माया के विकार बने रहकर अलग-अलग दिखाई देते हैं परन्तु जब हमारा भ्रम छूट जाता है तो वही एक प्रभु एकरस दिखाई देता है।। ३।। वह प्रभु अविनाशी है कभी नष्ट नहीं होता। वह ना कहीं से आता है ना कहीं जाता है। पूर्ण गुरु ने मेरे अहंकार की मैल धो ली है और नानक का कथन है कि मेरी परम गति हो गई है।। ४।। १।। सूही महला ५।। हे प्रभु, जो तू करना चाहता है वही होता है क्योंकि तेरे बिना दूसरा कोई नहीं। जो सेवक तेरा सुमिरन करता है उसके सभी काम पूरे हो जाते हैं। हे प्रभु, तुम अपने दास की लाज रख लो।। १।। हे पूर्ण दयालु प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ और तेरे बिना भला मेरा पालन-पोषण कौन कर सकता है।। १।। रहाउ।। तू जल, स्थल और अन्तरिक्ष में व्याप्त है तथा हे प्रभु, तू दूर नहीं हमारे पास ही बसता है। लोगों को खुश करने में लगे रहने से कुछ हासिल नहीं होता। जब व्यक्ति सत्य में

लगै ता हउमै जाईऐ ॥ २ ॥ जिस नो लाइ लए सो लागै ॥ गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥ दुरमति जाइ परम पदु पाए ॥ गुर परसादी नामु धिआए ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करउ अरदासि ॥ तुधु भावै ता आणहि रासि ॥ करि किरपा अपनी भगती लाइ ॥ जन नानक प्रभु सदा धिआइ ॥ ४ ॥ २ ॥ सूही महला ५ ॥ धनु सोहागनि जो प्रभू पछानै ॥ मानै हुकमु तजै अभिमानै ॥ प्रिअ सिउ राती रलीआ मानै ॥ १ ॥ सुनि सखीए प्रभ मिलण नीसानी ॥ मनु तनु अरपि तजि लाज लोकानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सखी सहेली कउ समझावै ॥ सोई कमावै जो प्रभ भावै ॥ सा सोहागणि अंकि समावै ॥ २ ॥ गरबि गहेली महलु न पावै ॥ फिरि पछुतावै जब रैणि बिहावै ॥ करमहीणि मनमुखि दुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनउ करी जे जाणा दूरि ॥ प्रभु अबिनासी रहिआ भरपूरि ॥ जनु नानकु गावै देखि हदूरि ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूही महला ५ ॥ ग्रिहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥ दस दासी करि दीनी भतारि ॥ सगल समग्री मै घर की जोड़ी ॥ आस पिआसी पिर कउ लोड़ी ॥ १ ॥ कवन कहा गुन कंत पिआरे ॥ सुघड़ सरूप दइआल मुरारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु सीगारु भउ अंजनु पाइआ ॥ अंम्रित नामु तंबोलु मुखि खाइआ ॥ कंगन बसत्र गहने बने सुहावे ॥ धन सभ सुख पावै जां पिरु घरि आवै ॥ २ ॥ गुण कामण करि कंतु रीझाइआ ॥ वसि करि लीना गुरि भरमु चुकाइआ ॥ सभ ते ऊचा मंदरु मेरा ॥ सभ कामणि तिआगी प्रिउ प्रीतमु मेरा ॥ ३ ॥ प्रगटिआ सूरु जोति उजीआरा ॥ सेज विछाई सरध अपारा ॥ नव रंग लालु सेज रावण आइआ ॥ जन नानक पिर धन मिलि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सूही महला ५ ॥ उमकिओ हीउ मिलन प्रभ ताई ॥ खोजत चरिओ देखउ प्रिअ जाई ॥ सुनत सदेसरो प्रिअ ग्रिहि सेज विछाई ॥ भ्रमि भ्रमि आइओ तउ नदरि न पाई ॥ १ ॥ किन बिधि हीअरो धीरै निमानो ॥ मिलु साजन हउ तुझु कुरबानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एका सेज विछी धन कंता ॥ धन सूती पिरु सद जागंता ॥ पीओ मदरो धन मतवंता ॥ धन जागै जे पिरु बोलंता ॥ २ ॥ भई निरासी बहुतु दिन लागे ॥ देस दिसंतर मै सगले

लीन हो जाता है तो उसका अहंकार चला जाता है।। २।। प्रभु जिसे इस मार्ग पर लगाता है वही लगता है और ज्ञान रूपी रत्न उसके अन्तर्मन में प्रकाशित हो उठता है। ऐसे व्यक्ति की दुर्मति चली जाती है और वह परमपद को प्राप्त कर ysk[illegible] x[illegible] dh कृपा से ही वह प्रभु-नाम का सुमिरन करता है।। ३।। मैं दोनों हाथ जोड़कर हे प्रभु, अरदास करता हूँ ; मेरी अरदास यदि तुझे भा जाए तो मेरे सभी काम सँवर जाएँ। हे प्रभु, कृपा करो और अपनी भक्ति में लगा लो ताकि हे प्रभु, दास नानक सदैव तुम्हारा ही सुमिरन करता रहे।। ४ ।। २ ।। सूही महला ५।। वह सुहागिन धन्य है जो प्रभु को पहचानती है और अभिमान को त्याग कर उसके हुकुम को मानती है। प्रियतम के साथ लीन बनी हुई वह आनन्द का उपभोग करती है।। १ ।। हे सखी, तुम प्रभु के मिलाप के संकेत के बारे में सुनो। लोक लाज को त्यागकर तू अपना मन तन अर्थात, सारा जीवन उसे अर्पण कर दे।। १ ।। रहाउ।। एक सखी अपनी दूसरी सहेली (सत्संगी) को समझाती है कि जो प्रभु को भाता है वही आचरण अपनाओ। जो ऐसा करती है वही सुहागिन स्त्री उसके अंक में जाकर उसी में लीन हो जाती है।। २ ।। अभिमान ग्रस्त जीव-स्त्री पति के ठिकाने को नहीं पा सकती और इसी प्रकार जब जीवन रूपी रात बीत जाती है तो वह पछताने लगती है। वह अभागिन मनमुख बनी हुई दुख पाती रहती है।। ३ ।। यदि उसे (प्रभु को) दूर समझा जा रहा है तो मैं एक विनती करता हूँ कि वह अविनाशी प्रभु सब ओर ही व्याप्त है। दास नानक तो उसे प्रत्यक्ष देखकर उसके गुण गाता है।। ४ ।। ३।। सूही महला ५ ।। गुरु ने इस घर रूपी शरीर अथवा जीवन को अपने वश में कर लिया है और मैं उसके घर की स्त्री हूँ। मेरे पति ने दसों इन्द्रियों को नौकरानी बनाकर मेरे अधीन कर दिया है। मैंने अपने इस घर की सारी सामग्री को बना संवार कर इकट्ठा कर लिया है और अब उसके दर्शन की प्यासी अपने प्रियतम की प्रतीक्षा कर रही हूँ।। १ ।। मैं अपने प्यारे पति के कौन कौन से गुणों का बखान करूं। वह सुन्दर स्वरूप वाला दयालु प्रभु है।।१ ।।रहाउ ।। मैंने सत्य का शृंगार किया है और उसके भय के सुरमे को आँखों में डाला है। पान के तौर पर मैंने उसके अमृत नाम को मुख में रखकर खाया, मेरे कंगन, वस्त्र और आभूषण शोभायमान बने हुए हैं। अब तो जीव-स्त्री सभी सुखों को पा लेगी यदि उसका प्रियतम उसके घर में आ बसे।। २ ।। जीव-स्त्री ने गुणों को उत्पन्न करके अपने कन्त (पति) को प्रसन्न कर लिया है। उसे अब अपने वश में कर लिया है क्योंकि गुरु के माध्यम से सब प्रकार का भ्रम चुक गया है। मेरा महल अब सबसे ऊँचा है और मेरा प्रियतम अन्य सभी स्त्रियों को त्यागकर अब मेरा हो गया है।। ३ ।। ज्ञान का सूर्य प्रकट हो गया है और उसकी ज्योति से सब ओर प्रकाश फैल गया है। अब मैंने अपार श्रद्धा की सेज बिछा दी और सदैव नये रंग में रंगा रहने वाला मेरा प्रियतम अब सेज पर रमण करने के लिये आ गया है। दास नानक ने प्रियतम रूपी पति को मिलकर सुख प्राप्त कर लिया ।।४।। ४।। सूही महला ५।। प्रभु से मिलने के लिये मेरा हृदय उछल रहा है। मैं उस प्रियतम को देखने के लिये ही उसकी खोज में निकली हुई हूँ। उस प्रियतम का संदेशा गुरु उपदेश के माध्यम से सुनकर मैंने हृदय रूपी घर में सेज बिछा ली है परन्तु मैं इधर उधर भटक कर वापस आ गई हूँ क्योंकि मुझे वह प्यारा कहीं भी नजर नहीं आ सका।। १ ।। मेरा यह विनम्र हृदय कैसे धीरज रखे। हे मेरे साजन, तू मुझसे आन मिल; मैं तुझ पर कुर्बान जाती हूँ।।१ ।। रहाउ।। स्त्री और पति के लिए एक सेज बिछी है परन्तु उस पर स्त्री तो सोई पड़ी है और प्रियतम सदैव जागता ही रहता है। स्त्री इस प्रकार से मतवाली पड़ी है जैसे उसने शराब पी रखी हो। ऐसी स्त्री भी बेहोशी से जग सकती है यदि उसे उसका प्रियतम पुकार कर बुला ले।। २।। मैं निराश हो गई हूँ क्योंकि तुझे मिलने में बहुत दिन लग गए। मैंने सभी देश देशान्तरों में

झागे ॥ खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ होइ क्रिपालु प्रभ मिलह सभागे ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु सतसंगि मिलाइआ ॥ बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ॥ सगल सीगार हुणि मुझहि सुहाइआ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ४ ॥ जह देखा तह पिरु है भाई ॥ खोल्हिओ कपाटु ता मनु ठहराई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ५ ॥ सूही महला ५ ॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥ १ ॥ लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ २ ॥ किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥ ३ ॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥ ४ ॥ ६ ॥

सूही महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेवा थोरी मागनु बहुता ॥ महलु न पावै कहतो पहुता ॥ १ ॥ जो प्रिअ माने तिन की रीसा ॥ कूड़े मूरख की हाठीसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भेख दिखावै सचु न कमावै ॥ कहतो महली निकटि न आवै ॥ २ ॥ अतीतु सदाए माइआ का माता ॥ मनि नही प्रीति कहै मुखि राता ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ कुचलु कठोरु कामी मुकतु कीजै ॥ ४ ॥ दरसन देखे की वडिआई ॥ तुम्ह सुखदाते पुरख सुभाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ७ ॥ सूही महला ५ ॥ बुरे काम कउ ऊठि खलोइआ ॥ नाम की बेला पै पै सोइआ ॥ १ ॥ अउसरु अपना बूझै न इआना ॥ माइआ मोह रंगि लपटाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥ साध जना का दरसु न डीठा ॥ २ ॥ कबहू न समझै अगिआनु गवारा ॥ बहुरि बहुरि लपटिओ जंजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै नाद करन सुणि भीना ॥ हरि जसु सुनत आलसु मनि कीना ॥ ३ ॥ द्रिसटि नाही रे पेखत अंधे ॥ छोडि जाहि झूठे सभि धंधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक प्रभ बखस करीजे ॥

खोज बीन कर ली है। मैं तो अब तुम्हारे चरणों में मगन होने के बिना पल भर भी नहीं रह सकती। हे प्रभु, कृपा करो और मुझे मिलो और मुझे भाग्यवान बना दो।। ३ ।। प्रभु कृपालु हुआ और उसने सत्संगत से मिला दिया जिससे मेरे अन्दर की अग्नि शान्त हो गई और मैंने अपने अन्तर्मन में ही उस प्रियतम को पा लिया। अब यह सारा शृंगार मुझे अच्छा लगने लगा है और नानक का कथन है कि गुरु के माध्यम से मेरा भ्रम चुक गया है।। ४ ।। मैं जिधर भी देखता हूँ उस तरफ हे भाई, मेरा प्रियतम ही बिराजमान है। जब मैंने अपने अज्ञान के दरवाजों को खोल लिया तो मेरा मन स्थिर हो गया है।। १ ।। रहाउ दूसरा ।। ५ ।। सूही महला ५।। हे मुझ गुण विहीन के दाता प्रभु, मैं तेरे कौन से गुणों को याद कर करके उनका सुमिरन करूं। मैं तो तेरा मोल लिया हुआ सेवक भला क्या चतुराई कर सकता हूँ। यह प्राण और शरीर सब तुम्हारे ही हैं।। १।। हे लाल रंगीले मनमोहन प्रियतम, मैं तेरे दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ।। प्रभु दाता है और मैं एक दीन हीन भिखारी हूँ; हे प्रभु, तुम सदा भला करने वाले ही हो। हे मेरे अगम्य, अपार मालिक, ऐसा कुछ भी नहीं है जो मुझसे हो सकता है।। २।। मैं तुम्हारी कैसे सेवा करूं, तुम्हें कैसे प्रसन्न करूँ और किस विधि से तुम्हारा दर्शन प्राप्त करूँ; तेरा ओर छोर नहीं पाया जाता और तेरी सीमा को भी नहीं देखा जा सकता। हमारा मन तो तुम्हारे चरणों के लिये तरस रहा है।। ३।। हे प्रभु, मैं ढीठतापूर्वक पूरे आग्रह के साथ माँग रहा हूँ। मुझे सन्त जनों की चरण-धूलि का दान दे दो। दास नानक पर गुरु ने कृपा की तथा प्रभु ने मुझे हाथ देकर पार उतार लिया है।।४।।६।।

सूही महला ५ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

पाखण्ड करने वाला सेवक सेवा तो कम करता है लेकिन माँगता बहुत अधिक है। प्रभु के स्थान पर तो उसे कोई आसरा नहीं मिलता परन्तु कहता है कि मैं वहाँ तक पहुँचा हूँ।। १ ।। जिन्हें प्रियतम प्रभु ने माना हुआ है यह उनकी बराबरी करता है और यह मूर्ख और झूठे व्यक्ति की हठवादिता ही कही जा सकती है।। १ ।। रहाउ।। प्रपंच तो वह अनेको दिखाता है परन्तु ऐसा व्यक्ति सत्य पर आचरण नहीं करता। कहता तो यह है कि मैं मालिक के महल का निवासी हूँ परन्तु वास्तव में उसके कहीं आसपास भी नहीं आता जाता।। २ ।। धन सम्पदा में लीन बना हुआ यह अपने आपको त्यागी कहलाता है। इसके मन में तो प्रीति है ही नहीं परन्तु मुँह से ये कहता रहता है कि उस प्रभु की लगन मुझे लगी हुई है।। ३ ।। नानक का कथन है कि हे प्रभु, मेरी बिनती सुन लीजिए; मुझ जैसे गन्दे, कठोर और कामनाओं से भरे हुए को भी छुटकारा दिला दीजिए।। ४ ।। हे प्रभु, कामी और कठोर व्यक्तियों का मुक्त हो जाना भी तेरे दर्शन का बड़प्पन है। तुम ही सुखदाता हो और तुम ही अच्छे स्वाभाव के पुरुष हो।। १ ।। रहाउ दूसरा।। १ ।। ७।। सूही महला ५।। बुरे काम के लिये तो फौरन उठकर खड़ा हो जाता है परन्तु यह जीव नाम सुमिरन की बेला में पड़ा-पड़ा सोता रहता है।। १ ।। जीवन रूपी अवसर के महत्व को यह अनजान समझ नहीं पाता और माया मोह के रंग में लिपटा रहता है।। १ ।। रहाउ।। लोभ लहर में फंसा हुआ यह प्रसन्न होकर और फूलकर बैठा रहता है। इसने साधु पुरुषों का दर्शन कभी नहीं देखा ।। २।। यह अज्ञानी और गंवार कभी भी समझता नहीं और बार बार सांसारिक जँजालों में लिपटा रहता है।। १।। रहाउ।। विषय विकारों के संगीत को कानों से सुनकर प्रसन्न बना रहता है परन्तु प्रभु, यश को सुनने में इसका मन आलसी बना रहता है।। ३ ।। हे अंधे जीव, क्या तुझे यह दिखाई नहीं देता कि इन सब झूठे धंधो को तुझे छोड़ जाना होगा।। १ ।। रहाउ।। नानक कहता है कि हे प्रभु, मुझे यह दान दो तथा

करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥ ४ ॥ तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना ॥ जिसहि बुझाए तिसु नामु लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २ ॥ ८ ॥ सूही महला ५ ॥ घर महि ठाकुरु नदरि न आवै ॥ गल महि पाहणु लै लटकावै ॥ १ ॥ भरमे भूला साकतु फिरता ॥ नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता ॥ २ ॥ गुनहगार लूण हरामी ॥ पाहण नाव न पारगिरामी ॥ ३ ॥ गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता ॥ जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥ सूही महला ५ ॥ लालनु राविआ कवन गती री ॥ सखी बतावहु मुझहि मती री ॥ १ ॥ सूहब सूहब सूहवी ॥ अपने प्रीतम के रंगि रती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाव मलोवउ संगि नैन भतीरी ॥ जहा पठावहु जांउ तती री ॥ २ ॥ जप तप संजम देउ जती री ॥ इक निमख मिलावहु मोहि प्रानपती री ॥ ३ ॥ माणु ताणु अहंबुधि हती री ॥ सा नानक सोहागवती री ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ सूही महला ५ ॥ तूं जीवनु तूं प्रान अधारा ॥ तुझ ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥ १ ॥ तूं साजनु तूं प्रीतमु मेरा ॥ चितहि न बिसरहि काहू बेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बै खरीदु हउ दासरो तेरा ॥ तूं भारो ठाकुरु गुणी गहेरा ॥ २ ॥ कोटि दास जा कै दरबारे ॥ निमख निमख वसै तिन्ह नाले ॥ ३ ॥ हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥ ओति पोति नानक संगि बसेरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥ सूही महला ५ ॥ सूख महल जा के ऊच दुआरे ॥ ता महि वासहि भगत पिआरे ॥ १ ॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥ विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तह गीत नाद अखारे संगा ॥ ऊहा संत करहि हरि रंगा ॥ २ ॥ तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥ साच नाम की अंम्रित वरखा ॥ ३ ॥ गुहज कथा इह गुर ते जाणी ॥ नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२ ॥ सूही महला ५ ॥ जा कै दरसि पाप कोटि उतारे ॥ भेटत संगि इहु भवजलु तारे ॥ १ ॥ ओइ साजन ओइ मीत पिआरे ॥ जो हम कउ हरि नामु चितारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा का सबदु सुनत सुख सारे ॥ जा की टहल जमदूत बिदारे ॥ २ ॥ जा की धीरक इसु मनहि सधारे ॥ जा कै सिमरणि मुख उजलारे ॥ ३ ॥ प्रभ के सेवक प्रभि आपि सवारे ॥ सरणि

कृपा करके मुझे साधु पुरुषों की संगत प्रदान करो।। ४ ।। यदि संत पुरुषों की चरण धूलि हो जाया जाए तभी कुछ प्राप्त हो सकता है। जिसे वह प्रभु समझ देता है वही प्रभु के नाम का सुमिरन करता है।। १ ।। रहाउ।। २ ।। ८।। सूही महला ५ ।। अपने हृदय में तो वह मालिक प्रभु नजर नहीं आता परन्तु पत्थर की मूर्ति को यह गले में लटकाए रहता है।। १ ।। यह भटकता हुआ और प्रभु से टूटा हुआ जीव भ्रमों में पड़ा हुआ इधर उधर भटकता रहता है। यह पानी को ही बिलोता रहता है और उसी में ही मरता खपता रहता है।। १ ।। रहाउ।। जिस पत्थर को यह मालिक कहता है वह पत्थर ही उसे ले डूबता है।। २ ।। यह गुनहगार और नमक-हरामी है तथा यह नहीं जानता कि पत्थर की नाव पार ले जाने वाली नहीं होती।। ३।। गुरु से मिलकर नानक ने उस स्वामी प्रभु को जान लिया है कि वह जल, स्थल और अन्तरिक्ष में व्याप्त बना रहने वाला पूर्ण प्रभु है (और केवल पत्थरों में ही स्थित नहीं है) ।। ४ ।। ३।। ६।। सूही महला ५।। उस प्रियतम के साथ तुमने कैसे रमण किया, हे सखी, मुझे यह बताओ और मुझे सलाह भी दो।। १ ।। तुम एकदम लाल ही लाल बनी हुई हो और यह सब अपने प्रियतम के रंग में रंगी होने के कारण ही है।। १ ।। रहाउ।। मैं अपनी आँखों की पलकों से तुम्हारे पाँवों को मलूं और तू जहाँ भी मुझे भेजे वहीं चली जाऊँ।। २ ।। यदि मुझे एक क्षण भर के लिये भी अपने प्राण-पति प्रभु से मिला दो तो मैं अपने जप, तप, संयम आदि सभी तुम्हारे अर्पण कर दूंगी।। ३ ।। जिसने अपने गर्व, बल और अहंकार वाली बुद्धि का नाश कर लिया है हे नानक, वही वास्तव में पति से मिलाप करने में समर्थ सुहागिन स्त्री है।। ४ ।। ४।। १०।। सूही महला ५ ।। हे प्रभु, तू ही मेरा जीवन और तू ही मेरे प्राणों का आधार है। तुझे ही देख देख कर मेरे मन को मजबूत आधार मिलता है।। १।। तू ही मेरा साजन और मेरा प्रियतम है। तू कभी भी मेरे चित्त से विस्मृत ना हो।। १ ।। रहाउ।। मैं तो तेरा खरीदा हुआ दास हूँ और तू गहरे गुणों वाला अत्यन्त भारी और विशाल मेरा मालिक है।। २ ।। करोड़ों दास जिसके दरबार में हैं वह प्रभु प्रति क्षण प्रति श्वास उन दासों के साथ ही बना रहता है।। ३ ।। हे प्रभु, मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। सब कुछ तेरा ही है और हे नानक, मैं तो तुझ में ही ताने बाने की तरह लीन बना हुआ हूँ।। ४ ।। ५।। ११।। सूही महला ५।। उस प्रभु के महल और द्वार बहुत ही ऊंचे और महान् है और उनमें उसके प्यारे भक्त निवास किया करते हैं।। १ ।। प्रभु की सहज कथा अत्यन्त ही मन को भाने वाली है और सहज की इस अवस्था को किसी बिरले ने ही अपनी आँखों से देखा है।। १ ।। रहाउ।। वहाँ गायन वादन की ध्वनियाँ और साधु संगत के अखाड़े बने ही रहते हैं; वही पर सन्त पुरुष प्रभु के रंग में कार्यशील बने रहते हैं।। २ ।। वहाँ मरना, जीना, शोक और हर्ष आदि कुछ नहीं होता तथा सच्चे प्रभु-नाम की अमृत वर्षा होती ही रहती है।। ३ ।। गुरु से ही मैंने इस रहस्यात्मक तथ्य को जाना है और नानक तो उस प्रभु की वाणी का ही उच्चारण करता रहता है।। ४ ।। ६।। १२।। सूही महला ५।। जिनके दर्शन से करोड़ों पाप उतर जाते हैं और जिनके मिलाप के फलस्वरूप इस संसार सागर को पार कर लिया जाता है।। १ ।। वे ही हमारे सज्जन और प्यारे मित्र हैं जो हमें प्रभु-नाम का सुमिरन करवाते हैं।। १ ।। रहाउ।। जिनका शब्द (उपदेश) सुनते ही सभी सुख मिल जाते हैं। जिनकी सेवा करने से यमदूत विनष्ट हो जाते हैं।। २ ।। जिनका दिया हुआ धैर्य इस मन का आधार बनता है। जिनके सुमिरन से मुख उज्जवल बना रहता है ।। ३ ।। प्रभु के ऐसे सेवकों को प्रभु ने स्वयं ही सँवारा है और

नानक तिन्ह सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥ सूही महला ५ ॥ रहणु न पावहि सुरि नर देवा ॥ ऊठि सिधारे करि मुनि जन सेवा ॥ १ ॥ जीवत पेखे जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ साधसंगि तिन्ही दरसनु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बादिसाह साह वापारी मरना ॥ जो दीसै सो कालहि खरना ॥ २ ॥ कूड़ै मोहि लपटि लपटाना ॥ छोडि चलिआ ता फिरि पछुताना ॥ ३ ॥ क्रिपा निधान नानक कउ करहु दाति ॥ नामु तेरा जपी दिनु राति ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ सूही महला ५ ॥ घट घट अंतरि तुमहि बसारे ॥ सगल समग्री सूति तुमारे ॥ १ ॥ तूं प्रीतम तूं प्रान अधारे ॥ तुम ही पेखि पेखि मनु बिगसारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जोनि भ्रमि भ्रमि भ्रमि हारे ॥ ओट गही अब साध संगारे ॥ २ ॥ अगम अगोचरु अलख अपारे ॥ नानकु सिमरै दिनु रैनारे ॥ ३ ॥ ९ ॥ १५ ॥ सूही महला ५ ॥ कवन काज माइआ वडिआई ॥ जा कउ बिनसत बार न काई ॥ १ ॥ इहु सुपना सोवत नही जानै ॥ अचेत बिवसथा महि लपटानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा मोहि मोहिओ गावारा ॥ पेखत पेखत ऊठि सिधारा ॥ २ ॥ ऊच ते ऊच ता का दरबारा ॥ कई जंत बिनाहि उपारा ॥ ३ ॥ दूसर होआ ना को होई ॥ जपि नानक प्रभ एको सोई ॥ ४ ॥ १० ॥ १६ ॥ सूही महला ५ ॥ सिमरि सिमरि ता कउ हउ जीवा ॥ चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा ॥ १ ॥ सो हरि मेरा अंतरजामी ॥ भगत जना कै संगि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि अंम्रित नामु धिआवा ॥ आठ पहर तेरे गुण गावा ॥ २ ॥ पेखि पेखि लीला मनि आनंदा ॥ गुण अपार प्रभ परमानंदा ॥ ३ ॥ जा कै सिमरनि कछु भउ न बिआपै ॥ सदा सदा नानक हरि जापै ॥ ४ ॥ ११ ॥ १७ ॥ सूही महला ५ ॥ गुर कै बचनि रिदै धिआनु धारी ॥ रसना जापु जपउ बनवारी ॥ १ ॥ सफल मूरति दरसन बलिहारी ॥ चरण कमल मन प्राण अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जनम मरण निवारी ॥ अंम्रित कथा सुणि करन अधारी ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥ द्रिड़ु नाम दानु इसनानु सुचारी ॥ ३ ॥ कहु नानक इहु ततु बीचारी ॥ राम नाम जपि पारि उतारी ॥ ४ ॥ १२ ॥ १८ ॥ सूही महला ५ ॥ लोभि मोहि मगन अपराधी ॥

नानक उनकी शरण में आकर उनपर सदैव बलिहारी जाता है।। ४ ।। ७।। १३।। सूही महला ५।। यहाँ तो भले पुरुष, सुर और देव आदि कोई भी नहीं टिका रह पाता और मुनिजन भी उस प्रभु का सुमिरन करते हुए उठ जाते हैं।। १।। यहाँ तो उन्हीं को जीवित देखा गया है जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया है और जिन्होंने साधसंगति के माध्यम से प्रभु का दर्शन पा लिया है।। १ ।। रहाउ।। बादशाह, साहूकार,व्यापारी आदि सभी को अन्ततः मरना ही है। जो भी यहाँ दिखाई दे रहा है उसे काल ने ले जाना ही है।। २ ।। झूठे मोह में यह जीव लीन हुआ उसी से लिपटा रहता है परन्तु जब यह सब कुछ यहीं छोड़कर चलता है तो फिर पछताता ही रहता है।। ३ ।। हे कृपानिधान प्रभु, नानक को यही दान प्रदान करो कि दिन रात मैं तुम्हारे नाम का जाप करता रहूँ।। ४ ।। ८।। १४।। सूही महला ५।। हर एक के शरीर में तुम ही बस रहे हो और इस रचना की सारी सामग्री तुम्हारी मर्यादा के सूत्र में पिरोई हुई है।। १ ।। तू ही हमारा प्रियतम है और तू ही हमारे प्राणों का आधार है। हे प्रभु, तुम्हें देख देख कर ही हमारा मन आनन्दित बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। हम अनेकों योनियों में भटकते भटकते अब हार गए हैं और अब हार कर हमने साधु पुरुषों की संगत का आसरा पकड़ा है।। २ ।। हे प्रभु, तुम अगम्य, अगोचर और इन्द्रियों के विषय से उपर अपरम्पर स्वामी हो। नानक दिन-रात तुम्हारा ही सुमिरन करता रहता है।। ३ ।। ६।। १५।। सूही महला ५ ।। माया की महिमा किस काम की है जिसे विनष्ट होते हुए थोड़ी देर भी नहीं लगती।। १ ।। यह एक ऐसा सपना है जिसमें व्यक्ति यह नहीं समझता कि मैं सोया पड़ा हूँ और अचेत अवस्था में वह सपने से ही लिपटा रहता है।। १ ।। रहाउ।। यह गँवार उसके महामोह में ग्रस्त है और देखते-देखते ही इस संसार से उठकर चल पड़ता है।। २ ।। उस प्रभु का दरबार ऊँचे से भी ऊँचा है। वह कई जीवों को नष्ट करके उन्हें फिर पैदा कर देता है।। ३ ।। उसके जैसा ना तो कोई दूसरा है ना ही कोई दूसरा होगा। हे नानक, तू उस एक प्रभु का ही जाप कर।। ४ ।। १०।। १६।। सूही महला ५ ।। मैं तो उसी का सुमिरन करते हुए जीवित बना रहूँ और हे प्रभु, तेरे चरण कमलों को धो धोकर पीता रहूँ।। १ ।। वह मेरा प्रभु अन्तर्यामी है और वह मालिक सदैव भक्तजनों के संग बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। मैं सुन सुनकर अमृत-नाम का सुमिरन करता हूँ और आठों प्रहर तेरे गुण गाता हूँ।। २ ।। तेरी लीला देख देखकर मन आनन्दित होता है और हे परमानन्द प्रभु, तेरे गुण अपरम्पर हैं।। ३ ।। जिस प्रभु के सुमिरन से कोई भी भय प्रभावित नहीं करता है हे नानक, तू सदैव उस प्रभु का ही जाप करता रह।। ४ ।। ११ ।। १७।। सूही मः ५।। गुरु के उपदेश को हृदय में बसा कर सदैव अपने ध्यान में बनाए रखता हूँ। अपनी जीभ से सदैव उस प्रभु का जाप करता रहता हूँ।। १ ।। उस प्रभु का अस्तित्व सदैव फल पूर्ण है और मैं उसके दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ। उसके चरण कमल मेरे मन और प्राणों का आधार हैं।। १ ।। रहाउ।। साधसंगति में ही जन्म मरण का मैं निवारण करता हूँ और उसकी अमृत कथा सुनते हुए उसे ही अपने कानों का आधार बनाता हूँ।। २ ।। मैंने काम, क्रोध, मोह, लोभ को त्याग दिया है। प्रभु नाम को हृदय में बनाए रखना, बाँट कर खाना और पवित्र बने रहने का अच्छा आचरण बना लिया है।। ३ ।। नानक कहता है कि मैंने इस तत्व को विचार लिया है कि राम नाम जपने से ही संसार-सागर से पार उतरा जा सकता है।। ४ ।। १२ ।। १८।। सूही महला ५ ।। मैं लोभ, मोह में लीन बना हुआ अपराधी हूँ और सृष्टि

करणहार की सेव न साधी ॥ १ ॥ पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ राखि लेहु मोहि निरगुनीआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं दाता प्रभ अंतरजामी ॥ काची देह मानुख अभिमानी ॥ २ ॥ सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥ इन संगि लागि रतन जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ दुख भंजन जगजीवन हरि राइआ ॥ सगल तिआगि नानकु सरणाइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ १९ ॥ सूही महला ५ ॥ पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही ॥ निकटि वसतु कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥ १ ॥ सो किछु करि जितु छुटहि परानी ॥ हरि हरि नामु जपि अंम्रित बानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोर महल सदा रंगि राता ॥ संगि तुम्हारै कछू न जाता ॥ २ ॥ रखहि पोचारि माटी का भांडा ॥ अति कुचील मिलै जम डांडा ॥ ३ ॥ काम क्रोधि लोभि मोहि बाधा ॥ महा गरत महि निघरत जाता ॥ ४ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥ ५ ॥ १४ ॥ २० ॥ सूही महला ५ ॥ जीवत मरै बुझै प्रभु सोइ ॥ तिसु जन करमि परापति होइ ॥ १ ॥ सुणि साजन इउ दुतरु तरीऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु उचरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक बिना दूजा नही जानै ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु पछानै ॥ २ ॥ जो किछु करै सोई भल मानै ॥ आदि अंत की कीमति जानै ॥ ३ ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी ॥ जा कै हिरदै वसहि मुरारी ॥ ४ ॥ १५ ॥ २१ ॥ सूही महला ५ ॥ गुरु परमेसरु करणैहारु ॥ सगल स्रिसटि कउ दे आधारु ॥ १ ॥ गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥ दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ २ ॥ गुर की सेवा करहु दिनु राति ॥ सूख सहज मनि आवै सांति ॥ ३ ॥ सतिगुर की रेणु वडभागी पावै ॥ नानक गुर कउ सद बलि जावै ॥ ४ ॥ १६ ॥ २२ ॥ सूही महला ५ ॥ गुर अपुने ऊपरि बलि जाईऐ ॥ आठ पहर हरि हरि जसु गाईऐ ॥ १ ॥ सिमरउ सो प्रभु अपना सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल सिउ लागी प्रीति ॥ साची पूरन निरमल रीति ॥ २ ॥ संत प्रसादि वसै मन माही ॥ जनम जनम के किलविख जाही ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानकु मागै

की रचना करने वाले उस प्रभु का सुमिरन करने की साधना मैंने नहीं की है।। १ ।। हे प्रभु, तुम्हारा नाम पतितों को पवित्र करने वाला है। मुझ गुण-विहीन की हे प्रभु, तू रक्षा कर ।। १ ।। रहाउ।। तुम अन्तर्यामी दाता प्रभु हो। मनुष्य का शरीर तो मिट्टी के बर्तन की तरह कच्चा है परन्तु वह फिर भी उसका अहंकार करता है।। २ ।। दुनिया के स्वादों, विवादों, ईर्ष्या, अभिमान और प्रपंचों के साथ लगकर इसने रत्न जैसे इस जीवन को गँवा लिया है।। ३ ।। वह राजन प्रभु, दुखों का नाश करने वाला और जगत का जीवन है। नानक तो सब कुछ त्यागकर उसकी शरण में आ गया है।। ४ ।। १३ ।। १६।। सूही महला ५ ।। व्यक्ति तो देखते हुए भी अंधा कहा जाता है और यह सुनता हुआ भी वास्तव में सुनता नहीं है। जो परमात्मा रूपी वस्तु इसके बहुत ही निकट है उसे तो यह दूर जानता है और पापी बनकर पाप पूर्ण आचरण किये जाता है।। १ ।। हे प्राणी, तू कुछ ऐसा कर जिससे तुझे छुटकारा मिल जाए। इसके लिये तू प्रभु का नाम और उसकी अमृतवाणी का जाप करता रह।। १ ।। रहाउ।। तू सदैव घोड़े, महल आदि के प्रेम में ही लीन बना रहता है। इनमें से कुछ भी तुम्हारे संग नहीं जाएगा ।। २ ।। शरीर रूपी मिट्टी के बर्तन को तू ऊपर ऊपर से साफ करके रखता है पर अन्दर से पापों के कारण यह अत्यन्त गंदा बना रहता है। इसीलिये तुझे यम का डंडा सहन पड़ेगा।। ३ ।। काम, क्रोध, लोभ, मोह में बंधा हुआ यह जीव संसार रूपी महागर्त में नीचे से नीचे ही चला जा रहा है।। ४ ।। हे प्रभु, नानक की अरदास सुन लो और इस डूबते हुए पत्थर को बचा लो।। ५ ।। १४ ।। २० ।। सूही महला ५ ।। जो व्यक्ति विषय विकारों की ओर से मर कर जीवित बना रहता है वही वास्तव में प्रभु के रहस्य को बूझ लेता है। ऐसे व्यक्ति को उस प्रभू की कृपा से वह प्रभु प्राप्त हो जाता है।। १ ।। हे मेरे सज्जन, तू इस बात को सुन ले कि इस प्रकार ना तैरा जा सकने वाला संसार सागर तैर कर पार किया जाता है। इसके लिये साधु पुरुषों से मिलकर प्रभु- नाम का सुमिरन करते रहना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। जो व्यक्ति उस एक प्रभु के बिना दूसरे अन्य किसी को नहीं जानता और हर शरीर में वह उस परब्रह्म प्रभु को ही देखता है।। २ ।। वह प्रभु जो करता है वह उसे ही भला मानता है तथा उसके आदि और अन्त की महिमा को हृदय में धारण करके जानता मानता है।। ३ ।। नानक का कथन है कि उस व्यक्ति पर मैं बलिहारी जाता हूँ जिसके हृदय में वह प्रभु बसता है।। ४ ।। १५ ।। २१ ।। सूही महला ५।। वह परमेश्वर गुरु ही सब कुछ करने में समर्थ है और वही सारी सृष्टि को आधार प्रदान करता है।। १ ।। हे जीव, गुरु के चरण कमलों की मन में आराधना कर जिससे इस तन से दुखदर्द दूर हो जाएँगे।। १ ।। रहाउ ।। सच्चा गुरु ही इस संसार रूपी सागर में डूबते हुए जीव को बाहर निकाल लेता है और कई जन्मों से प्रभु से बिछुड़े लोगों को उससे मिला देता है।। २ ।। हे प्राणी, दिन रात गुरु की सेवा करो इसी से सहज सुख प्राप्त होगा और मन में शान्ति आएगी।। ३ ।। सच्चे गुरु की चरण धूलि तो बड़े भाग्य वाला ही प्राप्त करता है। नानक तो गुरु पर सदैव बलिहारी जाता है।। ४ ।। १६ ।। २२ ।। सूही महला ५ ।। अपने गुरु पर सदैव बलिहारी जाना चाहिये और आठों प्रहर उस प्रभु के यश का गायन करते रहना चाहिए।। १ ।। अपने स्वामी प्रभु का ही सुमिरन करना चाहिए क्योंकि वही सभी के हृदय की बात जानने वाला अन्तर्यामी हैं।। १ ।। रहाउ।। मेरी प्रीति उसके चरण कमलों से लग गई है। मेरी यही प्रीति सच्ची है, पूर्ण है और इसका आचरण भी निर्मल है।। २ ।। शान्त पुरुषों की कृपा से वह प्रभु मन में बस जाता है और इस प्रकार जन्म जन्मान्तरों के पाप विनष्ट हो जाते है।। ३ ।। हे दीनदयालु प्रभु, कृपा करो; नानक तुमसे शान्त

संत रवाला ॥ ४ ॥ १७ ॥ २३ ॥ सूही महला ५ ॥ दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥ पूरन करमु होइ प्रभ मेरा ॥ १ ॥ इह बेनंती सुणि प्रभ मेरे ॥ देहि नामु करि अपणे चेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणी सरणि राखु प्रभ दाते ॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाते ॥ २ ॥ सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥ चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥ ३ ॥ नानकु एक करै अरदासि ॥ विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥ ४ ॥ १८ ॥ २४ ॥ सूही महला ५ ॥ मीतु साजनु सुत बंधप भाई ॥ जत कत पेखउ हरि संगि सहाई ॥ १ ॥ जति मेरी पति मेरी धनु हरि नामु ॥ सूख सहज आनंद बिसराम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जपि पहिरि सनाह ॥ कोटि आवध तिसु बेधत नाहि ॥ २ ॥ हरि चरन सरण गड़ कोट हमारै ॥ कालु कंटकु जमु तिसु न बिदारै ॥ ३ ॥ नानक दास सदा बलिहारी ॥ सेवक संत राजा राम मुरारी ॥ ४ ॥ १९ ॥ २५ ॥ सूही महला ५ ॥ गुण गोपाल प्रभ के नित गाहा ॥ अनद बिनोद मंगल सुख ताहा ॥ १ ॥ चलु सखीए प्रभु रावण जाहा ॥ साध जना की चरणी पाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि बेनती जन धूरि बाछाहा ॥ जनम जनम के किलविख लाहां ॥ २ ॥ मनु तनु प्राण जीउ अरपाहा ॥ हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहां ॥ ३ ॥ दीन दइआल करहु उतसाहा ॥ नानक दास हरि सरणि समाहा ॥ ४ ॥ २० ॥ २६ ॥ सूही महला ५ ॥ बैकुंठ नगरु जहा संत वासा ॥ प्रभ चरण कमल रिद माहि निवासा ॥ १ ॥ सुणि मन तन तुझु सुखु दिखलावउ ॥ हरि अनिक बिंजन तुझु भोग भुंचावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु भुंचु मन माही ॥ अचरज साद ता के बरने न जाही ॥ २ ॥ लोभु मूआ त्रिसना बुझि थाकी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ ३ ॥ जनम जनम के भै मोह निवारे ॥ नानक दास प्रभ किरपा धारे ॥ ४ ॥ २१ ॥ २७ ॥ सूही महला ५ ॥ अनिक बींग दास के परहरिआ ॥ करि किरपा प्रभि अपना करिआ ॥ १ ॥ तुमहि छडाइ लीओ जनु अपना ॥ उरझि परिओ जालु जगु सुपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परबत दोख महा बिकराला ॥ खिन महि दूरि कीए दइआला ॥ २ ॥ सोग रोग बिपति अति भारी ॥ दूरि भई जपि नामु मुरारी ॥ ३ ॥ द्रिसटि

पुरुषों की चरण धूलि माँगता है।। ४ ।। १७ ।। २३।। सूही महला ५ ।। हे गुरु, मैं तेरा दर्शन देखकर ही जीवित बना रहता हूँ और तेरे दर्शन से ही तेरी कृपा का कार्य मेरे लिये हे प्रभु, पूर्ण हो जाता है।। १ ।। हे मेरे प्रभु, तू मेरी यह विनती सुन और मुझे अपना दास बनाकर अपना नाम प्रदान कर।। १ ।। रहाउ।। हे दाता प्रभु, हमें अपनी शरण में रख। गुरु की कृपा से तुझे किसी बिरले ने ही जाना है।। २ ।। हे मेरे मित्र प्रभु, मेरी यह विनती सुन कि तुम्हारे चरण कमल मेरे हृदय में बसे रहें।। ३ ।। नानक तो एक यही अरदास करता है कि गुणों के भण्डार प्रभु, तू मुझे कभी भी विस्मृत ना हो।। ४ ।। १८ ।। २४ ।। सूही महला ५ ।। वह प्रभु ही मेरा मित्र, सज्जन, पुत्र, बन्धु और भाई है। जिधर कहीं भी मैं देखता हूँ वह प्रभु सदैव मेरे साथ बना रहकर मेरी सहायता करता है।। १ ।। मेरी जाति, मेरा सम्मान, मेरा धन प्रभु का नाम ही है। वही सुख है, वही सहज भाव है, वही आनन्द है और वही मेरा अन्तिम विश्राम स्थल है।। १ ।। रहाउ।। परमेश्वर प्रभु का सुमिरन करके इस सुमिरन का कवच हे जीव, तू पहन ले। करोड़ों शस्त्र भी इसे बींध नहीं सकते।। २ ।। हमारे लिये प्रभु के चरणों का आसरा लेना ही हजारों किले हैं। ऐसे व्यक्ति को दुखदायक काल और यम नष्ट नहीं कर सकते।। ३ ।। दास नानक तो सदैव प्रभु के सेवकों और सन्तों पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। १६ ।। २५ ।। सूही महला ५ ।। जहाँ धरती के स्वामी उस प्रभु के गुण सदैव गाए जाते हैं वहाँ आनन्द, विलास, खुशियाँ और सुख बने रहते हैं।। १ ।। चलो सखियो, प्रभु के साथ रमण करने के लिये चला जाए और इसके लिये साधु सेवकों के चरणों में गिरा जाए ।। १ ।। रहाउ।। सेवकों की चरण धूलि को माँगने की विनती की जाए और इस प्रकार जन्म जन्मान्तरों के पापों को उतारा जाए।। २ ।। मन, तन और प्राण उसे अर्पण किए जाएँ और प्रभु का बार बार सुमिरन करते हुए अहंकार और मोह को काट फेंका जाए।। ३ ।। हे दीनदयालु प्रभु, हममें कुछ उत्साह पैदा करो ताकि दास नानक प्रभु की शरण में ही लीन बना रहे।। ४ ।। २० ।। २६।। सूही महला ५ ।। जहाँ शान्त पुरुषों का निवास है वही बैकुण्ठ नगर है। वहीं पर प्रभु के चरण कमल हृदय में निवास बनाए रखते हैं।। १ ।। हे मेरे मन और तन, तू मेरी बात सुन; मैं तुझे सुख का रास्ता दिखाता हूँ और तुम्हें प्रभु के अनेक प्रकार के भोजन और व्यञ्जन खिलाता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के अमृत नाम को तू अपने मन में स्वाद पूर्वक खा। इसका स्वाद इतना आश्चर्यपूर्ण है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।। २ ।। इसे खा लेने से लोभ मर जाता है और तृष्णा बुझकर समाप्त हो जाती है। व्यक्ति अब उस परमात्मा की शरण की ओर ही देखता है।। ३ ।। जन्म जन्मातरों के भय और मोह दूर हो जाते हैं यदि दास नानक पर प्रभु अपनी कृपा बनाए रखे।। ४ ।। २१ ।। २६ ।। सूही महला ५ ।। दास के अनेकों छल कपट के टेढ़ेपन को प्रभु ने दूर कर दिया है। प्रभु ने कृपा करके हमें अपना बना लिया है। तुमने हे प्रभु, अपने सेवक को बन्धनों से छुड़ा लिया है क्योंकि तेरा दास इस स्वप्न-संसार के जाल में उलझा पड़ा था।। १।। रहाउ।। मेरे दोष तो पर्वत की तरह बड़े और विकराल थे परन्तु हे दयालु, तूने उन्हें क्षण भर में दूर कर दिया।। २।। प्रभु के नाम का सुमिरन करने से मेरे अत्यन्त भारी शोक, रोग एवं विपत्तियाँ दूर हो गई।। ३ ।। कृपा दृष्टि

धारि लीनो लड़ि लाइ ॥ हरि चरण गहे नानक सरणाइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २८ ॥
सूही महला ५ ॥ दीनु छडाइ दुनी जो लाए ॥ दुही सराई खुनामी कहाए ॥ १ ॥
जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ आपणी कुदरति आपे जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सचा धरमु पुंनु भला कराए ॥ दीन कै तोसै दुनी न जाए ॥ २ ॥ सरब निरंतरि
एको जागै ॥ जितु जितु लाइआ तितु तितु को लागै ॥ ३ ॥ अगम अगोचरु सचु
साहिबु मेरा ॥ नानकु बोलै बोलाइआ तेरा ॥ ४ ॥ २३ ॥ २९ ॥ सूही महला ५ ॥
प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥ ईत ऊत की ओट सवारी ॥ १ ॥ सदा सदा जपीऐ
हरि नाम ॥ पूरन होवहि मन के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु अबिनासी रैणि दिनु
गाउ ॥ जीवत मरत निहचलु पावहि थाउ ॥ २ ॥ सो साहु सेवि जितु तोटि न
आवै ॥ खात खरचत सुखि अनदि विहावै ॥ ३ ॥ जगजीवन पुरखु साधसंगि पाइआ ॥
गुर प्रसादि नानक नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३० ॥ सूही महला ५ ॥ गुर
पूरे जब भए दइआल ॥ दुख बिनसे पूरन भई घाल ॥ १ ॥ पेखि पेखि जीवा दरसु
तुम्हारा ॥ चरण कमल जाई बलिहारा ॥ तुझ बिनु ठाकुर कवनु हमारा ॥ १ ॥
रहाउ ॥ साधसंगति सिउ प्रीति बणि आई ॥ पूरब करमि लिखत धुरि पाई ॥ २ ॥
जपि हरि हरि नामु अचरजु परताप ॥ जालि न साकहि तीने ताप ॥ ३ ॥ निमख
न बिसरहि हरि चरण तुम्हारे ॥ नानकु मागै दानु पिआरे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३१ ॥
सूही महला ५ ॥ से संजोग करहु मेरे पिआरे ॥ जितु रसना हरि नामु
उचारे ॥ १ ॥ सुणि बेनती प्रभ दीन दइआला ॥ साध गावहि गुण सदा
रसाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥ जिसु क्रिपा करहि बसहि
तिसु नेरा ॥ २ ॥ जन की भूख तेरा नामु अहारु ॥ तूं दाता प्रभ देवणहारु ॥ ३ ॥
राम रमत संतन सुखु माना ॥ नानक देवनहार सुजाना ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३२ ॥
सूही महला ५ ॥ बहती जात कदे द्रिसटि न धारत ॥ मिथिआ मोह
बंधहि नित पारच ॥ १ ॥ माधवे भजु दिन नित रैणी ॥ जनमु पदारथु
जीति हरि सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत बिकार दोऊ कर झारत ॥ राम
रतनु रिद तिलु नही धारत ॥ २ ॥ भरण पोखण संगि अउध बिहाणी ॥

धारण करके हे प्रभु, तूने मुझे अपने आँचल से लगा लिया है और नानक ने भी उस प्रभु की शरण में आकर प्रभु के चरणों को पकड़ लिया है।। ४ ।। २२ ।। २८।। सूही महला ५ ।। धर्म को छोड़कर जो दुनियादारी में लगा रहता है वही दोनों लोकों में अर्थात इस लोक और परलोक में अपराधी कहलाता है।। १ ।। जो उसे अच्छा लगता है वही स्वीकार करने योग्य है और अपनी कलाओं को वह प्रभु स्वयं ही जानता है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, जिनसे तू सच्चा धर्म और अच्छाई के काम कराता है उनके उस धर्म के आधार पर उनका सांसारिक पक्ष भी खराब नहीं होता।। २ ।। सब में एक प्रभु ही प्रकाशमान हो रहा है। उसने जिसे जहाँ-जहाँ भी लगाया हुआ है वह वहीं वहीं लगा हुआ है।। ३ ।। वह मेरा सच्चा साहिब अगम्य एवं अगोचर है और हे प्रभु, नानक तो वही बोलता है जो तू उससे बुलवाता है।। ४ ।। २३ ।। २९।। सूही महला ५ ।। प्रातः काल मैं प्रभु के नाम का उच्चारण करता हूँ जिससे मैंने इस लोक और परलोक का अपना आसरा बना लिया है।। १ ।। प्रभु का नाम सदैव याद रखने से मन की सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं।। १ ।। रहाउ।। उस अविनाशी प्रभु का गुणानुवाद दिन रात करते रहना चाहिये जिससे जीवित रहते हुए और मरणोपरान्त भी एक पक्का ठिकाना मिल जाता है।। २ ।। हे जीव, तू उस साहूकार का सुमिरन कर जिसको कभी कोई कमी नहीं आती। उसका सुमिरन करने से खाते खर्चते हुए व्यक्ति का जीवन सुख और आनन्द में व्यतीत होता है।। ३ ।। साधसंगति में वह जग को जीवन देने वाला प्रभु प्राप्त हुआ है और हे नानक, गुरु की कृपा से मैंने उस प्रभु-नाम का सुमिरन किया है।। ४ ।। २४ ।। ३०।। सूही महला ५।। जब पूर्ण गुरु दयालु हो गया तो मेरे सारे दुख विनष्ट हो गए और मेरी मेहनत सफल हो गयी।। १ ।। हे प्रभु, मैं तुम्हारा दर्शन देख देखकर ही जीवित बना रहता हूँ और तुम्हारे चरण कमलों पर बलिहारी जाता हूँ। तेरे बिना हमारा मालिक कौन है।। १ ।। रहाउ।। साधसंगति में मेरा प्रेम बन गया है और यह प्रारम्भ से ही पिछले कर्मों के अनुसार हुआ है।। २ ।। हे मानव, हे आश्चर्यजनक रूप से प्रतापी प्रभु-नाम का ही सुमिरन कर जिसे तीनों प्रकार के ताप भी जला नहीं सकते।। ३ ।। नानक तो वे प्यारे प्रभु यही दान माँगता है कि मुझे एक क्षण के लिये भी तुम्हारे चरण ना भूलें।। ४ ।। २५ ।। ३१।। सूही महला ५ ।। हे मेरे प्यारे प्रभु, कोई ऐसा अवसर बनाओ जिसमें मेरी जीभ प्रभु-नाम का ही उच्चारण करती रहे। हे दीनदयालु प्रभु, मेरी विनती सुनो, ताकि साधना करने वाला तेरा भक्त सदैव तेरे मीठे गुणों का गायन करता रहे।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तेरा सुमिरन करना तो जीवन के समान है अर्थात नाम सुमिरन ही व्यक्ति के लिये ज़िन्दगी है। तू जिस पर कृपा करता है उसी के पास तेरा निवास होता है अर्थात तू उसी के हृदय में बसता है।। २ ।। सेवक की भूख के लिए तो तेरा नाम ही भोजन है और हे दाता प्रभु, तू ही यह भोजन देने वाला है।। ३ ।। प्रभु में रमण करते हुए सन्त सुखी बने रहते हैं और हे नानक, वह सुजान प्रभु ही यह सुख देने वाला है।। ४ ।। २६।। ३२ ।। सूही महला ५ ।। हे जीव, तेरी आयु नदी की तरह बहती जा रही है परन्तु तू इस पर कभी ध्यान ही नहीं देता। झूठे मोह की कपड़ों की गाँठों की तरह गाँठे तू बाँधता रहता है।। १ ।। हे जीव, दिन-रात तू उस प्रभु का सुमिरन कर और प्रभु की शरण में आकर जीवन जैसे अमूल्य पदार्थ को जीत ले।। १ ।। रहाउ।। दोनों हाथों को झाड़कर अर्थात पूरी तरह तैयार होकर तू विकार युक्त आचरण करता है तथा प्रभु रूपी रत्न को तिल मात्र भी हृदय में धारण नहीं करता।। २ ।। शरीर के पालन-पोषण में ही तेरी सारी आयु व्यतीत हो जाती है और उस जय जयकार वाले जगदीश

जै जगदीस की गति नही जाणी ॥ ३ ॥ सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ उधरु नानक प्रभ अंतरजामी ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३३ ॥ सूही महला ५ ॥ साधसंगि तरै भै सागरु ॥ हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवन पदवी हरि का नाउ ॥ मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥ २ ॥ आठ पहर पारब्रहमु धिआईऐ ॥ पूरबि लिखतु होइ ता पाईऐ ॥ ३ ॥ सरणि पए जपि दीन दइआला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३४ ॥ सूही महला ५ ॥ घर का काजु न जाणी रूड़ा ॥ झूठै धंधै रचिओ मूड़ा ॥ १ ॥ जितु तूं लावहि तितु तितु लगना ॥ जा तूं देहि तेरा नाउ जपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के दास हरि सेती राते ॥ राम रसाइणि अनदिनु माते ॥ २ ॥ बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥ ३ ॥ उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥ ४ ॥ २९ ॥ ३५ ॥ सूही महला ५ ॥ संत प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ सरब सूख फिरि नही डोलाइआ ॥ १ ॥ गुरू धिआइ हरि चरन मनि चीन्हे ॥ ता ते करतै असथिरु कीन्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ ता ते काटी जम की फासी ॥ २ ॥ करि किरपा लीने लड़ि लाए ॥ सदा अनदु नानक गुण गाए ॥ ३ ॥ ३० ॥ ३६ ॥ सूही महला ५ ॥ अंम्रित बचन साध की बाणी ॥ जो जो जपै तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन बखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कली काल के मिटे कलेसा ॥ एको नामु मन महि परवेसा ॥ १ ॥ साधू धूरि मुखि मसतकि लाई ॥ नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥ २ ॥ ३१ ॥ ३७ ॥ सूही महला ५ घरु ३ ॥ गोबिंदा गुण गाउ दइआला ॥ दरसनु देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ जीउ पिंडु सभु तुमरा माला ॥ १ ॥ अंम्रित नामु चलै जपि नाला ॥ नानकु जाचै संत रवाला ॥ २ ॥ ३२ ॥ ३८ ॥ सूही महला ५ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ आपे थंमै सचा सोई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु मेरा आधारु ॥ करण कारण समरथु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ नानक रखा

प्रभु की असीमित शक्ति को तूने जाना नहीं है।। ३ ।। समर्थ और अगोचर प्रभु की शरण में आकर हे नानक, तू पार उतर जा। वह प्रभु ही वास्तव में अन्तर्यामी है।। ४ ।। २८ ।। ३३ ।। सूही महला ५ ।। साधसंगति के माध्यम से रत्नों की खान उस प्रभु का नाम जपकर भयानक संसार सागर को तैरा जाता है।। १ ।। मैं उस प्रभु का बार बार सुमिरन करते हुए ही जीवित बना रहता हूँ जिससे मेरे दुख, रोग, शोक सभी विनष्ट हो जाते हैं और पूर्ण गुरु से मिलकर पाप छोड़ दिए जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का नाम ही वास्तव में वह पदवी है जिससे आध्यात्मिक जीवन प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति का वास्तविक उद्देश्य तन मन को निर्मल बनाना भी पूरा हो जाता है।। २ ।। आठों प्रहर परब्रह्म प्रभु का सुमिरन किया जाए परन्तु ऐसा तभी प्राप्त होता है यदि प्रभु का आदेश हो अर्थात पहले से ही भाग्य में लिखा हो।। ३ ।। उस दीनदयालु प्रभु का सुमिरन करते हुए हम उसकी शरण में आ गए हैं और नानक तो सन्तजनों की चरण धूलि की कामना करता है।। ४ ।। २८ ।। ३४।। सूही महला ५ ।। यह सुन्दर मनुष्य कैसा है जो घर का काम अर्थात अपना वास्तविक उद्देश्य नहीं समझता और मूर्ख झूठे धन्धों में लगा रहता हैं।। १ ।। हे प्रभु, तू जिधर लगाता है हमें तो उसी ओर लगे रहना है और यदि तू ही प्रदान करे तो हम तेरे नाम का सुमिरन करते रहें।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के सेवक तो प्रभु में ही लीन बने रहते हैं तथा प्रभु नाम की रसायन पीकर वे हर रोज मस्त बने रहते हैं।। २ ।। प्रभु ने बाँह से पकड़कर उन्हें संसार सागर से निकाल लिया है और जन्मों जन्मान्तरों से टूटे हुए उन लोगों को अपने साथ जोड़ लिया है।। ३ ।। हे प्रभु, अपनी कृपा करके तुम उद्धार कर दो क्योंकि दास नानक तो अब हे प्रभु, तुम्हारे द्वार पर तुम्हारी शरण में आ गया है।। ४ ।। २६ ।। ३५।। सूही महला ५ ।। शान्त पुरुषों की कृपा से हमें एक अटल ठिकाना मिल गया है जहाँ सब प्रकार के सुख हैं और यह मन फिर भटकता नहीं।। १ ।। गुरु का सुमिरन करते हुए प्रभु के चरणों को हमने मन में पहचान लिया है और इसी से उस कर्ता प्रभु ने हमें स्थिर कर दिया है।। १ ।। रहाउ।। उस सदैव दृढता पुर्वक स्थिर बने रहने वाले अविनाशी प्रभु के गुणों का गायन करते हुए ही यम की हमारी फाँसी कट गई।। २ ।। प्रभु ने कृपा करके हमें अपने आँचल से बाँध लिया है और हे नानक, अब हम सदैव आनन्दित बने रहकर उसका गुणानुवाद करते हैं।। ३ ।। ३०।। ३६।। सूही महला ५ ।। साधु पुरुष की वाणी तो अमृत वचन है। जो जो भी इसका जाप करता है उसकी मुक्ति हो जाती है और वह सदैव अपनी जीभ से प्रभु-नाम का बखान करता रहता है।। १ ।। रहाउ।। कलियुग के अब सभी क्लेश मिट गए हैं और एक प्रभु का नाम ही मन में प्रवेश पा गया है।। १ ।। साधु पुरुषों की चरण -धूलि हमने मुँह माथे पर लगा ली है और हे नानक, प्रभु-गुरु की शरण में आकर हमारा उद्धार हो गया है।। २ ।। ३१।। ३७।। सूही महला ५ घरु ३ ।। हे दयालु धरती के आधार प्रभु, मैं तेरे गुण गाता हूँ। तू पूर्ण कृपालु बनकर हमें दर्शन दे।। रहाउ।। हे पालन-पोषण करने वाले प्रभु, तुम कृपा करो क्योंकि मेरा मन, तन सब कुछ तुम्हारा ही माल है।। १ ।। तुम्हारे अमृत नाम का जाप सदैव चलता रहे और नानक तो केवल शान्त पुरुषों की चरण-धूलि ही माँगता है।। २ ।। ३२ ।। ३८।। सूही महला ५।। उस प्रभु के बिना उस जैसा अन्य कोई भी नहीं है। वह सच्चा प्रभु स्वयं ही सबको थामे रहता है।। १ ।। उस प्रभु का नाम ही मेरा आसरा है क्योंकि वह समर्थ, अपरम्पर प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला है।। १ ।। रहाउ।। वह सदैव नूतन बना रहने वाला प्रभु सभी रोगों को मिटा देता है और हे नानक,

आपे होआ ॥ २ ॥ ३३ ॥ ३९ ॥ सूही महला ५ ॥ दरसन कउ लोचै सभु कोई ॥ पूरै भागि परापति होई ॥ रहाउ ॥ सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥ महा मोहनी दूता लाई ॥ १ ॥ प्रेम बिछोहा करत कसाई ॥ निरदै जंतु तिसु दइआ न पाई ॥ २ ॥ अनिक जनम बीतीअन भरमाई ॥ घरि वासु न देवै दुतर माई ॥ ३ ॥ दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥ ४ ॥ सुणि साजन संत जन भाई ॥ चरण सरण नानक गति पाई ॥ ५ ॥ ३४ ॥ ४० ॥

रागु सूही महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥ कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥ जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥ १ ॥ पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥ ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥ २ ॥ नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥ पाट पटंबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥ ३ ॥ सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराए ॥ सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ ४१ ॥ सूही महला ५ ॥ हरि का संतु परान धन तिस का पनिहारा ॥ भाई मीत सुत सगल ते जीअ हूं ते पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केसा का करि बीजना संत चउरु ढुलावउ ॥ सीसु निहारउ चरण तलि धूरि मुखि लावउ ॥ १ ॥ मिसट बचन बेनती करउ दीन की निआई ॥ तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥ २ ॥ अवलोकन पुनह पुनह करउ जन का दरसारु ॥ अंम्रित बचन मन महि सिंचउ बंदउ बार बार ॥ ३ ॥ चितवउ मनि आसा करउ जन का संगु मागउ ॥ नानक कउ प्रभ दइआ करि दास चरणी लागउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४२ ॥ सूही महला ५ ॥ जिनि मोहे ब्रहमंड खंड ताहू महि पाउ ॥ राखि लेहु इहु बिखई जीउ देहु अपुना नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा ते नाही को सुखी ता कै पाछै जाउ ॥ छोडि जाहि जो सगल कउ फिरि फिरि लपटाउ ॥ १ ॥ करहु क्रिपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ॥ नानक की प्रभ

वह स्वयं ही हम सबका रक्षक बना रहता है।। २ ।। ३३ ।। ३६ ।। सूही महला ५।। उसके दर्शन की कामना तो सभी करते हैं परन्तु वह पूर्ण भाग्य के फलस्वरूप ही प्राप्त होता है।। रहाउ।। उस सुन्दर प्रभु को त्यागकर अर्थात, उससे बिछुड़कर हे जीव, भला तुझे नींद कैसे आ गई। वास्तव में महामोहिनी माया ने काम, क्रोध, लोभ आदि दूतों को तेरे पीछे लगा दिया।। १ ।। यह कसाई रूप माया प्रभु के प्रेम से दूर कर देती है। यह जीवों के प्रति निर्दयी है और उसे दया नहीं आती।। २ ।। अनेकों जीवन तो भ्रमों में ही बीत गए परन्तु यह विकराल माया जीव को अपने मूल घर में निवास नहीं करने देती।। ३ ।। जीव भी दिन रात अपने किए हुओं का फल पाता रहता है और दोष किसे दिया जाए। व्यक्ति अपने अर्जित किये हुए संस्कारों के फलस्वरूप ही भटकता रहता है।। ४ ।। हे सज्जन और सन्तजनों, इस बात को सुन लो कि नानक ने तो प्रभु के चरणों में शरण लेकर ही मुक्ति प्राप्त की है।। ५ ।। ३४ ।। ४४ ।।

रागु सूही महला ५ घरु ४ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

गरीब का वह छप्पर भी सुहावना है जिसमें प्रभु के गुण गाए जाते हैं और जहाँ प्रभु को भुला दिया जाता है ऐसे बड़े बड़े सफेद महल भी किसी काम के नहीं हैं।। १ ।। रहाउ।। ऐसी गरीबी साधसंगति में बने रहने पर आनन्दित करती रहती है जिसमें प्रभु का सुमिरन मन में चलता रहता है। ऐसा बड़ापन तो जलकर नष्ट हो जाए जिसके अन्तर्गत व्यक्ति माया में ही लिपटा रहता है।। १ ।। हे जीव, तू तो सेवा के लिये पिसान पीस और साधारण कंबली को ओढ़ जिससे तेरे मन को सुख और सन्तुष्टि मिल जाए। ऐसा राज तो किसी काम का नहीं है जिससे सन्तुष्टि की भावना नहीं आती।। २ ।। जो उस एक प्रभु के रंग में ही बेशक नंगा ही घूमता है उसे फिर भी शोभा प्राप्त होती है। ऐसे सुन्दर वस्त्र तो व्यर्थ हैं जिनमें लीन होकर व्यक्ति लोभ में ही पड़ा रहता है।। ३ ।। हे प्रभु सब कुछ तुम्हारे ही हाथ है और तू ही सब कुछ करता कराता है। नानक को यही दान मिल जाए कि वह प्रत्येक श्वास के साथ तुम्हारा सुमिरन करता रहे।। ४ ।। १ ।। ४१।। सूही महला ५ ।। प्रभु का वह शान्त पुरुष ही मेरा प्राण और मेरा धन है और मैं उसी का पानी भरने वाला सेवक हूँ। वह मुझे भाई, मित्र, पुत्र अर्थात सबसे अधिक प्यारा है।। १ ।। रहाउ।। मैं अपने केशों का पंखा बनाकर उस शान्त पुरुष को चंवर डुलाता हूँ। मैं अपना सिर उसके चरणों तक झुकाता हूँ और चरणों की तली की धूल अपने मुख पर लगाता हूँ। १ ।।एक दीन की तरह उसके सामने मैं मीठे-मीठे बचनों से विनती करता हूँ कि अपने अभिमान को त्यागकर उसकी शरण में पड़कर गुणों के भण्डार रूपी प्रभु को मैं पा जाऊँ।। २ ।। प्रभु के ऐसे सेवक के दर्शन मैं बार-बार करता रहूँ और उसके अमृत वचनों को मन में सींचता हुआ उसकी बार-बार वन्दना करता रहूँ।। ३ ।। मैं मन में सुमिरन करता हुआ आशा लगाए रहता हूँ और तेरे सेवक की संगत को माँगता हूँ। हे प्रभु, नानक पर दया करो और अपने दास को अपने चरणों में लगा लो।। ४ ।। २ ।। ४२।। सूही महला ५ ।। जिस माया ने सारे खण्डों और ब्रह्माण्ड को मोहित कर रखा है मैं उसी के जाल में पड़ रहा हूँ। हे प्रभु, इस पापी जीव की रक्षा कर लो और इसे अपना नाम प्रदान करो।। १ ।। रहाउ।। जिसके कारण कोई भी सुखी नहीं है मैं उसके पीछे जा रहा हूँ। जो सबको छोड़कर चल देती है मैं बार बार उसी में ही लिपट रहा हूँ।। १ ।। हे दया करने वाले प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि मैं तेरे गुणों का गायन करता रहूँ। हे प्रभु, नानक की यही

बेनती साधसंगि समाउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४३ ॥

रागु सूही महला ५ घरु ५ पड़ताल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ॥ जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ भिंन भिंन भिंन भिन करीआ ॥ विचि मन कोटवरीआ ॥ निज मंदरि पिरीआ ॥ तहा आनद करीआ ॥ नह मरीआ नह जरीआ ॥ १ ॥ किरतनि जुरीआ बहु बिधि फिरीआ पर कउ हिरीआ ॥ बिखना घिरीआ ॥ अब साधू संगि परीआ ॥ हरि दुआरै खरीआ ॥ दरसनु करीआ ॥ नानक गुर मिरीआ ॥ बहुरि न फिरीआ ॥ २ ॥ १ ॥ ४४ ॥ सूही महला ५ ॥ रासि मंडलु कीनो आखारा ॥ सगलो साजि रखिओ पासारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बिधि रूप रंग आपारा ॥ पेखै खुसी भोग नही हारा ॥ सभि रस लैत बसत निरारा ॥ १ ॥ बरनु चिहनु नाही मुखु न मासारा ॥ कहनु न जाई खेलु तुहारा ॥ नानक रेण संत चरनारा ॥ २ ॥ २ ॥ ४५ ॥ सूही महला ५ ॥ तउ मै आइआ सरनी आइआ ॥ भरोसै आइआ किरपा आइआ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा दुतरु माइआ ॥ जैसे पवनु झुलाइआ ॥ १ ॥ सुनि सुनि ही डराइआ ॥ कररो ध्रमराइआ ॥ २ ॥ ग्रिह अंध कूपाइआ ॥ पावकु सगराइआ ॥ ३ ॥ गही ओट साधाइआ ॥ नानक हरि धिआइआ ॥ अब मै पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४६ ॥

रागु सूही महला ५ घरु ६ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर पासि बेनंतीआ मिलै नामु आधारा ॥ तुठा सचा पातिसाहु तापु गइआ संसारा ॥ १ ॥ भगता की टेक तूं संता की ओट तूं सचा सिरजनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ॥ सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ॥ २ ॥ तेरा रूपु अगंमु है अनूपु तेरा दरसारा ॥ हउ

विनती है कि मैं साधसंगति में लीन बना रहूँ।। २ ।। ३ ।। ४३।।

रागु सूही महला ५ घरु ५ पड़ताल

(बार बार उसी ताल पर गायन किया जाना) १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उस मोहन प्यारे प्रभु की प्रीति सब प्रकार की प्रीति से बड़ी है। हे मन, एक प्रभु का नाम जप क्योंकि अन्य तो कुछ भी गिनती में नहीं है; तू दुविधा की पगडण्डियों को छोड़कर शान्त पुरुषों के साथ लग जा।। १ ।। रहाउ।। गुणातीत प्रभु ने सभी गुणों को धारण किया है और शरीर रूपी भिन्न भिन्न कोठरियाँ बनाई हैं। इन कोठरियों में मन को इन छोटे-छोटे किलों का मालिक बनाया है। अपने अन्तर्मन के स्वरूप में उस प्रियतम का निवास है और वह वहाँ आनन्द उपभोग करता रहता है। वह ना तो कभी मरता है ना कभी जलता है।। १ ।। व्यक्ति अपने किये कर्मों में फँसा हुआ कई प्रकार से भटकता रहता है और पराए पदार्थों का हरण करता रहता है। विषय विकारों रूपी विघ्नों से वह घिरा रहता है और जब साधसंगति में आ पड़ता है तो प्रभु के द्वार पर पहुँच कर खड़ा हो जाता है। वहाँ प्रभु का दर्शन करता है और हे नानक, उस प्रभु गुरु से मिल जाता है और फिर वह योनियों में नहीं भटकता।। २ ।। १ ।। ४४ ।। सूही महला ५ ।। इस रचना को प्रभु ने रास लीला के लिये एक अखाड़े के रूप में बनाया है और सभी कुछ यहाँ बनाकर स्थित कर दिया है।। १ ।। रहाउ।। यहाँ अनेक प्रकार के रूप रंग है जिन्हें आनन्द से देखता हुआ जीव उनका उपभोग करता है परन्तु थकता नहीं। वह प्रभु तो सभी रसों को लेता है परन्तु फिर भी इन सबसे निर्लिप्त बना रहता है। हे प्रभु, तुम्हारा कोई वर्ण, चिन्ह, मुख या मुख पर उगे हुए दाढ़ी, मूंछ नहीं है और तुम्हारे इस खेल का कथन नहीं किया जा सकता। नानक तो संत पुरुषों के चरणों की धूल है।। २ ।। २ ।। ४५ ।। सूही महला ५ ।। हे प्रभु, मैं तेरे पास तुम्हारी शरण में भरोसा लेकर आया हूँ और तेरी कृपा से ही आया हूँ। जैसे भी तुझे अच्छा लगे हे स्वामी, मेरी रक्षा करो। मुझे तो इस रास्ते पर गुरु ने भेजा है।। १ ।। रहाउ ।। यह माया महा विकराल है। जैसे तेज हवा व्यक्ति को धकेलती जाती है वैसे ही यह माया दौड़ाए जाती है।। १ ।। मैं तो यह सुन सुनकर डर रहा हूँ कि धर्मराज बहुत ही कठोर है।। २ ।। यह संसार तो अंधेरा कुंआ है और अग्नि का सागर है अर्थात तृष्णाओं से पूर्ण है।। ३ ।। मैंने तो साधु पुरुषों का आसरा पकड़ लिया है और हे नानक, प्रभु का ही सुमिरन किया है। इस प्रकार मैंने उस पूर्ण को पा लिया है।। ४ ।। ३ ।। ४६ ।।

रागु सूही महला ५ घरु ६ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरी सच्चे गुरु के पास विनती है कि मुझे प्रभु-नाम का आसरा मिल जाए। जब वह सच्चा सम्राट प्रभु प्रसन्न हो गया तो इस संसार का सारा संताप समाप्त हो गया। हे प्रभु, भक्तों की टेक और सन्तों का आसरा तू ही है और तू ही सच्चा प्रभु संसार की सर्जना करने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। संसार को बनाने तथा चलाने की जो तेरी सामग्री है वह वास्तव में सत्य ही है और तेरा दरबार भी सच्चा है। तेरे भण्डार भी सच्चे हैं और सत्य रूप में तेरा ही प्रसार चारों ओर है।। २ ।। हे प्रभु, तेरा रूप अगम्य है अर्थात तुझ तक नहीं पहुँचा जा सकता परन्तु तेरा दर्शन भी अनुपम है। मैं तो तेरे

कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ ३ ॥ सभे इछा पूरीआ जा पाइआ अगम अपारा ॥ गुरु नानकु मिलिआ पारब्रहमु तेरिआ चरणा कउ बलिहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४७ ॥

रागु सूही महला ५ घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला ॥ साई भगति जो तुधु भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला ॥ १ ॥ मेरे राम राइ संता टेक तुम्हारी ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु मनि तनि तूहै अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं दइआलु क्रिपालु क्रिपा निधि मनसा पूरणहारा ॥ भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तूं भगतन का पिआरा ॥ २ ॥ तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते ॥ इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते ॥ ३ ॥ दिनु रैणि सासि सासि गुण गावा जे सुआमी तुधु भावा ॥ नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४८ ॥ सूही महला ५ ॥ विसरहि नाही जितु तू कबहू सो थानु तेरा केहा ॥ आठ पहर जितु तुधु धिआई निरमल होवै देहा ॥ १ ॥ मेरे राम हउ सो थानु भालण आइआ ॥ खोजत खोजत भइआ साधसंगु तिन्ह सरणाई पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे हारे इकु तिलु नही कीमति पाई ॥ साधिक सिध फिरहि बिललाते ते भी मोहे माई ॥ २ ॥ दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥ तिन्ह भी अंतु न पाइओ तेरा लाइ थके बिभूता ॥ ३ ॥ सहज सूख आनंद नाम रस हरि संती मंगलु गाइआ ॥ सफल दरसनु भेटिओ गुर नानक ता मनि तनि हरि हरि धिआइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४९ ॥ सूही महला ५ ॥ करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥ निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥ १ ॥ संतहु सागरु पारि उतरीऐ ॥ जे को बचनु कमावै संतन का सो गुर परसादी तरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै ॥ साधसंगि जो हरि गुण गावै सो निरमलु करि लीजै ॥ २ ॥ बेद कतेब सिम्रिति सभि सासत इन्ह पड़िआ मुकति न होई ॥ एकु अखरु जो गुरमुखि जापै तिस की निरमल सोई ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण

उन सेवकों पर कुर्बान जाता हूँ जिन्हें प्रभु-नाम ही प्यारा लगता है।। ३ ।। उस अगम्य और अपरम्पर प्रभु को पाने के बाद मेरी सभी इच्छाएं पूरी हो गई। हे परब्रह्म प्रभु, मुझे गुरु के रूप में नानक मिल गया है और मैं तेरे चरणों पर बलिहारी जाता हूँ।। ४ ।। १ ।। ४७ ।।

रागु सूही महला ५ घरु ७ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, जिस पर तू दयालु हो जाता है उसी से तू अपना हुकुम भी मनवाता है। तुम सभी जीवों का पालन-पोषण करने वाले हो और जो तुझे अच्छी लगती है वही भक्ति वास्तविक भक्ति है।। १ ।। हे मेरे राजन प्रभु, सन्तों को तो केवल एक तुम्हारी ही टेक है। जो तुझे अच्छा लगता है वही हम सबको स्वीकार्य है और हमारे मन और तन का आसरा भी तू ही है।। १ ।। रहाउ ।। तू ही दयालु, कृपालु, कृपा का समुद्र और सभी इच्छाएं पूरी करने वाला है। हे प्राणपति प्रियतम, ये भक्त सब तेरे ही हैं और तू ही भक्तजनों का प्यारा है।। २ ।। तुम नापे ना जा सकने वाले अपार और अत्यन्त ऊँचे हो तथा दूसरा कोई भी तेरे जैसा नहीं है। हे सुखदाता प्रभु, हमारी यही अरदास है कि तू हमें कभी भी ना भूले।। ३ ।। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तभी मैं दिन-रात और श्वास-श्वास के साथ तुम्हारे गुण गाता रह सकता हूँ। तेरा नाम ही सुख है और नानक वही माँगता है। यदि प्रभु प्रसन्न हो जाए तभी उसे पाया जा सकता है।। ४ ।। १ ।। ४८ ।। सूही महला ५ ।। हे प्रभु, तेरा वह कौन सा स्थान है जहाँ रहते हुए हम लोगों को तू कभी भी नहीं भूलता है; जहाँ आठों पहर तेरी आराधना की जाए और मेरा शरीर निर्मल हो जाए।। १ ।। हे प्रभु, मैं उसी स्थान को खोजने आया हूँ और खोजते-खोजते मेरा संग साथ साधु पुरुषों के साथ हो गया और उन्होंने मुझे अपनी शरण में ले लिया।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों ब्रह्मा वेद पढ़ते-पढ़ते थक गए परन्तु उसका तिल मात्र भी मूल्य नहीं जान सके। सिद्ध और अनेकों साधक प्रलाप करते हुए भटक रहे हैं क्योंकि उन्हें भी माया ने मोहित कर रखा है।। २ ।। दस अवतार रूपी राजा हुए हैं और बहुत बड़ा अवधूत और त्यागी महादेव भी हुआ है। ये सभी भभूत लगा-लगा कर थक गए हैं परन्तु ये सब तेरा ओर छोर नहीं जान सके।। ३ ।। प्रभु के सन्तों के मंगलगीत गाने से सहज सुख, आनन्द और प्रभु-नाम का रस प्राप्त होता है। हे नानक, गुरु का फलदायक दर्शन करने से मन-तन में प्रभु की आराधना हो रही है।। ४ ।। २ ।। ४६ ।। सूही महला ५ ।। ये धर्म कर्मों के नाम पर जो पाखण्ड दिखाई दे रहे हैं, ऐसा करने वालों के सिर से यमदण्ड समाप्त नहीं हो पाता। उस कर्ता प्रभु का शुद्ध गुणानुवाद करो जिसका क्षण भर सुमिरन करने से ही व्यक्ति छूट जाता है।। १ ।। हे शान्त पुरूषो, इस संसार सागर को पार करो। गुरु की कृपा से वही इसको तैर सकता है जो शान्त पुरूषों के उपदेश के अनुसार अपना आचरण बनाए रखता है।। १ ।। रहाउ।। करोड़ों तीर्थों का स्नान तो इस कलियुग में मैला ही करने वाला है। साधसंगति में जो प्रभु के गुण गाता है उसे ही वास्तव मे निर्मल माना जाता है।। २ ।। वेदों-कतेबों, स्मृति एवं शास्त्रों को पढ़ने मात्र से मुक्ति नहीं होती। गुरमुख बनकर जो केवल एक अक्षर प्रभु का सुमिरन करता है उसकी महिमा शुद्ध महिमा होती है।। ३ ।। क्षत्रिय, ब्राह्मण,

सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५० ॥ सूही महला ५ ॥ जो किछु करै सोई प्रभ मानहि ओइ राम नाम रंगि राते ॥ तिन्ह की सोभा सभनी थाई जिन्ह प्रभ के चरण पराते ॥ १ ॥ मेरे राम हरि संता जेवडु न कोई ॥ भगता बणि आई प्रभ अपने सिउ जलि थलि महीअलि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि अप्राधी संतसंगि उधरै जमु ता कै नेड़ि न आवै ॥ जनम जनम का बिछुड़िआ होवै तिन्ह हरि सिउ आणि मिलावै ॥ २ ॥ माइआ मोह भरमु भउ काटै संत सरणि जो आवै ॥ जेहा मनोरथु करि आराधे सो संतन ते पावै ॥ ३ ॥ जन की महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ कहु नानक जिन सतिगुरु भेटिआ से सभ ते भए निकाणे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५१ ॥ सूही महला ५ ॥ महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥ तेरा माणु ताणु रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ॥ १ ॥ मेरे राम राइ तुधु चिति आइऐ उबरे ॥ तेरी टेक भरवासा तुम्हरा जपि नामु तुम्हारा उधरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते काढि लीए तुम्ह आपि भए किरपाला ॥ सारि सम्हालि सरब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥ २ ॥ आपणी नदरि करे परमेसरु बंधन काटि छडाए ॥ आपणी भगति प्रभि आपि कराई आपे सेवा लाए ॥ ३ ॥ भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा ॥ नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५२ ॥ सूही महला ५ ॥ जब कछु न सीओ तब किआ करता कवन करम करि आइआ ॥ अपना खेलु आपि करि देखै ठाकुरि रचनु रचाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम राइ मुझ ते कछू न होई ॥ आपे करता आपि कराए सरब निरंतरि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गणती गणी न छूटै कतहू काची देह इआणी ॥ क्रिपा करहु प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली ॥ २ ॥ जीअ जंत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईऐ ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि कुदरति कीम न पाईऐ ॥ ३ ॥ निरगुणु मुगधु अजाणु अगिआनी करम धरम नही जाणा ॥ दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५३ ॥ सूही महला ५ ॥

शूद्र, वैश्य चारों वर्णों को एक जैसा ही उपदेश है कि गुरमुख बनकर जो भी नाम का जाप करता है हे नानक, इस कलियुग में उसी का उद्धार होता है क्योंकि वह प्रभु प्रत्येक हृदय में व्याप्त है।। ४ ।। ३ ।। ५० ।। सूही महला ५ ।। जो प्रभु नाम के रंग में लीन हैं वे वही मानते हैं जो प्रभु करता है। जिन्होंने प्रभु के चरणों को पहचान लिया है उनकी महिमा सभी स्थानों पर होती है।। १ ।। हे मेरे प्रभु, प्रभु के सन्तों जितना बड़ा कोई नहीं है; भक्तजनों की भी प्रीति अपने प्रभु से लग गई है तथा यह प्रभु जल, स्थल और अंतरिक्ष में सर्वत्र व्याप्त है।। १ ।। रहाउ ।। सन्त पुरुषों के साथ करोड़ों अपराधियों का उद्धार हो जाता है और यम तो फिर उनके पास भी नहीं आता। अनेकों जन्मों का भी यदि कोई बिछुड़ा हो तो सत्संगति उसे प्रभु से मिला देती है।। २ ।। जो शान्त पुरुषों की शरण में आ जाता है उसका मोह, भ्रम, भय तथा मायावी बन्धन कट जाते हैं। जिस भी उद्देश्य को जीव लेकर आराधना करता है सन्तों के पास वह उद्देश्य पूरा हो जाता है।। ३ ।। जो सेवक प्रभु को अच्छे लगते हैं उनकी महिमा का कहाँ तक वर्णन किया जाए। नानक का कथन है कि जिन्होंने सच्चा गुरु देख लिया है वे अब किसी के भी मोहताज नहीं रहे हैं।। ४ ।। ४ ।। ५१ ।। सूही महला ५।। हे प्रभु, हम तेरी शरण में पड़े हैं और इस संसार रूपी महा अग्नि से तूने हाथ देकर हमारी रक्षा की है। हमारे हृदय में तो तेरा ही सम्मान और तेरा ही बल है तथा हमने किसी अन्य पर से लगी हुई आशा दूर कर दी।। १ ।। हे मेरे राम, यदि तुम्हारे ध्यान में हम आ जाएं तो हमारा उद्धार होता है। हमें तेरा ही भरोसा एवं आसरा है और तुम्हारे नाम का जाप करके ही हमारा उद्धार होता है।। १ ।। रहाउ।। तुमने स्वयं कृपालु बनकर हमें संसार रूपी अंधेरे कुएं से निकाल लिया है। तूने हमारी खोज खबर लेकर हमें सभी सुख दिए हैं और तू ही हम सबका पालन-पोषण करता है।। २ ।। परमेश्वर जब अपनी कृपादृष्टि डालता है तो सभी बन्धनों को काटकर हमें छुड़ा लेता है। अब प्रभु ने अपनी भक्ति हमसे आप ही कराई है और आप ही हमें सेवा में लगाया है।। ३ ।। मेरा भ्रम चला गया है, भय और मोह नष्ट हो गए हैं और मेरे सभी दुख एवं चिन्ताएं मिट गई हैं। उस सुखदाता प्रभु ने दया की है और हे नानक, हमें पूर्ण सच्चा गुरु प्राप्त हो गया है।। ४ ।। ५ ।। ५२ ।। सूही महला ५ ।। जब कुछ भी नहीं था उस समय हे जीव, तू क्या करता था और कौन से कर्मों के कारण तू यहाँ आया। उस मालिक ने स्वयं यह रचना की है और अपने इस खेल को करता हुआ वह स्वयं ही देखता है।। १ ।। हे मेरे प्रभु, मुझसे तो कुछ भी होने वाला नहीं है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ कराता है और सबके अन्तर्मन में वही बसता है।। १ ।। रहाउ ।। कर्मों के हिसाब किताब से तो यह मूर्ख और कच्चा शरीर कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। हे करने वाले प्रभु, कृपा करो क्योंकि तेरी कृपा ही अपने आप में निराली है।। २ ।। ये जितने जीव जन्तु हैं ये सब तेरे ही बनाए हुए है और हर हृदय में तेरा ही सुमिरन किया जाता है। तेरी गति और सीमा तो तू ही जानता है क्योंकि हम तो तेरी शक्ति का मूल्य नहीं आँक सकते।। ३ ।। मैं गुण विहीन, मूर्ख, अनजान और अज्ञानी हूँ तथा धर्म-कर्म कुछ नहीं जानता। हे प्रभु, दया करो ताकि नानक तुम्हारे गुणों का गायन करे और इसे तुम्हारी रज़ा मीठी लगती रहे।। ४ ।। ६ ।। ५३ ।। सूही महला ५ ।।

भागठड़े हरि संत तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरि नामा ॥ परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥ १ ॥ मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ केसा का करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ २ ॥ सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥ ३ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ नानक की प्रभ पासि बेनंती तेरे जन देखणु पावा ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५४ ॥ सूही महला ५ ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर आपे करणैहारा ॥ चरण धूड़ि तेरी सेवकु मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा ॥ १ ॥ मेरे राम राइ जिउ राखहि तिउ रहीऐ ॥ तुधु भावै ता नामु जपावहि सुखु तेरा दिता लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइहि ॥ तहा बैकुंठु जह कीरतनु तेरा तूं आपे सरधा लाइहि ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि नामु जीवा तनु मनु होइ निहाला ॥ चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा मेरे सतिगुर दीन दइआला ॥ ३ ॥ कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी जितु तुमरै दुआरै आइआ ॥ नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५५ ॥ सूही महला ५ ॥ तुधु चिति आए महा अनंदा जिसु विसरहि सो मरि जाए ॥ दइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआए ॥ १ ॥ मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥ अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण धूड़ि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई ॥ अंम्रित बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते संगु पाई ॥ २ ॥ अंतर की गति तुधु पहि सारी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ जिस नो लाइ लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि मागउ इकु दाना साहिबि तुठै पावा ॥ सासि सासि नानकु आराधे आठ पहर गुण गावा ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५६ ॥ सूही महला ५ ॥ जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै ॥ १ ॥ मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे ॥

हे प्रभु, तुम्हारे सन्त पुरुष बड़े भाग्यशाली है। जिनके घर में प्रभु नाम का धन है उनका आना ही यहाँ पर सफल गिना जाता है और उनकी कामनाएँ ही पूरी होती हैं।। १ ।। हे मेरे प्रभु, मैं हरि के सेवकों पर बलिहारी जाता हूँ। अपने केशों का चँवर बनाकर उन पर डुलाता हूँ और उनकी चरण-धूलि अपने मुख पर लगाता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के सेवक जन्म-मरण दोनों से ही परे रहते हैं और वे ही लोग परोपकारी बनकर इस संसार में आते हैं। वे वास्तविक आध्यात्मिक दान देकर लोगों को भक्ति में लगाते हैं और प्रभु से उन्हें मिला देते हैं।। २ ।। उनका हुकुम भी सच्चा होता है उनकी बादशाहत भी सच्ची होती है और वे सच्चे प्रभु में ही लीन बने रहते हैं। उनका सुख भी सच्चा और बड़प्पन भी सच्चा होता है। उनके गुणों को तो केवल प्रभु ही जान सकता है और यह मनुष्यों के बस में नहीं है।। ३ ।। मैं पंखा डुलाऊं, पानी भरूं और ऐसे प्रभु के सेवक के लिये पिसान को पीसने का काम करूं। नानक की तो प्रभु के पास विनती है कि हे प्रभु, काश, मैं तेरे सेवकों के दर्शन कर सकूं।। ४ ।। ७ ।। ५४ ।। सूही महला ५ ।। वह परब्रह्म परमेश्वर ही सच्चा गुरु है और स्वयं ही सब कुछ करने कराने वाला है। तेरे चरणों की धूलि तेरा सेवक माँगता है और तेरे दर्शन के लिये बलिहारी जाता है।। १ ।। हे मेरे राजन प्रभु, तू जैसा रखे हमें वैसा ही रहना है। तुझे अच्छा लगे तो तू अपने नाम का सुमिरन करवाता है और तेरा दिया हुआ सुख ही हम प्राप्त करते हैं।। १ ।। रहाउ ।। मुक्ति, भोजन और संसार से निर्लिप्त रहने की युक्ति हे प्रभु, तेरी सेवा से ही प्राप्त होती है और यह सेवा भी तू आप ही करवाता है। हे प्रभु, जहाँ तेरा कीर्तन होता है वही स्थान बैकुण्ठ है और इस प्रकार की श्रद्धा भी तू स्वयं ही जगाता है।। २ ।। प्रभु नाम का सुमिरन करके ही मैं जीवित बना रहता हूँ और मेरा तन मन आनन्दित बना रहता है। हे मेरे सच्चे गुरु और दीन दयालु प्रभु, मैं तो तेरे चरण कमलों को धो-धोकर पीता रहूँ।। ३ ।। मैं तो उस सुन्दर और सुहावनी बेला पर कुर्बान जाता हूँ जब मैं तुम्हारे द्वार पर आ पहुँचा हूँ। नानक पर जब प्रभु कृपालु हो गए तो उसने पूर्ण सच्चे गुरु को प्राप्त कर लिया।। ४ ।। ८ ।। ५५ ।। सूही महला ५ ।। जब तू चित्त में याद आ जाता है तो चित्त महा आनन्द की अवस्था में पहुँच जाता है। जिसे वह प्रभु भूल जाता है वह जीव आध्यात्मिक रूप से मर जाता है। हे कर्ता प्रभु, जिस पर तू दयालु होता है वही सदैव तुम्हारा सुमिरन करता रहता है।। १ ।। हे प्रभु, तू ही मुझ सम्मानहीन का सम्मान है। मैं अपने प्रभु के आगे यह अरदास करता हूँ कि हे प्रभु, मैं तेरी अमृतवाणी सुनकर ही आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहूँ।। १।। रहाउ ।। तेरे सेवक की तो मैं चरण-धूलि बन जाऊं और तेरे दर्शन पर मैं बलिहारी जाऊं। तेरे अमृत वचनों को हृदय में धारण किए रहूँ और तेरी कृपा से सत्संगति को प्राप्त करता रहूँ ।।२।। मेरे अन्तर्मन की अवस्था तो सारी की सारी तेरे सामने है; तेरे जैसा अन्य कोई भी नहीं है। जिसको तू अपने साथ लगा लेता है वही लगता है और वही तुम्हारा वास्तविक भक्त जाना जाता है।। ३ ।। यदि प्रभु प्रसन्न हो तो मुझे एक दान मिल सकता है जिसे मैं दोनों हाथ जोड़कर माँगता हूँ। नानक हर श्वास के साथ उस प्रभु की आराधना करता रहे; आठों प्रहर उसके गुण गाता रहे।।४।।६।।५६।। सूही महला ५ ।। हे प्रभु, जिसके सिर पर तू खड़ा है वह भला दुख कैसे पा सकता है। माया के अहंकार में मस्त जीव तो बोलना भी नहीं जानता और उसे मरना भी याद नहीं रहता है।।१।। हे मेरे प्रभु, तू सन्तों का है और सन्त तेरे हैं।

तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुखु नासा ॥ तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥ २ ॥ नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि ॥ तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि ॥ ३ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥ सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥ ४ ॥ १० ॥ ५७ ॥ सूही महला ५ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे ॥ जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे ॥ १ ॥ मेरे राम जी तूं प्रभ अंतरजामी ॥ करि किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर प्रभु अपना धिआईऐ गुर प्रसादि भउ तरीऐ ॥ आपु तिआगि होईऐ सभ रेणा जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ २ ॥ सफल जनमु तिस का जग भीतरि साधसंगि नाउ जापे ॥ सगल मनोरथ तिस के पूरन जिसु दइआ करे प्रभु आपे ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥ करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५८ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला १ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ किउ करि कंत मिलावा होई ॥ १ ॥ ना मै रूपु न बंके नैणा ॥ ना कुल ढंगु न मीठे बैणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि सीगार कामणि करि आवै ॥ ता सोहागणि जा कंतै भावै ॥ २ ॥ ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ अंति न साहिबु सिमरिआ जाई ॥ ३ ॥ सुरति मति नाही चतुराई ॥ करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥ ४ ॥ खरी सिआणी कंत न भाणी ॥ माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥ ५ ॥ हउमै जाई ता कंत समाई ॥ तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥ ६ ॥ अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ ॥ करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥ ७ ॥ भणति नानकु सहु है भी होसी ॥ जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥ ८ ॥ १ ॥

तेरे सेवक को किसी प्रकार का भय नहीं है और यम तो उसके पास भी नहीं आता।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, जो तेरे रंग में रंगे रहते हैं उनका जन्म-मरण का दुख नष्ट हो जाता है। उन्हें सच्चे गुरु का दिया हुआ भरोसा है कि तेरी कृपा को कोई भी मिटा नहीं सकता।। २ ।। ऐसे लोग प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं, सुख, फल प्राप्त करते है और आठों प्रहर उस प्रभु की आराधना करते हैं। तेरी शरण और तेरे भरोसे में रहते हुए ही वे पाँचों विकार रूपी दुष्टों को ठीक कर लेते हैं।। ३ ।। मैं कुछ भी ज्ञान ध्यान नहीं जानता और ना ही हे प्रभु, मैं तेरी खोज खबर जानता हूँ। मेरा सच्चा गुरु नानक सबसे महान है जिसने मेरी शक्ति अर्थात धार्मिक सत्ता को मुझ में कायम रखा हुआ है।। ४ ।। १० ।। ५७।। सूही महला ५ ।। मैं सब कुछ छोड़कर गुरु की शरण में आ गया हूँ इसलिये हे रक्षक प्रभु, मेरी रक्षा करो। तू जहाँ लगाता है हम बेचारे जीव वहीं लगे रहते हैं। ये जीव भला तुम्हारे सामने क्या हैं।। १ ।। हे सबमें रमण करने वाले प्रभु, तू ही अन्तर्यामी है। हे दयालु गुरुदेव, तू कृपा कर जिससे हे मालिक, मैं सदैव तेरे गुण गाता रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। आठों प्रहर अपने प्रभु का सुमिरन करते रहना चाहिये और गुरु की कृपा से संसार रूपी समुद्र को पार कर लेना चाहिए। अपने अंहकार को त्यागकर सबकी चरण-धूलि बने रहकर इस विधि से विषयों की ओर से मरकर आध्यात्मिक रूप से जीवित बने रहना चाहिए।। २ ।। जो साधसंगति में प्रभु का नाम जपते हैं इस संसार में उन्हीं का जीवन सफल है। जिस पर प्रभु स्वयं दया करता है उसी के सारे उद्देश्य पूरे होते हैं।। ३ ।। हे दीनदयालु, कृपालु प्रभु, मैं तेरी शरण में आ गया हूँ। नानक तो साधु पुरुषों की चरणों की धूल है जिसे कृपा करके अपना नाम प्रदान करो।। ४ ।। ११ ।। ५८।।

रागु सूही अष्टपदियाँ महला १ घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मुझ में सभी अवगुण है और कोई भी गुण नहीं है। मेरा अपने प्रियतम से मेल भला कैसे होगा।। १ ।। ना तो मेरा सुन्दर रूप है और ना ही मेरे बाँके नयन हैं। ना मेरा ऊँचा खानदान है, ना मेरे पास अच्छा व्यवहार करने की विधि है और ना ही मेरी बोली मीठी है।। १ ।। रहाउ ।। जीव-स्त्री सहज स्वभाव वाला सादा तथा प्रेमयुक्त श्रृंगार करे। वह तभी सुहागिन बन सकती है यदि वह अपने प्रियतम को भा जाए।। २ ।। ना उस प्रभु का कोई आकार है ना रूप-रेखा है और वह मालिक आयु के अंतिम समय में भी याद नहीं किया जा सकता।। ३ ।। मुझ में ना तो अच्छी बुद्धि है ना ही मेरी सुरति ऊँची है और ना ही मेरे पास कोई चतुराई है। हे प्रभु, कृपा करो और मुझे अपने चरणों में लगा लो।। ४ ।। मैं भला कैसी सयानी हूँ कि चतुर बनकर भी मैं उस प्रियतम को अच्छी नहीं लग सकी। संसारिक धंधों में लगी हुई मैं भ्रमों में भटकती रही हूँ।। ५ ।। जब मेरा अंहकार समाप्त हो जाएगा तभी मैं उस प्रियतम में लीन हो सकूंगी और तभी जीव स्त्री उस प्रियतम रूपी नवनिधि को पा सकेगी।। ६ ।। अनेकों जन्मों में बिछुड़ कर हे प्रभु, मैंने बहुत दुख पाया है। हे मेरे प्रियतम प्रभु, मुझे अपना हाथ देकर पकड़ लो।। ७ ।। नानक कहता है कि मालिक वर्तमान में भी है भूतकाल में भी था और आगे भी रहेगा। जिस भक्त को वह चाहता है उसे ही अपना बनकर उसके साथ आनन्दित बना रहता है।। ८ ।। १ ।।

सूही महला १ घरु ९ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

कचा रंगु कसुंभ का थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ ॥ विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ ॥ सचे सेती रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ ॥ १ ॥ रंगे का किआ रंगीऐ जो रते रंगु लाइ जीउ ॥ रंगण वाला सेवीऐ सचे सिउ चितु लाइ जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारे कुंडा जे भवहि बिनु भागा धनु नाहि जीउ ॥ अवगणि मुठी जे फिरहि बधिक थाइ न पाहि जीउ ॥ गुरि राखे से उबरे सबदि रते मन माहि जीउ ॥ २ ॥ चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥ तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥ मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥ ३ ॥ नित नित खुसीआ मनु करे नित नित मंगै सुख जीउ ॥ करता चिति न आवई फिरि फिरि लगहि दुख जीउ ॥ सुख दुख दाता मनि वसै तितु तनि कैसी भुख जीउ ॥ ४ ॥ बाकी वाला तलबीऐ सिरि मारे जंदारु जीउ ॥ लेखा मंगै देवणा पुछै करि बीचारु जीउ ॥ सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहारु जीउ ॥ ५ ॥ अन को कीजै मितड़ा खाकु रलै मरि जाइ जीउ ॥ बहु रंग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ ॥ नदरि प्रभू ते छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ ॥ ६ ॥ गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ ॥ खिंचोताणि विगुचीऐ बुरा भला दुइ नालि जीउ ॥ बिनु सबदै भै रतिआ सभ जोही जमकालि जीउ ॥ ७ ॥ जिनि करि कारणु धारिआ सभसै देइ आधारु जीउ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सदा सदा दातारु जीउ ॥ नानक नामु न वीसरै निधारा आधारु जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

सूही महला १ काफी घरु १० ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

माणस जनमु दुलंभु गुरमुखि पाइआ ॥ मनु तनु होइ चुलंभु जे सतिगुर भाइआ ॥ १ ॥ चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥ पति पाए दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि सचु सलाहि

सूही महला १ घरु ६   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

माया का रंग कुसुम्भ की तरह कच्चा होता है और चार दिन ही चलता है। प्रभु-नाम के बिना मनमुख रूपी स्त्री भ्रमों में भूली रही और इस प्रकार यह झूठी, ठगी और लूट ली गई। सच्चे प्रभु के लीन होने से व्यक्ति को फिर दूसरी बार जन्म नहीं लेना पड़ता।। १ ।। प्रभु के नाम रंग में रंगे हुओं को भला सांसारिक पदार्थों के रंग में कैसे रंगा जा सकता है। उस रंग देने वाले सच्चे प्रभु का सुमिरन करना चाहिये और उस परम सत्य में ही चित्त को लगाए रखना चाहिए।। १ ।। रहाउ।। बेशक चारों दिशाओं में व्यक्ति भटकता फिरे परन्तु भाग्य लेख के बिना प्रभु का नाम-धन प्राप्त नहीं होता। यदि जीव स्त्री अवगुणों में ठगी हुई भटकती रहती है तो वह कैदियों की तरह बन्धक बनी रहती है और उसे कोई भी ठिकाना नहीं मिलता। जो मन से शब्द में लीन बने रहते हैं गुरु के बचाए हुए ऐसे लोगों का ही उद्धार होता है।। २ ।। जो सफेद वस्त्र धारण किए रहते हैं उनके चित्त तो मैले और कठोर ही होते हैं। उनके मुख से प्रभु-नाम का उच्चारण नहीं होता और वे द्वैतभाव से लगे हुए चोरों की तरह कार्य करते रहते हैं। जो अपने मूल स्वभाव (ज्योति स्वरूप) को नहीं पहचानते वे लोग पशु के समान हैं।। ३ ।। मन सदैव खुशियों में लगा रहता है और सदैव सुख माँगता रहता है। उसे वह कर्ता प्रभु याद नहीं आता और बार-बार उसे दुख सताता रहता है। सुखों और दुखों को देने वाला दाता जिसके मन में बसता है उसके शरीर को भला कैसी भूख लग सकती है।। ४ ।। जिसके कर्मो का लेखा-जोखा अभी बाकी रहता है उसे ही हिसाब देने के लिए बुलाया जाता है और यम उसके सिर पर चोटें मारता है। जब वह लेखा माँगता है तो जीव को उसे देना ही पड़ता है और फिर हर बात का विचार करके पूछा जाता है। सच्चे प्रभु से जिन्होंने अपनी लौ लगा ली है उनका उद्धार हो जाता है और उन्हें वह क्षमाशील प्रभु क्षमा कर देता है।। ५ ।। प्रभु के बिना जो अन्य किसी को मित्र बनाता है वह मिट्टी में मिलकर मर जाता है। जो इस संसार के अनेको रंगों को देखकर इन्हीं में भूल जाता है वह भूला ही रहता है और उसका आवागमन भी बना रहता है। प्रभु की कृपादृष्टि से ही मुक्ति मिलती है और उसकी कृपादृष्टि से ही उससे मेल होता है।। ६ ।। व्यक्ति बेसमझ है, ज्ञान से विहीन है और गुरु के बिना इसे ज्ञान की खोज नहीं होती। अन्तर्मन की खींचतान में व्यक्ति ख्वार होता है और बुरा भला दोनों ही उसके साथ ही बना रहता है। शब्द के बिना और उस प्रभु के भय में चले बिना वह यम काल मारने के विचार से हमेशा देखता रहता है।। ७ ।। जिस प्रभु ने संसार को बनाकर टिकाया है वही सबको आसरा देता है। वह सदैव देता चले जाने वाला दाता है इसलिये उसे मन से क्यों भुलाया जाए। हे नानक, मुझे नाम विस्मृत ना हो क्योंकि यही निराश्रितों का आसरा है।। ८ ।। १ ।। २ ।।

सूही महला १ काफी घरु १०   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

यह मानव जीवन दुर्लभ है जिसकी कीमत कोई गुरमुख ही जानता है। यदि सच्चे गुरु से प्रेम लग जाए तो मन तन उसके प्रेम के लाल रंग में रंगा जाता है।।१।। ऐसे व्यक्ति सत्य पदार्थ को लेकर अपने जन्म को सँवारकर यहाँ से जाते हैं और सच्चे गुरु के शब्द के संयम में प्रभु दरबार में सम्मान पाते हैं।।१।। रहाउ।। जिसके मन तन में सत्य का ही गुणानुवाद चल रहा है

साचे मनि भाइआ ॥ लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥ २ ॥ हउ जीवा गुण सारि अंतरि तू वसै ॥ तूं वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥ ३ ॥ मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ रंगि रंगेतड़ा ॥ ४ ॥ नित नित रिदै समालि प्रीतमु आपणा ॥ जे चलहि गुण नालि नाही दुखु संतापणा ॥ ५ ॥ मनमुख भरमि भुलाणा ना तिसु रंगु है ॥ मरसी होइ विडाणा मनि तनि भंगु है ॥ ६ ॥ गुर की कार कमाइ लाहा घरि आणिआ ॥ गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ॥ ७ ॥ इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ मै दीजै नाम निवासु हरि गुण गावसी ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ सूही महला १ ॥ जिउ आरणि लोहा पाइ भंनि घड़ाईऐ ॥ तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥ १ ॥ बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं गुरमुखि रखणहारु हरि नामु धिआईऐ ॥ मेलहि तुझहि रजाइ सबदु कमाईऐ ॥ २ ॥ तूं करि करि वेखहि आपि देहि सु पाईऐ ॥ तू देखहि थापि उथापि दरि बीनाईऐ ॥ ३ ॥ देही होवगि खाकु पवणु उडाईऐ ॥ इहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईऐ ॥ ४ ॥ दिहु दीवी अंध घोरु घबु मुहाईऐ ॥ गरबि मुसै घरु चोरु किसु रूआईऐ ॥ ५ ॥ गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईऐ ॥ सबदि निवारी आगि जोति दीपाईऐ ॥ ६ ॥ लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईऐ ॥ सदा रहै निहकामु जे गुरमति पाईऐ ॥ ७ ॥ राति दिहै हरि नाउ मंनि वसाईऐ ॥ नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईऐ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥ सूही महला १ ॥ मनहु न नामु विसारि अहिनिसि धिआईऐ ॥ जिउ राखहि किरपा धारि तिवै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ मै अंधुले हरि नामु लकुटी टोहणी ॥ रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ अंतरि बाहरि भालि सबदि निहालिआ ॥ २ ॥ सेवी सतिगुर भाइ नामु निरंजना ॥ तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना ॥ ३ ॥ जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ कै ॥ जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै ॥ ४ ॥ हउ नाही तू होवहि तुध ही

वह सच्चे प्रभु के मन को भा जाता है। पूर्ण गुरु पाने के बाद मन तृप्त हो जाता है और प्रेम के लाल रंग में रंग जाता है।। २ ।। मैं तो तेरे गुणों का सुमिरन करके जीता हूँ और तू ही मेरे अन्तर्मन में बसता है। जब तू मन मे बसा रहता है तो व्यक्ति स्वयं ही सहजभाव से प्रभु के नाम-रस से पूर्ण हो जाता है।। ३ ।। हे मेरे मूर्ख मन, तुझे मैं कितना कह कहकर समझाऊं कि गुरमुख बनकर ही और प्रभु के गुणों का गायन करके उसके रंग में रंगा जाता है।। ४ ।। अपने प्रियतम को सदैव हृदय में सम्भाल कर रखो। यदि गुणों को साथ लेकर चलोगे तो दुख और संताप नहीं होगा।। ५ ।। मनमुख व्यक्ति भ्रमों में भूला हुआ रहता है और उस पर प्रेम का कोई रंग नहीं लगता। वह बेगानों की तरह मर जाता है और उसके मन और तन में रुकावटें ही पड़ी रहती हैं।। ६ ।। जो गुरु की सेवा करता है वह अपने घर में लाभ कमा कर आता है। वही गुरु की वाणी के माध्यम से निर्वाण पद को शब्द की सहायता से पहचान जाता है।। ७ ।। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छी लग जाए तो नानक एक अरदास करता है कि मुझे अपने नाम में ही निवास दो और मैं हरि-गुणों का गायन करता रहूँ।। ८ ।। १ ।। ३।। जिस प्रकार भट्ठी में लोहे को डालकर उसे तोड़कर फिर नया रूप दिया जाता है इसी प्रकार प्रभु से टूटा हुआ मनमुख व्यक्ति योनियों में पड़ा हुआ भटकता रहता है।। १ ।। उस प्रभु को बूझे बिना दुख ही दुख है और दुख ही पैदा किया जाता है। अहंकार में आवागमन बना रहता है और भ्रमों में पड़ा हुआ जीव भटकता रहता है।। १ ।। रहाउ।। हे प्रभु, तू गुरमुख व्यक्ति को बचा लेने वाला है और इसीलिये हे जीव, प्रभु-नाम का सुमिरन करना चाहिये। तेरी रजा में ही तुझसे मेल होता है और शब्द-ब्रह्म के अनुरूप आचरण किया जाता है।। २ ।। तू स्वयं ही इस रचना को कर करके देखता रहता है और तू जो देता है वही हम प्राप्त करते हैं। तू हमें देखता भी है, स्थापना भी करता है, नष्ट भी करता है और सब कुछ तेरी निगरानी में होता है।। ३ ।। यह शरीर तो मिट्टी हो जाएगा और इसे पवन उड़ा कर ले जाएगी। व्यक्ति के बैठने के वे विशाल कक्ष कहाँ गए अब तो व्यक्ति को कोई भी स्थान नहीं मिलता।। ४ ।। दिन में ही घोर अंधकार हो जाता है और व्यक्ति का घर लूट लिया जाता है। अहंकार के हाथों वह लूटा जा रहा है और इस घर के चोर के होते हुए भला रो रोकर किसे बताया जाए।। ५ ।। गुरमुख बने व्यक्ति को चोर नहीं सताता क्योंकि प्रभु का नाम उसे सदैव जगाए रहता है। शब्द ने उसके अन्तर्मन की आग को बुझा दिया होता है और वह अन्तर्मन की ज्योति से प्रकाशमान बना रहता है।। ६ ।। लालों और रत्नों जैसा प्रभु-गुरु का नाम सुरति द्वारा समझा जाता है और ऐसा व्यक्ति जो गुरमत को प्राप्त कर लेता है सदैव निष्काम बना रहता है।। ७ ।। दिन रात उस प्रभु-नाम को ही मन में बसाया जाना चाहिये। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तभी हे नानक, उस प्रभु से मेल होता है।। ८ ।। १ ।। ४ ।। सूही मः १ ।। मन से कभी भी प्रभु-नाम को मत भुलाओ और दिन रात उसका सुमिरन करते रहो। वह कृपा करने वाला प्रभु जैसे रखता है उसी में सुख का अनुभव करना चाहिये।। १ ।। मुझ अंधे के लिये प्रभु-नाम ही वह लकड़ी है जिसके बल पर मैं टटोल-टटोल कर मार्ग पाता हूँ। इसी के कारण मैं प्रभु के आसरे में बना रहता हूँ और मोहिनी माया मुझे मोहित नहीं करती।। १ ।। रहाउ ।। मैं जिधर भी देखता हूँ गुरु ने उस प्रभु को मुझे मेरे साथ ही दिखा दिया है। मैंने उसे अन्दर बाहर खोजा है और शब्द के माध्यम से मैं आनन्दित हो उठा हूँ।। २ ।। प्रेमपूर्वक मै सच्चे गुरु के माध्यम से प्रभु के निरंजन नाम का सुमिरन करता हूँ। हे भ्रम और भय को तोड़ देने वाले प्रभु, जैसा तुझे अच्छा लगता है वही मेरे लिये रज़ा बन जाता है।। ३ ।। जन्म के साथ ही मौत का दुख लगना शुरू हो जाता है लेकिन यदि प्रभु का गुणानुवाद किया जाए तो जीना मरना सब स्वीकार हो जाता है।। ४ ।। मैं कुछ भी नहीं हूँ, तू ही सब कुछ है और तुमने ही

साजिआ ॥ आपे थापि उथापि सबदि निवाजिआ ॥ ५ ॥ देही भसम रुलाइ न जापी कह गइआ ॥ आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ ॥ ६ ॥ तूं नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है ॥ गुरमुखि वेखि हदूरि अंतरि भी तू है ॥ ७ ॥ मै दीजै नाम निवासु अंतरि सांति होइ ॥ गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ५ ॥

रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥ गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥ १ ॥ बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥ सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥ जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे ॥ माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥ २ ॥ सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए ॥ साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए ॥ सची बाणी गुरमुखि आखै हउमै विचहु जाए ॥ आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥ ३ ॥ गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥ सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥ जमकालि बाधा त्रिसना दाधा बिनु गुर कवणु छडाए ॥ ४ ॥ सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए ॥ अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए ॥ सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए ॥ सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए ॥ ५ ॥ तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए ॥ हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए ॥ गुर की साखी सहजे चाखी त्रिसना अगनि बुझाए ॥ गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए

सब कुछ बनाया है। स्वयं ही स्थापना करके तू नष्ट करता है और फिर शब्द के माध्यम से सबको बड़प्पन प्रदान करता है।। ५ ।। शरीर को राख में मिलाकर पता नहीं यह जीव किधर चला जाता है। इस स्थापना और विनष्टीकरण दोनों में वह प्रभु स्वयं ही कार्यशील रहता है यही तथ्य आश्चर्यपूर्ण है।। ६ ।। हे प्रभु, तू दूर नहीं है और तू सब कुछ जानता है। गुरमुख बनकर उसे देखा जाता है। हे प्रभु, सबके अन्दर भी तू ही है।। ७ ।। मेरे हृदय में अपने नाम का निवास प्रदान करो जिससे मेरे अन्दर शान्ति आ जाए। हे सच्चे गुरु, मुझे ऐसी मति प्रदान कर कि दास नानक तेरे गुण गाता रहे।। ८ ।। ३ ।। ५ ।।

रागु सूही महला ३ घरु १ अष्टपदियाँ 　　　　　१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु के नाम से ही सब कुछ उत्पन्न हुआ है और सच्चे गुरु के बिना नाम को पहचाना नहीं जाता। शब्द-गुरु महारस और मीठा है और उसको चखे बिना उसके स्वाद का पता नहीं लगता। व्यक्ति ने तो एक कौड़ी के बदले सारा जीवन गँवा दिया परन्तु इसने अपने आप को नहीं पहचाना। व्यक्ति जब गुरमुख होता है तो वह उस एक प्रभु को ही जानता है और फिर उसको अहंकार का दुख और संताप नहीं होता ।। १ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने सच्चे प्रभु के साथ मेरी सुरति लगा दी है। शब्द की पहचान ने मेरी आत्मा को प्रकाशित कर दिया है और मैं सहजभाव में लीन हो गया हूँ।। १ ।। रहाउ ।। गुरमुख ही उसका गुणानुवाद करता है, गुरमुख ही उसको बूझता है, गुरमुख ही शब्द का विचार चिन्तन करता है। यह शरीर और प्राण सभी उस परम गुरु परमात्मा से ही उत्पन्न होते हैं और गुरमुख व्यक्ति के कार्यों को वही संवारता है। मनमुख व्यक्ति अन्धा होकर अन्धा आचरण ही करता है और संसार में माया के विष की ही कमाई करता जाता है। माया के मोह में पड़ा वह सदैव दुख प्राप्त करता है और गुरु के बिना अत्यन्त दुखी बना रहता है।। २ ।। सेवक वही है जो सच्चे गुरु की सेवा करता है और सच्चे गुरु की मर्जी में चलता है। उसका शब्द भी सच्चा होता है उसकी स्तुति भी सच्ची होती है और वह सच्चे प्रभु को ही मन में बसाता है। गुरमुख व्यक्ति सच्चा कथन ही करता है और उसके अन्तर्मन से अहंकार जा चुका होता है। उस प्रभु की कृपा सच्ची है और वह सच्चे शब्द को ही हमें सुनाता है।। ३ ।। गुरमुख बनकर ही व्यक्ति परिश्रम करता है, गुरमुख बनकर ही लाभ कमाता है और गुरमुख बनकर ही वह प्रभु-नाम दूसरों को भी जपाता है। वह उस सच्चे प्रभु रंग में रंगा हुआ और गुरु के अनुरूप सहज स्वभाव के कारण सदैव अलिप्त बना रहता है। मनमुख व्यक्ति सदैव झूठ बोता है, जहर ही बोलता है और जहर ही खाता है। तृष्णाओं में जले हुए ऐसे व्यक्ति को यम भी बांध लेता है और अब उसे गुरु के बिना भला कौन छुड़ा सकता है।। ४ ।। शब्द-गुरु ही सच्चा तीर्थ है और ऐसे सत्य के सरोवर में स्नान करने की विधि गुरमुख व्यक्तियों को प्रभु स्वयं ही बताता है। शब्द-गुरु में ही वह अड़सठ तीर्थ दिखा देता है और शब्द-गुरु में ही स्नान करने से अन्तर्मन की मैल दूर होती है। सच्चा शब्द ही सत्य और निर्मल है और इसको न तो मैल लगती है और ना ही इससे मोह लगता है। पूर्ण गुरु से ही सच्चा गुणानुवाद और सच्ची स्तुति प्राप्त होती है।। ५ ।। यह मन तन सभी कुछ उस प्रभु का है परन्तु दुर्मति वाला जीव यह कहने में भी असमर्थ है। उस प्रभु का ही यदि हुकुम हो तो जीव निर्मल होता है और अन्तर्मन से अंहकार चला जाता है। गुरु के उपदेश को जब सहजभाव से ग्रहण किया जाता है तो वह तृष्णा की अग्नि बुझा देता है। शब्द-गुरु में लीन हो चुका व्यक्ति सहज पद को प्राप्त का लेता है और उस सहज में ही लीन बना रहता है

॥ ६ ॥ हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे ॥ एको सचा सभ महि वरतै विरला को वीचारे ॥ आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे ॥ ७ ॥ सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ॥ जंमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै ॥ नामु धिआए ता सतिगुरु भाए जो इछै सो फलु पाए ॥ नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाए ॥ ८ ॥ १ ॥ सूही महला ३ ॥ काइआ कामणि अति सुआल्हिउ पिरु वसै जिसु नाले ॥ पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले ॥ हरि की भगति सदा रंगि राता हउमै विचहु जाले ॥ १ ॥ वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ॥ पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥ काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ काइआ कामणि सदा सुहेली गुरमुखि नामु सम्हाला ॥ २ ॥ काइआ अंदरि आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥ मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि भालणि जाई ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता लखाई ॥ ३ ॥ काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ॥ इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा ॥ इसु काइआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा ॥ ४ ॥ काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा ॥ इहु मनु रतनु जवाहर माणकु तिस का मोलु अफारा ॥ मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै होर सभ भरमि भुलाई ॥ जिस नो देइ सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ॥ काइआ अंदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी पाई ॥ ६ ॥ काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा ॥ पूरै सतिगुरि आपि दिखाइआ सचि नामि निसतारा ॥ ७ ॥ सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी ॥ विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥ नानक सचु वडिआई पाए जिस नो हरि किरपा धारी ॥ ८ ॥ २ ॥

।। ६ ।। ऐसा व्यक्ति प्रभु-नाम को गुरु के प्रेम के माध्यम से सत्य करके जानता है। सच्चे प्रभु के नाम के साथ प्रेम के कारण गुरु के माध्यम से वास्तविक बड़प्पन प्राप्त होता है। इस तथ्य को कोई बिरला ही सोचता है कि वह एक सच्चा प्रभु सबमें कार्यशील है। यदि वह स्वयं मिला ले तो क्षमा भी कर देता है और सच्ची भक्ति के माध्यम से वह हमें सँवार भी देता है।। ७ ।। कोई गुरमुख ही जानता है कि सब कुछ सत्य है और सत्य ही सब ओर कार्यशील है। जन्मना, मरना तो हुकुम के कारण ही है। गुरमुख व्यक्ति ही अपने आप को पहचान पाता है। यदि प्रभु-नाम का सुमिरन करे तो व्यक्ति सच्चे गुरु को भा जाता है और उसे मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं। हे नानक, उस व्यक्ति का सब कुछ हो जाता है जो अपने अन्तर्मन से अहंकार को गँवा दे।। ८ ।। १ ।। सूही महला ३ ।। शरीर रूपी अत्यन्त सुन्दर कामिनी वही है, प्रियतम जिसके साथ बसता है। वह शब्द-गुरु को मन में धारण किए रहती है और उस सच्चे प्रियतम की सदा सुहागिन बनी रहती है। अपने अहंकार को अन्तर्मन से जलाकर प्रभु भक्ति में रंग कर वह सदैव उसी में लीन बनी रहती है।। १ ।। उस सच्चे गुरु की वाणी धन्य-धन्य है। वह पूर्ण गुरु में से ही उत्पन्न हुई है और उस परमसत्य परमात्मा में जाकर लीन हो गई है।। १ ।। रहाउ ।। ये खण्ड, देश, पाताल इत्यादि सब कुछ इस शरीर के अन्दर ही बसते हैं। शरीर में ही वह संसार को जीवन देने वाला दाता बसता है और सबका पालन पोषण करता है। कायारूपी स्त्री यदि गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन करती है तो सदैव सुखी बनी रहती है।। २ ।। इस शरीर के अन्दर वह स्वयं ही बसता है और उस अदृष्ट को देखा नहीं जा सकता। मनमुख मूर्ख व्यक्ति इस तथ्य को नहीं जानते और उसे ढूँढने के लिये बाहर भटकते रहते हैं। यदि जीव सच्चे गुरु की सेवा करे तो उस अदृष्ट प्रभु को भी सच्चा गुरु दिखा देता है।। ३ ।। इस शरीर के अन्दर ही रत्न पदार्थ और भक्ति के भण्डार भरे पड़े हैं। नवखण्ड पृथ्वी और नगर, दुकानें, बाजार सब कुछ इस शरीर में हैं। शब्द गुरु का चिन्तन करने से इस शरीर के अन्दर ही नवनिधियों के तुल्य प्रभु-नाम भी प्राप्त कर लिया जाता है।। ४ ।। शरीर में ही वह गुणों को तौलता और तुलवाता है तथा वास्तव में वह स्वयं ही तौलने वाला है। जीव का यह मन रत्न, जवाहर और माणिक के समान है और इसका मूल्य बहुत अधिक है परन्तु प्रभु-नाम को किसी भी कीमत पर नहीं पाया जाता है। इस नाम को तो गुरु के विचार और उपदेश के माध्यम से ही पाया जाता है।।५।। जो गुरमुख होता है वह वास्तव में अपने शरीर को ही खोजता है। अन्य सब तो भ्रमों में ही भटकते हैं। जिसे वह देता है वही सेवक इसे प्राप्त करता है और अन्य चतुराई क्या की जा सकती है। इस शरीर के अन्दर ही भय (संयम) और प्रेम का निवास है और गुरु कृपा से ही इसे जाना जाता है।। ६ ।। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सारे संसार की उत्पत्ति इस शरीर के अन्दर ही है। उस सच्चे प्रभु ने अपना खेल रचाया हुआ है और आवागमन को इस संसार में फैला रखा है। पूर्ण सच्चे गुरु ने यह स्वयं ही दिखा दिया है कि व्यक्ति का पार उतारा सच्चे नाम के माध्यम से ही हो सकता है।। ७ ।। जो शरीर सच्चे गुरु की सेवा करता है सच्चा प्रभु उसे स्वयं सँवारता है। सच्चे नाम के बिना उसके द्वार पर ठिकाना नहीं मिलता और यम व्यक्ति को ख्वार ही करता है। हे नानक, जिस पर प्रभु कृपा धारण करता है वही सत्य और बड़प्पन को प्राप्त करता है।। ८ ।। २ ।।

रागु सूही महला ३ घरु १०   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥ लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥ १ ॥ वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि ॥ २ ॥ गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि ॥ आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि ॥ ३ ॥ गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि ॥ तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि ॥ ४ ॥ दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि ॥ आपि डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि ॥ ५ ॥ निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥ मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥ ६ ॥ ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥ ७ ॥ महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ ओइ अंम्रित भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥ ८ ॥ गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥ से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि ॥ ९ ॥ देसी रिजकु संबाहि जिनि उपाई मेदनी ॥ एको है दातारु सचा आपि धणी ॥ १० ॥ सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥ आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥ ११ ॥ मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ ॥ प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १२ ॥ सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥ १३ ॥ सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि ॥ मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि ॥ १४ ॥ पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि ॥ १५ ॥ मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥ सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥ १६ ॥ आपि करे किसु आखीऐ आपे बखसणहारु ॥ गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु

राग़ु सूही महला ३ घरु १०   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

ऐसी दुनिया की प्रशंसा ना कर जिसे मर (नष्ट हो) कर ही यहाँ से जाना है। ऐसे लोगों की भी तारीफ मत कर जो मरकर राख हो जाएंगे।। १ ।। वाह मेरे मालिक, तू वाह-वाह है। गुरमुख बनकर सदैव उसी की प्रशंसा करनी चाहिए जो सच्चा और बेपरवाह है।। १ ।। रहाउ ।। दुनिया की दोस्ती में मनमुख व्यक्ति जल मरता है। वे यमपुरी में बाँधकर मारे जाते हैं और उन्हें फिर मौका नहीं मिलता कि फिर वे जीवन के हिसाब किताब को ठीक कर सकें।। २ ।। गुरमुख व्यक्ति का जीवन ही सार्थक होता है और ऐसे लोग ही सच्चे शब्द में लीन बने रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों की आत्मा में प्रभु प्रकाशित हो उठता है और वे सहजता के सुख में स्थित बने रहते हैं।। ३ ।। जिन्होंने शब्द-गुरु को भुला दिया वे द्वैतभाव में लीन बने रहते हैं। उनकी तृष्णा और भूख समाप्त नहीं होती और वे प्रतिदिन जलते हुए भटकते रहते हैं।। ४ ।। ऐसे व्यक्ति दुष्टों के साथ तो मित्रता करते हैं और शान्त पुरुषों के साथ शत्रुता का भाव रखते हैं। वे स्वयं तो कुटुम्ब समेत डूबते ही हैं सभी खानदानों को भी डुबा देते हैं।। ५ ।। निन्दा तो किसी की भी करना भला काम नही है परन्तु ये मूर्ख मनमुख व्यक्ति निन्दा ही करते हैं। उन निन्दकों के मुँह काले होते हैं और वे घोर नरक में जा पड़ते हैं।। ६ ।। यह मन जैसा सुमिरन करता है वैसा ही हो जाता है और वैसे ही कर्म किए चला जाता है। कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है क्योंकि जो आप बोया जाता है उसे आप ही खाना होता है।। ७ ।। महापुरुष तो किसी के प्रसंग में ही कुछ बोलते हैं। वे अमृत से भरे पूरे रहते हैं और उन्हें तिल मात्र भी लालच नहीं होता।। ८ ।। गुणवान व्यक्ति अर्थात गुरमुख गुणों को इकट्ठा करता हैं और अन्य लोगों को उपदेश देता हैं। उनसे मिल जाने वाले व्यक्ति भी भाग्यशाली हैं जो हर रोज प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं।। ९ ।। जिसने इस सृष्टि को पैदा किया है वह ही सबको रोजी रोटी देता है। वह स्वयं सच्चा मालिक एक ही है और सबका दाता है।। १० ।। वह सत्य तो हे जीव, तेरे साथ ही है, तू गुरमुख बनकर देख और निहाल हो जा। सदैव उस प्रभु का सुमिरन किये जा जो स्वयं ही कृपा करता है और अपने से मिला लेता है।। ११ ।। मन तो मैला है और सत्य निर्मल है फिर भला मिलाप कैसे होगा। यदि प्रभु मिला दे तो अहंकार को शब्द के माध्यम से जलाकर मिलन हो सकता है।। १२ ।। यदि वह सच्चा मालिक विस्मृत हो जाए तो इस संसार मे जीना धिक्कार है। यदि वह कृपा करे तो गुरु की मति के अनुरूप चिन्तन करते रहने पर वह कभी भी नहीं भूलता।। १३ ।। सच्चा गुरु यदि मिला दे तो मैं उससे मिला रहता हूँ और सत्य को हृदय में धारण किये रहता हूँ। यदि गुरु के प्रेम और प्यार के माध्यम से कोई उस प्रभु से मिल चुका है तो वह फिर कभी नहीं बिछुड़ता।। १४ ।। शब्द गुरु के चिन्तन के माध्यम से अपने प्रियतम की स्तुति की जाती है और शोभायुक्त स्त्री प्रियतम-प्रभु को मिलकर सुख प्राप्त करती है।। १५ ।। मनमुख व्यक्ति का अत्यन्त मैला और कठोर चित्त कभी भी प्रभु के प्रेम में नहीं भीगता। सांप को जितना मर्जी दूध पिलाया जाए परन्तु उसके अन्दर तो शुद्ध ज़हर ही बना रहता है।। १६ ।। जब वह प्रभु स्वयं ही करने वाला है और स्वयं ही क्षमाशील है तो फिर किसी अन्य को भला क्या कहा जाए। जब शब्द-गुरु के माध्यम से मन का मैल उतर जाता है तो जीव-स्त्री का शृंगार सत्य बन जाता है

॥ १७ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि ॥ ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ॥ १८ ॥ हउमै मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार ॥ पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहार ॥ १९ ॥ संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥ सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥ २० ॥ गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ ॥ हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ ॥ २१ ॥ गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥ तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ ॥ २२ ॥ खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ ॥ २३ ॥ सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि ॥ सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि ॥ २४ ॥ से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि ॥ अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंन्हि ॥ २५ ॥ गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि ॥ सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लएनि ॥ २६ ॥ सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि ॥ विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि ॥ २७ ॥ मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि ॥ एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥ २८ ॥ ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ ॥ इहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ ॥ २९ ॥ हरि की कीमति ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ ॥ ३० ॥ सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइ ॥ कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ ॥ ३१ ॥ चिरी विछुंने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि ॥ अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि ॥ ३२ ॥ ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि ॥ गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि ॥ ३३ ॥ सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहंनि ॥ इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहंनि ॥ ३४ ॥ १ ॥ ३ ॥

सूही महला ३ ॥ हरि जी सूखमु अगमु है कितु बिधि मिलिआ जाइ ॥ गुर कै सबदि भ्रमु कटीऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि हरि

।। १७ ।। उस सच्चे साहूकार प्रभु के व्यापारी भी सच्चे हैं और वहाँ झूठे व्यक्ति टिक नहीं पाते। झूठे व्यक्तियों को सत्य अच्छा नहीं लगता और वे दुख में ही मर खप जाते हैं।। १८ ।। यह सारा संसार अहंकार में मैला होकर भटकता है और बार बार मरता जन्मता है। अपने किये हुए कर्मों के अधीन ही वह संस्कार बनाये चला जा रहा है और उन संस्कारों को कोई भी मिटा नहीं सकता।। १६ ।। शान्त पुरुषों की संगत में यदि व्यक्ति मिल बैठे तो उसे सत्य के साथ प्यार हो जाता है। फिर वह सच्चे मन से सच्चे प्रभु के द्वार पर खड़ा होकर सत्य की प्रशंसा करता है और सत्याचरण करने वाला सचिआर बन जाता है।। २० ।। पूर्ण गुरु की बुद्धि भी पूर्ण है और वह दिन-रात प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता है। अहंकार मुझमें बहुत बड़ा रोग है और वह नाम सुमिरन के मार्ग पर बीच में ही रोक लेता है।। २१ ।। मैं तो अपने गुरु का गुणानुवाद करता हूँ और झुक-झुक कर उसके आगे चरण छूता हूँ। अपना तन मन उसको सौंप कर उसके आगे रखता हूँ और अन्तर्मन से अपने अहंकार को समाप्त करता हूँ।। २२ ।। इधर उधर की खींच-तान में व्यक्ति दुखी ही होता है इसीलिये उस एक प्रभु में ही लौ लगानी चाहिए। यदि तू अहंकार और मेरा मेरा को छोड़ दे तो सत्य में समाहित हुआ जा सकता है।। २३ ।। जो सच्चे गुरु से मिल जाते हैं वे ही भाई, बन्धु हैं और वे सच्चे शब्द मे लीन बने रहते हैं। वे सत्य से मिलकर फिर कभी नहीं बिछुड़ते और सच्चे द्वार पर वे दिखाई देते रहते हैं।। २४ ।। वे ही सज्जन हैं और भाई हैं जो उस सच्चे का सुमिरन करते रहते हैं। वे अवगुणों को तो घास फूस के भाव बेच देते है और गुणों की साझेदारी कर लेते हैं।। २५ ।। गुणों की साझेदारी से ही सुख उत्पन्न होता है और इस प्रकार वे सच्ची भक्ति करते हैं। शब्द गुरु के माध्मय से वे सत्य की खरीद करते हैं और प्रभु-नाम का लाभ प्राप्त करते हैं।। २६ ।। सोना, चांदी को पाप करके इकट्ठा किया जाता है परन्तु चलते समय ये साथ नहीं चलते। प्रभु-नाम के बिना कुछ भी साथ नहीं चलेगा और सब कुछ यम के द्वारा लूट लिया जाएगा।। २७ ।। मन की खुराक और सफर खर्च तो प्रभु का नाम है इसे हृदय में संभाल कर रखना चाहिए। हे गुरमुख जीव, यही धन अक्षय है और यही साथ निभने वाला है।। २८ ।। हे पूर्ण रूप से भूले हुए मन, तू अपना सम्मान गँवा कर यहाँ से जाएगा। यह संसार तो द्वैतभाव में फँसकर मोह में लीन है। तू गुरु की मति के अनुसार उस परम सत्य का सुमिरन कर ।। २६ ।। प्रभु का मूल्य नहीं आँका जा सकता और उसके यश को नहीं लिखा जा सकता। शब्द-गुरु से मन को और तन को यदि रंगा जाए तो जीवन प्रभु में लीन बना रहता है।। ३० ।। वह मेरा रंगीला आनन्द देने वाला प्रभु सहज स्वाभाविक रूप से ही अपने में रंग लेता है। जीव रूपी स्त्री पर तो रंग तभी चढ़ता है यदि वह प्रियतम के अंक में समा जाए।। ३१ ।। जो सच्चे गुरु की सेवा करते हैं वे बहुत देर से बिछुड़े हुए होने के बावजूद उस प्रभु से मिल जाते हैं। जिनके अन्तर्मन में नवनिधि रूपी प्रभु-नाम है उन्हें खाते खर्चते कमी नहीं आती और वे प्रभु के गुणों को सहज भाव से गाते रहते हैं।। ३२ ।। वे ना तो जन्मते है ना मरते है और ना उन्हें दुख सहना पड़ता है। जिन्हें गुरु बचा लेता है, उनका उद्धार हो जाता हैं और वे प्रभु के साथ केलि- क्रीड़ा करते रहते हैं।। ३३ ।। ऐसे सज्जन व्यक्ति मिल कर बिछुड़ते नहीं जो सदैव उस प्रभु से मिले रहते हैं। हे नानक, इस संसार में ऐसे बिरले लोग ही जाने जाते हैं जो सत्य को प्राप्त कर लेते हैं।। ३४ ।। १ ।। ३ ।। सूही महला ३ ।। प्रभु अत्यन्त सूक्ष्म और अगम्य है उसे किस प्रकार मिला जाए। शब्द-गुरु के माध्यम से भ्रम काटा जाता है और अपने आप ही वह प्रभु मन में आ बसता है।। १ ।। गुरमुख व्यक्ति प्रभु नाम का

नामु जपंनि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै मनि हरि गुण सदा रवंनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु सरवरु मान सरोवरु है वडभागी पुरख लहंन्हि ॥ सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि ॥ २ ॥ नामु धिआइन्हि रंग सिउ गुरमुखि नामि लगंन्हि ॥ धुरि पूरबि होवै लिखिआ गुर भाणा मंनि लएन्हि ॥ ३ ॥ वडभागी घरु खोजिआ पाइआ नामु निधानु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतम रामु पछानु ॥ ४ ॥ सभना का प्रभु एकु है दूजा अवरु न कोइ ॥ गुर परसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होइ ॥ ५ ॥ सभु अंतरजामी ब्रहमु है ब्रहमु वसै सभ थाइ ॥ मंदा किस नो आखीऐ सबदि वेखहु लिव लाइ ॥ ६ ॥ बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥ गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ ॥ ७ ॥ सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाइ ॥ जन नानक हरि आराधिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥ १ ॥ दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ क्रिपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥ २ ॥ जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥ ३ ॥ तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥ ४ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥ ५ ॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ ६ ॥ अखी काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई ॥ ७ ॥ जे पासि बहालहि ता तुझहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥ ८ ॥ जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोडि न जाई ॥ ९ ॥ जे तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिऐ मरि जाई ॥ १० ॥ वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥ ११ ॥ नानकु विचारा भइआ दिवाना हरि तउ दरसन कै ताई ॥ १२ ॥ झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥ १३ ॥ समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लंघि गुर पहि जाई ॥ १४ ॥ जिउ प्राणी

जाप करते रहते हैं। मैं उनपर बलिहारी जाता हूँ जो मन में प्रभु के गुणों का सुमिरन करते रहते हैं।। १ ।। रहाउ।। गुरु रूपी सरोवर मानसरोवर है जिसे भाग्यशाली व्यक्ति ही प्राप्त करते हैं। गुरुमुख सेवकों ने उस मानसरोवर रूपी गुरु को ढूँढ निकाला है और वे हंस नाम रूपी मोती चुग लेते हैं।। २ ।। वे प्रेमपूर्वक प्रभु-नाम का सुमिरन करते हैं और गुरमुख बनकर प्रभु-नाम में लगे रहते हैं। यदि पहले से ही उनके भाग्य लेख में लिखा हुआ है तो वे गुरु की रजा को मान लेते हैं।। ३ ।। भाग्यशाली व्यक्ति अपने घर अर्थात अन्तःकरण को भी खोजते हैं और प्रभु-नाम के भण्डार को पा लेते हैं। पूर्ण गुरु ने उस आत्म रुपी प्रभु को दिखा दिया है और उससे पहचान करा दी है।। ४ ।। सब लोगों का प्रभु एक ही है और दूसरा कोई नहीं है। गुरु की कृपा से वह जिसके मन में बस जाए उसी के शरीर में प्रकट हो उठता है।। ५।। वह अन्तर्यामी प्रभु ही सब कुछ है और वह ब्रह्म ही सब स्थानों में बसता है। बुरा किसको कहा जाए ; इसलिये हे जीव, लौ लगाकर देख लो वह शब्द रूप में सबमें ही दिखाई देगा।। ६ ।। वह तभी तक बुरा भला कहता है जब तक जीव द्वैतभाव में फँसा हुआ है। गुरमुख तो उस एक को ही जानता है और उस एक में ही लीन बना रहता है।। ७।। जो प्रभु को अच्छी लगती है वही सेवा है और वही सेवा प्रभु स्वीकार करता है। दास नानक ने तो गुरु चरणों में चित्त लगाकर उस प्रभु की ही आराधना की है।। ८ ।। २ ।। ४ ।। ६ ।।

रागु सूही अष्टपदियाँ महला ४ घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मुझे कोई मेरा प्यारा प्रियतम मिला दे, मैं उसके सामने अपने आप को बेच दूँ।। १ ।। ऐसा मैं प्रभु के दर्शन करने के लिए ही करूंगा। यदि कृपा कर दे तो सच्चा गुरु मिला लेता है और मैं प्रभु नाम का सुमिरन करता हूँ।। १ ।। रहाउ।। यदि तू मुझे सुख दे तो भी मैं तेरी आराधना करता हूँ और दुख में भी तेरा ही सुमिरन करता हूँ।। २ ।। यदि तू मुझे भूख भी दे दे तो मैं उसी में सन्तुष्ट बना रहता हूँ और दिए हुए दुख में भी सुख ही मनाउंगा ।। ३ ।। मैं तन और मन को काट-काट कर तुझ पर अर्पण करता रहूँ और अपने आप को यदि जलाना पड़े तो आग में भी जला डालूं।। ४ ।। तेरे दर्शन के लिए मैं संगत को पंखा डुलाऊं, उसके लिए पानी लाऊ और तू जो भी दे मैं उसे ही खाता रहूँ।। ५ ।। नानक गरीब तो हे प्रभु, तेरे दरवाजे पर आ गिरा है। यदि तू उसे अपने से मिला ले तो यह तेरा बड़प्पन होगा।। ६ ।। आँखे निकाल कर तेरे चरणों के नीचे रख दूँ और सारी धरती पर भ्रमण करता रहूँ ताकि शायद तुझे पा सकूं।। ७ ।। यदि तू मुझे अपने पास बैठा ले तब भी मैं तेरी आराधना करूं और यदि तू मुझे मारकर दूर भगा दे तब भी मैं तेरा ही सुमिरन करता रहूँ।। ८ ।। यदि लोग मेरी प्रशंसा करें तो वह वास्तव में तेरी ही प्रशंसा होगी और यदि वे निन्दा करें तब भी मैं तुझे छोड़कर नहीं जाऊंगा।। ९ ।। यदि तेरे साथ मेरी बनी रहे तो कोई कुछ भी कहता रहे मुझे परवाह नहीं परन्तु यदि मैं तुझको भूल जाऊं तो मैं वास्तव में मर ही जाऊं।। १० ।। मैं बार-बार गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और उस शान्त पुरुष के चरणों में गिरकर उसे मनाता हूँ।। ११ ।। हे प्रभु, तेरे दर्शन के लिये तो बेचारा नानक बावला हो गया है।। १२ ।। बहुत जोर का तूफान चलता हो और चाहे पानी भी बरसता हो तब भी मैं गुरु के दर्शन के लिये जरूर जाऊंगा।। १३ ।। यह संसार रूपी सागर बेशक बहुत ही खारा हो फिर भी गुरु का सिक्ख इसे पार करके गुरु के पास अवश्य जाता है।। १४ ।। जैसे कोई प्राणी

जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥ १५ ॥ जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥ १६ ॥ सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ बुलाई ॥ १७ ॥ नानक की बेनंती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥ १८ ॥ तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचु दे तुझहि धिआई ॥ १९ ॥ जो तुधु सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥ २० ॥ भंडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥ २१ ॥ जिसु तूं देहि सोई जनु पाए होर निहफल सभ चतुराई ॥ २२ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥ २३ ॥ इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई ॥ २४ ॥ जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥ २५ ॥ गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ न पाई ॥ २६ ॥ पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥ २७ ॥ सभु दिनसु रैणि देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥ २८ ॥ अनेक उपाव करी गुर कारणि गुर भावै सो थाइ पाई ॥ २९ ॥ रैणि दिनसु गुर चरण अराधी दइआ करहु मेरे साई ॥ ३० ॥ नानक का जीउ पिंडु गुरू है गुर मिलि त्रिपति अघाई ॥ ३१ ॥ नानक का प्रभु पूरि रहिओ है जत कत तत गोसाई ॥ ३२ ॥ १ ॥

रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १० १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥ तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु विसाहु ॥ गुर पूरे ते पाइआ अंम्रितु अगम अथाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ सतिगुरु वेखि विगसीआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ किरपा करि कै मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥ २ ॥ सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त तनु मनु देउ ॥ जे पूरबि होवै लिखिआ ता अंम्रितु सहजि पीएउ ॥ ३ ॥ सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ कोई ऐसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के धोवा पाउ ॥ ४ ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु मै प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ हरि पाइआ

जल के बिना मर जाता है उसी प्रकार सिक्ख भी गुरु के बिना मर जाता है।। १५।। जैसे जल बरसने से धरती सुन्दर लगती है उसी प्रकार सिक्ख भी गुरु से मिलकर आनन्दित हो जाता है।। १६ ।। हे प्रभु, मैं तेरे सेवक का भी सेवक होकर कार्यशील बना रहूँ और विनती कर करके मैं तुझे बुलाता रहूँ।। १७ ।। नानक की तो प्रभु के पास यही विनती है कि मैं गुरु से मिलकर विशाल सुख को प्राप्त करूं।। १८ ।। तु स्वयं ही गुरु है स्वयं ही चेला है और मैं भी गुरु के माध्मम से ही गुरु की आराधना करता हूँ अर्थात जब तू स्वयं ही गुरु है स्वयं ही सिक्ख है तो गुरु का सुमिरन करते करते तेरी ही आराधना हो जाती है क्योंकि गुरु हे प्रभु, तेरा ही रूप है।। १६ ।। जो तेरा सुमिरन करते हैं वे तेरे जैसे ही हो जाते हैं और तू ही सेवक की लाज रखता है।। २० ।। हे प्रभु, तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं। तू जिसे चाहता है उसे ही दिलाता है।। २१ ।। जिसे तू देता है वही सेवक प्राप्त करता है और अन्य सब चतुराईयाँ व्यर्थ हैं।। २२ ।। अपने गुरु का सुमिरन कर करके माया की नींद मे सोए हुए मन को जगाया जाता है।। २३ ।। नानक बेचारा तो एक दान माँगता है कि हे प्रभु, तू इसे अपने दासों का भी दास बना।। २४ ।। यदि गुरु डाँटता है तो भी वह मीठा लगता है और यदि वह क्षमा कर देता है तो यह भी उस गुरु का बड़प्पन है।। २५ ।। जो गुरमुख बोलता है वह स्वीकृत होता हैं परन्तु मनमुख व्यक्ति को कोई भी ठिकाना नहीं मिलता।। २६ ।। बेशक कितना ही पाला, ठंडी हवा और बर्फ भी बरसती हो तब भी गुरु का सिक्ख गुरु के दर्शन करने जाता ही है।। २७ ।। दिन-रात मैं अपने गुरु के दर्शन करता रहूँ और अपनी आँखों को गुरु के चरणों में ही लगाएं रखूं।। २८ ।। गुरु से मिलने के लिए मैं अनेकों उपाय करता हूँ परन्तु जो उस को भाता है वही सफल होता है।। २६ ।। रात दिन मैं गुरु के चरणों की आराधना करता रहूँ हे प्रभु, तुम ऐसी दया मुझ पर करो।। ३० ।। नानक का तो प्राण और शरीर गुरु ही है तथा वह गुरु से ही मिलकर तृप्त होता है।। ३१ ।। नानक का प्रभु जो सारी सृष्टि का मालिक है वह यत्र-तत्र सर्वत्र बस रहा है।। ३२ ।। १।।

रागु सूही महला ४ अष्टपदियाँ घरु १० १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

गुरु ने ही हमारा सच्चा प्रेम हमारे प्रियतम के साथ लगा दिया इसीलिये जब मैं गुरु को सामने देखता हूँ तो मैं तन मन से आनन्दित हो उठता हूँ।। १ ।। मैंने तो गुरु से परमात्मा के नाम की पूंजी प्राप्त कर ली है जो वास्तव में आध्यत्मिक जीवन देने वाली है, अगम्य है और गहरी है।। १ ।। रहाउ ।। मैं सच्चे गुरु को देखकर खिल उठता हूँ और अब प्रभु-नाम में मेरा प्यार बन गया है। जिन को गुरु ने कृपा करके प्रभु चरणों के साथ जोड़ दिया है उन्होंने दुनिया के मोह से मुक्ति का द्वार पा लिया है।। २ ।। सच्चा गुरु तो प्रभु नाम के लिये ही व्याकुल रहता है। यदि मुझे गुरु मिल जाए तो मैं अपना तन मन उसके सामने भेंट कर दूँ। यदि पहले से ही गुरु से मिलाप वाला लेख लिखा हुआ हो तब ही मैं अमृत रूपी सहज को धारण कर सकता हूँ।। ३ ।। सोते हुए भी गुरु की स्तुति की जानी चाहिए और उठकर भी गुरु का ही सुमिरन करना चाहिए। यदि कोई ऐसा गुरमुख मिल जाए तो मैं उसके चरणों को धोऊं।। ४ ।। कोई ऐसा सज्जन मिल जाए जो मुझे प्रियतम से मिला दे। सच्चे गुरु के मिलने से ही प्रभु को पाया जाता है

मिलिआ सहजि सुभाइ ॥ ५ ॥ सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का चाउ ॥ हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥ ६ ॥ जिउ मछुली विणु पाणीऐ रहै न कितै उपाइ ॥ तिउ हरि बिनु संतु न जीवई बिनु हरि नामै मरि जाइ ॥ ७ ॥ मै सतिगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिनु जीवा माउ ॥ मै गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ ॥ ८ ॥ हरि हरि नामु रतंनु है गुरु तुठा देवै माइ ॥ मै धर सचे नाम की हरि नामि रहा लिव लाइ ॥ ९ ॥ गुर गिआनु पदारथु नामु है हरि नामो देइ द्रिड़ाइ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर चरणी लागै आइ ॥ १० ॥ अकथ कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥ तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥ ११ ॥ सजणु मेरा एकु तूं करता पुरखु सुजाणु ॥ सतिगुरि मीति मिलाइआ मै सदा सदा तेरा ताणु ॥ १२ ॥ सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै ना जाइ ॥ ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ १३ ॥ राम नाम धनु संचिआ साबतु पूंजी रासि ॥ नानक दरगह मंनिआ गुर पूरे साबासि ॥ १४ ॥ १ ॥ २ ॥ ११ ॥

रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उरझि रहिओ बिखिआ कै संगा ॥ मनहि बिआपत अनिक तरंगा ॥ १ ॥ मेरे मन अगम अगोचर ॥ कत पाईऐ पूरन परमेसर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह मगन महि रहिआ बिआपे ॥ अति त्रिसना कबहू नही ध्रापे ॥ २ ॥ बसइ करोधु सरीरि चंडारा ॥ अगिआनि न सूझै महा गुबारा ॥ ३ ॥ भ्रमत बिआपत जरे किवारा ॥ जाणु न पाईऐ प्रभ दरबारा ॥ ४ ॥ आसा अंदेसा बंधि पराना ॥ महलु न पावै फिरत बिगाना ॥ ५ ॥ सगल बिआधि कै वसि करि दीना ॥ फिरत पिआस जिउ जल बिनु मीना ॥ ६ ॥ कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ एक आस ठाकुर प्रभ तोरी ॥ ७ ॥ करउ बेनती संतन पासे ॥ मेलि लैहु नानक अरदासे ॥ ८ ॥ भइओ क्रिपालु साधसंगु पाइआ ॥ नानक त्रिपते पूरा पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥

और वह बिना प्रयत्न किये हुए सहज स्वभाव से ही मिल जाता है।। ५ ।। सच्चा गुरु तो गुणों और प्रभु-नाम का सागर है और मुझे उसको देखने का बहुत ही चाव है। मै उसके बिना तो एक घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता और उसे बिना देखे मर जाता हूँ।। ६ ।। जैसे मछली पानी के बिना किसी भी उपाय से जीवित नहीं रहती उसी प्रकार प्रभु के बिना सन्त जीवित नहीं रहते और प्रभु नाम से विहीन होकर वे मर जाते हैं।। ७ ।। मेरा सच्चे गुरु के साथ प्यार है और हे माँ, मैं गुरु के बिना कैसे जीवित रहूं। मुझे तो गुरु-वाणी का ही आसरा है और मैं गुरुबाणी में ही लीन होकर जीवित बना रहता हूँ।। ८ ।। प्रभु का नाम ऐसा रत्न हैं कि हे माँ, यदि गुरु प्रसन्न हो तभी वह देता है। मुझे तो सच्चे नाम का ही आसरा है और मैं प्रभु में ही लौ लगाए रहता हूँ।। ६ ।। गुरु से मिला हुआ ज्ञान वास्तव में प्रभु नाम रूपी पदार्थ है। गुरु प्रभु के नाम को ही हृदय में पक्का करता है। जिसके पास होता है वही इसे जानता है और गुरु के चरणों में आ लगता है।। १० ।। प्रभु के प्रेम की वार्ता अकथनीय है। यदि कोई प्यारा इसे बताता है तो मैं उसे अपना मन दे दूं और झुक -झुक कर उसके चरणों को स्पर्श करूं।। ११ ।। हे मेरे एक ही सज्जन प्रभु, तू ही कर्ता है, तू ही सबमें रमण करने वाला है और तू ही सबसे सयाना है। सच्चे गुरु रूपी मित्र ने मुझे तुझ से मिला दिया है। मुझे तो सदैव तेरे बल का ही आसरा है।। १२ ।। मेरा सच्चा गुरु (प्रभु तो) सदैव बना रहने वाला है और वह ना तो आता है और ना यहाँ से जाता है। वह अविनाशी और सर्वव्यापक है और सबमें ही रमण कर रहा है।। १३ ।। मैंने तो राम नाम के धन का संचय किया है और मेरी रास पूंजी वैसी की वैसी ठीक पड़ी हुई है। हे नानक, प्रभु के दरबार में भी मुझे मान मिला है और इसीलिये मेरा पूर्ण गुरु धन्य है।। १४ ।। १ ।। २ ।। ११ ।।

रागु सूही अष्टपदियाँ महला ५ घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जीव विषयों के साथ उलझा पड़ा है और उसके मन में अनेकों तरंगें उठ रही हैं।। १ ।। हे मेरे मन, वह प्रभु अगम्य है एवं इन्द्रियों का विषय नहीं। ऐसे पूर्ण परमेश्वर को कैसे पाया जा सकता है।। १ ।। रहाउ।। व्यक्ति मोह में मगन होकर उसी में ही लिपटा हुआ है और इसकी व्यापक तृष्णाएँ कभी भी पूरी नहीं होतीं अर्थात् यह सन्तुष्ट नहीं होता।। २ ।। इसके शरीर में चाण्डाल-भूत बसता है और अज्ञान के कारण इसके सामने घोर अंधकार है जिससे इसे कुछ दिखाई नहीं देता।। ३ ।। भटकना और माया में लीन बने रहना इस जीव के साथ दो दरवाजे लगे हुए हैं इसीलिये प्रभु के दरबार तक इसका जाना ही नहीं होता।। ४ ।। आशा और भय में यह बंधा हुआ पड़ा है। इसे कोई स्थान नहीं मिलता इसलिए यह बेगानों की तरह भटकता रहता है।। ५ ।। प्रभु ने भी इसे सभी प्रकार के रोगों के वश में कर दिया है और इसीलिये यह तृष्णाओं में पड़ा हुआ उसी तरह भटकता है जैसे जल के बिना मछली की स्थिति होती है।। ६ ।। हे प्रभु, मेरे पास ना तो कोई सयानापन है और ना ही कोई तुझे प्रसन्न करने के लिये विशेष युक्ति मेरे पास है। हे प्रभु, मुझे तो केवल एक तुम्हारे पर ही आस है।। ७ ।। मैं तो सन्तजनों के पास विनती करता हूँ कि अरदास करने वाले नानक को हे प्रभु, अपने से मिला लेना।। ८ ।। वह प्रभु कृपालु हुआ तो मुझे साधसंगति प्राप्त हो गई और उस पूर्ण प्रभु को पाकर हे नानक, हम तृप्त हो गए हैं।। १ ।। रहाउ दूसरा ।। १ ।।

रागु सूही महला ५ घरु ३ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिथन मोह अगनि सोक सागर ॥ करि किरपा उधरु हरि नागर ॥ १ ॥ चरण कमल सरणाइ नराइण ॥ दीना नाथ भगत पराइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥ साधसंगि जमदूत न भेटन ॥ २ ॥ जीवन रूप अनूप दइआला ॥ रवण गुणा कटीऐ जम जाला ॥ ३ ॥ अंम्रित नामु रसन नित जापै ॥ रोग रूप माइआ न बिआपै ॥ ४ ॥ जपि गोबिंद संगी सभि तारे ॥ पोहत नाही पंच बटवारे ॥ ५ ॥ मन बच क्रम प्रभु एकु धिआए ॥ सरब फला सोई जनु पाए ॥ ६ ॥ धारि अनुग्रहु अपना प्रभि कीना ॥ केवल नामु भगति रसु दीना ॥ ७ ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई ॥ नानक तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु ९ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिन डिठिआ मनु रहसीऐ किउ पाईऐ तिन्ह संगु जीउ ॥ संत सजन मन मित्र से लाइनि प्रभ सिउ रंगु जीउ ॥ तिन्ह सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भंगु जीउ ॥ १ ॥ पारब्रहम प्रभ करि दइआ गुण गावा तेरे नित जीउ ॥ आइ मिलहु संत सजणा नामु जपह मन मित जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखै सुणे न जाणई माइआ मोहिआ अंधु जीउ ॥ काची देहा विणसणी कूड़ु कमावै धंधु जीउ ॥ नामु धिआवहि से जिणि चले गुर पूरे सनबंधु जीउ ॥ २ ॥ हुकमे जुग महि आइआ चलणु हुकमि संजोगि जीउ ॥ हुकमे परपंचु पसरिआ हुकमि करे रस भोग जीउ ॥ जिस नो करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ॥ ३ ॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ दरगह पैधा जाइ जीउ ॥ ऐथै सुखु मुखु उजला इको नामु धिआइ जीउ ॥ आदरु दिता पारब्रहमि गुरु सेविआ सत भाइ जीउ ॥ ४ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ सचु खजाना संचिआ एकु नामु धनु माल जीउ ॥ मन ते कबहु न वीसरै जा आपे होइ

राग सूही महला ५ घरु ३ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

यह संसार झूठे मोह और तृष्णा की आग का शोक रूपी समुद्र है। हे उत्तम प्रभु, कृपा करके हमें पार उतार लो।। १ ।। मैं तो प्रभु के चरण कमलों की शरण में हूँ और वह दीनानाथ भक्तों का आसरा है।। १ ।। रहाउ।। वह अनाथों का नाथ भक्तों के भय को मिटाने वाला है और साधु संगत में बने रहने से यमदूतों से मुलाकात नहीं होती।। २ ।। वह प्रभु जीवन-रूप, अनुपम और दयालु है उसके गुणों का सुमिरन करने से यम का फन्दा कट जाता है।। ३ ।। जो उसके अमृत नाम को सदैव अपनी जीभ से जपता रहता हैं उसे रोग रूपी माया प्रभावित नहीं करती।। ४ ।। प्रभु के सुमिरन के माध्यम से सभी संगी साथी भी संसार सागर को तैर कर पार हो जाते हैं और काम, क्रोध आदि पाँचों डकैत अब पास नहीं आते।। ५ ।। जो मन, वचन और कर्म से एक प्रभु की ही आराधना करता है वही सेवक सब प्रकार का फल प्राप्त कर लेता है।। ६ ।। प्रभु ने कृपा करके हमें अपना बना लिया है और प्रभु के नाम की भक्ति का शुद्ध रस हमें प्रदान किया।। ७ ।। प्रारम्भ में, मध्य में और अन्त में बना रहने वाला केवल वह प्रभु ही है। हे नानक, उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है।। ८ ।। १ ।। २ ।।

रागु सूही महला ५ ।। अष्टपदियाँ घरु ६ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिसे देखकर मन खिला रहता है उसका साथ कैसे प्राप्त किया जाए। सन्त पुरुषों को सज्जन बनाकर मन से मित्र मानने पर वे ही प्रभु के साथ प्रेम लगवा देते हैं। फिर उन लोगों से कभी भी प्रीति नहीं टूटती और ना ही उसमें कोई विघ्न पड़ता है।। १ ।। हे परब्रह्म प्रभु, तू दया कर ताकि मैं सदैव तेरे गुण गाता रहूँ। हे सन्त सज्जन पुरुषो, मुझसे आ मिलो ताकि मैं दिली दोस्त प्रभु नाम का जाप करता रहूं।। १ ।। रहाउ ।। रोज देखते और सुनते हुए भी यह जीव माया के मोह में ऐसा अन्धा हो चुका है कि यह संसार की वास्तविकता को नहीं जानता। यह नहीं जानता कि इस शरीर ने नष्ट होना ही है, फिर भला झूठे धन्धों की कमाई क्यों किये जा रहा है। जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है वे यहाँ से जीत कर जाते हैं और उनका पूर्ण गुरु के साथ सम्बन्ध बन जाता है।। २ ।। यह जीव उस प्रभु के हुकुम में ही इस जगत में आया है और यहाँ से जाना भी प्रभु के आदेश के पूरे होने पर ही होता है। प्रभु के हुकुम से ही यह सारा प्रपंच फैला है और उसके हुकुम के अन्तर्गत ही जीव रसों को भोगता रहता है। जिसको कर्ता प्रभु विस्मृत हो जाता है उसी को ही वियोग और शोक बने रहते हैं।। ३ ।। यदि अपने प्रभु को भा जाए तो जीव उसके दरबार में सम्मान सहित जाता है। उसे यहां सुख मिलता है और एक प्रभु के नाम सुमिरन के फल स्वरूप उसका मुख भी उज्जवल होता है। जिसने अच्छे नेक भाव के साथ गुरु की सेवा की उसे परमात्मा भी आदर देता है ।। ४ ।। सभी जीवों का पालन पोषण करने वाला प्रभु सब देश देशान्तरों में बसा हुआ है। हमने तो प्रभु रूपी सत्य के खज़ाने को इकट्ठा किया है और उसका एक नाम ही हमारा धन सम्पदा है। यदि वह स्वयं दयालु हो जाए तो वह मन से कभी भी विस्मृत नहीं होता

दइआल जीउ ॥ ५ ॥ आवणु जाणा रहि गए मनि वुठा निरंकारु जीउ ॥ ता का अंतु न पाईऐ ऊचा अगम अपारु जीउ ॥ जिसु प्रभु अपणा विसरै सो मरि जंमै लख वार जीउ ॥ ६ ॥ साचु नेहु तिन प्रीतमा जिन मनि वुठा आपि जीउ ॥ गुण साझी तिन संगि बसे आठ पहर प्रभ जापि जीउ ॥ रंगि रते परमेसरै बिनसे सगल संताप जीउ ॥ ७ ॥ तूं करता तूं करणहारु तूहै एकु अनेक जीउ ॥ तू समरथु तू सरब मै तूहै बुधि बिबेक जीउ ॥ नानक नामु सदा जपी भगत जना की टेक जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु १० काफी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जे भुली जे चुकी साईं भी तहिंजी काढीआ ॥ जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ ॥ १ ॥ हउ ना छोडउ कंत पासरा ॥ सदा रंगीला लालु पिआरा एहु महिंजा आसरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सजण तूहै सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ ॥ जा तू अंदरि ता सुखे तूं निमाणी माणीआ ॥ २ ॥ जे तू तुठा क्रिपा निधान ना दूजा वेखालि ॥ एहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समालि ॥ ३ ॥ पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरसु दिखालि ॥ स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि ॥ ४ ॥ किती लख करोड़ि पिरीए रोम न पुजनि तेरिआ ॥ तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ ॥ ५ ॥ सहीआ तऊ असंख मंञहु हभि वधाणीआ ॥ हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रंगु माणीआ ॥ ६ ॥ जै डिठे मनु धीरीऐ किलविख वंञन्हि दूरे ॥ सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे ॥ ७ ॥ होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ नानक संत सहाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ सूही महला ५ ॥ सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ ॥ नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ ॥ १ ॥ नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ जनम मरण मोहु दुखु साधू संगि नसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि बादि अहंकारि सरपर रुंनिआ ॥ सुखु न पाइन्हि मूलि नाम विछुंनिआ ॥ २ ॥ मेरी मेरी धारि बंधनि बंधिआ ॥ नरकि सुरगि अवतार माइआ धंधिआ ॥ ३ ॥ सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ ॥ नाम बिना सुखु नाहि सरपर

है।। ५ ।। जब निराकार प्रभु मन में बस गया तो सारा आवागमन समाप्त हो जाता है। जिसका ओर छोर नहीं पाया जा सकता वह प्रभु ऊँचा अगम्य एवं अपरम्पार है। जिसे अपना प्रभु विस्मृत हो जाता है वह लाखों बार मरता और जन्मता रहता है।। ६ ।। जिनके मन में वह स्वयं बस गया है उन्हीं का सच्चा प्रेम उस प्रियतम प्रभु से लगा रहता है। गुणों की साझेदारी करने वाले सत्संगी उनके साथ बसते हैं और वे आठों प्रहर प्रभु का जाप करते रहते हैं। वे परमेश्वर के रंग में रंगे रहते हैं और उनके समस्त संताप विनष्ट हो जाते हैं।। ७ ।। हे प्रभु, तू ही कर्ता है, तू ही करने योग्य है, तू ही एक है और तू ही अनेक भी है, तू ही समर्थ है, तू ही सबमें है और बुद्धि विवेक भी तू ही है। हे नानक, वही भक्तों और सेवकों का आसरा है। तू उसका नाम सदैव याद करता रह।। ८ ।। १ ।। ३।।

रागु सूही महला ५ अष्टपदियाँ घरु १० काफी ॥ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरे मालिक, यदि मुझसे कोई भूल चूक भी हो गई है तो भी मैं तो तेरी ही कहलाती हूँ। जिनका प्रेम किसी अन्य के साथ लगा हुआ है वे अपने प्रियतम से बिछुड़ी हुई पछतावे में ही मर जाती हैं।। १ ।। मैं तो अपने स्वामी का आंचल नहीं छोडूंगी क्योंकि यह प्यारा प्रियतम सदैव ही प्यार करने वाला है और यही मेरा आसरा है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रियतम, तू ही मेरा सज्जन है और तू ही मेरा रिश्तेदार अथवा सम्बन्धी है। मुझे तुझ पर बहुत गर्व है। यदि तू मेरे अन्दर रहे तो मैं सुखी बनी रहती हूँ और तू ही मुझ सम्मान विहीन का सम्मान है।। २ ।। हे कृपानिधान प्रभु, यदि तू प्रसन्न है तो मुझे किसी अन्य का रास्ता मत दिखा। मैंने तो यही दान प्राप्त किया है कि तुझे सदैव हृदय में सम्भाल कर रखूं।। ३ ।। मैं तेरे मार्ग पर अपने पावों को चलाउँ और अपनी आँखों से तेरे दर्शन को देखूं। यदि गुरु कृपालु हो जाए तो मैं अपने कानों से तुम्हारी कथावार्ता सुनूं।। ४ ।। हे प्यारे, कई लाखों करोड़ों प्रतापी व्यक्ति भी तेरे एक बाल की कीमत के तुल्य भी नहीं हो सकते। तू ही साहूकार है, तू ही धन सम्पदा है। मैं तेरे गुणों का वर्णन नहीं कर सकता।। ५ ।। तेरी तो अनेकों सखियाँ है और सभी मुझसे बढ़ चढ़कर हैं। हे प्रियतम, तू एक क्षण भर के लिये भी कृपादृष्टि मुझ पर डाल कर मुझे आनन्दित करते हुए दर्शन दे और मैं तेरे आनन्द का भोग करता रहूँ।। ६ ।। जिसे देखकर मन में धैर्य उत्पन्न होता है और पाप भागे खड़े होते हैं; हे मेरी माँ, वो भला मुझे क्यों भूल जाए जो सर्वत्र बसा हुआ है।। ७ ।। जब मैं विनम्र होकर उसके सामने गिर पड़ी तो वह मुझे बिना किसी प्रयत्न के ही मिल गया। जो पूर्व में भाग्य लेख लिखा था उसी के अनुरूप हे नानक, वह सन्तों का सहायक प्रभु मुझे मिल गया।। ८ ।। १ ।। ४ ।। सूही महला ५ ।। स्मृतियां, वेद, पुराण एवं अन्य धार्मिक पुस्तकें पुकार पुकार कर यह कह रही हैं कि प्रभु नाम के बिना सब कुछ झूठ है और ओछी बातें हैं।। १ ।। सभी सुखों का भण्डार प्रभु का नाम भक्तों के मन में बसता है और हे प्राणी, जन्म-मरण का चक्र, मोह एवं दुख साधसंगति में रहने पर भाग खड़ा होता है।। १।। रहाउ ।। जिन को मोह लगा है, जो झगड़ों में लीन हैं और अहंकारी बने हैं उन्हें आवश्यक तौर पर रोना ही पड़ता है। प्रभु नाम से बिछुड़कर वे कभी भी सुख नहीं प्राप्त कर सकते।। २ ।। व्यक्ति मेरा-मेरा करते हुए स्वयं को बन्धनों में बांधे रहते हैं और धन सम्पदा के धन्धों में उलझे हुए नर्क और स्वर्ग के झंझटों में पैदा होते मरते रहते हैं।। ३ ।। खोजते-खोजते खोजकर मैंने इस वास्तविकता पर विचार किया है कि प्रभु नाम के बिना सुख प्राप्त नहीं होता

हारिआ ॥ ४ ॥ आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते ॥ बिनु बूझे सभु वादि जोनी भरमते ॥ ५ ॥ जिन्ह कउ भए दइआल तिन्ह साधू संगु भइआ ॥ अंम्रितु हरि का नामु तिन्ही जनी जपि लइआ ॥ ६ ॥ खोजहि कोटि असंख बहुतु अनंत के ॥ जिसु बुझाए आपि नेड़ा तिसु हे ॥ ७ ॥ विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥ गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ १६ ॥

रागु सूही महला १ कुचजी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मंञु कुचजी अंमावणि डोसड़े हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ ॥ इक दू इकि चड़ंदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ ॥ जिन्ही सखी सहु राविआ से अंबी छावड़ीएहि जीउ ॥ से गुण मंञु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ ॥ किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ ॥ इकतु टोलि न अंबड़ा हउ सद कुरबाणै तेरै जाउ जीउ ॥ सुइना रुपा रंगुला मोती तै माणिकु जीउ ॥ से वसतू सहि दितीआ मै तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ ॥ मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रासि जीउ ॥ हउ एनी टोली भुलीअसु तिसु कंत न बैठी पासि जीउ ॥ अंबरि कूंजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ ॥ सा धन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ ॥ सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ ॥ तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कूं धरीआसु जीउ ॥ तुधु गुण मै सभि अवगणा इक नानक की अरदासि जीउ ॥ सभि राती सोहागणी मै डोहागणि काई राति जीउ ॥ १ ॥

सूही महला १ सुचजी ॥ जा तू ता मै सभु को तू साहिबु मेरी रासि जीउ ॥ तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तूं अंतरि साबासि जीउ ॥ भाणै तखति वडाईआ भाणै भीख उदासि जीउ ॥ भाणै थल सिरि सरु वहै कमलु फुलै आकासि जीउ ॥ भाणै भवजलु लंघीऐ भाणै मंझि भरीआसि जीउ ॥ भाणै सो सहु रंगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ॥ भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मुईआसि जीउ ॥ तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ॥ किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥ गुर सबदी सहु पाइआ सचु नानक की

और जीवन के खेल में आवश्यक रूप से हारना ही पड़ता है।। ४ ।। अनेकों लोग आते-जाते मरते और मरकर बार-बार जन्मते रहते हैं। प्रभु को जाने बिना सभी कुछ व्यर्थ है और वे लोग योनियों में भटकते रहते हैं।। ५ ।। जिन पर प्रभु दयालु होता है उन्हीं को साधसंगति प्राप्त होती है और वे ही प्रभु के अमृत नाम का सुमिरन करते रहते हैं।। ६ ।। अनेकों करोड़ों और असंख्य लोग उस अनन्त प्रभु को खोजते रहते हैं परन्तु जिसे वह सूझ बुद्धि प्रदान करके समझा देता है उसी को ही वह पास दिखाई देता है।। ७ ।। हे दाता प्रभु, तू मुझें कभी भी विस्मृत ना हो और अपने नाम का दान दे। नानक का तो यही चाव और इच्छा है कि वह दिन रात तेरे गुण गाता रहे।। ८ ।। २ ।। ५ ।। १६ ।।

रागु सूही महला १ कुच्चजी (बुरे आचरण वाली स्त्री) १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैं तो बुरे आचरण वाली स्त्री हूँ, मेरे दोष तो कहीं भी समा नहीं सकते अतः मैं भला कैसे उस प्रभु का आनन्द ले सकती हूँ जिस मालिक की दासियां (भक्त) तो एक से बढ़कर एक हैं। उसके पास भला मेरा नाम कौन जानता है। हे सखी, जिन्होंने अपने मालिक के साथ रमण किया है वे तो ऐसी सुखी हैं जैसे आम के पेड़ तले छाया में सुख प्राप्त होता है। वे गुण तो मुझमें आ ही नहीं सकते और मैं भला उनके लिये किस पर दोष लगाऊं। मैं तेरे गुणों का विस्तार सहित वर्णन किस प्रकार करूं और कैसे कैसे मैं तेरे नाम को प्राप्त करूं। तेरी एक ही महिमा तक मैं नहीं पहुँच सकती और हे प्रभु, मैं तो सदैव तुझ पर बलिहारी जाती हूँ। सोना, चाँदी, माणिक और मोती सभी आनन्द देने वाले हैं। ये सभी वस्तुएँ उस प्रियतम ने मुझे दी हैं और उसे छोड़कर मैंने इन्हीं में अपना मन लगा लिया है। मिट्टी से बने महल मैंने पत्थरों के साथ सजाए हुए हैं और मैं इन सबमें ही भूली रही और मैं अपने प्रियतम के पास नहीं बैठ सकी। शरीर के गगनमण्डल में अर्थात मस्तिष्क में कूंज पक्षियों की आवाजें सुनाई देने लग पड़ीं अर्थात बुढ़ापे के कारण सिर में अनेक प्रकार की सांय सांय की आवाज सुनाई देने लग पड़ी है तथा बगुले अर्थात सफेद बाल भी आ गए हैं। वह जीव स्त्री अब जब अपने ससुराल की ओर चल पडी है तो वहाँ परमात्मा के सामने भला क्या मुँह लेकर जाएगी। जीव स्त्री को सोते-सोते ही सुबह हो गई अर्थात आयुरूपी रात्रि समाप्त हो गई है और यह जीवन के असली मार्ग से भटक गई है। हे प्रभु, तेरे साथ से यह बिछुड़ गई और इसने दुखों को इकट्ठा कर लिया है। तुझ में तो सभी गुण हैं और मुझ में सभी अवगुण हैं। नानक की तो हे प्रभु, तेरे सामने विनम्र विनती ही है कि सभी सुहागिन स्त्रियों (गुरमुखों) को आपने सभी रातें दे रखी हैं। मुझ अभागिन को भी एक रात प्रदान करो।। १ ।। सूही महला १ सुच्चजी (अच्छे आचरण वाली स्त्री)।। हे प्रभु, यदि तू है तो मेरे लिये सब कुछ है और वह मालिक ही मेरी रासपूंजी है। यदि तू मेरे अन्तर्मन में है तो मैं सुख में बसती हूँ और यदि तू मेरे अन्दर है तो यही मेरे लिये शाबाश जैसी स्थिति है। तेरे हुकुम में ही सिंहासन का बड़प्पन प्राप्त होता है और तेरे हुकुम में ही भिक्षा लेकर निराश और उदास बने रहा जाता है। यदि तुझे भा जाए तो सूखी धरती पर भी समुद्र बह चले और गगन मण्डल में कमल खिल उठे। तेरे हुकुम में ही संसार सागर को पार किया जाता है और तेरे हुकुम में ही मंझधार में पड़कर डूबा जाता है। यदि तुझे अच्छा लगे तो तू मुझे रंगीला होकर दिखाई देता है और तेरे गुणों के भण्डार के गुणानुवाद में मैं लीन हो जाता हूँ। यदि तू चाहे तो तू ही मुझे भयानक रूप में दिखाई देता है और आवागमन के चक्कर काटते हुए बार-बार मरा जाता है। तू अगम्य और ना तौला जा सकने वाला अत्यन्त भारी है, मैं तेरा वर्णन करती करती तेरे वियोग में ही गिर पड़ती हूँ। मैं तुझसे क्या मांगू, तुझे क्या कहूँ और तुझसे क्या सुनूं मुझे तो तेरे दर्शन की ही प्यास लगी हुई है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही उस मालिक को प्राप्त किया जाता है और नानक की

अरदासि जीउ ॥ २ ॥ सूही महला ५ गुणवंती ॥ जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ आखा बिरथा जीअ की गुरु सजणु देहि मिलाइ जीउ ॥ सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ ॥ इहु मनु तै कूं डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ ॥ हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥ मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥ इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥ तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥ इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानकि कीआ पसाउ जीउ ॥ मै बहुड़ि न त्रिसना भुखड़ी हउ रजा त्रिपति अघाइ जीउ ॥ जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ ३ ॥

रागु सूही छंत महला १ घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भरि जोबनि मै मत पेईअड़ै घरि पाहुणी बलि राम जीउ ॥ मैली अवगणि चिति बिनु गुर गुण न समावनी बलि राम जीउ ॥ गुण सार न जाणी भरमि भुलाणी जोबनु बादि गवाइआ ॥ वरु घरु दरु दरसनु नही जाता पिर का सहजु न भाइआ ॥ सतिगुर पूछि न मारगि चाली सूती रैणि विहाणी ॥ नानक बालतणि राडेपा बिनु पिर धन कुमलाणी ॥ १ ॥ बाबा मै वरु देहि मै हरि वरु भावै तिस की बलि राम जीउ ॥ रवि रहिआ जुग चारि त्रिभवण बाणी जिस की बलि राम जीउ ॥ त्रिभवण कंतु रवै सोहागणि अवगणवंती दूरे ॥ जैसी आसा तैसी मनसा पूरि रहिआ भरपूरे ॥ हरि की नारि सु सरब सुहागणि रांड न मैलै वेसे ॥ नानक मै वरु साचा भावै जुगि जुगि प्रीतम तैसे ॥ २ ॥ बाबा लगनु गणाइ हं भी वंञा साहुरै बलि राम जीउ ॥ साहा हुकमु रजाइ सो न टलै जो प्रभु करै बलि राम जीउ ॥ किरतु पइआ करतै करि पाइआ मेटि न सकै कोई ॥ जाञी नाउ नरह निहकेवलु रवि रहिआ तिहु लोई ॥ माइ निरासी रोइ विछुंनी बाली बालै हेते ॥ नानक साच

अरदास तो उस सत्य प्रभु के सामने ही है।। २ ।। सूही महला ५ ।। गुणवन्ती।। जो भी गुरु का सिक्ख मुझे दिखाई दे जाए मैं झुक-झुक कर उसके चरणों को छूता हूँ। उससे हृदय की व्यथा कहता हूँ कि हे भाई, मुझे गुरुरूपी सज्जन मिला दो। मुझे ऐसा उपदेश दो कि मेरा मन अन्यत्र कही भी ना भटके। मैं यह अपना मन तुझे दे दूंगा, मुझे तू गुरु से मिलाप का मार्ग बता दे। मैं बहुत दूर से चल कर आया हूँ और मैंने तेरी शरण का आसरा देखा है। मैंने अपने मन में तेरे दर्शनों की आशा रखी है और हे गुरु, तुम मेरा सारा दुख दूर कर दो। इस मार्ग पर चलने वाले हे मेरे भाई, तू वही कार्य कर जिसे गुरु कहता है। तू अपने मन की मति अर्थात चतुराई को त्याग दे और द्वैतभाव को भूल जा। इस प्रकार तुझे प्रभु का दर्शन होगा और दुखों की गर्म हवा तुझे कभी नहीं लगेगी। मैं स्वयं तो बोलना भी नहीं जानता हूँ। मैंने तो वही कहा है जो उस प्रभु का आदेश है। गुरु नानक ने मुझ पर कृपा दृष्टि की है और प्रभु ने मुझे भक्ति का भण्डार सौंप दिया है। मेरी अब कोई भूख और प्यास नहीं रही और अब मैं पूर्ण रूप से भरा पूरा होकर तृप्त हो गया हूँ। मुझे जो भी गुरु का सिक्ख दिखाई दे मैं झुक झुक कर उसके चरणों को छूता हूँ।। ३ ।।

रागु सूही छन्द महला १ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैं अपने यौवन में मदमस्त बनी हूं और मुझे पता भी नहीं कि मैं धरती पर इस पिता के घर में एक मेहमान हूँ अर्थात अंततः मुझे ससुराल (परलोक) में जाना ही है। गुरु विहीन मेरे चित्त में अवगुण ही हैं, मैं मैली हूँ और मेरे अन्दर गुण प्रवेश नहीं करते। मैंने गुणों को नहीं जाना और सम्भाला, भ्रमों में भूली रही तथा मैंने अपनी जवानी व्यर्थ ही गँवा दी है। ना तो मैंने पति को ना उसके घर बार और ना ही उसके दर्शन को चाहा तथा ना ही उसका स्वभाव मुझे अच्छा लगा। मैं सच्चे गुरु को पूछ कर भी अच्छे मार्ग पर नहीं चली और मेरी सोती हुई की ही जीवन रात्रि निकल गई। हे नानक, मैं तो जवानी में ही विधवा हो गई और बिना प्रियतम के यह जीव रूपी स्त्री मुरझा गई।। १ ।। हे सच्चे गुरु बाबा, मुझे वर दिला दो। मुझे प्रभु रूपी वर ही भाता है और मैं उसी पर बलिहारी जाती हूँ। तीनों लोकों का मालिक सुहागिन स्त्रियों अर्थात् भक्तों के साथ रमण करता है और अवगुणी स्त्रियाँ उससे दूर ही रहती हैं। जिस प्रकार की आशा की जाती है उसी प्रकार के व्यक्ति इरादे बनाता है और वह सर्वव्यापक प्रभु उन्हें पूरा करता है। जो प्रभु की स्त्री है वह सारे समय में सुहागिन बनी रहती है और वह ना विधवा होती है ना उसका वेश मैला होता है। हे नानक, मुझे तो सच्चा वर ही अच्छा लगता है और वह प्रियतम सभी युगों में जैसे का तैसा ही बना रहता है।। २ ।। हे बाबा, कोई निश्चित सी घड़ी देख ताकि मैं भी ससुराल जाऊं और वहाँ प्रियतम पर बलिहारी जाऊं। लग्न मुहूर्त तो वही है जो अपनी रजा का मालिक प्रभु हुकुम करता है। जो प्रभु करता है वह कभी भी टलता नहीं है। जैसे संस्कार अन्दर कर्ता प्रभु ने डाले हुए हैं उन्हें कोई भी मिटा नहीं सकता। मेरी बारात का मालिक अर्थात् वर वह हरि है जो व्यक्तियों से निरपेक्ष है परन्तु फिर भी तीनों लोकों में व्याप्त हो रहा है। माया ईश्वर और जीव के मिलाप पर रोती हैं क्योंकि जीव स्त्री मायारूपी माँ से बिछुड़ रही है और लड़का-लड़की अर्थात् जीव और प्रभु का प्यार बढ़ने लगा है। हे नानक, सच्चे शब्द के माध्यम से जीव स्त्री

सबदि सुख महली गुर चरणी प्रभु चेते ॥ ३ ॥ बाबुलि दितड़ी दूरि ना आवै घरि पेईऐ बलि राम जीउ ॥ रहसी वेखि हदूरि पिरि रावी घरि सोहीऐ बलि राम जीउ ॥ साचे पिर लोड़ी प्रीतम जोड़ी मति पूरी परधाने ॥ संजोगी मेला थानि सुहेला गुणवंती गुर गिआने ॥ सतु संतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाए ॥ नानक विछुड़ि ना दुखु पाए गुरमति अंकि समाए ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु सूही महला १ छंतु घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हम घरि साजन आए ॥ साचै मेलि मिलाए ॥ सहजि मिलाए हरि मनि भाए पंच मिले सुखु पाइआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइआ ॥ अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाए ॥ पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए ॥ १ ॥ आवहु मीत पिआरे ॥ मंगल गावहु नारे ॥ सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलड़ा जुग चारे ॥ अपनै घरि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे ॥ गिआन महा रसु नेत्री अंजनु त्रिभवण रूपु दिखाइआ ॥ सखी मिलहु रसि मंगलु गावहु हम घरि साजनु आइआ ॥ २ ॥ मनु तनु अंम्रिति भिंना ॥ अंतरि प्रेमु रतंना ॥ अंतरि रतनु पदारथु मेरै परम ततु वीचारो ॥ जंत भेख तू सफलिओ दाता सिरि सिरि देवणहारो ॥ तू जानु गिआनी अंतरजामी आपे कारणु कीना ॥ सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अंम्रिति भीना ॥ ३ ॥ आतम रामु संसारा ॥ साचा खेलु तुम्हारा ॥ सचु खेलु तुम्हारा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाए ॥ सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाए ॥ कालु बिकालु भए देवाने मनु राखिआ गुरि ठाए ॥ नानक अवगण सबदि जलाए गुण संगमि प्रभु पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु सूही महला १ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम ॥ घरि आपनड़ै खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम ॥ मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥ दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा ॥

महलों में सुखी बसती है और गुरु के चरणों में लगकर प्रभु का सुमिरन करती है।। ३ ।। गुरु रूपी पिता ने जीव स्त्री को माया के देश से दूर ऐसा भेजा है कि वह फिर धरती पर पिता के घर नहीं आती अर्थात आवागमन का चक्र समाप्त हो गया। वह प्रभु रूपी पति को सामने देखकर प्रसन्न हो गई। पति ने उसके साथ रमण किया और वह पति के घर की शोभा बढ़ाने लगी। सच्चे प्रियतम को उसकी आवश्यकता थी तब ही प्रियतम ने उसे अपने साथ मिला लिया और उसकी बुद्धि पूर्ण हो गई और वह प्रमुखता प्राप्त कर गई। अच्छे भाग्य के कारण उसका मिलाप हुआ, सुखदायक स्थान पर उसका निवास हो गया और गुरु के ज्ञान वाली वह अब गुणवन्ती स्त्री बन गई है। सत्य, सन्तोष सदैव उसके सच्चे आँचल में रहते हैं। वह सत्य बोलती है और प्रियतम को अच्छी लगती है। हे नानक, अब वह गुरु की शिक्षा के कारण प्रभु के अंक में लीन हो गई है और अब बिछुड़ कर कभी भी दुख नहीं पाएगी।। ४ ।। १ ।।

रागु सूही महला १ छन्द घरु २   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरे घर में गुरुमुख प्यारे सज्जन लोग आए हैं और उस सच्चे प्रभु ने यह मेल मिलाप कराया है। सहज स्वाभाविक रूप से ही प्रेम के माध्यम से यह मिलाप हुआ है और प्रभु मेरे मन को भा गया है। पंच लोगों अर्थात् संत जनों से मिलकर मुझे सुख प्राप्त हुआ और मेरा मन जिस वस्तु के लिये आशा बनाए था वही वस्तु मुझे प्राप्त हो गई है। मेरा सदा बना रहने वाला और मन को अच्छा लगने वाला मिलाप हो गया है तथा मेरा हृदय और घर शोभायमान हो उठा है। पांच प्रकार के वाद्यों के शब्दों की ध्वनि बिना बजाए ही प्रकट हो उठी अर्थात् आध्यात्म मंडल का संगीत बज उठा क्योंकि मेरे हृदय में वह सज्जन प्रभु आ बैठा है।। १ ।। हे मेरे प्यारे मित्र, आओ और हे सतसंगी स्त्रियो, खुशी के गीतों को गाओ। सच्चे मंगल गीत गाओ और प्रभु को अच्छी लगोगी तो चारों युगों में तुम्हारा यश होगा। वह प्रभु मेरे घर में आ बसा है और मेरा हृदय रूपी स्थान शोभायमान हो उठा है तथा प्रभु के शब्द ने मेरे सभी कार्य संवार दिए हैं। ज्ञान के महारस ने मेरी आँखों में ऐसा सुरमा लगाया है कि तीनों लोकों में मुझे उसी का ही रूप दिखाई देने लगा है। हे सखी, खूब अच्छी तरह मिलकर मंगलगीत गाओ क्योंकि मेरे घर में मेरा साजन प्रभु आ पहुँचा है।। २ ।। मेरा मन तन अमृत से भीग गया है और मेरे अन्दर प्रेम रूपी प्रभु प्रकट हो गया है। मेरे अन्दर उस परम तत्व के चिन्तन का रत्न पदार्थ आ गया है। हे प्रभु, ये जीव तो भिखारी हैं और तू उनको सब प्रकार का फल देने योग्य दाता है। हे प्रभु, तू सुजान, ज्ञानवान, अन्तर्यामी और स्वयं ही अपना कारण है तथा तूने ही सृष्टि की रचना की है। हे सखी, मेरी बात सुनो। मेरा तन मन अमृत से भीगा है इसीलिये मैंने मन को मोहने वाले उस प्रभु को मोहित कर लिया है।। ३ ।। हे प्रभु, तुम्ही संसार की आत्मा और उसमें रमण करने वाले हैं। तुम्हारा खेल ही सच्चा है। तुम्हारा खेल ही सत्य है परन्तु हे अगम्य, अपरम्पर प्रभु, तेरे बिना इस तथ्य को कौन समझा सकता है। अनेकों ही सिद्ध, सयाने और साधक हैं परन्तु वास्तव में तेरे बिना यह कौन कहला सकता है। जब गुरु ने मन को एक ठिकाने पर स्थिर कर दिया है तो जन्म और मरण तो मानो पागल होकर चले गए अर्थात् जन्म मरण का चक्र दूर हो गया। हे नानक, गुरु के शब्द ने अवगुणों को जला दिया है और अब गुणों का मेल होने से प्रभु प्राप्त हो गया है।। ४ ।। १ ।। २।।

रागु सूही महला १ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रियतम प्रभु, तुम आओ और मैं तो तुम्हारा दर्शन करूं। मैं अपने घर पर खड़ी तुम्हारा रास्ता देख रही हूँ और मेरे मन में तुम्हारे दर्शन के लिये बहुत ही चाव हो रहा है। मेरे मन में बहुत उत्साह है और हे प्रभु, तू यह सुन ले कि मुझे तेरा ही भरोसा है। तेरा दर्शन देखकर तो मैं स्वतन्त्र हो गई हूँ और जन्म-मरण का मेरा दुख नष्ट हो गया है।

सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए ॥ नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥ १ ॥ घरि आइअड़े साजना ता धन खरी सरसी राम ॥ हरि मोहिअड़ी साच सबदि ठाकुर देखि रहंसी राम ॥ गुण संगि रहंसी खरी सरसी जा रावी रंगि रातै ॥ अवगण मारि गुणी घरु छाइआ पूरै पुरखि बिधातै ॥ तसकर मारि वसी पंचाइणि अदलु करे वीचारे ॥ नानक राम नामि निसतारा गुरमति मिलहि पिआरे ॥ २ ॥ वरु पाइअड़ा बालड़ीए आसा मनसा पूरी राम ॥ पिरि राविअड़ी सबदि रली रवि रहिआ नह दूरी राम ॥ प्रभु दूरि न होई घटि घटि सोई तिस की नारि सबाई ॥ आपे रसीआ आपे रावे जिउ तिस दी वडिआई ॥ अमर अडोलु अमोलु अपारा गुरि पूरै सचु पाईऐ ॥ नानक आपे जोग सजोगी नदरि करे लिव लाईऐ ॥ ३ ॥ पिरु उचड़ीऐ माड़ड़ीऐ तिहु लोआ सिरताजा राम ॥ हउ बिसम भई देखि गुणा अनहद सबद अगाजा राम ॥ सबदु वीचारी करणी सारी राम नामु नीसाणो ॥ नाम बिना खोटे नही ठाहर नामु रतनु परवाणो ॥ पति मति पूरी पूरा परवाना ना आवै ना जासी ॥ नानक गुरमुखि आपु पछाणै प्रभ जैसे अविनासी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला १ घरु ४ ॥

जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥ दानि तेरै घटि चानणा तनि चंदु दीपाइआ ॥ चंदो दीपाइआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गइआ ॥ गुण जंञ लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइआ ॥ वीवाहु होआ सोभ सेती पंच सबदी आइआ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥ १ ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ इहु तनु जिन सिउ गाडिआ मनु लीअड़ा दीता ॥ लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि ॥ जिन्ह दिसि आइआ होहि रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ सगल गुण अवगणु न कोई होहि नीता नीता ॥ हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ २ ॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ जे गुण

हे प्रभु, सबमें तेरी ही ज्योति है और उसी ज्योति से तू जाना जाता है तथा प्रेम के माध्यम से तू स्वाभाविक ही मिल जाता है। हे नानक, उस साजन पर तो मैं बलिहारी जाती हूँ क्योंकि सत्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने पर वह प्रभु हृदय रूपी घर में ही आ मिलता है।। १ ।। हृदय रूपी घर में साजन के आ जाने के साथ जीव स्त्री रसपूर्ण होकर प्रसन्न हो उठी। अब वह प्रभु को देखकर सच्चे शब्द के माध्यम से मोहित हो उठी है और उस मालिक को देख पहचान कर आनन्दित हो गई। गुणवान होकर वह प्रसन्न हुई है और जब रंग में लीन प्रभु ने उसके साथ रमण किया तो वह भी प्रसन्न हो उठी। पूर्ण विधाता प्रभु ने अवगुणों को मारकर मेरे हृदय रूपी घर को गुणों की छत से ढक कर बना दिया। अब जीव स्त्री कामादि चोरों को मारकर पंचायत की अध्यक्षा होकर बसती है और विचार पूर्वक न्याय करती है। हे नानक, राम नाम के माध्यम से ही संसार सागर से पार उतारा होता है और गुरु की शिक्षा के फलस्वरूप ही उस प्यारे प्रभु को मिला जाता है।। २ ।। वह प्रभु रूपी वर प्राप्त कर लेने से यौवन पूर्ण जीव स्त्री की आशाएं और मन की इच्छाएं पूरी हो गईं। प्रभु प्रियतम के साथ रमण किया है और शब्द के माध्यम से उसके साथ मिलाप हुआ है तथा अब किसी प्रकार की दूरी नहीं रह गई। प्रभु दूर नहीं होता क्योंकि वह घर घर में बस रहा है और सभी जीव स्त्रियाँ उसी की नारियां है। वह स्वयं ही रसिक है और स्वयं ही उनसे रमण करता है और वास्तव में यह उसके बड़प्पन के अनुकूल ही है। वह अमर, कभी ना डोलने वाला, अमूल्य एवं अपरम्पर है तथा ऐसे सत्य प्रभु को पूर्ण गुरु के माध्यम से ही पाया जाता है। हे नानक, वह स्वयं ही अवसर अथवा संयोग बनाने वाला है और जब वह कृपा दृष्टि करता है तो भूले हुओं को रास्ता दिखाकर अन्ततः उनकी लौ अपने में जोड़ लेता है।। ३ ।। वह प्रियतम बहुत ऊंचे स्थान पर रहने वाला है और वह ही तीनों लोकों का सरताज है। मैं तो उसके गुणों को देखकर विस्मयपूर्ण हो गई हूँ और मेरे अन्दर अनहद शब्द प्रकट हो उठा है। जिसने शब्द का विचार किया है उसी की करनी श्रेष्ठ है। उसी के पास प्रभु-नाम का चिन्ह बना रहता है। प्रभु-नाम के बिना खोटे व्यक्तियों को आसरे के लिये कोई भी स्थान नहीं मिलता है। व्यक्ति नाम रूपी रत्न के कारण ही प्रभु के समक्ष स्वीकृत होता है। मेरा सम्मान, मेरी मति पूरी हो गई है और मेरे पास आगे जाने के लिये प्रभु के नाम का परवाना (पत्र) भी है जिसके कारण व्यक्ति फिर ना तो आता है और ना ही यहाँ से जाता है अर्थात् उसका आवागमन समाप्त हो जाता है। हे नानक, गुरुमुख बनकर व्यक्ति स्वयं को पहचानता है और अविनाशी प्रभु जैसा ही हो जाता है।। ४ ।। १ ।। ३।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। रागु सूही छन्द महला १ घरु ४ ।।

जिसने पैदा किया है उसी ने इस संसार को देखा है और उसी ने इसे अपने-अपने धन्धे में लगाया है। हे प्रभु, तेरे दिये हुए दान से ही मेरे हृदय में प्रकाश हो उठा है और मेरे तन में चन्द्र का दीपक अर्थात् ज्ञान का दीप जल उठा है। प्रभु के दान के फलस्वरूप ज्ञान का चन्द्रमा प्रदीप्त हो उठा है और मेरा दुख रूपी अंधेरा चला गया है। यह गुणों की बारात उस प्रभु रूपी वर के साथ ही शोभायमान होती है जिसको जिज्ञासु रूपी जीव स्त्री ने परख कर अपने लिये चुना। बड़ी शोभा और महिमा के साथ जीव स्त्री का प्रभु के साथ विवाह हो गया और पाँच धुनियों वाला आध्यात्म मण्डल का संगीत हृदय में बस गया है। जिसने पैदा किया है उसी ने इस संसार को देखा है और उसी ने इसे अपने अपने धन्धे में लगाया है।। १ ।। मैं उस साजन पर बलिहारी हूँ जो मेरा मित्र है और जिस पर अज्ञान का कोई भी पर्दा नहीं है। मेरा यह तन जिन गुरमुख व्यक्तियों के साथ मिला हुआ है मैंने अपने दिल के भाव उन्हीं को दिए हैं। जिनसे मैंने यह लेन देन किया है वे सज्जन भला मुझे क्यों भूलेंगे। जिन्हें देखकर मन प्रसन्न हो जाए उन्हें तो हृदय के साथ मिलकर पकड़े ही रहना चाहिए। सभी गुण अवगुण सदैव एक समान नहीं बने रहते। मैं तो उस साजन पर बलिहारी हूँ जो मेरा मित्र है।। २ ।। यदि गुणों की खुशबू देने वाला डिब्बा पास में हो तो उसे खोलकर उसकी खुशबू लेते रहना चाहिए।

होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै ॥ साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥ पहिरे पटंबर करि अडंबर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ झोलि अंम्रितु पीजै ॥ गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ आखण ता कउ जाईऐ जे भूलड़ा होई ॥ जे होइ भूला जाइ कहीऐ आपि करता किउ भुलै ॥ सुणे देखे बाझु कहिऐ दानु अणमंगिआ दिवै ॥ दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोई ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ सूही महला १ ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ गुर की पउड़ी साच की साचा सुखु होई ॥ सुखि सहजि आवै साच भावै साच की मति किउ टलै ॥ इसनानु दानु सुगिआनु मजनु आपि अछलिओ किउ छलै ॥ परपंच मोह बिकार थाके कूड़ु कपटु न दोई ॥ मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ १ ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ मैलु लागी मनि मैलिऐ किनै अंम्रितु पीआ ॥ मथि अंम्रितु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥ आपनड़ा प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ तिसु नालि गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ पराइआ ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि जगतु उपाइआ ॥ २ ॥ आइ गइआ की न आइओ किउ आवै जाता ॥ प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती राता ॥ साहिब रंगि राता सच की बाता जिनि बिंब का कोटु उसारिआ ॥ पंच भू नाइको आपि सिरंदा जिनि सच का पिंडु सवारिआ ॥ हम अवगणिआरे तू सुणि पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ आवण जाणा ना थीऐ साची मति होई ॥ ३ ॥ अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥ समझै सूझै जाणीऐ जे आपि जाणावै ॥ आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवए ॥ करम सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥ तंतु मंतु पाखंडु न जाणा रामु रिदै मनु मानिआ ॥ अंजनु नामु तिसै ते सूझै गुर सबदी सचु जानिआ ॥ ४ ॥ साजन होवनि आपणे किउ पर घर जाही ॥ साजन राते सच के संगे मन माही ॥ मन माहि साजन करहि रलीआ करम धरम सबाइआ ॥

यदि साजन प्रभु की ओर ले जाने वाले गुण हों तो उन गुणों की परस्पर साझेदारी कर लेनी चाहिए। गुणों की साझेदारी करो और अवगुणों को छोड़कर चल दो और इस प्रकार शुद्ध जीवन के कपड़ों को पहनकर अपने आप को गुणों से सजा संवार कर अपने कर्त्तव्य का क्षेत्र अपने नियंत्रण में रखा जाना चाहिए। जहाँ भी जाकर बैठा जाए वहाँ भली बात ही कही जाए और इस प्रकार जीवन रूपी अमृत को हिला हिलाकर पान किया जाए। यदि गुणों की खुशबू देने वाला डिब्बा पास है तो उसे खोलकर उसकी खुशबू लेते रहना चाहिए।। ३ ।। वह प्रभु स्वयं सब कुछ करता है इसलिये क्योंकि अन्य कोई भी करने में समर्थ नहीं है तो शिकायत किससे की जाए। कहा तो उससे जाए जो भूला बैठा हो। यदि वह भूला हुआ हो तो उसे जाकर कहा जाए परन्तु कर्ता प्रभु कैसे भूल सकता है। वह देखे सुने और करने के बगैर बिना माँगे हुए ही दान देता चला जाता है। जगत का वह विधाता प्रभु दान देने वाला दाता है और हे नानक, सदैव स्थिर बना रहने वाला सत्य वास्तव में वही है। किसी अन्य से क्या कहा जाए, वह प्रभु स्वयं सब कुछ करता है क्योंकि अन्य कोई कुछ भी करने मे समर्थ नही है।। ४ ।। १ ।। ४ ।। सूही महला १।। मेरा मन प्रभु में लीन होकर उसके गुणों का उच्चारण करता है और मेरे मन को वही अच्छा लगता है। यह गुरु की बताई हुई सत्य की सीढ़ी है और इसी पर वास्तविक सुख प्राप्त होता है। जब मन इस वास्तविक सुख की अवस्था में आता है तो सत्य अच्छा लगता है। सत्य की प्राप्ति कराने वाली यह बुद्धि अटल बनी रहती है अर्थात् यह शिक्षा कभी भी गलत साबित नहीं होती। स्नान दान और अच्छा ज्ञान तथा स्नान आदि कर्म उस अछल प्रभु को कैसे छल सकते हैं। अब जीवन के प्रपंच, मोह और विकार थक कर नष्ट हो गए हैं और अब झूठ और पाखण्ड तथा द्वैतभाव नहीं रहा। उस प्रभु में लीन मेरा मन उसके गुणों का उच्चारण करता है और यही मेरे मन को अच्छा लगता है।। १ ।। उस प्रभु का गुणानुवाद करना चाहिये जो इस सारी रची हुई सृष्टि का मूल कारण है। मैले मन को मैल लगाकर भला कभी कोई अमृत पान कर सका है। मन का मंथन करके यह अमृत पीया जाता है और गुरु इसका मोल बताता है। यदि सच्चे प्रभु में मन लग जाए तो अपने प्रभु की सहज स्वाभाविक रूप से पहचान आ जाती है। उस गुरु के साथ मिलकर मैं उसके गुण गाऊं और यह तभी संभव है यदि यह उसको अच्छा लगे। पराया होकर रहने से वह भला कैसे मिल सकता है। उस मालिक का गुणानुवाद करना चाहिये जिसने यह संसार पैदा किया है।। २ ।। यदि प्रभु हृदय में आ जाए तो फिर भला बाकी क्या बचता है। फिर भला जन्म लेना और मरना, आना और जाना कैसे होगा अर्थात् नहीं होगा। जब प्रियतम से मन लग जाए तो वास्तव में व्यक्ति प्रभु में ही लीन हो जाता है। साहिब के रंग में रंगने की बातें उस सत्य की बातें हैं जिसने एक बुलबुले से यह शरीर रूपी किला बना दिया। पाँच तत्वों के शरीर का प्रभु स्वयं नायक है और स्वयं ही इसे बनाने वाला है। उसी ने शरीर को सत्य स्वरूप बनाकर इसे सँवारा है। हे प्यारे प्रभु, तू हमारी बात सुन ले कि हम तो अवगुणों वाले हैं और जो तुझे भाता है वही सच्चा है। उस सच्चे प्रभु की ऐसी मति है कि उसमें चलते हुए फिर आवागमन नहीं होता।। ३ ।। अंजन वैसा ही आँखों में लगाना चाहिये जैसा प्रियतम को अच्छा लगता है। यदि प्रभु स्वयं जनवा दे तो तभी समझ बुद्धि प्राप्त होती है और जीव उस प्रभु को जान पाता है। वह स्वयं ही जनवाता है, स्वयं ही ठीक मार्ग पर डालता है और स्वयं ही हमारे मन को अपनी ओर प्रेरित करता है। वह अच्छे बुरे कर्म स्वयं ही करवाता है और उस प्रभु की जो कि रहस्य से पूर्ण है कौन कीमत आँक सकता है। तंत्र-मंत्र आदि के पाखण्ड को तो मैं नहीं जानता परन्तु उस प्रभु में मेरा मन माना हुआ है। प्रभु नाम रूपी अंजन उसी से जाना जाता है जिसने शब्द-गुरु के माध्यम से सत्य स्वरूप प्रभु को जाना है।। ४ ।। यदि अपने घर के सज्जन प्रेमी मिल जाएं तो पराए घरों की ओर क्यों जाया जाए। ये सत्संगी सज्जन सच्चे हरि के प्रेमी होते हैं और वह प्रभु इनके मन में अंग-संग ही बना रहता है। जब मन में वह साजन प्रभु हो तो उसी से क्रीड़ा की जाती है और सारे धर्म-कर्म उसी के अन्तर्गत ही आ जाते हैं।

अठसठि तीरथ पुंन पूजा नामु साचा भाइआ ॥ आपि साजे थापि वेखै तिसै भाणा भाइआ ॥ साजन रांगि रंगीलड़े रंगु लालु बणाइआ ॥ ५ ॥ अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधरु जाणै ॥ आपि मुसै मति होछीऐ किउ राहु पछाणै ॥ किउ राहि जावै महलु पावै अंध की मति अंधली ॥ विणु नाम हरि के कछु न सूझै अंधु बूडौ धंधली ॥ दिनु राति चानणु चाउ उपजै सबदु गुर का मनि वसै ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती राहु पाधरु गुरु दसै ॥ ६ ॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥ किसु पहि खोल्हउ गंठड़ी दूखी भरि आइआ ॥ दूखी भरि आइआ जगतु सबाइआ कउणु जाणै बिधि मेरीआ ॥ आवणे जावणे खरे डरावणे तोटि न आवै फेरीआ ॥ नाम विहूणे ऊणे झूणे ना गुरि सबदु सुणाइआ ॥ मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥ ७ ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ सेवकु सेवा तां करे सच सबदि पतीणा ॥ सबदे पतीजै अंकु भीजै सु महलु महला अंतरे ॥ आपि करता करे सोई प्रभु आपि अंति निरंतरे ॥ गुर सबदि मेला तां सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥ गुर महली घरि आपणै सो भरिपुरि लीणा ॥ ८ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करि वेखै सोई ॥ ता की कीमति ना पवै जे लोचै कोई ॥ कीमति सो पावै आपि जाणावै आपि अभुलु न भुलए ॥ जै जै कारु करहि तुधु भावहि गुर कै सबदि अमुलए ॥ हीणउ नीचु करउ बेनंती साचु न छोडउ भाई ॥ नानक जिनि करि देखिआ देवै मति साई ॥ ९ ॥ २ ॥ ५ ॥

रागु सूही छंत महला ३ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥ गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥ बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ हरि प्रभु क्रिपा करे हरि जापहु सुख फल हरि जन पावहु ॥ नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ १ ॥ सुणि हरि गुण भीने सहजि सुभाए ॥ गुरमति सहजे नामु धिआए ॥ जिन कउ धुरि लिखिआ

अड़सठ तीर्थ, पुण्य कर्म और पूजा आदि सब प्रभु नाम के प्रेम के अन्तर्गत ही आ जाते हैं। वह स्वयं बनाता है, स्थापित करके देखता है और उसी का हुकुम अच्छा लगता है। उस साजन के प्रेम के रंग में रंगकर हमने भी अपना रंग लाल बना लिया है।। ५ ।। यदि आगे ले जाने वाला नेता स्वयं ही अंधा हो वह भला रास्ते के बारे में क्या जानेगा। वह अपनी ओछी बुद्धि के कारण स्वयं ही लुटता चला जा रहा है तो वह भला ठीक मार्ग को कैसे पहचानेगा। वह कैसे सही रास्ते पर चलेगा और अपना ठिकाना प्राप्त करेगा क्योंकि अन्धे अज्ञानी व्यक्ति की बुद्धि भी अन्धी होती है। प्रभु नाम के बिना कुछ भी नहीं सूझता और अन्धा अज्ञानी व्यक्ति सांसारिक धन्धों में ही डूबा रहता है। यदि शब्द गुरु मन में बस जाए तो दिन रात उसके प्रकाश को प्राप्त करने के लिये उत्साह पैदा होता रहता है। हाथ जोड़कर गुरु के सामने विनती करो ताकि गुरु तुम्हें सीधा और साफ मार्ग बता सके।। ६ ।। यदि मन प्रभु की ओर से बेगाना बन जाए तो सभी लोग पराए देश वालों की तरह लगते हैं। मैं अपने हृदय के दुख की गांठ को किसके सामने खोलूं जबकि सारा संसार ही दुखों के साथ भरा पड़ा है। यह सारा संसार दुख से भरा है इसलिये मेरी दशा को कौन जान सकता है। आवागमन में पड़ा व्यक्ति अत्यन्त डरावना लगता है और आवागमन में उसकी भटकन में कोई कमी नहीं आती। जिन्होंने शब्द-गुरु को नहीं सुना और सुनाया है वे प्रभु-नाम से विहीन, खाली और उदास बने रहते हैं। जब मन प्रभु की ओर से बेगाना हो जाए तो सभी लोग, पराए देश वालों की तरह से लगते हैं।। ७ ।। जो गुरु घर के माध्यम से अपने हृदय रूपी घर में ही प्रभु को खोजता है वही सर्वत्र व्याप्त प्रभु में लीन हो जाता है। सेवक भी सेवा तभी करता है जब उसकी सन्तुष्टि सच्चे शब्द के माध्यम से हो जाती है। जो शब्द में सन्तुष्ट हो जाता है और जिसका हृदय प्रेम में भीग जाता है वह प्रभु का महल अपने अन्तर्मन में ही देख लेता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही अंत में एक रस निरन्तर बना रहता है। शब्द-गुरु के माध्यम से जिसका मिलाप होता है वही सुखी होता है और सुख के चिन्ह के तौर पर उसके अन्तर्मन में अनहद शब्द बजता रहता है। जो गुरु घर के माध्यम से अपने हृदय रूपी घर से ही प्रभु को खोजता है वही सर्वत्र प्रभु में लीन हो जाता है।। ८ ।। उसकी बनाई रचना की क्या प्रशंसा की जाए वह तो स्वयं ही इसे बनाता है और स्वयं ही इसकी देखभाल करता है। यदि कोई उसका मूल्य आँकना भी चाहे तो आँक नहीं सकता। वह स्वयं ही अपने ओर छोर को जनवाता है और स्वयं कभी भी कुछ नहीं भूलता। हे प्रभु, जो तुझे अच्छे लगते हैं वे गुरु के अमूल्य शब्दों के माध्यम से तेरी बनाई हुई वस्तुओं की प्रशंसा करने की बजाए तेरी प्रशंसा करते हैं। मैं हीन और नीच विनती करता हूँ कि हे भाई, मैं कभी भी सत्य को नहीं छोड़ूंगा। हे नानक, मेरी कोई शक्ति नहीं कि मैं तुम्हारी प्रशंसा कर सकूं। जो प्रभु पैदा करके देखभाल करता है वही उसके गुणानुवाद करने की बुद्धि भी प्रदान करता है।। ९ ।। २ ।। ५ ।।

रागु सूही छन्द महला ३ घरु २   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु का सुमिरन करो और प्रभु के सुखदायक गीतों का उच्चारण करो। इस प्रकार गुरमुख बनकर प्रभु रूपी फल को प्राप्त करो। गुरमुख बनकर फल प्राप्त करो, प्रभु नाम की आराधना करो जो जन्मों-जन्मान्तरों के दुख दूर करता है। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने हमारे सभी कार्य सँवार दिए हैं। प्रभु कृपा करे तो उसके नाम का जाप करो और हे प्रभु के सेवको, तुम सुख फल को प्राप्त करो। नानक कहता है कि हे भाई सेवक जनों, मेरी बात सुन लो और प्रभु की आराधना करते हुए खुशी के गीत गाओ।। १ ।। प्रभु के गुणों को सुनकर सहज स्वाभाविक रूप से ही उसमें भीगा जाता है और गुरु की [illegible] को मन में बसा कर सहज भाव में ही नाम का सुमिरन किया जाता है। जिनका भाग्य लेख प्रारम्भ से ही लिखा है

तिन गुरु मिलिआ तिन जनम मरण भउ भागा ॥ अंदरहु दुरमति दूजी खोई सो जनु हरि लिव लागा ॥ जिन कउ क्रिपा कीनी मेरै सुआमी तिन अनदिनु हरि गुण गाए ॥ सुणि मन भीने सहजि सुभाए ॥ २ ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ गुर ते उपजै सबदु वीचारा ॥ गुर सबदु वीचारा राम नामु पिआरा जिसु किरपा करे सु पाए ॥ सहजे गुण गावै दिनु राती किलविख सभि गवाए ॥ सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू हमारा ॥ जुग महि राम नामु निसतारा ॥ ३ ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥ हरि गुण गावहि त्रिपति अघाही ॥ हरि गुण गाइ सदा त्रिपतासी फिरि भूख न लागै आए ॥ दह दिसि पूज होवै हरि जन की जो हरि हरि नामु धिआए ॥ नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिनु को दूजा नाही ॥ साजन आइ वुठे घर माही ॥ ४ ॥ १ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिस दी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ १ ॥ हरि भगता की जाति पति है भगत हरि कै नामि समाणे राम ॥ हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि जिन गुण अवगण पछाणे राम ॥ गुण अउगण पछाणै हरि नामु वखाणै भै भगति मीठी लागी ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती घर ही महि बैरागी ॥ भगती राते सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥ नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले ॥ २ ॥ मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु सतिगुर भगति न होई राम ॥ हउमै माइआ रोगि विआपे मरि जनमहि दुखु होई राम ॥ मरि जनमहि दुखु होई दूजै भाइ परज विगोई विणु गुर ततु न जानिआ ॥ भगति विहूणा सभु

उन्हें गुरु मिल जाता है और उनका जन्म-मरण का भय भाग खड़ा होता है। अन्तर्मन से दुर्मति और द्वैतभाव को खो कर ऐसा सेवक हरि में अपनी लौ लगा लेता है। जिन पर मेरे मालिक ने कृपा की है उन्होंने हर दिन प्रभु के गुण गाए हैं। प्रभु के गुणों को सुनकर सहज स्वाभाविक रूप से ही उनका मन उसके प्रेम में भीग गया है।। २ ।। इस संसार में राम नाम ही पार उतार सकता है। शब्द का चिन्तन गुरु के माध्यम से ही उत्पन्न होता है। शब्द गुरु का चिन्तन और प्रभु नाम का प्यार जिसपर कृपा होती है वही पाता है। वही सहज भाव में दिन रात प्रभु के गुण गाता है और अपने सभी पापों को दूर कर देता हैं। हे प्रभु, सब कुछ तेरा ही है और तू ही सबका है। मैं तेरा हूँ और तू हमारा है। इस संसार में राम नाम ही पार उतारा कर सकता है।। ३ ।। जिनके हृदय में प्रियतम प्रभु ने डेरा लगा लिया है वे प्रभु के गुण गाते हुए तृप्त होकर सन्तुष्ट हो जाते हैं। प्रभु के गुण गाते हुए वे सदैव तृप्त बने रहते हैं और उन्हें फिर बार-बार भूख नहीं लगती। प्रभु के ऐसे सेवक की जो प्रभु नाम का ही सुमिरन करते रहते हैं दसों दिशाओं में पूजा होती है। हे नानक, प्रभु स्वयं ही मिलाता है, दूर करता है और उस प्रभु के बिना अन्य दूसरा कोई नहीं। ऐसा वे ही समझते हैं जिनके हृदय रूपी घर में उस प्रभु ने अपना निवास बना लिया है।। ४ ।। १ ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। रागु सूही महला ३ घरु ३।।

भक्त रूपी सेवकों की वह प्रभु स्वयं इज्जत रखता है और युगों-युगों से रखता चला आ रहा है। भक्त वह है जो गुरमुख होता है और जिसने अपने अहंकार को शब्द के माध्यम से जला दिया है। जिस प्रभु की सच्ची वाणी है, अहंकार को शब्द के माध्यम से जलाने वाला वह सेवक मेरे प्रभु को भाता है। जो भक्ति गुरमुख गुरु ने बताई है प्रभु के सेवक वही सच्ची भक्ति दिन-रात करते रहते हैं। भक्तों की चाल ढाल अत्यन्त निर्मल एवं सच्ची होती है और प्रभु का सच्चा नाम उनके मन को भा गया होता है। हे नानक, जिन्होंने सत्य को और केवल सत्य को ही आचरण का आधार बनाया है वे भक्त ही उस प्रभु के द्वार पर शोभा बढ़ाते हैं।। १ ।। भक्तजनों की जाति और सम्मान प्रभु ही है और भक्त प्रभु के नाम में ही लीन बने रहते हैं। जिन्होंने गुणों और अवगुणों की पहचान कर ली है ऐसे लोग ही प्रभु की भक्ति करते हैं और अपने अंहकार को अपने अन्तर्मन से निकाल देते हैं। वे गुणों-अवगुणों को पहचानते हुए प्रभु का बखान करते हैं और उन्हें ही प्रभु की भक्ति अच्छी लगती है। वे दिन रात प्रतिदिन भक्ति करते रहते हैं और घरबारी रहते हुए भी वैराग्यवान बने रहते हैं। जो भक्ति में लीन हैं उनका मन सदैव निर्मल बना रहता है और वे प्रभु को सदैव अपने साथ ही देखते हैं। हे नानक, वही भक्त प्रभु के द्वार पर सच्चे माने जाते हैं जो सदैव प्रभु नाम को हृदय में सम्भाले रहते हैं।। २ ।। मनमुख व्यक्ति सच्चे गुरु के बिना भक्ति करते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना भक्ति नहीं होती। ऐसे मनमुखों को अहंकार और माया के रोग लगे रहते हैं। वे मरकर जन्मते रहते हैं और उन्हें दुख ही दुख होता रहता है। आवागमन का दुख होता है और द्वैतभाव में पड़ी हुई सृष्टि नष्ट होती है। गुरु के बिना किसी ने भी सार तत्व को नहीं जाना। भक्ति से विहीन व्यक्ति सारे

जगु भरमिआ अंति गइआ पछुतानिआ ॥ कोटि मधे किनै पछाणिआ हरि नामा सचु सोई ॥ नानक नामि मिलै वडिआई दूजै भाइ पति खोई ॥ ३ ॥ भगता कै घरि कारजु साचा हरि गुण सदा वखाणे राम ॥ भगति खजाना आपे दीआ कालु कंटकु मारि समाणे राम ॥ कालु कंटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे नामु निधानु सचु पाइआ ॥ सदा अखुटु कदे न निखुटै हरि दीआ सहजि सुभाइआ ॥ हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ नानक आपे बखसि मिलाए जुगि जुगि सोभा पाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥ सूही महला ३ ॥ सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम ॥ हउमै सभि किलविख काटे साचु रखिआ उरि धारे राम ॥ सचु रखिआ उर धारे दुतरु तारे फिरि भवजलु तरणु न होई ॥ सचा सतिगुरु सची बाणी जिनि सचु विखालिआ सोई ॥ साचे गुण गावै सचि समावै सचु वेखै सभु सोई ॥ नानक साचा साहिबु साची नाई सचु निसतारा होई ॥ १ ॥ साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखै सचु सोई राम ॥ सचा भोजनु भाउ सचा है सचै नामि सुखु होई राम ॥ साचै नामि सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा ॥ जोती जोति मिलाई सचि समाई सचि नाइ परगासा ॥ जिनी सचु जाता से सचे होए अनदिनु सचु धिआइनि ॥ नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ि दुखु पाइनि ॥ २ ॥ सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम ॥ निरमल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ॥ सभु सचु वरतै सचो बोलै जो सचु करै सु होई ॥ जह देखा तह सचु पसरिआ अवरु न दूजा कोई ॥ सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा होई ॥ नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई ॥ ३ ॥ सचे भगत सोहहि दरवारे सचो सचु वखाणे राम ॥ घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ॥ आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ॥ सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ॥ साचि रते भगत इक रंगी दूजा रंगु न कोई ॥ नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति होई ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥ सूही महला ३ ॥ जुग चारे धन जे भवै बिनु सतिगुर सोहागु न

संसार में भटकता रहता है और अन्त में पछताता हुआ यहाँ से जाता है। करोड़ों में किसी बिरले ने ही उस सच्चे प्रभु के नाम को पहचाना है और हे नानक, प्रभु-नाम से ही बड़प्पन प्राप्त होता हैं और द्वैतभाव में अपना सम्मान ही गँवाया जाता है।। ३ ।। भक्तजनों के घर में सच्चे विवाह का कार्य चलता रहता है और वे सदा प्रभु के गुणों का बखान करते रहते हैं। भक्ति का खजाना प्रभु स्वयं देता है और भक्तजन दुखदायी काल को मारकर प्रभु में ही समा जाते हैं। दुखदायी काल को मारकर प्रभु में लीन होते हैं और प्रभु के मन को अच्छे लगते हैं। उन्होंने ही प्रभु नाम का सच्चा खजाना प्राप्त कर लिया होता है। यह भण्डार कभी भी समाप्त नहीं होता है क्योंकि सहज स्वाभाविक रूप से ही यह परमात्मा ने दिया होता है। प्रभु के सेवक ऊँचे हैं और सदैव ऊंचे ही बने रहते हैं क्योंकि वे शब्द-गुरु के माध्यम से शोभायमान बने रहते हैं। हे नानक, वह प्रभु स्वयं ही कृपा करके अपने से मिला लेता है और सभी युगों में उनकी महिमा बनी रहती है।। ४ ।। १ ।। २ ।। सूही महला ३ ।। प्रभु का सच्चा गुणानुवाद सच्चे शब्द के माध्यम से होता है क्योंकि उस सच्चे शब्द में सच्चे प्रभु का चिन्तन होता है। यह चिन्तन अहंकार जैसे सभी पापों को काट देता है और सत्य को हृदय में धारण कराए रहता है। जब सत्य को हृदय में धारण किया जाता है तो भयानक ना तैरे जा सकने वाले सागर को तैर लिया जाता है तथा फिर संसार सागर को पार करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। वह सच्चा गुरु भी सत्य है, इसकी वाणी भी सत्य है क्योंकि उसी ने ही सत्य का दर्शन कराया होता है। जो सच्चे के गुण गाते हैं वे सत्य में ही समा जाते हैं और वे सब में सत्य को ही देखते हैं। हे नानक, उस सच्चे मालिक का सच्चा ही न्याय है और सत्य के कारण ही व्यक्ति का पार उतारा होता है।। १ ।। सच्चे सतुगुरु ने उस सच्चे प्रभु के सत्यरूपी रहस्य को समझा दिया है और वह सत्य ही व्यक्ति के सम्मान की रक्षा करता है। ऐसे व्यक्ति का प्रेम और भोजन भी सच्चा ही होता है और उसे सच्चे नाम के माध्यम से ही सुख प्राप्त होता है। उसे सच्चे नाम से सुख मिलता है और वह कभी नहीं मरता तथा कभी गर्भ और योनि में उसका निवास नहीं होता। उसकी ज्योति परमात्मा की परम ज्योति में मिल जाती है और उसी का प्रकाश जीव में सच्चे नाम के माध्यम से होता है। जिन्होंने सत्य को जान लिया है वे वास्तव में सत्य ही हो गए हैं और हर दिन सत्य की ही आराधना करते है। हे नानक, प्रभु का सच्चा नाम जिनके हृदय में बस गया है वे फिर उससे बिछुड़कर दुख नहीं पाते।। २ ।। सच्ची वाणी और सच्चे गुणों का गायन जहाँ होता है उस घर (अन्तर्मन) में खुशी के गीत गाए जाते हैं। उस सच्चे के गुण निर्मल हैं, गुण गाने वाले का तन और मन भी सच्चा हो जाता है और उसके अन्दर सच्चा प्रभु ही रमण करता रहता है। सभी तरफ सत्य कार्यशील है, सत्य का ही उच्चारण हो रहा है और जो सत्यरूपी प्रभु करता है वही होता है। जिधर भी देखा जाए उधर सत्य ही व्याप्त दिखाई देता हैं अन्य दूसरा तो कोई भी नहीं। जीव उस सत्य में से ही उत्पन्न होता है उसी सत्य में लीन हो जाता है और उसे जन्मता हुआ या मरता हुआ तो तब कहा जाए यदि प्रभु के बिना अन्य कोई और होता है। हे नानक, वह कर्ता प्रभु ही सब कुछ है और वह आप ही सब कुछ करवाता है।। ३ ।। प्रभु के सच्चे भक्त उसके दरबार में ही शोभायमान होते हैं और केवल सत्य का ही बखान करते रहते हैं। उनके हृदय में प्रभु की सच्ची वाणी होती है और वे स्वयं सत्य की पहचान करने वाले होते हैं। जब वे स्वयं को पहचान लेते हैं तभी वे सत्य को जान पाते हैं और हमें सत्य के रहस्य का पता लगता है। प्रभु का शब्द भी सच्चा है, उसकी महिमा भी सच्ची है और सत्य के माध्यम से ही सुख प्राप्त होता है। प्रभु के भक्त उस सत्य के रंग में ही रंगे रहते हैं और दूसरा कोई रंग उन पर प्रभाव नहीं डालता। हे नानक, जिसके भाग्य में ऐसा लेख लिखा है उसी को ही सत्य की प्राप्ति होती है।। ४ ।। २ ।। ३ ।। सूही महला ३ ।। यदि जीव स्त्री चारों युगों में भी भटकती फिरे तब भी उसे सुहागिन होने का अवसर सच्चे गुरु से मिले बिना

होई राम ॥ निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु न कोई राम ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि एको जाणिआ ॥ धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइआ बिनु हरि नावै मुकति न होई ॥ नानक कामणि कंतै रावे मनि मानिऐ सुखु होई ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवि धन बालड़ीए हरि वरु पावहि सोई राम ॥ सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई राम ॥ फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ करणी कार कमावै सबदि समावै अंतरि एको जाणिआ ॥ गुरमुखि प्रभु रावे दिनु राती आपणा साची सोभा होई ॥ नानक कामणि पिरु रावे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥ २ ॥ गुर की कार करे धन बालड़ीए हरि वरु देइ मिलाए राम ॥ हरि कै रंगि रती है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए सचु वरतै सभ थाई ॥ सचा सीगारु करे दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ हरि सुखदाता सबदि पछाता कामणि लइआ कंठि लाए ॥ नानक महली महलु पछाणै गुरमती हरि पाए ॥ ३ ॥ सा धन बाली धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ॥ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मंनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी सचु सीगारु बणाइआ ॥ कामणि निरमल हउमै मलु खोई गुरमति सचि समाई ॥ नानक आपि मिलाई करतै नामु नवै निधि पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सूही महला ३ ॥ हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाए राम ॥ अनदिनो सबदि रवहु अनहद सबद वजाए राम ॥ अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि गुण गावहु नारी ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै सा धन कंत पिआरी ॥ गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला हरि करि किरपा घरि आए ॥ १ ॥ भगता मनि आनंदु भइआ हरि नामि रहे लिव लाए राम ॥ गुरमुखे मनु निरमलु होआ निरमल हरि गुण गाए राम ॥ निरमल गुण गाए नामु मंनि वसाए हरि की अंम्रित बाणी ॥ जिन्ह मनि वसिआ सेई जन

प्राप्त नहीं होता। उस सच्चे प्रभु का अटल राज सदैव बना रहने वाला है और उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है। उसके बिना कोई नहीं हैं और वह ही बने रहने वाला सत्य है तथा गुरमुख बनकर ही उस एक प्रभु को जाना जाता है। जब गुरु की शिक्षा के द्वारा मन सन्तुष्ट हो जाता है तभी जीव रूपी स्त्री का प्रियतम रूपी पति से मिलाप होता है। जब सच्चे गुरु से मेल होता है तभी प्रभु प्राप्ति होती है और प्रभु नाम के बिना मुक्ति नहीं होती। हे नानक, प्रियतम प्रभु से मिलकर जीव रूपी स्त्री उसके साथ रमण करती है और उसके मन की सन्तुष्टि हो जाने पर ही उसे सुख प्राप्त होता है।। १।। हे अनजान स्त्री, तू सच्चे गुरु की सेवा के माध्यम से प्रभु रूपी वर को प्राप्त कर। तू सदैव सुहागिन बनी रहेगी और फिर तुझे कभी भी विधवा जैसा मैला वेश धारण नहीं करना पड़ेगा। तेरा वेश मैला नहीं होगा इस तथ्य को अहंकार को मारकर कोई गुरमुख ही जानता और पहचानता है। वही अच्छे कर्मो वाला आचरण करता हुआ शब्द ब्रह्म में लीन हो जाता है और अपने अन्तर्मन में केवल एक प्रभु का ही अनुभव करता है। गुरमुख व्यक्ति ही दिन रात अपने प्रभु में लीन बना रहता है और उसी की सच्ची महिमा होती रहती है। हे नानक, इस प्रकार जीव रूपी कामिनी अपने प्रियतम के साथ रमण करती हैं जो सब में व्यापत बना रहता है।। २ ।। हे अनजान स्त्री, यदि तू गुरु की सेवा करती रहे तो वह तुझे प्रभु रूपी वर से मिला देता है। जीव स्त्री जब प्रभु के रंग में रंगी रहती है तो वह प्रियतम से मिलकर सुख प्राप्त करती है। सत्य सब स्थानों में व्याप्त है और जीव स्त्री प्रियतम से मिलकर सुख पाती है और सत्य में समा जाती है। सत्य में जीवित बनी हुई स्त्री सदैव दिन रात सत्य का शृंगार किए रहती है। सुख देने वाला प्रभु शब्द के माध्यम से पहचान लिया जाता है और तब वह जीव रूपी कामिनी को अपने गले से लगा लेता है। हे नानक, जीव स्त्री अब घर की मालकिन होकर अपने पति का ठिकाना पहचान लेती है और गुरु की मति में चलते हुए प्रभु को पा लेती है।। ३ ।। ऐसी अनजान जीव स्त्री को प्रारम्भ से ही मेरे प्रभु ने अपने आप से मिला लिया होता है। गुरु के उपदेश के माध्यम से उसके हृदय में प्रकाश हो जाता है और वह जान जाती है कि प्रभु तो सभी स्थानों मे बसा हुआ रमण कर रहा है। प्रभु सभी स्थानों में रमण कर रहा है और वह मन में भी बसा है। वास्तव में जो पहले से ही लिखा हुआ था कि वह उसे मिलेगा वही उसे मिला है। मेरे प्रभु ने मेरी सेज को सुखदायक बना दिया है और मैंने भी सत्य का शृंगार धारण किया है जो उसे अच्छा लगता है। अहंकार के मल को खोकर जीव स्त्री निर्मल हो गई है और गुरु के उपदेश के माध्यम से सत्य में लीन हो गई है। हे नानक, कर्ता प्रभु ने उसे स्वयं ही अपने से मिला लिया है और प्रभु नाम की नवनिधियाँ उसने प्राप्त कर लीं हैं।। ४ ।। ३ ।। ४ ।। सूही महला ३ ।। प्रभु हरि के गुण गाते रहो क्योंकि प्रभु को गुरमुख बनकर पाया जाता है। हर दिन शब्द-गुरु में रमण करते रहो और उस अनहद शब्द को अन्तर्मन में बजाते रहो। जब प्रभु हृदय रूपी घर में आ जाता है तब अनहद शब्द बजता है और हे सखी सहेलियो, तुम प्रभु के गुणों का गायन करती रहो। जो हर दिन परमात्मा रूपी गुरु के सामने भक्तिभाव में बनी रहती हैं ऐसी स्त्रियाँ ही उस प्रभु पति को प्यारी लगती हैं। जिनके अन्तर्मन में शब्द-गुरु बस गया है वे व्यक्ति शब्द के माध्यम से ही शोभायमान हो गए हैं। हे नानक, प्रभु कृपा करके उनके हृदय में आ गया है इसीलिये उनके हृदय में सदैव आनन्दगीत चलते ही रहते हैं।। १ ।। प्रभु के नाम में अपनी लौ लगाए रहने वाले भक्तों का मन आनन्दित हो उठा है। गुरमुख बनकर उनका मन निर्मल हो गया है और वे सदैव प्रभु को पवित्र गुणों का गायन करते रहते हैं। प्रभु नाम को मन में बसा कर और प्रभु की अमृत वाणी के माध्यम से वे निर्मल गुणों का गायन करते हैं। प्रभु की निर्मल वाणी तो घर घर में समाई रहती है परन्तु वे व्यक्ति ही

निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ॥ तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाए ॥ नानक सफल जनमु तिन केरा जि सतिगुरि हरि मारगि पाए ॥ २ ॥ संतसंगति सिउ मेलु भइआ हरि हरि नामि समाए राम ॥ गुर कै सबदि सद जीवन मुकत भए हरि कै नामि लिव लाए राम ॥ हरि नामि चितु लाए गुरि मेलि मिलाए मनूआ रता हरि नाले ॥ सुखदाता पाइआ मोहु चुकाइआ अनदिनु नामु सम्हाले ॥ गुर सबदे राता सहजे माता नामु मनि वसाए ॥ नानक तिन घरि सद ही सोहिला जि सतिगुर सेवि समाए ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइआ हरि का महलु न पाइआ राम ॥ गुरमुखे इकि मेलि मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम ॥ तिन के दूख गवाइआ जा हरि मनि भाइआ सदा गावहि रंगि राते ॥ हरि के भगत सदा जन निरमल जुगि जुगि सद ही जाते ॥ साची भगति करहि दरि जापहि घरि दरि सचा सोई ॥ नानक सचा सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सूही महला ३ ॥ जे लोड़हि वरु बालड़ीए ता गुर चरणी चितु लाए राम ॥ सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ॥ हरि जीउ मरै न जाए गुर कै सहजि सुभाए सा धन कंत पिआरी ॥ सचि संजमि सदा है निरमल गुर कै सबदि सीगारी ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ नानक सदा पिरु रावे आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइआ ॥ १ ॥ पिरु पाइअड़ा बालड़ीए अनदिनु सहजे माती राम ॥ गुरमती मनि अनदु भइआ तितु तनि मैलु न राती राम ॥ तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभि राती मेरा प्रभु मेलि मिलाए ॥ अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाए ॥ गुरमति पाइआ सहजि मिलाइआ अपणे प्रीतम राती ॥ नानक नामु मिलै वडिआई प्रभु रावे रंगि राती ॥ २ ॥ पिरु रावे रंगि रातड़ीए पिर का महलु तिन पाइआ राम ॥ सो सहो अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइआ राम ॥ विचहु मोहु चुकाइआ जा हरि भाइआ हरि कामणि मनि भाणी ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ॥ जुग चारे साचा एको वरतै बिनु गुर किनै न

पार उतरते हैं जिनके मन में वह प्रभु बसता है और उसी के माध्यम से यह वाणी कार्यशील होती है। तेरे गुणों का गायन करने वाले अपने मूल सहज स्वाभाव में लीन हो जाते हैं और शब्द के माध्यम से उनका मिलाप हो जाता है। हे नानक, उनका जीवन सफल होता है जिनको सच्चे गुरु ने प्रभु का रास्ता बता दिया है।। २ ।। जब शान्त पुरुषों की संगत से मिलाप होता है तो जीव प्रभु नाम में समा जाता है। शब्द-गुरु के माध्यम से उन्हें सदा बना रहने वाला आध्यात्मिक जीवन मिलता है और प्रभु नाम में लौ लगाते हुए वे जीवन मुक्त हो जाते हैं। उन्होंने गुरु के मेल मिलाप करवाने के फलस्वरूप प्रभु नाम में चित्त लगाया होता है और उनका मन प्रभु में ही लीन बना रहता है। उन्होंने सुखदाता प्रभु प्राकर मोह को दूर कर दिया होता है और वे नित्य प्रभु नाम को ही हृदय में संभाले रहते हैं। शब्द-गुरु में रंगकर वे सहज स्वाभाविक रूप में मस्त होकर प्रभु नाम को मन में बसाते हैं। हे नानक, जो सच्चे गुरु की सेवा और सुमिरन मे समाए रहते हैं उनके हृदय रूपी घर में सदा ही खुशियों के गीत चलते रहते हैं।। ३ ।। उस सच्चे गुरु के बिना सारा संसार भ्रमों में पड़ा हुआ भटकता रहता है और वह प्रभु के ठिकाने को प्राप्त नहीं कर पाता। कई लोगों ने गुरमुख बनकर उस प्रभु से मिलाप किया है और प्रभु ने उनके दुख दूर कर दिए हैं। यदि प्रभु को अच्छे लगते हैं तो वे सदैव उसके रंग में रंगे हुए उसके गुण गाते हैं और प्रभु उनके दुखों को दूर करता है। प्रभु के भक्तजन सदैव ही निर्मल बने रहते हैं और वे प्रत्येक युग में प्रकट होते रहते हैं और उन्हें जाना माना जाता है। जो सच्ची भक्ति करते हैं वे प्रभु के द्वार पर जाने जाते हैं और अपने अन्तर्मन में और प्रभु के द्वार पर उनके लिए परमात्मा ही सत्य स्वरूप होता है। हे नानक, शब्द के माध्यम से ही उन्हे सुख प्राप्त होता है और सच्ची वाणी के माध्यम से ही उनके गाए हुए खुशी के गीत भी सच्चे होते हैं।। ४ ।। ४ ।। ५ ।। सूही महला ३ ।। हे अनजान जीव स्त्री, यदि तू प्रभु रूपी पति को चाहती है तो गुरु के चरणों में चित्त लगाए रह। इस प्रकार तू सदा सुहागिन बनी रहेगी क्योंकि प्रभु ना तो मरता है और ना कहीं जाकर नष्ट होता है। जो इस तथ्य को मान लेती है कि प्रभु मरता और जाता नहीं है वह गुरु के अनुरूप ही शान्त स्वाभाव के कारण अपने पति को प्यारी स्त्री लगने लगती है। उसके पास सत्य का अनुशासन होता है, वह सदैव निर्मल बनी रहती है और उसने शब्द-गुरु का शृंगार किया होता है। मेरा सच्चा प्रभु सदैव ही अटल सत्य है जिसने अपने आप को स्वयं ही उत्पन्न किया है। हे नानक, जिन्होंने गुरु के चरणों में चित्त लगाया है वे सदैव अपने प्रियतम के साथ रमण करती रहती हैं।। १ ।। जिस अनजान स्त्री ने अपने प्रियतम को पा लिया वह सदैव शान्त भाव में लीन बनी रहती है। गुरु के उपदेश से उसका मन आनन्दित हो गया होता है और उसके तन को जरा सी भी मैल नहीं लगती। उसके तन को मैल नहीं लगती, वह प्रभु में लीन बनी रहती है और मेरा प्रभु ही ऐसा मेल मिलाप करवाता है। वह अपने अहंकार भाव को गँवा कर सदैव अपने प्रभु का सुमिरन करती रहती है। गुरु के उपदेश के माध्यम से प्रभु प्राप्त करके वह अपने शान्त स्वाभाव का साक्षात्कार करती है और अपने प्रियतम में लीन बनी रहती है। हे नानक, प्रभु नाम के कारण ही बड़प्पन प्राप्त होता है और जीव स्त्री प्रभु रंग में रंगकर उसका सुमिरन करती है।। २ ।। जो प्रभु के प्रेम में रंगकर उसका सुमिरन करती है वह अपने प्रियतम के ठिकाने को पा लेती है। उसे वही अत्यन्त निर्मल दाता प्रभु पति मिल जाता है जो जीव के अन्तर्मन से अंहकार भाव को समाप्त कर देता हैं। यदि प्रभु को भाता है तभी मन में से मोह का विनाश होता है और ऐसी जीव स्त्री प्रभु के मन को अच्छी लगती है। वह भी सदैव उसके गुण गाती है और उस सच्चे अकथनीय प्रभु की वार्ता को आगे बढ़ाती है। चारो युगों में वह एक सच्चा प्रभु ही कार्यशील है और गुरु के बिना उसे कोई भी नहीं

पाइआ ॥ नानक रंगि रवै रंगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ ३ ॥ कामणि मनि सोहिलड़ा साजन मिले पिआरे राम ॥ गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ उरि धारे राम ॥ हरि राखिआ उरि धारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता ॥ प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ करम बिधाता ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि वसिआ मंनि मुरारे ॥ नानक मेलि लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ सूही महला ३ ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे राम ॥ हरि मनु तनो गुरमुखि भीजै राम नामु पिआरे राम ॥ राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ घरि अनहद सुरति समाणी ॥ हरि हरि एको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ॥ सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे ॥ १ ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाए राम ॥ मिलु सबदि सुभाए आपु गवाए रंग सिउ रलीआ माणे ॥ सेज सुखाली जा प्रभु भाइआ हरि हरि नामि समाणे ॥ नानक सोहागणि सा वडभागी जे चलै सतिगुर भाए ॥ हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ २ ॥ घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ इकना प्रभु दूरि वसै इकना मनि आधारो राम ॥ इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुरु पाइआ ॥ घटि घटि हरि प्रभु एको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रहम बीचारो ॥ घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ ३ ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइआ राम ॥ हरि धूड़ि देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुकतु कराइआ राम ॥ पापी मुकतु कराए आपु गवाए निज घरि पाइआ वासा ॥ बिबेक बुधी सुखि रैणि विहाणी गुरमति नामि प्रगासा ॥ हरि हरि अनदु भइआ दिनु राती नानक हरि मीठ लगाए ॥ गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ ॥ ७ ॥ १२ ॥

पा सका है। हे नानक, जिसने प्रभु के साथ अपना मन जोड़ लिया है वह ही उसके रंग में रंग कर जीवन रूपी रात्रि में उसके साथ रमण करती है।। ३ ।। उस जीव कामिनी के मन में खुशी के गीत चलते रहते हैं जिसे उसका प्यारा साजन प्रभु मिल गया होता है। गुरु के उपदेश के माध्यम से उसका मन निर्मल हो जाता है और वह प्रभु को हृदय में धारण किए रहती है। प्रभु को हृदय में धारण करके रखा तो अपना सारा काम बन गया तथा गुरु के उपदेश के माध्यम से प्रभु को जान लिया गया। प्रियतम ने मेरा मन मोह लिया और मैंने कर्मो का फल देने वाला तथा कर्मों का विधान करने वाला प्रभु पा लिया। सच्चे गुरु की सेवा करके मैंने सदैव सुख पाया है और मेरे मन में प्रभु बस गया है। हे नानक, गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है और शब्द-गुरु के माध्यम से मुझे सँवार दिया है।। ४ ।। ५ ।। ६ ।। सूही महला ३ ।। प्रभु का नाम ही खुशी का गीत है जिस का शब्द-गुरु के माध्यम से चिन्तन किया जाता है। गुरमुख बनकर तन मन प्रभु में पूर्णरूप से भीग जाता है और प्रभु का नाम प्यारा लगने लगता है। प्रभु का प्यारा नाम सभी कुलों का उद्धार कर देता है और व्यक्ति राम नाम की वाणी मुख से उच्चारण करता है। आवागमन समाप्त हो जाता है, सुख प्राप्त होता है और सुरति अनहद घर में लीन हो जाती है। हे नानक, हरि प्रभु ने जब कृपा धारण की तो उस एक ही हरि को पा लिया गया। प्रभु का नाम ही खुशी का गीत है और शब्द-गुरु के माध्यम से ही उसका चिन्तन किया जाता है।। १ ।। मैं बहुत छोटी एवं नीच हूँ और प्रभु बहुत ऊँचा और महान है। उसे कैसे मिला जा सकता है। गुरु ने ही कृपा करके उससे मिला लिया है और प्रभु के शब्द के माध्यम से वह स्वाभाविक रूप से ही मिल गया है। शब्द के माध्यम से स्वाभाविक रूप से ही मिला प्रभु हमारे अभिमान को नष्ट कर देता है और इस प्रकार जीव रूपी स्त्री पूरे प्रेम में मस्त होकर आनन्दित होती रहती है। सेज तो तभी सुख देने वाली होती है जब वह प्रभु को भा जाती है और ऐसा तभी होता है जब प्रभु नाम में लीन हुआ जाता है। हे नानक, वही सुहागिन भाग्यशाली है जो सच्चे गुरु के आदेश मे चलती रहती है।। २ ।। सब घट-घट में वह एक ही प्रभु है और सबका पति वह एक ही है। अनेकों के लिए तो प्रभु दूर बसता है परन्तु अनेकों के मन का आसरा वही प्रभु ही है। अनेकों के मन का आधार वह सबकी रचना करने वाला प्रभु ही है और उस गुरु को बड़े भाग्य से पाया जाता है। घट-घट में वह एक स्वामी प्रभु ही है और गुरमुख बनकर उस समझ में ना आ सकने वाले प्रभु को समझा जाता है। सहज अवस्था में मन आनन्दित होकर सन्तुष्ट हो गया और हे नानक, उस परब्रह्म का चिन्तन मनन प्राप्त हो गया है। सभी घरों में वह एक ही प्रभु बसता है और सबका पति वह एक ही प्रभु है।। ३ ।। हे भाई, जो व्यक्ति प्रभु-नाम का दान देने वाले गुरु की शरण में आ जाते हैं वे परमात्मा के नाम में लीन बने रहते हैं। हे प्रभु, मुझे भी पूर्ण गुरु की चरण धूलि दे क्योंकि गुरु ही हम पापी जीवों को मुक्त करा देता है। गुरु विकारों में लीन जीवों को विकारों से मुक्त करा देता है और उनके अन्तर्मन से अहं भाव दूर कर देता है। ऐसे जीव प्रभु चरणों में ठिकाना प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे व्यक्तियों को विवेक बुद्धि प्राप्त हो जाती है, उनकी जीवन रूपी रात्रि आनन्द में व्यतीत होती है और गुरु के उपदेश के कारण उनके अन्तर्मन में प्रभु नाम प्रकाशित हो उठता है। हे नानक, जो व्यक्ति गुरु की शरण में आ जाते हैं उन्हें प्रभु नाम प्यारा लगने लग जाता है। दिन रात उनके अन्तर्मन में आध्यात्मिक, आनन्द बना रहता है और वे परमात्मा के नाम में लीन बने रहते हैं।।४ ।।६ ।।७ ।।५ ।।७ ।।१२ ।।

राগु सूही महला ४ छंत घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुरु पुरखु मिलाइ अवगण विकणा गुण रवा बलि राम जीउ ॥ हरि हरि नामु धिआइ गुरबाणी नित नित चवा बलि राम जीउ ॥ गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥ हउमै रोगु गइआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइआ ॥ काइआ सेज गुर सबदि सुखाली गिआन तति करि भोगो ॥ अनदिनु सुखि माणे नित रलीआ नानक धुरि संजोगो ॥ १ ॥ सतु संतोखु करि भाउ कुड़मु कुड़माई आइआ बलि राम जीउ ॥ संत जना करि मेलु गुरबाणी गावाईआ बलि राम जीउ ॥ बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ ॥ गइआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइआ ॥ हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ गुर परसादी ब्रहमु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥ २ ॥ मनमुखि विछुड़ी दूरि महलु न पाए बलि गई बलि राम जीउ ॥ अंतरि ममता कूरि कूड़ु विहाझे कूड़ि लई बलि राम जीउ ॥ कूड़ु कपटु कमावै महा दुखु पावै विणु सतिगुर मगु न पाइआ ॥ उझड़ पंथि भ्रमै गावारी खिनु खिनु धके खाइआ ॥ आपे दइआ करे प्रभु दाता सतिगुरु पुरखु मिलाए ॥ जनम जनम के विछुड़े जन मेले नानक सहजि सुभाए ॥ ३ ॥ आइआ लगनु गणाइ हिरदै धन ओमाहीआ बलि राम जीउ ॥ पंडित पाधे आणि पती बहि वाचाईआ बलि राम जीउ ॥ पती वाचाई मनि वजी वधाई जब साजन सुणे घरि आए ॥ गुणी गिआनी बहि मता पकाइआ फेरे ततु दिवाए ॥ वरु पाइआ पुरखु अगंमु अगोचरु सद नवतनु बाल सखाई ॥ नानक किरपा करि कै मेले विछुड़ि कदे न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही महला ४ ॥ हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥ धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ सहज अनंदु

रागु सूही महला ४ छन्द घरु १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। मुझे सच्चा गुरु मिला दो ताकि मैं अवगुणों को त्याग दूं और तेरे गुणों को याद करता रहूँ। हे प्रभु, तेरे नाम का सुमिरन करता हुआ मैं सदैव ही गुरु की वाणी का उच्चारण करता रहूँ। गुरु की वाणी सदैव मीठी लगती है क्योंकि इसने पापों और विकारों को दूर कर दिया है। इसके माध्यम से अंहकार का रोग नष्ट हो गया है, भय भाग खड़ा हुआ है और स्वाभाविक रूप से ही मैं सहज अवस्था को प्राप्त हो गया हूँ। गुरुवाणी के अनुरूप आचरण करने से शरीर रूपी सेज आरामदायक हो गई है और वाणी के माध्यम से जो तत्वज्ञान प्राप्त हो गया है उसके कारण प्रभु मिलाप के आनन्द का उपभोग किया जाता है। इस अवस्था में प्रत्येक दिन आनन्द लिया जाता है और हे नानक, यह मेल और उसका आनन्द प्रारम्भ में लिखे लेखों के कारण ही होता है।। १ ।। तू सत्य, सन्तोष से प्रेम बढ़ा क्योंकि समधी रूपी गुरु प्रभु से मेल कराने वाला आ पहुँचा है। सन्तजनों का मेल कराकर उसने गुरु की वाणी का गायन कराया। सन्तजनों का मिलाप करके गुरु ने वाणी का गायन किया, परमपद प्राप्त किया और सन्तजनों के मिलाप के कारण सारा कार्य शोभायमान हो उठा। अब क्रोध भाग खड़ा हुआ, ममता इस शरीर से दूर चली गई तथा पाखण्ड और भ्रमों का निवारण हो गया है। अब अहंकार की पीड़ा चली गई, सुख प्राप्त हो गया और शरीर निरोग हो गया है। गुरु की कृपा से परमात्मा की पहचान हो गई और हे नानक, मैंने जान लिया कि वह प्रभु गम्भीर गुणों वाला है।। २ ।। मनमुख रूपी जीव स्त्री बिछुड़कर दूर चली जाती है, वह वास्तव में हे मेरे प्रभु, अपने में ही जल गई है। उसके अन्दर ममता, क्रूरता, झूठ का लेनदेन चलता रहता है और उसे झूठ ने ही हे प्रभु, ठग लिया है। वह झूठ और कपट पूर्ण आचरण करती हुई महादुख को प्राप्त करती है। उसे सच्चे गुरु के बिना मार्ग नजर नहीं आता। वह उजाड़ रास्तों पर मूर्ख बनी हुई भटकती रहती है और प्रत्येक क्षंण धक्के खाती रहती है। वह दाता प्रभु स्वयं ही दया करे तो सच्चे गुरु से मिला दे जो सब ओर व्याप्त है। हे नानक, वह जन्मों जन्मान्तरों के बिछुड़े सेवकों को सहज स्वाभाविक रूप में ही मिला देता है।। ३ ।। समय को निश्चित करके पति प्रभु आया जिससे जीव स्त्री के मन में उत्साह भर गया है। सन्तजनों ने भी साथ होकर जीव स्त्री के भाग्य लेखों को पढ़ा है। भाग्य लेखों को पढ़कर जब यह पता लगा कि साजन प्रभु घर में पहुँच गया है तो मन में बधाईयाँ बजने लगी। गुणी ज्ञानी सन्तों भक्तों ने बैठकर चिन्तन मनन किया और तत्काल जीव स्त्री के फेरे करवा दिये। वह सर्वप्यापक, अगम्य, अगोचर, सदैव नवीन बना रहने वाला और बचपन का ही मित्र प्रभु जीव स्त्री ने वर रूप में प्राप्त कर लिया। हे नानक, यदि वह कृपा करके अपने से मेल ले तो फिर वह कभी भी बिछुड़ कर दूर नहीं होता।। ४ ।। १ ।। सूही महला ४ ।।* हे प्रभु, तूने जीव स्त्री के साथ पहला फेरा प्रारम्भ किया है और उसे कर्मशील बने रहने का उपदेश पक्का किया है। गुरु की वाणी ही जीव स्त्री के लिये ब्रह्मा और वेद का ज्ञान है। हे भाई, अपने धर्म (कर्त्तव्य कर्म) पर पक्के बने रहो क्योंकि प्रभु-नाम सुमिरन से ही पापकर्म दूर हो जाते हैं। हे भाई, परमात्मा के नाम का सुमिरन करते रहो और कर्त्तव्य कर्म पर पक्के बने रहो। प्रभु-नाम सुमिरन ही गुरु के सिक्ख के लिये स्मृति आदि का उपदेश है। सच्चे पूर्ण गुरु की आराधना करो क्योंकि यही सब विषय विकारों और पापों को दूर करने वाली है।

होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥ १ ॥ हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥ २ ॥ हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥ ३ ॥ हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥ ४ ॥ २ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही छंत महला ४ घरु २ ॥

गुरमुखि हरि गुण गाए ॥ हिरदै रसन रसाए ॥ हरि रसन रसाए मेरे प्रभ भाए मिलिआ सहजि सुभाए ॥ अनदिनु भोग भोगे सुखि सोवै सबदि रहै लिव लाए ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाईऐ अनदिनु नामु धिआए ॥ सहजे सहजि मिलिआ जगजीवनु नानक सुंनि समाए ॥ १ ॥ संगति संत मिलाए ॥ हरि सरि निरमलि नाए ॥ निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा ॥ दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा हउमै बिनठी पीरा ॥ नदरि प्रभू सतसंगति पाई निज घरि होआ

जिसके मन में प्रभु प्यारा और मीठा लगने लगा उस भाग्यशाली को स्थिरता की अवस्था का आनन्द प्राप्त हो जाता है। दास नानक कहता है कि प्रभु-नाम का सुमिरन ही प्रभु पति के साथ जीव स्त्री का प्रारम्भिक अथवा पहला फेरा है।। १ ।। हे प्रभु, मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। जिस जीव स्त्री को सच्चा गुरु मिला देता है उसका मन सभी डरों की ओर से निर्भय होकर अपने अन्दर उस प्रभु के अनुसाशन को बसा लेता है तथा अहंकार की मैल उससे दूर हो जाती है। प्रभु के गुण गाने से उसके अन्दर निर्मल संयम बन जाता है और वह प्रभु को अपने पास और सामने ही देखती है। उसकी आत्मा में वह प्रभु व्याप्त हो जाता है जो सर्वत्र ही भरपूर रूप से निवास कर रहा है। उसके अन्दर और बाहर उस एक ही प्रभु का एहसास बना रहता है और सबके साथ मिलकर वह प्रभु के आनन्द के गीत गाती रहती है। दास नानक का कथन है कि दूसरा फेरा चलने के साथ अनहद शब्द बजने लगता है।। २ ।। तीसरे फेरे में जीव स्त्री के मन में हे प्रभु, वैराग्यपूर्ण चाव पैदा हो जाता है अर्थात् यह चाव या प्रेम ओछा ना होकर वैराग्यपूर्ण गहरा और गम्भीर होता है। सन्तजनों के माध्यम से प्रभु मिलता और प्राप्त होता है और इस प्रकार जीव स्त्री बड़े भाग्य वाली बन जाती है। प्रभु के गुण गाए जाते हैं, उस निर्मल प्रभु को पाया जाता है और मुख से उस प्रभु की वाणी का उच्चारण किया जाता है। सन्तजनों ने बड़े भाग्य से उसे प्राप्त कर लिया होता है और अब प्रभु की अकथनीय कथा को कहा सुना जाता है। हृदय में प्रभु नाम की ही धुन उत्पन्न होती है और माथे के भाग्य लेखों के अनुसार प्रभु का सुमिरन किया जाता है। दास नानक का कथन है कि जीव आत्मा के परमात्मा के साथ विवाह के तीसरे फेरे के रूप से स्त्री के मन में वैराग्यपूर्ण प्रेम उत्पन्न होता है।। ३ ।। प्रभु के साथ चौथे फेरे में मन में सहज भाव उत्पन्न होता है और प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। गुरमुख बनकर स्वाभाविक रूप से ही वह प्रभु मिल जाता है और अब वह प्रभु मन तन को मीठा लगने लगता है। प्रभु मीठा लगता है और प्रभु को भी सब कुछ अच्छा लगता है तथा हर दिन उस प्रभु में ही लौ लगाई जाती है। मनोवांछिंत फल के रूप में उस प्रभु को पा लिया जाता है तथा प्रभु-नाम की बधाई अन्तर्मन में बजने लगती है। प्रभु पति ने ही यह आनन्दपूर्ण कार्य की रचना की तथा जीव स्त्री हृदय में प्रभु-नाम के बस जाने के कारण खिल उठी है। दास नानक कहता है कि इस चौथे फेरे के बाद वह अविनाशी प्रभु प्राप्त हो जाता है।। ४ ।। २ ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। राgु सूही छन्द महला ४ घरु २ ।।

गुरमुख बनकर प्रभु के गुण गाए, उसे हृदय और जीभ के द्वारा स्वाद रूप में जाना। जब उसे जीभ पर स्वाद रूप में जाना तो मेरे प्रभु को यह कार्य अच्छे लगने लगे और वह सहज स्वाभाविक रूप से ही आकर मिल गया है। अब जीव ऐसे आनन्ददायक भोगों को भोगता है, सुखपूर्वक सोता है और शब्द के माध्यम से उस प्रभु में लौ लगाए रहता है। प्रत्येक दिन नाम सुमिरन करके बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु को पाया जाता है। सहज स्वाभाविक रूप से ही संसार का जीवन वह प्रभु मिल गया है और हे नानक व्यक्ति उस शून्य निर्गुण अवस्था में लीन हो जाता है।। १ ।। संगति और शान्त पुरुष उसे मिलाते हैं और अब मैंने भी प्रभु रूपी निर्मल सरोवर में स्नान किया है। निर्मल जल में स्नान करके मैंने मैल को अपने उपर से हटा दिया है और मेरा शरीर अब पवित्र हो गया है। दुर्मति रूपी मेरी मैल चली गई है, मेरा भ्रम भाग खड़ा हुआ है और मेरे अहंकार की पीड़ा विनष्ट हो गई है। प्रभु की कृपा दृष्टि से मैंने सत्संगति पा ली है और मेरे वास्तविक घर में अर्थात् मेरे मूल रूप में

वासा ॥ हरि मंगल रसि रसन रसाए नानक नामु प्रगासा ॥ २ ॥ अंतरि रतनु बीचारे ॥ गुरमुखि नामु पिआरे ॥ हरि नामु पिआरे सबदि निसतारे अगिआनु अधेरु गवाइआ ॥ गिआनु प्रचंडु बलिआ घटि चानणु घर मंदर सोहाइआ ॥ तनु मनु अरपि सीगार बणाए हरि प्रभ साचे भाइआ ॥ जो प्रभु कहै सोई परु कीजै नानक अंकि समाइआ ॥ ३ ॥ हरि प्रभि काजु रचाइआ ॥ गुरमुखि वीआहणि आइआ ॥ वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ सा धन कंत पिआरी ॥ संत जना मिलि मंगल गाए हरि जीउ आपि सवारी ॥ सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंञ बणाई ॥ नानक प्रभु पाइआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सूही छंत महला ४ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आवहो संत जनहु गुण गावह गोविंद केरे राम ॥ गुरमुखि मिलि रहीऐ घरि वाजहि सबद घनेरे राम ॥ सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे तू करता सभ थाई ॥ अहिनिसि जपी सदा सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ अनदिनु सहजि रहै रंगि राता राम नामु रिद पूजा ॥ नानक गुरमुखि एकु पछाणै अवरु न जाणै दूजा ॥ १ ॥ सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु अंतरजामी राम ॥ गुर सबदि रवै रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥ प्रभु मेरा सुआमी अंतरजामी घटि घटि रविआ सोई ॥ गुरमति सचु पाईऐ सहजि समाईऐ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ सहजे गुण गावा जे प्रभ भावा आपे लए मिलाए ॥ नानक सो प्रभु सबदे जापै अहिनिसि नामु धिआए ॥ २ ॥ इहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥ अंतरे हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥ अंतरि चतुराई थाइ न पाई बिरथा जनमु गवाइआ ॥ जम मगि दुखु पावै चोटा खावै अंति गइआ पछुताइआ ॥ बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुटंबु सुतु भाई ॥ नानक माइआ मोहु पसारा आगै साथि न जाई ॥ ३ ॥ हउ पूछउ अपना सतिगुरु दाता किन बिधि दुतरु तरीऐ राम ॥ सतिगुर भाइ चलहु जीवतिआ इव मरीऐ राम ॥ जीवतिआ मरीऐ

मेरा निवास हो गया है। प्रभु के मंगल गीतों के रसों का जीभ पर प्रेम पूर्वक उपभोग करके हे नानक, मुझमें प्रभु-नाम प्रकाशित हो उठा है।। २ ।। मेरे हृदय में विचार का रत्न प्रकाशित हो उठा है और गुरमुख बनकर मुझे प्रभु-नाम प्यारा लगने लगा है। प्रभु का नाम प्यारा लगता है तो शब्द के माध्यम से पार उतरा जाता है तथा अज्ञान का अंधकार दूर हो जाता है। जब ज्ञान प्रचंड रूप से प्रज्जवलित हो उठता है तो अन्तर्मन में प्रकाश हो जाता है तथा मेरा शरीर रूपी घर शोभायुक्त हो उठता है। तन मन अर्पण करके मैंने श्रृंगार किए हैं और मेरे ये श्रृंगार सच्चे प्रभु को भा गए हैं। जो प्रभु कहे उसे यदि अच्छी तरह किया जाए तो हे नानक, उस प्रभु की गोदी में लीन बना रहा जा सकता है।। ३ ।। विवाह के इस शुभ कार्य की रचना प्रभु ने ही की और गुरमुख बनकर जीव विवाह करने के लिये अर्थात् गुणवान जीव स्त्री से मिलाप के लिये इस संसार में आया है। विवाह के लिये आया हुआ जीव गुरमुख रूपी स्त्री बनकर प्रभु को प्राप्त करता है और ऐसी जीव स्त्री ही उस पति को प्यारी लगती है। सन्तजनों ने मिलकर खुशी के गीत गाए हैं क्योंकि प्रभु ने स्वयं ही जीव स्त्री को सँवारा है। दैवीय गुणों वाले व्यक्ति और दैवीय गुणों वाले ही नाचने गाने वाले जब प्रभु के साथ मिलकर जीव स्त्री से विवाह करने आते हैं तो यह एक अपूर्व बारात बनी दिखाई देती है। हे नानक, मैंने सच्चे प्रभु को वर रूप में पा लिया है जो ना कभी मरता है ना कभी जीव से बिछुड़ कर जाता है।। ४ ।। १ ।। ३।।

रागु सूही छन्द महला ४ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे सन्तजनों आओ और मिलकर उस प्रभु के गुणों का गान करो। गुरमुख बनकर सब मिलकर रहें और हमारे घट-घट में प्रभु का शब्द अनेकों प्रकार से बज उठे। हे प्रभु, तेरे शब्द और उनकी धुनें अनेकों हैं और तू ही कर्ता सब स्थानों में व्याप्त है। मैं दिन-रात सदैव तेरा जाप करता हूँ, सदैव तेरा गुणानुवाद करता हूँ और सच्चे शब्द के माध्यम से ही मैं अपनी लौ लगाता हूँ। मेरा हृदय सदैव सहज भाव में रंगा रहे और उसमें राम नाम को मैं हृदय की पूजा बनाऊं। इस प्रकार हे नानक, गुरमुख बनकर केवल एक प्रभु की ही पहचान की जाती है और फिर मेरा हृदय किसी दूसरे को नही जानता।। १ ।। वह अन्तर्यामी प्रभु सबमें रमण कर रहा है। जो शब्द-गुरु के माध्यम से उसका सुमिरन करता है उसे वह सर्वव्यापक स्वामी दिखाई देता है। मेरा प्रभु स्वामी और अन्तर्यामी है और वह ही प्रत्येक हृदय में बसा हुआ है। गुरु के उपदेश के माध्यम से सत्य को पाया जाता है, सहज स्वरूप में लीन हुआ जाता है और फिर उस प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं दिखता। यदि प्रभु को भा जाए तो मैं स्वाभाविक रूप से ही उसके गुणों का गायन करूं और वह मुझे अपने से मिला ले। हे नानक, दिन-रात प्रभु-नाम का सुमिरन करने से वह प्रभु शब्द के माध्यम से ही अनुभव में आता है।। २ ।। यह संसार ना तैरा जा सकने वाला समुद्र है और मनमुख व्यक्ति इसके पार नहीं जा पाता। मनमुख के अन्तर्मन में अहं, ममता, काम, क्रोध और चतुराई भरी रहती है। उसके अन्तर्मन में चतुराई होती है इसीलिये उसे कोई ठिकाना नहीं मिलता हैं और उसका जीवन व्यर्थ ही चला जाता है। वह यम के मार्ग पर दुख पाता चोटें खाता हुआ अन्नतः पछताता हुआ यहाँ से जाता है। प्रभु नाम के बिना पुत्र, परिवार आदि कोई भी साथी नहीं है। हे नानक, यह तो माया मोह का फैला हुआ प्रपंच है और यह परलोक में साथ नहीं जाता।। ३ ।। मैं अपने सच्चे गुरु और दाता प्रभु से पूछता हूँ कि किस विधि से इस विषम सागर को पार किया जा सकता है। सच्चे गुरु के हुकुम (मर्जी) में चलते रहो तो इस प्रकार तुम जीवन में ही विषय विकारों की ओर से मर जाओगे। जीवित रहते हुए ही मरना

भउजलु तरीऐ गुरमुखि नामि समावै ॥ पूरा पुरखु पाइआ वडभागी सचि नामि लिव लावै ॥ मति परगासु भई मनु मानिआ राम नामि वडिआई ॥ नानक प्रभु पाइआ सबदि मिलाइआ जोती जोति मिलाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

सूही महला ४ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु संत जनो पिआरा मै मिलिआ मेरी त्रिसना बुझि गईआसे ॥ हउ मनु तनु देवा सतिगुरै मै मेले प्रभ गुणतासे ॥ धनु धंनु गुरू वड पुरखु है मै दसे हरि साबासे ॥ वडभागी हरि पाइआ जन नानक नामि विगासे ॥ १ ॥ गुरु सजणु पिआरा मै मिलिआ हरि मारगु पंथु दसाहा ॥ घरि आवहु चिरी विछुंनिआ मिलु सबदि गुरू प्रभ नाहा ॥ हउ तुझु बाझहु खरी उडीणीआ जिउ जल बिनु मीनु मराहा ॥ वडभागी हरि धिआइआ जन नानक नामि समाहा ॥ २ ॥ मनु दह दिसि चलि चलि भरमिआ मनमुखु भरमि भुलाइआ ॥ नित आसा मनि चितवै मन त्रिसना भुख लगाइआ ॥ अनता धनु धरि दबिआ फिरि बिखु भालण गइआ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू बिनु नावै पचि पचि मुइआ ॥ ३ ॥ गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥ मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चिंत विसारिआ ॥ मै अंतरि वेदन प्रेम की गुर देखत मनु साधारिआ ॥ वडभागी प्रभ आइ मिलु जनु नानकु खिनु खिनु वारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ सूही छंत महला ४ ॥ मारेहिसु वे जन हउमै बिखिआ जिनि हरि प्रभ मिलण न दितीआ ॥ देह कंचन वे वंनीआ इनि हउमै मारि विगुतीआ ॥ मोहु माइआ वे सभ कालखा इनि मनमुखि मूड़ि सजुतीआ ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे गुर सबदी हउमै छुटीआ ॥ १ ॥ वसि आणिहु वे जन इसु मन कउ मनु बासे जिउ नित भउदिआ ॥ दुखि रैणि वे विहाणीआ नित आसा आस करेदिआ ॥ गुरु पाइआ वे संत जनो मनि आस पूरी हरि चउदिआ ॥ जन नानक प्रभ देहु मती छडि आसा नित सुखि सउदिआ ॥ २ ॥ सा धन आसा चिति करे राम राजिआ हरि प्रभ सेजड़ीऐ आई ॥ मेरा ठाकुरु

और संसार सागर को पार करना तथा नाम में लीन होना गुरमुख बनकर ही संभव होता है। जब बड़े भाग्य से उस पूर्ण व्यायक प्रभु को पा लिया जाता है तो वही सच्चे नाम में हमारी लौ को जोड़े रखता है। लौ लगने से मति प्रकाशमान हो उठती है और प्रभु-नाम की महिमा से मन सन्तुष्ट हो जाता है। हे नानक, शब्द के माध्यम से उससे मिले हुए ने प्रभु को पा लिया है और परम ज्योति में उसकी ज्योति मिल गई है।। ४ ।। १ ।। ४ ।।

सूही महला ४ घरु ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे सन्तजनों, मुझे प्यारा गुरु मिल गया है और मेरी तृष्णा बुझ गई है। मैं सच्चे गुरु को अपना तन मन अर्पण करता हूँ ताकि मुझे गुणों के भण्डार प्रभु से वह मिला दे। वह गुरु बड़ा महान है और उसे शाबाश है कि उसने मुझे प्रभु के बारे में बता दिया। बड़े भाग्य से मैंने प्रभु को पाया है और दास नानक उसके नाम के माध्यम से खिल उठा है।। १ ।। मुझे प्यारा सज्जन गुरु मिल गया है और उससे मैं प्रभु का मार्ग पूछती हूँ। हे बहुत देर से बिछुड़े हुए प्रभु, अब मेरे घर में आ जाओ। हे स्वामी प्रभु, शब्द-गुरु के माध्यम से मुझे आ मिलो। तेरे बिना मैं ऐसी ही उदास हूँ जैसे जल के बिना मछली मरने को होती है। बड़े भाग्य से मैंने प्रभु का सुमिरन किया है और दास नानक नाम में लीन हो गया है।। २ ।। यह मन दसों दिशाओं में भटकता हुआ भ्रमों में पड़ गया है और मनमुख बनकर भटक गया है। यह मन सदैव आशाएं लगाये रहता है और तृष्णा तथा भूख में इसका मन लीन ही बना रहता है। अनन्त धन इसके अन्दर दबा पड़ा है परन्तु यह फिर भी मायावी पदार्थ जो विष के समान है उन्हें ढूंढने के लिये भटकता रहता है। हे दास नानक, तू प्रभु के नाम का गुणानुवाद कर क्योंकि प्रभु नाम के बिना अनेकों लोग ख्वार होकर मर गए हैं।। ३ ।। सुन्दर और मनमोहक गुरु को प्राप्त करके हमने मन को उस प्रभु की प्रेम वाली वाणी के साथ घायल किया है। अब मेरे हृदय की सारी होश मुझे भूल गई और मेरे मन ने आशाओं और चिन्ताओं को भुला दिया है। मेरे अन्तर्मन में प्रेम की पीड़ा है और गुरु को देखते ही मेरे मन को एक आसरा मिल गया है। बड़े भाग्य रूप प्रभु मुझसे आ मिलो; दास नानक तो हर क्षण तुझ पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। १ ।। ५ ।। सूही छन्द महला ४ ।। हे सन्तजनों, इस अहंकार रूपी विष को मार डालो जो जीव को प्रभु से नहीं मिलने देता। हे भाईयो, यह मेरा शरीर सोने के समान था परन्तु इस अंहकार ने इस शरीर को मार-मार कर तबाह कर दिया है। इस अंहकार ने जीव को मनमुख बनाकर मोह माया की कालिमा इसके साथ लगा दी है। हे दास नानक, गुरुमुखों का ही उद्धार होता है और शब्द-गुरु के माध्यम से ही अहंकार छूटता है।। १ ।। हे भाईयो, इस मन को बस में करो। यह मन पक्षी की तरह सदैव दौड़ता ही रहता है। हे सन्तजनों, दुखों में ही जीवन रूपी रात्रि सदैव नई आशाओं, तृष्णाओं की कामना करती हुई व्यतीत हो गई। हे सन्तजनों, जब गुरु को प्राप्त कर लिया तो प्रभु का जाप करते हुए मेरे मन की आशाएं पूरी हो गई हैं। हे प्रभु, दास नानक को ऐसी बुद्धि प्रदान करो जिससे वह सभी आशाओं को छोडकर सदैव सुखपूर्वक संसार की ओर से निश्चिंत होकर सोता रहे।। २ ।। हे प्रभु, जीव स्त्री चित में आशाएँ लेकर प्रभु की सेज पर आई है। हे मेरे

अगम दइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ मेरै मनि तनि लोचा गुरमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥ ३ ॥ इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥ मै मनि तनि प्रेम बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥ हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै देई ॥ गुरु तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ६ ॥ १८ ॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥ सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइओ कुसंभ रंगाना ॥ कूड़ी डेखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद नामु मजीठा ॥ थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ मिथिआ मोहि मगनु थी रहिआ झूठ संगि लपटाना ॥ नानक दीन सरणि किरपा निधि राखु लाज भगताना ॥ १ ॥ सुणि बावरे सेवि ठाकुरु नाथु पराणा ॥ सुणि बावरे जो आइआ तिसु जाणा ॥ निहचलु हभ वैसी सुणि परदेसी संतसंगि मिलि रहीऐ ॥ हरि पाईऐ भागी सुणि बैरागी चरण प्रभू गहि रहीऐ ॥ एहु मनु दीजै संक न कीजै गुरमुखि तजि बहु माणा ॥ नानक दीन भगत भव तारण तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ २ ॥ सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥ सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥ निहचलु हभ जाणा मिथिआ माणा संत प्रभू होइ दासा ॥ जीवत मरीऐ भउजलु तरीऐ जे थीवै करमि लिखिआसा ॥ गुरु सेवीजै अंम्रितु पीजै जिसु लावहि सहजि धिआनो ॥ नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हउ बलि बलि सद कुरबानो ॥ ३ ॥ सुणि बावरे मतु जाणहि प्रभु मै पाइआ ॥ सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइआ ॥ जिनि प्रभु धिआइआ तिनि सुखु पाइआ वडभागी दरसनु पाईऐ ॥ थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईऐ ॥ ओहु धनु भाग सुधा जिनि प्रभु लधा हम तिसु पहि आपु वेचाइआ ॥ नानक दीन सरणि सुख सागर राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही महला ५ ॥ हरि चरण कमल

अगम्य दयालु स्वामी, तू कृपा कर और इसे अपने से मिला ले। मुझ गुरमुख के मन और तन में तेरी ही कामना बनी हुई है और हे प्रभु, मैंने श्रद्धा की सेज को बिछाया हुआ है। दास नानक हरि प्रभु को भा गया है और इसीलिए वह सहज स्वाभाविक रूप से ही उसे आ मिला है।। ३ ।। मेरे साथ एक ही सेज पर प्रभु बिराजमान है परन्तु वह दिखाई नहीं देता और गुरु के बताने पर ही उस प्रभु से मिलाप होता है। मेरे मन तन में प्रेम का वैराग्य है और हे प्रभु, गुरु कृपा करे तभी मिलाप संभव होता है। हे प्रभु, मैं गुरु पर से बार बार बलिहारी जाता हूँ और उस सच्चे गुरु के सामने मैं अपने प्राण भी दे दूंगा। यदि गुरु प्रसन्न हो जाए तो हे भाई, दास नानक का मेल प्रभु से हो सकता है।। ४ ।। २ ।। ६ ।। ५ ।। ७ ।। ६ ।। १८ ।।

रागु सूही छन्द महला ५ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे बावले जीव, तू क्यों इस संसार को देखकर इसी में भटक गया है। हे पागल, तूने झूठा ही इससे प्यार लगाया है क्योंकि यह तो कुसुम्भ के कच्चे रंग की तरह है। जिस झूठी साम्रगी को देखकर तू भटक बैठा है उसकी कीमत तो आधी कौड़ी भी नहीं। दूसरी ओर प्रभु का नाम मजीठ जैसा पक्के रंग वाला है जो कभी नहीं उतरता। तू तो बहुत गाढ़े लाल फूल की तरह हो जा और रसदायक गुरु के रूप में शब्द को पहचान; तू झूठे मोह में ही मस्त हो रहा है और तू झूठ के साथ ही लिपटा पड़ा है। हे कृपा-निधि, दीन नानक तो तुम्हारी शरण में है; तू अपने भक्तों की लाज रख।। १ ।। हे बावले, तू उस प्रभु का सुमिरन कर जो वास्तव में हमारे प्राणों का भी नाथ है। हे बावले, तू इस बात को भी ध्यान से सुन कि जो यहाँ आया है उसे यहाँ से जाना भी है। यह सब कुछ जिसे तू अटल समझता है यहाँ से चला जाएगा। इसीलिये केवल शान्त पुरुषों के साथ मिलकर संगत करनी चाहिए। प्रभु को भाग्य से ही पाया जाता है और हे वैराग्यवान जीव, तू यह सुन और प्रभु के चरणों को ही पकड़े रह। तू बिना किसी शंका के इस मन को अर्पण कर दे और गुरमुख बनकर अपने बड़े अभिमान को त्याग दे। हे नानक, भक्त तो दीन हैं परन्तु तू संसार सागर से पार उतारने वाला है। तेरे गुणों का क्या बखान किया जाए।। २ ।। हे बावले, इस संसार में झूठा गर्व करने का क्या लाभ। तेरा सारा गर्व और अभिमान नष्ट हो जाएगा। जिसे तू अटल समझता है वह सब यहाँ से चला जाएगा। इसीलिये अपने अभिमान को झूठा समझते हुए तू प्रभु के शान्त-पुरुषों का दास बन जा। जीवित रहते हुए भी यदि संसार के विकारों की ओर से मर जाए तो संसार सागर से पार हो जाया जाता है। परन्तु ऐसा तभी संभव होता है जब भाग्य लेख में लिखा हुआ हो। हे प्रभु, जिसे तू स्थिरता प्रदान करके उसका ध्यान अपने में लगा ले वही गुरु का सुमिरन करता है और नाम-अमृत का पान करता है। नानक तो प्रभु के द्वार पर उस प्रभु की शरण आ गया है और मैं सदैव उस प्रभु पर बलिहारी और कुर्बान जाता हूँ।। ३ ।। हे पागल, यह मत जान लेना कि मैंने प्रभु पा लिया है। तू तो वास्तव में उनकी चरण-धूलि बन जा जिन्होंने प्रभु को पा लिया है। जिन्होंने प्रभु की आराधना की है उन्होंने सुख प्राप्त कर लिया है और बड़े भाग्य से ही उनका दर्शन प्राप्त होता है। तू विनम्र हो जा, सदैव उस पर कुर्बान होता रह और अपने सम्पूर्ण अहंकार भाव को मिटा दे। वह धन्य है और पवित्र भाग्य वाला है जिसने प्रभु को ढूँढ लिया है। हम तो उसके सामने अपने आप को बेच देने वाले हैं। नानक तो दीन बनकर उस सुखों के सागर प्रभु की शरण में आ गया है। हे प्रभु, तू अपने दास की लाज रख।। ४ ।। १ ।। सूही महला ५ ।।

की टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलि राम जीउ ॥ हरि अंम्रिति भरे भंडार सभु किछु है घरि तिस कै बलि राम जीउ ॥ बाबुलु मेरा वड समरथा करण कारण प्रभु हारा ॥ जिसु सिमरत दुखु कोई न लागै भउजलु पारि उतारा ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ नानक नामु महा रसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥ १ ॥ हरि आपे लए मिलाइ किउ वेछोड़ा थीवई बलि राम जीउ ॥ जिस नो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलि राम जीउ ॥ तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥ जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ संत जना मिलि मंगलु गाइआ दिनु रैनि आस तुम्हारी ॥ सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥ २ ॥ संम्हलिआ सचु थानु मानु महतु सचु पाइआ बलि राम जीउ ॥ सतिगुरु मिलिआ दइआलु गुण अबिनासी गाइआ बलि राम जीउ ॥ गुण गोविंद गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए मिले अंतरजामीआ ॥ सतु संतोखु वजहि वाजे अनहदा झुणकारे ॥ सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणैहारे ॥ ३ ॥ उपजिआ ततु गिआनु साहुरै पेईऐ इकु हरि बलि राम जीउ ॥ ब्रहमै ब्रहमु मिलिआ कोइ न साकै भिंन करि बलि राम जीउ ॥ बिसमु पेखै बिसमु सुणीऐ बिसमादु नदरी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी घटि घटि रहिआ समाइआ ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाइआ कीमति कहणु न जाए ॥ जिस के चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआए ॥ ४ ॥ २ ॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गुण गावण लागे ॥ हरि रंगि अनदिनु जागे ॥ हरि रंगि जागे पाप भागे मिले संत पिआरिआ ॥ गुर चरण लागे भरम भागे काज सगल सवारिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि वडभागै ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी जीउ पिंडु प्रभ आगै ॥ १ ॥ अनहत सबदु सुहावा ॥ सचु मंगलु हरि जसु गावा ॥ गुण गाइ हरि हरि दूख नासे रहसु उपजै मनि घणा ॥ मनु तंनु निरमलु

सच्चे गुरु ने प्रसन्न होकर हमें प्रभु के चरणों का आसरा प्रदान कर दिया है। ऐसे व्यक्ति के लिए प्रभु ने अमृत के भण्डार भर दिए हैं और सब कुछ अब उसके घर में स्थित हो गया है। मेरा पिता प्रभु बहुत शक्तिशाली है और वही सब कुछ करने कराने वाला है। उसका सुमिरन करने से कोई दुख नहीं लगता और संसार सागर से पार उतारा हो जाता है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही वह भक्तों का रक्षक है और मैं उसकी महिमा का गान करते हुए ही जीवित बना रहता हूँ। हे नानक, उस प्रभु का महारस अत्यन्त मीठा है और मैं हर रोज़ मन तन से उसको पीता रहता हूँ।। १ ।। जब प्रभु स्वयं अपने से मिला ले तो फिर भला बिछुड़ना कैसे होगा। हे प्रभु, जिसे तेरा आसरा है वह सदैव ही आध्यात्मिक रूप से जीवित बना रहता है। हे सच्चे सृजन कर्ता प्रभु, हमने यह तेरा आसरा भी तुझी से पाया है। वह हमारा प्रभु ऐसा है कि उससे खाली कोई भी नहीं अर्थात् वह सबमें व्याप्त है। सन्तजन मिलकर मंगल गीत गाते हैं और दिन रात तुम्हारी ओर ही आस लगाए रहते हैं। तेरे दर्शन का फल यह मिला कि हमें पूर्ण गुरु मिल गया और नानक सदैव तुझ पर बलिहारी जाता है।। २ ।। जब तेरे सच्चे ठिकाने को हमने हृदय में संभाला तो हमें मान सम्मान और सत्य प्राप्त हो गया। हमें सच्चा दयालु गुरु मिल गया जिससे हमने उस अविनाशी प्रभु के गुणों को पाया है। सदैव उस गोविन्द के गुणों का गान करो क्योंकि वही प्राणों का प्रियतम और मालिक है। अब अच्छे दिन आ गए हैं कि उसने पकड़कर अपने गले से लगा लिया है और वह अन्तर्यामी प्रभु हमें मिल गया है। सत्य, सन्तोष के वाद्य हमारे अन्दर बजने लगे और अनहद शब्द की झंकार होने लगी जिन्हें सुनकर हमारे समस्त भय विनष्ट हो गए हैं ; हे नानक, वह सर्वव्यापक प्रभु ही यह सब करने वाला है।। ३ ।। अब तत्वज्ञान पैदा होने पर हमें यह पता लग गया है कि ससुराल (परलोक) और पिता के घर (इसलोक) में वह केवल एक प्रभु ही व्याप्त है। जब ब्रह्म रूपी जीव को परब्रह्म परमेश्वर मिल गया तो फिर उन दोनों को कोई अलग नहीं कर सकता। अब तो विस्मय ही दिखाई और सुनाई पड़ता है और वह प्रभु विस्मय रूप में ही नजर आता है। वह प्रभु जल, स्थल, अन्तरिक्ष तथा प्रत्येक घट-घट में समाया है। यह जीव जिससे उत्पन्न हुआ था उसी में लीन हो गया और प्रभु की इस लीला का मूल्य नहीं आँका जा सकता। जिसके कौतुकों को समझा नहीं जा सकता नानक उस प्रभु का ही सुमिरन करता है।। ४ ।। २ ।।

रागु सूही छन्द महला ५ घरु २   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जब व्यक्ति उस प्रभु के गुण गाने लगता है तो हर दिन के साथ उसके अन्दर से प्रभु का प्यार जागने लगता है। प्रभु के प्रेम के जगने के साथ पाप भाग खड़े होते हैं और प्यारे सन्त पुरुषों से मिलाप हो जाता है। जीव गुरु के चरणों में लगता है तो उसके भ्रम भाग खड़े होते हैं और उसके सारे कार्य सँवर जाते है। कानों से उसकी वाणी सुनकर सहजभाव में ही प्रभु-नाम का जाप करके जीव बड़े भाग्य वाला बन जाता है। प्रभु की शरण में पड़ा हुआ नानक विनती करता है कि यह प्राण और शरीर सब प्रभु के आगे ही अर्पण कर दिया जाना चाहिए।। १ ।। जब हरि का गुणानुवाद जो वास्तव में सच्चा आनन्द का गीत है गाया गया तो सुहावना अनहद शब्द बज उठा। प्रभु के गुण गाने से दुखों का नाश होता है और मन में अत्यन्त खुशी उत्पन्न हो जाती हे। मन तन को निर्मल

देखि दरसनु नामु प्रभ का मुखि भणा ॥ होइ रेण साधू प्रभ अराधू आपणे प्रभ भावा ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु सदा हरि गुण गावा ॥ २ ॥ गुर मिलि सागरु तरिआ ॥ हरि चरण जपत निसतरिआ ॥ हरि चरण धिआए सभि फल पाए मिटे आवण जाणा ॥ भाइ भगति सुभाइ हरि जपि आपणे प्रभ भावा ॥ जपि एकु अलख अपार पूरन तिसु बिना नही कोई ॥ बिनवंति नानक गुरि भरमु खोइआ जत देखा तत सोई ॥ ३ ॥ पतित पावन हरि नामा ॥ पूरन संत जना के कामा ॥ गुरु संतु पाइआ प्रभु धिआइआ सगल इछा पुंनीआ ॥ हउ ताप बिनसे सदा सरसे प्रभ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ मनि साति आई वजी वधाई मनहु कदे न वीसरै ॥ बिनवंति नानक सतिगुरि द्रिड़ाइआ सदा भजु जगदीसरै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

रागु सूही छंत महला ५ घरु ३ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥ तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥ सार न जाणा तू वड दाणा करि मिहरंमति सांई ॥ किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे तेरी ॥ सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम ॥ १ ॥ तुम्ह गउहर अति गहिर गंभीरा तुम पिर हम बहुरीआ राम ॥ तुम वडे वडे वड ऊचे हउ इतनीक लहुरीआ राम ॥ हउ किछु नाही एको तूहै आपे आपि सुजाना ॥ अंम्रित द्रिसटि निमख प्रभ जीवा सरब रंग रस माना ॥ चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥ नानक ठाकुरु सरब समाणा आपन भावन करीआ ॥ २ ॥ तुझु ऊपरि मेरा है माणा तूहै मेरा ताणा राम ॥ सुरति मति चतुराई तेरी तू जाणाइहि जाणा राम ॥ सोई जाणै सोई पछाणै जा कउ नदरि सिरंदे ॥ मनमुखि भूली बहुती राही फाथी माइआ फंदे ॥ ठाकुर भाणी सा गुणवंती तिन ही सभ रंग माणा ॥ नानक की धर तूहै ठाकुर तू नानक का माणा ॥ ३ ॥ हउ वारी वंञा घोली वंञा तू परबतु मेरा ओल्हा राम ॥ हउ बलि जाई लख लख लख

बनाकर और उसका दर्शन देखकर मैं अपने मुख से प्रभु-नाम का कथन करता हूँ। प्रभु की आराधना करते हुए यदि मैं साधु पुरुषों की चरण धूलि बन जाऊं तो तभी अपने प्रभु को अच्छा लग सकता हूँ। नानक विनती करता है कि मुझ पर दया करो ताकि मैं सदैव प्रभु के गुण गाता रहूँ।। २ ।। गुरु से मिलकर संसार सागर को पार किया जाता है और प्रभु के चरणों के जाप से ही पार उतारा होता है। प्रभु चरणों की आराधना से सभी फल पाए जाते हैं और आवागमन मिट जाता है। प्रेम की भक्ति से स्वाभाविक रूप से प्रभु का जाप करके मैं अपने प्रभु को अच्छा लगता हूँ। उस एक अदृष्ट, अपार एवं पूर्ण प्रभु का ही जाप किया जाना चाहिए क्योंकि उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है। दास नानक विनती करता है कि गुरु ने उसके भ्रमों को मिटा दिया है और अब मैं जिधर देखता हूँ उधर वह ही दिखाई देता है।। ३ ।। हरि नाम पतितों को पवित्र करने वाला है और शान्त पुरुषों के सभी कार्यो को पूरा करने वाला है। गुरु रूपी सन्त को पाकर जब प्रभु की आराधना की तो हमारी सभी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। मेरे सभी अहंकार के संताप विनष्ट हो गए और अब मेरा जीवन रसपूर्ण हो गया तथा बहुत समय से बिछुड़ा प्रभु मुझे मिल गया है। जिसके मिलने से मन में शान्ति आ गई, बधाई गीत बजने लगे वह प्रभु तो कभी भी मेरे मन से विस्मृत ना हो। नानक विनती करता हैं कि सच्चे गुरु ने मुझे यही पक्के तौर पर समझाया है कि सदैव जगत के ईश्वर उस प्रभु का सुमिरन करते रहो।। ४ ।। १ ।। ३ ।।

रागु सूही छन्द महला ५ घरु ३ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, तू हमारा स्वामी है, तू वैराग्यवान अर्थात् सभी इच्छाओं, आशाओं से परे रहने वाला है। मेरे जैसी अनेकों तेरी दासियाँ है। रत्नों का भण्डार तू समुद्र है और हे प्रभु, मुझे तुम्हारे बारे में कुछ भी पता नहीं है। मैं तेरा ओर छोर नहीं जानता ; तू बहुत सयाना है इसीलिये हे प्रभु, मुझ पर कृपा कर और मुझे ऐसी मति प्रदान कर कि मैं आठों प्रहर तेरी आराधना करता रहूँ। हे जीव, यदि तू अहंकार न करे और सबकी चरण-धूलि बना रहे तभी तेरी मुक्ति होगी। नानक का स्वामी तो सबसे उपर है और मेरे जैसी तो अनेकों उसकी दासियाँ हैं।। १ ।। तू सयाना, गहरा और गम्भीर है और हे प्रभु, तुम हमारे पति हो और हम तुम्हारी स्त्रियां है। तुम बहुत बड़े और विशाल हो और मैं तो तुम्हारे सामने बहुत छोटी हूँ। मैं कुछ भी नहीं और केवल तुम ही स्वयं सबसे सयाने हो। हे प्रभु, तुम्हारे क्षण भर की कृपादृष्टि के कारण ही मैं जीवित हूँ और तुम्हारे सभी रंगों का रस लेता हूँ। तुम्हारे चरणों की शरण में और तुम्हारे दासों की दासी बनते हुए मेरा मन खिल उठा है और तन मन हरा भरा हो गया है। हे नानक, वह स्वामी प्रभु तो सबमें समाया है और जो उसे भाता है वह वही करता है।। २ ।। हे प्रभु, मुझे तुझ पर ही गर्व है और तू ही मेरा बल है। मेरी सुरति, मति और चतुराई तेरी ही है। जब तू जनवाता है तभी मैं कुछ जान पाता हूँ। वास्तव में वही जानता और पहचानता है जिस पर उस सृजनकर्ता प्रभु की कृपादृष्टि होती है। मनमुख बनकर तो मैं बहुत भटकी हुई हूँ और माया के फंदे में फँसी हूँ। जो उस प्रभु को भा गई वही गुणवान स्त्री है और वही सभी सुखों का उपभोग करती है। हे ठाकुर, नानक का आसरा तो तू ही है और तू ही नानक का मान सम्मान है।। ३ ।। हे प्रभु, मैं तुझ पर बलिहारी जाऊं और बार बार कुर्बान होती रहूं क्योंकि तू ही पर्वत जैसा मेरा आसरा है। मैं लाख-लाख बार उस पर बलिहारी जाती हूँ जिसने

बरीआ जिनि भ्रमु परदा खोल्हा राम ॥ मिटे अंधारे तजे बिकारे ठाकुर सिउ मनु माना ॥ प्रभ जी भाणी भई निकाणी सफल जनमु परवाना ॥ भई अमोली भारा तोली मुकति जुगति दरु खोल्हा ॥ कहु नानक हउ निरभउ होई सो प्रभु मेरा ओल्हा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ सूही महला ५ ॥ साजनु पुरखु सतिगुरु मेरा पूरा तिसु बिनु अवरु न जाणा राम ॥ मात पिता भाई सुत बंधप जीअ प्राण मनि भाणा राम ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का दीआ सरब गुणा भरपूरे ॥ अंतरजामी सो प्रभु मेरा सरब रहिआ भरपूरे ॥ ता की सरणि सरब सुख पाए होए सरब कलिआणा ॥ सदा सदा प्रभ कउ बलिहारै नानक सद कुरबाणा ॥ १ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाईऐ जितु मिलिऐ प्रभु जापै राम ॥ जनम जनम के किलविख उतरहि हरि संत धूड़ी नित नापै राम ॥ हरि धूड़ी नाईऐ प्रभू धिआईऐ बाहुड़ि जोनि न आईऐ ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ हरि गुण नित गाए नामु धिआए फिरि सोगु नाही संतापै ॥ नानक सो प्रभु जीअ का दाता पूरा जिसु परतापै ॥ २ ॥ हरि हरे हरि गुण निधे हरि संतन कै वसि आए राम ॥ संत चरण गुर सेवा लागे तिनी परम पद पाए राम ॥ परम पदु पाइआ आपु मिटाइआ हरि पूरन किरपा धारी ॥ सफल जनमु होआ भउ भागा हरि भेटिआ एकु मुरारी ॥ जिस का सा तिन ही मेलि लीआ जोती जोति समाइआ ॥ नानक नामु निरंजन जपीऐ मिलि सतिगुर सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ गाउ मंगलो नित हरि जनहु पुंनी इछ सबाई राम ॥ रंगि रते अपुने सुआमी सेती मरै न आवै जाई राम ॥ अबिनासी पाइआ नामु धिआइआ सगल मनोरथ पाए ॥ सांति सहज आनंद घनेरे गुर चरणी मनु लाए ॥ पूरि रहिआ घटि घटि अबिनासी थान थनंतरि साई ॥ कहु नानक कारज सगले पूरे गुर चरणी मनु लाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ सूही महला ५ ॥ करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा राम ॥ लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम ॥ हरि आराधे जम पंथु साधे दूखु न विआपै कोई ॥ जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई ॥ भरम मोह बिकार नाठे प्रभु

मेरे भ्रम को पर्दे को हटा दिया है। अब मेरा अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया है, मैंने विकारों को त्याग दिया है और उस प्रभु में मेरा मन लीन होकर सन्तुष्ट हो गया है। जब मैं प्रभु को अच्छी लगने लगी तो मैं किसी की मोहताज नहीं रही। मेर जीवन सफल और स्वीकृत हो गया है। मैं भी अब अमूल्य हो गई हूँ और मेरा तौल भी अब भारी हो गया है। मेरे लिये इस संसार से मुक्ति और इस संसार में ठीक तरह से रहने की युक्ति का दरवाजा खुल गया है। नानक का कथन है कि मैं तो अब निर्भय हो गई हूँ क्योंकि वह प्रभु ही अब मेरा आसरा है।। ४ ।। १ ।। ४ ।। सूही महला ५।। मेरा सच्चा गुरु सर्वव्यापक मेरा साजन है और उस पूर्ण के बिना मैं अन्य किसी को नहीं जानता। माता पिता, भाई, पुत्र, बन्धु मेरा वही है वही मेरे प्राणों और मन को भाने वाला प्रभु है। यह प्राण और शरीर सब उसी का दिया है और वही सभी गुणों में भरा पूरा है। वह मेरा प्रभु अन्तर्यामी है और सबमें समाया हुआ है। मैंने उसी की शरण मे आकर सभी सुख प्राप्त किए हैं और मेरा सब प्रकार से कल्याण हुआ है। मैं सदैव उस प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ और हे नानक, सदा उसी पर कुर्बान होता रहता हूँ।। १ ।। ऐसा गुरु बड़े भाग्य से प्राप्त होता है जिसके मिलाप से प्रभु की आराधना होती है। जन्मों जन्मान्तरों के पाप उतर जाते हैं और व्यक्ति प्रभु के सन्तजनों की चरण-धूलि में सदैव स्नान करता रहता है। प्रभु की चरण-धूलि में नहाने और प्रभु की आराधना करते रहने से पुनः योनियों में नहीं आना पड़ता। गुरु के चरणों में लग जाने से भ्रम और भय भाग खड़े होते हैं तथा मनोवांछित फल प्राप्त हो जाता है। सदैव, प्रभु के गुण गाने से और प्रभु नाम का सुमिरन करने से फिर शोक और संताप प्रभावित नहीं करते। हे नानक, वह प्रभु ही प्राणदाता है और उसी का प्रताप पूरा है।। २ ।। प्रभु जो कि गुणों का खजाना है वह शान्त पुरुषों के ही वश में आता है। जो शान्त पुरुषों के चरणों और गुरु सेवा में लग गए हैं उन्होंने ही अपने अहंकारभाव को मिटाकर परमपद को प्राप्त किया है और उनपर ही पूर्ण प्रभु ने कृपा ही है। उनका जीवन सफल हो गया और जिन्होंने केवल एक प्रभु से ही मिलाप किया है उनका भय भाग खड़ा हुआ है। जिस प्रभु का यह जीव था उसी ने ही इसे अपने साथ मिला लिया है और इस जीव की ज्योति परमात्मा की परम ज्योति में लीन हो गई है। हे नानक, प्रभु के निरंजन नाम का सुमिरन किया जाए और सच्चे गुरु से मिलकर आनन्द प्राप्त किया जाए।। ३ ।। हे प्रभु के सेवको, परमात्मा ने सभी इच्छाएं पूर्ण कर दी हैं इसीलिये अब सदैव उसके मंगलगीत गाते रहो। अपने उस प्रभु के रंग में लीन बने रहो जो कभी ना मरता है और ना कभी आता जाता है। प्रभु नाम सुमिरन के फलस्वरूप जब मैंने उस अविनाशी प्रभु को पा लिया है तो मेरे सभी उद्देश्य पूरे हो गए हैं। गुरु के चरणों में मन लगाने से मुझे बहुत ही शान्ति, अपने स्वाभाविक रूप का ज्ञान और आनन्द प्राप्त हो गए है। वह अविनाशी प्रभु घट-घट में बस रहा है और सभी स्थान और स्थनान्तरों में वही व्याप्त है। नानक का कथन है कि गुरु के चरणों में मन लगाने से हमारे सभी मंगल कार्य पूरे हो जाते हैं।।४ ॥२ ॥५ ॥ सूही महला ५।। हे मेरे स्वामी प्रियतम, तू मुझपर कृपा कर ताकि मैं इन आँखों से तेरा दर्शन कर सकूं। हे प्यारे प्रभु, तू मुझे लाखों जीभ प्रदान कर ताकि मेरा यह मुख तेरी ही आराधना करता रहे। प्रभु की आराधना से यम के मार्ग को भी जीत लिया जाता है और फिर कोई भी दुख प्रभावित नहीं करता। वह प्रभु जल, स्थल और अन्तरिक्ष में व्याप्त है और मैं जिधर भी उसको देखता हूँ उधर वह ही दिखाई देता है। मेरे भ्रम, मोह और विकार भाग खड़े हुए हैं क्योंकि प्रभु को

नेर हू ते नेरा ॥ नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखहि दरसु तेरा ॥ १ ॥
कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥ सुणि सुणि
इहु मनु निरमलु होवै कटीऐ काल की फासी राम ॥ कटीऐ जम फासी सिमरि
अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥ हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै
सहजि धिआना ॥ कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी ॥
कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥ २ ॥ करोड़ि
हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम ॥ भव सागर नाव
हरि सेवा जो चड़ै तिसु तारगि राम ॥ भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ
सगल मनोरथ पूरे ॥ महा बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ मन बांछत
फल पाए सगले कुदरति कीम अपारगि ॥ कहु नानक प्रभ किरपा कीजै मनु
सदा चलै तेरै मारगि ॥ ३ ॥ एहो वरु एहा वडिआई इहु धनु होइ वडभागा
राम ॥ एहो रंगु एहो रस भोगा हरि चरणी मनु लागा राम ॥ मनु लागा चरणे
प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला ॥ सभु किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर
दीन दइआला ॥ मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंगि मनु जागा ॥
कहु नानक प्रभि किरपा कीन्ही चरण कमल मनु लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥
सूही महला ५ ॥ हरि जपे हरि मंदरु साजिआ संत भगत गुण गावहि राम ॥
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम ॥ हरि गुण गाइ
परम पदु पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी ॥ सहज कथा प्रभ की अति मीठी
कथी अकथ कहाणी ॥ भला संजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई ॥
जन नानक प्रभ भए दइआला सरब कला बणि आई ॥ १ ॥ आनंदा वजहि
नित वाजे पारब्रहमु मनि वूठा राम ॥ गुरमुखे सचु करणी सारी बिनसे भ्रम
भै झूठा राम ॥ अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु
हरिआ ॥ सरब सुखा तिस ही बणि आए जो प्रभि अपना करिआ ॥ घर महि
नव निधि भरे भंडारा राम नामि रंगु लागा ॥ नानक जन प्रभु कदे न विसरै
पूरन जा के भागा ॥ २ ॥ छाइआ प्रभि छत्रपति कीन्ही सगली तपति
बिनासी राम ॥ दूख पाप का डेरा ढाठा कारजु आइआ रासी राम ॥ हरि

मैंने बहुत ही पास जान लिया है। हे प्रभु, नानक पर कृपा करो ताकि इन आँखों से मैं तेरा दर्शन का सकूं।। १ ।। हे प्रियतम प्रभु, मुझे करोड़ों कान दे दे ताकि मैं अविनाशी प्रभु के गुणों को सुनता रहूँ। उन्हें सुन सुनकर मेरा यह मन निर्मल होता है और यम का फन्दा कटता चला जाता है। अविनाशी प्रभु के सुमिरन से यम का फन्दा काटा जाता है तथा सम्पूर्ण मंगल और विशुद्ध ज्ञान प्राप्त हो जाता है। दिन-रात उस प्रभु का जाप करते रहना चाहिए जिससे स्वाभाविक रूप से ही उसमें ध्यान लगा रहे। प्रभु के सुमिरन से पाप और दुख जल जाते हैं और मन की दुर्मति नष्ट हो जाती है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, कृपा करो ताकि उस अविनाशी प्रभु के गुणों को ही सुना जाए।। २ ।। करोड़ों हाथ तेरी सेवा करते हैं और करोड़ों की चरण प्रभु के मार्ग पर चलते हैं। प्रभु की सेवा ही इस संसार सागर में पार उतारने वाली नाव है और जो इस पर चढ़ जाता है यह उसे पार ले जाती है। प्रभु के सुमिरन से संसार सागर को तैर लिया जाता है और सभी उद्देश्य पूर्ण हो जाते हैं। भयंकर विकार चले जाते है, सुख उत्पन्न होता है और अनहद शब्द के अनेकों वाद्य बजने लगते हैं। मनोवांछित सभी फल प्राप्त हो जाते है क्योंकि उस प्रभु की शक्ति का मूल्य अपरम्पार है। नानक कहता है कि प्रभु, तू कृपा कर जिससे मेरा मन सदैव तेरे मार्ग पर ही चलता रहे।। ३ ।। हे प्रभु, तेरा आशीर्वाद, महिमा, धन रंग रसों के भोग मेरे लिये यही है कि मेरा मन प्रभु चरणों में लगा रहे। प्रभु चरणों मे लगा और प्रभु की शरण में आया हुआ मन यह जान जाता है कि सब कुछ करने कराने वाला वह प्रभु ही है। हे प्रभु और मेरे दीन दयालु स्वामी, सब कुछ तेरा ही है और तू मेरा है। हे सुखों के सागर प्रियतम, मुझ गुण विहीन का मन शान्त पुरुषों की संगत में पड़कर सावधान हो गया है। नानक कहता है कि जब प्रभु ने कृपा की तो उसके चरण कमलों में मेरा मन लीन हो गया है।। ४ ।। ३ ।। ६ ।। सूही महला ५ ।। प्रभु के सुमिरन के लिये ही इस हरि मंदिर रूपी स्थान की रचना की गई है और इसमें संत, भक्त उस प्रभु के गुण गाते हैं। अपने प्रभु का सुमिरन करते हुए वे अपने समस्त पापों को दूर करते हैं। प्रभु की वाणी ऐसी अच्छी है कि इसके माध्यम से प्रभु का गुणानुवाद करके परमपद की प्राप्ति हो जाती है। प्रभु की यह सहज कथा वाली वाणी अत्यन्त मीठी है क्योंकि इसमें प्रभु की अकथनीय वार्ता को अंकित किया गया है। अच्छे संयोग और सच्चे समय और पल में इसकी सदा अटल बनी रहने वाली नींव को रखा गया है। दास नानक पर प्रभु दयालु हो गया तो सभी प्रकार के अच्छे संयोग बनते चले गये हैं।। १ ।। यहाँ सदैव आनन्द के वाद्य बजते रहते हैं और वह परब्रह्म प्रभु सबके मन में बसा रहता है। गुरमुख बनकर इस सच्ची सेवा को संभाला गया जिससे भ्रम, भय और झूठ आदि नष्ट हो गए हैं। इस अनहद वाणी का गुरमुख बनकर बखान किया जाता है और इसका यश सुनने से तन मन हरा भरा हो जाता है। उस व्यक्ति को सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। जिसे प्रभु अपना बना लेता है, जिसे प्रभु नाम का रंग लग गया उसके घर में नवनिधियों के भण्डार भर जाते हैं। हे नानक, जिस सेवक के पूर्ण भाग्य होते हैं उसे प्रभु कभी भी विस्मृत नहीं होता।। २ ।। उस छत्रपति प्रभु ने इस प्रकार की छाया मेरे उपर की है कि मेरी गर्मी का, सब प्रकार के कष्टों का विनाश हो गया है। मेरे दुखों और पापों के घर नष्ट हो गये हैं और मेरा सारा कार्य ठीक राह पर आ गया है।

प्रभि फुरमाइआ मिटी बलाइआ साचु धरमु पुंनु फलिआ ॥ सो प्रभु अपुना सदा धिआईऐ सोवत बैसत खलिआ ॥ गुण निधान सुख सागर सुआमी जलि थलि महीअलि सोई ॥ जन नानक प्रभ की सरणाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ ३ ॥ मेरा घरु बनिआ बनु तालु बनिआ प्रभ परसे हरि राइआ राम ॥ मेरा मनु सोहिआ मीत साजन सरसे गुण मंगल हरि गाइआ राम ॥ गुण गाइ प्रभू धिआइ साचा सगल इछा पाईआ ॥ गुर चरण लागे सदा जागे मनि वजीआ वाधाईआ ॥ करी नदरि सुआमी सुखह गामी हलतु पलतु सवारिआ ॥ बिनवंति नानक नित नामु जपीऐ जीउ पिंडु जिनि धारिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सूही महला ५ ॥ भै सागरो भै सागरु तरिआ हरि हरि नामु धिआए राम ॥ बोहिथड़ा हरि चरण अराधे मिलि सतिगुर पारि लघाए राम ॥ गुर सबदी तरीऐ बहुड़ि न मरीऐ चूकै आवण जाणा ॥ जो किछु करै सोई भल मानउ ता मनु सहजि समाणा ॥ दूख न भूख न रोगु न बिआपै सुख सागर सरणी पाए ॥ हरि सिमरि सिमरि नानक रंगि राता मन की चिंत मिटाए ॥ १ ॥ संत जना हरि मंत्रु द्रिड़ाइआ हरि साजन वसगति कीने राम ॥ आपनड़ा मनु आगै धरिआ सरबसु ठाकुरि दीने राम ॥ करि अपुनी दासी मिटी उदासी हरि मंदरि थिति पाई ॥ अनद बिनोद सिमरहु प्रभु साचा विछुड़ि कबहू न जाई ॥ सा वडभागणि सदा सोहागणि राम नाम गुण चीन्हे ॥ कहु नानक रवहि रंगि राते प्रेम महा रसि भीने ॥ २ ॥ अनद बिनोद भए नित सखीए मंगल सदा हमारै राम ॥ आपनड़ै प्रभि आपि सीगारी सोभावंती नारे राम ॥ सहज सुभाइ भए किरपाला गुण अवगण न बीचारिआ ॥ कंठि लगाइ लीए जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ॥ मान मोह मद सगल बिआपी करि किरपा आपि निवारे ॥ कहु नानक भै सागरु तरिआ पूरन काज हमारे ॥ ३ ॥ गुण गोपाल गावहु नित सखीहो सगल मनोरथ पाए राम ॥ सफल जनमु होआ मिलि साधू एकंकारु धिआए राम ॥ जपि एक प्रभू अनेक रविआ सरब मंडलि छाइआ ॥ ब्रहमो पसारा ब्रहमु पसरिआ सभु ब्रहमु द्रिसटी आइआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि पूरन तिसु बिना नही

जब प्रभु ने आदेश किया तो मेरे दुख दूर हो गये तथा सत्य धर्म और पुण्य मेरे अन्दर फलीभूत हो उठे हैं। ऐसे प्रभु को सोते, बैठते हुए, खड़े रहते हुए, सदैव याद रखा जाना चाहिये। गुणों का खजाना, सुखों का सागर वह स्वामी प्रभु जल, स्थल और अन्तरिक्ष में परिपूर्ण है। दास नानक तो ऐसे प्रभु की ही शरण में है और उसके बिना उसका अन्य कोई नहीं।। ३ ।। प्रभु का सुमिरन करने से मेरा मन रूपी घर सज गया और मेरा संसार रूपी बाग और सरोवर भी सुन्दर बन गया है। मेरे मित्र और सज्जन प्रसन्न हुए हैं जिससे प्रभु के मंगल गीत गाते हुए मेरा मन भी शोभायुक्त हो गया है। प्रभु के गुणानुवाद और सच्चे सुमिरन से हमारी सभी इच्छाएं पूरी हो गई । गुरु के चरणों में लग जाने से सदा के लिये हम सावधान हो गए और हमारे मन में बधाई के बाजे बजने लगे। आसानी से सुख दे देने वाले प्रभु ने कृपादृष्टि की और मेरे इस लोक तथा परलोक को संवार दिया है। नानक विनती करता है कि सदैव उस प्रभु के नाम का सुमिरन किया जाना चाहिए जिसने इस मन और शरीर को अपने में ही धारण कर रखा है।। ४ ।। ४ ।। ७ ।। सूही महला ५ ।। प्रभु का नाम सुमिरन करने से ही भयानक भवसागर को तैर लिया जाता है। सच्चे गुरु के माध्यम से प्रभु के चरणों की आराधना मानों जहाज है जो इस संसार सागर से पार उतार देता है। शब्द-गुरु के माध्यम से जब संसार सागर तैरा जाता है तो फिर मरना नहीं होता और हमारा आवागमन समाप्त हो जाता है। जो वह प्रभु करता है यदि उसे भला माना जाए तभी मन अपने स्वाभाविक स्वरूप में लीन हो जाता है। सुख सागर प्रभु की शरण में आने से दुख, भूख और सभी प्रकार के रोग जीव को प्रभावित नहीं कर पाते। नानक तो उस प्रभु का सुमिरन कर करके ही उसके रंग में लीन है और उसके मन की चिन्ताएँ मिटाई जा चुकी हैं।। १ ।। शान्त पुरुषों ने प्रभु का ऐसा मन्त्र मुझे याद कराया है कि वह प्रभु प्रियतम मेरे वश में आ गया है। वह मन्त्र यह है कि अब मैंने अपना मन और अपना सब कुछ उस प्रभु के सामने अर्पण कर दिया और उस प्रभु ने मुझे सब कुछ दे दिया है। जब प्रभु ने मुझे अपनी दासी के रूप में स्वीकार कर लिया तो मेरी सब प्रकार की उदासी मिट गई और प्रभु के ठिकाने में मुझे भी स्थान प्राप्त हो गया। सभी कौतुक और तमाशों का वास्तविक आनन्द यही है कि उस सच्चे प्रभु का सुमिरन करते रहो जो कभी भी बिछुड़ कर नहीं जाता। वही जीव-स्त्री भाग्यशाली और सदा सुहागिन है जो प्रभु-नाम के गुणों को पहचानती है। नानक का कथन है कि वही जीव-स्त्री उस प्रभु के रंग में रंगी हुई प्रभु के प्रेम के महारस में भीगती हुई उस प्रभु के साथ रमण करती रहती है।।२।। हे सखी, हमारे यहाँ तो सदैव मंगल ही बना हुआ है और आनन्द विनोद का वातावरण बना ही रहता है। शोभा से युक्त स्त्री का तो अपना प्रभु-पति स्वयं ही शृंगार कर देता है। वह सहज रूप से ही कृपालु हो जाता है और फिर गुण-अवगुणों पर ध्यान नहीं देता। जिन्होंने प्रभु-नाम को हृदय में धारण किया है वह ऐसे सेवकों को अपने गले से लगा लेता है। सारी सृष्टि जिस अभिमान और मोह के मद में फंसी हुई है प्रभु ने कृपा करके उन्हें हमसे दूर ही रखा है। नानक का कथन है कि हमने तो भयानक संसार सागर को पार कर लिया है और हमारे सभी कार्य पूर्ण हो गए हैं।। ३ ।। हे सखियो, सदैव उस प्रभु के गुण गाओ जिससे सभी उद्देश्यों की सिद्धि होती है। साधु पुरुषों से मिलकर यह जीवन सफल होता है और केवल एक ही प्रभु की आराधना की जाती है। एक ही प्रभु की आराधना की जाए जो अनेक होकर सभी स्थानों में रमण करता हुआ व्याप्त है। जब यह पता लग जाता है कि ब्रह्म का विस्तार ही सब ओर फैला है तो फिर सब ओर वह प्रभु ही प्रभु नजर आने लगता है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष में वही परिपूर्ण है और उसके बिना अन्य

जाए ॥ पेखि दरसनु नानक बिगसे आपि लए मिलाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥ सूही महला ५ ॥ अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ करतै आपि वसाइआ सरब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥ १ ॥ घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ संत भगत हरि नामु अराधहि कटीऐ जम की फासी राम ॥ काटी जम फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु धिआए ॥ सगल समग्री पूरन होई मन इछे फल पाए ॥ संत सजन सुखि माणहि रलीआ दूख दरद भ्रम नासी ॥ सबदि सवारे सतिगुरि पूरै नानक सद बलि जासी ॥ २ ॥ दाति खसम की पूरी होई नित नित चड़ै सवाई राम ॥ पारब्रहमि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ आदि जुगादि भगतन का राखा सो प्रभु भइआ दइआला ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाए प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥ दह दिस पूरि रहिआ जसु सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि अबिचल नीव रखाई ॥ ३ ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर हरि हरि कथा नित सुणीऐ राम ॥ अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम ॥ अनहद झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥ हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ तह जनम न मरणा आवण जाणा बहुड़ि न पाईऐ जुोनीऐ ॥ नानक गुरु परमेसरु पाइआ जिसु प्रसादि इछ पुनीऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥ सूही महला ५ ॥ संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥ धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥ अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥ अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ १ ॥ नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि

कोई भी स्थान नहीं है। नानक तो उसके दर्शन को देखकर खिल उठता है और वह प्रभु स्वयं ही अपने में मिला लेने वाला है।। ४ ।। ५ ।। ८ ।। सूही महला ५ ।। परम गुरु प्रभु का सदैव बना रहने वाला यह नगर है जिसमें प्रभु नाम का जाप करते हुए सुख मिलता है। इसे प्रभु ने स्वयं बसाया है और यहाँ सभी मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं। प्रभु ने इसे स्वयं बसाया है यहाँ सभी सुख प्राप्त करके पुत्र, भाई, बन्धु और सिक्ख प्रसन्न हो उठे हैं। ये सभी उस पूर्ण परमेश्वर के गुण गाते हैं जिससे उन सबका कार्य सँवर गया है। यह प्रभु स्वयं ही मालिक है, स्वयं ही रक्षक है स्वयं ही माता और पिता है। नानक कहता है कि मैं ऐसे सच्चे गुरु प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने इस स्थान को शोभा प्रदान की है।। १ ।। घर, महल और दुकानों की लड़ी वही शोभायुक्त है जिसमें प्रभु-नाम निवास करता है। सन्त भक्तजन प्रभु-नाम की आराधना करते हैं जिससे यम का फँदा कट जाता है। अविनाशी प्रभु का नाम सुमिरन करने से यम का फन्दा कट जाता है; सारी सामग्री पूरी हो गई है और हमने मनोवांछित फल पा लिया है। सन्त सज्जन मौज और सुख का उपभोग कर रहे हैं तथा उनका दुख दर्द और भ्रम नष्ट हो गया है। पूर्ण सच्चे गुरु ने शब्द के माध्यम से सब को सँवार दिया है और हे नानक, मैं सदा उस प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। प्रभु का पूर्ण दान प्राप्त हो गया है और यह दान सदैव बढ़ता ही जाता है। उस परमेश्वर ने मालिक बनकर मुझे अपने आसरे में ले लिया है और उस प्रभु का बड़प्पन बड़े से बड़ा है। आदिकाल और युगों आदि के प्रारम्भ से वह प्रभु जो भक्तों का रक्षक है दयालु बना हुआ है। उसने सभी प्राणियों को सुखी बनाकर रखा है और वह स्वयं ही सबका पालन-पोषण करता है। उस मालिक का यश दसों दिशाओं में भरा है और उसके मूल्य को आँका नहीं जा सकता। नानक कहता है कि वह उस सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता है जिसने सदैव बनी रहने वाली नींव रख दी है।। ३ ।। उस पूर्ण परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और उसी पर ध्यान लगाना चाहिए; सदा उस प्रभु की ही कथा वार्ता सुनते रहना चाहिए। उस प्रभु के कौतुक अनहद रूप में स्वतः ही होते रहते हैं, उसके भक्तों का संसार सागर नष्ट हो जाता है और प्रभु की अनहद धुन बजती रहती है। अनहद वाणी की झंकार, तत्व विचार और सन्तों के साथ विचार विमर्श चलता रहता है। प्रभु नाम की आराधना करके व्यक्ति सारी मैल को काट देता है और सारे पापों को नष्ट कर देता है। ऐसे व्यक्ति का जन्म मरण, आना जाना और फिर योनियों में पड़ना आदि नहीं होता। नानक ने परमेश्वर रूपी गुरु पा लिया है जिसकी कृपा से उसकी इच्छाएँ पूरी हो गई है।। ४ ।। ६ ।। ६ ।। सूही महला ५ ।। सन्तजनों के कार्य को पूरा करने हेतु प्रभु स्वयं उठ खड़ा हुआ है और काम को कराने के लिये आ पहुँचा है। यह धरती सुहावनी बन गई है और यह ताल भी सुन्दर बन गया है जिसमें अमृत-जल भरा हुआ है। अमृत-जल के भरने से सारा साजबाज पूरा हो गया तथा हमारे समस्त उद्देश्य पूर्ण हो गए हैं। सारे संसार में जय जयकार हो गई है और सारे दुख क्लेश समाप्त हो गए हैं। वह प्रभु पूर्ण पुरुष अटल उवं अविनाशी है जिसका यश वेदों पुराणों में भी गाया गया है। प्रभु ने अपने बिरद की पालना स्वयं की है और नानक ने तो उसके नाम का ही सुमिरन किया है।। १ ।। उस कर्ता प्रभु ने नवनिधियाँ, ऋद्धियाँ- सिद्धियाँ आदि सब कुछ दे दी हैं और उनमें अब कोई भी कमी नहीं

न आवै काई राम ॥ खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम ॥ दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥ कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेड़ै आइआ ॥ सांति सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सबाई ॥ नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम ॥ २ ॥ जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम ॥ गुण गाइ गोबिंद अनद उपजे साधसंगति संगि बनी ॥ जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी ॥ अठसठि तीरथ पुंन किरिआ महा निरमल चारा ॥ पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा ॥ ३ ॥ गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम ॥ संता की बेनंती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम ॥ नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो ॥ गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो ॥ जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अंम्रित भीजै ॥ बिनवंति नानक इछ पुंनी पेखि दरसनु जीजै ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥

रागु सूही महला ५ छंत   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥ हउ संमलि थकी जी ओहु कदे न बोलै कउरा ॥ कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे ॥ पतित पावनु हरि बिरदु सदाए इकु तिलु नही भंनै घाले ॥ घट घट वासी सरब निवासी नेरै ही ते नेरा ॥ नानक दासु सदा सरणागति हरि अंम्रित सजणु मेरा ॥ १ ॥ हउ बिसमु भई जी हरि दरसनु देखि अपारा ॥ मेरा सुंदरु सुआमी जी हउ चरन कमल पग छारा ॥ प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ आदि अंति मधि प्रभु रविआ जलि थलि महीअलि सोई ॥ चरन कमल जपि सागरु तरिआ भवजल उतरे पारा ॥ नानक सरणि पूरन परमेसुर तेरा अंतु न पारावारा ॥ २ ॥ हउ निमख न छोडा जी हरि प्रीतम प्रान अधारो ॥ गुरि सतिगुर कहिआ जी साचा अगम बीचारो ॥ मिलि साधू दीना ता नामु लीना जनम मरण दुख नाठे ॥ सहज सूख

आती। उन्हें खाते खर्चते और आनन्दपूर्ण भोगते हुए हमने सुख प्राप्त किया है तथा उस प्रभु का दिया हुआ दान सदैव सवाया होकर बढ़ता ही जाता है। सवाया होने वाला यह दान कभी भी कम नहीं पड़ता क्योंकि यह उस अन्तर्यामी प्रभु से प्राप्त किया गया है। हमारे करोड़ों विघ्न उठ कर भाग खड़े हुए हैं और अब दुख तो पास भी नहीं आता। शान्ति, सहजभाव और अत्यधिक आनन्द प्राप्त हो गया है तथा हमारी सारी भूख समाप्त हो गई है। नानक तो उस मालिक के गुण गाता है जिसका बड़प्पन आश्चर्यपूर्ण है।। २ ।। यह जिसका कार्य था स्वयं उसी ने किया है तथा बेचारा मनुष्य भला क्या कर सकता है। प्रभु के गुण गाते हुए भक्तजन सदैव शोभायुक्त बने रहते हैं तथा सदा ही परमात्मा की जय जयकार करते हैं। धरती के आश्रय उस प्रभु के गुण गाने से आनन्द उत्पन्न होता है और साधसंगति से प्रेम बन जाता है। जिसने इस ताल को बनाने के लिये प्रेरणा दी है उसकी सुन्दरता के बारे में क्या कहा जाए। इस अमृत सरोवर में अड़सठ तीर्थ, पुण्य क्रियाएं और सभी निर्मल आचरण आ गए हैं। उस स्वामी का स्वाभाव तो पतित पावन होना ही बना हुआ है तथा नानक को तो केवल शब्द का ही आसरा है।। ३ ।। मेरा कर्ता प्रभु गुणों का भण्डार है, उसकी स्तुति कौन कर सकता है। हे स्वामी, सन्तजनों की यही विनती है कि हमें नाम रूपी महारस प्रदान कीजिए, नाम का दान दीजिए और एक क्षण भर के लिये भी हृदय से विस्मृत न होइए। हे मेरी जीभ, तू उस प्रभु के गुणों का उच्चारण कर और प्रतिदिन उसी का गुणानुवाद करती रह। जिसे प्रभु-नाम की प्रीति लग गई है उसका मन तन अमृत से भीग उठा है। नानक विनती करता है कि उसकी तो इच्छा पूरी हो गई और वह दर्शन देखकर ही जीवित बना रहता है।। ४ ।। ७ ।। १० ।।

रागु सूही महला ५ छन्द १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह सज्जन स्वामी मेरा प्रभु अत्यन्त ही मीठे बोलों वाला है। मैं तो याद करते-करते थक गई हूँ कि वह तो कभी भी कड़वा नहीं बोलता। वह पूर्ण प्रभु कड़वा बोलना तो जानता ही नहीं और हमारे अवगुणों को भी याद नहीं रखता। पतितों को पवित्र करने वाला प्रभु ऐसे विरद का पालन करने वाला कहा जाता है तथा वह किसी की की हुई मेहनत को तिल भर भी नहीं भुलाता अर्थात् वह किये हुए परिश्रम का पूर्ण फल देता है। सबमें निवास करने वाला वह प्रभु हर एक जीव के घट-घट में बसता है और बहुत ही निकट बना रहता है। मेरा वह सज्जन प्रभु अमृत रूप है और दास नानक सदैव उसकी शरण में पड़ा रहता है।। १ ।। मैं उसके अपारदर्शन को देखकर आश्चर्य पूर्ण हो गई हूँ। मेरा स्वामी तो इतना सुन्दर है कि मैं उसके चरण कमलों की धूल के बराबर हूँ। प्रभु को देखती हुई ही मैं जीवित और शान्त बनी रहती हूँ क्योंकि उसके जैसा अन्य कोई नहीं है। वह आदि, अन्त, मध्य अर्थात् सभी कालों में रमा हुआ है और जल, स्थल तथा अन्तरिक्ष में भी वही है। उसके चरण कमलों का सुमिरन करके संसार सागर हमने पार कर लिया है और हम दूसरे किनारे पर उतर गए हैं। नानक तो उस पूर्ण परमेश्वर की शरण में है और हे प्रभु, तेरे पारावार की सीमा नहीं जानी जा सकती।। २ ।। मैं उसे एक क्षण भर के लिए भी नहीं छोड़ सकता क्योंकि वह प्रीतम मेरे प्राणों का आधार है। सच्चे गुरु ने भी मुझे यही बताया है कि वह सच्चा प्रभु अगम्य चिन्तन वाला है। जब साधु पुरुषों ने मुझे दिया तो मैंने उसका नाम प्राप्त किया जिससे मेरा जन्म-मरण का दुख भाग खड़ा हुआ है।

आनंद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ सभ के मधि सभ हू ते बाहरि राग दोख ते निआरो ॥ नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥ ३ ॥ मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु घरु पाइआ ॥ सभि अध्रुव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाए ॥ धरम अरथ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाए ॥ स्रुति सिम्रिति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ ॥ नानक सरनि क्रिपा निधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ वार सूही की सलोका नालि महला ३ ॥

सलोकु मः ३ ॥ सूहै वेसि दोहागणी पर पिरु रावण जाइ ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणै मोही दूजै भाइ ॥ मिठा करि कै खाइआ बहु सादहु वधिआ रोगु ॥ सुधु भतारु हरि छोडिआ फिरि लगा जाइ विजोगु ॥ गुरमुखि होवै सु पलटिआ हरि राती साजि सीगारि ॥ सहजि सचु पिरु राविआ हरि नामा उर धारि ॥ आगिआकारी सदा सोहागणि आपि मेली करतारि ॥ नानक पिरु पाइआ हरि साचा सदा सोहागणि नारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सूहवीए निमाणीए सो सहु सदा सम्हालि ॥ नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे तखतु रचाइओनु आकास पताला ॥ हुकमे धरती साजीअनु सची धरम साला ॥ आपि उपाइ खपाइदा सचे दीन दइआला ॥ सभना रिजकु संबाहिदा तेरा हुकमु निराला ॥ आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहब ता सोहागणी जा मंनि लैहि सचु नाउ ॥ सतिगुरु अपणा मनाइ लै रूपु चड़ी ता अगला दूजा नाही थाउ ॥ ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई अहिनिसि लागै भाउ ॥ नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अंदरि सचु मुखु उजला खसमै माहि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ लोका वे हउ सूहवी सूहा वेसु करी ॥ वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ इन बिधि कंत मिली ॥ २ ॥

अब मुझे आत्मा के स्वाभाव का सहज सुख और अत्यन्त आनन्द प्राप्त हो गया है तथा मेरे अहंकार की गाँठ भी नष्ट हो गई है। वह सबमें रहता हुआ भी सबसे अलिप्त बना रहता है और वह राग द्वेष से निर्लिप्त ही बना रहता है। दास नानक तो प्रभु प्रियतम को मन का आसरा बनाकर उस गोविन्द की शरण में आन पड़ा है।। ३ ।। मैंने खोजते-खोजते अटल प्रभु के ठिकाने को पा लिया। जब मैंने सभी चलायमान पदार्थो को देख लिया तो फिर प्रभु के चरण कमलों में मैंने अपना ध्यान लगा लिया। वह प्रभु अविनाशी है और मैं उसकी दासी हूँ। वह ना तो मरता है ना कहीं आता जाता है। धर्म, अर्थ और काम पूर्ण रूप से उसी में निहित हैं और वही मन में चाही हुई इच्छाओं को पूरा करता है। श्रुतियाँ स्मृतियाँ उस कर्ता प्रभु के ही गुण गाती हैं और सिद्ध साधु तथा मुनिजन ने उसी की आराधना की है। नानक तो उस कृपा के समुद्र प्रभु की शरण में है और बड़े भाग्य से उसने प्रभु का गुणानुवाद किया है।। ४ ।। १ ।। ११ ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। वार सूही की श्लोकों के साथ महला ३ ।।

श्लोक महला ३ ।। जो दूसरों के पति के साथ भोग करने जाती हैं वह लाल वस्त्र धारण किए रहने के बावजूद दुहागिन (वेश्या) है। उसने अपने प्रियतम को तो अपने घर में ही छोड़ रखा है और द्वैतभाव में मोहित बनी हुई है। इस द्वैतभाव को मीठा जानकर उसने खूब इसका उपभोग किया है परन्तु इसी से उसके अन्तर्मन का रोग और बढ़ गया है। उसने प्रभु रूपी पवित्र पति को तो छोड़ दिया है और अब उसे फिर वियोग में रहना पड़ रहा है। गुरमुख होकर ही माया की ओर से ध्यान पलटा जाता है और जीव स्त्री प्रेम का शृंगार करके प्रभु में लीन बनी रहती है। प्रभु नाम को हृदय में धारण करके वह विशुद्ध प्रेम के माध्यम से सच्चे प्रियतम के साथ रमण करती है। उसकी आज्ञा में चलने वाली सदैव सुहागिन बनी रहती है क्योंकि इसे प्रभु ने स्वयं ही अपने से मिलाया होता है। हे नानक, जिसने सच्चे प्रभु रूपी प्रियतम को पा लिया है वह जीव स्त्री सदैव सुहागिन बनी रहती है।। १ ।। महला ३ ।। हे लाल वेष को धारण करने वाली अर्थात् उपर उपर से सुहागिन लगने वाली बेचारी जीव स्त्री, तू सदैव अपने प्रभु-पति को हृदय में सम्भाल कर रख। हे नानक, इस तरह तू अपना जीवन भी सँवार लेगी और तेरे साथ तेरा वंश भी मुक्त हो जाएगा।। २ ।। पउड़ी।। उसने आकाश, पाताल आदि के रूप में स्वयं ही सच्चे सिंहासन की रचना की है और अपने विधान के अन्तर्गत ही धरती को एक सच्ची धर्मशाला के रूप में बनाया है। हे सच्चे दीनदयालु प्रभु, तू स्वयं ही उत्पन्न करता हैं और स्वयं ही नष्ट भी करता है। तू सबको रोजी रोटी देता है और तेरे हुकुम की कार्यशीलता निराली ही है। तू स्वयं ही सबमें कार्यशील है और स्वयं ही सबका पालन करता है।। १ ।। श्लोक महला ३ ।। हे लाल वेष धारण करने वाली, तू तभी सुहागिन हो सकती है यदि तू हृदय से प्रभु के सच्चे नाम को मान ले। तू अपने सच्चे गुरु को मना ले तो तेरा बहुत ही सुन्दर रूप बन जाएगा अन्यथा तेरा और कोई ठिकाना नहीं। तू ऐसा शृंगार कर जो कभी भी मैला ना हो और जिससे रात दिन तेरा प्रेम बना रहे। हे नानक, सुहागिन स्त्री की यही निशानी है कि उसका अन्तर्मन सच्चा हो और उसका मुख उज्जवल हो तथा वह उस मालिक प्रभु में लीन बनी रहे।। १ ।। महला ३ ।। हे लोगो, मै प्रेम में लाल हो चुकी हूँ और मैंने वेश भी लाल धारण कर रखा है। मैंने इसी प्रकार के कई वेश किये है परन्तु लाल वेश मात्र से प्रियतम प्रभु प्राप्त नहीं होता। हे नानक, उन्होंने ही अपने पति को पाया है जिन्होंने गुरु की शिक्षा को मन से सुना है। जैसा उसे अच्छा लगता है यदि वैसी बन जाया जाए तो इस विधि से प्रभु पति को मिला जा सकता है।। २ ।। पउड़ी।।

पउड़ी ॥ हुकमी स्रिसटि साजीअनु बहु भिति संसारा ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥ इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ॥ सचि रते से निरमले हउमै तजि विकारा ॥ जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलै सोई सचिआरा ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहवीए सूहा सभु संसारु है जिन दुरमति दूजा भाउ ॥ खिन महि झूठु सभु बिनसि जाइ जिउ टिकै न बिरख की छाउ ॥ गुरमुखि लालो लालु है जिउ रंगि मजीठ सचड़ाउ ॥ उलटी सकति सिवै घरि आई मनि वसिआ हरि अंम्रित नाउ ॥ नानक बलिहारी गुर आपणे जितु मिलिऐ हरि गुण गाउ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सूहा रंगु विकारु है कंतु न पाइआ जाइ ॥ इसु लहदे बिलम न होवई रंड बैठी दूजै भाइ ॥ मुंध इआणी दुंमणी सूहै वेसि लुोभाइ ॥ सबदि सचै रंगु लालु करि भै भाइ सीगारु बणाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुर भाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि उपाइअनु आपि कीमति पाई ॥ तिस दा अंतु न जापई गुर सबदि बुझाई ॥ माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई ॥ मनमुख ठउर न पाइन्ही फिरि आवै जाई ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ सभ चलै रजाई ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहै वेसि कामणि कुलखणी जो प्रभ छोडि पर पुरख धरे पिआरु ॥ ओसु सीलु न संजमु सदा झूठु बोलै मनमुखि करम खुआरु ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ॥ सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥ पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ ओह रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे सिरजनहारु ॥ नानक गुरमुखि सदा सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु ॥ १ ॥ मः १ ॥ सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि ब्रहम बीचारु ॥ नानक प्रेम महा रसी सभि बुरिआईआ छारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इहु जगु आपि उपाइओनु करि चोज विडानु ॥ पंच धातु विचि पाईअनु मोहु झूठु गुमानु ॥ आवै जाइ भवाईऐ मनमुखु अगिआनु ॥ इकना आपि बुझाइओनु गुरमुखि हरि गिआनु ॥ भगति खजाना बखसिओनु हरि नामु निधानु ॥ ४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सूहवीए

प्रभु ने अपने हुकुम में ही सृष्टि की रचना की है और अनेक प्रकार का संसार बनाया है। हे अलख और अपार प्रभु, तेरे हुकुम को नहीं जाना जा सकता कि यह कितना विशाल (और दुर्बोध) है। अनेकों को तू शब्द-गुरु के चिन्तन के माध्यम से अपने से मिला देता है। जो अहंकार आदि विकारों को त्याग कर सत्य में लीन हैं वे ही वास्तव में निर्मल व्यक्ति हैं। जिन्हें तू मिलाता है, हे प्रभु, वे ही तुझसे मिलते हैं और वे ही सच्चा आचरण करने वाले हैं।।२।। श्लोक महला ३।। हे मायावी प्रपंचो में लगी हुई लाल वेश धारण करने वाली जीव-स्त्री, जिनको दुर्मति के कारण द्वैतभाव के साथ प्रेम है उनके लिये तो यह सारा संसार ही लाल है अर्थात् उनको इस सारे संसार के पदार्थ लाल ही लाल नजर आते हैं। क्षण भर में यह सारी झूठी सामग्री उसी प्रकार विनष्ट हो जाएगी जैसे वृक्ष की छाया एक स्थान पर नहीं टिकती। गुरमुख बनकर ही वास्तव में लाल हुआ जाता है और यह लाली सत्य रूपी मजीठ के रंग जैसी पक्की होती है। जब मन में प्रभु का अमृत नाम बस जाता है तो माया उलट कर दौड़ती हुई अन्तर्मन में स्थित कल्याणकारी प्रभु के पास आ जाती है। हे नानक, उस अपने गुरु पर मैं बलिहारी जाता हूँ जिससे मिलकर प्रभु के गुण गाए जाते हैं।। १ ।। महला ३ ।। ऐसा लाल रंग तो व्यर्थ है जिससे प्रियतम को नहीं पाया जा सकता। ऐसे रंग को उतरते जरा भी देर नहीं लगती और जीव रूपी स्त्री विधवा होकर द्वैतभाव में लगी रहती है। यह मूर्ख और अनजान तथा कमजोर इरादे वाली होती है जो बाहरी लाल वेश में मोहित बनी रहती है। हे जीव स्त्री, तू सच्चे शब्द के लाल रंग में रंग जा और प्रभु के भय तथा प्रेम का शृंगार कर। हे नानक, वही जीव स्त्रियाँ सदा सुहागिन बनी रहती हैं जो सच्चे प्रभु की आज्ञा में चलती हैं।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु ने स्वयं ही सब कुछ उत्पन्न किया है और स्वयं ही उसके मूल्य को जानता है। उस प्रभु के ओर छोर को नहीं जाना जा सकता और वह शब्द-गुरु के माध्यम से ही समझ आता है। यह माया मोह तो घोर अंधकार है तथा जीव इसमें पड़कर द्वैतभाव में भटकता रहता है। मनमुख व्यकित को कोई ठौर ठिकाना नहीं मिलता और वह बार-बार आता जाता रहता है। जो उस प्रभु को भाता है वही होता है और सभी को उसी की रजा में चलना होता है।। ३ ।। श्लोक महला ३ ।। लाल रंग का वेश धारण करने वाली वह कामिनी कुलक्षणा है जो प्रभु को छोड़कर पराए पुरुष के साथ प्रेम बनाए रहती है। उसके पास ना तो शील होता है ना संयम होता है; वह सदैव झूठ बोलती है और मनमुखों के कर्म करती हुई ख्वार होती रहती है। जिसके भाग्य में पहले से ही लिखा हो उसे ही पति रूप में सच्चा गुरु प्राप्त होता है। तथाकथित लाल वेश को उतार कर रख दे और यदि गले में क्षमा के शृंगार को धारण करे तो इस लोक तथा परलोक में उसे बहुत शोभा प्राप्त होती है और सारा संसार उसकी पूजा करता है। जिसके साथ वह सृजनहार प्रभु रमण करता है वह तो किसी के साथ भी मिला देने पर उससे नहीं मिलती। हे नानक, गुरमुख रूपी जीव स्त्री सदा सुहागिन बनी रहती है क्योंकि उसका पति अविनाशी प्रभु होता है।। १ ।। महला १ ।। मायावी और सांसारिक लाल रंग रात के स्वप्न की तरह या उस हार की तरह है जो धागे के बगैर गले में पड़ हो। गुरमुख बनकर ब्रह्म चिन्तन ही सच्चे मजीठ के रंग की तरह होता है जो कभी नही हटता। हे नानक, जो प्रभु प्रेम के महारस में लीन हो गई हैं उनकी सभी बुराईयाँ राख हो जाती हैं।। २ ।। पउड़ी।। आश्चर्यजनक कौतुक करके हे प्रभु, तूने इस संसार को उत्पन्न किया। इसी में तूने मौत, झूठ, अभिमान को पाँचों तत्वों में डाल दिया। इसी में लिपटे मनमुख अज्ञानी जीव आते जाते भटकते रहते हैं। अनेकों को गुरमुख बनाकर हे प्रभु, तूने ही प्रभु ज्ञान के रहस्य को समझाया है। भक्ति का खजाना भी उन्हीं को दिया गया है जिन्होंने प्रभु नाम रूपी भण्डार को पा लिया है।। ४ ।। श्लोक महला ३ ।। हे साँसारिक रंग में रंगी हुई लाल वेश वाली,

सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु ॥ सूहै वेसि पिरु किनै न पाइओ मनमुखि दझि मुई गावारि ॥ सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि ॥ मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइ करे सीगारु ॥ नानक करमी महलु पाइआ पिरु राखिआ उर धारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मुंधे सूहा परहरहु लालु करहु सीगारु ॥ आवण जाणा वीसरै गुर सबदी वीचारु ॥ मुंध सुहावी सोहणी जिसु घरि सहजि भतारु ॥ नानक सा धन रावीऐ रावे रावणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मोहु कूड़ु कुटंबु है मनमुखु मुगधु रता ॥ हउमै मेरा करि मुए किछु साथि न लिता ॥ सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ॥ फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता ॥ जेहा धुरि लिखि पाइओनु से करम कमिता ॥ ५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥ नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥ सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥ २ ॥ मः ३ ॥ कंता नालि महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥ जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥ नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥ भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु दुखु सुखु नालि उपाइआ लेखु करतै लिखिआ ॥ नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥ नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ॥ करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥ सेवक भाइ से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ ॥ ६ ॥ सलोकु मः २ ॥ जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥ १ ॥ मः २ ॥ राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥ नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥ २ ॥ मः २ ॥ बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥ सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥ ३ ॥ मः २ ॥ मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥ तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ॥ आपे स्रिसटि उपाईअनु

तू इस लाल वेश को छोड़ दे तभी तेरा प्रियतम से प्रेम लगेगा। नकली लाल वेश से कोई भी प्रियतम को नहीं पा सका है और मनमुख गँवार स्त्रियाँ तो माया मोह में ही जलकर मर खप गई हैं। जब अहंकार को मन से मारा जाता है तो सच्चा गुरु मिलता है तथा झूठा लाल रंग छूट जाता है। अब तन और मन वास्तविक रूप से लाल रंग में रंगे जाते हैं और प्रभु के गुणों को मन में संभालती हुई जीभ भी लाल रंग वाली हो जाती है। शब्द को मानने वाली और प्रभु के भय तथा प्रेम का शृंगार करने वाली जीव-स्त्री सदैव सुहागिन बनी रहती है। हे नानक, प्रभु की कृपा से उसका ठिकाना पा लिया जाता है और फिर उस प्रियतम को हृदय में धारण करके रखा जाता है।। १ ।। महला ३।। हे मूर्ख जीव स्त्री, तू नकली लाल रंग त्याग दे और पक्के लाल रंग का शृंगार कर। शब्द-गुरु के चिन्तन से तेरा आना जाना भूल जाएगा। वही मुग्धा स्त्री शोभा वाली और सुन्दर है जिसके घर में स्वाभाविक रूप से ही प्रेम के माध्यम से पति आता है। हे नानक, वही जीव स्त्री आनन्द में उस रमण करने योग्य प्रभु से क्रीड़ा करती है।। २ ।। पउड़ी।। वह कुटुम्ब और मोह झूठा है जिसमें मूर्ख मनमुख व्यक्ति लीन बना रहता है। अहंकार में वह मेरा मेरा करता हुआ मर जाता है और उसके साथ कुछ भी नहीं जा पाता। वह द्वैतभाव में इतना भ्रमित बना रहता है कि उसे अपने सिर पर यमकाल का पता ही नहीं चलता। जब यम ने उसे अपने वश में कर लिया तो फिर उसे बीता हुआ समय हाथ नहीं आता। प्रारम्भ से प्रभु ने जैसे उसके लेख लिखकर दिए हैं वह वैसा ही कर्म करता चला जाता है।। ५ ।। श्लोक महला ३ ।। उन स्त्रियों को सती नही कहा जाता जो पति की लाश के साथ जल मरती हैं। हे नानक, उन्हें सती जाना जाता है जो प्रियतम के विरह की चोट से ही मर जाती हैं।। १ ।। महला ३ ।। सती उन्हें भी कहा जाता है जो सच्चे आचरण में सन्तुष्ट बनी रहती हैं और अपने मालिक का सुमिरन करती हुई सदैव उसको हृदय में संभाले रहती हैं।। २ ।। महला ३ ।। अपने पतियों के साथ स्त्रियाँ अपने आप को आग में जला लेती हैं (यदि वे पति को अपना जानती हैं तब तो पति के मर जाने से ही वे बहुत दुख सहन कर लेती हैं। इसलिये उन्हें जलकर सती होने की आवश्यकता नहीं, वे जीवित रहते हुए ही सती हैं)। हे नानक, जो अपने पति को जीवन में जानती मानती ही नहीं वे भला क्यों आग में जलती हैं। उनका तो पति बेशक जीवित हो चाहे मरा हुआ हो वे तो सदैव उससे दूर ही भागती हैं।। ३ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तूने दुख और सुख इकट्ठे ही पैदा किए हैं और तूने ही हमारे लेख लिखें हैं। प्रभु-नाम जैसा अन्य कोई पदार्थ नहीं जिसकी कोई भी रूप रेखा नहीं होती। प्रभु-नाम तो अक्षय भण्डार है जो कि गुरमुख व्यक्ति के मन में बसा रहता है। प्रभु कृपा करके ही जब नाम प्रदान करेगा तो फिर हमारे दुख सुख का लेखा नहीं लिखा जाएगा। जिन व्यक्तियों ने प्रभु के नाम का जाप किया है वे सेवक भावना से ही प्रभु से जा मिलते हैं।। ६।। श्लोक महला २ ।। जिन्होंने यहाँ से चले जाने के रहस्य को जान लिया है वे फिर भला बेकार का आडम्बर यहाँ क्यों करेंगे। जिनको यहाँ से चले जाने की याद ही नहीं रहती वे ही अपने अपने धन्धे सँवारने में लगे हैं।। १ ।। महला २ ।। जीवन रूपी रात्रि के लिये व्यक्ति धन इकट्ठा करता रहता है परन्तु यह नहीं जानता कि सुबह सवेरे ही यहाँ से चले जाना है। हे नानक, यहाँ धन आदि साथ नहीं चलता और फिर व्यक्ति को पछतावा बना रहता है।। २ ।। महला २ ।। मजबूरी में बंधा हुआ जो बेगार की तरह काम करता है उसे ना तो व्यक्ति का गुण ही कहा जा सकता है और ना ही ऐसे कार्य से किसी का उपकार होता है। यदि समतापूर्वक काम किया जाए तो हे नानक, काम भी अच्छा होता जाता है।। ३ ।। महला २ ।। केवल मन के हठ अर्थात् जिद से अपने पक्ष की जीत नहीं हो सकती बेशक उसके लिये कोई कितनी मेहतन कर ले। किसी भी पक्ष को सदभाव और नेक नीयत से ही जीत मिलती है। दास नानक तो शब्द का इसी प्रकार चिन्तन करता है।। ४ ।। पउड़ी।। जिस कर्ता प्रभु ने इस सृष्टि को बनाया है वही इसके बारे में जानता है। वह स्वयं ही इस सृष्टि को बनाता है और स्वयं ही

आपे फुनि गोई ॥ जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ सतिगुरि एकु विखालिआ मनि तनि सुखु होई ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई ॥ ७ ॥ सलोक महला २ ॥ जिना भउ तिन्ह नाहि भउ मुचु भउ निभविआह ॥ नानक एहु पटंतरा तितु दीबाणि गइआह ॥ १ ॥ मः २ ॥ तुरदे कउ तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ जीवते कउ जीवता मिलै मूए कउ मूआ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचु धिआइनि से सचे गुर सबदि वीचारी ॥ हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरि धारी ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लगि पए गावारी ॥ जिन्हि कीए तिसहि न जाणनी मनमुखि गुबारी ॥ जिसु बुझाइहि सो बुझसी सचिआ किआ जंत विचारी ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलां कंतु मनाइ ॥ मतु सेजै कंतु न आवई एवै बिरथा जाइ ॥ कामणि पिर मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु ॥ कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइ ॥ तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करेइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ काजल फूल तंबोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ सेजै कंतु न आइओ एवै भइआ विकारु ॥ २ ॥ मः ३ ॥ धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥ तनु मनु रता रंग सिउ हउमै त्रिसना मारि ॥ मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ क्रिसन मुरारि ॥ भउ भाउ सभु तिस दा सो सचु वरतै संसारि ॥ ९ ॥ सलोक मः १ ॥ वाहु खसम तू वाहु जिनि रचि रचना हम कीए ॥ सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥ आपि खड़ोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥ गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ॥ मसकति लहहु मजूरीआ मंगि मंगि खसम दराहु ॥ नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ महला १ ॥ उजल मोती सोहणे रतना नालि जुड़ंनि ॥ तिन जरु वैरी नानका जि बुढे थीइ मरंनि ॥ २ ॥

फिर उसका नाश कर देता है। यह सारी सृष्टि चारों युगों तक भटकती हुई थक चुकी है क्या कोई भी इसकी सीमा और मूल्य जान सका है। सच्चे गुरु ने उस एक परमात्मा का दर्शन दिखा दिया है जिससे मेरे मन-तन में सुख भर गया है। गुरमुख बनकर सदैव उसका गुणानुवाद करना चाहिये क्योंकि वह कर्ता प्रभु जो करता है वही होता है।। ७ ।। श्लोक महला २ ।। जिन्हें प्रभु का भय है उन्हें वास्तव में अन्य कोई भी भय नहीं है ; जिन्हें प्रभु का भय नहीं उनको कई प्रकार के डर बने रहते हैं। हे नानक, यह रहस्य ना समझ में आने वाले लेख की तरह है जो उस प्रभु के दरबार में पहुँचने से ही जाना जाएगा।। १ ।। महला २ ।। चलते हुए को तो चलता हुआ ही मिलता है और उड़ते हुए को उड़ने वाला ही मिल सकता है। जीवित बने रहने वाले को प्राण-अग्नि वाले जीव ही मिलते हैं और व्यक्ति की मिट्टी उस मरी हुई मिट्टी में मिल जाती है। हे नानक, सदैव उसका गुणानुवाद करना चाहिये जिस मूल कारण रूपी प्रभु ने यह सब कुछ किया है।। २ ।। पउड़ी ।। शब्द-गुरु के चिन्तन से जो सत्य का सुमिरन करते हैं वे ही वास्तव में सच्चे हैं। जिन्होंने प्रभु-नाम हृदय में धारण किया है वे ही अहंकार को मारकर अपना मन निर्मल बना लेते है। जिन्होंने बड़े-बड़े मकानों, मंडपों और महलों में ही अपनी रुचि लगाई है वे वास्तव में मूर्ख और गँवार हैं। जिस प्रभु ने यह सब कुछ किया है उसको वे नहीं जानते और मनमुख बनकर अज्ञान के अंधकार में ही पड़े रहते हैं। जिन्हें वह समझा देता है वे ही समझ कर सच्चे बन जाते हैं तथा बाकी ये जीव जन्तु बेचारे उसके सामने कुछ भी नहीं हैं।। ८ ।। श्लोक महला ३।। हे जीव रूपी कामिनी, पहले तू अपने पति को मना ले और फिर तू श्रृंगार कर। ऐसा ना हो कि तेरी सेज पर तेरा प्रियतम ना आए और तेरा यह श्रृंगार व्यर्थ ही जाए। जीव स्त्री का श्रृंगार तो तभी पूरा होता है यदि उसके प्रियतम का मन सन्तुष्ट हो जाए। यदि वास्तव में अपने पति के साथ प्यार हो तो वह जो भी करता है उसे स्वीकार करना चाहिए। प्रभु के भय को श्रृंगार और पान का रस बनाते हुए प्रेम पूर्वक उसके नाम का भोजन यदि बनाया जाए और उस प्रभु पति को तन मन अर्पण कर दिया जाए तो हे नानक, वह प्रभु पति जीव रूपी स्त्री के साथ रमण करता है।। १ ।। महला ३ ।। जीव स्त्री ने काजल, फूल पान के रस के साथ श्रृंगार किया परन्तु जब वह पति प्रभु सेज पर नहीं आया तो यह सब बेकार हो गया।। २ ।। महला ३ ।। इकट्ठे होकर बैठने वालों को ही पति और पत्नी नहीं कहा जाता; पत्नी और पति उन्हें ही कहा जाएगा जिनके शरीर बेशक दो हों परन्तु उन दोनों में जीवन ज्योति एक ही हो अर्थात् शरीर अलग अलग होने के बावजूद वे अन्दर से एक दूसरे से जुड़े हों।। ३ ।। पउड़ी।। भय रूपी संयम और अनुशासन के बिना भक्ति नहीं होती और प्रभु-नाम के साथ प्यार नहीं लगता। सच्चे गुरु से मिलने पर ही भय अर्थात् अनुशासन की भावना पैदा होती है और प्रभु के भय और प्रेम के माध्यम से ही व्यक्ति का रंग और सुन्दर रूप सँवर जाता है। अहंकार और तृष्णा को मारकर प्रेम से ही तन मन रंग जाता है। जब उस प्रभु से भेंट हो जाती है तो मन तन अत्यन्त सुन्दर बन जाता है। प्रेम और भय सब उस प्रभु का है और वही सत्य रूप में संसार में कार्यशील बना रहता है।। ६ ।। श्लोक महला १ ।। हे मालिक, तू वाह-वाह है जिसने सृष्टि को बनाकर हम जैसों को उत्पन्न किया। रचना और रचयिता का ऐसा ही सम्बन्ध है जैसे समुद्र का उसकी लहर से है तथा हरी बेल का और बरसने वाले बादल का है जो सदा उसे सींचता रहता है। वह प्रभु स्वयं ही सृष्टि बनाकर उसके बीच में स्वयं खड़ा होता है और वह सब कुछ स्वयं और खुद ही है। यदि गुरमुख बनकर सेवा की जाए तो वह सफल होती है और व्यक्ति का मन उन्मनी जैसी ऊँची अवस्था में टिक जाता है। उस प्रभु के द्वार से माँग माँग कर बड़ी मेहनत के साथ प्रभु-नाम के अभ्यास की मजदूरी ली जाती है। हे नानक, उस बेपरवाह प्रभु का द्वार पूर्ण है उसमें कुछ भी कमी नहीं और वह सच्चा प्रभु किसी का मोहताज नहीं ।। १ ।। महला १ ।। मोतियों जैसे उज्जवल दाँत और रत्नों जैसे नेत्र व्यक्ति को मिलते हैं परन्तु हे नानक, बुढ़ापे के साथ इनकी शत्रुता है और बुढ़ापे में ये सब खराब होकर नष्ट हो जाते हैं।। २ ।।

पउड़ी ॥ हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर गंभीरु ॥ मनि तनि हिरदै रवि रहिआ हरि हीरा हीरु ॥ जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु ॥ १० ॥ सलोक मः १ ॥ नानक इहु तनु जालि जिनि जलिऐ नामु विसारिआ ॥ पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अंबड़ै तितु निवंधै तालि ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक मन के कंम फिटिआ गणत न आवही ॥ किती लहा सहंम जा बखसे ता धका नही ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सचा अमरु चलाइओनु करि सचु फुरमाणु ॥ सदा निहचलु रवि रहिआ सो पुरखु सुजाणु ॥ गुर परसादी सेवीऐ सचु सबदि नीसाणु ॥ पूरा थाटु बणाइआ रंगु गुरमति माणु ॥ अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि जाणु ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि ॥ खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीबाणि ॥ १ ॥ मः १ ॥ नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥ साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधै लाइआ ॥ इकि आपे ही आपि लाइअनु गुर ते सुखु पाइआ ॥ दह दिस इहु मनु धावदा गुरि ठाकि रहाइआ ॥ नावै नो सभ लोचदी गुरमती पाइआ ॥ धुरि लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ ॥ १२ ॥ सलोक मः १ ॥ दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ जेते जीअ तेते वणजारे ॥ खुल्हे हट होआ वापारु ॥ जो पहुचै सो चलणहारु ॥ धरमु दलालु पाए नीसाणु ॥ नानक नामु लाहा परवाणु ॥ घरि आए वजी वाधाई ॥ सच नाम की मिली वडिआई ॥ १ ॥ मः १ ॥ राती होवनि कालीआ सुपेदा से वंन ॥ दिहु बगा तपै घणा कालिआ काले वंन ॥ अंधे अकली बाहरे मूरख अंध गिआनु ॥ नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ॥ इकि दूजै भाइ खुआइअनु हउमै विचि विआपे ॥ इहु मानस जनमु दुलंभु सा मनमुख संतापे ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी जिसु सतिगुरु थापे ॥ सभु जगु खेलु

।। पउड़ी।। तन मन और शरीर को अर्पण करके उस प्रभु का गुणानुवाद सदा करते रहना चाहिये। शब्द-गुरु के माध्यम से ही उस गहनू और गम्भीर सत्य को पाया जा सकता है। वह प्रभु रूपी हीरों में भी श्रेष्ठ हीरा सदैव मन तन और हृदय में बसा रहता है। ऐसे व्यक्तियों के जन्म-मरण का दुख चला जाता है और फिर उन्हें यहाँ चक्कर नहीं लगाना पड़ता। हे नानक, तू उस प्रभु के नाम की स्तुति कर क्योंकि वह प्रभु ही गुणों का भण्डार है।। १० ।। श्लोक महला १।। हे नानक, ऐसे शरीर को तो जला दे जिस जले हुए ने उस प्रभु-नाम को भुला दिया। हे जीव, तेरे पापों की पुआल (घासफूस) इकट्ठी हुई जा रही है और जीवन रूपी ताल इतना गहरा है कि इसको साफ करने के लिये वहां नीचे तक हाथ नहीं पहुँच पाएगा अर्थात मन के घासफूस को साथ ही साथ साफ करते रहना चाहिए।। १ ।। महला १ ।। हे नानक, मन के बिगाड़े हुए काम इतने हैं कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। पता नहीं मुझे कितने डर और दुख झेलने पड़ेंगे। परन्तु यदि वह प्रभु मुझे क्षमा कर दे तो मुझे उन दुखों के धक्के नहीं लग सकते।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु ने सच्चा आदेश करके सच्चे ही हुकुम का विधान चला रखा है। वह सुजान प्रभु पुरुष सदैव अटल बना हुआ सभी में बसा हुआ है। गुरु की कृपा से ही उसका सुमिरन किया जाता है और सच्चे शब्द के माध्यम से ही सच्चा वेश अथवा आदर्श मिल पाता है। गुरु की मति के माध्यम से जीव ने सच्चा ठाठ बाट बना लिया है और वह प्रभु के रंग में आनन्दित बना रहता है। वह प्रभु अगम्य, अगोचर और सभी दृष्टियों से परे है, अतः हे जीव, तू गुरमुख बन कर उस प्रभु को जान ले।। ११।। श्लोक महला १ ।। हे नानक, सिक्कों से भरा थैला सम्भाल कर रखा जाता है परन्तु उनमें से खोटे और खरे सिक्कों की परख प्रभु दरबार में ही होती है।। १ ।। महला १ ।। यदि खोटे मन और चोर शरीर से तीर्थो पर स्नान करने के लिये कोई चला जाए तो उस स्नान करने से पाप का एक हिस्सा तो शायद उतर जाए परन्तु साथ ही साथ अहंकार की मैल के दो भाग मन पर और चढ़ जाते हैं। जहरीले आक को बाहर से कितना ही धोया जाए परन्तु उसके अन्दर भयानक ज़हर भरा ही रहता है। साधु व्यक्ति तो स्नान के बिना ही भले हैं पर जो चोर हैं वे नहा कर भी चोर बने रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। वह प्रभु अपना ही हुकुम चलाता है और उसी ने सारे संसार को धन्धों में लगाया हुआ है। अनेकों को उसने अपने साथ लगा लिया है और उन्होंने उस प्रभु रूपी गुरु से सुख प्राप्त किया है। यह मन दसों दिशाओं में दौड़ता है और गुरु ने ही इसे रोक कर रखा है। सारी सृष्टि उसके नाम की आकांक्षा करती है परन्तु यह गुरु की मति में चलने से ही प्राप्त होता है। जो लेख प्रभु ने लिखकर अन्दर डाल दिया है और जिसे प्रारम्भ से ही लिख दिया गया है उसे कोई भी मिटा नहीं सकता।। १२ ।। श्लोक महला १ ।। चाँद और सूर्य दो दीपक हैं और इनके साथ हाट बाजार के रूप में चौदह भवन (पुरियां) हैं। यहाँ जितने भी जीव हैं वे सभी व्यापारी ही हैं। यहाँ की दुकानें खुलती हैं और लेन-देन शुरू हो जाता है परन्तु यहाँ जो भी आता है वह यहाँ से चले जाने के लिए ही आता है। व्यक्ति का धर्म (कर्त्तव्यनिष्ठा) दलाल के रूप में व्यक्ति को निशान देकर उसे खरा या खोटा बता देता है और हे नानक, जिन्होंने यहाँ प्रभु नाम का लाभ कमाया है वे ही वहाँ स्वीकृत होते हैं। वे ही जब वापिस अपने मूल घर में पहुँचते है तो उन्हें बधाईयाँ मिलती हैं और उन्हें ही सच्चे नाम का बड़प्पन हासिल होता है।। १ ।। महला १ ।। रात बेशक कितनी ही काली हो परन्तु सफेद वस्तुओं के रंग सफेद ही रहते हैं अर्थात् बुरे हालात में भी अच्छे लोग अपना स्वाभाव नहीं बदलते। दिन चाहे सफेद होता है और उसमें बहुत गर्मी भी होती है परन्तु काली वस्तुओं के रंग काले बने रहते हैं अर्थात् मनमुख व्यक्ति अपना स्वभाव नहीं बदलते। जिन मूर्खों की बुद्धि अन्धी है वे बुद्धि से विहीन होकर अन्ध ज्ञान ही प्राप्त करते हैं। हे नानक, उस प्रभु की कृपादृष्टि से विहीन बने लोग कभी भी सम्मान प्राप्त नहीं करते।। २ ।। पउड़ी ।। उस सच्चे प्रभु ने स्वयं ही इस शरीर रूपी किले की रचना की है। जो अहंकार में लीन हैं उनको वह द्वैतभाव में डालकर ठीक मार्ग से भटका देता है। यह मानव जीवन दुर्लभ है परन्तु मनमुख व्यक्ति यहाँ दुख ही पाते रहते हैं। जिसे प्रभु स्वयं समझाता है वही समझ पाता है या फिर जिसे सच्चा गुरु अपने हाथ से आर्शीवाद देता है। उस प्रभु ने सारे संसार रूपी खेल

रचाइओनु सभ वरतै आपे ॥ १३ ॥ सलोक मः १ ॥ चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥ वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥ सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥ गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु ॥ नानक कूड़ै कतिऐ कूड़ा तणीऐ ताणु ॥ कूड़ा कपड़ु कछीऐ कूड़ा पैनणु माणु ॥ १ ॥ मः १ ॥ बांगा बुरगू सिङीआ नाले मिली कलाण ॥ इकि दाते इकि मंगते नामु तेरा परवाणु ॥ नानक जिन्ही सुणि कै मंनिआ हउ तिना विटहु कुरबाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ मोहु सभु कूड़ु है कूड़ो होइ गइआ ॥ हउमै झगड़ा पाइओनु झगड़ै जगु मुइआ ॥ गुरमुखि झगड़ु चुकाइओनु इको रवि रहिआ ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ ॥ जोति समाणी जोति विचि हरि नामि समइआ ॥ १४ ॥ सलोक मः १ ॥ सतिगुर भीखिआ देहि मै तूं संम्रथु दातारु ॥ हउमै गरबु निवारीऐ कामु क्रोधु अहंकारु ॥ लबु लोभु परजालीऐ नामु मिलै आधारु ॥ अहिनिसि नवतन निरमला मैला कबहूं न होइ ॥ नानक इह बिधि छुटीऐ नदरि तेरी सुखु होइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ इको कंतु सबाईआ जिती दरि खड़ीआह ॥ नानक कंतै रतीआ पुछहि बातड़ीआह ॥ २ ॥ मः १ ॥ सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥ मै तनि अवगण एतड़े खसमु न फेरे चितु ॥ ३ ॥ मः १ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै वाति ॥ सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ दरि मंगतु जाचै दानु हरि दीजै क्रिपा करि ॥ गुरमुखि लेहु मिलाइ जनु पावै नामु हरि ॥ अनहद सबदु वजाइ जोती जोति धरि ॥ हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ॥ जग महि वरतै आपि हरि सेती प्रीति करि ॥ १५ ॥ सलोक मः १ ॥ जिनी न पाइओ प्रेम रसु कंत न पाइओ साउ ॥ सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥ १ ॥ मः १ ॥ सउ ओलाम्हे दिनै के राती मिलन्हि सहंस ॥ सिफति सलाहणु छडि कै करंगी लगा हंसु ॥ फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु ॥ नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ढाढी गुण गावै नित जनमु सवारिआ ॥ गुरमुखि सेवि सलाहि

को बनाया है और स्वयं उसमें समान रूप से कार्यशील बना है।। १३ ।। श्लोक महला १ ।। चोर, व्यभिचारी पुरुष, वेश्याओं, दलाल स्त्रियों की मजलिस आपस में लगती ही रहती है। इन अधर्मी लोगों की दोस्ती और खाना पीना इकट्ठा चलता ही रहता है। वे प्रभु के गुणानुवाद के महत्त्व को जानते ही नहीं क्योंकि इनमें सदैव शैतान का वास बना रहता है। गधे को बेशक कितना ही चन्दन मला जाए परन्तु उसकी राख में लेटने की आदत बनी ही रहती है। हे नानक, झूठ के धागे की कताई करने से तो झूठ का ताना-बाना ही बनता है। झूठ के कपड़े को नापकर पहनना और ऐसे पहनावे अर्थात् आचरण पर गर्व करना भी झूठा ही है।। १ ।। महला १ ।। मौलवी बाँग देकर, फकीर तूती बजाकर, योगी सिंगी सुनाकर और माँगने वाले मिरासी केवल दूसरों की झूठी तारीफ कर करके माँगते खाते फिरते हैं। हे प्रभु, इस संसार में अनेकों ही दाता हैं और अनेकों ही भिखारी हैं परन्तु तेरे द्वार पर केवल तेरा नाम ही स्वीकृत होता है। हे नानक, जिन्होंने प्रभु-नाम सुनकर उसे माना हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ।। २ ।। पउड़ी ।। धन सम्पदा और उसका मोह सब झूठ है और यह वास्तव में झूठ की तरह ही व्यर्थ हो जाता है। अहंकार में ही सारा झगड़ा होता है और सारा संसार इन झगड़ों में ही मर खप जाता है। गुरमुख बनकर ही इन विवादों को समाप्त किया जाता है और यह माना जाता है कि सबमें वह एक प्रभु ही रमण कर रहा है। गुरमुख व्यक्ति ही सब आत्माओं में उस प्रभु को पहचानता है और इस प्रकार संसार सागर से पार उतर जाता है। उनकी ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो जाती है और वे प्रभु-नाम में समा जाते हैं।। १४ ।। श्लोक महला १ ।। हे सच्चे गुरु, तू मुझे भिक्षा दे क्योंकि तू ही देने वाला समर्थ दाता है। काम, क्रोध, अहंकार आदि को त्याग दिया जाना चाहिए। यदि क्षणिक लाभ और लोभ को अच्छी तरह जला दिया जाए तो प्रभु-नाम का आधार प्राप्त हो जाता है। वह प्रभु दिन रात नवीन बना रहने वाला है और वह निर्मल प्रभु कभी मैला नहीं होता। हे नानक, इस प्रकार मुक्ति प्राप्त की जाती है और तेरी कृपा से सुख प्राप्त होता है।। १ ।। महला १ ।। जितनी भी द्वार पर जीव स्त्रियाँ खड़ी है इन सबका पति एक प्रभु है। जो प्रभु के द्वार पर खड़ी हुई उसकी प्रतीक्षा कर रही हैं हे नानक, वे उसके रंग में रंगी उससे मिलने की बातें एक दूसरे से पूछ रही हैं।। २ ।। महला १ ।। सभी तो अपने पति प्रभु में लीन हैं परन्तु मैं कुलक्षणा दुहागिन जीव स्त्री भला किस गिनती में हूँ। मेरे शरीर में तो अवगुण ही इतने हैं कि मेरा मालिक मेरी तरफ ध्यान ही नहीं करता।। ३ ।। महला १ ।। मैं तो उनपर बलिहारी जाती हूँ जिनके मुँह में उस प्रभु का गुणानुवाद है। वह प्रभु पति सभी रातें सुहागिन अर्थात् अच्छे आचरण वाली स्त्रियों को देता है, काश, वह मुझ दुहागिन को भी एक रात (जीवन) प्रदान कर दे।। ४ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तेरे द्वार पर पड़ा भिखारी तुझसे दान माँग रहा है, तू कृपा करके उसे दे दे। गुरमुख को अपने से मिला लो तो यह सेवक प्रभु-नाम प्राप्त कर ले। अनहद शब्द बजाकर मेरी ज्योति अपनी ज्योति में धारण कर ले। गुरमुख हृदय में प्रभु के गुण गाता हुआ शब्द की जय-जयकार करता रहे। वह प्रभु से प्रीति करता हुआ इस संसार में भी कार्यशील बना रहे।। १५ ।। श्लोक महला १ ।। जिसने प्रेम रस प्राप्त नहीं किया और प्रियतम के पास रहने का स्वाद नहीं चखा वह ऐसा ही है जैसे सुनसान घर में अतिथि आता है और वह जैसे आता है वैसे ही वहाँ से चला जाता है; उसका स्वागत सत्कार करने वाला कोई नहीं होता।। १ ।। महला १ ।। दिन में बुरे काम करने के सैकड़ों पाप हम करते हैं और रात में तो ऐसे उपालम्भ हजारों मिलते हैं। यह विडम्बना ही हैं कि उस प्रभु का गुणानुवाद छोड़कर यह हंस रूपी जीव हड्डियों के पिंजर अर्थात् मुर्दे को खाने में लगा है। ऐसा जीना धिक्कार है जिसमें केवल खा खाकर ही पेट बढ़ाया हुआ हो। हे नानक, सच्चे नाम के बिना सब प्रकार का प्रेम हमारा शत्रु ही है।। २ ।। पउड़ी ।। यह गायक तो प्रभु के गुण गाता है और नित्य ऐसा करके उसने अपने जीवन को सँवार लिया है। गुरमुख ने तो सुमिरन

सचा उर धारिआ ॥ घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ वारिआ ॥ तू आपि सवारहि आपि सिरजनहारिआ ॥ १६ ॥ सलोक मः १ ॥ दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥ बेद पाठ मति पापा खाइ ॥ उगवै सूरु न जापै चंदु ॥ जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥ बेद पाठ संसार की कार ॥ पढ़ि पढ़ि पंडित करहि बीचार ॥ बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥ १ ॥ मः १ ॥ सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ नानक पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जि प्रभु सालाहे आपणा सो सोभा पाए ॥ हउमै विचहु दूरि करि सचु मंनि वसाए ॥ सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाए ॥ मेलु भइआ चिरी विछुंनिआ गुर पुरखि मिलाए ॥ मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए ॥ १७ ॥ सलोक मः १ ॥ काइआ कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥ एनी फुली रउ करे अवर कि चुणीअहि डाल ॥ १ ॥ महला २ ॥ नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥ जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ॥ अनदिनु सेवी गुण रवा मनु सचै रचनी ॥ प्रभु मेरा बेअंतु है अंतु किनै न लखनी ॥ सतिगुर चरणी लगिआ हरि नामु नित जपनी ॥ जो इछै सो फलु पाइसी सभि घरै विचि जचनी ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ पहिल बसंतै आगमनि पहिला मउलिओ सोइ ॥ जितु मउलिऐ सभ मउलीऐ तिसहि न मउलिहु कोइ ॥ १ ॥ मः २ ॥ पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु ॥ नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ २ ॥ मः २ ॥ मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥ अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हरि हरि नामु सलाहीऐ सचु कार कमावै ॥ दूजी कारै लगिआ फिरि जोनी पावै ॥ नामि रतिआ नामु पाईऐ नामे गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ हरि नामि समावै ॥ सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै ॥ १९ ॥ सलोक मः २ ॥ किस ही कोई कोइ मंञु निमाणी

और गुणानुवाद करके उस सच्चे प्रभु को हृदय में धारण कर लिया है। जिसने प्रभु-नाम से प्रेम किया है उसने अपना वास्तविक घर और प्रभु के महल को पा लिया है। गुरमुख बनकर उसने प्रभु-नाम प्राप्त किया है और मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ। हे सृजनकर्ता प्रभु, तू स्वयं ही सबको सँवारता रहता है।। १६ ।। श्लोक मः १ ।। यदि ज्ञान का दीपक जल उठे तो अज्ञान का अंधेरा भाग जाता है। ज्ञान के पाठ पढ़ने सुनने से पापों वाली मति नष्ट हो जाती है। जब ज्ञान का सूर्य चमक उठता है तो चन्द्रमा की ठंडक अर्थात् जड़ता दूर हो जाती है। जहाँ ज्ञान का प्रकाश हो जाता है वहाँ अज्ञान मिट जाता है परन्तु अब तथ्य यह हो गया है कि ज्ञान की पुस्तकों (वेद आदि) को पढ़ने का कार्य अब एक धन्धा बन गया है। पंडित लोग इन्हें पढ़-पढ़ कर अनेकों प्रकार के विचार सामने रखते रहते हैं परन्तु इनके रहस्य को जाने बिना सब ख्वार ही होते रहते हैं। हे नानक, गुरमुख बनकर ही वे पार उतर सकते हैं।। १ ।। महला १ ।। जिनको शब्द (ब्रह्म) में लीन होने का स्वाद नहीं आया और जिनको प्रभु-नाम से प्रेम नहीं लगा वे अपनी जीभ से सदैव हल्की एवं फीकी बातें ही करते रहते हैं तथा हमेशा भटकते रहते हैं। हे नानक, किये हुए कर्मो के फलस्वरूप जो संस्कार और स्वभाव बन जाता है उन्हीं के अनुसार आचरण किया जाता है और उन संस्कारों को कोई भी नहीं मिटा पाता।। २ ।। पउड़ी ।। जो अपने प्रभु का गुणानुवाद करते हैं वे शोभायुक्त हो जाते हैं। वे अहंकार को अन्तर्मन से दूर करके सत्य को मन में बसाते है। वे सच्ची वाणी और गुणों का उच्चारण करते हुए सच्चा सुख प्राप्त करते हैं। उन्हें सर्वव्यापक गुरु पुरुष ने अपने से मिला लिया है और देर से बिछुड़े हुए जीव का परमात्मा से मेल हो गया है। प्रभु-नाम की आराधना करने से इस प्रकार मैला मन शुद्ध हो जाता है।। १७ ।। श्लोक महला १ ।। यह शरीर कोमल पत्तियों की तरह है और इसके गुण फूलों की तरह हैं। हे नानक, जो इस प्रकार की पत्तियों और फूलों के हार तैयार करता है उसके हार को प्रभु पसन्द करता है। अब जीव को अन्य हार बनाने के लिये दूसरी डालियों की तरफ नहीं जाना पड़ेगा अर्थात् भेंट करने योग्य हार तो इसी प्रकार ही बनता है।। १ ।। महला २ ।। हे नानक, जिनके घर में उनका प्रियतम बस रहा है उन स्त्रियों के लिये तो सदैव बसंत ही बसंत का मौसम है। जिनके पति परदेश गए हैं वो दिन रात अर्थात् सदैव विरह की अग्नि में जलती रहती हैं।। २ ।। पउड़ी।। सच्चा गुरु अपने उपदेश के माध्यम से दया करके स्वयं ही सब कुछ प्रदान कर देता है। मैं सदैव उसका सुमिरन करूँ उसके गुणों में रमण करता रहूँ और अपना मन उस सच्चे प्रभु में लीन किए रहूँ। मेरा प्रभु अनंत है और उसके ओर छोर को कोई नहीं देख सकता। सच्चे गुरु के चरणों में लगने से सदैव प्रभु नाम का सुमिरन किया जाता है। अब व्यक्ति जो भी इच्छा करता है उसके फल को पा लेता है और इस सब कुछ की इच्छा उसके अपने घर पर ही पूरी हो जाती है।। १८ ।। श्लोक महला १।। सबसे पहले बसंत ऋतु आती है परन्तु उससे भी पहले प्रभु खिला हुआ रहता है। उसके खिलने से ही सब कुछ खिल उठता है परन्तु उसको खिलाने वाला कोई भी नहीं है।। १ ।। महला २ ।। जिसका खिलना और आना बसंत से भी पहले होता है उस प्रभु का चिन्तन करो। हे नानक, उसका गुणानुवाद किया जाना चाहिए जो सबको आसरा देता है।। २ ।। महला २ ।। ऊपर-ऊपर से मेल मिलाप करने से वास्तविक मेल नहीं होता; मेल तभी होता है यदि वास्तविक रूप से अन्तर्मन के माध्यम से मिला जाए।। ३ ।। पउड़ी।। प्रभु के नाम का गुणानुवाद किया जाए और सत्य आचरण वाला काम किया जाना चाहिए। अन्य किसी भी धन्धें में लगा होने से जीव फिर योनियों में आता रहता है। नाम में लीन होकर ही नाम प्राप्त किया जाता है और फिर प्रभु नाम के ही गुण गाए जाते हैं। शब्द-गुरु का गुणानुवाद करके ही जीव प्रभु नाम में लीन होता है। सच्चे गुरु की सेवा फलदायक होती है और उसकी सेवा करने से ही फल प्राप्त होता है।।१६।। श्लोक महला २ ।। किसी का कोई आसरा है और किसी अन्य का कोई दूसरा आसरा है परन्तु मुझ गरीब का तो

इकु तू ॥ किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥ १ ॥ मः २ ॥ जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥ नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ किआ सालाही किरम जंतु वडी तेरी वडिआई ॥ तू अगम दइआलु अगंमु है आपि लैहि मिलाई ॥ मै तुझ बिनु बेली को नही तू अंति सखाई ॥ जो तेरी सरणागती तिन लैहि छडाई ॥ नानक वेपरवाहु है तिसु तिलु न तमाई ॥ २० ॥ १ ॥

रागु सूही बाणी स्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥ कबीर के

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अवतरि आइ कहा तुम कीना ॥ राम को नामु न कबहू लीना ॥ १ ॥ राम न जपहु कवन मति लागे ॥ मरि जइबे कउ किआ करहु अभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख सुख करि कै कुटंबु जीवाइआ ॥ मरती बार इकसर दुखु पाइआ ॥ २ ॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कहि कबीर आगे ते न संम्हारा ॥ ३ ॥ १ ॥ सूही कबीर जी ॥ थरहर कंपै बाला जीउ ॥ ना जानउ किआ करसी पीउ ॥ १ ॥ रैनि गई मत दिनु भी जाइ ॥ भवर गए बग बैठे आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काचै करवै रहै न पानी ॥ हंसु चलिआ काइआ कुमलानी ॥ २ ॥ कुआर कंनिआ जैसे करत सीगारा ॥ किउ रलीआ मानै बाझु भतारा ॥ ३ ॥ काग उडावत भुजा पिरानी ॥ कहि कबीर इह कथा सिरानी ॥ ४ ॥ २ ॥ सूही कबीर जीउ ॥ अमलु सिरानो लेखा देना ॥ आए कठिन दूत जम लेना ॥ किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥ चलहु सिताब दीबानि बुलाइआ ॥ १ ॥ चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ॥ हरि फुरमानु दरगह का आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ अरदासि गाव किछु बाकी ॥ लेउ निबेरि आजु की राती ॥ किछु भी खरचु तुम्हारा सारउ ॥ सुबह निवाज सराइ गुजारउ ॥ २ ॥ साधसंगि जा कउ हरि रंगु लागा ॥ धनु धनु सो जनु पुरखु सभागा ॥ ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जनमु पदारथु जीति अमोले ॥ ३ ॥ जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥ मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥ कहु कबीर तेई नर भूले ॥ खसमु बिसारि माटी

केवल एक तू ही है। जब तक वह मेरे हृदय में नहीं आता तब तक भला मुझे रो-रोकर मर क्यों नहीं जाना चाहिए।। १ ।। महला २ ।। यदि सुख में उसके साथ रमण किया है और दुख में भी उसे हृदय में संभाले रखा है तो नानक कहता है कि हे सयानी जीव स्त्री, इसी प्रकार उस कन्त से मिलाप होता है।। २ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तेरा बड़प्पन इतना बड़ा है कि मैं छोटा सा कीट भला उसका क्या गुणानुवाद करूं। तू अगम्य, दयालु और बिना किसी शोक के है; तू स्वयं ही मुझे अपने से मिला ले। तेरे बिना मेरा कोई भी दोस्त नहीं और केवल तू ही अन्त में मेरा साथी है। जो तेरी शरण में आ गया है तू उसे मुक्त कर देता है। हे नानक, वह प्रभु बेपरवाह है और उसे तिल मात्र भी लालच नहीं है।।२०।।१।।

रागु सूही वाणी श्री कबीर जी की
तथा सभी भक्तों की ।। कबीर की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे जीव तूने मनुष्य योनि में अवतरित होकर क्या किया है; राम नाम को तूने कभी जपा ही नहीं।। १ ।। तू राम का सुमिरन नहीं करता है और किसकी बुद्धि का अनुसरण कर रहा है। हे अभागे जीव, मर जाने के समय के लिए तू क्या उपाय करेगा।। १ ।। रहाउ ।। तूने अनेकों दुख-सुख सहन करके अपने परिवार का पालन-पोषण किया है परन्तु मरते समय तुझे अकेले को ही सारा दुख उठाना पड़ेगा।। २ ।। जब यमदूत आकर गला पकड़ लेते हैं तब तू चीख पुकार के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पाता। कबीर का कथन है कि तूने पहले ही प्रभु नाम का सुमिरन क्यों नहीं किया।। ३ ।। १ ।। सूही कबीर जी।। मेरा छोटा सा हृदय यह सोचकर थर थर कांपता है कि पता नहीं वह प्रियतम प्रभु मेरे साथ क्या करेगा।। १ ।। जवानी रूपी रात तो निकल गई अब कहीं दिन अर्थात् बुढ़ापा भी ना निकल जाए क्योंकि जीवन रूपी फूल पर से अब काले (जवान) भँवरे तो चले गए हैं और बगुले (बुढ़ापे के लक्षण) आ बैठे हैं।। १ ।। रहाउ ।। कच्चे बर्तन में पानी टिक नहीं सकता। इसी प्रकार जब शरीर कच्चा होकर कुम्हला जाता है तो जीवात्मा रूपी हंस उसमें से उड़ कर चला जाता है।। २ ।। जिस प्रकार कुंवारी कन्या का शृंगार करना व्यर्थ होता है उसी प्रकार सुहागिन स्त्री पति के बिना कैसे आनन्द का उपभोग कर सकती है।। ३ ।। कौओं को उड़ाते उड़ाते तो मेरी भुजा दर्द करने लगी और कबीर का कथन है कि जीवन की कथा इसी तरह समाप्त हो जाती है।। ४ ।। २ ।। सूही कबीर जी।। जीवन रूपी नौकरी का समय तो चला गया है अब तो तुझे सारा हिसाब देना है और जीवन का यह हिसाब लेने के लिये निर्दयी यमदूत तुझे लेने आए हैं। वे पूछते हैं कि तुमने क्या कमाया और इस जीवन में क्या गँवाया है; यह सब बताने के लिये तुम जल्दी ही धर्मराज की कचहरी में चलो क्योंकि तुम्हें वहाँ बुलाया गया है। ।। १ ।। तुम इसी हाल में फौरन चलो क्योंकि तुम्हें दरबार में बुलाया गया है। यह प्रभु का आदेश है जो उसके दरबार से आया है।। १ ।। रहाउ ।। जीव उनके आगे प्रार्थना करता है कि मैंने तो अभी कुछ अन्य गांवों से अपना बाकी बकाया वसूल करना है जिसे मैं आज रात भर में ही निपटा लूंगा और तुम्हें भी मैं बतौर खर्चे पानी के कुछ दे दूँगा तथा सुबह की नमाज रास्ते मे पड़ने वाली सराय पर ही गुजार लूंगा (सँस्कारो में बंधा जीव संसार छोड़ना नहीं चाहता और कुछ समय यहाँ ठहरने के लिये मिन्नत माजरा करता है)।। २ ।। साधसंगति में जिसको प्रभु-नाम का रंग लग गया है वह सेवक पुरुष भाग्यशाली है और धन्य है। ऐसे व्यक्ति इस लोक और उस लोक दोनों में सुखी बनी रहते हैं और उन्होंने ही इस जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को जीता हुआ होता है।। ३ ।। जो बाहर से जागता हुआ भी अन्दर मन से सोता रहता है उसने तो वास्तव में अपना जीवन ही गँवा दिया है। उसने धन माल ही इकट्ठा किया है और ऐसा करते हुए वह सबके लिये पराया हो गया है। कबीर कहता है कि ऐसे व्यक्ति ही प्रभु को भूले रहते हैं और उस मालिक को भूलकर मिट्टी

संगि रूले ॥ ४ ॥ ३ ॥ सूही कबीर जीउ ललित ॥ थाके नैन स्रवन सुनि थाके थाकी सुंदरि काइआ ॥ जरा हाक दी सभ मति थाकी एक न थाकसि माइआ ॥ १ ॥ बावरे तै गिआन बीचारु न पाइआ ॥ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तब लगु प्रानी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा ॥ जे घटु जाइ त भाउ न जासी हरि के चरन निवासा ॥ २ ॥ जिस कउ सबदु बसावै अंतरि चूकै तिसहि पिआसा ॥ हुकमै बूझै चउपड़ि खेलै मनु जिणि ढाले पासा ॥ ३ ॥ जो जन जानि भजहि अबिगत कउ तिन का कछू न नासा ॥ कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि ढालि जु जानहि पासा ॥ ४ ॥ ४ ॥ सूही ललित कबीर जीउ ॥ एकु कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहि हाला ॥ जिमी नाही मै किसी की बोई ऐसा देनु दुखाला ॥ १ ॥ हरि के लोगा मोकउ नीति डसै पटवारी ॥ ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउ डाडी दस मुंसफ धावहि रईअति बसन न देही ॥ डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिसटाला लेही ॥ २ ॥ बहतरि घर इकु पुरखु समाइआ उनि दीआ नामु लिखाई ॥ धरम राइ का दफतरु सोधिआ बाकी रिजम न काई ॥ ३ ॥ संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है एको ॥ कहु कबीर मै सो गुरु पाइआ जा का नाउ बिबेको ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु सूही बाणी स्री रविदास जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सह की सार सुहागनि जानै ॥ तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥ १ ॥ सो कत जानै पीर पराई ॥ जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥ जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ पुर सलात का पंथु दुहेला ॥ संगि न साथी गवनु इकेला ॥ २ ॥ दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥ बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥ कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥ ३ ॥ १ ॥ सूही ॥ जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ संगु चलत है हम भी चलना ॥ दूरि गवनु सिर ऊपरि

में मिले रहते हैं।। ४ ।। ३ ।। सूही कबीर जी ललित (एक सुन्दर रागिनी का नाम)।। आँखें देख-देखकर थक गई हैं, कान सुन सुनकर थक गए हैं और यह सुन्दर काया भी थक गई है। बुढ़ापे के धक्के लगने से हे जीव, तेरी सारी मति भी थक गई है परन्तु एक तेरी मोह माया अभी तक नहीं थकी।। १ ।। हे बावले, तूने ज्ञान का विचार अपने मन में नहीं रखा और सारे जीवन को व्यर्थ ही गँवा दिया।। १ ।। रहाउ ।। हे प्राणी, तब तक उस प्रभु का सुमिरन करते रहो जब तक तुम्हारे शरीर में श्वास बने हुए हैं। यदि शरीर नष्ट भी हो जाए तो भी प्रभु का प्रेम नष्ट नही होगा और प्रभु के चरणों में आत्मा को निवास मिल जाएगा।। २ ।। जिसके मन में प्रभु शब्द (नाम) को बसा दे उसकी सारी तृष्णा दूर हो जाती है। वह प्रभु के हुकुम को समझता है और जीवन की चौपड़ को खेलते हुए ऐसा पासा फेंकता है कि अपने मन को जीत लेता है।। ३ ।। जो व्यक्ति ज्ञानवान होकर अविनाशी प्रभु का सुमिरन करते हैं उनका कभी भी नाश नहीं होता। कबीर का कथन है कि ऐसे व्यक्ति कभी भी हारते नहीं जो इस प्रकार पासा फेंकना जानते हैं।। ४ ।। ४।। सूही ललित कबीर जी।। शरीर रूपी यह किला है जिसके पाँच (काम, क्रोध आदि) हाकिम हैं और पाँचों ही अपना अपना टैक्स माँगते है। मैंने तो भला किसी की जमीन पर हल नहीं चलाया इसलिये मुझे ऐसा कर देना दुखदायक लगता है।। १ ।। हे प्रभु के लोगो, मुझे मौत रूपी पटवारी का डर सदैव ही लगा रहता है। जब बेसहारा की तरह मैंने बाहों को ऊँचा उठाकर गुरु के पास दुहाई दी तो उसने मुझे बचा लिया।। १ ।। रहाउ।। शरीर के नौ दरवाजे हैं, पाँच कर्म इन्द्रियाँ और पाँच ज्ञान इन्द्रियां रूपी दस मुन्सिफ दौड़े भागे फिरते हैं और गरीब प्रजा (गुणों) को चैन पूर्वक बसने नहीं देते। इन दसों की मांग पूरी नहीं होती अर्थात् ये बेइमानी करते रहते हैं और बहुत बेगार अथवा रिश्वत लेते हैं।। २ ।। बहत्तर नाड़ियों वाले इस शरीर रूपी घर में जो प्रभु समाया हुआ है उसने मेरे हिसाब में रकम जमा करके लिखा दी है इसलिये जब धर्मराज के दफ्तर में मेरे लेखों को देखा जाँचा गया तो मेरे नाम पर रत्ती भर देना भी बाकी नहीं निकला।। ३ ।। हे भाईयो, शान्त पुरुषों की कोई निन्दा ना करो क्योंकि ये सन्त और प्रभु एक ही हैं। कबीर कहता है कि मैंने तो उस गुरु को पा लिया है जिसका नाम विवेक अर्थात् ज्ञान और चिन्तन है।। ४ ।। ५ ।।

रागु सूही वाणी श्री रविदास जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

सुहागिन और अच्छी स्त्री ही अपने पति के महत्त्व को जानती है; वह अभिमान त्यागकर सुखपूर्वक आनन्द का उपभोग करती है। वह तन मन अर्पण कर देती है और प्रभु पति के साथ मिलती हुई एक रूप हो जाती है। अन्यों को ना तो देखती है ना सुनती है और ना ही उनसे संवाद सम्पर्क रखती है।। १ ।। जिसके हृदय में कभी किसी का दर्द नहीं हुआ वह भला पराए दुख को क्या समझेगा।। १ ।। रहाउ ।। जिसने निरंतर प्रभु पति की भक्ति नहीं की वह दुहागिन स्त्री दुखी बनी रहती है और इस लोक तथा परलोक दोनों में हीन बनी रहती है। यम के मार्ग का रास्ता बड़ा कठिन है। वहाँ कोई संगी साथी नहीं होता और अकेले ही जाना पड़ता है।। २ ।। यह दुखी दर्द का मारा हुआ प्रभु के द्वार पर आया है; इसे दर्शन की बहुत प्यास है परन्तु इसने अपनी पुकार का कोई भी उत्तर प्राप्त नहीं किया है। रविदास का कथन है कि हे प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ और तुझे जैसा भी ठीक लगे तू मेरी मुक्ति कर दे।। ३ ।। १ ।। सूही ।। जो दिन आते हैं वे सभी गुजर जाते हैं। यहाँ स्थाई रूप से ठिकाना नहीं मिलता और यहाँ से तो जाना ही होता है। हम लोगों के संगी साथी चले जा रहे हैं और हमें भी यहाँ से चलना ही चलना है। यहाँ से बहुत दूर जाना है

मरना ॥ १ ॥ किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥ सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥ हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥ २ ॥ जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥ सांझ परी दह दिस अंधिआरा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥ ३ ॥ २ ॥ सूही ॥ ऊचे मंदर साल रसोई ॥ एक घरी फुनि रहनु न होई ॥ १ ॥ इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥ जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाई बंध कुटंब सहेरा ॥ ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥ २ ॥ घर की नारि उरहि तन लागी ॥ उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥ ३ ॥ कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ हम तउ एक रामु कहि छूटिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सूही बाणी सेख फरीद जी की ॥

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ बावलि होई सो सहु लोरउ ॥ तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥ १ ॥ तै साहिब की मै सार न जानी ॥ जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काली कोइल तू कित गुन काली ॥ अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥ पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥ जा होइ क्रिपालु ता प्रभू मिलाए ॥ २ ॥ विधण खूही मुंध इकेली ॥ ना को साथी ना को बेली ॥ करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली ॥ जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥ ३ ॥ वाट हमारी खरी उडीणी ॥ खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥ उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ सूही ललित ॥ बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥ भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥ १ ॥ हथु न लाइ कसुंभड़ै जलि जासी ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक आपीन्है पतली सह केरे बोला ॥ दुधा थणी न आवई फिरि होइ न मेला ॥ २ ॥ कहै फरीदु सहेलीहो सहु अलाएसी ॥ हंसु चलसी डुंमणा अहि तनु ढेरी थीसी ॥ ३ ॥ २ ॥

और मौत सिर पर खड़ी है।। १ ।। अरे अबोध बालक, तू क्या सोया हुआ है, तुझे जाग जाना चाहिए। तूने इस संसार में इस जीवन को सत्य और स्थायी मान रखा है।। १ ।। रहाउ ।। जिसने ये प्राण दिए हैं वही हमें रोज़ी भी देता है और सभी शरीरों के अन्दर वहीं हाट बाजार लगाए रहता है (अर्थात् सबकी जरूरतों को पूरा करता है)। तू मैं और मेरेपन को छोड़कर उसकी बंदगी कर और जल्दी ही हृदय में प्रभु-नाम का सुमिरन कर ले।। २ ।। तेरा जीवन तो बीत गया परन्तु तूने अपने रास्ते को नहीं जाना। अब जीवन की संध्या सिर पर आ पड़ी है और दसों दिशाओं में अंधकार हो जाएगा। रविदास कहता है कि हे मूर्ख और पागल जीव, तू अभी तक इस तथ्य के प्रति सावधान नहीं हुआ कि यह दुनियां नाश हो जाने वाला घर है।। ३ ।। २ ।। सूही ।। ऊंचे महल और ऊंची रसोईशाला भी बेशक हो परन्तु मरने के बाद एक घड़ी भर भी वहाँ टिका नहीं रहा जा सकता।। १ ।। यह तन तो ऐसा है जैसे घास का छप्पर बना होता है। घास जल जाता है और मिट्टी में मिल जाता है।। १ ।। रहाउ ।। रिश्तेदार, भाई, बन्धु और परिवार के मित्र भी कहने लगते हैं कि इस मुर्दे को जल्दी ही अब बाहर निकाला जाए।। २ ।। घर की स्त्री जो हृदय और तन के साथ लगी रहती थी वह भी भूत-भूत कहती हुई भाग जाती है।। ३ ।। रविदास कहता है कि सारा संसार लूटा हुआ है अर्थात् दुखी है; मैं तो एक राम (प्रभु) का सुमिरन करके ही मुक्त हो गया हूँ।। ४ ।। ३ ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। रागु सूही वाणी शेख फरीद जी की।।

प्रभु के बिना मैं सन्तप्त होती हुई हाथों को मरोड़ती हुई हाय हाय करती हूँ। पागल बनी हुई मैं उस प्रभु पति को ढूंढती हूँ। हे पति, तूने अपने मन में मेरे प्रति क्रोध किया हुआ है परन्तु यह मेरे ही अवगुण थे इसमें तेरा कोई दोष नहीं ।। १ ।। तुझ साहिब के महत्व को मैंने नहीं जाना और यौवन को खोकर अब बाद में मैं पछता रही हूँ।। १ ।। रहाउ ।। हे काली कोयल, तू भला किस कारण से काली है? (कोयल का उत्तर है कि) मैं अपने प्रियतम के बिरह में जली हुई हूँ और इसीलिए काली हूँ। प्रियतम से विहीन होकर भला कहाँ सुख मिल सकता है; यदि उसकी कृपा हो तो प्रभु स्वयं अपने साथ मिला लेता है।। २ ।। सुनसान कुएं में यह मूर्ख जीव स्त्री गिरी पड़ी है और इसी प्रकार इस संसार में ना तो कोई किसी का साथी है और ना ही कोई मित्र है। प्रभु ने कृपा करके साधसंगति से मिला दिया है और अब मैं जब पीछे की ओर देखता हूँ तो मुझे मेरा अल्लाह ही मित्र के रूप में दिखाई देता है।। ३ ।। हमारा जीवन का मार्ग बहुत ही उदास करने वाला है; यह मार्ग खड्ग से भी तीखा और बहुत पतला (तंग) है ; उसी पर ही मेरा रास्ता है अर्थात् मैंने चलना है। हे फरीद, अब तू भोर में ही रास्ते को समझ ले और चल दे।। ४ ।। १ ।। सूही ललित ।। हे व्यक्ति, जब पार जाने के लिये नाव बनाने का समय था उस समय तो तूने अपना बेड़ा नहीं बनाया अर्थात् सुमिरन नहीं किया अब जब समुद्र भर कर लहरों के रूप में उछलने लगा है अर्थात् जब विषय विकारों की लहरें उठने लगी हैं तब इसे तैरना कठिन कार्य ही है।। १ ।। हे प्यारे व्यक्ति, तू कुसुम्भ के फूल जैसे इस संसार को हाथ मत लगा अर्थात् इसमें लीन मत हो नहीं तो इसकी भड़कीली आग में तू जल जाएगा।। १ ।। रहाउ ।। एक तो यह जीव रूपी स्त्री स्वयं पतली और कमजोर है और उपर से प्रभु पति के आदेश बहुत कड़े हैं। प्रभु से मिलाप का अवसर भी इस जीवन के बाद नहीं होगा क्योंकि थन से निकला दूध जैसे वापिस थनों में नहीं जा सकता इसी प्रकार इस जीवन को गँवा देने से फिर प्रभु से मेल नहीं हो सकता।। २ ।। हे सत्संगी सहेलियो मित्रो, वह प्रभु तो हम सबको बुला ही लेगा अर्थात् मौत अवश्य आएगी और उस समय हमारी यह आत्मा उदास होकर अकेली चल पड़ेगी और हमारा यह शरीर मिट्टी की ढेरी हो जाएगा।। ३ ।। २ ।।

੧ਓ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥ १ ॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥ २ ॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला १ ॥ मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥ १ ॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिंत पराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥ २ ॥ सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला १ ॥ आपे सबदु आपे नीसानु ॥ आपे सुरता आपे जानु ॥ आपे करि करि वेखै ताणु ॥ तू दाता

१ ओअंकार सति नामु करता पुरख निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

राागु बिलावलु महला १ चौपदे घरु १ ।।

हे प्रभु, तू बहुत बड़ा सुल्तान है और मैं तुझे मियां अथवा चौधरी कर के यदि बुलाऊं तो इसमें भला तेरी क्या इज़्ज़त है अर्थात् तेरा बड़प्पन तो अनन्त है। हे प्रभु, मुझे तो जितनी शक्ति तू देता है मैं वही बखान करता हूँ और मैं मूर्ख वास्तव में तेरे गुणानुवाद को कह ही नहीं सकता।। १ ।। हे प्रभु, मुझे वह सूझ बुद्धि प्रदान करो जिससे मैं तुम्हारे गुण गा सकूँ और तेरे सत्य की रज़ा में मैं टिका रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। जो कुछ भी इस संसार में हुआ है वह सब कुछ तुमसे ही उत्पन्न हुआ है और तू ही इन सबको जानता है। हे साहिब, मैं तेरे ओर-छोर को नहीं जानता और मुझ अन्धे को तो किसी प्रकार की चतुराई आती ही नहीं।। २ ।। मैं तेरे बड़प्पन का कथन क्या करूं। जब मैं इसका कथन करता हूँ तो पाता हूँ कि तू अकथनीय है और मुझसे तुम्हारी महानता का कथन नहीं हो सकता। जो तुझे भाती है मैं तो वही तिल मात्र तेरी महानता का बखान करता हूँ।। ३ ।। विकारों के कितने ही कुत्तों के बीच में मैं एक बेगाना कुत्ता फँस गया हूँ और इस शरीर की खातिर भौंक रहा हूँ (ताकि इस शरीर के माध्यम से मैं तेरी भक्ति कर सकूं)। मुझे यही विश्वास है कि मैं चाहे भक्ति से विहीन हूँ परन्तु उस मालिक प्रभु का नाम खोखला और व्यर्थ नहीं होता अर्थात् मैं उस मालिक का कुत्ता कहलाता हूँ इसलिये मालिक का नाम कभी निष्फल नहीं होता।। ४ ।। १ ।। बिलावलु महला १ ।। मैंने अपने मन को मंदिर बनाया है; मेरे तन पर कलंदरों (फकीरों) का वेश है और मैं अपने अन्दर के तीर्थ पर ही स्नान करता हूँ एक प्रभु का नाम ही मेरे प्राणों में बसता है और केवल इसी कारण मै फिर जन्मों में नहीं आऊंगा।। १ ।। हे मेरी माँ, मेरा मन उस दयालु प्रभु के साथ बिंध गया है। मेरे प्रेम की पीड़ा को भला और कौन जान सकता है। हमें तो प्रभु के बिना अन्य किसी का विचार तक नहीं आता।। १ ।। रहाउ।। हे अगम्य, अगोचर, निराकार और अपरम्पर प्रभु, कुछ हमारी भी चिंता करो। तू जल स्थल और अन्तरिक्ष में पूर्णरूप से व्याप्त है और प्रत्येक हृदय में तुम्हारी ही ज्योति है।। २ ।। सब तुम्हारे ही घर और मंदिर है और सब तेरी ही शिक्षा, मति और बुद्धि का प्रताप है। हे मेरे साहिब, मैं तेरे बिना अन्य किसी को नहीं जानता और सदैव तेरे ही गुण गाता रहता हूँ।। ३ ।। मनुष्य और पशु हे प्रभु, सब तेरी ही शरण में हैं और तुझे ही इन सब की चिंता है। जो तुझे भाता है वही अच्छा होता है। नानक की तो यही एक अरदास है।। ४ ।। २ ।। बिलावलु महला १ ।। प्रभु स्वयं ही शब्द रूप है और स्वयं ही उसका लिखित रूप भी है। वह स्वयं ही सुनने वाला और वह स्वयं ही जानने वाला ज्ञाता है। प्रभु स्वयं ही सम्पूर्ण बल है और स्वयं ही इस सृष्टि को उत्पन्न कर उसका पालन पोषण करता है। हे प्रभु, तू ही दाता

नामु परवाणु ॥ १ ॥ ऐसा नामु निरंजन देउ ॥ हउ जाचिकु तू अलख अभेउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु धरकटी नारि ॥ भूंडी कामणि कामणिआरि ॥ राजु रूपु झूठा दिन चारि ॥ नामु मिलै चानणु अंधिआरि ॥ २ ॥ चखि छोडी सहसा नही कोइ ॥ बापु दिसै वेजाति न होइ ॥ एके कउ नाही भउ कोइ ॥ करता करे करावै सोइ ॥ ३ ॥ सबदि मुए मनु मन ते मारिआ ॥ ठाकि रहे मनु साचै धारिआ ॥ अवरु न सूझै गुर कउ वारिआ ॥ नानक नामि रते निसतारिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला १ ॥ गुर बचनी मनु सहज धिआने ॥ हरि कै रंगि रता मनु माने ॥ मनमुख भरमि भुले बउराने ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ गुर सबदि पछाने ॥ १ ॥ बिनु दरसन कैसे जीवउ मेरी माई ॥ हरि बिनु जीअरा रहि न सकै खिनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु बिसरै हउ मरउ दुखाली ॥ सासि गिरासि जपउ अपुने हरि भाली ॥ सद बैरागनि हरि नामु निहाली ॥ अब जाने गुरमुखि हरि नाली ॥ २ ॥ अकथ कथा कहीऐ गुर भाइ ॥ प्रभु अगम अगोचरु देइ दिखाइ ॥ बिनु गुर करणी किआ कार कमाइ ॥ हउमै मेटि चलै गुर सबदि समाइ ॥ ३ ॥ मनमुखु विछुड़ै खोटी रासि ॥ गुरमुखि नामि मिलै साबासि ॥ हरि किरपा धारी दासनि दास ॥ जन नानक हरि नाम धनु रासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

बिलावलु महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ध्रिगु ध्रिगु खाइआ ध्रिगु ध्रिगु सोइआ ध्रिगु ध्रिगु कापड़ु अंगि चड़ाइआ ॥ ध्रिगु सरीरु कुटंब सहित सिउ जितु हुणि खसमु न पाइआ ॥ पउड़ी छुड़की फिरि हाथि न आवै अहिला जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ दूजा भाउ न देई लिव लागणि जिनि हरि के चरण विसारे ॥ जगजीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै दूख निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू दइआलु दइआपति दाता किआ एहि जंत विचारे ॥ मुकत बंध सभि तुझ ते होए ऐसा आखि वखाणे ॥ गुरमुखि होवै सो मुकतु कहीऐ मनमुख बंध विचारे ॥ २ ॥ सो जनु मुकतु जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ तिन की गहण गति कही न जाई सचै आपि

है और तेरा नाम ही सबसे अधिक प्रामाणिक है।। १ ।। हे निरंजन प्रभु, तेरा नाम ऐसा महान है कि मैं उसका याचक हूँ और तू अदृष्ट और सबकी समझ से परे है।। १ । रहाउ ।। माया का मोह एक व्यभिचारिणी स्त्री के मोह के समान है। यह माया रूपी कामिनी तो केवल जादू टोना करने वाली ही है। यह राज और रूप सौंदर्य झूठा है और चार दिन ही चलने वाला है। यदि प्रभु का नाम प्राप्त हो जाए तो इस अंधकार में भी प्रकाश हो जाता है।। २ ।। मैंने माया को चखकर उसे त्यागा है इसलिये मेरे मन में उसके प्रति कोई भी संदेह नहीं। माया रूपी वेश्या का पुत्र बदजात कहा जाता है परन्तु जिसका पिता मौजूद है उसे कोई बदजात या हरामी नहीं कह सकता। एक प्रभु का हो जाने से वास्तव में किसी का भय नहीं रहता; वह कर्ता प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला है।। ३ ।। जब शब्द के अन्तर्गत लीन होकर अभिमान भाव के संदर्भ में मृत हुआ जाता है तो इस मन को मन के माध्यम से ही जीत लिया जाता है। जब इस मन को रोक लिया जाता है तो यह अपने आप को सत्य में धारण करने वाला बन जाता है। मुझे तो अन्य कोई नहीं सूझता इसलिए मैं तो गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और हे नानक, प्रभु-नाम में रंगकर ही पार उतारा होता है।। ४ ।। ३ ।। बिलावलु महला १ ।। गुरु के उपदेश के माध्यम से मन सहज स्वाभाविक ध्यान वाला हो गया है और अब यह हरि के रंग में रंगकर सन्तुष्ट हो गया है। मनमुख व्यक्ति तो भ्रमों में भूले हुए पगलाए रहते है; जीव भला प्रभु के बिना और शब्द-गुरु की पहचान के बिना कैसे शान्त बना रह सकता है।। १ ।। हे मेरी माँ, मैं उसके दर्शन के बिना कैसे जीवित बनी रहूँ। सच्चे गुरु ने ही यह समझाया बुझाया है कि उस प्रभु के बिना यह जीव एक क्षण भर भी नहीं रह सकता।। १ ।। रहाउ ।। मेरा प्रभु जब विस्मृत जो जाए तो मैं दुखी होकर मर जाऊंगी। मैं अपने प्रभु को खोजती हुई प्रत्येक श्वास और ग्रास के साथ सुमिरन करती रहूँ तथा प्रभु नाम में आनन्दित होकर सदैव वैराग्यवान बनी रहूँ। गुरमुख बनकर मैं उस प्रभु को अपने आस पास ही अनुभव करूँ।। २ ।। गुरु के आशय को समझाकार उस प्रभु की अकथनीय कथा को कहा जाता है और वह गुरु ही अगम्य, अगोचर प्रभु को दिखा देता है। गुरु के आचरण के बिना अन्य भला किस कार्य को जीवन में उतारा जा सकता है। शब्द-गुरु में लीन होकर ही जीव अहंकार मिटाकर यहाँ से चला जाता है।। ३ ।। मनमुख व्यक्ति उससे बिछुड़े रहते हैं क्योंकि उनकी रासपूंजी खोटी होती है। गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम मिलता है और साधुवाद प्राप्त होता है।। प्रभु ने कृपा की और मुझे अपने दासों का दास बना लिया। दास नानक का धन और रासपूंजी प्रभु का नाम ही है।। ४ ।। ४ ।।

बिलावलु महला ३ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

खाना और सोना धिक्कार है और शरीर पर सुन्दर वस्त्र पहनने को भी बार-बार धिक्कार है। धिक्कार है ऐसे शरीर को ऐसे कुटुम्ब को जिसके साथ रहते हुए इस जीवन में उस मालिक प्रभु को प्राप्त नहीं किया जा सका। मानव जीवन रूपी यह सीढ़ी का डंडा हाथ से छूट जाने पर फिर हाथ नहीं आता और व्यक्ति का सारा जीवन निष्फल हो जाता है।। १ ।। जिन्होंने प्रभु के चरणों को भुला दिया है उनका द्वैतभाव उनकी सुरति को प्रभु चरणों में नहीं लगने देता। संसार का जीवन दाता प्रभु तू है और ये सभी जीव तेरे सेवक हैं जिनके सभी दुखों का तूने निवारण किया है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तू दयालु, दयावान और दाता है; यह जीव जन्तु बेचारे तेरे सामने भला क्या है। ऐसा कहा जाता है कि बंधन और मुक्ति सब तुझसे ही होते हैं। जो गुरमुख हो जाते हैं उन्हें मुक्त कहा जाता हैं और जो मनमुख हैं वे बेचारे बंधनों में पड़े हुए कहे जाते हैं।। २ ।। वह सेवक ही मुक्त है जिसकी एक प्रभु में सुरति लीन बनी रहती है और वह ही सदैव प्रभु के साथ बना रहता है। ऐसे सेवकों की गहन गति के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उन्हें स्वयं उस सच्चे प्रभु ने

सवारे ॥ भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे ॥ ३ ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु पाए गुर का सबदु सम्हाले ॥ हरि जन माइआ माहि निसतारे ॥ नानक भागु होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ अतुलु किउ तोलिआ जाइ ॥ दूजा होइ त सोझी पाइ ॥ तिस ते दूजा नाही कोइ ॥ तिस दी कीमति किकू होइ ॥ १ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ता को जाणै दुबिधा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सराफु कसवटी लाए ॥ आपे परखे आपि चलाए ॥ आपे तोले पूरा होइ ॥ आपे जाणै एको सोइ ॥ २ ॥ माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ॥ जिस नो मेले सु निरमलु होइ ॥ जिस नो लाए लगै तिसु आइ ॥ सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ॥ ३ ॥ आपे लिव धातु है आपे ॥ आपि बुझाए आपे जापे ॥ आपे सतिगुरु सबदु है आपे ॥ नानक आखि सुणाए आपे ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ॥ ऐसा इकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि एकु समाना ॥ १ ॥ सतिगुरि परचै हरि नामि समाना ॥ जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाए अनदिनु लागै सहज धिआना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ॥ जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥ २ ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ॥ जिउ आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥ ३ ॥ कहत नानकु तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामां ॥ इकना घर महि दे वडिआई इकि भरमि भवहि अभिमाना ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ पूरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥ इसु परपंच महि साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥ १ ॥ सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चहु जुगा का हुणि निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ॥ जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा ॥ २ ॥ जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि जगि

सँवारा होता है। भ्रमों में भूले हुओं को मनमुख कहा जाता है जो ना इस पार और ना उस पार पहुँच पाते हैं।। ३ ।। शब्द-गुरु का सुमिरन करने वाले जिस पर प्रभु कृपा दृष्टि करे वही सेवक उस प्रभु को पाता है। ऐसे प्रभु के सेवक इस मायापूर्ण संसार में रहते हुए भी पार उतर जाते हैं और हे नानक, जिसके माथे पर अच्छा भाग्य लेख लिखा होता है वह तो काल को भी मारकर नष्ट कर देता है अर्थात् निर्भय हो जाता है।। ४ ।। १ ।। बिलावलु महला ३।। वह अतुलनीय प्रभु भला कैसे जाना और समझा जा सकता है। यदि कोई दूसरा उस जैसा हो तभी उसे समझा जा सकता है। उसके अलावा दूसरा कोई नहीं है और उसकी कीमत को कैसे आँका जा सकता है।। १ ।। गुरु की कृपा से वह मन में आ बसता है और इसको जानने से दुविधा समाप्त हो जाती है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु स्वयं ही परख करने वाला सर्राफ है और स्वयं ही सबको कसौटी पर परख लेता है। वह स्वयं ही परखता है और स्वयं ही जीव रूपी सिक्के को चलाता है। वह स्वयं पूर्ण बनकर अपने आप को ही तौलता है और वह एक प्रभु ही अपने आप को जानता है।। २ ।। माया के जितने भी रूप हैं सब उसी से उत्पन्न होते हैं परन्तु जिसे वह अपने से मिला लेता है वह निर्मल हो जाता है। माया का जाल यह जिसको लगाता है उस पर ही यह लग जाता है परन्तु जब यह सत्य रूप में इस प्रपंच को दिखा देता है तो जीव सत्य में ही समा जाता है।। ३ ।। प्रभु प्रेम अर्थात् लौ लगने का मार्ग है और माया के पीछे दौड़ना धातु कहा गया है। हे प्रभु, तू स्वयं ही लौ भी है और माया भी है परन्तु जिसे प्रभु स्वयं ही समझा देता है वह ही स्वयं उसका सुमिरन करने लगता है। प्रभु स्वयं ही सच्चा गुरु है और स्वयं ही शब्द अर्थात् उपदेश भी है। हे नानक, वह आप ही स्वयं कहता है और स्वयं ही सुनाता है।। ४ ।। २ ।। बिलावलु महला ३ ।। प्रभु का बनाया हुआ ही कोई सेवक बनता है और सेवा भी उस प्रभु की दी हुई होती है; अन्य कोई बहाना या तर्क भला क्या कर सकता है। हे प्रभु, तेरा ऐसा खेल बना है कि तू एक ही सबमें समाया हुआ है।। १ ।। सच्चे गुरु से प्रेम करने पर प्रभु नाम में मन लीन हो जाता है। जिस पर प्रभु की कृपा होती है वही सच्चे गुरु को प्राप्त करता है और सदैव उसी का ही ध्यान अपने सहज रूप में लगाए रहता है।। १ ।। रहाउ ।। तेरी कोई क्या सेवा कर सकता है और तेरे सामने वह क्या अभिमान कर सकता है। जब तू अपनी शक्ति (सत्ता) को व्यक्ति में से खींच लेता है तब भला कोई उसका बखान करके दिखाए अर्थात् उसकी शक्ति के बिना व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।। २ ।। वह स्वयं ही गुरु है चेला भी है और स्वयं ही गुणों का भण्डार भी है। वह प्रभु जैसा चलाता है वैसा ही जीव चलता है; होता वही है जो प्रभु को भाता है।। ३ ।। नानक कहता है कि हे प्रभु, तू ही सच्चा मालिक है और तेरे कामों को कौन जान सकता है। कईयों को तो तू घर बैठे ही बड़प्पन प्रदान कर देता है और कई भ्रमों में भटकते हुए अभिमानी बने रहते हैं।। ४ ।। ३ ।। बिलावलु महला ३ ।। उस पूर्ण कर्ता प्रभु ने इस सृष्टि की रचना पूरी और उत्तम बनाई है। उसकी इस रचना को विचारो और देखो। इस सारे रचना प्रपंच में केवल एक सच्चे नाम की ही शोभा है इसलिये कोई भी अपने मन में अभिमान को धारण ना करे।। १ ।। जिसको सच्चे गुरु की सलाह और बुद्धि प्राप्त हो जाती है वह सच्चे गुरु में ही लीन हो जाता है। प्रभु की इस वाणी को जो जीव जानता है उसके अन्दर प्रभु-नाम ही बसा रहता है।। १ ।। रहाउ ।। सभी युगों के अनुभव का यही परिणाम निकला है कि मनुष्यों के लिये वह एक प्रभु ही सब प्रकार का भण्डार है। यती बने रहना, संयम पूर्ण होना और तीर्थ आदि करना तो उन युगों का धर्म माना गया है परन्तु कलियुग में तो केवल प्रभु-नाम की कीर्ति करना ही धर्म है।। २ ।। वेद पुराणों को पूर्ण निष्ठा के साथ पढ़कर देख लो कि हर युग का अपना-अपना धर्म रहा है। गुरमुख बनकर जिन्होंने उस प्रभु का बार-बार सुमिरन किया है इस संसार में

ते पूरे परवाना ॥ ३ ॥ कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाए चूकै मनि अभिमाना ॥ कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत पाहि निधाना ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ गुरमुखि प्रीति जिस नो आपे लाए ॥ तितु घरि बिलावलु गुर सबदि सुहाए ॥ मंगलु नारी गावहि आए ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पाए ॥ १ ॥ हउ तिन बलिहारै जिन्ह हरि मंनि वसाए ॥ हरि जन कउ मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहजि सुभाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा रंगि राते तेरै चाए ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आए ॥ आपे सोभा सद ही पाए ॥ गुरमुखि मेलै मेलि मिलाए ॥ २ ॥ गुरमुखि राते सबदि रंगाए ॥ निज घरि वासा हरि गुण गाए ॥ रंगि चलूलै हरि रसि भाए ॥ इहु रंगु कदे न उतरै साचि समाए ॥ ३ ॥ अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ सतिगुर गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ॥ जो सचि राते तिन बहुड़ि न फेरा ॥ नानक नामु द्रिड़ाए पूरा गुरु मेरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ पूरे गुर ते वडिआई पाई ॥ अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥ हउमै माइआ सबदि जलाई ॥ दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥ १ ॥ जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ॥ अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की परतीति मन ते पाई ॥ पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥ जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥ बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै ॥ २ ॥ घर ही महि सभि कोट निधान ॥ सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥ सद ही लागा सहजि धिआन ॥ अनदिनु गावै एको नाम ॥ ३ ॥ इसु जुग महि वडिआई पाई ॥ पूरे गुर ते नामु धिआई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ सदा सुखदाता कीमति नही पाई ॥ ४ ॥ पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ ॥ अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥ गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ॥ नानक त्रिसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १० ॥

रागु बिलावलु महला ४ घरु ३ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥ उदम मति प्रभ अंतरजामी जिउ प्रेरे तिउ करना ॥ जिउ नटूआ तंतु वजाए तंती तिउ वाजहि जंत

वे ही पूर्ण और स्वीकृत हैं।। ३ ।। नानक कहता है कि उस सच्चे प्रभु से प्रीति लगाने पर मन का अभिमान चुक जाता है। प्रभु-नाम को सुनाने वाले और सुनने वाले सभी सुख प्राप्त करते हैं परन्तु जो उसे मानते हैं अर्थात् उसी के अनुरूप आचरण बनाते हैं वे सभी सुखों के भण्डार प्राप्त कर लेते हैं।। ४ ।। ४ ।। बिलावलु महला ३।। जिसे स्वयं लगाता है, गुरमुख बनकर उसी के हृदय में प्रीति लगती है। उसी के हृदय रूपी घर में शब्द-गुरु के माध्यम से बिलावलु रागु शोभायमान होता है और सत्संगी रूपी स्त्रियाँ खुशी के गीत गाती हैं। वे अपने प्रियतम से मिलकर सदैव सुख प्राप्त करती हैं।। १ ।। जिन्होंने प्रभु को अपने मन में बसा लिया है मैं उनपर बलिकारी जाता हूँ। प्रभु अपने सेवक को मिलता है तो उसे सुख प्राप्त होता है और वह स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के गुण गाता रहता है।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे व्यक्ति हे प्रभु, तेरे उत्साह में ही तेरे रंग में रंगे रहते हैं। इस प्रकार प्रभु स्वयं मन में आ बसता है और स्वयं ही सदैव शोभायमान बना रहता है। गुरमुख बनकर ही जीव उससे मिलता है और वह प्रभु अपने से मेल मिलाता है।। २ ।। गुरमुख शब्द में रंगकर लीन बने रहते हैं और अपनी अन्तरात्मा में ही बसकर प्रभु के गुण गाते हैं। वे प्रेम के गाढ़े रंग में तथा प्रभु प्रेम के आनन्द में रसिक बने हुए अच्छे लगते हैं। प्रभु का यह रंग ऐसा है जो कभी नहीं उतरता और जीव सत्य में लीन बना रहता हैं।। ३ ।। अन्तर्मन में शब्द के होने से अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है और जब मुझे सच्चे गुरु का ज्ञान मिला तो मुझे प्रियतम भी मिल गया। जो सत्य में लीन हो गए हैं उनका फिर आवागमन नहीं होता। हे नानक, मेरा पूर्ण गुरु मुझे प्रभु-नाम याद कराता है।। ४ ।। ५ ।। बिलावलु महला ३ ।। जब पूर्ण गुरु से बड़प्पन प्राप्त किया तो बिना किसी प्रयत्न के प्रभु-नाम मेरे मन में आ बसा। शब्द के माध्यम से अंहकार और माया को जलाया गया तो प्रभु के सच्चे द्वार पर मैंने प्रभु-गुरु से शोभा प्राप्त की है।। १ ।। मैं परमात्मा की सेवा करता रहूँ क्योंकि मुझे इसके बिना अन्य कोई काम नहीं। इस प्रकार सदैव मेरे मन में आनन्द बना रहे और गुरमुख बनकर बड़प्पन प्रदान करने वाला हे प्रभु, मैं तेरा नाम ही माँगता रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। मन की सन्तुष्टि तो मन से ही प्राप्त हो गई और पूर्ण गुरु ने मुझे शब्द के रहस्य को समझा दिया। जीवन और मरण को यदि कोई समान भाव से देखले तो वह फिर कभी नहीं मरता और यम भी उसकी तरफ ध्यान नहीं लगाए रहता।। २ ।। मन में ही सभी भण्डार रूपी किले हैं जो सच्चे गुरु ने दिखा दिए हैं और मेरा अभिमान नष्ट हो गया है। अब मेरा सहजभाव में सदैव ही ध्यान लगा रहता है तथा अब मैं दिन रात एक प्रभु-नाम का ही गायन करता हूँ ।। ३ ।। इस युग में तो यही बड़प्पन पाया जाता है कि व्यक्ति पूर्ण गुरु के माध्यम से प्रभु-नाम का सुमिरन करे। उसे जहाँ भी देखा जाए वह वहीं बसा हुआ दिखाई देता है; वह सदैव सुख देने वाला प्रभु है उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता।। ४ ।। पूर्ण भाग्य से हमने पूर्ण गुरु पा लिया है जिसने अन्दर ही नाम का भण्डार दिखा दिया है। शब्द-गुरु अत्यन्त मीठा लगने लगा है और हे नानक, मेरी तृष्णा बुझ गई है और मेरे तन मन ने सुख प्राप्त कर लिया है।। ५ ।। ६ ।। ४ ।। ६ ।। १० ।।

रागु बिलावलु महला ४ धरु ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह प्रभु उद्यम करने की बुद्धि प्रदान करता है तथा वह जैसी प्रेरणा देता है वैसे ही हमें करना होता है। जैसे नट तार वाला वाद्य बजाता है वैसे ही यह जीव जन्तु भी बजते रहते हैं

जना ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु रसना ॥ मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै हरि बसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ जिउ प्रहिलादु हरणाखसि ग्रसिओ हरि राखिओ हरि सरना ॥ २ ॥ कवन कवन की गति मिति कहीऐ हरि कीए पतित पवंना ॥ ओहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे हरि उधरिओ परिओ सरना ॥ ३ ॥ प्रभ दीन दइआल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ हरि दासन दास दास हम करीअहु जन नानक दास दासंना ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा ॥ करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ गुरमति हरि रसु पाईऐ होरि तिआगहु निहफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन सेवक से हरि तारे हम निरगुन राखु उपमा ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे ठाकुर हरि जपीऐ वडे करंमा ॥ २ ॥ नामहीन ध्रिगु जीवते तिन वड दूख सहंमा ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मंदभागी मूड़ अकरमा ॥ ३ ॥ हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ जन नानक सफलु जनंमा ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु भरा ॥ तुम्हरी सेवा करि न सकह प्रभ हम किउ करि मुगध तरा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ जन ऊपरि किरपा प्रभि धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ तुम्हरै संगि लगे से उधरे जिउ संगि कासट लोह तरा ॥ २ ॥ साकत नर होछी मति मधिम जिन्ह हरि हरि सेव न करा ॥ ते नर भागहीन दुहचारी ओइ जनमि मुए फिरि मरा ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम्ह हरि मेलहु सुआमी ते न्हाए संतोख गुर सरा ॥ दुरमति मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि परा ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि कथा करहु ॥ हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि खेवटु गुर सबदि तरहु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि गुण हरि उचरहु ॥ मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि

अर्थात् कार्य करते रहते हैं।। १ ।। हे मन, तू अपनी जीभ से राम नाम का जाप कर। माथे पर प्रभु के हुकुम के अन्तर्गत ही लिखे हुए के अनुसार प्रभु हृदय में आकर बस जाता है।। १ ।। रहाउ ।। माया में ग्रस्त यह प्राणी भटक रहा है। हे प्रभु, तुम अपने सेवक को बचा लो। जिस प्रकार प्रहलाद को हिरण्यकश्यप ने पकड़ा था और प्रभु ने उसे अपनी शरण में लेकर बचा लिया था उसी प्रकार तू अपने सेवक की रक्षा कर।। २ ।। किस-किस की हालत बयान की जाए जिस-जिस पतित को प्रभु ने पवित्र किया है। वह जो मुर्दा पशुओं को ढोता था और उस चर्मकार के हाथ में चमड़ा ही रहता था, जब वह प्रभु की शरण मे आ गया तो प्रभु ने उसका उद्धार कर दिया।। ३ ।। हे, प्रभु, तुम दीनदयालु हो और भक्तों को इस संसार से पार उतारने वाले हो; हम पापियों की भी पापों से रक्षा करो। हे प्रभु, हमें अपने दासों का भी दास बना लो और सेवक नानक तो वास्तव में तेरे दासों का ही दास है।। ४ ।। १ ।। बिलावलु महला ४ ।। हम अज्ञानी मति वाले मूर्ख और गँवार हैं और हे सर्वव्यापक अजूनी प्रभु, हम तेरी शरण में आए हैं। हम पत्थरों की तरह गुणों से विहीन ऐसे जीव हैं जिन पर प्रभु कृपा नही हुई। हे प्रभु, कृपा करके हमारी रक्षा करो।। १ ।। हे मेरे मन, तू राम नाम का जाप कर। गुरु की मति में रहते हुए ही हरि-रस पाया जाता है इसलिये तू व्यर्थ के कामों का त्याग कर ।। १ ।। रहाउ ।। जो प्रभु के सेवक हैं उन्हें प्रभु ने पार उतार दिया है; हे प्रभु, हम गुणहीनों को भी बचा लो। यही तेरी शोभा है। हे मेरे मालिक, तेरे बिना अन्य कोई नहीं है और बड़े भाग्य से ही प्रभु का सुमिरन होता है।। २ ।। नाम विहीन बनकर जीने वालों को धिक्कार है और वे बड़े-बड़े दुखों को सहन करते हैं। वे भाग्यहीन, मूर्ख और प्रभु कृपा से विहीन बार-बार योनियों में भटकाए जाते हैं।। ३ ।। प्रभु के सेवक का आधार तो केवल प्रभु का नाम ही है और पहले से ही प्रभु की ओर से उनके बड़े अच्छे कर्म लिखे हुए होते हैं। उस सच्चे गुरु ने प्रभु-नाम को मन में पक्का किया है और दास नानक का जीवन सफल हो गया है।। ४ ।। २ ।। बिलावलु महला ४ ।। हमारा मन तो मोह रूपी विष में लीन पड़ा हुआ है और उसमें दुर्मति की बहुत सी मैल भरी हुई है। तुम्हारी सेवा तो मैं हे प्रभु कर नहीं पाता इसलिये मैं मूर्ख कैसे पार उतर सकता हूँ।। १ ।। हे मेरे मन, जीवों का हरण करके ले जाने वाले उस प्रभु-नाम का सुमिरन कर। प्रभु ने अपने सेवक पर कृपा की है और वह सच्चे गुरु से मिलकर संसार सागर से पार हो गया।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे पिता मालिक और प्रभु ठाकुर, तुम मुझे ऐसी बुद्धि प्रदान करो जिससे मैं तुम्हारा यशगान करता रहूँ। तुम्हारे साथ लगने वाले तो ऐसे ही तैर जाते हैं जैसे लकड़ी के साथ लगा लोहा भी पार हो जाता है।। २ ।। जिन्होंने प्रभु की सेवा नहीं की वे प्रभु से टूटे हुए ओछी और मध्यम मति वाले व्यक्ति है। ऐसे व्यक्ति भाग्यहीन और दुराचारी हैं और वे जन्मते, मरते और फिर भी मरते रहते हैं।। ३ ।। हे प्रभु, जिन्हें तुम अपने से मिला लेते हो वे गुरु रूपी सन्तोष के सरोवर में स्नान करते हैं। प्रभु का सुमिरन करने से दुर्मति की मैल चली गई है और दास नानक पार उतर गया है।। ४ ।। ३ ।। बिलावलु महला ४ ।। हे मेरे भाईयो और सन्तजनों, आओ मिल बैठ कर प्रभु की कथा वार्ता सुनाओ। इस कलियुग में प्रभु का नाम ही जहाज़ है जिसमें शब्द-गुरु केवट है जिसके माध्यम से तुम पार उतर जाओगे।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु के गुणों का उच्चारण कर। माथे के लेखों के अनुसार ही प्रभु के गुण गाओ और संगत में मिलकर

संगति पारि परहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगर महि राम रसु ऊतमु किउ पाईऐ उपदेसु जन करहु ॥ सतिगुरु सेवि सफल हरि दरसनु मिलि अंम्रितु हरि रसु पीअहु ॥ २ ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु हरि मीठा हरि संतहु चाखि दिखहु ॥ गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥ ३ ॥ राम नामु रसु राम रसाइणु हरि सेवहु संत जनहु ॥ चारि पदारथ चारे पाए गुरमति नानक हरि भजहु ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु को जापै हरि मंत्रु जपैनी ॥ गुरु सतिगुरु पारब्रहमु करि पूजहु नित सेवहु दिनसु सभ रैनी ॥ १ ॥ हरि जन देखहु सतिगुरु नैनी ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु हरि बोलहु गुरमति बैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव चितवीअहि बहुतेरे सा होवै जि बात होवैनी ॥ अपना भला सभु कोई बाछै सो करे जि मेरै चिति न चितैनी ॥ २ ॥ मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी ॥ अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥ ३ ॥ मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी ॥ जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥ ४ ॥ ५ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ अनद मूलु धिआइओ पुरखोतमु अनदिनु अनद अनंदे ॥ धरम राइ की काणि चुकाई सभि चूके जम के छंदे ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु गुोबिंदे ॥ वडभागी गुरु सतिगुरु पाइआ गुण गाए परमानंदे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत मूड़ माइआ के बधिक विचि माइआ फिरहि फिरंदे ॥ त्रिसना जलत किरत के बाधे जिउ तेली बलद भवंदे ॥ २ ॥ गुरमुखि सेव लगे से उधरे वडभागी सेव करंदे ॥ जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइआ सभि तूटे माइआ फंदे ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु सभु आपे आपि गोविंदे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै जिउ राखै तिवै रहंदे ॥ ४ ॥ ६ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ॥

बोलहु भईआ राम नामु पतित पावनो ॥ हरि संत भगत

पार उतर जाओ।। १ ।। रहाउ ।। शरीर रूपी शहर में ही प्रभु प्रेम का पवित्र एवं उत्तम अमृत है; हे प्रभु के भक्तो, बताओ कि उसे कैसे प्राप्त किया जाए। सच्चे गुरु की सेवा करके प्रभु के फलदायक दर्शन प्राप्त किए जाते हैं ; इस प्रकार प्रभु के सफल दर्शन प्राप्त होते हैं और अमृत रस पिया जाता है।। २ ।। प्रभु-नाम का अमृत रस मीठा है। हे प्रभु के संतजनों, इसे चख कर देखो। गुरु की मति में चलने से प्रभु रूपी रस मीठा लगता है और इसे पीने वालों को विष के स्वाद अर्थात् माया के प्रपंच सब भूल जाते हैं।। ३ ।। राम नाम का रस ही अमर कर देने वाली रसायन है; हे सन्तजनों, प्रभु की सेवा में लगे रहो। जिन चार पदार्थो अथवा पुरुषार्थों की बातें की गई हैं वे चारों हे नानक, गुरु की मति में चलने से और प्रभु के सुमिरन से प्राप्त हो जाते हैं।। ४ ।। ४ ।। बिलावलु महला ४ ।। क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य जो कोई भी प्रभु रूपी मंत्र का जाप करता है वह पार उतर जाता है। सच्चे गुरु को परब्रह्म के रूप में पूजो और सदैव दिन-रात उसकी सेवा करते रहो।। १ ।। हे प्रभु के सेवको, सच्चे गुरु को अपनी आँखों से देख लो। गुरु की मति लेकर प्रभु-नाम का उच्चारण करो और मनोवांछित फल प्राप्त करो।। १ ।। रहाउ ।। बहुत सारे लोग अनेकों तरीके सोचते हैं पर होता वही है जो होने वाला होता है। सब कोई अपना भला चाहता है परन्तु प्रभु वह करता है जिसका हमें कभी विचार भी नहीं आता।। २ ।। हे प्रभु के सेवको, यह बात है तो कठिन परन्तु तुम मन की मति को त्याग दो। सदैव प्रभु नाम का सुमिरन करो और सच्चे गुरु की मति ग्रहण करो।। ३ ।। हे मालिक, अच्छी और बुरी मति सब तेरे ही वश में है; हम तो यन्त्र मात्र हैं और तू इन वाद्य यन्त्रों को बजाने वाला है। सेवक नानक के प्रभु कर्ता और स्वामी, तुझे जैसा अच्छा लगे तू वैसे ही हमसे बुलवाता है।। ४ ।। ५ ।। बिलावलु महला ४ ।। जो पवित्र उत्तम पुरुष प्रभु है और आनन्द का स्रोत है हमने उसी का सुमिरन किया है और हमारे यहाँ सदैव आनन्द ही आनन्द बना रहता है। धर्मराज की मोहताजी अब हमारी दूर हो गई है और यम के सभी भय अब चुक गए हैं।। १ ।। हे मन, तू प्रभु-नाम का जाप कर। बड़े भाग्य से सच्चे गुरु को प्राप्त किया गया है इसीलिये उस परम आनन्द रूपी प्रभु के गुण गाए जा रहे हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु से टूटे हुए और माया के बंधनों में बंधे मूर्ख मायावी प्रपंचों में ही भटकते रहते हैं। वे तृष्णाओं में अपने संस्कारों के कारण उसी प्रकार बंधे रहते हैं जैसे तेली का बैल चलता ही रहता है।। २ ।। गुरमुख बनकर जो सेवा में लगते हैं उनका उद्धार हो जाता है और बड़े भाग्य से ही लोग सेवा करते हैं। जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया उन्होंने ही उसका फल भी पाया है और उन्हीं के ही सभी माया के बन्धन टूट गए हैं।। ३ ।। वह स्वयं ही मालिक है, स्वयं ही सेवक है और धरती को धारण करने वाला प्रभु स्वयं ही सब कुछ है। हे दास नानक, वह स्वयं ही सब ओर कार्यशील है और वह जैसे रखता है जीव वैसे ही रहते हैं।। ४ ।। ६ ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। राग़ु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ।।

हे भाई, पतितों को पवित्र करने वाले राम नाम का उच्चारण करो। प्रभु ही सन्तों और भक्तों को

तारनो ॥ हरि भरिपुरे रहिआ ॥ जलि थले राम नामु ॥ नित गाईऐ हरि दूख बिसारनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ गुरु भेटिआ है मुकति दाता ॥ हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ मिलि संगती गुन गावनो ॥ १ ॥ मन राम नाम करि आसा ॥ भाउ दूजा बिनसि बिनासा ॥ विचि आसा होइ निरासी ॥ सो जनु मिलिआ हरि पासी ॥ कोई राम नाम गुन गावनो ॥ जनु नानकु तिसु पगि लावनो ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥ १७ ॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे घरु १   १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

नदरी आवै तिसु सिउ मोहु ॥ किउ मिलीऐ प्रभ अबिनासी तोहि ॥ करि किरपा मोहि मारगि पावहु ॥ साधसंगति कै अंचलि लावहु ॥ १ ॥ किउ तरीऐ बिखिआ संसारु ॥ सतिगुरु बोहिथु पावै पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पवन झुलारे माइआ देइ ॥ हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा ॥ सिर ऊपरि आपि गुरू रखवारा ॥ २ ॥ पाइआ वेढु माइआ सरब भुइअंगा ॥ हउमै पचे दीपक देखि पतंगा ॥ सगल सीगार करे नही पावै ॥ जा होइ क्रिपालु ता गुरू मिलावै ॥ ३ ॥ हउ फिरउ उदासी मै इकु रतनु दसाइआ ॥ निरमोलकु हीरा मिलै न उपाइआ ॥ हरि का मंदरु तिसु महि लालु ॥ गुरि खोलिआ पड़दा देखि भई निहालु ॥ ४ ॥ जिनि चाखिआ तिसु आइआ सादु ॥ जिउ गूंगा मन महि बिसमादु ॥ आनद रूपु सभु नदरी आइआ ॥ जन नानक हरि गुण आखि समाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सरब कलिआण कीए गुरदेव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ बिघनु न लागै जपि अलख अभेव ॥ १ ॥ धरति पुनीत भई गुन गाए ॥ दुरतु गइआ हरि नामु धिआए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभनी थांई रविआ आपि ॥ आदि जुगादि जा का वड परतापु ॥ गुर परसादि न होइ संतापु ॥ २ ॥ गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥ निरबिघन होइ सभ थांई वूठे ॥ सभि सुख पाए सतिगुर तूठे ॥ ३ ॥ पारब्रहम प्रभ भए रखवाले ॥ जिथै किथै दीसहि नाले ॥ नानक दास खसमि प्रतिपाले ॥ ४ ॥ २ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुख निधान

पार उतारने वाला है। प्रभु ही सब ओर व्याप्त हो रहा है। जल और स्थल सब में राम नाम ही बसा हुआ है। उस प्रभु का सदैव गायन किया जाना चाहिए जो दुख दूर करने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने हमारे जीवन को सफल कर दिया है। प्रभु का ही मैंने सुमिरन किया क्योंकि प्रभु ही दुखों को दूर करने वाला है। मुझे वह मुक्तिदाता गुरु मिल गया है और प्रभु ने हमारी जीवन यात्रा सफल कर दी है। अब संगत में मिल बैठ कर ही गुणों का गायन करना है।। १ ।। हे मन, प्रभु-नाम की ही आशा लगा जिससे तुम्हारा द्वैतभाव और दूसरों की ओर से लगन दूर हो जाएगी। जो आशाओं में भी उदास और निराश बना रहता है वह सेवक प्रभु से मिल चुका होता है। जो कोई भी प्रभु-नाम के गुणों का गायन करता है दास नानक उसके चरणों को स्पर्श करता है।। २ ।। १ ।। ७ ।। ४ ।। ६ ।। ७ ।। १७ ।।

रागु बिलावलु महला ५ चौपदे घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

यह दिखने वाला संसार है तूने उसी से मोह लगा रखा है तो भला अविनाशी प्रभु से तू कैसे मिल पाएगा। हे प्रभु, कृपा करके मुझे सीधे मार्ग पर डाल दो और साधसंगति के आँचल को मुझे पकड़ा दो।। १ ।। इस विष रूपी संसार से कैसे तैरा जाए; सच्चा गुरु ही जहाज है जो पार उतारता है।। १ ।। रहाउ ।। माया हवा की तरह इधर उधर डुलाती भटकाती रहती है परन्तु जो प्रभु के भक्त हैं वे ही सदैव स्थिर बने रहते हैं। वे हर्ष और शोक से अलिप्त बने रहते हैं क्योंकि उनके सिर पर उनका रक्षक गुरु होता है।। २ ।। माया रूपी नागिन ने सबको जकड़ा हुआ है और अपने अंहकार में जीव माया की अग्नि में वैसे ही जलते हैं जैसे पतंगे दीपक को देखकर जल मरते हैं। जीव-स्त्री सभी श्रृंगार करे तब भी उस प्रभु को नहीं पा सकती; परन्तु यदि गुरु कृपालु हो जाए तो वह उसे मिला देता है।। ३ ।। मैं उदासीन होकर भटक रही हूँ कि मुझे कोई उस अमूल्य रत्न (प्रभु) के बारे में बता दे। वह अमूल्य हीरा किसी भी उपाय से प्राप्त नहीं होता। यह शरीर ही प्रभु का महल है जिसमें नाम रूपी रत्न स्थित है परन्तु गुरु ही पड़े हुए पर्दे को हटाकर दिखाता है और मैं उसे देखकर आनन्दित हो उठती हूँ।। ४ ।। जिसने उसे चखा है उसने ही उसका वैसा ही स्वाद पाया है जैसे मिठाई खाकर गूंगा मन में आनन्द विभोर हो उठता है। अब आनन्द स्वरूप वह प्रभु सबमें नजर आने लगता है और दास नानक तो उस प्रभु के गुणों को गाता हुआ उसी में लीन हो जाता है।। ५ ।। १ ।। बिलावलु महला ५ ।। गुरुदेव प्रभु ने मेरा सब प्रकार से कल्याण कर दिया और इस सेवक को अपनी सेवा में लगा लिया है। उस रहस्यमय अदृष्ट प्रभु का सुमिरन करने से फिर कोई विघ्न नहीं पड़ता।। १ ।। उसके गुण गाने से यह धरती भी पवित्र हो गई है और प्रभु के नाम का सुमिरन करने से पाप भी भाग गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। सभी स्थानों में वह स्वयं ही रमण कर रहा है जिसका आदि युगादि में सबसे बड़ा तेज प्रताप है। गुरु की कृपा से जीव को कोई भी दुख नहीं होता।। २ ।। गुरु के चरण मन में मीठे लगने से बिना किसी रुकावट के जीव सभी स्थानों में बस जाता है। सच्चे गुरु के प्रसन्न होने पर सभी सुखों को प्राप्त कर लिया जाता है।। ३ ।। परब्रह्म प्रभु हमारा रक्षक हो गया है और जहाँ कहीं भी उसे हम देखते हैं वह हमें अपने साथ ही दिखाई देता है। हे नानक, दासों का तो उस मालिक ने ही पालन पोषण किया है।। ४ ।। २ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे सुखों के भण्डार

प्रीतम प्रभ मेरे ॥ अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे ॥ मोहि अनाथ तुमरी सरणाई ॥ करि किरपा हरि चरन धिआई ॥ १ ॥ दइआ करहु बसहु मनि आइ ॥ मोहि निरगुन लीजै लड़ि लाइ ॥ रहाउ ॥ प्रभु चिति आवै ता कैसी भीड़ ॥ हरि सेवक नाही जम पीड़ ॥ सरब दूख हरि सिमरत नसे ॥ जा कै संगि सदा प्रभु बसै ॥ २ ॥ प्रभ का नामु मनि तनि आधारु ॥ बिसरत नामु होवत तनु छारु ॥ प्रभ चिति आए पूरन सभ काज ॥ हरि बिसरत सभ का मुहताज ॥ ३ ॥ चरन कमल संगि लागी प्रीति ॥ बिसरि गई सभ दुरमति रीति ॥ मन तन अंतरि हरि हरि मंत ॥ नानक भगतन कै घरि सदा अनंद ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु २ यानड़ीए कै घरि गावणा ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मै मनि तेरी टेक मेरे पिआरे मै मनि तेरी टेक ॥ अवर सिआणपा बिरथीआ पिआरे राखन कउ तुम एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पिआरे सो जनु होत निहाला ॥ गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होइ दइआला ॥ सफल मूरति गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रहमु परमेसरु सदा सदा हजूरे ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तिना की जिन्ह अपुना प्रभु जाता ॥ हरि नामु अराधहि नामु वखाणहि हरि नामे ही मनु राता ॥ सेवकु जन की सेवा मागै पूरै करमि कमावा ॥ नानक की बेनंती सुआमी तेरे जन देखणु पावा ॥ २ ॥ वडभागी से काढीअहि पिआरे संतसंगति जिना वासो ॥ अंम्रित नामु अराधीऐ निरमलु मनै होवै परगासो ॥ जनम मरण दुखु काटीऐ पिआरे चूकै जम की काणे ॥ तिना परापति दरसनु नानक जो प्रभ अपणे भाणे ॥ ३ ॥ ऊच अपार बेअंत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥ गावते उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारै ॥ नानक दास तेरी सरणाई सदा सदा बलिहारै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ ॥ बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ ॥ मानु महतु न सकति ही

मेरे प्रियतम प्रभु, तेरे गुण अनगिनत हैं। मैं अनाथ तो तेरी ही शरण में हूँ; तू मुझ पर कृपा कर जिससे मैं हे प्रभु, तेरे चरणों का सुमिरन करता रहूँ।। १ ।। हे प्रभु, तुम दया करो और मेरे मन में आकर बस जाओ। मुझ गुण विहीन को अपना पल्लू थमा दो।। रहाउ ।। यदि प्रभु मन में बसा है तो फिर कैसी विपत्ति हो सकती है। प्रभु के सेवक को यम की पीड़ा भी नहीं सहनी पड़ती। प्रभु के सुमिरन से उन लोगों के सभी दुख भाग खड़े होते हैं जिनके साथ प्रभु सदैव बसता है।। २ ।। प्रभु का नाम ही मन तन का आसरा है और प्रभु-नाम के विस्मृत होते ही यह शरीर राख हो जाता है। जब प्रभु की याद बनी रहती है तो सभी कार्य पूरे हो जाते हैं परन्तु प्रभु को भूलते ही जीव सबका मोहताज बन जाता है।। ३ ।। जिसकी उस प्रभु के चरण कमलों के साथ प्रीति लग गई है उसको सभी दुर्मति के तरीके भूल गए हैं। जिनके तन मन के अन्दर प्रभु रूपी मन्त्र बस जाता है। हे नानक, ऐसे भक्तों के घर सदैव आनन्द बना रहता है।।४ ।। ३ ।।

राग बिलावलु महला ५ घरु २ ।। इसे तिलंग महला १ पन्ना ७२२ पर अंकित "इयानड़िये मानड़ा" वाले शब्द की धुन पर गाना है १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरे प्यारे, मेरे मन में एक तेरा ही आसरा है और केवल एक तेरा ही आसरा है। अन्य सभी चतुराईयाँ व्यर्थ हैं क्योंकि हे मेरे प्यारे, तुम एक ही हमारी रक्षा करने वाले हो।। १ ।। रहाउ ।। जिसे पूर्ण सच्चा गुरु मिल जाए, हे प्यारे, वह व्यक्ति आनन्दित हो जाता है। गुरु की सेवा भी वही करता है जिसपर वह प्रभु दयालु होता है। जिसका व्यक्तित्व फलदायक है वही हमारा गुरुदेव स्वामी प्रभु है जो सभी शक्तियों से भरा हुआ है। हे नानक, परब्रह्म परमेश्वर ही गुरु है जो सदैव प्रत्यक्ष रूप से हाजिर बना रहता है।। १ ।। जिन्होंने अपने प्रभु को जान लिया है मैं तो उनकी महिमा सुन-सुन कर ही जीवित बना रहता हूँ। ऐसे व्यक्ति प्रभु-नाम की ही आराधना करते हैं, प्रभु-नाम को ही बखान करते हैं और हरि नाम में ही उनका मन लीन बना रहता है। हे प्रभु, तेरा यह सेवक तेरे सेवको की सेवा माँग रहा है और मेरे पूर्ण भाग्य होने से ही मैं इस कर्म को कर सकता हूँ। हे मालिक, नानक की यही विनती है कि मैं तेरे सेवकों के दर्शन कर सकूं।। २ ।। हे प्यारे, जिन लोगों का निवास संत पुरुषों की संगत में बना रहता है उन्हें बड़े भाग्यशाली कहा जाता है। उन्हीं के कारण अमृत नाम की निर्मल आराधना होती है और मन प्रकाशित हो उठता है। जन्म मरण का दुख कट जाता है और यम की मोहताजी चुक जाती है। हे नानक, जो प्रभु को अच्छे लगते हैं उन्हीं को उसका दर्शन प्राप्त होता है।। ३ ।। हे ऊँचे अपरम्पर अनन्त स्वामी, तेरे गुणों को कौन जान सकता है। गुणों का गायन करने वाले का भी उद्धार होता है, सुनने वालों का भी उद्धार होता है और उनके अनेकों पाप विनष्ट हो जाते हैं। हे प्रभु, तुम्हारा गुणानुवाद पशु, प्रेत, मूर्ख एवं पत्थरों को भी तैराकर पार उतार देता है। दास नानक तो तेरी ही शरण में है और सदैव तुझ पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। १ ।। ४ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे सखी, विषय विकारों के फीके रस त्याग दे और प्रभु-नाम का महारस पान करो। इस रस को चखे बिना सारी सृष्टि ही डूबी पड़ी है और यह जीव सुखी नहीं रहता। तेरा ना तो कोई मान है, ना बड़प्पन है और ना ही तुझमें कोई बल है

काई साधा दासी थीओ ॥ नानक से दरि सोभावंते जो प्रभि अपुनै कीओ ॥ १ ॥ हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीए म्रिग त्रिसना द्रुम छाइआ ॥ चंचलि संगि न चालती सखीए अंति तजि जावत माइआ ॥ रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सूखु न पाइआ ॥ धंनि धंनि हरि साध जन सखीए नानक जिनी नामु धिआइआ ॥ २ ॥ जाइ बसहु वडभागणी सखीए संता संगि समाईऐ ॥ तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरन कमल लिव लाईऐ ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ ॥ प्रेम बिछोहु न मोहु बिआपै नानक हरि एकु धिआईऐ ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाए ॥ सेज सुहावी संगि मिलि प्रीतम अनद मंगल गुण गाए ॥ सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए ॥ नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछू न जाए ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

एक रूप सगलो पासारा ॥ आपे बनजु आपि बिउहारा ॥ १ ॥ ऐसो गिआनु बिरलो ई पाए ॥ जत जत जाईऐ तत द्रिसटाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक रंग निरगुन इक रंगा ॥ आपे जलु आप ही तरंगा ॥ २ ॥ आपि ही मंदरु आपहि सेवा ॥ आप ही पूजारी आप ही देवा ॥ ३ ॥ आपहि जोग आप ही जुगता ॥ नानक के प्रभ सद ही मुकता ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ आपि उपावन आपि सधरना ॥ आपि करावन दोसु न लैना ॥ १ ॥ आपन बचनु आप ही करना ॥ आपन बिभउ आप ही जरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आप ही मसटि आप ही बुलना ॥ आप ही अछलु न जाई छलना ॥ २ ॥ आप ही गुपत आपि परगटना ॥ आप ही घटि घटि आपि अलिपना ॥ ३ ॥ आपे अविगतु आप संगि रचना ॥ कहु नानक प्रभ के सभि जचना ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भूले मारग जिनहि बताइआ ॥ ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥ १ ॥ सिमरि मना राम नामु चितारे ॥ बसि रहे हिरदै

इसलिये तू तो साधु व्यक्तियों की दासी बनी रह। हे नानक, जिन्हें प्रभु ने अपना बना लिया है वे ही उसके द्वार पर शोभायमान बने रहते हैं।। १ ।। हे सखी, आकाश में दिखने वाली गन्धर्व नगरी वास्तव में मृगतृष्णा की तरह और क्षण-क्षण बदलने वाली पेड़ की छाया की तरह है। यह माया अत्यन्त चंचल है जो किसी के साथ नहीं चलती और हे सखी, अंत में छोड़ जाती है। जो इसी के रसों को भोगते हुए इसी के रूप रस में अत्यन्त लीन बने रहते हैं वे इसके साथ सुख प्राप्त नहीं करते। हे नानक, प्रभु के साधु पुरुष धन्य हैं जिन्होंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है।। २ ।। हे बड़े भाग्यवाली सखी, तू सन्त पुरुषों की संगत में बस जा और उसी में लीन हो जा। वहाँ ना तो दुख है ना भूख है और ना रोग प्रभावित करता है, वहीं रह कर प्रभु के चरण कमलों में लौ लगाई जाती है। वहाँ ना जन्म मरण होता है, ना आवागमन होता है तथा वहीं पक्की शरण प्राप्त होती है। वहाँ प्रभु के प्रेम से कभी वियोग नहीं होता, और ना ही मोह प्रभावित करता है। हे नानक, ऐसे एक ही उस प्रभु का सुमिरन करना चाहिये।। ३ ।। उस प्यारे प्रभु ने कृपादृष्टि धारण करके हमारे मन को बींध लिया है और हे प्यारे, हम स्वाभाविक रूप से ही उसके प्रेम मे रंगे गए है। उस प्रियतम से मिलकर हमारी सेज सुहावनी हो गई है और अनन्द और मंगल गीत गाते हुए हम उसके गुणों का गायन करते हैं। हमारी सभी सखी सहेलियाँ अर्थात् सत्संगी जीव स्त्रियाँ उस प्रभु के रंग में रंग गई हैं और उनके मन और तन की इच्छाएं पूरी हो गई हैं। हे नानक, जीव का आश्चर्य भाव उस परम आश्चर्य से मिल गया है और अब उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।। ४ ।। २ ।। ५ ।।

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उसका रूप एक ही है और उसी रूप का प्रसार सब ओर है। वह स्वयं ही सौदा है और स्वयं ही इस संसार का कार्य व्यव्हार है।। १ ।। ऐसा ज्ञान कोई बिरला ही पाता है कि हम जहाँ जाएँ वह वहीं नजर आता रहे।। १ ।। रहाउ ।। वह गुणातीत प्रभु सब रंगों वाला होता हुआ भी एक ही रंग वाला है। वह स्वयं ही जल है और स्वयं ही तरंगरूप है।। २ ।। वह स्वयं मंदिर भी है, स्वयं ही सेवा है, स्वयं ही पुजारी है और स्वयं ही उस पुजारी का इष्ट भी है।। ३ ।। वह योग भी स्वयं ही है और स्वयं ही उसकी मुक्ति भी है। हे नानक, वह प्रभु यह सब होता हुआ भी इन सबसे मुक्त बना रहता है।। ४ ।। १ ।। ६ ।। बिलावलु महला ५ ।। वह स्वयं ही उत्पन्न करने वाला और स्वयं ही आसरा देने वाला है। वह स्वयं ही कर्म कराने वाला है परन्तु कर्म दोष को अपने सिर नहीं लेता।। १ ।। वह स्वयं ही वचन देने वाला और स्वयं ही उस वचन को पूरा करने वाला भी है। वह प्रभु स्वयं ही विभूति है और स्वयं ही दुख सहन करने वाला भी है।। १ ।। रहाउ ।। वह स्वयं ही चुप्पी धारण करने वाला और स्वयं ही बखान करने वाला भी है। वह अछल है जिसे छला नहीं जा सकता।। २ ।। वह स्वयं ही गुप्त है और स्वयं ही प्रकट बना रहने वाला है। वह स्वयं ही घट-घट में बिराजमान रहते हुए भी आप ही निर्लिप्त बना रहने वाला है।। ३ ।। वह स्वयं ही अव्यक्त निराकार है और स्वयं ही इस सारी सृष्टि के साथ रचा बसा हुआ है। हे नानक, तू वही कह जो सब कुछ प्रभु को जचता है।। ४ ।। २ ।। ७ ।। बिलावलु महला ५ ।। मुझ भूले हुए को जिसने रास्ता दिखा दिया मैंने बड़े भाग्य से ऐसे गुरु को पा लिया है।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु नाम को अपने अन्दर याद करता हुआ उसका सुमिरन कर ताकि

गुर चरन पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीना ॥ बंधन काटि मुकति गुरि कीना ॥ २ ॥ दुख सुख करत जनमि फुनि मूआ ॥ चरन कमल गुरि आस्रमु दीआ ॥ ३ ॥ अगनि सागर बूडत संसारा ॥ नानक बाह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तनु मनु धनु अरपउ सभु अपना ॥ कवन सु मति जितु हरि हरि जपना ॥ १ ॥ करि आसा आइओ प्रभ मागनि ॥ तुम्ह पेखत सोभा मेरै आगनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति करि बहुतु बीचारउ ॥ साधसंगि इसु मनहि उधारउ ॥ २ ॥ मति बुधि सुरति नाही चतुराई ॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥ ३ ॥ नैन संतोखे प्रभ दरसनु पाइआ ॥ कहु नानक सफलु सो आइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत साथि न माइआ ॥ साधसंगि सभु दूखु मिटाइआ ॥ १ ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ महि आपे ॥ हरि जपु रसना दुखु न विआपे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिखा भूख बहु तपति विआपिआ ॥ सीतल भए हरि हरि जसु जापिआ ॥ २ ॥ कोटि जतन संतोखु न पाइआ ॥ मनु त्रिपताना हरि गुण गाइआ ॥ ३ ॥ देहु भगति प्रभ अंतरजामी ॥ नानक की बेनंती सुआमी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा वडभागी पाईऐ ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ पारब्रहम प्रभ तेरी सरना ॥ किलबिख काटै भजु गुर के चरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवरि करम सभि लोकाचार ॥ मिलि साधू संगि होइ उधार ॥ २ ॥ सिंम्रिति सासत बेद बीचारे ॥ जपीऐ नामु जितु पारि उतारे ॥ ३ ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा करीऐ ॥ साधू धूरि मिलै निसतरीऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ११ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुर का सबदु रिदे महि चीना ॥ सगल मनोरथ पूरन आसीना ॥ १ ॥ संत जना का मुखु ऊजलु कीना ॥ करि किरपा अपुना नामु दीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंध कूप ते करु गहि लीना ॥ जै जै कारु जगति प्रगटीना ॥ २ ॥ नीचा ते ऊच ऊन पूरीना ॥ अंम्रित नामु महा रसु लीना ॥ ३ ॥ मन तन निरमल पाप जलि खीना ॥ कहु नानक प्रभ भए प्रसीना ॥ ४ ॥ ७ ॥ १२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सगल मनोरथ पाईअहि मीता ॥

गुरु के प्यारे चरण तेरे हृदय में बसते रहें।। १ ।। रहाउ ।। काम, क्रोध और लोभ ने मन को मोहित कर रखा है परन्तु गुरु ने इनके बंधन काटकर हमें मुक्त कर दिया।। २ ।। दुख-सुख में पड़ा हुआ बार-बार मैं जन्म लेता और मरता था परन्तु गुरु ने मुझे अपने चरण कमलों का स्थिर ठिकाना दे दिया है।। ३ ।। सारा संसार विषय विकारों की अग्नि में डूब रहा है परन्तु हे नानक, सच्चे गुरु ने बाँह पकड़कर उसे पार उतार दिया है।।४।।३।।८।। बिलावल महला ५ ।। मैं अपना तन, मन, धन सब कुछ अर्पण कर दूं यदि मुझे ऐसी मति मिल जाए जिससे मैं प्रभु का सुमिरन करता रहूँ।।१।। हे प्रभु, मैं बड़ी आशा लेकर तुमसे माँगने आया हूँ क्योंकि तुझे देखते ही मेरा हृदय रूपी आंगन शोभायमान हो उठता है।। १ ।। रहाउ ।। मैंने अनेकों युक्तियों को कर करके बहुत चिन्तन किया है कि किसी प्रकार साधसंगति में रहते हुए इस मन का उद्धार करूं।। २ ।। मेरी तो अपनी मति, बुद्धि, सुरति और चतुराई आदि कुछ भी नहीं हैं; मैं तो तभी मिल सकता हूँ यदि वह प्रभु मुझे स्वयं से मिला ले।। ३ ।। प्रभु का दर्शन पाने से जिसकी आँखे सन्तुष्ट हो गई हे नानक, उसी का इस मानव जीवन में आना सफल कहा जाता है।। ४ ।। ४ ।। ६ ।। बिलावलु मः ५ ।। माता पिता, पुत्र धन सम्पदा आदि साथ नहीं बने रहते और साधसंगति में ही सभी दुख मिटाए जाते हैं।। १ ।। वह प्रभु स्वयं ही सबमें रमण कर रहा है इसलिये हे मेरी जीभ, तू प्रभु का जाप कर ताकि तुझे दुख प्रभावित ना करे।। १ ।। रहाउ ।। मैं बहुत ही भूख और प्यास से जल रहा था परन्तु प्रभु के यश का सुमिरन करते हुए मैं पूर्ण रूप से शीतल हो गया हूँ।। २।। करोड़ो यत्न करने पर भी मुझे सन्तोष नहीं आ सका परन्तु प्रभु का गुणानुवाद करने से मेरा मन तृप्त हो गया।। ३।। हे अन्तर्यामी प्रभु, नानक की तो यही विनती है कि अपनी भक्ति हमें प्रदान करो।। ४ ।। ५ ।। १० ।। बिलावलु महला ५ ।। बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु प्राप्त होता है और साधु रूपी गुरु से मिलकर प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है।। १ ।। हे परब्रह्म प्रभु, हम तो तेरी शरण में हैं और हमने गुरु के चरणों का सुमिरन करके अपने सभी पाप मिटा डाले हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु सुमिरन के बिना अन्य सभी कर्म तो लौकिक व्यवहार मात्र हैं। साधु पुरुषों से मिलकर उनके साथ ही जीव का उद्धार होता है।। २ ।। स्मृतियों, शास्त्रों और वेदों को विचारा गया तो पता चला कि प्रभु नाम का ही सुमिरन किया जाना चाहिए जिससे व्यक्ति पार उतरता है।। ३ ।। हे प्रभु, दास नानक पर कृपा करो ताकि उसे साधु पुरुषों की चरण-धूलि मिल जाए और उसका पार उतारा हो जाए।। ४ ।। ६ ।। ११ ।। बिलावलु महला ५ ।। जब शब्द-गुरु को हृदय में ही पहचान लिया गया तो सभी आशाएं और उद्देश्य पूरे हो गए हैं।। १ ।। प्रभु ने शान्त पुरुषों का मुख उज्जवल कर दिया है और कृपा करके उन्हें अपना नाम प्रदान कर दिया है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने अंधे कुएं से हाथ पकड़कर हमें बाहर निकाल लिया है और संसार भर में प्रत्यक्ष रूप से प्रभु की जय जयकार हो रही है।। २ ।। वह नीच को ऊँचा और खाली को भर देने वाला है। भरा हुआ व्यक्ति उसके अमृत नाम के महारस को ही प्राप्त करता है।। ३ ।। अब मन तन निर्मल हो गया है और पाप जलकर क्षीण हो गया है। नानक का कथन है कि प्रभु प्रसन्न हो गए हैं।। ४ ।। ७ ।। १२ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे मित्र, सम्पूर्ण उद्देश्य प्राप्त हो जाते हैं यदि

चरन कमल सिउ लाईऐ चीता ॥ १ ॥ हउ बलिहारी जो प्रभू धिआवत ॥ जलनि बुझै हरि हरि गुन गावत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल जनमु होवत वडभागी ॥ साधसंगि रामहि लिव लागी ॥ २ ॥ मति पति धनु सुख सहज अनंदा ॥ इक निमख न विसरहु परमानंदा ॥ ३ ॥ हरि दरसन की मनि पिआस घनेरी ॥ भनति नानक सरणि प्रभ तेरी ॥ ४ ॥ ८ ॥ १३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मोहि निरगुन सभ गुणह बिहूना ॥ दइआ धारि अपुना करि लीना ॥ १ ॥ मेरा मनु तनु हरि गोपालि सुहाइआ ॥ करि किरपा प्रभु घर महि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति वछल भै काटनहारे ॥ संसार सागर अब उतरे पारे ॥ २ ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु बेदि लेखिआ ॥ पारब्रहमु सो नैनहु पेखिआ ॥ ३ ॥ साधसंगि प्रगटे नाराइण ॥ नानक दास सभि दूख पलाइण ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु जानै प्रभ तुम्हरी सेवा ॥ प्रभ अविनासी अलख अभेवा ॥ १ ॥ गुण बेअंत प्रभ गहिर गंभीरे ॥ ऊच महल सुआमी प्रभ मेरे ॥ तू अपरंपर ठाकुर मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकस बिनु नाही को दूजा ॥ तुम्ह ही जानहु अपनी पूजा ॥ २ ॥ आपहु कछू न होवत भाई ॥ जिसु प्रभु देवै सो नामु पाई ॥ ३ ॥ कहु नानक जो जनु प्रभ भाइआ ॥ गुण निधान प्रभु तिन ही पाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ १५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात गरभ महि हाथ दे राखिआ ॥ हरि रसु छोडि बिखिआ फलु चाखिआ ॥ १ ॥ भजु गोबिद सभ छोडि जंजाल ॥ जब जमु आइ संघारै मूड़े तब तनु बिनसि जाइ बेहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु धनु अपना करि थापिआ ॥ करनहारु इक निमख न जापिआ ॥ २ ॥ महा मोह अंध कूप परिआ ॥ पारब्रहमु माइआ पटलि बिसरिआ ॥ ३ ॥ वडै भागि प्रभ कीरतनु गाइआ ॥ संतसंगि नानक प्रभु पाइआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ १६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मात पिता सुत बंधप भाई ॥ नानक होआ पारब्रहमु सहाई ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद घणे ॥ गुरु पूरा पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा के जाहि न गणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सरंजाम करे प्रभु आपे ॥ भए मनोरथ सो प्रभु जापे ॥ २ ॥ अरथ धरम काम मोख का

प्रभु के चरण कमलों में चित्त लगाया जाए।। १ ।। जो प्रभु का सुमिरन करते हैं मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ क्योंकि प्रभु के गुण गायन से जीव की जलन बुझ जाती है।। १ ।। रहाउ ।। उन भाग्यशालियों का जीवन सफल होता है जिनकी साधसंगति में प्रभु से लौ लग जाती है।। २ ।। जब एक क्षण भर के लिए भी वह परम आनन्द प्रभु विस्मृत नहीं हुआ तो मति, सम्मान, धन, सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त हो जाते हैं।। ३ ।। मेरे मन में प्रभु दर्शन की प्यास बहुत अधिक है और नानक कहता है कि हे प्रभु, मैं तेरी शरण में आ गया हूँ।। ४ ।। ८ ।। १३ ।। बिलावलु महला ५ ।। मैं निर्गुण सभी गुणों से विहीन हूँ परन्तु प्रभु ने दया धारण करके मुझे अपना बना लिया है।। १ ।। धरती के पालनकर्ता प्रभु के साथ होने से मेरा मन तन बहुत ही अच्छा लगता है। प्रभु कृपा करके मेरे हृदय रूपी घर में आ गया है।। १।। रहाउ ।। हे प्रभु, तुम भक्तवत्सल और भय को नष्ट करने वाले हो और तुम्हारे ही कारण अब हम संसार सागर से पार उतर गए हैं।। २ ।। जिस प्रभु का बिरद पतितों को पवित्र करने वाला वेद ने भी लिखा है उस परब्रह्म प्रभु को मैंने अपनी आँखों से देख लिया है।। ३ ।। साधसंगति में वह नारायण प्रभु प्रकट हो जाता है और हे नानक, उसके सेवक के सभी दुख भाग खड़े होते हैं।। ४ ।। ९ ।। १४ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, तुम्हारी सेवा के बारे में कौन जान सकता है। वह प्रभु तो अविनाशी, रहस्यमय और ऐसा है जिसे जाना नहीं जा सकता।। १ ।। प्रभु गहरा और गम्भीर है और उसके गुण अनन्त है। मेरे स्वामी प्रभु के महल तो बहुत ही ऊँचे हैं। हे मेरे ठाकुर, तू तो परे से परे है अर्थात् अपरम्पर है।। १ ।। रहाउ ।। उस एक प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है और हे प्रभु, अपनी पूजा के बारे में तो केवल तुम ही जानते हो।। २ ।। हे भाई, अपने आप से कुछ नहीं होता क्योंकि जिसे प्रभु देता है वही प्रभु नाम को प्राप्त करता है।। ३ ।। नानक कहता है कि जो सेवक प्रभु को भा जाता है वही गुण निधान प्रभु को पा लेता है।। ४ ।। १० ।। १५।। बिलावलु महला ५ ।। माता के गर्भ में भी जीव को हाथ देकर प्रभु ने उसकी रक्षा की है परन्तु यह जीव हरि रस को छोड़कर विकारों के विष समान फलों को ही चखता रहता है।। १ ।। हे जीव, तू प्रभु का भजन कर और सभी जंजालों को छोड़ दे। हे मूर्ख, जब तुझे यम आकर मार डालेगा तब तेरा तन नष्ट हो जाएगा और तेरा बुरा हाल हो जाएगा।। १ ।। रहाउ ।। तूने इस तन मन और धन को अपना किया हुआ जान लिया है और सब कुछ करने वाले उस प्रभु का एक क्षण भर के लिये भी सुमिरन नहीं किया।। २ ।। तू मोह के बहुत बड़े अन्धे कुएं में गिर पड़ा है और माया के पर्दे के कारण तुझे परब्रह्म प्रभु विस्मृत हो गया है।। ३ ।। बड़े भाग्य होने से ही प्रभु की कीर्ति का गायन किया जाता है और शान्त पुरुषों की संगत में हे नानक, प्रभु को प्राप्त किया जाता है।। ४ ।। ११ ।। १६ ।। बिलावलु महला ५।। माता, पिता, पुत्र, बन्धु और भाई के रूप में हे नानक, केवल परब्रह्म ही सहायक बनता है। जीव के लिए अनेकों ही सुख, सहजभाव और आनन्द बने रहते हैं। वह परमात्मा ही पूर्ण है, उसी की वाणी पूर्ण है और उसके अनेकों ही गुण हैं जिनकी गिनती नहीं की जा सकती।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु स्वयं ही सब प्रबन्ध करता है और प्रभु के सुमिरन से सभी मनोरथ पूरे हो जाते हैं।। २ ।। वह प्रभु धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने वाला

दाता ॥ पूरी भई सिमरि सिमरि बिधाता ॥ ३ ॥ साधसंगि नानकि रंगु माणिआ ॥ घरि आइआ पूरै गुरि आणिआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ स्रब निधान पूरन गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत नर जीवे ॥ मरि खुआरु साकत नर थीवे ॥ १ ॥ राम नामु होआ रखवारा ॥ झख मारउ साकतु वेचारा ॥ २ ॥ निंदा करि करि पचहि घनेरे ॥ मिरतक फास गलै सिरि पैरे ॥ ३ ॥ कहु नानक जपहि जन नाम ॥ ता के निकटि न आवै जाम ॥ ४ ॥ १३ ॥ १८ ॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ दुपदे   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने ॥ पलु पलु निमख सदा हरि जपने ॥ १ ॥ चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ ॥ कवन सु मति जितु प्रीतमु पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी क्रिपा करहु प्रभ मेरे ॥ हरि नानक बिसरु न काहू बेरे ॥ २ ॥ १ ॥ १९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए ॥ रोग गए सगले सुख पाए ॥ १ ॥ गुरि दुखु काटिआ दीनो दानु ॥ सफल जनमु जीवन परवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अकथ कथा अंम्रित प्रभ बानी ॥ कहु नानक जपि जीवे गिआनी ॥ २ ॥ २ ॥ २० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सांति पाई गुरि सतिगुरि पूरे ॥ सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताप पाप संताप बिनासे ॥ हरि सिमरत किलविख सभि नासे ॥ १ ॥ अनदु करहु मिलि सुंदर नारी ॥ गुरि नानकि मेरी पैज सवारी ॥ २ ॥ ३ ॥ २१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ममता मोह ध्रोह मदि माता बंधनि बाधिआ अति बिकराल ॥ दिनु दिनु छिजत बिकार करत अउध फाही फाथा जम कै जाल ॥ १ ॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआला ॥ महा बिखम सागरु अति भारी उधरहु साधू संगि रवाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरा माल ॥ भ्रम के बंधन काटहु परमेसर नानक के प्रभ सदा क्रिपाल ॥ २ ॥ ४ ॥ २२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सगल अनंदु कीआ परमेसरि अपणा बिरदु सम्हारिआ ॥ साध जना होए किरपाला बिगसे सभि परवारिआ ॥ १ ॥ कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ ॥

दाता है और उस विधाता प्रभु का लगातार सुमिरन करते हुए मेरी मेहनत सफल हो गई है।। ४ ।। १२ ।। १७ ।। बिलावलु महला ५ ।। पूर्ण गुरुदेव प्रभु ही सभी प्रकार का भण्डार है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के नाम का सुमिरन करते हुए व्यक्ति जीवित बना रहता है और प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति मरकर भटकता ही रहता है।। १ ।। राम नाम ही वास्तव में रखवाला होता है और प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति तो व्यर्थ ही झख मारता फिरता है।। २ ।। अनेकों व्यक्ति निन्दा करते हुए ही मरते खपते रहते हैं और ऐसे निन्दकों के मरने पर उनके गले, सिर एवं पैरों में बेड़ियाँ पड़ी रहती हैं।। ३ ।। नानक कहता है कि जो सेवक प्रभु नाम का सुमिरन करता है यम उसके पास भी नहीं आता ।। ४ ।। १३ ।। १८ ।।

रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ दोपदे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

कब वह संयोग बनेगा जब मैं अपने प्रभु को मिल सकूंगा। मैं सदैव ही, हर पल और हर निमिष उस प्रभु का जाप करता रहता हूँ।। १ ।। प्रभु के चरण कमलों का मैं सदैव सुमिरन करता रहता हूँ परन्तु वह कैसी अच्छी मति होगी जिसके माध्यम से मैं प्रियतम को पा लूंगा।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, ऐसी कृपा करो कि नानक को कभी भी किसी भी क्षण प्रभु विस्मृत ना हो सके।। २ ।। १ ।। १९ ।। बिलावलु महला ५।। प्रभु के चरण कमलों को जब हृदय में याद किया गया तो समस्त रोग भाग खड़े हुए और सभी सुख प्राप्त हो गये।। १ ।। गुरु ने मुझे ऐसा दान दिया है कि मेरे सभी दुख काट डाले हैं। अब मेरा जन्म सफल हो गया है और मेरा जीवन स्वीकृत हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु की वाणी अमृत के समान है जिसकी कथा अकथनीय है। नानक का कथन है कि ज्ञानवान पुरुष उसी का जाप करके आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहता है।। २ ।। २ ।। २० ।। बिलावलु महला ५ ।। पूर्ण गुरु एवं सच्चे गुरु उस परमात्मा ने शान्ति दे दी है जिससे सुख उत्पन्न हुआ है और अनहद वाद्य बजने लगे हैं।। १ ।। रहाउ ।। सभी प्रकार के दुख, पाप और संताप नष्ट हो गए हैं तथा प्रभु के सुमिरन से सभी पाप भाग खड़े हुए हैं।। १ ।। हे सुन्दर नारी रूपी सत्संगियो, आपस में मिलकर आनन्दित बने रहो क्योंकि गुरु नानक ने मेरे सम्मान को सँवार दिया है।। २ ।। ३ ।। २१ ।। बिलावलु महला ५।। ममता, मोह, धोखा, अभिमान में पूरी तरह लीन व्यक्ति बन्धनों में बंधा अत्यन्त भयानक दिखाई देता है। प्रत्येक दिन विकारों में पड़े हुए की आयु घटती जाती है और यह यम के जाल के फंदे में फँसा हुआ है।। १ ।। हे दीनदयालु प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ। यह संसार सागर महा कठिन और अत्यन्त गहरा है; तुम मुझे साधु पुरुषों की चरण धूलि मानते हुए मेरा उद्धार करो।। १ ।। रहाउ ।। हे समर्थ स्वामी प्रभु, तुम ही सुख देने वाले हो और मेरे प्राण और मेरा शरीर ये सब तुम्हारा ही माल है। नानक पर सदैव कृपालु बने रहने वाले हे परमेश्वर प्रभु, तुम मेरे भ्रमों के बन्धन को काट दो।। २ ।। ४ ।। २२ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु ने अपने स्वभाव को बनाए रखा है और सभी ओर आनन्द ही आनन्द कर दिया है। साधु सेवकों पर वह कृपालु हो गया है और इस प्रकार सृष्टि रूपी सारा परिवार खिल उठा है।। १ ।। सच्चे गुरु परमात्मा ने स्वयं ही मेरा काम पूरा कर दिया है।

वडी आरजा हरि गोबिंद की सूख मंगल कलिआण बीचारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वण त्रिण त्रिभवण हरिआ होए सगले जीअ साधारिआ ॥ मन इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजारिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ २३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिसु ऊपरि होवत दइआलु ॥ हरि सिमरत काटै सो कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि भजीऐ गोपालु ॥ गुन गावत तूटै जम जालु ॥ १ ॥ आपे सतिगुरु आपे प्रतिपाल ॥ नानकु जाचै साध रवाल ॥ २ ॥ ६ ॥ २४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥ १ ॥ ऐसी प्रीति करहु मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के निरमल भाग ॥ हरि चरनी ता का मनु लाग ॥ २ ॥ ७ ॥ २५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ रोगु गइआ प्रभि आपि गवाइआ ॥ नीद पई सुख सहज घरु आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भाई ॥ अंम्रित नामु रिद माहि धिआई ॥ १ ॥ नानक गुर पूरे सरनाई ॥ जिनि अपने नाम की पैज रखाई ॥ २ ॥ ८ ॥ २६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सतिगुर करि दीने असथिर घर बार ॥ रहाउ ॥ जो जो निंद करै इन ग्रिहन की तिसु आगै ही मारै करतार ॥ १ ॥ नानक दास ता की सरनाई जा को सबदु अखंड अपार ॥ २ ॥ ९ ॥ २७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताप संताप सगले गए बिनसे ते रोग ॥ पारब्रहमि तू बखसिआ संतन रस भोग ॥ रहाउ ॥ सरब सुखा तेरी मंडली तेरा मनु तनु आरोग ॥ गुन गावहु नित राम के इह अवखद जोग ॥ १ ॥ आइ बसहु घर देस महि इह भले संजोग ॥ नानक प्रभ सुप्रसंन भए लहि गए बिओग ॥ २ ॥ १० ॥ २८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ काहू संगि न चालही माइआ जंजाल ॥ ऊठि सिधारे छत्रपति संतन कै खिआल ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि कउ बिनसना इह धुर की ढाल ॥ बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥ १ ॥ सति बचन साधू कहहि नित जपहि गुपाल ॥ सिमरि सिमरि नानक तरे हरि के रंग लाल ॥ २ ॥ ११ ॥ २९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सहज समाधि अनंद सूख पूरे गुरि दीन ॥ सदा सहाई संगि प्रभ अंम्रित गुण चीन ॥ रहाउ ॥

प्रभु ने स्वयं ही हरिगोबिन्द की आयु को लम्बा कर दिया है और उसके सुख, मंगल और कल्याण का स्वयं चिन्तन किया है।। १ ।। रहाउ ।। हे नानक, जिस परमात्मा की कृपा से सारे वन, सारी वनस्पति और तीनों लोक हरे भरे रहते हैं वही परमात्मा सारे जीवों को आसरा देता है। केवल प्रभु की शरण में आने वाले व्यक्ति ही मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं और उन्हीं की इच्छाएँ पूर्ण होती हैं (अतः केवल एक परमात्मा का ही आसरा देखना चाहिए)।। २ ।। ५ ।। २३ ।। बिलावलु महला ५ ।। जिस पर प्रभु स्वयं दयालु हो जाता है वह प्रभु का सुमिरन करता है और काल को भी नष्ट कर देता है।। १ ।। रहाउ ।। साधसंगति में प्रभु का सुमिरन करना चाहिए क्योंकि उसके गुणों का गायन करने से ही यम का जाल टूट जाता है।। १ ।। वह स्वयं ही सच्चा गुरु है और स्वयं ही सबका पालन करने वाला है। नानक तो उसके साधुओं की चरण-धूलि की कामना करता है।। २ ।। ६ ।। २४ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु के नाम को बार बार मन में सींच कर मन की तराई करते रहो। प्रत्येक दिन उस प्रभु की कीर्ति और उसके गुणों का गायन करते रहो।। १ ।। हे मेरे मन, तुम उस प्रभु के साथ ऐसी प्रीति लगाओ की आठों प्रहर उस प्रभु को अपने पास ही जानते मानते रहो।। १ ।। रहाउ ।। नानक का कथन है जिसका भाग्य निर्मल होता है उसी का मन प्रभु चरणों में लगा रहता है।। २ ।। ७ ।। २५ ।। बिलावलु महला ५ ।। मेरा रोग चला गया है और वास्तव में इसे प्रभु ने ही दूर किया है। अब मैं चिन्ता मुक्त हो गया हूँ और सहज स्वाभाविक सुख मेरे हृदय में आ बसा है।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरे भाई, अब खूब अच्छी प्रकार से पेट भरकर भोजन खाओ और प्रभु के अमृत नाम की हृदय में आराधना करते रहो।। १ ।। नानक तो पूरे गुरु की शरण में आ गया है और उसने भी अपने नाम की इज़्ज़त बचा ली अर्थात् यह बता दिया है कि प्रभु अपने भक्तों की दुख के समय सहायता करता है।। २ ।। ८ ।। २६ ।। बिलावलु महला ५ ।। सच्चे गुरु प्रभु ने अब मेरे घरबार को पूर्ण रूप से सही सलामत कर दिया है।। रहाउ ।। जो कोई भी गुरु के इन घरों की निन्दा करता है उसे कर्ता प्रभु पहले ही मार डालता है।। १ ।। दास नानक तो उसकी शरण में है जिसका शब्द अखण्ड एवं अपरम्पार है।। २ ।। ६ ।। २७ ।। बिलावलु महला ५ ।। अब सभी दुख संताप भाग खड़े हुए हैं और मेरे सभी रोग नष्ट हो गए है। सन्त पुरुषों के आनन्द और सम्मान वाले रसों और भोगों को हे परब्रह्म-प्रभु, तुमने हमें दान कर दिया है।। रहाउ ।। हे भाई, तू प्रभु के गुण गाता रह क्योंकि ताप संताप और रोगों को दूर करने के लिये यही औषधि उपयुक्त है। इसी गुणानुवाद से सभी सुख तेरे साथी बने रहेंगे और तेरा मन तन रोगों से बचा रहेगा।। १ ।। हे भाई, अब यह अच्छा अवसर है कि तू बाहर भटकना छोड़कर अपने हृदय रूपी देश में ही निवास बना ले। हे नानक, जिस व्यक्ति पर प्रभु प्रसन्न हो जाता है उसके सभी वियोग समाप्त हो जाते हैं।। २ ।। १० ।। २८ ।। बिलावलु महला ५।। इन माया के जंजालों में से कुछ भी साथ नहीं चलेगा। सन्त पुरुषों का तो यही विचार है कि यहाँ से तो छत्रपति राजा को भी उठकर जाना होता है।। रहाउ ।। अभिमान का नाश होने की तो आदि काल से ही मर्यादा चली आ रही है। अभिमानी व्यक्ति अनेकों योनियों में भटकता है, जन्मता मरता है और विकराल विषय वासनाओं में फँसा रहता है।। १ ।। साधु पुरुष सच्चा उपदेश देते हैं और सदैव उस प्रभु का सुमिरन करते रहते हैं। हे नानक, प्रभु के रंग में लाल बने हुए वे प्रभु का सुमिरन करते हुए पार उतर जाते हैं।। २ ।। ११ ।। २६ ।। बिलावलु महला ५ ।। मुझे पूर्ण गुरु ने सहज समाधि, सुख और आनन्द प्रदान किए हैं। जिसने अमृत रूपी गुणों को पहचान लिया है प्रभु सदैव उसका सहायक बनकर उसके साथ ही बना रहता है।। रहाउ ।।

जै जै कारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ सुप्रसंन भए सतिगुर प्रभू कछु बिघनु न थीआ ॥ १ ॥ जा का अंगु दइआल प्रभ ता के सभ दास ॥ सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥ २ ॥ १२ ॥ ३० ॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

म्रित मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार ॥ १ ॥ सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि ॥ सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥ द्रिसटिमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार ॥ २ ॥ कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ॥ ३ ॥ जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ लोकन कीआ वडिआईआ बैसंतरि पागउ ॥ जिउ मिलै पिआरा आपना ते बोल करागउ ॥ १ ॥ जउ प्रभ जीउ दइआल होइ तउ भगती लागउ ॥ लपटि रहिओ मनु बासना गुर मिलि इह तिआगउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥ अरथ आन सभि वारिआ प्रिअ निमख सोहागउ ॥ २ ॥ पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥ रिदै प्रगासु प्रगट भइआ निसि बासुर जागउ ॥ ३ ॥ सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥ कहु नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥ मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥ १ ॥ प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥ सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥ पी अंम्रितु आघानिआ गुरि अमरु कराइआ ॥ २ ॥ सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ कीमति कही न जाईऐ किआ कहि मुखि बोला ॥ ३ ॥ सफल दरसु तेरा पारब्रहम

सभी जीव इस संसार में अपनी जय जयकार चाहते हैं। जब सच्चा गुरु-प्रभु पूर्ण रूप से प्रसन्न हो जाता है तो फिर इस कार्य के रास्ते में भी कोई विघ्न नहीं आता ।। १ ।। दयालु प्रभु जिसके पक्ष में हैं सभी उसके दास बन जाते हैं। हे नानक, उस गुरु के पास ही सदैव बड़प्पन और महानता बनी रहती है।। २ ।। १२ ।। ३० ।।

रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चारपदों वाले   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु ने मृत्यु मण्डल रूपी संसार की ऐसी रचना की है जैसे रेत के घर बने हों। इसे विनष्ट होते हुए उसी प्रकार जरा सी भी देर नहीं लगती जैसे कागज लगातार पानी की बूंदे पड़ने से गल जाता है।। १ ।। हे भाई, मेरे मन के भाव को मन लगाकर सुन और इस सच्ची बात को अच्छी तरह विचार कर देख ले। सिद्ध, साधक, गृहस्थी योगी इत्यादि के पास घरबार जो भी यहाँ था वे सब यहाँ से छोड़कर गए है।। १ ।। रहाउ ।। यह संसार वैसा ही है जैसे रात का सपना स्थायी और सच्चा नहीं होता। हे गँवार, तू इस संसार में क्यों लीन बना है, यह दिखाई देने वाला सब कुछ विनष्ट होने वाला है।। २ ।। तेरे भाई, मित्र कहाँ गए इसे आँखे खोल कर देख। कुछ तो चले गए कुछ अपनी बारी से चले जाएंगे।। ३ ।। जिन्होंने सच्चे गुरु की सेवा की है वे ही प्रभु के द्वार पर स्थिर होकर स्थायी रूप से बिराजमान हैं। सेवक नानक तो प्रभु का दास है और हे प्रभु, तू उसकी इज़्ज़त बचा ले।। ४ ।। १ ।। ३१ ।। बिलावलु महला ५।। लोगों के बड़प्पन को तो मैं आग में डालता हूँ और जिस विधि से भी मुझे अपना प्रियतम मिल जाए मैं वही बोल बोलूंगा।। १ ।। यदि प्रभु दयालु हो जाए तो उसकी भक्ति में लगा जाता है। मेरा मन वासनाओं में लिपटा है और गुरु से मिल कर ही इन्हें त्यागा जाता है।। १ ।। रहाउ ।। मैं एक बहुत ही विनम्र होकर विनती करता हूँ कि इस प्राण को मैं उस प्रभु के लिये जला दूँ अर्थात् उस पर कुर्बान कर दूँ। अन्य सभी पदार्थ मैं उस पर कुर्बान कर दूँ यदि एक पल भर के लिये भी प्रिय से मिलाप की खुशी मिल जाए।। २ ।। गुरु के साथ रहने से पाँचों विकार, दोष और मोह टूट जाते हैं। अब हृदय में प्रकाश प्रकट हो उठा है और दिन रात मैं सावधान बना रहता हूँ।। ३ ।। पति की शरण में वही सुहागिन बनकर आती है जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखे हैं। नानक कहता है कि जिनका तन मन शीतल हो गया है उन्होंने ही उस प्रभु को पा लिया है।। ४ ।। २ ।। ३२ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु प्रेम का लाल रंग उसी को लगता है जिसका भाग्य बड़ा होता है। यह रंग ना तो कभी मैला होता है और ना ही इसको दाग लगता है।। १ ।। सुखदायक प्रभु मुझे मिल गया है और उसका मिलाप सुख के भाव के साथ खुशी खुशी हुआ है। जब सहज भाव से वह मन में समा गया है तो अब उसे छोड़ा नहीं जा सकता।। १ ।। रहाउ ।। अब बुढ़ापा, मौत आदि प्रभावित नही करते और फिर दुख भी नहीं लगता। अमृतपान करके जीव तृप्त हो जाता है और गुरु ने अब उसे अमर कर दिया है।। २ ।। प्रभु के अमूल्य नाम को जिसने चखा है वही उसके बारे में जानता है। उसके मूल्य को नहीं आँका जा सकता तो फिर भला मुँह से क्या कह कर उसका बखान करें।। ३ ।। हे प्रभु, तेरा दर्शन सब तरह से फलदायक है

गुण निधि तेरी बाणी ॥ पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥ सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे ॥ १ ॥ मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥ हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अवगन करह असंख नीति तुम्ह निरगुन दातारे ॥ दासी संगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे ॥ २ ॥ तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥ ३ ॥ तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥ कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥ जितु सेविऐ सुखु होइ घना मन सोई गाईऐ ॥ १ ॥ कहीऐ काइ पिआरे तुझु बिना ॥ तुम्ह दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तुम्ह राखहु तिउ रहा अवरु नही चारा ॥ नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥ २ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भला मनि लेता मुकता ॥ सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥ ३ ॥ चरन पखारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ॥ होहु क्रिपालु दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मिरतु हसै सिर ऊपरे पसूआ नही बूझै ॥ बाद साद अहंकार महि मरणा नही सूझै ॥ १ ॥ सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥ देखि कसुंभा रंगुला काहे भूलि लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥ माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥ २ ॥ जा कै कीऐ स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥ अंत कालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥ ३ ॥ दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि करमा ॥ कहु नानक बंधन छुटे सतिगुर की सरना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ३६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पिंगुल परबत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥ १ ॥ महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥ २ ॥ सिंघु बिलाई

और तेरी वाणी गुणों का भण्डार है। तेरे दास की यदि चरण-धूलि प्राप्त हो जाए तो नानक उस पर कुर्बान जाता रहेगा।। ४ ।। ३ ।। ३३ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, कृपा करके मुझे अपनी शरण में बनाए रखो; मैं नीच और मूर्ख हूँ तथा तेरी सेवा के बारे में कुछ भी नहीं जानता।। १ ।। हे मेरे प्यारे प्रीतम, मैं तो तुझ पर ही गर्व करता हूँ क्योंकि हम तो सदैव भूल जाने वाले अपराधी हैं और तुम ही हमें क्षमा करने वाले हो।। १ ।। रहाउ ।। हम तो सदैव असंख्य अवगुण करते रहते हैं परन्तु हे दाता, तुम सभी गुणों से परे हो। हम प्रभु को त्यागकर प्रभु की दासी माया की संगत करते हैं और यही हमारे जीवन का कार्य व्यवहार है।। २ ।। हम तो एहसान फरामोश हैं और हे प्रभु, दया को धारण करके तुम ही हमें सब कुछ देते रहते हो। तेरे दिये हुए दान में तो हमने मन लगा लिया है परन्तु देने वाले मालिक को चित्त में नहीं सम्भाला है।। ३ ।। हे संसार सागर के बन्धन काटने वाले, तुझसे बाहर तो कुछ भी नहीं। नानक कहता है कि मैं दयालु गुरु की शरण हूँ और हे प्रभु, हम जैसे मूर्खों का भी उद्धार कर दो।। ४ ।। ४ ।। ३४ ।। बिलावलु महला ५ ।। अपने प्रभु का सुमिरन करते रहो और किसी अन्य पर कोई दोष ना लगाओ। जिसके सुमिरन से बहुत अधिक सुख मिलता है, हे मन, उसी का गुणानुवाद करते रहना चाहिए।। १ ।। हे प्यारे, तेरे बिना अन्य किसी से क्या कहें। तुम्हीं दयालु मालिक हो और हममें तो सभी अवगुण ही भरे हैं।। १ ।। रहाउ ।। तुम जैसे रखते हो हम वैसे ही रहते हैं तथा हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं है। जिसके पक्ष में कोई नहीं है उन्हें तेरे ही पक्ष का आसरा होता है और एक प्रभु नाम ही उनका आधार बना रहता है।। २ ।। जो कुछ तुम करते हो उसी को जो अच्छा मान लेता है वह मुक्त हो जाता है। हे प्रभु, यह सृष्टि रचना की सामग्री सब तेरी ही है और इसे चलाए रखने की युक्ति भी तेरे ही हाथ में है।। ३ ।। तेरी सेवा करते हुए यदि मालिक को भा जाए तो मैं उसके चरण भी धो दूं। हे प्रभु, दयालु और कृपालु बना रह ताकि नानक तेरे ही गुण गाता रहे।। ४ ।। ५ ।। ३५ ।। बिलावलु महला ५ ।। मौत सिर पर खड़ी हँस रही है परन्तु पशु जीव को समझ नहीं पड़ती। झगड़ों, स्वादों और अहंकार में रहते हुए जीव को मरने के बारे में कुछ पता ही नहीं चलता।। १ ।। अपने सच्चे गुरु की सेवा करो और हे अभागे जीव, तू क्यों भटक रहा है। माया जो कुसुम्भ के रंग की तरह नष्ट हो जाने वाली है तू उसी में रंगकर और उसे ही देखता हुआ क्यों भूल रहा है।। १ ।। रहाउ ।। अनेक प्रकार के पाप करते हुए खाने खर्चने के लिये तूने द्रव्य (धन सम्पदा) पैदा किया परन्तु तेरी मिट्टी तो अन्ततः मिट्टी में मिल जाएगी और तू नंगा ही उठकर यहाँ से जाएगा।। २ ।। जिनके लिये तू मेहनत करता है वे सभी सम्बन्धी तो तुझसे शत्रुता रखने वाले तेरे विरोधी हैं। अन्तकाल में ये सभी भाग खड़े होगें इसलिये तू अन्यों के साथ शत्रुता रखकर क्यों क्रोध में जलता रहता है।। ३ ।। प्रभु के दास की चरण-धूलि वही होता है जिसके मस्तक पर भाग्य लेख लिखे हुए हों। नानक का कथन है कि सच्चे गुरु की शरण में आने से सभी बन्धन छूट जाते हैं।। ४ ।। ६ ।। ३६ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, गुरु से मिलकर लंगड़ा भी पर्वत को पार कर जाता है और मूर्ख व्यक्ति भी चतुर वक्ता बन जाता है। पवित्र गुरु की शरण में आकर अंधे अज्ञानी व्यक्ति को भी तीनों लोकों की जानकारी हो जाती है।। १ ।। हे मेरे मित्र, तू साधु संगत की महिमा सुन। इस संगत में मैल नष्ट हो जाती है, करोड़ों पाप दूर हो जाते हैं और व्यक्ति का चित्त निर्मल एवं शुद्ध हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु की भक्ति का ऐसा प्रताप है कि चींटी हाथी को भी जीत लेती है अर्थात विनम्रता अहंकार को काट देती है। जिस-जिसको प्रभु ने अपना बना लिया है उसे प्रभु ने अभयदान दे दिया है।। २ ।। शेर अब बिल्ली

होइ गइओ त्रिणु मेरु दिखीता ॥ स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥ ३ ॥ कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥ करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दर सरीता ॥ ४ ॥ ७ ॥ ३७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अहंबुधि परबाद नीत लोभ रसना सादि ॥ लपटि कपटि ग्रिहि बेधिआ मिथिआ बिखिआदि ॥ १ ॥ ऐसी पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ॥ राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप धूप सोगंधता कापर भोगादि ॥ मिलत संगि पापिसट तन होए दुरगादि ॥ २ ॥ फिरत फिरत मानुखु भइआ खिन भंगन देहादि ॥ इह अउसर ते चूकिआ बहु जोनि भ्रमादि ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते गुर मिले हरि हरि बिसमाद ॥ सूख सहज नानक अनंद ता कै पूरन नाद ॥ ४ ॥ ८ ॥ ३८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरन भए संत बोहिथा तरे सागरु जेत ॥ मारग पाए उदिआन महि गुरि दसे भेत ॥ १ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे हरि हरि हरि हेत ॥ ऊठत बैठत सोवते हरि हरि हरि चेत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच चोर आगै भगे जब साधसंगेत ॥ पूंजी साबतु घणो लाभु ग्रिहि सोभा सेत ॥ २ ॥ निहचल आसणु मिटी चिंत नाही डोलेत ॥ भरमु भुलावा मिटि गइआ प्रभ पेखत नेत ॥ ३ ॥ गुण गभीर गुन नाइका गुण कहीअहि केत ॥ नानक पाइआ साधसंगि हरि हरि अंम्रेत ॥ ४ ॥ ९ ॥ ३९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ॥ मिलत संगि सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ॥ १ ॥ जा दिन भेटे साध मोहि उआ दिन बलिहारी ॥ तनु मनु अपनो जीअरा फिरि फिरि हउ वारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एत छडाई मोहि ते इतनी द्रिड़तारी ॥ सगल रेन इहु मनु भइआ बिनसी अपधारी ॥ २ ॥ निंद चिंद पर दूखना ए खिन महि जारी ॥ दइआ मइआ अरु निकटि पेखु नाही दूरारी ॥ ३ ॥ तन मन सीतल भए अब मुकते संसारी ॥ हीत चीत सभ प्रान धन नानक दरसारी ॥ ४ ॥ १० ॥ ४० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल ॥ मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल ॥ १ ॥ तुम्ह मिलते मेरा मनु जीओ तुम्ह मिलहु दइआल ॥ निसि बासुर मनि अनदु होत चितवत

हो जाता है अर्थात अहंकार अब विनम्रता में बदल जाता है और तिनका सुमेरु पर्वत जैसे दिखने लगता है। जो आधी दमड़ी के लिये भी घोर परिश्रम करते थे वे अब धनवानों में गिने जाते हैं।। ३ ।। तुम्हारे बड़प्पन के बारे में क्या कहा जा सकता है क्योंकि तेरे गुण अनंत हैं। हे प्रभु, कृपा कर मुझे अपना नाम दे क्योंकि नानक तो तेरे द्वार पर तेरे दर्शनों से विहीन बना हुआ खड़ा है।। ४ ।। ७ ।। ३७ ।। बिलावलु महला ५ ।। जीव सदैव अहंकार में झगड़ता रहता है और लोभ तथा जीभ के स्वाद में लिपटा रहता है। गृहस्थ में पूरी तरह लगा हुआ कपट में और झूठे विषय विकारों में फँसा रहता है।। १ ।। गुरु की कृपा से अब ऐसा दिखाई देने लगा है कि प्रभु-नाम के बिना धन यौवन आदि सब व्यर्थ हैं।। १ ।। रहाउ ।। रूप, सुंगधि वाली धूपबती, कपड़े और भोग आदि के पदार्थ इस पापी तन के साथ लगते ही सभी दुर्गन्ध वाले बन जाते हैं।। २ ।। कई योनियों में भटकता हुआ यह जीव मनुष्य बना है परन्तु इसकी देह भी क्षण भंगुर है। यदि वह इस अवसर से चूक जाता है अर्थात् इस मानव जीवन के अवसर का लाभ नहीं उठाता है तो यह अनेकों योनियों में भटकता रहता है।। ३ ।। प्रभु की कृपा से ही गुरु मिलता है और व्यक्ति प्रभु में लीन होकर परम आश्चर्यमय बन जाता है। हे नानक, सहजभाव, सुख और आनन्द ही पूर्ण नाद की तरह उसे प्राप्त हो जाते हैं।। ४ ।। ८ ।। ३८ ।। बिलावलु महला ५ ।। शान्त पुरुषों के चरण जहाज़ के समान हैं जिनसे संसार सागर तैरा जाता है। गुरु ही इस उजाड़ जंगल में रास्ता दिखाता है और उस पर चलने के रहस्य को समझाता है।। १ ।। प्रभु से प्रेम करने पर जीव हरि-हरि कहता हुआ उस प्रभु का ही सुमिरन करता रहता है। अब वह उठते, बैठते, सोते हुए उस प्रभु को ही याद करता रहता है।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति जब साधसंगति में आ जाता है तो पाँचों विकार रूपी चोर आगे-आगे भाग खड़े होते हैं। अब व्यक्ति की रासपूंजी पूर्ण रूप से वैसी ही बनी रहती है और जीव लाभ कमाता हुआ शोभा के साथ वापस अपने घर जा पहुँचता है।। २ ।। अब उसका ठिकाना अटल हो जाता है, उसकी चिन्ता मिट जाती है और वह कभी भी भटकता नहीं। प्रभु को अपने नेत्रों से देख लेने के कारण सभी भ्रम और भुलावे मिट जाते हैं।। ३ ।। हे गुणों के नायक एवं गम्भीर गुणों के मालिक, तेरे कितने गुणों के बारे में कहा जाए अर्थात कहना असम्भव है। हे नानक, प्रभु रूपी अमृत साधसंगति में ही पाया जाता है।। ४ ।। ६ ।। ३६ ।। बिलावलु महला ५ ।। साधसंगति के बिना जितना भी जीवन है वह व्यर्थ ही है। उनके मिलाप से सभी भ्रम मिट गए हैं और हमारी गति हो गई है।। १ ।। जिस दिन मेरा साधु पुरुषों से मिलाप होता है मैं उस दिन पर ही बलिहारी जाता हूँ। तन मन और अपने प्राण मैं बार-बार उसी पर कुर्बान करता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। मुझ से इतनी ममता छुड़ाकर इतनी विनम्रता पक्की कराई है कि मेरा यह मन सबकी चरण-धूलि हो गया है और इसका अभिमान दूर हो गया है।। २ ।। निंदा, चिन्ता और पराई ईर्ष्या आदि सब क्षण भर में जला दिये गए हैं। दया कृपा और प्रभु को पास ही देखना उचित है क्योंकि वह दूर नहीं है।। ३ ।। अब मेरा मन और तन शीतल हो गए है और इस संसार से हम मुक्त हो गए हैं। प्रेम, चित्त और धन आदि अब सब कुछ प्रभु का ही दर्शन है।। ४ ।। १० ।। ४० ।। बिलावलु महला ५ ।। मैं तेरे दास की सेवा करूं और उसके चरणों को अपने केशों के साथ झाड़ूँ। उसको मैं अपना सिर भेंट कर दूँ और उसके रस पूर्ण गुणों को सुनता रहूँ।। १ ।। तुम्हें मिलकर मेरा मन जी उठता है इसलिये हे दयालु, मुझे मिल जाओ। कृपालु प्रभु को याद करने से दिन रात मन में आनन्द बना

किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत उधारन साध प्रभ तिन्ह लागहु पाल ॥ मोकउ दीजै दानु प्रभ संतन पग राल ॥ २ ॥ उकति सिआनप कछु नही नाही कछु घाल ॥ भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जम जाल ॥ ३ ॥ बिनउ करउ करुणापते पिता प्रतिपाल ॥ गुण गावउ तेरे साधसंगि नानक सुख साल ॥ ४ ॥ ११ ॥ ४१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ कीता लोड़हि सो करहि तुझ बिनु कछु नाहि ॥ परतापु तुम्हारा देखि कै जमदूत छडि जाहि ॥ १ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते छूटीऐ बिनसै अहंमेव ॥ सरब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजिआ नामै बिनु कूरु ॥ जीवन सुखु सभु साधसंगि प्रभ मनसा पूरु ॥ २ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि सिआनप सभ जाली ॥ जत कत तुम्ह भरपूर हहु मेरे दीन दइआली ॥ ३ ॥ सभु किछु तुम ते मागना वडभागी पाए ॥ नानक की अरदासि प्रभ जीवा गुन गाए ॥ ४ ॥ १२ ॥ ४२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ साधसंगति कै बासबै कलमल सभि नसना ॥ प्रभ सेती रंगि रातिआ ता ते गरभि न ग्रसना ॥ १ ॥ नामु कहत गोविंद का सूची भई रसना ॥ मन तन निरमल होई है गुर का जपु जपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ॥ बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ॥ २ ॥ सीतल सांति संतोखु होइ सभ बूझी त्रिसना ॥ दह दिस धावत मिटि गए निरमल थानि बसना ॥ ३ ॥ राखनहारै राखिआ भए भ्रम भसना ॥ नामु निधान नानक सुखी पेखि साध दरसना ॥ ४ ॥ १३ ॥ ४३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु ॥ राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ॥ १ ॥ संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ॥ माइआधारी छत्रपति तिन्ह छोडउ तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥ ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ॥ २ ॥ भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई ॥ साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥ ३ ॥ साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै ॥ हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ॥ ४ ॥ सभ किछु तुम्ह ही ते होआ आपि बणत बणाई ॥ दरसनु भेटत साध का नानक

रहता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के साधु पुरुष ही संसार का उद्धार करने वाले हैं और हमें उनके आँचल के साथ लग जाना चाहिए। हे प्रभु, मुझे शान्त पुरुषों की चरण धूलि का दान दे दो।। २ ।। मेरे पास ना तो कोई सुन्दर बोल है, ना ही कोई दलील है और ना ही कुछ सेवा की मेहनत है। हे प्रभु, मुझे भ्रम, भय और मोह से बचाकर यम के जाल को काट दो।। ३ ।। हे करुणा के स्वामी पिता और मेरी पालना करने वाले प्रभु, मैं तेरे सामने विनती करता हूँ साधसंगति में मैं तेरे गुण गाऊँ क्योंकि हे नानक, वही सुखों का घर है।। ४ ।। ११ ।। ४१ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, जो तू करना चाहता है तू वही करता है और तेरे बिना तो इस संसार में कुछ भी नहीं। तुम्हारा प्रताप और बल देखकर यमदूत हमें छोड़कर भाग गए हैं।। १ ।। तुम्हारी कृपा से ही छुटकारा मिलता है और हमारा अभिमान नष्ट होता है। हे पूर्ण गुरु प्रभु, तू सभी प्रकार से शक्तिमान और समर्थ है।। १ ।। रहाउ ।। खोजते-खोजते मैंने यही जाना है कि प्रभु नाम के बिना सब झूठ है। साधसंगति में सभी प्रकार के जीवन के सुख हैं और प्रभु ही हमारी मनोकामनाएँ पूरी करने वाला है।। २ ।। तू जिस-जिस काम में हमें लगाता है हम उसी में लगते हैं और सब प्रकार की चतुराईयों को जला देते हैं। हे दीनदयालु, तुम यत्र-तत्र अर्थात सभी स्थानों में पूरी तरह से भरे हो।। ३ ।। सब कुछ तुमसे ही माँगा जाता है और कोई बड़े भाग्य से ही प्राप्त करता है। हे प्रभु, नानक की तो यही अरदास है कि मैं तेरा गुणानुवाद करता हुआ ही जीवित बना रहूँ।। ४ ।। १२ ।। ४२ ।। बिलावलु महला ५।। साधसंगति में बने रहने से सभी पाप भाग जाते हैं और प्रभु के रंग में रंगे रहने से फिर गर्भ योनि में नही फँसना पड़ता।। १ ।। प्रभु के नाम का उच्चारण करने से मेरी जीभ पवित्र हो गई और गुरु का जाप करने से मेरा मन तन निर्मल हो गया।। १ ।। रहाउ ।। मन प्रभु के नाम रस को चख कर सन्तुष्ट और प्रसन्न हो गया। अब मेरी बुद्धि प्रकट रूप से प्रकाशित हो गई है और औंधा पड़ा हुआ मेरा हृदय रूपी कमल खिल उठा है।। २ ।। मेरी सभी तृष्णाएँ समाप्त हो गई हैं और अब मैं शीतल, शान्त और सन्तुष्ट हो गया हूँ। मेरे मन का दसों दिशाओं में दौड़ना समाप्त हो गया हैं और अब वह निर्मल होकर अपने मूल स्वरूप के ठिकाने में बस गया है।। ३ ।। उस रक्षा करने वाले प्रभु ने मुझे बचा लिया है और मेरे सभी भ्रम जल कर राख हो गए हैं। गुरु के दर्शन देखकर सभी सुखों के घर परमात्मा का नाम मुझे प्राप्त हो गया और मैं सुखी हो गया हूँ।। ४ ।। १३ ।। ४३ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे जीव, प्रभु के दास के घर तू पानी भर, पंखा डुला और पिसान को पीस; तब तू सुखी हो सकेगा। राज, सम्पत्ति और राज दरबार की सरदारी को तू आग में जला कर नष्ट कर दे।। १ ।। जो शान्त पुरुषों का सेवक है तू उसके चरणों में लग जा और छत्र के मालिक अर्थात् धन सम्पदा वाले राजा को भी तू छोड़कर त्याग दे।। १ ।। रहाउ ।। सन्तजनों का रूखा सूखा भोजन भी सब प्रकार के सुखों का भण्डार समझा जाना चाहिये परन्तु प्रभु से टूटे हुए शाक्त व्यक्ति के घर के छत्तीस प्रकार के भोजन को भी विष के समान समझा जाना चाहिए।। २ ।। भक्तजनों का फटा पुराना कपड़ा पहनने से भी तू नंगा नहीं होगा परन्तु इसके विपरीत शाक्त व्यक्ति का सिर से पाँव तक ढ़कने वाला रेशमी वस्त्र पहनकर भी तू अपने सम्मान को गँवा लेगा।। ३ ।। प्रभु से टूटे हुए शाक्त व्यक्ति के साथ मेल मिलाप रखने से तेरा मेल मिलाप आधे रास्ते में ही टूट जाएगा। प्रभु के सेवक की जो सेवा करता है वह इस लोक और परलोक दोनों में ही मुक्त हो जाता है।। ४ ।। हे प्रभु, सब कुछ तुमसे ही उत्पन्न हुआ है और तूने ही इस सारी रचना को बनाया है। साधु पुरुषों का दर्शन करते ही हे नानक,

गुण गाई ॥ ५ ॥ १४ ॥ ४४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ स्रवनी सुनउ हरि हरि हरे ठाकुर जसु गावउ ॥ संत चरण कर सीसु धरि हरि नामु धिआवउ ॥ १ ॥ करि किरपा दइआल प्रभ इह निधि सिधि पावउ ॥ संत जना की रेणुका लै माथै लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीच ते नीचु अति नीचु होइ करि बिनउ बुलावउ ॥ पाव मलोवा आपु तिआगि संतसंगि समावउ ॥ २ ॥ सासि सासि नह वीसरै अन कतहि न धावउ ॥ सफल दरसन गुरु भेटीऐ मानु मोहु मिटावउ ॥ ३ ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ४५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइआ ॥ जिसु जन होआ साधसंगु तिसु भेटै हरि राइआ ॥ १ ॥ इह परतीति गोविंद की जपि हरि सुखु पाइआ ॥ अनिक बाता सभि करि रहे गुरु घरि लै आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे की राखता नाही सहसाइआ ॥ करम भूमि हरि नामु बोइ अउसरु दुलभाइआ ॥ २ ॥ अंतरजामी आपि प्रभु सभ करे कराइआ ॥ पतित पुनीत घणे करे ठाकुर बिरदाइआ ॥ ३ ॥ मत भूलहु मानुख जन माइआ भरमाइआ ॥ नानक तिसु पति राखसी जो प्रभि पहिराइआ ॥ ४ ॥ १६ ॥ ४६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ माटी ते जिनि साजिआ करि दुरलभ देह ॥ अनिक छिद्र मन महि ढके निरमल द्रिसटेह ॥ १ ॥ किउ बिसरै प्रभु मनै ते जिस के गुण एह ॥ प्रभ तजि रचे जि आन सिउ सो रलीऐ खेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरहु सिमरहु सासि सासि मत बिलम करेह ॥ छोडि प्रपंचु प्रभ सिउ रचहु तजि कूड़े नेह ॥ २ ॥ जिनि अनिक एक बहु रंग कीए है होसी एह ॥ करि सेवा तिसु पारब्रहम गुर ते मति लेह ॥ ३ ॥ ऊचे ते ऊचा वडा सभ संगि बरनेह ॥ दास दास को दासरा नानक करि लेह ॥ ४ ॥ १७ ॥ ४७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ एक टेक गोविंद की तिआगी अन आस ॥ सभ ऊपरि समरथ प्रभ पूरन गुणतास ॥ १ ॥ जन का नामु अधारु है प्रभ सरणी पाहि ॥ परमेसर का आसरा संतन मन माहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि रखै आपि देवसी

प्रभु का गुणानुवाद किया जाता है।। ५ ।। १४ ।। ४४ ।। बिलावलु महला ५ ।। कानों से प्रभु-नाम को सुना जाए और उस प्रभु यश का गायन किया जाए। सन्तजनों के चरणों पर सिर टिका कर प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है।। १ ।। हे दयालु प्रभु, तू कृपा कर जिससे मैं इस नाम के भण्डार और उसकी शक्ति को प्राप्त कर लूं। सन्त पुरुषों की चरण-धूलि लेकर उसे माथे पर लगाया जाना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। अत्यन्त नीच से नीच होकर अर्थात् पूर्ण विनम्र होकर विनती करते हुए उस प्रभु को पुकारा जाए और इस प्रकार अहंकार का त्याग करके सन्त पुरुषों की संगत में चरणों को धो-धोकर उस प्रभु के साथ लीन हुआ जाता है।। २ ।। हर श्वास के साथ वह विस्मृत ना हो और अन्य किसी भी स्थान पर ना भटका जाए। गुरु से मिलाप ही फल देने वाला दर्शन है और इस प्रकार मान और मोह को मिटाया जाता है।। ३ ।। हे जीव, सत्य, सन्तोष, दया, धर्म का श्रृंगार करो क्योंकि ऐसा श्रृंगार करने वाली सुहागिन ही सफल होती है और हे नानक, अपने प्रभु को भा जाती है।। ४ ।। १५ ।। ४५ ।। बिलावलु महला ५ ।। साधु पुरुषों के वचन अटल होते हैं अब यह तथ्य हमें प्रकट हो गया है। जिस सेवक की संगति साधु पुरुषों से हो गई है उससे प्रभु का मिलाप हो जाता है।। १ ।। जिनको यह निश्चित हो गया है कि उनका प्रभु से मिलाप होना ही है उन्होंने प्रभु का सुमिरन करके सुख प्राप्त किया है। अन्य सभी लोग तो अनेक प्रकार की बातें ही करते रहे और प्रभु मिलाप की विधियाँ ही बताते रहे परन्तु गुरु तो उसे वास्तव रूप में हमारे हृदय रूपी घर में ही ले आया है।। १ ।। रहाउ ।। इसमें तो तनिक भी संदेह नहीं है कि वह शरण में आये हुए के सम्मान की रक्षा करता ही है। हे जीव, तू इस मानव जीवन रूपी कर्म भूमि में प्रभु के नाम का बीज बो ले क्योंकि यह जीवन तेरे लिये दुर्लभ अवसर है।। २ ।। वह प्रभु स्वयं अन्तर्यामी है और वही सब कुछ करता कराता है। उस प्रभु ने अनेकों पतितों को पवित्र बना दिया है और यही उस मालिक का नित्य बना रहने वाला स्वभाव है।। ३ ।। हे संसार के लोगो, माया के भटकाए हुए बनकर तुम अपना रास्ता मत भूलो। हे नानक, जिसको प्रभु ने बड़प्पन प्रदान किया है वह स्वयं उसके सम्मान की भी रक्षा करता है।। ४ ।। १६ ।। ४६ ।। बिलावलु महला ५।। जिसने मिट्टी से बनाकर इस दुर्लभ मानव देह की रचना की हैं; इस शरीर में अनेकों छिद्रों के कारण इसमें कई कुछ ढका है परन्तु देखने में यह बहुत निर्मल और साफ सुथरा नजर आता है।। १ ।। उस प्रभु को मन से क्यों भुलाया जाए जिसमें इस प्रकार के गुण हैं। प्रभु को त्यागकर जो दूसरों में लीन बने रहते हैं वे मिट्टी में मिल जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु को प्रत्येक श्वास के साथ याद करते रहो और इस कार्य में जरा सा भी विलम्ब ना करो। सभी प्रंपचों को छोड़कर और सभी झूठी आस्थाओं को त्यागकर उस प्रभु में ही लीन हो जाओ।। २ ।। अनेक होते हुए भी जिस एक ही प्रभु ने अनेक प्रकार के रंग तमाशे बनाए हैं उस परब्रह्म की सेवा करते रहो और गुरु से भी ऐसी ही मति प्राप्त करो ।। ३ ।। वह ऊँचे से ऊँचा है और बहुत विशाल है; सब इसी प्रकार का वर्णन करते हैं। हे प्रभु, नानक को तो तुम अपने दासों का भी दास बना लो।। ४ ।। १७ ।। ४७ ।। बिलावलु महला ५ ।। उस एक प्रभु का ही मुझे आसरा है और मैंने अन्य सभी आशाएँ त्याग दी हैं। गुणों का पूर्ण भण्डार प्रभु ही सबसे उपर और समर्थ है।। १ ।। सेवक का आसरा तो प्रभु का नाम ही है और हे प्रभु, मुझे अपनी शरण में ले लो। सन्तजनों के मन में भी एक परमेश्वर का ही आसरा होता है।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु स्वयं ही रक्षा करता है स्वयं ही सब कुछ देता है और स्वयं ही

आपे प्रतिपारै ॥ दीन दइआल क्रिपा निधे सासि सासि सम्हारै ॥ २ ॥ करणहारु जो करि रहिआ साई वडिआई ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ सुखु खसम रजाई ॥ ३ ॥ चिंत अंदेसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता ॥ नह बिनसै नह छोडि जाइ नानक रंगि राता ॥ ४ ॥ १८ ॥ ४८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ महा तपति ते भई सांति परसत पाप नाठे ॥ अंध कूप महि गलत थे काढे दे हाथे ॥ १ ॥ ओइ हमारे साजना हम उन की रेन ॥ जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला लीखिआ मिलिआ अब आइ ॥ बसत संगि हरि साध कै पूरन आसाइ ॥ २ ॥ भै बिनसे तिहु लोक के पाए सुख थान ॥ दइआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥ ३ ॥ नानक की तू टेक प्रभ तेरा आधार ॥ करण कारण समरथ प्रभ हरि अगम अपार ॥ ४ ॥ १९ ॥ ४९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु प्रभु बिसराना ॥ करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥ १ ॥ दूखु तदे जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति आए ॥ संतन कै आनंदु एहु नित हरि गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि थापै ॥ कीमति कही न जाईऐ ठाकुर परतापै ॥ २ ॥ पेखत लीला रंग रूप चलनै दिनु आइआ ॥ सुपने का सुपना भइआ संगि चलिआ कमाइआ ॥ ३ ॥ करण कारण समरथ प्रभ तेरी सरणाई ॥ हरि दिनसु रैणि नानकु जपै सद सद बलि जाई ॥ ४ ॥ २० ॥ ५० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जलु ढोवउ इह सीस करि कर पग पखलावउ ॥ बारि जाउ लख बेरीआ दरसु पेखि जीवावउ ॥ १ ॥ करउ मनोरथ मनै माहि अपने प्रभ ते पावउ ॥ देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित गुण संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ उआ रस महि सांति त्रिपति होइ बिखै जलनि बुझावउ ॥ २ ॥ जब भगति करहि संत मंडली तिन्ह मिलि हरि गावउ ॥ करउ नमसकार भगत जन धूरि मुखि लावउ ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत जपउ नामु इहु करमु कमावउ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि सरनि समावउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ५१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ साधसंगति कै संगि

सबका पालन पोषण करता है। वह दीनदयालु कृपा का समुद्र है और हर श्वास हर पल हमारी संभाल करता है।। २ ।। वह करने वाला प्रभु जो कर रहा है वही उसका बड़प्पन है। पूर्ण गुरु का यही उपदेश है कि उस मालिक की रज़ा में रहने पर ही सुख प्राप्त होता है।। ३ ।। प्रभु के सेवक ने तो सभी चिन्ताओं, शंकाओं और गणनाओं को छोड़कर उसके हुकुम को पहचान लिया है। वह कभी भी ना तो नष्ट होता है ना छोड़कर जाता है क्योंकि नानक तो उसके रंग में रंगा हुआ है।। ४ ।। १८ ।। ४८ ।। बिलावलु महला ५ ।। बहुत बुरी जलन से अब मुझे शान्ति मिली है और गुरु के स्पर्श से ही मेरे पाप भाग खड़े हुए हैं। हम संसार रूपी अंधेरे कुएं में गिरे पड़े थे; प्रभु ने हमें हाथ देकर बाहर निकाल लिया है।। १ ।। वह प्रभु ही हमारे साजन हैं और हम उनकी चरण धूलि हैं। उन्हीं के मिलाप से हम सुखी होते हैं और वह ही हमें प्राण दान देने वाले हैं।। १ ।। रहाउ ।। जो बहुत पहले से प्रभु की ओर से हमारा भाग्य लेख लिखा था वह इस जीवन में आकर अब फलीभूत हुआ है अर्थात प्राप्त हुआ है। साधु-पुरुषों की संगति में बसने से हमारी आशाएँ पूरी हो गई है।। २ ।। तीनों लोकों के हमारे भय नष्ट हो गए हैं और हमने सुखों का ठिकाना प्राप्त कर लिया है। समर्थ गुरु ने हमारे उपर दया की है और हमारे मन में प्रभु का नाम बस गया है।। ३ ।। हे प्रभु, नानक को तो तेरा ही आसरा है और तू ही उसकी टेक है। करने कराने वाला वह प्रभु ही समर्थ है जो अगम्य है और अपरम्पर है।। ४ ।। १९ ।। ४९ ।। बिलावलु महला ५ ।। जिसने प्रभु को भुला दिया है वही दीन हीन और मैला है। उस करने वाले प्रभु को तो मैं जानता नहीं और यह मूर्ख अपने आप को ही बहुत कुछ मान कर बैठा है।। १ ।। दुख तभी होता है जब प्रभु भूल जाता है और प्रभु के चित्त में आने से ही सुख प्राप्त होता है। सन्त पुरुषों का तो यही आनन्द है कि वे सदैव प्रभु के ही गुण गाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु बड़े से बड़े लोगों को नीचा कर देता है और क्षण भर में नीच व्यक्ति को ऊंचा स्थापित कर देता है। उस प्रभु का इतना प्रताप है कि उसका मूल्य आँका नहीं जा सकता।। २ ।। उसकी लीलाओं को संसार में देखते-देखते ही व्यक्ति का यहाँ से चलने का दिन आ पहुँचा है। अब जो सपना जीव देख रहा था वह वास्तव में स्वप्न की तरह ही नष्ट हो गया और जिन संस्कारों का अर्जन इसने किया था अन्ततः वही साथ चले।। ३ ।। हे करने कराने वाले समर्थ प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ और यह नानक तो प्रभु के नाम का दिन रात सुमिरन करता है और सदैव उस पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। २० ।। ५० ।। बिलावलु महला ५ ।। मैं सिर पर पानी ढोता हूँ और अपने हाथों से प्रभु के चरण धोता हूँ। मैं लाखों बार तुझ पर बलिहारी जाऊं और तेरे दर्शन देखकर हे प्रभु, आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहूँ।। १ ।। जिन उद्देश्यों को मैं अपने मन में बनाए रखता हूँ उन्हें अपने प्रभु से ही प्राप्त करता हूँ। साधु पुरुषों के यहाँ मैं झाडू देता हूँ और उन्हें पंखा डुलाता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। अमृत के समान गुणों वाले उपदेश जो शान्त पुरुष बोलते हैं मैं उन्हें अपने मन को पिलाता हूँ। उसी रस में शान्ति और तृप्ति अनुभव करके मैं अपने विषय विकारों की अग्नि बुझाता हूँ।। २ ।। जब सन्तजनों की मंडली उस प्रभु की भक्ति करती है तो उनके साथ मिलकर मैं भी प्रभु के गुण गाता हूँ। मैं उन भक्तजनों को प्रणाम करता हूँ और उनकी चरण-धूलि को मुँह पर लगाता हूँ।। ३ ।। उठते बैठते मैं प्रभु-नाम का जाप करता हूँ और यही कर्म करता चला जाता हूँ। हे प्रभु, नानक की तो यही विनती है कि मैं प्रभु की शरण में लीन बना रहूँ।।४।।२१।।५१।। बिलावलु महला ५ ।। इस संसार सागर को वही तैरता है जो प्रभु के गुण गाता है। साधसंगति में

वसै वडभागी पाए ॥ १ ॥ सुणि सुणि जीवै दासु तुम्ह बाणी जन आखी ॥ प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि सागर ते काढिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥ अंम्रित नामु जलु संचिआ गुर भए सहाई ॥ २ ॥ जनम मरण दुख काटिआ सुख का थानु पाइआ ॥ काटी सिलक भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइआ ॥ ३ ॥ मत कोई जाणहु अवरु कछु सभ प्रभ कै हाथि ॥ सरब सूख नानक पाए संगि संतन साथि ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटे आपि प्रभि होआ किरपाल ॥ दीन दइआल प्रभ पारब्रहम ता की नदरि निहाल ॥ १ ॥ गुरि पूरै किरपा करी काटिआ दुखु रोगु ॥ मनु तनु सीतलु सुखी भइआ प्रभ धिआवन जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न विआपै ॥ साधसंगि मनि तनि हितै फिरि दूखु न जापै ॥ २ ॥ हरि हरि हरि हरि जापीऐ अंतरि लिव लाई ॥ किलविख उतरहि सुधु होइ साधू सरणाई ॥ ३ ॥ सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बलाई ॥ महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुण गाई ॥ ४ ॥ २३ ॥ ५३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भै ते उपजै भगति प्रभ अंतरि होइ सांति ॥ नामु जपत गोविंद का बिनसै भ्रम भ्रांति ॥ १ ॥ गुरु पूरा जिसु भेटिआ ता कै सुखि परवेसु ॥ मन की मति तिआगीऐ सुणीऐ उपदेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत सिमरीऐ सो पुरखु दातारु ॥ मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ रंगु लगा अचरज गुरदेव ॥ जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥ ३ ॥ निधि निधान अंम्रितु पीआ मनि तनि आनंद ॥ नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमानंद ॥ ४ ॥ २४ ॥ ५४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ त्रिसन बुझी ममता गई नाठे भै भरमा ॥ थिति पाई आनदु भइआ गुरि कीने धरमा ॥ १ ॥ गुरु पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर ॥ तनु मनु सभु सीतलु भइआ पाइआ सुखु बीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ बिसमादु ॥ पी अंम्रितु त्रिपतासिआ ता का अचरज सुआदु ॥ २ ॥ आपि मुकतु संगी तरे कुल कुटंब उधारे ॥ सफल सेवा गुरदेव की निरमल दरबारे ॥ ३ ॥ नीचु अनाथु अजानु मै निरगुनु

बसे रहकर ही भाग्यशाली व्यक्ति उस प्रभु को प्राप्त करता है।। १ ।। जो वाणी तेरे सेवकों ने कही है उसे सुन-सुनकर यह दास जीवित बना रहता है। वही इस लोक में प्रसिद्ध और प्रकट हुई है और उसी ने ही सेवक की इज्जत रखी है।। १ ।। रहाउ ।। तृष्णा रूपी अग्नि के समुद्र से उसी ने ही निकाला है और प्रभु ने मेरी जलन बुझा दी है। गुरु ने ही सहायता करके मेरी अग्नि को बुझाने के लिये अमृत नाम का जल छिड़का है।। २ ।। मेरे जन्म मरण का दुख उसने काट दिया है और मैंने साधसंगति रूपी सुख का स्थान पा लिया है। जब मैं अपने प्रभु को भा गया तो उसने भ्रम और मोह की रस्सी को काट दिया है।। ३ ।। कोई भी इसे अन्य कुछ ना समझे यह सब प्रभु के ही हाथ में हैं। नानक ने तो सन्त पुरुषों के साथ रहते हुए ही सभी सुख प्राप्त किए हैं।। ४ ।। २२ ।। ५२ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु कृपालु हुआ और उसने स्वयं ही हमारे सभी बन्धन काट दिए हैं। वह दीनदयालु प्रभु स्वयं परब्रह्म है और उसकी कृपादृष्टि से मैं आनन्दित हो उठा हूँ।। १ ।। पूर्ण गुरु ने कृपा करी और मेरा दुख एवं रोग नष्ट कर दिया। मेरा मन तन शीतल और सुखी हो गया है और मैं यह मानता हूँ कि केवल प्रभु ही ऐसा है जिसका सुमिरन किया जाना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का नाम वह औषधि है जिससे फिर कोई रोग नहीं होता। वह प्रभु-नाम साधसंगति में मन तन को अच्छा लगता है और फिर दुख का एहसास ही नहीं रहता ।। २ ।। अन्तर्मन में लौ लगाकर बार-बार प्रभु-नाम का सुमिरन करना चाहिए। यह जीव साधु पुरुषों की शरण में आकर शुद्ध हो जाता है और इसके सभी पाप उतर जाते हैं।। ३ ।। जो प्रभु नाम के यश को सुनते और उसका जाप करते हैं उनके सभी विघ्न दूर हो जाते हैं। इस प्रभु नाम रूपी महामंत्र का उच्चारण नानक करता है और प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है।। ४ ।। २३ ।। ५३ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु के नाम (अनुशासन, संयम) में रहने से अन्तर्मन में प्रभु भक्ति उत्पन्न होती है और मन शान्त हो जाता है। उस प्रभु के नाम का जाप करते हुए सभी भ्रम और भ्रान्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।। १ ।। जिसको पूर्ण गुरु मिल गया है उसके हृदय में सुख प्रवेश कर लिया है। हमें अपने मन की मति को त्याग कर पूर्ण गुरु का उपदेश ही सुनना चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। उस सर्वव्यापक दाता प्रभु का सुमिरन करते-करते सुमिरन करते रहना चाहिए। वह अपरम्पर एवं सब में रमण करने वाला पुरुष-प्रभु मन से कभी भी नहीं भूलना चाहिए।। २ ।। वह ऐसा गुरुदेव आश्चर्यपूर्ण है कि उसके माध्यम से प्रभु के पवित्र चरण कमलों के साथ प्रेम लग जाता है। हे प्रभु, तू जिस पर कृपा करता है उसी को अपनी सेवा में लगाता है।। ३ ।। सभी भण्डारों का महाभण्डार अमृत जिसने पी लिया है उसका मन तन आनन्दित बना रहता है। हे नानक, वह प्रभु जोकि परम आनन्द है मुझे कभी भी विस्मृत ना हो।। ४ ।। २४ ।। ५४ ।। बिलावलु महला ५ ।। मेरी तृष्णा बुझ गई है, ममता समाप्त हो गई है तथा मेरे भय और भ्रम भाग खड़े हुए हैं। अब मैंने स्थिरता प्राप्त कर ली है और गुरु ने अपने धर्म का अर्थात स्वभाव का निर्वाह किया है और मेरे चारों ओर आनन्द ही आनन्द बन गया है।। १ ।। पूर्ण गुरु की आराधना करने से मेरी पीड़ा विनष्ट हो गई है और हे भाई, मेरा तन मन सभी शीतल हो गया हे तथा मैंने सुख प्राप्त कर लिया है।। १ ।। रहाउ ।। मैं अज्ञान में सोया हुआ प्रभु-नाम के सुमिरन के कारण जाग गया हूँ और मैंने चारों ओर विस्माद ही विस्माद अर्थात आश्चर्य ही आश्चर्य देखा है। मैं प्रभु-नाम का अमृतपान करके तृप्त हो गया हूँ क्योंकि उस अमृत का स्वाद भी आश्चर्यपूर्ण है।। २ ।। व्यक्ति स्वयं तो मुक्त होता ही है, उसके संगी साथी भी पार उतर जाते हैं तथा उसके कुल तथा कुटुम्ब का भी उद्धार हो जाता है। गुरु की की हुई सेवा ही फलदायक होती है और व्यक्ति निर्मल होकर प्रभु के दरबार में पहुँच जाता है।। ३ ।। हे प्रभु, मैं नीच, अनाथ,

गुणहीनु ॥ नानक कउ किरपा भई दासु अपना कीनु ॥ ४ ॥ २५ ॥ ५५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि भगता का आसरा अन नाही ठाउ ॥ ताणु दीबाणु परवार धनु प्रभ तेरा नाउ ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभि आपणी अपने दास रखि लीए ॥ निंदक निंदा करि पचे जमकालि ग्रसीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संता एकु धिआवना दूसर को नाहि ॥ एकसु आगै बेनती रविआ स्रब थाइ ॥ २ ॥ कथा पुरातन इउ सुणी भगतन की बानी ॥ सगल दुसट खंड खंड कीए जन लीए मानी ॥ ३ ॥ सति बचन नानकु कहै परगट सभ माहि ॥ प्रभ के सेवक सरणि प्रभ तिन कउ भउ नाहि ॥ ४ ॥ २६ ॥ ५६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥ अवर करम नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥ १ ॥ तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥ छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आसा भरम बिकार मोह इन महि लोभाना ॥ झूठु समग्री मनि वसी पारब्रहमु न जाना ॥ २ ॥ परम जोति पूरन पुरख सभि जीअ तुम्हारे ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा प्रभ अगम अपारे ॥ ३ ॥ करण कारण समरथ प्रभ देहि अपना नाउ ॥ नानक तरीऐ साधसंगि हरि हरि गुण गाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ५७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ कवनु कवनु नही पतरिआ तुम्हरी परतीति ॥ महा मोहनी मोहिआ नरक की रीति ॥ १ ॥ मन खुटहर तेरा नही बिसासु तू महा उदमादा ॥ खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप संजम तुम्ह खंडे जम के दुख डांड ॥ सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भांड ॥ २ ॥ हरि संगि सहाई महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु ॥ बीधा पंच बटवारई उपजिओ महा खेदु ॥ ३ ॥ नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु वसि कीना ॥ तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा ॥ ४ ॥ २८ ॥ ५८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥ जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥ १ ॥ चरन कमल गुर के जपत हरि जपि हउ जीवा ॥ पारब्रहमु आराधते मुखि अंम्रितु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि सुखि बसे सभ कै मनि लोच ॥ परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच ॥ २ ॥

अनजान तथा गुणहीन हूँ। नानक पर तो प्रभु की कृपा हुई है कि उसे उसने अपना दास बना लिया॥ ४ ॥२५ ॥५५ ॥ बिलावुल महला ५ ।। भक्तों का आसरा तो केवल प्रभु ही हैं, उनके लिये कोई भी दूसरा ठौर ठिकाना नहीं। बल, आसरा मेरा परिवार और धन सम्पति हे प्रभु, केवल तेरा नाम ही है।। १ ।। प्रभु ने कृपा करके अपने दासों को बचा लिया है। निन्दक तो केवल निंदा करते हुए ही नष्ट हो गए हैं और यम काल ने उन्हें खा लिया है।। १ ।। रहाउ ।। सन्त पुरुष तो केवल एक प्रभु की ही आराधना करते हैं, उनके लिये दूसरा कोई भी नहीं है। वह प्रभु ही सभी स्थानों में रमण करता है इसलिये उस एक के आगे ही अरदास विनती की जाती है।। २ ।। भक्तों के माध्यम से ऐसी पुरातन कथा परम्परा सुनी जाती है कि प्रभु सभी दुष्कर्म करने वाले दुष्टों को टुकड़े -टुकड़े कर देता है और अपने सेवक को आदर सम्मान देता है।। ३ ।। नानक तो सच्ची बात कहता है और यह तथ्य सभी पर प्रकट है कि प्रभु के सेवक ही शरण में रहते हैं और उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं रहता।। ४ ।। २६ ।। ५६ ।। बिलावलु महला ५ ।। वह प्रभु जिसके हाथ में सारी शक्ति है जीवों के सभी बन्धन काटने वाला है। हे प्रभु, हम अन्य किसी भी कर्म से नहीं छूट सकते हैं तुम्हीं अपना हाथ देकर हमारी रक्षा करो।। १ ।। हे माधव प्रभु, तू पूर्ण दयालु है और हम तेरी ही शरण में हैं। उसकी शरण में रहने वाला जीव संसार से मुक्त हो जाता है और प्रभु उसकी रक्षा करता है।। १ ।। रहाउ ।। हे जीव, तू आशाओं, भ्रमों, विकारों, मोह आदि में ही लिप्त बना हुआ है। संसार की झूठी सामग्री तेरे मन में बसी है और तूने उस परब्रह्म प्रभु को नहीं जाना पहचाना।। २ ।। हे पूर्ण एवं परम ज्योति रूपी सर्वव्यापक प्रभु, ये सभी जीव तुम्हारे ही हैं। हे अगम्य एवं अपरम्पर प्रभु, तू जैसे भी रखेगा मुझे वैसे ही रहना है।। ३ ।। हे करने कराने वाले समर्थ प्रभु, मुझे अपना नाम प्रदान करो। हे नानक, प्रभु के गुण गाते हुए साधसंगति में संसार सागर से पार उतरा जाता है।। ४ ।। २७ ।। ५७ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे मन, तुम पर भरोसा करके भला कौन कौन नहीं नीचे गिरा है। तू महा मोहिनी माया में ही मोहित बना है और तेरा यह मोहित बना रहना वास्तव में नरक का मार्ग है।। १ ।। हे खोटे मन, तू अत्यन्त उन्माद पूर्ण है और तेरा कोई भी विश्वास नहीं है। गधे के पैर का रस्सा तभी उतरता है जब उस पर भारी बोझ लाद दिया जाता है अर्थात् मन रूपी गधे का उन्माद तभी बस में आता है यदि इसे जाप, सुमिरन के द्वारा बाँध कर रखा जाता है अथवा यह तब बस में आता है जब योनियों का भार इस पर लदता जाता है।। १ ।। रहाउ ।। तूने, जाप, तप, संयम आदि के अच्छे प्रभाव को नष्ट कर लिया है और अपने को यम के डंडे का दुख सहने का पात्र बना लिया है। हे निर्लज्ज भाण्ड रूपी मन, तू गर्भयोनियों के दुखों को याद क्यों नहीं करता।।२।। जो प्रभु महामित्र है और सदैव साथ बना रहकर सहायता करने वाला है उससे तो तेरी दूरी बनी हुई है और तू पाँच लुटेरों के साथ पूरी तरह बिंध कर लीन बना हुआ है, इसीलिये तू महादुख और पछतावे में पड़ा है।। ३ ।। नानक तो ऐसे सन्त पुरुषों की शरण में है जिन्होंने अपने मन को वश में किया है। उन्होंने अपना तन, धन, तथा सर्वस्व प्रभु के सेवकों को अर्पण किया हुआ है।। ४ ।। २८ ।। ५८ ।। बिलावलु महला ५ ।। श्रमपूर्वक उद्यम करते हुए आनन्द बना रहता है और प्रभु का सुमिरन करते हुए सुख के सार तत्व का पता लग जाता है। हे जीव, वास्तविक पूर्ण चिन्तन यही है कि तू प्रभु के नाम का बार-बार सुमिरन करता रह।। १ ।। गुरु के चरण कमलों का जाप और प्रभु का सुमिरन करते हुए मैं जीवित बना रहता हूँ। परब्रह्म प्रभु की आराधना करते हुए मैं मुख से अमृत नाम पीता रहता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। सबके मन में यही इच्छा बनी रहती है कि सभी जीव जन्तु सुखपूर्वक बसते रहें। जो इस प्रकार के परोपकारी भाव का चिन्तन करते रहते हैं उन्हें कभी भी कोई पाप नहीं लगता और ना ही उनकी कोई हानि होती है।। २ ।।

गोबिंद राइ भगतन की रासि ॥ १ ॥ तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ चरन कमल मनि तनि बसे प्रभ अगम अपार ॥ २ ॥ बसत कमावत सभि सुखी किछु ऊन न दीसै ॥ संत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन जगदीसै ॥ ३ ॥ जै जै कारु सभै करहि सचु थानु सुहाइआ ॥ जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ६३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥ रामचंद की लसटिका जिनि मारिआ रोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु ॥ साधसंगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥ १ ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ बिनसै बिओगु ॥ नानक प्रभ सरणागती करण कारण जोगु ॥ २ ॥ ३४ ॥ ६४ ॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ ॥ ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ ॥ १ ॥ गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइआ ॥ राखनहारै राखिआ अपनी करि मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाह पकड़ि प्रभि काढिआ कीना अपनइआ ॥ सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक निरभइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो दानि ॥ सफल सेवा पारब्रहम की ता की नही हानि ॥ १ ॥ आपे ही प्रभु राखता भगतन की आनि ॥ जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ सहजि सुभाइ नानक मिले जोती जोति समान ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ चरण कमल का आसरा दीनो प्रभि आपि ॥ प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥ १ ॥ राखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव ॥ राम राज रामदास पुरि कीन्हे गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ किछु बिघनु न लागै ॥ नानक नामु सलाहीऐ भइ दुसमन भागै ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मनि तनि प्रभु आराधीऐ मिलि साध समागै ॥ उचरत गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥ १ ॥ राम

है और वही भक्तों की रासपूंजी है।। १ ।। उसके भण्डार सदैव परिपूर्ण हैं और उनमें कभी भी कमी नहीं आती। वह प्रभु अगम्य एवं अपरम्पर है और उसके चरण कमल हमारे मन तन में बसे रहते हैं।। २ ।। कर्ता के नगर में बसते हुए, कमाते हुए सभी सुख बने रहते हैं और उनमें कोई भी कमी दिखाई नहीं देती। शान्त पुरुषों की कृपा से वहाँ पूर्ण जगदीश्वर प्रभु से मिलाप होता है।। ३ ।। वह सत्य का ऐसा सुहावना स्थान है जहाँ सभी प्रभु की जय जयकार करते हैं। हे नानक, प्रभु के नाम रूपी भण्डार का सुमिरन करके वहाँ पूर्ण गुरु और पूर्ण सुख को प्राप्त किया जाता है।। ४ ।। ३३ ।। ६३ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु का सुमिरन करते-करते ही तन्दरुस्त बना जाता है प्रभु सुमिरन ही वास्तव में राम चन्द्र जी के राम राज्य का डंडा है जिससे बुरे व्यक्तियों (शारीरिक और मानसिक रोगों) को भय बना रहता था और राज्य (मन और तन) में सुख शान्ति बनी रहती थी।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु गुरु का सदैव सुमिरन करते हुए सभी पदार्थों का उपभोग करते रहो। परमात्मा से मिलने का यह जीवन रूपी अवसर मिला है और इसीलिए मैं साधसंगति पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। जिसके सुमिरन से सुख मिलता है और वियोग समाप्त हो जाता है हे नानक, मैं तो ऐसे प्रभु की ही शरण में हूँ जो सब कुछ करने कराने के योग्य है।। २ ।। ३४ ।। ६४ ।।

रागु बिलावलु महला ५ दोपदों वाले घरु ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैंने अन्य सभी उपाय त्याग दिए हैं और प्रभु नाम की औषधि को अपना लिया है ; इससे मेरे सभी संताप, पाप, रोग मिट गये हैं और मेरा मन शीतल हो गया है।। १ ।। पूर्ण गुरु की आराधना करने से मेरा सारा दुख चला गया और उस रक्षक प्रभु ने कृपा करके मेरी रक्षा कर ली।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने बाँह पकड़कर अपना बनाते हुए अज्ञान के गर्त से मुझे निकाल लिया। उसका सुमिरन करते रहने से मेरा मन तन सुखी हो गया है और हे नानक, मैं निर्भय हो गया हूँ ।। २ ।। १ ।। ६५ ।। बिलावलु महला ५ ।। मेरे माथे पर हाथ रखकर मुझे पूरी तरह स्थापित किया है और मुझे प्रभु-नाम का दान दिया है। परब्रह्म प्रभु की सेवा ही फलदायक है और उसमें कोई कमी नहीं आती।। १ ।। प्रभु स्वयं ही भक्तजनों के सम्मान की रक्षा करता है। साधु पुरुष बनकर जो भी उसका सुमिरन करता है वह मान प्राप्त करता है।। १ ।। रहाउ ।। वे सेवक प्रभु के प्यारे हैं और उसके चरण कमलों की शरण में पड़े रहते हैं। हे नानक, वह प्रभु जो सभी ज्योतियों की ज्योति के समान है स्वाभाविक रूप से मिल जाता है।। २ ।। २ ।। ६६।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु ने स्वयं ही मुझे अपने चरण कमलों का आसरा दिया है। प्रभु के सेवक उसकी शरण में पड़े हैं और उस प्रभु का प्रताप सदैव बना रहता है।। १ ।। अपरम्पर प्रभु ही हमारी रक्षा करने वाला है और उसी की सेवा निर्मल है। गुरुदेव प्रभु ने तो इस रामदास पुर (अमृतसर) में रामराज ही कर दिया।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का सदैव सुमिरन करने से रास्ते में कोई रुकावट नहीं आती। हे नानक, प्रभु-नाम का गुणानुवाद करने से भय रूपी शत्रु भाग खड़ा होता है।। २ ।। ३ ।। ६७ ।। बिलावलु महला ५ ।। साधु पुरुषों के साथ मिल बैठकर मन तन से प्रभु की आराधना की जाती है। उस प्रभु के गुणों का उच्चारण और यश गायन से यम तो दूर से ही भाग खड़ा होता है।। १ ।।

नामु जो जनु जपै अनदिनु सद जागै ॥ तंतु मंतु नह जोहई तितु चाखु न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥ आनंद मगन रसि राम रंगि नानक सरनागै ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीअ जुगति वसि प्रभू कै जो कहै सु करना ॥ भए प्रसंन गोपाल राइ भउ किछु नही करना ॥ १ ॥ दूखु न लागै कदे तुधु पारब्रहमु चितारे ॥ जमकंकरु नेड़ि न आवई गुरसिख पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथु है तिसु बिनु नही होरु ॥ नानक प्रभ सरणागती साचा मनि जोरु ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु आपना नाठा दुख ठाउ ॥ बिस्राम पाए मिलि साधसंगि ता ते बहुड़ि न धाउ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपने चरनन्ह बलि जाउ ॥ अनद सूख मंगल बने पेखत गुन गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कथा कीरतनु राग नाद धुनि इहु बनिओ सुआउ ॥ नानक प्रभ सुप्रसंन भए बांछत फल पाउ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥ तुम्हरी क्रिपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥ १ ॥ चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥ कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप तूहै तू सरब निवासु ॥ नानक प्रभ सरणागती जा को निरमल जासु ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सरब सिधि हरि गाईऐ सभि भला मनावहि ॥ साधु साधु मुख ते कहहि सुणि दास मिलावहि ॥ १ ॥ सूख सहज कलिआण रस पूरै गुरि कीन्ह ॥ जीअ सगल दइआल भए हरि हरि नामु चीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिओ सरबत्र महि प्रभ गुणी गहीर ॥ नानक भगत आनंद मै पेखि प्रभ की धीर ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि होए किरपाल ॥ राखि लीआ अपना सेवको मुखि निंदक छारु ॥ १ ॥ तुझहि न जोहै को मीत जन तूं गुर का दास ॥ पारब्रहमि तू राखिआ दे अपने हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअन का दाता एकु है बीआ नही होरु ॥ नानक की बेनंतीआ मै तेरा जोरु ॥ २ ॥ ९ ॥ ७३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मीत हमारे साजना राखे गोविंद ॥ निंदक मिरतक होइ गए तुम्ह होहु निचिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल

जो सेवक प्रभु-नाम का जाप करता है वह सदैव सावधान बना रहता है। तन्त्र-मन्त्र भी उसको प्रभावित नहीं करते और ना ही उसे किसी की बुरी नजर लगती है।।१।। रहाउ ।। प्रभु-नाम के जाप के साथ व्यक्ति माया मोह की तरफ से ऐसा उदासीन हो जाता है कि उसका काम, क्रोध, मोह, अभिमान, गर्व आदि सभी विनष्ट हो जाते हैं। हे नानक, प्रभु की शरण में आकर व्यक्ति प्रभु के नाम के रस रंग में आनन्द पूर्वक लीन बना रहता है॥२॥४॥६८॥बिलावलु महला ५।। जीवों के जीवन की सभी युक्तियाँ प्रभु के वश में हैं और वह जो कहता है व्यक्ति को वही करना होता है। जब वह प्रभु प्रसन्न हो जाता है तो फिर किसी का भी भय नहीं रहता।। १ ।। परब्रह्म प्रभु का सुमिरन करने से तुम्हें कभी भी दुख प्रभावित नहीं करेगा। प्यारे गुरु के सिक्ख के पास तो यम का दूत आता ही नहीं।। १।। रहाउ ।। वह प्रभु ही करने कराने वाला समर्थ है और उसके बिना अन्य कोई नहीं है। हे नानक, प्रभु ही शरण देने वाला है और इस मन को उस सच्चे प्रभु का ही आसरा है॥ २ ॥५ ॥६६ ॥बिलावलु महला ५ ।। प्रभु का सुमिरन करने से दुखों का डेरा भाग खड़ा हुआ। साधसंगति में मिल बैठकर व्यक्ति स्थिरता प्राप्त करता है और फिर उसे इधर-उधर नहीं दौड़ना पड़ता।। १ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और उसके चरणों पर भी कुर्बान होता हूँ। उसको देखते हुए और उसके गुण गाने से आनन्द, सुख और खुशियाँ प्राप्त हो गई हैं।। १ ।। रहाउ ।। अब मेरे जीवन का उद्देश्य तथा कीर्तन, राग, नाद और उसी की धुन में बने रहना हो गया है। हे नानक, प्रभु प्रसन्न हो गए हैं इसीलिए मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है॥२॥६॥७०॥बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, तेरे दास की यह विनती है कि मेरे हृदय को प्रकाशित कर दो। हे परब्रह्म प्रभु, तुम्हारी कृपा से सभी दोषों और दुखों का नाश हो जाता है।। १ ।। मुझे तो उस घट-घट में रमण करने वाले प्रभु के चरण कमलों का ही आसरा है और वही गुणों का भण्डार है। हे प्राणी, जब तक तुम्हारे शरीर में श्वास है तब तक उस प्रभु की कीर्ति और उसके नाम का सुमिरन करते रहो।। १ ।। रहाउ ।। मेरा माता-पिता और बन्धु तू ही है और तू ही सबमें बसा है। नानक तो उस प्रभु की शरण में है जिसका यश अत्यन्त निर्मल है।। २ ॥७ ॥७१ ॥ बिलावलु महला ५ ।। सभी सिद्धियों के मालिक प्रभु का गुणानुवाद करने वाले का सभी भला चाहते हैं। सभी मुँह से उसके लिये साधुवाद देते हैं और उनको सुनकर प्रभु के अन्य सेवक भी उन से मिलने आते हैं।। १ ।। पूर्ण गुरु ने सहज सुख और कल्याण कर दिया है। प्रभु के नाम को पहचान कर सभी जीव हम पर दयालु हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। वह गम्भीर और गहरे गुणों वाला प्रभु सबमें ही पूर्ण रूप से व्याप्त है। प्रभु की ओर से धैर्य का भरोसा देखकर भक्त लोग सदैव आनन्द में लीन बने रहते हैं।। २ ।। ८ ।। ७२ ।। बिलावलु महला ५ ।। दाता प्रभु ने कृपालु होकर हमारी अरदास सुन ली है; उसने अपने सेवक को तो बचा लिया है और निन्दक के मुँह पर राख पड़ गई है।। १ ।। तुझे फिर कोई भी तंग करने की दृष्टि से नही देखता है क्योंकि तू तो गुरु का दास बन गया है। हे परब्रह्म प्रभु, तूने अपना हाथ देकर हमारी रक्षा की है।। १ ।। रहाउ ।। सभी जीवों का दाता एक प्रभु ही है अन्य कोई नहीं। नानक की तो यही विनती है कि हे प्रभु, मुझे तो तेरा ही आसरा है।। २ ।। ६ ।। ७३ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु ने हमारे मित्रों और सज्जनों को बचा लिया है। निन्दक तो सभी मर चुके हैं इसीलिये हे जीव, अब तू निश्चिन्त हो जा।। १ ।। रहाउ ।।

मनोरथ प्रभि कीए भेटे गुरदेव ॥ जै जै कारु जगत महि सफल जा की सेव ॥ १ ॥ ऊच अपार अगनत हरि सभि जीअ जिसु हाथि ॥ नानक प्रभ सरणागती जत कत मेरै साथि ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरु पूरा आराधिआ होए किरपाल ॥ मारगु संति बताइआ तूटे जम जाल ॥ १ ॥ दूख भूख संसा मिटिआ गावत प्रभ नाम ॥ सहज सूख आनंद रस पूरन सभि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलनि बुझी सीतल भए राखे प्रभि आप ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परताप ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ धरति सुहावी सफल थानु पूरन भए काम ॥ भउ नाठा भ्रमु मिटि गइआ रविआ नित राम ॥ १ ॥ साध जना कै संगि बसत सुख सहज बिस्राम ॥ साई घड़ी सुलखणी सिमरत हरि नाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रगट भए संसार महि फिरते पहनाम ॥ नानक तिसु सरणागती घट घट सभ जान ॥ २ ॥ १२ ॥ ७६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ रोगु मिटाइआ आपि प्रभि उपजिआ सुखु सांति ॥ वड परतापु अचरज रूपु हरि कीन्ही दाति ॥ १ ॥ गुरि गोविंदि क्रिपा करी राखिआ मेरा भाई ॥ हम तिस की सरणागती जो सदा सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥ नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मरि मरि जनमे जिन बिसरिआ जीवन का दाता ॥ पारब्रहमु जनि सेविआ अनदिनु रंगि राता ॥ १ ॥ सांति सहजु आनदु घना पूरन भई आस ॥ सुखु पाइआ हरि साधसंगि सिमरत गुणतास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुआमी अरदासि जन तुम्ह अंतरजामी ॥ थान थनंतरि रवि रहे नानक के सुआमी ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ७९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अपणे बालक आपि रखिअनु पारब्रहम गुरदेव ॥ सुख सांति

गुरु से मिलाप होने पर प्रभु ने हमारे सभी उद्देश्य पूरे कर दिए हैं और जिसकी सेवा सफल होती है इस संसार में उसी की जय-जयकार होती है।। १ ।। जिस प्रभु के हाथ में इस संसार के सभी जीव हैं वहीं ऊँचा, अपार और सभी गणानाओं से परे है। नानक तो उस प्रभु की शरण में है जो सभी स्थानों में मेरे साथ बना हुआ है।। २ ।। १० ।। ७४ ।। बिलावलु महला ५ ।। पूर्ण गुरु की आराधना की और वह प्रभु कृपालु हो गया। शान्त पुरुषों ने उससे मिलने का मार्ग बताया और हमारे सभी यम के जाल टूट गए।। १ ।। प्रभु के नाम का गायन करने से दुख, भूख और हर प्रकार का डर मिट गया है; हमें स्वाभाविक रूप से मिलने वाला सुख आनन्द और रस प्राप्त हो गया है और हमारे सभी काम पूरे हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। हमारी जलन बुझ गई है, हम शीतल हो गए हैं और प्रभु ने स्वयं ही हमें बचा लिया है। नानक तो उस प्रभु की शरण में है जिसका प्रताप अत्यन्त महान है।। २ ।। ११ ।। ७५ ।। बिलावलु महला ५ ।। यह धरती सुहानी बन गई है और यह स्थान फलदायक हो गया है और हमारे सभी काम पूरे हो गए हैं। हमारा भय भाग खड़ा हुआ है, हमारा भ्रम मिट गया है और हमने अब सदैव प्रभु-नाम का ही सुमिरन किया है।। १ ।। साधु पुरुषों के साथ बसने से सहज स्वाभाविक सुख और शान्ति प्राप्त होती है और वही समय भला है जिसमें प्रभु नाम का सुमिरन किया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। जो किसी भी गिनती में नहीं थे वे अब इस संसार में प्रभु-नाम सुमिरन के कारण प्रसिद्ध हो गए हैं। नानक तो उस प्रभु की शरण में है जो प्रत्येक हृदय की बात जानने वाला है।। २ ।। १२ ।। ७६ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु ने स्वयं ही हमारे रोग को मिटा दिया है और सुख शान्ति उत्पन्न हो गई है। उस प्रभु का प्रताप आश्चर्यजनक और महान है और उसी ने ही हमें सुख शान्ति का दान दिया है।। १ ।। गुरु-प्रभु ने कृपा की है और मेरे प्यारे सत्संगियों की रक्षा कर ली है। हम तो उसकी शरण में पड़े है जो सदैव सहायता करने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। सेवक की की हुई अरदास कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। हे नानक, हमें तो उस पूर्ण गुणों के भण्डार प्रभु का ही आसरा है।। २ ।। १३ ।। ७७ ।। बिलावलु महला ५ ।। जिसे जीवन का दाता प्रभु विस्मृत हो जाता है वह मर-मरकर फिर जन्म लेता रहता है। जिस सेवक ने परब्रह्म प्रभु का ही सुमिरन किया है वह दिन रात उसके रंग में ही रंगा रहता है।। १ ।। उसको स्वाभाविक सुख शान्ति और अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है और उसकी आशा पूरी हो जाती है। साधसंगति में से ही गुणों के भण्डार प्रभु का सुमिरन करने से सुख प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तू अन्तर्यामी है और सभी स्थान और स्थानान्तरों में रमण करने वाला है।। २ ।। १४ ।। ७८ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु की शरण में आने से तो गर्म हवा का झोंका तक नहीं लगता अर्थात जरा सा भी दुख नहीं मिलता। हमारे चारों और प्रभु-नाम की लकीर खीचीं है इसलिए हे भाई, हमें दुख प्रभावित नहीं करता। उस सच्चे पूर्ण गुरु से हमारा मिलाप हो गया है जिसने इस सारे संसार की रचना की है। प्रभु-नाम की औषधि हमे दे दी गई है और हमने उस एक प्रभु में ही अपनी लौ लगा ली है।। १ ।। रहाउ ।। रक्षा करने वाले उस प्रभु ने हमें बचा लिया है और हमारी सभी व्याधियों को मिटा दिया है। नानक कहता है कि उस प्रभु की कृपा हुई है और वह प्रभु ही हमारी सहायता करने वाला बन गया है।। २ ।। १५ ।। ७९ ।। बिलावलु महला ५ ।। उस परब्रह्म गुरुदेव ने अपने बालकों की स्वयं ही रक्षा की;

सहज आनद भए पूरन भई सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ रोग मिटाइ जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥ १ ॥ दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ मन बांछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥ साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवत सेवि सेवि साध सेवउ सदा करउ किरताए ॥ अभै दानु पावउ पुरख दाते मिलि संगति हरि गुण गाए ॥ १ ॥ रसना अगह अगह गुन राती नैन दरस रंगु लाए ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन मोहि चरण रिदै वसाए ॥ २ ॥ सभहू तलै तलै सभ ऊपरि एह द्रिसटि द्रिसटाए ॥ अभिमानु खोइ खोइ खोइ खोई हउ मोकउ सतिगुर मंत्रु द्रिड़ाए ॥ ३ ॥ अतुलु अतुलु अतुलु नह तुलीऐ भगति वछलु किरपाए ॥ जो जो सरणि परिओ गुर नानक अभै दानु सुख पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ ८१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ॥ नमसकार डंडउति बंदना अनिक बार जाउ बारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥ सूख दूख इसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥ १ ॥ तू मेरी ओट बल बुधि धनु तुम ही तुमहि मेरै परवारै ॥ जो तुम करहु सोई भल हमरै पेखि नानक सुख चरनारै ॥ २ ॥ २ ॥ ८२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुनीअत प्रभ तउ सगल उधारन ॥ मोह मगन पतित संगि प्रानी ऐसे मनहि बिसारन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संचि बिखिआ ले ग्राहजु कीनी अंम्रितु मन ते डारन ॥ काम क्रोध लोभ रतु निंदा सतु संतोखु बिदारन ॥ १ ॥ इन ते काढि लेहु मेरे सुआमी हारि परे तुम्ह सारन ॥ नानक की बेनंती प्रभ पहि साधसंगि रंक तारन ॥ २ ॥ ३ ॥ ८३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ संतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ कथा कीरतनु आनंद मंगल धुनि पूरि रही दिनसु अरु राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपने प्रभि कीने नाम अपुने की कीनी दाति ॥ आठ पहर गुन गावत प्रभ के काम क्रोध

सुख शान्ति और सहज आनन्द हमें मिल गया है और हमारी सेवा पूरी हो गई है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने स्वयं अपने भक्तजनों की विनती को सुन लिया है। उसने हमारे रोग मिटाकर हमें आध्यत्मिक तौर से जीवित कर लिया है और उसी का प्रताप महान है।। १ ।। अपनी शक्ति को धारण करते हुए उसने हमारे सभी दोष क्षमा कर दिए हैं। हमें सभी मनोवांछित फल दे दिए है और हे नानक, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। १६ ।। ८० ।।

रागु बिलावलु महला ५ चौपदे दोपदे घरु ६ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरे प्यारे प्रभु, मुझे मेरे कानों से प्रभु से टूटे हुए लोगों के गीत, नाद, धुन और उनके व्यर्थ बोले हुए बोलों को ना सुनना पड़े।। १ ।। रहाउ ।। साधुजनों की सेवा करते हुए मैं पुनः उन्हीं की सेवा लगातार करता रहूँ और इसी कर्म को करता चला जाऊं। संगति में मिल बैठकर प्रभु का गुण गाता रहूँ और हे दाता प्रभु, मैं अभय दान तुझसे प्राप्त करूं।। १ ।। मेरी जीभ अथाह प्रभु के गुणों में लीन बनी रहे और मेरी आँखें प्रभु दर्शन के प्रेम को बनाए रखें। हे दीनों के दुखों को नष्ट करने वाले प्रभु, तू कृपा कर और मेरे हृदय में अपने चरणों का निवास बना ले।। २ ।। मुझे ऐसी दृष्टि प्रदान कर दो कि मैं उस मिट्टी की तरह हो जाऊं जो सबके पैरों के नीचे बनी रहती है और जीव में मरणोंपरान्त उसके उपर ही आ जाती है। सच्चे गुरु ने मुझे ऐसा उपदेश मन में पक्का कराया है कि मैंने अपने अभिमान को खोकर अपनी सभी वासनाओं को भी खो दिया है।। ३ ।। वह भक्तवत्सल कृपा करने वाला प्रभु अतुल है और उसे तौला नहीं जा सकता। जो जो भी गुरु की शरण में आ गया है हे नानक, उसे अभयदान और सुख प्राप्त हो गया है।। ४ ।। १ ।। ८१ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, तू ही मेरे प्राणों का आधार है और मैं बार-बार अनेकों बार तुझे ही प्रणाम, दण्डवत और तेरी ही वन्दना करता हूँ।। १ ।। रहाउ।। उठते, बैठते, सोते, जागते यह मन तेरा ही सुमिरन करता है। मेरा सुख दुख और मेरे मन की व्यथा यह सब तेरे सामने स्पष्ट ही है।। १ ।। तू ही मेरा आसरा, बल, बुद्धि, धन सम्पदा आदि है और तुम ही मेरा परिवार हो। मेरे लिए तो वही भला है जो तुम करते हो और नानक तो तुम्हारे चरणों को देखकर ही सुखी बना रहता है।। २ ।। २ ।। ८२ ।। बिलावलु महला ५ ।। सुना जाता है कि हे प्रभु, तू सबका उद्धार कर देता है। मोह की मस्ती में लीन होकर पतित प्राणियों की संगति में बैठकर मैंने तुझे मन से भुला दिया है।। १ ।। रहाउ ।। विषय विकारों को इकट्ठा करके मैंने इनके ज़हर को तो ग्रहण करने योग्य मान लिया है और प्रभु-नाम के अमृत को मन से दूर कर दिया है। काम, क्रोध, लोभ और निंदा में लीन होकर सत्य सन्तोष को मैंने तोड़कर अपने से दूर कर दिया। हे मेरे स्वामी, इनसे मुझे बाहर निकालो। मैं हार कर तेरी शरण में आ गया हूँ। नानक की तो प्रभु के पास विनती है कि हे प्रभु, साधु पुरुषों के साथ इस कंगाल अथवा ज्ञान हीन को भी पार उतार दो।। २ ।। ३ ।। ८३ ।। बिलावलु महला ५ ।। सन्तजनों के पास तो केवल प्रभु की बातें ही सुनने को मिलती हैं। वहाँ तो दिन रात कथा कीर्तन, आनन्द और मंगल धुन छाई रहती है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने कृपा करके हमें अपना बना लिया है और अपने नाम का दान हमें प्रदान किया है। आठों पहर प्रभु के गुण गाने से काम, क्रोध

इसु तन ते जात ॥ १ ॥ त्रिपति अघाए पेखि प्रभ दरसनु अंम्रित हरि रसु भोजनु खात ॥ चरन सरन नानक प्रभ तेरी करि किरपा संतसंगि मिलात ॥ २ ॥ ४ ॥ ८४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए अपने जन आप ॥ करि किरपा हरि हरि नामु दीनो बिनसि गए सभ सोग संताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गोविंद गावहु सभि हरि जन राग रतन रसना आलाप ॥ कोटि जनम की त्रिसना निवरी राम रसाइणि आतम ध्राप ॥ १ ॥ चरण गहे सरणि सुखदाते गुर कै बचनि जपे हरि जाप ॥ सागर तरे भरम भै बिनसे कहु नानक ठाकुर परताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ८५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥ सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै संसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो ॥ प्रभि अंम्रित नामु महा रसु दीनो ॥ १ ॥ दास की लाज रखै मिहरवानु ॥ गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥ २ ॥ ६ ॥ ८६ ॥

रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर सबदि उजारो दीपा ॥ बिनसिओ अंधकार तिह मंदरि रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसमन बिसम भए जउ पेखिओ कहनु न जाइ वडिआई ॥ मगन भए ऊहा संगि माते ओति पोति लपटाई ॥ १ ॥ आल जाल नही कछू जंजारा अहंबुधि नही भोरा ॥ ऊचन ऊचा बीचु न खीचा हउ तेरा तूं मोरा ॥ २ ॥ एकंकारु एकु पासारा एकै अपर अपारा ॥ एकु बिसथीरनु एकु संपूरनु एकै प्रान अधारा ॥ ३ ॥ निरमल निरमल सूचा सूचो सूचा सूचो सूचा ॥ अंत न अंता सदा बेअंता कहु नानक ऊचो ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥ ८७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु हरि कामि न आवत हे ॥ जा सिउ राचि माचि तुम्ह लागे ओह मोहनी मोहावत हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामिनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत हे ॥ उरझि रहिओ इंद्री रस प्रेरिओ बिखै ठगउरी खावत हे ॥ १ ॥ त्रिण को मंदरु साजि सवारिओ पावकु तलै जरावत हे ॥ ऐसे गड़ महि ऐठि हठीलो फूलि फूलि किआ पावत हे ॥ २ ॥ पंच दूत मूड परि ठाढे केस

इस तन से चला जाता है।। १ ।। प्रभु के दर्शन को देखकर व्यक्ति तृप्त हो जाता है और फिर अमृत रूपी हरि रस का भोजन खाता रहता है। हे प्रभु, नानक तो तेरे चरणों की शरण में है और तुमने ही कृपा करके संत पुरुषों के साथ मुझे मिला दिया है।।। २ ।। ४ ।। ८४ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु ने अपने सेवको को स्वयं ही बचा लिया। प्रभु ने कृपा करके उन्हें अपना नाम प्रदान किया है जिससे उनके सभी शोक और संताप नष्ट हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु के सभी सेवको, तुम प्रभु के गुणों का गायन करो और अपनी जीभ से उसके लिये राग रूपी रत्नों का आलाप करो। प्रभु-नाम की रसायन ने मेरी आत्मा को तृप्त का दिया है और करोड़ों जन्मों की मेरी तृष्णा मिट गई है।। १ ।। उस सुख दाता प्रभु के चरणों को मैंने पकड़ रखा है और गुरु के उपदेश के माध्यम से मैंने प्रभु का जाप किया है। नानक कहता है कि उस परमात्मा के प्रताप से मैंने संसार सागर को तैर लिया है और मेरे भ्रम तथा भय विनष्ट हो गए हैं।। २ ।। ५ ।। ८५ ।। बिलावलु महला ५ ।। उस सृजनकर्ता गुरु ने मेरी आंतरिक पीड़ा को समाप्त कर दिया है। मैं अपने सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने सारे संसार की मान मर्यादा की रक्षा की है।। १ ।। रहाउ ।। इस बालक के माथे पर हाथ रखकर उसने इसे बचा लिया है और प्रभु ने इसे अमृत नाम का महारस प्रदान किया है।। १ ।। वह कृपालु दास की लाज बचाता है और प्रभु के दरबार में गुरु नानक जो बोलता है वह स्वीकृत होता है॥२ ॥६ ॥८६ ॥

रागु बिलावलु महला ५ चौपदे दोपदे घरु ७   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

सच्चे गुरु के शब्द रूपी दीपक का उजाला हुआ है जिससे शरीर रूपी मंदिर में से अहंकार नष्ट हो गया है और रत्नों की अनुपम कोठरी खुल गई है।। १ ।। रहाउ ।। जब प्रभु को देखा तो आश्चर्य में हम भी आश्यर्चपूर्ण हो गए और उसके बड़प्पन का कथन नहीं किया जा सकता। उसी में ओत-पोत और मस्त होकर लिपटते हुए हम उसके साथ लीन हो गए हैं।। १ ।। अब हमें कोई भी धन्धा और जंजाल प्रभावित नहीं करता और अब हमारे में जरा सी भी अहंकार वाली बुद्धि नहीं रही। हे प्रभु, तू ऊँचे से ऊँचा है और हमारे तुम्हारे में अब जरा भी दूरी नहीं है क्योंकि मैं तेरा हूँ और तू मेरा है।। २ ।। उस एक ओअंकार का ही विस्तार है तथा सब ओर वह एक प्रभु ही अपरम्पार है। एक का ही विस्तार है, वह एक प्रभु सम्पूर्ण है तथा वह एक ही हमारे प्राणों का आधार है।। ३ ।। वह निर्मल से भी निर्मल है और पवित्र से भी पवित्रतम है। उसका कोई भी अन्त नहीं है। वह सदैव अनंत है और नानक कहता है कि वह ऊँचे से भी ऊँचा है।। ४ ।। १ ।। ८७ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु के बिना कुछ भी काम नहीं आता। हे जीव, जिसके साथ तुम लीन होकर एक बने बैठे हो वह मोहिनी माया तो दरअसल सबको ठगती है।। १ ।। रहाउ ।। सोना, स्त्री, सुन्दर सेज को छोड़कर एक क्षण भर में ही यहाँ से जाना होगा। इन्द्रियों के रस से प्रेरित होकर तू उसमें उलझा हुआ और विषयों की ठगबूटी को खाता जा रहा है।। १ ।। तूने तिनकों का महल बना रखा है और उसके नीचे तूने आग जला रखी है। इस प्रकार के महल में तू अकड़कर हठपूर्वक फूला हुआ रहता है। भला तुझे इसमें से क्या मिलेगा। पाँचों दूत तेरे सिर पर खड़े हैं और तुझे केशों से

गहे फेरावत हे ॥ द्रिसटि न आवहि अंध अगिआनी सोइ रहिओ मद मावत हे ॥ ३ ॥ जालु पसारि चोग बिसथारी पंखी जिउ फाहावत हे ॥ कहु नानक बंधन काटन कउ मै सतिगुरु पुरखु धिआवत हे ॥ ४ ॥ २ ॥ ८८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोली ॥ प्रान पिआरो मनहि अधारो चीति चितवउ जैसे पान तंबोली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि समाइओ गुरहि बताइओ रंगि रंगी मेरे तन की चोली ॥ प्रिअ मुखि लागो जउ वडभागो सुहागु हमारो कतहु न डोली ॥ १ ॥ रूप न धूप न गंध न दीपा ओति पोति अंग अंग संगि मउली ॥ कहु नानक प्रिअ रवी सुहागनि अति नीकी मेरी बनी खटोली ॥ २ ॥ ३ ॥ ८९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद मई ॥ जब ते भेटे साध दइआरा तब ते दुरमति दूरि भई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन पूरि रहिओ संपूरन सीतल सांति दइआल दई ॥ काम क्रोध त्रिसना अहंकारा तन ते होए सगल खई ॥ १ ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई ॥ कहु नानक जिनि मनहु पछानिआ तिन कउ सगली सोझ पई ॥ २ ॥ ४ ॥ ९० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ किआ हम जीअ जंत बेचारे बरनि न साकह एक रोमाई ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा बेअंत ठाकुर तेरी गति नही पाई ॥ १ ॥ किआ कथीऐ किछु कथनु न जाई ॥ जह जह देखा तह रहिआ समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह महा भइआन दूख जम सुनीऐ तह मेरे प्रभ तूहै सहाई ॥ सरनि परिओ हरि चरन गहे प्रभ गुरि नानक कउ बूझ बुझाई ॥ २ ॥ ५ ॥ ९१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अगम रूप अबिनासी करता पतित पवित इक निमख जपाईऐ ॥ अचरजु सुनिओ परापति भेटुले संत चरन चरन मनु लाईऐ ॥ १ ॥ कितु बिधीऐ कितु संजमि पाईऐ ॥ कहु सुरजन कितु जुगती धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मानुखु मानुख की सेवा ओहु तिस की लई लई फुनि जाईऐ ॥ नानक सरनि सरणि सुख सागर मोहि टेक तेरो इक नाईऐ ॥ २ ॥ ६ ॥ ९२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ संत सरणि संत टहल करी ॥ धंधु बंधु अरु सगल जंजारो अवर काज ते छूटि परी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख सहज अरु घनो अनंदा गुर ते पाइओ

पकड़कर घुमा रहे हैं। हे अन्धे अज्ञानी, तुझे नजर नहीं आता और तू मद में मस्त होकर सो रहा है।। ३ ।। माया ने तो जाल फैला कर उसमें चुग्गा बिखेर दिया है और तुझे पक्षी की तरह पकड़ा जा रहा है। नानक कहता है कि अपने बन्धन काटने के लिये मैं सच्चे गुरु उस परमेश्वर का सुमिरन करता हूँ।। ४ ।। २ ।। ८८ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु का नाम अपरम्पार और अमूल्य है। मेरे प्राणों का प्यारा ही मेरे मन का आसरा है और मैं अपने चित्त में उसका ध्यान उसी प्रकार बनाए रखता हूँ जैसे पान बेचने वाला तम्बोली अपने पानों के प्रति सदैव सावधान बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। गुरु ने मुझे तरीका बताया है जिससे मैं शान्त अवस्था में लीन हो गया हूँ और मेरा शरीर रूपी वस्त्र उस प्रभु के रंग में रंग गया है। जब बड़ा भाग्य होता है तो मैं उस प्यारे के मुख के सामने आ गई; मेरा सुहाग अब कभी भी अस्थिर नहीं होता।। १ ।। ना तो मेरे पास रूप है ना धूप बत्ती है ना सुगन्ध है और ना ही दीपक अर्थात् मुझे अब इनमें से किसी की जरूरत नहीं है। मैं तो उसी प्रियतम में ही ओत-पोत हो गई हूँ और उसके अंग के साथ लगकर मैं खिल उठी हूँ। नानक का कथन है कि प्रियतम ने सुहागिन स्त्री के साथ रमण किया है और इसीलिये मेरी सेज अत्यन्त सुन्दर बन गई है।। २ ।। ३ ।। ८९ ।। बिलावलु महला ५ ।। गोविन्द- गोविन्द कहते हुए हम भी गोविन्दमय हो गये। जबसे मेरा साधु रूपी दयालु पुरुषों से मिलाप हुआ है तबसे मेरी दुर्मति दूर हो गई है।। १ ।। रहाउ।। वह सम्पूर्ण रूप से सबमें पूरी तरह व्याप्त है और वही प्रकाश रूप प्रभु शीतल, शान्त और दयालु है। काम, क्रोध, तृष्णा और अहंकार आदि अब सभी मेरे शरीर में से नष्ट हो गए हैं।। १ ।। सत्य, सन्तोष, दया, धर्म और पवित्रता का यह मन्त्र मैंने शान्त पुरुषों से लिया है। नानक का कथन है कि जिन्होंने मन से उसे पहचान लिया है उनको सब प्रकार की समझ आ गई है।। २ ।। ४ ।। ९० ।। बिलावलु महला ५ ।। हम जीव जन्तु बेचारे क्या हैं, हम तो एक रोम मात्र का भी वर्णन नहीं कर सकते। ब्रह्मा, महेश, सिद्ध, मुनि, इन्द्र आदि भी हे अनन्त प्रभु, तेरी सीमा को नहीं जान पाए।। १ ।। क्या कहें कुछ कहा नहीं जा सकता। मैं जहाँ-जहाँ देखता हूँ तू वहाँ समाया हुआ है।। १ ।। रहाउ ।। जब और जहाँ महा भयानक यमों का दुख देने के बारे में सुना जाता है वहाँ हे मेरे प्रभु, तू ही मेरा सहायक है। हे प्रभु, मैंने तेरे चरण पकड़कर तेरी शरण ले ली है। नानक को तो गुरु ने यही रहस्य बताया है।। २ ।। ५ ।। ९१ ।। बिलावलु महला ५ ।। वह कर्ता पतितों को पवित्र करने वाला अविनाशी, सुन्दर और अगम्य है। एक निमिष मात्र के लिये भी उसी का जाप करते रहना चाहिए जो आश्चर्य रूप में सुना जाता है। शान्त पुरुषों के चरण-स्पर्श के माध्यम से उस प्रभु के चरणों में ही मन लगाना चाहिए।।१।। किस विधि और किस अनुशासन के अन्तर्गत उस प्रभु को पाया जाता है। हे भले पुरुषो, किस युक्ति से उसका सुमिरन किया जा सकता है।। १ ।। रहाउ ।। जो व्यक्ति दूसरे की सेवा करता है वह उसका किया हुआ कभी नहीं भूलता अर्थात् हे प्रभु, तेरी की हुई सेवा भला कैसे व्यर्थ जा सकती है। हे सुखों के सागर प्रभु, नानक तो तेरी ही शरण में है और मुझे तेरे ही एक नाम का आसरा है।। २ ।। ६ ।। ९२ ।। बिलावलु महला ५ ।। सन्तों की शरण में आकर मैंने उन शान्त पुरुषों की सेवा की। धन्धों, बन्धनों और सभी जंजालों से तथा सभी दूसरे कामों से अब मेरा छुटकारा हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। अब मैंने स्वाभाविक रूप से मिलने वाला सुख और गहन आनन्द प्राप्त कर लिया है और गुरु से

नामु हरी ॥ ऐसो हरि रसु बरनि न साकउ गुरि पूरै मेरी उलटि धरी ॥ १ ॥ पेखिओ मोहनु सभ कै संगे ऊन न काहू सगल भरी ॥ पूरन पूरि रहिओ किरपा निधि कहु नानक मेरी पूरी परी ॥ २ ॥ ७ ॥ ९३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन किआ कहता हउ किआ कहता ॥ जान प्रबीन ठाकुर प्रभ मेरे तिसु आगै किआ कहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनबोले कउ तुही पछानहि जो जीअन महि होता ॥ रे मन काइ कहा लउ डहकहि जउ पेखत ही संगि सुनता ॥ १ ॥ ऐसो जानि भए मनि आनद आन न बीओ करता ॥ कहु नानक गुर भए दइआरा हरि रंगु न कबहू लहता ॥ २ ॥ ८ ॥ ९४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ निंदकु ऐसे ही झरि परीऐ ॥ इह नीसानी सुनहु तुम भाई जिउ कालर भीति गिरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ देखै छिद्रु तउ निंदकु उमाहै भलो देखि दुख भरीऐ ॥ आठ पहर चितवै नही पहुचै बुरा चितवत चितवत मरीऐ ॥ १ ॥ निंदकु प्रभू भुलाइआ कालु नेरै आइआ हरि जन सिउ बादु उठरीऐ ॥ नानक का राखा आपि प्रभु सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ ॥ २ ॥ ९ ॥ ९५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसे काहे भूलि परे ॥ करहि करावहि मूकरि पावहि पेखत सुनत सदा संगि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काच बिहाझन कंचन छाडन बैरी संगि हेतु साजन तिआगि खरे ॥ होवनु कउरा अनहोवनु मीठा बिखिआ महि लपटाइ जरे ॥ १ ॥ अंध कूप महि परिओ परानी भरम गुबार मोह बंधि परे ॥ कहु नानक प्रभ होत दइआरा गुरु भेटै काढै बाह फरे ॥ २ ॥ १० ॥ ९६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन तन रसना हरि चीन्हा ॥ भए अनंदा मिटे अंदेसे सरब सूख मोकउ गुरि दीन्हा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना बीना ॥ हाथ देइ राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना ॥ १ ॥ बलि जावउ दरसन साधू कै जिह प्रसादि हरि नामु लीना ॥ कहु नानक ठाकुर भारोसै कहू न मानिओ मनि छीना ॥ २ ॥ ११ ॥ ९७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गुरि पूरै मेरी राखि लई ॥ अंम्रित नामु रिदे महि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे का जपिआ

प्रभु-नाम भी मुझे मिल गया है। वह प्रभु रूपी रस ऐसा है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता; पूर्ण गुरु ने तो मेरी संसार के प्रति सुरति ही उलट दी है।। १ ।। मैंने परमात्मा को अब सब के साथ बसा हुआ देख लिया है और अब सभी उसी से भरे हुए हैं; किसी में भी कोई कमी नहीं। नानक का कथन है कि वह कृपा का भण्डार सभी में पूरी तरह भरा हुआ है, यह समझते हुए मेरा जीवन सफल हो गया।। २ ।। ७ ।। ६३ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे मेरे मन, तू क्या कहता जा रहा है; मैं भला कह ही क्या सकता हूँ क्योंकि वह सयाना मालिक सब कुछ जानने वाला है। अब उसके आगे भला क्या कहा जा सकता है।। १ ।। रहाउ ।। बिना बताये हुए हमारी बात को पहचान लेने वाला एक तू ही है जो सभी जीवों में बसा रहता है। हे मन, तू किसलिए और कहाँ तक ठगता फिरता है जबकि वह प्रभु तो सब कुछ देखता ही है।। १ ।। यह समझकर मेरा मन आनन्दित बना रहता है कि अन्य दूसरा कोई भी कुछ करने वाला नहीं है। नानक कहता है कि जब गुरु दयालु हो जाए तो फिर प्रभु-नाम का रंग कभी भी नहीं उतरता।। २ ।। ८ ।। ६४ ।। बिलावलु महला ५ ।। निन्दक व्यक्ति तो ऐसे ही झड़कर गिर पड़ता है। हे भाई, जैसे रेत की दीवार गिर जाती है उस निन्दक के गिर कर नष्ट हो जाने के चिन्ह भी कुछ ऐसे ही होते हैं।। १ ।। रहाउ ।। निन्दक व्यक्ति जब किसी के दोष देखता है तो उसके मन में बहुत उत्साह भर जाता है परन्तु किसी के भले गुणों को देखकर वह दुख से भर जाता है। बुरा व्यक्ति आठों पहर अच्छे व्यक्ति के बराबर पहुँचने की कामना करता रहता है परन्तु वह लोगों का बुरा सोचते-सोचते ही मर-खप जाता है।। १ ।। निन्दक व्यक्ति ने प्रभु को भुलाया होता है और जब मौत भी उसके पास आ खड़ी होती है तब भी वह प्रभु के सेवकों के साथ वाद विवाद बनाए रहता है। व्यक्ति बेचारा क्या कर सकता है क्योंकि नानक का रक्षक तो स्वयं स्वामी प्रभु ही है।। २ ।। ६।। ६५ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे भाई, तू ऐसे क्यों भूला हुआ भटक रहा है। तू प्रभु को सदैव अपने साथ ही देखता सुनता है और यह भी जानता है कि वही सब कुछ करने कराने वाला है परन्तु फिर भी तू उससे मुकरता रहता है।। १ ।। रहाउ ।। तूने काँच को खरीदने, सोने को त्यागने, शत्रु के साथ दोस्ती करने और सज्जन पुरुष को त्यागकर खड़ा होने को अपना स्वभाव ही बना लिया। जो प्रभु सदैव बना हुआ है वह तुझे कड़वा लगता है और जो मायावी अर्थात् वास्तव में नहीं हैं वह तुझे मीठा लगता है। इस प्रकार विषयों में लिपटा तू जलता रहता है।। १ ।। यह प्राणी तो अंधे कुएं में गिरा हुआ है; भ्रम के घोर अंधकार में इसे मोह का बन्धन भी पड़ा हुआ है। नानक का कथन है कि जब प्रभु दयालु हो जाए तो इसका प्रभु से मिलाप होता है जो इसे बाँह से पकड़कर अज्ञान के कुएं से बाहर निकल लेता है।। २ ।। १० ।। ६६ ।। बिलावलु महला ५ ।। मेरे मन तन मेरी जीभ ने उस प्रभु को पहचान लिया है। मैं आनन्दित हो उठा हूँ, मेरे सभी भय मिट गए हैं और मुझे गुरु ने सभी सुख दे दिए हैं।। १ ।। रहाउ ।। अपने अनजानपन से उपर उठकर अब मैं बुद्धि के माध्यम से यह जान गया हूँ कि मेरा प्रभु सब कुछ जानने और देखने वाला है। वह अपने बनाए हुओं को हाथ देकर बचा लेता है और उस प्रभु का कोई भी अहित नहीं कर सकता।। १ ।। मैं साधु पुरुषों के दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ जिनकी कृपा से मैंने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है। नानक कहता है कि मैं तो प्रभु के भरोसे में ही रहा हूँ और मैंने अन्य किसी को एक क्षण भर के लिये भी नहीं माना जाना।। २ ।। ११ ।। ६७ ।। बिलावलु महला ५ ।। पूर्ण गुरु ने मेरी इज़्ज़त बचा ली। उसने अमृतरूपी नाम मेरे हृदय में बसाया है जिससे मेरी जन्मों जन्मान्तरों की मैल नष्ट हो गई है।। १ ।। रहाउ ।। पूर्ण गुरु का सुमिरन करने से यमदूत, दुष्टजन और मेरे शत्रु दूर चले गए हैं।

जापु ॥ कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ चरन कमल रखु मन माही ॥ ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥ २ ॥ १२ ॥ ९८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सदा सदा जपीऐ प्रभ नाम ॥ जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि परीऐ नित सरनी गुर ते पाईऐ एहु निधानु ॥ जनम मरण की कटीऐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥ १ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु ॥ कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥ २ ॥ १३ ॥ ९९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ हरि गुन गावत परउपकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना अनद सेती बिखिआ बनु गाही ॥ १ ॥ चरन प्रभू के बोहिथु पाए भव सागरु पारि पराही ॥ संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही ॥ २ ॥ १४ ॥ १०० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ धीरउ देखि तुम्हारे रंगा ॥ तुही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै संगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥ १ ॥ कबहू न बिसरै हीए मोरे ते नानक दास इही दानु मंगा ॥ २ ॥ १५ ॥ १०१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अचुत पूजा जोग गोपाल ॥ मनु तनु अरपि रखउ हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरनि सम्रथ अकथ सुखदाता किरपा सिंधु बडो दइआल ॥ कंठि लाइ राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥ १ ॥ दामोदर दइआल सुआमी सरबसु संत जना धन माल ॥ नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै रवाल ॥ २ ॥ १६ ॥ १०२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सिमरत नामु कोटि जतन भए ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ त्रास अहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते पुनहचरन से कीन्हे मनि तनि प्रभ के चरण गहे ॥ आवण जाणु भरमु भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥ १ ॥ निरभउ होइ भजहु जगदीसै एहु पदारथु वडभागि लहे ॥

कोई बेचारा भला मेरा क्या कर सकता है क्योंकि मेरे प्रभु का प्रताप महान है।। १ ।। उसके चरण कमलों को मन में रखकर मैंने उसका सुमिरन करते हुए सुख प्राप्त किया है। दास नानक तो उसकी शरण में आ पड़ा है जिससे उपर और कुछ नहीं है।। २ ।। १२ ।। ९८।। बिलावलु महला ५ ।। सदैव प्रभु नाम का ही जाप करते रहना चाहिए। ऐसा करने से बुढ़ापा, मौत आदि के दुख प्रभावित नहीं करते और आगे प्रभु के दरबार में भी हमारी कामनाएँ पूरी होती है।। १ ।। रहाउ ।। अहंकार को त्यागकर सदैव उसकी शरण में बने रहना चाहिए और गुरु से यह सुखों का भण्डार प्राप्त करना चाहिए। प्रभु के सच्चे दरबार में पहुँचने का यही एक निशान है जो गुरु से प्राप्त होता है और जिससे जन्म मरण का फन्दा कट जाता है।। १ ।। तुम जो करते हो यदि उसे भला मान लिया जाए तो मन से सारा अभिमान समाप्त हो जाता है। नानक कहता है कि मैं तो उसकी शरण में हूँ जिसका बनाया हुआ यह सारा संसार है।। २ ।। १३ ।। ९९ ।। बिलावलु महला ५ ।। जिसके मन तन में प्रभु बसा हुआ है वह प्रभु के गुण गाते हुए सदैव परोपकार करता जाता है और उसकी जीभ की तो कीमत ही नहीं आँकी जा सकती।। १ ।। रहाउ ।। उसकी समस्त कुलें क्षण भर में ही पार हो जाती हैं और उसकी जन्मों-जन्मों की मैल उतर जाती है। वह अपने प्रभु का सुमिरन करता हुआ आनन्द पूर्वक विषय विकारों के जंगल रूपी इस जीवन को सफलता पूर्वक पार कर जाता है।। १ ।। प्रभु के चरण वह जहाज के रूप में प्राप्त कर लेता है और संसार सागर से पार हो जाता है। सन्त, सेवक सभी उसी प्रभु के भक्त हैं और हे नानक, मेरा मन भी उसी में लगा है।। २ ।। १४ ।। १०० ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, तुम्हारे रंग देखकर मेरे मन में धैर्य आता है। दरअसल तू ही अन्तर्यामी प्रभु है और तू ही साधु पुरुषों के साथ बसता है।। १ ।। रहाउ ।। क्षण भर में ही वह मालिक, कृपा करके व्यक्ति को स्थापित कर देता है और एक नीच कीड़े से उसे राजा बना देता है।। १ ।। दास नानक तो यही दान माँगता है कि वह कभी भी मेरे हृदय से विस्मृत ना हो।। २ ।। १५ ।। १०१ ।। बिलावलु महला ५ ।। वह अटल प्रभु ही पूजा करने योग्य है। वह सभी जीवों का पालन-पोषण करने वाला है और मैं अपना तन मन उस प्रभु को अर्पण करता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। वह शरण देने में समर्थ है, सुखों को देने वाला वह अकथनीय है, कृपा का समुद्र है और महान दयालु है। वह अपने सेवक को गले लगाकर रखता है और उस सेवक को फिर गर्म हवा का झोंका भी नहीं लगता । १ ।। वह प्रभु दयालु और सारी विभूतियों का स्वामी है और सन्तजनों का धन माल भी वही है। नानक याचक बनकर प्रभु का दर्शन माँगता है और यह भी चाहता है कि उसे शान्त पुरुषों की चरण-धूलि मिल जाए।। २ ।। १६ ।। १०२ ।। बिलावलु महला ५ ।। करोड़ों साधकों का काम केवल एक प्रभु के नाम सुमिरन से ही हो जाता है। जब साधसंगति मे मिल बैठकर प्रभु के गुणों का गायन किया जाता है तो यमदूतों को भी भय लगने लगता है।। १ ।। रहाउ ।। मन तन से प्रभु के चरण पकड़ लेने पर जितने भी प्रायश्चित कर्म हैं वे सब उसी में आ जाते हैं। आवागमन, भ्रम और भय भाग खड़े होते हैं और जन्म जन्मान्तरों के पाप जल जाते ।। १ ।। निर्भय होकर प्रभु का भजन करना चाहिए और यह अमूल्य पदार्थ बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है।

करि किरपा पूरन प्रभ दाते निरमल जसु नानक दास कहे ॥ २ ॥ १७ ॥ १०३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ सुलही ते नाराइण राखु ॥ सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काढि कुठारु खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु ॥ मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥ १ ॥ पुत्र मीत धनु किछू न रहिओ सु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥ कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन वाकु ॥ २ ॥ १८ ॥ १०४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पूरे गुर की पूरी सेव ॥ आपे आपि वरतै सुआमी कारजु रासि कीआ गुरदेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि मधि प्रभु अंति सुआमी अपना थाटु बनाइओ आपि ॥ अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परतापु ॥ १ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर वसि कीन्हे जिनि सगले जंत ॥ चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जपि निरमल मंत ॥ २ ॥ १९ ॥ १०५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ताप पाप ते राखे आप ॥ सीतल भए गुर चरनी लागे राम नाम हिरदे महि जाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खंड प्रताप ॥ दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा त्रिसन बुझी मन तन सचु ध्राप ॥ १ ॥ अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल स्रिसटि को माई बापु ॥ भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥ २ ॥ २० ॥ १०६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिस ते उपजिआ तिसहि पछानु ॥ पारब्रहमु परमेसरु धिआइआ कुसल खेम होए कलिआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बड भागी अंतरजामी सुघड़ु सुजानु ॥ हाथ देइ राखे करि अपने बड समरथु निमाणिआ को मानु ॥ १ ॥ भ्रम भै बिनसि गए खिन भीतरि अंधकार प्रगटे चानाणु ॥ सासि सासि आराधै नानकु सदा सदा जाईऐ कुरबाणु ॥ २ ॥ २१ ॥ १०७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दोवै थाव रखे गुर सूरे ॥ हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होए सगले पूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपत सुख सहजे मजनु होवत साधू धूरे ॥ आवण जाण रहे थिति पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे ॥ १ ॥ भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घटि घटि

हे पूर्ण दाता प्रभु, कृपा कर ताकि दास नानक तेरे निर्मल यश का बखान करता रहे।। २ ।। १७ ।। १०३ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु ने सुलही खान से हमारी रक्षा कर दी। सुलही खान का हाथ कहीं भी न पहुँच सका अर्थात वह कुछ भी ना कर सका और इस्लामी विश्वास के अनुसार मरने पर भी नापाक बना रहा।। १ ।। रहाउ ।। स्वामी प्रभु ने अपना शस्त्र निकाल कर उसे मार डाला और क्षण भर में वह मिट्टी में मिल गया। वह दूसरों का बुरा सोचते-सोचते ही मर खप गया और जिस प्रभु ने उसकी रचना की थी उसने ही उसे (मौत के मुँह में) धक्का दे दिया। उसका पुत्र, मित्र, धन आदि कुछ भी नहीं बचा और वह अपने भाईयों और सम्बन्धियों को छोड़कर यहाँ से चलता बना। नानक कहता है कि मैं उस प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने सेवक के पहले कहे वाक्य को पूरा कर दिया।। २ ।। १८ ।। १०४ ।। बिलावलु महला ५।। पूर्ण गुरु की सेवा भी पूर्ण फल देने वाली होती है। वह स्वामी प्रभु स्वयं ही सबमें कार्यशील बना रहता है और गुरुदेव प्रभु ने हमारा कार्य ठीक तरह से निपटा दिया है।। १ ।। रहाउ ।। आदि में, मध्य में और अन्त में वह प्रभु स्वामी ही विद्यमान बना रहता है और अपनी रचना का सिलसिला भी उसने स्वयं ही बनाया है। मेरे प्रभु का प्रताप बहुत महान है और वह अपने सेवक की स्वयं ही रक्षा करता है।। १ ।। वह परब्रह्म परमेश्वर सच्चा गुरु है जिसने सभी जीवों को अपने वश में किया है। हे नानक, प्रभु-नाम के निर्मल मंत्र का जाप करके नानक तो प्रभु की शरण में आ गया है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने कृपा करके अपनी सहायता का हाथ हमारे सिर पर रखा है और यह प्रभु सारे संसार का उद्धार करने वाला तथा नवखण्डों में प्रतापी बना रहने वाला है। हमारे दुख विनष्ट हो गए हैं और आनन्द तथा सुख का प्रवेश हमारे जीवन में हो गया है; हमारी तृष्णा बुझ गई है और हमारा मन तन सत्य प्राप्त करके सन्तुष्ट हो गया है।। १ ।। अनाथों का नाथ वह प्रभु, शरण देने में समर्थ है और वही सारी सृष्टि का माई-बाप है। वह प्रभु भक्त वत्सल और भ्रम नष्ट करने वाला है और नानक आलाप ले-लेकर उसके गुण गाता है।। २ ।। २० ।। १०६ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे जीव, तू जिससे पैदा हुआ है उसकी पहचान कर। हमने तो परब्रह्म परमेश्वर की आराधना की है जिससे हमारा कुशल क्षेम तथा कल्याण हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। हमारे बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु हमें मिल गया है जो कि अन्तर्यामी, सुघड़ और सुजान है। उसने हमें अपना बनाकर तथा अपना हाथ देकर बचा लिया है क्योंकि वह बहुत ही समर्थ और सम्मानहीनों का सम्मान है।। १ ।। क्षण भर में ही हमारे भ्रम और भय विनष्ट हो गये हैं और हमारे अन्तर्मन के अंधकार में प्रकाश प्रकट हो उठा है। उस पर तो सदैव कुर्बान जाते रहना चाहिए और नानक तो हर श्वास के साथ उसी की आराधना करता है।। २ ।। २१ ।। १०७ ।। बिलावलु महला ५।। शूरवीर गुरु ने तो हमारे दोनों स्थान अर्थात इस लोक और परलोक को सफल कर दिया है। परब्रह्म प्रभु ने हमारे इस संसार और परलोक को सँवार दिया है और हमारे सभी कार्य पूरे हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-नाम का जाप करने से हमें स्वाभाविक सुख प्राप्त हो गया है और अब हमारा साधु पुरुषों की चरण-धूलि में स्नान होता है। हमारा आवागमन समाप्त हो गया है हमने स्थिरता प्राप्त कर ली है और हमारे जन्म मरण की चिन्ताएँ मिट गई हैं।। १ ।। भ्रम और भय के सागर से हम तैर गये हैं और यम का भय भी हमारा छूट गया है तथा हमने यह जान लिया है कि घट-घट में

एकु रहिआ भरपूरे ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन अंतरि बाहरि पेखि हजूरे ॥ २ ॥ २२ ॥ १०८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ दरसनु देखत दोख नसे ॥ कबहु न होवहु द्रिसटि अगोचर जीअ कै संगि बसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे सारि सम्हारी ॥ सासि सासि प्रभ तुझहि चितारी ॥ २ ॥ किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ जीअ जंत की करहु प्रतिपाला ॥ ३ ॥ आठ पहर तेरा नामु जनु जापे ॥ नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥ ४ ॥ २३ ॥ १०९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ तनु धनु जोबनु चलत गइआ ॥ राम नाम का भजनु न कीनो करत बिकार निसि भोरु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दंता घसि खीन खइआ ॥ मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दइआ ॥ १ ॥ महा बिकार घोर दुख सागर तिसु महि प्राणी गलतु पइआ ॥ सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभि काढि लइआ ॥ २ ॥ २४ ॥ ११० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ आपना प्रभु आइआ चीति ॥ दुसमन दुसट रहे झख मारत कुसलु भइआ मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गई बिआधि उपाधि सभ नासी अंगीकारु कीओ करतारि ॥ सांति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उर हारि ॥ १ ॥ जीउ पिंडु धनु रासि प्रभ तेरी तूं समरथु सुआमी मेरा ॥ दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥ २ ॥ २५ ॥ १११ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ दास अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥ १ ॥ भई मित्राई मिटी बुराई द्रुसट दूत हरि काढे छाणि ॥ सूख सहज आनंद घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥ २ ॥ २६ ॥ ११२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ पारब्रहम प्रभ भए क्रिपाल ॥ कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू भए निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ कंठि लाइ

वह एक प्रभु ही समाया हुआ है। मानव तो उस दुखों का नाश करने वाले प्रभु को अन्दर बाहर और अपने आसपास देखकर उसकी शरण में आ पड़ा है।। २ ।। २२ ।। १०८ ।। बिलावलु महला ५ ।। उसके दर्शन देखते ही हमारे दोष और पाप भाग खड़े होते हैं। हे प्रभु, कभी भी हमारी दृष्टि से दूर मत होना क्योंकि तुम तो सदैव प्राणों के साथ ही बसने वाले हो।। १ ।। रहाउ ।। वह स्वामी प्रियतम हमारे प्राणों का आधार है और वह अन्तर्यामी प्रभु सर्वत्र फैला हुआ है।।१।। तेरे कौन-कौन से गुणों को मैं मन में सम्भालूं और याद करूं। हे प्रभु, मैं तो हर साँस के साथ तेरा सुमिरन करता रहूँ।।२।। हे दीनदयालु कृपा के भण्डार प्रभु, तुम ही अपने जीव जन्तुओं का पालन पोषण करो।। ३ ।। वह सेवक तो आठों पहर तेरा नाम जपता है और हे नानक, प्रभु ने स्वयं ही अपनी यह प्रीति अपने से लगाई है।। ४ ।। २३ ।। १०९ ।। बिलावलु मः ५ ।। तन, धन और यौवन तो चलते-चलते चले ही गए। प्रभु-नाम का कभी भजन नहीं किया और विकारों में पड़े पड़े ही जीवन रूपी रात्रि से बुढ़ापा रूपी सवेरा हो गया अर्थात मौत का समय आ पहुँचा।। १ ।। रहाउ ।। अनेकों प्रकार के सदैव भोजन खाते हुए मुँह के दाँत घिस कर टूट गए, मेरी-मेरी करता हुआ यह जीव लुटता रहा और पाप करते हुए इसके मन में जरा सी भी दया नहीं आई।। १ ।। अनेकों विकारों के घोर दुख रूपी सागर में पड़ा यह प्राणी गर्क हुआ जाता है परन्तु हे नानक, जब वह स्वामी प्रभु की शरण में आ पड़ता है तो वह प्रभु बाँह पकड़कर इसे बाहर निकाल लेता है।। २ ।। २४ ।। ११० ।। बिलावलु महला ५ ।। अपना प्रभु मेरे चित्त में आ बसा है। शत्रु, दुष्ट तो झख मारते ही रह गए और हे मेरे भाई, मित्र, मुझे तो सब प्रकार का सुख प्राप्त हो गया।। १ ।। रहाउ ।। मेरे सभी रोग और दुख भाग खड़े हुए हैं क्योंकि मुझे कर्ता प्रभु ने स्वीकार कर लिया है। मेरे प्रियतम प्रभु का नाम मेरे हृदय का हार बनकर मेरे पास है इसलिए मुझे बहुत ही आनन्द, शान्ति और सुख प्राप्त हो गया है।। १ ।। हे मेरे समर्थ स्वामी, मेरा प्राण, मेरा शरीर और मेरे धन की रासपूंजी सब तेरी ही है। प्रभु तो अपने दास की रक्षा करने वाला है और दास नानक तो सदैव उसी का ही शिष्य बना हुआ है।। २ ।। २५ ।। १११ ।। बिलावलु महला ५ ।। प्रभु का सुमिरन करके हमारा कल्याण हो गया। हमारे रोग मिट गए हैं और उस अन्तर्यामी प्रभु को जानकर तथा उसका सुमिरन करके हमें सच्चा सुख प्राप्त हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। ये जीव जिसके हैं उस प्रभु ने ही उन्हें सुख दे दिया है और वह प्रभु ही भक्तजनों का सच्चा बल है। अपने दास की इज़्ज़त उसने स्वयं ही रखी है और उसके दास उसी भय भंजन पर गर्व करते हैं।। १ ।। अब हमारी मित्रता हो गई है जिससे हमारे अन्दर की बुराई मिट गई है तथा प्रभु ने भी चुन-चुन कर हमारा बुरा चाहने वाले दुष्टों को हमारे अन्दर से बाहर निकाल फेंका। हमें स्वाभाविक सुख और आनन्द प्राप्त हो गया है तथा नानक तो उस प्रभु के गुणों का बखान कर करके ही जीवित बना रहता है।। २ ।। २६ ।। ११२ ।। बिलावलु महला ५ ।। परब्रह्म प्रभु जब हम पर कृपालु हो गए तो उस सच्चे गुरु ने हमारे सभी काम भली प्रकार कर दिए हैं तथा उसी का सुमिरन करते हुए साधु पुरुष आनन्दित हो उठे हैं।। १ ।। रहाउ ।। जब अपने प्रभु ने हमें अंगीकार कर लिया है तो हमारा बुरा चाहने वाले सभी लोग मिट्टी बन गए हैं अर्थात नष्ट हो गए हैं। प्रभु ने गले से लगाकर

राखे जन अपने उधरि लीए लाइ अपनै पाल ॥ १ ॥ सही सलामति मिलि घरि आए निंदक के मुख होए काल ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा गुर प्रसादि प्रभ भए निहाल ॥ २ ॥ २७ ॥ ११३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥ तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ॥ १ ॥ दिनसु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥ २ ॥ बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी ॥ ३ ॥ जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु क्रिपा ठाकुर अपुनी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ११४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि के चरन जपि जांउ कुरबानु ॥ गुरु मेरा पारब्रहम परमेसुरु ता का हिरदै धरि मन धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखदाता जा का कीआ सगल जहानु ॥ रसना रवहु एकु नाराइणु साची दरगह पावहु मानु ॥ १ ॥ साधू संगु परापति जा कउ तिन ही पाइआ एहु निधानु ॥ गावउ गुण कीरतनु नित सुआमी करि किरपा नानक दीजै दानु ॥ २ ॥ २९ ॥ ११५ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखि लीए सतिगुर की सरण ॥ जै जै कारु होआ जग अंतरि पारब्रहम मेरो तारण तरण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिस्वंभर पूरन सुखदाता सगल समग्री पोखण भरण ॥ थान थनंतरि सरब निरंतरि बलि बलि जांई हरि के चरण ॥ १ ॥ जीअ जुगति वसि मेरे सुआमी सरब सिधि तुम कारण करण ॥ आदि जुगादि प्रभु रखदा आइआ हरि सिमरत नानक नही डरण ॥ २ ॥ ३० ॥ ११६ ॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ ईघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा ॥ आपे ही राजनु आपे ही राइआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥ १ ॥ का कउ दुराउ का सिउ बलबंचा जह जह पेखउ तह तह नेरा ॥ साध मूरति गुरु भेटिओ नानक मिलि सागर बूंद नही अन हेरा ॥ २ ॥ १ ॥ ११७ ॥ बिलावलु महला ५ ॥

अपने सेवकों की रक्षा की है और अपने आँचल से लगाकर उनका उद्धार कर दिया है। हम तो सही सलामत मिलकर अपने घर वापस आ गये हैं परन्तु हमारे निन्दको का मुँह काला हो गया। नानक कहता है कि मेरा सच्चा गुरु पूर्ण है और गुरु की कृपा से ही प्रभु हम पर प्रसन्न है।। २ ।। २७ ।। ११३ ।। बिलावलु महला ५ ।। मुझे उस प्यारे प्रेमी प्रभु के साथ प्रेम हो गया है।। रहाउ ।। हे प्रभु, तुम्हारे प्रेम की डोरी ऐसी कस कर तनी हुई है कि अब वह तोड़ने से ना तो टूटेगी और छोड़ने से भी वह छूट नहीं पाएगी।। १ ।। दिन-रात वह हमारे मन में बसता है और हे प्रभु, तू अपनी कृपा बनाये रख।। २ ।। मैं अपने उस सुन्दर प्रभु पर बलिहारी जाता हूँ जिसके बारे में सुना जाता है कि उसकी महिमा का कथन नहीं किया जा सकता।। ३ ।। दास नानक जो कि तुम्हारे दासों का भी दास है कहता है कि हे प्रभु, मुझ पर अपनी कृपा बनाए रखो।। ४ ।। २८ ।। ११४ ।। बिलावलु महला ५ ।। मैं प्रभु के चरणों का सुमिरन करके उस पर कुर्बान जाता हूँ। परब्रह्म परमेश्वर ही मेरा गुरु है और हे मन, तू अपने हृदय में उसी का ध्यान कर।। १ ।। रहाउ ।। तू सुखदाता प्रभु का सुमिरन करता रह जिसने सारे संसार को बनाया है। अपनी जीभ से उस एक प्रभु का ही सुमिरन करते रहो और इस प्रकार उस सच्चे दरबार में सम्मान को प्राप्त करो।। १ ।। साधु पुरुषों की संगति जिसे प्राप्त हो गई है उसी को ही यह प्रभु रूपी भण्डार प्राप्त होता है। हे प्रभु, मैं सदैव तुम्हारे गुणों की कीर्ति का गायन करता रहता हूँ; अतः नानक को कृपा करके अपनी कीर्ति गायन का दान दे दो।। २ ।। २६ ।। ११५ ।। बिलावलु महला ५ ।। सच्चे गुरु की शरण में प्रभु ने मुझे बचा लिया। वह परब्रह्म प्रभु ही मुझे पार उतारने वाला है और अब सारे संसार में हमारी जय-जयकार हो रही है।। १ ।। रहाउ ।। सारे संसार में व्याप्त बना रहने वाला पूर्ण सुखदाता और संसार रचना की सारी सामग्री का भरण पोषण करने वाला वह प्रभु है। स्थान स्थानान्तरों में सदैव निरन्तर बना रहने वाला वह प्रभु है और मैं उस प्रभु के चरणों पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। सभी जीवों के प्रबन्ध की युक्तियाँ हे मेरे स्वामी, तुम्हारे वश में हैं और तुम ही सभी सिद्धियों के मूल कारण करन हो। आदि और युगादि काल से प्रभु ही हमारी इज़्ज़त बचाता आ रहा है और हे नानक, प्रभु के सुमिरन से अब किसी प्रकार का भी भय नहीं हैं।। २ ।। ३० ।। ११६ ।।

रागु बिलावलु महला ५ दोपदे घरु ८ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, सब कुछ तेरा ही है मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। एक ओर तो वह निर्गुण बना हुआ है और दूसरी और उसी का सगुण स्वरूप है; दोनों अवस्थाओं के बीच मेरा मालिक आनन्द पूर्वक बना हुआ रचना का खेल खेल रहा है।। १ ।। रहाउ ।। शरीर रूपी नगर में भी वह स्वयं ही है और इससे बाहर भी वही है और इस प्रकार मेरे प्रभु का बसेरा तो सभी में है। वह स्वयं ही राजा है स्वयं ही प्रजा है। कहीं-कहीं पर तो वह ही ठाकुर है और कहीं-कहीं वह ही नौकर होकर कार्यशील है।। १ ।। अब मैं किससे छिपाऊँ और किसके साथ धोखाधड़ी करूँ क्योंकि मैं जहाँ-जहाँ देखता हूँ वह वहीं पर मेरे पास ही होता है। साधु के रूप वाले गुरु से नानक का मिलाप हो गया है और वह सागर में बूंद की तरह लीन हो गया है तथा अब उससे अलग दिखाई नहीं देता।। २ ।। १ ।। ११७ ।। बिलावलु महला ५ ।।

तुम्ह समरथा कारन करन ॥ ढाकन ढाकि गोबिद गुर मेरे मोहि अपराधी सरन चरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो कीनो सो तुम्ह जानिओ पेखिओ ठउर नाही कछु ढीठं मुकरन ॥ बड परतापु सुनिओ प्रभ तुम्हरो कोटि अघा तेरो नाम हरन ॥ १ ॥ हमरो सहाउ सदा सद भूलन तुम्हरो बिरदु पतित उधरन ॥ करुणा मै किरपाल क्रिपा निधि जीवन पद नानक हरि दरसन ॥ २ ॥ २ ॥ ११८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी किरपा मोहि करहु ॥ संतह चरण हमारो माथा नैन दरसु तनि धूरि परहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु ॥ तसकर पंच निवारहु ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु ॥ १ ॥ जो तुम्ह करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु ॥ नानक के प्रभ तुम ही दाते संतसंगि ले मोहि उधरहु ॥ २ ॥ ३ ॥ ११९ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥ तुम्हरो धिआनु तुम्हारो रंगा ॥ तुम्हरी सेवा तुम्हारे अंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन की टहल संभाखनु जन सिउ ऊठनु बैठनु जन कै संगा ॥ जन चर रज मुखि माथै लागी आसा पूरन अनंत तरंगा ॥ १ ॥ जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन तीरथ कोटि गंगा ॥ जन की धूरि कीओ मजनु नानक जनम जनम के हरे कलंगा ॥ २ ॥ ४ ॥ १२० ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ॥ पारब्रहम परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम्ह पिता किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुण गुणु नाही कोई पहुचि न साकउ तुम्हरी घाल ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानहु जीउ पिंडु सभु तुमरो माल ॥ १ ॥ अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहु हाल ॥ तनु मनु सीतलु होइ हमारो नानक प्रभ जीउ नदरि निहाल ॥ २ ॥ ५ ॥ १२१ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥ तू हमरो प्रीतमु मनमोहनु तुझ बिनु जीवनु सगल अकाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रंक ते राउ करत खिन भीतरि प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ जलत अगनि महि जन आपि उधारे करि अपुने दे राखे हाथ ॥ १ ॥ सीतल सुखु पाइओ मन त्रिपते हरि सिमरत स्रम सगले लाथ ॥ निधि निधान नानक हरि सेवा अवर सिआनप सगल अकाथ ॥

हे समर्थ प्रभु, तुम ही सबका मूल कारण हो तथा तुम ही सब कुछ करने वाले हो। हे मेरे प्रभु, तुम ही मेरे पर्दो को ढक लो क्योंकि मैं अपराधी अब तुम्हारे चरणों की शरण में आ गया हूँ।। १ ।। रहाउ ।। मैंने जो कुछ भी किया है वो तुम जान गए हो और अब ढीठ बनकर उससे मुकरने का कोई रास्ता नहीं है। हे प्रभु, मैंने तुम्हारा बड़ा प्रताप सुना है कि तुम्हारा नाम करोड़ों पापों को दूर कर देने वाला है।। १ ।। मेरा स्वाभाव तो सदैव घूमते रहना ही है परन्तु तुम्हारा स्वाभाव पतितों का उद्धार करना ही है। हे करुणामय कृपालु, कृपानिधि प्रभु, तेरा दर्शन तो नानक को आध्यात्मिक जीवन का पद देने वाला है।। २ ।। २ ।। ११८ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, मुझ पर ऐसी कृपा करो कि हमारे माथे सन्तजनों के चरणों पर हो, हमारी आँखे उनका दर्शन करती रहें और हमारे शरीर पर उनकी चरण-धूलि पड़ती रहे।। १ ।। रहाउ ।। शब्द-गुरु मेरे हृदय में बस जाए और प्रभु-नाम मेरे मन के साथ लगा रहे। पाँचों चोरों को हे प्रभु, दूर भगा दो और सभी भ्रमों को अग्नि में डालते हुए जला दो।। १ ।। जो तुम करो उसी को हम भला माने और दुविधा की भटकन हमसे दूर कर दो। हे प्रभु, नानक के दाता तो तुम ही हो और सन्त पुरुषों की संगति में लेकर मेरा उद्धार कर दो।। २ ।। ३ ।। ११९ ।। बिलावलु महला ५ ।। मैं ऐसी शिक्षा तुम्हारे भक्तों से माँगता हूँ कि तुम्हारा ध्यान और तुम्हारा ही रंग मुझे लगा रहे। तुम्हारी मैं सेवा करूं और तुम्हारे ही साथ लगा रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। तेरे सेवक की सेवा, तेरे सेवक के साथ ही संवाद और तेरे सेवक के साथ ही मेरा उठना बैठना बना रहे। जब तेरे सेवकों की चरण धूलि मेरे मुख और माथे पर लग गई तो मेरे मन की अनेकों लहरों से पैदा हुई आशाएँ पूरी हो गई हैं।। १ ।। परब्रह्म के सेवक की महिमा पवित्र है और उस सेवक के चरण गंगा पर बसे करोड़ों तीर्थो के समान हैं। हे नानक, जब प्रभु के सेवक की चरण धूलि में स्नान कर लिया गया तो जन्मों जन्मान्तरों के कलंक और पाप दूर हो गए हैं।। २ ।। ४ ।। १२० ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, तुझे जैसे भी अच्छा लगे मेरी पालना कर। हे परब्रह्म परमेश्वर सच्चे गुरु, हम तो बालक हैं और तुम हमारे कृपालु पिता हो।। १ ।। रहाउ ।। मैं गुण विहीन हूँ अर्थात मुझमें कोई गुण नहीं है और मैं तुम्हारी ऊँची अवस्था तक नहीं पहुँच सकता हूँ। हे प्रभु, अपनी ऊँची अवस्था और मर्यादा की सीमा के बारे में तुम ही जानते हो; यह जीव और शरीर सब तुम्हारा ही माल है।। १ ।। हे अन्तर्यामी सर्वव्यापक स्वामी, तुम बिना बोले ही हमारा सारा हाल जान लेते हो। हे प्रभु, नानक कहता है कि तुम अपनी कृपादृष्टि से हमें सुखी कर दो जिससे हमारा तन और मन शीतल हो जाएगा।। २ ।। ५ ।। १२१ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, हमें सदैव अपने साथ ही बनाए रहो। तू ही हमारा मनमोहन प्रीतम है तथा तेरे बिना हमारा सारा जीवन व्यर्थ है।। १ ।। रहाउ ।। अनाथों का नाथ मेरा प्रभु क्षण भर में ही रंक से राजा बना देता है। तृष्णाओं की जलती अग्नि में से अपना हाथ देकर वह अपने सेवकों को बचा लेता है।।१।। मन के तृप्त होने से हमें शीतल सुख प्राप्त हो गया है और प्रभु के सुमिरन से हमारे भाग दौड़ के सभी श्रम समाप्त हो गए हैं। सभी निधियों के भण्डार हे नानक, प्रभु की सेवा में ही हैं; अन्य चतुराईयाँ तो व्यर्थ ही हो जाती हैं

२ ॥ ६ ॥ १२२ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहु ॥ उरि लागहु सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे दोख रिदै मत धारहु ॥ जीवन प्रान हरि धनु सुखु तुम ही हउमै पटलु क्रिपा करि जारहु ॥ १ ॥ जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहनु कत बारो ॥ जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥ २ ॥ ७ ॥ १२३ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ आगै पाछै कुसलु भइआ ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी पारब्रहमि प्रभि कीनी मइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि रवि रहिआ हरि प्रीतमु दूख दरद सगला मिटि गइआ ॥ सांति सहज आनद गुण गाए दूत दुसट सभि होए खइआ ॥ १ ॥ गुनु अवगुनु प्रभि कछु न बीचारिओ करि किरपा अपुना करि लइआ ॥ अतुल बडाई अचुत अबिनासी नानकु उचरै हरि की जइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ १२४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ बिनु भै भगती तरनु कैसे ॥ करहु अनुग्रहु पतित उधारन राखु सुआमी आप भरोसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरनु नही आवत फिरत मद मावत बिखिआ राता सुआन जैसे ॥ अउध बिहावत अधिक मोहावत पाप कमावत बुडे ऐसे ॥ १ ॥ सरनि दुख भंजन पुरख निरंजन साधू संगति रवणु जैसे ॥ केसव कलेस नास अघ खंडन नानक जीवत दरस दिसे ॥ २ ॥ ९ ॥ १२५ ॥

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ९ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आपहि मेलि लए ॥ जब ते सरनि तुमारी आए तब ते दोख गए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु अरु चिंत बिरानी साधह सरन पए ॥ जपि जपि नामु तुम्हारो प्रीतम तन ते रोग खए ॥ १ ॥ महा मुगध अजान अगिआनी राखे धारि दए ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ आवन जान रहे ॥ २ ॥ १ ॥ १२६ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ जीवउ नामु सुनी ॥ जउ सुप्रसंन भए गुर पूरे तब मेरी आस पुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीर गई बाधी मनि धीरा मोहिओ अनद धुनी ॥ उपजिओ चाउ मिलन प्रभ प्रीतम रहनु न जाइ

।। २ ।। ६ ।। १२२ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, अपने सेवक को कभी भी ना भूलना। हे प्रभु, पूर्व जन्मों की लगी हुई प्रीति का ध्यान रखकर आओ और मेरे हृदय से लग जाओ।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तुम्हारा स्वाभाव पतितों को पवित्र करने वाला है इसलिये हमारे दोषों को अपने हृदय में ना विचारो। हमारे जीवन प्राणों का धन हे प्रभु, तुम ही हो और हमारा सुख भी तुम ही हो; कृपा करके हमारे अहंकार का पर्दा जला डालो।। १ ।। पानी के बिना भला मछली के लिये जीवन कैसे सम्भव हो सकता है और दूध के बिना बच्चा कैसे रह सकता है। दास एवं भक्तजनों को हे नानक, चरण कमलों की ही प्यास बनी रहती है; हे स्वामी, तुम्हारे दर्शन को देखना ही सभी सुखों का सार तत्व है।। २ ।। ७ ।। १२३ ।। बिलावलु महला ५ ।। अब मेरे आगे पीछे अर्थात सभी ओर आनन्द ही आनन्द हो गया है। पूर्ण गुरु ने पूरी तरह से हमें बचा लिया है और परब्रह्म प्रभु ने हम पर दया कर दी है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु प्रियतम हमारे मन तन में रमण कर रहा है और हमारा सारा दुख दर्द मिट गया है। शान्ति और सहज पूर्वक आनंदित होकर हमने प्रभु के गुण गाए हैं जिससे यमदूत एवं अन्य दुष्ट सभी नष्ट हो गए हैं।। १ ।। प्रभु ने मेरे किसी भी गुण दोष का विचार नहीं किया और कृपा करके मुझे अपना बना लिया; उस अटल एवं अविनाशी प्रभु की महानता अतुलनीय है और नानक तो प्रभु की जय-जयकार का उच्चारण करता है।। २ ।। ८ ।। १२४ ।। बिलावलु महला ५ ।। बिना प्रभु के भय और भक्ति के भला संसार सागर से कैसे तैरा जा सकता है। हे पतितों का उद्धार करने वाले प्रभु अपनी कृपा करो और हमें अपने भरोसे में बनाए रखो।। १ ।। रहाउ ।। मुझे सुमिरन नहीं करना आता और मैं माया के मद में मस्त होकर घूम रहा हूँ तथा मैं कुत्ते की तरह विषयों के ज़हर में लिपटा पड़ा हूँ। जैसे जैसे मेरी आयु व्यतीत हो रही है मैं अधिक मोह में ग्रस्त हो रहा हूँ और पाप करता हुआ डूब रहा हूँ। हे दुख भंजन और निरंजन प्रभु, मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ मुझ पर कृपा करो ताकि जैसे भी हो सके मैं साधसंगति में सुमिरन कर सकूँ। नानक तो दुखों का नाश करने वाले और पापों को दूर करने वाले प्रभु का दर्शन करके ही जीवित बना रहता है। २ ।। ६ ।। १२५ ।।

रागु बिलावलु महला ५ दोपदे घरु ८ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु ने हमें स्वयं ही अपने से मिला लिया है। हे प्रभु, जबसे हम तुम्हारी शरण में आए हैं हमारे सभी पाप भाग गये हैं ।। १ ।। रहाउ ।। हम अभिमान त्यागकर और निंदा के उद्देश्य से दूसरों की चिन्ता छोड़कर साधु पुरुष गुरु की शरण में आ गए हैं। हे प्रियतम, तुम्हारे नाम का सुमिरन करते-करते तन से रोगों का नाश हो गया है।। १।। मैं महामूर्ख अनजान और अज्ञानी हूँ। प्रभु ने कृपा धारण करके मुझे बचा लिया है। नानक का कथन है कि जब पूरा गुरु मिल गया तो हमारा आना जाना समाप्त हो गया है।। २ ।। १ ।। १२६ ।। बिलावलु महला ५ ।। मैं उस प्रभु का नाम सुनकर ही जीवित बना रहता हूँ। जब पूर्ण गुरु प्रसन्न हो गया तब मेरी आशाएँ पूरी हो गई।। १ ।। रहाउ ।। मेरे हृदय की पीड़ा समाप्त हो गई है और मन को धीरज बँध गया है; मैं उसके अनहद नाद की धुन में मोहित हो गया हूँ। अब मेरे हृदय में उस प्रीतम प्रभु को मिलने का चाव पैदा हो गया है और उसके बिना एक क्षण भी नहीं रहा जा

खिनी ॥ १ ॥ अनिक भगत अनिक जन तारे सिमरहि अनिक मुनी ॥ अंधुले टिक निरधन धनु पाइओ प्रभ नानक अनिक गुनी ॥ २ ॥ २ ॥ १२७ ॥

रागु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मोहन नीद न आवै हावै हार कजर बसत्र अभरन कीने ॥ उडीनी उडीनी उडीनी ॥ कब घरि आवै री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरनि सुहागनि चरन सीसु धरि ॥ लालनु मोहि मिलावहु ॥ कब घरि आवै री ॥ १ ॥ सुनहु सहेरी मिलन बात कहउ सगरो अहं मिटावहु तउ घर ही लालनु पावहु ॥ तब रस मंगल गुन गावहु ॥ आनद रूप धिआवहु ॥ नानकु दुआरै आइओ ॥ तउ मै लालनु पाइओ री ॥ २ ॥ मोहन रूपु दिखावै ॥ अब मोहि नीद सुहावै ॥ सभ मेरी तिखा बुझानी ॥ अब मै सहजि समानी ॥ मीठी पिरहि कहानी ॥ मोहनु लालनु पाइओ री ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२८ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ मोरी अहं जाइ दरसन पावत हे ॥ राचहु नाथ ही सहाई संतना ॥ अब चरन गहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आहे मन अवरु न भावै चरनावै चरनावै उलझिओ अलि मकरंद कमल जिउ ॥ अन रस नही चाहै एकै हरि लाहै ॥ १ ॥ अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ ॥ मन हरि रस घूटीऐ संगि साधू उलटीऐ ॥ अन नाही नाही रे ॥ नानक प्रीति चरन चरन हे ॥ २ ॥ २ ॥ १२९ ॥

रागु बिलावलु महला ९ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥ अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥ १ ॥ अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥ नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ १॥ बिलावलु महला ९ ॥ हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥ भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही

सकता।। १ ।। हे प्रभु, तूने अनेकों भक्तों और सेवकों को पार उतारा है और अनेकों मुनिजन तेरा सुमिरन करते हैं। हे नानक, वह प्रभु अंधे का आसरा और निर्धन के पास धन रूप में आने वाला तथा अनेकों प्रकार के गुणों वाला है।। २ ।। २ ।। १२७ ।।

रागु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे सुन्दर प्यारे प्रभु, आहें भरते हुए मुझे नींद नहीं आती हांलाकि मैंने बेशक काजल, हार, वस्त्र और गहने आदि से पूरा शृंगार किया है। मैं उदास हूँ बहुत उदास हूँ और यह सोचकर उदास बनी हूँ कि वह कब घर आएगा।। १ ।। रहाउ ।। सुहागिन (प्रभु पति की प्यारी) स्त्रियों की शरण में जाती हूँ, उनके चरणों पर सिर टिका कर उनसे विनती करती हूँ कि मेरा प्यारा प्रभु मुझे मिला दो। पता नहीं वह कब घर आएगा।। १ ।। सुहागिन रूपी गुरु से यह उत्तर मिलता है कि हे सत्संगी सहेली, मैं तुझको पति के मिलाप की बात कहती हूँ; तुम अपना सारा अहंकार मिटा दो तो तुम्हें घर ही में वह प्यारा प्रभु मिल जाएगा; तब तुम रसपूर्ण मंगल गीतों के माध्यम से उसके गुणों का गायन करती रहो। आनन्द स्वरूप प्रभु का सुमिरन करो। नानक तो हे प्रभु, तेरे द्वार पर आ गया है और तभी मैं उस प्यारे प्रभु को पा सका हूँ।। २ ।। उस मनमोहक प्रभु ने अपना रूप दिखाया है और अब मुझे नींद अच्छी लगने लगी। मेरी सारी प्यास बुझ गई और अब मैं स्वाभाविक रूप से सुख में लीन हो गई हूँ। प्रियतम की वार्ता मीठी लगती है और मैंने उस मोहन प्रभु को पा लिया है।। रहाउ दूसरा ।। १ ।। १२८ ।। बिलावलु महला ५ ।। उसका दर्शन करते ही मेरा अहंकार चला जाता है। सन्तों के सहायक प्रभु में ही लीन बने रहो और अब मैंने प्रभु के चरण पकड़ लिए हैं।। १ ।। राहउ ।। मेरा मन अन्य किसी को नही चाहता और उसी के चरणों में ऐसे उलझा हूँ जैसे भंवरा बार-बार कमल के मकरन्द से लिपटता रहता है। मैं अन्य किसी रस को नहीं चाहता और केवल एक प्रभु को ही ढूँढता हूँ।। १ ।। जब अन्य विषय विकारों से दोस्ती टूट जाती है तो मारने वाले धर्मराज से भी छुटकारा मिल जाता है। मन में प्रभु के रस का पाठ किया जाता है और साधु पुरुषों की सत्संगति में माया की ओर से मन को उलटाया जाता है। प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं और हे नानक, प्रीति वास्तव में उसी के चरणों से लगाई जाती है।। २ ।। २ ।। १२९ ।।

रागु बिलावलु महला ९ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

दुखों को दूर करने वाले प्रभु नाम की पहचान करो। मन में यह जान लो कि अजामिल, गणिका आदि उसी का सुमिरन करके मुक्त हुए हैं।। १ ।। रहाउ ।। जैसे ही प्रभु-नाम का उच्चारण किया गया तो गजराज का भय भी क्षण भर में समाप्त हो गया। नारद ने उपदेश दिया और बालक ध्रुव ने उसे सुना तथा वह प्रभु सुमिरन में लीन हो गया।। १ ।। उसने अचल, अमर और निर्भय बने रहने का पद प्राप्त कर लिया जिससे सारा संसार आश्चर्यचकित हो उठा। नानक का कथन है कि प्रभु भक्त-रक्षक है और उसे तुम अपने पास ही समझो।। २ ।। १ ।। बिलावलु महला९।। व्यक्ति प्रभु-नाम के बिना दुखी बना रहता है। प्रभु भक्ति के बिना संशय दूर नहीं होता और गुरु ही इस रहस्य को समझाता है।। १ ।। रहाउ ।। यदि व्यक्ति प्रभु की शरण में नहीं आ सका तो तीर्थ, व्रत आदि करने से भला क्या होगा।

आवै ॥ जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥ १ ॥ मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥ २ ॥ २ ॥ बिलावलु महला ९ ॥ जा मै भजनु राम को नाही ॥ तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥ निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥ १ ॥ जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥ तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥ २ ॥ कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥ कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥ ३ ॥ ३ ॥

बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १० १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

निकटि वसै देखै सभु सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ विणु भै पइऐ भगति न होई ॥ सबदि रते सदा सुखु होई ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु पदारथु नामु ॥ गुरमुखि पावसि रसि रसि मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु गिआनु कथै सभु कोई ॥ कथि कथि बादु करे दुखु होई ॥ कथि कहणै ते रहै न कोई ॥ बिनु रस राते मुकति न होई ॥ २ ॥ गिआनु धिआनु सभु गुर ते होई ॥ साची रहत साचा मनि सोई ॥ मनमुख कथनी है परु रहत न होई ॥ नावहु भूले थाउ न कोई ॥ ३ ॥ मनु माइआ बंधिओ सर जालि ॥ घटि घटि बिआपि रहिओ बिखु नालि ॥ जो आंजै सो दीसै कालि ॥ कारजु सीधो रिदै सम्हालि ॥ ४ ॥ सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई ॥ मनमुखि हउमै पति गवाई ॥ आपे करतै भगति कराई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ ५ ॥ रैणि अंधारी निरमल जोति ॥ नाम बिना झूठे कुचल कछोति ॥ बेदु पुकारै भगति सरोति ॥ सुणि सुणि मानै वेखै जोति ॥ ६ ॥ सासत्र सिम्रिति नामु द्रिड़ामं ॥ गुरमुखि सांति ऊतम करामं ॥ मनमुखि जोनी दूख सहामं ॥ बंधन तूटे इकु नामु वसामं ॥ ७ ॥ मंने नामु सची पति पूजा ॥ किसु वेखा नाही को दूजा ॥ देखि कहउ भावै मनि सोइ ॥ नानकु कहै

जो प्रभु के गुणानुवाद को भुला देता है उसका योग, यज्ञ आदि सभी निरर्थक हैं।। १ ।। मान, मोह दोनों त्यागकर यदि प्रभु के गुण गाये जाए तो नानक का कथन है कि इस मुक्ति वाला प्राणी ही जीवन मुक्त कहलाता है।। २ ।। २ ।। बिलावलु महला ६ ।। जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में प्रभु का भजन नहीं है वह व्यक्ति अपना जन्म निरर्थक ही खो बैठा है; इस बात को मन में पूरी तरह बसा लो।। १ ।। रहाउ ।। जिसका मन वश में नहीं हैं और फिर भी वह तीर्थ और व्रत करता जा रहा है तो उसका यह सारा कर्मकाण्ड निष्फल मानो; मैं यह सत्य बात कह रहा हूँ।। १ ।। जिस प्रकार जल में रखे पत्थर के अन्दर पानी नहीं पहुँच पाता उसी प्रकार भक्ति से विहीन प्राणी को तुम समझ लो।। २ ।। गुरु यही रहस्य बताता है कि कलियुग में प्रभु-नाम के माध्यम से ही मुक्ति मिलती है। नानक का कथन है कि वही व्यक्ति भाग्यशाली और बड़प्पन वाला है जो प्रभु के गुण गाता है।। ३ ।। ३ ।।

बिलावलु अष्टपदियाँ महला १ घरु १० १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह प्रभु पास ही बसता है और सब कुछ देखता है। इस रहस्य को गुरमुख बनकर कोई बिरला ही जान पाता है। मन में भय रखे बगैर प्रभु भक्ति नहीं होती। जो शब्द में लीन बने रहते हैं उन्हें सदैव सुख मिलता रहता है।। १ ।। ज्ञान रूपी पदार्थ नाम ऐसा है कि गुरमुख बनकर उसका रस सम्मानपूर्वक अनुभव किया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। ज्ञान ध्यान की बातें सब करते हैं और कहते-कहते वाद विवाद करते हुए दुखी होते हैं। केवल कहते चले जाने से कोई भी बाज नहीं आता परन्तु वास्तविकता यही है कि प्रभु-नाम के रस में लीन हुए बिना मुक्ति नहीं मिलती।। २ ।। ज्ञान, ध्यान सब गुरु से ही होता है और सच्चा आचरण तभी माना जाता है जब वह सत्य प्रभु मन में समाया हुआ हो। मनमुख व्यक्ति बात तो करता है पर उस पर आचरण नहीं करता। प्रभु-नाम जिन्होंने भुला दिया उन्हें कोई भी ठिकाना नहीं मिलता।। ३ ।। मन-माया के सरोवर के जाल में बंधा है। प्रत्येक जीव के हृदय में जाल विषय विकारों के रूप में बिछा पड़ा है। जो भी पैदा होता है वह काल के अधीन दिखाई पड़ता है परन्तु हृदय में प्रभु को याद करके ही हमारा कार्य सिद्ध होता है।। ४ ।। ज्ञानी वही है जिसने अपनी लौ शब्द में लगाई है। मनमुख व्यक्ति ने तो अहंकार में पड़कर अपना सम्मान ही गँवाया है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही अपनी भक्ति करवाता है और गुरमुख व्यक्ति को स्वयं ही बड़प्पन प्रदान करता है।। ५ ।। जीवन रूपी रात्रि अंधकार स्वरूप है परन्तु इसमें प्रभु की निर्मल ज्योति से प्रकाश होता है। प्रभु-नाम से विहीन लोग झूठे, मैले और अछूत हैं। वेद भी पुकार-पुकार कर भक्ति के स्रोत की बात कहते हैं और इन्हें सुनकर समझकर जो मानता है वही प्रभु की परम ज्योति को देख पाता है।। ६ ।। शास्त्र और स्मृतियाँ भी वास्तव में प्रभु-नाम की ही शिक्षा देती हैं परन्तु वास्तव में शान्ति गुरमुख बनकर और उत्तम आचरण बनाकर ही प्राप्त होती है। मनमुख व्यक्ति योनियों में पड़ा दुख सहता रहता है परन्तु हृदय में प्रभु-नाम बसा लेने से ही बन्धन टूट जाते हैं।। ७ ।। जो प्रभु-नाम को मानता है उसी का सच्चा सम्मान और सच्ची पूजा कही जा सकती है। मैं किसे देखूं जबकि दूसरा तो कोई है ही नहीं। सब कुछ देखकर मैं यही कहता और मानता हूँ कि वह प्रभु ही मेरे मन को भाता है। नानक कहता है कि

अवरु नही कोइ ॥ ८ ॥ १ ॥ बिलावलु महला १ ॥ मन का कहिआ मनसा करै ॥ इहु मनु पुंनु पापु उचरै ॥ माइआ मदि माते त्रिपति न आवै ॥ त्रिपति मुकति मनि साचा भावै ॥ १ ॥ तनु धनु कलतु सभु देखु अभिमाना ॥ बिनु नावै किछु संगि न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीचहि रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ धनु लोकां तनु भसमै ढेरी ॥ खाकू खाकु रलै सभु फैलु ॥ बिनु सबदै नही उतरै मैलु ॥ २ ॥ गीत राग घन ताल सि कूरे ॥ त्रिहु गुण उपजै बिनसै दूरे ॥ दूजी दुरमति दरदु न जाइ ॥ छूटै गुरमुखि दारू गुण गाइ ॥ ३ ॥ धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥ अंतरि क्रोधु पड़हि नाट साला ॥ नामु विसारि माइआ मदु पीआ ॥ बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥ ४ ॥ सूकर सुआन गरधभ मंजारा ॥ पसू मलेछ नीच चंडाला ॥ गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोनि भवाईऐ ॥ बंधनि बाधिआ आईऐ जाईऐ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ साची दरगह पूछ न होइ ॥ माने हुकमु सीझै दरि सोइ ॥ ६ ॥ सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥ हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ काल बिकाल सबदि भए नासु ॥ ७ ॥ रहै अतीतु जाणै सभु तिस का ॥ तनु मनु अरपै है इहु जिस का ॥ ना ओहु आवै ना ओहु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

बिलावलु महला ३ असटपदी घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥ अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥ बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥ १ ॥ सतिगुर सेवि नामु वसै मनि चीति ॥ गुरु भेटे हरि नामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ साचै नाइ वडाई पावहु ॥ २ ॥ आपि न बूझै लोक बुझावै ॥ मन का अंधा अंधु कमावै ॥ दरु घरु महलु ठउरु कैसे पावै ॥ ३ ॥ हरि जीउ सेवीऐ अंतरजामी ॥ घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ॥ तिसु नालि किआ चलै

उस प्रभु के सिवा दूसरा कोई भी नहीं।। ८ ।। १ ।। बिलावलु महला १ ।। मन जो भी कहता है, अपनी इच्छा के अनुरूप वही करता है। यही मन पाप और पुण्य का भी कथन करता रहता है। माया के मद में लीन इसकी सन्तुष्टि नहीं होती परन्तु वास्तव में तृप्ति और मुक्ति यही है कि मन को वह सच्चा प्रभु भा जाए।। १ ।। हे मन, तू यह देख कि शरीर, धन और स्त्री आदि ये सभी अभिमान का ही रूप हैं; प्रभु-नाम के बिना कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है।। १ ।। रहाउ।। तू मन में ही आई हुई खुशियों और रसों का उपभोग करता रहता है परन्तु तेरा धन तो पीछे लोगों के लिये ही रह जाएगा और तेरा तन केवल राख की ढेरी ही बनेगा। यह सारा प्रपंच ऐसा ही है कि मिट्टी तो अन्ततः मिट्टी में ही मिल जाती है। शब्द-गुरु के बिना मन पर लगी मैल नहीं उतरती।। २ ।। प्रभु प्रेम से विहीन रागु नाद ताल इत्यादि सभी झूठे हैं क्योंकि इनके माध्यम से केवल तीन गुण (रजो, तमो, सत्व) ही पैदा होते हैं। द्वैतभाव की दुर्मति में लिप्त होने से दुख दूर नहीं होता। गुरमुख बनकर ही व्यक्ति छूटता है और दुखों की औषधि प्रभु का गुणानुवाद ही है।। ३ ।। हे जीव, तेरी धोती तो उज्जवल है, तूने तिलक भी लगा रखा है और तेरे गले में माला भी है परन्तु जिनके अन्तर्मन में क्रोध है वे प्रभु की वाणी का पाठ करते हुए भी ऐसे लगते हैं जैसे नाट्यशाला में कोई अभिनय कर रहा हो। जिसने प्रभु-नाम को भुलाकर माया के मद को पी रखा है उसे गुरु-भक्ति के बिना कभी भी सुख प्राप्त नहीं होता।। ४ ।। सुअर, कुत्ता, गधा, बिल्ली आदि पशु हैं; इसी प्रकार जीवों में पशु मलेच्छ, चाण्डाल और अनेकों नीच जीव हैं। जो गुरु से मुँह फेर लेता है उसे इन सब की योनियों में भटकाया जाता है और बन्धनों से बँधा हुआ वह आवागमन में पड़ा रहता है।। ५ ।। गुरु की सेवा से ही प्रभु-नाम रूपी पदार्थ प्राप्त होता है और जिसके हृदय में प्रभु नाम है वह सदैव कृतार्थ अर्थात सफल बना रहता है। प्रभु के सच्चे दरबार में उसकी कोई जाँच पड़ताल नहीं होती और जो प्रभु के हुकुम को मानता है वही उसके द्वार पर सफल होता है।। ६ ।। सच्चा गुरु यदि मिल जाए तो उस प्रभु को जाना जाता है और तभी व्यक्ति प्रभु के हुकुम को पहचानता हुआ और उसे रज़ा रूप में मानता हुआ उसके अनुकूल बना रहता है। हुकुम की पहचान कर लेने से सच्चे प्रभु के द्वार पर ठिकाना मिल जाता है और शब्द के माध्यम से जन्म और मृत्यु का नाश हो जाता है।। ७ ।। सब कुछ उस प्रभु का ही मानते हुए व्यक्ति सदैव निर्लिप्त बना रहे और यह तन मन जिसका है उस प्रभु को ही अर्पण कर दे। ऐसा व्यक्ति ना तो फिर आता है और ना यहाँ से जाता है तथा हे नानक, वह स्वयं सत्य रूप होकर उस परम सत्य में लीन हो जाता है।। ८ ।। २ ।।

बिलावलु महला ३ अष्टपदी घरु १० १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

यह संसार तो कौओ की तरह है और इसकी चोंच में तो ज्ञान की बातें हैं परन्तु हृदय में लोभ, झूठ और अभिमान बने हुए हैं। प्रभु-नाम से विहीन अंततः इसका पर्दा उठ जाता है अर्थात सभी लोग इसके बारे में जान जाते हैं।। १ ।। सच्चे गुरु की सेवा से मन तथा चित में प्रभु-नाम का निवास होता है। गुरु मिलने से वह प्रभु-नाम का सुमिरन करवाता है और बिना प्रभु-नाम के बाकी सभी प्रेम झूठे हैं।। १ ।। रहाउ ।। जो गुरु ने कहा है वैसा ही आचरण बनाओ और शब्द गुरु की पहचान कर उसका चिन्तन करते हुए सहज सुख रूपी अपने मूल घर में स्थित हो जाओ। प्रभु के सच्चे नाम के फलस्वरूप ही बड़प्पन प्राप्त करो।। २ ।। स्वयं तो जानता नहीं परन्तु लोगों को ज्ञान देने वाला मन से अन्धा व्यक्ति अन्धापन ही उन्पन्न करता है। वह भला प्रभु के द्वार, धर और महल में ठिकाना कैसे प्राप्त कर सकता है।। ३ ।। अन्तर्यामी उस प्रभु का ही सुमिरन करना चाहिए जिसकी ज्योति घट-घट में समाई रहती है। उसके साथ भला लुका छिपी का खेल कैसे चल सकता है अर्थात उससे कुछ भी नहीं

पहनामी ॥ ४ ॥ साचा नामु साचै सबदि जानै ॥ आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ॥ गुरमुखि नामु सदा सदा वखानै ॥ ५ ॥ सतिगुरि सेविऐ दूजी दुरमति जाई ॥ अउगण काटि पापा मति खाई ॥ कंचन काइआ जोती जोति समाई ॥ ६ ॥ सतिगुरि मिलिऐ वडी वडिआई ॥ दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥ ७ ॥ गुरमति मानिआ करणी सारु ॥ गुरमति मानिआ मोख दुआरु ॥ नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

बिलावलु महला ४ असटपदीआ घरु ११ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आपै आपु खाइ हउ मेटै अनदिनु हरि रस गीत गवईआ ॥ गुरमुखि परचै कंचन काइआ निरभउ जोती जोति मिलईआ ॥ १ ॥ मै हरि हरि नामु अधारु रमईआ ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु नावै गुरमुखि हरि हरि पाठ पड़ईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकु गिरहु दस दुआर है जा के अहिनिसि तसकर पंच चोर लगईआ ॥ धरमु अरथु सभु हिरि ले जावहि मनमुख अंधुले खबरि न पईआ ॥ २ ॥ कंचन कोटु बहु माणकि भरिआ जागे गिआन तति लिव लईआ ॥ तसकर हेरू आइ लुकाने गुर कै सबदि पकड़ि बंधि पईआ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु पोतु बोहिथा खेवटु सबदु गुरु पारि लंघईआ ॥ जमु जागाती नेड़ि न आवै ना को तसकरु चोरु लगईआ ॥ ४ ॥ हरि गुण गावै सदा दिनु राती मै हरि जसु कहते अंतु न लहीआ ॥ गुरमुखि मनूआ इकतु घरि आवै मिलउ गोपाल नीसानु बजईआ ॥ ५ ॥ नैनी देखि दरसु मनु त्रिपतै स्रवन बाणी गुर सबदु सुणईआ ॥ सुनि सुनि आतम देव है भीने रसि रसि राम गोपाल रवईआ ॥ ६ ॥ त्रै गुण माइआ मोहि विआपे तुरीआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ एक द्रिसटि सभ सम करि जाणै नदरी आवै सभु ब्रहमु पसरईआ ॥ ७ ॥ राम नामु है जोति सबाई गुरमुखि आपे अलखु लखईआ ॥ नानक दीन दइआल भए है भगति भाइ हरि नामि समईआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ हरि हरि नामु सीतल जलु धिआवहु हरि चंदन वासु सुगंध गंधईआ ॥

छुपाया जा सकता।। ४।। प्रभु का सच्चा नाम सच्चे शब्द-गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है और अभिमान के समाप्त होने पर वह प्रभु स्वयं ही आ मिलता है। अब गुरमुख बना व्यक्ति सदैव प्रभु-नाम का ही बखान करता रहता है।। ५।। सच्चे गुरु का सुमिरन करने से द्वैतभाव की दुर्मति चली जाती है, अवगुण कट जाते हैं और पापों वाली मति नष्ट हो जाती है। जीव की काया सोने जैसी अर्थात निरोग हो जाती है और आत्मा प्रभु की ज्योति में प्रेमपूर्वक लीन हो जाती है।। ६ ।। सच्चे गुरु से मिलाप होने पर महान बड़प्पन प्राप्त होता है; दुख कट जाता है और हृदय में नाम बस जाता है। अब जीव प्रभु-नाम में लीन होकर सदैव सुख पाता रहता है।। ७ ।। गुरु की मति मानने और उसके अनुरूप आचरण करने वाला व्यक्ति जीवन के सार तत्व को जान जाता है। गुरु की मति को मानने से मोक्ष का द्वार प्राप्त हो जाता है। हे नानक, गुरु की मति को मानने से सारे कुटुम्ब को एक सुदृढ़ आधार मिल जाता है।। ८ ।। १ ।। ३ ।।

बिलावलु महला ४ अष्टपदियाँ घरु ११ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

व्यक्ति अपने अहं भाव को समाप्त कर दे, अपने अहंकार को मिटा दे और दिन रात प्रभु के नाम रस के गीत गाता रहे। गुरमुख बनकर सन्तुष्ट बने रहने के बाद उसका शरीर कंचन जैसा शुद्ध बना रहता है और निर्भय होकर व्यक्ति की ज्योति उस परम ज्योति से मिली रहती है।। १ ।। हे प्रभु, मुझे सबमें रमण करने वाले प्रभु-नाम का ही आसरा है। मैं क्षण भर भी प्रभु नाम के बिना नहीं रह सकता और गुरु के मुख से मैंने प्रभु सुमिरन का ही पाठ पढ़ा है।। १।। रहाउ ।। शरीर रूपी घर के दस इन्द्रियाँ रूपी दरवाजे हैं; दिन-रात इस घर को विकार रूपी पाँच चोर लूटते रहते हैं। इसका धर्म, अर्थ इत्यादि यह लूटकर ले जाते हैं परन्तु अंधे मनमुख व्यक्ति को इसकी खबर भी नहीं होती।। २ ।। यह शरीर वास्तव में कंचन का बना हुआ किला है जो बहुत से माणिक मोतियों से भरा है; कोई ज्ञानवान व्यक्ति ही इसके सार तत्व को जानते हुए उस प्रभु में लौ लगाकर उसमें सावधान बना रहता है। चोर लुटेरे आकर इसमें छिपे हैं परन्तु सावधान व्यक्ति शब्द-गुरु के माध्यम से इन्हें पकड़कर और बाँधकर रख लेता है।। ३ ।। प्रभु का नाम ही बहुत बड़ा जहाज़ है जिसका खेवट शब्द-गुरु है जो संसार सागर से पार ले जाता है। अब कर लेने वाला यम व्यक्ति के पास भी नहीं आता और ना ही कोई डाकू या चोर उसके पीछे लगता है।। ४ ।। व्यक्ति सदैव दिन-रात प्रभु के गुणों का गायन करता है और मैं भी प्रभु का यश कहता हुआ उसके अंत को नहीं जान सका। गुरमुख बना मन तो एक प्रभु के ठिकाने पर ही पहुँचता है और अब जीव डंके की चोट पर प्रभु से जा मिलता है।। ५ ।। आँखों से उसका दर्शन करके मन सन्तुष्ट हो जाता है और शब्द-गुरु की वाणी सुनकर कान तृप्त हो जाते हैं। जीव स्त्री उसे सुन सुनकर भीग उठती है और पूर्ण स्वाद लेती हुई उस सर्वत्र रमण करने वाले प्रभु का सुमिरन करती है। माया और मोह से प्रभावित संसार में तो तीनों गुण लिपटे हुए हैं परन्तु सहज स्वाभाविक स्वरूप की तुरीया अवस्था केवल गुरमुख को ही प्राप्त होती है। अब व्यक्ति सबके लिए समान भाव से एक जैसी नजर रखता है और उसे सभी तरफ परमात्मा का विस्तार ही नजर आने लगता है।। ७ ।। सबमें राम नाम की ही ज्योति है और गुरमुख को ही वह समझ में ना आने वाला प्रभु स्वयं ही समझ आ जाता है। हे नानक, वह प्रभु हम दीनों पर दयालु हो गया है और हम भक्ति भाव के माध्यम से उस प्रभु में लीन हो गए हैं ।।८।।१।।४।।बिलावलु महला ४ ।। प्रभु का नाम शीतल जल है और वह प्रभु ही चंदन की सुन्दर सुगंध है।

मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआ ॥ १ ॥ जपि जगंनाथ जगदीस गुसईआ ॥ सरणि परे सेई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भार अठारह महि चंदनु ऊतम चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ साकत कूड़े ऊभ सुक हूए मनि अभिमानु विछुड़ि दूरि गईआ ॥ २ ॥ हरि गति मिति करता आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ जिसु सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥ ३ ॥ रतन पदारथ गुरमति पावै सागर भगति भंडार खुल्हईआ ॥ गुर चरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते त्रिपति न भईआ ॥ ४ ॥ परम बैरागु नित नित हरि धिआए मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ बार बार खिनु खिनु पलु कहीऐ हरि पारु न पावै परै परईआ ॥ ५ ॥ सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु करम द्रिड़ईआ ॥ मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव भारि बुडईआ ॥ ६ ॥ नामु जपहु नामे गति पावहु सिम्रिति सासत्र नामु द्रिड़ईआ ॥ हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै परम पदु पईआ ॥ ७ ॥ इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से करम कमईआ ॥ नानक जंत वजाए वाजहि जितु भावै तितु राहि चलईआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ गुरमुखि अगम अगोचरु धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति पुरखईआ ॥ राम नामु मेरै प्राणि वसाए सतिगुर परसि हरि नामि समईआ ॥ १ ॥ जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ सतिगुर की धर लागा जावा गुर किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु करम की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ ॥ लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भांडै भाउ पवै तितु अईआ ॥ २ ॥ दासनि दास दास होइ रहीऐ जो जन राम भगत निज भईआ ॥ मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु कथईआ ॥ ३ ॥ मनमुख माइआ मोहि विआपे इहु मनु त्रिसना जलत तिखईआ ॥ गुरमति नामु अंम्रित जलु पाइआ अगनि बुझी गुर सबदि बुझईआ ॥ ४ ॥ इहु मनु नाचै सतिगुर आगै

सत्संगति से मिलकर मैंने परमपद प्राप्त कर लिया है और रेंडी तथा प्लाश जैसे निकम्मे वृक्षों के समान होता हुआ भी प्रभु के साथ बना रहकर सुंगधित हो गया हूँ।। १ ।। हे जीव, तू जगन्नाथ, जगदीश गोसाई प्रभु का सुमिरन करता रह। जो उसकी शरण में आता है उस का वैसे ही उद्धार हो जाता है जैसे प्रहलाद का उद्धार हुआ और वह प्रभु में ही लीन हो गया।। १ ।। रहाउ ।। अठारह प्रकार के वृक्षों में चंदन सबसे उत्तम वृक्ष है और चन्दन के पास बसने वाले सभी चंदन हो जाते हैं। प्रभु से टूटे हुए शाक्त लोग खड़े-खड़े ही सूख जाते हैं क्योंकि उनके मन में अभिमान है और वे प्रभु से बिछुड़कर दूर चले गए हैं।। २ ।। सबकी हृदय की गति और सीमा वह प्रभु स्वयं जानता है और प्रभु ही सभी साधन भी पैदा करता है। जिसको सच्चा गुरु मिल गया वह वास्तव में सोना ही बन गया है ; जो प्रारम्भ से ही लिखा होता है उसे कोई नही मिटा सकता।। ३ ।। गुरु की मति से व्यक्ति नाम रूपी रत्न और पदार्थ प्राप्त करता है और सागर जितना विशाल भक्ति का भण्डार उसके लिये खुल जाता है। गुरु चरणों में लगकर मेरे मन में श्रद्धा और प्रेम पैदा हुआ है और अब मैं प्रभु के गुण गाता हुआ कभी तृप्त ही नहीं होता अर्थात उसके गुण गाता ही रहता हूँ।। ४ ।। प्रभु का सदैव सुमिरन करते हुए मेरे मन में परम वैराग्य पैदा हो गया है और प्रभु के गुण गाते हुए मैंने मन की श्रद्धा की बात कही है। बारम्बार और हर क्षण पल प्रभु को ही याद करते रहें क्योंकि वह परे से परे है और उसका दूसरा छोर नहीं जाना जा सकता।। ५ ।। शास्त्र, वेद और पुराण यह शिक्षा देते हैं कि धर्म का आचरण बनाओ परन्तु धार्मिक आचरण के लिये वे षटकर्मों को करते रहने की बात को पक्का करते हैं। मनमुख व्यक्ति पाखण्डों के माध्यम से भ्रमों में खोए रहते हैं और लोभ की लहरों में पड़े अपने जीवन की नैया के भार से डूब जाते हैं ।।६।। हे जीव, तुम नाम का सुमिरन करो, नाम के माध्यम से ही मति प्राप्त करो क्योंकि समृतियाँ और शास्त्र भी बार-बार प्रभु-नाम को ही पक्का करते हैं। जब अहंकार चला जाता है तो व्यक्ति निर्मल हो जाता है तथा गुरमुख बनकर जब मन समझ जाता है तो परम पद प्राप्त किया जाता है।। ७ ।। यह सारा संसार तेरा ही रूप रंग है और हे प्रभु, तू जिधर हमें लगाता हैं हम वैसे ही कर्म करते हैं। हे नानक, हम तो ऐसे वाद्य हैं जो प्रभु के द्वारा बजाए हुए ही बजते हैं; जैसा उस को भाता है हम उसी राह पर चलते रहते हैं।। ८ ।। २ ।। ५ ।। बिलावलु महला ४ ।। गुरमुख बनकर हमने उस अगम्य अगोचर प्रभु का सुमिरन किया है और हम सच्चे गुरु पर बार-बार बलिहारी जाते हैं। उसने मेरे प्राणों मे प्रभु-नाम बसा दिया है और सच्चे गुरु को मिलकर ही प्रभु-नाम में लीन हुआ जाता है ।। १ ।। प्रभु के सेवक का आसरा तो प्रभु-नाम में टिके रहना ही है। मैं तो सच्चे गुरु के पक्ष के साथ लगा रहता हूँ और गुरु कृपा से ही प्रभु का द्वार देखा जाता है।। १ ।। रहाउ ।। यह शरीर तो कर्म रूपी धरती है इसमें से गुरमुख बनकर इसका मन्थन करके सार तत्व प्राप्त किया जाता है। प्रभु-नाम हृदय में प्रकाशित होने पर इस शरीर रूपी बर्तन में लाल जवाहर रूपी प्रभु का प्रेम डाला जाता है।। २ ।। जो व्यक्ति प्रभु का विशेष भक्त है अर्थात उसका प्यारा भक्त हो गया है उसके तो दासों के भी दास बनकर रहना चाहिए। मैं मन, बुद्धि अर्पण करके उसके सामने रख दूँ क्योंकि गुरु की कृपा से ही मैंने उस अकथनीय प्रभु को कथन कर सकने की सूझ बुद्धि प्राप्त कर ली है।।३।। मनमुख व्यक्ति माया के मोह में पड़ा रहता है और उसका यह मन तृष्णाओं में जलता हुआ प्यासा बना रहता है। गुरमति के माध्यम से नाम रूपी अमृत जल जब उसने प्राप्त कर लिया तो शब्द गुरु के माध्यम से उसकी तृष्णा रूपी अग्नि बुझ जाती है।। ४ ।। यह मन सच्चे गुरु के आगे नाचता है

अनहद सबद धुनि तूर वजईआ ॥ हरि हरि उसतति करै दिनु राती रखि रखि चरण हरि ताल पूरईआ ॥ ५ ॥ हरि कै रंगि रता मनु गावै रसि रसाल रसि सबदु रवईआ ॥ निज घरि धार चुऐ अति निरमल जिनि पीआ तिन ही सुखु लहीआ ॥ ६ ॥ मनहठि करम करै अभिमानी जिउ बालक बालू घर उसरईआ ॥ आवै लहरि समुंद सागर की खिन महि भिंन भिंन ढहि पईआ ॥ ७ ॥ हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु खेलईआ ॥ जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि नानक आपे आपि रमईआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ सतिगुरु परचै मनि मुंद्रा पाई गुर का सबदु तनि भसम द्रिड़ईआ ॥ अमर पिंड भए साधू संगि जनम मरण दोऊ मिटि गईआ ॥ १ ॥ मेरे मन साधसंगति मिलि रहीआ ॥ क्रिपा करहु मधसूदन माधउ मै खिनु खिनु साधू चरण पखईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजै गिरसतु भइआ बन वासी इकु खिनु मनूआ टिकै न टिकईआ ॥ धावतु धाइ तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥ २ ॥ धीआ पूत छोडि संनिआसी आसा आस मनि बहुतु करईआ ॥ आसा आस करै नही बूझै गुर कै सबदि निरास सुखु लहीआ ॥ ३ ॥ उपजी तरक दिगंबरु होआ मनु दह दिस चलि चलि गवनु करईआ ॥ प्रभवनु करै बूझै नही त्रिसना मिलि संगि साध दइआ घरु लहीआ ॥ ४ ॥ आसण सिध सिखहि बहुतेरे मनि मागहि रिधि सिधि चेटक चेटकईआ ॥ त्रिपति संतोखु मनि सांति न आवै मिलि साधू त्रिपति हरि नामि सिधि पईआ ॥ ५ ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज सभि वरन रूप जीअ जंत उपईआ ॥ साधू सरणि परै सो उबरै खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु चंडालु चंडईआ ॥ ६ ॥ नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥ जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥ ७ ॥ संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु करईआ ॥ नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखईआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ७ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ ॥

क्योंकि उसी के सामने अनहद शब्द की धुन वाले वाद्य बजते रहते हैं। प्रभु की स्तुति उसके सामने दिन रात चलती रहती है और एक लय में बंध कर व्यक्ति सावधानी पूर्वक अपने पाँव टिकाता है।। ५ ।। प्रभु के रंग में लीन यह मन गा रहा है और प्रभु के प्रेम में रस सहित प्रभु-नाम का सुमिरन करता है। आत्मा रूपी घर में प्रभु के नाम रस की पवित्र धारा पड़ती रहती है और जिसने उसे पी लिया है उसने सुख प्राप्त कर लिया है।। ६ ।। अभिमानी व्यक्ति मन के हठ के पीछे लगकर वैसे ही कर्म किये जाता है जैसे बच्चा रेत का घर बनाता है। समुद्र, सागर में लहरें आती हैं लेकिन क्षण भर में वे अलग होकर नीचे गिर पड़ती हैं।। ७ ।। प्रभु रूपी सागर वह स्वयं ही है और वह स्वयं इस संसार के सभी खेल खिलाने वाला है। जैसे पानी की लहरें पानी में ही समा जाती हैं इसी प्रकार हे नानक, सबमें रमण कर रहा प्रभु सब कुछ स्वयं ही है।। ८ ।। ३ ।। ६ ।। बिलावलु महला ४ ।। सच्चे गुरु को जानने की मुद्राएं मैंने मन रूपी कान में डाल ली हैं और शब्द-गुरु की भस्म को मैंने शरीर पर लगा लिया है। साधसंगति में हम अब अमर शरीर वाले बन गए हैं और हमारा जन्म मरण, दोनों ही मिट गए हैं।। १ ।। हे मेरे मन साधसंगति में ही मेल बनाए रखो। हे मधुसूदन प्रभु, मुझ पर कृपा करो कि मैं हर क्षण साधु पुरुषों के चरण धोता रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति गृहस्थ को त्यागकर बनवासी बन जाता है परन्तु एक क्षण भर के लिये भी उसका मन स्थिर नहीं होता। जब वह प्रभु के साधु पुरुषों की शरण में आ गया तो दौड़-दौड़कर थका हुआ वह फिर अपने मूल स्वभाव में टिक जाता है।। २ ।। परिवार को छोड़कर व्यक्ति संन्यासी बन गया परन्तु फिर भी बहुत सी आशाएँ और इच्छाएँ अपने मन में पाले रहा। जीव एक आशा के बाद दूसरी आशा लगाए रहता है परन्तु शब्द-गुरु को नहीं बूझता; जब आशाओं से परे चला जाता है तभी वह सुख प्राप्त करता है।। ३ ।। जब मन में संसार के प्रति धृणा पैदा हो गई तब व्यक्ति नंगा बना रहने वाला साधु बन गया परन्तु फिर भी उसका मन दसों दिशाओं में भाग दौड़ करता ही रहता है। वह बहुत भागता-दौड़ता है परन्तु उसकी तृष्णा नहीं बुझती और वह साधु पुरुषों से मिलकर दया के घर को प्राप्त कर लेता है अर्थात् अब उसकी बुद्धि दयावान बन जाती है।। ४ ।। अनेकों सिद्ध, योगी बहुत से आसनों को सीखते हैं और मन में ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ तथा जादू की शक्तियों की इच्छा बनाए रहते हैं। तृप्ति तथा सन्तुष्टि और शान्ति उनके मन में नहीं आती परन्तु अन्त में साधु-पुरुषों को मिलकर वह प्रभु-नाम रूपी सिद्धि प्राप्त करते हैं।। ५ ।। अण्डे से पैदा होने वाले, गर्भ से पैदा होने वाले, पसीने से पैदा होने वाले और वनस्पति से पैदा होने वाले अनेकों रंगों वाले जीव उस प्रभु ने बनाए हैं। जो साधु व्यक्ति की शरण में आता है वह चाहे क्षत्रिय हो, ब्राह्मण हो शूद्र हो, वैश्य हो अथवा चाण्डाल हो उसका उद्धार हो जाता है।। ६ ।। नामदेव, जयदेव, कबीर, त्रिलोचन, तथाकथित नीच जाति वाला रविदास जिसे चर्मकार कहा जाता है, इनमें से जो जो भी साधु पुरुषों की संगति में आ गए वे धन्य हो गए और इसी प्रकार प्रभु से धन्ना जाट तथा सैन भक्त का भी मिलाप हुआ।। ७ ।। सन्तजनों की प्रभु ने इज़्ज़त बचाई और भक्तवत्सल बनकर इन सब भक्तों को अंगीकार किया। हे नानक, जो जगत के जीवन प्रभु की शरण में आ गए प्रभु ने कृपा धारण करके उनको बचा लिया।। ८ ।। ४ ।। ७ ।। बिलावलु महला ४ ।। प्रभु के दर्शनों की प्यास मेरे अन्तर्मन में उठी है और गुरु के उपदेश को सुनकर उसके प्रेम का तीर मेरे मन में आ लगा है।

मन की बिरथा मन ही जाणै अवरु कि जाणै को पीर परईआ ॥ १ ॥ राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होइ पईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ मनु तनु काटि देउ गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखईआ ॥ २ ॥ कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ लगईआ ॥ मसतकु काटि देउ चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥ ३ ॥ चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै पईआ ॥ ४ ॥ खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि पईआ ॥ ५ ॥ हरि हरि हारु कंठि है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि भईआ ॥ ६ ॥ कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ कीओ सीगारु मिलण कै ताई प्रभु लीओ सुहागनि थूक मुखि पईआ ॥ ७ ॥ हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥ दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥ ८ ॥ ५ ॥ ८ ॥ बिलावलु महला ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ चात्रिक प्रिउ प्रिउ बूंद मुखि पईआ ॥ १ ॥ मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ ॥ बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥ २ ॥ हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥ जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन्ह अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥ ३ ॥ कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ अनेक

मन की पीड़ा को तो मन ही जान सकता है अन्य कोई भला पराई पीर को क्या समझेगा।। १ ।। हे प्रभु, मनमोहक गुरु ने मेरा मन मोह लिया है। मैं गुरु को देखने के लिये व्याकुल और विकल होकर बेहोश हो गई हूँ।। १ ।। रहाउ ।। मैं उसे देश देशान्तरों में देखती हुई भटक रही हूँ और मुझे प्रभु को देखने का मन में बहुत ही चाव है। मैं उस गुरु के सामने मन तन काट कर अर्पण कर दूंगी जिस गुरु ने मुझे प्रभु की ओर जाने वाला मार्ग दिखा दिया है।। २ ।। मुझे कोई प्रभु का संदेशा ला दे तो वही मेरे हृदय में और मन तन में मीठा लगने लगता है। मैं मस्तक काट कर उसके चरणों के नीचे रख दूँ जो मुझे हरि प्रभु से मिलाप करवा दे।। ३ ।। हे मेरी सत्संगी सहेली, आओ हम अपने प्रभु को अच्छी तरह समझें और गुणों वाला आचरण बनाकर उस प्रभु का दर्शन करें। उसका नाम भक्तवत्सल कहा जाता हैं और इसीलिये हम उस प्रभु की शरण के पीछे दौड़ती फिर रही हैं।। ४ ।। क्षमा का शृंगार करने से प्रभु खुशी प्रदान करता है और गुरु मन में गुरु ज्ञान का दीपक जला देता है। मेरा प्रभु रस ले लेकर आत्मा रूपी स्त्री के साथ रमण करता है; मैं तो अपने हृदय को काट-काट कर उसके आगे अर्पण कर दूंगी।। ५ ।। प्रभु ही मेरे गले का हार है और प्रभु प्रेम से भरा मन ही मेरा मोतीचूर है। वह प्रभु ही मेरा एक बड़ा आभूषण है। प्रेम रूपी सेज मैंने प्रभु के लिये बिछाई है और वह मेरे मन को इतना अधिक भा गया है कि मैं प्रभु को छोड़ नहीं सकती।। ६ ।। प्रभु तो कुछ कहता हो परन्तु करने वाली जीव स्त्री यदि कुछ अन्य ही करती हो तो उसके सभी शृंगार व्यर्थ और खोखले होते हैं। मैंने उस प्रभु से मिलने के लिये शृंगार किया है परन्तु प्रभु ने वास्तविक सुहागिन स्त्रियों को तो अपना लिया है और हमारे जैसी पाखण्डी स्त्रियों के मुख पर थूका ही गया है।। ७ ।। हम तेरी दासियाँ हैं और हे प्रभु, तू अगम्य गोसांई है; हम क्या कर सकती है, हम तो तेरे ही वश में हैं। दीनों पर दया करके हमारी रक्षा करो ताकि हे नानक, प्रभु रूपी गुरु की शरण में हम लीन हो जाएँ।। ८ ।। ५ ।। ८।। बिलावलु महला ४ ।। मेरे मन तन में उस अगम्य प्रभु का प्रेम है और प्रत्येक क्षण मेरे मन में उसके प्रति बहुत श्रद्धा उठती रहती है। गुरु को देखने पर मेरे मन की श्रद्धा वैसे ही पूरी हो जाती है जैसे चातक पक्षी के पुकारते रहने पर उसके मुख में जल की बूंदे पड़ने से वह तृप्त हो जाता है।। १ ।। हे सखियो, मिल बैठकर उस प्रभु की कथा सुनाओ। सच्चा गुरु कृपा करे और प्रभु से मिला दे तो मैं उसके आगे सिर को काट-काट कर अर्पण कर दूँ।। १ ।। रहाउ ।। मेरे रोम-रोम और मन तन में एक ही पीड़ा है और मुझे प्रभु को देखे बिना नींद नहीं आती। वैद्य और नाडियाँ देखने वाले मुझे देखकर हैरान हो गए है; उन्हें मेरी बीमारी का पता नहीं लगा क्योंकि मेरे मन तन और हृदय में प्रेम की पीड़ा लगी हुई है।। २ ।। प्रियतम के बिना मैं एक क्षण और पल के लिये भी वैसे ही नहीं रह सकती जैसे नशा करने वाला नशे के बिना मर जाता है। जिनको प्रभु दर्शन की प्यास लगी रहती है उन्हें प्रभु के बिना दूसरा कोई अच्छा नहीं लगता।। ३ ।। कोई आकर मुझे मेरा प्रभु मिला दे तो मैं उस पर घूम-घूम कर बलिहारी जाती हूँ। जब मैं सच्चे गुरु की शरण में आ गई हूँ तो सत्य रूप को समझकर

जनम के विछुड़े जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥ ४ ॥ सेज एक एको प्रभु ठाकुरु महलु न पावै मनमुख भरमईआ ॥ गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आइ मिलै खिनु ढील न पईआ ॥ ५ ॥ करि करि किरिआचार वधाए मनि पाखंड करमु कपट लोभईआ ॥ बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ पिता ताहि किआ नामु सदईआ ॥ ६ ॥ पूरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि हरि भगति जमईआ ॥ भगति भगति करते हरि पाइआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥ ७ ॥ प्रभि आणि आणि महिंदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ जिन कउ ठाकुरि किरपा धारी बाह पकरि नानक कढि लईआ ॥ ८ ॥ ६ ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ ९ ॥

रागु बिलावलु महला ५ असटपदी घरु १२ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ तजि आन सरणि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ चरन कमल अपार ॥ हउ जाउ सद बलिहार ॥ मनि प्रीति लागी ताहि ॥ तजि आन कतहि न जाहि ॥ १ ॥ हरि नाम रसना कहन ॥ मल पाप कलमल दहन ॥ चड़ि नाव संत उधारि ॥ भै तरे सागर पारि ॥ २ ॥ मनि डोरि प्रेम परीति ॥ इह संत निरमल रीति ॥ तजि गए पाप बिकार ॥ हरि मिले प्रभ निरंकार ॥ ३ ॥ प्रभ पेखीऐ बिसमाद ॥ चखि अनद पूरन साद ॥ नह डोलीऐ इत ऊत ॥ प्रभ बसे हरि हरि चीत ॥ ४ ॥ तिन्ह नाहि नरक निवासु ॥ नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ ते जमु न पेखहि नैन ॥ सुनि मोहे अनहत बैन ॥ ५ ॥ हरि सरणि सूर गुपाल ॥ प्रभ भगत वसि दइआल ॥ हरि निगम लहहि न भेव ॥ नित करहि मुनि जन सेव ॥ ६ ॥ दुख दीन दरद निवार ॥ जा की महा बिखड़ी कार ॥ ता की मिति न जानै कोइ ॥ जलि थलि महीअलि सोइ ॥ ७ ॥ करि बंदना लख बार ॥ थकि परिओ प्रभ दरबार ॥ प्रभ करहु साधू धूरि ॥ नानक मनसा पूरि ॥ ८ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ प्रभ जनम मरन निवारि ॥ हारि परिओ दुआरि ॥ गहि चरन साधू संग ॥ मन मिसट हरि हरि रंग ॥

अनेकों जन्मों से बिछुड़े सेवक को उसने प्रभु से मिला दिया है।। ४ ।। आत्मा और परमात्मा एक ही शरीर में रहते हैं, परन्तु मनमुख आत्मा भटकती रहती है और उसे प्रभु का महल ठिकाना नहीं मिलता। बार-बार गुरु का सुमिरन करते हुए जीव यदि शरण में आ जाए तो एक क्षण की भी देरी किये बिना प्रभु आ मिलता हैं।। ५ ।। मैंने बहुत सी क्रियाएं और कर्मकाण्ड बढ़ा चढ़ाकर किए परन्तु मेरे मन में पाखण्ड, कपट, लोभ आदि का ही छल बल चलता रहा। परिणाम यही निकला कि जैसे वेश्या के घर यदि बेटा जन्म लेता है तो उसके पिता का कौन सा नाम लेकर पुकारा जाए अर्थात मेरी क्रियाएं और पाखण्ड सभी व्यर्थ हो गए।। ६ ।। पिछले जन्म में भक्ति करके हमने यह जन्म धारण किया है और अब प्रभु रूपी गुरु ने प्रभु की ही भक्ति हमारे मन में पैदा कर दी है। उसकी भक्ति करते-करते ही हमने प्रभु को पा लिया है और हम प्रभु के नाम में ही लीन हो गए हैं।। ७ ।। प्रभु प्रेम की मेंहदी लाकर हमने पीसी है और स्वयं ही उसे घोल-घोल कर उसे अपने अंगों से लगाया है। जिन पर परमात्मा ने कृपा की है हे नानक, उनकी बांह पकड़ कर उन्हें माया में से बाहर खींच लिया गया है।। ८ ।। ६ ।। २ ।। १ ।। ६ ।। ६ ।।

रागु बिलावलु महला ५ अष्टपदी घरु १२ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरे प्रभु की महिमा कही नहीं जा सकती क्योंकि उसकी उपमा को कहना सम्भव नहीं है। मैंने तो बाकी सब त्यागकर उसकी शरण पकड़ ली है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के चरण कमल अपरम्पार हैं और मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। मेरे मन में उन्हीं की प्रीति लगी है और उन्हें त्यागकर मैं अन्य कहीं भी नहीं जाता ।। १ ।। जीभ से प्रभु नाम का उच्चारण पापों की मल और दोषों की मैल को जला देता है। शान्त पुरुषों की नाव में चढ़कर उद्धार होता है और उसके भय में बने रहकर संसार सागर को पार किया जाता है।। २ ।। मन में प्रेम की डोरी लग गई है और सन्त पुरुषों की निर्मल रीति है। जब व्यक्ति पापों और विकारों को तज देता है तो वह निराकार प्रभु उसे मिल जाता है।। ३ ।। प्रभु को देखकर हम हैरान और आश्चर्य विभोर हो गए हैं तथा पूर्ण आनन्द का स्वाद हमने चख लिया है। अब यहाँ वहाँ हम डोलते नहीं क्योंकि प्रभु तो अब हमारे हृदय में ही बसता है।। ४ ।। जो सदैव गुणों के भण्डार प्रभु का सुमिरन करते हैं उनका निवास नरक में नहीं होता। वे अपनी आँखों से भ्रम को नही देखते क्योंकि वे प्रभु के अनहद नाद को सुनकर उसी में लीन बने रहते हैं।। ५ ।। प्रभु रूपी शूरवीर की शरण मे हम आए हैं और वह दयालु प्रभु तो भक्तों के वश में ही रहता है। वेद आदि ग्रन्थ भी उसके रहस्य को नही जान पाते और मुनिजन भी सदैव उसी का सुमिरन करते रहते हैं।।६।। वह प्रभु ही दीनों के दुख-दर्दों का निवारण करता है क्योंकि उसी की ही सेवा सबसे कठिन कार्य है। उसकी सीमा को कोई नही जान पाता और जल, स्थल, अन्तरिक्ष में वही व्याप्त है।। ७ ।।। लाखों बार उसी की वन्दना करो और हे प्रभु, मैं थक कर प्रभु दरबार में ही आ गिरा हूँ। हे प्रभु, मुझे साधु पुरुषों की चरण-धूलि बना दो क्योंकि हे नानक, वह प्रभु ही मुरादों को पूरा करने वाला है।।८।।१।।बिलावलु महला ५ ।। हे प्रभु, मेरे जन्म मरण को समाप्त कर दो क्योंकि अब मैं हार कर तेरे द्वार पर आ गिरा हूँ। साधु पुरुषों के चरण पकड़कर मेरा मन प्रभु के रंग में ही रंग गया है।

करि दइआ लेहु लड़ि लाइ ॥ नानका नामु धिआइ ॥ १ ॥ दीना नाथ दइआल मेरे सुआमी दीना नाथ दइआल ॥ जाचउ संत रवाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संसारु बिखिआ कूप ॥ तम अगिआन मोहत घूप ॥ गहि भुजा प्रभ जी लेहु ॥ हरि नामु अपुना देहु ॥ प्रभ तुझ बिना नही ठाउ ॥ नानका बलि बलि जाउ ॥ २ ॥ लोभि मोहि बाधी देह ॥ बिनु भजन होवत खेह ॥ जमदूत महा भइआन ॥ चित गुपत करमहि जान ॥ दिनु रैनि साखि सुनाइ ॥ नानका हरि सरनाइ ॥ ३ ॥ भै भंजना मुरारि ॥ करि दइआ पतित उधारि ॥ मेरे दोख गने न जाहि ॥ हरि बिना कतहि समाहि ॥ गहि ओट चितवी नाथ ॥ नानका दे रखु हाथ ॥ ४ ॥ हरि गुण निधे गोपाल ॥ सरब घट प्रतिपाल ॥ मनि प्रीति दरसन पिआस ॥ गोबिंद पूरन आस ॥ इक निमख रहनु न जाइ ॥ वड भागि नानक पाइ ॥ ५ ॥ प्रभ तुझ बिना नही होर ॥ मनि प्रीति चंद चकोर ॥ जिउ मीन जल सिउ हेतु ॥ अलि कमल भिंनु न भेतु ॥ जिउ चकवी सूरज आस ॥ नानक चरन पिआस ॥ ६ ॥ जिउ तरुनि भरत परान ॥ जिउ लोभीऐ धनु दानु ॥ जिउ दूध जलहि संजोगु ॥ जिउ महा खुधिआरथ भोगु ॥ जिउ मात पूतहि हेतु ॥ हरि सिमरि नानक नेत ॥ ७ ॥ जिउ दीप पतन पतंग ॥ जिउ चोरु हिरत निसंग ॥ मैगलहि कामै बंधु ॥ जिउ ग्रसत बिखई धंधु ॥ जिउ जूआर बिसनु न जाइ ॥ हरि नानक इहु मनु लाइ ॥ ८ ॥ कुरंक नादै नेहु ॥ चात्रिकु चाहत मेहु ॥ जन जीवना सतसंगि ॥ गोबिदु भजना रंगि ॥ रसना बखानै नामु ॥ नानक दरसन दानु ॥ ९ ॥ गुन गाइ सुनि लिखि देइ ॥ सो सरब फल हरि लेइ ॥ कुल समूह करत उधारु ॥ संसारु उतरसि पारि ॥ हरि चरन बोहिथ ताहि ॥ मिलि साधसंगि जसु गाहि ॥ हरि पैज रखै मुरारि ॥ हरि नानक सरनि दुआरि ॥ १० ॥ २ ॥

बिलावलु महला १ थिती घरु १० जति १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

एकम एकंकारु निराला ॥ अमरु अजोनी जाति न जाला ॥ अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥ खोजत खोजत

हे प्रभु, दया करो और अपने आँचल से लगा लो तथा हे नानक, तू प्रभु-नाम का ही सुमिरन कर।। १ ।। हे दीनानाथ दयालु प्रभु, तुम मेरे स्वामी हो और दीनों के लिये सदैव दयालु हो। मैं सन्त पुरुषों की चरण-धूलि माँगता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। यह संसार तो विष का कुआँ बन गया है जिसका अज्ञान का घोर अंधकार सबको मोहित किए हुए है। हे प्रभु, मेरी बाँह पकड़कर मुझे बचा लो तथा हे हरि, मुझे अपना नाम दान करो। हे प्रभु, तेरे बिना मेरा कोई ठिकाना नहीं है और नानक तो तुम पर बार-बार बलिहारी जाता है।। २ ।। लोभ और मोह में मेरा शरीर बँधा हुआ है और प्रभु के सुमिरन के बिना मिट्टी होता जा रहा है। यमदूत महाभयानक हैं और चित्रगुप्त हमारे सभी कर्मो को जानते हुए दिन रात गवाही देते रहते हैं। नानक तो केवल प्रभु की ही शरण में हैं।। ३ ।। हे भय को नष्ट करने वाले प्रभु, दया करके इस पतित का उद्धार कर लो। मेरे दोष तो गिने नहीं जा सकते और प्रभु के बिना भला उन्हें अन्य कौन सहार सकता है। हे मालिक, मैंने तेरा ही आसरा पकड़ा है;। नानक को अपना हाथ देकर बचा लो।। ४ ।। सभी गुणों के भण्डार प्रभु, तुम सभी जीवों के प्रतिपालक हो। मेरे मन में तुम्हारी ही प्रीति है और तुम्हारे ही दर्शनों की प्यास है। हे गोविन्द प्रभु, मेरी आशा पूरी करो। तेरे बिना एक क्षण भी रहा नहीं जाता। हे नानक, वह प्रभु बड़े भाग्य से प्राप्त होता है।। ५ ।। हे प्रभु, तेरे बिना अन्य कोई भी नहीं। मेरे मन में तेरे लिये वैसा ही प्रेम है जैसा प्रेम चकोर को चन्द्रमा के लिये होता है। जैसी मछली को जल से प्रीति होती है, भंवरा और कमल एक दूसरे से अलग नहीं होते, जैसे चकवी सूर्य की प्रतीक्षा में आस लगाए रहती है; नानक को भी तेरे चरणों की वैसी ही प्यास बनी हुई है।। ६ ।। जैसे युवती को अपने पति से प्यार होता है, जिस प्रकार लोभी व्यक्ति को धन या दान लेने के प्रति लोभ बना रहता है, जैसे जल और दूध आपस में मिले रहते हैं, जैसे अत्यन्त भूखे को भोग में रुचि रहती है तथा जैसे माता का पुत्र से स्नेह है उसी प्रकार नानक सदैव प्रभु का सुमिरन करता रहता है।। ७ ।। जैसे पतंगे दीपक पर गिर पडते हैं, जैसे चोर बिना किसी चिन्ता के चोरी करता है, जैसे हाथी काम वासना में बँधा रहता है, जैसे विषय विकारों में लीन व्यक्ति संसारिक धंधों मे ही लिपटा रहता है, जैसे जुआरी का व्यसन (बुरी आदत) नहीं जाता उसी प्रकार नानक ने भी मन को प्रभु में लगा रखा है।। ८ ।। जिस प्रकार हिरन का नाद से स्नेह होता है, चातक सदैव वर्षा की कामना करता रहता है, प्रभु के सेवक संतसंग में ही जीवन पाते हैं और गोविन्द के भजन के रंग में ही रंगे रहते है, उनकी जीभ प्रभु-नाम का ही बखान करती रहती है उसी प्रकार हे नानक, प्रभु के दर्शन का दान प्राप्त कर।। ६ ।। जो व्यक्ति प्रभु के गुण गाता है, सुनता है या लिख कर देता है वह प्रभु से सभी फलों को प्राप्त कर लेता है। वह अपने सम्पूर्ण कुल का उद्धार कर लेता है और संसार सागर से पार उतर जाता है। उसके लिये प्रभु के चरण ही पार उतारने वाला जहाज है और वह साधसंगति में मिल बैठकर प्रभु का यश गायन करता है। दुष्टों को मारने वाला प्रभु उसकी लाज रखता है और नानक तो उसकी शरण में उसके द्वार पर खड़ा है।। १० ।। २ ।।

बिलावलु महला १ तिथियां घरु १० "जति"

(गायन में तबले को एक विशेष प्रकार से बजाना) १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

एकम तिथि का अर्थ है कि वह एक ओअंकार प्रभु एक ही है और निराला है। वह अमर है अयोनि है, ना उसकी कोई जाति है और ना ही उसे कोई जंजाल है। वह अगम्य, अगोचर और रूप रेखा से परे है। उसे तो खोजते-खोजते

घटि घटि देखिआ ॥ जो देखि दिखावै तिस कउ बलि जाई ॥ गुर परसादि परम पदु पाई ॥ १ ॥ किआ जपु जापउ बिनु जगदीसै ॥ गुर कै सबदि महलु घरु दीसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजै भाइ लगे पछुताणे ॥ जम दरि बाधे आवण जाणे ॥ किआ लै आवहि किआ ले जाहि ॥ सिरि जमकालु सि चोटा खाहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥ पाखंडि कीन्है मुकति न होइ ॥ २ ॥ आपे सचु कीआ कर जोड़ि ॥ अंडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि ॥ धरति अकासु कीए बैसण कउ थाउ ॥ राति दिनंतु कीए भउ भाउ ॥ जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ अवरु न दूजा सिरजणहारा ॥ ३ ॥ त्रितीआ ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ देवी देव उपाए वेसा ॥ जोती जाती गणत न आवै ॥ जिनि साजी सो कीमति पावै ॥ कीमति पाइ रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ ४ ॥ चउथि उपाए चारे बेदा ॥ खाणी चारे बाणी भेदा ॥ असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ तीनि समावै चउथै वासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥ ५ ॥ पंचमी पंच भूत बेताला ॥ आपि अगोचरु पुरखु निराला ॥ इकि भ्रमि भूखे मोह पिआसे ॥ इकि रसु चाखि सबदि त्रिपतासे ॥ इकि रंगि राते इकि मरि धूरि ॥ इकि दरि घरि साचै देखि हदूरि ॥ ६ ॥ झूठे कउ नाही पति नाउ ॥ कबहु न सूचा काला काउ ॥ पिंजरि पंखी बंधिआ कोइ ॥ छेरीं भरमै मुकति न होइ ॥ तउ छूटै जा खसमु छडाए ॥ गुरमति मेले भगति द्रिड़ाए ॥ ७ ॥ खसटी खटु दरसन प्रभ साजे ॥ अनहद सबदु निराला वाजे ॥ जे प्रभ भावै ता महलि बुलावै ॥ सबदे भेदे तउ पति पावै ॥ करि करि वेस खपहि जलि जावहि ॥ साचै साचे साचि समावहि ॥ ८ ॥ सपतमी सतु संतोखु सरीरि ॥ सात समुंद भरे निरमल नीरि ॥ मजनु सीलु सचु रिदै वीचारि ॥ गुर कै सबदि पावै सभि पारि ॥ मनि साचा मुखि साचउ भाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ९ ॥ असटमी असट सिधि बुधि साधै ॥ सचु निहकेवलु करमि अराधै ॥ पउण पाणी अगनी बिसराउ ॥ तही निरंजनु साचो नाउ ॥ तिसु महि मनूआ रहिआ लिव लाइ ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥ १० ॥ नाउ नउमी नवे नाथ नव खंडा ॥ घटि घटि नाथु

मैंने अपने हृदय में ही देखा है। जो उसको देख लेता अथवा दिखा देता है मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। गुरु कृपा के साथ ही परम पद अर्थात मुक्ति प्राप्त होती है।। १ ।। प्रभु को हृदय में बसाए बिना जाप और सुमिरन किस काम के हैं। शब्द-गुरु के माध्यम से ही उस प्रभु का ठिकाना अपने हृदय में ही दिखाई देने लगता है।। १ ।। रहाउ ।। द्वैतभाव में लगे हुए लोग पछताते रहते हैं और आवागमन में पड़े हुए यम के द्वार पर बंधे रहते हैं। वे क्या लेकर आते हैं और यहाँ से क्या लेकर जाते है; ऐसे व्यक्तियों के सिर पर यमकाल खड़ा रहता है और वे उसकी चोटों को सहन करते रहते हैं। शब्द-गुरु के बिना किसी का छुटकारा नहीं होता और पाखण्डी आचरण बनाए रखने से मुक्ति नहीं मिलती।। २।। अण्डाकार इस जगत को तोड़कर और फिर उन दोनों के सिरों को मिलाकर एक दूसरे से अलग करते हुए सच्चे प्रभु ने स्वयं ही अपने हाथों से इस सृष्टि की रचना की। धरती और आकाश उसने रहने के लिये स्थान बनाए हैं और उसी प्रकार उसने दिन रात, भय और प्रेम भी पैदा किया है। जिसने यह सब किया है वही इसकी रचना करके इसे देखता है; उसके बिना रचना करने वाला अन्य कोई नहीं।। ३ ।। तीसरी तिथि - ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीन प्रमुख देवता कहे जाते हैं और इसी प्रकार उस प्रभु ने देवी देवताओं जैसे कई स्वरूप पैदा किए। ज्योति को धारण करने वाले जीवों की भी गिनती नहीं की जा सकती और जिसने उन्हें बनाया है वह ही उनके मूल्य को आँक सकता है। वह ही उनके बारे में जानकर उनमें भरपूर रूप से समाया है और इस सारे कार्य व्यवहार में किसे उसके पास कहा जाए और किसे उससे दूर बताया जाए।। ४ ।। चौथी तिथि - उसने चारों वेद बनाए हैं, चार ही जीवन की खानें हैं और वाणियों के भेद भी चार हैं। उसी ने ही अठारह पुराण, छः शास्त्र और तीन गुणों को उत्पन्न किया है और इनके बारे में वही जान पाता है जिसे वह स्वयं इन्हें जानने का बल प्रदान करता है। जो तीनों गुण समेटकर इनसे उपर चौथी अवस्था में निवास बना लेता है नानक विनती करता है कि हम तो उसी के दास हैं।। ५ ।। पँचम तिथि - पाँच तत्व उसी ने बनाए हैं और इसमें रहने वाले जीव बेतालों (भूतों) की तरह इधर-उधर भागते फिरते हैं। वह प्रभु तो मन वाणी से परे रहने वाला है। अनेकों जीव भ्रमों में भूले हुए मोह के भूखे बनकर अशान्त और प्यासे ही बने रहते हैं। कई ऐसे भी हैं जो उस प्रभु-नाम रस को चख कर शब्द के माध्यम से तृप्त हो जाते हैं। अनेकों उसके प्रेम के रंग में रंगे रहते हैं और अनेकों ही मर कर मिट्टी में मिल जाते हैं। अनेकों ऐसे भी हैं जो उस सच्चे के घर और द्वार तक पहुँच कर उसे प्रत्यक्ष देखते हैं।। ६ ।। प्रभु-नाम का सम्मान झूठे को नहीं मिलता क्योंकि काला कौआ कभी भी पवित्र नहीं होता। पक्षी पिंजरे में बँधा होता है और पिंजरे के छेदों में इधर उधर बाहर निकलने के भ्रम में दौड़ता भागता रहता है परन्तु उसकी मुक्ति नहीं होती। छुटकारा तो उसी का होता है जिसे मालिक स्वयं मुक्त कर देता है। वह प्रभु ही गुरु की मति के माध्यम से जीव को अपने में मिलाता है और भक्ति को मन में पक्का करता है।। ७ ।। छठी तिथि - छः दर्शनों को भी प्रभु ने ही बनाया है और प्रभु का निराला अनहद शब्द बजता रहता है। यदि प्रभु चाहे तो वह अपने स्थान पर बुला लेता है और जीव यदि शब्द-गुरु द्वारा मन को बींध ले तो वह प्रभु के समक्ष सम्मान पा सकता है। यह अनेकों वेश धारण करके तथा पाखण्डी बनकर मर खप जाता है। केवल सच्चे बनकर ही वह उस सत्य प्रभु में लीन हो सकता है।। ८ ।। सातवीं तिथि - यदि शरीर में सत्य और सन्तोष जैसे गुण हों और सातों समुद्र प्रभु-नाम के स्वच्छ जल से भरे हों और स्नान, शील, सत्य का हृदय में विचार चलता रहे तो शब्द-गुरु के माध्यम से सभी पार उतर जाते हैं। यदि मन सच्चा है और मुख से भी सच्चाई और प्रेम की बात होती है तो ऐसे व्यक्तियों के पास सत्य का चिन्ह होने के कारण उन्हें कहीं भी रुकावट का सामना नहीं करना पड़ता।। ९ ।। आठवीं तिथि - व्यक्ति आठों सिद्धियों को प्राप्त कर सकने वाली बुद्धि पर नियंतण बनाए रखे, सत्य और अलेप प्रभु को अपने अच्छे आचरण के माध्यम से याद करता रहे तथा वायु जैसे चंचल, पानी की तरह नीचे की ओर जाने वाला तथा अग्नि की तरह क्रोध वाले स्वाभाव को त्याग दे तो ऐसे व्यक्ति में ही प्रभु के सच्चे नाम का निवास होता है और मन उस प्रभु में ही लौ लगाए रहता है। नानक विनती करता है कि ऐसा व्यक्ति कालजयी हो जाता है अर्थात मौत उसे मार नही सकती ।। १० ।। नौवीं तिथि प्रभु के नाम के साथ ही नौ नाथ हैं और धरती के नौ खण्ड हैं परन्तु प्रत्येक हृदय में बसने वाला वह नाथ प्रभु

महा बलवंडा ॥ आई पूता इहु जगु सारा ॥ प्रभ आदेसु आदि रखवारा ॥ आदि जुगादी है भी होगु ॥ ओहु अपरंपरु करणै जोगु ॥ ११ ॥ दसमी नामु दानु इसनानु ॥ अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥ सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ जिउ तागा जगु एवै जाणहु ॥ असथिरु चीतु साचि रंगु माणहु ॥ १२ ॥ एकादसी इकु रिदै वसावै ॥ हिंसा ममता मोहु चुकावै ॥ फलु पावै ब्रतु आतम चीनै ॥ पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ निरमलु निराहारु निहकेवलु ॥ सूचै साचे ना लागै मलु ॥ १३ ॥ जह देखउ तह एको एका ॥ होरि जीअ उपाए वेको वेका ॥ फलोहार कीए फलु जाइ ॥ रस कस खाए सादु गवाइ ॥ कूड़ै लालचि लपटै लपटाइ ॥ छूटै गुरमुखि साचु कमाइ ॥ १४ ॥ दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता ॥ अहिनिसि जागहि कबहि न सूता ॥ जागतु जागि रहै लिव लाइ ॥ गुर परचै तिसु कालु न खाइ ॥ अतीत भए मारे बैराई ॥ प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥ १५ ॥ दुआदसी दइआ दानु करि जाणै ॥ बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ बरती बरत रहै निहकाम ॥ अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ तीनि भवण महि एको जाणै ॥ सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥ १६ ॥ तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ अंम्रितु मूलु सिखरि लिव तारै ॥ डर डरि मरै न बूडै कोइ ॥ निडरु बूडि मरै पति खोइ ॥ डर महि घरु घर महि डरु जाणै ॥ तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥ १७ ॥ चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ राजस तामस सत काल समावै ॥ ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ चउदसि भवन पाताल समाए ॥ खंड ब्रहमंड रहिआ लिव लाए ॥ १८ ॥ अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ बूझहु गिआनी सबदु बीचारि ॥ ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ करि करि वेखै करता सोई ॥ गुर ते दीसै सो तिस ही माहि ॥ मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥ १९ ॥ घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ जह आसा तह बिनसि बिनासा ॥ फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ ममता जाल ते रहै उदासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥ २० ॥ १ ॥

महाबलशाली है उसके लिये यह सारा संसार ही माँ के लिये बेटों के समान है। प्रभु को भी प्रणाम है क्योंकि प्रारम्भ से ही वही हमारा रक्षक है। वह आदि में भी, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी बना रहेगा। वही अपरम्पार प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है।। ११ ।। दसवीं तिथि - प्रभु का नाम जपना चाहिए, दान करना चाहिए और उस प्रभु के नाम में ही स्नान करते रहना चाहिए। प्रभु के सच्चे गुणों का ज्ञान लेना ही वास्तव में प्रत्येक दिन तीर्थ स्नान करने के बराबर है। सत्य को मैल नहीं लगती और उसके कारण भ्रम और भय भाग जाते हैं अन्यथा कच्चे धागे जैसे सम्बन्धों को टूटते हुए जरा भी देर नहीं लगती। इस संसार को धागे के समान ही समझो और चित्त को स्थिर बनाए रखकर उस सच्चे प्रभु के प्रेम का आनन्द लिया जाता है।। १२ ।। ग्यारहवीं तिथि - एकादशी का अर्थ है कि एक प्रभु को ही हृदय में बसाया जाए तथा हिंसा, ममता, मोह को समाप्त कर दिया जाए। अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेने से व्रत आदि का फल प्राप्त हो जाता है और जब व्यक्ति पाखण्डों में लीन हो जाता है तो वह फिर वास्तविकता को नहीं देख पाता। प्रभु ही पवित्र, निराहार और अलिप्त बना रहने वाला है और वह ही इतना पवित्र है कि उसकी इस सच्चाई को कभी मैल नहीं लगती।। १३ ।। मैं जिधर भी देखता हूँ वह एक ही एक दिखाई देता है। उसी प्रभु ने भांति-भांति के जीव उत्पन्न किए हैं। अनेकों केवल फल ही खाते हैं परन्तु इस सबका भी कोई खास फल नहीं मिलता। कई भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थ खाते हैं और खाने का स्वाद ही गँवा कर वे झूठे लालच में ही लिपटे पड़े रहते हैं। गुरु के माध्यम से और सत्य पर आचरण करते हुए वे मुक्त हो जाते हैं।। १४ ।। बारहवीं तिथि - योग की विभिन्न मुद्राओं से जिसका मन परे हो गया है वास्तव में वही अवधूत है। वही रात दिन सावधान बना रहता है और मोह की नींद में कभी नही सोता। वह जगकर और सावधान होकर प्रभु में अपनी लौ लगाता है तथा गुरु पर विश्वास करते रहने के कारण उसे काल नहीं खाता। वह अतीत हो जाता है और उसने शत्रुओं को मार लिया होता है। नानक विनती करता है कि वास्तव में ऐसे व्यक्ति की ही लौ परमात्मा में लगी होती है।। १५ ।। द्वादश तिथि को व्यक्ति दया और दान करने की भावना को वास्तव में जानकर बाहर जाते मन को रोककर वापस अपने अन्दर ही स्थित कर ले; व्रत रखने वाला निष्काम होने का व्रत रखे और अपने मुख से प्रभु-नाम का जाप करता रहे। यदि वह तीनों लोकों में एक प्रभु को ही मानता है तो वास्तव में वही सब प्रकार की पवित्रताओं, संयमों और सत्य को पहचान लेता हैं।।१६।। तेरहवीं तिथि- व्यक्ति का जीवन समुद्र के किनारे खड़े वृक्ष की तरह है परन्तु कभी भी गिर सकने वाले ऐसे वृक्ष की जड़ अमर हो सकती है यदि उसकी चोटी प्रभु की लौ की तार के साथ बंधी रहे। जो प्रभु के भय में रहता हुआ मरता है वह संसार समुद्र में डूबता नहीं ; परन्तु जो प्रभु से नहीं डरता वह अपने सम्मान को गँवा कर मर खप जाता है। जिसका ठिकाना प्रभु के भय में बना है वह अपने हृदय में ही उस प्रभु के भय को अच्छी तरह जान लेता है। सच्चा प्रभु यदि मन को अच्छा लग जाए तो जीव को प्रभु के साथ बैठने की पदवी प्राप्त हो जाती है।।१७।।चौदस तिथि - जो व्यक्ति चौथे पद में प्रवेश कर जाता है उसके रजो, तमो, सतो, गुण आदि उस चौथे पद (तुरीय अवस्था) में लीन हो जाते हैं। वह चन्द्रमा के घर में सूर्य को बसाए अर्थात ठण्डक और जड़ता छोडकर गुरु के उपदेश रूपी सूर्य के प्रकाश में कार्यशील बना रहे। योग तथा मुक्ति की वास्तविकता समझे तथा यह भी जाने कि चौदह लोकों और पाताल में भी वह प्रभु ही बसा है। वही प्रभु खण्डों-ब्रह्माण्डों में समाया हुआ है।। १८ ।। अमावस्या तिथि - व्यक्ति के अन्दर ही गुप्त रूप से बसा हुआ चन्द्रमा उसके हृदय आकाश में चढ़ आता है। हे ज्ञानवान लोगो, इस शब्द का चिन्तन करो। आकाश में पूर्ण चन्द्र निकल आने से तीनों लोकों में प्रकाश हो जाता है और वह कर्ता प्रभु ही इस प्रकाश को करके स्वयं देखता रहता है। गुरु के माध्यम से जो भी दिखाई देता है वह उस प्रभु के अन्तर्गत ही होता है। मनमुख व्यक्ति भूले हुए आवागमन में भटकते रहते हैं।। १९ ।। वह प्रभु ही सभी घरों और द्वारों की स्थापना करता है और स्वयं ही सभी स्थानों में स्थित होकर शोभायमान बना रहता है। जब सच्चे गुरु की प्राप्ति होती है तभी व्यक्ति स्वयं को पहचानता है। जहाँ आशाएँ बनी रहती हैं वहाँ विनाश भी बना ही रहता है। व्यक्ति की दुविधाओं और तृष्णाओं का खप्पर जब फूट जाता है तो ममता के जाल से वह तटस्थ होकर अलग हो जाता है। नानक विनती करता है कि हम तो ऐसे व्यक्ति के दास हैं।। २० ।। १ ।।

बिलावलु महला ३ वार सत घरु १० ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ आपे वरतै अवरु न कोई ॥ ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥ आपे करता करै सु होई ॥ नामि रते सदा सुखु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ १ ॥ हिरदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ हरि अगम अगोचरु अपरंपर सुआमी जन पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ तिस की कीमति कही न जाइ ॥ आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥ २ ॥ मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ हउमै ममता सबदि जलाइ ॥ ३ ॥ बुधवारि आपे बुधि सारु ॥ गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ दरि सचै सद सोभा पाए ॥ नामि रते गुर सबदि सुहाए ॥ ४ ॥ लाहा नामु पाए गुर दुआरि ॥ आपे देवै देवणहारु ॥ जो देवै तिस कउ बलि जाईऐ ॥ गुर परसादी आपु गवाईऐ ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥ ५ ॥ वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥ प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ सभना करते तेरी टेका ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥ ६ ॥ सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ॥ सचु संजमु करणी है कार ॥ वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा ॥ ७ ॥ छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥ हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥ जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥ सचु करणी साचि लिव लाए ॥ ८ ॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ ॥

बिलावलु महला ३ वार सत (सात दिन) घरु १० १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

आदित्य वार अर्थात रविवार - वह प्रभु ही आदि पुरुष है जो सबमें कार्यशील है और उसके बिना अन्य कोई नहीं है। उसने सारे संसार को अपने में ही पिरो रखा है और ताने बाने की तरह वह सबमें ओत-प्रोत है। वह कर्ता स्वयं ही जो करता है वही होता है। प्रभु-नाम में लीन रहने से सदैव सुख बना रहता है इस तथ्य को गुरमुख बनकर कोई बिरला ही बूझ पाता है।। १ ।। मैं हृदय की माला से गुणों के भण्डार उस प्रभु का जाप करता हूँ। प्रभु तो अगम्य, अगोचर, अपरम्पार स्वामी है, उसके सेवकों के चरणों से लगकर और उसके दासों के दास बनकर उसका सुमिरन करो।। १ ।। रहाउ ।। सोमवार - सत्य में लीन होकर वह सभी ओर व्याप्त दिखाई देता है। उसके मूल्य को आँका नहीं जा सकता। उसमें लौ लगाकर सभी उसका बखान करते-करते चुप हो गए हैं। प्रभु जिसे देता है केवल सत्य उसी के पल्ले ही पड़ता है। उस अगम्य अगोचर प्रभु को देखा नहीं जा सकता। शब्द-गुरु के माध्यम से वह प्रभु सबमें समाया हुआ दिखाई देता है।। २ ।। मंगलवार - प्रभु ने स्वयं ही माया मोह को उत्पन्न किया है और स्वयं ही प्रत्येक जीव को अपने अपने ध ंधे में लगा रखा है। जिसे स्वयं समझाता है वही समझ पाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से उसे प्रभु का द्वार और घर दिखाई देने लगता है। जो प्रभु में लौ लगाकर प्रेम पूर्वक उसकी भक्ति करता है उसका अहंकार और ममता शब्द के माध्यम से जल जाते हैं।। ३ ।। बुधवार - परमात्मा स्वयं ही जीव की बुद्धि की सम्भाल करता है और तभी वह गुरमुख बनकर शब्द के चिंतन के माध्यम से शुभ आचरण अपनाता है। प्रभु-नाम में लीन होने से मन निर्मल हो जाता है और जीव अहंकार की मल को खोकर प्रभु के गुण गाता है। वह सदैव सच्चे प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त करता है और प्रभु-नाम में लीन होकर शब्द-गुरु के माध्यम से शोभायुक्त बना रहता है।। ४ ।। गुरु के द्वार पर पहुँच कर वह प्रभु-नाम का लाभ प्राप्त करता है तथा देने वाला प्रभु स्वयं ही देता जाता है। जो देने वाला है उस पर हम बलिहारी जाते हैं और गुरु की कृपा से अपने अहंकार को गँवाया जाता है। हे नानक, प्रभु-नाम को सदा हृदय में धारण किए रहो और उस देने वाले प्रभु की सदैव जय-जयकार करते रहो।। ५ ।। वीरवार (बृहस्पतिवार) - परम्परा में जाने जाते बावन वीर भ्रमों में ही भूले रहे और भूत प्रेत आदि भी परमात्मा को छोड़कर किसी अन्य में ही लगे रहते हैं। प्रभु स्वयं ही उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार का बनाकर देखता रहता है अर्थात उनकी सम्भाल करता है। हे प्रभु, सबको तेरा ही आसरा है। सभी जीव जन्तु तेरी ही शरण मे हैं। तुझसे वही मिलता है जिसे तू अपने से मिला लेता है।। ६ ।। शुक्रवार-प्रभु सबमें ही समाया है और उसने स्वयं ही इस सृष्टि को उन्पन्न करके सबकी कीमत आँकी है। गुरमुख होने पर ही व्यक्ति यह चिंतन करता है कि सत्य और संयम ही आचरण में अपनाने योग्य है। व्रत, नियम और प्रत्येक दिन का पूजा पाठ उस प्रभु को जाने बिना वास्तव मे सब द्वैतभाव ही है।। ७ ।। शनिवार - शकुन और शास्त्र को इस बात के लिये विचारना कि कौन सा कर्म अच्छा है या कौन सा समय उस कर्म के लिये अच्छा है कोरा भ्रम और अहंकार ही है तथा उसी में सारा संसार भटकता रहता है। अंधा, अज्ञानी मनमुख द्वैतभाव में पड़ा रहता है और यम के द्वार पर बँधा हुआ वह चोटें खाता रहता है। गुरु की कृपा से जीव सदैव सुख प्राप्त करता है और सच्चे आचरण के माध्यम से सत्य में लौ लगाए रहता है।। ८ ।। जो सच्चे गुरु की सेवा करते हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं और अपने अहंकार को मार कर उनकी लौ सत्य में ही लगी रहती है। वे सहज स्वभाविक रूप से ही हे प्रभु, तेरे प्रेम में लीन बने रहते हैं।

तू सुखदाता लैहि मिलाइ ॥ एकस ते दूजा नाही कोइ ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होइ ॥ ९ ॥ पंद्रह थिंती तै सत वार ॥ माहा रुती आवहि वार वार ॥ दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥ आवा गउणु कीआ करतारि ॥ निहचलु साचु रहिआ कल धारि ॥ नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥ १० ॥ १ ॥ बिलावलु महला ३ ॥ आदि पुरखु आपे स्रिसटि साजे ॥ जीअ जंत माइआ मोहि पाजे ॥ दूजै भाइ परपंचि लागे ॥ आवहि जावहि मरहि अभागे ॥ सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ॥ परपंचु चूकै सचि समाइ ॥ १ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ॥ ता कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रिसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥ कोइ न मेटै तेरै लेखै ॥ सिध साधिक जे को कहै कहाए ॥ भरमे भूला आवै जाए ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥ हउमै मारे ता दरु सूझै ॥ २ ॥ एकसु ते सभु दूजा हूआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥ दूजे ते जे एको जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ सतिगुरु भेटे ता एको पाए ॥ विचहु दूजा ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ जिस दा साहिबु डाढा होइ ॥ तिस नो मारि न साकै कोइ ॥ साहिब की सेवकु रहै सरणाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ तिस ते ऊपरि नाही कोइ ॥ कउणु डरै डरु किस का होइ ॥ ४ ॥ गुरमती सांति वसै सरीर ॥ सबदु चीन्हि फिरि लगै न पीर ॥ आवै न जाइ ना दुखु पाए ॥ नामे राते सहजि समाए ॥ नानक गुरमुखि वेखै हदूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ ५ ॥ इकि सेवक इकि भरमि भुलाए ॥ आपे करे हरि आपि कराए ॥ एको वरतै अवरु न कोइ ॥ मनि रोसु कीजै जे दूजा होइ ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ दरि साचै साचे वीचारी ॥ ६ ॥ थिती वार सभि सबदि सुहाए ॥ सतिगुरु सेवे ता फलु पाए ॥ थिती वार सभि आवहि जाहि ॥ गुर सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ॥ थिती वार ता जा सचि राते ॥ बिनु नावै सभि भरमहि काचे ॥ ७ ॥ मनमुख मरहि मरि बिगती जाहि ॥ एकु न चेतहि दूजै लोभाहि ॥ अचेत पिंडी अगिआन अंधारु ॥ बिनु सबदै किउ पाए पारु ॥ आपि उपाए उपावणहारु ॥ आपे कीतोनु गुर वीचारु ॥ ८ ॥ बहुते भेख करहि भेखधारी ॥ भवि भवि भरमहि काची सारी ॥ ऐथै

तू ही सुख देने वाला दाता है, तू ही हमें अपने से मिला ले। उस एक प्रभु बिना दूसरा कोई नहीं और जो गुरमुख बनकर इस बात को जान लेता है उसे सब प्रकार की सूझ बुद्धि प्राप्त हो जाती है।। ९ ।। पन्द्रह तिथियाँ, सातों दिन महीने, ऋतुएं जैसे बार-बार आते-जाते रहते हैं इसी प्रकार यह संसार भी है जो आता -जाता रहता है। जीवों का आवागमन तो उस कर्ता प्रभु ने किया है और वह स्वयं सत्य रूप में अटल बनकर अपनी कलाओं को धारण किए रहता है। हे नानक, इस बात को कोई शब्द के चिंतन के द्वारा बिरला गुरमुख ही बूझता है।। १० ।। १ ।। बिलावलु महला ३ ।। वह आदि पुरुष परमात्मा स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और इस सृष्टि के जीव जन्तु माया मोह में लगे हैं। वे प्रभु को छोड़कर द्वैतभावों के प्रपंच में लीन बने हुए हैं। वे आते-जाते और अभागे बनकर मरते रहते हैं। सच्चे गुरु से मिलाप होने के बाद वे समझ बुद्धि प्राप्त करते हैं और सभी प्रपंचों को समाप्त करके वे सत्य में समा जाते हैं ।। १ ।। जिसके माथे पर लेख लिखा है उसी के मन में एक प्रभु ही बसा रहता है।। १ ।। रहाउ ।। वह सारी सृष्टि पैदा करके स्वयं देख भाल करता है; हे प्रभु, तेरे लिखे लेखों को कोई नहीं मिटा सकता। सिद्ध तथा साधना करने वाले साधक यदि उसके बारे में कुछ कहते कहाते भी हैं तो वे भ्रमों में भटकते हुए आते-जाते रहते हैं। जो सच्चे गुरु की सेवा करता है वही सेवक उसको जान पाता है और जब वह अहंकार को मार लेता है तो उसे प्रभु द्वार का पता चल जाता है।। २ ।। उस एक प्रभु से ही दूसरे सभी बने हैं। वह एक ही सबमें कार्यशील है दूसरा कोई नहीं। जो दूसरे को छोड़कर केवल एक प्रभु को जानता है वह शब्द गुरु के माध्यम से प्रभु के द्वार पर पहुँचने का चिन्ह प्राप्त कर लेता है। सच्चे गुरु से मिलाप हो जाए तो एक ही प्रभु को प्राप्त किया जाता है; तब व्यक्ति के अन्तर्मन में से द्वैतभाव को रोक दिया जाता है।। ३ ।। जिसका मालिक बलशाली हो उसे कोई भी नहीं मार सकता। सेवक सदैव उस मालिक की शरण में रहता है तो वह मालिक उसे बड़प्पन प्रदान कर देता है। जब उस प्रभु के उपर अन्य कोई भी नहीं है तो फिर भला कौन डरता है और फिर किसका डर हो सकता है।। ४ ।। गुरु की मति में चलने से शरीर में शान्ति का निवास हो जाता है और जब शब्द को पहचान लिया जाता है तो फिर कोई भी पीड़ा नहीं सताती। फिर व्यक्ति ना आता है ना जाता है और ना दुखी होता है। प्रभु-नाम में लीन होकर वह सहज स्वभाविक सुख में समा जाता है। हे नानक, गुरमुख तो उसे प्रत्यक्ष ही देखता है और मेरा प्रभु सदैव पूर्ण रूप से सबमें व्याप्त बना रहता है।। ५ ।। कई तो उसके सेवक हैं और कई भ्रमों में भटकते घूम रहे हैं। वह प्रभु स्वयं सब कुछ करता है और स्वयं सब कुछ करवाता है। वह एक ही कार्यशील है, उसके बिना अन्य कोई नहीं। उसके बिना अन्य कोई नहीं है और यदि द्वैतभाव होता है तो वह प्रभु मन में रुष्ट हो जाता है। अच्छा आचरण तो यही है कि सच्चे गुरु की सेवा की जाए क्योंकि इस प्रकार के आचरण का विचार तो सच्चे प्रभु के द्वार से प्रभु ने ही किया है।। ६ ।। तिथियाँ और वार प्रभु के शब्द में लीन होने पर ही सुहावने लगते हैं और वास्तविक फल तभी प्राप्त होता है जब सच्चे गुरु की सेवा की जाती है। तिथियाँ और वार तो सब आते जाते रहते हैं परन्तु शब्द-गुरु अटल बना रहता है इसीलिये हे जीव, तू सदैव सत्य में लीन बना रह। तिथियाँ और वार तो तभी ठीक हैं यदि सत्य में लीन रहा जाए। प्रभु-नाम के बिना कच्चे बनकर सभी भटकते रहते हैं।। ७ ।। मनमुख व्यक्ति मर खप कर बुरे हाल में यहाँ से जाता है क्योंकि वह एक प्रभु के प्रति सावधान नहीं होता और दूसरे के लोभ में ही पड़ा रहता है। नासमझ शरीर वाला व्यक्ति अज्ञान के अंधकार मे ही पड़ा रहता है और शब्द को जाने बिना वह भला कैसे पार हो सकता है। वह पैदा करने वाला प्रभु स्वयं ही पैदा करता है और गुरु का विचार तो यही है कि उसी ने ही सबको पैदा किया है। वेशों को धारण करने वाले अनेकों वेश करते हैं परन्तु जीवन में कच्ची गोटियाँ खेलने वाले भटकते हुए भ्रमों में पड़े रहते हैं। उन्हें यहाँ भी

सुखु न आगै होइ ॥ मनमुख मुए अपणा जनमु खोइ ॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ घर ही अंदरि सचु महलु पाए ॥ ९ ॥ आपे पूरा करे सु होइ ॥ एहि थिती वार दूजा दोइ ॥ सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥ थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ॥ इकतु नामि सदा रहिआ समाइ ॥ १० ॥ २ ॥

बिलावलु महला १ छंत दखणी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मुंध नवेलड़ीआ गोइलि आई राम ॥ मटुकी डारि धरी हरि लिव लाई राम ॥ लिव लाइ हरि सिउ रही गोइलि सहजि सबदि सीगारीआ ॥ कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती मिलहु साचि पिआरीआ ॥ धन भाइ भगती देखि प्रीतम काम क्रोधु निवारिआ ॥ नानक मुंध नवेल सुंदरि देखि पिरु साधारिआ ॥ १ ॥ सचि नवेलड़ीए जोबनि बाली राम ॥ आउ न जाउ कही अपने सह नाली राम ॥ नाह अपने संगि दासी मै भगति हरि की भावए ॥ अगाधि बोधि अकथु कथीऐ सहजि प्रभ गुण गावए ॥ राम नाम रसाल रसीआ रवै साचि पिआरीआ ॥ गुरि सबदु दीआ दानु कीआ नानका वीचारीआ ॥ २ ॥ स्रीधर मोहिअड़ी पिर संगि सूती राम ॥ गुर कै भाइ चलो साचि संगूती राम ॥ धन साचि संगूती हरि संगि सूती संगि सखी सहेलीआ ॥ इक भाइ इक मनि नामु वसिआ सतिगुरू हम मेलीआ ॥ दिनु रैणि घड़ी न चसा विसरै सासि सासि निरंजनो ॥ सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥ ३ ॥ जोति सबाइड़ीए त्रिभवण सारे राम ॥ घटि घटि रवि रहिआ अलख अपारे राम ॥ अलख अपार अपारु साचा आपु मारि मिलाईऐ ॥ हउमै ममता लोभु जालहु सबदि मैलु चुकाईऐ ॥ दरि जाइ दरसनु करी भाणै तारि तारणहारिआ ॥ हरि नामु अंम्रितु चाखि त्रिपती नानका उर धारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला १ ॥ मै मनि चाउ घणा साचि विगासी राम ॥ मोही प्रेम पिरे प्रभि अबिनासी राम ॥ अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ ॥ किरपालु सदा दइआलु दाता

और आगे भी सुख प्राप्त नहीं होता तथा ऐसे मनमुख व्यक्ति अपना जीवन गँवा कर मर जाते हैं। सच्चे गुरु की सेवा भ्रमों को दूर करती है और व्यक्ति अपने हृदय में ही सत्य रूपी ठिकाने को प्राप्त कर लेता है।। ६ ।। वह प्रभु ही पूर्ण है और जो वह करता है वही होता है। यह तिथियों और दिनों का विचार तो केवल द्वैतभाव ही पैदा करने वाला है। सच्चे गुरु-प्रभु बिना सब घोर अंधकार है और तिथियों तथा दिनों का चिन्तन तो केवल मूर्ख और गँवार ही करते हैं। हे नानक, गुरमुख बनकर ही जीव जान पाता है और उसे सूझ बुद्धि प्राप्त होती है। उस एक प्रभु का नाम सदैव सब ओर समाया रहता है।। १० ।। २ ।।

बिलावलु महला १ छन्द दक्खिनी ੧ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे नवयौवना रूपी मुग्धा जीव स्त्री, इस संसार में तू उसी प्रकार आई है जैसे थोड़े समय के लिये गुज्जर अपने ढोर डंगरों को वर्षा ऋतु में चराने के लिये किसी ठीक स्थान पर ले जाता है और फिर वहाँ से वापस आ जाता है। अब जीवन रूपी मटकी को जब एक ओर रख दिया जाता है तो जीव स्त्री तभी प्रभु में लौ लगाती है। लौ लगाकर यह गुज्जर रूपी जीव स्त्री प्रभु में लीन बनी रहती है और सहज शब्द का शृंगार करती है। हे जीव स्त्री, अब तू हाथ जोड़कर गुरु के पास विनती कर कि हे सच्चे प्यारे प्रभु, मुझसे आ मिल। उस स्त्री की प्रेम भक्ति देखकर उसका प्रियतम उसके काम क्रोध का निवारण कर देता है। हे नानक, वह मुग्धा नवयौवना सुन्दर स्त्री अपने प्रियतम को देखकर अब एक आसरे वाली हो गई है।। १ ।। हे सत्य में यौवन पूर्ण बनी रहने वाली नवेली जीव स्त्री, तू अन्य किसी स्थान पर मत जा और अपने पति प्रभु के साथ ही बनी रह। मैं अपने स्वामी पति के साथ ही रहती हुई उसकी दासी हूँ और मुझे प्रभु भक्ति ही अच्छी लगती है। उस प्रभु को अगाध, बोध और अकथनीय कहा जाता है। हम स्वाभाविक रूप से ही उस प्रभु के गुण गाते हैं। वह प्रभु राम नाम का रस लेने वाला रसिक है और सत्य में लगी हुई जीव स्त्रियों के साथ ही रमण करता है। हे नानक, उसी ने ही शब्द-गुरु का दान दिया है जिसके माध्यम से नानक उसका चिंतन करता है।। २ ।। जो प्रभु के साथ मोहित होकर पड़ी हुई हैं वे वास्तव में अपने प्रियतम प्रभु के साथ ही सो रही हैं। सत्य में सयुंक्त होकर हे जीव स्त्री, गुरु की आज्ञा में चलती रहो । जो स्त्री सत्य में लीन हो गई है वह प्रभु के साथ ही अपनी सखी सहेलियों समेत सोई हुई है। एक भावना और एक मन होने से हमारे अन्दर प्रभु-नाम बस गया है और सच्चे गुरु ने हमें मिला दिया है। यह निरंजन प्रभु दिन रात, घड़ी, पल और श्वासों के साथ भी विस्मृत ना हो। शब्द की ज्योति से ज्ञान का दीपक जलाया जाता है और हे नानक, वही भय को दूर करने वाला होता है।। ३ ।। हे सखी, उस प्रभु की ज्योति सभी तीनों लोकों में व्याप्त है। वह अलख और अपरम्पर प्रभु घट-घट में रमण कर रहा है। वह अलख, अपार, सच्चा अपरम्पर प्रभु अहम् भाव को मार कर मिलता है। अहंकार ममता और लोभ को जलाने पर शब्द के माध्यम से हमारे अंतःकरण की मैल दूर होती है। तेरे द्वार पर पहुँच कर यदि तुझे भा जाऊं तो तेरा दर्शन हो सकता है; हे पार उतारने वाले प्रभु, मुझे पार कर दे। प्रभु-नाम के अमृत को चखकर मैं तृप्त हो गई हूँ और हे नानक, मैंने उसे ही हृदय में धारण किया है।। ४ ।। १ ।। बिलावलु महला १ ।। मेरे मन में प्रभु को मिलने का बहुत चाव है और मैं सत्य के माध्यम से खिल उठी हूँ। मैं उस प्रीतम प्रभु के प्रेम में मोहित हो गई हूँ और केवल मेरा प्रभु ही अविनाशी है। वह अव्यक्त प्रभु अनाथों का भी नाथ है और जो उसे अच्छा लगता है वही होता है। वह दाता, दयालु और सदैव कृपा करने वाला है और

जीआ अंदरि तूं जीऐ ॥ मै अवरु गिआनु न धिआनु पूजा हरि नामु अंतरि वसि रहे ॥ भेखु भवनी हठु न जाना नानका सचु गहि रहे ॥ १ ॥ भिंनड़ी रैणि भली दिनस सुहाए राम ॥ निज घरि सूतड़ीए पिरमु जगाए राम ॥ नव हाणि नव धन सबदि जागी आपणे पिर भाणीआ ॥ तजि कूड़ु कपटु सुभाउ दूजा चाकरी लोकाणीआ ॥ मै नामु हरि का हारु कंठे साच सबदु नीसाणिआ ॥ कर जोड़ि नानकु साचु मागै नदरि करि तुधु भाणिआ ॥ २ ॥ जागु सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम ॥ जिनि सुणि मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम ॥ अकथ कहाणी पदु निरबाणी को विरला गुरमुखि बूझए ॥ ओहु सबदि समाए आपु गवाए त्रिभवण सोझी सूझए ॥ रहै अतीतु अपरंपरि राता साचु मनि गुण सारिआ ॥ ओहु पूरि रहिआ सरब ठाई नानका उरि धारिआ ॥ ३ ॥ महलि बुलाइड़ीए भगति सनेही राम ॥ गुरमति मनि रहसी सीझसि देही राम ॥ मनु मारि रीझै सबदि सीझै त्रै लोक नाथु पछाणए ॥ मनु डीगि डोलि न जाइ कत ही आपणा पिरु जाणए ॥ मै आधारु तेरा तू खसमु मेरा मैस ताणु तकीआ तेरओ ॥ साचि सूचा सदा नानक गुर सबदि झगरु निबेरओ ॥ ४ ॥ २ ॥

छंत बिलावलु महला ४ मंगल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरा हरि प्रभु सेजै आइआ मनु सुखि समाणा राम ॥ गुरि तुठै हरि प्रभु पाइआ रंगि रलीआ माणा राम ॥ वडभागीआ सोहागणी हरि मसतकि माणा राम ॥ हरि प्रभु हरि सोहागु है नानक मनि भाणा राम ॥ १ ॥ निंमाणिआ हरि माणु है हरि प्रभु हरि आपै राम ॥ गुरमुखि आपु गवाइआ नित हरि हरि जापै राम ॥ मेरे हरि प्रभ भावै सो करै हरि रंगि हरि रापै राम ॥ जनु नानकु सहजि मिलाइआ हरि रसि हरि ध्रापै राम ॥ २ ॥ माणस जनमि हरि पाईऐ हरि रावण वेरा राम ॥ गुरमुखि मिलु सोहागणी रंगु होइ घणेरा राम ॥ जिन माणस जनमि न पाइआ तिन्ह भागु मंदेरा राम ॥ हरि हरि हरि हरि राखु प्रभ नानकु जनु तेरा राम ॥ ३ ॥ गुरि हरि प्रभु अगमु द्रिड़ाइआ मनु तनु रंगि भीना राम ॥

हे प्रभु, जीवों के अन्दर प्राण रूप में तू ही है। मेरे लिये तो ज्ञान ध्यान और अन्य कोई भी पूजा नहीं है क्योंकि प्रभु का नाम मेरे अन्तर्मन में बस रहा है। देश और तीर्थो पर भ्रमण करने के हठ को अब मैं नहीं जानता क्योंकि हे नानक, अब मैं सच्चे प्रभु को पकड़े बैठा हूँ।। १ ।। वह भीनी-भीनी रात भली है और वह दिन भी सुहाना है जिसमें अपनी आत्मा की सेज पर ही सोई हुई को वह प्रियतम स्वयं जगाता है। नई नवेली नौजवान जीव रूपी स्त्री जब प्रियतम को भा गई तो वह शब्द के माध्यम से जग उठी है। अब उसने झूठ, कपट, द्वैतभाव और दूसरों की चाकरी छोड़ दी है। अब मेरे गले में प्रभु-नाम का हार पड़ा हुआ है जो वास्तव में प्रभु के सच्चे शब्द का निशान (चिन्ह) है। हाथ जोड़कर नानक उस सत्य प्रभु से माँगता है कि हे प्रभु, यदि तुझे भा जाए तो हम पर कृपा दृष्टि करो।। २ ।। हे सुन्दर आँखों वाली जीव स्त्री, तू सावधान हो जा ताकि तू गुरु की वाणी को बोल सके। गुरु की वाणी सुनकर ही उस प्रभु की अकथ कथा को माना जाता है। उस अकथ कहानी से निर्वाण पद की प्राप्ति के रहस्य को कोई बिरला गुरमुख ही जान पाता है। वही शब्द में लीन होता है, अपने अहंकार को गँवाता है और तीनों लोकों के रहस्य को जान जाता है। ऐसा व्यक्ति त्यागी बनकर अपरम्पर प्रभु में लीन हो जाता है और अपने मन में उस सच्चे प्रभु के गुणों को याद करता रहता है। वह प्रभु सभी स्थानों में व्याप्त है और नानक ने उसे हृदय में धारण कर लिया है।। ३ ।। वह प्रभु भक्ति से प्यार करने वाला है। हे जीव स्त्री, वह तुझे अपने महल में बुलाता है। गुरमति के अनुरूप चलती हुई तू मन में प्रसन्न है और तूने अपने शरीर रूपी जीवन को भी सफल कर लिया है। मन को मारकर उस प्रभु पर मोहित होने तथा शब्द के रहस्य को समझने से तीनों लोकों का नाथ प्रभु तेरी पहचान में आ जाता है। फिर मन कहीं भी गिरता डोलता नहीं है क्योंकि अब उसने अपने प्रियतम को जान लिया होता है। हे प्रभु, मुझे तेरा ही आसरा है। तू ही मेरा मालिक है और तेरे बल का ही मुझे भरोसा है और तेरी ही मुझे टेक है। वह प्रभु ही सदैव सच्चा और पवित्र है। हे नानक, शब्द-गुरु के माध्यम से उसे जानकर मैंने सारा विवाद ही निपटा दिया है।। ४ ।। २ ।।

छन्द बिलावलु महला ४ मंगल (आनन्द-गीत)   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरा प्रभु मेरी सेज पर आ गया है इसलिये मेरे मन में सुख ही सुख भर गया है। गुरु के प्रसन्न होने पर मैंने प्रभु को पा लिया है इसलिये अब मैं रमण के आनन्द का उपभोग कर रही हूँ। सुहागिन (प्रभु में लीन) जीव स्त्रियाँ भाग्यशाली हैं और उनके माथे पर भाग्य रूपी मणि स्थित है। प्रभु ही हमारा सुहाग है और प्रभु ही नानक के मन को भा गया है।। १ ।। सम्मान विहीनों और विनम्र लोगों का सम्मान प्रभु ही है और वह प्रभु ही सब कुछ है। गुरमुख व्यक्ति अपने अहंकार को छोड़ देता है और सदैव प्रभु का ही जाप करता रहता है। जो मेरे प्रभु को भाता है वह वही करता है और प्रभु ही हमें अपने प्रेम के रंग में रंगता है। दास नानक को तो वह स्वाभाविक रूप से ही मिल गया है और यह दास प्रभु के नाम रस को पीकर सन्तुष्ट बना रहता है।। २ ।। मानव जीवन प्रभु से प्राप्त किया जाता है और यही अवसर प्रभु के सुमिरन करने का है। गुरमुख बनकर अन्य सुहागिन जीव स्त्रियों से मिला जाता है और यह प्रेम और गहरा हो जाता है। जिन्होंने मानव जीवन प्राप्त नहीं किया है वे मन्द भाग्य वाले हैं। हे प्रभु, नानक को बचा लो क्योंकि वह तेरा ही सेवक है।। ३ ।। गुरु ने उस अगम्य प्रभु का सुमिरन याद करवाया हैं जिससे मेरा मन तन भीग उठा है।

भगति वछलु हरि नामु है गुरमुखि हरि लीना राम ॥ बिनु हरि नाम न जीवदे जिउ जल बिनु मीना राम ॥ सफल जनमु हरि पाइआ नानक प्रभि कीना राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ बिलावलु महला ४ सलोकु ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु मनि वसै वडभागु ॥ गुरि पूरै वेखालिआ नानक हरि लिव लागु ॥ १ ॥ छंत ॥ मेरा हरि प्रभु रावणि आईआ हउमै बिखु झागे राम ॥ गुरमति आपु मिटाइआ हरि हरि लिव लागे राम ॥ अंतरि कमलु परगासिआ गुर गिआनी जागे राम ॥ जन नानक हरि प्रभु पाइआ पूरै वडभागे राम ॥ १ ॥ हरि प्रभु हरि मनि भाइआ हरि नामि वधाई राम ॥ गुरि पूरै प्रभु पाइआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ जोति परगटिआई राम ॥ जन नानक नामु अधारु है हरि नामि समाई राम ॥ २ ॥ धन हरि प्रभि पिआरै रावीआ जां हरि प्रभ भाई राम ॥ अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम ॥ गुरि पूरै हरि मेलिआ हरि रसि आघाई राम ॥ जन नानक नामि विगसिआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ ३ ॥ हम मूरख मुगध मिलाइआ हरि किरपा धारी राम ॥ धनु धंनु गुरू साबासि है जिनि हउमै मारी राम ॥ जिन्ह वडभागी वडभागु है हरि हरि उर धारी राम ॥ जन नानक नामु सलाहि तू नामे बलिहारी राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

बिलावलु महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मंगलु साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ अबिनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ मनि प्रीति लागै वडै भागै कब मिलीऐ पूरन पते ॥ सहजे समाईऐ गोविंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ दिनु रैणि ठाढी करउ सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लड़ि लाइआ ॥ १ ॥ भइआ समाहड़ा हरि रतनु विसाहा राम ॥ खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ॥ मिले संत पिआरे दइआ धारे कथहि अकथ बीचारो ॥ इक चिति इक मनि धिआइ सुआमी लाइ प्रीति पिआरो ॥ कर जोड़ि प्रभ पहि करि बिनंती मिलै हरि जसु लाहा ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा

प्रभु का नाम ही भक्त वत्सल है और गुरमुख बनकर ही इसे प्रभु से प्राप्त किया जाता है। प्रभु नाम के बिना भक्त गण उसी प्रकार जीवित नहीं बचते जैसे जल के बिना मछली नहीं बचती। जब प्रभु प्राप्त हो गया तो मेरा जीवन सफल हो गया तथा हे नानक यह प्रभु ने ही किया है।। ४ ।। १ ।। ३ ।। बिलावलु महला ४ श्लोक ।। उस प्रभु रूपी सज्जन को ढूंढ लो और यदि वह मन में बस जाए तो अपने आप को भाग्यशाली मानो। पूर्ण गुरु ने ही उसे उसके दर्शन कराए हैं और हे नानक, अब हमारी लौ प्रभु में ही लगी रहती है।। १ ।। छन्द।। अहंकार रूपी विष को दूर करके अब जीव स्त्रियाँ मेरे प्रभु के साथ रमण करने के लिये आई हैं। गुरु की मति में चलकर उन्होंने अहंकार मिटा दिया है और अब उनकी लौ प्रभु में ही लग गई है। उनके अन्तर्मन का कमल खिल उठा है और गुरु द्वारा दिए ज्ञान के माध्यम से वे माया की नींद से जग गई हैं। हे दास नानक, पूर्ण बड़े भाग्य से ही उन्होंने प्रभु को प्राप्त कर लिया है।। १।। वह प्रभु हमारे मन को भा गया है इसलिये प्रभु-नाम के माध्यम से हमें बधाईयाँ मिलती हैं। पूर्ण गुरु के माध्यम से प्रभु पाया जाता है और जीव की सुरति प्रभु में ही लगी रहती है। अज्ञान का अंधकार मिट जाता है और प्रभु-नाम की ज्योति प्रकट हो जाती है। प्रभु-नाम ही दास नानक का आधार है और वह प्रभु नाम में ही लीन बना है।। २ ।। जीव रूपी स्त्री के साथ प्यारे प्रभु ने तभी रमण किया है जब वह प्रभु को भा गई है। मेरी आँखें उसके प्रेम में इस प्रकार खिंच गई हैं जैसे चूहे को देखकर बिल्ली आतुर हो उठती है। पूर्ण गुरु ने ही उस प्रभु से मिलाप करवाया है और प्रभु के नाम रस को पीकर जीव-स्त्रियाँ सन्तुष्ट हो गई है। दास नानक तो प्रभु नाम के माध्यम से खिल उठा है और उसने अपनी लौ प्रभु में ही लगा ली है।। ३ ।। प्रभु ने कृपा धारण की है और हम मूर्खों को अपने से मिला लिया है। वह गुरु धन्य है और उसे शाबाश है जिसने हमारे अहंकार को मार दिया है। जो बड़े भाग्यशाली हैं उन्होंने प्रभु को हृदय में धारण कर लिया है। हे दास नानक, तू प्रभु के नाम की स्तुति कर और प्रभु नाम पर ही बलिहारी होता रह।। ४ ।। २ ।। ४ ।।

बिलावलु महला ५ छन्द १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

खुशी का वाद्य बज उठा और हमने अपने प्रभु का गुणानुवाद कर लिया है। हमने उस अविनाशी प्रभु पति के बारे में सुना और हमारे मन में उसके लिये चाव उत्पन्न हो गया। बड़े भाग्य से ही मन में प्रेम जगता है और अब उस पूर्ण पति से मेल कब होगा। हे सखी, मुझे ऐसी शिक्षा दो जिससे मैं स्वाभाविक रूप से ही उसमें लीन होकर प्रभु को पा लूँ। मैं तो दिन रात खड़ी हुई सेवा कर रही हूँ परन्तु तुमने प्रभु को किस युक्ति से प्राप्त किया है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो और मुझे अपने आँचल के साथ लगा लो।। १ ।। प्रभु रूपी रत्न को खरीद कर मन में आनन्द भर उठा है। खोजते-खोजते उस प्रभु को मैंने शान्त पुरुषों के पास से ढूँढ निकाला है। मुझे शान्त पुरुष मिले और उन प्यारे पुरुषों ने दया को धारण करके उस अकथनीय प्रभु के गुणों का कथन किया। उन्होंने ही बताया कि एकाग्र मन होकर उस प्रभु का सुमिरन करो और उसी से प्रेम बनाये रखो। हाथ जोड़कर प्रभु के सामने यह विनती करो कि हे प्रभु, मुझे गुणानुवाद का लाभ प्रदान करो। नानक विनती करता है कि वह तो तेरा ही दास है

मेरा प्रभु अगम अथाहा ॥ २ ॥ साहा अटलु गणिआ पूरन संजोगो राम ॥ सुखह समूह भइआ गइआ विजोगो राम ॥ मिलि संत आए प्रभ धिआए बणे अचरज जाञीआं ॥ मिलि इकत्र होए सहजि ढोए मनि प्रीति उपजी माञीआ ॥ मिलि जोति जोती ओति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ बिनवंति नानक सभ संति मेली प्रभु करण कारण जोगो ॥ ३ ॥ भवनु सुहावड़ा धरति सभागी राम ॥ प्रभु घरि आइअड़ा गुर चरणी लागी राम ॥ गुर चरण लागी सहजि जागी सगल इछा पुंनीआ ॥ मेरी आस पूरी संत धूरी हरि मिले कंत विछुंनिआ ॥ आनंद अनदिनु वजहि वाजे अहं मति मन की तिआगी ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी संतसंगि लिव लागी ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ भाग सुलखणा हरि कंतु हमारा राम ॥ अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥ आनंद अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ तह रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ रिधि सिधि सुधा रसु अंम्रितु भगति भरे भंडारा ॥ बिनवंति नानक बलिहारी वंञा पारब्रहम प्रान अधारा ॥ १ ॥ सुणि सखीअ सहेलड़ीहो मिलि मंगलु गावह राम ॥ मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ करि प्रेमु रावह तिसै भावह इक निमख पलक न तिआगीऐ ॥ गहि कंठि लाईऐ नह लजाईऐ चरन रज मनु पागीऐ ॥ भगति ठगउरी पाइ मोहह अनत कतहू न धावह ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साजन अमर पदवी पावह ॥ २ ॥ बिसमन बिसम भई पेखि गुण अबिनासी राम ॥ करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ गहि भुजा लीन्ही दासि कीन्ही अंकुरि उदोतु जणाइआ ॥ मलन मोह बिकार नाठे दिवस निरमल आइआ ॥ द्रिसटि धारी मनि पिआरी महा दुरमति नासी ॥ बिनवंति नानक भई निरमल प्रभ मिले अबिनासी ॥ ३ ॥ सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥ जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥ ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥ आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ बिनवंति नानक सेई जाणहि जिन्ही हरि रसु पीआ ॥ ४ ॥ २ ॥

क्योंकि मेरा प्रभु अगम्य है और अथाह है।। २ ।। विवाह का समय तो अटल है अर्थात प्रभु से मिलाप का समय पहले से ही नियत है और अब मेरा मिलाप पूरा हो गया है। अब मुझे समस्त सुख प्राप्त हो गए हैं और मेरा वियोग समाप्त हो गया है। इकट्ठे होकर शान्त पुरुष भी आए हैं; वे प्रभु का सुमिरन कर रहे हैं और इस प्रकार एक आश्चर्यजनक बारात बन गई है। मेरी ज्योति उससे मिलकर उसी में ओत-पोत हो गई और सभी रसों के रस प्रभु नाम का मैंने उपभोग किया है। नानक विनती करता है कि मेरा मिलाप गुरु रूपी सन्त ने करवाया है और वह प्रभु ही सब करने कराने योग्य है।।३।। यह घर सुहावना है और यह धरती भी सौभाग्यशाली है। प्रभु मेरे घर (अन्तर्मन) में आ बसा है और मैं गुरु चरणों में लीन हो गई हूँ। गुरु के चरणों में लगी हुई मैं स्वाभाविक रूप से ही सावधान हो गई हूँ और मेरी समस्त इच्छाएं पूरी हो गई हैं। सन्तजनों की चरण धूलि से मेरी आशाएँ पूरी हो गई हैं और पति प्रभु से बिछुड़ी हुई को मुझे प्रभु मिल गया है। अहंकार वाले मन की मति को मैंने त्याग दिया है और दिन रात आनन्द के बाजे बजते रहते हैं। नानक विनती करता है कि मैं उस मालिक की शरण में हूँ और शान्त पुरुषों की संगत में मेरी लौ प्रभु में लग गई है।। ४ ।। १ ।। बिलावलु महला ५ ।। मेरा भाग्य बहुत अच्छा है क्योंकि अब प्रभु हमारा पति है। अब उसके दरबार की अनहद धुन बजती रहती है अर्थात् मैं आनन्दित बनी रहती हूँ। अनहद वाद्य बजने से मैं आनन्दित बनी रहती हूँ और दिन रात मुझ में उत्साह बना रहता है। ऐसी स्थिति में रोग, शोक, दुख प्रभावित नहीं करता और वहाँ अब जन्म मरण भी नहीं होता। अब ऋद्धियों-सिद्धियों अमृत नाम के रस और अमृतरूपी भक्ति के भण्डार भर गए हैं। नानक विनती करता है कि मैं प्राणों के आधार परब्रह्म प्रभु पर बलिहारी जाता रहूँ।। १ ।। हे सखी सहेलियो, सब मिलकर खुशी के गीत गाओ। तन मन से प्रेम करती हुई उस प्रभु के साथ रमण करो। उसके साथ प्रेम करके रमण करते हुए उसे भा जाओ और एक निमिष मात्र के लिये भी उसका त्याग मत करो। उसे पकड़कर गले लगा लो और ऐसा करते हुए लज्जा मत करो तथा उसके चरणों की धूलि में मन को पूरी तरह लिपटा लो। भक्ति की ठगबूटी उसे खिला कर उसे मोहित कर लो और अन्य कहीं भी भाग दौड़ मत करो। नानक विनती करता है कि उस सज्जन प्रभु के साथ मिलकर अमर पद प्राप्त कर लो।। २ ।। हैरानी में मैं उस अविनाशी प्रभु को देखकर और हैरान हो गई। उसने हाथ देते हुए मुझे बाँह से पकड़ लिया और मेरी यम की फाँसी कट गई। उसने मुझे बाँह पकड़कर अपनी दासी बना लिया है और उसने मेरे भाग्य का अंकुर फूटने से मुझे ज्ञान के प्रकाश से पहचान करवा दी है। मलीन मोह विकार आदि भाग खड़े हुए हैं और अब पवित्र दिन मेरे लिये आ गए है। मन को अच्छी लगने वाली कृपादृष्टि उसने धारण की है और मेरी महादुर्मति नष्ट हो गई है। नानक विनती करता है कि अविनाशी प्रभु से मिलाप होने पर अब मैं निर्मल हो गई हूँ।। ३ ।। मेरा मिलाप ऐसा हुआ कि जैसे सूर्य की किरण अथवा जल से जल का मिलाप होता है। मेरी ज्योति उस परम ज्योति में मिल गई है और मिलाप का कार्य सम्पूर्ण हो गया है। अब ब्रह्म ही दिखाई देता है ब्रह्म ही सुनाई देता है और केवल उस एक प्रभु का ही बखान होता है। आत्मा का यह विस्तार करने वाला वह एक प्रभु ही है जिसके बिना अन्य किसी को नहीं जाना जाता। वह स्वयं ही कर्ता है, स्वयं ही भोगने वाला है तथा जो कुछ भी उसने रचना की है उसका कारण वह स्वयं ही है। नानक विनती करता है कि वे लोग ही इसके बारे में जानते हैं जिन्होंने प्रभु के नाम रस का पान किया है।। ४ ।। २ ।।

बिलावलु महला ५ छंत ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सखी आउ सखी वसि आउ सखी असी पिर का मंगलु गावह ॥ तजि मानु सखी तजि मानु सखी मतु आपणे प्रीतम भावह ॥ तजि मानु मोहु बिकारु दूजा सेवि एकु निरंजनो ॥ लगु चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुरत बिखंडनो ॥ होइ दास दासी तजि उदासी बहुड़ि बिधी न धावा ॥ नानकु पइअंपै करहु किरपा तामि मंगलु गावा ॥ १ ॥ अंम्रितु प्रिअ का नामु मै अंधुले टोहनी ॥ ओह जोहै बहु परकार सुंदरि मोहनी ॥ मोहनी महा बचित्रि चंचलि अनिक भाव दिखावए ॥ होइ ढीठ मीठी मनहि लागै नामु लैण न आवए ॥ ग्रिह बनहि तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी ॥ नानकु पइअंपै दइआ धारहु मै नामु अंधुले टोहनी ॥ २ ॥ मोहि अनाथ प्रिअ नाथ जिउ जानहु तिउ रखहु ॥ चतुराई मोहि नाहि रीझावउ कहि मुखहु ॥ नह चतुरि सुघरि सुजान बेती मोहि निरगुनि गुनु नही ॥ नह रूप धूप न नैण बंके जह भावै तह रखु तुही ॥ जै जै जइअंपहि सगल जा कउ करुणापति गति किनि लखहु ॥ नानकु पइअंपै सेव सेवकु जिउ जानहु तिउ मोहि रखहु ॥ ३ ॥ मोहि मछुली तुम नीर तुझ बिनु किउ सरै ॥ मोहि चात्रिक तुम्ह बूंद त्रिपतउ मुखि परै ॥ मुखि परै हरै पिआस मेरी जीअ हीआ प्रानपते ॥ लाडिले लाड लडाइ सभ महि मिलु हमारी होइ गते ॥ चीति चितवउ मिटु अंधारे जिउ आस चकवी दिनु चरै ॥ नानकु पइअंपै प्रिअ संगि मेली मछुली नीरु न वीसरै ॥ ४ ॥ धनि धंनि हमारे भाग घरि आइआ पिरु मेरा ॥ सोहे बंक दुआर सगला बनु हरा ॥ हर हरा सुआमी सुखह गामी अनद मंगल रसु घणा ॥ नवल नवतन नाहु बाला कवन रसना गुन भणा ॥ मेरी सेज सोही देखि मोही सगल सहसा दुखु हरा ॥ नानकु पइअंपै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपरंपरा ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

बिलावलु महला ५ छंत मंगल ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ सुंदर सांति

बिलावलु महला ५ छन्द १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे सखी रूपी सत्संगियो आओ, दूर-दूर से आओ ताकि हम सब लोग मिलकर उस प्रभु के मंगल गीत गाएं। हे सखी, अपने अभिमान और गर्व को त्याग दे शायद तू इसी प्रकार अपने प्रियतम को भा जाए। तू अभिमान मोह और द्वैतभाव के विकारों को त्यागकर केवल माया की कालिमा से परे रहने वाले एक प्रभु का ही सुमिरन कर। उस दयालु प्रियतम के चरणों की शरण मे आ जा क्योंकि वही सभी पापों का नाश करने वाला है। मैं उदासीनता को त्यागकर उसके दासों की दासी हो जाऊं जिससे मुझे अन्य ढंग तरीकों के पीछे ना भागना पड़े। नानक कहता है कि हे प्रभु-कृपा करो जिससे मैं मंगल गीत गाता रहूँ।। १ ।। परमात्मा का अमृत नाम ही अन्धे व्यक्ति की लकड़ी है। सुन्दर मोहिनी माया भी जीव को अनेकों प्रकार से देखती और ढूंढती रहती है। यह माया विचित्र और चंचल है तथा अनेकों हावभाव दिखाती रहती है। यह ढीठ बनकर मन को मीठी लगती रहती है और इसी के कारण प्रभु नाम का सुमिरन नहीं किया जाता है। घर, वन, नदियों के किनारे (तीर्थों पर), व्रत पूजा करते हुए, रास्ता चलते हुए और घाट पर से पार जाते हुए को हमेशा ही ठगती रहती है। नानक कहता है कि हे प्रभु, कृपा करो, तेरा नाम ही मुझ अंधे की लकड़ी है।। २ ।। हे नाथ प्रियतम, मुझ अनाथ को जैसे भी हो सके बचा लो मुझ में कोई चतुराई नहीं है कि मैं अपने मुँह से कहकर तुम्हें रिझा सकूँ। ना मैं चतुर हूँ ना सुघड़ हूँ ना सुजान हूँ ना ही ज्ञानवान हूँ अर्थात मुझ गुण विहीन में कोई भी गुण नहीं है। मेरे पास ना तो रूप है, ना सुगन्धि है, ना मेरे सुन्दर नयन हैं इसलिये हे प्रभु, तुझे जैसे भी अच्छा लगे मेरी रक्षा कर। जिस प्रभु की सभी जय-जयकार करते हैं उस करुणा के स्वामी की गति कौन जान सकता है। नानक कहता है कि यह सेवक तो मात्र सेवा करने वाला है, तुम जैसे भी ठीक समझो मुझे बचा लो।। ३ ।। मैं मछली हूँ तुम पानी हो, भला तेरे बिना मेरा काम कैसे चलेगा। मैं चातक हूँ तुम पानी की बूंद हो, मेरी तृप्ति तभी होगी जब तुम मेरे मुँह में आ पड़ोगे। तुम्हारे प्रेम की बूंद मेरे मुँह में पड़ने से ही मेरी प्यास दूर होती है क्योंकि वह प्रभु ही मेरे हृदय और प्राणों का पति है। हे प्यार करने वाले, तू सबको प्यार कर और तुझसे ही मिलकर हमारी मुक्ति होगी। जैसे चकवी सूर्य के उगने की आस लगाए रहती है उसी तरह मैं भी हृदय में सोचती रहती हूँ कि कब यह अज्ञान का अंधकार मिटेगा। नानक कहता है कि मैं उसी प्रकार प्रियतम से मिल गया हूँ जैसे मछली पानी को नहीं भुला सकती।। ४ ।। हमारे भाग्य धन्य हैं कि हमारा प्रियतम हमारे हृदय रूपी घर में आ गया है। अब हमारे द्वार भी शोभायमान हो उठे हैं और हमारा हृदय रूपी वन भी हरा भरा हो उठा है। हे सुख देने वाले और सब कुछ हरा भरा करने वाले स्वामी, अब बहुत ही रसदायक आनन्द मंगल हो गया है। मेरा पति प्रभु, नौजवान और सदैव नवीन बना रहने वाला है मैं किस जीभ से उसके गुणों का कथन करूं। मैं उसे देखकर मोहित हो गई हूँ, मेरी सेज भी शोभामयान हो गई है और मेरा सारा दुख दूर हो गया है। नानक कहता है कि अपरम्पर प्रभु के मिलाप से मेरी सभी आशाएँ पूरी हो गई हैं।। ५ ।। १ ।। ३ ।।

बिलावलु महला ५ छन्द मंगल (आनन्द-गीत) १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। श्लोक ।। वह प्रभु पति सुन्दर शान्ति प्रदायक

दइआल प्रभ सरब सुखा निधि पीउ ॥ सुख सागर प्रभ भेटिऐ नानक सुखी होत इहु जीउ ॥ १ ॥ छंत ॥ सुख सागर प्रभु पाईऐ जब होवै भागो राम ॥ माननि मानु वञाईऐ हरि चरणी लागो राम ॥ छोडि सिआनप चातुरी दुरमति बुधि तिआगो राम ॥ नानक पउ सरणाई राम राइ थिरु होइ सुहागो राम ॥ १ ॥ सो प्रभु तजि कत लागीऐ जिसु बिनु मरि जाईऐ राम ॥ लाज न आवै अगिआन मती दुरजन बिरमाईऐ राम ॥ पतित पावन प्रभु तिआगि करे कहु कत ठहराईऐ राम ॥ नानक भगति भाउ करि दइआल की जीवन पदु पाईऐ राम ॥ २ ॥ स्री गोपालु न उचरहि बलि गईए दुहचारणि रसना राम ॥ प्रभु भगति वछलु नह सेवही काइआ काक ग्रसना राम ॥ भ्रमि मोही दूख न जाणही कोटि जोनी बसना राम ॥ नानक बिनु हरि अवरु जि चाहना बिसटा क्रिम भसमा राम ॥ ३ ॥ लाइ बिरहु भगवंत संगे होइ मिलु बैरागनि राम ॥ चंदन चीर सुगंध रसा हउमै बिखु तिआगनि राम ॥ ईत ऊत नह डोलीऐ हरि सेवा जागनि राम ॥ नानक जिनि प्रभु पाइआ आपणा सा अटल सुहागनि राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ बिलावलु महला ५ ॥ हरि खोजहु वडभागीहो मिलि साधू संगे राम ॥ गुन गोविद सद गाईअहि पारब्रहम कै रंगे राम ॥ सो प्रभु सद ही सेवीऐ पाईअहि फल मंगे राम ॥ नानक प्रभ सरणागती जपि अनत तरंगे राम ॥ १ ॥ इकु तिलु प्रभू न वीसरै जिनि सभु किछु दीना राम ॥ वडभागी मेलावड़ा गुरमुखि पिरु चीन्हा राम ॥ बाह पकड़ि तम ते काढिआ करि अपुना लीना राम ॥ नामु जपत नानक जीवै सीतलु मनु सीना राम ॥ २ ॥ किआ गुण तेरे कहि सकउ प्रभ अंतरजामी राम ॥ सिमरि सिमरि नाराइणै भए पारगरामी राम ॥ गुन गावत गोविंद के सभ इछ पुजामी राम ॥ नानक उधरे जपि हरे सभहू का सुआमी राम ॥ ३ ॥ रस भिंनिअड़े अपुने राम संगे से लोइण नीके राम ॥ प्रभ पेखत इछा पुंनीआ मिलि साजन जी के राम ॥ अंम्रित रसु हरि पाइआ बिखिआ रस फीके राम ॥ नानक जलु जलहि समाइआ जोती जोति मीके राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ९ ॥

और दयालु है तथा सारे सुखों का भण्डार है। वह सुखों का सागर है और ऐसे प्रभु से मिलाप के बाद हे नानक, यह जीवात्मा सुखी हो जाती है।। १ ।। छन्द ।। जब भाग्य में हो तो सुखों के सागर प्रभु को पाया जाता है। हे माननीय जीव स्त्री, अपने गर्व की छोड़कर प्रभु चरणों में लग जाओ। सयानापन और चतुराई छोड़कर दुर्मति एवं तर्क वितर्क को त्याग दो। हे नानक, उस प्रभु की शरण में आ जाओ जिससे तेरा सुहाग अटल हो जाए।। १ ।। जिसके बिना हम अध्यात्मिक रूप से मर जाते हैं उस प्रभु को त्याग कर और किसके साथ लगा जाए। अज्ञानी और दुर्जन व्यक्ति जो भ्रमों में पड़े रहते हैं उन्हें शर्म नहीं आती। पतित पावन प्रभु को त्यागकर तू और कहाँ अपना ठिकाना बनाएगा। हे नानक, उस दयालु की प्रेम पूर्वक भक्ति करो ताकि जीवन का श्रेष्ठ पद प्राप्त हो सके।। २ ।। हे जल जाने वाली दुराचारी जीभ, तू प्रभु-नाम का उच्चारण क्यों नहीं करती। तू भक्तवत्सल प्रभु का सुमिरन नहीं करती पर अंततः इस शरीर को तो कौओं ने ही खा जाना है और तू भ्रमों में फँसी हुई करोड़ों योनियों में बसने के दुख को नहीं जानती। हे नानक, प्रभु के बिना अन्य जो भी चाहा जाए वह विष्ठा का कीड़ा बनना और मर खप जाना ही होगा।। ३ ।। प्रभु के साथ प्रेम लगाकर और त्यागी बनकर उससे मिलाप कर ले। चन्दन, वस्त्र, सुगन्ध, रस, अहंकार आदि त्यागने योग्य विष हैं, इनका त्याग कर। इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए और प्रभु की सेवा में सावधान बने रहना चाहिए। हे नानक, जिन्होंने अपने प्रभु को पा लिया है वे अटल रूप से प्रभु की सुहागिन बन गई हैं।। ४ ।। १ ।। ४ ।। बिलावलु महला ५ ।। हे भाग्यशाली जीवो, साधसंगति में मिलकर प्रभु की खोज करो। परब्रह्म प्रभु के रंग में रंग कर सदैव प्रभु के गुण गाते रहो। जिससे मनोवांछित फल प्राप्त किये जाते हैं उस प्रभु का सदैव सुमिरन करते रहो। हे नानक, प्रभु का शरणागत बनकर उस अनेकों लहरों वाले प्रभु का जाप करता रह।। १ ।। जिस प्रभु ने सब कुछ किया है वह एक क्षण कि लिये भी मुझे विस्मृत ना हो। बड़े भाग्य से ही उससे मेल होता है और गुरमुख बनकर ही उस प्रियतम को पहचाना जाता है। उसी ने मुझे अपना बनाते हुए मेरी बाँह पकड़कर मुझे अज्ञानता के अंधकार से बाहर खींच लिया है। नानक तो उस प्रभु का सुमिरन करते हुए ही जीवित बना रहता है और उसी के सुमिरन से ही मन तथा हृदय शीतल बना रहता है।। २ ।। हे अन्तर्यामी प्रभु, मैं तेरे गुणों का भला क्या बखान कर सकता हूँ। उस प्रभु का सुमिरन करते हुए ही जीव मुक्त होने योग्य हो जाता है। प्रभु के गुण गाते हुए ही सभी इच्छाएँ पूरी हुई हैं। हे नानक, जो सबका स्वामी प्रभु है उसी का सुमिरन करने से उद्धार होता है।। ३ ।। जो आँखें अपने प्रभु के रस में भीगी हैं वे ही सुन्दर हैं। प्रभु को देखते ही मेरी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं और उस मित्र प्रभु से मैं एक रूप हो गई हूँ। अब मैंने प्रभु नाम रूपी अमृत रस को पा लिया है और विषय-विकारों के रस अब फीके पड़ गए हैं। हे नानक, अब यह जल उस परम जल में समा गया है और मेरी यह ज्योति उस परम ज्योति के साथ एक रूप हो गई है।। ४ ।। २ ।। ५ ।। ६ ।।

बिलावल की वार महला ४ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ उपदेसु गुरू सुणि मंनिआ धुरि मसतकि पूरा भागु ॥ सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि हरि उरि लिव लागु ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ मनु खिड़िआ हरिआ बागु ॥ अगिआनु अंधेरा मिटि गइआ गुर चानणु गिआनु चरागु ॥ जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥ राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ नानक गुरमुखि ब्रहमु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तू हरि प्रभु आपि अगमु है सभि तुधु उपाइआ ॥ तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ तुधु आपे ताड़ी लाईऐ आपे गुण गाइआ ॥ हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अंति लए छडाइआ ॥ जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि नामि समाइआ ॥ १ ॥ सलोक मः ३ ॥ दूजै भाइ बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ पाखंडि भगति न होवई पारब्रहमु न पाइआ जाइ ॥ मनहठि करम कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ ॥ आपे आपि पारब्रहमु है पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ जंमणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ बिलावलु करिहु तुम्ह पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ॥ जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ॥ सदा बिलावलु अनंदु है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सतसंगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ ॥ नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभना जीआ विचि हरि आपि सो भगता का मितु हरि ॥ सभु कोई हरि कै वसि भगता कै अनंदु घरि ॥ हरि भगता का मेली सरबत सउ निसुल जन टंग धरि ॥ हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै सभ

बिलावलु की वार महला ४ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

श्लोक महला ४ ।। बिलावलु रागु के नाद से साथ अर्थात खुशी के गीत गाकर उस उत्तम प्रभु का हमने गायन किया है। गुरु के उपदेश को सुनकर हमने माना और इस प्रकार मेरे माथे पर प्रारम्भ से ही लिखा मेरा पूर्ण भाग्य प्रकट हो उठा है। अब दिन रात उसके गुणों का उच्चारण होता है और हृदय में उस प्रभु की लौ लगी रहती है। मेरा सारा मन तन हरा भरा हो उठा है तथा मेरा मन हरे भरे बाग की तरह खिल उठा है। गुरु द्वारा दिये हुए ज्ञान के दीपक के प्रकाश से मेरा अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया है। दास नानक तो प्रभु को देखकर ही जीवित बना रहता है इसलिये हे प्रभु, एक निमिष, एक घड़ी के लिये ही मुझे दर्शन दिखा दो।। १ ।। महला ३ ।। रागु बिलावलु का गायन तभी सफल है यदि मुख में उस प्रभु का नाम हो। रागु नाद शब्द के माध्यम से तभी सुन्दर लगते हैं जब पूर्ण रूप से स्थिर ध्यान लग जाता है। रागों नादों को छोड़कर यदि प्रभु सुमिरन किया जाए तो उसके दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। हे नानक, गुरमुख बनकर आदि ब्रह्म का चिंतन किया जाए तो मन का अभिमान दूर हो जाता है।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तू स्वयं अगम्य है और सब कुछ तुमने ही उत्पन्न किया है। तू स्वयं ही सारे संसार में कार्यशील बना हुआ है। मौन होकर तू स्वयं ही समाधि लगाने वाला है और स्वयं ही तू अपने गुणों का भी गायन करने वाला है। हे भक्तजनों, उस प्रभु का सुमिरन दिन रात करो ताकि अन्त में वह हमें मुक्त करा दे। जिसने उसका सुमिरन किया है उसने सुख प्राप्त कर लिया है और वह प्रभु नाम में लीन हो गया है।। १ ।। श्लोक महला ३ ।। द्वैतभाव में पड़े रहकर बिलावलु के माध्यम से खुशी के गीत नही गाये जाते और मनमुख व्यक्ति को कोई ठिकाना नहीं मिलता। पाखण्डो के द्वारा भक्ति नहीं होती और परब्रह्म प्रभु को नहीं पाया जा सकता। मन के हठ के पीछे लगकर जो कर्म किए जाते हैं उनमें से कोई भी फलदायक नहीं होता। हे नानक, अपने अन्तर्मन से अहंकार गँवाकर और गुरमुख बनकर अपने मूल स्वरूप का चिंतन करना चाहिये। परब्रह्म सब कुछ स्वयं ही है और वही परब्रह्म अब मन में आ बसा है। अपनी ज्योति को परम ज्योति से मिलाने पर हमारा जन्म मरण कट गया है।। १ ।। महला ३ ।। हे प्यारे भाईयो, केवल एक प्रभु में लौ लगाकर तुम बिलावलु के माध्यम से खुशी के गीत गाओ। इस प्रकार जन्म-मरण का दुख कट जाता है और व्यक्ति सत्य में लीन बना रहता है। यदि व्यक्ति सच्चे गुरु की रज़ा में चले तो बिलावलु के माध्यम से वह सदैव आनन्दित बना रहता है। सदा प्रभु के गुण गाते हुए सत्संगति में प्रेमपूर्वक बैठा जाता है और हे नानक, वे सेवक सुन्दर हैं जो गुरमुख बनकर उस प्रभु से मेल मिलाप बनाए रखते हैं।। २ ।। पउड़ी।। सभी जीवों में स्वयं वह प्रभु है और वही प्रभु भक्तों का मित्र है। सब कोई प्रभु के वश में हैं और भक्तजनों के घर में सदैव आनन्द बना रहता है। सब स्थानों में प्रभु भक्तों को मिला रखने वाला है इसलिये प्रभु का सेवक बनकर तू टाँग पर टाँग रखकर निश्चिन्त होकर सो जा। प्रभु ही सबका मालिक है इसलिए हे भक्तजनों, उसको हृदय में बसाए रखो। हे प्रभु, तेरे तक कोई नहीं पहुँच पाता और सभी

झखि झखि पवै झड़ि ॥ २ ॥ सलोक मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदहि ते ब्राहमणा जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै रोगु गवाइ ॥ गुण रवहि गुण संग्रहहि जोती जोति मिलाइ ॥ इसु जुग महि विरले ब्राहमण ब्रहमु बिंदहि चितु लाइ ॥ नानक जिन्ह कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ ॥ हउमै रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ ॥ मनहठि करम कमावणे फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ गुरमुखि जनमु सफलु है जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ नानक नदरी नदरि करे ता नाम धनु पलै पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ वडिआईआ हरि नाम विचि हरि गुरमुखि धिआईऐ ॥ जि वसतु मंगीऐ साई पाईऐ जे नामि चितु लाईऐ ॥ गुहज गल जीअ की कीचै सतिगुरू पासि ता सरब सुखु पाईऐ ॥ गुरु पूरा हरि उपदेसु देइ सभ भुख लहि जाईऐ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईऐ ॥ ३ ॥ सलोक मः ३ ॥ सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥ गुर का सबदु अंम्रितु है सभ त्रिसना भुख गवाए ॥ हरि रसु पी संतोखु होआ सचु वसिआ मनि आए ॥ सचु धिआइ अमरा पदु पाईआ अनहद सबद वजाए ॥ सचो दह दिसि पसरिआ गुर कै सहजि सुभाए ॥ नानक जिन अंदरि सचु है से जन छपहि न किसै दे छपाए ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ ॥ नानक सहजे मिलि रहे नामु वडिआई देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुर सतिगुर विचि नावै की वडी वडिआई हरि करतै आपि वधाई ॥ सेवक सिख सभि वेखि वेखि जीवन्हि ओन्हा अंदरि हिरदै भाई ॥ निंदक दुसट वडिआई वेखि न सकनि ओन्हा पराइआ भला न सुखाई ॥ किआ होवै किस ही की झख मारी जा सचे सिउ बणि आई ॥ जि गल करते भावै सा नित नित चड़ै सवाई सभ झखि झखि मरै लोकाई ॥ ४ ॥ सलोक मः ३ ॥ ध्रिगु एह आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥ हरि सुखु

झख मारते हुए गिरते पड़ते रहते हैं।। २ ।। श्लोक महला ३ ।। जो ब्रह्म को जानते हैं और सच्चे गुरु की रज़ा में चलते हैं वे ही ब्राह्मण हैं। उनके हृदय में प्रभु बसता है और वे अहंकार के रोग को गँवा चुके होते हैं। वे उसके गुणों का सुमिरन करते हैं; गुणों का संग्रह करते हैं और अपनी ज्योति को उस परम ज्योति में मिला देते हैं। इस युग में तो ऐसे ब्राह्मण बिरले ही हैं जो ब्रह्म में चित्त लगाकर ब्रह्म को जानने वाले होते हैं। हे नानक, वह सच्चा प्रभु जिस पर कृपादृष्टि करता है वे ही अपनी सुरति प्रभु-नाम में लगाए रहते हैं।। १ ।। महला ३ ।। सच्चे गुरु की सेवा नहीं की और यदि शब्द के साथ प्रेम नहीं लगा तो जो कुछ भी किया जाता है वह केवल अहंकार रूपी रोग की कमाई ही है और व्यक्ति का बहुत गहरा स्वार्थ ही होता है। मन के हठ के कारण जो आचरण किए जाते हैं उनसे व्यक्ति बार-बार योनियों में ही पड़ता रहता है। गुरमुख बने व्यक्ति का जीवन सफल है क्योकि उसे प्रभु स्वयं ही अपने आप से मिला चुका होता है। हे नानक, कृपादृष्टि करने वाला प्रभु यदि दृष्टि डाले तो प्रभु नाम रूपी धन प्राप्त हो जाता है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु-नाम में ही सभी बड़प्पन हैं इसलिये गुरमुख बनकर प्रभु का ही सुमिरन किया जाना चाहिये। यदि नाम में चित्त लगा लिया जाए तो जो भी वस्तु माँगी जाती है वही प्राप्त हो जाती है। अपने मन की गुप्त बात यदि सच्चे गुरु के पास की जाए तो सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं।। यदि पूर्ण प्रभु उपदेश दे दें तो सारी भूख समाप्त हो जाती हैं। पहले से ही जिसके भाग्य में लिखा हो वही प्रभु के गुण गाता है।। ३ ।। श्लोक महला ३ ।। जिन्हें मेरे प्रभु ने स्वयं संयोग बनाकर सच्चे गुरु से मिला दिया है उनमें से कोई भी गुरु के पास से खाली हाथ नहीं आता। सच्चे गुरु का दर्शन फलदायक है और जैसी कोई इच्छा रखता हैं वह वैसा ही फल प्राप्त करता है। शब्द-गुरु अमृत ही है जिससे सारी तृष्णा और भूख समाप्त हो जाती है। प्रभु का नाम रूपी रस पीकर मुझे सन्तुष्टि प्राप्त हो गई है और सत्य मेरे मन में आकर बस गया है। सत्य के सुमिरन से अनहद शब्द को बजाते हुए मैंने अमर पद प्राप्त कर लिया। गुरु के समान शान्त स्वभाव वाला वह प्रभु दसों दिशाओं में फैला हुआ है। हे नानक, जिनके अन्तर्मन में सत्य है वे प्रभु के सेवक किसी के छिपाने से भी नहीं छिपते।। १ ।। महला ३ ।। जिस पर प्रभु कृपादृष्टि करता है वह गुरु सेवा के माध्यम से प्रभु को पा लेता है। प्रभु जिसे सच्ची भक्ति देता है वह साधारण मानव से ऊँचा उठकर देवता बन जाता है। ऐसे व्यक्ति अहंकार को मारकर शब्द-गुरु के माध्यम से पवित्र होकर उस प्रभु से मिला लिये जाते हैं। हे नानक, सहज स्वभाविक रूप से ही उस प्रभु से मिला जाता है और प्रभु-नाम ही बड़प्पन प्रदान करता है।। २ ।। पउड़ी ।। सच्चे गुरु में ही प्रभु-नाम का बड़ा बड़प्पन प्रभु ने स्वयं ही कर्ता बनकर डाला हुआ है। सेवक सिक्ख सभी उन्हें देख देखकर आध्यात्मिक तौर से जीवित बने रहते हैं और गुरु का बड़प्पन उनके हृदय को प्यारा लग गया है। दुष्ट, निन्दक उनकी महिमा को सहन नहीं कर पाते क्योंकि दूसरे का भला उन्हें अच्छा नहीं लगता। किसी के झख मारने से क्या होता है यदि उस सच्चे प्रभु के साथ आपकी मित्रता बनी हुई है। जो बात कर्ता प्रभु को भा जाती है वह सदैव फलती फूलती रहती है और बाकी सब लोग झख मार मारकर मरते खपते रहते हैं।। ४ ।। श्लोक महला ३ ।। द्वैतभाव की उस आशा पर धिक्कार है जो मोह माया में चित्त को लगाती है।

पल्हरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाए ॥ मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाए ॥ कारज सिधि न होवनी अंति गइआ पछुताए ॥ जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ॥ नामि रते जन सदा सुखु पाइन्हि जन नानक तिन बलि जाए ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ॥ सभु को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ॥ हुकमी ही जमु लगदा सो उबरै जिसु बखसै करतारु ॥ नानक गुर परसादी एहु मनु तां तरै जा छोडै अहंकारु ॥ आसा मनसा मारे निरासु होइ गुर सबदी वीचारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिथै जाईऐ जगत महि तिथै हरि साई ॥ अगै सभु आपे वरतदा हरि सचा निआई ॥ कूड़िआरा के मुह फिटकीअहि सचु भगति वडिआई ॥ सचु साहिबु सचा निआउ है सिरि निंदक छाई ॥ जन नानक सचु अराधिआ गुरमुखि सुखु पाई ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ ओपावा सिरि ओपाउ है नाउ परापति होइ ॥ अंदरु सीतलु सांति है हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अंम्रितु खाणा पैन्हणा नानक नाइ वडिआई होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ए मन गुर की सिख सुणि पाइहि गुणी निधानु ॥ सुखदाता तेरै मनि वसै हउमै जाइ अभिमानु ॥ नानक नदरी पाईऐ अंम्रितु गुणी निधानु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हहि तितने सभि हरि के कीए ॥ जो किछु हरि करावै सु ओइ करहि सभि हरि के अरथीए ॥ सो ऐसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ स्रिसटि गोले करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीए ॥ हरि सेवे की ऐसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि विचहु काइआ नगरी दुसमन दूत सभि मारि कढीए ॥ हरि हरि किरपालु होआ भगत जना उपरि हरि आपणी किरपा करि हरि आपि रखि लीए ॥ ६ ॥ सलोक मः ३ ॥ अंदरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ॥ दुख विचि कार कमावणी दुखु वरतै दुखु आगै ॥ करमी सतिगुरु भेटीऐ ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक सहजे सुखु होइ अंदरहु भ्रमु भउ भागै ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरमुखि सदा

पुआल के बदले में हमने प्रभु के सुख को त्याग दिया है अब प्रभु-नाम को भुलाकर हम दुख पाते रहते हैं। अज्ञानी मनमुख जीव तो अंधे हैं जो जन्मते मरते रहते हैं और आवागमन में पड़े रहते हैं। उनका कोई भी काम सिद्ध नहीं होता और वे अन्त में पछताते हुए यहाँ से जाते हैं। जिस पर प्रभु की कृपा हो जाए उसी को सच्चा गुरु मिलता है और वही प्रभु नाम का सुमिरन करता है। नाम में लीन बने प्रभु के सेवक सदैव सुख पाते हैं और दास नानक तो उन पर बलिहारी जाता है।। १ ।। महला ३ ।। आशाएँ और मानसिक तृष्णाएँ संसार को मोहित करने वाली हैं जिन्होंने संसार को मोहित किया हुआ है। रचना का यह जितना बड़ा आकार है वह सब कुछ यम के क्षेत्र के अन्तर्गत ही है। प्रभु के हुकुम से ही यम पीछे लगता है और वह ही बच पाता है जिसे कर्ता प्रभु स्वयं क्षमा कर देता है। हे नानक, गुरु की कृपा से यह मन तभी पार उतरता है यदि यह अंहकार को छोड़ दे। शब्द-गुरु के चिंतन के फलस्वरूप यह आशाओं और तृष्णाओं को मार कर उनके प्रति उदासीन हो जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। संसार में जहाँ भी जाया जाय वहीं वह प्रभु मालिक दिखाई देता है। उस लोक में भी वह प्रभु ही स्वयं कार्यशील है और उस प्रभु का न्याय भी सच्चा है। झूठे व्यक्तियों को मुँह पर धिक्कार पड़ती है और सत्य तथा भक्ति की वहाँ महिमा होती है। वह साहिब सच्चा है, उसका न्याय सच्चा है और निंदक के सिर पर तो वहाँ राख ही पड़ती है। दास नानक ने तो सत्य की आराधना की है और गुरमुख बनकर सुख प्राप्त किया है।। ५ ।। श्लोक महला ३ ।। यदि प्रभु कृपा कर दे तो पूर्ण भाग्यशाली बनकर सच्चा गुरु पाया जाता है। सभी उपायों से बड़ा उपाय यही है और इसके माध्यम से प्रभु-नाम प्राप्त हो जाता है। इसी उपाय से अन्तर्मन शीतल और शान्त बना रहता है और हृदय सदैव सुखी रहता है। अब अमृत ही खाना, पहनना बन जाता है और हे नानक, प्रभु-नाम के माध्यम से ही महिमा प्राप्त होती है।। १ ।। महला ३ ।। हे मन, गुरु की शिक्षा सुन; इससे तू गुणों का भण्डार पा जाएगा। सुखदाता प्रभु तेरे मन में बस जाएगा और तेरा अहंकार एवं अभिमान छूट जाएगा। हे नानक, उसकी कृपा दृष्टि से ही गुणों के भण्डार अमृत नाम को पाया जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। जितने भी सम्राट, शाह, राजा, खान, अमीर, हाकिम हैं ये सब प्रभु ने ही पैदा किये हैं। जो कुछ प्रभु कराता है वे सभी वहाँ करते हैं तथा ये प्रभु के सामने भिखारी हैं। वह ऐसा प्रभु सच्चे गुरु के पक्ष में है और उसने सभी वर्ण जीवन की चारों खानों तथा सारी सृष्टि को सेवक बनाकर सच्चे गुरु की सेवा करने के लिये उसे प्रदान किए हैं। हे सन्तजनों, प्रभु सेवा की ऐसी महिमा देखो जिसने इस माया रूपी नगरी से कामादि सभी शत्रुओं को मारकर बाहर निकाल दिया है। वह प्रभु भक्तजनों पर कृपालु हो गया है और प्रभु ने अपनी कृपा करके भक्तजनों को स्वयं बचा लिया है।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। जिसके अन्दर कपट है वह सदैव दुखी रहता है और ऐसे मनमुख व्यक्ति का कभी भी ध्यान नहीं लगता। वह दुख में ही धन्धा करता है और दुख में ही काम करता हुआ आगे दुख पाता रहता है। अच्छे कर्मों से ही सच्चे गुरु से मिलाप होता है और तभी सच्चे नाम की लौ लगती है। हे नानक, सहज स्वाभाविक रूप से बने रहने पर ही सुख प्राप्त होता है और अन्तर्मन से भ्रम तथा भय भाग खड़े होते हैं।। १ ।। महला ३ ।। गुरमुख बनने से सदैव

हरि रंगु है हरि का नाउ मनि भाइआ ॥ गुरमुखि वेखणु बोलणा नामु जपत सुखु पाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु प्रगासिआ तिमर अगिआनु अंधेरु चुकाइआ ॥ २ ॥ मः ३ ॥ मनमुख मैले मरहि गवार ॥ गुरमुखि निरमल हरि राखिआ उर धारि ॥ भनति नानकु सुणहु जन भाई ॥ सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ॥ अंदरि संसा दूखु विआपे सिरि धंधा नित मार ॥ दूजै भाइ सूते कबहु न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न बीचारहि इहु मनमुख का बीचार ॥ हरि नामु न भाइआ बिरथा जनमु गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिस नो हरि भगति सचु बखसीअनु सो सचा साहु ॥ तिस की मुहताजी लोकु कढदा होरतु हटि न वथु न वेसाहु ॥ भगत जना कउ सनमुखु होवै सु हरि रासि लए वेमुख भसु पाहु ॥ हरि के नाम के वापारी हरि भगत हहि जमु जागाती तिना नेड़ि न जाहु ॥ जन नानकि हरि नाम धनु लदिआ सदा वेपरवाहु ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ गुर परसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल उधरे धंनु जणेदी माइआ ॥ सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ त्रै गुण भुले हउमै मोहु वधाइआ ॥ पंडित पड़ि पड़ि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले विणु गुर ततु न पाइआ ॥ मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नानक नामि रते सेई जन समधे जि आपे बखसि मिलाइआ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ तिसहि सरेवहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि अंतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिनी गुरमुखि हरि नाम धनु न खटिओ से देवालीए जुग माहि ॥ ओइ मंगदे फिरहि सभ जगत महि कोई मुहि थुक न तिन कउ पाहि ॥ पराई बखीली करहि आपणी परतीति खोवनि सगवा भी आपु लखाहि ॥ जिसु धन कारणि चुगली करहि सो धनु

प्रभु का रंग चढ़ा रहता है और प्रभु नाम मन को अच्छा लगता है। गुरमुख बनकर देखने, बोलने और नाम सुमिरन करने से सुख प्राप्त होता है। हे नानक, गुरमुख बनकर ही ज्ञान का प्रकाश होता है और अज्ञान रूपी अंधकार समाप्त हो जाता है।। २ ।। महला ३ ।। मनमुख मलीन और गँवार बने हुए मरते रहते हैं। गुरमुख निर्मल बनकर प्रभु को हृदय में धारण किये रहते हैं। नानक कहता है कि हे प्रभु के सेवक मेरे भाई, तुम इस बात को ध्यान से सुनो ; सच्चे गुरु की सेवा करो जिससे अहंकार रूपी मैल नष्ट हो जाएगी। जिसके मन में संशय है दुख उसको प्रभावित करता रहता है और सांसारिक धन्धों की मार उसके सिर पर पड़ती रहती है। द्वैतभाव में सोए हुए ऐसे व्यक्ति कभी भी जगते नहीं और माया मोह के साथ प्यार बनाए रखते हैं। मनमुख का जीवन दर्शन तो यही है कि वह ना तो नाम का सुमिरन करता है और ना ही शब्द का चिंतन करके उसे मन में बसाता है। प्रभु-नाम अच्छा नहीं लगा और व्यक्ति ने जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया ; तब हे नानक, यम उसे मारता हुआ भटकाता रहता है।। ३ ।। पउड़ी।। सच्चा साहूकार वही है जिसको प्रभु सत्य और भक्ति प्रदान कर देता है। ऐसे साहूकारों के लोग मोहताज बने रहते हैं क्योंकि प्रभु-नाम रूपी पदार्थ इन्हीं के पास मिलता है; अन्य किसी स्थान पर ना यह नाम रूपी पदार्थ है और ना ही इसका लेन-देन होता है। भक्तजन जो प्रभु के सामने बने रहते हैं वे प्रभु से रासपूंजी प्राप्त करते हैं और उससे विमुख बने रहने वाले तो केवल राख की ढेरी ही प्राप्त करते हैं। प्रभु-नाम के व्यापारी तो केवल प्रभु के भक्त ही हैं; यमरूपी कर लेने वाला दूत तो ऐसे व्यक्तियों के पास भी नहीं आता। दास नानक ने तो प्रभु-नाम का धन लाद लिया है और अब वह सदा के लिये निश्चिन्त हो गया है।। ७ ।। श्लोक महला ३ ।। इस युग में भक्तजनों ने ही प्रभु-नाम रूपी धन की कमाई की है तथा अन्य सारा संसार तो भ्रमों में ही भूला है। गुरु की कृपा से प्रभु-नाम मन में बस गया है और अब हमने प्रत्येक दिन प्रभु-नाम का सुमिरन किया है। भक्तजन ही विष रूपी विकारों में त्रस्त बने रहते हैं और उन्होंने शब्द के माध्यम से अहंकार को जला डाला है। भक्त स्वयं पार उतर जाता है, कुल का उद्धार कर देता है और उसको जन्म देने वाली उसकी माँ धन्य हो जाती है। उसके हृदय में सदैव स्थिरता प्रदान करने वाला सुख बस जाता है और सच्चे प्रभु में ही वह लौ लगाये रहता है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव तो माया के तीनों गुणों में भूलकर अहंकार और मोह को बढ़ाते रहते हैं। पंडित और चुप बने रहने वाले मौनी ग्रन्थ पढ़ पढ़कर ही भूले हुए है और अपना चित्त इन्होंने द्वैतभाव में लगा रखा है। योगी, जंगम तथा संन्यासी भी गुरु के बिना भूले हुए हैं और इन्होंने भी सार तत्व को नहीं जाना है। दुखी मनमुख तो सदैव भ्रमों में ही भटकते रहते हैं और उन्होंने तो अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा लिया है। हे नानक, जो प्रभु-नाम में लीन हैं वही सेवक स्थिर बने हुए हैं या फिर जिन्हें प्रभु कृपा करके स्वयं मिला देता है।। १ ।। महला ३ ।। हे नानक, केवल उसी की महिमा का गायन करो जिसके बस में सब कुछ है। हे प्राणियों, केवल उसी की पूजा करो जिसके बिना अन्य कोई नही है। गुरमुख बने व्यक्ति के अन्तर्मन में प्रभु बसता है और वह सदैव सुखी बना रहता है।। २ ।। पउड़ी।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु-नाम रूपी धन नहीं कमाया वे इस संसार में दिवालिए हैं। वे सारे संसार से माँगते फिरते हैं लेकिन कोई उनके मुँह पर थूकता भी नहीं है। वे परायी निन्दा करते हुए अपना विश्वास भी खो लेते हैं बल्कि वे अपना ही पर्दा फाश करा लेते हैं। जिस धन के लिये वे चुगली करते हैं वह धन

चुगली हथि न आवै ओइ भावै तिथै जाहि ॥ गुरमुखि सेवक भाइ हरि धनु मिलै तिथहु करमहीण लै न सकहि होर थै देस दिसंतरि हरि धनु नाहि ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि संसा मूलि न होवई चिंता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ कालु मारि मनसा मनहि समाणी अंतरि निरमलु नाउ ॥ अनदिनु जागै कदे न सोवै सहजे अंम्रितु पिआउ ॥ मीठा बोले अंम्रित बाणी अनदिनु हरि गुण गाउ ॥ निज घरि वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि धनु रतन जवेहरी सो गुरि हरि धनु हरि पासहु देवाइआ ॥ जे किसै किहु दिसि आवै ता कोई किहु मंगि लए अकै कोई किहु देवाए एहु हरि धनु जोरि कीतै किसै नालि न जाइ वंडाइआ ॥ जिस नो सतिगुर नालि हरि सरधा लाए तिसु हरि धन की वंड हथि आवै जिस नो करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ इसु हरि धन का कोई सरीकु नाही किसै का खतु नाही किसै कै सीव बंनै रोलु नाही जे को हरि धन की बखीली करे तिस का मुहु हरि चहु कुंडा विचि काला कराइआ ॥ हरि के दिते नालि किसै जोरु बखीली न चलई दिहु दिहु नित नित चड़ै सवाइआ ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥ जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥ नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हउमै माइआ मोहणी दूजै लगै जाइ ॥ ना इह मारी न मरै ना इह हटि विकाइ ॥ गुर कै सबदि परजालीऐ ता इह विचहु जाइ ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइआ का मारणु सबदु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुर की वडिआई सतिगुरि दिती धुरहु हुकमु बुझि नीसाणु ॥ पुती भातीई जावाई सकी अगहु पिछहु टोलि डिठा लाहिओनु सभना का अभिमानु ॥ जिथै को वेखै तिथै मेरा सतिगुरू हरि बखसिओनु सभु जहानु ॥ जि सतिगुर नो मिलि मंने सु हलति पलति सिझै जि वेमुखु होवै सु फिरै भरिसट थानु ॥

चुगली के माध्यम से उनके हाथ नहीं लगता। उसके लिये वे बेशक जहाँ चाहें दौड़ते फिरें। गुरमुख बनकर सेवक भाव से प्रभु रूपी धन मिलता है और ये भाग्यहीन इस प्रकार धन को ले नहीं सकते और नहीं जानते कि अन्य देश देशन्तरों में प्रभु रूपी धन नहीं है।। ८ ।। श्लोक महला ३ ।। गुरमुख व्यक्ति को कभी भी कोई भ्रम नहीं होता और उसके अन्तर्मन से चिंता चली जाती है। जो कुछ भी होना है वह स्वभाविक रूप से ही होता रहता है उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। जिन लोगों को उसने अपने बनाकर बही खाते में चढ़ा लिया है उनका कुछ भी कहा हुआ वह प्रभु स्वयं सुनता है।। १ ।। महला ३ ।। मौत के डर को मार कर वासनाओं को जब मन में ही रोक लिया जाता है तो अन्तर्मन में पवित्र प्रभु का नाम स्थिर हो जाता है और व्यक्ति प्रतिदिन सावधान बना रहता है और माया की नींद में सोता नहीं तथा सहज स्वभाविक रूप से ही अमृत पान करता रहता है। अब वह अमृतवाणी के माध्यम से मीठे बोल बोलता रहता है और प्रत्येक दिन प्रभु के गुण गाता रहता है। जिनके हृदय रूपी घर में प्रभु का निवास हो गया है वे सदैव शोभायुक्त बने रहते हैं और हे नानक, उनको मिलने से सुख प्राप्त होता है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु-नाम का धन जो रत्नों और जवाहिरों के समान है, गुरु ने वह धन प्रभु से दिला दिया है। यदि यह धन किसी के पास दिखाई दे तब तो कोई किसी से माँग भी ले अथवा कोई किसी को दिला भी दे परन्तु जोर जबरदस्ती करके यह धन किसी के साथ बाँटा नहीं जा सकता। प्रभु जिसका प्रेम सच्चे गुरु के साथ लगा दे उसी के हाथ यह प्रभु रूपी धन आता है और उसी के लिये ही कर्ता प्रभु ने प्रारम्भ से ही लेख लिखा होता है। इस प्रभु धन का कोई भी प्रतिद्वन्द्वी नहीं, किसी के नाम लिखा हुआ इसके लिये पत्र नहीं, ना ही इसकी कोई सीमा है, ना ही इसका कोई मोल है, ना कोई झगड़ा है और फिर भी यदि कोई प्रभु रूपी धन की निन्दा करे तो प्रभु चारों दिशाओं में उसका मुँह काला करवाता है। प्रभु के दिए हुए के साथ कोई जबरदस्ती और निंदा नहीं चल सकती और यह प्रतिदिन सदैव बढ़ता ही रहता है।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। हे प्रभु, यह संसार (निन्दा, घृणा और ईर्ष्या की अग्नि) में जल रहा है; इसे अपनी कृपा धारण करके बचाओ। जिस भी द्वार (धर्म, मार्ग, युक्ति) के माध्यम से इसका उद्धार हो सके, इसे बचा लो अर्थात बन्धन मुक्त करने के लिये सभी धर्म सक्षम है। सच्चे गुरु ने सच्चे शब्द के चिन्तन के फलस्वरूप मुझे सुख का दर्शन कराया है। हे नानक, कृपा करने वाले प्रभु के बिना मुझे तो अन्य कोई समझ में नहीं आता ।। १ ।। महला ३ ।। अहंकार रूपी माया मन को मोहित किए रहती है और व्यक्ति द्वैतभाव में लग जाता है। ना तो यह मारने से मरती है और ना ही इसे किसी दुकान पर बेचकर दूर किया जा सकता है। शब्द-गुरु में यदि इसको जला दिया जाए तो वह अन्तर्मन से दूर होती है। तब तन मन उज्जवल होता है और प्रभु-नाम मन में आ बसता है। हे नानक, माया को मारने का ढंग केवल शब्द ही है और इसे गुरमुख बनकर ही प्राप्त किया जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। सच्चे गुरु की महिमा प्रभु की ओर से लिखे हुकुम के चिन्ह को समझ बूझ कर सच्चे गुरु ने ही हमें प्रदान की है। ऐसा करते समय पुत्रों, भतीजों, दामादों अर्थात अन्य सभी दावेदारों को भी अच्छी तरह देखा परखा गया और उनके अभिमान का भी निवारण किया गया। कोई जिधर भी देखे उधर ही मेरा सच्चा गुरु दिखाई देता है और प्रभु ने ही सारे संसार पर कृपा की है। जो सच्चे गुरु से मिलाप करके इसके उपदेश को मानता है उसका यह लोक और परलोक दोनों ही सफल हो जाते हैं परन्तु जो सच्चे गुरु से विमुख होता है वह गन्दे स्थानों में ही भटकता रहता है।

जन नानक कै वलि होआ मेरा सुआमी हरि सजण पुरखु सुजानु ॥ पउदी भिति देखि कै सभि आइ पए सतिगुर की पैरी लाहिओनु सभना किअहु मनहु गुमानु ॥ १० ॥ सलोक मः १ ॥ कोई वाहे को लुणै को पाए खलिहानि ॥ नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥ १ ॥ मः १ ॥ जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ ॥ नानक जो भावै सो होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ पारब्रहमि दइआलि सागरु तारिआ ॥ गुरि पूरै मिहरवानि भरमु भउ मारिआ ॥ काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ अंम्रित नामु निधानु कंठि उरि धारिआ ॥ नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ ॥ ११ ॥ सलोक मः ३ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ कूड़े कहण कहंन्हि ॥ पंच चोर तिना घरु मुहन्हि हउमै अंदरि संन्हि ॥ साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणंन्हि ॥ जिन्ही अंम्रितु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ रचहि रचंन्हि ॥ दुसटा सेती पिरहड़ी जन सिउ वादु करंन्हि ॥ नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहंन्हि ॥ पइऐ किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रहंन्हि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ सासि गिरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु ॥ हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ हरि दासा का दासु होइ परम पदारथु तिसु ॥ नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ जिन्ह कउ पूरबि लिखिआ रसु संत जना सिउ तिसु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ ॥ सोई वरतिआ जगत महि घटि घटि मुखि भणिआ ॥ बहुतु वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ सचु सहजु अनदु सतिगुरू पासि सची गुर मणीआ ॥ नानक संत सवारे पारब्रहमि सचे जिउ बणिआ ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि ॥ गुर की सेवा विसरी किउ मनु रहै हजूरि ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ हरि प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ वडभागी हरि पाइआ पूरनु परमानंदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

मेरा सज्जन, स्वामी, सर्वव्यापक एवं सुजान प्रभु तो अब दास नानक के पक्ष में आ खड़ा हुआ है। सच्चे गुरु से आध्यात्मिक भोजन (लंगर) को प्राप्त होते देखकर सभी उस सच्चे गुरु के चरणों में आ गए हैं और सबके मन का अभिमान दूर हो गया है।। १० ।। श्लोक महला १ ।। कोई धरती को बोता है, कोई उसको काटता है और कोई अन्य उसे खलिहान में लाता है। हे नानक, यह भी दिखाई नहीं देता कि इसको खाता कौन है अर्थात सभी अपने अपने कामों में लगे हैं।।१।। महला १ ।। जिसके मन में वह प्रभु बस गया है वही संसार सागर को तैर गया है। हे नानक, जो प्रभु को भाता है वही होता है।। २ ।। पउड़ी ।। परब्रह्म दयालु प्रभु ने ही हमें संसार सागर से पार किया है और मेहरबान पूर्ण गुरु ने हमारे भ्रम और भय को समाप्त कर दिया है। काम, क्रोध आदि सभी विकराल दूत हार गए हैं और हमने भी प्रभु के अमृत नाम का भण्डार हृदय में धारण कर लिया है। हे नानक, साधसंगति में हमारा जीना मरना सँवर गया है।। ११ ।। श्लोक महला ३ ।। जिन्होंने प्रभु नाम भुला दिया है उनका कहना और करना सब झूठ है। पांचों चोर उनके शरीर रूपी घर को लूटते रहते हैं और अहंकार उनके अन्दर सेंध लगाए रहता है। प्रभु से टूटे हुए तथा माया में लीन व्यक्ति अपनी दुर्मति के कारण ही ठगे जाते हैं और प्रभु नाम रस को नहीं जान पाते। जिन्होंने भ्रमों में पड़कर अमृत को भी लुटा दिया है वे सदैव विष रूपी माया मे ही लीन बने रहते हैं। उनका दुष्ट व्यक्तियों के साथ तो प्रेम बना रहता है और प्रभु के सेवकों के साथ वे वाद-विवाद करते रहते हैं। हे नानक, ऐसे शाक्त व्यक्ति नरक में जाते हैं और यमों के द्वारा बंधे रहकर दुख सहते हैं। वे अपने स्वभाव के अनुकूल ही काम करते रहते हैं परन्तु हे प्रभु, यह उनके भी बस में नहीं है; तू जैसे उनको रखता है वे वैसे ही बने रहते हैं।। १ ।। महला ३ ।। जिसने सच्चे गुरु का सुमिरन किया है वह प्रभु उस बलहीन का भी बल बन जाता है। हर श्वास और आस के साथ जिसके मन में प्रभु बसा रहता है यम तो उसे ढूंढ ही नहीं पाता। जिसके हृदय में प्रभु-नाम बसा रहता है माया तो उसकी दासी बनी रहती है। जो प्रभु के दासों का दास हो जाता है उसे परम पदार्थ अर्थात बन्धनों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। हे नानक, जिसके मन तन में प्रभु का निवास बना रहता है मैं उस पर बलिहारी जाता रहता हूँ। पहले से ही जिसके भाग्य में लिखा होता है उन्हीं का ही शान्त पुरुषों के साथ प्रेम बना रहता है।। २ ।। पउड़ी।। सच्चा गुरु जो कुछ भी बोलता है परमेश्वर उसे सुनता है। उसका बोला हुआ ही सारे संसार में कार्यशील हो जाता है और वास्तव में उसने लोगों के हृदय के माध्यम से अपने मुख द्वारा उच्चारण किया होता है। उस प्रभु की महिमा बहुत अधिक है। उसकी अच्छाइयों की गणना नही की जा सकती। सत्य, स्वाभाविकता और आनन्द सच्चे गुरु के पास है और गुरु उपदेश रूपी सच्ची मणि भी उसी के पास है। हे नानक, ऐसे शान्त पुरुषों को स्वयं प्रभु ही संवारता है और वे सच्चे प्रभु के समान हो जाते हैं।। १२ ।। श्लोक महला ३ ।। जिसने अपने आप को नहीं पहचाना और हरि प्रभु से दूर जाना है तथा जिसने गुरु की सेवा को भुला दिया है उसका मन भला प्रभु की हाजिरी में कैसे बना रहेगा। ऐसे मनमुख व्यक्ति ने तो झूठ में लीन होकर झूठे लालचों में ही अपना जीवन गँवा दिया है। हे नानक, जब उन पर कृपा होती है तो सच्चे शब्द के माध्यम से वे प्रभु के सामने स्थित हो जाते हैं।। १ ।। महला३।। प्रभु ही सच्चा गीत है और गुरमुख बनकर ही प्रभु का नाम प्राप्त होता है। जब सदैव प्रभु नाम का ही गुणानुवाद किया जाता है तो प्रभु के सुमिरन से मन आनन्दित होता है। बड़े भाग्य से ही उस पूर्ण परमानन्द प्रभु को प्राप्त किया जाता है। दास नानक ने तो प्रभु-नाम का गुणानुवाद किया है और अब उसका मन तन इससे दूर नहीं होता ।। २ ।। पउड़ी।।

कोई निंदकु होवै सतिगुरू का फिरि सरणि गुर आवै ॥ पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसंगति नालि रलावै ॥ जिउ मीहि वुठै गलीआ नालिआ टोभिआ का जलु जाइ पवै विचि सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्रु पावनु होइ जावै ॥ एह वडिआई सतिगुर निरवैर विचि जितु मिलिऐ तिसना भुख उतरै हरि सांति तड़ आवै ॥ नानक इहु अचरजु देखहु मेरे हरि सचे साह का जि सतिगुरू नो मंनै सु सभनां भावै ॥ १३ ॥ १ ॥ सुधु ॥

बिलावलु बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ की १ओ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारे बूढे तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे ॥ मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥ १ ॥ धनवंता अरु निरधन मनई ता की कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे ॥ २ ॥ हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्ह की कथा निरारी रे ॥ आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रहम संगारी रे ॥ ३ ॥ पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे ॥ कहत कबीरु सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥ ४ ॥ १ ॥ बिलावलु ॥ बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ हरि गुन कथत सुनत बउरानो ॥ १ ॥ मेरे बाबा मै बउरा सभ खलक सैआनी मै बउरा ॥ मै बिगरिओ बिगरै मति अउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि न बउरा राम कीओ बउरा ॥ सतिगुरु जारि गइओ भ्रमु मोरा ॥ २ ॥ मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ मेरे भरमि भूलउ मति कोई ॥ ३ ॥ सो बउरा जो आपु न पछानै ॥ आपु पछानै त एकै जानै ॥ ४ ॥ अबहि न माता सु कबहु न माता ॥ कहि कबीर रामै रंगि राता ॥ ५ ॥ २ ॥ बिलावलु ॥ ग्रिहु तजि बन खंड जाईऐ चुनि खाईऐ कंदा ॥ अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥ १ ॥ किउ छूटउ कैसे तरउ भवजल निधि भारी ॥ राखु राखु मेरे बीठुला जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई ॥ अनिक जतन करि

सच्चे गुरु का यदि कोई निन्दक भी हो और फिर उसकी शरण में आ जाए तो सच्चा गुरु उसके पिछले अवगुणों को माफ कर देता है और उसे अपनी सत्‌संगति में मिला लेता है। जैसे पानी बरसने से गलियों का नालों का तालाबों का जल गंगा में जा पड़ने पर गंगा के समान ही पावन पवित्र हो जाता है उसी प्रकार निरवैर सच्चे गुरु की ऐसी महिमा है कि उससे मिलने पर तृष्णा भूख उतर जाती है और प्रभु द्वारा प्रदान की हुई शान्ति शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है। हे नानक, मेरे सच्चे प्रभु का यह आश्चर्यजनक काम देखो कि जो सच्चे गुरु को मान लेता है वह सबको अच्छा लगने लगता है।। १३ ।। १ ।। शुद्ध अर्थात असल के साथ मिलान करके इस वार को भली प्रकार ठीक कर दिया गया है।

बिलावलु वाणी भक्तों की।।

कबीर जी की।। १ ओअंकार सतिनाम करता पुरखु गुर प्रसादि।।

यह संसार ऐसा खेल तमाशा है कि यहाँ कोई भी नहीं रह पाता है। तुम सीधे रास्ते पर चलते रहो नहीं तो तुम्हें धक्के पर धक्का ही मिलता रहेगा।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, बालक, बूढ़ा, जवान सभी को यम यहाँ से ले जाएगा। मानव बेचारा तो चूहा बना है जिसे मौत रूपी बिल्ली खा जाती है।। १ ।। चाहे कोई धनवान हो अथवा निर्धन, यहाँ किसी का लिहाज नहीं किया जाता। यह काल इतना जोरावर है कि यह राजा प्रजा सबको एक समान ही मारे चला जाता है।। २ ।। प्रभु के सेवक जो प्रभु को भा जाते हैं उनकी तो कथा ही निराली है। वे परब्रह्म प्रभु के संगी साथी बने रहते हैं; वे ना तो आते जाते हैं और ना कभी मरते हैं।। ३ ।। पुत्र, स्त्री, लक्ष्मी, धन सम्पदा का मोह प्यारे जीव, तुम छोड़ दो। कबीर कहता है कि हे सन्तजनों, तुम ध्यान से सुन लो कि इसी प्रकार वह प्रभु प्राप्त होगा।। ४ ।। १ ।। बिलावलु ।। मैं ना तो विद्या जानता हूँ और ना किसी वाद विवाद को जानता हूँ; मैं तो प्रभु के गुणों का कथन करते हुए और उन्हें सुनते हुए बावला सा बना रहता हूँ।। १ ।। हे मेरे प्रभु, मैं तो बावला हूँ और सारी दुनिया बहुत ही सयानी है। इसलिए मैं कहता हूँ कि मैं तो बिगड़ ही गया हूँ परन्तु कोई भी मेरे पीछे लग कर ना बिगड़े।। १ ।। रहाउ ।। मैं स्वयं पागल नहीं हुआ हूं मुझे तो प्रभु ने पागल बनाया है। वास्तव में सच्चा गुरु ही मेरे भ्रमों को जला गया है।। २ ।। मैंने बिगड़ कर अपनी बुद्धि को खो दिया है और मेरे कहने पर कोई भी किसी को भूल नहीं करनी चाहिए।। ३ ।। बावला वही है जो अपने आप को पहचानता है। जब वह खुद को पहचान जाता है तो वह केवल एक की प्रभु को जानता मानता है और अन्य सबके पीछे नहीं भागता है।। ४ ।। जो इस जीवन में उस प्रभु में लीन नहीं हुआ वह कभी भी लीन नहीं होगा। कबीर का कथन है कि वह तो प्रभु के प्यार में ही मस्त है।। ५ ।। २ ।। बिलावलु।। बेशक घर को त्यागकर वन में जाया जाता है और कन्दमूल चुनकर खाए जाते हैं परन्तु कभी भी यह पापी और घटिया मन विकारों को नहीं छोड़ता।। १ ।। संसार बहुत बड़ा सागर है इससे मैं कैसे बचूं और कैसे इसको तैर कर पार करूं। हे प्रभु, मेरी रक्षा कर, मैं सेवक तो तुम्हारी शरण में आ गया हूँ।। १ ।। रहाउ ।। विभिन्न प्रकार के विषयों के भोग की लालसा छोड़ी नहीं जाती। अनेकों यत्न करने के

राखीऐ फिरि फिरि लपटाई ॥ २ ॥ जरा जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका ॥ इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि मीका ॥ ३ ॥ कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥ तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥ ४ ॥ ३ ॥ बिलावलु ॥ नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ गइओ ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिओ ॥ १ ॥ हमारे कुल कउने रामु कहिओ ॥ जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु एकु भइओ ॥ सात सूत इनि मुडींए खोए इहु मुडीआ किउ न मुइओ ॥ २ ॥ सरब सुखा का एकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइओ ॥ संत प्रहलाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिओ ॥ ३ ॥ घर के देव पितर की छोडी गुर को सबदु लइओ ॥ कहत कबीरु सगल पाप खंडनु संतह लै उधरिओ ॥ ४ ॥ ४ ॥ बिलावलु ॥ कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरो जनु होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि सकै न अंदाजा ॥ १ ॥ चेति अचेत मूड़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा ॥ कहि कबीर संसा भ्रमु चूको ध्रू प्रहिलाद निवाजा ॥ २ ॥ ५ ॥ बिलावलु ॥ राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ सीलु धरमु जपु भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अमर जानि संची इह काइआ इह मिथिआ काची गगरी ॥ जिनहि निवाजि साजि हम कीए तिसहि बिसारि अवर लगरी ॥ १ ॥ संधिक तोहि साध नही कहीअउ सरनि परे तुमरी पगरी ॥ कहि कबीर इह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम की खबरी ॥ २ ॥ ६ ॥ बिलावलु ॥ दरमादे ठाढे दरबारि ॥ तुझ बिनु सुरति करै को मेरी दरसनु दीजै खोल्हि किवार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम धन धनी उदार तिआगी स्रवनन्ह सुनीअतु सुजसु तुम्हार ॥ मागउ काहि रंक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो निसतारु ॥ १ ॥ जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ क्रिपा भई है अपार ॥ कहि कबीर तुम संम्रथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥ २ ॥ ७ ॥ बिलावलु ॥ डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥ भ्रम कै

बावजूद यह फिर बार-बार लिपटती रहती है।। २ ।। जवानी बुढ़ापा अर्थात सारा जीवन ही बीत गया है परन्तु मैंने कुछ भी अच्छा काम नहीं किया। मेरा यह जीवन अमूल्य था परन्तु यह अब कौड़ी के बराबर हो गया है।। ३ ।। कबीर कहता है कि हे प्रभु, तू ही सर्वव्यापक है; तेरे समान दयालु कोई नहीं है और मेरे समान पापी कोई नहीं है।। ४ ।। ३ ।। बिलावलु ।। रोज सवेरे उठकर अर्थात मृत्यु के बाद नयी गागर रूपी शरीर प्राप्त किया जाता है और उसे लीपते पोतते सारा जीवन गँवा दिया जाता है। प्रभु नाम रूपी ताना-बाना तो इसे कुछ भी समझ नहीं आता और यह जीव सांसारिक रसों में ही लिपटा रहता है।। १ ।। क्या हमारे कुल में कभी भी किसी ने प्रभु का नाम लिया था। जब से इस निपूते ने माला पकड़ ली है तब से कभी भी सुख प्राप्त नहीं हुआ।। १ ।। रहाउ ।। हे मेरी जेठानी, देवरानी, यह कितने आश्चर्य की बात है कि यह घर का काम-काज छोड़ बैठा है। सूत का ताना बाना बनाना तो इसने छोड़ ही दिया है। यह लड़का काम छोड़ने से पहले मर क्यों नहीं गया।। २ ।। जो सभी सुखों का स्वामी प्रभु है उसने गुरु बनकर मुझे प्रभु नाम दिया है। यह वह है जिसने भक्त प्रहलाद की इज्जत बचा ली और हिरण्यकश्यप को नाखूनों से फाड़ डाला।। ३ ।। मैंने घर के मरे हुए पितरों को छोड़कर केवल गुरु के शब्द को ग्रहण किया है। कबीर कहता है कि वह प्रभु सारे पापों को नष्ट कर देने वाला है और वह ही सन्तजनों का उद्धार कर देता है।। ४ ।। ४ ।। बिलावलु ।। प्रभु के समान अन्य कोई भी राजा नहीं। ये राजा गण तो केवल चार दिनों के लिये ही हैं और यह झूठे दिखावे ही करते हैं।। १ ।। रहाउ ।। तेरा जो सेवक होता है वह भला क्यों घबराएगा क्योंकि उसकी महिमा तो तीनों लोकों पर छाई हुई है। बुरी नजर से उसकी तरफ भला कौन हाथ उठा सकता है क्योंकि उसकी महानता का तो अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता।। १ ।। हे मेरे मूर्ख और अचेत मन, यदि तू सावधान हो जाए तो अनहद नाद बजने लग जाएगा। कबीर कहता है कि मेरा भ्रम चुक गया है क्योंकि उस प्रभु ने ध्रुव और प्रहलाद पर भी कृपा की थी और वह मुझ पर भी करेगा।। २ ।। ५ ।। बिलावलु ।। हे प्रभु, हमसे तो हमारे जीवन की क्रियाएं ही बिगड़ गई हैं इसलिये तू हमारी रक्षा कर। मैंने शील, धर्म, सुमिरन और भक्ति आदि को नहीं अपनाया है तथा अभिमान को धारण करते हुए मैंने टेढ़ापन पकड़ रखा है।। १ ।। रहाउ ।। इस शरीर को अमर समझ कर मैंने इसका पालन पोषण किया है परन्तु कच्चे घड़े के समान यह शरीर तो झूठा है। जिस प्रभु ने हमें सँवार कर और सम्मान देकर बनाया था उसको भुलाकर हम दूसरों के पीछे लग गए हैं।। १ ।। हम तो तेरे चोर हैं, तेरे साधु नहीं कहे जा सकते इसीलिये तुम्हारे चरणों की शरण में आ पड़े हैं। कबीर कहता है कि हे प्रभु, हमारी इस विनती को सुन लो और यम को खबर करके हमारे पास मत भेजो।। २ ।। ६ ।। बिलावलु ।। बहुत व्याकुल होकर हम तुम्हारे दरबार में खड़े हैं। हे प्रभु, तेरे बिना मेरी सम्भाल कौन करेगा; अपना दरवाजा खोलकर मुझे दर्शन दो।। १ ।। राहउ ।। तुम धन के मालिक हो, उदार हो, त्यागी हो, हमने तो कानों से तुम्हारा सुयश सुना है। मैं किससे माँगू। मुझे तो सभी कंगाल दिखाई दे रहे हैं और मेरा पार उतारा तो केवल तुम ही कर सकते हो।। १ ।। जयदेव, नामदेव और ब्राह्मण सुदामा पर तो तेरी अपार कृपा हुई। कबीर कहता है कि हे प्रभु, तुम तो समर्थ दाता हो और चारों पदार्थो को देते समय तुम्हें तो जरा सी भी देर नहीं लगती।। २ ।। ७ ।। बिलावलु ।। डंडा, मुद्रा, लम्बा चोला और झोला रखकर घूमते रहने वाले वेशधारी योगी, भ्रमों में

भाइ भवै भेखधारी ॥ १ ॥ आसनु पवन दूरि करि बवरे ॥ छोडि कपटु नित हरि भजु बवरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह तू जाचहि सो त्रिभवन भोगी ॥ कहि कबीर केसौ जगि जोगी ॥ २ ॥ ८ ॥ बिलावलु ॥ इन्हि माइआ जगदीस गुसाई तुम्हरे चरन बिसारे ॥ किंचत प्रीति न उपजै जन कउ जन कहा करहि बेचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु ध्रिगु इह माइआ ध्रिगु ध्रिगु मति बुधि फंनी ॥ इस माइआ कउ द्रिड़ु करि राखहु बांधे आप बचंनी ॥ १ ॥ किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूटु गुमाना ॥ कहि कबीर ते अंति बिगूते आइआ कालु निदाना ॥ २ ॥ ९ ॥ बिलावलु ॥ सरीर सरोवर भीतरे आछै कमल अनूप ॥ परम जोति पुरखोतमो जा कै रेख न रूप ॥ १ ॥ रे मन हरि भजु भ्रमु तजहु जगजीवन राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत कछू न दीसई नह दीसै जात ॥ जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥ २ ॥ मिथिआ करि माइआ तजी सुख सहज बीचारि ॥ कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि ॥ ३ ॥ १० ॥ बिलावलु ॥ जनम मरन का भ्रमु गइआ गोबिद लिव लागी ॥ जीवत सुंनि समानिआ गुर साखी जागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासी ते धुनि ऊपजै धुनि कासी जाई ॥ कासी फूटी पंडिता धुनि कहां समाई ॥ १ ॥ त्रिकुटी संधि मै पेखिआ घट हू घट जागी ॥ ऐसी बुधि समाचरी घट माहि तिआगी ॥ २ ॥ आपु आप ते जानिआ तेज तेजु समाना ॥ कहु कबीर अब जानिआ गोबिद मनु माना ॥ ३ ॥ ११ ॥ बिलावलु ॥ चरन कमल जा कै रिदै बसहि सो जनु किउ डोलै देव ॥ मानौ सभ सुख नउ निधि ता कै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥ तब इह मति जउ सभ महि पेखै कुटिल गांठि जब खोलै देव ॥ बारं बार माइआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥ १ ॥ जह उहु जाइ तही सुखु पावै माइआ तासु न झोलै देव ॥ कहि कबीर मेरा मनु मानिआ राम प्रीति कीओ लै देव ॥ २ ॥ १२ ॥

बिलावलु बाणी भगत नामदेव जी की   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सफल जनमु मोकउ गुर कीना ॥ दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥ १ ॥

ही पड़े रहते हैं।। १ ।। आसन, प्राणायाम आदि हे बावले, छोड़ दे। कपट को त्याग कर हे मूर्ख, सदैव प्रभु का भजन कर।। १ ।। रहाउ ।। जिस माया को तू माँगता है वह तो तीनों लोकों को भोगने वाली है। कबीर कहता है कि वास्तविक योगी इस संसार में तो केवल प्रभु ही है।। २ ।। ८ ।। बिलावलु ।। हे प्रभु, जगत के स्वामी, इस माया ने तो हमें तुम्हारे चरण ही भुला दिए हैं। तेरे सेवक के हृदय में तो जरा सी भी प्रीति पैदा नहीं होती, अब बता भला तेरे बेचारे सेवक क्या करें।। १ ।। रहाउ ।। इस तन को धिक्कार है, धन को धिक्कार है, इस माया को धिक्कार है और मति चतुराई और छल कपट को बार-बार धिक्कार है। हे प्रभु, अपने हुकुम के अन्तर्गत इस माया को अच्छी तरह से बाँध कर रोके रखो।। १ ।। क्या खेती और क्या लेन-देन का प्रपंच है ; यह सब तो झूठ तथा अभिमान का ही काम है। कबीर कहता है कि इन सब में लीन रहने वाले तो अंततः खराब ही होते हैं और अंत में काल के मारे हुए मर खप जाते हैं।। २ ।। ६ ।। बिलावलु ।। शरीर रूपी सरोवर के भीतर परमात्मा रूपी अनुपम कमल है। पुरुषों में उत्तम वह परम ज्योति स्वरूप है जिसकी कोई रूपरेखा नहीं।। १ ।। हे मन, प्रभु का सुमिरन करके भ्रमों को त्याग दे क्योंकि परमात्मा ही सारे संसार का जीवन है।। १ ।। रहाउ ।। यहाँ आता हुआ भी न कुछ दिखाई देता और ना ही जाता हुआ कुछ दिखाई देता है। इस संसार में जो उपजता है वह यहीं वैसे विनष्ट हो जाता है जैसे चौपत्ती के पत्ते पानी में उग कर पानी में ही नष्ट हो जाते हैं।। २ ।। झूठी समझकर जब माया को त्याग दिया तब स्वभाविक रूप से प्राप्त हुए सुख का चिन्तन किया गया। कबीर कहता है कि प्रभु को मन में बसा कर उसकी सेवा करते रहो।। ३ ।। १० ।। बिलावलु ।। जब सुरति धरती के स्वामी प्रभु के साथ लग गई तो जन्म-मरण का हमारा भ्रम समाप्त हो गया। हम जीवित बने हुए ही उस शून्य प्रभु में समा गए हैं और गुरु की शिक्षा से हमारी सुरति सावधान हो गयी है।। १ ।। रहाउ ।। कांसे के बर्तन की आवाज पैदा होकर कांसे में ही समा जाती है परन्तु हे पंडित, यदि कांसें का बर्तन टूट जाए तो यह आवाज कहां चली जाएगी अर्थात यह ध्वनि अन्तरिक्ष में जैसे समा जाती है वैसे ही जीव की ज्योति उस परम ज्योति में लीन हो जाती है।। १ ।। तीनों गुणों के मेल से संसार में मैंने उस प्रभु को देखा है और घट-घट में उसकी ज्योति जली हुई है। अब मुझमें ऐसी बुद्धि प्रकट हो गई है कि मैं अपने अन्तर्मन में ही त्यागी हो गया हूँ।। २ ।। मैंने अपने को अपने से ही पहचान लिया है और मेरी जोति उस जोति में मिल गई है। कबीर कहता है कि अब मैंने अपने प्रभु को जान लिया है और मेरा मन सन्तुष्ट हो गया है।। ३ ।। ११ ।। बिलावलु ।। हे प्रभु, तुम्हारे चरण कमल जिसके हृदय में बसते हैं वह सेवक भला क्यों घबराएगा। उसे तो ऐसा ही समझो कि उसके पास नवनिधियाँ और सभी सुख हैं और वह उस प्रभु का यश स्वाभाविक रूप से ही गाता रहता है।। रहाउ ।। अच्छी बुद्धि तो तभी कह सकते हैं यदि वह हृदय से टेढेपन की गाठँ को खोल दे और इस प्रकार सरल बनकर सब में प्रभु को देखे। बार-बार वह अपने मन को माया की ओर से रोके रहे और तराजू लेकर मन को तौलता रहे अर्थात मन की बुराइयों को देखता रहे।। १ ।। जहाँ वह जाएगा वहीं सुख प्राप्त करेगा तथा माया उसको हिला नहीं सकती। कबीर कहता है कि मेरा मन अब सन्तुष्ट हो गया है और हे प्रभु, मैंने उसे हरि के प्रेम में लीन कर दिया है।। २ ।। १२ ।।

बिलावलु वाणी भक्त नामदेव जी की   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

गुरु ने प्रभु नाम देकर मेरा जीवन सफल कर दिया है और मैंने भी दुखों को भुलाकर अन्तर्मन में सुख को धारण कर लिया है।। १ ।।

गिआन अंजनु मोकउ गुरि दीना ॥ राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामदेइ सिमरनु करि जानां ॥ जगजीवन सिउ जीउ समानां ॥ २ ॥ १ ॥

बिलावलु बाणी रविदास भगत की ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥ १ ॥ तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥ सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥ २ ॥ कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥ ३ ॥ १ ॥ बिलावलु ॥ जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥ बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ १ ॥ धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥ जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥ २ ॥ पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥ ३ ॥ २ ॥

बाणी सधने की रागु बिलावलु ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

न्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥ कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥ १ ॥ तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥ सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुखु पावै ॥ प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥ २ ॥ प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥ बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥ ३ ॥ मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥ अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥ ४ ॥ १ ॥

गुरु ने मुझे ज्ञान रूपी अंजन दे दिया है और मैं यह जान गया हूँ कि प्रभु नाम के बिना यह जीवन आत्मा से विहीन केवल शारीरिक ही है।। १ ।। रहाउ ।। नामदेव ने तो सुमिरन करके उस प्रभु को जाना है और उसका मन परमात्मा में ही लीन हो गया है।। २ ।। १ ।।

बिलावलु वाणी रविदास भक्त की   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरी गरीबी को देखकर मुझ पर सभी हँसते थे ; ऐसी हमारी दशा थी। अब अठारहों सिद्धियाँ मेरे हाथ की तली पर आ गई हैं; हे प्रभु, यह सब तुम्हारी ही कृपा है।। १ ।। हे संसार के भव चक्र को तोड़ने वाले प्रभु, तुम तो जानते ही हो कि मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। हे कामनाओं को पूर्ण करने वाले प्रभु, सभी जीव तेरे ही शरणागत बने हुए हैं।। १ ।। रहाउ ।। जो तेरी शरण में आ गये हैं उन पर पापों का कोई बोझ नहीं है। ऊँचे-नीचे सब तुम्हारे माध्यम से ही पार हुए हैं परन्तु यह संसार फिर भी निर्लज्ज बना हुआ है।। २ ।। रविदास कहता है कि हे प्रभु, तुम्हारी कथा अकथनीय है भला उसको क्या बताया जाए। जैसा तू है वैसा केवल तू ही है। तेरी तुलना किसके साथ की जाए।। ३ ।। १ ।। बिलावलु ।। जिस कुल में प्रभु का उपासक कोई साधु पुरुष हो वह ऊँचा, नीचा, कंगाल, अमीर कोई भी हो उसकी पवित्र सुंगधि सारे संसार में जानी जाती है।। १ ।। रहाउ ।। ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय, डोम, चाण्डाल और बेशक मलेच्छ मन वाला भी कोई हो वह प्रभु के सुमिरन के माध्यम से पवित्र हो जाता है और वह स्वयं पार उतरकर दोनों कुलों को भी पार उतार जाता है।। १ ।। वह गाँव धन्य है, स्थान धन्य है, वह परिवार पुनीत एवं धन्य है और सभी लोग धन्य हैं जिन्होंने सबका सार तत्व प्रभु नाम का रस सबको त्यागकर पिया है और रस मग्न होकर विषय विकारों के जहर को फेंक दिया है।। २ ।। पंडित, शूरवीर, छत्रपति राजा आदि कोई भी भक्त के बराबर नहीं होता है। जैसे चौपत्ती का पत्ता जल के समीप रहते हुए भी अलिप्त बना रहता है रविदास कहता है कि भक्त जन भी इस संसार में ऐसा ही जीवन बनाए रहते हैं।। ३ ।। २ ।।

वाणी भक्त सधना की रागु बिलावलु   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

एक राजा की पुत्री से विवाह करने के लिए एक पाखण्डी ने विष्णु का रूप धारण कर लिया क्योंकि राजा की कन्या का विष्णु से विवाह करने का प्रण था। प्रभु ने उस कामी और स्वार्थी व्यक्ति की भी इज़्ज़त बचाई। राजा पर आक्रमण के समय उस वेशधारी पाखंडी दामाद की सहायता माँगने पर उस पाखंडी दामाद ने प्रभु के आगे गुहार लगाई तो प्रभु ने उसकी अरदास भी स्वीकार कर ली और राजा की विजय हुई।। १ ।। तेरी महानता भला हे प्रभु, क्या होगी यदि हमारे कर्मो के विवाद हमसे दूर ना हो। शेर की शरण में जाने की भला क्या जरूरत है यदि फिर भी गीदड़ों का डर बना ही रहे।। १ ।। रहाउ ।। केवल एक बूंद जल के लिए चातक दुखी होता रहता है परन्तु उसके प्राण निकल जाने पर यदि उसे सागर भी मिल जाए तो वह उसके किसी काम नहीं आता।। २ ।। मेरे प्राण थक कर स्थिर नहीं बने रहते तो मैं भला कैसे आराम के साथ बैठूं। डूब जाने पर यदि नौका मिल भी जाए तो बताओ भला उस पर किसको चढाया जाएगा।। ३ ।। मैं नहीं हूँ, कुछ भी नहीं हूँ और मेरा यहाँ कुछ भी नहीं है। इस जीवन के अवसर में मेरी इज़्ज़त बचा लो हे प्रभु, सधना तो तेरा दास है ४ ।। १ ।।

੧ਓ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु गोंड चउपदे महला ४ घरु १ ॥

जे मनि चिति आस रखहि हरि ऊपरि ता मन चिंदे अनेक अनेक फल पाई ॥ हरि जाणै सभु किछु जो जीइ वरतै प्रभु घालिआ किसै का इकु तिलु न गवाई ॥ हरि तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ महि सुआमी रहिआ समाई ॥ १ ॥ मेरे मन आसा करि जगदीस गुसाई ॥ जो बिनु हरि आस अवर काहू की कीजै सा निहफल आस सभ बिरथी जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो दीसै माइआ मोह कुटंबु सभु मत तिस की आस लगि जनमु गवाई ॥ इन्ह कै किछु हाथि नही कहा करहि इहि बपुड़े इन्ह का वाहिआ कछु न वसाई ॥ मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की जो तुझु तारै तेरा कुटंबु सभु छडाई ॥ २ ॥ जे किछु आस अवर करहि परमित्री मत तूं जाणहि तेरै कितै कंमि आई ॥ इह आस परमित्री भाउ दूजा है खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई ॥ मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की जो तेरा घालिआ सभु थाइ पाई ॥ ३ ॥ आसा मनसा सभ तेरी

੧ ओअंकार सति नामु करता पुरख निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

रागु गोंड चौपदे महला ४ घरु १ ।।

यदि मेरा मन और चित्त उस प्रभु पर ही आशा बनाए रखे तो मनोवांछित अनेकों फल प्राप्त हो जाते हैं। जो जीव के हृदय में चल रहा होता है प्रभु वह सब कुछ जानता होता है और वह प्रभु किसी की की हुई मेहनत का तिल मात्र भी व्यर्थ नहीं जाने देता। हे मेरे मन, उस प्रभु पर ही आशा लगाओ जो सबमें समाया हुआ है।। १ ।। हे मेरे मन, उस प्रभु से ही आशा बनाए रख। यदि प्रभु के बिना किसी अन्य पर आशा लगाएगा तो ऐसी निष्फल आशा व्यर्थ ही जाएगी।। १ ।। रहाउ ।। यह जो माया, मोह, कुटुम्ब आदि दिख रहा है इनकी आशा में ही लगा हुआ तू अपने जीवन को गँवा मत देना। ये बेचारे क्या करेंगे, इनके हाथ में कुछ भी नहीं है; इनका किया हुआ कुछ भी नहीं होगा क्योंकि इनके वश में कुछ नहीं है। हे मेरे मन, उस प्रभु प्रियतम पर आस लगाए रह जो तुझे पार उतार देगा और तेरे कुटुम्ब को भी छुड़ा लेगा।। २ ।। यदि तू पराए मित्रों की तथा दूसरों की आशा में लगा रहेगा तो तू नहीं जानता कि यह तेरे किसी काम नहीं आएंगे। दिखावे के मित्रों पर आस लगाए रहना द्वैतभाव है और इसका झूठ क्षण भर में विनष्ट हो जाएगा। हे मेरे मन, तू उस सच्चे प्रियतम पर आशा लगाए रह जो तेरी की हुई सारी मेहनत को सफल करता है।। ३ ।। ये आशाएं और मन की तृष्णाएं

मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ किछु किसी कै हथि नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसनु देखि हरि दरसनि त्रिपताई ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड महला ४ ॥ ऐसा हरि सेवीऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥ जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख लहासा ॥ १ ॥ मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे अपनी बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कढासा ॥ अपनी बिरथा कहहु हरि अपुने सुआमी पहि जो तुम्हरे दूख ततकाल कटासा ॥ सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि कहीऐ अवरा पहि कहि मन लाज मरासा ॥ २ ॥ जो संसारै के कुटंब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ जितु दिनि उन्ह का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़ै को न ढुकासा ॥ मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उपकरै दूखि सुखासा ॥ ३ ॥ तिस का भरवासा किउ कीजै मन मेरे जो अंती अउसरि रखि न सकासा ॥ हरि जपु मंतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन्ह अंति छडाए जिन्ह हरि प्रीति चितासा ॥ जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा भरवासा ॥ ४ ॥ २ ॥ गोंड महला ४ ॥ हरि सिमरत सदा होइ अनंदु सुखु अंतरि सांति सीतल मनु अपना ॥ जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि देखे लहि जाइ सभ तपना ॥ १ ॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ नामु हरि जपना ॥ जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु सेवि सदा तू अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ जिन हरि धिआइआ तिन हरि पाइआ मेरा सुआमी तिन के चरण मलहु हरि दसना ॥ २ ॥ सबदु पछाणि राम रसु पावहु ओहु ऊतमु संतु भइओ बड बडना ॥ तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई ओहु

हे प्रभु, सब तेरी ही हैं; तू जिस प्रकार की आशा करवाता है जीव वैसी ही आशा किए जाता है। मेरे सच्चे गुरु ने यह मुझे समझा दिया है कि मेरे प्रभु, कुछ भी किसी के हाथ में नहीं है। दास नानक की आशा को हे प्रभु, तू जानता है; मैं तो तेरे दर्शन को देखकर ही तृप्त होता हूँ।। ४ ।। १ ।। गोंड महला ४ ।। ऐसे प्रभु का सुमिरन और आराधना करनी चाहिए जो क्षण भर में सभी पापों का विनाश कर देता है। यदि प्रभु को त्यागकर किसी अन्य पर आस लगाई जाए तो प्रभु ऐसी की हुई मेहनत को निष्फल कर देता है। हे मेरे मन, तू सुखों को देने वाले उस प्रभु का सुमिरन कर जिसके सुमिरन से सारी भूख समाप्त हो जाती है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु पर भरोसा रख। हम जहाँ भी जाते हैं वह स्वामी वहीं हमारे साथ होता है और प्रभु स्वयं अपने सेवक की लाज रखता है।। १ ।। रहाउ ।। यदि किसी अन्य के सामने अपने मन की व्यथा कही जाए तो वह आगे से अपनी ही बहुत तकलीफों को कह सुनाता है। अपनी व्यथा को तो अपने स्वामी प्रभु से ही कहो जो तत्काल तुम्हारे दुख काट देता है। ऐसे प्रभु को छोड़कर अपनी व्यथा अन्यों से कहने पर मन में लज्जित होकर मरना पड़ता है।। २ ।। जो संसार के कुटुम्भ, मित्र, भाई इत्यादि हे मेरे मन, दिखाई देते हैं वे सब अपने स्वार्थ के लिये ही तुझसे मिलते हैं। जिस दिन उनका स्वार्थ पूरा नहीं होता उस दिन वे तेरे पास भी नहीं आते। हे मेरे मन, अपने उस प्रभु का सुमिरन दिन रात करते रहो जो दुख-सुख में तुझ पर उपकार किए जाता है।। ३ ।। हे मेरे मन, उस पर भरोसा क्यों किया जाए जो अंतिम समय में तेरी रक्षा नहीं कर सकता। गुरु से उपदेश लेकर प्रभु मन्त्र का जाप करो क्योंकि जिनकी प्रभु में प्रीति बनी होती है उन्हें यह अन्त में छुड़ा लेता है। दास नानक का कथन है कि हे प्रभु के सन्तो, प्रभु नाम का जाप करो क्योंकि संसार से मुक्त होने का यही सच्चा भरोसा है।। ४ ।। २ ।। गोंड महला ४ ।। प्रभु के सुमिरन से सदैव आनन्द मिलता है, अन्तर्मन में सुख और शान्ति मिलती है तथा मन शीतल हो जाता है। जिस प्रकार माया रूपी सूरज पूरी शक्ति से जलता रहता है परन्तु जब गुरु रूपी चन्द्रमा को देख लेता है तो उसकी सारी तपन समाप्त हो जाती है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रतिदिन प्रभु नाम की आराधना कर और प्रभु को जपता रह। तू ऐसे अपने प्रभु को सदैव सुमिरन करता रह जो यहाँ वहाँ सभी स्थानों पर तुम्हारी रक्षा करता है। हे मेरे मन, जिसमें सभी खजाने हैं उस प्रभु का जाप करो और गुरमुख बनकर प्रभु के रत्नों को खोज लो। जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया है उन्होंने मेरा स्वामी प्रभु पा लिया है और उन प्रभु के दासों के चरणों को तुम मल-मल कर धोओ।। २ ।। शब्द को पहचान कर राम रस प्राप्त करो और ऐसा करने वाला बड़े से बड़ा उत्तम सन्त बन जाता है। ऐसे सेवक की महिमा प्रभु ने स्वयं ही बड़ी कर दी है और वह

घटै न किसै की घटाई इकु तिलु तिलु तिलना ॥ ३ ॥ जिस ते सुख पावहि मन मेरे सो सदा धिआइ नित कर जुरना ॥ जन नानक कउ हरि दानु इकु दीजै नित बसहि रिदै हरी मोहि चरना ॥ ४ ॥ ३ ॥ गोंड महला ४ ॥ जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु भाउ दूजा जाणु ॥ हरि अबिनासी सदा थिरु निहचलु तिसु मेरे मन भजु परवाणु ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हरी भजु सदा दीबाणु ॥ जो हरि महलु पावै गुर बचनी तिसु जेवडु अवरु नाही किसै दा ताणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनसि जाहि जिउ रंगु कसुंभ कचाणु ॥ हरि सति निरंजनु सदा सेवि मन मेरे जितु हरि दरगह पावहि तू माणु ॥ २ ॥ ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥ ३ ॥ ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवानु ॥ जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ गोंड महला ४ ॥ हरि अंतरजामी सभतै वरतै जेहा हरि कराए तेहा को करईऐ ॥ सो ऐसा हरि सेवि सदा मन मेरे जो तुधनो सभ दू रखि लईऐ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि हरि नित पड़ईऐ ॥ हरि बिनु को मारि जीवालि न साकै ता मेरे मन काइतु कड़ईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि परपंचु कीआ सभु करतै विचि आपे आपणी जोति धरईऐ ॥ हरि एको बोलै हरि एकु बुलाए गुरि पूरै हरि एकु दिखईऐ ॥ २ ॥ हरि अंतरि नाले बाहरि नाले कहु तिसु पासहु मन किआ चोरईऐ ॥ निहकपट सेवा कीजै हरि केरी तां मेरे मन सरब सुख पईऐ ॥ ३ ॥ जिस दै वसि सभु किछु जो सभ दू वडा सो मेरे मन सदा धिअईऐ ॥ जन नानक सो हरि नालि है तेरै हरि सदा धिआइ तू तुधु लए छडईऐ ॥ ४ ॥ ५ ॥ गोंड महला ४ ॥ हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ त्रिखावंतु बिनु नीर ॥ १ ॥ मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रीतम

किसी के घटाने से एक तिल मात्र भी नहीं घटती।। ३ ।। हे मेरे मन, जिस प्रभु से तू सुख प्राप्त करता है उसकी सदैव हाथ जोड़कर आराधना कर। दास नानक को हे प्रभु, एक दान दीजिए कि मेरे हृदय में सदैव प्रभु के चरण बसे रहें।। ४ ।। ३ ।। गोंड महला ४।। जितने साहूकार, सम्राट, राजा, सरदार, चौधरी आदि हैं ये सब झूठे हैं और द्वैतभाव में लगे हैं। हे मेरे मन, प्रभु अविनाशी सदैव स्थिर और अटल है, तू स्वीकार होने के लिये उसका सुमिरन कर।। १।। मेरे मन, उस प्रभु का सुमिरन कर जो सदा ही तेरा आसरा है। गुरु के उपदेश के माध्यम से जो प्रभु का ठिकाना पा लेता है उसके समान अन्य किसी का भी बल नहीं है।। १ ।। रहाउ ।। जितने भी धनवान, कुलवान और दौलतमंद दिखाई देते हैं; हे मेरे मन, वे कुसुम्भ के फूल के कच्चे रंग की तरह सभी नष्ट हो जाएंगे। मेरे मन, तू सदैव सत्य और निर्मल प्रभु का सुमिरन कर जिससे तुझे उसके दरबार में सम्मान प्राप्त होता है।। २ ।। ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य चार वर्ण हैं और इसी प्रकार चार आश्रम माने जाते हैं परन्तु इनमें से प्रधान वही है जो प्रभु का सुमिरन करता है। जैसे चन्दन के पास रेंडी का वृक्ष उसकी सुगन्ध लेता है उसी प्रकार संतसंगति से मिल जाने पर पतित व्यक्ति भी स्वीकार्य हो जाते हैं।। ३ ।। जिसके हृदय में प्रभु बसा हुआ है, वही सबसे ऊँचा और सबसे पवित्र है। दास नानक तो उसके चरणों को धोता है जो प्रभु का सेवक तथाकथित नीच जाति वालों का सेवक है।। ४ ।। ४ ।। गोंड महला ४ ।। अन्तर्यामी प्रभु सब स्थानों में कार्यशील है और वह प्रभु जो कराता है हमें वैसा ही करना होता है। हे मेरे मन, ऐसे मेरे प्रभु का सुमिरन कर जो तेरी सब ओर से रक्षा करता है।। १ ।। हे मेरे मन, सदैव हरि का ही जाप कर और हरि की ही पढ़ाई कर। प्रभु के बिना कोई मार नहीं सकता तथा जीवित भी नहीं कर सकता इसलिये हे मेरे मन, तू क्यों क्रोधित होता है।। १।। रहाउ।। उस कर्ता प्रभु ने ही पाँच तत्वों के विस्तार के रूप में इस सृष्टि का प्रपंच बनाया है और अपनी ज्योति को इसमें स्थिर किया है। वह एक ही प्रभु बोलता है, एक ही बुलवाता है और पूर्ण गुरु भी उस एक के ही दर्शन कराता है।। २ ।। प्रभु अन्दर-बाहर साथ ही साथ बना रहता है तो अब बताओ कि उससे भला मन को कैसे चुराओगे। निष्कपट होकर हे मेरे मन, उस प्रभु की सेवा कर तभी तू सारे सुखों को प्राप्त कर सकेगा।। ३ ।। जिसके वश में सब कुछ है वह सबसे बड़ा है; इसलिये हे मेरे मन, सदैव उसका सुमिरन कर। हे दास नानक, वह प्रभु सदैव तेरे साथ है, तू सदैव उसकी आराधना कर वह तुझे छुड़ा लेगा।।४।। ५।। गोंड महला ४ ।। जैसे प्यासा पानी के बिना व्याकुल रहता है इसी प्रकार मेरा मन प्रभु दर्शन के लिये व्याकुल है।। १ ।। मेरे मन में प्रभु का प्रेम तीर की तरह लगा हुआ है। मेरे अन्तर्मन की पीड़ा और मेरी वेदना को तो केवल प्रभु ही जानता है। ।। १ ।। रहाउ ।। मुझे जो कोई भी मेरे प्रियतम प्रभु की

की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥ २ ॥ मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ॥ ३ ॥ जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि सांति सरीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु १ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सभु करता सभु भुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनतो करता पेखत करता ॥ अद्रिसटो करता द्रिसटो करता ॥ ओपति करता परलउ करता ॥ बिआपत करता अलिपतो करता ॥ १ ॥ बकतो करता बूझत करता ॥ आवतु करता जातु भी करता ॥ निरगुन करता सरगुन करता ॥ गुर प्रसादि नानक समद्रिसटा ॥ २ ॥ १ ॥ गोंड महला ५ ॥ फाकिओ मीन कपिक की निआई तू उरझि रहिओ कुसंभाइले ॥ पग धारहि सासु लेखै लै तउ उधरहि हरि गुण गाइले ॥ १ ॥ मन समझु छोडि आवाइले ॥ अपने रहन कउ ठउरु न पावहि काए पर कै जाइले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मैगलु इंद्री रसि प्रेरिओ तू लागि परिओ कुटंबाइले ॥ जिउ पंखी इकत्र होइ फिरि बिछुरै थिरु संगति हरि हरि धिआइले ॥ २ ॥ जैसे मीनु रसन सादि बिनसिओ ओहु मूठौ मूड़ लोभाइले ॥ तू होआ पंच वासि वैरी कै छूटहि परु सरनाइले ॥ ३ ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन सभि तुम्हरे जीअ जंताइले ॥ पावउ दानु सदा दरसु पेखा मिलु नानक दास दसाइले ॥ ४ ॥ २ ॥

रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु २ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

जीअ प्रान कीए जिनि साजि ॥ माटी महि जोति रखी निवाजि ॥ बरतन कउ सभु किछु भोजन भोगाइ ॥ सो प्रभु तजि मूड़े कत जाइ ॥ १ ॥ पारब्रहम की लागउ सेव ॥ गुर ते सुझै निरंजन देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीए रंग अनिक परकार ॥ ओपति परलउ निमख मझार ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ सो प्रभु मन मेरे सदा धिआइ ॥ २ ॥ आइ न जावै निहचलु धनी ॥ बेअंत गुना ता के केतक

बातें सुनाए वही मेरा भाई है और वही मेरा बन्धु है।। २ ।। हे सखी, मिल बैठकर और सच्चे गुरु की धैर्य प्रदान करने वाली मति को लेकर मेरे प्रभु के गुण गाती रह।। ३ ।। हे प्रभु, दास नानक की इच्छा पूर्ण कर क्योंकि प्रभु के दर्शन में ही शरीर की शान्ति सम्भव है।। ४ ।। ६ ।। छक्का १ ।।

रागु गोंड महला ५ चौपदे घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह प्रभु ही सब कुछ करने वाला है और सब कुछ भोगने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। सुनने वाला भी वह है और देखने वाला भी वही कर्ता प्रभु है। सबमें व्याप्त भी वही कर्ता है और सबसे अलिप्त बना रहने वाला भी वही है।। १।। बोलने वाला भी वही कर्ता है और समझने वाला भी वही है। यहाँ आने वाला भी कर्ता ही है और यहाँ जाता भी कर्ता ही है। वह प्रभु ही निर्गुण है अर्थात सभी गुणों से परे है और वही सगुण भी है अर्थात सारे गुणों को धारण करने वाला भी वही है। हे नानक, उस प्रभु की यह सम दृष्टि गुरु की कृपा से ही प्राप्त होती है।। २ ।। १ ।। गोंड महला ५ ।। हे जीव, जिस प्रकार मछली जाल में फँस जाती है और बन्दर थोड़े से चने के बस में आकर फँस जाता है इसी प्रकार तू इस संसार की कच्चे रंग वाली माया के जाल में उलझा हुआ है। यदि तू उस प्रभु के हिसाब में रहता हुआ कदम उठाए और श्वास लेता रहे तभी तू प्रभु के गुण गाता हुआ बचा रह सकता है।। १ ।। हे मन, तू समझ जा और अपना आवारापन छोड़ दे। तेरा अपना मन तो स्थिर नहीं होता अर्थात भटकता रहता है फिर तू अन्य स्थानों पर जा-जाकर क्यों उपदेश करता है।। १ ।। रहाउ ।। जिस प्रकार हाथी काम की इन्द्रिय के वश में होकर फंस जाता है इसी प्रकार तू कुटुम्ब के धन्धों में फंसा रहता है। जैसे पक्षी इकट्ठा होते हैं परन्तु जल्दी ही अलग अलग भी हो जाते हैं, इसी प्रकार मानव जीवन भी सदैव चलता रहने वाला खेल है; स्थिर तो ऐसे हुआ जाता है कि सत्संगति में प्रभु का सुमिरन करते रहा जाए।। २ ।। जैसे मछली चारे के स्वाद में नष्ट हो जाती है और मूर्ख लोभ में पड़ी हुई ठगी जाती है। वैसे ही तू तो घोर शत्रु पाँच विकारों के वश में पड़ा हुआ है, तू कैसे छूटेगा; तू प्रभु की शरण में पड़ने से ही छूट सकेगा।। ३।। हे दीनों के दुखों का नाश करने वाले प्रभु, कृपा करो क्योंकि यह सभी तुम्हारे ही जीव जन्तु हैं। मुझे यह दान दो कि मैं सदैव तुम्हारा दर्शन करता रहूँ; मुझसे आ मिलो क्योंकि नानक तो तुम्हारे दासों का भी दास है।। ४ ।। २ ।।

रागु गोंड महला ५ चौपदे घरु २   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिसने जीवों और प्राणों की रचना की है और इस शरीर रूपी मिट्टी में ज्योति को कृपापूर्वक रख दिया है; जिसने प्रयोग में लाने के लिये सभी प्रकार के भोग और भोजन आदि रखे हैं उस प्रभु को त्यागकर हे मूर्ख, तू कहाँ भटक रहा है।। १ ।। परब्रह्म प्रभु के सुमिरन में लग जाओ; उस निर्मल प्रभु की समझ गुरु से ही प्राप्त होती है।। १ ।। रहाउ ।। जिसने अनेकों प्रकार के रंग तमाशे बनाए हैं; जो निमिष मात्र में उत्पत्ति और प्रलय कर देता है; जिसके ओर-छोर के बारे में कहा नहीं जा सकता, हे मेरे मन, तू सदैव उसकी आराधना कर।। २ ।। वह अटल स्वामी ना तो आता है ना जाता है। उसके अनन्त गुण हैं उनमें से कितने

गनी ॥ लाल नाम जा कै भरे भंडार ॥ सगल घटा देवै आधार ॥ ३ ॥ सति पुरखु जा को है नाउ ॥ मिटहि कोटि अघ निमख जसु गाउ ॥ बाल सखाई भगतन को मीत ॥ प्रान अधार नानक हित चीत ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ गोंड महला ५ ॥ नाम संगि कीनो बिउहारु ॥ नामो ही इसु मन का अधारु ॥ नामो ही चिति कीनी ओट ॥ नामु जपत मिटहि पाप कोटि ॥ १ ॥ रासि दीई हरि एको नामु ॥ मन का इसटु गुर संगि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारे जीअ की रासि ॥ नामो संगी जत कत जात ॥ नामो ही मनि लागा मीठा ॥ जलि थलि सभ महि नामो डीठा ॥ २ ॥ नामे दरगह मुख उजले ॥ नामे सगले कुल उधरे ॥ नामि हमारे कारज सीध ॥ नाम संगि इहु मनूआ गीध ॥ ३ ॥ नामे ही हम निरभउ भए ॥ नामे आवन जावन रहे ॥ गुरि पूरै मेले गुणतास ॥ कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ गोंड महला ५ ॥ निमाने कउ जो देतो मानु ॥ सगल भूखे कउ करता दानु ॥ गरभ घोर महि राखनहारु ॥ तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु ॥ १ ॥ ऐसो प्रभु मन माहि धिआइ ॥ घटि अवघटि जत कतहि सहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रंकु राउ जा कै एक समानि ॥ कीट हसति सगल पूरान ॥ बीओ पूछि न मसलति धरै ॥ जो किछु करै सु आपहि करै ॥ २ ॥ जा का अंतु न जानसि कोइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ आपि अकारु आपि निरंकारु ॥ घट घट घटि सभ घट आधारु ॥ ३ ॥ नाम रंगि भगत भए लाल ॥ जसु करते संत सदा निहाल ॥ नाम रंगि जन रहे अघाइ ॥ नानक तिन जन लागै पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ गोंड महला ५ ॥ जा कै संगि इहु मनु निरमलु ॥ जा कै संगि हरि हरि सिमरनु ॥ जा कै संगि किलबिख होहि नास ॥ जा कै संगि रिदै परगास ॥ १ ॥ से संतन हरि के मेरे मीत ॥ केवल नामु गाईऐ जा कै नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मंत्रि हरि हरि मनि वसै ॥ जा कै उपदेसि भरमु भउ नसै ॥ जा कै कीरति निरमल सार ॥ जा की रेनु बांछै संसार ॥ २ ॥ कोटि पतित जा कै संगि उधार ॥ एकु निरंकारु जा कै नाम अधार ॥ सरब जीआं का जानै भेउ ॥ क्रिपा निधान निरंजन देउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए क्रिपाल ॥ तब भेटे

गिने जा सकते हैं अर्थात गिने नहीं जा सकते। नाम रूपी रत्नों के जिसके भण्डार भरे हैं वही सभी जीवों को आसरा देता है।। ३ ।। जिसका नाम सत्य पुरुष है, एक क्षण भर भी उसका यश गायन करने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं। जो भक्तों का मित्र एवं बाल सखा है वही प्रभु हे नानक, सबके प्राणों का आधार है और सबका हित चाहने वाला है।। ४ ।। १ ।। ३ ।। गोंड महला ५ ।। मैंने तो नाम के साथ ही अपना व्यवहार बनाया है और नाम ही इस मन का आसरा है। नाम ने ही मेरे मन को आसरा दिया है और नाम के सुमिरन से ही करोड़ों पाप मिट जाते हैं।। १ ।। प्रभु ने हमें एक नाम की ही रासपूंजी दी है और मन का इष्ट तो अब यही है कि गुरु की संगति में उस प्रभु का ध्यान किया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। नाम ही हमारे प्राणों की रासपूंजी है और मैं जहाँ कहीं भी जाता हूँ नाम ही वहाँ मेरा संगी साथी होता है। नाम ही मेरे मन को मीठा लगा है और नाम के माध्यम से ही मैंने जल स्थल और सबमें उस प्रभु को देखा है।। २ ।। नाम से ही प्रभु के दरबार में मुख उज्जवल बना रहता है और नाम के माध्यम से ही समस्त कुलों का उद्धार हो गया है। नाम के माध्यम से ही हमारे सभी कार्य ठीक हो गए हैं और नाम के साथ ही यह मन लगा हुआ है।। ३ ।। प्रभु-नाम से ही हम निर्भय हो गए हैं और नाम से ही हमारा आवागमन समाप्त हो गया है। पूर्ण गुरु ने हमें गुणों के भण्डार प्रभु से मिला दिया है और नानक कहता है कि अब हमारा स्वाभाविक सहज सुख में निवास बन गया है।। ४ ।। २ ।। ४ ।। गोंड महला ५ ।। बलहीन को जो सम्मान देने वाला है, सभी भूखे लोगों को दान देने वाला है और भयानक गर्भ में जो रक्षा करने वाला है उस प्रभु को मेरा सदैव प्रणाम है।। १ ।। ऐसे प्रभु का सदैव मन में सुमिरन करना चाहिए जो अन्दर बाहर यत्र-तत्र सहायता करने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। जिसके लिये राजा रंक एक समान है; जो चींटी और हाथी सबमें व्याप्त हैं, वह किसी से भी पूछकर सलाह नहीं लेता और जो कुछ भी करता है वह स्वयं ही करता है।। २ ।। जिसकी सीमा को कोई नहीं जानता वह निर्मल प्रभु स्वयं ही सब कुछ है। वह स्वयं ही आकार है और स्वयं ही निराकार है। वह प्रभु ही सब शरीरों और हृदयों का आसरा है।। ३ ।। प्रभु-नाम के रंग में उसके भक्तजन उसके प्रेम के लाल रंग वाले हो गए हैं और सन्तजन भी उसके यश का गायन करते हुए सदैव आनन्दित बने रहते हैं। उसके नाम के रंग में रंगे हुए उसके सेवक तृप्त बने रहते हैं और नानक उन सेवकों के चरणों में लगा हुआ है।। ४ ।। ३ ।। ५ ।। गोंड महला ५ ।। जिसके साथ बने रहने से यह मन निर्मल हो जाता है, जिसके साथ बने रहने से प्रभु का सुमिरन होता है, जिसके साथ बने रहने से पाप नष्ट हो जाते हैं, जिसके साथ बने रहने से हृदय में प्रकाश हो जाता है।। १ ।। वे प्रभु के सन्तजन ही मेरे मित्र हैं। उनके पास ही केवल सदैव प्रभु का नाम गाया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। जिनके उपदेश के माध्यम से प्रभु मन में बसता है और जिनके उपदेश से भ्रम तथा भय भाग खड़े होते हैं, जिसके यश गायन से निर्मल सार तत्व प्राप्त होता हैं और जिसकी चरण धूलि सारा संसार चाहता है।। २ ।। करोड़ों पतितों का जिसकी संगति में उद्धार हो जाता है और जिन्हें केवल एक निराकार प्रभु के नाम का ही आसरा है। वे ही सब जीवों के रहस्यों को जानने वाले हैं और वे ही कृपा के भण्डार परमात्मा का स्वरूप हैं।। ३ ।। जब प्रभु कृपा करता है तभी दयालु साधु रूपी गुरु से मिलाप

गुर साध दइआल ॥ दिनु रैणि नानकु नामु धिआए ॥ सूख सहज आनंद
हरि नाए ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुर की मूरति मन महि
धिआनु ॥ गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥
गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥ १ ॥ मत को भरमि भुलै संसारि ॥ गुर बिनु
कोइ न उतरसि पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूले कउ गुरि मारगि पाइआ ॥
अवर तिआगि हरि भगती लाइआ ॥ जनम मरन की त्रास मिटाई ॥ गुर पूरे
की बेअंत वडाई ॥ २ ॥ गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥ अंधकार महि
भइआ प्रगास ॥ जिनि कीआ सो गुर ते जानिआ ॥ गुर किरपा ते मुगध
मनु मानिआ ॥ ३ ॥ गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥ गुरु परमेसरु है भी होगु ॥
कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥ बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥
गोंड महला ५ ॥ गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥ गुरू बिना मै नाही होर ॥ गुर की
टेक रहहु दिनु राति ॥ जा की कोइ न मेटै दाति ॥ १ ॥ गुरु परमेसरु एको जाणु ॥
जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर चरणी जा का मनु लागै ॥ दूखु
दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ गुर की सेवा पाए मानु ॥ गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥ २ ॥
गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ गुर के सेवक की पूरन घाल ॥ गुर के सेवक
कउ दुखु न बिआपै ॥ गुर का सेवकु दह दिसि जापै ॥ ३ ॥ गुर की महिमा कथनु
न जाइ ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ गुर
चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ ६ ॥ ८ ॥ गोंड महला ५ ॥ गुरु मेरी पूजा गुरु
गोबिंदु ॥ गुरु मेरा पारब्रहमु गुरु भगवंतु ॥ गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ॥
सरब पूज चरन गुर सेउ ॥ १ ॥ गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ॥ अनदिनु
जपउ गुरू गुर नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ॥ गुरु
गोपालु पुरखु भगवानु ॥ गुर की सरणि रहउ कर जोरि ॥ गुरू बिना मै नाही
होरु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु तारे भव पारि ॥ गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥ अंधकार
महि गुर मंत्रु उजारा ॥ गुर कै संगि सगल निसतारा ॥ ३ ॥ गुरु पूरा पाईऐ
वडभागी ॥ गुर की सेवा दूखु न लागी ॥ गुर का सबदु न मेटै कोइ ॥ गुरु

होता है। नानक तो दिन रात उस प्रभु के नाम का सुमिरन करता है और उसे प्रभु नाम में ही स्वाभाविक सुख और आनन्द प्राप्त होता है।। ४ ।। ४ ।। ६ ।। गोंड महला ५ ।। प्रभु पर लगा हुआ मेरा ध्यान ही मेरे लिये गुरु की मूर्ति है और शब्द-गुरु को ही मैं मन में उसका दिया मन्त्र मानता हूँ। गुरु के चरणों को मैं सदैव हृदय में धारण करता हूँ और गुरु परब्रह्म को मैं सदैव नमस्कार करता हूँ।। १ ।। इस संसार में रहता हुआ कोई इस भ्रम में ना भूला रहे क्योंकि गुरु के बिना कोई भी पार नहीं उतर सकता।। १ ।। रहाउ ।। भूले हुए जीव को गुरु ने ही सही मार्ग पर डाला है और उससे सभी विषय विकारों को छुड़ा कर उसे भक्ति में लगाया है। जीने मरने का भय भी गुरु ने मिटाया है और उस पूर्ण गुरु की महिमा अनंत है।। २ ।। गुरु की कृपा से ही औंधा पड़ा हृदय रूपी कमल खिल उठता है और अंधकार में प्रकाश हो जाता है। जिस प्रभु ने हमें पैदा किया है उसके बारे में हम गुरु से ही जान पाते हैं और गुरु की कृपा से ही मूर्ख मन सन्तुष्ट होता है।। ३ ।। गुरु ही करता है और गुरु ही सब कुछ पाने के योग्य है; गुरु परमेश्वर ही वर्तमान में भी है और सदैव बना भी रहेगा। नानक कहता है कि प्रभु के बारे में बताने वाला गुरु ही है और गुरु के बिना हे भाई-मुक्ति नहीं प्राप्त की जा सकती।। ४ ।। ५ ।। ७ ।। गोंड महला ५ ।। हे मेरे मन, तू गुरु का ही जाप करता रह क्योंकि गुरु के बिना मेरा अन्य कोई आसरा नहीं। दिन रात गुरु के ही आसरे में बने रहो क्योंकि उसके दिये हुए को कोई नष्ट नहीं कर सकता।। १ ।। एक परमेश्वर को ही गुरु मानो क्योंकि उसे जो अच्छा लगता है वही स्वीकार होता है।। १ ।। रहाउ ।। गुरु के चरणों में जिसका मन लग जाता है उसका दुख, दर्द और भ्रम भाग खड़ा होता है। गुरु सेवा से ही व्यक्ति सम्मान प्राप्त करता हैं और मैं तो सदैव गुरु पर ही कुर्बान जाता रहता हूँ।। २ ।। गुरु का दर्शन देखकर आनन्दित हुआ जाता है और गुरु के सेवक की मेहनत भी सफल होती है। गुरु के सेवक को कोई दुख प्रभावित नही करता और गुरु के सेवक को दसों दिशाओं में जाना जाता है।। ३ ।। गुरु की महिमा का कथन नहीं किया जा सकता क्योंकि वह परब्रह्म गुरु सबमें समाया रहता है। नानक का कथन है कि जिसके पूर्ण भाग्य हैं उसका मन गुरु के चरणों में लगा रहता है।। ४ ।। ६ ।। ८ ।। गोंड महला ५ ।। मेरी पूजा भी गुरु ही है और मेरा गुरु परमात्मा है। परब्रह्म मेरा गुरु है और गुरु ही मेरा भगवान है। गुरु ही मेरा देवता और वह ऐसा अदृष्ट है कि उसका रहस्य नही जाना जा सकता। गुरु की सेवा ही मेरे सब प्रकार की पूजा है।। १ ।। गुरु के बिना मुझे कोई ठिकाना नहीं इसलिये मैं हर रोज गुरु (प्रभु) नाम का ही सुमिरन करता हूँ।।१।। रहाउ।। गुरु मेरा ज्ञान भी है और मेरे हृदय का ध्यान भी गुरु है। गोपाल, पुरुष, भगवान मेरा गुरु है। मैं हाथ जोड़कर गुरु की शरण में रहता हूँ क्योंकि गुरु के बिना मेरा अन्य कोई नहीं है।।२।। गुरु ही वह जहाज है जो संसार सागर से पार उतारता है। गुरु सेवा से ही यम से छुटकारा मिलता है और अंधकार में गुरु के उपदेश का ही प्रकाश बना रहता है। गुरु के साथ ही हम सब का पार उतारा होता है।।३।। बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु मिलता है और गुरु की सेवा करने से दुख नही लगता। शब्द-गुरु को कोई मिटा नहीं सकता।

नानकु नानकु हरि सोइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ९ ॥ गोंड महला ५ ॥ राम राम संगि करि बिउहार ॥ राम राम राम प्रान अधार ॥ राम राम राम कीरतनु गाइ ॥ रमत रामु सभ रहिओ समाइ ॥ १ ॥ संत जना मिलि बोलहु राम ॥ सभ ते निरमल पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम राम धनु संचि भंडार ॥ राम राम राम करि आहार ॥ राम राम वीसरि नही जाइ ॥ करि किरपा गुरि दीआ बताइ ॥ २ ॥ राम राम राम सदा सहाइ ॥ राम राम राम लिव लाइ ॥ राम राम जपि निरमल भए ॥ जनम जनम के किलबिख गए ॥ ३ ॥ रमत राम जनम मरणु निवारै ॥ उचरत राम भै पारि उतारै ॥ सभ ते ऊच राम परगास ॥ निसि बासुर जपि नानक दास ॥ ४ ॥ ८ ॥ १० ॥ गोंड महला ५ ॥ उन कउ खसमि कीनी ठाकहारे ॥ दास संग ते मारि बिदारे ॥ गोबिंद भगत का महलु न पाइआ ॥ राम जना मिलि मंगलु गाइआ ॥ १ ॥ सगल स्रिसटि के पंच सिकदार ॥ राम भगत के पानीहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगत पास ते लेते दानु ॥ गोबिंद भगत कउ करहि सलामु ॥ लूटि लेहि साकत पति खोवहि ॥ साध जना पग मलि मलि धोवहि ॥ २ ॥ पंच पूत जणे इक माइ ॥ उतभुज खेलु करि जगत विआइ ॥ तीनि गुणा कै संगि रचि रसे ॥ इन कउ छोडि ऊपरि जन बसे ॥ ३ ॥ करि किरपा जन लीए छडाइ ॥ जिस के से तिनि रखे हटाइ ॥ कहु नानक भगति प्रभ सारु ॥ बिनु भगती सभ होइ खुआरु ॥ ४ ॥ ९ ॥ ११ ॥ गोंड महला ५ ॥ कलि कलेस मिटे हरि नाइ ॥ दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ ॥ जपि जपि अंम्रित नामु अघाए ॥ संत प्रसादि सगल फल पाए ॥ १ ॥ राम जपत जन पारि परे ॥ जनम जनम के पाप हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन रिदै उरि धारे ॥ अगनि सागर ते उतरे पारे ॥ जनम मरण सभ मिटी उपाधि ॥ प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि ॥ २ ॥ थान थनंतरि एको सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ करि किरपा जा कउ मति देइ ॥ आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ ॥ ३ ॥ जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि ॥ ता कै हिरदै होइ प्रगासु ॥ भगति भाइ हरि कीरतनु करीऐ ॥ जपि पारब्रहमु नानक निसतरीऐ ॥ ४ ॥ १० ॥ १२ ॥

नानक ही गुरु है और नानक ही प्रभु है।। ४ ।। ७ ।। ९ ।। गोंड महला ५ ।। हे जीव, उस प्रभु के साथ ही अपना व्यवहार बना क्योंकि सबमें रमण करने वाला यह प्रभु ही प्राणों का आधार है। प्रभु की कीर्ति का ही गायन किया जाना चाहिए क्योंकि सबमें रमा हुआ राम सबमें समाया है।। १ ।। हे सन्तजनों, सभी मिलकर प्रभु-नाम का उच्चारण करो; यही सबसे निर्मल और कामनाएं पूरी करने वाला हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु रूपी धन के भण्डार को इकट्ठा करो और प्रभु नाम को ही अपना भोजन बनाओ। यह प्रभु-नाम हमें कभी ना भूले क्योंकि गुरु ने कृपा करके हमें इसे बताया है।। २ ।। वह प्रभु ही सदैव सहायता करने वाला है इसलिये हे जीव, तू प्रभु-नाम में ही अपनी लौ लगाए रख। प्रभु-नाम का सुमिरन करने से ही लोग पवित्र हुए हैं और जन्मों जन्मातरों के पाप नष्ट हुए हैं।। ३ ।। प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहने से जन्म-मरण दूर हो जाता है और प्रभु नाम का उच्चारण मात्र ही हमें भवसागर से पार उतार देता है। सबसे ऊँचा प्रभु का ही प्रकाश है इसलिये हे नानक, दास बनकर दिन रात उस प्रभु के नाम का सुमिरन करो।। ४ ।। ८ ।। १० ।। गोंड महला ५ ।। उन पाँचों विकारों को प्रभु ने रोक लिया और इस दास के साथ से उन्हें मारकर नष्ट कर दिया। वे विकार प्रभु के भक्तों के ठिकाने तक नहीं पहुँच पाते हैं। प्रभु के सेवक तो मिलकर आनन्द के गीत गाते रहते हैं।। १ ।। सारी सृष्टि को चलाए रखने वाले पाँच हाकिम हैं परन्तु यही पाँच (विकार) प्रभु के भक्तों के यहाँ पानी भरते हैं।। १ ।। रहाउ ।। ये सारे संसार से टैक्स वसूलते रहते हैं परन्तु प्रभु के भक्त को ये प्रणाम ही करते हैं। ये प्रभु से टूटे हुए शाक्त लोगों को लूटते रहते हैं और ऐसे लोग अपने सम्मान को गँवाते रहते हैं। यही विकार साधु पुरुषों के चरणों को मल-मल कर धोते हैं।। २ ।। माया नामक एक स्त्री ने इन पाँच (विकार) पुत्रों को जन्म दिया है। इन्होंने ही जीवन की उदभिज, अंडज आदि चार खानों की रचना कर संसार को पैदा किया है। सारी दुनिया इनके ही गुणों में लीन बनी हुई इनके रसों में खोई रहती हैं परन्तु प्रभु के सेवक इनको छोड़कर सबसे उपर बने रहते हैं।। ३ ।। प्रभु ने कृपा करके अपने सेवकों को इनसे छुड़वा लिया है और वास्तव में ये सेवक जिस प्रभु के थे उसी ने ही इनको दूर किया है। नानक का कथन है कि हे जीव, प्रभु-भक्ति को अपने मन में सम्भाल कर रखो। प्रभु-भक्ति के बिना सभी भटकते ही रहते हैं।। ४ ।। ६ ।। ११ ।। गोंड महला ५ ।। प्रभु के नाम के माध्यम से ही कलह-क्लेश गिरते हैं और ऐसा होने पर दुखों का नाश होता है तथा सुख हृदय में ठिकाना बना लेते हैं। सुमिरन करता हुआ व्यक्ति अमृत नाम को पीकर तृप्त हो जाता है और शान्त पुरुषों की कृपा से सभी फलों को प्राप्त कर लेता है।। १ ।। नाम का सुमिरन करते रहने से प्रभु के सेवक पार उतर जाते हैं और जन्मों-जन्मान्तरों के पाप दूर हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। जब गुरु के चरणों को हृदय में धारण किया जाता है तो जीव अग्नि-सागर रूपी इस संसार से पार उतर जाता है। जन्म-मरण के सभी रोग मिट जाते हैं और प्रभु के साथ स्वाभाविक रूप से ही समाधि लग जाती है।। २ ।। सभी स्थानों मे वह एक प्रभु ही बसा है और वही सभी के हृदय की बातों को जानने वाला है। अपनी कृपा करके वह जिसको बुद्धि प्रदान करता है वही व्यक्ति आठों प्रहर प्रभु का नाम याद करता रहता है।। ३ ।। जिसके हृदय में प्रभु स्वयं आकर बस जाता है उसका अन्तर्मन प्रकाशित हो उठता है। भक्ति भाव में स्थित होकर हमें उसका गुणानुवाद करना चाहिए और इस प्रकार हे नानक, उस परब्रह्म का सुमिरन करते हुए पार उतरा जाता है।। ४ ।। १० ।। १२ ।।

गोंड महला ५ ॥ गुर के चरन कमल नमसकारि ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते मारि ॥ होइ रहीऐ सगल की रीना ॥ घटि घटि रमईआ सभ महि चीना ॥ १ ॥ इन बिधि रम्हु गोपाल गुोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ जीअ प्रान को इहै सुआउ ॥ तजि अभिमानु जानु प्रभु संगि ॥ साध प्रसादि हरि सिउ मनु रंगि ॥ २ ॥ जिनि तूं कीआ तिस कउ जानु ॥ आगै दरगह पावै मानु ॥ मनु तनु निरमल होइ निहालु ॥ रसना नामु जपत गोपाल ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ साधू की मनु मंगै रवाला ॥ होहु दइआल देहु प्रभ दानु ॥ नानकु जपि जीवै प्रभ नामु ॥ ४ ॥ ११ ॥ १३ ॥ गोंड महला ५ ॥ धूप दीप सेवा गोपाल ॥ अनिक बार बंदन करतार ॥ प्रभ की सरणि गही सभ तिआगि ॥ गुर सुप्रसंन भए वड भागि ॥ १ ॥ आठ पहर गाईऐ गोबिंदु ॥ तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रमत भए आनंद ॥ पारब्रहम पूरन बखसंद ॥ करि किरपा जन सेवा लाए ॥ जनम मरण दुख मेटि मिलाए ॥ २ ॥ करम धरम इहु ततु गिआनु ॥ साधसंगि जपीऐ हरि नामु ॥ सागर तरि बोहिथ प्रभ चरण ॥ अंतरजामी प्रभ कारण करण ॥ ३ ॥ राखि लीए अपनी किरपा धारि ॥ पंच दूत भागे बिकराल ॥ जूऐ जनमु न कबहू हारि ॥ नानक का अंगु कीआ करतारि ॥ ४ ॥ १२ ॥ १४ ॥ गोंड महला ५ ॥ करि किरपा सुख अनद करेइ ॥ बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ प्रभ किरपाल दइआल गुोबिंद ॥ जीअ जंत सगले बखसिंद ॥ १ ॥ तेरी सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ पारब्रहम जपि सदा निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ घट घट अंतरि सरब समाही ॥ अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥ पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारै ॥ २ ॥ अउखध कोटि सिमरि गोबिंद ॥ तंतु मंतु भजीऐ भगवंत ॥ रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ मन बांछत पूरन फल पाए ॥ ३ ॥ करन कारन समरथ दइआर ॥ सरब निधान महा बीचार ॥ नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ सदा सदा एको हरि जापि ॥ ४ ॥ १३ ॥ १५ ॥ गोंड महला ५ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे

गोंड महला ५ ।। गुरु के चरण कमलों को नमस्कार करते हुए काम, क्रोध आदि को इस शरीर से मार भगाओ। सबकी चरण धूलि बनकर रहना चाहिए और प्रत्येक हृदय में उस प्रभु को ही जानना चाहिए।। १ ।। धरती के स्वामी उस प्रभु का इस प्रकार सुमिरन करना चाहिए कि तन, मन तथा धन उस प्रभु का ही हो जाए।। १ ।। रहाउ ।। आठों प्रहर प्रभु के गुण गाओं क्योंकि जीवन और प्राणों का वास्तविक प्रयोजन यही है। अपने अंहकार को त्यागते हुए प्रभु को हमेशा अपने साथ ही समझो और साधु पुरुषों की कृपा से अपने मन को प्रभु में रंग लो।। २ ।। हे जीव, जिसने तुझे बनाया है तू उसी को जान ले जिससे तू आगे उस प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त कर सके। अपनी जीभ से उस प्रभु के नाम का जाप करने से मन-तन निर्मल और आनन्दित बना रहता है।। ३ ।। हे मेरे दीनदयालु प्रभु, मुझ पर कृपा करो क्योंकि मेरा मन साधु पुरुषों की चरण धूलि का ही दान माँगता है। हे प्रभु, दया करो और मुझे यह दान प्रदान करो कि नानक प्रभु नाम का सुमिरन करता हुआ ही अध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहे।। ४ ।। ११ ।। १३ ।। गोंड महला ५ ।। हमारा धूप दीप आदि प्रभु की सेवा ही है और हम अनेकों बार उस कर्ता प्रभु की वन्दना करते हैं। मैंने सबको त्यागकर प्रभु की शरण को पकड़ लिया है और मेरे बड़े भाग्य हैं कि मेरा गुरु मुझसे भली-भाँति प्रसन्न हो गया है।। १ ।। आठों प्रहर उस प्रभु का गुणानुवाद किया जाना चाहिए क्योंकि यह तन और धन उस प्रभु का ही है और हमारे प्राण भी उस प्रभु के हैं।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के गुणों का सुमिरन करते हुए आनन्द बना रहता है क्योंकि वह परब्रह्म प्रभु ही पूर्ण रूप से कृपा करने वाला है। उसने कृपा करके अपने सेवकों को अपनी सेवा में लगा लिया है। उसी ने ही हमारे जन्म-मरण के दुखों को मिटाकर हमें अपने से मिला लिया है।। २ ।। धर्म, कर्म और तत्व ज्ञान यही है कि साधसंगत में बैठकर प्रभु नाम का सुमिरन किया जाए। संसार सागर को तैरने के लिये प्रभु के चरण जहाज़ हैं। वह प्रभु ही सबका कारण और सब कुछ करने कराने वाला है।। ३।। उस प्रभु ने अपनी कृपा करके हमें बचा लिया है और हमारे भयानक पाँचों विकार रूपी दूत भाग खड़े हुए हैं। हे जीव, अपने जीवन को इस संसार के जुए में कभी नहीं हारना चाहिए; नानक की तो उस कर्ता प्रभु ने सदैव सहायता की है।। ४ ।। १२ ।। १४ ।। गोंड महला ५ ।। प्रभु ने कृपा करके सुख और आनन्द का वातावरण बना दिया है और उस गुरुदेव प्रभु ने हम जैसे बच्चों की रक्षा कर ली है। प्रभु कृपालु, दयालु और धरती को आसरा देने वाला है; वही सभी जीव-जन्तुओं पर कृपा करने वाला है।। १ ।। हे दीनदयालु प्रभु, मैं तेरी शरण हूँ और परब्रह्म प्रभु का सुमिरन करता हुआ सदैव आनन्दित बना रहता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु ही दयालु है और दूसरा अन्य कोई नहीं है। वह सभी के घट-घट में समाया हुआ है। वही अपने सेवक का यह लोक और परलोक संवारता है। हे प्रभु, तुम्हारा तो स्वभाव ही पतितों को पवित्र बनाना है।। २ ।। प्रभु के सुमिरन को करोड़ों औषधियों के समान समझो और प्रभु का भजन ही सभी तन्त्र-मन्त्रों का सार है। प्रभु का सुमिरन करने से सभी रोग और शोक मिट जाते हैं तथा मनोवांछित सभी फल प्राप्त हो जाते हैं।। ३ ।। करने कराने वाला समर्थ वह दयालु प्रभु ही है। उसका ऊँचा चिन्तन हर तरह का खजाना है। हे नानक, हमें तो प्रभु ने स्वयं ही क्षमा दान दे दिया है और अब हम सदैव एक प्रभु का ही सुमिरन करते हैं।। ४ ।। १३ ।। १५ ।। गोंड महला ५ ।। हे मेरे मित्र, प्रभु-नाम का सुमिरन करो

मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारा चीत ॥ मन तन की सभ मिटै बलाइ ॥ दूखु अंधेरा सगला जाइ ॥ १ ॥ हरि गुण गावत तरीऐ संसारु ॥ वड भागी पाईऐ पुरखु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ तिस कउ पोहि न सकै जमकालु ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ गुरमुखि अपना खसमु पछाणु ॥ २ ॥ हरि गुण गावै संत प्रसादि ॥ काम क्रोध मिटहि उनमाद ॥ सदा हजूरि जाणु भगवंत ॥ पूरे गुर का पूरन मंत ॥ ३ ॥ हरि धनु खाटि कीए भंडार ॥ मिलि सतिगुर सभि काज सवार ॥ हरि के नाम रंग संगि जागा ॥ हरि चरणी नानक मनु लागा ॥ ४ ॥ १४ ॥ १६ ॥ गोंड महला ५ ॥ भव सागर बोहिथ हरि चरण ॥ सिमरत नामु नाही फिरि मरण ॥ हरि गुण रमत नाही जम पंथ ॥ महा बीचार पंच दूतह मंथ ॥ १ ॥ तउ सरणाई पूरन नाथ ॥ जंत अपने कउ दीजहि हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र बेद पुराण ॥ पारब्रहम का करहि वखिआण ॥ जोगी जती बैसनो रामदास ॥ मिति नाही ब्रहम अबिनास ॥ २ ॥ करण पलाह करहि सिव देव ॥ तिलु नही बूझहि अलख अभेव ॥ प्रेम भगति जिसु आपे देइ ॥ जग महि विरले केई केइ ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछहू नाहि ॥ सरब निधान तेरी द्रिसटी माहि ॥ नानकु दीनु जाचै तेरी सेव ॥ करि किरपा दीजै गुरदेव ॥ ४ ॥ १५ ॥ १७ ॥ गोंड महला ५ ॥ संत का लीआ धरति बिदारउ ॥ संत का निंदकु अकास ते टारउ ॥ संत कउ राखउ अपने जीअ नालि ॥ संत उधारउ ततखिण तालि ॥ १ ॥ सोई संतु जि भावै राम ॥ संत गोबिंद कै एकै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥ संत कै संगि बसै दिनु राति ॥ सासि सासि संतह प्रतिपालि ॥ संत का दोखी राज ते टालि ॥ २ ॥ संत की निंदा करहु न कोइ ॥ जो निंदै तिस का पतनु होइ ॥ जिस कउ राखै सिरजनहारु ॥ झख मारउ सगल संसारु ॥ ३ ॥ प्रभ अपने का भइआ बिसासु ॥ जीउ पिंडु सभु तिस की रासि ॥ नानक कउ उपजी परतीति ॥ मनमुख हार गुरमुख सद जीति ॥ ४ ॥ १६ ॥ १८ ॥ गोंड महला ५ ॥ नामु निरंजनु नीरि नराइण ॥ रसना सिमरत पाप बिलाइण

जिससे तुम्हारा चित्त निर्मल हो जाएगा। तुम्हारे मन और तन की सभी बाधाएँ मिट जाएंगी और दुखों का अंधेरा पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगा।। १ ।। प्रभु का गुण गाते हुए इस संसार को पार किया जाता है और बड़े भाग्य से ही उस अपरम्पर प्रभु को पाया जाता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का जो सेवक प्रभु की कीर्ति का गायन करता है उसे यमकाल छू भी नहीं सकता। उस व्यक्ति का ही संसार में आना स्वीकृत होता है जिसने गुरमुख बनकर अपने मालिक को पहचाना होता है।। २ ।। ऐसा व्यक्ति शान्त पुरूषों की कृपा से प्रभु के गुण गाता है और उसके काम, क्रोध तथा सभी प्रकार के उन्माद मिट जाते हैं। पूरे गुरु का यही पूर्ण उपदेश है कि उस प्रभु को सदैव अपने सामने और आस-पास ही जानना चाहिए।। ३ ।। प्रभु रूपी धन कमा कर भण्डार में इकट्ठा करो और सच्चे गुरु से मिलकर अपने सभी काम सँवार लो। जब मन प्रभु के नाम के रंग में रंगा जाता है तो हे नानक, यह मन प्रभु के चरणों में लग जाता है।। ४ ।। १४ ।। १६।। गोंड महला ५ ।। संसार सागर का जहाज़ प्रभु के चरण ही हैं और प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहने से फिर बार-बार मरना नहीं पड़ता। प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहने से यम के मार्ग पर नहीं जाना पड़ता क्योंकि प्रभु का महा विचार अथवा चिन्तन कामादि पाँचों शत्रुओं को मार देता है।। १ ।। हे पूर्ण और सबके नाथ प्रभु, हम तेरी शरण में पड़े हैं तुम अपने प्राणियों को हाथ देकर बचा लो।। १ ।। रहाउ।। स्मृतियां, शास्त्र, वेद और पुराण आदि सभी परब्रह्म प्रभु का बखान करते हैं। योगी, यति, वैष्णव और प्रभु के दास बने हुए वैरागी जन भी उस अविनाशी प्रभु की सीमा तथा अंत को नहीं जानते।। २ ।। शिव जैसे देवता भी करुणापूर्ण ढंग से उसे पुकारते रहते हैं परन्तु उस अदृष्ट और रहस्यातीत प्रभु का एक तिल मात्र भी नहीं जान पाते। प्रेम और भक्ति वह प्रभु जिसे स्वयं देता है ऐसे व्यक्ति इस संसार में अनेकों में से कोई बिरले ही हैं।। ३ ।। हे प्रभु, मैं गुण विहीन हूँ तथा मुझमें कोई गुण नहीं है। सभी प्रकार के खजाने केवल तेरी कृपादृष्टि में ही स्थित हैं। दीन नानक तो तेरी सेवा ही माँगता है और हे गुरुदेव, कृपा कर उसे प्रदान कर दो।।४ ॥१५ ॥१७ ॥गोंड महला ५ ।। सन्त पुरुष का तिरस्कृत तो धरती से दूर कर दिया जाना चाहिए। शान्त पुरुष का निन्दक आकाश से नीचे गिरा दिया जाना चाहिए। सन्त पुरुष तो मैं अपने हृदय के साथ बनाए रखता हूँ और सन्त पुरुष का शीघ्र ही उद्धार होता है।। १ ।। सन्त वही है जो प्रभु को अच्छा लगता है क्योंकि सन्त और प्रभु का काम एक जैसा ही होता है अर्थात दोनों के गुण एक जैसे ही होते हैं।। १ ।। रहाउ ।। शान्त पुरुष के सिर पर प्रभु का हाथ होता है और ऐसे सन्त के साथ वह प्रभु दिन रात बसता है। वह प्रत्येक श्वास के साथ सन्त पुरुषों का पालन पोषण करता रहता है और ऐसे शान्त पुरुषों का निन्दक राज पर बैठा हुआ भी नीचे आ गिरता है।। २ ।। शान्त पुरुषों की निंदा कोई मत करो क्योंकि जो इनकी निंदा करते है उनका पतन ही होता है। जिसे वह सृजनहार प्रभु स्वयं बचाता है बेशक सारा संसार झख मारता रहे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।। ३।। जब अपने प्रभु पर भरोसा आ जाता है; जब यह शरीर तथा प्राण उसी की रासपूंजी लगने लगते हैं तो हे नानक, मन में श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न हो जाता है। मनमुख व्यक्ति इस संसार में सदैव हारता है और गुरमुख सदैव जीतता ही रहता है।। ४ ।। १६ ।। १८ ।। गोंड महला ५ ।।प्रभु का पवित्र नाम प्रभु रूपी जल के समान है जिसका अपनी जीभ से सुमिरन करने से पाप धुल जाते हैं

॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण सभ माहि निवास ॥ नाराइण घटि घटि परगास ॥ नाराइण कहते नरकि न जाहि ॥ नाराइण सेवि सगल फल पाहि ॥ १ ॥ नाराइण मन माहि अधार ॥ नाराइण बोहिथ संसार ॥ नाराइण कहत जमु भागि पलाइण ॥ नाराइण दंत भाने डाइण ॥ २ ॥ नाराइण सद सद बखसिंद ॥ नाराइण कीने सूख अनंद ॥ नाराइण प्रगट कीनो परताप ॥ नाराइण संत को माई बाप ॥ ३ ॥ नाराइण साधसंगि नराइण ॥ बारं बार नराइण गाइण ॥ बसतु अगोचर गुर मिलि लही ॥ नाराइण ओट नानक दास गही ॥ ४ ॥ १७ ॥ १९ ॥ गोंड महला ५ ॥ जा कउ राखै राखणहारु ॥ तिस का अंगु करे निरंकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात गरभ महि अगनि न जोहै ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ साधसंगि जपै निरंकारु ॥ निंदक कै मुहि लागै छारु ॥ १ ॥ राम कवचु दास का संनाहु ॥ दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ जो जो गरबु करे सो जाइ ॥ गरीब दास की प्रभु सरणाइ ॥ २ ॥ जो जो सरणि पइआ हरि राइ ॥ सो दासु रखिआ अपणै कंठि लाइ ॥ जे को बहुतु करे अहंकारु ॥ ओहु खिन महि रुलता खाकू नालि ॥ ३ ॥ है भी साचा होवणहारु ॥ सदा सदा जाईं बलिहार ॥ अपणे दास रखे किरपा धारि ॥ नानक के प्रभ प्राण अधार ॥ ४ ॥ १८ ॥ २० ॥ गोंड महला ५ ॥ अचरज कथा महा अनूप ॥ प्रातमा पारब्रहम का रूपु ॥ रहाउ ॥ ना इहु बूढा ना इहु बाला ॥ ना इसु दूखु नही जम जाला ॥ ना इहु बिनसै ना इहु जाइ ॥ आदि जुगादी रहिआ समाइ ॥ १ ॥ ना इसु उसनु नही इसु सीतु ॥ ना इसु दुसमनु ना इसु मीतु ॥ ना इसु हरखु नही इसु सोगु ॥ सभु किछु इस का इहु करनै जोगु ॥ २ ॥ ना इसु बापु नही इसु माइआ ॥ इहु अपरंपरु होता आइआ ॥ पाप पुंन का इसु लेपु न लागै ॥ घट घट अंतरि सद ही जागै ॥ ३ ॥ तीनि गुणा इक सकति उपाइआ ॥ महा माइआ ता की है छाइआ ॥ अछल अछेद अभेद दइआल ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ ता की गति मिति कछू न पाइ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ २१ ॥

।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का निवास सबमें है और प्रभु ही घट-घट में प्रकाश करता है। प्रभु का नाम लेने वाले नरक में नहीं जाते और प्रभु का सुमिरन करते हुए वे सभी फल प्राप्त कर लेते हैं।। १ ।। जीव को प्रभु का नाम ही उसके मन में आसरा है और प्रभु ही इस संसार सागर से पार ले जाने वाला जहाज है। प्रभु का नाम लेते ही यम दौड़ते हुए भाग जाते हैं और प्रभु ही माया रूपी डायन के दाँत तोड़ने वाला है।। २ ।। प्रभु ही सदैव क्षमा करने वाला है और प्रभु ने ही सभी सुख और आनन्द प्रदान किए हैं। प्रभु ने ही सब ओर अपना तेज-प्रताप प्रकट किया हुआ है और प्रभु ही शान्त पुरुषों का माई बाप है।। ३ ।। साधसंगति में सदैव नारायण-नारायण होता रहता है और बार बार उस प्रभु का ही गुणानुवाद होता है। गुरु से मिलकर हमने यह प्रभु रूपी अगोचर पदार्थ प्राप्त कर लिया है और दास नानक ने उस प्रभु के आसरे को ही थाम लिया है।। ४ ।। १७ ।। १६ ।। गोंड महला ५ ।। जिसको वह बचाने वाला प्रभु स्वयं बचाता है वह निराकार प्रभु ही उसी की सहायता करता है।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे व्यक्ति को माँ के गर्भ की अग्नि भी दुख नहीं देती और काम, क्रोध, लोभ, मोह उसे छू नहीं पाता। साधसंगति में वह निराकार प्रभु का सुमिरन करता है तथा ऐसे व्यक्ति के निन्दक के मुँह पर राख ही पड़ती है।। १ ।। प्रभु नाम का कवच प्रभु सेवक का लोहे का वस्त्र है जो उसकी रक्षा करता है। पाँचों दुष्ट दूत ऐसे व्यक्ति पर कोई असर नहीं डालते। जो भी अभिमान करता है उसे यहाँ से जाना ही होता है और विनम्र प्रभु के दास का शरण स्थल तो प्रभु ही है।। २ ।। जो उस प्रभु रूपी राजा की शरण में आ गया है उस दास को प्रभु ने गले लगाकर उसे बचा लिया है। यदि कोई बहुत अहंकार करता है तो वह क्षण भर में मिट्टी में मिल जाता है।। ३ ।। वह सत्य प्रभु ही वर्तमान में है और भविष्य में भी बना रहने वाला वही है। मैं सदैव उस पर बलिहारी जाता हूँ। उसने कृपा धारण करके अपने दासों को बचाए रखा है और प्रभु ही नानक के प्राणों का आधार है।। ४ ।। १८ ।। २० ।। गोंड महला ५ ।। यह बड़ी ही अनुपम और आश्चर्यपूर्ण बात है कि यह जीवात्मा उस परब्रह्म का ही रूप है।। रहाउ ।। ना यह बूढ़ी होती है ना जवान, ना इसे दुख होता है और ना ही यम का जाल इसके चारों ओर होता है। यह ना तो विनष्ट होती है और ना ही कहीं जाती है। यह आदि-युगादि अर्थात सदा से ही अपने आप में ही स्थित बनी रहती है।। १ ।। इसे ना तो गर्मी लगती है ना ठंड लगती है; ना इसका कोई शत्रु है और ना इसका मित्र है। इसको ना तो कोई हर्ष होता है और ना ही कोई शोक होता है। सारे संसार का सब कुछ इसी का है और यही सब कुछ करने के योग्य है।। २ ।। इसका ना तो कोई बाप है और ना कोई माँ है। यह शारीरिक सीमाओं से परे अपरम्पर है और यह सदैव इसी प्रकार बनी रहती है। इसे पाप पुण्य का भी लेप नहीं लगता और प्रत्येक घट में यह सदैव ही जागृत बनी रहती है।। ३ ।। त्रिगुणात्मक माया को इसी ने अविद्या के कारण पैदा किया है और अज्ञान के कारण महामाया (सांसारिक प्रपंच) इसी का ही बिम्ब है। यह अछल अविनाशी रहस्यों से परे और दयालु है। यह दीनदयालु और सदैव कृपालु बनी रहती है। इसकी अवस्था और सीमा के बारे में कुछ भी नहीं जाना जा सकता और नानक तो सदैव उस पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। १९ ।। २१ ।।

गोंड महला ५ ॥ संतन के बलिहारै जाउ ॥ संतन कै संगि राम गुन गाउ ॥ संत प्रसादि किलविख सभि गए ॥ संत सरणि वडभागी पए ॥ १ ॥ रामु जपत कछु बिघनु न विआपै ॥ गुर प्रसादि अपुना प्रभु जापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहमु जब होइ दइआल ॥ साधू जन की करै रवाल ॥ कामु क्रोधु इसु तन ते जाइ ॥ राम रतनु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ सफलु जनमु तां का परवाणु ॥ पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ भाइ भगति प्रभ कीरतनि लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ ३ ॥ चरन कमल जन का आधारु ॥ गुण गोविंद रउं सचु वापारु ॥ दास जना की मनसा पूरि ॥ नानक सुखु पावै जन धूरि ॥ ४ ॥ २० ॥ २२ ॥ ६ ॥ २८ ॥

रागु गोंड असटपदीआ महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

करि नमसकार पूरे गुरदेव ॥ सफल मूरति सफल जा की सेव ॥ अंतरजामी पुरखु बिधाता ॥ आठ पहर नाम रंगि राता ॥ १ ॥ गुरु गोबिंद गुरू गोपाल ॥ अपने दास कउ राखनहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पातिसाह साह उमराउ पतीआए ॥ दुसट अहंकारी मारि पचाए ॥ निंदक कै मुखि कीनो रोगु ॥ जै जै कारु करै सभु लोगु ॥ २ ॥ संतन कै मनि महा अनंदु ॥ संत जपहि गुरदेउ भगवंतु ॥ संगति के मुख ऊजल भए ॥ सगल थान निंदक के गए ॥ ३ ॥ सासि सासि जनु सदा सलाहे ॥ पारब्रहम गुर बेपरवाहे ॥ सगल भै मिटे जा की सरनि ॥ निंदक मारि पाए सभि धरनि ॥ ४ ॥ जन की निंदा करै न कोइ ॥ जो करै सो दुखीआ होइ ॥ आठ पहर जनु एकु धिआए ॥ जमूआ ता कै निकटि न जाए ॥ ५ ॥ जन निरवैर निंदक अहंकारी ॥ जन भल मानहि निंदक वेकारी ॥ गुर कै सिखि सतिगुरू धिआइआ ॥ जन उबरे निंदक नरकि पाइआ ॥ ६ ॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ सति बचन वरतहि हरि दुआरे ॥ जैसा करे सु तैसा पाए ॥ अभिमानी की जड़ सरपर जाए ॥ ७ ॥ नीधरिआ सतिगुर धर तेरी ॥ करि किरपा राखहु जन केरी ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जा कै सिमरनि पैज सवारी ॥ ८ ॥ १ ॥ २९ ॥

गोंड महला ५ ।। शान्त पुरुषों पर मैं बलिहारी जाता हूँ और शान्त पुरुषों के साथ ही प्रभु के गुणों का गायन करता हूँ। सन्त जनों की कृपा से मेरे सभी पाप नष्ट हो गए हैं; कोई बड़ा भाग्यशाली ही सन्तों की शरण में आता है।। १ ।। प्रभु नाम का सुमिरन करने से कोई भी रुकावट सामने नहीं आती और प्रभु की कृपा से प्रभु अपना ही लगने लगता है।।। १ ।। रहाउ ।। जब परब्रह्म प्रभु दयालु हो जाता है तो वह जीव को साधुजनों की चरण धूलि बना देता है। उसके शरीर से काम, क्रोध तो चले जाते हैं और उसके मन में प्रभु-नाम रूपी रत्न का निवास हो जाता है।। २ ।। जो परब्रह्म प्रभु को अपने पास ही जानता है उसका जीवन सफल और स्वीकृत हो जाता है। प्रेम पूर्ण भक्ति के माध्यम से वह प्रभु की कीर्ति के गायन में लीन हो जाता है और जन्मों-जन्मों से अज्ञान में घिर कर सोया हुआ वह जीव जग जाता है।। ३ ।। प्रभु के चरण कमल ही प्रभु के सेवक का आसरा हैं। प्रभु के गुणों को ही मैं याद करता हूँ और वास्तव में यही सच्चा कार्य व्यापार है। हे प्रभु, अपने सेवकों की (चरण धूलि बनने की) मनोकामना को पूरा करो और नानक तो चरण धूलि बनकर ही सुख प्राप्त करता है।। ४ ।। २० ।। २२ ।। ६ ।। २८ ।।

रागु गोंड अष्टपदियाँ महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उस पूर्ण गुरु को प्रणाम करो जिसका दर्शन फलदायक है और जिसकी सेवा करने से ही फल प्राप्त होता है। वह गुरु ही अन्तर्यामी और विधाता पुरुष है जो आठों प्रहर प्रभु नाम के रंग में रंगा रहता है।। १ ।। गोबिन्द, गोपाल प्रभु ही गुरु है जो अपने दास की रक्षा करता है।। १ ।। रहाउ ।। उसी ने ही सम्राटों, राजाओं और बड़े-बड़े साहूकारों को सन्तुष्ट किया है तथा अहंकारी दुष्टों को मारकर नष्ट कर दिया है। निन्दकों के मुख को तो उसने रोगी बना दिया है अर्थात वे उसका कुछ नहीं कर सकते और सभी लोग उसकी जय-जयकार करते हैं।। २ ।। सन्तों के मन में महा आनन्द बना रहता है क्योंकि वे प्रभु-गुरुदेव का जाप करते रहते हैं। संगति में बैठे हुए सभी जीवों के मुख उज्जवल हो जाते हैं और निन्दक के सभी सम्मान उससे छिन जाते हैं ।। ३ ।। उसके सेवक प्रत्येक श्वास के साथ उसका स्तुतिगान करते हैं और परब्रह्म गुरु सदैव चिन्तामुक्त और बेपरवाह बना रहता है। उसी की शरण में सभी भय मिट जाते हैं और निन्दकों को मारकर वही धरती पर लिटा देता है।। ४ ।। उसके सेवक की कोई भी निन्दा ना करे क्योंकि जो निन्दा करता है वह दुखी ही होता है। प्रभु का सेवक तो आठों प्रहर केवल एक प्रभु की ही आराधना करता है और इसीलिये यम उसके पास भी नहीं आता।। ५ ।। उसका सेवक शत्रु भाव से रहित होता है और निन्दक सदैव अहंकारी बना रहता है। प्रभु के सेवक तो सबका भला माँगते रहते हैं परन्तु निंदक व्यक्ति विकारों में उलझा हुआ सबके लिये बुरा ही सोचता रहता है। गुरु के सिक्ख ने तो उस सच्चे गुरु का ही सुमिरन किया है और इसी से उसके सेवक पार उतर गए है और निन्दक को नरक में जाना पड़ा है।। ६ ।। हे सज्जन प्यारे मित्र, इस बात को ध्यान से सुन लो कि सच्चे वचन ही प्रभु के द्वार पर ठीक उतरते हैं। जो जैसा करता है वह वैसा ही फल प्राप्त करता है; अभिमानी, व्यक्ति की निश्चित रूप से जड़ ही कट जाती है।। ७ ।। हे सच्चे गुरु, हम निराश्रितों को तो केवल तेरा ही आसरा है। कृपा करो, और सेवक की लाज बचा लो। नानक का कथन है कि मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसके सुमिरन से मेरा सम्मान बच गया है।। ८ ।। १ ।। २६ ।।

रागु गोंड बाणी भगता की ॥ कबीर जी घरु १ ੧ਓੰ सतिगुर प्रसादि ॥

संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥ मिलै असंतु मसटि करि रहीऐ ॥ १ ॥ बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥ जैसे राम नाम रवि रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ बोले उपकारी ॥ मूरख सिउ बोले झख मारी ॥ २ ॥ बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥ बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥ भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड ॥ नरू मरै नरु कामि न आवै ॥ पसू मरै दस काज सवारै ॥ १ ॥ अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ मै किआ जानउ बाबा रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केस जले जैसे घास का पूला ॥ २ ॥ कहु कबीर तब ही नरु जागै ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै ॥ ३ ॥ २ ॥ गोंड ॥ आकासि गगनु पातालि गगनु है चहु दिसि गगनु रहाइले ॥ आनद मूलु सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाइले ॥ १ ॥ मोहि बैरागु भइओ ॥ इहु जीउ आइ कहा गइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीन्ही ततु कहा ते कीनु रे ॥ करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे ॥ २ ॥ हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे ॥ कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे ॥ ३ ॥ ३ ॥

रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २ ੧ਓੰ सतिगुर प्रसादि ॥

भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥ हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥ हसति भागि कै चीसा मारै ॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥ १ ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ काजी बकिबो हसती तोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे महावत तुझु डारउ काटि ॥ इसहि तुरावहु घालहु साटि ॥ हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ वा कै रिदै बसै भगवानु ॥ २ ॥ किआ अपराधु संत है कीन्हा ॥ बांधि पोट कुंचर कउ दीन्हा ॥ कुंचरु पोट लै लै नमसकारै ॥ बूझी नही काजी अंधिआरै ॥ ३ ॥ तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥

राग गोंड वाणी भक्तों की।। कबीर जी घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जब कोई शान्त पुरुष मिले तो उसे अवश्य कुछ पूछना और सुनना चाहिए परन्तु यदि कोई दुर्जन व्यक्ति मिल जाए तो चुप्पी साध लेनी चाहिए।। १ ।। हे बाबा, कौन से बोल बोले जाने चाहिए ; हमें ऐसे ही बोल बोलने चाहिए जिनसे हम प्रभु नाम से ही जुड़े रह सकें।। १ ।। रहाउ ।। सन्त पुरुषों के साथ बोलने से भला ही होता है परन्तु मूर्ख के साथ बातें करना झख मारने के समान ही होता है।। २ ।। बहुत अधिक बोलने से भी विकार बढ़ते हैं परन्तु बिना बोले भी चिन्तन मनन कैसे हो सकता है।। ३ ।। कबीर का कथन है कि खाली घड़े में से ज्यादा आवाज सुनाई देती है परन्तु जो भरा होता है वह कभी भी हिलता डुलता नहीं अर्थात इधर-उधर भटकता नहीं।। ४ ।। १ ।। गोंड ।। व्यक्ति मर जाता है तो मरने के बाद किसी काम नहीं आता परन्तु पशु मरने के बाद भी अनेक प्रकार के काम संवारता है।। १।। मेरे अपने कर्मो की गति अर्थात मेरा क्या हाल होगा, हे बाबा, मैं नहीं जानता और बिल्कुल ही नहीं जानता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। हड्डियां तो ऐसे जलेंगी जैसे लकड़ी का गट्ठर हो और केश ऐसे जलते हैं जैसे घास का गट्ठर हो।। २ ।। कबीर कहता है कि व्यक्ति तब ही जागता है जब यम का डंडा उसके मुँह पर आ लगता है।। ३ ।। २ ।। गोंड ।। सिर पर भी आकाश है पाताल की ओर भी आकाश है और चारों दिशाओं में ही चेतन सत्ता के रूप में व्याप्त वह प्रभु रूपी आकाश है। वह सदैव बना रहने वाला पुरुषोत्तम प्रभु ही आनन्द का मूल है जो सदैव उसी प्रकार बना रहता है जैसे इस शरीर के विनष्ट होने पर भी आकाश विनष्ट नहीं होता।। १ ।। मैं इस बात से बहुत चिंतित और वैराग्यवान हो गया हूँ कि यह जीव आकर फिर कहाँ चला जाता है।। १ ।। रहाउ ।। पाँच तत्वों ने मिलकर इस शरीर को बना दिया परन्तु इन तत्वों को कहाँ से बनाया गया है। तुम जीव को कर्मो में बंधा हुआ बताते हो परन्तु जीव को यह कर्म किसने दिए।। २ ।। वास्तव में ही यह शरीर है और शरीर में ही वह प्रभु है तथा सबके अन्दर सदैव वही बना रहने वाला है। कबीर कहता है कि मैं राम नाम तो कभी नहीं छोड़ूंगा और जो सहज रूप से उसी के हुकुम के अन्तर्गत हो रहा है वही ठीक है अर्थात यह सारा खेल उसी का है और उसकी रजा में बने रहना ही अच्छा है।। ३ ।। ३ ।।

राग गोंड वाणी कबीर जी की घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरी भुजाओं को बाँधकर मुझे धरती पर डाल दिया गया और हाथी को क्रोधित करने के लिये उसके सिर पर अंकुश मारा गया (ताकि वह मुझे कुचल दे)। परन्तु हाथी इधर-उधर भागता हुआ चिंघाड़ कर यह कहता है कि इस मूर्ति (कबीर) पर मैं बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। हे मेरे मालिक, मुझे तो तुम्हारे ही बल का आसरा है। काज़ी महावत को कहता है कि तू हाथी को आगे बढ़ा।। १ ।। रहाउ ।। हे महावत, मैं तुझे काट डालूंगा नहीं तो हाथी पर चोटें करते हुए इसे आगे चलाओ। वह हाथी को आगे नहीं चलाता और प्रभु का ध्यान करता है क्योंकि उसके हृदय में प्रभु का निवास हो गया है।। २ ।। इस संत ने क्या अपराध किया है जिससे इसे गठरी की तरह बाँधकर हाथी के आगे डाल दिया गया। हाथी उस गठरी को लेकर प्रणाम किए चला जा रहा है परन्तु उस अन्धे काज़ी ने इस बात को भी नहीं समझा।। ३ ।। तीन बार इस प्रकार प्रयत्न किया गया

मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ चउथे पद महि जन की जिंदु ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ गोंड ॥ ना इहु मानसु ना इहु देउ ॥ ना इहु जती कहावै सेउ ॥ ना इहु जोगी ना अवधूता ॥ ना इसु माइ न काहू पूता ॥ १ ॥ इआ मंदर महि कौन बसाई ॥ ता का अंतु न कोऊ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना इहु गिरही ना ओदासी ॥ ना इहु राज न भीख मंगासी ॥ ना इसु पिंडु न रकतू राती ॥ ना इहु ब्रहमनु ना इहु खाती ॥ २ ॥ ना इहु तपा कहावै सेखु ॥ ना इहु जीवै न मरता देखु ॥ इसु मरते कउ जे कोऊ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि मै डगरो पाइआ ॥ जीवन मरनु दोऊ मिटवाइआ ॥ कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ जस कागद पर मिटै न मंसु ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ गोंड ॥ तूटे तागे निखुटी पानि ॥ दुआर ऊपरि झिलकावहि कान ॥ कूच बिचारे फूए फाल ॥ इआ मुंडीआ सिरि चढिबो काल ॥ १ ॥ इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई ॥ आवत जात नाक सर होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुरी नारि की छोडी बाता ॥ राम राम वा का मनु राता ॥ लरिकी लरिकन खैबो नाहि ॥ मुंडीआ अनदिनु धापे जाहि ॥ २ ॥ इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ॥ हम कउ साथरु उन कउ खाट ॥ मूड पलोसि कमर बधि पोथी ॥ हम कउ चाबनु उन कउ रोटी ॥ ३ ॥ मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ॥ ए मुंडीआ बूडत की टेक ॥ सुनि अंधली लोई बेपीरि ॥ इन्ह मुंडीअन भजि सरनि कबीर ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ गोंड ॥ खसमु मरै तउ नारि न रोवै ॥ उसु रखवारा अउरो होवै ॥ रखवारे का होइ बिनास ॥ आगै नरकु ईहा भोग बिलास ॥ १ ॥ एक सुहागनि जगत पिआरी ॥ सगले जीअ जंत की नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागनि गलि सोहै हारु ॥ संत कउ बिखु बिगसै संसारु ॥ करि सीगारु बहै पखिआरी ॥ संत की ठिठकी फिरै बिचारी ॥ २ ॥ संत भागि ओह पाछै परै ॥ गुर परसादी मारहु डरै ॥ साकत की ओह पिंड पराइणि ॥ हम कउ द्रिसटि परै त्रखि डाइणि ॥ ३ ॥ हम तिस का बहु जानिआ भेउ ॥ जब हूए क्रिपाल मिले गुरदेउ ॥ कहु कबीर अब बाहरि परी ॥ संसारै कै अंचलि लरी ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥

परन्तु उस कठोर मन वाले काज़ी का हृदय अभी भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। कबीर कहता है कि हमारा केवल प्रभु है और इस सेवक के प्राण तो चौथे पद अर्थात प्रभु में टिके हुए हैं ।। ४ ।। १ ।। ४ ।। गोंड ।। यह ना तो मानव है ना देवता है; ना यह यति है और ना ही यह शैव अर्थात शिव का उपासक है; ना यह योगी है और ना ही त्यागी अवधूत है, ना इसकी कोई माँ है ना यह किसी का पुत्र है।। १ ।। इस शरीर रूपी मंदिर में फिर वह कौन बसता है जिसका रहस्य कोई भी नहीं जान पाया।। १ ।। रहाउ ।। ना यह गृहस्थी है ना उदासी है, ना यह राजा है ना भीख माँगने वाला है, ना इसका शरीर है ना इसमें रक्त है, ना यह ब्राह्मण है और ना ही यह बढ़ई है।। २ ।। ना इसे तपस्वी कहा जाता है और ना यह शेख कहलाता है, ना यह जीवित बना रहता है ना इसे मरते देखा जा सकता है। इसे मरता समझकर जो कोई भी रोता है वह रोते हुए केवल अपनी इज्जत ही गँवाता है।। ३ ।। गुरु की कृपा से मैंने वास्तविक जीवन मार्ग पा लिया है और जीवन-मरण दोनों को ही समाप्त करवा लिया है। जिस प्रकार कागज पर स्याही मिटती नहीं उसी प्रकार यह जीवात्मा भी प्रभु का अंश होने के कारण कभी समाप्त वही होती; चिरन्तन बनी रहती है।। ४ ।। २ ।। ५ ।। गोंड ।। इसका धागा टूट गया है और कपड़े पर लगा इसका मावा क्षीण हो गया है। इसके दरवाजे पर पड़े हुए ताना-बाना बनाने वाला सरकंडा चमक रहा है। इसकी कूची भी बिखरी पड़ी है इसलिये अब ऐसा लगता है कि इस लड़के (कबीर) के सिर पर काल सवार हो गया है अर्थात उत्तेजना में यह पागल हो गया है ।। १ ।। इस लड़के (कबीर) ने सारा धन गँवा दिया है और साधुओं की आवाजाही ने नाक में दम कर दिया।। १ ।। रहाउ ।। यह कपड़ा लपेटने वाली नल्कियों आदि को छोड़ बैठा है और इसका मन राम नाम में ही लगा हुआ है। इसके लड़के-लड़कियों को तो खाने के लिये कुछ भी नहीं है परन्तु ये मुंडिया साधु प्रत्येक दिन यहाँ से पेट भर कर निकलते हैं।। २ ।। एक दो साधु तो घर पर बैठे होते हैं और एक दो पहुँचने के लिये रास्ते में होते हैं। हम लोगों को सोने के लिये धरती पर ही सोना पड़ता है परन्तु उनको खाट दी जाती है। वे सिर पर हाथ फेरते हैं और उनकी कमर में पोथियाँ भी बँधी होती हैं। हमें तो चना चबेना ही मिलता है परन्तु उनको रोटियाँ मिलती है।। ३ ।। ये सभी साधु-साधु तो एक हो गए हैं और ये साधु ही डूबते हुओं का आसरा है। हे अज्ञानी और अन्धी बनी हुई गुरु विहीन लोई, तू मेरी बात सुन और भाग कर इन साधुओं की शरण में आ जा क्योंकि इसी में ही हमारा बचाव है।। ४ ।। ३ ।। ६ ।। गोंड।। जब व्यक्ति रूपी खसम मर जाता है तो माया रूपी स्त्री नहीं रोती क्योंकि उसका रखवाला कोई और हो जाता है अर्थात वह किसी और की बन जाती है। इस संसार में जब उस सबके रखवाले को मन से नष्ट कर दिया जाता है तो यहाँ बेशक भोग विलास मिल जाए परन्तु आगे नरक ही मिलता है।। १ ।। यह माया रूपी सुहागिन सारे संसार की प्यारी है और यह सभी जीव जन्तुओं की स्त्री बनी रहती है।। १ ।। रहाउ ।। यह सुहागिन आम व्यक्तियों के गले में हार की तरह पड़ी रहती हैं परन्तु सन्त पुरुषों के लिये यह विष के समान होती है; हालांकि संसार इसे पाकर खिल उठता है। यह वेश्या शृंगार करके बैठी रहती है परन्तु सन्तों द्वारा धिक्कारी जाने के कारण इधर-उधर भटकती रहती है।। २ ।। वह भागकर सन्त पुरुषों के पीछे पड़ी रहती है परन्तु सन्त जनों पर गुरु की कृपा है इसलिये वह मार से डरती है। माया के पीछे दौड़ने वालों के लिये तो उनके शरीर का आसरा है परन्तु हमें तो वह खून की प्यासी डायन दिखाई देती है।। ३ ।। जब कृपालु होकर हमें गुरुदेव मिल गये तब हमने इसके रहस्य को समझ लिया। कबीर कहता है कि अब तो यह हमसे दूर पड़ी है और संसार के आंचल के साथ लगी है ।। ४ ।। ४ ।। ७ ।।

गोंड ॥ ग्रिहि सोभा जा कै रे नाहि ॥ आवत पहीआ खूधे जाहि ॥ वा कै अंतरि नही संतोखु ॥ बिनु सोहागनि लागै दोखु ॥ १ ॥ धनु सोहागनि महा पवीत ॥ तपे तपीसर डोलै चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागनि किरपन की पूती ॥ सेवक तजि जगत सिउ सूती ॥ साधू कै ठाढी दरबारि ॥ सरनि तेरी मोकउ निसतारि ॥ २ ॥ सोहागनि है अति सुंदरी ॥ पग नेवर छनक छनहरी ॥ जउ लगु प्रान तऊ लगु संगे ॥ नाहि त चली बेगि उठि नंगे ॥ ३ ॥ सोहागनि भवन त्रै लीआ ॥ दस अठ पुराण तीरथ रस कीआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसर बेधे ॥ बडे भूपति राजे है छेधे ॥ ४ ॥ सोहागनि उरवारि न पारि ॥ पांच नारद कै संगि बिधवारि ॥ पांच नारद के मिटवे फूटे ॥ कहु कबीर गुर किरपा छूटे ॥ ५ ॥ ५ ॥ ८ ॥ गोंड ॥ जैसे मंदर महि बलहर ना ठाहरै ॥ नाम बिना कैसे पारि उतरै ॥ कुंभ बिना जलु ना टीकावै ॥ साधू बिनु ऐसे अबगतु जावै ॥ १ ॥ जारउ तिसै जु रामु न चेतै ॥ तन मन रमत रहै महि खेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे हलहर बिना जिमी नही बोईऐ ॥ सूत बिना कैसे मणी परोईऐ ॥ घुंडी बिनु किआ गंठि चड़्हाईऐ ॥ साधू बिनु तैसे अबगतु जाईऐ ॥ २ ॥ जैसे मात पिता बिनु बालु न होई ॥ बिंब बिना कैसे कपरे धोई ॥ घोर बिना कैसे असवार ॥ साधू बिनु नाही दरवार ॥ ३ ॥ जैसे बाजे बिनु नही लीजै फेरी ॥ खसमि दुहागनि तजि अउहेरी ॥ कहै कबीरु एकै करि करना ॥ गुरमुखि होइ बहुरि नही मरना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ९ ॥ गोंड ॥ कूटनु सोइ जु मन कउ कूटै ॥ मन कूटै तउ जम ते छूटै ॥ कुटि कुटि मनु कसवटी लावै ॥ सो कूटनु मुकति बहु पावै ॥ १ ॥ कूटनु किसै कहहु संसार ॥ सगल बोलन के माहि बीचार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाचनु सोइ जु मन सिउ नाचै ॥ झूठि न पतीऐ परचै साचै ॥ इसु मन आगे पूरै ताल ॥ इसु नाचन के मन रखवाल ॥ २ ॥ बजारी सो जु बजारहि सोधै ॥ पांच पलीतह कउ परबोधै ॥ नउ नाइक की भगति पछानै ॥ सो बाजारी हम गुर माने ॥ ३ ॥ तसकरु सोइ जि ताति न करै ॥ इंद्री कै जतनि नामु उचरै ॥ कहु कबीर हम ऐसे लखन ॥ धंनु गुरदेव अति

गोंड ।। हे भाई, जिस व्यक्ति के घर में घर की शोभा धन-दौलत नहीं है उस घर में आए हुए अतिथि और राहगीर भूखे ही चले जाते हैं। उस घर के मालिक के हृदय में भी सन्तुष्टि नहीं आती इसलिये बिना इस माया के गृहस्थी पर भी दोष आता है।। १ ।। सदा किसी ना किसी मालिक के साथ रहने वाली धन्य है और महा पवित्र है क्योंकि इससे विहीन होकर बड़े-बड़े तपस्वियों के मन भी डोल जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। परन्तु यह माया कन्जूंस व्यक्ति की पुत्री बनकर रहती है। प्रभु के सेवकों को छोड़कर इसने अन्य सभी को वश में किया हुआ है। साधु पुरुषों के दरबार में खड़ी होकर यह पुकारती रहती है कि मैं आपकी शरण में हूँ मुझे बचा लो।। २ ।। यह माया रूपी धन सम्पदा बड़ी सुन्दर है और इसके पैरों में मानो झांझर छनछनाती रहती है। जब तक व्यक्ति में प्राण हैं तभी तक यह उसके साथ रहती है और प्राणों के निकलते ही यह नंगे पाँव ही उठकर भाग खड़ी होती है।। ३ ।। इस माया ने तीनों लोकों को जीता हुआ है और अठारह पुराण पढ़ने वालों तथा तीर्थों पर जाने वालों को भी इसने अपना रसिक बना रखा है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी इसने बींध रखा है और बड़े-बड़े राजाओं को भी इसने नकेल डाल रखी है।। ४ ।। इस माया का कोई ओर छोर नहीं है और पाँचों ज्ञान इन्द्रियों के साथ यह सदैव मिली रहती है। जब नारद रूपी इन पाँचों इन्द्रियों के भांडे फूट जाते है अर्थात इनके पोल खुल जाते हैं तो कबीर का कथन है कि गुरु की कृपा से व्यक्ति बन्धन मुक्त हो जाता है।। ५ ।। ५ ।। ८ ।। गोंड ।। जैसे घर शहतीर के बिना नहीं ठहर सकता उसी प्रकार प्रभु के नाम के बिना व्यक्ति भला कैसे पार उतर सकता है। जिस प्रकार घड़े के बिना जल नहीं टिक सकता उसी प्रकार गुरु के बिना मनुष्य का दुनिया में बुरा ही हाल होता है।। १ ।। उस मन को जला दिया जाना चाहिए जो प्रभु का सुमिरन नहीं करता और सदैव शारीरिक भोगों में लीन बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। जैसे हल वाले किसान के बिना जमीन नहीं बोई जा सकती, सूत्र के बिना माला के मनके नही पिरोए जा सकते, घुंडी के बिना गाँठ नहीं डाली जा सकती वैसे ही गुरु की शरण के बिना व्यक्ति बुरे हाल में ही यहाँ से जाता है।। २ ।। जैसे माता और पिता के बिना बच्चे का जन्म नहीं होता, पानी के बिना कपड़े नहीं धोए जा सकते, घोड़े के बिना व्यक्ति घुड़सवार नही कहा जा सकता वैसे ही गुरु के बिना प्रभु के द्वार की प्राप्ति नहीं होती।। ३ ।। जिस प्रकार वाद्यों के बिना नृत्य नहीं हो सकता उसी प्रकार पति बिना स्त्री सुहागिन नहीं हो सकती अर्थात दुहागिन स्त्री को पति ने त्याग दिया होता है और वह छोड़ दी जाती है। कबीर का कथन है कि हे जीव, एक ही करने योग्य काम कर कि गुरमुख हो जा; तुझे फिर जन्मना और मरना नहीं पड़ेगा।।४ ।।६ ।।६ ।। गोंड।। वास्तविक ठग और दलाल वही है जो मन का दलन करता है। जब मन का दलन कर लिया जाता है तो यम से छूटा जाता है। जो व्यक्ति बार-बार मन का दलन करके उसकी जाँच पड़ताल करता रहता है ऐसा दलन करने वाला दलाल मुक्ति पा जाता है।। १ ।। हे संसार वालो, तुम दलाल किसको कहते हो। बोलने-बोलने में अन्तर है क्योंकि तुम कुछ समझते हो और मैं इसका कुछ और ही अर्थ लूंगा।।१।। रहाउ ।। नाचने वाला नचनिया वही है जो वास्तव में मन के साथ नाचता है, झूठ में सन्तुष्ट नही होता, सत्य के साथ लीन होता है, मन को आध्यात्मिक उत्साह में लाने का प्रयत्न करता है। ऐसे नचनिया के मन का रखवाला प्रभु स्वयं होता है।। २ ।। बाजारी (भाँड) वह है जो अपने शरीर रूपी बाज़ार को जाँचता परखता है, पाँचों ही पलीत ज्ञान इन्द्रियों को जगाता है, नव खण्ड धरती के मालिक प्रभु की भक्ति करने की कला की पहचान करता है; ऐसे बाज़ारी को तो हम श्रेष्ठ और गुरु के समान बड़ा व्यक्ति मानते हैं।। ३ ।। वास्तविक चोर अथवा तस्कर वह है जो ईर्ष्या नहीं करता और इन्द्रियों को वश में करके प्रभु नाम का सुमिरन करता है। कबीर कहता है कि हे कबीर, हम ऐसे लक्षणों वाले को धन्य गुरु कहते हैं और अत्यन्त

रूप बिचखन ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ गोंड ॥ धंनु गुपाल धंनु गुरदेव ॥ धंनु अनादि भूखे कवलु टहकेव ॥ धनु ओइ संत जिन ऐसी जानी ॥ तिन कउ मिलिबो सारिंगपानी ॥ १ ॥ आदि पुरख ते होइ अनादि ॥ जपीऐ नामु अंन कै सादि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपीऐ नामु जपीऐ अंनु ॥ अंभै कै संगि नीका वंनु ॥ अंनै बाहरि जो नर होवहि ॥ तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥ २ ॥ छोडहि अंनु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना ओहि रंड ॥ जग महि बकते दूधाधारी ॥ गुपती खावहि वटिका सारी ॥ ३ ॥ अंनै बिना न होइ सुकालु ॥ तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु ॥ कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ धंनु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११ ॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

असुमेध जगने ॥ तुला पुरख दाने ॥ प्राग इसनाने ॥ १ ॥ तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गइआ पिंडु भरता ॥ बनारसि असि बसता ॥ मुखि बेद चतुर पड़ता ॥ २ ॥ सगल धरम अछिता ॥ गुर गिआन इंद्री द्रिड़ता ॥ खटु करम सहित रहता ॥ ३ ॥ सिवा सकति संबादं ॥ मन छोडि छोडि सगल भेदं ॥ सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥ भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड ॥ नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥ प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥ १ ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥ रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ सोना गढते हिरै सुनारा ॥ २ ॥ जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥ कउडा डारत हिरै जुआरी ॥ ३ ॥ जह जह देखउ तह तह रामा ॥ हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥ ४ ॥ २ ॥ गोंड ॥ मोकउ तारि ले रामा तारि ले ॥ मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥ नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई ॥ १ ॥ जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की निज

सुन्दर और सयाना मानते हैं ।। ४ ।। ७ ।। १० ।। गोंड ।। वह प्रभु धन्य हैं, गुरुदेव धन्य है और अन्न आदि भी धन्य है जो भूखे का हृदय कमल खिला देता है। ऐसे सन्तजन धन्य है जिन्होंने इस बात को जान लिया है; उन्हीं को ही वह प्रभु मिल जाता है।। १ ।। उस आदि पुरुष से ही अन्न आदि पैदा होता है और प्रभु-नाम का जाप भी अन्न के साथ शरीर का भली प्रकार पालन पोषण करके ही होता है।। १ ।। रहाउ ।। तब तो प्रभु के नाम का सुमिरन करना चाहिए और अन्न का भी स्वाद लेना चाहिए अर्थात भूखे रहकर भक्ति करना ना तो सम्भव है और ना ही वह की जाती है। पानी की संगति के साथ इस अन्न का कितना सुन्दर स्वरूप बन जाता है। अन्न को त्याग देने वाले लोग तीनों लोकों में अपना सम्मान गँवा लेते हैं अर्थात अन्न का त्याग कोई ऐसा कार्य नहीं है जो दुनिया के द्वारा पसन्द किया जाए।। २ ।। जो अन्न को छोड़कर पाखण्ड करता है वह ना तो सुहागिन स्त्री जैसा है और ना ही वह विधवा जीव स्त्री के समान है। संसार में जिन्हें केवल दूधाधारी ही कहा जाता है वे गुप्त रूप से सारी की सारी पंजीरी के गोले बनाकर खा जाते हैं।। ३ ।। अन्न के बिना समय अच्छा व्यतीत नहीं हो सकता और अन्न को त्यागने से प्रभु नहीं मिलता। कबीर का कथन है कि हमने तो यही जाना समझा है कि अन्न आदि धन्य हैं और इन्हीं के कारण हमारा मन प्रभु में लगा रहा है।। ४ ।। ८ ।। ११ ।।

रागु गोंड वाणी नामदेव जी की घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

यदि व्यक्ति अश्वमेध यज्ञ करे, अपने बराबर तौल कर दान दे तथा प्रयाग तीर्थ पर स्नान भी कर ले।। १ ।। तब भी प्रभु के गुणानुवाद के बराबर यह सब नहीं पहुँच पाता। हे मेरे आलसी मन, तू अपने प्रभु का सुमिरन कर।। १ ।। रहाउ ।। गया जाकर पिंडदान करने वाला व्यक्ति, बनारस में अस्सी घाट पर बसने वाला, मुख से व्यक्ति चारों वेद पढ़ता हो तब भी प्रभु के गुणानुवाद की बराबरी नहीं होती।। २ ।। यदि व्यक्ति सारा धर्म-कर्म करता हो, गुरु की शिक्षा के अनुरूप इन्द्रियों को काबू रखता हो और सदैव षट कर्मो की साधना करता रहता हो तब भी प्रभु के गुणानुवाद की बराबरी नहीं कर सकता।। ३ ।। शिव और शक्ति के संवाद की चर्चा में लगे रहने वाले मेरे मन, तू यह सब भेद छोड़ दे और केवल बार-बार प्रभु नाम का ही सुमिरन कर। तू प्रभु नाम का सुमिरन कर जिससे तू संसार सागर से पार उतर जाएगा।। ४ ।। १ ।। गोंड।। जैसे मृग नाद को सुनकर भ्रम में पड़ जाता है; उसको कुछ भी ध्यान नहीं रहता और वह प्राण गँवा देता है।। १ ।। मैं इसी प्रकार उस प्रभु का ध्यान लगाऊँ और प्रभु को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी अपने चित्त को ना भटकने दूँ।। १ ।। रहाउ ।। जिस प्रकार मछली पकड़ने वाला मछलियाँ ही ढूँढता फिरता है, जिस प्रकार सोने की गढ़ाई करते समय सुनार उसमें ध्यान लगाए रहता है इसी तरह प्रभु को छोड़कर मैं अन्य कहीं भी अपने चित्त को ना भटकने दूँ।। २ ।। जैसे विषय विकारों में लीन बना रहने वाला व्यक्ति परायी स्त्री को ढूँढता रहता है और जैसे कौड़ी फेंकते समय जुआरी उन्हें पूरी नजर गड़ाकर देखता है ऐसे ही मैं अपने प्रभु को देखता रहूँ।। ३ ।। मैं जहाँ-जहाँ भी देखता हूँ वहाँ-वहाँ प्रभु ही दिखाई देता है और नामदेव तो सदैव प्रभु चरणों का ही सुमिरन करता रहता है।। ४ ।। २ ।। गोंड।। हे प्रभु, मुझे बचा ले और पार उतार दे। मैं अनजान तैरना भी नहीं जानता, हे मेरे प्रभु पिता, मुझे अपना सहारा दे।। १ ।। रहाउ ।। व्यक्ति कैसे मानव से देवता क्षण भर में ही हो जाता है यह बुद्धि मुझे सच्चे गुरु ने ही सिखाई है। मनुष्य से पैदा होकर कईयों ने स्वर्ग को जाना है और वही साधन मैंने भी प्राप्त कर लिया है।। १ ।। जिस अवस्था में हे प्रभु, तूने ध्रुव और नारद आदि को ठिकाना दिया है थोड़ा सा मुझे भी उस अवस्था में टिका दो। हे प्रभु, नामदेव का तो यही अपना मत है कि तेरे नाम का आसरा लेकर बहुत से सेवकों का उद्धार हो गया

मति एह ॥ २ ॥ ३ ॥ गोंड ॥ मोहि लागती तालाबेली ॥ बछरे बिनु गाइ अकेली ॥ १ ॥ पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥ ऐसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे गाइ का बाछा छूटला ॥ थन चोखता माखनु घूटला ॥ २ ॥ नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥ गुरु भेटत अलखु लखाइआ ॥ ३ ॥ जैसे बिखै हेत पर नारी ॥ ऐसे नामे प्रीति मुरारी ॥ ४ ॥ जैसे तापते निरमल घामा ॥ तैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥ ५ ॥ ४ ॥

रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥ हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरि अंधुले की लाकरी ॥ १ ॥ हरए नमसते हरए नमह ॥ हरि हरि करत नही दुखु जमह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरनाकस हरे परान ॥ अजैमल कीओ बैकुंठहि थान ॥ सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनहु की पूतरी ॥ २ ॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बाल घातनी कपटहि भरी ॥ सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥ गऊतम सती सिला निसतरी ॥ ३ ॥ केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥ जीअ दानु काली कउ दीआ ॥ प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ जासु जपत भै अपदा टरी ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ गोंड ॥ भैरउ भूत सीतला धावै ॥ खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥ १ ॥ हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥ आन देव बदलावनि दैहउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ बरद चढे डउरू ढमकावै ॥ २ ॥ महा माई की पूजा करै ॥ नर सै नारि होइ अउतरै ॥ ३ ॥ तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥ ४ ॥ गुरमति राम नाम गहु मीता ॥ प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥ ५ ॥ २ ॥ ६ ॥ बिलावलु गोंड ॥ आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ ॥ पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥ लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥ १ ॥ पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ मोदी के घर

है।। २ ।। ३ ।। गोंड।। मुझे तो एक ऐसी तिलमिलाहट सी लगी है जैसी बछड़े के बिना अकेली रह जाने वाली गाय को लगी होती है।। १ ।। जिस प्रकार पानी के बिना मछली तड़पती है इसी प्रकार राम नाम के बिना बेचारा नामदेव है।। १ ।। रहाउ ।। जैसे खूँटी से बँधा हुआ गाय का बछड़ा छूटते ही गाय के थन को चूसता है और दूध के घूंट पीता है उसी प्रकार राम नाम के साथ नामदेव का व्यवहार है।। २ ।। नामदेव ने प्रभु को पा लिया है और गुरु से मिलाप होते ही उसने ना देखा जा सकने वाला प्रभु मुझे दिखा दिया है।। ३ ।। जैसे विषयों में लीन रहने वाले व्यक्ति का पराई स्त्री के प्रति आकर्षण होता है वैसे ही नामदेव की प्रीति उस प्रभु के साथ बनी हुई है।। ४ ।। जिस प्रकार सभी साफ़ और तेज धूप में तप जाते हैं वैसे ही राम नाम के बिना बेचारा नामदेव जला जाता है।। ५ ।। ४ ।।

रागु गोंड वाणी नामदेव जी की घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु का सुमिरन करते रहने से सभी भ्रम मिट जाते हैं इसलिये हे जीव, तू प्रभु का नाम लेता रह, यही उत्तम धर्म है। प्रभु का नाम लेते रहने से जाति और कुल का विवाद समाप्त हो जाता है क्योंकि वह प्रभु ही अज्ञानी, अंधे व्यक्ति की लकड़ी है।। १ ।। प्रभु को नमस्कार है और प्रभु को ही प्रणाम है। प्रभु के नाम का सुमिरन करते रहने से यम का दुख नहीं सहना पड़ता।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु ने दुष्ट हिरण्यकश्यप के प्राण ले लिए और अजामिल को बैकुण्ठ में ठिकाना दे दिया। तोते को राम-राम पढ़ाती हुई गणिका भी पार उतर गई; वह प्रभु ही मेरी आँखों की पुतली है अर्थात मुझे सबसे प्यारा है।। २ ।। बालकों को मारने वाली और कपट से भरी हुई पूतना राक्षसी भी प्रभु का सुमिरन करती हुई ही संसार सागर से पार उतर गई। उसका सुमिरन करती हुई ही राजा द्रुपद की लड़की द्रौपदी भी पार उतर गई; इसी प्रकार गौतम की स्त्री शिला बनी हुई अहल्या का भी पार उतारा हो गया।। ३ ।। केशी और कंस का जिसने मंथन कर दिया और कालिया नाग को जीवन दान दे दिया, नामदेव तो ऐसे परमात्मा को प्रणाम करता है जिसका सुमिरन करने से भय और आपदा टल जाती है।। ४ ।। १ ।। ५ ।। गोंड।। जो भैरव, भूत अथवा शीतला की ओर भागता है उसे यही फल मिल सकता है कि वह गधे की सवारी करे या फिर मिट्टी उड़ाता घूमे।। १ ।। मैं तो केवल एक प्रभु को ही लूंगा और इसके बदले में सभी अन्य देवताओं को दे देना पसन्द करूंगा।। १ ।। रहाउ ।। शिव-शिव करते हुए जो व्यक्ति सुमिरन करेंगे उन्हें बैल पर चढ़कर डमरू बजाना प्राप्त होगा।। २ ।। महामाई की पूजा करने वाला व्यक्ति पुरुष से स्त्री के रूप में अवतरित हो सकता है।। ३ ।। तुझे तो आदि भवानी ही कहा जाता है परन्तु मुक्ति प्रदान करते समय तू कहाँ छिप जाती है।। ४ ।। हे मित्र, गुरुमति में चलते हुए राम नाम को धारण किए रहो; नामदेव विनती करता है कि यही गीता भी कहती है।। ५ ।। २ ।। ६ ।। बिलावलु गोंड।। हे पंडित, मैंने तो इसी जीवन में परमात्मा का दर्शन कर लिया है; तू मेरे पास आ मैं तुझ मूर्ख को समझाऊं (कि तुझे दर्शन क्यों नहीं होता)।। रहाउ ।। हे पंडित, तेरी गायत्री (तेरे ही कथननुसार शाप के कारण गाय की योनि में पड़कर) लोधाजाति के किसान के खेत को चरने लग गई। उसने डंडा पकड़कर उसकी टाँग तोड़ दी तो वह बेचारी लँगड़ा लँगडा कर चलने लगी।। १ ।। हे पंडित, (तू शिव की आराधना भी करता है और उसे शाप दे देने वाला तथा भस्म कर देने वाला अत्यन्त क्रोधी भी समझता है, ऐसे शिव के साथ प्यार कैसे हो सकता है)। तेरे ही कथनानुसार शिव किसी भण्डारी के घर सफेद बैल पर सवार होकर भोजन के लिये गया। शायद

खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥ २ ॥ पांडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥ रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥ ३ ॥ हिंदू अंन्हा तुरकू काणा ॥ दुहां ते गिआनी सिआणा ॥ हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥ नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥ १ ॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥ सेव मुकंद करै बैरागी ॥ सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥ २ ॥ एकु मुकंदु करै उपकारु ॥ हमरा कहा करै संसारु ॥ मेटी जाति हूए दरबारि ॥ तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥ ३ ॥ उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥ करि किरपा लीने कीट दास ॥ कहु रविदास अब त्रिसना चूकी ॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥ ४ ॥ १ ॥ गोंड ॥ जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै ॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सभ बिरथा जावै ॥ १ ॥ साध का निंदकु कैसे तरै ॥ सरपर जानहु नरक ही परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ अरपै नारि सीगार समेति ॥ सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै ॥ करै निंद कवनै नही गुनै ॥ २ ॥ जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥ अपना बिगारि बिरांना सांढे ॥ करै निंद बहु जोनी हांढे ॥ ३ ॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक का परगटि पाहारा ॥ निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥ ७ ॥ २ ॥ ४९ ॥ जोड़ु ॥

भोजन पसन्द ना आने पर शिव जी ने शाप देकर उसका लड़का मार दिया।। २ ।। हे पंडित, तेरे रामचन्द्र जी को भी हमने आते हुए देखा है अर्थात, उनके सम्बन्ध में भी तुमसे यही कुछ सुना है कि रावण के साथ उनकी लड़ाई हुई क्योंकि वे अपनी पत्नी को गँवा बैठे थे।। ३ ।। धर्म और लौकिकता सांसारिक व्यवहार के दो नेत्र हैं। हिन्दु दोनों को त्यागे बैठा है इसलिये नामदेव उसे अन्धा कहते हैं और मुसलमान धर्म को छोड़कर केवल सांसारिक प्रपंचों में लीन है इसलिये उसे एक नेत्र वाला कहते हैं। इन दोनों से सयाना व्यक्ति उसे कहा गया है जो ज्ञानवान है अर्थात् धर्म के वास्तविक स्वरुप को जानता और मानता है। हिन्दु मंदिर में जाकर पूजा करता है और मुसलमान मस्जिद में जाकर धर्म का सेवन करता है परन्तु नामदेव ने तो उसका सुमिरन किया है जो ना मंदिर में है ना ही मस्जिद में है।। ४ ।। ३ ।। ७ ।।

रागु गोंड वाणी रविदास जी की घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे संसार के लोगो, उस प्रभु का बार-बार सुमिरन करते रहो। उस प्रभु के बिना इस शरीर की सदैव हानि ही हानि है। वह प्रभु ही मुक्ति का दाता है और वह प्रभु ही हमारा पिता और माता है।। १ ।। जो जीवित बना हुआ भी और मरते हुए भी उस प्रभु का सुमिरन करता रहता है, प्रभु के ऐसे सेवक को सदैव आनन्द बना रहता है।। १ ।। रहाउ।। यह प्रभु ही हमारा प्राण है इसलिये उस प्रभु का ही सुमिरन करते रहने से उसकी स्वीकृति का चिन्ह माथे पर अंकित हो जाता है। प्रभु की सेवा वास्तव में कोई वैराग्यवान ही करता है। मुझ दुर्बल व्यक्ति को भी वही प्रभु रूपी धन मिल गया है।। २ ।। वह एक प्रभु ही जब हम पर उपकार करता है तो फिर यह संसार भला हमारा क्या कर सकता है। हम तो अपनी जाति-पाति को मिटाकर उस प्रभु के दरबारी हो गए हैं और हे प्रभु, तू ही सभी युगों में हमें पार उतारने वाला है।। ३ ।। जब ज्ञान उत्पन्न हुआ तो हमारा अन्तर्मन प्रकाशित हो उठा। हे प्रभु, तूने कृपा करके हम कीटों को भी अपना दास बना लिया है। रविदास कहता है कि जबसे मैंने उस प्रभु का सुमिरन और सेवा की है तो मेरी तृष्णा समाप्त हो गई है।। ४ ।। १ ।। गोंड।। यदि व्यक्ति अड़सठ तीर्थों पर स्नान करे, यदि शिवलिंग की स्थापना वाले बारह स्थानों में पहुँच कर उनकी पूजा करे, यदि वह कुँआ और तालाब इत्यादि स्नान के लिए बनवा दे परन्तु यदि वह लोगों की निन्दा करता रहता है तो सब कुछ व्यर्थ ही चला जाता है।। १ ।। साधु पुरुष का निन्दक भला कैसे पार उतर सकता है और यह जान लो कि वह आवश्यक रूप से नरक में ही जाता है।। १ ।। रहाउ ।। यदि वह कुरुक्षेत्र तीर्थ पर ग्रहण के समय स्नान करे और वहाँ अपनी स्त्री को बेशक कपड़े गहनों के शृंगार के साथ दान कर दे, सभी स्मृतियों का पाठ अपने कानों से सुने परन्तु यदि लोगों की निंदा करता रहता है तो यह सब किसी काम का नहीं।। २ ।। यदि वह अनेकों प्रकार के भोजन लोगों को खिलाता है, लोगों को भूमि दान करते हुए अपने घर में शोभा प्राप्त करता है, यदि वह अपना काम बिगाड़कर भी दूसरों के काम सँवार दे परन्तु यदि वह निंदक है तो वह अनेकों योनियों को भोगता रहेगा। ३ ।। हे संसार के लोगो, निन्दा क्यों करते हो क्योंकि निन्दक का आडम्बर एक दिन प्रकट हो जाता है अर्थात् उसकी पोल खुल जाती है। निन्दक के बारे में अच्छी तरह सोच विचार किया गया है तथा रविदास कहता है कि वह पापी नरक में ही जाता है।। ४ ।। २ ।। ११ ।। ७ ।। २ ।। ४६ ।। जोड़ ।।

रामकली महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥ कोई नामु जपै जपमाली लागै तिसै धिआना ॥ अब ही कब ही किछू न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥ १ ॥ न जाणा हरे मेरी कवन गते ॥ हम मूरख अगिआन सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाज पते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥ लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले ॥ २ ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए जीवणु साजहि माई ॥ एकि चले हम देखह सुआमी भाहि बलंती आई ॥ ३ ॥ न किसी का मीतु न किसी का भाई ना किसै बापु न माई ॥ प्रणवति नानक जे तू देवहि अंते होइ सखाई ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला १ ॥ सरब जोति तेरी पसरि रही ॥ जह जह देखा तह नरहरी ॥ १ ॥ जीवन तलब निवारि सुआमी ॥ अंध कूपि माइआ मनु गाडिआ किउ करि उतरउ पारि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह भीतरि घटि भीतरि बसिआ बाहरि काहे नाही ॥ तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिंत मन माही ॥ २ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ आपे सरब रहिआ भरपूरि ॥ सतगुरु मिलै

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैर अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

रामकली महला १ घरु १ चौपदे

कोई तो मागधी प्राकृत भाषा के बौद्ध और जैन ग्रन्थ पढ़ता है और कोई पुराण आदि पढ़ रहा है। कोई माला फेरता हुआ जाप कर रहा है और समाधि लगाए बैठा है परन्तु हे प्रभु, मैं तो इधर-उधर की सभी बातों को छोड़कर केवल एक तेरे नाम को ही पहचानता हूँ।। १ ।। हे प्रभु, मुझे यह नहीं पता कि मेरी क्या गति होगी; हम तो मूर्ख और अज्ञानी बने हुए तेरी शरण में पड़े हैं इसलिए हे प्रभु पति, मेरी लाज रख लो, मुझ पर कृपा करो।।१।। रहाउ ।। यह मन कभी तो खुश होकर आकाश में उड़ने लगता है और कभी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति ना होते देखकर घबराकर पाताल में जा गिरता है। यह लोभी जीव कहीं भी स्थिर नही होता और चारों दिशाओं में धन सम्पदा की खोज में दौड़ता रहता है।। २ ।। हे माँ, सभी जीव इस जगत में मौत का लेख अपने माथे पर लिखा कर आए हैं परन्तु सदा जीवित बने रहने का साजो सामान तैयार करते रहते हैं। हे प्रभु, हमारी आँखों के सामने ही अनेकों जीव यहां से चले जा रहे हैं और हम देख रहे हैं कि यहाँ मौत की आग सदा से ही जल रही है।। ३ ।। यहाँ ना तो कोई किसी का मित्र है, ना किसी का भाई है, ना किसी का बाप है, और ना ही सदैव बनी रहने वाली किसी की माँ है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, यदि तू हमें अपना नाम प्रदान कर दे तो वह ही अन्त में हमारा सहायक सखा होगा।। ४ ।। १ ।। रामकली महला १ ।। हे प्रभु, सबमें तेरी ही ज्योति फैली हुई है। मैं जहाँ-जहाँ भी देखता हूँ वहाँ वह प्रभु ही दिखाई देता है।। १ ।। हे मेरे स्वामी प्रभु, तू मेरे जीवन की व्यर्थ इच्छाओं को दूर कर दे। मेरा मन माया के अन्धे कुँए में फँसा हुआ है अब भला मैं उसमें से कैसे बाहर निकल सकता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। जब वह अन्दर बसा हुआ है और शरीर में ही निवास करता है तो फिर भला वह बाहर क्यों नहीं है अर्थात बाहर भी है। जो सदैव मन से उसकी चिन्ता करते रहते हैं उनकी देखभाल वह प्रभु सदैव स्वयं करता रहता है।। २ ।। वह स्वयं ही पास है और स्वयं ही बहुत दूर भी है। वह स्वयं ही सबमें पूर्ण रूप से व्याप्त है। जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो

अंधेरा जाइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ अंतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी लागसि बाणी ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा परतापहिगा प्राणी ॥ ४ ॥ २ ॥ रामकली महला १ ॥ जितु दरि वसहि कवनु दरु कहीऐ दरा भीतरि दरु कवनु लहै ॥ जिसु दर कारणि फिरा उदासी सो दरु कोई आइ कहै ॥ १ ॥ किन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ नह मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु दरवाजा रोहु रखवाला आसा अंदेसा दुइ पट जड़े ॥ माइआ जलु खाई पाणी घरु बाधिआ सत कै आसणि पुरखु रहै ॥ २ ॥ किंते नामा अंतु न जाणिआ तुम सरि नाही अवरु हरे ॥ ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै आपि करे ॥ ३ ॥ जब आसा अंदेसा तब ही किउ करि एकु कहै ॥ आसा भीतरि रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥ ४ ॥ इन बिधि सागरु तरीऐ ॥ जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ३ ॥ रामकली महला १ ॥ सुरति सबदु साखी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे ॥ पतु झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥ १ ॥ बाबा गोरखु जागै ॥ गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाणी प्राण पवणि बंधि राखे चंदु सूरजु मुखि दीए ॥ मरण जीवण कउ धरती दीनी एते गुण विसरे ॥ २ ॥ सिध साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥ ३ ॥ कागदु लूणु रहै घ्रित संगे पाणी कमलु रहै ॥ ऐसे भगत मिलहि जन नानक तिन जमु किआ करै ॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली महला १ ॥ सुणि माछिंद्रा नानकु बोलै ॥ वसगति पंच करे नह डोलै ॥ ऐसी जुगति जोग कउ पाले ॥ आपि तरै सगले कुल तारे ॥ १ ॥ सो अउधूतु ऐसी मति पावै ॥ अहिनिसि सुंनि समाधि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भिखिआ भाइ भगति भै चलै ॥ होवै सु त्रिपति संतोखि अमुलै ॥ धिआन रूपि होइ आसणु पावै ॥ सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥ २ ॥ नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ सुणि माछिंद्रा अउधू नीसाणी ॥ आसा माहि निरासु वलाए ॥ निहचउ नानक करते पाए ॥ ३ ॥ प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ गुर चेले की संधि मिलाए ॥ दीखिआ दारू

अज्ञान का अंधकार भाग जाता है और फिर जिधर भी देखा जाता है वह उधर ही समाया हुआ दिखाई देता है।। ३ ।। यदि अन्तर्मन में तो भ्रम है और बाहर भी माया की आँखों के बाण तुझे बींध रहें हैं तो हे प्राणी, दासों का दास नानक यह कहता है कि तू निश्चित रूप से सन्तप्त अर्थात् दुखी बना रहेगा।। ४ ।। २ ।। रामकली महला १ ।। वह कौन से दरवाजे के अन्दर बस रहा है मुझे वह दरवाजा बताओ; मुझे यह भी बताओ कि शरीर के किस स्थान और द्वार के अन्दर उसे देखा जा सकता है। प्रभु के जिस द्वार के लिए मैं उदास होकर भटक रहा हूँ मुझे कोई उस द्वार के बारे में कृपा करके बता दे।। १ ।। किस विधि से संसार सागर को पार किया जाता है। विषय विकारों की ओर से जीवित रहते हुए मरा नहीं जाता, यह कैसे सम्भव होगा।। १ ।। रहाउ ।। इस जीवन रूपी घर में दुख दरवाजा है और क्रोध उसका रखवाला है तथा आशाएँ और चिन्ताओं के दो तख्ते (पट) उसमें लगे हुए हैं। माया इसके चारों ओर खाई है जिसमें तृष्णा रूपी जल भरा हुआ है और उसमें यह शरीर रूपी घर बना है। इस शरीर रूपी घर में ही सत्य के आसन पर वह सर्वव्यापक प्रभु बैठा रहता है।। २ ।। हे प्रभु, तेरे कितने ही नाम है उनकी कोई गिनती नहीं जान सकता तथा हे प्रभु, तुम्हारे जैसा अन्य कोई नहीं है। कुछ ऊँचा कहने की जरूरत नहीं है और अपने मन में ही स्थिर बने रहना चाहिए क्योंकि वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ जानता है और स्वयं ही सब कुछ करता है।। ३ ।। जब आशा और भय बने ही हुए हैं तब भला एक प्रभु का जाप कैसे हो सकता है। व्यक्ति आशावादी बना रहकर भी उनमें लीन ना हो जाए तभी हे नानक, वह एक प्रभु मिलता है।। ४ ।। इस प्रकार से संसार सागर को तैरा जाता है और इस प्रकार जीवित रहते हुए विषय विकारों के संदर्भ में मरा जाता है।। १ ।। रहाउ दूसरा ।। ३ ।। रामकली महला १ ।। शब्द-गुरु मेरे लिये सिंगी वाद्य है जो सुरति के रूप में बजती रहती है; लोग भी इस नाद को सुनते हैं। मेरे पास झोली के रूप में माँगने वाला वह पात्र है जिसमें मैं प्रभु नाम की भिक्षा माँगता हूँ।। १ ।। हे बाबा, धरती की रक्षा करने वाला वह प्रभु सदैव जागता रहता है अर्थात् चेतन बना रहता है। गोरख वह है जिसने इस धरती को उठा रखा है अर्थात् जो धरती का भरण पोषण करके उसकी रक्षा करता है और ऐसा करते हुए उसे जरा सी भी देरी नहीं लगती।। १ ।। रहाउ ।। इन प्राणों को उसने पवन, पानी आदि तत्वों के साथ बाँध कर रखा है तथा चन्द्र और सूर्य दोनों बड़े आकार वाले दीपक हैं। जीने मरने के लिये हे जीव, तुझे यह धरती दी है परन्तु तूने उसके इन सभी गुणों को भुला दिया।।२।। इस संसार में सिद्ध, साधक, योगी, जंगम और अनेकों ही पीर, वली हैं। मैं तो इनमें से जिसके साथ भी मिलता हूँ तो प्रभु यश का ही गायन करता हूँ क्योंकि ये सब मेरे अपने ही हैं और मेरा मन इनमें से किसी के साथ भी सम्बन्धित नहीं है।। ३ ।। कागज और नमक घी के साथ रहने से अलिप्त रहते हुए कभी नष्ट नहीं होते इसी प्रकार कमल भी पानी से अलिप्त बना रहता है ; इसी प्रकार भक्त सभी प्रभु के सेवकों से मिले रहते हैं। अतः हे नानक, यम भला उनका क्या बिगाड़ सकता है।। ४ ।। ४ ।। रामकली महला १ ।। नानक कहता है कि हे मछन्दर नाथ मेरी बात सुन, जो पाँचों विकारों को वश में करता है और कभी भी डोलता नही तथा इस प्रकार योग की युक्ति का पालन करता है वह स्वयं तो पार उतर ही जाता है साथ ही साथ अपनी सभी कुलों को भी पार उतार देता है।। १ ।। ऐसा अवधूत विरक्त बनकर ऐसी बुद्धि प्राप्त करता है कि दिन रात निर्गुण प्रभु की निर्बीज समाधि में ही लीन बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। भक्ति भाव में चलना ही योगी की भिक्षा है और अमूल्य सन्तोष के साथ ही उसकी सन्तुष्टि होती है। प्रभु का ध्यान रूप हो जाना उसका आसन होता है और सच्चे नाम में चित्त को लगाए रखना उसकी समाधि है।। २ ।। नानक अमृतवाणी को बोलते हुए मछन्दर नाथ को कहता है, हे मछन्दर, तू अवधूत की निशानी को सुन और जान ले। वह आशाओं में भी वैराग्यवान बना रहता है और हे नानक, वह निश्चित रूप से प्रभु को पा लेता है।। ३ ।। नानक विनती करता हुआ रहस्य की बात कहता है और गुरु और शिष्य के भेद को मिटा देता है।

भोजनु खाइ ॥ छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ रामकली महला १ ॥ हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवणु लगै मतु जाई ॥ सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥ १ ॥ गुर तारि तारणहारिआ ॥ देहि भगति पूरन अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक जोगी अरु जंगम एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥ परसत पैर सिझत ते सुआमी अखरु जिन कउ आइआ ॥ २ ॥ जप तप संजम करम न जाना नामु जपी प्रभ तेरा ॥ गुरु परमेसरु नानक भेटिओ साचै सबदि निबेरा ॥ ३ ॥ ६ ॥ रामकली महला १ ॥ सुरती सुरति रलाईऐ एतु ॥ तनु करि तुलहा लंघहि जेतु ॥ अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥ अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥ १ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ जितु दीवै सभ सोझी पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हछी मिटी सोझी होइ ॥ ता का कीआ मानै सोइ ॥ करणी ते करि चकहु ढालि ॥ ऐथै ओथै निबही नालि ॥ २ ॥ आपे नदरि करे जा सोइ ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोइ ॥ तितु घटि दीवा निहचलु होइ ॥ पाणी मरै न बुझाइआ जाइ ॥ ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ ३ ॥ डोलै वाउ न वडा होइ ॥ जापै जिउ सिंघासणि लोइ ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु कि वैसु ॥ निरति न पाईआ गणी सहंस ॥ ऐसा दीवा बाले कोइ ॥ नानक सो पारंगति होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ रामकली महला १ ॥ तुधनो निवणु मंनणु तेरा नाउ ॥ साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ ता सुणि सदि बहाले पासि ॥ १ ॥ नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ ऐसी दरगह साचा सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रापति पोता करमु पसाउ ॥ तू देवहि मंगत जन चाउ ॥ भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ धुरि तै छोडी कीमति पाइ ॥ २ ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ अपनी कीमति आपे धरै ॥ गुरमुखि परगटु होआ हरि राइ ॥ ना को आवै ना को जाइ ॥ ३ ॥ लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न पाइआ ॥ सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ रामकली महला १ ॥ सागर महि बूंद बूंद महि सागरु कवणु बुझै बिधि जाणै ॥ उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै ॥ १ ॥

अवधूत की यही निशानी है कि वह गुरु के उपदेश को भोजन और औषधि के रूप में नियमित रूप से ग्रहण करे तथा छः दर्शनों की वास्तविकता को जान ले।। ४ ।। ५ ।। रामकली महला १ ।। हमारे जीवन की नाव पापों से भरी हुई डगमगा रही है; कहीं हवा का झोंका लगे और हम डूब ही ना जाएं। हे स्वयं सिद्ध प्रभु, हम तेरे सामने होकर तुझसे मिलने आए हैं हमें अवश्य मिलने का सम्मान प्रदान करो।। १ ।। हे पार उतार लेने वाले गुरु, हमें तैरा ले अर्थात् पार कर दे। हे पूर्ण अविनाशी प्रभु, हमें भक्ति प्रदान करो; मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। सिद्ध और साधक, योगी और जंगम वास्तव में वे ही हैं जिन्होंने इस एक प्रभु का ही सुमिरन किया है। जिनको उस प्रभु नाम का अक्षर अर्थात उपदेश मिल गया है वे प्रभु स्वामी के चरणों का स्पर्श पाते ही सफल हो गए हैं।। २ ।। हे प्रभु, मैं जप, तप और संयम आदि कर्मकाण्ड कुछ नहीं जानता और केवल तेरे नाम का ही जाप करता हूँ। परमेश्वर गुरु नानक को मिल गया है और उसके सच्चे शब्द के माध्यम से हमारे जन्म-मरण का हिसाब निपट गया है।। ३ ।। ६ ।। रामकली महला १ ।। सम्पूर्ण ज्ञान के मालिक प्रभु के साथ अपनी सुरति को इस प्रकार लीन करना चाहिए कि यह शरीर तेरी नाव बन जाए जिसके माध्यम से तू पार उतर जाए। तेरे अन्तर्मन में तृष्णा की आग है। हे जीव, उसे तू रोके रख, तभी तेरे जीवन का दीपक दिन रात निरन्तर जलता रहेगा।। १ ।। ज्ञान रूपी दीपक हृदय रूपी जल पर तू तैरा ले और इस दीपक के माध्यम से सब कुछ जान ले।। १ ।। रहाउ ।। अच्छा विचार इस दीपक के लिए मिट्टी का काम करे तो इस प्रकार का ज्ञान का दीपक उस प्रभु को स्वीकार्य होता है। अपने आचरण का चाक बनाकर उस दीपक को तैयार कर और ऐसा दीपक ही यहाँ और वहाँ तेरे साथ निभेगा।। २ ।। जब वह प्रभु स्वयं कृपा दृष्टि करता है तो कोई बिरला गुरमुख ही उसे बूझ पाता है। ऐसे गुरमुख के अन्तर्मन मे ही ज्ञान का दीपक अटल बना रहता है और फिर वह ना पानी में डूबता है और ना उसे बुझाया जा सकता है। हे जीव, तू इस प्रकार का दीपक हृदय रूपी जल में तैरा दे।। ३ ।। वह ना तो वायु के थपेड़ों से डोलता है और ना ही वह बुझता है। इस दीपक के प्रकाश में वह प्रभु ऐसा लगता है जैसे वह हृदय रूपी सिहांसन पर बैठा हुआ हो। क्षत्रिय, ब्राह्मण, शुद्र अथवा वैश्य सभी मिलकर उस दीपक की कीमत के लिये सहस्त्रों गणनाएं करते हैं परन्तु उस ज्ञान दीपक का मूल्य नहीं आँका जा सकता। हे नानक, ऐसा दीपक कोई ऐसा व्यक्ति ही जलाता है जो जीवन की कला में पूर्ण रूप से पारंगत अर्थात कुशल होता है।। ४ ।। ७ ।। रामकली महला १ ।। तेरे नाम को मानना ही तेरे आगे झुकने के समान है। बैठने के लिये स्थान पाने हित सत्य की भेंट देनी पड़ती है। सत्य और सन्तोष की अरदास (प्रार्थना) यदि की जाए तो उसे सुनकर वह प्रभु बुलाकर पास बैठा लेता है।। १ ।। वह सत्य प्रभु ऐसा है और उसका दरबार ऐसा है कि वहाँ कोई भी जीव बिल्कुल ही अयोग्य नहीं माना जाता; हर एक की तनिक भर सी मेहनत को भी हे नानक, वहाँ व्यर्थ नहीं जाने दिया जाता।। १ ।। रहाउ ।। कृपा और दान का खजाना प्राप्त होता है और हे प्रभु, तू देता चला जाता है इसीलिये माँगने वाले सेवक के मन में माँगने का चाव बना रहता है। हृदय रूपी बर्तन में स्वतः ही प्रेम आकर भर जाता है और हे प्रभु, ऐसा विधान तूने शुरू से ही बना कर डाला हुआ है।। २ ।। जिस प्रभु ने यह सब कुछ किया है वही सब कुछ करता है और अपने ओर छोर अर्थात मूल्य को आप ही निर्धारित करता है। गुरमुख के अन्तर्मन में वह राजन् प्रभु प्रकट होता है और गुरमुख को ही पता लगता है कि ना तो कोई आता है और ना कोई यहाँ से जाता है।। ३ ।। लोग माँगने वाले को धिक्कारते हैं और कहते हैं कि माँगते हुए किसी को सम्मान प्राप्त नहीं होता। परन्तु मैं कहता हूँ कि यह माँगने देने की दैवीय बातें हे प्रभु, तूने ही मुझसे कहलाई हैं इसलिये मैं उस धिक्कार का पात्र नहीं हो सकता।। ४ ।। ८ ।। रामकली महला १ ।। जो जीवन के विधि-विधान को जानता-बूझता हो वही इस रहस्य को समझता है कि सागर में ही बूंद होती हैं और बूदों से ही सागर बनता है। उदभिज आदि की रचना स्वयं ही करके स्वयं ही उसका रहस्य समझता है और वह स्वयं ही इस रचना के सार तत्व को पहचानता है।। १ ।।

ऐसा गिआनु बीचारै कोई ॥ तिस ते मुकति परम गति होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन महि रैणि रैणि महि दिनीअरु उसन सीत बिधि सोई ॥ ता की गति मिति अवरु न जाणै गुर बिनु समझ न होई ॥ २ ॥ पुरख महि नारि नारि महि पुरखा बूझहु ब्रहम गिआनी ॥ धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥ ३ ॥ मन महि जोति जोति महि मनूआ पंच मिले गुर भाई ॥ नानक तिन कै सद बलिहारी जिन एक सबदि लिव लाई ॥ ४ ॥ ९ ॥ रामकली महला १ ॥ जा हरि प्रभि किरपा धारी ॥ ता हउमै विचहु मारी ॥ सो सेवकि राम पिआरी ॥ जो गुर सबदी बीचारी ॥ १ ॥ सो हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ अहिनिसि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुण गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुनि वाजे अनहद घोरा ॥ मनु मानिआ हरि रसि मोरा ॥ गुर पूरै सचु समाइआ ॥ गुरु आदि पुरखु हरि पाइआ ॥ २ ॥ सभि नाद बेद गुरबाणी ॥ मनु राता सारिगपाणी ॥ तह तीरथ वरत तप सारे ॥ गुर मिलिआ हरि निसतारे ॥ ३ ॥ जह आपु गइआ भउ भागा ॥ गुर चरणी सेवकु लागा ॥ गुरि सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥ कहु नानक सबदि मिलाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ रामकली महला १ ॥ छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ खुधिआ दुसट जलै दुखु आगै ॥ गुरमति नही लीनी दुरमति पति खोई ॥ गुरमति भगति पावै जनु कोई ॥ १ ॥ जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ एक द्रिसटि एको करि देखिआ भीखिआ भाइ सबदि त्रिपतासै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच बैल गडीआ देह धारी ॥ राम कला निबहै पति सारी ॥ धर तूटी गाडो सिर भारि ॥ लकरी बिखरि जरी मंझ भारि ॥ २ ॥ गुर का सबदु वीचारि जोगी ॥ दुखु सुखु सम करणा सोग बिओगी ॥ भुगति नामु गुर सबदि बीचारी ॥ असथिरु कंधु जपै निरंकारी ॥ ३ ॥ सहज जगोटा बंधन ते छूटा ॥ कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ मन महि मुंद्रा हरि गुर सरणा ॥ नानक राम भगति जन तरणा ॥ ४ ॥ ११ ॥

इस प्रकार के ज्ञान का कोई बिरला ही चिंतन करता है और उस चिंतन के फलस्वरूप ही मुक्ति और परम गति प्राप्त होती है। १ ।। रहाउ ।। दिन में ही रात है और रात में ही दिन को लाने वाला सूर्य है; उसी में ही उष्णता (गर्मी) और शीतलता निहित रहती है अर्थात् गर्मी और सर्दी दोनों में अवश्य रहती है केवल मात्रा का अन्तर होता है इसके रहस्य को अन्य कोई नहीं जानता ; गुरु के बिना इसे नहीं समझा जा सकता।। २ ।। पुरुष में ही नारी है और नारी में ही पुरुष है इस रहस्य को ब्रह्मज्ञानी बनकर ही बूझा जा सकता है। शब्द धुन में ही ध्यान लगता है और ध्यान लगते ही उस प्रभु को जान लिया जाता है तथा गुरमुख बनकर इस अकथनीय कहानी को समझ लिया जाता है।। ३ ।। गुरमुख बनकर यह पता लग जाता है कि मन में ही ज्योति है और ज्योति में ही यह मन टिका हैं तथा पाँचों इन्द्रियाँ मिलकर गुरु भाईयों जैसी समान रूप वाली हो गई हैं। जिन्होंने एक शब्द के साथ अपनी लौ लगा ली है नानक तो सदैव उन पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। ६ ।। रामकली महला १ ।। जब प्रभु कृपा कर देता है तो अन्तर्मन से अहंकार मार दिया जाता है। प्रभु की सेविका ही उस प्रभु को प्यारी लगती है और वही शब्द गुरु के माध्यम से उसका चिंतन करती रहती है।। १ ।। प्रभु को ऐसा सेवक ही अच्छा लगता है जो दिन रात उसकी भक्ति करे और लोकलाज को छोड़कर प्रभु के गुण गाता रहे।। १ ।। रहाउ।। शब्द की धुन बजने से घोर अनहद नाद बजने लगा है। अब हरि रस में मेरा मन सन्तुष्ट हो गया है और पूर्ण गुरु के माध्यम से मेरे अन्दर सत्य समा गया है तथा आदि पुरुष प्रभु गुरु मैंने प्राप्त कर लिया है।। २ ।। गुरु की वाणी ही नाद है और गुरु की वाणी ही ज्ञान स्वरूप है ; इसी के माध्यम से मेरा मन उस प्रभु में रंग गया है। उसी में ही सभी तीर्थ, व्रत और तप आदि विद्यमान हैं और पार उतारने वाला प्रभु गुरु मुझे मिल गया है।। ३ ।। जिस सेवक का अभिमान और भय भाग खड़ा हुआ है वही सेवक गुरु के चरणों में लगा रहता है। सच्चे गुरु प्रभु ने ही मेरे भ्रम का नाश कर लिया है और नानक का कथन है कि शब्द ने ही मुझे उस प्रभु से मिला दिया है।। ४ ।। १० ।। रामकली महला १ ।। योगी, वस्त्र और भोजन को माँगता हुआ भागता दौड़ता रहता है। यहाँ भी दुष्ट बनकर वह भूख में जलता रहता है और आगे जाकर भी आवागमन का दुख ही सहन करता रहता है। उसने वास्तव में गुरु की मति को प्राप्त नहीं किया है और दुर्गति में बने रहकर अपने सम्मान को खो दिया है। गुरमति में रहकर कोई बिरला सेवक ही भक्ति प्राप्त करता है।। १ ।। वास्तविक योगी की मुक्ति यह है कि वह सहज स्वभाव की अवस्था में ही बना रहता है। वह एक दृष्टि से एक प्रभु को सब में देखता है और उसकी भिक्षा यह है कि वह प्रेम पूर्वक शब्द के माध्यम से तृप्त बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। पाँचों ज्ञान इन्द्रियाँ बैल बनकर इस शरीर रूपी गाड़ी को चलाती हैं परन्तु इस खेल का सारा मान सम्मान अन्तर्मन में स्थित प्रभु की शक्ति ही है जो इस खेल को पूरा करती है। इस बैल गाड़ी का जब राम नाम का धुरा टूट जाता है तो यह शरीर रूपी गाड़ी सिर के बल गिर पड़ती है। इस गाड़ी की लकड़ियाँ बिखरकर अपने ही भार से जल कर नष्ट हो जाती हैं।। २ ।। हे योगी, शब्द-गुरु का चिंतन कर और दुख, सुख, शोक और वियोग को एक समान समझ। प्रभु नाम का तेरा भोजन हो जो शब्द-गुरु के चिन्तन के फलस्वरूप तुझे प्राप्त हुआ हो तभी तेरा शरीर स्थिर हो जाएगा और उस निराकार प्रभु का वह सुमिरन करेगा।। ३ ।। सहज स्वभाव का लंगोट तू धारण कर जिससे तू बन्धनों से छूट जाएगा। शब्द-गुरु के माध्यम से ही तू काम, क्रोध को भी लूट कर नष्ट कर देगा। प्रभु गुरु की शरण में जाना ही मन की मुद्राएँ धारण करना है हे नानक, प्रभु की भक्ति से ही सेवक का इस संसार सागर से तैरना संभव होता है।। ४ ।। ११ ।।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रामकली महला ३ घरु १ ॥

सतजुगि सचु कहै सभु कोई ॥ घरि घरि भगति गुरमुखि होई ॥ सतजुगि धरमु पैर है चारि ॥ गुरमुखि बूझै को बीचारि ॥ १ ॥ जुग चारे नामि वडिआई होई ॥ जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रेतै इक कल कीनी दूरि ॥ पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि ॥ गुरमुखि बूझै सोझी होई ॥ अंतरि नामु वसै सुखु होई ॥ २ ॥ दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ ॥ भरमि भुलाने जाणहि दोइ ॥ दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाए ॥ गुरमुखि होवै त नामु द्रिड़ाए ॥ ३ ॥ कलजुगि धरम कला इक रहाए ॥ इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥ माइआ मोहु अति गुबारु ॥ सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥ ४ ॥ सभ जुग महि साचा एको सोई ॥ सभ महि सचु दूजा नही कोई ॥ साची कीरति सचु सुखु होई ॥ गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥ ५ ॥ सभ जुग महि नामु ऊतमु होई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ हरि नामु धिआए भगतु जनु सोई ॥ नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई ॥ ६ ॥ १ ॥

रामकली महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जे वड भाग होवहि वडभागी ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपत नामे सुखु पावै हरि नामे नामि समावै ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति करहु सद प्राणी ॥ हिरदै प्रगासु होवै लिव लागै गुरमति हरि हरि नामि समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हीरा रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूरु कीआ ॥ जिसु वड भागु होवै वड मसतकि तिनि गुरमति कढि कढि लीआ ॥ २ ॥ रतनु जवेहरु लालु हरि नामा गुरि काढि तली दिखलाइआ ॥ भागहीण मनमुखि नही लीआ त्रिण ओलै लाखु छपाइआ ॥ ३ ॥ मसतकि भागु होवै धुरि लिखिआ ता सतगुरु सेवा लाए ॥ नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु गुरमति हरि पाए ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला ४ ॥ राम जना मिलि भइआ अनंदा हरि नीकी कथा सुनाइ ॥ दुरमति मैलु गई

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। रामकली महला ३ घरु १ ।।

सतयुग में सभी सत्य की बात करते हुए कहे जाते हैं। गुरमुख बनकर घट-घट में प्रभु भक्ति होती है। सतयुग में धर्म के चारों पैर विद्यमान बने रहते हैं इस विचार को कोई गुरमुख बनकर ही जान पाता है।। १ ।। चारों युगों में प्रभु-नाम की ही महिमा होती है। जो प्रभु नाम में लगे रहते हैं वे ही मुक्त होते हैं और गुरु के बिना कोई भी प्रभु का नाम प्राप्त नहीं करते।। १ ।। रहाउ ।। त्रेता युग में धर्म का एक पैर (शक्ति) दूर हो गया। जीवन में पाखण्ड आ गया और प्रभु को दूर समझा जाने लगा। जो गुरमुख बनकर बूझता है उसे ही इसका पता लगता है; उसके अन्तर्मन में ही नाम बसता है और नाम के निवास से ही सुख प्राप्त होता है।। २ ।। द्वापर में द्वैतभाव के कारण जीव दुविधा में पड़ा रहता है। अपने को प्रभु से अलग अर्थात अपने को और प्रभु को अलग-अलग मानते हुए लोग भ्रम में भूले रहते हैं। द्वापर में धर्म के दो ही पैर रह जाते हैं परन्तु इसमें भी जो गुरमुख होते हैं वे प्रभु नाम को ही मन में पक्का करते रहते हैं।। ३ ।। कलियुग में धर्म के पास केवल एक ही पैर या बल रह जाता है। एक पाँव पर चलता हुआ जीव माया और मोह को बढ़ाता ही जाता है। माया मोह का घोर अंधकार छा जाता है और अब वह सच्चे गुरु से मिलकर प्रभु नाम के माध्यम से ही संसार सागर से पार उतरता है।। ४ ।। सभी युगों में वह सच्चा एक ही प्रभु स्थित बना रहता है और सबमें वह सत्य ही है अन्य कोई नहीं है। सच्चा गुणानुवाद करने से सत्य रूपी सुख प्राप्त होता है और कोई बिरला ही गुरमुख बनकर उस प्रभु के नाम का बखान करता है।। ५ ।। सभी युगों में उत्तम केवल प्रभु का ही नाम है ; इस रहस्य को कोई बिरला गुरमुख ही जान पाता है। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करता है वही सेवक वास्तव में प्रभु का भक्त है। हे नानक, हर युग में प्रभु नाम की ही महिमा होती है।। ६ ।। १ ।।

रामकली महला ४ घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

यदि भाग्यशाली व्यक्ति का बड़ा भाग्य हो तो वह ही प्रभु के नाम का सुमिरन करता है। नाम का जाप करता हुआ वह प्रभु-नाम से ही सुख प्राप्त करता है और प्रभु नाम में लीन बना हुआ नाम में ही समा जाता है।। १ ।। हे प्राणी, गुरमुख बनकर उस सच्चे प्रभु की भक्ति करते रहो। ऐसा करने से हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाएगा, प्रभु में तुम्हारी लौ लग जाएगी और गुरु की मति में चलते हुए तू प्रभु नाम में लीन हो जाएगा।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का नाम ही सबके अन्दर हीरे, रत्न, जवाहिर और लालों के रूप में है; इन सबके साथ शरीर रूपी सरोवर खूब भरा हुआ है। जिनके माथे पर बड़े भाग्य लेख लिखे हों वे ही गुरु की मति में चलते हुए इन रत्नों को निकाल कर प्राप्त करते रहते हैं।। २ ।। प्रभु का नाम ही रत्न, जवाहिर और लाल है जिसे गुरु अन्दर से निकाल कर हाथ की तली पर रखकर दिखा देते हैं। भाग्यहीन मनमुख व्यक्ति उन रत्नों को प्राप्त नहीं करता है और नहीं जानता कि मामूली तिनकों के नीचे लाखों का माल छिपा पड़ा है।। ३ ।। यदि शुरू से ही माथे पर भाग्यलेख लिखे हों तो सच्चा गुरु अपनी सेवा में लगा लेता है। हे नानक, ऐसा व्यक्ति ही प्रभु-नाम रूपी रत्न, जवाहिर को प्राप्त करता है और गुरमति के माध्यम से प्रभु रूपी धन को पा जाता है।। ४ ।। १ ।। रामकली महला ४ ।। प्रभु के सेवकों के साथ मिलकर आनन्द मंगल बन गया है और वहाँ प्रभु की उत्तम कथा वार्ता सुनाई जाती है। दुर्मति की मैल वहाँ

सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥ १ ॥ राम जन गुरमति रामु बोलाइ ॥ जो जो सुणै कहै सो मुकता राम जपत सोहाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ॥ दरसनु संत देहु करि किरपा सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥ २ ॥ हरि के लोग राम जन नीके भागहीण न सुखाइ ॥ जिउ जिउ राम कहहि जन ऊचे नर निंदक डंसु लगाइ ॥ ३ ॥ ध्रिगु ध्रिगु नर निंदक जिन जन नही भाए हरि के सखा सखाइ ॥ से हरि के चोर वेमुख मुख काले जिन गुर की पैज न भाइ ॥ ४ ॥ दइआ दइआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइ ॥ हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन नानक बखसि मिलाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रामकली महला ४ ॥ हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु वतावै ॥ गुरमुखि साध सेई प्रभ भाए करि किरपा आपि मिलावै ॥ १ ॥ राम मोकउ हरि जन मेलि मनि भावै ॥ अमिउ अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के लोग राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥ हम होवत चेरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै ॥ २ ॥ सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै ॥ बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूड़ु बोलि कूड़ो फलु पावै ॥ ३ ॥ मोकउ धारि क्रिपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै ॥ हउ काटउ काटि बाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ४ ॥ जे वड भाग होवहि वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईऐ ॥ हरि जन अंम्रित कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईऐ ॥ १ ॥ राम मोकउ हरि जन कारै लाईऐ ॥ हउ पाणी पखा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि मुखि लाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन वडे वडे वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईऐ ॥ सतगुर जेवडु अवरु न कोई मिलि सतगुर पुरख धिआईऐ ॥ २ ॥ सतगुर सरणि परे तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईऐ ॥ इकि अपणै सुआइ आइ बहहि गुर आगै जिउ बगुल समाधि लगाईऐ ॥ ३ ॥ बगुला काग नीच की संगति जाइ करंग बिखू मुखि लाईऐ ॥ नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति हंसु कराईऐ

पूरी तरह निकल जाती है और सतसंगति में मिल बैठकर विवेक बुद्धि प्राप्त होती है।। १ ।। प्रभु के सेवक गुरमति में रहते हुए प्रभु नाम का उच्चारण करते हैं। जो-जो प्रभु नाम कहता है वह मुक्त हो जाता है और प्रभु का सुमिरन करता हुआ शोभायमान बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। यदि मुख और मस्तक पर बड़ा भाग्यलेख लिखा हो तो प्रभु अपने सेवकों से मेल करा देता है। हे शान्त पुरुषो, कृपा कर मुझे दर्शन दीजिए जिससे मेरी सारी दरिद्रता और दुख समाप्त हो जाएँ।। २ ।। प्रभु के लोगों को प्रभु के सेवक अच्छे लगते हैं परन्तु भाग्यहीनों को वे अच्छे नहीं लगते। भाग्यहीन उन्हें अच्छा नहीं जानते। जैसे-जैसे प्रभु के भक्त प्रभु नाम का उच्चारण करते हैं तो निन्दक व्यक्ति उन्हें डंक मारते हुए अनेकों रुकावटें खड़ी करते हैं।। ३ ।। उस निन्दक व्यक्ति को बार-बार धिक्कार है जिसे प्रभु के सेवक और सखा अच्छे नहीं लगते। ऐसे व्यक्ति प्रभु के चोर हैं, विमुख हैं और उनके मुँह काले हैं जिन्हें गुरु की इ़ज़्ज़त अच्छी नहीं लगती।। ४ ।। हे प्रभु, दया करो और हमें बचा लो क्योंकि हम दीन तो तेरी ही शरण में हैं। हम बालक हैं और हे प्रभु, तुम मेरे पिता हो। दास नानक को क्षमा कर अपने से मिला ले।। ५ ।। २ ।। रामकली महला ४ ।। प्रभु के साथी साधु पुरुष भले व्यक्ति हैं और प्रभु उन पर अपनी कृपा का हाथ बनाए रहते हैं। गुरमुख बने हुए वही साधु पुरुष प्रभु को अच्छे लगते हैं और अपनी कृपा करके वह उन्हें स्वयं ही मिला लेता है।। १ ।। हे राम, मुझे तो प्रभु के सेवकों का मेल मिलाप ही मन में अच्छा लगता है। प्रभु का अमृत रूपी रस मीठा है और सन्तजनों से मिलकर उसे मुख में डाला जाता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के लोग प्रभु के सेवक उत्तम हैं जिन्हें मिलकर उत्तम पदवी प्राप्त होती है। मैं तो प्रभु के दासों की भी दासी हूँ और मेरा मालिक प्रभु ही हमें खुशी प्रदान करता है।। २ ।। प्रभु के सेवक जो उसकी सेवा सुमिरन करते हैं वे भाग्यशाली हैं और वे ही हृदय और मन तन में प्रेम पैदा करते हैं। जो प्रेम के बिना बहुत बातें किए जाते हैं वे झूठ बोलकर झूठा फल ही प्राप्त करते हैं।। ३ ।। हे संसार के जीवन प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि मैं सन्तों के चरणों में आ पड़ूँ। मैं अपना सिर काटकर प्रभु सन्त के उस रास्ते पर रख दूं जिधर से वह मेरी ओर आ रहा हो।। ४ ।। ३ ।। रामकली महला ४ ।। यदि मेरे बड़े भाग्य हो जाएं तो प्रभु के सेवक को मिलने में देर नहीं लगानी चाहिए। प्रभु के सेवक अमृत के उत्तम सरोवर हैं और बड़े भाग्य से ही उसमें स्नान किया जाता है।। १ ।। हे राम, मुझे प्रभु के सेवक के काम में ही लगाए रखो। मैं तो ऐसे सत-पुरुष के सामने पानी भरता हूँ, पंखा डुलाता हूँ और अनाज पीसता हूँ तथा उसके चरणों की धूलि मल-मल कर मुँह पर लगाता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। जो सच्चे गुरु से मेल मिलाप करा देते हैं प्रभु के वे सेवक बड़े हैं और अत्यन्त ऊँचे हैं। सच्चे गुरु के समान अन्य कोई नहीं है और सच्चे गुरु से ही मिलकर सर्वव्यापक प्रभु का सुमिरन किया जाता है।। २ ।। जो सच्चे गुरु की शरण में आ गया है उसी ने प्रभु को पा लिया है और मेरे मालिक ने उसी की इ़ज़्ज़त बचा ली है। कई तो अपने स्वार्थो के कारण गुरु के सामने उसी प्रकार आ बैठते हैं जैसे बगुला समाधि लगाए रहता है और मौका पाते ही मछली पकड़ लेता है।। ३ ।। बगुले और कौअे जैसे नीचों की संगति में जाकर मुर्दा अथवा विष्ठा में ही मुँह डाला जाता है। हे नानक, मुझे तो संगति में ही प्रभु से मिलाप करा दे क्योंकि संगति में बैठकर ही हंस बना जाता है

॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुर दइआ करहु हरि मेलहु मेरे प्रीतम प्राण हरि राइआ ॥ हम चेरी होइ लगह गुर चरणी जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखाइआ ॥ १ ॥ राम मै हरि हरि नामु मनि भाइआ ॥ मै हरि बिनु अवरु न कोई बेली मेरा पिता माता हरि सखाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे इकु खिनु प्रान न रहहि बिनु प्रीतम बिनु देखे मरहि मेरी माइआ ॥ धनु धनु वड भाग गुर सरणी आए हरि गुर मिलि दरसनु पाइआ ॥ २ ॥ मै अवरु न कोई सूझै बूझै मनि हरि जपु जपउ जपाइआ ॥ नामहीण फिरहि से नकटे तिन घसि घसि नक वढाइआ ॥ ३ ॥ मोकउ जगजीवन जीवालि लै सुआमी रिद अंतरि नामु वसाइआ ॥ नानक गुरू गुरू है पूरा मिलि सतिगुर नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ रामकली महला ४ ॥ सतगुरु दाता वडा वड पुरखु है जितु मिलिऐ हरि उर धारे ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ हरि अंम्रित नामु समारे ॥ १ ॥ राम गुरि हरि हरि नामु कंठि धारे ॥ गुरमुखि कथा सुणी मनि भाई धनु धनु वड भाग हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआवहि ता का अंतु न पावहि पारे ॥ हिरदै काम कामनी मागहि रिधि मागहि हाथु पसारे ॥ २ ॥ हरि जसु जपि जपु वडा वडेरा गुरमुखि रखउ उरि धारे ॥ जे वड भाग होवहि ता जपीऐ हरि भउजलु पारि उतारे ॥ ३ ॥ हरि जन निकटि निकटि हरि जन है हरि राखै कंठि जन धारे ॥ नानक पिता माता है हरि प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ १८ ॥

रागु रामकली महला ५ घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥ माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥ १ ॥ मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥ जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥ २ ॥ मनु तनु थापि कीआ सभु अपना एहो आवण जाणा ॥ जिनि दीआ सो

।। ४ ।। ४ ।। रामकली महला ४ ।। हे सच्चे गुरु, दया करो और मुझे मेरे प्रियतम और प्राणों के प्रभु राजा से मिला दो। मैं दासी होकर गुरु के चरणों में लगती हूँ जिसने मुझे प्रभु की ओर जाने का मार्ग दिखा दिया है।। १ ।। हे राम, मुझे तो प्रभु का नाम ही मन में अच्छा लगता है। प्रभु के बिना मुझे कोई भी संभालने वाला नहीं है और प्रभु ही मेरा पिता माता और मित्र है।। १ ।। रहाउ ।। प्रियतम के बिना एक क्षण के लिए भी मेरे प्राण नहीं बचते और उसे देखे बिना हे मेरी माँ, मैं मर जाती हूँ। मेरे बड़े भाग्य हैं और मैं धन्य हूँ कि मैं गुरु की शरण में आ गया हूँ, मैंने प्रभु गुरु से मिलकर उसका दर्शन पा लिया है।। २ ।। उसके बिना अन्य कोई भी मुझे ना तो सुझाई देता है और ना मैं किसी को जानता हूँ क्योंकि मेरा मन तो प्रभु का ही जाप जपता रहता है। जो प्रभु-नाम से विहीन भटकते रहते हैं वे नकटे की तरह सम्मानहीन हैं और वास्तव में उन्होंने नाक को स्वार्थों के लिए घिसा घिसा कर ही कटवा दिया होता है ।।३।। हे संसार के जीवन स्वामी प्रभु, मेरे हृदय में अपना नाम बसा कर मुझे जीवित कर लो। हे नानक, वह प्रभु ही पूरा गुरु है और सच्चे गुरु से मिलकर उसके नाम का सुमिरन किया जाता है।। ४ ।। ५ ।। रामकली महला ४ ।। दाता सच्चा गुरु बहुत महान एवं सर्वव्यापक है जिसको मिलकर प्रभु को हृदय में धारण किया जाता है। पूर्ण गुरु ने ही मुझे जीवन दान दिया है और अब मैं प्रभु के अमृत नाम को ही याद करता रहता हूँ।। १ ।। हे राम, प्रभु के नाम को ही गुरु ने मेरे कंठ में स्थापित कर दिया है। गुरमुख बनकर हमने मन को भाने वाली प्रभु की कथा वार्ता सुनी और हमारे भाग्य बड़े और धन्य हो गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु का तैतीसों करोड़ माने जाने वाले देवता सुमिरन करते हैं परन्तु उसका ओर-छोर नहीं जान पाते। हृदय से कामवश होकर स्त्रियाँ माँगते है और हाथ फैला- फैला कर धन दौलत की ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ पाना चाहते हैं।। २ ।। हे जीव, प्रभु के महान यश का गायन करते रहो और गुरमुख बनकर उसको हृदय में धारण करो। यदि बड़े भाग्य हों तभी उसका जाप किया जाता है और फिर इस संसार सागर से पार उतरा जाता है।। ३ ।। प्रभु अपने दासों के अत्यन्त निकट है और प्रभु दासों को अपने गले लगाकर रखता है। हे नानक, हरि प्रभु ही माता और पिता है और प्रभु ही हम बच्चों का पालन-पोषण करता है।। ४ ।। ६ ।। १८ ।।

रागु रामकली महला ५ घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे दीनों के दाता प्रभु, कृपा करो और मेरे किसी भी गुण अवगुण पर ध्यान ना दो। हे मालिक, मिट्टी को धोने से क्या होगा अर्थात उसमें से मिट्टी ही निकलती आएगी ; मनुष्य के शरीर का भी यही हाल है ; इसमें से गुण प्रकट नहीं हो सकते।। १ ।। हे मेरे मन, सच्चे गुरु की सेवा करने से ही सुख मिलेगा। तुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाएगा और फिर दुख कभी भी प्रभावित नही करेगा।। १ ।। रहाउ ।। तूने इस शरीर रूपी कच्चे बर्तनों को बनाकर हम पर कृपा की है और इनमें अपनी ज्योति डाल दी है। हमने तो वैसा ही आचरण किया है जैसा अपने लेखों में प्रारम्भ से कर्ता प्रभु ने लिख दिया है।। २ ।। हमने मन और तन को अपना मान रखा है और यही हमारे आवागमन का कारण है। व्यक्ति को जिसने सब कुछ दिया है वह तो

चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥ ३ ॥ जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥ भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला ५ ॥ पवहु चरणा तलि ऊपरि आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥ १ ॥ संतहु ऐसी कथहु कहाणी ॥ सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परपंचु छोडि सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥ सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥ २ ॥ भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥ निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु सिउ करहु बुराई ॥ ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥ धनु धनु से जन जिनी कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥ ४ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ सदा अनंदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी ॥ १ ॥ इह बिधि है मनु जोगनी ॥ मोहु सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि हरि रस भोगनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पइआल पवित्र अलोगनी ॥ आगिआकारी सदा सुखु भुंचै जत कत पेखउ हरि गुनी ॥ २ ॥ नह सिव सकती जलु नही पवना तह अकारु नही मेदनी ॥ सतिगुर जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥ ३ ॥ तनु मनु हरि का धनु सभु हरि का हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अंभै अंभु मिलोगनी ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५ ॥ त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ रतन कोठड़ी अंम्रित संपूरन सतिगुर कै खजानै ॥ १ ॥ अचरजु किछु कहणु न जाई ॥ बसतु अगोचर भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै ॥ २ ॥ सोई जाणै करणैहारा कीता किआ बेचारा ॥ आपणी गति मिति आपे जाणै हरि आपे पूर भंडारा ॥ ३ ॥ ऐसा रसु अंम्रितु मनि चाखिआ त्रिपति रहे आघाई ॥ कहु नानक मेरी आसा पूरी

इसके हृदय में याद नहीं आता और मोह में अँधा होकर यह जीव दिए हुए पदार्थों में ही लिपटा पड़ा है।। ३ ।। जिस प्रभु ने रचना की है वही प्रभु उसके बारे में जानता है और उसका ठिकाना अपरम्पार है। मैं तो भक्ति करता हुआ प्रभु के गुण गाता रहता हूँ और यह नानक तो हे प्रभु, तुम्हारा दास है।। ४ ।। १ ।। रामकली महला ५ ।। इस प्रकार की सेवा करो कि मिट्टी की तरह चरणों के नीचे आ जाओ अर्थात् विनम्रता धारण करो। सबको अपने से उपर और ऊँचा ही मानो तभी तुम प्रभु के दरबार में सुख पा सकोगे।। १ ।। हे सन्तजनों, ऐसी कथा वार्ता कहो जिन्हें सुनकर सुर, नर, देव आदि क्षण भर में ही पवित्र हो जाते हैं ; गुरमुख बनकर ऐसी वाणी का उच्चारण करो।। १ ।। रहाउ ।। प्रपंचों को छोड़कर अपने मूल स्वभाव में स्थित हो जाओ और संसार के किसी भी पदार्थ को झूठा मत कहो। सच्चे गुरु को मिलो और तत्व ज्ञान का मंथन करते हुए संसार की नवनिधियाँ प्राप्त कर लो।। २ ।। भ्रमों को दूर कर दो और हे भाई, गुरमुख बनकर उस प्रभु में लौ लगाते हुए अपनी आत्मा को पहचानो। जब प्रभु को सदैव हाजिर और निकट जानोगे तब फिर किसी से भी बुराई कैसे करोगे।। ३ ।। सच्चे गुरु को मिलने से प्रभु मिलने का मार्ग साफ और बड़ा हो जाता है ; स्वाभाविक रूप से ही वह मालिक मिलता है। वे सेवक धन्य हैं जिन्होंने कलयुग में प्रभु को प्राप्त कर लिया हैं ; दास नानक तो सदैव उन पर कुर्बान जाता है।। ४ ।। २ ।। रामकली महला ५ ।। जब मन प्रभु में लीन हो जाता है तब ना तो धन सम्पदा के आने से खुशी होती है और ना चले जाने से शोक होता है; फिर मन को कोई रोग भी प्रभावित नहीं करता। पूर्ण गुरु को पा लेने से सदा आनन्द बना रहता है और सभी दुख नष्ट हो जाते हैं।। १ ।। इस विधि से मन को प्रभु से जोड़ा जाता है। ऐसे व्यक्ति को मोह, शोक, रोग, लोक-लाज आदि कुछ नहीं कहते क्योंकि उसके पास प्रभु-नाम का रस भोगने के लिये विद्यमान रहता है।। १ ।। रहाउ ।। फिर उसके लिये तो स्वर्ग भी पवित्र है, मृत्यु लोक संसार भी पवित्र है और पाताल लोक भी अलौकिक रूप से पवित्र है। प्रभु की आज्ञा में चलने वाला सदैव सुखों का आनन्द लेता है और वह यत्र-तत्र गुणों के स्वामी उस प्रभु को ही देखता है।। २ ।। अब उसके लिए शिव, शक्ति, जल, पवन, आकाश, धरती आदि कुछ भी नहीं हैं। इस अवस्था में सच्चा गुरु जोड़ देता है और वहाँ स्वयं प्रभु ही प्रभु सब कुछ बना हुआ दिखाई देता है।। ३ ।। यह तन मन प्रभु का ही है, धन भी उस प्रभु का है और प्रभु के गुणों की गिनती भला मैं क्या करूं। नानक कहता है कि मेरे तेरे का भाव गुरु ने मिटा दिया है और अब हम ऐसे एक रूप हो गए हैं जैसे पानी-पानी में मिल जाता है।। ४ ।। ३ ।। रामकली महला ५ ।। प्रभु-नाम तीनों गुणों से निराला बना रहता है और साधक सिद्ध पुरुष आदि भी उसे नहीं जान पाते। उस सच्चे गुरु का खजाना रत्नों की कोठरी है जो अमृत नाम से भरा हुआ है।। १ ।। यह प्रभु नाम मन इन्द्रियों की पहुँच से परे है। हे भाई, यह कोई आश्चर्यजनक पदार्थ है जिसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।। १ ।। रहाउ ।। इसकी कोई कीमत नहीं आँकी जा सकती तो फिर भला कोई इसके बारे में क्या कहे और सुनाए। इसका कथन करने की बुद्धि तो किसी के पास नहीं है परन्तु जो इसको देखता है उसका दिल इसके साथ लग जाता है।। २ ।। वह करने वाला प्रभु ही सब कुछ जानता है और उसका बनाया हुआ यह जीव बेचारा भला क्या कह सकता है। अपना ओर-छोर यह प्रभु स्वयं ही जानता है, और वह प्रभु स्वयं ही पूर्ण भण्डार है।।३।। मन ने ऐसा अमृत रस चखा है कि अब हम तृप्त होकर सन्तुष्ट हो गए हैं। नानक का कथन है कि सच्चे गुरु की

सतिगुर की सरणाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ रामकली महला ५ ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै बैरी सगले साधे ॥ जिनि बैरी है इहु जगु लूटिआ ते बैरी लै बाधे ॥ १ ॥ सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ अनिक राज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चीति न आवसि दूजी बाता सिर ऊपरि रखवारा ॥ बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा ॥ २ ॥ पूरन होइ मिलिओ सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ ततु सारु परम पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥ ३ ॥ बरनि न साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥ ४ ॥ ५ ॥ रामकली महला ५ ॥ तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥ १ ॥ एकै एकै एक तूही ॥ एकै एकै तू राइआ ॥ तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू सागरु हम हंस तुमारे तुम महि माणक लाला ॥ तुम देवहु तिलु संक न मानहु हम भुंचह सदा निहाला ॥ २ ॥ हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ हम खेलह सभि लाड लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥ ३ ॥ तुम पूरन पूरि रहे संपूरन हम भी संगि अघाए ॥ मिलत मिलत मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ रामकली महला ५ ॥ कर करि ताल पखावजु नैनहु माथै वजहि रबाबा ॥ करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ निरति करे करि मनूआ नाचै आणे घूघर साजा ॥ १ ॥ राम को निरतिकारी ॥ पेखै पेखनहारु दइआला जेता साजु सीगारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आखार मंडली धरणि सबाई ऊपरि गगनु चंदोआ ॥ पवनु विचोला करत इकेला जल ते ओपति होआ ॥ पंच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥ २ ॥ चंदु सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुंट भीतरि राखे ॥ दस पातउ पंच संगीता एकै भीतरि साथे ॥ भिंन भिंन होइ भाव दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥ ३ ॥ घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ॥ एकि नचावहि एकि भवावहि इकि आइ जाइ होइ धूरा ॥ कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु

शरण में आने से अब मेरी आशा पूरी हो गई है।। ४ ।। ४ ।। रामकली महला ५ ।। प्रभु ने मेरी सहायता की और मेरे सभी शत्रु काबू में आ गए हैं। जिन शत्रुओं ने इस संसार को लूटा है उनको पकड़कर अब बाँध लिया गया है।। १।। परमेश्वर ही मेरा सच्चा गुरु है। इसी कारण मैं विभिन्न प्रकार के राज को भोगता हुआ उसका आनन्द लेता हूँ और हे प्रभु, मुझे तेरा ही भरोसा है और मैं तेरे नाम का ही सुमिरन करता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। मुझे अन्य बातें याद नहीं आती क्योंकि मेरे सिर पर प्रभु ही मेरा रक्षक है। हे प्रभु, जिस व्यक्ति को एक नाम का आसरा रहता है वह सदैव चिंता-मुक्त बना रहता है।। २ ।। जब वह पूर्ण और सुखदायक प्रभु मिल गया तो फिर किसी बात की भी कमी नहीं रही। अब हमने सार तत्व परमपद को प्राप्त कर लिया है जिसे छोड़कर मन अब कहीं नहीं जाता।। ३ ।। हे सच्चे अदृष्ट और अपरम्पर प्रभु, तू जैसा है मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। हे नानक, हमारा मालिक तो ना तौला जा सकने वाला, अथाह और सदैव स्थिर बना रहने वाला स्वामी है।। ४ ।। ५ ।। रामकली महला ५ ।। हे प्रभु, तू ही सम्मान योग्य अटल प्रभु है और तू ही मेरी जाति-पाति है। तू अटल है और कभी भी अस्थिर होने वाला नहीं है, फिर भला हमें किस बात की चिन्ता है।। १ ।। हे एक ही प्रभु, तू एक और एक ही है। हे राजन, मैं फिर कहता हूँ कि तू एक और एक ही है और एक तेरी ही कृपा से सुख प्राप्त होता है।। १ ।। रहाउ ।। हम तुम्हारे हंस है और तुम हमारे सागर हो और तुम में ही माणिक और लाल पड़े हुए हैं। तुम जरा सी भी शंका ना करते हुए देते रहते हो और हम उन सबका उपभोग करके आनन्दित बने रहते हैं।। २ ।। हम बच्चों के तुम पिता हो और तुम ही हमारे मुँह में दूध देते हो। हम तो सभी खेलते हैं और तुम हमें लाड प्यार करते हुए सदैव गम्भीर और महान गुणों वाले बने रहते हो।। ३ ।। तुम पूर्ण रूप से हममें व्याप्त सम्पूर्ण स्वामी हो तथा तुम्हारे साथ लगकर हम भी तृप्त हो गए हैं। तुमसे मिलते-मिलते हम तुम में ही मिल गए हैं तथा हे नानक, इस मिलाप की अवस्था को कहा नहीं जा सकता।। ४ ।। ६ ।। रामकली महला ५ ।। हाथों को खड़ताल बनाकर, आँखों को पखावज बनाकर और माथे को रबाब बनाकर बजाता रहूँ। कान मीठी बाँसुरी है और जीभ धुन का उच्चारण करती है ; मन नृत्य-करता हुआ संस्कार रूपी घुंघरू साथ लाकर नाचता है।। १ ।। यह प्रभु की नृत्य कला है। दयालु देखने वाला प्रभु इस नृत्य के साज शृंगार को देख रहा है।। १ ।। रहाउ ।। यह सारी धरती अखाड़ा मण्डल है और उपर आकाश तम्बू है, वायु श्वास रूप में बिचौलिया है और सबको अलग-अलग जीवित बनाए रखता है; इस संसार की उत्पत्ति जल से ही हुई है। पाँचों तत्वों का यह शरीर बनाया गया है और नृत्य में लगे हुए बाकी जीवों के साथ इसका मेल मिलाप अपने अर्जित किये संस्कारों के अनुसार ही होता है।।२।। चाँद और सूरज को दो चिरागों की तरह चारों दिशाओं में स्थित किया हुआ है। दस इन्द्रियाँ रूपी वेश्याएँ और पंच तनमात्राएँ (रूप, रस, गन्ध, इत्यादि) गाने वाले हैं। ये सभी इस शरीर के अन्दर साथी बने बैठे हैं। ये सभी भिन्न-भिन्न होते हुए अपने हाव-भाव दिखाते रहते हैं और सभी निराले रूप में बातें करते हैं।। ३ ।। हर घर में दिन रात यही नृत्य चलता रहता है और हर शरीर के अन्दर यही वाद्य बजते रहते हैं। कोई इन्हें नचाता है कोई चारों ओर घूम-घूम कर फेरी लेता है और कोई आवागमन में ही पड़ा हुआ मिट्टी बना रहता है। नानक कहता है कि उसे फिर नहीं नाचना पड़ता जिसने पूर्ण गुरु से

भेटै पूरा ॥ ४ ॥ ७ ॥ रामकली महला ५ ॥ ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥ एका देसी एकु दिखावै एको रहिआ बिआपै ॥ एका सुरति एका ही सेवा एको गुर ते जापै ॥ १ ॥ भलो भलो रे कीरतनीआ ॥ राम रमा रामा गुन गाउ ॥ छोडि माइआ के धंध सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै ॥ बाजा माणु ताणु तजि ताना पाउ न बीगा घालै ॥ फेरी फेरु न होवै कब ही एकु सबदु बंधि पालै ॥ २ ॥ नारदी नरहर जाणि हदूरे ॥ घूंघर खड़कु तिआगि विसूरे ॥ सहज अनंद दिखावै भावै ॥ एहु निरतिकारी जनमि न आवै ॥ ३ ॥ जे को अपने ठाकुर भावै ॥ कोटि मधि एहु कीरतनु गावै ॥ साधसंगति की जावउ टेक ॥ कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥ ४ ॥ ८ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥ कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ १ ॥ कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥ २ ॥ कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥ ३ ॥ कोई कहै तुरकु कोई कहै हिंदू ॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥ ४ ॥ कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥ ५ ॥ ९ ॥ रामकली महला ५ ॥ पवनै महि पवनु समाइआ ॥ जोती महि जोति रलि जाइआ ॥ माटी माटी होई एक ॥ रोवनहारे की कवन टेक ॥ १ ॥ कउनु मूआ रे कउनु मूआ ॥ ब्रहम गिआनी मिलि करहु बीचारा ॥ इहु तउ चलतु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगली किछु खबरि न पाई ॥ रोवनहारु भि ऊठि सिधाई ॥ भरम मोह के बांधे बंध ॥ सुपनु भइआ भखलाए अंध ॥ २ ॥ इहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥ आवत जावत हुकमि अपारि ॥ नह को मूआ न मरणै जोगु ॥ नह बिनसै अबिनासी होगु ॥ ३ ॥ जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ॥ जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ना कोई मरै न आवै जाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ रामकली महला ५ ॥ जपि गोबिंदु गोपाल लालु ॥ राम नाम सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महा कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि

मिलाप कर लिया है।। ४ ।। ७ ।। रामकली महला ५ ।। प्रभु के गुणों का गायन करने वाला एक प्रभु में ही धुन लगाए रखे, एक उसी के ही राग का अलाप करे; एक प्रभु के ही देश का रहने वाला हो और वह जो प्रभु सर्वत्र व्याप्त है उस एक का ही दर्शन कराए। जिस प्रभु को गुरु से जाना जाता है वह अपनी सुरति उसी एक में ही लगाए और सेवा भी उस एक की ही करे।। १ ।। ऐसा कीर्तन करने वाला भला व्यक्ति है। सबमें रमण करने वाले प्रभु के गुण गाते जाओ और माया के सारे प्रपंचों और स्वार्थों को छोड़ दो।। १ ।। रहाउ ।। सन्तोष आदि गुणों को पाँच वाद्य बनाए और उसकी लौ की लीनता ही सात स्वर हों। अभिमान का त्याग उसका वाद्य हो और बल के अभिमान को छोड़ना उसकी तान हो और गलत कार्यों की ओर पाँव ना उठाना उसका ताल हो। नृत्य के दौरान उसका घूमना वास्तव में आवागमन ना रहने का चिन्ह बने और वह एक प्रभु नाम को ही अपने पल्लू से बाँध कर उस पर आचरण करे।। २ ।। नारद आदि का स्वांग भरना वास्तव में उस प्रभु को प्रत्यक्ष देखना समझा जाए। चिंताओं का त्याग करना ही उसके घुंघरुओं की खनक हो। उसका हाव-भाव दिखाना सहज स्वाभाविक रूप से आनन्द का प्रतीक हो। इस प्रकार की नृत्य कला से जीव फिर जन्म-मरण में नहीं आता।। ३ ।। यदि कोई अपने ठाकुर को भा जाए तो ऐसा करोड़ों में कोई एक इस प्रकार का कीर्तन करने वाला होता है। मैं तो साधसंगति का आसरा लेता हूँ क्योंकि नानक का कथन है कि वहाँ पर एक प्रभु का ही गुणानुवाद होता है।। ४ ।। ८ ।। रामकली महला ५ ।। कोई राम राम कहता है और कोई खुदा कहता है, कोई गोसांई प्रभु का सुमिरन करता है और कोई अल्लाह को याद करता है।। १ ।। सभी कारणों का कारण वह कृपा करने वाला प्रभु ही है। हे दयालु प्रभु, सब पर कृपा करो।। १ ।। रहाउ ।। कोई तो तीर्थों पर स्नान के लिए जाता है और कोई हज के लिये जाता है ; कोई तो पूजा अर्चना करता है और कोई सिर झुका कर नमाज पढ़ता है।। २ ।। कोई वेदों का अध्ययन करता है और कोई कतेबों (सामीधर्म ग्रन्ध) को पढ़ता है। कोई नीले वस्त्र धारण करता है और कोई सफेद कपड़े पहनता है।। ३ ।। किसी को तुर्क कहा जाता है और किसी को हिन्दु कहा जाता है; कोई बहिश्त की कामना करता है और कोई स्वर्ग की इच्छा रखता है।। ४ ।। नानक कहता है कि जिन्होंने प्रभु के हुकुम, रज़ा की पहचान कर ली है उस प्रभु और मालिक के रहस्य को उन्होंने जान लिया है।। ५ ।। ९ ।। रामकली महला ५ ।। व्यक्ति के मरने के बाद श्वास रूपी पवन वायु तत्व में मिल जाता है और व्यक्ति का तेज, प्रकाश अथवा ज्योति उस विशाल तेज में लीन हो जाती है। मिट्टी एक हो जाती है इसलिए पीछे रोने वालों के रोने का अब कौन सा आधार बचा है।। १ ।। हे भाई, फिर मरा कौन है और किसकी मौत हुई है। ब्रह्मज्ञानी सभी मिलकर इस बात का विचार करें कि यह तो प्रभु की लीला है जो सामने घटित हो गई।। १ ।। रहाउ।। आगे की कुछ भी खबर नही मिल पाती और एक दिन रोने वाला भी यहाँ से उठकर चल देता है। व्यक्ति ने भ्रम और मोह के बन्धनों से अपने आप को बाँधा है और सपने में अज्ञानी बनकर बड़बड़ाने की तरह जीवन भर प्रलाप करता रहता है।। २ ।। इस रचना को तो उस कर्ता प्रभु ने बनाया है और यहाँ उस प्रभु के अपरम्पार हुकुम के अन्तर्गत जीव आते रहते हैं। कोई ना तो मरा है और ना ही मर सकता है। जीव का वास्तविक स्वरूप तो कभी विनष्ट नहीं होता। इसने तो अमर ही बने रहना है।। ३ ।। जो इस जीव को समझाया गया है वास्तव में वह यह नहीं है। सब कुछ जानने वाले उस परमात्मा पर ही बलिहारी जाओ। नानक कहता हैं कि गुरु ने मेरे भ्रम को समाप्त कर दिया है और अब मुझे पता चल गया है कि ना कोई मरता है, ना कोई आता है और ना कोई जाता है।। ४ ।। १० ।। रामकली महला ५ ।। हे जीव, तू उस प्यारे प्रभु का जाप कर। यदि प्रभु नाम का सुमिरन करता हुआ तू आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहेगा तो फिर तुझे महाकाल रूपी यम खा नहीं सकेगा।। १ ।। रहाउ ।। करोड़ों जन्मों में

भ्रमि भ्रमि आइओ ॥ बडै भागि साधसंगु पाइओ ॥ १ ॥ बिनु गुर पूरे नाही उधारु ॥ बाबा नानकु आखै एहु बीचारु ॥ २ ॥ ११ ॥

रागु रामकली महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चारि पुकारहि ना तू मानहि ॥ खटु भी एका बात वखानहि ॥ दस असटी मिलि एको कहिआ ॥ ता भी जोगी भेदु न लहिआ ॥ १ ॥ किंकुरी अनूप वाजै ॥ जोगीआ मतवारो रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे वसिआ सत का खेड़ा ॥ त्रितीए महि किछु भइआ दुतेड़ा ॥ दुतीआ अरधो अरधि समाइआ ॥ एकु रहिआ ता एकु दिखाइआ ॥ २ ॥ एकै सूति परोए मणीए ॥ गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीए ॥ फिरती माला बहु बिधि भाइ ॥ खिंचिआ सूतु त आई थाइ ॥ ३ ॥ चहु महि एकै मटु है कीआ ॥ तह बिखड़े थान अनिक खिड़कीआ ॥ खोजत खोजत दुआरे आइआ ॥ ता नानक जोगी महलु घरु पाइआ ॥ ४ ॥ इउ किंकुरी आनूप वाजै ॥ सुणि जोगी कै मनि मीठी लागै ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२ ॥ रामकली महला ५ ॥ तागा करि कै लाई थिगली ॥ लउ नाड़ी सूआ है असती ॥ अंभै का करि डंडा धरिआ ॥ किआ तू जोगी गरबहि परिआ ॥ १ ॥ जपि नाथु दिनु रैनाई ॥ तेरी खिंथा दो दिहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गहरी बिभूत लाइ बैठा ताड़ी ॥ मेरी तेरी मुंद्रा धारी ॥ मागहि टूका त्रिपति न पावै ॥ नाथु छोडि जाचहि लाज न आवै ॥ २ ॥ चल चित जोगी आसणु तेरा ॥ सिंङी वाजै नित उदासेरा ॥ गुर गोरख की तै बूझ न पाई ॥ फिरि फिरि जोगी आवै जाई ॥ ३ ॥ जिस नो होआ नाथु क्रिपाला ॥ रहरासि हमारी गुर गोपाला ॥ नामै खिंथा नामै बसतरु ॥ जन नानक जोगी होआ असथिरु ॥ ४ ॥ इउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई ॥ हुणि पाइआ गुरु गोसाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥ १३ ॥ रामकली महला ५ ॥ करन करावन सोई ॥ आन न दीसै कोई ॥ ठाकुरु मेरा सुघड़ु सुजाना ॥ गुरमुखि मिलिआ रंगु माना ॥ १ ॥ ऐसो रे हरि रसु मीठा ॥ गुरमुखि किनै विरलै डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल जोति अंम्रितु हरि नाम ॥

भटकते-भटकते तू इस जीवन में पहुँचा है और बड़े भाग्य से तूने साधसंगति प्राप्त की है।। १ ।। पूर्ण गुरु के बिना उद्धार होना सम्भव नहीं और बाबा नानक यही विचार तुम्हारे सामने कह रहा है।। २ ।। ११ ।।

रागु रामकली महला ५ घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

चारों वेद पुकार-पुकार कर तुझसे कह रहे हैं तू फिर भी इनकी बात नहीं मानता। छः शास्त्र भी केवल एक की बात का बखान करते हैं। अठारह पुराणों ने भी मिलकर उस प्रभु को एक ही बताया है तब भी योगियों ने उस प्रभु के रहस्य को नहीं समझा।। १ ।। हे मतवाले योगी, उस प्रभु की अनुपम वीणा बज रही है परन्तु तू मतवाला और अज्ञानी बना है।। १ ।। रहाउ ।। पहले सतयुग में तो सत्य रूपी नगर की ही रचना बाँधी गई। त्रेता में कुछ अन्तर आ गया अर्थात् सत्य धर्म का एक पाँव कम हो गया। द्वापर में तो धर्म का व्यवहार आधा ही रह गया। कलियुग में धर्म का पैर तो एक ही रह गया परन्तु साथ ही साथ उस जीव के पार उतरने का साधन भी केवल और केवल एक प्रभु को ही माना गया है।। २ ।। शरीरों के ये सभी मनके उस एक प्रभु रूपी सूत्र में ही पिरोए हुए हैं। सूत्र तो एक है परन्तु उसमें गाँठें अलग अलग हैं और सूत्र की तारें भी अलग-अलग हैं अर्थात संसार के जीव अलग-अलग स्वाभाव वाले और बल वाले बने हुए है। शरीरों की माला का यह सिलसिला अनेकों विधियों से चल रहा है परन्तु जिस प्रकार माला में से धागा खींच लिया जाए तो माला के सभी मोती अपने वास्तविक स्थान (थैली) में आ पड़ते हैं इसी प्रकार जीवों में से जब प्रभु की ज्योति खींच कर अलग हो जाती है तो वे अपने मूल स्वरूप में मिल जाते हैं।। ३ ।। चारों युगों में यह एक शरीर ही प्रभु के निवास का स्थान है। इस रहस्यपूर्ण शरीर में कई खिड़कियाँ हैं। जब खोजता हुआ मैं इस घर के द्वार पर पहुँचा तो नानक रूपी योगी ने अपना वास्तविक स्थान पा लिया है।। ४ ।। इस प्रकार अनुपम रूप से वीणा बज रही है और योगी उसे सुनता है और उसके मन को अब यह मधुर लगती है।। १ ।। रहाउ दूसरा।।१।।१२।। रामकली महला ५ ।। धागे के साथ यह शरीर रूपी कपड़े का टुकड़ा सिला हुआ है। नाड़ियों के धागे और हड्डियों की सुई के साथ इसे सिला हुआ है। इसमें पानी और रक्त का खम्बा स्थित किया हुआ है और ऐसे मामूली से शरीर को धारण करके हे योगी, तू क्यों अहंकार में पड़ा है।। १ ।। उस प्रभु का दिन रात सुमिरन कर क्योंकि तेरा यह शरीर रूपी चोला सिर्फ दो दिन का खेल है।। १ ।। रहाउ ।। तू तो बहुत अधिक राख मलकर समाधि लगाए बैठा है और तूने मेरे तेरे की मुद्राएँ धारण कर रखी है। तू घर घर रोटियाँ माँगता है पर तेरी तृप्ति नहीं होती। तुझे उस प्रभु को छोड़कर अन्य सबसे माँगते हुए शर्म नहीं आती।। २ ।। हे योगी, तेरा मन रूपी आसन तो चलचित्र की तरह अस्थिर है परन्तु दिखावे के लिये तू स्थिर होकर बैठा है। तू रहता तो सदैव उदास है परन्तु सिंगी को तू बजाता रहता है। गुरु परमात्मा का रहस्य तो तूने जाना ही नहीं इसलिये हे योगी, तू बार-बार आता जाता ही रहेगा।। ३ ।। जिस पर वह प्रभु कृपालु हो गया हमारी तो उसी गुरु-प्रभु के सामने विनती है। प्रभु का नाम ही हमारी गुदड़ी और हमारा वस्त्र है और दास नानक तो इस प्रकार का योगी बनकर स्थिर हो गया अर्थात उसका मन टिक गया है।। ४ ।। इस प्रकार उसने दिन रात प्रभु का सुमिरन किया है और अब उसने गुरु रूपी प्रभु को पा लिया है।। १ ।। रहाउ दूसरा।। २ ।। १३ ।। रामकली महला ५ ।। करने कराने वाला वह प्रभु ही है मुझे दूसरा कोई दिखाई नहीं देता। मेरा प्रभु सुन्दर और सयाना है। गुरमुख बनकर ही वह मिला है और मैंने उसका आनन्द लिया है।। १ ।। हे भाई, हरिरस इस प्रकार मीठा है कि गुरमुख बनकर किसी बिरले ने ही उसको देखा चखा है।। १ ।। रहाउ ।। उसकी ज्योति निर्मल है। और उस प्रभु का नाम अमृत है

पीवत अमर भए निहकाम ॥ तनु मनु सीतलु अगनि निवारी ॥ अनद रूप प्रगटे संसारी ॥ २ ॥ किआ देवउ जा सभु किछु तेरा ॥ सद बलिहारि जाउ लख बेरा ॥ तनु मनु जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ गुर किरपा ते नीचु निवाजिआ ॥ ३ ॥ खोलि किवारा महलि बुलाइआ ॥ जैसा सा तैसा दिखलाइआ ॥ कहु नानक सभु पड़दा तूटा ॥ हउ तेरा तू मै मनि वूटा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥ रामकली महला ५ ॥ सेवकु लाइओ अपुनी सेव ॥ अंम्रितु नामु दीओ मुखि देव ॥ सगली चिंता आपि निवारी ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलिहारी ॥ १ ॥ काज हमारे पूरे सतगुर ॥ बाजे अनहद तूरे सतगुर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महिमा जा की गहिर गंभीर ॥ होइ निहालु देइ जिसु धीर ॥ जा के बंधन काटे राइ ॥ सो नरु बहुरि न जोनी पाइ ॥ २ ॥ जा कै अंतरि प्रगटिओ आप ॥ ता कउ नाही दूख संताप ॥ लालु रतनु तिसु पालै परिआ ॥ सगल कुटंब ओहु जनु लै तरिआ ॥ ३ ॥ ना किछु भरमु न दुबिधा दूजा ॥ एको एकु निरंजन पूजा ॥ जत कत देखउ आपि दइआल ॥ कहु नानक प्रभ मिले रसाल ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥ रामकली महला ५ ॥ तन ते छुटकी अपनी धारी ॥ प्रभ की आगिआ लगी पिआरी ॥ जो किछु करै सु मनि मेरै मीठा ॥ ता इहु अचरजु नैनहु डीठा ॥ १ ॥ अब मोहि जानी रे मेरी गई बलाइ ॥ बुझि गई त्रिसन निवारी ममता गुरि पूरै लीओ समझाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा राखिओ गुरि सरना ॥ गुरि पकराए हरि के चरना ॥ बीस बिसुए जा मन ठहराने ॥ गुर पारब्रहम एकै ही जाने ॥ २ ॥ जो जो कीनो हम तिस के दास ॥ प्रभ मेरे को सगल निवास ॥ ना को दूतु नही बैराई ॥ गलि मिलि चाले एकै भाई ॥ ३ ॥ जा कउ गुरि हरि दीए सूखा ॥ ता कउ बहुरि न लागहि दूखा ॥ आपे आपि सरब प्रतिपाल ॥ नानक रातउ रंगि गोपाल ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥ रामकली महला ५ ॥ मुख ते पड़ता टीका सहित ॥ हिरदै रामु नही पूरन रहत ॥ उपदेसु करे करि लोक द्रिड़ावै ॥ अपना कहिआ आपि न कमावै ॥ १ ॥ पंडित बेदु बीचारि पंडित ॥ मन का क्रोधु निवारि पंडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै

जिसे पीकर व्यक्ति स्वार्थो से उपर उठकर अमर हो जाता है। अन्दर की तृष्णा रूपी आग दूर करके उसका तन मन शीतल हो जाता है और संसार में वह आनन्द रूप में प्रकट होकर बना रहता है।। २ ।। जब सब कुछ हे प्रभु, तेरा ही है तो मैं तुझे भला क्या दूँ ; मैं तो लाखों बार सदैव तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। तूने मुझे तन मन प्राण और शरीर देकर मेरी रचना की है। गुरु की कृपा से मुझ नीच को भी तूने सम्मान दिया है।। ३ ।। मेरे भ्रम के किवाड़ों को खोलकर तूने मुझे अपने महल में बुला लिया है और अपने वास्तविक स्वरूप को मुझे दिखा दिया है। नानक का कथन है कि मेरे सभी अज्ञान के पर्दे नष्ट हो गए हैं और अब मैं तेरा हूँ और तू मेरे मन में आकर बस गया है।।४ ।।३ ।।१४ ।। रामकली महला ५ ।। प्रभु ने अपने सेवक को अपनी सेवा में लगा लिया है और अपने अमृत नाम को मेरे मुख में डाल दिया है। मेरी सारी चिन्ताएँ उसने स्वयं ही दूर कर दी है और मैं ऐसे गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। हे हमारे सच्चे गुरु, हमारे सभी काम पूरे हो गए हैं और हे सच्चे गुरु अनहद नाद के वाद्य बजने लगे हैं।। १ ।। रहाउ ।। उस प्रभु की महिमा गहन और गम्भीर है। जिसको वह धैर्य देता है वह आनन्दित बना रहता है। वह राजा प्रभु जिसके बन्धनों को काट देता है वह व्यक्ति फिर योनियों में नहीं पड़ता।। २ ।। जिसके अन्तर्मन में वह स्वयं प्रकट हो उठा है उसे फिर कोई दुख और संताप नहीं भोगना पड़ता। प्रभु रूपी लाल, रत्न उसके पल्ले में आ गया है और ऐसा व्यक्ति अपने साथ लेकर सारे कुटुम्ब को भी पार उतार देता है।। ३ ।। अब उसे ना कोई भ्रम होता है ना कोई दुविधा होती है क्योंकि वह केवल एक और एक प्रभु की ही पूजा करता है। जिधर-किधर भी देखा जाता है वह स्वयं दयालु प्रभु दिखाई देता है और नानक का कथन है कि इस प्रकार सभी रसों के घर उस प्रभु से मिलाप हो जाता है।। ४ ।। ४ ।। १५ ।। रामकली महला ५ ।। जो भी मैं मेरापन मैंने धारण किया था प्रभु की आज्ञा प्यारी लगने से वह इस तन से टूट गया है। अब वह जो कुछ भी करता है मेरे मन को मीठा लगता है और इसीलिये इस आश्चर्य को मैंने अपनी आँखों से देख लिया है। हे मेरे प्यारे, अब तो मेरी सभी रुकावटें दूर हो गई हैं ; पूर्ण गुरु ने मुझे समझा दिया है और अब मेरी तृष्णा समाप्त हो गई है तथा ममता का निवारण हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। गुरु ने कृपा करके मुझे अपनी शरण में रख लिया है और गुरु ने ही मुझे प्रभु के चरण पकड़ा दिए हैं। निश्चित तौर से जिसका मन टिक कर शान्त हो गया है वह केवल एक ही परब्रह्म को गुरु मानता है।। २ ।। जो-जो जीव प्रभु के पैदा किए है मैं उनका दास हूँ क्योंकि उन सबमें मेरे प्रभु का ही निवास है। मेरे लिये कोई भी दुष्ट और शत्रु नहीं है। अब तो यह सभी मेरे गले मिलकर ऐसे चल पड़े हैं जैसे भाई-भाई चलते हैं।। ३ ।। जिसको गुरु रूपी प्रभु ने सुख दिया है उसे फिर कभी भी दुखी नहीं होना पड़ता। वह प्रभु स्वयं ही सबका पालन पोषण करता है और नानक तो उस प्रभु के रंग में ही रंगा हुआ है।। ४ ।। ५ ।। १६ ।। रामकली महला ५ ।। मुख से तो व्यक्ति पूरे अर्थ समेत पठन पाठन करता है परन्तु हृदय में उस पूर्ण प्रभु को स्थान नही देता। वह उपदेश तो करता रहता है और लोगों को बहुत पक्की तरह से समझाता रहता है परन्तु अपने कहे हुए पर स्वयं ही आचरण नहीं करता।। १ ।। हे पंडित, तू गहराई से वेद को विचार कर देख और मन के क्रोध को दूर कर दे।। १ ।। रहाउ ।। सामने तो तूने

राखिओ साल गिरामु ॥ मनु कीनो दह दिस बिस्रामु ॥ तिलकु चरावै पाई पाइ ॥ लोक पचारा अंधु कमाइ ॥ २ ॥ खटु करमा अरु आसणु धोती ॥ भागठि ग्रिहि पड़ै नित पोथी ॥ माला फेरै मंगै बिभूत ॥ इह बिधि कोइ न तरिओ मीत ॥ ३ ॥ सो पंडितु गुर सबदु कमाइ ॥ त्रै गुण की ओसु उतरी माइ ॥ चतुर बेद पूरन हरि नाइ ॥ नानक तिस की सरणी पाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि बिघन नही आवहि नेरि ॥ अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ अनिक पाप ता के पानीहार ॥ जा कउ मइआ भई करतार ॥ १ ॥ जिसहि सहाई होइ भगवान ॥ अनिक जतन उआ कै सरंजाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करता राखै कीता कउनु ॥ कीरी जीतो सगला भवनु ॥ बेअंत महिमा ता की केतक बरन ॥ बलि बलि जाईऐ ता के चरन ॥ २ ॥ तिन ही कीआ जपु तपु धिआनु ॥ अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ भगतु सोई कलि महि परवानु ॥ जा कउ ठाकुरि दीआ मानु ॥ ३ ॥ साधसंगि मिलि भए प्रगास ॥ सहज सूख आस निवास ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बिसास ॥ नानक होए दासनि दास ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥ रामकली महला ५ ॥ दोसु न दीजै काहू लोग ॥ जो कमावनु सोई भोग ॥ आपन करम आपे ही बंध ॥ आवनु जावनु माइआ धंध ॥ १ ॥ ऐसी जानी संत जनी ॥ परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु धनु कलतु मिथिआ बिसथार ॥ हैवर गैवर चालनहार ॥ राज रंग रूप सभि कूर ॥ नाम बिना होइ जासी धूर ॥ २ ॥ भरमि भूले बादि अहंकारी ॥ संगि नाही रे सगल पसारी ॥ सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ साकत इव ही करत बिहानी ॥ ३ ॥ हरि का नामु अंम्रितु कलि माहि ॥ एहु निधाना साधू पाहि ॥ नानक गुरु गोविदु जिसु तूठा ॥ घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥ रामकली महला ५ ॥ पंच सबद तह पूरन नाद ॥ अनहद बाजे अचरज बिसमाद ॥ केल करहि संत हरि लोग ॥ पारब्रहम पूरन निरजोग ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद भवन ॥ साधसंगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही जनम मरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ बिरले पावहि ओहु बिस्रामु ॥ भोजनु भाउ

शालिग्राम रखा है परन्तु तेरा मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है। तू तिलक लगाता है और शालिग्राम के चरणों में भी गिरता है परन्तु यह तेरा अन्धा आचरण केवल लोगों को दिखाने और सन्तुष्ट करने के लिये ही होता है।। २ ।। षट कर्म और आसन तथा धौती (अंतड़ियो को साफ करने की योग क्रिया) क्रियाओं को तू करता रहता है तथा भाग्यशाली सेठों के यहाँ उनके घर में तू सदैव धन के लिये पोथियाँ पढ़-पढ़ कर सुनाता रहता है। तू माला फेरता है और धन की विभूतियाँ माँगता रहता है ; हे मित्र, इस विधि से तो कोई भी पार नहीं उतर सका।। ३ ।। जो शब्द-गुरु पर आचरण करता है वही पंडित है और उसी पर से त्रिगुणात्मक माया का प्रभाव उतर चुका होता है। उस पूर्ण प्रभु के नाम में लीन बने रहना चारों वेद हैं और हे नानक, उस प्रभु की शरण में पड़े रहना चाहिए।। ४ ।। ६ ।। १७ ।। रामकली महला ५।। करोड़ों विघ्न पास नहीं आते और विभिन्न प्रकार की माया उसकी दासी हो जाती है; अनेकों पाप उसका पानी भरते हैं अर्थात उसके वश में आ जाते हैं जिस पर प्रभु ने दया कर दी है।। १ ।। जिस का भगवान स्वयं सहायक हो गया उसके अनेकों किए हुए प्रयत्न सफल हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। पैदा किया हुआ जीव बेचारा क्या बिगाड़ सकता है यदि कर्ता प्रभु रक्षक हो। उसकी कृपा से चींटी भी सम्पूर्ण लोक को जीत सकती है। उसकी महिमा अनन्त है। उसका भला कितना वर्णन किया जाए; उसके चरणों पर तो सदैव बलिहारी जाना चाहिए।। २ ।। जिसको प्रभु स्वयं सम्मान देता है वही सुमिरन तप और ध्यान लगाता है ; वही अनेकों प्रकार के दान देता है और इस कलियुग में ऐसा भक्त ही स्वीकार होता है।। ३ ।। साधसंगति में मिलकर व्यक्ति के अन्तर्मन में पूर्ण प्रकाश हो जाता है और वहीं पर स्वाभाविक रूप से सुख मिलने की आशाएँ मन में पैदा हो जाती हैं। पूर्ण सच्चा गुरु ही सब प्रकार का विश्वास दिलाता है और नानक तो उसके दासों का भी दास है।। ४ ।। ७ ।। १८ ।। रामकली महला ५ ।। हे लोगो, किसी को दोष मत दो क्योंकि जो कुछ तुमने आचरण करके कमाया है तुम्हें उसी को ही भोगना है। अपने कर्म स्वयं ही हमारे बन्धन बनते हैं और यह आवागमन तो माया का प्रपंच है।। १ ।। सन्तजनों ने तो इस बात को जान लिया है और गुरु के उपदेश से ही यह प्रकाश अन्तर्मन में होता है।। १ ।। रहाउ ।। यह शरीर, धन और स्त्री सब झूठे ही आडम्बर हैं। हाथी, घोड़े आदि सभी यहाँ से चले जाने वाले राज रंग रूप आदि सभी क्षणिक हैं और प्रभु-नाम के बिना ये सभी मिट्टी हो जाएंगे।। २ ।। भ्रमों में भूले हुए ही ये व्यर्थ में अहंकारी बने हुए हैं। हे जीव, यह सारा विस्तार और प्रपंच साथ जाने वाला नहीं है। हर्ष और शोक में ही तेरा शरीर वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है और प्रभु से टूटे हुए शाक्त की आयु इसी तरह व्यतीत हो जाती है।। ३ ।। इस कलियुग में प्रभु का नाम ही अमृत है और सुखों का यह घर गुरु के पास ही है। हे नानक, गुरु-प्रभु जिस पर प्रसन्न हो गया उसी ने ही घट-घट में उस परमात्मा को देखा है।।४ ।।८ ।।१९ ।।रामकली महला ५।। उस प्रभु के स्थान पर पाँचों वाद्यों के पाँचों प्रकार के शब्दों का पूर्ण नाद होता है। जब वहाँ अनहद बजता है तो आश्चर्य ही आश्चर्य व्याप्त हो जाता है। प्रभु के सेवक सन्तजन वहां आनन्द की क्रीड़ा करते हैं और उस पूर्ण परब्रह्म में सांसारिक प्रपंचों से अलिप्त होकर जुड़े रहते हैं।। १ ।। सतसंगत पूर्ण सहज सुख और आनन्द का स्थान है। साधसंगत में बैठकर प्रभु के गुण गाये जाते हैं और वहाँ रोग, शोक तथा जन्म मरण नहीं रहता।। १ ।। रहाउ ।। वहाँ केवल एक प्रभु-नाम का सुमिरन होता है और कोई बिरला ही ऐसे शान्ति प्रदायक स्थान को प्राप्त करता है। वहाँ प्रेम ही भोजन होता

कीरतन आधारु ॥ निहचल आसनु बेसुमारु ॥ २ ॥ डिगि न डोलै कतहू न धावै ॥ गुर प्रसादि को इहु महलु पावै ॥ भ्रम भै मोह न माइआ जाल ॥ सुंन समाधि प्रभू किरपाल ॥ ३ ॥ ता का अंतु न पारावारु ॥ आपे गुपतु आपे पासारु ॥ जा कै अंतरि हरि हरि सुआदु ॥ कहनु न जाई नानक बिसमादु ॥ ४ ॥ ९ ॥ २० ॥ रामकली महला ५ ॥ भेटत संगि पारब्रहमु चिति आइआ ॥ संगति करत संतोखु मनि पाइआ ॥ संतह चरन माथा मेरो पउत ॥ अनिक बार संतह डंडउत ॥ १ ॥ इहु मनु संतन कै बलिहारी ॥ जा की ओट गही सुखु पाइआ राखे किरपा धारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह चरण धोइ धोइ पीवा ॥ संतह दरसु पेखि पेखि जीवा ॥ संतह की मेरै मनि आस ॥ संत हमारी निरमल रासि ॥ २ ॥ संत हमारा राखिआ पड़दा ॥ संत प्रसादि मोहि कबहू न कड़दा ॥ संतह संगु दीआ किरपाल ॥ संत सहाई भए दइआल ॥ ३ ॥ सुरति मति बुधि परगासु ॥ गहिर गंभीर अपार गुणतासु ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ नानक संतह देखि निहाल ॥ ४ ॥ १० ॥ २१ ॥ रामकली महला ५ ॥ तेरै काजि न ग्रिहु राजु मालु ॥ तेरै काजि न बिखै जंजालु ॥ इसट मीत जाणु सभ छलै ॥ हरि हरि नामु संगि तेरै चलै ॥ १ ॥ राम नाम गुण गाइ ले मीता हरि सिमरत तेरी लाज रहै ॥ हरि सिमरत जमु कछु न कहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु हरि सगल निरारथ काम ॥ सुइना रुपा माटी दाम ॥ गुर का सबदु जापि मन सुखा ॥ ईहा ऊहा तेरो ऊजल मुखा ॥ २ ॥ करि करि थाके वडे वडेरे ॥ किन ही न कीए काज माइआ पूरे ॥ हरि हरि नामु जपै जनु कोइ ॥ ता की आसा पूरन होइ ॥ ३ ॥ हरि भगतन को नामु अधारु ॥ संती जीता जनमु अपारु ॥ हरि संतु करे सोई परवाणु ॥ नानक दासु ता कै कुरबाणु ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥ रामकली महला ५ ॥ सिंचहि दरबु देहि दुखु लोग ॥ तेरै काजि न अवरा जोग ॥ करि अहंकारु होइ वरतहि अंध ॥ जम की जेवड़ी तू आगै बंध ॥ १ ॥ छाडि विडाणी ताति मूड़े ॥ ईहा बसना राति मूड़े ॥ माइआ के माते तै उठि चलना ॥ राचि रहिओ तू संगि सुपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा बारिकु अंध ॥ भरि जोबनि लागा

है और प्रभु की कीर्ति ही जीवन का आधार होती है। उस अटल स्थान की महिमा अनन्त है।। २ ।। वहाँ ना तो कोई अपने उद्देश्य से नीचे गिरता है ना ही कोई डोलता है और ना ही इधर-उधर दौड़ता भागता है। गुरु की कृपा से कोई बिरला ही इस स्थान को प्राप्त करता है। वहाँ ना तो कोई भ्रम है ना भय है ना मोह है और ना ही माया का प्रपंच है। वहाँ शून्य समाधि की अवस्था में कृपालु प्रभु स्थित बना रहता है।। ३ ।। उसका कोई भी ओर छोर नहीं है और वह प्रभु स्वयं ही गुप्त है और स्वयं ही सारी सृष्टि में फैला हुआ है। जिसके अन्तर्मन में प्रभु नाम का स्वाद आ गया, हे नानक, उसकी आश्चर्य अवस्था का तो बखान ही नहीं किया जा सकता।। ४ ।। ६ ।। २० ।। रामकली महला ५ ।। साधसंगति के मिलाप से परब्रह्म प्रभु मन में याद आता है। संगति में ही सन्तोष मन में प्रवेश करता है। सन्त पुरुषों के चरण मेरे माथे पर लगते हैं और अनेकों बार उन शान्त पुरुषों को दण्डवत की जाती है।। १ ।। यह मन सन्तजनों पर बलिहारी जाता है क्योंकि उन्हीं की शरण में आने से मैंने सुख प्राप्त किया है और उन्होंने ही कृपा करके मुझे बचाया है।। १ ।। रहाउ ।। शान्त पुरुषों के चरण मैं धो-धोकर पीता हूँ और सन्तजनों का दर्शन करके मैं जीवित बना रहता हूँ। मेरे मन में सन्तजनों की ही आशा लगी रहती है और सन्त पुरुष ही हमारी पवित्र रासपूंजी हैं।। २ ।। सन्तों ने ही हमारा पर्दा ढका हुआ है और सन्तों की कृपा से मोह में पड़कर व्यक्ति कभी भी दुखी नहीं होता। प्रभु ने ही मुझे सत्संगति दी है और दयालु सन्त जन मेरी सहायता करने वाले हो गए हैं।। ३ ।। उन्हीं के कारण मेरी सुरति, मति और बुद्धि में प्रकाश हो उठा है और वे बहुत ही गहरे, गम्भीर और अपार गुणों के खज़ाने हैं। सभी जीव जन्तुओं का पालन-पोषण वह सन्त रूपी प्रभु ही करता है और नानक तो उस सन्त (प्रभु) को देखकर आनन्दित बना रहता है।। ४ ।। १० ।। २१ ।। रामकली महला ५ ।। हे जीव, घर, राज माल तेरे काम आने वाला नहीं, और विषय विकारों के जंजाल तेरे काम आने वाले नहीं हैं। तेरे सभी चाहने वाले मित्र इत्यादि छल रूप हैं अर्थात विनष्ट हो जाएँगे ; केवल प्रभु का नाम ही तेरे साथ चलेगा।। १ ।। हे मित्र, प्रभु-नाम का गुणानुवाद कर ले क्योंकि प्रभु के सुमिरन से ही तेरी इज़्ज़त बची रहती है ; प्रभु के सुमिरन से यम भी कुछ नहीं कहता।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु के बिना सभी काम निरर्थक है। सोना, चांदी ये सब मिट्टी के समान हैं। शब्द-गुरु का सुमिरन करने से मन में सुख प्राप्त होता है और इस लोक तथा परलोक में तेरा मुख उज्जवल बना रहता है।। २ ।। बड़े-बड़े लोग बहुत कुछ करते हुए थक गए हैं परन्तु इस माया ने किसी का भी काम पूरा नहीं किया है। प्रभु-नाम का जाप कोई बिरला ही करता है और उसी की आशाएँ पूरी होती हैं।। ३ ।। प्रभु के भक्तों का आसरा प्रभु नाम ही होता है और सन्त पुरुषों ने तो इस अपार जीवन को जीत लिया होता है। प्रभु का शान्त पुरुष जो कुछ भी करता है वही हमें स्वीकार होता है और दास नानक तो प्रभु के सन्तजनों पर बलिहारी जाता है।। ४ ।। ११ ।। २२ ।। रामकली महला ५ ।। हे व्यक्ति, तू धन दौलत इकट्ठी करता है और ऐसा करने के लिये लोगों को दुख देता है। परन्तु यह धन तेरे काम नहीं आएगा ; यह तो अन्य लोगों के लिए ही है। तू अहंकार युक्त होकर और अन्धा बनकर कार्य व्यवहार करता है ; तुझे आगे जाने पर यम की रस्सी से बाँधा जाएगा।। १ ।। हे मूर्ख, तू दूसरों के लिये ईर्ष्या छोड़ दे क्योंकि यहाँ तो केवल एक रात भर ही रहना है। इस माया में लीन बना हुआ तू उठकर यहाँ से चल देगा और तू तो दरअसल संसार रूपी स्वप्न में ही लीन बना है।। १ ।। रहाउ ।। बचपन की अवस्था में बालक नासमझ होता है। भरी जवानी में वह कई

दुरगंध ॥ त्रितीअ बिवसथा सिंचे माइ ॥ बिरधि भइआ छोडि चलिओ पछुताइ ॥ २ ॥ चिरंकाल पाई द्रुलभ देह ॥ नाम बिहूणी होई खेह ॥ पसू परेत मुगध ते बुरी ॥ तिसहि न बूझै जिनि एह सिरी ॥ ३ ॥ सुणि करतार गोविंद गोपाल ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ तुमहि छडावहु छुटकहि बंध ॥ बखसि मिलावहु नानक जग अंध ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥ रामकली महला ५ ॥ करि संजोगु बनाई काछि ॥ तिसु संगि रहिओ इआना राचि ॥ प्रतिपारै नित सारि समारै ॥ अंत की बार ऊठि सिधारै ॥ १ ॥ नाम बिना सभु झूठु परानी ॥ गोविद भजन बिनु अवर संगि राते ते सभि माइआ मूठु परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथ नाइ न उतरसि मैलु ॥ करम धरम सभि हउमै फैलु ॥ लोक पचारै गति नही होइ ॥ नाम बिहूणे चलसहि रोइ ॥ २ ॥ बिनु हरि नाम न टूटसि पटल ॥ सोधे सासत्र सिम्रिति सगल ॥ सो नामु जपै जिसु आपि जपाए ॥ सगल फला से सूखि समाए ॥ ३ ॥ राखनहारे राखहु आपि ॥ सगल सुखा प्रभ तुमरै हाथि ॥ जितु लावहि तितु लागह सुआमी ॥ नानक साहिबु अंतरजामी ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥ रामकली महला ५ ॥ जो किछु करै सोई सुखु जाना ॥ मनु असमझु साधसंगि पतीआना ॥ डोलन ते चूका ठहराइआ ॥ सति माहि ले सति समाइआ ॥ १ ॥ दूखु गइआ सभु रोगु गइआ ॥ प्रभ की आगिआ मन महि मानी महा पुरख का संगु भइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल पवित्र सरब निरमला ॥ जो वरताए सोई भला ॥ जह राखै सोई मुकति थानु ॥ जो जपाए सोई नामु ॥ २ ॥ अठसठि तीरथ जह साध पग धरहि ॥ तह बैकुंठु जह नामु उचरहि ॥ सरब अनंद जब दरसनु पाईऐ ॥ राम गुणा नित नित हरि गाईऐ ॥ ३ ॥ आपे घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ दइआल पुरख परगट परताप ॥ कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे ॥ नानक कउ गुर भेटे पूरे ॥ ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि जाप ताप बिस्राम ॥ रिधि बुधि सिधि सुर गिआन ॥ अनिक रूप रंग भोग रसै ॥ गुरमुखि नामु निमख रिदै वसै ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूरबीर धीरज

पापों में लग जाता है। तीसरी अवस्था में वह धन सम्पदा इकट्ठी करता है और जब वृद्ध हो जाता है तो सब कुछ छोड़कर पछताता हुआ यहाँ से चला जाता है।। २ ।। बहुत समय के बाद यह दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त हुआ है परन्तु प्रभु नाम से विहीन होकर यह मिट्टी बन गया है। नाम विहीन देही पशु, प्रेत और मूर्ख व्यक्ति से भी बुरी है ; जिसने इसकी रचना की है यह उसी को ही नहीं जानती।। ३ ।। हे गोविन्द-गोपाल कर्ता प्रभु, हमारी प्रार्थना सुनो ; तुम्ही दीनदयालु और सदैव कृपालु बने रहने वाले हो। तुम ही अगर छुड़वाते हो तो हमारे बन्धन खुलते हैं। हे प्रभु, कृपा करके अपने से मिला लो क्योंकि हे नानक, यह संसार तो अज्ञान के अंधेरे में बँधा है।। ४ ।। १२ ।। २३ ।। रामकली महला ५ ।। प्रभु ने तत्वों का संयोग करके और काट छाँट कर इस शरीर की रचना की है। यह मूर्ख व्यक्ति इसी के साथ ही लिपटा हुआ है। जीव इस देही का पालन पोषण करता है और रोज इसकी सम्भाल करता है परन्तु अन्ततः इसको छोड़कर चल पड़ता है।। १ ।। हे प्राणी, प्रभु नाम के बिना सब झूठ है। जो प्रभु के सुमिरन के बिना अन्य पदार्थों के साथ लीन बने हुए हैं वे सब माया द्वारा ठगे जा रहे हैं।। १ ।। रहाउ ।। तीर्थों पर स्नान करने से मैल नहीं उतरती। धर्मों के कर्मकाण्ड सब अहंकार का ही विस्तार हैं। लोगों को खुश करने से परम गति प्राप्त नहीं होती और प्रभु नाम से विहीन लोग यहाँ से रोते हुए चले जाते हैं।। २ ।। प्रभु-नाम के बिना भ्रम और तृष्णाओं के पर्दे दूर नहीं होते। सभी स्मृतियों और शास्त्रों को निष्ठा पूर्वक पढ़कर यह देख लिया गया है कि प्रभु-नाम के बिना भ्रम का पर्दा खुलता नहीं। जिसे प्रभु स्वयं जपाता है वही नाम सुमिरन करता है और सभी फल प्राप्त करता हुआ वह आनन्द में लीन बना रहता है।। ३ ।। हे रक्षा करने वाले प्रभु, हमें खुद ही बचा लो क्योंकि सभी सुख तुम्हारे ही हाथ में हैं। हे मालिक, तू हमें जिधर लगाता है हम उधर ही लग जाते हैं तथा हे नानक, वह मालिक प्रभु सबके घट-घट की बातों को जानने वाला है।। ४ ।। १३ ।। २४ ।। रामकली महला ५ ।। वह प्रभु जो कुछ करता है हम उसी को ही सुख मानते हैं। यह नासमझ मन साधसंगति में ही सन्तुष्ट होता है। अब इसका भटकना समाप्त हो गया है और यह प्रभु नाम में स्थिर हो गया है। अब यह सत्य परमात्मा में सत्य रूप होकर समा गया है।। १ ।। मेरा सारा दुख और रोग तब से चला गया है जब से मैंने प्रभु के हुकुम को मन में स्वीकार कर लिया है और उस महान सर्वव्यापक प्रभु की संगति मुझे मिल गई है।। १ ।। रहाउ ।। सभी पवित्र हैं और सभी निर्मल हैं। वह प्रभु जो कुछ कर रहा है वह सब भला ही है। वह जहाँ रखता है वही स्थान हमारे लिये मुक्तिदायक है और वह जो भी जपवाता है वह प्रभु का नाम ही है।। २ ।। अड़सठ तीर्थ वहीं हैं जहाँ शान्त पुरुष अपने चरण टिका देते हैं। जहाँ प्रभु नाम का उच्चारण होता है वहीं बैकुण्ठ है। जब उसका दर्शन होता है तो सभी आनन्द प्राप्त हो जाते हैं। प्रभु जैसे गुण वाले बनकर सदैव उस प्रभु का ही गुणानुवाद करते रहना चाहिए।। ३ ।। वह स्वयं ही घर घर में बसा है तथा वह ही दयालु पुरुष है जिसका प्रताप चारों ओर प्रकट हो रहा है। उसने हमारे मन बुद्धि के बन्द द्वारों को खोल दिया है जिससे हमारे भ्रम दूर भाग खड़े हुए हैं। नानक ने तो पूर्ण गुरु के दर्शन कर लिए हैं।। ४ ।। १४ ।। २५ ।। रामकली महला ५ ।। करोड़ों जाप, तपस्याएं आदि वहाँ बस जाती है जिस गुरमुख हृदय में क्षण भर के लिए भी प्रभु नाम बस जाता है। ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ, बुद्धियाँ और दिव्यज्ञान तथा अनेकों प्रकार के रूप, रंग, रस और भोग इत्यादि भी वहीं आकर निवास करते हैं।। १ ।। प्रभु के नाम की महिमा का मूल्य नहीं आँका जा सकता।। १ ।। रहाउ ।। ऐसा व्यक्ति शूरवीर, धैर्यवान

मति पूरा ॥ सहज समाधि धुनि गहिर गंभीरा ॥ सदा मुकतु ता के पूरे काम ॥ जा कै रिदै वसै हरि नाम ॥ २ ॥ सगल सूख आनंद अरोग ॥ समदरसी पूरन निरजोग ॥ आइ न जाइ डोलै कत नाही ॥ जा कै नामु बसै मन माही ॥ ३ ॥ दीन दइआल गोपाल गोविंद ॥ गुरमुखि जपीऐ उतरै चिंद ॥ नानक कउ गुरि दीआ नामु ॥ संतन की टहल संत का कामु ॥ ४ ॥ १५ ॥ २६ ॥ रामकली महला ५ ॥ बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ आगै मिली निथावे थाउ ॥ गुर पूरे की चरणी लागु ॥ जनम जनम का सोइआ जागु ॥ १ ॥ हरि हरि जापु जपला ॥ गुर किरपा ते हिरदै वासै भउजलु पारि परला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु धिआइ मन अटल ॥ ता छूटहि माइआ के पटल ॥ गुर का सबदु अंम्रित रसु पीउ ॥ ता तेरा होइ निरमल जीउ ॥ २ ॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हरि भगति नही छुटकारा ॥ सो हरि भजनु साध कै संगि ॥ मनु तनु रापै हरि कै रंगि ॥ ३ ॥ छोडि सिआणप बहु चतुराई ॥ मन बिनु हरि नावै जाइ न काई ॥ दइआ धारी गोविंद गोसाई ॥ हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥ रामकली महला ५ ॥ संत कै संगि राम रंग केल ॥ आगै जम सिउ होइ न मेल ॥ अहंबुधि का भइआ बिनास ॥ दुरमति होई सगली नास ॥ १ ॥ राम नाम गुण गाइ पंडित ॥ करम कांड अहंकारु न काजै कुसल सेती घरि जाहि पंडित ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का जसु निधि लीआ लाभ ॥ पूरन भए मनोरथ साभ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि आइआ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसाइआ ॥ २ ॥ नाम रतनु जिनि पाइआ दानु ॥ तिसु जन होए सगल निधान ॥ संतोखु आइआ मनि पूरा पाइ ॥ फिरि फिरि मागन काहे जाइ ॥ ३ ॥ हरि की कथा सुनत पवित ॥ जिहवा बकत पाई गति मति ॥ सो परवाणु जिसु रिदै वसाई ॥ नानक ते जन ऊतम भाई ॥ ४ ॥ १७ ॥ २८ ॥ रामकली महला ५ ॥ गहु करि पकरी न आई हाथि ॥ प्रीति करी चाली नही साथि ॥ कहु नानक जउ तिआगि दई ॥ तब ओह चरणी आइ पई ॥ १ ॥ सुणि संतहु निरमल बीचार ॥ राम नाम बिनु गति नही काई गुरु पूरा भेटत उधार ॥

और पूर्ण बुद्धि वाला होता है और वही सहज समाधि की इच्छा बनाए रखने वाला गहन और गम्भीर व्यक्ति होता है। जिसके हृदय में प्रभु नाम बस जाता है। वह सदैव मुक्त बना रहता है और उसके सभी काम सफल होते हैं ।। २ ।। जिसके हृदय में प्रभु नाम बस जाता है उसे समस्त सुख और आनन्द मिल जाते हैं तथा वह सदैव रोग मुक्त बना रहता है। वह ही समदर्शी और पूर्ण रूप से अलिप्त बना रहने वाला होता है तथा वह ना तो फिर जीवन-मरण में आता जाता है तथा ना ही कहीं भटकता है ।।३।। वह प्रभु दीनदयालु और धरती का स्वामी है ; गुरमुख बनकर यदि उसका सुमिरन किया जाए तो हमारी समस्त चिंताएं दूर हो जाती हैं। गुरु ने तो नानक को यही नाम दिया है और यह प्रभु नाम ही सन्तजनों की सेवा है और यह प्रभु नाम ही शान्त पुरुष का काम है।।४।।१५।।२६।। रामकली महला ५ ।। प्रभु नाम जो बीज रूप में प्रत्येक के हृदय में है मैं उसकी कीर्ति का गायन करता रहता हूँ। इसी से मुझ आसरा विहीन व्यक्ति को आगे प्रभु का आसरा मिल गया है। हे जीव, पूर्ण गुरु के चरणों में लग जा और तू जन्म-जन्म का सोया हुआ है, अब जाग जा।।१।। प्रभु के नाम का जब जाप किया गया तो गुरु की कृपा से प्रभु मेरे हृदय में बस गया तथा मैं संसार सागर से पार हो गया हूँ।। १ ।। रहाउ ।। हे मन, तू उस अटल प्रभु के नाम रूपी भण्डार का सुमिरन कर तभी माया का पड़ा पर्दा खुल सकेगा। शब्द-गुरु रूपी अमृत रस का पान कर तभी तेरा मन निर्मल हो सकेगा।। २ ।। अच्छी तरह जाँच पड़ताल करते-करते अब यही निर्णय निकला है कि प्रभु भक्ति के बिना बन्धनों से छुटकारा नहीं हो सकता। यह प्रभु भक्ति साधसंगति में ही हो सकती है जहाँ मन और तन प्रभु-नाम में रंगा जाता है।। ३ ।। हे मन, तू सभी चतुराईयों और बुद्धि को छोड़ दे क्योंकि प्रभु नाम के बिना कुछ भी यहाँ से साथ नहीं जाएगा। उस प्रभु ने मुझ पर दया की और नानक को प्रभु का ही आसरा प्रदान कर दिया।। ४ ।। १६ ।। २७ ।। रामकली महला ५ ।। शान्त पुरुष की संगति प्रभु के प्यार के खेल हैं और ऐसे खेल खेलने वालों का आगे यम से मिलाप नहीं होता। उनकी अंहकार वाली बुद्धि का विनाश हो जाता है और उनकी सम्पूर्ण दुर्मति नष्ट हो जाती है।। १ ।। हे पंडित, तू राम नाम के गुणों का गायन कर क्योंकि कर्मकाण्ड और अहंकार आदि किसी काम के नहीं हैं, तू इनको छोड़ दे और आनन्द पूर्वक अपने वास्तविक घर में स्थित हो जा।। १ ।। रहाउ ।। जिसने भी प्रभु के यश रूपी भण्डार का लाभ प्राप्त कर लिया है उसके सभी मनोरथ पूरे हो गए हैं। दुख उसका भाग खड़ा हुआ है और सुख उसके हृदय में आ बसा है। प्रभु रूपी सन्त की कृपा से उसके हृदय का कमल खिल उठा है।। २ ।। जिसने प्रभु नाम रूपी रत्न के दान को प्राप्त कर लिया है उसे सभी प्रकार के सुखों के खज़ाने मिल गए हैं। पूर्ण प्रभु को पाकर उसका मन सन्तुष्ट हो गया है। अब फिर भला उसे माँगने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है।। ३ ।। प्रभु की पवित्र कथा सुनते हुए व्यक्ति पवित्र हो जाता है और जीभ उसके गुण गाती हुई उत्तम गति को प्राप्त हो जाती है। वही व्यक्ति सफल और स्वीकृत होता है जिसके हृदय में प्रभु-नाम बसता है। हे नानक, वही सेवक उत्तम हैं और मेरे भाई हैं।। ४ ।। १७ ।। २८ ।। रामकली महला ५ ।। माया को जब मजबूती से पकड़ने की कोशिश की जाती है तो यह हाथ नही आती ; जब इसके साथ प्रेम किया जाता है तो यह साथ नहीं चलती। नानक का कथन है कि जब इसे त्याग दिया जाता है तब यह चरणों में आ गिरती है।। १ ।। हे सन्तजनों, इस निर्मल विचार को सुन लो कि प्रभु-नाम के बिना किसी की भी मुक्ति नहीं है और पूर्ण गुरु से मिलने पर ही व्यक्ति का उद्धार होता है।।

१ ॥ रहाउ ॥ जब उस कउ कोई देवै मानु ॥ तब आपस ऊपरि रखै गुमानु ॥ जब उस कउ कोई मनि परहरै ॥ तब ओह सेवकि सेवा करै ॥ २ ॥ मुखि बेरावै अंति ठगावै ॥ इकतु ठउर ओह कही न समावै ॥ उनि मोहे बहुते ब्रहमंड ॥ राम जनी कीनी खंड खंड ॥ ३ ॥ जो मागै सो भूखा रहै ॥ इसु संगि राचै सु कछु न लहै ॥ इसहि तिआगि सतसंगति करै ॥ वडभागी नानक ओहु तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥ २९ ॥ रामकली महला ५ ॥ आतम रामु सरब महि पेखु ॥ पूरन पूरि रहिआ प्रभ एकु ॥ रतनु अमोलु रिदे महि जानु ॥ अपनी वसतु तू आपि पछानु ॥ १ ॥ पी अंम्रितु संतन परसादि ॥ वडे भाग होवहि तउ पाईऐ बिनु जिहवा किआ जाणै सुआदु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अठ दस बेद सुने कह डोरा ॥ कोटि प्रगास न दिसै अंधेरा ॥ पसू परीति घास संगि रचै ॥ जिसु नही बुझावै सो कितु बिधि बुझै ॥ २ ॥ जानणहारु रहिआ प्रभु जानि ॥ ओति पोति भगतन संगानि ॥ बिगसि बिगसि अपुना प्रभु गावहि ॥ नानक तिन जम नेड़ि न आवहि ॥ ३ ॥ १९ ॥ ३० ॥ रामकली महला ५ ॥ दीनो नामु कीओ पवितु ॥ हरि धनु रासि निरास इह बितु ॥ काटी बंधि हरि सेवा लाए ॥ हरि हरि भगति राम गुण गाए ॥ १ ॥ बाजे अनहद बाजा ॥ रसकि रसकि गुण गावहि हरि जन अपनै गुरदेवि निवाजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आइ बनिओ पूरबला भागु ॥ जनम जनम का सोइआ जागु ॥ गई गिलानि साध कै संगि ॥ मनु तनु रातो हरि कै रंगि ॥ २ ॥ राखे राखनहार दइआल ॥ ना किछु सेवा ना किछु घाल ॥ करि किरपा प्रभि कीनी दइआ ॥ बूडत दुख महि काढि लइआ ॥ ३ ॥ सुणि सुणि उपजिओ मन महि चाउ ॥ आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ गावत गावत परम गति पाई ॥ गुर प्रसादि नानक लिव लाई ॥ ४ ॥ २० ॥ ३१ ॥ रामकली महला ५ ॥ कउडी बदलै तिआगै रतनु ॥ छोडि जाइ ताहू का जतनु ॥ सो संचै जो होछी बात ॥ माइआ मोहिआ टेढउ जात ॥ १ ॥ अभागे तै लाज नाही ॥ सुख सागर पूरन परमेसरु हरि न चेतिओ मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रितु कउरा बिखिआ मीठी ॥ साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥ कूड़ि कपटि अहंकारि

१ ।। रहाउ ।। जब व्यक्ति माया को ही मान सम्मान देता है जो यह अपने उपर अभिमान करने लगती है। जब उसे कोई अपने मन से दूर कर देता है तब वह सेविका बनकर उसकी सेवा करती है।। २ ।। पहले तो यह मुँह पर उपर-उपर से सन्तुष्ट करती हुई दिखाई देती है परन्तु अन्ततः व्यक्ति को ठगकर अर्थात उसे धोखा देकर छोड़ जाती है। वह एक स्थान पर तो कभी टिकती ही नहीं है। इस माया ने तो अनेकों ब्रह्माण्डों को मोहित किया हुआ है परन्तु प्रभु के सेवकों ने इसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं।। ३ ।। जो इसे माँगता है वह सदैव भूखा ही बना रहता है जो इसमें लीन बना रहता है वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। इसका त्याग करके जो सत्संगति करता है हे नानक, वह भाग्यशाली है और पार उतर जाता है।। ४ ।। १८ ।। २६ ।। रामकली महला ५ ।। सबमें रमे हुए उस परमात्मा को सब में ही देखो क्योंकि वह एक प्रभु ही पूर्ण रूप से सब में समाया हुआ है। उस अमूल्य रत्न को अपने हृदय में देखो और अपनी वस्तु की स्वयं ही पहचान करो।। १ ।। शान्त पुरुषों की कृपा से अमृत पान करो क्योंकि यह अमृत बड़े भाग्य होने से ही प्राप्त होता है। जीभ पर धारण किये बिना इसके स्वाद को कैसे जाना जा सकता है।। १ ।। रहाउ ।। यह जीव अठारह पुराण और चारों वेदों को सुनकर भी बहरा बना रहता है। करोड़ों प्रकाश होने के बावजूद यह कैसे अंधकार में ही बना रहता है और इसे क्यों दिखाई नहीं देता। पशु का प्रेम तो घास खाने के साथ ही लगा रहता है। प्रभु जिसे नहीं समझाता है वह भला किस विधि से जान बूझ सकता है।। २ ।। वह जानने वाला प्रभु सब कुछ जान रहा है और भक्तजनों के संग वह सदैव ओत-प्रोत बना रहता है। जो व्यक्ति खिले हुए मन से अपने प्रभु का गुणानुवाद करते हैं, हे नानक, यम उनके पास भी नहीं आता।। ३ ।। १६ ।। ३० ।। रामकली महला ५ ।। प्रभु ने अपना नाम देकर हमें पवित्र कर दिया है। अब प्रभु रूपी धन हमारी रास पूँजी बन गई है इसलिये माया हमसे निराश होकर चली गई है। प्रभु ने अपनी सेवा में लगाकर बन्धन काट दिए हैं और प्रभु भक्ति में लगे हुए अब उसके भक्तजन प्रभु के ही गुण गाते हैं।। १ ।। अनहद वाद्य बजने लगे हैं। प्रभु के सेवक रस ले लेकर गुणों का गायन कर रहे हैं क्योंकि अपने गुरुदेव प्रभु ने उन पर कृपा कर दी है।। १ ।। रहाउ ।। पहले का भाग्य जग गया है और जन्म-जन्म का सोया हुआ जीव अब सावधान हो गया है। साधु पुरुष के साथ मन की ग्लानि दूर हो गई है और मन तथा तन प्रभु के रंग में रंग गया है।। २ ।। उस रक्षा करने में समर्थ दयालु प्रभु ने हमारी रक्षा कर ली है। वैसे हमारी ना तो कोई मेहनत है और ना ही हमने कोई सेवा की है। प्रभु ने कृपा करके हम पर दया कर दी है और दुखों में डूबे हुए को बाहर निकाल लिया है।। ३ ।। उसके बारे में सुन-सुनकर उसके प्रति मन में उत्साह पैदा हो गया है और अब आठों प्रहर प्रभु के गुण गाए जाते हैं। उसका गायन करते-करते ही हमने परमगति प्राप्त कर ली है और हे नानक, गुरु की कृपा से ही हमारी लौ प्रभु में लग गई है।। ४ ।। २० ।। ३१ ।। रामकली महला ५ ।। जीव कौड़ी के लिए रत्न का त्याग कर रहा है और जिसे छोड़कर चला जाना है उसी के लिये प्रयत्न करता जा रहा है। जो ओछी बातें करने वाला होता है वही धन सम्पदा का संचय करता है ; माया में ग्रस्त व्यक्ति अभिमानी होकर टेढ़ा-मेढ़ा ही चलता है।। १ ।। हे भाग्यहीन, तुझे शर्म नहीं आती, तूने अपने मन में सुखों के सागर पूर्ण परमेश्वर प्रभु का कभी भी सुमिरन नहीं किया।। १ ।। रहाउ ।। अमृत तो तुझे कड़वा लगता है और माया रूपी ज़हर तुझे मीठा लगता है। प्रभु से टूटे हुए शाक्त का यह हाल हमने अपनी आँखों से देखा है। हे जीव, झूठ, कपट और अहंकार में

रीझाना ॥ नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ॥ २ ॥ माइआ कारणि सद ही झूरै ॥ मनि मुखि कबहि न उसतति करै ॥ निरभउ निरंकार दातारु ॥ तिसु सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ ३ ॥ सभ साहा सिरि साचा साहु ॥ वेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ मोह मगन लपटिओ भ्रम गिरह ॥ नानक तरीऐ तेरी मिहर ॥ ४ ॥ २१ ॥ ३२ ॥ रामकली महला ५ ॥ रैणि दिनसु जपउ हरि नाउ ॥ आगै दरगह पावउ थाउ ॥ सदा अनंदु न होवी सोगु ॥ कबहू न बिआपै हउमै रोगु ॥ १ ॥ खोजहु संतहु हरि ब्रहम गिआनी ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा परम गति पावहि हरि सिमरि परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनि मिनि देखहु सगल बीचारि ॥ नाम बिना को सकै न तारि ॥ सगल उपाव न चालहि संगि ॥ भवजलु तरीऐ प्रभ कै रंगि ॥ २ ॥ देही धोइ न उतरै मैलु ॥ हउमै बिआपै दुबिधा फैलु ॥ हरि हरि अउखधु जो जनु खाइ ॥ ता का रोगु सगल मिटि जाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा पारब्रहम दइआल ॥ मन ते कबहु न बिसरु गुोपाल ॥ तेरे दास की होवा धूरि ॥ नानक की प्रभ सरधा पूरि ॥ ४ ॥ २२ ॥ ३३ ॥ रामकली महला ५ ॥ तेरी सरणि पूरे गुरदेव ॥ तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ तू समरथु पूरन पारब्रहमु ॥ सो धिआए पूरा जिसु करमु ॥ १ ॥ तरण तारण प्रभ तेरो नाउ ॥ एका सरणि गही मन मेरै तुधु बिनु दूजा नाही ठाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा तेरा नाउ ॥ आगै दरगह पावउ ठाउ ॥ दूखु अंधेरा मन ते जाइ ॥ दुरमति बिनसै राचै हरि नाइ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गुर पूरे की निरमल रीति ॥ भउ भागा निरभउ मनि बसै ॥ अंम्रित नामु रसना नित जपै ॥ ३ ॥ कोटि जनम के काटे फाहे ॥ पाइआ लाभु सचा धनु लाहे ॥ तोटि न आवै अखुट भंडार ॥ नानक भगत सोहहि हरि दुआर ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३४ ॥ रामकली महला ५ ॥ रतन जवेहर नाम ॥ सतु संतोखु गिआन ॥ सूख सहज दइआ का पोता ॥ हरि भगता हवालै होता ॥ १ ॥ मेरे राम को भंडारु ॥ खात खरचि कछु तोटि न आवै अंतु नही हरि पारावारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ आनंद गुणी गहीरा ॥ अनहद बाणी पूंजी ॥ संतन हथि राखी कूंजी

तू प्रसन्न बना रहता है परन्तु प्रभु-नाम को सुनते ही मानो तुझे बिच्छू डस जाता है।। २ ।। धन सम्पदा के लिये तू सदैव चिंतित बना रहता है और मनमुख बना हुआ तू कभी भी उस प्रभु की स्तुति नहीं करता। जो दाता निर्भय और निराकार है, हे गँवार, तू उसके साथ अपनी प्रीति नहीं लगाता।। ३ ।। वह प्रभु सभी राजाओं में सबसे उपर सच्चा राजा है और वह किसी पर मोहताज ना होने वाला पूर्ण सम्राट है। भ्रम की गाँठों को बाँधे हुए तू मोह में मग्न होकर उससे लिपटा रहता है। हे नानक, तेरी कृपा से ही पार उतरा जाता है।। ४ ।। २१ ।। ३२ ।। रामकली महला ५ ।। रात दिन प्रभु के नाम का सुमिरन करो और आगे प्रभु के दरबार में स्थान पा जाओ। इस प्रकार तू सदैव आनन्दित बना रहेगा और तुझे कभी भी शोक नहीं होगा। अहंकार का रोग भी तुझे कभी नहीं लगेगा।। १ ।। हे सन्तजनों, प्रभु ब्रह्मज्ञानी को खोजो। विस्मय से भरकर स्वयं ही विस्मय रूप हुआ जाता है ; हे प्राणी, तू प्रभु का सुमिरन कर जिससे तू परमगति पा जाएगा।। १ ।। रहाउ ।। सभी गणनाएं कर अर्थात अच्छी तरह विचार कर सब कुछ देख लो और जान लो कि प्रभु नाम के बिना कोई पार नहीं उतार सकता। सब प्रकार के उपाय साथ चलने वाले नहीं हैं तथा प्रभु के रंग में रंगकर ही संसार सागर को तैरा जाता है।। २ ।। शरीर धोने से मैल नहीं उतरती अपितु इस प्रकार अहंकार और दुविधा का आडम्बर ही फैलता है। प्रभु नाम की औषधि जो व्यक्ति खाता है उसके सम्पूर्ण रोग मिट जाते हैं।। ३ ।। हे दयालु परब्रह्म प्रभु, कृपा करो ताकि मेरे मन से कभी भी परमात्मा विस्मृत ना हो। मैं तेरे दास की चरण धूलि बन जाऊँ। हे प्रभु, नानक की यही इच्छा है जिसे पूरी कर दो।। ४ ।। २२ ।। ३३ ।। रामकली महला ५ ।। हे पूर्ण गुरुदेव प्रभु, मैं तेरी शरण में हूँ और तेरे बिना दूसरा मेरा कोई नहीं। तू ही समर्थ है और पूर्ण परब्रह्म है ; तेरी आराधना वही करता है जिसका भाग्य पूरा और बड़ा हो।। १ ।। हे प्रभु, तेरा नाम तैरने और तैरा लेने वाला है। मेरे मन ने तो केवल एक तेरी शरण पकड़ ली है और तेरे बिना मेरे लिये कोई दूसरा स्थान नहीं।। १।। रहाउ ।। मैं तेरे नाम का जाप करके ही जीवित बना रहता हूँ और आगे प्रभु के दरबार में स्थान प्राप्त करता हूँ। मन से दुख और अंधेरा चला जाता है और प्रभु-नाम में लीन होने से मेरी दुर्मति नष्ट हो जाती है ।। २ ।। प्रभु के चरण कमलों से मेरी प्रीति लग गई है और मेरे पूर्ण गुरु की कार्य करने की नीति भी निर्मल है। वह निर्भय प्रभु मन में बसने से मेरा भय भाग खड़ा हुआ है और अब मेरी जीभ सदैव प्रभु के अमृत नाम का जाप करती रहती है।। ३ ।। करोड़ों जन्मों के मेरे बन्धन कट गए हैं और अब मैंने सच्चे धन का लाभ प्राप्त कर लिया है। उस प्रभु के भण्डार अक्षय हैं उनमें कभी कमी नहीं आती तथा हे नानक, भक्तजन उसके द्वार पर शोभायमान बने रहते हैं।। ४ ।। २३ ।। ३४ ।। रामकली महला ५ ।। प्रभु-नाम ही मेरे लिये रत्न और जवाहिर है। प्रभु-नाम ही मेरे लिये सत्य, सन्तोष और ज्ञान है। प्रभु नाम ही मेरे लिये सहज सुख और दया का खजाना है। प्रभु तो वास्तव में भक्तों के वश में है।। १ ।। मेरे प्रभु का भण्डार इतना विशाल है कि उसे खाते खर्चते हुए उसमें कोई कमी नहीं आती क्योंकि उस प्रभु के ओर छोर को नहीं जाना जा सकता।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का कीर्तन अमूल्य हीरा है और यह कीर्तन ही गहरे गुण वाला होता हुआ आनन्द देने वाला है। प्रभु का नाम ही अनहद शब्द की पूंजी है और सन्तजनों ने इसकी कुंजी अपने हाथ में रखी है

॥ २ ॥ सुंन समाधि गुफा तह आसनु ॥ केवल ब्रहम पूरन तह बासनु ॥ भगत संगि प्रभु गोसटि करत ॥ तह हरख न सोग न जनम न मरत ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाइआ ॥ साधसंगि तिनि हरि धनु पाइआ ॥ दइआल पुरख नानक अरदासि ॥ हरि मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३५ ॥ रामकली महला ५ ॥ महिमा न जानहि बेद ॥ ब्रहमे नही जानहि भेद ॥ अवतार न जानहि अंतु ॥ परमेसरु पारब्रहम बेअंतु ॥ १ ॥ अपनी गति आपि जानै ॥ सुणि सुणि अवर वखानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा नही जानहि भेव ॥ खोजत हारे देव ॥ देवीआ नही जानै मरम ॥ सभ ऊपरि अलख पारब्रहम ॥ २ ॥ अपनै रंगि करता केल ॥ आपि बिछोरै आपे मेल ॥ इकि भरमे इकि भगती लाए ॥ अपणा कीआ आपि जणाए ॥ ३ ॥ संतन की सुणि साची साखी ॥ सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥ नही लेपु तिसु पुंनि न पापि ॥ नानक का प्रभु आपे आपि ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३६ ॥ रामकली महला ५ ॥ किछहू काजु न कीओ जानि ॥ सुरति मति नाही किछु गिआनि ॥ जाप ताप सील नही धरम ॥ किछू न जानउ कैसा करम ॥ १ ॥ ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रिधि न बुधि न सिधि प्रगासु ॥ बिखै बिआधि के गाव महि बासु ॥ करणहार मेरे प्रभ एक ॥ नाम तेरे की मन महि टेक ॥ २ ॥ सुणि सुणि जीवउ मनि इहु बिस्रामु ॥ पाप खंडन प्रभ तेरो नामु ॥ तू अगनतु जीअ का दाता ॥ जिसहि जणावहि तिनि तू जाता ॥ ३ ॥ जो उपाइओ तिसु तेरी आस ॥ सगल अराधहि प्रभ गुणतास ॥ नानक दास तेरै कुरबाणु ॥ बेअंत साहिबु मेरा मिहरवाणु ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३७ ॥ रामकली महला ५ ॥ राखनहार दइआल ॥ कोटि भव खंडे निमख खिआल ॥ सगल अराधहि जंत ॥ मिलीऐ प्रभ गुर मिलि मंत ॥ १ ॥ जीअन को दाता मेरा प्रभु ॥ पूरन परमेसुर सुआमी घटि घटि राता मेरा प्रभु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता की गही मन ओट ॥ बंधन ते होई छोट ॥ हिरदै जपि परमानंद ॥ मन माहि भए अनंद ॥ २ ॥ तारण तरण हरि सरण ॥ जीवन

।। २ ।। सन्तजन शून्य समाधि की गुफा में आसन लगाए रहते हैं और वहाँ केवल पूर्ण ब्रह्म का ही निवास होता है। भक्तों के साथ ही प्रभु विचार विमर्श करता है और उसके पास ना तो हर्ष होता है ना शोक होता है और ना ही आवागमन होता है।। ३ ।। जिस पर कृपा करके उसे प्रभु ने स्वयं मिलाया है उन्होंने ही साधसंगति के प्रभु रूपी धन को प्राप्त किया है। दयालु पुरुष प्रभु के सामने नानक अरदास करता है कि प्रभु ही मेरा कार्य व्यवहार है और प्रभु ही मेरी रास पूंजी है।। ४ ।। २४ ।। ३५ ।। रामकली महला ५ ।। वेद भी उसकी महिमा नहीं जानते और अनेकों ब्रह्मा भी उसके रहस्य को नहीं समझते। अवतार भी उसके ओर-छोर को नहीं जानते क्योंकि वह परमेश्वर परब्रह्म अनन्त है।। १ ।। अपनी अवस्था वह स्वयं ही जानता है बाकी अन्य तो सुन-सुनकर ही उसका बखान करते हैं।। १ ।। रहाउ ।। शिव भी उसके रहस्य को नहीं जानते और सभी तथाकथित देवतागण भी उसे खोजते-खोजते हार गए हैं। देवियाँ भी उसके मर्म को नहीं जानती हैं क्योंकि वह अदृष्ट परब्रह्म प्रभु सबसे उपर है।। २ ।। वह अपने ही रंग में आनन्द लिया करता है ; वह स्वयं ही जीवों को दूर कर देता है और स्वयं ही मिला देता है। कई तो भ्रमों में भटक रहे हैं और कईयों को उसने भक्ति में लगा रखा है। अपने किए को वह स्वयं ही जानता है।। ३ ।। सन्तजनों की भी सच्ची शिक्षा को सुन लो क्योंकि ये जो कुछ बोलते हैं उसे आँखों से देखकर बोलते हैं। उस प्रभु को पुण्य और पाप का कोई भी लेप नहीं है और नानक का प्रभु तो स्वयं अपने आप से ही प्रकट है।। ४ ।। २५ ।। ३६ ।। रामकली महला ५ ।। मैंने कोई भी काम सोच समझकर नहीं किया। मेरे पास ना तो सुरति है ना मति है और ना मुझे कोई ज्ञान है। जप, तप और शील तथा धर्म भी मेरे पास नहीं है। मैं कुछ भी नहीं जानता कि कैसा कर्म करना चाहिए।। १ ।। हे मेरे प्रियतम प्रभु ठाकुर, तेरे बिना मेरा अन्य कोई नहीं है और भूले भटके हुए भी हे प्रभु, हम तेरे ही हैं।। १ ।। रहाउ ।। मेरे पास ना तो कोई ऋद्धि-सिद्धि है और ना बुद्धि है तथा ना ही मेरे अन्दर प्रकाश है। मेरा तो विषय विकारों के गाँव में निवास है। हे करने कराने वाले मेरे एक ही प्रभु, मेरे मन में तो एक तेरे नाम का ही आसरा है।। २ ।। मैं तो इसी भरोसे पर शान्तचित्त होकर जीवित बना हूँ कि हे प्रभु, तेरा तो नाम ही पाप खण्डन है। तू गणनाओं से परे प्राणों का दाता है और जिसे तू जनवाता है वही तुझे जानता है।। ३ ।। जो भी पैदा हुआ है उसे तुझसे ही आशा बनी है तथा सभी गुणों के भण्डार प्रभु की ही आराधना करते हैं। दास नानक तुझ पर कुर्बान जाता है क्योंकि मेरा अनन्त स्वामी कृपा करता रहने वाला है।। ४ ।। २६ ।। ३७ ।। रामकली महला ५ ।। वह प्रभु बचाने वाला दयालु है और करोड़ों जन्मों के खेल को एक निमिष मात्र सुमिरन के फलस्वरूप नष्ट कर देता है। सभी जीव उसकी आराधना करते हैं और गुरु को मिलकर गुरु के उपदेश के माध्यम से ही प्रभु को मिला जाता है।। १ ।। मेरा प्रभु जीवों का दाता है वही पूर्ण परमेश्वर स्वामी है और वही मेरा प्रभु घट-घट में समाया है।। १ ।। रहाउ ।। मेरे मन ने उसका आसरा ले लिया है और उसकी बन्धनों से मुक्ति हो गई है। हृदय में उस परमानन्द प्रभु का जाप करके हम मन से आनन्दित हो उठे हैं।। २ ।। पार उतारने वाली तो प्रभु की ही शरण है तथा

रूप हरि चरण ॥ संतन के प्राण अधार ॥ ऊचे ते ऊच अपार ॥ ३ ॥ सु मति सारु जितु हरि सिमरीजै ॥ करि किरपा जिसु आपे दीजै ॥ सूख सहज आनंद हरि नाउ ॥ नानक जपिआ गुर मिलि नाउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३८ ॥ रामकली महला ५ ॥ सगल सिआनप छाडि ॥ करि सेवा सेवक साजि ॥ अपना आपु सगल मिटाइ ॥ मन चिंदे सेई फल पाइ ॥ १ ॥ होहु सावधान अपुने गुर सिउ ॥ आसा मनसा पूरन होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नही जानै कोइ ॥ सतगुरु निरंजनु सोइ ॥ मानुख का करि रूपु न जानु ॥ मिली निमाने मानु ॥ २ ॥ गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ अवर आसा सभ लाहि ॥ हरि का नामु मागु निधानु ॥ ता दरगह पावहि मानु ॥ ३ ॥ गुर का बचनु जपि मंतु ॥ एहा भगति सार ततु ॥ सतिगुर भए दइआल ॥ नानक दास निहाल ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३९ ॥ रामकली महला ५ ॥ होवै सोई भल मानु ॥ आपना तजि अभिमानु ॥ दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥ पूरन एही सुआउ ॥ १ ॥ आनंद करि संत हरि जपि ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि मंतु निरमल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक की करि आस भीतरि ॥ निरमल जपि नामु हरि हरि ॥ गुर के चरन नमसकारि ॥ भवजलु उतरहि पारि ॥ २ ॥ देवनहार दातार ॥ अंतु न पारावार ॥ जा कै घरि सरब निधान ॥ राखनहार निदान ॥ ३ ॥ नानक पाइआ एहु निधान ॥ हरे हरि निरमल नाम ॥ जो जपै तिस की गति होइ ॥ नानक करमि परापति होइ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ४० ॥ रामकली महला ५ ॥ दुलभ देह सवारि ॥ जाहि न दरगह हारि ॥ हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ अंत की बेला लए छडाई ॥ १ ॥ राम के गुन गाउ ॥ हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले अचरज पुरखु धिआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठत बैठत हरि जापु ॥ बिनसै सगल संतापु ॥ बैरी सभि होवहि मीत ॥ निरमलु तेरा होवै चीत ॥ २ ॥ सभ ते ऊतम इहु करमु ॥ सगल धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥ जनम जनम का उतरै भारु ॥ ३ ॥ पूरन तेरी होवै आस ॥ जम की कटीऐ तेरी फास ॥ गुर का उपदेसु सुनीजै ॥ नानक

प्रभु के चरण ही मेरे जीवन का आकार-व्यवहार हैं। प्रभु ही सन्त जनों के प्राणों का आधार है और वही ऊँचे से ऊँचा अपरम्पार है।। ३ ।। वह बुद्धि श्रेष्ठ है जिससे प्रभु का सुमिरन किया जाता है। तू जिस पर कृपा करता है ऐसी बुद्धि तू उसे ही देता है। प्रभु का नाम ही सहज सुख और आनन्द है तथा नानक ने गुरु से मिलकर इस नाम का सुमिरन किया है।। ४ ।। २७ ।। ३८ ।। रामकली महला ५ ।। हे जीव, तू सारी चतुराइयाँ छोड़ दे और सेवक बनकर प्रभु की सेवा कर। जो सम्पूर्ण रूप से अपने अभिमान को मिटा देते हैं वे ही मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं।। १ ।। अपने गुरु के प्रति सदैव सावधान बने रहो अर्थात उसमें चित्त लगाए रहो। आशाएँ और मानसिक तृष्णाएँ उसी से पूर्ण होंगी और उस गुरु के माध्यम से ही सुखों के सम्पूर्ण खजाने मिलेंगे।। १ ।। रहाउ।। दूसरा कोई भी नहीं जाना जाता क्योंकि सच्चा गुरु वह पवित्र परमात्मा ही है। सच्चे गुरु को मनुष्य का रूप मत जानो ; सच्चे गुरु से मिलकर तो बलहीन को भी सम्मान प्राप्त हो जाता है।। २ ।। गुरु परमात्मा में ही अपना ध्यान टिकाए रखो तथा अन्य सभी आशाओं का त्याग कर दो। प्रभु के नाम भण्डार को ही जब माँगोगे तो प्रभु के दरबार में तभी तुम्हें सम्मान प्राप्त होगा।। ३ ।। गुरु के उपदेश को मंत्र की तरह याद रखो यही भक्ति का सार तत्व है। सच्चा गुरु दयालु हो गया है तो दास नानक भी आनन्द पूर्ण बन गया है।। ४ ।। २८ ।। ३६ ।। रामकली महला ५ ।। जो हो रहा है उसी को भला समझ और अपने अभिमान का त्याग कर। दिन रात सदैव प्रभु के गुण गाते रहो क्योंकि यही जीवन का पूरा प्रयोजन है।। १ ।। हे शान्त पुरुष, प्रभु का नाम जप और आनन्दित बना रह। सभी सयानापन तथा चतुराईयाँ छोड़ दे तथा गुरु के निर्मल उपदेश का सुमिरन करता रह।। १ ।। रहाउ ।। अपने हृदय में केवल एक प्रभु की ही आशा रख और प्रभु के निर्मल नाम का ही जाप कर। गुरु के चरणों को प्रणाम कर और संसार सागर से पार उतर जा।। २ ।। देने वाला वह दाता प्रभु है जिसका ना तो कोई अन्त है और ना ही कोई ओर-छोर है। जिस प्रभु के घर में सभी खज़ाने हैं आखिर में वही हमारी रक्षा करने वाला है।। ३ ।। नानक ने तो यह प्रभु का निर्मल नाम रूपी खज़ाना ही प्राप्त किया है। जो इसका सुमिरन करता है उसी की मुक्ति होती है परन्तु हे नानक, यह भाग्य से ही प्राप्त होता है।। ४ ।। २६ ।। ४० ।। रामकली महला ५ ।। हे जीव, तू इस दुर्लभ शरीर को सफल बना ले ताकि तू उस प्रभु के दरबार में हारा हुआ ना जाए। इस लोक और परलोक में तेरी महिमा होगी और अंतिम समय में वह प्रभु तुझे छुड़ा लेगा।। १ ।। हे जीव, उस प्रभु के गुण गाओ जिससे तेरा यह लोक और परलोक सुखमय बन जाए ; उस आश्चर्य रूपी प्रभु का तू सुमिरन करता रह।। १ ।। रहाउ ।। उठते-बैठते प्रभु का सुमिरन करने से सभी दुख विनष्ट हो जाते हैं ; सभी शत्रु मित्र बन जाते हैं और तेरा चित्त निर्मल हो जाता है।। २ ।। सबसे उत्तम कर्म यही है और सभी धर्मो में श्रेष्ठ धर्म (कर्तव्य) भी यही है कि तू उठते-बैठते प्रभु का सुमिरन करता रह। प्रभु सुमिरन से तेरा उद्धार होगा और जन्मों-जन्मान्तरों का तेरा बोझ उतर जाएगा।। ३ ।। तेरी आशा पूरी हो जाएगी और तेरा यम का फंदा कट जाएगा। गुरु का उपदेश सुनकर हे नानक,

सुखि सहजि समीजै ॥ ४ ॥ ३० ॥ ४१ ॥ रामकली महला ५ ॥ जिस की तिस की करि मानु ॥ आपन लाहि गुमानु ॥ जिस का तू तिस का सभु कोइ ॥ तिसहि अराधि सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने ॥ नाम बिना किछु कामि न आवै मेरा मेरा करि बहुतु पछुताने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो करै सोई मानि लेहु ॥ बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ तिस का भाणा लागै मीठा ॥ गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥ २ ॥ वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ जिसु चिति आए बिनसहि दुखा ॥ हलति पलति तेरा ऊजल मुखा ॥ ३ ॥ कउन कउन उधरे गुन गाइ ॥ गनणु न जाई कीम न पाइ ॥ बूडत लोह साधसंगि तरै ॥ नानक जिसहि परापति करै ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ४२ ॥ रामकली महला ५ ॥ मन माहि जापि भगवंतु ॥ गुरि पूरै इहु दीनो मंतु ॥ मिटे सगल भै त्रास ॥ पूरन होई आस ॥ १ ॥ सफल सेवा गुरदेवा ॥ कीमति किछु कहणु न जाई साचे सचु अलख अभेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन आपि ॥ तिस कउ सदा मन जापि ॥ तिस की सेवा करि नीत ॥ सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥ २ ॥ साहिबु मेरा अति भारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जन का राखा सोई ॥ ३ ॥ करि किरपा अरदासि सुणीजै ॥ अपणे सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ नानक जापी जपु जापु ॥ सभ ते ऊच जा का परतापु ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ४३ ॥ रामकली महला ५ ॥ बिरथा भरवासा लोक ॥ ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ अवर छूटी सभ आस ॥ अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥ १ ॥ एको नामु धिआइ मन मेरे ॥ कारजु तेरा होवै पूरा हरि हरि हरि गुण गाइ मन मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही कारन करन ॥ चरन कमल हरि सरन ॥ मनि तनि हरि ओही धिआइआ ॥ आनंद हरि रूप दिखाइआ ॥ २ ॥ तिस ही की ओट सदीव ॥ जा के कीने है जीव ॥ सिमरत हरि करत निधान ॥ राखनहार निदान ॥ ३ ॥ सरब की रेण होवीजै ॥ आपु मिटाइ मिलीजै ॥ अनदिनु धिआईऐ नामु ॥ सफल नानक इहु कामु ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४४ ॥ रामकली महला ५ ॥ कारन करन करीम ॥ सरब प्रतिपाल रहीम ॥ अलह अलख अपार ॥ खुदि

सहज सुख में लीन हुआ जाता है।। ४ ।। ३० ।। ४१ ।। रामकली महला ५ ।। धन सम्पदा जिसकी है तू उसी की मान ; इसे अपना मत समझ और अपना अभिमान उतार कर फेंक दे। तू जिस प्रभु का है उसका तो सब कुछ ही है ; उसकी आराधना कर जिससे तू सदैव सुखी बना रहेगा ।।१।। हे अज्ञानी जीव, भ्रमों में क्यों भटक रहा है। प्रभु-नाम के बिना कुछ भी काम नहीं आता क्योंकि मेरा-मेरा करते हुए तो बहुत से लोग पछताते रहे हैं।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु जो करता है उसे स्वीकार करो और बिना स्वीकार किए हुए तू मिट्टी में मिल जाएगा। उसका हुकुम मीठा लगता है परन्तु गुरु की कृपा से वह किसी बिरले के ही मन में निवास करता है।। २ ।। वह मन वाणी से परे प्रभु स्वयं बेपरवाह है इसलिये हे मन, तू आठों प्रहर उसका जाप कर। मन में उसका सुमिरन करने से दुख विनष्ट हो जाते हैं तथा इस लोक तथा परलोक में तेरा मुख उज्जवल हो जाता है।। ३ ।। कौन-कौन उस प्रभु के गुणों को गाकर संसार सागर से पार हो गया है उनकी गिनती नहीं की जा सकती और उनका मूल्य नहीं आँका जा सकता। डूबता हुआ लोहा भी साधसंगति में तैर जाता है परन्तु हे नानक, ऐसा उसी के साथ संभव होता है जिसे यह प्राप्ति प्रभु करवा दे।। ४ ।। ३१ ।। ४२।। रामकली महला ५ ।। पूर्ण गुरु ने यही उपदेश दिया है कि मन में प्रभु का जाप करते रहो। ऐसा करने से मेरे सभी भय मिट गए हैं और मेरी आशा पूरी हो गई है।। १ ।। उस गुरुदेव की की हुई सेवा फलदायक होती है ; उस गुरुदेव का मूल्य नहीं आँका जा सकता क्योंकि वह सत्य ही सत्य है और उसके रहस्य को नहीं जाना जा सकता।। १ ।। रहाउ ।। करने-कराने वाला प्रभु वह स्वयं है और हे मन, तू सदैव उसका जाप कर। सदैव उसकी सेवा करता रह ; हे मेरे मित्र, तू सत्य और स्वाभाविक सुख प्राप्त कर लेगा।। २ ।। मेरा मालिक अत्यन्त बड़ा और विशाल है तथा क्षण भर में ही वह स्थापना करके मिटा देने वाला है। उसके बिना अन्य कोई नहीं है और अपने सेवक का रक्षक केवल वह ही है।। ३ ।। हे प्रभु, कृपा करके मेरी अरदास सुनो ओर अपने इस सेवक को दर्शन प्रदान करो। हे नानक, मै उस प्रभु का ही जाप जपता रहूँ जिसका तेज बल सबसे ऊँचा है।। ४ ।। ३२ ।। ४३ ।। रामकली महला ५ ।। लोगों का भरोसा करना तो व्यर्थ ही है। हे ठाकुर प्रभु, मुझे तेरा ही आसरा है। जब मैंने गुणों के भण्डार चिन्ता रहित उस प्रभु का सुमिरन किया तो मेरी सभी अन्य इच्छाएँ समाप्त हो गई हैं।। १ ।। हे मेरे मन, एक प्रभु के नाम का ही सुमिरन कर। हे मन, तू प्रभु के ही गुण गाता रह, इसी से तेरा काम पूरा होगा।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तुम ही कारण हो और तुम ही करने वाले हो। मैं तो प्रभु के चरण कमलों की शरण में पड़ा हूँ। मैंने तो तन मन से उसी प्रभु का ध्यान किया है और आनन्द स्वरूप उस प्रभु ने मुझे अपना रूप दिखा दिया है।। २ ।। मुझे सदैव उसी का ही आसरा है जिसने इन जीवों की रचना की। प्रभु का सुमिरन करते हुए ही खजाने प्राप्त होते हैं और अंत में वही प्रभु हमारा रक्षक है।। ३ ।। सबकी चरण धूलि बन जाओ और अपने आप को मिटाकर उस प्रभु से मिलाप कर लो। प्रत्येक दिन उसके नाम की आराधना करो क्योंकि हे नानक, यही काम फलदायक है।। ४ ।। ३३ ।। ४४ ।। रामकली महला ५ ।। करने-कराने वाला और जीवों पर कृपा करने वाला तथा सबका पालन करने वाला तथा सब पर रहम करने वाला वह प्रभु ही है। वह अल्लाह इन्द्रियों से परे अपरम्पार है और वह स्वयं ही

खुदाइ वड बेसुमार ॥ १ ॥ ओं नमो भगवंत गुसाई ॥ खालकु रवि रहिआ सरब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगंनाथ जगजीवन माधो ॥ भउ भंजन रिद माहि अराधो ॥ रिखीकेस गोपाल गोुविंद ॥ पूरन सरबत्र मुकंद ॥ २ ॥ मिहरवान मउला तूही एक ॥ पीर पैकांबर सेख ॥ दिला का मालकु करे हाकु ॥ कुरान कतेब ते पाकु ॥ ३ ॥ नाराइण नरहर दइआल ॥ रमत राम घट घट आधार ॥ बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥ लीला किछु लखी न जाइ ॥ ४ ॥ मिहर दइआ करि करनैहार ॥ भगति बंदगी देहि सिरजणहार ॥ कहु नानक गुरि खोए भरम ॥ एको अलहु पारब्रहम ॥ ५ ॥ ३४ ॥ ४५ ॥ रामकली महला ५ ॥ कोटि जनम के बिनसे पाप ॥ हरि हरि जपत नाही संताप ॥ गुर के चरन कमल मनि वसे ॥ महा बिकार तन ते सभि नसे ॥ १ ॥ गोपाल को जसु गाउ प्राणी ॥ अकथ कथा साची प्रभ पूरन जोती जोति समाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिसना भूख सभ नासी ॥ संत प्रसादि जपिआ अबिनासी ॥ रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ हरि मिलणै की एह नीसानी ॥ २ ॥ मिटे जंजाल होए प्रभ दइआल ॥ गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ परा पूरबला करमु बणि आइआ ॥ हरि के गुण नित रसना गाइआ ॥ ३ ॥ हरि के संत सदा परवाणु ॥ संत जना मसतकि नीसाणु ॥ दास की रेणु पाए जे कोइ ॥ नानक तिस की परम गति होइ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४६ ॥ रामकली महला ५ ॥ दरसन कउ जाईऐ कुरबानु ॥ चरन कमल हिरदै धरि धिआनु ॥ धूरि संतन की मसतकि लाइ ॥ जनम जनम की दुरमति मलु जाइ ॥ १ ॥ जिसु भेटत मिटै अभिमानु ॥ पारब्रहमु सभु नदरी आवै करि किरपा पूरन भगवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की कीरति जपीऐ हरि नाउ ॥ गुर की भगति सदा गुण गाउ ॥ गुर की सुरति निकटि करि जानु ॥ गुर का सबदु सति करि मानु ॥ २ ॥ गुर बचनी समसरि सुख दूख ॥ कदे न बिआपै त्रिसना भूख ॥ मनि संतोखु सबदि गुर राजे ॥ जपि गोबिंदु पड़दे सभि काजे ॥ ३ ॥ गुरु परमेसरु गुरु गोविंदु ॥ गुरु दाता दइआल बखसिंदु ॥ गुर चरनी जा का मनु लागा ॥ नानक दास तिसु पूरन भागा ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४७ ॥

अपना मालिक खुदा है और अनन्त है।। १ ।। उस ओअंकार भगवंत और धरती के स्वामी और रक्षक कहे जाने वाले प्रभु को नमस्कार है। वह कर्ता प्रभु सभी स्थानों में व्याप्त है।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु सारे संसार का नाथ और सारे संसार का जीवन है। भयभंजन उस प्रभु की हृदय में आराधना करो। इन्द्रियों का स्वामी वही धरती का पालनहार और धरती का मालिक है। मुक्तिदाता वह प्रभु पूरी तरह से सर्वत्र व्याप्त है।। २ ।। हे प्रभु, तू एक ही कृपा करने वाला और मुक्ति देने वाला है ; तू ही पीर पैगम्बर और शेख है। जीवों के दिलों का मालिक प्रभु दिलों में से ही आवाज देता है। वह धार्मिक पुस्तकों में नहीं मिलता और वह कुरान, कतेब तथा अन्य धार्मिक पुस्तकों से भी पवित्र है।। ३ ।। वही नारायण, नरसिंह और दयालु है। प्रत्येक हृदय में रमण करने वाला वह प्रभु प्रत्येक हृदय का आसरा है। वह व्यापक प्रभु सभी स्थानों में बस रहा है और उसकी लीला को देखा समझा नहीं जा सकता।। ४ ।। हे दया करने वाले प्रभु, कृपा कर तथा हे सृजन करने वाले, हम लोगों को बन्दगी और भक्ति प्रदान कर। नानक का कथन है कि गुरु ने उसके भ्रमों को मिटा दिया है कि ये सब अलग-अलग हैं ; अल्लाह और परब्रह्म परमात्मा एक ही हैं।। ५ ।। ३४ ।। ४५ ।। रामकली महला ५ ।। करोड़ो जन्मों के हमारे पाप नष्ट हो गए हैं और प्रभु का सुमिरन करते रहने से अब कोई भी संताप नहीं बचा है। जबसे गुरु के चरण कमल मेरे मन में बस गए हैं सभी भयानक विकार मेरे तन से भाग खड़े हुए हैं।। १ ।। हे प्राणी, धरती के पालनकर्ता प्रभु के गुण गाओ। उस पूर्ण प्रभु की अकथनीय कथा ही सच्ची है और जीव की ज्योति उसी की ज्योति में मिल जाती है।। १ ।। रहाउ ।। हमारी तृष्णा और भूख सब समाप्त हो गई है और सन्तजनों की कृपा से हमने अविनाशी प्रभु का सुमिरन किया है। प्रभु के मिलने की यही निशानी है कि दिन रात प्रभु की सेवा ही की जाती है।। २ ।। प्रभु दयालु हो गया और मेरे सभी जंजाल मिट गए हैं ; गुरु का दर्शन करके मैं आनन्दित हो गया हूँ। मेरा पूर्व जन्मों का भाग्य जाग उठा है और अब मेरी जीभ सदैव प्रभु का गुणानुवाद ही करती है।। ३ ।। प्रभु के सन्तजन सदैव स्वीकृत बने रहते हैं और सन्तों के माथे पर प्रभु की ओर से स्वीकृति का निशान बना रहता है। प्रभु के दास की चरणधूलि भी यदि कोई पा जाए तो हे नानक, उसकी भी मुक्ति हो जाती है।। ४ ।। ३५ ।। ४६ ।। रामकली महला ५ ।। उसके चरणकमलों का हृदय में ध्यान लगाते हुए उसके दर्शन पर बलिहारी जाना चाहिए। सन्तजनों की चरण धूलि माथे पर लगाओ जिससे जन्मों-जन्मों की दुर्मति की मैल छूट जाती है।। १ ।। हे प्रभु, मुझे ऐसे लोगों से मिला दे जिनके मिलने से अभिमान मिट जाता है ; चारों ओर प्रभु नजर आता है इसलिए हे पूर्ण प्रभु, कृपा कर और उनसे मिला दो।। १ ।। रहाउ ।। गुरु का यश ऐसा है कि उसको मिलने से प्रभु-नाम का ही जाप किया जाता है। गुरु की भक्ति भी यही है कि सदैव उस प्रभु के गुण गाते रहो। गुरु की सुरति भी यही है कि उस प्रभु को अत्यन्त निकट जाना जाता है और शब्द गुरु को सत्य समझा जाता है।। २ ।। गुरु के उपदेश के माध्यम से सुख और दुख को समान समझा जाता है और फिर कभी भी तृष्णा और भूख प्रभावित नही करती। मन में सन्तोष आ जाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से तृप्त हुआ जाता है। प्रभु का सुमिरन करते हुए हमारे सभी पर्दे ढके ही रहते हैं।। ३ ।। परमेश्वर ही गुरु है और धरती का मालिक वह प्रभु ही गुरु है। गुरु ही दाता, दयालु और कृपा करने वाला है। दास नानक कहता है कि गुरु के चरणों में जिसका मन लग गया वह पूर्ण रूप से भाग्यशाली है।। ४ ।। ३६ ।। ४७ ।।

रामकली महला ५ ॥ किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥ मूड़ मुगध तेरा संगी कवन ॥ रामु संगी तिसु गति नही जानहि ॥ पंच बटवारे से मीत करि मानहि ॥ १ ॥ सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥ गुण गोविंद रवीअहि दिनु राती साधसंगि करि मन की प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु बिहानो अहंकारि अरु वादि ॥ त्रिपति न आवै बिखिआ सादि ॥ भरमत भरमत महा दुखु पाइआ ॥ तरी न जाई दुतर माइआ ॥ २ ॥ कामि न आवै सु कार कमावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ राखन कउ दूसर नही कोइ ॥ तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥ ३ ॥ पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ अपने दास कउ कीजै दानु ॥ करि किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ सरणि गही नानक प्रभ तेरी ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४८ ॥ रामकली महला ५ ॥ इह लोके सुखु पाइआ ॥ नही भेटत धरम राइआ ॥ हरि दरगह सोभावंत ॥ फुनि गरभि नाही बसंत ॥ १ ॥ जानी संत की मित्राई ॥ करि किरपा दीनो हरि नामा पूरबि संजोगि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै चरणि चितु लागा ॥ धंनि धंनि संजोगु सभागा ॥ संत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ किलविख दुख सगले मेरे लाथे ॥ २ ॥ साध की सचु टहल कमानी ॥ तब होए मन सुध परानी ॥ जन का सफल दरसु डीठा ॥ नामु प्रभू का घटि घटि वूठा ॥ ३ ॥ मिटाने सभि कलि कलेस ॥ जिस ते उपजे तिसु महि परवेस ॥ प्रगटे आनूप गोविंद ॥ प्रभ पूरे नानक बखसिंद ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ४९ ॥ रामकली महला ५ ॥ गऊ कउ चारे सारदूलु ॥ कउडी का लख हूआ मूलु ॥ बकरी कउ हसती प्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदरि निहाले ॥ १ ॥ क्रिपा निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ बरनि न साकउ बहु गुन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसत मासु न खाइ बिलाई ॥ महा कसाबि छुरी सटि पाई ॥ करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ फाथी मछुली का जाला तूटा ॥ २ ॥ सूके कासट हरे चलूल ॥ ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥ अगनि निवारी सतिगुर देव ॥ सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ ३ ॥ अकिरतघणा का करे उधारु ॥ प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥ संत जना का सदा सहाई ॥ चरन कमल नानक सरणाई ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ५० ॥ रामकली महला ५ ॥

रामकली महला ५ ।। तू किसके भरोसे इस संसार में विचरण कर रहा है ; हे मूर्ख, यहाँ तेरा कौन साथी है। जो प्रभु तेरा साथी है उसकी स्थिति को तो तू जानता नहीं और पाँच लुटेरों को तू अपने मित्र मान रहा है।। १ ।। उसी घर की सेवा कर जिससे तेरा हे मेरे मित्र, उद्धार हो जाए। दिन रात प्रभु के गुणों को याद करना चाहिये और साधसंगति में मन की प्रीति लगानी चाहिए।। १ ।। रहाउ ।। वाद-विवाद और अहंकार में ही जीवन गुजर जाता है। विषयों के स्वादों से कभी भी तृप्ति नहीं होती। भटकते-भटकते महा दुख मिलता है और इस दुस्तर माया को तैरा नहीं जा सकता।। २ ।। तू ऐसे काम करता है जो किसी काम नहीं आते ; तू स्वयं ही बोता है और स्वयं ही उसे खाता भी है। प्रभु के अतिरिक्त तुझे बचाने वाला दूसरा कोई नहीं है और तेरा पार उतारा तभी होगा जब उस प्रभु की कृपा होगी।। ३ ।। हे प्रभु, तेरा नाम पतितों को पवित्र कर देने वाला है; इसे अपने सेवक को प्रदान करो। हे प्रभु, कृपा करके मुझे मुक्ति दे दो क्योंकि हे प्रभु, नानक ने तो तुम्हारी ही शरण पकड़ ली है।। ४ ।। ३७ ।। ४८ ।। रामकली महला ५ ।। जिसने इस लोक में परमसुख प्राप्त कर लिया है उसकी मुलाकात धर्मराज से नहीं होती। वह प्रभु के दरबार में शोभायमान होता है और उसे फिर गर्भ में नहीं बसना पड़ता।। १ ।। सन्तों की मित्रता ऐसी जानी जाती है कि वे कृपा करके प्रभु का नाम दे देते हैं ; पिछले लिखे हुए संयोगों के कारण ही उनसे मेल होता है।। १ ।। रहाउ ।। यह मेरा भाग्यशाली और धन्य कहा जाने वाला संयोग है कि गुरु के चरणों में मेरा चित्त लीन हो गया है। सन्तों की चरण धूलि जब मेरे माथे पर लगी तो मेरे सभी पाप और दुख उतर गए हैं।। २ ।। जब साधु पुरुषों की सच्ची सेवा की जाती है तभी प्राणी का हृदय शुद्ध होता है। प्रभु के सेवक का जब फलदायक दर्शन किया जाता है तब प्रभु का नाम प्रत्येक हृदय में बस जाता है।। ३ ।। सभी कलह और क्लेश मिट जाते हैं और व्यक्ति जिस प्रभु से उत्पन्न हुआ है उसी में समा जाता है। अब अनुपम प्रभु प्रकट हो जाता है और हे नानक, वह पूर्ण प्रभु ही कृपा करने वाला है।। ४ ।। ३८ ।। ४६ ।। रामकली महला ५ ।। अब स्थिति यह हो गयी है कि अहंकार रूपी शेर एक शुद्ध शक्ति के रूप में गाय रूपी इन्द्रियों की रक्षा कर रहा है। अब शरीर रूपी कौड़ी का मूल्य भी लाखों में हो गया तथा विकारों की बकरी का मन रूपी हाथी पालन पोषण कर रहा है। मेरा प्रभु जब कृपादृष्टि से देखता है तो ऐसा सब सम्भव हो जाता है।। १ ।। मेरे प्रियतम प्रभु, तुम कृपा के भण्डार हो, मैं तेरे अनेकों गुणों का वर्णन नही कर सकता।। १ ।। रहाउ ।। अब तो स्थिति यह है कि विषय विकारों के मांस को देखती हुई भी तृष्णा रूपी बिल्ली उसे नहीं खाती। क्रोध जो महाकसाई था उसने भी हिंसा रूपी छुरी को फेंक दिया है। वह सब कुछ करने वाला प्रभु अब हृदय में बस गया है और जाल में फंसे हुए मछली रूपी जीव का भ्रम जाल टूट गया है।। २ ।। सूखी लकड़ी के समान सूखा हुआ हृदय हरा-भरा हो गया है और ऊँचे टीलों पर भी अब अनुपम कमल खिल उठे हैं। सच्चे गुरु प्रभु ने मेरी तृष्णा रूपी अग्नि को दूर कर दिया है और अपने सेवक को अपनी सेवा में लगा लिया है।। ३ ।। एहसान फरामोशों का भी वह उद्धार कर देता है क्योंकि मेरा प्रभु सदैव दयालु ही बना रहता है। वह शान्त पुरुषों का सदैव सहायक बना रहता है तथा नानक तो उसके चरण कमलों की शरण में है।। ४ ।। ३६ ।। ५० ।। रामकली महला ५ ।।

पंच सिंघ राखे प्रभि मारि ॥ दस बिधिआड़ी लई निवारि ॥ तीनि आवरत की चूकी घेर ॥ साधसंगि चूके भै फेर ॥ १ ॥ सिमरि सिमरि जीवा गोविंद ॥ करि किरपा राखिओ दासु अपना सदा सदा साचा बखसिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दाझि गए त्रिण पाप सुमेर ॥ जपि जपि नामु पूजे प्रभ पैर ॥ अनद रूप प्रगटिओ सभ थानि ॥ प्रेम भगति जोरी सुख मानि ॥ २ ॥ सागरु तरिओ बाछर खोज ॥ खेदु न पाइओ नह फुनि रोज ॥ सिंधु समाइओ घटुके माहि ॥ करणहार कउ किछु अचरजु नाहि ॥ ३ ॥ जउ छूटउ तउ जाइ पइआल ॥ जउ काढिओ तउ नदरि निहाल ॥ पाप पुंन हमरै वसि नाहि ॥ रसकि रसकि नानक गुण गाहि ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५१ ॥ रामकली महला ५ ॥ ना तनु तेरा ना मनु तोहि ॥ माइआ मोहि बिआपिआ धोहि ॥ कुदम करै गाडर जिउ छेल ॥ अचिंतु जालु कालु चक्रु पेल ॥ १ ॥ हरि चरन कमल सरनाइ मना ॥ राम नामु जपि संगि सहाई गुरमुखि पावहि साचु धना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊने काज न होवत पूरे ॥ कामि क्रोधि मदि सद ही झूरे ॥ करै बिकार जीअरे कै ताई ॥ गाफल संगि न तसूआ जाई ॥ २ ॥ धरत धोह अनिक छल जानै ॥ कउडी कउडी कउ खाकु सिरि छानै ॥ जिनि दीआ तिसै न चेतै मूलि ॥ मिथिआ लोभु न उतरै सूलु ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए दइआल ॥ इहु मनु होआ साध रवाल ॥ हसत कमल लड़ि लीनो लाइ ॥ नानक साचै साचि समाइ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ५२ ॥ रामकली महला ५ ॥ राजा राम की सरणाइ ॥ निरभउ भए गोबिंद गुन गावत साधसंगि दुखु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै रामु बसै मन माही ॥ सो जनु दुतरु पेखत नाही ॥ सगले काज सवारे अपने ॥ हरि हरि नामु रसन नित जपने ॥ १ ॥ जिस कै मसतकि हाथु गुरु धरै ॥ सो दासु अदेसा काहे करै ॥ जनम मरण की चूकी काणि ॥ पूरे गुर ऊपरि कुरबाण ॥ २ ॥ गुरु परमेसरु भेटि निहाल ॥ सो दरसनु पाए जिसु होइ दइआलु ॥ पारब्रहमु जिसु किरपा करै ॥ साधसंगि सो भवजलु तरै ॥ ३ ॥ अंम्रितु पीवहु साध पिआरे ॥ मुख ऊजल साचै दरबारे ॥ अनद करहु तजि सगल बिकार ॥ नानक हरि जपि उतरहु पारि ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ५३ ॥

काम, क्रोध आदि पाँच शेरों को प्रभु ने मार दिया है और इन्द्रिय रूपी दस शेरनियों को भी दूर भगा दिया है। तीन गुणों का भँवर भी दूर हो गया है और साधसंगति में रहते हुए मेरा आवागमन का भय भी चुक गया है।। १ ।। मैं तो प्रभु का सुमिरन करते हुए ही जीवित बना रहता हूँ। प्रभु ने कृपा करके अपने दास को बचा लिया है और वह सच्चा प्रभु सदैव कृपा करता रहने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। जब हमने प्रभु का नाम जपते हुए प्रभु के चरणों की पूजी की तो पापों के सुमेरु पर्वत जैसे बड़े -बड़े पहाड़ भी तिनके की तरह जल गये हैं। आनन्द रूप में अब वह सभी स्थानों पर प्रकट हो गया है ओर उसकी प्रेम भक्ति में लीन होकर हमने सभी सुखों को भोगा है।। २ ।। संसार सागर तो अब ऐसे पार हो गया है जैसे पानी से भरे हुए बछड़े के खुर के निशान को आसानी से पार कर लिया जाता है। अब हमने कभी भी शोक और दुख नहीं पाया। अब प्रभु रूपी समुद्र छोटे से जीव रूपी घड़े में समा गया परन्तु उस करने वाले प्रभु के लिये यह कुछ भी आश्चर्य वाला काम नहीं है।। ३ ।। जब तुझसे बिछुड़ जाऊँ तो मैं सीधा पाताल में गिर पड़ता हूँ और जब तू मुझे यहाँ से निकाल लेता है तो मैं तेरी कृपा से आनन्दित हो जाता हूँ। पाप और पुण्य हमारे वश में नहीं ; नानक तो रस लेता हुआ तेरे गुणों का गायन करता है।। ४ ।। ४० ।। ५१ ।। रामकली महला ५ ।। हे जीव, ना तो यह तन तेरा है और ना ही मन तेरे वश में है। माया के मोह में पड़ा हुआ तू धोखे में फँसा है। जैसे भेड़ के साथ उसका छोटा सा बच्चा खेल खेलता रहता है परन्तु अचानक ही मौत रूपी काल चक्र का जाल उस पर पड़ जाता है हे जीव, ऐसा ही तेरे साथ होता है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु के चरण कमलों की शरण में पड़ा रह। तू राम नाम का जाप कर क्योंकि यही तेरा सहायक तथा साथी है ; तू गुरमुख बनकर ही सच्चे धन को प्राप्त कर सकेगा।। १ ।। रहाउ ।। उसके बिना तेरे अधूरे काम पूरे नहीं होगें और काम क्रोध के मद में तू सदैव पछताता ही रहेगा। तू इस जीवन के लिये अनेको विकारो को धारण किये रहता हैं परन्तु हे बेखबर जीव, इनमें से कुछ भी तेरे साथ नहीं जाएगा।। २ ।। अनेकों प्रकार के छल करता हुआ तू धोखेबाजियाँ करता है और कौड़ी कौड़ी के लिये तू सिर में मिट्टी डलवाता रहता है। जिसने तुझे सब कुछ दिया है उसे तू बिल्कुल याद नहीं करता तथा झूठे लोभ की पीड़ा कभी समाप्त नहीं होती।। ३ ।। जब प्रभु दयालु हो जाता है तो यह मन साधु पुरुषों की चरण धूलि बन जाता है। प्रभु अपने हस्त कमलों से पकड़कर हमें अपने साथ ले लेता है और हे नानक, तब जीव उस सच्चे प्रभु में ही समा जाता है।। ४ ।। ४१ ।। ५२ ।। रामकली महला ५ ।। जब हम उस राजा प्रभु की शरण में आ गये हैं तो प्रभु के गुण गाते हुए हम निर्भय हो गये हैं और साधसंगति में हमारा दुख समाप्त हो गया है।। १ ।। रहाउ ।। जिसके मन में प्रभु का निवास हो गया है वह संसार सागर को पार करने में कोई भी कठिनाई नहीं देखता अर्थात आसानी से पार हो जाता है। वह अपने सभी कामों को सँवार लेता है और सदैव अपनी जीभ से प्रभु नाम का सुमिरन करता रहता है।। १ ।। गुरु जिसके माथे पर हाथ रख देता है उस सेवक को भला फिर कोई भी चिन्ता करने की क्या जरूरत है। उसके जीवन मरण का भय दूर हो जाता है और मैं ऐसे पूर्ण गुरु पर कुर्बान जाता हूँ।। २ ।। परमेश्वर गुरु से मिलकर आनन्दित हुआ जाता है और जिस पर वह दयालु होता है वही उसका दर्शन प्राप्त करता है। परब्रह्म प्रभु जिस पर कृपा करता है, साधसंगति में वही संसार सागर को पार कर जाता है।। ३ ।। हे प्यारे साधु पुरुषो, नाम-अमृत का पान करो क्योंकि इसी से उस सच्चे प्रभु के दरबार में तुम्हारे मुख उज्जवल बने रहेंगे। सभी विकारों को त्यागकर आनन्दित बने रहो और हे नानक, प्रभु का सुमिरन करते हुए संसार सागर से पार उतर जाओ।। ४ ।। ४२ ।। ५३ ।।

रामकली महला ५ ॥ ईंधन ते बैसंतरु भागै ॥ माटी कउ जलु दह दिस तिआगै ॥ ऊपरि चरन तलै आकासु ॥ घट महि सिंधु कीओ परगासु ॥ १ ॥ ऐसा संम्रथु हरि जीउ आपि ॥ निमख न बिसरै जीअ भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ मैलू कीनो साबुनु सूधु ॥ भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥ २ ॥ देही गुपत बिदेही दीसै ॥ सगले साजि करत जगदीसै ॥ ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥ ३ ॥ संत सभा मिलि करहु बखिआण ॥ सिंम्रिति सासत बेद पुराण ॥ ब्रहम बीचारु बीचारे कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५४ ॥ रामकली महला ५ ॥ जो तिसु भावै सो थीआ ॥ सदा सदा हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुतु कलत्रु लखिमी दीसै इन महि किछू न संगि लीआ ॥ बिखै ठगउरी खाइ भुलाना माइआ मंदरु तिआगि गइआ ॥ १ ॥ निंदा करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पइआ ॥ पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति ग्रासिओ महा भइआ ॥ २ ॥ बोलै झूठु कमावै अवरा त्रिसन न बूझै बहुतु हइआ ॥ असाध रोगु उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खइआ ॥ ३ ॥ जिनहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत जइआ ॥ नानक दास कंठि लाइ राखे करि किरपा पारब्रहम मइआ ॥ ४ ॥ ४४ ॥ ५५ ॥ रामकली महला ५ ॥ ऐसा पूरा गुरदेउ सहाई ॥ जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखत होइ निहालु ॥ जा की धूरि काटै जम जालु ॥ चरन कमल बसे मेरे मन के ॥ कारज सवारे सगले तन के ॥ १ ॥ जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ पतित उधारणु क्रिपा निधानु ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबानु ॥ २ ॥ निरमल मंतु देइ जिसु दानु ॥ तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ एकु धिआईऐ साध कै संगि ॥ पाप बिनासे नाम कै रंगि ॥ ३ ॥ गुर परमेसुर सगल निवास ॥ घटि घटि रवि रहिआ गुणतास ॥ दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ नित नानकु चितवै सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ५६ ॥

रामकली महला ५ ।। लकड़ी में आग होने के बावजूद भी वह उससे दूर भागी रहती है अर्थात् उसे जलाती नहीं है। मिट्टी रूपी धरती के चारों ओर जल (समुद्र) है परन्तु उसे डुबोता नहीं है। यह अजीब है कि वृक्ष के चरण डालियों के रूप में उपर की तरफ फैले हैं और सिर उसका धरती में गड़ा है। यह भी आश्चर्यजनक है कि हृदय रूपी छोटे से घड़े में प्रभु रूपी समुद्र का प्रकाश बना हुआ है।। १ ।। प्रभु यह सब कुछ करने में स्वयं ही समर्थ है। ऐसा प्रभु भक्तों को कभी भी विस्मृत नहीं होता तथा हे मन, आठों प्रहर तू उसी का जाप कर।। १ ।। रहाउ ।। हे भाई, आम तौर पर पहले दूध होता है और फिर उस दूध का सार तत्व मक्खन निकलता है परन्तु यह आश्चर्यजनक खेल है कि सार तत्व परमात्मा रूपी भक्तजन तो पहले से ही मौजूद है और संसार रूपी दूध बाद में बनता है। जीवों का पालन पोषण करने के लिये वह माता के रक्त को शुद्ध साबुन की तरह बना देता है। निर्भय प्रभु का अंश जीव संसार के अनेकों डरों से भयभीत बना रहता है और अदृष्ट माया उस दिखाई देने वाले जीव को दौड़ाए रहती है।। २ ।। हे भाई, शरीर का स्वामी आत्मा तो शरीर मे छिपा रहता है और बाहर हमें शरीर ही दिखाई देता है। सभी जीवों की रचना करके वह परमात्मा अनेकों कौतुक करता रहता है। ठगने वाली माया जीव को सदैव ठगती रहती है और प्रभु-नाम की पूंजी से विहीन जीव बार-बार माया से लिपटा रहता है।। ३ ।। हे नानक, सन्त पुरुषों की सभा में बैठकर स्मृतियों, शास्त्रों, वेदों पुराणों की व्याख्या करके देख लो उसका सार तत्व यही निकलेगा कि जो कोई भी सत्संगति में परमात्मा के गुणों का गम्भीर विचार करता है उसको ही परम गति प्राप्त होती है।। ४ ।। ४३ ।। ५४ ।। रामकली महला ५ ।। जो उस प्रभु को भाता है वही होता है। मैं तो सदैव प्रभु की शरण मे ही रहता हूँ क्योंकि प्रभु के बिना अन्य दूसरा कोई नहीं है।। १ ।। रहाउ ।। पुत्र, स्त्री, धन-दौलत आदि जो दिखाई देते हैं इनमें से कुछ भी अंतिम समय में साथ नहीं लिया जाता। यह जीव विषय विकारों की ठग बूटी खाकर भूला रहता है और इस माया और घर मकान को छोड़कर यहाँ से चला जाता है।। १ ।। यह दूसरों की निन्दा कर करके बहुत खराब होता रहता है और किये हुए कर्मो के कारण गर्भ योनि में पड़ा रहता है। पिछले किये हुए काम संस्कार बनकर इसे छोड़ते नहीं और महा भयानक यमदूत इसे खा लेते हैं।। २ ।। इसके लिये यह बड़े शर्म की बात है कि यह झूठ बोलता है, आचरण कुछ और प्रकार का ही करता है और इसकी तृष्णा बुझती नहीं। शान्त पुरुषों की निन्दा करते रहने से इसको असाध्य मानसिक रोग लगा ही रहता है और क्षीण होती-होती इसकी देही विनष्ट हो जाती है।। ३ ।। जिनपर कृपा की है प्रभु ने उन्ही की शोभा बढ़ाई है और उस प्रभु ने ही सन्तजनों की जय-जयकार करवाई है। परब्रह्म प्रभु ने कृपा करके हे नानक अपने सेवकों को अपने गले से लगाये रखा।। ४ ।। ४४ ।। ५५ ।। रामकली महला ५ ।। वह पूर्ण गुरुदेव प्रभु मेरा सहायक है और उसका सुमिरन व्यर्थ नहीं जाता।। १ ।। रहाउ ।। उसका दर्शन करने से आनन्द बना रहता है और उसकी चरण धूलि यम के जाल को काट देती है। उसके चरण कमल मेरे मन में बसते हैं और मेरे शरीर के सभी काम सफल हो जाते हैं।। १ ।। जिसके मस्तक पर अपना हाथ रख देते हैं तो उस अनाथ का मेरा प्रभु मालिक बन जाता है। वह प्रभु पतितों का उद्धार करने वाला कृपा का भण्डार है ; उस पर सदैव बलिहारी जाना चाहिये।। २ ।। अपने निर्मल उपदेश का दान जिसे दे देता है वह विकारों को त्याग देता है और उसका अभिमान नष्ट हो जाता है। साधसंगति में उस एक प्रभु का ही सुमिरन करना चाहिए क्योंकि प्रभु-नाम के रंग में ही हमारे पाप विनष्ट होते हैं।। ३ ।। परमेश्वर गुरु ही सबमें निवास करता है और वह गुणों का भण्डार ही घट-घट में रमण करता रहता है। मैं यही आस लगाए बैठा हूँ कि हे प्रभु, मुझे दर्शन दो। नानक तो यही सच्ची अरदास मन में करता रहता है।। ४ ।। ४५ ।। ५६ ।।

रागु रामकली महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गावहु राम के गुण गीत ॥ नामु जपत परम सुखु पाईऐ आवा गउणु मिटै मेरे मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण गावत होवत परगासु ॥ चरन कमल महि होइ निवासु ॥ १ ॥ संतसंगति महि होइ उधारु ॥ नानक भवजलु उतरसि पारि ॥ २ ॥ १ ॥ ५७ ॥ रामकली महला ५ ॥ गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा ॥ राम नामु जपि सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकु अराधहु साचा सोइ ॥ जा की सरनि सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥ हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥ २ ॥ सहजि अनंद करहु मेरे भाई ॥ गुरि पूरै सभ चिंत मिटाई ॥ ३ ॥ आठ पहर प्रभ का जपु जापि ॥ नानक राखा होआ आपि ॥ ४ ॥ २ ॥ ५८ ॥

रागु रामकली महला ५ पड़ताल घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नरनरह नमसकारं ॥ जलन थलन बसुध गगन एक एकंकारं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरन धरन पुन पुनह करन ॥ नह गिरह निरंहारं ॥ १ ॥ गंभीर धीर नाम हीर ऊच मूच अपारं ॥ करन केल गुण अमोल नानक बलिहारं ॥ २ ॥ १ ॥ ५९ ॥ रामकली महला ५ ॥ रूप रंग सुगंध भोग तिआगि चले माइआ छले कनिक कामिनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भंडार दरब अरब खरब पेखि लीला मनु सधारै ॥ नह संगि गामनी ॥ १ ॥ सुत कलत्र भ्रात मीत उरझि परिओ भरमि मोहिओ इह बिरख छामनी ॥ चरन कमल सरन नानक सुखु संत भावनी ॥ २ ॥ २ ॥ ६० ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु रामकली महला ९ तिपदे ॥ रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥ जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥ जनम जनम के पाप

राग़ु रामकली महला ५ घरु २ दोपदे १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरे मित्र, उस प्रभु के गुणों के गीत गाते रहो। प्रभु नाम का जाप करने से परमसुख प्राप्त होता है और आवागमन मिट जाता है।। १ ।। रहाउ ।। उसका गुणानुवाद करने से ज्ञान का प्रकाश अन्तर्मन में हो जाता है और उसके चरण कमलों में हमारा निवास बन जाता है।। १ ।। संतसंगति में ही व्यक्ति का उद्धार होता है और हे नानक, संसार सागर से पार उतरा जाता है।। २ ।। १ ।। ५७ ।। रामकली महला ५ ।। वह मेरा पूर्ण गुरु हर प्रकार से पूरा है। प्रभु का नाम जपने से सदैव सुखी बना जाता है और सभी झूठे रोग विनष्ट हो जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। उस एक सच्चे प्रभु की ही आराधना करो जिसकी शरण मे सदैव सुख बना रहता है।। १ ।। प्रभु नाम की भूख लगने से सुखदायक नींद मिलती है अर्थात् सभी चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं और प्रभु के सुमिरन से सभी दुख विनष्ट हो जाते हैं।। २ ।। हे मेरे भाई, आत्मा के स्वाभाविक स्वरूप में स्थित बने रहकर आनन्द लेते रहो क्योकि उस पूर्ण गुरु ने सभी चिन्ताएँ मिटा दी है।। ३ ।। हे नानक, तेरा रक्षक स्वयं प्रभु है और तू आठों प्रहर प्रभु का ही सुमिरन करता रह।। ४ ।। २ ।। ५८।।

रामकली महला ५ पड़ताल घरु ३ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

नरों में सबसे श्रेष्ठ नर हे प्रभु, तुझे प्रणाम है। जल-स्थल और सभी धरतियों-आकाशों में वह एक अद्वैत प्रभु ही स्थित है।। १ ।। रहाउ ।। जीवों को मारने वाला, उनको धारण करने वाला तथा बार-बार उसकी रचना करने वाला जिसका ना तो कोई घर है और ना आहार है वह एक प्रभु ही है।। १ ।। वह धैर्यवान, गम्भीर है, उसका नाम अमूल्य हीरे की तरह है और वह सबसे ऊँचा एवं अपरम्पर है। वह अनेकों कौतुक करने वाला तथा अमूल्य गुणों वाला है ; हे नानक, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। १ ।। ५६ ।। रामकली महला ५ ।। माया, सोना और स्त्री द्वारा छले हुए जीव इस संसार का रूप रंग, सुगन्ध और भोग आदि त्यागकर यहाँ से चले जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। अरबों-खरबों के द्रव्य और भण्डार देखकर मन को बड़ा हौसला तो मिलता है परन्तु इनमें से कोई भी साथ चलने वाला नहीं है।। १ ।। पुत्र, स्त्री, भाई और मित्रों में उलझा यह जीव सांसारिक भ्रमों में मोहित बना रहता है परन्तु ये सभी वृक्ष की छाया के समान हैं जो स्थिर नहीं रहती। हे नानक, सन्तजनों के प्रति प्रेम और प्रभु के चरण कमलों की शरण में ही सुख प्राप्त होता है।। २ ।। २ ।। ६० ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। रागु रामकली महला ९ तिपदे।।

हे मन, उस प्रभु नाम का आसरा ले जिसके सुमिरन से दुर्मति भाग खड़ी होती है और निर्वाण पद प्राप्त हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। उस व्यक्ति को भाग्यशाली मानों जो प्रभु के गुण गाता है। वह जन्मों-जन्मों के पाप खोकर

खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥ १ ॥ अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥ जां गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥ नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥ ३ ॥ १ ॥ रामकली महला ९ ॥ साधो कउन जुगति अब कीजै ॥ जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥ कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥ १ ॥ भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई ॥ सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥ २ ॥ राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥ जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥ ३ ॥ २ ॥ रामकली महला ९ ॥ प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥ छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर ब्रिथा जातु है देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना ॥ बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥ १ ॥ मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥ मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥ २ ॥ माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥ नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥ ३ ॥ ३ ॥ ८१ ॥

रामकली महला १ असटपदीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सोई चंदु चड़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे ॥ १ ॥ जीवन तलब निवारि ॥ होवै परवाणा करहि धिङाणा कलि लखण वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितै देसि न आइआ सुणीऐ तीरथ पासि न बैठा ॥ दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा ॥ २ ॥ जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥ जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई ॥ ३ ॥ जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु

बैकुण्ठ को चला जाता है।। १ ।। अजामिल को भी अंतिम समय में नारायण की याद आई तो जिस परम गति को योगेश्वर लोग भी चाहते रहते हैं वह गति और मुक्ति उसने क्षण भर में प्राप्त कर ली।। २ ।। ना तो उसमें कोई गुण था ना ही कोई विद्या थी और गजराज ने भला कौन सा धर्म कर्म किया था परन्तु हे नानक, उस प्रभु के कृपालु स्वभाव की ओर देखो कि उसे घड़ियाल के मुँह से बचाकर प्रभु ने उसे अभय होने का दान दे दिया॥३॥१॥रामकली महला ६।। हे साधु पुरुषो, अब कौन सी विधि अपनाई जाए जिससे सारी दुर्मति का विनाश हो जाए और प्रभु की भक्ति में मन भीग जाए।। १ ।। रहाउ ।। यह मन माया में उलझा है और ज्ञान की बात को यह समझता ही नहीं। संसार के लिये अन्य कौन सा नाम है जिसका सुमिरन करने से यह निर्वाण पद प्राप्त कर सकता है।। १ ।। जब सन्त पुरुष कृपालु और दयालु हुए तब उन्होंने यह बात बताई कि जिस व्यक्ति ने प्रभु की कीर्ति का गायन कर लिया है उसने मानो सभी धर्म कर्म पूरे कर लिये हैं।। २ ।। जो व्यक्ति प्रभु नाम को दिन रात में एक क्षण के लिये भी हृदय में धारण कर ले, हे नानक, उसका यम का भय मिट जाता है और वह अपने जीवन को सफल कर लेता है॥३॥२॥रामकली महला ६।। हे प्राणी, प्रभु-नाम को याद कर; प्रत्येक क्षण यह आयु घट रही है और दिन रात तेरा यह शरीर व्यर्थ होता जा रहा है।। १ ।। रहाउ ।। बचपन में तू अबोध बना रहा और जवानी तूने विषय विकारों में गँवा दी है। तू कौन सी उल्टी बुद्धि में उलझा है कि अब बूढ़े हो जाने पर भी तुम्हें समझ नहीं आ रही है।। १ ।। जिस प्रभु ने तुझे मानव जीवन दिया है तूने उसे क्यों भुला दिया है। जिसका सुमिरन करने से व्यक्ति मुक्त हो जाता है तूने क्षण भर भी उसका गायन नहीं किया।। २ ।। तू धन सम्पदा का अभिमान क्यों करता है क्योंकि इसमें से कुछ भी तेरे साथ नहीं जाएगा। नानक का कथन है कि हे प्राणी, तू उस चिंतामणि प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि अंत में तेरा वही सहायक होगा।। ३ ।। ३ ।। ६१ ।।

रामकली महला १ अष्टपदियां १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वही चन्द्रमा वे ही तारे प्रत्येक युग में दिखाई देते रहते हैं और वही सूर्य सदैव तपता रहता है। जब अनन्त समय से वही धरती है, वही पवन चल रही है तो यह मानने के लिये कि कोई युग विशेष किसी समय विशेष में जीवों में कार्यशील होता है कैसे माना जा सकता है।। १ ।। हे जीव, जीवन की देखा देखी वाली कामनाएं अपने से दूर कर दो तो युगों का प्रभाव स्वयं दूर हो जाएगा। जो ज़ोर ज़बरदस्ती करके अपने को सबकी नज़रों में स्वीकृत करवाता है, वास्तव में यही कलियुग का लक्षण है।। १ ।। रहाउ ।। यह तो कभी नहीं सुना गया कि कलियुग किसी देश विशेष में आया था या किसी तीर्थ विशेष पर बैठा हुआ देखा गया था। जहाँ कोई दाता दान कर रहा है वहाँ भी कोई नही दिखाई दे रहा है। ना ही यह कहीं अपना महल बना कर बैठा दिखाई दे रहा है।। २ ।। कलियुग के वास्तविक लक्षण तो ये हैं कि सत्यधर्म का पालन करने वाला दिन प्रतिदिन क्षीण और कमजोर होता जाता है ; कड़ी मेहनत करने वाले का श्रम सफल नहीं होता और जो प्रभु नाम का सुमिरन करने वाला होता है उसकी आम तौर पर बदनामी ही होती है।। ३ ।। परन्तु सरदारी अर्थात खुद ली हुई लीडरशिप वाले लोग ही ख्वार और बेइज़्ज़त होते हैं। उनके नौकरों को कोई डर नहीं होता। जब इन स्वयं बने मार्ग दर्शकों को जंजीरों में जकड़ा जाता हैं तो वास्तव में उन्ही नौकरों की गद्दारी के कारण ये उन्हीं के हाथों

मरणा ॥ ४ ॥ आखु गुणा कलि आईऐ ॥ तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जै गुण देहि त पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी क्रिसना होआ ॥ बाणी ब्रहमा बेदु अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥ ५ ॥ पति विणु पूजा सत विणु संजमु जत विणु काहे जनेऊ ॥ नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु सोच न होई ॥ ६ ॥ कलि परवाणु कतेब कुराणु ॥ पोथी पंडित रहे पुराण ॥ नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ करि करता तू एको जाणु ॥ ७ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई एदू उपरि करमु नही ॥ जे घरि होदै मंगणि जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही ॥ ८ ॥ १ ॥ रामकली महला १ ॥ जगु परबोधहि मड़ी बधावहि ॥ आसणु तिआगि काहे सचु पावहि ॥ ममता मोहु कामणि हितकारी ॥ ना अउधूती ना संसारी ॥ १ ॥ जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥ घरि घरि मागत लाज न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि गीत न चीनहि आपु ॥ किउ लागी निवरै परतापु ॥ गुर कै सबदि रचै मन भाइ ॥ भिखिआ सहज वीचारी खाइ ॥ २ ॥ भसम चड़ाइ करहि पाखंडु ॥ माइआ मोहि सहहि जम डंडु ॥ फूटै खापरु भीख न भाइ ॥ बंधनि बाधिआ आवै जाइ ॥ ३ ॥ बिंदु न राखहि जती कहावहि ॥ माई मागत त्रै लोभावहि ॥ निरदइआ नही जोति उजाला ॥ बूडत बूडे सरब जंजाला ॥ ४ ॥ भेख करहि खिंथा बहु थटूआ ॥ झूठो खेलु खेलै बहु नटूआ ॥ अंतरि अगनि चिंता बहु जारे ॥ विणु करमा कैसे उतरसि पारे ॥ ५ ॥ मुंद्रा फटक बनाई कानि ॥ मुकति नही बिदिआ बिगिआनि ॥ जिहवा इंद्री सादि लुोभाना ॥ पसू भए नही मिटै नीसाना ॥ ६ ॥ त्रिबिधि लोगा त्रिबिधि जोगा ॥ सबदु वीचारै चूकसि सोगा ॥ ऊजलु साचु सु सबदु होइ ॥ जोगी जुगति वीचारे सोइ ॥ ७ ॥ तुझ पहि नउ निधि तू करणै जोगु ॥ थापि उथापे करे सु होगु ॥ जतु सतु संजमु सचु सुचीतु ॥ नानक जोगी त्रिभवण मीतु ॥ ८ ॥ २ ॥ रामकली महला १ ॥ खटु मटु देही मनु बैरागी ॥ सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥ वाजै अनहदु मेरा मनु लीणा ॥ गुर बचनी सचि नामि पतीणा ॥ १ ॥ प्राणी राम भगति सुखु पाईऐ ॥ गुरमुखि हरि हरि मीठा लागै

मारे जाते हैं।। ४ ।। ऐसे कलियुग को आया हुआ समझकर हे जीव, प्रभु के गुणों का बखान करता रह। तथाकथित पहले तीनों युगों का तप संयम अथवा न्याय तो अब पीछे हट गया है। अब तो हे प्रभु, इस युग में तो प्रभु के गुणों का गायन ही पावन और पवित्र कर्म है तथा ऐसा होता भी हे प्रभु, तेरे ही कारण है।। १ ।। रहाउ ।। कलह-क्लेश वाले इस युग में फैसले तो शरियत के अनुसार होते हैं और काज़ी ही यहाँ कृष्ण बना बैठा है। अथर्ववेद ही अब ब्रह्मा की वाणी बना है और अब अपने किये हुए कर्मो के अनुरूप ही यश अपयश प्राप्त होता है।। ५ ।। सम्मान विहीन बनाए रखने वाली पूजा और वास्तविक रूप से सत्य को आचरण बनाए बिना अन्य सभी संयम तथा चित्त वृत्तियों को भाग दौड़ से रोकने के बिना यह जनेउ आदि किस काम का है। तुम नहाते-धोते हो और तिलक भी लगाते हो परन्तु पवित्र आचरण के बिना इस दिखावे वाली बाहरी पवित्रता किसी काम की नहीं हैं।। ६ ।। इस कलियुग में अर्थात इस्लामी राज में अब कतेब और क़ुरान आदि को ही स्वीकृति मिल रही है तथा पंडितों की पोथियाँ और पुराण आदि अब एक तरफ कर दिये गये हैं। हे नानक, अब तो परमात्मा का नाम बदलकर भी रहमान रख दिया गया है। हे भाई, तू सभी युगों में उस प्रभु को एक ही समझ। लोग बेशक उसके नामों को अपने हिसाब से बदलते रहें परन्तु वह प्रभु है एक ही।।७।। हे नानक, यदि प्रभु नाम का बड़प्पन प्राप्त हो जाए तो इससे बड़ा कोई काम नहीं। प्रभु सबके अन्दर है और यदि अपने ही घर में सब कुछ होते हुए भी कोई माँगने के लिये इधर-उधर भटकता रहता है तो उसी को ही फटकार भी मिलती रहती है।। ८ ।। १ ।। रामकली महला १ ।। हे योगी, तू संसार को उपदेश देता है और अपनी पेट पूजा करता हुआ इस शरीर रूपी शमशान को बनाता रहता है। तू स्थिरता के आसन को छोड़कर भला सत्य को कैसे पा सकेगा। जो ममता, मोह और स्त्री की वासना में लगा रहता है वह वास्तव में ना तो त्यागी अवधूत है और ना ही संसारी जीव है।। १ ।। हे योगी, तू अन्तर्मन से स्थिर हो जा तेरा दुख और दुविधा भाग खड़े होंगे। घर-घर जाकर माँगते हुए क्या तुझे लज्जा का अनुभव नहीं होता।। १ ।। रहाउ ।। तू ना तो प्रभु के गुण गाता है और ना ही अपने आप को पहचानता है ; तेरे अन्दर के दुखों का संताप कैसे दूर होगा। प्रेमपूर्वक यदि तेरा मन शब्द-गुरु में लीन हो जाए तो तभी तू सहज चिंतन अर्थात वास्तविक ज्ञान की भिक्षा खा-पचा सकता है।। २ ।। भस्म को शरीर पर लगाकर जो तू पाखण्ड करता है तो वास्तव में तू माया मोह रूपी यम का डंडा ही खाता रहता है। तेरा हृदय रूपी खप्पर (बर्तन) तो वास्तव में टूटा है इसलिये इसमें प्रेम की भिक्षा टिक नहीं सकती। बन्धनों में बँधा तू इस संसार में आता-जाता और भटकता रहता है।। ३ ।। शरीर की वास्तविक शक्ति प्रभु नाम को तो तूने अन्दर सम्भाल कर ही नहीं रखा और तू यति कहलवाता है। तीनों गुणों में लीन होकर तू माया ही माँगता डोलता है। तू दयाविहीन है और तुझ में उस परम ज्योति परमात्मा का प्रकाश नहीं हुआ है तथा तू डूबता-डूबता सभी जंजालों में पड़ा हुआ डूब रहा है।। ४ ।। तूने अपना वेष विशेष धारण कर ठाट-बाट बनाया है परन्तु यह ऐसा ही है जैसे कोई मदारी झूठा खेल खेलता है और दिखाता है। तेरे अन्दर तो चिन्ता की अग्नि सदैव जलती रहती है और तुझे अनेकों प्रकार से जलाती रहती हैं। अच्छे कर्मो के बिना तू कैसे पार उतरेगा।। ५ ।। तूने काँच की मुद्राएँ कानों में डाल रखी हैं परन्तु विद्या के विज्ञान को जाने बिना तुझे मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। तू जीभ और इन्द्रियों के स्वाद के लोभ में पड़ा है और पशुपन के तेरे चिन्ह मिटते नहीं है।। ६ ।। योगी और आम संसारी लोग सभी तीनों गुणों वाली माया में ही फँसे रहते हैं परन्तु वास्तव में जो शब्द का चिंतन करते हैं उन्हीं का शोक दूर होता है क्योंकि वह सच्चा शब्द ही उज्जवलता देने वाला होता है और सच्चा योगी उसको प्राप्त करने की विधि ही सोचता रहता है। हे प्रभु, तेरे पास ही नवनिधियाँ है और तू ही सब कुछ करने योग्य है। तू ही बनाता बिगाड़ता है और जो तू करता है वही होता है। पवित्र हृदय ही सत्य संयम आदि का रूप है। हे नानक, ऐसा योगी तीनों लोकों का मित्र होता है।। ८ ।। २ ।। रामकली महला १ ।। छः चक्रों वाली इस देह में वैराग्यवान मन बैठा है और उसमें शब्द की चेतना को जगाने वाली धुन जग गई है। अनहद नाद में मेरा मन लीन हो गया है और गुरु के उपदेश से सच्चे नाम में अब वह सन्तुष्ट हो गया है।। १ ।। हे प्राणी, प्रभु की भक्ति में सुख पाया जाता है गुरमुख बनकर प्रभु

हरि हरि नामि समाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु बिवरजि समाए ॥ सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ॥ नामु रतनु निरमोलकु हीरा ॥ तितु राता मेरा मनु धीरा ॥ २ ॥ हउमै ममता रोगु न लागै ॥ राम भगति जम का भउ भागै ॥ जमु जंदारु न लागै मोहि ॥ निरमल नामु रिदै हरि सोहि ॥ ३ ॥ सबदु बीचारि भए निरंकारी ॥ गुरमति जागे दुरमति परहारी ॥ अनदिनु जागि रहे लिव लाई ॥ जीवन मुकति गति अंतरि पाई ॥ ४ ॥ अलिपत गुफा महि रहहि निरारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ पर घर जाइ न मनु डोलाए ॥ सहज निरंतरि रहउ समाए ॥ ५ ॥ गुरमुखि जागि रहे अउधूता ॥ सद बैरागी ततु परोता ॥ जगु सूता मरि आवै जाइ ॥ बिनु गुर सबद न सोझी पाइ ॥ ६ ॥ अनहद सबदु वजै दिनु राती ॥ अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ तउ जानी जा सबदि पछानी ॥ एको रवि रहिआ निरबानी ॥ ७ ॥ सुंन समाधि सहजि मनु राता ॥ तजि हउ लोभा एको जाता ॥ गुर चेले अपना मनु मानिआ ॥ नानक दूजा मेटि समानिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ रामकली महला १ ॥ साहा गणहि न करहि बीचारु ॥ साहे ऊपरि एकंकारु ॥ जिसु गुर मिलै सोई बिधि जाणै ॥ गुरमति होइ त हुकमु पछाणै ॥ १ ॥ झूठु न बोलि पाडे सचु कहीऐ ॥ हउमै जाइ सबदि घरु लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गणि गणि जोतकु कांडी कीनी ॥ पड़ै सुणावै ततु न चीनी ॥ सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥ होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥ २ ॥ नावहि धोवहि पूजहि सैला ॥ बिनु हरि राते मैलो मैला ॥ गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ॥ मुकति प्रान जपि हरि किरतारथि ॥ ३ ॥ वाचै वादु न बेदु बीचारै ॥ आपि डुबै किउ पितरा तारै ॥ घटि घटि ब्रहमु चीनै जनु कोइ ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ॥ ४ ॥ गणत गणीऐ सहसा दुखु जीऐ ॥ गुर की सरणि पवै सुखु थीऐ ॥ करि अपराध सरणि हम आइआ ॥ गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ॥ ५ ॥ गुर सरणि न आईऐ ब्रहमु न पाईऐ ॥ भरमि भुलाईऐ जनमि मरि आईऐ ॥ जम दरि बाधउ मरै बिकारु ॥ ना रिदै नामु न सबदु अचारु ॥ ६ ॥ इकि पाधे पंडित मिसर कहावहि ॥ दुबिधा राते

अच्छा लगता है और इसी प्रकार प्रभु नाम में लीन हुआ जाता है।। १ ।। रहाउ ।। माया के मोह को रोक कर ही उस प्रभु में लीन हुआ जाता है और जब सच्चा प्रभु मिल जाता है तो वही उस प्रभु से मिलाप करवाता है। प्रभु नाम ही अमूल्य हीरा है जिसमें लीन होकर मेरे मन को धैर्य प्राप्त हो गया है।। २ ।। प्रभु की भक्ति से यम का भय भाग खड़ा होता है और अहंकार तथा ममता का रोग जीव को नहीं लगता। अब यह जालिम यम मुझे प्रभावित नहीं करता क्योंकि प्रभु का निर्मल नाम मेरे हृदय में शोभायमान बना रहता है।। ३ ।। शब्द का चिंतन करके अब हम भी उस निराकार प्रभु में लीन होकर निराकार ही हो गये हैं। दुर्मति को हमने दूर कर दिया है और गुरु की मति अब हममें जागृत हो गयी है। अब सदैव हम उसी में लौ लगाकर चेतन बने रहते हैं तथा जीवन-मुक्ति की अवस्था हमने अपने अन्दर ही प्राप्त कर ली है।। ४ ।। जो शरीर रूपी गुफा में रहते हुए अलिप्त और निराले बने रहते हैं ; जिन्होंने शब्द के माध्यम से पाँचों चोरों को मार डाला है, जो पराये घर में जाकर अपने मन को भटकने नहीं देते वे स्वाभाविक रूप से ही उस प्रभु में सदैव लीन बने रहते हैं।। ५ ।। गुरमुख बने त्यागी और अवधूत ही सदैव जगते रहते हैं क्योंकि उन्होंने सदैव वैराग्यवान होकर प्रभु रूपी सार तत्व को अपने हृदय में पिरोया होता है। अज्ञान में सोया संसार तो मरता और आता-जाता रहता है ; शब्द गुरु के बिना इसे ज्ञान प्राप्त नहीं होता।। ६ ।। अनहद शब्द तो दिन रात बजता ही रहता है परन्तु उस अव्यक्त प्रभु की गति को कोई गुरमुख ही जान सकता है। उसको तभी जाना जाता है जब शब्द को पहचान लिया जाता है और यह भी जान लिया जाता है कि वह अलिप्त एक प्रभु ही सबमें रमण कर रहा है।। ७ ।। शून्य समाधि में स्वाभाविक रूप से ही मन लीन हो जाता है और ऐसी अवस्था में अहंकार और लोभ त्यागकर उस एक प्रभु को जाना जाता है। गुरु और चेले का अपना मन एक दूसरे में लीन होकर सन्तुष्ट हो गया है और हे नानक, द्वैतभाव को मिटाकर वे एक दूसरे जैसे हो गए हैं।। ८ ।। ३ ।। रामकली महला १ ।। वह ना तो मुहूर्त गिनता है ना ही उसका विचार करता है क्योंकि उन सभी मुहूर्तों के उपर स्वयं वह एक ही प्रभु स्थित है। गुरु जिसे मिल जाता है वही जीवन की विधि को जान पाता है कि गुरु की मति में ही चलकर उस प्रभु के हुकुम की पहचान होती है।। १ ।। हे पंडित, तुम झूठ मत बोलों और सच ही कहो। जब अंहकार चला जाता है तो शब्द रूपी वास्तविक घर दिखाई देने लगता है।। १ ।। रहाउ ।। ज्योतिषी गणनाएँ कर करके पत्री बनाता है, वह पढता भी है सुनाता भी है परन्तु सार तत्व को नहीं पहचान पाता। शब्द-गुरु का चिंतन ही सबसे उपर है इसलिये मैं अन्य बातें नहीं करता क्योंकि वे सभी राख की तरह व्यर्थ है।। २ ।। तुम नहाते हो, धोते हो और पत्थरों की पूजा करते हो परन्तु प्रभु के रंग में लीन हुए बिना सब कुछ मैला ही मैला बना रहता है। तू अभिमान त्याग दे तो तुझे पार ले जाने वाले के रूप में प्रभु मिल जाएगा। प्राणों को मुक्ति देने वाले और कृतार्थ करने वाले प्रभु का ही जाप करो।। ३ ।। तू ज्ञान का चिंतन नहीं करता और सदैव वाद-विवाद की राह देखता रहता है। जब तुम खुद ही डूबे हो तो पित्रों को भला कैसे पार उतार सकोगे। कोई बिरला ही सेवक पहचान पाता है कि घट-घट में ब्रह्म विद्यमान है। जब सच्चा गुरु मिल जाता है तभी वास्तविक समझ प्राप्त होती है।। ४ ।। गणनाएँ करते रहने से हृदय के लिये भय और दुख बना ही रहता है क्योंकि सुख तो गुरु की शरण में आने से ही मिलता है। मैं अपराध करके गुरु की शरण में आ गया हूँ और गुरु से मिलाप पिछले किये कर्मों के फल के रूप में मुझे मिला है।। ५ ।। गुरु की शरण में ना आने से परमात्मा को नहीं प्राप्त किया जा सकता है। भ्रमों में भूले रहने से जन्म-मरण में आते रहना पड़ता है। गुरु की शरण में ना आने वाला जीव यम के द्वार पर बँधा हुआ विकारों में पड़ा मरता रहता है क्योंकि उसके हृदय में ना प्रभु का नाम होता है, ना शब्द अन्तर्मन में होता है और ना ही उसका अच्छा आचरण होता है।। ६ ।। अनेकों अपने आपको पंडित और मिश्र कहलाते हैं परन्तु दुविधा में लीन बने हुए

महलु न पावहि ॥ जिसु गुर परसादी नामु अधारु ॥ कोटि मधे को जनु आपारु ॥ ७ ॥ एकु बुरा भला सचु एकै ॥ बूझु गिआनी सतगुर की टेकै ॥ गुरमुखि विरली एको जाणिआ ॥ आवणु जाणा मेटि समाणिआ ॥ ८ ॥ जिन कै हिरदै एकंकारु ॥ सरब गुणी साचा बीचारु ॥ गुर कै भाणै करम कमावै ॥ नानक साचे साचि समावै ॥ ९ ॥ ४ ॥ रामकली महला १ ॥ हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥ वरतु तपनु करि मनु नही भीजै ॥ राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥ १ ॥ गुरु सेवि मना हरि जन संगु कीजै ॥ जमु जंदारु जोहि नही साकै सरपनि डसि न सकै हरि का रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वादु पड़ै रागी जगु भीजै ॥ त्रै गुण बिखिआ जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु दूखु सहीजै ॥ २ ॥ चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै ॥ निउली करम खटु करम करीजै ॥ राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै ॥ ३ ॥ अंतरि पंच अगनि किउ धीरजु धीजै ॥ अंतरि चोरु किउ सादु लहीजै ॥ गुरमुखि होइ काइआ गड़ु लीजै ॥ ४ ॥ अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥ मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥ किरतु पइआ दोसु का कउ दीजै ॥ ५ ॥ अंनु न खाहि देही दुखु दीजै ॥ बिनु गुर गिआन त्रिपति नही थीजै ॥ मनमुखि जनमै जनमि मरीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर पूछि संगति जन कीजै ॥ मनु हरि राचै नही जनमि मरीजै ॥ राम नाम बिनु किआ करमु कीजै ॥ ७ ॥ ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥ धुर की सेवा रामु रवीजै ॥ नानक नामु मिलै किरपा प्रभ कीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥ रामकली महला १ ॥ अंतरि उतभुजु अवरु न कोई ॥ जो कहीऐ सो प्रभ ते होई ॥ जुगह जुगंतरि साहिबु सचु सोई ॥ उतपति परलउ अवरु न कोई ॥ १ ॥ ऐसा मेरा ठाकुरु गहिर गंभीरु ॥ जिनि जपिआ तिन ही सुखु पाइआ हरि कै नामि न लगै जम तीरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु रतनु हीरा निरमोलु ॥ साचा साहिबु अमरु अतोलु ॥ जिहवा सूची साचा बोलु ॥ घरि दरि साचा नाही रोलु ॥ २ ॥ इकि बन महि बैसहि डूगरि असथानु ॥ नामु बिसारि पचहि अभिमानु ॥ नाम बिना किआ गिआन धिआनु ॥ गुरमुखि पावहि दरगहि मानु ॥ ३ ॥ हठु अहंकारु करै नही पावै ॥ पाठ पड़ै ले

वे प्रभु का ठिकाना नहीं जान पाते। गुरु की कृपा से जिसे प्रभु नाम का आधार मिल गया है वह सेवक करोड़ों में बिरला ही अद्वितीय पुरुष होता है।। ७ ।। वह एक प्रभु ही बुरा, भला और सत्य भी है। हे ज्ञानवान प्राणी, सच्चे गुरु का आसरा लेकर इस तथ्य को समझ ले। कोई बिरला गुरमुख ही उस एक प्रभु को जान पाता है और वही अपना आवागमन मिटा कर प्रभु में लीन हो जाता है।। ८ ।। जिनके हृदय में वह एक प्रभु ही बसा है वो ही सभी गुणों वाले हैं और उनका चिंतन भी सच्चा है। वे गुरु की रजा में ही कर्म करते रहते हैं और हे नानक, सच में ही वे उस सच्चे प्रभु में लीन हो जाते हैं।। ६ ।। ४ ।। रामकली महला १ ।। हठपूर्वक इच्छाओं को रोकने से वास्तव में यह शरीर टूटता और कमजोर ही होता है। व्रत, तपस्याएं आदि करने से मन उस प्रभु के रस में नहीं भीगता। प्रभु-नाम के बराबर तो अन्य कोई भी नहीं पहुँच पाता।। १ ।। हे मेरे मन, गुरु का सुमिरन कर और प्रभु के साथ बना रह। ऐसा करने से तुझे जालिम यम दुख नहीं दे सकेगा, माया रूपी सर्पिणी तुझे डस नहीं सकेगी और तू हरि रस का पान कर सकेगा।। १ ।। रहाउ ।। सारा संसार विवादों में पड़ा रहता है और राग नाद के द्वारा अपने मन को बहलाता रहता है। वह त्रिगुणात्मक माया रूपी विष में पड़ा जन्मता मरता रहता है। प्रभु नाम के बिना वह दुख ही सहन करता रहता है।। २ ।। योगी श्वासों को उपर चढ़ाता है और दशम द्वार के सिहांसन पर अमृत में भीगता हुआ स्वाद लेता है। वह पेट को चक्की की तरह घुमाता हुआ न्योली कर्म तथा अन्य धौती, नेती, त्राटक आदि षटकर्म करता रहता है। राम नाम के बिना तो सांस लेना भी व्यर्थ है।। ३ ।। काम, क्रोध आदि की पाँचों अग्नियाँ अन्तर्मन में होने से भला कैसे धैर्य धारण किया जा सकता है। जब अन्दर चोर बैठा है तो भला जीवन का स्वाद कैसे लिया जा सकता है। हे जीव, गुरमुख बनकर ही शरीर रूपी किले को जीता जा सकता है।। ४ ।। तेरे अन्तर्मन में मैल है परन्तु तू तीर्थों पर भ्रमण करता है। तेरा मन तो स्वच्छ नहीं है इसलिये बाहरी स्वच्छता तू क्या करता रहता है। तू अपने संस्कारों के अनुरूप ही किया हुआ फल प्राप्त करता है इसलिये किसी अन्य को क्या दोष दिया जाए।। ५ ।। अन्न आदि ना खाकर तुम शरीर को दुख देते हो परन्तु गुरु से ज्ञान प्राप्त किये बिना तृप्ति प्राप्त नहीं होती। मनमुख व्यक्ति बार-बार जन्मता है और जन्म लेकर मरता रहता है।। ६ ।। सच्चे गुरु से पूछ कर प्रभु के सेवकों की संगति करो और जब मन प्रभु में लीन हो जाएगा तब फिर ना तो तुम्हारा जन्म होगा और ना ही मरण होगा। प्रभु-नाम के बिना भला कौन से कर्म किये जाए अर्थात् सभी व्यर्थ हैं।। ७ ।। चूहे की तरह शोर मचाने वाले मन के संकल्पों-विकल्पों को दूर कर दो। प्रभु का सुमिरन करना ही वास्तव में प्रभु की ओर से लिखी हुई सेवा है। हे प्रभु, तू ऐसी कृपा कर कि नानक को प्रभु-नाम प्राप्त हो जाए।। ८ ।। ५ ।। रामकली महला १ ।। उस प्रभु में ही वनस्पति आदि से उत्पन्न सारी सृष्टि विद्यमान है और उसके बिना अन्य कोई भी नहीं है। जो कुछ भी कहा जा सकता है वह प्रभु से ही उत्पन्न होता है। युगों-युगान्तरों में वह सच्चा प्रभु ही विद्यमान बना रहता है। सृष्टि को उन्पन्न और लय करने वाला उस प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है।। १ ।। मेरा मालिक ऐसा गहरा और गम्भीर है कि उसका जिसने भी सुमिरन किया है उसने ही सुख प्राप्त किया है तथा प्रभु का नाम जिसके पास है उसे यम रूपी तीर स्पर्श नहीं कर पाता।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु-नाम रूपी रत्न एक अमूल्य हीरा है ; वह साहिब अमर और अतुलनीय है। जिसे नाम रूपी रत्न प्राप्त हो गया है उसकी जीभ पवित्र है और उसका बोल भी सच्चा है। उसका हृदय रूपी घर द्वार सच्चा है और उसमें किसी प्रकार की भी गड़बड़ नहीं है।। २ ।। अनेकों लोग वनों और पहाड़ों में स्थान बनाकर बैठे रहते हैं परन्तु प्रभु-नाम को विस्मृत करके वे अभिमान में ही मरते खपते रहते हैं। प्रभु-नाम को भुलाकर वे अभिमान में ही मरते खपते-रहते हैं। गुरमुख बने व्यक्ति ही प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करते हैं।। ३ ।। जो हठ और अहंकार करते रहते हैं वे उस प्रभु को नहीं पा सकते। वे अपना पाठ पढ़ते हुए भी

लोक सुणावै ॥ तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥ नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥ ४ ॥ जतन करै बिंदु किवै न रहाई ॥ मनूआ डोलै नरके पाई ॥ जम पुरि बाधो लहै सजाई ॥ बिनु नावै जीउ जलि बलि जाई ॥ ५ ॥ सिध साधिक केते मुनि देवा ॥ हठि निग्रहि न त्रिपतावहि भेवा ॥ सबदु वीचारि गहहि गुर सेवा ॥ मनि तनि निरमल अभिमान अभेवा ॥ ६ ॥ करमि मिलै पावै सचु नाउ ॥ तुम सरणागति रहउ सुभाउ ॥ तुम ते उपजिओ भगती भाउ ॥ जपु जापउ गुरमुखि हरि नाउ ॥ ७ ॥ हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥ झूठि न पावसि पाखंडि कीनै ॥ बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥ नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥ ८ ॥ ६ ॥ रामकली महला १ ॥ जिउ आइआ तिउ जावहि बउरे जिउ जनमे तिउ मरणु भइआ ॥ जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै नामु विसारि भवजलि पइआ ॥ १ ॥ तनु धनु देखत गरबि गइआ ॥ कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जतु सतु संजमु सीलु न राखिआ प्रेत पिंजर महि कासटु भइआ ॥ पुंनु दानु इसनानु न संजमु साधसंगति बिनु बादि जइआ ॥ २ ॥ लालचि लागै नामु बिसारिओ आवत जावत जनमु गइआ ॥ जा जमु धाइ केस गहि मारै सुरति नही मुखि काल गइआ ॥ ३ ॥ अहिनिसि निंदा ताति पराई हिरदै नामु न सरब दइआ ॥ बिनु गुर सबद न गति पति पावहि राम नाम बिनु नरकि गइआ ॥ ४ ॥ खिन महि वेस करहि नटूआ जिउ मोह पाप महि गलतु गइआ ॥ इत उत माइआ देखि पसारी मोह माइआ कै मगनु भइआ ॥ ५ ॥ करहि बिकार विथार घनेरे सुरति सबद बिनु भरमि पइआ ॥ हउमै रोगु महा दुखु लागा गुरमति लेवहु रोगु गइआ ॥ ६ ॥ सुख संपति कउ आवत देखै साकत मनि अभिमानु भइआ ॥ जिस का इहु तनु धनु सो फिरि लेवै अंतरि सहसा दूखु पइआ ॥ ७ ॥ अंति कालि किछु साथि न चालै जो दीसै सभु तिसहि मइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु सो प्रभु हरि नामु रिदै लै पारि पइआ ॥ ८ ॥ मूए कउ रोवहि किसहि सुणावहि भै सागर असरालि पइआ ॥ देखि

लोगों को सुनाते रहने के इच्छुक बनें रहते है। तीर्थों पर भ्रमण करने से मन के रोग दूर नही होते; प्रभु नाम के बिना भला कैसे सुख पाया जा सकता है।। ४ ।। अनेकों प्रयत्न करने पर भी काम वासना से नहीं बचा जा सकता; मन डोलता रहता है और वह व्यक्ति को नरक में ले जाता है। यमपुरी में बाँधा हुआ ऐसा व्यक्ति सजा प्राप्त करता है क्योंकि प्रभु नाम के बिना यह जीव जलता ही रहता है।। ५ ।। सिद्ध और साधक और अनेकों ही मुनि तथा देवता है जो हठ और इन्द्रिय-निग्रह करते हुए अपने अन्तर्मन को तृप्त नहीं कर पाते। वे शब्द का चिंतन करते हुए जब गुरु की सेवा को पकड़ लेते हैं तो उनका मन तन निर्मल हो जाता है और वे अभिमान रहित हो जाते हैं।। ६ ।। प्रभु की कृपा द्वारा ही सच्चा नाम प्राप्त होता है और व्यक्ति अच्छे स्वभाव वाला बनकर तुम्हारा शरणागत बना रहता है। तुझ से ही प्रभु यह भक्ति और प्रेम उन्पन्न होता है और गुरमुख बनकर ही तेरे नाम का सुमिरन किया जाता है।। ७ ।। प्रभु नाम में मन भीग जाने से ही अहंकार और गर्व चला जाता है। प्रभु को ना तो पाखण्डों के माध्यम से और ना ही झूठ के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। शब्द गुरु से विहीन होकर उस प्रभु के द्वार पर ठिकाना नही मिलता। हे नानक, गुरमुख बनकर इस सार तत्व का चिंतन कर।। ८ ।। ६ ।। रामकली महला १ ।। हे बावले, तू जिस प्रकार आया था वैसे ही यहाँ से जाना है क्योंकि जैसे ही तेरा जन्म हुआ तो साथ ही मरण भी शुरू हो गया। जो जो तूने रस भोगे हैं तुझे वैसा ही दुख लगता रहा है और प्रभु नाम को भुलाकर तू संसार सागर में पड़ा रहा है।। १ ।। अहंकार में लीन बना तू पराया तन और पराया धन ही देखता रहा है। तू सोने और स्त्री के साथ अपना प्यार बढ़ाता रहा क्यों तूने प्रभु नाम को भुलाया और भ्रमों में पड़ा तू नष्ट हो गया।। १ ।। रहाउ ।। नियन्त्रण, त्याग, संयम और शील का पालन तूने नहीं किया और इस शरीर रूपी पिंजरे में प्रेत बना तू लकड़ी जैसे सूखा और कठोर अर्थात् निर्दयी बना रहा है। पुण्य, दान, स्नान संयम आदि तेरे पास कुछ भी नहीं है और साधसंगति के बिना तेरा जन्म व्यर्थ हो गया है।। २ ।। लालचों में लगकर तूने प्रभु-नाम को भुला दिया है और इसीलिये इधर-उधर की भाग दौड़ में तेरा जीवन नष्ट हो गया है। जब यम दौड़कर तुझे बालों से पकड़कर मारता है तो फिर तुझे होश नहीं रहती और तू काल के मुँह में चला जाता है।। ३ ।। दिन रात तू निंदा और परायी ईर्ष्या में लीन बना रहता है तथा तेरे हृदय में ना तो सबके लिये दया है और ना प्रभु का नाम है। शब्द गुरु के बिना ना तेरी गति होगी न तू सम्मान प्राप्त करेगा और उस प्रभु नाम के बिना तू नरक में ही चला जाएगा ।। ४ ।। मदारी की तरह तू क्षण भर में अनेकों वेश धारण करता है और मोह, पाप आदि में सड़ता गलता रहता है। प्रभु ने भी इधर-उधर माया का फैलाव बना रखा है और तू भी मोह माया में मग्न बना हुआ है।। ५ ।। तू अनेकों विकार और उनके विस्तार धारण किये हुए है और सुरति को शब्द में लगाये बिना तू भ्रम में ही पड़ा हुआ है। तुझे अहंकार रूपी महारोग लगा है परन्तु यदि तू गुरु की मति धारण कर लेगा तो तेरा सारा रोग चला जाएगा।। ६ ।। धन सम्पदा पर ध्यान लगाए रहने वाला जब सुख सम्पति को आता हुआ देखता है तो उसका मन अभिमानी हो उठता है। यह तन और धन जिसका है वह इसे जब वापस ले लेता है तो अन्तर्मन में भय और दुख आ घेरता है।। ७ ।। अंतिम समय में कुछ भी साथ नहीं चलता है और जो कुछ भी दिखाई देता है उस हर वस्तु पर माया का प्रभाव बना हुआ है। वह प्रभु आदि पुरुष और अपरम्पर है और उस प्रभु का नाम हृदय में बसाने पर ही जीव संसार सागर से पार होता है।। ८ ।। मरे हुए को रोकर किसे सुनाते हो क्योंकि यह संसार सागर तो भयानक अजगर की तरह है जो सबको निगल जाता है। तू

कुटंबु माइआ ग्रिह मंदरु साकतु जंजालि परालि पइआ ॥ ९ ॥ जा आए ता तिनहि पठाए चाले तिनै बुलाइ लइआ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ बखसणहारै बखसि लइआ ॥ १० ॥ जिनि एहु चाखिआ राम रसाइणु तिन की संगति खोजु भइआ ॥ रिधि सिधि बुधि गिआनु गुरू ते पाइआ मुकति पदारथु सरणि पइआ ॥ ११ ॥ दुखु सुखु गुरमुखि सम करि जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइआ ॥ आपु मारि गुरमुखि हरि पाए नानक सहजि समाइ लइआ ॥ १२ ॥ ७ ॥ रामकली दखणी महला १ ॥ जतु सतु संजमु साचु द्रिड़ाइआ साच सबदि रसि लीणा ॥ १ ॥ मेरा गुरु दइआलु सदा रंगि लीणा ॥ अहिनिसि रहै एक लिव लागी साचे देखि पतीणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रहै गगन पुरि द्रिसटि समैसरि अनहत सबदि रंगीणा ॥ २ ॥ सतु बंधि कुपीन भरिपुरि लीणा जिहवा रंगि रसीणा ॥ ३ ॥ मिलै गुर साचे जिनि रचु राचे किरतु वीचारि पतीणा ॥ ४ ॥ एक महि सरब सरब महि एका एह सतिगुरि देखि दिखाई ॥ ५ ॥ जिनि कीए खंड मंडल ब्रहमंडा सो प्रभु लखनु न जाई ॥ ६ ॥ दीपक ते दीपकु परगासिआ त्रिभवण जोति दिखाई ॥ ७ ॥ सचै तखति सच महली बैठे निरभउ ताड़ी लाई ॥ ८ ॥ मोहि गइआ बैरागी जोगी घटि घटि किंगुरी वाई ॥ ९ ॥ नानक सरणि प्रभू की छूटे सतिगुर सचु सखाई ॥ १० ॥ ८ ॥ रामकली महला १ ॥ अउहठि हसत मड़ी घरु छाइआ धरणि गगन कल धारी ॥ १ ॥ गुरमुखि केती सबदि उधारी संतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ममता मारि हउमै सोखै त्रिभवणि जोति तुमारी ॥ २ ॥ मनसा मारि मनै महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥ ३ ॥ सिंङी सुरति अनाहदि वाजै घटि घटि जोति तुमारी ॥ ४ ॥ परपंच बेणु तही मनु राखिआ ब्रहम अगनि परजारी ॥ ५ ॥ पंच ततु मिलि अहिनिसि दीपकु निरमल जोति अपारी ॥ ६ ॥ रवि ससि लउके इहु तनु किंगुरी वाजै सबदु निरारी ॥ ७ ॥ सिव नगरी महि आसणु अउधू अलखु अगंमु अपारी ॥ ८ ॥ काइआ नगरी इहु मनु राजा पंच वसहि वीचारी ॥ ९ ॥ सबदि रवै आसणि घरि राजा अदलु करे गुणकारी ॥ १० ॥ कालु बिकालु कहे कहि बपुरे जीवत मूआ

कुटम्ब, धन दौलत, गृह आदि को देखकर एक प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति की तरह सांसारिक जंजालों के बेकार पुआल में ही फँसा हुआ है।। ६ ।। जब व्यक्ति इस संसार में आता है, तो उस प्रभु का भेजा हुआ ही आता है; जब यह यहाँ से चला जाता है तो उसके बुलावे के कारण ही जाता है। प्रभु ने जो कुछ भी करना है वह कर रहा है और वह कृपालु प्रभु ही सबको क्षमा करता रहता है।। १० ।। जिसने भी इस राम रसायन को पी लिया है उन महान पुरुषों की संगति का मुझे पता लगा है। ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ, ज्ञान, बुद्धि सब गुरु से पाई जाती है और मुक्ति रूपी पदार्थ गुरु की शरण में आने पर ही मिलता है।। ११ ।। गुरमुख व्यक्ति दुख और सुख को समान भाव से जानता है और हर्ष तथा शोक से अलिप्त बना रहता है। गुरमुख अपने अभिमान को मारकर प्रभु को प्राप्त करता है और हे नानक, इस तरह से वह अपने स्वभाविक रूप में लीन हो जाता है।। १२ ।। ७ ।। रामकली दक्खिनी महला १ ।। गुरु ने मुझे नियंत्रण, त्याग, संयम और सत्य मन में पक्का किया है तथा अब मैंने सच्चे शब्द का रस प्राप्त कर लिया है।। १ ।। मेरा दयालु गुरु सदैव प्रभु के रंग में ही लीन बना रहता है। वह दिन रात उस एक प्रभु में ही लौ लगाये रहता है और उस सत्य को देखकर सन्तुष्ट बना रहता है।। १ ।। रहाउ ।। वह दशम द्वार अर्थात ऊँचे आध्यत्मिक निवास में बना रहता है, उसकी दृष्टि समदर्शी है और वह अनहद शब्द में रंगा रहता है।। २ ।। गुरु सत्य का लंगोट बाँधकर सर्वव्यापक प्रभु में लीन बना रहता है और उसकी जीभ प्रेम में रंगी रहती है।। ३ ।। उस सच्चे गुरु से मिलाप होता है जिसने हमें भी उस प्रभु में लीन किया है और सस्कारों के तथा कर्मो के चिंतन से अब हमारा मन सन्तुष्ट हो गया है।। ४ ।। उस एक में ही सब कुछ है और इस सब कुछ में वह एक ही है, सच्चे गुरु ने हमें यह दृष्य दिखाया है।। ५ ।। जिस प्रभु ने यह खण्ड मण्डल और ब्रह्माण्ड की रचना की है उस प्रभु को देखा नहीं जा सकता।। ६ ।। गुरु रूपी दीपक ने मानव के हृदय रूपी दीपक को प्रकाशित किया है और तीनों लोकों में फैली उस प्रभु की ज्योति को दिखा दिया है।। ७ ।। अब हम उसके सच्चे तख्त और उसके सच्चे स्थान पर बैठ गये हैं और निर्भय होकर हमने उसकी समाधि लगा ली है।। ८ ।। हे वैराग्यवान योगी प्रभु, तूने हमको मोहित कर लिया है और तूने ही प्रत्येक हृदय में अपना वाद्य बजाकर उसमें संगीत पैदा किया है।। ६ ।। हे नानक, प्रभु की शरण में आने से ही व्यक्ति मुक्त होता है और सच्चा गुरु ही वास्तव में सखा और मित्र बना रहता है।। १० ।। ८ ।। रामकली महला १ ।। जब हृदय को हाथ तथा शरीर को घर माना जाता है तो योगी धरती और आकाश अर्थात् सर्वत्र कलाओं को धारण करने वाले उस प्रभु को देखता है अर्थात हृदय और शरीर से केवल उस परमात्मा को ही मानता है।। १ ।। हे सन्तजनों, गुरमुख बने अनेकों लोग शब्द के माध्यम से पार उतर गये है।। १ ।। रहाउ ।। तीनों लोकों में व्याप्त हे प्रभु, तुम्हारी ज्योति ममता को मार देती है और अहंकार को हृदय से सुखा देती है।। २ ।। सच्चे गुरु के उपदेश का चिंतन मन की इच्छाओं को मार कर उन्हें मन में ही रोके रहता है।। ३ ।। हे प्रभु, प्रत्येक हृदय में निवास करती हुई तुम्हारी ज्योति सुरति में अनहद नाद उत्पन्न करती हुई सिंगी है।। ४ ।। योगियों ने सारे संसार को वीणा समझकर उसमें मन को लगाया है और ब्रह्म रूपी अग्नि को अपने अन्दर प्रज्जवलित किया हुआ है।। ५ ।। पाँच तत्वों का शरीर प्राप्त करके ऐसे योगियों ने प्रभु की ज्योति का निर्मल दीपक अपने अन्तर्मन में रात दिन जलाये रखा है।। ६ ।। सूर्य और चन्द्रमा उनके लिये एक तारे हैं और उनका यह शरीर निराले शब्द को बजाने वाली वीणा रूपी वाद्य है।। ७ ।। हे योगी, तूने कल्याणकारी प्रभु की नगरी अर्थात अपनी आत्मा के ही अन्दर आसन लगा लिया है जहाँ वह अदृष्ट, अगम्य और अपरम्पर प्रभु बसता है।। ८ ।। इस शरीर रूपी नगरी का राजा मन है और अब इसमें पाँचों इन्द्रियाँ बुद्धिमान और चिंतनशील होकर निवास करती हैं।। ६ ।। मन रूपी राजा अब हृदय रूपी आसन पर बैठ कर शब्द में लीन बना रहता है और गुणवान बनकर न्याय करता है।। १० ।।

मनु मारी ॥ ११ ॥ ब्रहमा बिसनु महेस इक मूरति आपे करता कारी ॥ १२ ॥ काइआ सोधि तरै भव सागरु आतम ततु वीचारी ॥ १३ ॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ अंतरि सबदु रविआ गुणकारी ॥ १४ ॥ आपे मेलि लए गुणदाता हउमै त्रिसना मारी ॥ १५ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै वरतै एहा भगति निरारी ॥ १६ ॥ गुरमुखि जोग सबदि आतमु चीनै हिरदै एकु मुरारी ॥ १७ ॥ मनूआ असथिरु सबदे राता एहा करणी सारी ॥ १८ ॥ बेदु बादु न पाखंडु अउधू गुरमुखि सबदि बीचारी ॥ १९ ॥ गुरमुखि जोगु कमावै अउधू जतु सतु सबदि वीचारी ॥ २० ॥ सबदि मरै मनु मारे अउधू जोग जुगति वीचारी ॥ २१ ॥ माइआ मोहु भवजलु है अवधू सबदि तरै कुल तारी ॥ २२ ॥ सबदि सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी ॥ २३ ॥ एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥ २४ ॥ आपे बखसे मेलि मिलाए नानक सरणि तुमारी ॥ २५ ॥ ९ ॥

रामकली महला ३ असटपदीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सरमै दीआ मुंद्रा कंनी पाइ जोगी खिंथा करि तू दइआ ॥ आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ ॥ १ ॥ ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥ जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी अंम्रित नामु भुगति पाई ॥ धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई ॥ २ ॥ मनु द्रिड़ु करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई ॥ काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ इतु किंगुरी सांति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाइ ॥ ४ ॥ भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ॥ गुरमुखि होवहि ता तंती वाजै इन बिधि त्रिसना खंडी ॥ ५ ॥ हुकमु बुझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए ॥ सहसा तूटै निरमलु होवै जोग जुगति इव पाए ॥ ६ ॥ नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ॥ सतिगुर नालि

जिसने आध्यत्मिक रूप से जीवित बने रहकर मन को मार लिया है। उसे ये बेचारे जीवन, मरण आदि भला क्या कह सकते हैं।। ११ ।। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि वह एक प्रभु स्वयं ही है और वह स्वयं ही सब कुछ करता है।। १२ ।। व्यक्ति काया को निर्मल बनाकर और आत्म तत्व का चिंतन करके संसार सागर से पार उतरता है।। १३ ।। गुरु की सेवा से ही सदैव सुख प्राप्त होता है और गुण पैदा करने वाला शब्द अन्तर्मन में रमण करता रहता है।। १४ ।। अहंकार और तृष्णा को मारकर वह गुणदाता प्रभु स्वयं ही अपने से मिला लेता है।। १५ ।। तीन गुणों को मिटाना और चौथे पद में स्थित होना यही निराली भक्ति है।। १६ ।। गुरमुख व्यक्ति का योग यही है कि आत्मा में स्थित शब्द को पहचाने और हृदय मे केवल एक प्रभु को ही जाने।। १७ ।। सभी करने योग्य कार्यो में से सार कर्म यही है कि शब्द में लीन मन स्थिर बना रहे।। १८ ।। हे योगी, जो गुरमुख बनकर शब्द का चिंतन करता है उसके लिये ज्ञान वाद-विवाद और पाखण्ड का कारण नहीं बनता।। १६ ।। हे योगी, गुरमुख बनकर ही योग में कार्यशील बना रहना चाहिये और तुम्हारे यम नियम वास्तव में शब्द का चिंतन ही हैं।। २० ।। हे योगी, तुम्हारे योग की युक्ति का सार यही है कि शब्द के माध्यम से मन की आशाओं तृष्णाओं को समाप्त कर दिया जाए।। २१ ।। हे अवधूत योगी, यह संसार सागर माया मोह है और इसमें शब्द के माध्यम से खुद भी तैरा जाता है और परिवार को भी पार उतार लिया जाता है।। २२ ।। जिन भक्तों ने भक्ति में लीन होकर हे योगी, चिंतन किया है वे ही शब्द के माध्यम से चारों युगों में शूरवीरों की तरह उजागर हुए हैं।। २३ ।। माया में फँसा यह मन शब्द के चिंतन से ही हे योगी, उसमें से बाहर निकलता है।। २४ ।। यह प्रभु स्वयं ही कृपा करता हुआ मेल मिलाता है और नानक तो हे प्रभु, तुम्हारी शरण में है।। २५ ।। ६ ।।

रामकली महला ३ अष्टपदियाँ   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे योगी, तू मेहनत की मुद्राओं को कानों में पहन और दया को तू अपनी गुदड़ी अथवा चोला बना। जब तू आवागमन के खेल को भभूत की तरह शरीर पर लगायेगा तो हे योगी, तू तीनों लोकों को जीत लेगा।। १ ।। हे योगी, तू इस तरह की वीणा बजा कि जिस वीणा से अनहद नाद बजे और प्रभु में लौ लगी रहे।। १ ।। रहाउ ।। तू सत्य और सन्तोष का पात्र बना और उसमें अमृत नाम का भोजन डाल ले। ध्यान को तू अपना डंडा बना ले और हे योगी, तू सुरति को सिंगी बनाकर बजा।। २ ।। हे योगी, मन की मजबूती के आसन पर जब तू बैठेगा तब तेरी भटकन समाप्त होगी। यदि शरीर रूपी नगरी में ही तू माँगने जाएगा तभी हे योगी, तुझे नाम प्राप्त होगा।। ३ ।। जो वीणा तू बजा रहा है, हे योगी, इससे ना तो ध्यान लगेगा और ना ही तू अपनी झोली में सत्य को प्राप्त कर सकेगा। इस वीणा से ना शान्ति मिलती है और ना ही अन्तर्मन से अभिमान जाता है॥४॥भय और प्रेम तू इस वीणा के दो भाग बना और इस शरीर को इसकी लम्बी डंडी की तरह प्रयोग कर। इसके बाद गुरमुख होने पर ही यह एकतारा बजेगा और इस प्रकार तृष्णाएं दूर हो जाएँगी।। ५ ।। जो उस प्रभु के हुकुम को जान लेता है और उस एक में ही अपने चित्त को लगाये रहता है उसका भय समाप्त हो जाता है; वह निर्मल हो जाता है और इस प्रकार योग की वास्तविक विधि को जान जाता है॥६॥जो भी दिखाई दे रहा है यह सब कुछ विनष्ट होने वाला है इसलिये प्रभु में ही अपना चित्त लगाये रख परन्तु जब सच्चे गुरु के साथ

तेरी भावनी लागै ता इह सोझी पाइ ॥ ७ ॥ एहु जोगु न होवै जोगी जि कुटंबु छोडि परभवणु करहि ॥ ग्रिह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि ॥ ८ ॥ इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोगु वडा त्रिसना माइआ ॥ अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइ गवाइआ ॥ ९ ॥ हरि का नामु अउखधु है जोगी जिस नो मंनि वसाए ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए ॥ १० ॥ जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ अंतरि बाहरि एको वेखै विचहु भरमु चुकाए ॥ ११ ॥ विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइ ॥ कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइ ॥ १२ ॥ १ ॥ १० ॥ रामकली महला ३ ॥ भगति खजाना गुरमुखि जाता सतिगुरि बूझि बुझाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि देइ वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु विचहु जाई ॥ २ ॥ आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई ॥ ३ ॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अंते नामु सखाई ॥ ४ ॥ सदा हजूरि दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई ॥ ५ ॥ सचा सबदु रवै घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥ ६ ॥ सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई ॥ ७ ॥ भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इक ठाई ॥ ८ ॥ बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥ ९ ॥ जोगी जुगति गवाई हंढै पाखंडि जोगु न पाई ॥ १० ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसै गुर सबदी जोगु पाई ॥ ११ ॥ धातुर बाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥ १२ ॥ एहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई ॥ १३ ॥ नामि इसनानु करहि से जन निरमल सबदे मैलु गवाई ॥ १४ ॥ त्रै गुण अचेत नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई ॥ १५ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै मूरति त्रिगुणि भरमि भुलाई ॥ १६ ॥ गुर परसादी त्रिकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥ १७ ॥ पंडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि तिंना बूझ न पाई ॥ १८ ॥ बिखिआ माते भरमि भुलाए उपदेसु कहहि किसु भाई ॥ १९ ॥ भगति जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाई ॥ २० ॥ बाणी लागै सो

तेरा प्रेम लगेगा तब यह समझ तुझे आएगी।। ७ ।। परिवार को छोड़कर भ्रमण करते रहने से हे योगी, योग नहीं होता। इस शरीर रूपी घर में ही प्रभु का नाम है और तू गुरु की कृपा से उस प्रभु को इसी में खोज ले।। ८ ।। हे योगी, यह संसार मिट्टी का पुतला है और इसमें तृष्णा रूपी माया का रोग पूरी तरह फैला है। हे योगी, तू अनेकों यत्न और वेश धारण करता है परन्तु यह रोग समाप्त नहीं होता।। ६ ।। प्रभु का नाम ही औषधि है जिसको हे योगी, तू अपने मन में धारण कर। जो गुरमुख हो जाता है वही इस रहस्य को बूझता है और वही योग की युक्ति प्राप्त करता है।। १० ।। हे योगी, योग का मार्ग अत्यन्त कठिन है; जिस पर प्रभु कृपा दृष्टि करता है वही इसको पाता है। वह अन्दर बाहर उस प्रभु को ही देखता है और अपने हृदय से भ्रम को दूर कर देता है।। ११ ।। हे योगी, तू ऐसी वीणा बजा जो बिना बजाये ही बजती रहे। नानक कहता है कि ऐसा योगी मुक्त हो जाता है और उस परम सत्य में लीन बना रहता है।। १२ ।। १ ।। १० ।। रामकली महला ३ ।। गुरमुखों ने ही भक्ति के खजाने को पहचाना है और सच्चे गुरु ने ही उनको यह रहस्य समझाया है।। १ ।। हे सन्तजनों, वह प्रभु गुरमुख बने लोगों को ही बड़प्पन प्रदान करता है।। १ ।। रहाउ ।। जब सत्य में लीन बने रहोगे तो अन्तरात्मा का स्वभाविक सुख उत्पन्न होगा तथा काम, क्रोध अन्दर से चला जाएगा।। २ ।। अहंकार भाव को छोड़कर जब प्रभु नाम में लौ लग जाएगी तो शब्द के माध्यम से मैं, मेरी की ममता नष्ट हो जाएगी।। ३ ।। यह सृष्टि जिससे उत्पन्न होती है उसी के द्वारा विनष्ट की जाती है तथा यहाँ अन्ततः प्रभु नाम ही मददगार बना रहता है।। ४ ।। जिस प्रभु ने यह रचना की है वह सदैव प्रत्यक्ष ही बना रहता है और उसे कभी भी दूर नहीं देखना चाहिए।। ५ ।। उस सच्चे प्रभु में लौ लगने से उसका सच्चा शब्द हृदय में रमण करता रहता है।। ६ ।। सतसंगति में प्रभु-नाम अमूल्य है और इसे बड़े भाग्य से ही पाया जाता है।। ७ ।। हे जीव, तू भ्रमों मे ना भटक, सच्चे गुरु की सेवा कर और इस मन को एक ही स्थान पर स्थिर बनाये रख।। ८ ।। प्रभु-नाम से विहीन यह सृष्टि भटकती रहती है और अपने जन्म को व्यर्थ कर देती है।। ६ ।। तूने घूमते-घूमते हुए ही योग की वास्तविक युक्ति को खो दिया है ; पाखण्डों के माध्यम से योग प्राप्त नहीं होता।। १० ।। प्रभु की नगरी सत्संगति में तू आसन लगाकर बैठ तो शब्द गुरु के माध्यम से तुझे योग की प्राप्ति होगी।। ११ ।। दौड़ भाग के खेल को शब्द ही दूर करता है और प्रभु-नाम मन में आ बसता है।। १२ ।। हे सन्तजनों, यह शरीर एक सरोवर है और इसी में प्रभु से लौ लगाकर स्नान करो।। १३ ।। जो प्रभु नाम में स्नान करते हैं वे सेवक निर्मल हो जाते हैं और शब्द के माध्यम से अपने मन की मैल नष्ट कर देते हैं।। १४ ।। तीनों गुणों में फँसे नासमझ जीव प्रभु नाम का सुमिरन नहीं करते और नाम से विहीन होकर वे नष्ट हो जाते हैं।। १५ ।। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिमूर्ति भी तीनों गुणों में ही भ्रमण करती रहती है।। १६ ।। गुरु की कृपा से ही तीनों गुणों का प्रभाव नष्ट होता है और व्यक्ति चौथे पद में अपनी लौ लगाता है।। १७ ।। पंडित पढ़ते हैं और पढ़ते हुए वाद-विवाद करते हैं ; उन्होंने भी प्रभु के रहस्य को नहीं जाना।। १८ ।। विषय-विकारों के नशे में पड़े ये भ्रमों में भटक रहे हैं इसलिये हे भाई, उपदेश किसे दिया जाए।। १६ ।। भक्तजनों की ही वाणी उत्तम है और यही युगों-युगों में प्रकट होती रहती है।। २० ।।

गति पाए सबदे सचि समाई ॥ २१ ॥ काइआ नगरी सबदे खोजे नामु नवं निधि पाई ॥ २२ ॥ मनसा मारि मनु सहजि समाणा बिनु रसना उसतति कराई ॥ २३ ॥ लोइण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि लगाई ॥ २४ ॥ अदिसटु सदा रहै निरालमु जोती जोति मिलाई ॥ २५ ॥ हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई ॥ २६ ॥ नानकु एक कहै बेनंती नावहु गति पति पाई ॥ २७ ॥ २ ॥ ११ ॥ रामकली महला ३ ॥ हरि की पूजा दुलंभ है संतहु कहणा कछू न जाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि पूरा पाई ॥ नामो पूज कराई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई ॥ २ ॥ हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि वसाई ॥ ३ ॥ पूजा करै सभु लोकु संतहु मनमुखि थाइ न पाई ॥ ४ ॥ सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई ॥ ५ ॥ पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई ॥ ६ ॥ बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई ॥ ७ ॥ गुरमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई ॥ ८ ॥ आपे निरमलु पूज कराए गुर सबदी थाइ पाई ॥ ९ ॥ पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइ मलु लाई ॥ १० ॥ गुरमुखि होवै सु पूजा जाणै भाणा मनि वसाई ॥ ११ ॥ भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अंते नामु सखाई ॥ १२ ॥ अपणा आपु न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई ॥ १३ ॥ पाखंडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई ॥ १४ ॥ जिन अंतरि सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ॥ १५ ॥ एहु मनूआ सुंन समाधि लगावै जोती जोति मिलाई ॥ १६ ॥ सुणि सुणि गुरमुखि नामु वखाणहि सतसंगति मेलाई ॥ १७ ॥ गुरमुखि गावै आपु गवावै दरि साचै सोभा पाई ॥ १८ ॥ साची बाणी सचु वखाणै सचि नामि लिव लाई ॥ १९ ॥ भै भंजनु अति पाप निखंजनु मेरा प्रभु अंति सखाई ॥ २० ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै नानक नामि वडिआई ॥ २१ ॥ ३ ॥ १२ ॥ रामकली महला ३ ॥ हम कुचल कुचील अति अभिमानी मिलि सबदे मैलु उतारी ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि नामि निसतारी ॥ सचा नामु वसिआ घट अंतरि करतै आपि सवारी ॥

जो वाणी के साथ लीन होता है वही गति प्राप्त करता है और वाणी के शब्द के माध्यम से सत्य में समा जाता है।। २१ ।। जो इस काया नगरी में ही शब्द को खोजता है वही नाम रूपी नवनिधियों को प्राप्त कर लेता है।। २२ ।। आशाओं को मारकर मन को उसके स्वभाविक रूप में देखने से ही बिना जीभ हिलाये भी प्रभु की स्तुति की जाती है।। २३ ।। ऐसे व्यक्ति की आँखें आश्चर्य-भाव में विभोर होकर देखती हैं और उसका चित्त उस अदृष्ट प्रभु में लगा रहता है।। २४ ।। ऐसा व्यक्ति उस अलिप्त, अदृष्ट बने रहने वाले प्रभु की ज्योति में अपनी ज्योति मिला देता है।। २५ ।। मैं सदैव अपने गुरु का गुणानुवाद करता हूँ जिसने मुझे सच्चा रहस्य समझा दिया है।। २६ ।। नानक तो एक यही विनती करता है कि प्रभु नाम से ही मुक्ति और सम्मान प्राप्त होता है।। २७ ।। २ ।। ११ ।। रामकली महला ३ ।। हे सन्तजनों, प्रभु की पूजा दुर्लभ है और उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।। १ ।। हे सन्तजनों, गुरमुख बनकर ही उस पूर्ण प्रभु को पाया जाता है। प्रभु के नाम सुमिरन के माध्यम से ही उस प्रभु की पूजा होती है।। १ ।। रहाउ ।। हे सन्तजनों, उसकी पूजा में मैं क्या अर्पण करूं क्योंकि प्रभु के बिना तो सब कुछ मैला ही है।। २ ।। जो प्रभु को अच्छा लगता है उसी के आदेश को स्वीकार करना उसकी पूजा है।। ३ ।। पूजा तो हे सन्तजनों, सभी लोग करते हैं परन्तु मनमुख बने रहकर की हुई पूजा कोई स्थान प्राप्त नहीं कर पाती।। ४ ।। शब्द के माध्यम से मन को मार कर निर्मल बनाना ही हे सन्तजनों ऐसी पूजा है जो सफल होती है।। ५ ।। वे सेवक ही पवित्र और निर्मल हैं जिन्होंने उस एक ही सच्चे प्रभु के शब्द में लौ लगा ली है।। ६ ।। प्रभु-नाम के बिना अन्य कोई पूजा नहीं और यह सारा संसार तो भ्रमों में भूला है।। ७ ।। राम नाम में लौ लगाकर हे सन्तजनों, गुरमुख बनकर व्यक्ति अपने आपको पहचान लेता है।। ८ ।। वह निर्मल प्रभु स्वयं ही अपनी पूजा कराता है और शब्द-गुरु के माध्यम से की हुई पूजा सफल होती है।। ६ ।। व्यक्ति पूजा तो करता है परन्तु पूजा की विधि नहीं जानता और द्वैत भाव में पड़ा रहता है तथा अपने आपको मैल लगाता रहता है।। १० ।। गुरमुख बन चुका व्यक्ति ही पूजा के वास्तविक रहस्य को जानता है और प्रभु की रजा को अपने मन में धारण करता है।। ११ ।। प्रभु के हुकुम से ही हे सन्तजनों, सभी सुख पाये जाते हैं और अन्त में प्रभु नाम ही सहायता करता है।। १२ ।। जो अपने आपको नहीं पहचानते हे सन्तजनों, उनका गुणानुवाद भी झूठा है।। १३ ।। पाखण्ड करते रहने से यम छोड़ता नहीं और बेइज़्ज़त करता हुआ यहाँ से ले जाता है।। १४ ।। जिन्होंने अन्तर्मन में स्वयं शब्द को पहचान लिया है उन्होंने ही मुक्ति और मर्यादा के भाव को समझ लिया है।। १५ ।। जब यह मन शून्य समाधि लगाता हैं तो इसकी ज्योति उस परम ज्योति में मिल जाती है।। १६ ।। सत संगति में मिलकर गुरमुख बनकर वे सच्चे नाम का बखान करते हैं और सत्संगति के माध्यम से उस प्रभु में मिल जाते हैं।। १७ ।। गुरमुख गुणानुवाद करता है और वास्तव में वह स्वयं प्रभु ही उससे गुणानुवाद करवाता है ; उस प्रभु के सच्चे द्वार पर ऐसे गुरमुख की ही शोभा बनी रहती है।। १८ ।। सच्ची वाणी सत्य का ही बखान करती है और सच्चे नाम में ही लौ लगाती है।। १६ ।। भय का नाश करने वाला और घोर पापों का खण्डन करने वाला मेरा प्रभु ही अंत में सखा बनता है।। २० ।। हे नानक, प्रभु नाम की यही महानता है कि जीव यह जान जाता है कि वह प्रभु ही सब कुछ है और स्वयं ही सबमें कार्यशील है।। २१ ।। ३ ।। १२ ।। रामकली महला ३ ।। हम बहुत ही मलीन और अभिमानी हैं परन्तु शब्द में लीन होकर हमने अपनी मैल उतार दी है।। १ ।। हे सन्तजनों, गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम के माध्यम से पार उतरा जाता है। गुरमुख बनकर ही सच्चा नाम हृदय में बसता है और कर्ता प्रभु स्वयं जीव को सँवार देता है।।

१ ॥ रहाउ ॥ पारस परसे फिरि पारसु होए हरि जीउ अपणी किरपा धारी ॥ २ ॥ इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन जूऐ बाजी हारी ॥ ३ ॥ इकि अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु उरि धारी ॥ ४ ॥ अनदिनु राते सहजे माते सहजे हउमै मारी ॥ ५ ॥ भै बिनु भगति न होई कब ही भै भाइ भगति सवारी ॥ ६ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ गिआनि तति बीचारी ॥ ७ ॥ आपे आपि कराए करता आपे बखसि भंडारी ॥ ८ ॥ तिस किआ गुणा का अंतु न पाइआ हउ गावा सबदि वीचारी ॥ ९ ॥ हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचहु आपु निवारी ॥ १० ॥ नामु पदारथु गुर ते पाइआ अखुट सचे भंडारी ॥ ११ ॥ अपणिआ भगता नो आपे तुठा अपणी किरपा करि कल धारी ॥ १२ ॥ तिन साचे नाम की सदा भुख लागी गावनि सबदि वीचारी ॥ १३ ॥ जीउ पिंडु सभु किछु है तिस का आखणु बिखमु बीचारी ॥ १४ ॥ सबदि लगे सेई जन निसतरे भउजलु पारि उतारी ॥ १५ ॥ बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को वीचारी ॥ १६ ॥ जो धुरि लिखिआ सोई पाइआ मिलि हरि सबदि सवारी ॥ १७ ॥ काइआ कंचनु सबदे राती साचै नाइ पिआरी ॥ १८ ॥ काइआ अंम्रिति रही भरपूरे पाईऐ सबदि वीचारी ॥ १९ ॥ जो प्रभु खोजहि सेई पावहि होरि फूटि मूए अहंकारी ॥ २० ॥ बादी बिनसहि सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥ २१ ॥ सो जोगी ततु गिआनु बीचारे हउमै त्रिसना मारी ॥ २२ ॥ सतिगुरु दाता तिनै पछाता जिस नो क्रिपा तुमारी ॥ २३ ॥ सतिगुरु न सेवहि माइआ लागे डूबि मूए अहंकारी ॥ २४ ॥ जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीऐ राम मुरारी ॥ २५ ॥ अनदिनु जागत रहै दिनु राती अपने प्रिअ प्रीति पिआरी ॥ २६ ॥ तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर विटहु बलिहारी ॥ २७ ॥ माइआ मोहु बिनसि जाइगा उबरे सबदि वीचारी ॥ २८ ॥ आपि जगाए सेई जागे गुर कै सबदि वीचारी ॥ २९ ॥ नानक सेई मूए जि नामु न चेतहि भगत जीवे वीचारी ॥ ३० ॥ ४ ॥ १३ ॥ रामकली महला ३ ॥ नामु खजाना गुर ते पाइआ त्रिपति रहे आघाई ॥ १ ॥ संतहु गुरमुखि

१ ।। रहाउ ।। प्रभु ने ऐसी कृपा की कि सच्चे गुरु रूपी पारस को छूकर हम भी फिर पारस बन गए हैं।। २ ।। अनेकों अभिमानी विभिन्न प्रकार के वेश बनाकर भटक रहे हैं और उन्होंने तो जुए में हारने के समान अपने जीवन की बाजी हार दी है।। ३ ।। ऐसे भी हैं जो दिन रात सदा भक्ति ही करते रहते हैं और जिन्होंने प्रभु-नाम को हृदय में धारण कर रखा है।। ४ ।। दिन रात वे प्रभु में लीन बने हुए अपने सहज स्वभाव में मस्त बने रहते हैं और स्वाभाविक रूप से ही अहंकार को मार लेते हैं।। ५ ।। प्रभु के भय के बिना उसकी भक्ति भी नहीं हो सकती और डर अर्थात संयम के भाव के साथ भक्ति भाव भी अच्छा बना रहता है।। ६ ।। ज्ञान तत्व के चिंतन के फलस्वरूप शब्द के माध्यम से उन्होंने माया मोह को जला दिया होता है।। ७ ।। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ कराता है और स्वयं ही भक्ति के भण्डार प्रदान करता है।। ८ ।। मैं शब्द के माध्यम से विचार करता हुआ उसके गुण गाता हूँ परन्तु उसके गुणों का रहस्य और सीमा जान नहीं पाता।। ६ ।। अहं भाव को त्याग कर मैं प्रभु का ही जाप करता हूँ और प्रभु का ही गुणानुवाद करता हूँ।। १० ।। प्रभु-नाम रूपी पदार्थ मैंने उस गुरु से प्राप्त किया है जिसका भण्डार सच्चा है और कभी समाप्त होने वाला नहीं है।। ११ ।। प्रभु अपने भक्तों पर स्वयं ही प्रसन्न हुआ और अपनी कृपा करते हुए उसने अपनी शक्ति को जीवों का कल्याण करने हेतु धारण किया है।। १२ ।। ऐसे व्यक्तियों को सच्चे नाम की भूख सदा बनी रहती है और वे शब्द का चिंतन करते हुए उस प्रभु का गुणानुवाद करते रहते हैं।। १३ ।। ये शरीर और प्राण आदि सब कुछ उसी का है और उसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है।। १४ ।। जो शब्द में लीन हो गये हैं वे ही लोग पार उतर गये हैं और संसार सागर को तैर गये हैं।। १५ ।। उस सच्चे प्रभु के बिना कोई पार नहीं उतर सकता। इस रहस्य को कोई बिरला ही बूझता है।। १६ ।। जो प्रभु की ओर से लिखा है वही हमने प्राप्त किया है और हे जीव, शब्द के माध्यम से जीवन को सँवार कर तू उस प्रभु में लीन हो जा।। १७ ।। शब्द में लीन यह शरीर सोने की तरह सुन्दर बना रहता है और प्रभु के सच्चे नाम से प्यार बनाये रहता है।। १८ ।। यह काया प्रभु नाम के अमृत से भरी पूरी बनी रहती है परन्तु इस अमृत को शब्द चिंतन के माध्यम से ही प्राप्त किया जाता है।। १६ ।। जो प्रभु को खोजते हैं वे ही उसको प्राप्त करते हैं अन्य सभी अहंकारी जीव तो वास्तव में फटकर मर खप जाते हैं।। २० ।। विवाद करने वाले व्यक्ति का तो विनाश ही होता है और उस प्रभु का सेवक सेवा करता हुआ गुरु का प्यारा बना रहता है।। २१ ।। वास्तविक योगी और तत्वज्ञान का विचार करने वाला वही है जिसने अहंकार और तृष्णा को मार दिया है।। २२ ।। जिस पर तुम्हारी कृपा होती है वही दाता सच्चे गुरु को पहचान पाता है।। २३ ।। जो सच्चे गुरु की सेवा नहीं करते और माया में लीन बने रहते हैं वे अहंकारी तो अन्ततः डूब मरते हैं।। २४ ।। जब तक अन्दर सांस है तब तक सेवा करते रहो और उस प्रभु से जा मिलो।। २५ ।। जिन्हें अपने प्रियतम की प्यारी प्रीति लग गई है वे दिन रात सदैव आध्यात्मिक रूप से जागृत बने रहते हैं।। २६ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और उस पर अपना तन मन बार-बार न्यौछवर करता हूँ।। २७ ।। यह माया मोह तो सभी विनष्ट हो जाएगा और उसी का उद्धार होगा जिसने शब्द के माध्यम से उस प्रभु का चिंतन किया है।। २८ ।। जिन्हें प्रभु स्वयं जगाता है वे ही शब्द गुरु के चिंतन के माध्यम से जगते रहते हैं।। २६ ।। हे नानक, मरे हुए व्यक्ति वे ही हैं जो प्रभु-नाम का सुमिरन नहीं करते और भक्तजन तो उस प्रभु का चिंतन करते हुए जीवित बने रहते हैं।। ३० ।। ४ ।। १३ ।। रामकली महला ३ ।। मैंने प्रभु-नाम का खजाना गुरु से प्राप्त किया है और मैं तृप्त होकर सन्तुष्ट हो गया हूँ।। १ ।। हे सन्तजनों, गुरमुख बनकर ही

मुकति गति पाई ॥ एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई ॥ २ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ ३ ॥ आपे साजे स्रिसटि उपाए सिरि सिरि धंधै लाई ॥ ४ ॥ तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई ॥ ६ ॥ आपे मारि जीवाले आपे तिस नो तिलु न तमाई ॥ ७ ॥ इकि दाते इकि मंगते कीते आपे भगति कराई ॥ ८ ॥ से वडभागी जिनी एको जाता सचे रहे समाई ॥ ९ ॥ आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥ १० ॥ आपे दुखु सुखु पाए अंतरि आपे भरमि भुलाई ॥ ११ ॥ वडा दाता गुरमुखि जाता निगुरी अंध फिरै लोकाई ॥ १२ ॥ जिनी चाखिआ तिना सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ १३ ॥ इकना नावहु आपि भुलाए इकना गुरमुखि देइ बुझाई ॥ १४ ॥ सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दी वडी वडिआई ॥ १५ ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपावसु बणत बणाई ॥ १६ ॥ निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु मनाई ॥ १७ ॥ तिस नो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरमुखि बणत बणाई ॥ १८ ॥ सतिगुर भेटै सो जनु सीझै जिसु हिरदै नामु वसाई ॥ १९ ॥ सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ॥ २० ॥ नानक सुणि वेखि रहिआ विसमादु मेरा प्रभु रविआ स्रब थाई ॥ २१ ॥ ५ ॥ १४ ॥

रामकली महला ५ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किनही कीआ परविरति पसारा ॥ किनही कीआ पूजा बिसथारा ॥ किनही निवल भुइअंगम साधे ॥ मोहि दीन हरि हरि आराधे ॥ १ ॥ तेरा भरोसा पिआरे ॥ आन न जाना वेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किनही ग्रिहु तजि वण खंडि पाइआ ॥ किनही मोनि अउधूतु सदाइआ ॥ कोई कहतउ अनंनि भगउती ॥ मोहि दीन हरि हरि ओट लीती ॥ २ ॥ किनही कहिआ हउ तीरथ वासी ॥ कोई अंनु तजि भइआ उदासी ॥ किनही भवनु सभ धरती करिआ ॥ मोहि दीन हरि हरि दरि परिआ ॥ ३ ॥ किनही

मुक्ति वाली अवस्था प्राप्त होती है। उस पूर्ण गुरु की कृपा से ही एक प्रभु का नाम मेरे हृदय में बस गया है।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु स्वयं ही करता है स्वयं ही भोगने वाला है और स्वयं ही सबको भोजन देने वाला है।। २ ।। जो कुछ किया जाना है वह कर रहा है तथा अन्य किसी से तो कुछ भी नहीं होता।। ३ ।। वह स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और हर एक को अपने-अपने काम में लगाए रहता है।। ४ ।। उसी का सुमिरन करो तभी सुख प्राप्त होगा और सच्चा गुरु ही उससे मेल कराने वाला है।। ५ ।। वह प्रभु स्वयं ही अपने आप को उत्पन्न करने वाला है और उस अदृष्ट को इन्द्रियों के माध्यम से देखा नहीं जा सकता।। ६ ।। वह स्वयं ही मारता है जीवित करता है और उसे तिल मात्र भी लालच नहीं।। ७ ।। कईयों को उसने दाता और कईयों को भिखारी बना दिया है ; वह प्रभु स्वयं ही अपनी भक्ति कराता है।। ८ ।। वे भाग्यशाली हैं जिन्होंने एक ही प्रभु को जाना है और वे ही सत्य मे लीन बने रहते है।। ६ ।। प्रभु स्वयं ही सुन्दर स्वरूप वाला और सयाना है, उसके मूल्य को नहीं आँका जा सकता।। १० ।। वह स्वयं ही जीव को सुख-दुख में डालता है और स्वयं ही भ्रमों में भटकाता है।। ११ ।। उस बड़े दाता को गुरमुख बनकर ही जाना जाता है अन्यथा सारा संसार गुरु के ज्ञान से विहीन होकर अँधा बना भटकता रहता है।। १२ ।। जिन्होंने उस प्रभु के प्रेम रस को चखा है उन्हें ही उसका स्वाद मालूम है ; ऐसी पहेली का रहस्य मुझे सच्चे गुरु ने ही बताया है। कईयों को उसने अपने नाम को भुलवा रखा है और कई गुरमख बने हुओं को यह रहस्य समझा देता है।। १४ ।। हे सन्तजनों, सदैव उसका गुणानुवाद करो क्योंकि उसकी महिमा बहुत बड़ी है।। १५ ।। उसके बिना अन्य कोई राजा नहीं है और उसी ने ही न्याय का आचार-विचार बनाया है।। १६ ।। उसी का न्याय ही सदैव सच्चा होता है और किसी बिरले को ही वह हुकुम मानने की शक्ति देता है।। १७ ।। हे प्राणियों, सदैव उसी का सुमिरन करो जिसने गुरमुख बनाकर हुकुम मानने की विधि बनाई है।। १८ ।। जो सच्चे गुरु से मिल जाता है और जिसके हृदय में प्रभु नाम बस जाता है वही सेवक सफल होता है।। १६ ।। वह प्रभु स्वयं सच्चा है, सदैव सच्चा ही बना रहता है और उसी की वाणी को शब्द के माध्यम से सुना जाता है।। २० ।। हे नानक, वह सुनता देखता हुआ आश्चर्य स्वरूप बना रहता है और वही मेरा प्रभु सभी स्थानों में बसा रहता है।। २१ ।। ५ ।। १४ ।।

रामकली महला ५ अष्टपदियाँ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

किसी ने तो संसार में लीन बने रहने का आडम्बर किया है और किसी ने पूजा पाठ का विस्तार बनाया है; किसी ने तो न्यौली कर्म और कुण्डलिनी साधना अपनाई है परन्तु मुझ गरीब ने तो केवल प्रभु की ही आराधना की है।। १।। हे प्यारे प्रभु, मुझे तो तेरा ही भरोसा है और मेरे पास अन्य कोई ढोंग नहीं है।। १ ।। रहाउ ।। किसी ने घर बार छोड़कर वन में निवास किया है और किसी ने मौन व्रत धारण करके अपने आपको विरक्त अवधूत का नाम दिया है। कोई कहता है कि मैं केवल उस प्रभु की अनन्य भक्ति करने वाला हूँ परन्तु मुझ दीन ने तो केवल एक प्रभु की ही शरण ली।। २ ।। कोई कहता है कि मैं तीर्थ पर निवास करने वाला हूँ और कोई अन्न को त्याग कर सबके प्रति उदासीन बन गया है। कोई सारी धरती पर भ्रमण कर रहा है परन्तु मैं दीन तो प्रभु के द्वार पर ही पड़ा हुआ हूँ ।। ३ ।।

कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ किनही कहिआ बाह बहु भाई ॥ कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ मोहि दीन हरि हरि आधारा ॥ ४ ॥ किनही घूघर निरति कराई ॥ किनहू वरत नेम माला पाई ॥ किनही तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि धिआइआ ॥ ५ ॥ किनही सिध बहु चेटक लाए ॥ किनही भेख बहु थाट बनाए ॥ किनही तंत मंत बहु खेवा ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सेवा ॥ ६ ॥ कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ को खटु करम सहित सिउ मंडित ॥ कोई करै आचार सुकरणी ॥ मोहि दीन हरि हरि हरि सरणी ॥ ७ ॥ सगले करम धरम जुग सोधे ॥ बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइआ ॥ बूझी त्रिसना महा सीतलाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ रामकली महला ५ ॥ इसु पानी ते जिनि तू घरिआ ॥ माटी का ले देहुरा करिआ ॥ उकति जोति लै सुरति परीखिआ ॥ मात गरभ महि जिनि तू राखिआ ॥ १ ॥ राखनहारु सम्हारि जना ॥ सगले छोडि बीचार मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि दीए तुधु बाप महतारी ॥ जिनि दीए भ्रात पुत हारी ॥ जिनि दीए तुधु बनिता अरु मीता ॥ तिसु ठाकुर कउ रखि लेहु चीता ॥ २ ॥ जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥ जिनि दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ जिनि दीआ तुधु पावकु बलना ॥ तिसु ठाकुर की रहु मन सरना ॥ ३ ॥ छतीह अंम्रित जिनि भोजन दीए ॥ अंतरि थान ठहरावन कउ कीए ॥ बसुधा दीओ बरतनि बलना ॥ तिसु ठाकुर के चिति रखु चरना ॥ ४ ॥ पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥ हसत कमावन बासन रसना ॥ चरन चलन कउ सिरु कीनो मेरा ॥ मन तिसु ठाकुर के पूजहु पैरा ॥ ५ ॥ अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥ सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ अब तू सीझु भावै नही सीझै ॥ कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥ ६ ॥ ईहा ऊहा एकै ओही ॥ जत कत देखीऐ तत तत तोही ॥ तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥ जिसु विसरिऐ इक निमख न सरै ॥ ७ ॥ हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ ना किछु सेवा ना करमारे ॥ गुरु बोहिथु वडभागी मिलिआ ॥ नानक दास संगि पाथर तरिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ काहू बिहावै रंग रस रूप ॥

कोई कहता है कि मेरे खानदान की महिमा बड़ी है और कोई कहता है कि मेरे भाईयों की बहुत सी भुजाएँ मेरे साथ है। कोई कहता है कि मेरे धन का बहुत विस्तार है परन्तु मुझ दीन को तो केवल एक प्रभु का ही आसरा है।। ४ ।। कोई घुंघरू बाँधकर नृत्य करता है और किसी ने व्रतों और नियमों की माला पहन रखी है। किसी ने गोपी चन्दन का तिलक लगाया है परन्तु मुझ दीन ने तो बार-बार प्रभु का ही सुमिरन किया है।। ५ ।। किसी ने तो सिद्धियाँ प्राप्त करने वाले खेल तमाशे बनाए हैं और किसी ने विभिन्न वेश बनाकर अनेकों प्रकार की रचनाएं की हैं। किसी ने तन्त्र-मन्त्र को अपना चप्पू बना रखा है परन्तु मुझ दीन के लिये तो प्रभु की सेवा ही सब कुछ है।। ६ ।। कोई पण्डित बना अपने आप को चतुर कहलाता है और कोई योग के षटकर्म करता हुआ शिव की पूजा में लीन बना है। कोई अच्छे कार्यों का आचरण बनाए हुए है परन्तु मुझ दीन के लिये तो प्रभु की शरण ही सब कुछ है।। ७ ।। मैंने हर एक युग के धर्म कर्म को परखा है और यह जान लिया है कि प्रभु नाम के बिना यह मन ज्ञानवान नहीं होता। नानक कहता है कि जब मैंने साधसंगति प्राप्त कर ली तो मेरी तृष्णा बुझ गई और मैं शान्त हो गया हूँ।। ८ ।। १ ।। रामकली महला ५ ।। जिसने इस पानी से तुझे बनाया और मिट्टी लेकर तेरे शरीर की रचना की, जिसने तुझे युक्ति, ज्योति और समझने परखने की सुरति प्रदान की और जिसने माता के गर्भ में भी तेरी रक्षा की है।। १ ।। उस रक्षक प्रभु को हे प्राणी, याद रख तथा मन के सारे संकल्पों-विकल्पों को छोड़ दे।। १ ।। रहाउ ।। जिसने तुझे माता और पिता दिए, जिसने तुझे भाई, पुत्र और मनोहारी लोग दिये हैं, जिसने तुझे स्त्री और मित्र आदि प्रदान किये हैं, हे जीव, तू उस ठाकुर को चित्त में बसाए रख।। २ ।। जिसने तुझे अमूल्य हवा दी है, जिसने तुझे बिना मूल्य लिये जन्म दिया है, जिसने तुझे जलाने के लिये अग्नि दी है, हे मेरे मन, तू उस प्रभु की शरण में बना रह।। ३ ।। जिसने तुझे छत्तीस प्रकार के भोजन दिये हैं और तेरे शरीर में ही उन भोजनों को ठहरने के स्थान बनाए हैं, जिसने तुझे धरती, बर्तन आदि सामान दिये हैं तू उस प्रभु के चरणों को चित्त में बनाये रख।। ४ ।। देखने के लिये आँखें, सुनने के लिये कान, कमाई करने के लिये हाथ, बर्तन और जीभ आदि, चलने के लिए पाँव और ऊँचा सिर अर्थात ऊँची दिमागी शक्तियाँ तुझे प्रदान की हैं हे मेरे मन, उस मालिक के चरणों की पूजा करता रह।। ५ ।। तुझ अपवित्र बने को जिसने पवित्र कर दिया है तथा समस्त योनियों के जीवों में तुझे सिरमौर बना दिया है; हे जीव, मानव जन्म धारण करके बेशक तू इसे सफल करे या ना करे यह तेरी मर्जी है परन्तु तेरे सभी कार्य तभी ठीक होंगे जब तू मन में उस प्रभु का सुमिरन करता रहेगा।। ६ ।। यहाँ वहाँ एक वही प्रभु है और जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ तू ही दिखाई देता है। जिसको भुला देने पर एक क्षण भर भी गुजारा नहीं होता, हे मन, तू उसके सुमिरन में क्यों आलस कर रहा है।। ७ ।। हम तो गुण विहीन और अपराधी हैं; हमने ना तो कुछ सेवा की है और ना ही कोई कर्म किया है। बड़े भाग्य से गुरु रूपी जहाज़ हमें मिल गया है और दास नानक रूपी पत्थर भी उसके साथ लगकर पार उतर गया है।। ८ ।। २ ।। रामकली महला ५ ।। कोई तो अपनी आयु रंग रस

काहू बिहावै माइ बाप पूत ॥ काहू बिहावै राज मिलख वापारा ॥ संत बिहावै हरि नाम अधारा ॥ १ ॥ रचना साचु बनी ॥ सभ का एकु धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ काहू बिहावै रसना सादि ॥ काहू बिहावै लपटि संगि नारी ॥ संत रचे केवल नाम मुरारी ॥ २ ॥ काहू बिहावै खेलत जूआ ॥ काहू बिहावै अमली हूआ ॥ काहू बिहावै पर दरब चुोराए ॥ हरि जन बिहावै नाम धिआए ॥ ३ ॥ काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ काहू रोग सोग भरमीजा ॥ काहू पवन धार जात बिहाए ॥ संत बिहावै कीरतनु गाए ॥ ४ ॥ काहू बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ काहू बिहावै सो पिड़ु मालत ॥ काहू बिहावै बाल पड़ावत ॥ संत बिहावै हरि जसु गावत ॥ ५ ॥ काहू बिहावै नट नाटिक निरते ॥ काहू बिहावै जीआ इह हिरते ॥ काहू बिहावै राज महि डरते ॥ संत बिहावै हरि जसु करते ॥ ६ ॥ काहू बिहावै मता मसूरति ॥ काहू बिहावै सेवा जरूरति ॥ काहू बिहावै सोधत जीवत ॥ संत बिहावै हरि रसु पीवत ॥ ७ ॥ जितु को लाइआ तित ही लगाना ॥ ना को मूड़ु नही को सिआना ॥ करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ८ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५ ॥ दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ मात गरभ संकट ते छूट ॥ जा का नामु सिमरत भउ जाइ ॥ तैसे संत जना राखै हरि राइ ॥ १ ॥ ऐसे राखनहार दइआल ॥ जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलु पीवत जिउ तिखा मिटंत ॥ धन बिगसै ग्रिहि आवत कंत ॥ लोभी का धनु प्राण अधारु ॥ तिउ हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥ २ ॥ किरसानी जिउ राखै रखवाला ॥ मात पिता दइआ जिउ बाला ॥ प्रीतमु देखि प्रीतमु मिलि जाइ ॥ तिउ हरि जन राखै कंठि लाइ ॥ ३ ॥ जिउ अंधुले पेखत होइ अनंद ॥ गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ पिंगुल परबत परते पारि ॥ हरि कै नामि सगल उधारि ॥ ४ ॥ जिउ पावक संगि सीत को नास ॥ ऐसे प्राछत संतसंगि बिनास ॥ जिउ साबुनि कापर ऊजल होत ॥ नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥ ५ ॥ जिउ चकवी सूरज की आस ॥ जिउ चात्रिक बूंद की पिआस ॥ जिउ कुरंक नाद करन समाने ॥ तिउ

और रूप का उपभोग करने में ही व्यतीत कर देता है और कोई माँ-बाप, पुत्र के रूप में ही अपना जीवन व्यतीत कर देता है। कोई राज धन-दौलत और व्यापार में ही अपना समय गँवा देता है परन्तु सन्तजन प्रभु-नाम के आसरे में ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं।। १ ।। यह सच्ची रचना बनी हुई दिखाई दे रही है और इस सबका मालिक वह एक प्रभु ही है। कोई ज्ञान के वाद-विवाद में ही जीवन बिता देता है और जीभ का रस लेते हुए ही स्वयं बीत जाता है। कोई स्त्री से लिपटा हुआ ही जीवन बिता देता है परन्तु सन्तजन तो केवल प्रभु-नाम में ही लीन बने रहते हैं।। २ ।। कोई जुआ खेलते हुए समय बिता देता है और कोई नशे में धुत होकर जीवन गँवा देता है। कोई पराये धन की चोरी करने में ही जीवन बिता देता है परन्तु प्रभु का सेवक नाम सुमिरन में ही अपना जीवन व्यतीत करता है।। ३ ।। कोई योग तपस्या और पूजा में ही आयु व्यतीत कर देता है और कोई रोगों और शोकों में ही भटकता रहता है। कईयों की प्राणायाम में ही आयु बीतती जा रही है परन्तु शान्त पुरुष प्रभु के कीर्तन में आयु व्यतीत करता है।। ४ ।। कोई दित रात और आगे और आगे पहुँचने के लिये चलता हुआ ही अपनी उम्र बिता देता है और कोई जीवन के किसी एक क्षेत्र में ही ताल ठोंकता हुआ जीवन व्यतीत कर देता है। कोई बच्चों को पढ़ाता हुआ जीवन निकाल देता है परन्तु सन्त व्यक्ति प्रभु यश का गायन करता हुआ आयु व्यतीत करता है।। ५ ।। कोई नाटक, नृत्य, स्वांग आदि में जीवन बिता देता है और कोई जीव हिंसा करता हुआ अपना जीवन बिताता है; कोई राज में डरता हुआ ही अपना जीवन बिताता है परन्तु सन्तजन प्रभु का यश गायन करते हुए समय बिताते हैं।। ६ ।। कई सलाह मशवरा देते हुए ही जीवन बिता देते हैं और कई सेवा और जरूरतें पूरी करते हुए ही बीत जाते हैं। कई जीवों का शोधन करते हुए ही अपना जीवन बिता देते हैं परन्तु सन्त व्यक्ति हरि रस का पान करते हुए जीवन बिताते हैं।। ७ ।। प्रभु ने जिसको जिधर लगाया है वह वहीं लगा है इसलिये ना तो कोई मूर्ख है ना सयाना है। कृपा करके प्रभु जिसे नाम प्रदान करता है हे नानक, मैं तो उस पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ।। ८ ।। ३ ।। रामकली महला ३ ।। जंगल की आग में भी प्रभु के प्यारे कई पेड़ पौधे ठीक वैसे ही बचे रहते हैं जैसे माता के गर्भ की अग्नि के दुख से प्रभु-नाम का सुमिरन करता हुआ बच्चा बचा रहता है। उस प्रभु के नाम का सुमिरन करने से भय चला जाता है और क्योंकि सन्तजन प्रभु के नाम का सुमिरन करते हैं तो वह प्रभु भी उनकी रक्षा करता है।। १ ।। हे दयालु प्रभु, तुम ऐसे रक्षा करने वाले हो कि मैं जिधर भी देखता हूँ तुम मुझे प्रति-पालन करते हुए नजर आते हो।। १ ।। रहाउ ।। जल पीने से जैसे प्यास बुझ जाती है, प्रियतम के घर वापस आ जाने से जैसे स्त्री खिल उठती है, धन-दौलत जैसे लोभी व्यक्ति के प्राणों का आधार होते है। उसी प्रकार प्रभु के सेवकों का प्रभु के साथ प्यार होता है।। २ ।। किसान जैसे अपनी खेती की रखवाली करता है, माता-पिता जैसे अपने बच्चे के प्रति दयावान बने रहते हैं, जैसे कोई अपने प्रिय मित्र को देखकर उसे प्यार से मिलकर ही जाता है उसी प्रकार प्रभु अपने सेवकों को गले से लगाकर रहता है।। ३ ।। जिस प्रकार अँधा व्यक्ति दृष्टि प्राप्त हो जाने पर आनन्दित हो उठता है, गूंगा व्यक्ति बोल सकने पर प्रसन्न होकर गीत गाने लगता है, जैसे लंगड़ा व्यक्ति पर्वत को पार करके अपने को पार उतर गया समझता है परन्तु इन सब कौतुकों के लिये प्रभु-नाम के माध्यम से ही सबका पार उतारा होता है।। ४ ।। जिस प्रकार आग से सारी ठंडक समाप्त हो जाती है इसी प्रकार सत्संगति में पापों का विनाश हो जाता है। जैसे साबुन से कपड़े उज्जवल हो जाते हैं उसी प्रकार प्रभु के नाम सुमिरन से सभी भ्रम और भय नष्ट हो जाते हैं।। ५ ।। जिस प्रकार चकवी सूर्य के उगने की आशा लगाए रहती है, जैसे चातक को बादल की बूंद की प्यास लगी रहती है, जिस प्रकार हिरन के कान नाद के आनन्द में

हरि नाम हरि जन मनहि सुखाने ॥ ६ ॥ तुमरी क्रिपा ते लागी प्रीति ॥ दइआल भए ता आए चीति ॥ दइआ धारी तिनि धारणहार ॥ बंधन ते होई छुटकार ॥ ७ ॥ सभि थान देखे नैण अलोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ भ्रम भै छूटे गुर परसाद ॥ नानक पेखिओ सभु बिसमाद ॥ ८ ॥ ४ ॥ रामकली महला ५ ॥ जीअ जंत सभि पेखीअहि प्रभ सगल तुमारी धारना ॥ १ ॥ इहु मनु हरि कै नामि उधारना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन महि थापि उथापे कुदरति सभि करते के कारना ॥ २ ॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिदारना ॥ ३ ॥ नामु जपत मनु निरमल होवै सूखे सूखि गुदारना ॥ ४ ॥ भगत सरणि जो आवै प्राणी तिसु ईहा ऊहा न हारना ॥ ५ ॥ सूख दूख इसु मन की बिरथा तुम ही आगै सारना ॥ ६ ॥ तू दाता सभना जीआ का आपन कीआ पालना ॥ ७ ॥ अनिक बार कोटि जन ऊपरि नानकु वंञै वारना ॥ ८ ॥ ५ ॥

रामकली महला ५ असटपदी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलाई ॥ १ ॥ मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥ पारब्रहम का नामु द्रिड़ाए अंते होइ सखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल दूख का डेरा भंना संत धूरि मुखि लाई ॥ २ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वंञाई ॥ ३ ॥ करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥ ४ ॥ बंधन तोड़ि चरन कमल द्रिड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥ ५ ॥ अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥ ६ ॥ जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई ॥ ७ ॥ नाम रसाइणि इहु मनु राता अंम्रितु पी त्रिपताई ॥ ८ ॥ संतसंगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥ ९ ॥ पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई ॥ १० ॥ नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई ॥ ११ ॥ घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई ॥ १२ ॥ जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥ १३ ॥ पुत्र

लीन बने रहते हैं उसी प्रकार प्रभु का नाम प्रभु के सेवकों को सुख देने वाला होता है।। ६ ।। तुम्हारी कृपा से ही यह प्रीति उत्पन्न होती है और तुम दयालु होते हो तो चित्त में आ बसते हो। दया धारण करने वाले उस प्रभु ने जब दया दिखाई तो हमें बन्धनों से छुटकारा मिल गया।। ७ ।। मैंने सभी स्थानों को खूब आँख गड़ाकर ध्यानपूर्वक देखा है, उस प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं है। गुरु की कृपा से भ्रम और भय छूट गये हैं और हे नानक, हमने पूर्ण विस्माद (परम आश्चर्य) को देख लिया है।। ८ ।। ४ ।। रामकली महला ५ ।। जितने जीव जन्तुओं को देखा जाता है हे प्रभु, सबको तुम्हीं ने धारण किया है।। १ ।। प्रभु के नाम के माध्यम से ही इस मन का उद्धार होता है।। १ ।। रहाउ ।। वह कर्ता और सभी कारणों का कारण प्रभु, क्षण भर में ही इस सृष्टि को पैदा करता और मिटा देता है।। २ ।। साधसंगति में काम, क्रोध, लोभ, झूठ, निंदा आदि को नष्ट किया जाता है।। ३ ।। प्रभु-नाम का जाप करने से मन निर्मल होता है और सुख ही सुख में आयु व्यतीत की जाती है।। ४ ।। भक्तजनों की शरण में जो भी आ जाता है वह इस लोक और परलोक कहीं पर भी हारता नहीं।। ५ ।। सुख दुख और इस मन की व्यथा हे प्रभु, हमें तुम्हारे ही सामने पेश करनी है।। ६ ।। तू ही सभी जीवों का दाता है और तू ही अपनी बनाई सृष्टि का पालन पोषण करता है।। ७ ।। नानक तो अनेकों बार और करोड़ों बार तेरे सेवकों पर से बलिहारी जाता है।। ८ ।। ५ ।।

रामकली महला ५ अष्टपदी १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

गुरु के दर्शन करने से सभी पाप भाग खड़े होते हैं और वह प्रभु से मिला देता है।। १ ।। मेरा गुरु परमेश्वर सुख देने वाला है। वह परब्रह्म के नाम का सुमिरन करवाता है और अन्ततः सहायता भी करता है।। १ ।। रहाउ ।। सन्तजनों की चरण धूलि मुंह पर लगाने से हमारे सभी दुखों का जमघट नष्ट हो गया है।। २ ।। प्रभु ने क्षण भर में ही अज्ञान के अंधकार को दूर कर दिया है और पतितों को पवित्र बना दिया है।। ३ ।। वह स्वामी प्रभु सब कुछ करने कराने वाला समर्थ है और हे नानक, मैं तो उसी की शरण में हूँ।। ४ ।। वह बन्धनों को तोड़ कर प्रभु के चरण कमलों का एक शब्द में ही लौ लगाकर सुमिरन करवाता है।। ५ ।। माया के अंधे कुंए से उसने हमे निकाल लिया है और अब हमारा प्रेम सच्चे शब्द से लग गया है।। ६ ।। जीवन मरण का भय हमारा चुक गया है और अब हमें इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता।। ७ ।। प्रभु-नाम का रसायन पीकर यह मन उसी में लीन हो गया है और अमृत का पान करके तृप्त हो गया है।। ८ ।। अब सत्संगति में मिलकर प्रभु की कीर्ति का हमने गायन किया है और हम उस अटल प्रभु के ठिकाने पर बस गए हैं।। ९ ।। पूर्ण गुरु ने हमें यह पूर्ण मति दे दी है कि हे भाई, प्रभु के बिना अन्य कोई भी नहीं।। १० ।। हे नानक, प्रभु नाम का भण्डार बड़े भाग्यशाली जीवों ने पा लिया है और वे अब नरक में नहीं जाएँगे।। ११ ।। इसमें मेरी मेहनत, सयानप और युक्ति आदि कुछ नहीं है; यह तो पूर्ण गुरु के संग की कमाई है।। १२ ।। जप, तप, संयम, शुद्धता आदि सब कुछ वह प्रभु ही है और वह स्वयं ही सब कुछ करता-कराता है।। १३ ।। पुत्र

कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई ॥ १४ ॥ अपणे जीअ तै आपि सम्हाले आपि लीए लड़ि लाई ॥ १५ ॥ साच धरम का बेड़ा बांधिआ भवजलु पारि पवाई ॥ १६ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई ॥ १७ ॥ अकाल मूरति अजूनी संभउ कलि अंधकार दीपाई ॥ १८ ॥ अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपति अघाई ॥ १९ ॥ एकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥ २० ॥ भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई ॥ २१ ॥ १ ॥ ६ ॥ रामकली महला ५ ॥ सलोकु ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ मुखु ऊजलु सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥ १ ॥ मनु तनु राता राम पिआरे हरि प्रेम भगति बणि आई संतहु ॥ १ ॥ सतिगुरि खेप निबाही संतहु ॥ हरि नामु लाहा दास कउ दीआ सगली त्रिसन उलाही संतहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत लालु इकु पाइआ हरि कीमति कहणु न जाई संतहु ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो धिआना साचै दरसि समाई संतहु ॥ ३ ॥ गुण गावत गावत भए निहाला हरि सिमरत त्रिपति अघाई संतहु ॥ ४ ॥ आतम रामु रविआ सभ अंतरि कत आवै कत जाई संतहु ॥ ५ ॥ आदि जुगादी है भी होसी सभ जीआ का सुखदाई संतहु ॥ ६ ॥ आपि बेअंतु अंतु नही पाईऐ पूरि रहिआ सभ ठाई संतहु ॥ ७ ॥ मीत साजन मालु जोबनु सुत हरि नानक बापु मेरी माई संतहु ॥ ८ ॥ २ ॥ ७ ॥ रामकली महला ५ ॥ मन बच क्रमि राम नामु चितारी ॥ घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि उतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि सूखा बाहरि सूखा हरि जपि मलन भए दुसटारी ॥ १ ॥ जिस ते लागे तिनहि निवारे प्रभ जीउ अपणी किरपा धारी ॥ २ ॥ उधरे संत परे हरि सरनी पचि बिनसे महा अहंकारी ॥ ३ ॥ साधू संगति इहु फलु पाइआ इकु केवल नामु अधारी ॥ ४ ॥ न कोई सूरु न कोई हीणा सभ प्रगटी जोति तुम्हारी ॥ ५ ॥ तुम्ह समरथ अकथ अगोचर रविआ एकु मुरारी ॥ ६ ॥ कीमति कउणु करे तेरी करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥ ७ ॥ नाम दानु नानक वडिआई तेरिआ संत जना रेणारी ॥ ८ ॥ ३ ॥ ८ ॥ २२ ॥

स्त्री आदि के विषय विकारों के विष रूपी भवसागर में उस सच्चे गुरु ने हमें पार उतार लिया है।। १४ ।। हे प्रभु, तूने अपने जीवों का स्वयं ध्यान रखा है और स्वयं ही उन्हें अपने आँचल से लगाये रखा है।। १५ ।। तूने सच्चे कर्तव्य धर्म का बेड़ा बनाकर जीवों को संसार सागर से पार उतार लिया है।। १६ ।। वह प्रभु सीमा और गति से परे अनन्त है और नानक तो उस पर बार-बार बलिहारी जाता है।। १७ ।। हे प्रभु, तू अकाल स्वरूप वाला है, अयोनि है, स्वयं ही अपने आप से पैदा होने वाला है और तूने ही कलियुग के अंधकार में प्रकाश का दीपक जला कर सबको प्रकाशित किया है।। १८ ।। तू अन्तर्यामी, जीवों को सब कुछ देने वाला दाता है और तुझे देखकर सभी तृप्त और सन्तुष्ट हो जाते हैं।। १६ ।। वह एक ही बना रहने वाला सभी कालिमाओं से परे निर्भय प्रभु जल, स्थल अर्थात सब में व्याप्त है।। २० ।। उसने भक्तों को अपनी भक्ति का दान दिया है और हे मेरी माँ, नानक भी प्रभु से यही याचना करता है।। २१ ।। १ ।। ६ ।। रामकली महला ५ ।। श्लोक।। हे प्यारे भाईयो, शब्द की शिक्षा प्राप्त करो क्योंकि यही जन्म और मरण का आधार है। हे नानक, उस एक शब्द रूपी प्रभु का सुमिरन करने से मुख उज्जवल होता है और व्यक्ति सदैव सुखी बना रहता है।। १ ।। हे सन्तजनों, जब मन, तन उस प्यारे प्रभु में लीन हो गया तो हरि की प्रेम भक्ति के साथ हमारा प्यार बनता ही चला गया।। १ ।। हे सन्तजनों, सच्चे गुरु ने हमारे व्यापार का माल अर्थात जीवन सफल कर दिया है। प्रभु नाम का लाभ उस सच्चे गुरु ने दासों को दे दिया है और हमारी सारी तृष्णा दूर कर दी है।। १ ।। रहाउ ।। खोजते-खोजते हमने अमूल्य प्रभु नाम रूपीं रत्न प्राप्त कर लिया है और हे सन्तजनों, उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता।। २ ।। उस प्रभु के चरण कमलों में हमारा ध्यान लग गया है और उस सच्चे प्रभु के दर्शन में ही हम लीन हो गए हैं।। ३ ।। हे सन्तजनों, उस प्रभु का गुण गाते हुए हम प्रसन्न हो उठे हैं और उस प्रभु के सुमिरन से तृप्त एवं सन्तुष्ट हो गए हैं।। ४ ।। जब वह प्रभु ही सबमें रमण करता हुआ दिखाई दे गया है तो फिर भला अब हमें कहाँ जाना है और फिर कहाँ जाना है अर्थात हम मुक्त हो गए हैं।। ५ ।। सभी जीवों को सुख देने वाला वह प्रभु ही आदि में है, युगों के प्रारम्भ में है वर्तमान में भी है और भविष्य में भी बना रहेगा।। ६ ।। वह अनन्त है उसकी सीमा को नहीं जाना जा सकता क्योंकि हे सन्तजनों वह प्रभु सर्वत्र व्याप्त है।। ७ ।। मित्र, साजन, धन, माल, यौवन, पुत्र आदि वह प्रभु ही है और हे नानक, सन्तजन यह जान लें कि वही मेरा पिता और माता है।। ८ ।। २ ।। ७ ।। रामकली महला ५ ।। मेरी जीवन रूपी नैया जो भँवर में पड़कर बहुत कठिन मार्ग पर चल निकली थी, मन, वचन और कर्म से राम नाम का सुमिरन करते रहने से वह गुरमुख बन कर हे नानक, पार लग गई है।। १ ।। रहाउ ।। प्रभु का सुमिरन करने से काम, क्रोध आदि सभी दुष्ट दब गए हैं और अन्दर-बाहर सुख ही सुख दिखाई देने लगा है। जिस प्रभु ने वे दुख लगाये थे उसी ने ही अपनी कृपा धारण करके उनका निवारण भी किया है।। २ ।। सन्तजनों का प्रभु की शरण में आने से उद्धार हो गया है और महा अभिमानी लोग मर खप कर विनष्ट हो गए है।। ३ ।। साधु संगति में हमने यह फल प्राप्त किया है कि अब केवल प्रभु-नाम ही हमारा आसरा बन गया है।। ४ ।। यहाँ ना तो कोई शूरवीर है और ना कोई निर्बल है, हे प्रभु, यह सब कुछ तुम्हारी परम ज्योति का ही प्रकटीकरण है।। ५ ।। तुम समर्थ अकथनीय और अदृष्ट होकर एक ही प्रभु के रूप में सब स्थानों में व्याप्त हो। ६।। हे कर्ता प्रभु, तेरा मूल्य कौन आँक सकता है क्योंकि तेरा कोई रहस्य और ओर-छोर नहीं जान सकता।। ७ ।। नानक के लिये तो तेरा नाम दान ही सबसे बड़ा बड़प्पन है और मैं तो तेरे सन्तजनों के चरणों की धूल हूँ।। ८ ।। ३ ।। ८ ।। २२ ।।

रामकली महला ३ अनंदु ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ २ ॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ ३ ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ ४ ॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ ५ ॥ साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ ६ ॥ आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै

रामकली महला ३ अनंदु (आनन्द)*   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरी माँ, सच्चे गुरु (प्रभु) को मैंने पा लिया है और मैं आनन्दित हो उठा हूँ। सच्चे गुरु को तो मैंने सहज भाव से ही प्राप्त कर लिया है और मेरे मन में बधाई के गीत बजने लगे हैं। ऐसा लगता है कि रत्नों के समान अमूल्य राग और रागिनियाँ और उन्हें गायन करने वाली परियाँ परिवारों समेत आनन्द के गीत गाने के लिये आ पहुँची हैं। जिन्होंने अपने मन में प्रभु को बसा लिया है वे सभी आयें और हमारे साथ मिलकर प्रभु के शब्द का गीत गायें। नानक कहता है कि सच्चे गुरु की प्राप्ति पर मैं आनन्दित हो उठा हूँ।। १ ।। हे मेरे मन, तू सदा उस प्रभु के साथ ही बना रह। हे मन, तू प्रभु के साथ रह क्योंकि वह तेरे सभी दुखों को दूर करते हुए तुझे उनकी याद भुला देगा। वह तुझे अंगीकार करेगा और तेरे सभी काम सँवार देगा। जो प्रभु सभी बातों के लिये समर्थ है उसे भला मन से क्यों भुलाया जाए। नानक कहता है कि हे मेरे मन तू सदैव प्रभु के साथ ही बना रह।। २ ।। हे सच्चे प्रभु, तेरे घर में भला किस चीज की कमी है। तेरे घर में तो सब कुछ है परन्तु प्राप्त वही करता है जिसे तू देता है। तेरे नाम को मन में बसाकर अनेकों सदैव तेरी प्रशंसा और गुणानुवाद करते रहते हैं। जिनके मन में तेरा नाम बस गया उनके हृदय में अनेकों प्रकार की खुशी के गीत बज उठे हैं। नानक कहता है कि हे मेरे सच्चे साहिब, तेरे घर में भला किस चीज की कमी है।। ३ ।। मेरा आसरा तो प्रभु का सच्चा नाम ही है। वह सच्चा नाम ही मेरा मूलभूत आधार है जिसने मेरी सब प्रकार की भूख समाप्त कर दी। उसने मुझे शान्त और सुखी कर दिया है और अब वह मेरे मन में आ बसा है जिसने मेरी सभी इच्छाएं पूरी कर दी हैं। जिसमें ऐसी महानताएं हैं उस गुरु (प्रभु) पर मैंने सदैव अपने आपको कुर्बान किया है। नानक कहता है कि हे सन्तजनों, इस बात को ध्यान से सुन लो और शब्द के माध्यम से उस प्रभु के साथ प्रेम बनाएं रखो। उस प्रभु का सच्चा नाम ही मेरा आसरा है।। ४ ।। इस प्रकार के भाग्यशाली घर रूपी हृदय में पाँचों प्रकार के शब्दों की धुन बजने लगती है। जिस हृदय में तूने अपनी शक्ति अर्थात कला को कार्यशील किया है ऐसे भाग्यशाली घर में तेरे नाम रूपी शब्द की धुन बजने लगती है। तूने ही पाँचों काम, क्रोध आदि दुष्टों को वश में किया है और काल रूपी कंटक का भी तूने ही नाश किया है। जिनके भाग्य में प्रारम्भ से ही तुमने प्रभु-नाम डाल दिया है वे ही प्रभु नाम में लीन बने रहते हैं। नानक कहता है कि उन्हीं को सुख प्राप्त होता है और उन्हीं के हृदय रूपी घर में स्वतः बजता रहने वाला नाद चलता रहता है।। ५ ।। सच्ची सुरति अर्थात लौ के बिना यह शरीर बेचारा बहुत ही क्षीण होता है। लौ से विहीन यह निर्बल शरीर बेचारा क्या कर सकता है। हे प्रभु, कृपा करो। तेरे बिना कोई समर्थ नहीं है जो इसे बलवान बना सके। हे शब्द में लगाकर सब कुछ सँवार देने वाले प्रभु, इस कमजोर शरीर और लौ वाले जीव के लिये अन्य कोई ठिकाना नहीं है। नानक कहता है कि श्रेष्ठ लौ अर्थात प्रभु-नाम की सुरति के बिना यह बेचारा क्या करेगा।। ६ ।। आनन्द-आनन्द कहते तो सभी हैं परन्तु वास्तविक आनन्द गुरु से ही जाना जाता है। आनन्द गुरु से ही जाना जाता है और वह प्यारा प्रभु ही इस सारे कार्य के लिये कृपा करता है। कृपा करके वही पापों को काटता है और वही ज्ञान रूपी अंजन प्रदान करता है। अन्दर से जिनका मोह नष्ट हो गया उस सच्चे प्रभु ने उनके जीवन का ढंग ही सँवार दिया है।

* विस्तार के लिए परिशिष्ट 2 देखें

नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥ ७ ॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥ ८ ॥ आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥ ९ ॥ ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥ माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥ १० ॥ ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥ ११ ॥ अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ ॥ १२ ॥ सुरि नर मुनि जन अंम्रितु खोजदे सु अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ पाइआ अंम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ १३ ॥ भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥

नानक का कथन है कि यही आनन्द है और इस आनन्द को गुरु से ही जाना जाता है।। ७ ।। हे बाबा, जिसे तू देता है वही सेवक प्राप्त करता है। वही सेवक पाता है जिसे तू देता है; अन्य बेचारे क्या कर सकते हैं। कई तो भ्रमों में भूले हुए दसों दिशाओं में भटक रहे है और कई ऐसे हैं जिन्होंने प्रभु नाम में लीन होकर खुद को सँवार लिया है। गुरु की कृपा से जिनको प्रभु की रज़ा भा जाती है उन्हीं का मन निर्मल हो जाता है। नानक कहता है कि हे प्यारे प्रभु, तू जिसे देता है केवल वही सेवक प्राप्त करता है।। ८ ।। हे प्यारे सन्तो, आओ और उस अकथनीय प्रभु की कथा वार्ता सुनाओ, उस अकथनीय की कथा वार्ता करो और बताओ कि उसे किस द्वार के माध्यम से अर्थात् किस विधि से पाया जाता है। तन, मन और धन गुरु को सौंप कर और उसका हुकुम मानने से उस प्रभु को पाया जाता है। पूर्ण गुरु का हुकुम मानो और उसकी सच्ची वाणी का गायन करो। नानक कहता है कि हे सन्तजनों, उसकी अकथनीय कहानी को ध्यान पूर्वक सुनो।। ९ ।। हे चंचल मन, चतुराई के माध्यम से उस प्रभु को कोई भी नहीं पा सका। चतुराई से उसे किसी ने नहीं पाया है, हे मेरे मन, तू मेरी बात सुन ले। यह माया ऐसी मोहिनी है कि इसने यहाँ सबको भ्रम में भुला रखा है। यह मोहिनी माया भी उसी प्रभु ने बनाई है जिसने ठग बूटी के रूप में उसकी रचना की। जिसने इसके साथ मीठा मोह लगा लिया है उसको इसी माया पर से कुर्बान हो जाना पड़ता है। नानक कहता है कि हे चंचल मन, चतुराई से कोई भी उस प्रभु को नहीं पा सका।। १० ।। हे प्यारे मन, तू सदैव सत्य को याद करता रह। यह परिवार जिसे तू देखता है तेरे साथ नहीं चलेगा। यह तेरे साथ नहीं चलने वाला है तो फिर इसके साथ अपने चित्त को क्यों लीन कर रखा है। ऐसा काम तो बिल्कुल ही नहीं करना चाहिये जिसके लिये अंत में पछताना पड़े। तू सच्चे गुरु का उपदेश सुन जो वास्तव में तेरे साथ बना रहेगा। नानक कहता है कि हे प्यारे मन, तू सदैव सत्य को ध्यान में बनाये रख।। ११ ।। हे अगम्य, अगोचर प्रभु, तेरे रहस्य को नहीं जाना जा सकता। किसी ने भी तेरे रहस्य को नहीं जाना है और केवल तू ही अपने आप को जानता है। कोई क्या कहकर बखान करे, यह जीव जन्तु तो सब तेरा ही खेल हैं। तू ही सब कुछ कहता और देखता है और तूने ही सारा जगत उत्पन्न किया है। नानक कहता है कि हे प्रभु, तू सदैव अगम्य है, तेरा रहस्य नहीं जाना जा सकता।। १२ ।। देवता, मानव और मुनिजन जिस अमृत को खोजते हैं वह अमृल गुरु से प्राप्त होता है। गुरु की (प्रभु) कृपा से अमृत प्राप्त होता हे और सच्चा प्रभु मन में बस जाता है। जीव जन्तु सब तूने ही पैदा किये परन्तु उनमें से कोई बिरला ही गुरु को देखकर उसकी संगति करने के लिये आता है। जब लोभ और अंहकार समाप्त हो जाता है तो जीव सच्चे गुरु को भला लगता है। नानक का कथन है कि जिस पर वह प्रभु स्वयं प्रसन्न होता है उसने ही गुरु से अमृत प्राप्त किया है।। १३ ।। भक्तजनों की चाल अर्थात् जीवन जीने की कला संसार से निराली होती है। निराली चाल वाले भक्त कठिन मार्ग पर चलते हैं। वे ममता लोभ, अहंकार और तृष्णा को त्यागकर बहुत अधिक नहीं बोलते। भक्तों का मार्ग तलवार से भी अधिक तीखा और बाल से भी अधिक बारीक है अर्थात् इस कठिन मार्ग पर ही वे जाते हैं।

गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥ १४ ॥ जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥ १५ ॥ एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ १६ ॥ पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥ १७ ॥ करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥ १८ ॥ जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ १९ ॥ जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥ २० ॥ जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा

गुरु की (प्रभु) कृपा से जिसने अहंकार भाव को त्याग दिया है उसकी सभी वासनाएं प्रभु में ही समा गई हैं। नानक का कथन है कि युगों युगों में भक्तों की चाल अर्थात् जीवन विधि निराली ही रही है।। १४ ।। हे मालिक, तू जैसा चलाए हम वैसे ही चलते हैं और मैं भला तेरे गुणों के बारे में क्या जानता हूँ। जिनको तू अपने रास्ते पर ले आता है वे फिर वैसे ही चलते हैं जैसे तू चलाता है। जिन पर कृपा करके तूने उन्हें अपने नाम में लगा लिया है वे सदैव प्रभु का ही सुमिरन करते रहते हैं। हे प्रभु, जिन्हें तू अपनी कथा सुनाता है वे गुरु के द्वार पर ही सुख प्राप्त करते हैं। नानक कहता है कि हे मेरे सच्चे साहिब तुझे जैसा अच्छा लगता है तू वैसे ही हम सबको चलाता है।। १५ ।। यह शब्द (वाणी) ही प्रभु का सुन्दर यश है; यह सुहावना शब्द ही ऐसा खुशी का गीत है जो हमें सच्चे गुरु ने सुनाया है। यह बजता भी उनके मन में है जिनके भाग्य लेखों में प्रारम्भ से ही लिखा हुआ आया है। अनेकों भटकते हुए बातें करते रहते हैं परन्तु बातों से कोई भी नहीं पा सका। नानक कहता है कि यह शब्द ब्रह्म ही आनन्द का गीत है जिसे हमें सच्चे गुरु ने सुनाया है।। १६ ।। वे लोग पवित्र हो गए हैं जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया है। प्रभु की आराधना करने वाले जिन गुरमुखों ने उसका सुमिरन किया वे पवित्र हो गए हैं। उनके माता, पिता, कुटुम्ब पवित्र हो गए हैं और उनकी सारी संगति उनके समेत पवित्र हो गई है। कहने वाले भी पवित्र, सुनने वाले भी पवित्र और वे भी पवित्र हो जाते हैं जिन्होंने प्रभु नाम को मन में बसा लिया है। नानक कहता है कि जिन गुरमुखों ने उस प्रभु की आराधना की है वे पवित्र हो गये हैं।। १७ ।। कर्मकाण्डों के माध्यम से स्वाभाविक सहज ज्ञान उत्पन्न नहीं होता और ज्ञान के बिना संशय नहीं जाता। यह संशय तो किसी भी विधि से नहीं छूटता बेशक कोई कितने कर्मकाण्ड करता रहे। भ्रम में पड़ा जीव मलीन है इसे किस विधि से स्वच्छ किया जाए। मन को धोकर शब्द में लगे रहो और प्रभु में चित्त को लीन बनाये रखो नानक कहता है कि गुरु की कृपा से ही स्वाभाविक ज्ञान उत्पन्न होता है और इस प्रकार यह संशय समाप्त होता है।। १८ ।। जिनकी अन्तरात्मा मैली है वे बाहर से निर्मल होने का ढोंग करते हैं। जो बाहर से पवित्र बने रहते हैं और जिनका मन मैला होता है उन्होंने इस जीवन को जुए में ही हार दिया है। उन्हें तृष्णा का यह बड़ा रोग लगा रहता है और मरने को तो वे मन से भुलाये ही रहते हैं। वेदों में अन्य बातों में से सबसे अच्छी बात प्रभु-नाम की महिमा है जिसे लोग सुनते नहीं और बाहरी आचरण में पड़े हुए बेतालों (भूतों) की तरह दौड़ते-भागते रहते हैं। नानक कहता है कि जिन्होंने सत्य को त्याग दिया है और झूठ में लीन हो गए हैं उन्होंने इस जीवन को जुए में हार दिया है।। १९ ।। जो मन से निर्मल हैं वे बाहर से भी निर्मल होते हैं। बाहर से और मन से निर्मल बने रहने वाले सच्चे गुरु के आदेश के अनुसार आचार-व्यवहार बनाते हैं। झूठ की वहाँ चर्चा ही नहीं पहुँचती और मन सत्य में ही लीन बना रहता है। वे व्यापारी ही भले हैं जिन्होंने यह मानव जीवन रूपी रत्न का लाभ प्राप्त कर लिया है। नानक कहता है कि जिनका मन निर्मल है वे सदा गुरु के साथ ही बने रहते हैं।। २० ।। यदि कोई वास्तव में सिक्ख है तो वह गुरु के सम्मुख बना रहता है। कोई भी सिक्ख जो सम्मुख बना रहता है उसका मन गुरु में ही लगा रहता है। ऐसा सिक्ख गुरु के चरणों को हृदय में याद रखता है और अन्तरात्मा में उनकी सम्भाल बनाए रहता है।

रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥ २१ ॥ जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ २२ ॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥ २३ ॥ सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कंची आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ २४ ॥ गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥ २५ ॥ सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥ २६ ॥ सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंम्रित बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥ २७ ॥ माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी

वह अपने अभिमान को छोड़कर सदैव प्रभु के आसरे में ही रहता है और गुरु के बिना अन्य किसी को भी नहीं जानता। नानक का कथन है कि हे सन्तजनों, इस बात को सुन लो कि ऐसे ही सिक्ख को सम्मुख बना रहने वाला सिक्ख कहा जाता है।। २१ ।। यदि कोई गुरु से विमुख हो जाता है तो उसे मुक्ति सच्चे गुरु के बिना नहीं प्राप्त होती। विवेकशील व्यक्तियों से भी जाकर पूछ लो कि विमुख व्यक्तियों को किसी अन्य स्थान पर मुक्ति नहीं मिल सकती। वे अनेक योनियों में भटक कर आते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना मुक्ति नहीं पाते। सच्चा गुरु ही उन्हें शब्द सुनाता है और वे उसके चरणों में लगकर मुक्ति प्राप्त करते हैं। नानक कहता है कि इस तथ्य को विचार कर देख लो कि सच्चे गुरु के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती।। २२ ।। हे सच्चे गुरु के प्यारे सिक्खो, आओ और सच्ची वाणी का गायन करो। गुरु की वाणी का गायन करो क्योंकि वाणियों में से सबसे उत्तम वाणी यही है। जिन पर प्रभु की कृपा दृष्टि हो जाती है यह वाणी उनके हृदय में समा जाती है। इस वाणी रूपी अमृत का पान करते हुए सदैव प्रभु के रंग में रंगे रहो और उस प्रभु का सुमिरन करते रहो। नानक कहता है कि इस सच्ची वाणी का ही गायन सदैव करते रहो।। २३ ।। सच्चे गुरु की वाणी के बिना अन्य सब कुछ कच्ची वाणी है। सच्चे गुरु के मुख से ना निकली हुई वाणी कच्ची हैं और अन्य सारी वाणियाँ कच्ची ही हैं। उनको कहने वाले भी कच्चे हैं सुनने वाले भी कच्चे है और जो उसका बखान करते हैं वे भी कच्चे हैं। उन कच्ची वाणियों को पढ़ने वाले जीभ से तो चाहे हरि-हरि कहते रहते हैं परन्तु जो वे कहते हैं उसका प्रभाव उनके हृदय और मन पर कुछ भी नहीं होता। धन-दौलत ने जिनके चित्त को चुरा लिया है वे उपर-उपर से वाणी को पढ़ते हैं हृदय से नहीं पढ़ते। नानक कहता है कि सच्चे गुरु के बिना दूसरी वाणी कच्ची वाणी है।। २४ ।। शब्द-गुरु वह रत्न है जिसमें हीरे भी जड़े हुए हैं। जिनका मन इस शब्द रत्न में लीन हो गया हैं वे इसी में ही समा गये हैं। जब शब्द में लीन हो गया तो उस सच्चे प्रभु ने इसी में ही प्रेम लगा दिया। वह प्रभु स्वयं ही हीरा है और स्वयं ही रत्न है परन्तु जानता वही है जिसे वह स्वयं समझा देता है। नानक कहता है कि शब्द वह रत्न है जिसमें हीरा जड़ा है।। २५ ।। चैतन्य और माया रूपी शक्ति को वह कर्ता-प्रभु उत्पन्न करके अपना हुकुम उनमें कार्यशील करता है। हुकुम को कार्यशील करते हुए वह स्वयं ही देख भाल भी करता है परन्तु किसी बिरले गुरमुख को ही यह रहस्य समझ आता है। वही बन्धनों को तोड़कर मुक्त हो जाता है और शब्द को हृदय में बसा लेता है। जिसे स्वयं करता है वही गुरमुख बनता है और वही एक प्रभु में लौ लगाये रखता है। नानक कहता है कि वह प्रभु स्वयं ही करता है और स्वयं ही अपने हुकुम के रहस्य को समझाने वाला है।। २६ ।। स्मृतियाँ, शास्त्र पाप पुण्य का विचार तो करते हैं परन्तु वे सार तत्व नहीं जानते। गुरु के बिना तत्व का ज्ञान नहीं होता और सार तत्व को नहीं जाना जाता। तीनों गुणों में भ्रमित संसार सोया हुआ है और इसने जीवन रूपी रात्रि को सोते हुए ही बिता दिया है। गुरु की कृपा से वही सेवक सावधान बने रहते हैं जिनके मन में प्रभु का निवास हो जाता है और जो अमृतवाणी बोलते हैं। नानक कहता है कि तत्व ज्ञान वही प्राप्त करता है जिसकी लौ सदैव प्रभु में लगी रहती है और जो जीवन रूपी रात्रि को सावधान होकर व्यतीत करते हैं।। २७ ।। जो माँ के पेट में भी पालन पोषण करता है उसको मन से क्यों भुलाया जाए। ऐसे दाता को मन से क्यों विस्मृत किया जाए जो पेट की अग्नि में भी आहार पहुँचाता है। जिसकी लौ वह अपने में लगा लेता है उसको कुछ भी प्रभावित नहीं करता।

लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ २८ ॥ जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥ २९ ॥ हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥ ३० ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥ ३१ ॥ ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ॥ एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥ ३२ ॥ ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ कहै नानकु स्रिसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥ ३३ ॥ मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु

वह अपनी लौ में स्वयं ही लगाता है और व्यक्ति गुरमुख बनकर उसे सदैव याद करता है। नानक का कथन है कि इस प्रकार के दाता को मन से क्यों भुलाया जाए।। २८ ।। जैसी अग्नि माता के पेट में है वैसी ही माया रूपी अग्नि बाहर भी है। माया और पेट की अग्नि सब एक जैसी ही हैं और यह खेल भी उस प्रभु ने ही बनाया है। जब उस प्रभु का आदेश हुआ तब बच्चे ने जन्म लिया और परिवार में सबको भला और अच्छा लगा। पेट में जो प्रभु के साथ सुरति (लौ) लगी हुई थी वह जन्म लेते ही टूट गई और माया ने तृष्णाओं का आदेश चारों और प्रसारित कर दिया। यह माया वह है जिसके कारण प्रभु-नाम भूल जाता है, मोह उत्पन्न होता है और जीव द्वैतभाव में लीन बना रहता है। नानक कहता है कि गुरु की कृपा से जिनकी लौ उस प्रभु में लग गई है उन्होंने माया के प्रपंचों के होने के बावजूद उस प्रभु को पा लिया है।। २६ ।। प्रभु स्वयं अमूल्य है और उसे किसी कीमत पर नहीं पाया जा सकता है। लोग उसके लिये रोते धोते रहते हैं परन्तु उसे किसी से भी मोल देकर नहीं पाया जा सकता। यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो उसे अपना सिर (अभिमान) अर्थात् सर्वस्व सौंप दिया जाना चाहिए जिससे अर्न्तमन से अहंकार नष्ट हो जाए। ऐसा होने पर यह जीव प्रभु का होकर उससे मिल जाता है और प्रभु मन में आ बसता है। हे नानक, प्रभु अमूल्य है और वे भाग्यशाली हैं जिनको प्रभु अपना नाम प्रदान करता है।। ३० ।। मेरा मन व्यापारी है और प्रभु मेरी रासपूंजी है। प्रभु मेरी रासपूंजी है और मन व्यापारी है मैंने इस रासपूंजी का रहस्य सच्चे गुरु से जाना। हे प्राणियों, प्रभु का सदैव सुमिरन करते रहो और रोज का रोज लाभ प्राप्त करते रहो। यह धन उन्हीं को मिला है जो स्वयं प्रभु को अच्छे लगे हैं। नानक कहता है कि प्रभु मेरी रासपूंजी है और मेरा मन उसका व्यापारी बन गया है।। ३१ ।। हे मेरी जीभ, तू संसार के अन्य रसों में लीन बनी हुई है तेरी प्यास समाप्त नहीं होती। तेरी प्यास अन्य किसी वस्तु से नहीं जाएगी जब तक तू हरि रस को अपनी झोली में नहीं डाल लेगी। हरि रस को प्राप्त करके उसे अपने पल्लू से बाँधकर यदि तू पीएगी तो फिर तुझे कोई भी तृष्णा नहीं रहेगी। यह हरि रस भाग्य से ही उन्हें प्राप्त होता है जिन्हें सच्चा गुरु आकर मिल जाता है। नानक कहता है कि जब मन में प्रभु निवास बना लेता है तो अन्य सभी रस विस्मृत हो जाते हैं।। ३२ ।। हे मेरे शरीर, प्रभु ने तुममें अपनी ज्योति स्थित की तभी तू इस संसार में आया है। प्रभु ने ज्योति को जब तुझमें रखा तभी तू इस संसार में आ सका है। जिसने जीवों को उत्पन्न करके यह दिखाई देने वाला संसार पैदा किया है वह प्रभु स्वयं ही माता और स्वयं ही सबका पिता है। गुरु की कृपा से जब इस रहस्य को जाना तो ऐसा आश्चर्यजनक दृष्य बन गया कि यह सारा संसार ही अब एक खेल के रूप में नज़र आने लगा। नानक कहता है कि प्रभु ने सृष्टि का मूल कारण बनाया, उसमें अपनी ज्योति रखी और हे जीव, तभी तू इस संसार में आ सका है।। ३३ ।। मेरा मन उत्साहित हो उठा जब उसने अपने अंदर प्रभु के आगमन की बात सुनी। हे मेरी सत्संगी सखियो, प्रभु के मंगल गीत गाओ क्योंकि आज मेरा हृदय रूपी घर एक पवित्र स्थान बन गया है। हे सखी, सदैव प्रभु के मंगल गीत गाओ जिससे शोक तथा दुख प्रभावित नहीं कर सकेगा। वह दिन भाग्यशाली है जिस दिन गुरु चरणों में लगने से अपना प्रियतम प्रभु दिखाई दे रहा है। शब्द गुरु के माध्यम से अनहद वाणी को हमने जाना है और प्रभु के नाम रूपी रस का हमने

भोगो ॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥ ३४ ॥ ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ ३५ ॥ ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ॥ ३६ ॥ ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अंम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥ ३७ ॥ हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ ३८ ॥ एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥ ३९ ॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

उपभोग किया है। नानक कहता है कि ऐसा होने पर वह सब कुछ करने कराने योग्य प्रभु हमें स्वयं आन मिला है।। ३४ ।। हे मेरे शरीर, तूने इस संसार में आकर कौन कौन सा कर्म किया है। जब से तू इस संसार में आया है तूने कैसा आचरण बना लिया है। जिस प्रभु ने तेरी रचना की उस प्रभु को ही तूने मन में नहीं बसाया। अब गुरु की कृपा से ही प्रभु मन में बस गया है और वास्तव में पहले से ही लिखे भाग्य लेख के कारण तूने उसे प्राप्त किया है। नानक कहता है कि उनका यह शरीर सफल होता है जिन्होंने सच्चे गुरु में अपने चित्त में लीन किया है।। ३५ ।। हे मेरी आँखों, प्रभु ने तुममें अपनी ज्योति रखी है इसलिये तुम प्रभु के बिना अन्य किसी को मत देखो। प्रभु ने कृपा दृष्टि करके तुम्हें आनन्दित बनाया है इसलिये तुम प्रभु के बिना अन्य किसी को मत देखो। यह परिवर्तनशील विश्व जो तुम देख रहे हो यह प्रभु का ही एक रूप है और यह प्रभु रूप में ही दिखाई दे रहा है। गुरु की कृपा से जब मैंने देखा और समझा तो यह जाना कि प्रभु एक ही है और प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं। नानक कहता है कि मेरे यह नेत्र अज्ञान के कारण अन्धे थे और सच्चे गुरु के मिलने से ही इनमें दिव्य दृष्टि पैदा हुई है।। ३६ ।। हे मेरे कानों, तुम्हें प्रभु ने सत्य सुनने के लिये ही यहाँ भेजा है। तुम्हें सत्य सुनने को भेजा, शरीर के साथ लगाया ताकि तुम सच्ची वाणी को सुनो। यह वाणी वह है जिसे सुनकर तन मन हरा-भरा हो उठता है और जीभ इसके रस में लीन बनी रहती है। वह सत्य रूप प्रभु अदृष्ट और आश्चर्य रूप है तथा उसकी अवस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता। नानक कहता है कि हे कानों, तुम अमृत नाम को सुनो, पवित्र हो जाओ क्योंकि तुम्हें सच सुनने के लिये ही भेजा गया है।। ३७ ।। प्रभु ने जीव को शरीर रूपी गुफा में रखकर श्वास रूपी पवन का बाजा बजा दिया है अर्थात उसके श्वास चलने लगे हैं। श्वासों का बाजा बजा कर उस प्रभु ने उसमें नौ द्वारों को प्रकट किया और दसवां द्वार गुप्त ही रहने दिया है। गुरु के द्वार के साथ जिनका प्रेम लग गया है उन्हें वह गुप्त दसवाँ द्वार भी दिखाई देने लग जाता है। वहाँ विभिन्न प्रकार के रूपों वाला और नवनिधियों वाला प्रभु नाम निवास करता है जिसका रहस्य नहीं जाना जा सकता। नानक कहता है कि उस प्यारे प्रभु ने शरीर रूपी गुफा में श्वास रूपी पवन का वाद्य बजा दिया अर्थात् जीव को उत्पन्न कर दिया।। ३८ ।। यह प्रभु का सच्चा गीत सच्चे हृदय रूपी घर में गाओ। उस सच्चे घर में यह खुशी का गीत गाओ जहाँ सदैव सत्य की आराधना की जाती है। गुरमुख बने हुए व्यक्ति जिन्हें इस रहस्य का पता लग जाता है वे भी यदि तुझे अच्छा लगे तभी सत्य की अराधना करते हैं। यह सत्य तो सबका मालिक हैं ; प्रभु जिसे कृपा पूर्वक देता है वहीं सेवक इसे प्राप्त करता है। नानक कहता है कि वही इसे सच्चे गीत को सच्चे हृदय रूपी घर में गाता रहता है।। ३९ ।। हे बड़े भाग्यवालो, इस अनहद वाणी को ध्यान से सुनो; तुम्हारी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाएँगी। परब्रह्म प्रभु प्राप्त हो जाएगा और सभी दुख चिन्ताएं समाप्त हो जाएँगी। सच्ची वाणी सुनने से दुख रोग और संताप विनष्ट हो जाते हैं। इसे सुनकर शान्त और सज्जन पुरुष खिल उठते हैं और इस वाणी को पूर्ण गुरु से ही जाना जाता है। इसे सुनने वाले भी पवित्र हो जाते हैं; सुनाने वाले भी पवित्र हो जाते हैं और उन्हें वह सच्चा गुरु प्रभु सर्वत्र व्याप्त दिखाई देने लगता है। नानक विनती करता है कि गुरु चरणों में लगने से अनहद नाद वाले वाद्य हृदय में बजने लगते हैं।। ४० ।। १ ।।

रामकली सदु ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे ॥ आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ ॥ १ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥ २ ॥ मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ ॥ सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥ ४ ॥ अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥ पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥ हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु

रामकली सदु (बुलावा, संसार से चलने का बुलावा)* ੧ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

संसार का दाता केवल वह प्रभु है जो तीनों लोकों में भक्ति भाव को प्यार करने वाला है। वह शब्द गुरु में ही समाया रहता है और शब्द के अतिरिक्त उसे कोई नहीं जान पाता। जो एक प्रभु-नाम का ही सुमिरन करते हैं केवल वे ही शब्द गुरु के रूप में उसे जानते हैं और अन्य किसी को नहीं पहचानते। इस अनन्य भक्ति का परम पद गुरु नानक और गुरु अंगद की कृपा से (गुरु अमरदास ने) प्राप्त किया है। जब यहाँ से ले चलने की खबर देने वाला आ पहुँचा तो गुरु जी प्रभु-नाम में लीन हो गए गुरु अमरदास जी ने अपनी भक्ति के द्वारा उस अटल अमर प्रभु को प्राप्त किया है।। ੧ ।। गुरु को प्रभु की आज्ञा अच्छी लगी है और गुरु जी उस प्रभु के पास जाने के लिये तैयार हो गए हैं। वह सच्चा गुरु प्रभु के पास अरदास विनती कर रहा है कि हे प्रभु, मेरी लाज बचा लो। अपने सेवक की लाज की रक्ष करो और हे प्रभु, मुझे पवित्र प्रभु नाम प्रदान करो क्योंकि यह प्रभु-नाम ही अन्त में साथी बनता है और यमदूत तथा काल को व्यर्थ बना देने वाला होता है। सच्चे गुरु की की हुई विनती और अरदास को हरि प्रभु ने सुना। प्रभु ने कृपा धारण करके सच्चे गुरु को अपने साथ मिला लिया और सभी लोग धन्य-धन्य तथा शाबाश कहने लगे।। ੨ ।। हे मेरे सिक्ख पुत्रो, भाइयो, मेरी इस बात को सुन लो कि मेरे प्रभु का यह आदेश आया है कि मेरे पास आ जाओ। प्रभु का यह आदेश गुरु जी को अच्छा लगा और मेरा प्रभु आदेश मानने के कारण उन्हें शाबाशी देता है। भक्त और सच्चा गुरु तथा सर्वव्यापक वही हैं जिसे प्रभु का आदेश अच्छा लगता है। उसी के हृदय में आनन्द के अनहद वाद्य बजते हैं और प्रभु स्वयं उसे गले लगा लेता है। गुरु जी कहते हैं कि तुम सब लोग मेरे पुत्र, भाई और परिवार हो ; तुम अपने मन में यह विचार कर देख लो कि प्रभु के दरबार से लिखा हुआ आदेश कभी भी टलता नहीं और अब गुरु, हरि प्रभु के पास जा रहा है।। ੩ ।। जैसा सच्चे गुरु को अच्छा लगा उसने अपने परिवार को अपने पास बुलाया और कहा कि मेरे पीछे कोई भी रोएगा नहीं और जो रोएगा वह मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा। जिसे मित्र का सम्मान अच्छा लगता है वह अपने मित्र के सम्मान प्राप्त करने से प्रसन्न होता है अर्थात गुरु अमरदास जी के प्रेमियों को रोने के बजाए प्रसन्न होना चाहिए कि उन्हें प्रभु के दरबार में सम्मान दिया जा रहा है। हे मेरे पुत्रो और भाइयो, तुम सोच विचार कर देख लो कि प्रभु तुम्हारे सच्चे गुरु को सम्मान का वस्त्र धारण करवा रहा है। सच्चे गुरु अमरदास जी ने अपने सामने ही गुरु रामदास जी को अपनी राजगद्दी अर्थात् गुरुगद्दी पर स्थित कर दिया। अब सभी सिक्ख, बन्धुजन, पुत्र और भाईयों ने गुरु रामदास जी के चरणों को स्पर्श किया।। ੪ ।। अन्त में सच्चे गुरु अमरदास जी ने कहा कि मेरे पीछे शुद्ध प्रभु के गुणानुवाद का कीर्तन ही किया जाए। उस प्रभु के पंडितों अर्थात् शान्त पुरुष सन्तजनों को बुला लेना जो प्रभु की कथा रूपी पुराणों का पठन करे। प्रभु की कथा को बाँचना, प्रभु-नाम को सुनना और प्रभु की प्रेम रूपी अर्थी ही गुरु को अच्छी लगती है। पिण्ड, पत्तल, दीप दान आदि कर्मकाण्ड की बजाए मेरी अस्थियों का जल प्रवाह प्रभु रूपी सरोवर अर्थात् सत्संग में लीन होना ही माना जाए। जो प्रभु को अच्छा लगा वह सच्चे गुरु ने बताया और उन्हें वह सुजान सर्वव्यापक प्रभु प्राप्त हो गया। गुरु रामदास जी को शब्द-गुरु के सत्य चिन्ह से अंकित करते हुए गुरुगद्दी

* विस्तार के लिए परिशिष्ट 3 देखें

दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥ ५ ॥ सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ ॥ मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ ॥ कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥ ६ ॥ १ ॥

रामकली महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा ॥ जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा हरि जानीअड़ा ॥ नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अंम्रित प्रिअ गूड़ा ॥ नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा ॥ माइआ मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा ॥ कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा ॥ १ ॥ गोबिंदा मेरे गोबिंदा प्राण अधारा मेरे गोबिंदा ॥ किरपाला मेरे किरपाला दान दातारा मेरे किरपाला ॥ दान दातारा अपर अपारा घट घट अंतरि सोहनिआ ॥ इक दासी धारी सबल पसारी जीअ जंत लै मोहनिआ ॥ जिस नो राखै सो सचु भाखै गुर का सबदु बीचारा ॥ कहु नानक जो प्रभ कउ भाणा तिस ही कउ प्रभु पिआरा ॥ २ ॥ माणो प्रभ माणो मेरे प्रभ का माणो ॥ जाणो प्रभु जाणो सुआमी सुघड़ु सुजाणो ॥ सुघड़ सुजाना सद परधाना अंम्रितु हरि का नामा ॥ चाखि अघाणे सारिगपाणे जिन कै भाग मथाना ॥ तिन ही पाइआ तिनहि धिआइआ सगल तिसै का माणो ॥ कहु नानक थिरु तखति निवासी सचु तिसै दीबाणो ॥ ३ ॥ मंगला हरि मंगला मेरे प्रभ कै सुणीऐ मंगला ॥ सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीऐ सोहिलड़ा ॥ अनहद वाजे सबद अगाजे नित नित जिसहि वधाई ॥ सो प्रभु धिआईऐ सभु किछु पाईऐ मरै न आवै जाई ॥ चूकी पिआसा पूरन आसा गुरमुखि मिलु निरगुनीऐ ॥ कहु नानक घरि प्रभ मेरे कै नित नित मंगलु

का टीका भेंट किया गया।। ५ ।। सच्चे गुरु ने जो कुछ कहा गुरु के सिक्खों ने उसे प्रभु की रजा समझ कर स्वीकार कर लिया। गुरु अमरदास जी का पुत्र मोहरी भी सामने उपस्थित हुआ और गुरु रामदास जी के चरणों को उसने स्पर्श किया। जहाँ गुरु अमरदास जी ने गुरु रामदास में अपने आप को स्थित किया वहाँ अब सभी सच्चे गुरु रामदास जी के चरणों को स्पर्श करने लगे। जो कोई ईर्ष्या और शत्रुता के कारण नहीं झुका उसे सच्चे गुरु ने अपने प्यार से विनम्र बना दिया। प्रभु गुरु को जैसा अच्छा लगा उसने प्रारम्भ से ही लिखे हुए लेखों की रज़ा को मानते हुए यह बड़प्पन गुरु रामदास जी को प्रदान किया। सुन्दर का यह कथन है कि सन्तजनों ध्यान से सुन लो कि सारा संसार गुरु के चरणों में आ लगा है।। ६ ।। १ ।।

रामकली महला ५ छन्द १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु मेरा साजन है और वह प्रियतम मेरे पास ही खड़ा है। मैं उस प्रभु को जानता हूँ और मैंने उस हरि को आँखों से देखा है। मैंने उसे देखा है कि वह घट-घट में हृदय रूपी सेज पर विराजमान है और अत्यन्त प्रिय और मीठा अमृत है। मूर्ख व्यक्ति उसे साथ होते हुए भी देख नहीं सकता और अपने जीवन के उद्देश्य को नहीं समझता। भ्रमों की ओर झुका हुआ ऐसा व्यक्ति धन सम्पदा के मद में मस्त बना हुआ ओछी बातें करता है और उस प्रभु से मिलने के लिये आगे नहीं बढ़ता। नानक का कथन है कि गुरु के बिना यह पता नहीं चलता कि प्रियतम प्रभु सबके पास ही खड़ा है।। १ ।। धरती का आसरा मेरा प्रभु है और वह प्रभु ही मेरे प्रांणों और जीवन का आधार है। मेरा प्रभु कृपालु और दान देने वाला दाता है। वह दान देने वाला दाता अपरम्पर है और घट-घट में शोभायमान है। हे प्रभु, तूने एक दासी माया बनाई है जो अपने दल बल सहित सब ओर फैली है और जिसने जीव जन्तुओं को मोह रखा है। प्रभु, जिसकी तू रक्षा करता है वही शब्द गुरु का चिंतन करते हुए सत्य कहता है। नानक का कथन है कि जो प्रभु को भा जाता है वास्तव में उसी को ही प्रभु प्यारा लगता है।। २ ।। मुझे गर्व है अपने प्रभु पर गर्व है और वास्तव में मुझे केवल अपने प्रभु पर ही गर्व है। वह स्वामी सयाना और चतुर है अतः हे लोगो, उसे जानें और केवल उस प्रभु को ही जानें। वह प्रभु चतुर, सयाना और सदैव परम प्रमुख बना रहने वाला है और उस प्रभु का नाम अमृत ही है। उस प्रभु के नाम अमृत को चखकर वे लोग तृप्त हो जाते हैं जिनके माथे पर भाग्य लेख लिखा होता है। ऐसे ही व्यक्ति उसे प्राप्त करते हैं, ऐसे व्यक्ति ही उसकी आराधना करते है और सबको उसी पर गर्व है। नानक का कथन है कि हृदय रूपी सिंहासन पर बैठने वाले उस प्रभु का सिंहासन स्थिर बना रहता है और उसका न्यायपूर्ण दरबार सच्चा दरबार है।। ३ ।। वह प्रभु मंगलमय है और उस प्रभु के ही मंगलमय गीत सुने जाने चाहिए। प्रभु खुशी का गीत है और उस खुशी के गीत की धुन अनहद नाद है। शब्द की धुन प्रकट होती है और अनहद नाद बजता है तथा उस प्रभु को सदैव बधाई मिलती रहती है। वह प्रभु जो ना मरता है, ना आता है, ना जाता है उसका सुमिरन करना चाहिए और उसी से सब कुछ प्राप्त किया जाता है। गुरमुख बनकर उस गुणातीत प्रभु को मिलकर प्यास समाप्त हो गई है और हमारी आशाएं पूरी हो गई हैं। नानक का कथन है कि प्रभु के घर में सदैव मंगलगीत ही

सुनीऐ ॥ ४ ॥ १ ॥ रामकली महला ५ ॥ हरि हरि धिआइ मना खिनु न विसारीऐ ॥ राम रामा राम रमा कंठि उर धारीऐ ॥ उर धारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रहमु निरंजनो ॥ भै दूरि करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो ॥ जगदीस ईस गुोपाल माधो गुण गोविंद वीचारीऐ ॥ बिनवंति नानक मिलि संगि साधू दिनसु रैणि चितारीऐ ॥ १ ॥ चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥ मालु मिलख भंडार नामु अनंत धरा ॥ नामु नरहर निधानु जिन कै रस भोग एक नराइणा ॥ रस रूप रंग अनंत बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ किलविख हरणा नाम पुनहचरणा नामु जम की त्रास हरा ॥ बिनवंति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥ २ ॥ गुण बेअंत सुआमी तेरे कोइ न जानई ॥ देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरखपति परमेसरा ॥ सरब जाचिक एकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ साधू संतु सुजाणु सोई जिसहि प्रभ जी मानई ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा सोइ तुझहि पछानई ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥ बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु द्रिड़ाइआ ॥ गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सरब इछा पुंनीआ ॥ जलने बुझाई सांति आई मिले चिरी बिछुंनिआ ॥ आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ ॥ बिनवंति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ रामकली महला ५ ॥ रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ॥ किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीऐ गुर मंतन कै ॥ हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीऐ ॥ जोग दान अनेक किरिआ लगि चरण कमलह साधीऐ ॥ भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ बिनवंति नानक तरै सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥ १ ॥ सुख सागर गोबिंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥ अनद मंगल गुर चरणी लागे पाए सूख घनेरे राम ॥ सुख निधानु मिलिआ दूख हरिआ क्रिपा करि प्रभि राखिआ ॥ हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥ हरि एकु चितवै प्रभु

सुना जाता है।। ४ ।। १ ।। रामकली महला ५ ।। हे मेरे मन, उस प्रभु का सुमिरन करता रह और उसे एक क्षण भर के लिये भी भुलाया नहीं जाना चाहिए। सबमें रमण करने वाले उस राम को सदैव हृदय में धारण किये रहना चाहिये। हे जीव, उस प्रभु को हृदय में धारण करो जो सर्बव्यापक पूर्ण परब्रह्म और माया से रहित निरंजन है। वह भय को दूर करने वाला पापों को नष्ट करने वाला असह्य दुख रूपी आवागमन को समाप्त करने वाला है। वह सारे संसार का सम्राट, धरती का पालनकर्ता माया पति प्रभु है और उसके गुणों का ही चिंतन करना चाहिये। नानक विनती करता है कि साधु पुरुषों की संगति में मिल बैठकर दिन रात उस प्रभु का ही सुमिरन करते रहना चाहिए।। १ ।। प्रभु के चरण कमलों का आधार ही प्रभु के सेवक का आसरा होता है। प्रभु के अनन्त नाम ही वास्तव में धन सम्पदाओं के भण्डार हैं। उसी का नाम नरहरि प्रभु है और वही सब प्रकार का भण्डार है जिनके रसों को भोगने वाला वह एक ही प्रभु है। विश्व के अनन्त, रस, रूप और रंग वह बीठल अर्थात प्रभु ही है जिसका प्रत्येक श्वास के साथ सुमिरन किया जाता है। प्रभु का नाम ही अनेकों प्रायश्चितों का रूप है, पापों को नष्ट करने वाला है और प्रभु का नाम ही यम के भय को दूर करने वाला है। नानक विनती करता है कि प्रभु का नाम ही सेवक की रासपूंजी है और उसे तो प्रभु के चरण कमलों का ही आसरा है।। २ ।। हे प्रभु, तेरे गुण अनन्त हैं इन्हें कोई नहीं जानता। तेरे भक्त जन तेरी दयालुता के खेलों को देखकर तेरा वर्णन करते हैं। हे जीवों के स्वामी परमेश्वर, विश्व के सभी जीव जन्तु तेरी ही आराधना करते हैं। सभी तेरे से याचना करने वाले हैं और हे करुणामय जगदीश्वर, तू वही एक ही सबका दाता है। जिसे प्रभु स्वीकार कर लेता है वास्तव में वही साधु, सन्त और सयाना व्यक्ति है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, कृपा करो ताकि मैं तुझे पहचान सकूँ।। ३ ।। मैं गुण विहीन अनाथ तेरी शरण में आ गया हूँ, मैं उस गुरुदेव पर बार-बार बलिहारी जाता हूं जिसने तुम्हारे नाम का सुमिरन मेरे मन में पक्का किया है। गुरु ने प्रभु का नाम मुझे दिया और सुख तथा आनन्द चारों ओर हो गया तथा मेरी सारी इच्छाएं पूरी हो गई हैं। ईर्ष्या की मेरी जलन बुझ गई और मुझे शान्ति प्राप्त हो गई तथा बहुत समय से बिछुड़ा हुआ मैं उस प्रभु से मिल गया हूँ। उस प्रभु के महामंगलमय गीत और गुण गाने से मुझे आनन्द, हर्ष और अपना स्वाभाविक मूल रूप प्राप्त हो गया है। नानक का कथन है कि उस प्रभु का नाम मैंने पूर्ण गुरु से ही प्राप्त किया है।। ४ ।। २ ।। आत्म मण्डल की झंकार वाला अनहद शब्द सदैव सन्तजनों के साथ मिलकर गाया जाना चाहिये। प्रभु-नाम रूपी गुरु के उपदेश का जाप करना चाहिये जो सभी पापों और दोषों को नष्ट कर देने वाला है। प्रभु-नाम का सुमिरन करो, अमृत का पान करो और रात दिन उस प्रभु की आराधना करो। प्रभु के चरण कमलों में लगकर ही योग आदि कर्म सम्पूर्ण होते हैं। प्रेम भक्ति पर दयालु होने वाला प्रभु सभी दुखों को दूर कर देता है। नानक की विनती है कि उस प्रभु स्वामी का सुमिरन करते हुए व्यक्ति संसार सागर को पार कर जाता है।। १ ।। सुखों के सागर प्रभु का सुमिरन करते हुए हे प्रभु, भक्तजन तेरे गुण गाते हैं। गुरु के चरणों में लगने से आनन्द मंगल बना रहता है और अनेकों सुख प्राप्त होते हैं। सुखों का खजाना मिलने से दुख दूर हो गये हैं और कृपा करके प्रभु ने मुझे बचा लिया है। जो भी प्रभु चरणों में लग गया उसका भय और भ्रम भाग खड़ा होता है और वह अब प्रभु-नाम का ही अपनी जीभ से उच्चारण करता रहता है। वह एक ही प्रभु का सुमिरन करता है,

एकु गावै हरि एकु द्रिसटी आइआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइआ ॥ २ ॥ मिलि रहीऐ प्रभ साध जना मिलि हरि कीरतनु सुनीऐ राम ॥ दइआल प्रभू दामोदर माधो अंतु न पाईऐ गुनीऐ राम ॥ दइआल दुख हर सरणि दाता सगल दोख निवारणो ॥ मोह सोग विकार बिखड़े जपत नाम उधारणो ॥ सभि जीअ तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥ बिनवंति नानक प्रभ मइआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥ ३ ॥ राखि लीए प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाए राम ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरह एको नामु धिआए राम ॥ धिआइ सो प्रभु तरे भवजल रहे आवण जाणा ॥ सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥ सभ इछ पुंनी आस पूरी मिले सतिगुर पूरिआ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ रामकली महला ५ छंत ॥ सलोकु ॥ चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम ॥ नानक प्रभु आराधीऐ बिपति निवारण राम ॥ १ ॥ छंतु ॥ प्रभ बिपति निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइ जीउ ॥ सदा सदा हरि सिमरीऐ जलि थलि महीअलि सोइ जीउ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ इक निमख मनहु न वीसरै ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे सरब गुण जगदीसरै ॥ करि सेव सेवक दिनसु रैणी तिसु भावै सो होइ जीउ ॥ बलि जाइ नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइ जीउ ॥ १ ॥ सलोकु ॥ हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ नानक टेक गुोपाल की गोविंद संकट मोच ॥ १ ॥ छंतु ॥ भै संकट काटे नाराइण दइआल जीउ ॥ हरि गुण आनंद गाए प्रभ दीना नाथ प्रतिपाल जीउ ॥ प्रतिपाल अचुत पुरखु एको तिसहि सिउ रंगु लागा ॥ कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ जीउ पिंडु ग्रिहु थानु तिस का तनु जोबनु धनु मालु जीउ ॥ सद सदा बलि जाइ नानकु सरब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ २ ॥ सलोकु ॥ रसना उचरै हरि हरे गुण गोविंद वखिआन ॥ नानक पकड़ी टेक एक परमेसरु रखै निदान ॥ १ ॥ छंतु ॥ सो सुआमी प्रभु रखको अंचलि ता कै लागु जीउ ॥ भजु साधू संगि

एक ही प्रभु का गुणानुवाद करता है और उसे एक ही प्रभु दिखाई देता है। नानक विनती करता है कि प्रभु ने कृपा की है और हमने पूर्ण सच्चा गुरु पा लिया है।। २ ।। साधु पुरुषों के साथ मिलकर प्रभु से मिले रहना चाहिए और प्रभु की कीर्ति का गायन ही सुनते रहना चाहिए। वह प्रभु दयालु है सर्वशक्तियों का मालिक है, उसके गुणों का रहस्य नहीं जाना जा सकता। वह दयालु दुख दूर करने वाला शरण देने वाला दाता और सभी दुखों का निवारण करने वाला है। मोह शोक आदि बहुत ही विषम विकार हैं और प्रभु का नाम जपते हुए ही इनसे बचा जाता है। हे मेरे प्रभु, सभी जीव तेरे है, तू कृपा कर ताकि मैं सबकी चरण धूलि बन जाऊँ। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मुझ पर दया करो ताकि मैं तेरे नाम का सुमिरन करता हुआ आध्यात्मिक तौर से जीवित बना रहूँ।। ३ ।। प्रभु ने अपने भक्तों की रक्षा की है और उन्हें अपने चरणों में लगा लिया है। वह आठों प्रहर प्रभु का सुमिरन करते हैं और सदैव उस एक प्रभु के नाम की आराधना करते रहते हैं। वे प्रभु की आराधना करते हैं, संसार सागर को पार कर जाते हैं और उनका आवागमन समाप्त हो जाता है। प्रभु की कीर्ति करते हुए उन भक्तों को सदैव सुख और कल्याण प्राप्त होता है और प्रभु की आज्ञा उन्हें मीठी लगती है। उनकी सभी इच्छाएं और आशाएं पूरी होती हैं और उन्हें सच्चा पूर्ण गुरु मिल चुका होता है। नानक विनती करता है कि प्रभु स्वयं ही जब अपने से मिला लेता है तो फिर दुख और चिन्ताएं नहीं बनी रहती।। ४ ।। ३।। रामकली महला ५ ।। छन्द।। श्लोक।। प्रभु के चरण कमलों में आकर प्रभु के आनन्द मंगल रूपी गुणों का गायन करना चाहिए। हे नानक, प्रभु का सुमिरन करो क्योंकि विपत्तियों का निवारण करने वाला वह प्रभु ही है।। १ ।। छन्द ।। प्रभु विपत्ति का निवारण करने वाला है और उसके बिना अन्य कोई नहीं है। जल स्थल और अंतरिक्ष में वही प्रभु है और सदैव उसी प्रभु का सुमिरन करना चाहिये। जो जल, थल और अंतरिक्ष में व्याप्त है वह एक क्षण भर के लिये भी मुझे विस्मृत ना हो। सभी गुण उस जगदीश्वर प्रभु में ही हैं और वे दिन भाग्यशाली हैं जिन दिनों में हम गुरु के चरणों में लगे रहते हैं। उसके अनेकों सेवक दिन रात उसकी सेवा करते हैं और जो उसे अच्छा लगता है वही होता है। नानक तो सुखों के दाता उस प्रभु पर बलिहारी जाता है क्योंकि उसी के कारण मन तन में ज्ञान का प्रकाश होता है।। १ ।। श्लोक।। प्रभु का सुमिरन करने से तन मन सुखी होता है और द्वैतभाव की भावना विनष्ट हो जाती है। हे नानक, मुझे तो उस प्रभु का ही आसरा है जो सभी संकट दूर करने वाला है।। १ ।। छन्द।। दयालु प्रभु ने भय और संकटों को समाप्त का दिया है और अब उस दीनानाथ, सबका पालन करने वाले प्रभु के गुणों को हमने आनन्दित होकर गाया है। वह पालन पोषण करने वाला तथा स्थिर बना रहने वाला सर्वव्यापक प्रभु एक ही है और उसी के साथ हमारा प्रेम बन गया है। उसी के चरणों पर हाथ और माथा टिकाने से उसने हमें अपने से मिला लिया है और अब जीव सदा के लिये सावधान हो गया है। यह प्राण, शरीर, घर, तन, यौवन, धन माल सब उस प्रभु का ही है। नानक तो सदा उस प्रभु पर बलिहारी जाता है जो सभी जीवों की पालना करने वाला है।। २ ।। श्लोक।। हमारी रसना उस प्रभु के गुणों का उच्चारण करती है और उस प्रभु का ही बखान करती है। हे नानक, हमने तो उस एक प्रभु का ही आसरा ले लिया है और अन्त में उस परमेश्वर ने ही हमारी रक्षा की है।। १ ।। छन्द।। वह स्वामी प्रभु ही रक्षक है इसलिये उसके आँचल से ही लगे रहना चाहिये। मन की मति को त्यागकर साधु पुरुषों को संगति में

दइआल देव मन की मति तिआगु जीउ ॥ इक ओट कीजै जीउ दीजै आस इक धरणीधरै ॥ साधसंगे हरि नाम रंगे संसारु सागरु सभु तरै ॥ जनम मरण बिकार छूटे फिरि न लागै दागु जीउ ॥ बलि जाइ नानकु पुरख पूरन थिरु जा का सोहागु जीउ ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ धरम अरथ अरु काम मोख मुकति पदारथ नाथ ॥ सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥ १ ॥ छंतु ॥ सगल इछ मेरी पुंनीआ मिलिआ निरंजन राइ जीउ ॥ अनदु भइआ वडभागीहो ग्रिहि प्रगटे प्रभ आइ जीउ ॥ ग्रिहि लाल आए पुरबि कमाए ता की उपमा किआ गणा ॥ बेअंत पूरन सुख सहज दाता कवन रसना गुण भणा ॥ आपे मिलाए गहि कंठि लाए तिसु बिना नही जाइ जीउ ॥ बलि जाइ नानकु सदा करते सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ रागु रामकली महला ५ ॥ रण झुंझनड़ा गाउ सखी हरि एकु धिआवहु ॥ सतिगुरु तुम सेवि सखी मनि चिंदिअड़ा फलु पावहु ॥

रामकली महला ५ रुती सलोकु   ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

करि बंदन प्रभ पारब्रहम बाछउ साधह धूरि ॥ आपु निवारि हरि हरि भजउ नानक प्रभ भरपूरि ॥ १ ॥ किलविख काटण भै हरण सुख सागर हरि राइ ॥ दीन दइआल दुख भंजनो नानक नीत धिआइ ॥ २ ॥ छंतु ॥ जसु गावहु वडभागीहो करि किरपा भगवंत जीउ ॥ रुती माह मूरत घड़ी गुण उचरत सोभावंत जीउ ॥ गुण रंगि राते धंनि ते जन जिनी इक मनि धिआइआ ॥ सफल जनमु भइआ तिन का जिनी सो प्रभु पाइआ ॥ पुंन दान न तुलि किरिआ हरि सरब पापा हंत जीउ ॥ बिनवंति नानक सिमरि जीवा जनम मरण रहंत जीउ ॥ १ ॥ सलोक ॥ उदमु अगमु अगोचरो चरन कमल नमसकार ॥ कथनी सा तुधु भावसी नानक नाम अधार ॥ १ ॥ संत सरणि साजन परहु सुआमी सिमरि अनंत ॥ सूके ते हरिआ थीआ नानक जपि भगवंत ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥ हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ ॥ घरि नाहु निहचलु अनदु सखीए

उस दयालु प्रभु का सुमिरन करना चाहिए। उस एक ही प्रभु को आसरा बनाकर उसी को अपने प्राण अर्पण करने चाहिए और धरती को धारण करने वाले उस एक प्रभु पर ही आशा लगानी चाहिए। साधसंगति में प्रभु-नाम के प्रेम में रंगकर सभी संसार सागर से पार उतरते हैं। जन्म-मरण और विकार छूट जाते हैं और फिर किसी प्रकार का दोष नहीं रह जाता। नानक तो उस पूर्ण सर्वव्यापक प्रभु पर बलिहारी जाता है जो सबके सुहाग (पति) के रूप में सदैव स्थिर बना रहता है।। ३ ।। श्लोक।। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, मुक्ति आदि सभी पदार्थों का नाथ प्रभु ही है। हे नानक, माथे पर लिखे हुए सभी उद्देश्यों को पूरा करने वाला वह प्रभु ही है।। १ ।। छन्द।। जब वह पवित्र प्रभु मुझे मिल गया तो मेरी सारी इच्छाएँ पूरी हो गई। हे भाग्यशाली लोगों, जब मेरे हृदय रूपी घर में प्रभु आकर प्रकट हो गया तो चारों ओर आनन्द ही आनन्द बन गया है। पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण प्रभु मेरे हृदय रूपी घर में आ बसा है; उसके गुणों की गिनती भला मैं क्या करूँ। वह स्वाभाविक सुख देने वाला दाता प्रभु पूर्ण एवं अनन्त है ; मैं किस जीभ से उसके गुणों का बखान करूँ। वह स्वयं ही मिलाता है और स्वयं ही पकड़ कर अपने गले से लगा लेता है ; उसके बिना तो मुझे और कोई ठिकाना ही नहीं है। नानक तो उस कर्ता प्रभु पर सदैव बलिहारी जाता है जो सबमें समाया हुआ है।। ४ ।। ४ ।। रागु रामकली महला ५ ।। मन में झंकार पैदा करने वाला हे सखी गीत गाओ और उस एक प्रभु का ही सुमिरन करो। हे सखी, तुम सच्चे गुरु का सुमिरन करो और मनोवांछित फल प्राप्त कर लो।

रामकली महला ५ ऋतुएं श्लोक १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उस परब्रह्म प्रभु की वन्दना करो और सदैव साधु पुरुषों की चरण धूलि की कामना करते रहो। अपने अभिमान को त्यागकर प्रभु का सुमिरन करते रहो क्योंकि हे नानक, वह प्रभु ही सब ओर व्याप्त है।। १ ।। पापों को काटने वाला, भय को दूर करने वाला सुखों का सागर सम्राट प्रभु ही है। हे नानक, वह दीनदयालु दुखों को दूर करने वाला है ; तुम सदा उसी का सुमिरन करो।। २ ।। छन्द ।। हे भाग्यशाली जीवो, तुम उसी के यश का गायन करो और हे प्रभु, तुम हम पर कृपा बनाये रखो। हर ऋतु, हर महीने, हर मुहर्त तथा हर घड़ी में उस शोभायुक्त प्रभु के गुणों का उच्चारण करते रहो। प्रभु के गुणों के रंग में रंगे हुए वे सेवक धन्य हैं जिन्होंने एक मन से प्रभु की आराधना की है जिन्होंने प्रभु को प्राप्त किया है उनका यह जीवन सफल हो गया है। प्रभु ही सारे पापों का नाश करने वाला है और कोई भी पुण्य दान तथा कर्मकाण्ड उसके बराबर नहीं है। नानक विनती करता है कि मैं तो उसी का सुमिरन करके आध्यत्मिक तौर पर जीवित बना रहूँ जो आवागमन को मिटाने वाला है।। १ ।। श्लोक।। ऐसा प्रयत्न अगम्य एवं अगोचर प्रभु जैसा ही है जिसके माध्यम से प्रभु के चरण कमलों में झुका जाता है। वही बातचीत अच्छी है जो तुझे अच्छी लगती है और हे नानक, नाम ही हम सबका आसरा है।। १ ।। उस अनन्त मालिक प्रभु का सुमिरन करते हुए हे मेरे सज्जन मित्रो, सन्त पुरुषों की शरण में आओ। हे नानक, प्रभु का जाप करते हुए आध्यात्मिक तौर से सूखे बने जीव भी हरे हो जाते हैं।। २ ।। छन्द ।। बसन्त की रसपूर्ण ऋतु तथा चैत्र, वैशाख का महीना सुख देने वाला जाना जाता है। इसमें प्रभु रूपी प्रियतम यदि मिल जाता है तो तन मन और श्वास भी हरे भरे हो उठते हैं। मेरे हृदय रूपी घर में वह अटल प्रभु पति आ बैठा है ; हे सखी,

चरन कमल प्रफुलिआ ॥ सुंदरु सुघड़ु सुजाणु बेता गुण गोविंद अमुलिआ ॥ वडभागि पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी मिटी जम की त्रास जीउ ॥ २ ॥ सलोक ॥ साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती करम अनेक ॥ कोमल बंधन बाधीआ नानक करमहि लेख ॥ १ ॥ जो भाणे से मेलिआ विछोड़े भी आपि ॥ नानक प्रभ सरणागती जा का वड परतापु ॥ २ ॥ छंतु ॥ ग्रीखम रुति अति गाखड़ी जेठ अखाड़े घाम जीउ ॥ प्रेम बिछोहु दुहागणी द्रिसटि न करी राम जीउ ॥ नह द्रिसटि आवै मरत हावै महा गारबि मुठीआ ॥ जल बाझु मछुली तड़फड़ावै संगि माइआ रुठीआ ॥ करि पाप जोनी भै भीत होई देइ सासन जाम जीउ ॥ बिनवंति नानक ओट तेरी राखु पूरन काम जीउ ॥ ३ ॥ सलोक ॥ सरधा लागी संगि प्रीतमै इकु तिलु रहणु न जाइ ॥ मन तन अंतरि रवि रहे नानक सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ करु गहि लीनी साजनहि जनम जनम के मीत ॥ चरनह दासी करि लई नानक प्रभ हित चीत ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवे आनंद जीउ ॥ घण उनवि वुठे जल थल पूरिआ मकरंद जीउ ॥ प्रभु पूरि रहिआ सरब ठाई हरि नाम नव निधि ग्रिह भरे ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभि तरे ॥ प्रिअ रंगि जागे नह छिद्र लागे क्रिपालु सद बखसिंदु जीउ ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ ॥ ४ ॥ सलोक ॥ आस पिआसी मै फिरउ कब पेखउ गोपाल ॥ है कोई साजनु संत जनु नानक प्रभ मेलणहार ॥ १ ॥ बिनु मिलबे सांति न ऊपजै तिलु पलु रहणु न जाइ ॥ हरि साधह सरणागती नानक आस पुजाइ ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति सरद अडंबरो असू कतके हरि पिआस जीउ ॥ खोजंती दरसनु फिरत कब मिलीऐ गुणतास जीउ ॥ बिनु कंत पिआरे नह सूख सारे हार कंङण ध्रिगु बना ॥ सुंदरि सुजाणि चतुरि बेती सास बिनु जैसे तना ॥ ईत उत दह दिस अलोकन मनि मिलन की प्रभ पिआस जीउ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मेलहु प्रभ गुणतास जीउ ॥ ५ ॥ सलोक ॥ जलणि बुझी सीतल भए मनि तनि उपजी सांति ॥ नानक प्रभ पूरन

मैं आनन्दित हो उठी हूँ और उसके पवित्र चरणों को छूकर मेरा हृदय रूपी कमल खिल उठा है। वह प्रभु सुन्दर, बुद्धिमान, सयाना सब कुछ जानने वाला है और उस के गुण अमूल्य हैं। बड़े भाग्य से मैंने उसे पाया है, मेरा दुख दूर हो गया है और मेरी आशा पूरी हो गई है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, तेरी शरण में आकर मेरा यम का भय दूर हो गया है।। २ ।। श्लोक।। साधसंगति के बिना मैं अनेकों कर्मकाण्ड करती हुई भ्रमों में भटकती हुई मर गई हूँ। हे नानक, यह मेरे पूर्व कर्मों के लेख हैं कि मैं माया के कोमल बन्धनों में बँधी फिरती हूँ। जो उसे अच्छे लगते हैं उन्हें वह मिला देता है और स्वयं ही उन्हें दूर भी कर देता है। हे नानक, मैं तो उस प्रभु की शरण में हूँ जिसका बल वैभव महान है।। २ ।। छन्द ।। गर्मी की ऋतु अत्यन्त कठिनाई में डालने वाली है और जेठ महीने में अत्यन्त भीषण गर्मी लगती है। यह वैसी ही कष्ट कारक है जैसे सुहागिन स्त्री प्यारे पति से बिछुड़ी हुई है और पति उसकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता है। पति उसे नजर नहीं आता और वह उसके दुख में मरी जाती है परन्तु उसे भी उसके अहंकार ने लूटा है। वह जल बिना तड़पती हुई मछली है और माया के साथ रहती हुई प्रभु पति से रूठी हुई वैसे ही कष्ट में बनी रहती है। मानव जीवन में अपने पापों से भयभीत बनी हुई को यम फटकार लगाते रहते हैं। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, मुझे तेरा ही आसरा है, तू मेरी रक्षा कर और तू ही मेरी कामनाएं पूरी करने वाला है।। ३ ।। श्लोक।। प्रियतम के साथ मेरी श्रद्धा लग गई है और अब एक क्षण मात्र के लिये भी मुझसे नहीं रहा जाता। हे नानक, सहज स्वभाविक रूप से ही वह प्रभु प्रियतम मेरे मन तन में रमण कर रहा है।। १ ।। जन्मों-जन्मान्तरों के हमारे मित्र उस साजन ने हमें हमारा हाथ पकड़कर अपनी ओर कर लिया है और हे नानक, प्रेम पूर्वक प्रभु का सुमिरन करने के फलस्वरूप मुझे अपने चरणों की दासी बना लिया है।। २ ।। छन्द ।। सुख देने वाली वर्षा की ऋतु आ गई है और सावन भादों में आनन्द बन गया है। बादल झुक-झुक कर बरसने लगे और जल-स्थल पूरी तरह भर गया है। ऐसा लगने लगा जैसे ये जल धरती पर वैसे ही बिखरा हुआ है जैसे फूलों के अन्दर मकरन्द भरा है। प्रभु सभी स्थानों में व्याप्त बना है और प्रभु नाम की नवनिधियों के कारण हृदय रूपी घर भरे हुए हैं। उस अन्तर्यामी प्रभु के सुमिरन के माध्यम से सभी कुल पार उतर गए है। प्रियतम के प्यार के रंग में जगे रहने पर कोई भी दोष नहीं लगता और वह कृपालु प्रभु सदा देने वाला क्षमाशील कृपालु बना रहता है। नानक विनती करता है कि मैंने उस प्रभु पति को पा लिया है जो सदैव मेरे मन को भाता रहता है।। ४ ।। श्लोक ।। उसी की आशा में मैं प्यासी भटक रही हूँ और पता नहीं मैं कब उस गोपाल प्रभु को देख पाऊंगी। हे नानक, क्या कोई ऐसा सज्जन संत सेवक है जो मुझे प्रभु से मिला दे।। १ ।। उसे मिले बिना शान्ति नहीं मिलती और क्षण भर के लिये भी उसके बिना रहा नहीं जाता। हे नानक, मैं हरि रूपी साधु की शरण में हूँ ; हे प्रभु, मेरी आशाओं को पूरा कर।। २ ।। छन्द ।। सर्दी की ऋतु की सज धज का आडम्बर शुरू हो गया है और प्रभु की प्यास बढ़ाने वाला अश्विन और कार्तिक मास आ गया है। मैं दर्शनों के लिये उस प्रभु को खोजती फिर रही हूँ ; गुणों का भण्डार वह प्रभु मुझे कब मिलेगा। प्रियतम प्रभु के बिना सुख प्राप्त नहीं होते और ये मेरे गले के हार तथा कँगन मेरे लिये धिक्कार योग्य बन गए हैं। मैं सुन्दर, चतुर, सुजान, ज्ञानवान तो बन गई हूँ परन्तु प्रभु के बिना मैं वैसी ही हूँ जैसे यह शरीर श्वास के बिना होता है। इधर-उधर दसों दिशाओं में मैं देखती हूँ और मेरे मन में प्रभु से मिलाप की प्यास बनी रहती है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु, कृपा धारण करो और गुणों के भण्डार प्रभु से मुझे मिला दो।। ५ ।। श्लोक।। ईर्ष्या और द्वेष की जलन बुझ गई है, हम शीतल हो गए हैं और तन मन में शान्ति उत्पन्न हो गई। हे नानक, पूर्ण

मिले दुतीआ बिनसी भ्रांति ॥ १ ॥ साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥ नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ॥ २ ॥ छंतु ॥ रुति सिसीअर सीतल हरि प्रगटे मंघर पोहि जीउ ॥ जलनि बुझी दरसु पाइआ बिनसे माइआ ध्रोह जीउ ॥ सभि काम पूरे मिलि हजूरे हरि चरण सेवकि सेविआ ॥ हार डोर सीगार सभि रस गुण गाउ अलख अभेविआ ॥ भाउ भगति गोविंद बांछत जमु न साकै जोहि जीउ ॥ बिनवंति नानक प्रभि आपि मेली तह न प्रेम बिछोह जीउ ॥ ६ ॥ सलोक ॥ हरि धनु पाइआ सोहागणी डोलत नाही चीत ॥ संत संजोगी नानका ग्रिहि प्रगटे प्रभ मीत ॥ १ ॥ नाद बिनोद अनंद कोड प्रिअ प्रीतम संगि बने ॥ मन बांछत फल पाइआ हरि नानक नाम भने ॥ २ ॥ छंतु ॥ हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवंत जीउ ॥ सखी सहेली गाउ मंगलो ग्रिहि आए हरि कंत जीउ ॥ ग्रिहि लाल आए मनि धिआए सेज सुंदरि सोहीआ ॥ वणु त्रिणु त्रिभवण भए हरिआ देखि दरसन मोहीआ ॥ मिले सुआमी इछ पुंनी मनि जपिआ निरमल मंत जीउ ॥ बिनवंति नानक नित करहु रलीआ हरि मिले स्रीधर कंत जीउ ॥ ७ ॥ सलोक ॥ संत सहाई जीअ के भवजल तारणहार ॥ सभ ते ऊचे जाणीअहि नानक नाम पिआर ॥ १ ॥ जिन जानिआ सेई तरे से सूरे से बीर ॥ नानक तिन बलिहारणै हरि जपि उतरे तीर ॥ २ ॥ छंतु ॥ चरण बिराजित सभ ऊपरे मिटिआ सगल कलेसु जीउ ॥ आवण जावण दुख हरे हरि भगति कीआ परवेसु जीउ ॥ हरि रंगि राते सहजि माते तिलु न मन ते बीसरै ॥ तजि आपु सरणी परे चरनी सरब गुण जगदीसरै ॥ गोविंद गुण निधि स्रीरंग सुआमी आदि कउ आदेसु जीउ ॥ बिनवंति नानक मइआ धारहु जुगु जुगो इक वेसु जीउ ॥ ८ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

रामकली महला १ दखणी ओअंकारु १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥ ओअंकार कीआ जिनि चिति ॥ ओअंकारि सैल जुग भए ॥ ओअंकारि बेद

प्रभु से मिलाप हो गया है और द्वैतभाव के हमारे भ्रम विनष्ट हो गए हैं।। १ ।। प्रभु ने स्वयं साधु पुरुषों को हमें यह बताने के लिए भेजा है कि हे जीव, हम तुमसे दूर नहीं है। हे नानक, सबमें भरपूर रूप से रमण करने वाले प्रभु के कारण हमारे भ्रम और भय मिट गए हैं।। २ ।। छन्द ।। यह मार्गशीष और पौष के महीने में शिशिर ऋतु आ गयी है और शीतल प्रभु प्रकट हो उठा है। उसका दर्शन करते ही द्वैतभाव की जलन बुझ गई है और हमारे माया के छल कपट नष्ट हो गए हैं। प्रभु के सेवकों के चरणों की सेवा करके तथा प्रभु से प्रत्यक्ष रूप में मिल कर हमारे सभी काम पूरे हो गए हैं। बाजूबंद आदि का श्रृंगार करके अब हम उस रहस्यातीत अदृष्ट प्रभु का गुण गा रहे हैं। प्रभु का प्रेम और भक्ति हम चाहते हैं और ऐसा चाहने से हमें यम दुख नहीं दे सकता। नानक विनती करता है कि जिनको प्रभु ने स्वयं मिला लिया है उन्हें प्रभु के प्रेम का वियोग नहीं सहना पड़ता।। ६ ।। श्लोक ।। जिस सुहागिन ने प्रभु रूपी धन प्राप्त कर लिया है उसका हृदय इधर-उधर नहीं भटकता। शान्त पुरुषों से मिलाप होने पर हे नानक, मेरे हृदय रूपी घर में प्रभु मित्र प्रकट हो गया है।। १ ।। उस प्रिय प्रीतम के साथ रहने पर नाद, विनोद और आनन्द के अनेकों कौतुक (खेल) बन गए हैं। हे नानक, प्रभु नाम का सुमिरन करने से हमें मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है।। २ ।। छन्द ।। माघ और फाल्गुन में गुणों वाली तथा मन को अच्छी लगने वाली बर्फीली ऋतु आ गई है। प्रभु रूपी मेरा पति हृदय रूपी घर में आ गया है इसलिये हे सखी सहेलियो, उसी के गीत गाते रहो। मन में सुमरिन करने से हृदय रूपी घर में वह प्यारा आ गया है और मेरी सुन्दर सेज शोभायमान हो उठी है। मैं उसके दर्शन को देख मोहित हो उठी हूँ और वन की घास और तीनों लोक मेरे लिये हरे-भरे हो गए है। मैंने मन में उस प्रभु के निर्मल वेश का जाप किया, मेरी इच्छा पूरी हो गई और मुझे स्वामी प्रभु मिल गया है। नानक विनती करता है कि मुझे वह प्रभु रूपी पति मिल गया है इसीलिये अब मैं सदैव उसके प्रेम की रंग-रंलियाँ मनाती हूँ।। ७ ।। श्लोक।। संसार सागर से पार कराने वाले शान्त पुरुष ही जीव के सहायक होते हैं और हे नानक, प्रभु-नाम से प्रेम बनाए रखने वाले इनको सबसे ऊँचा जाना जाता है।। १ ।। जिन्होंने प्रभु को जान लिया है वे पार उतर गये हैं और वे ही वास्तव में शूरवीर भी हैं। नानक तो उन पर बलिहारी जाता है जो प्रभु का जाप करते हुए संसार सागर के दूसरे किनारे पर जा उतरे हैं।। २ ।। छन्द।। प्रभु के चरण जो सबसे उपर हैं मन में विराजमान होने से सभी प्रकार का दुख दूर हो गया है। आवागमन का दुख नष्ट हो गया है और प्रभु भक्ति ने अब अन्तर्मन में प्रवेश पा लिया है। प्रभु के रंग में रंगे और सहज भाव में मस्त बने हुए जीव को क्षण भर के लिये भी वह प्रभु मन से विस्मृत नहीं होता। अहं भाव को त्यागकर अब जीव सभी गुणों के स्वामी जगदीश्वर प्रभु की शरण में आ गया है और अब गुणों के भण्डार और धरती के स्वामी उस आदि प्रभु को ही उसका प्रणाम है। नानक विनती करता है कि हे युगों-युगों में एक ही वेश धारण किये रहने वाले प्रभु, तुम मुझ पर कृपा करो।। ८ ।। १ ।। ६ ।। ८ ।।

रामकली महला १ दक्खिनी ओअंकार* १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

ओअंकार से ही ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई और उस ब्रह्मा ने भी ओअंकार का ही चित्त में सुमिरन किया। उस प्रभु ओअंकार से ही पर्वतों और युगों की उत्पत्ति हुई और उस ओअंकार से ही वेदों का

* विस्तार के लिए परिशिष्ट 4 देखें

निरमए ॥ ओअंकारि सबदि उधरे ॥ ओअंकारि गुरमुखि तरे ॥ ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥ ओनम अखरु त्रिभवण सारु ॥ १ ॥ सुणि पाडे किआ लिखहु जंजाला ॥ लिखु राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ससै सभु जगु सहजि उपाइआ तीनि भवन इक जोती ॥ गुरमुखि वसतु परापति होवै चुणि लै माणक मोती ॥ समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै अंति निरंतरि साचा ॥ गुरमुखि देखै साचु समाले बिनु साचे जगु काचा ॥ २ ॥ धधै धरमु धरे धरमा पुरि गुणकारी मनु धीरा ॥ धधै धूलि पड़ै मुखि मसतकि कंचन भए मनूरा ॥ धनु धरणीधरु आपि अजोनी तोलि बोलि सचु पूरा ॥ करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥ ३ ॥ ङिआनु गवाइआ दूजा भाइआ गरबि गले बिखु खाइआ ॥ गुर रसु गीत बाद नही भावै सुणीऐ गहिर गंभीरु गवाइआ ॥ गुरि सचु कहिआ अंम्रितु लहिआ मनि तनि साचु सुखाइआ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे अंम्रितु पीआइआ ॥ ४ ॥ एको एकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥ अंतरि बाहरि एकु पछाणै इउ घरु महलु सिञापै ॥ प्रभु नेड़ै हरि दूरि न जाणहु एको स्रिसटि सबाई ॥ एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई ॥ ५ ॥ इसु करते कउ किउ गहि राखउ अफरिओ तुलिओ न जाई ॥ माइआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥ लबि लोभि मुहताजि विगूते इब तब फिरि पछुताई ॥ एकु सरेवै ता गति मिति पावै आवणु जाणु रहाई ॥ ६ ॥ एकु अचारु रंगु इकु रूपु ॥ पउण पाणी अगनी असरूपु ॥ एको भवरु भवै तिहु लोइ ॥ एको बूझै सूझै पति होइ ॥ गिआनु धिआनु ले समसरि रहै ॥ गुरमुखि एकु विरला को लहै ॥ जिस नो देइ किरपा ते सुखु पाए ॥ गुरू दुआरै आखि सुणाए ॥ ७ ॥ ऊरम धूरम जोति उजाला ॥ तीनि भवण महि गुर गोपाला ॥ ऊगविआ असरूपु दिखावै ॥ करि किरपा अपुनै घरि आवै ॥ ऊनवि बरसै नीझर धारा ॥ ऊतम सबदि सवारणहारा ॥ इसु एके का जाणै भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥ ८ ॥ उगवै सूरु असुर संघारै ॥ ऊचउ देखि सबदि बीचारे ॥ ऊपरि आदि अंति तिहु लोइ ॥ आपे करै कथै सुणै

निर्माण हुआ। ओअंकार शब्द के माध्यम से ही लोगों का उद्धार हुआ और ओअंकार के माध्यम से ही गुरमुख बनकर लोग पार उतर गए हैं। ओअंकार के सामने नमन करने के तात्पर्य को सुनो ; यह ओअंकार अक्षर ही तीनों लोकों का सार तत्व है।। १ ।। हे पंडित, यह तुम क्या जंजाल की बातें लिखते जा रहे हो। गुरमुख बनकर तुम केवल धरती का पालन करने वाले प्रभु का नाम ही लिखो।। १ ।। रहाउ ।। स-सारा संसार सहज स्वाभाविक रूप से ही उस प्रभु ने उत्पन्न किया और तीनों लोकों में उसकी एक ज्योति ही कार्यशील है। गुरमुख बनकर ही नाम ज्योति रूपी पदार्थ प्राप्त होता है इसलिये हे जीव, तू माणिक और मोतियों को चुन ले। तू समझता है, तुझे मालूम है और पढ़-पढ़कर तू जानता है कि प्रत्येक वस्तु के अन्दर निरन्तर रूप से वह सच्चा प्रभु बस रहा है। गुरमुख बनकर ही जो उसे देखता है वह सत्य का सुमिरन करता रहता है और इस तथ्य को जानता है कि सच्चाई के बिना सारा संसार कच्चा ही है।। २ ।। ध-धर्मपुरी रूपी सत्संगति में जीव कर्त्तव्यनिष्ठा रूपी धर्म को धारण करता है जो गुणकारी भी है और मन को धैर्य देने वाला भी है। सत्संगति की धूल जब माथे पर मुँह पर पड़ती है तो राख भी सोना बन जाती है। धरती को धारण करने वाला वह प्रभु अयोनि है और धन्य है ; वही तौल में और बोल में सच्चा और पूर्ण है। उस कर्ता प्रभु के ओर-छोर को या तो वह कर्ता स्वयं ही जानता है और या फिर शूरवीर गुरु जानता है।। ३ ।। ङ-जब ज्ञान को गँवा दिया जाता है तो द्वैतभाव अच्छा लगने लगता है और अभिमानी बनकर व्यक्ति माया रूपी विष को खाता रहता है। गुरु का नाम रस से भरा उपदेश अच्छा नहीं लगता और इस प्रकार वह अनन्त गुणों के मालिक परमात्मा से बिछुड़ जाता है। गुरु के माध्यम से जिसने उस सत्य प्रभु का गुणानुवाद किया है उसने प्रभु नाम रूपी अमृत प्राप्त कर लिया है और फिर वह सत्य प्रभु उसके तन मन को सुख देने वाला अनुभव होता है। वह स्वयं ही गुरमुख बनाकर जीव को सुमिरन का दान देता है और स्वयं ही नाम रूपी अमृत पिलाता है।। ४ ।। उस परमात्मा को तो सभी एक ही मानते हैं परन्तु सब पर उनका अपना अहंकार व्याप्त बना रहता है। यदि व्यक्ति अपने हृदय में और बाहर सारी सृष्टि में उस प्रभु को पहचान ले तो उसे परमात्मा के घर और ठिकाने की समझ आ जाती है। प्रभु अत्यन्त निकट है उसे दूर मत समझो और सारी सृष्टि में वह एक प्रभु ही व्याप्त है। हे नानक, वह सर्वव्यापक परमात्मा ही हर स्थान में बना हुआ है उसके बिना अन्य कोई नहीं है ।। ५ ।। हे पंडित, बेशक प्रभु मेरे अन्दर भी बस रहा है परन्तु अभिमान को अपने अन्दर बसाते हुए मैं उसे मन में भी नहीं बसा सकता और उसके बड़प्पन का मूल्य भी नहीं जान सकता। माया में मस्त जीव को जब तक झूठी ठग बूटी मिली हुई है वह स्वादों और लोभ तथा दूसरों का मोहताज बने रहने के चक्कर में पड़कर भटक रहा है और इधर उधर पछताता हुआ फिर रहा है। यदि यह एक प्रभु का ही सुमिरन करे तभी इसकी जान पहचान प्रभु से हो पाती है और इसका आवागमन समाप्त हो जाता है।। ६ ।। वह एक ही प्रभु आचरण, रंग और रूप के माध्यम से सारी सृष्टि में कार्यशील है। पवन, पानी, अग्नि उसका अपना ही स्वरूप है। जो उस एक परमात्मा को ही तीनों लोकों में कार्यशील मानता है उसको एक परमात्मा की समझ-बूझ आ जाती है और उसका सम्मान सब जगह होता है। वह ज्ञान-ध्यान को प्राप्त करके समदर्शी बना रहता है परन्तु गुरमुख बनकर कोई बिरला ही उस एक प्रभु को जान पाता है। जिस व्यक्ति को प्रभु अपनी कृपा द्वारा यह दान देता है वही सुख प्राप्त करता है और गुरु के द्वार के माध्यम से उसके गुणों को कहता और सुनाता रहता है।। ७ ।। हे पंडित, धरती की पालना करने वाले उस गोपाल प्रभु का नाम अपने मन की पट्टी पर लिख क्योंकि वह प्रभु ही तीनों लोकों में व्याप्त है और धरती तथा आकाश उसी की ज्योति का प्रकाश हैं। वह गुरु के माध्यम से प्रकट होकर जिसे अपना सर्वव्यापक होने का ज्ञान देता है वह जीव अपने आप में स्थिर हो जाता है। वह झुके हुए बादल की तरह लगातार बरसता है और शब्द के माध्यम से संसार को सँवार देने वाला वह उत्तम प्रभु ही है जो इस रहस्य को जानता है; वह स्वयं ही कर्ता है और स्वयं ही देव है।।८।। जब नाम रूपी सूर्य उगता है तो जीव काम, क्रोध आदि दैत्यों को मार देता है। जब वह अपनी दृष्टि ऊँची करके शब्द के माध्यम से चिंतन करता है तो उसको तीनों लोकों के आदि और अंत में वह प्रभु स्वयं करता, कहता और सुनता हुआ दिखाई देता है।

सोइ ॥ ओहु बिधाता मनु तनु देइ ॥ ओहु बिधाता मनि मुखि सोइ ॥ प्रभु जगजीवनु अवरु न कोइ ॥ नानक नामि रते पति होइ ॥ ९ ॥ राजन राम रवै हितकारि ॥ रण महि लूझै मनूआ मारि ॥ राति दिनंति रहै रंगि राता ॥ तीनि भवन जुग चारे जाता ॥ जिनि जाता सो तिस ही जेहा ॥ अति निरमाइलु सीझसि देहा ॥ रहसी रामु रिदै इक भाइ ॥ अंतरि सबदु साचि लिव लाइ ॥ १० ॥ रोसु न कीजै अंम्रितु पीजै रहणु नही संसारे ॥ राजे राइ रंक नही रहणा आइ जाइ जुग चारे ॥ रहण कहण ते रहै न कोई किसु पहि करउ बिनंती ॥ एकु सबदु राम नाम निरोधरु गुरु देवै पति मती ॥ ११ ॥ लाज मरंती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ प्रेमि बुलाई रली सिउ मन महि सबदु अनंदु ॥ लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिंदु ॥ १२ ॥ लाहा नामु रतनु जपि सारु ॥ लबु लोभु बुरा अहंकारु ॥ लाड़ी चाड़ी लाइतबारु ॥ मनमुखु अंधा मुगधु गवारु ॥ लाहे कारणि आइआ जगि ॥ होइ मजूरु गइआ ठगाइ ठगि ॥ लाहा नामु पूंजी वेसाहु ॥ नानक सची पति सचा पातिसाहु ॥ १३ ॥ आइ विगूता जगु जम पंथु ॥ आई न मेटण को समरथु ॥ आथि सैल नीच घरि होइ ॥ आथि देखि निवै जिसु दोइ ॥ आथि होइ ता मुगधु सिआना ॥ भगति बिहूना जगु बउराना ॥ सभ महि वरतै एको सोइ ॥ जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइ ॥ १४ ॥ जुगि जुगि थापि सदा निरवैरु ॥ जनमि मरणि नही धंधा धैरु ॥ जो दीसै सो आपे आपि ॥ आपि उपाइ आपे घट थापि ॥ आपि अगोचरु धंधै लोई ॥ जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ करि आचारु सचु सुखु होई ॥ नाम विहूणा मुकति किव होई ॥ १५ ॥ विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥ वाट वटाऊ आवै जाइ ॥ किआ ले आइआ किआ पलै पाइ ॥ विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥ वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ विणु नावै कैसी पति सारी ॥ १६ ॥ गुण वीचारे गिआनी सोइ ॥ गुण महि गिआनु परापति होइ ॥ गुणदाता विरला संसारि ॥ साची करणी गुर वीचारि ॥ अगम

वह रचना करने वाला प्रभु मन और तन प्रदान करता है और मन और मुख में भी वही स्थित बना रहता है। प्रभु ही संसार का जीवन है अन्य कोई नहीं तथा हे नानक, प्रभु नाम में लीन होने से ही सम्मान प्राप्त होता है।। ६ ।। जो प्रभु का हितकारी बनकर उसका सुमिरन करता है वह इस संसार के युद्ध में डटता है और मन रूपी दैत्य को मार लेता है। वह दिन रात प्रभु के रंग में लीन बना रहता है और उसे तीनों लोकों और चारों युगों में जाना जाता है। उस प्रभु को जानने वाला उसके जैसा ही हो जाता है ; वह अत्यन्त निर्मल हो जाता है और उसका शरीर सफल हो जाता है। उस एक के प्यार में बने रहने से वह प्रभु हृदय में बसकर खिला रहता है। ऐसे व्यक्ति के अन्तर्मन में शब्द बज उठता है और उसकी लौ सत्य में लगी रहती है।। १० ।। प्रभु से रूठो मत और उसका नाम रूपी अमृत पीते रहो क्योंकि इस संसार में सदैव नहीं बने रहना है। राजा, सम्राट, गरीब किसी को भी यहां नहीं रहना है और चारों युगों में ही ये आते-जाते ही रहते हैं। यहाँ बना रहना है इस बात को कहने से भी कोई रुकता नहीं क्योंकि सभी इस संसार को अपना बनाए बैठे है, इसलिये किसके सामने मैं विनती करूं। यहाँ तो केवल प्रभु नाम का एक शब्द ही कभी भी प्रभावहीन ना होने वाला मन्त्र है और गुरु ही इसे हमारे सम्मान और बुद्धि को स्थिर बना कर प्रदान करता है।। ११ ।। लोक लाज जिसमें मैं मरी रहती थी अब मर गई है और अब उस घूँघट को हटाकर मैं पर्दे में रहकर प्रकट रूप से सत्य का जीवन व्यतीत करती हूँ। अविद्या रूपी मेरी सास पागल हो गई है और मेरे मन से उसका भय समाप्त हो गया है। मेरे मन में प्रभु नाम का आनन्द स्थापित हो गया है और प्रेम स्वरूप प्रभु ने मौज में आकर मुझे अपने पास बुला लिया है। उस लाल प्रभु में लीन होकर मैं भी लाल हो गई हूँ और गुरमुख बनकर निश्चिंत हो गई हूँ।। १२ ।। वास्तविक लाभ नाम रूपी रत्न का सुमिरन करना है। लोभ, लालच और अहंकार अत्यन्त बुरे हैं किसी को लगाकर बातें करना, चुगली करना मनमुख व्यक्ति का कार्य है जो अज्ञानी मूर्ख एवं गँवार होता है। जीव इस संसार में आया तो लाभ कमाने के लिये था परन्तु यहाँ के प्रपंचों से अपने आप को ठगाकर एक बेगार करने वाले मजदूर की तरह भटकता फिर रहा है। प्रभु का नाम ही लाभ है और यह भरोसे की रासपूंजी से प्राप्त होता है। हे नानक, इसी के माध्यम से सच्चा सम्राट प्रभु तथा सच्चा सम्मान प्राप्त होता है।। १३ ।। यम के रास्ते पर चलने वाला यह संसार भटका हुआ है। इस माया की शक्ति को मिटाने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। यदि यह माया मूर्ख व्यक्ति के पास भी हो तो उसे सभी सयाना कहते हैं; भक्ति से विहीन यह संसार बावला बना हुआ है । सबमें वह एक प्रभु ही कार्यशील है और जिस पर वह प्रभु कृपा करता है वही उसे जान पाता है।। १४ ।। वह शत्रु भाव से रहित प्रभु युगों-युगों में बिराजमान बना हुआ है; उसे ना तो आवागमन का काम है और ना ही धन्धों में पड़कर उसे इधर-उधर भटकना पड़ता है। जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह स्वयं प्रभु ही है, वह स्वयं ही उत्पन्न करता है और स्वयं ही हृदय में स्थापित होता है। वह स्वयं तो अगोचर है परन्तु यह संसार धन्धों में लगा हुआ है। प्रभु से मिलाप की युक्ति तो स्वयं वह प्रभु ही है। हे जीव, तू उत्तम कर्म कर, तुझे सत्य और सुख प्राप्त होगा परन्तु यदि तू प्रभु-नाम से विहीन बना रहेगा तो तेरी मुक्ति भला कैसे होगी।। १५ ।। प्रभु-नाम के बिना यह शरीर किसी भी बुरी ओर जाने से रुकता नहीं। पता नहीं यह क्यों प्रभु नाम से मिलाप नहीं करता और अपने मन की पीड़ा को क्यों नहीं दूर करता। यह जीव एक मुसाफिर की तरह आता-जाता रहता है ; वह यहाँ क्या लेकर आया था और यहाँ से क्या लेकर जाएगा। प्रभु-नाम के बिना सभी स्थानों पर इसे कमी ही बनी रहेगी और इसे लाभ तभी प्राप्त होगा जब प्रभु जीव को समझ प्रदान कर देगा। वास्तविक व्यापारी ही प्रभु-नाम का पदार्थ खरीदकर उसका व्यापार करता है ; प्रभु-नाम के बिना भला श्रेष्ठ सम्मान कैसे प्राप्त हो सकता है।। १६ ।। गुणों का चिंतन करने वाला ही वास्तविक ज्ञानी पुरुष है और उसके गुणानुवाद में से ही ज्ञान प्राप्त होता है। आगे गुणों को बाँटने वाला इस संसार में कोई बिरला ही है और गुरु का चिंतन करते रहना ही वास्तव में सच्चा आचरण है।

अगोचरु कीमति नही पाइ ॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाइ ॥ गुणवंती गुण सारे नीत ॥ नानक गुरमति मिलीऐ मीत ॥ १७ ॥ कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥ जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ कसि कसवटी सहै सु ताउ ॥ नदरि सराफ वंनी सचड़ाउ ॥ जगतु पसू अहं कालु कसाई ॥ करि करतै करणी करि पाई ॥ जिनि कीती तिनि कीमति पाई ॥ होर किआ कहीऐ किछु कहणु न जाई ॥ १८ ॥ खोजत खोजत अंम्रितु पीआ ॥ खिमा गही मनु सतगुरि दीआ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ खरा रतनु जुग चारे होइ ॥ खात पीअंत मूए नही जानिआ ॥ खिन महि मूए जा सबदु पछानिआ ॥ असथिरु चीतु मरनि मनु मानिआ ॥ गुर किरपा ते नामु पछानिआ ॥ १९ ॥ गगन गंभीरु गगनंतरि वासु ॥ गुण गावै सुख सहजि निवासु ॥ गइआ न आवै आइ न जाइ ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ गगनु अगंमु अनाथु अजोनी ॥ असथिरु चीतु समाधि सगोनी ॥ हरि नामु चेति फिरि पवहि न जूनी ॥ गुरमति सारु होर नाम बिहूनी ॥ २० ॥ घर दर फिरि थाकी बहुतेरे ॥ जाति असंख अंत नही मेरे ॥ केते मात पिता सुत धीआ ॥ केते गुर चेले फुनि हूआ ॥ काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥ केती नारि वरु एकु समालि ॥ गुरमुखि मरणु जीवणु प्रभ नालि ॥ दह दिस ढूढि घरै महि पाइआ ॥ मेलु भइआ सतिगुरू मिलाइआ ॥ २१ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि बोलै ॥ गुरमुखि तोलि तुोलावै तोलै ॥ गुरमुखि आवै जाइ निसंगु ॥ परहरि मैलु जलाइ कलंकु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि मजनु चजु अचारु ॥ गुरमुखि सबदु अंम्रितु है सारु ॥ नानक गुरमुखि पावै पारु ॥ २२ ॥ चंचलु चीतु न रहई ठाइ ॥ चोरी मिरगु अंगूरी खाइ ॥ चरन कमल उर धारे चीत ॥ चिरु जीवनु चेतनु नित नीत ॥ चिंतत ही दीसै सभु कोइ ॥ चेतहि एकु तही सुखु होइ ॥ चिति वसै राचै हरि नाइ ॥ मुकति भइआ पति सिउ घरि जाइ ॥ २३ ॥ छीजै देह खुलै इक गंढि ॥ छेआ नित देखहु जगि हंढि ॥ धूप छाव जे सम करि जाणै ॥ बंधन काटि मुकति घरि आणै ॥ छाइआ छूछी जगतु भुलाना ॥ लिखिआ किरतु धुरे परवाना ॥ छीजै जोबनु जरूआ

वह अगम्य एवं अगोचर है उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता; वह उसे ही मिलता है जिसे वह अपने से मिला लेता है। गुणवान जीव स्त्री सदैव उसके गुणों का सुमिरन करती रहती है और हे नानक, गुरु की मति के माध्यम से ही उस मित्र प्रभु को मिला जाता है।। १७ ।। जिस प्रकार सोने को गलाने वाला सुहागा सोने को गला देता है उसी प्रकार काम, क्रोध इस शरीर तो गला देते हैं। सच्चे सोने को प्रभु की कसौटी और ताप को सहना पड़ता है और तभी यह उस प्रभु रूपी सुनार की दृष्टि में सच्चा और शुद्ध बनता है। यह संसार पशु है और अहंकार रूपी काल कसाई है। प्रभु ने सृष्टि उत्पन्न करके जीवों का आचरण उन्हीं के हाथों में सौंप दिया है। जिस प्रभु ने सृष्टि को पैदा किया है वही इसके रहस्य को जानता है ; अन्य कोई क्या कह सकता है क्योंकि किसी से कुछ भी नहीं कहा जाता।। १८ ।। खोजते-खोजते मैंने प्रभु नाम का अमृत पी लिया है और जब इस मन में क्षमाभाव को पकड़ा तभी सच्चे गुरु ने यह अमृत प्रदान किया। अपने आप को तो सभी शुद्ध-शुद्ध कहते रहते हैं परन्तु खरा रत्न वही है जो चारों युगों में खरा बना रहता है। अनेक जीव तो उसे जाने बिना खाते-पीते ही मर गए हैं परन्तु जिन्होंने शब्द को पहचान लिया है वे क्षण भर में ही अपने अहंकार भाव के प्रति मर गए हैं। उन्हें ऐसा मरना अच्छा लगता है क्योंकि इस प्रकार उनका चित्त स्थिर बना रहता है। गुरु की कृपा से ही उन्होंने प्रभु नाम को पहचाना होता है।। १६ ।। आकाश की तरह सबमें व्याप्त वह प्रभु जब हृदय रूपी आकाश में आकर बस गया तो जीव अब उसी का गुणानुवाद करता है और स्वभाविक सुख में उसका निवास हो जाता है। वह जन्मता-मरता नहीं और ना ही आवागमन में पड़ा रहता है। गुरु की कृपा से ही जीव उसमें लौ लगाये रहता है। वह अयोनि, अगम्य और ऐसा नाथ रूपी आकाश है जिसके उपर कोई भी नाथ नहीं। वह स्थिर चित्त वाला और सभी गुणों का स्वामी सदैव समाधि में लीन बना रहने वाला है। हे जीव, तू उस प्रभु के नाम का सुमिरन कर ताकि तू फिर योनियों में ना भटके। गुरु का मत ही श्रेष्ठ मत है तथा अन्य सब कुछ प्रभु नाम से विहीन है।। २० ।। मैं बहुत से घरों और द्वारों पर भटक-भटक कर थक गया हूँ और मैं अनेकों जातियों (जीवनों) में से पार हुआ हूँ। उन जन्मों की गिनती नहीं की जा सकती। कितनी बार मैं माता, पिता, पुत्र और पुत्री बना हूँ। कितनी बार गुरु चेला मैं बार-बार बना हूँ परन्तु कच्चे गुरु के माध्यम से कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं होती। तू यह मान ले कि अनेकों जीव उसकी स्त्रियां हैं और उस एक प्रभु पति को ही हृदय में याद करता रह। गुरमुख व्यक्ति का तो जीना मरना प्रभु के साथ ही होता है। उसे दसों दिशाओं में ढूंढने पर उसे हृदय रूपी घर में ही पाया जाता है और उससे मेल तभी होता है जब सच्चा गुरु वह मेल मिला देता है।। २१ ।। गुरमुख व्यक्ति ही उस प्रभु का गायन करता है और गुरमुख व्यक्ति ही उसकी कथावार्ता कहता है। गुरमुख की जाँच परख वह प्रभु ही करता कराता है। गुरमुख व्यक्ति ही बिना किसी भय के आता जाता है और अपने हृदय की मैल त्याग कर अपने कलंकों को जला कर राख कर देता है। गुरमुख बनना ही नाद वेद का चिंतन है और गुरमुख होना ही तीर्थ स्नान विधि-विधान और वास्तविक आचरण है। गुरमुख का उपदेश ही अमृत रूपी सार तत्व है और हे नानक, गुरमुख ही इस संसार सागर से पार उतर जाता है।। २२ ।। यह चंचल चित्त एक स्थान पर नहीं टिकता और जीव रूपी हिरण पाप रूपी फूटे हुए अंकुरों को खाता रहता है। यदि यह प्रभु के चरण कमलों को चित्त में धारण कर ले तो यह चिरंजीवी और सदैव चेतन बना रहने वाला हो जाता है। सब लोग यहाँ चिंता में पड़े हुए दिखाई देते हैं परन्तु यदि ये केवल उस एक प्रभु का सुमिरन करें तभी इन्हें सुख प्राप्त हो सकेगा। जब वह प्रभु इनके चित्त में बसेगा और यह प्रभु के नाम में लीन हो जाएँगे तभी इन्हें मुक्ति प्राप्त होगी और ये सम्मान पूर्वक अपने मूल ठिकाने पर अर्थात् प्रभु में स्थित हो जाएंगे।। २३ ।। जब शरीर टूटता है तो इसकी बँधी हुई गठरी खुल जाती है। सारे संसार में घूम फिरकर देख लो तुम्हें सर्वत्र क्षय अर्थात् नाश ही दिखाई देगा। जो दुख और सुख, धूप-छाँव को समान रूप से जानता है वही बन्धनों को काटकर मुक्ति प्राप्त कर लेता है। इस माया की छाया घटिया है और सारा संसार इसी में भटका हुआ है। जीव का भाग्य लेख और संस्कार तो प्रारम्भ से ही लिखा हुआ है। इसका यौवन

सिरि कालु ॥ काइआ छीजै भई सिबालु ॥ २४ ॥ जापै आपि प्रभू तिहु लोइ ॥
जुगि जुगि दाता अवरु न कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखहि राखु ॥ जसु जाचउ
देवै पति साखु ॥ जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥ जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥
जै जै कारु जपउ जगदीस ॥ गुरमति मिलीऐ बीस इकीस ॥ २५ ॥ झखि
बोलणु किआ जग सिउ वादु ॥ झुरि मरै देखै परमादु ॥ जनमि मूए नही
जीवण आसा ॥ आइ चले भए आस निरासा ॥ झुरि झुरि झखि माटी रलि
जाइ ॥ कालु न चापै हरि गुण गाइ ॥ पाई नव निधि हरि कै नाइ ॥ आपे देवै
सहजि सुभाइ ॥ २६ ॥ ञिआनो बोलै आपे बूझै ॥ आपे समझै आपे सूझै ॥
गुर का कहिआ अंकि समावै ॥ निरमल सूचे साचो भावै ॥ गुरु सागरु रतनी
नही तोट ॥ लाल पदारथ साचु अखोट ॥ गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥
गुर की करणी काहे धावहु ॥ नानक गुरमति साचि समावहु ॥ २७ ॥ टूटै
नेहु कि बोलहि सही ॥ टूटै बाह दुहू दिस गही ॥ टूटि परीति गई बुर
बोलि ॥ दुरमति परहरि छाडी ढोलि ॥ टूटै गंठि पड़ै वीचारि ॥ गुर सबदी
घरि कारजु सारि ॥ लाहा साचु न आवै तोटा ॥ त्रिभवण ठाकुरु प्रीतमु
मोटा ॥ २८ ॥ ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ ठहकि मुई अवगुणि पछुताइ ॥ ठाकुरु
एकु सबाई नारि ॥ बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥ पर घरि जाती ठाकि रहाई ॥
महलि बुलाई ठाक न पाई ॥ सबदि सवारी साचि पिआरी ॥ साई सोहागणि
ठाकुरि धारी ॥ २९ ॥ डोलत डोलत हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ डाहपणि तनि
सुखु नही बिनु डर बिणठी डार ॥ डरपि मुई घरि आपणै डीठी कंति सुजाणि ॥
डरु राखिआ गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ डूगरि वासु तिखा घणी जब
देखा नही दूरि ॥ तिखा निवारी सबदु मंनि अंम्रितु पीआ भरपूरि ॥ देहि देहि
आखै सभु कोई जै भावै तै देइ ॥ गुरू दुआरै देवसी तिखा निवारै सोइ ॥ ३० ॥
ढंढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि पवनि करारि ॥ भारे ढहते ढहि पए हउले
निकसे पारि ॥ अमर अजाची हरि मिले तिन कै हउ बलि जाउ ॥ तिन की धूड़ि
अधुलीऐ संगति मेलि मिलाउ ॥ मनु दीआ गुरि आपणै पाइआ निरमल नाउ ॥

नष्ट होता रहता है और बुढ़ापा मौत की तरह इसके सिर पर खड़ा रहता है। अब इसकी काया टूट जाती है और पानी पर शैवाल की तरह ढीली पड़ जाती है।। २४ ।। तीनों लोकों में स्वयं वह प्रभु ही अनुभव होता है ; युगों-युगों का दाता उसके बिना अन्य कोई नहीं। उसे जैसे अच्छा लगता है वह उसी प्रकार हमें रखे रहता है। जब मैं उसके गुणानुवाद को माँगता हूँ तो वह मुझे सम्मान और भरोसा प्रदान करता है। जब मैं सावधान बना रहता हूँ तो तभी तुझे अच्छा लगता हूँ और यदि तू मुझे अपने से मिला ले तो तभी मैं तुझमें लीन होता हूँ। उस प्रभु की जय-जयकार करते हुए उसका सुमिरन करते रहना चाहिये और गुरु मति के माध्यम से निश्चित तौर पर उस ईश्वर से मिलाप होता है।। २५ ।। जीव झख मारता रहता है और संसार से वाद-विवाद बनाये रहता है परन्तु जब अपने पागलपन को देखता है तो पछताता हुआ मरता रहता है। जन्मता है, मरता है परन्तु वास्तविक जीवन की आशा नहीं बनाए रखता। वह आता है और आशाएं पूरी ना होने पर निराश होकर यहाँ से चला जाता है। झख मारता हुआ तथा पछताता हुआ वह मिट्टी में मिल जाता है परन्तु यदि वही प्रभु के गुणों का गायन करे तो काल उसे चबा नहीं सकता। प्रभु के नाम के माध्यम से ही नवनिधियाँ प्राप्त की जानी हैं और वह प्रभु स्वयं ही सहज स्वभाव रूप में हमें प्रदान करता है।।२६।। ज्ञानवान होकर बोलने से जीव स्वयं ही अपने आप को बूझ लेता है। वह जब अपने आपको समझ लेता है तो उसे स्वयं ही सब कुछ सुझाई पड़ने लग जाता है। गुरु के उपदेश को यदि वह अपनी झोली में लेकर स्वीकार कर लेता है तो वह निर्मल और पवित्र हो जाता है तथा उस सच्चे प्रभु को भा जाता है। गुरु ऐसा सागर है जिसमें रत्नों की कोई कमी नहीं। उसमे हीरे, लाल और शुद्ध सत्य स्वरूप पदार्थ स्थित बने रहते हैं। गुरु जो कहता है वैसा आचरण करो और गुरु जो करता है तुम वैसा करने से लिये क्यों दौड़ते हो अर्थात् उसका किया हुआ तो उसकी मौज का कोई अलौकिक रंग हो सकता है। हे नानक, इस प्रकार गुरमति के माध्यम से उस सत्य में लीन हो जाओ।।२७।। जब सही बात को सामने बोल दिया जाता है तो दूसरे व्यक्ति का स्नेह उसी क्षण टूट जाता है। बाँह को दोनों ओर से खीचने पर वह निश्चित रूप से टूट जाती है। बुरा बोलने के कारण भी प्रीति टूट जाती है और दुर्मति वाली स्त्री को उसका पति छोड़ ही देता है। यदि अपने किये हुए को विचार लिया जाए तो टूटा हुआ सम्बन्ध फिर जुड़ जाता है और उसमें गाँठ लग जाती है । शब्द-गुरु के माध्यम से अपने हृदय में ही सभी कार्य कर लिये जाते हैं। ऐसा करने से सत्य रूपी लाभ होगा और फिर कोई भी कमी नहीं रहेगी। अब वह सूक्ष्म और तीनों लोकों में व्याप्त प्रभु स्थूल रूप से प्रत्यक्ष दिखने लगेगा।।२८।। अपने मन को रोककर सही ठिकाने पर बनाए रखो क्योंकि दुनिया तो आपस में ही टकरा-टकरा कर मर गई है और अवगुणों में पड़ी हुई पछताती रहती है। वह मालिक पति तो एक प्रभु ही है और अन्य सभी जीव तो उसकी स्त्रियाँ ही हैं परन्तु ये झूठी जीव स्त्रियाँ अनेकों प्रकार के पाखण्ड उसको रिझाने के लिये करती रहती हैं। पराए घर में इसे जाती हुई को रोका जाता है परन्तु जब वह प्रभु के स्थान पर बुलाई जाती है तो इसे कोई भी रुकावट नही पड़ती। सत्य को प्यार करने वाली शब्द के माध्यम से अपने को सँवारे बनाए रखती है और उसी सुहागिन को प्रभु ने आसरा प्रदान किया है।।२६।। इधर-उधर भटकते हुए हे सखी, मेरे सारे शृंगार और वस्त्र फट गए हैं । ईर्ष्या और द्वेष में तन को सुख नहीं मिलता तथा प्रभु के भय के बिना सभी नष्ट होते जाते हैं। जीव स्त्री अपने घर में ही दुनिया के डर से मरी बैठी है और इसे उस सुजान प्रियतम ने अपनी करुणा की दृष्टि से देखा है। अपने गुरु ने इसके डर को प्रभु का निर्भय नाम बखान करके दूर कर दिया है। जब अहंकार रूपी पर्वत पर बस रही थी तो तृष्णा बहुत अधिक थी परन्तु जब ध्यान से देखा तो वह पास ही में अर्थात् हृदय में ही था। शब्द को जब मान लिया गया तो तृष्णा बुझ गई और भरपूर रूप से मैंने अमृतपान कर लिया है। सब कोई दे-दे की पुकार लगाए रहते हैं परन्तु उसे जो भाता है वह उसी को देता है गुरु के द्वार पर आने से ही वह देता है और वह ही प्यास को दूर करता है।। ३० ।। खोजती-खोजती मैं भटक रही हूँ क्योंकि यह संसार एक ऐसी नदी है जिसमें जीव आम तौर पर उसके किनारे पर ही गिर पड़ते हैं। जो पापों से भरे हुए भारी होते हैं वे तो गिर ही जाते हैं परन्तु जिन पर पापों का बोझ नहीं रहता और हल्के होते हैं वे इससे पार उतर जाते हैं। वह अमर प्रभु बिना माँगे ही जिन्हें मिल जाता है मैं उन पर बलिहारी जाती हूँ। उनकी चरणधूलि से ही छुटकारा मिलता है और उनकी संगत में ही प्रभु से मेल मिलाप होता है। जब हमने अपना मन गुरु को दे दिया तो हमें निर्मल प्रभु का नाम प्राप्त हो गया है।

जिनि नामु दीआ तिसु सेवसा तिसु बलिहारै जाउ ॥ जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुर परसादी तिसु संम्हला ता तनि दूखु न होइ ॥ ३१ ॥ णा को मेरा किसु गही णा को होआ न होगु ॥ आवणि जाणि विगुचीऐ दुबिधा विआपै रोगु ॥ णाम विहूणे आदमी कलर कंध गिरंति ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ जाइ रसातलि अंति ॥ गणत गणावै अखरी अगणतु साचा सोइ ॥ अगिआनी मतिहीणु है गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ तूटी तंतु रबाब की वाजै नही विजोगि ॥ विछुड़िआ मेलै प्रभू नानक करि संजोग ॥ ३२ ॥ तरवरु काइआ पंखि मनु तरवरि पंखी पंच ॥ ततु चुगहि मिलि एकसे तिन कउ फास न रंच ॥ उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥ पंख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़ बणी ॥ बिनु साचे किउ छूटीऐ हरि गुण करमि मणी ॥ आपि छडाए छूटीऐ वडा आपि धणी ॥ गुर परसादी छूटीऐ किरपा आपि करेइ ॥ अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ ३३ ॥ थर थर कंपै जीअड़ा थान विहूणा होइ ॥ थानि मानि सचु एकु है काजु न फीटै कोइ ॥ थिरु नाराइणु थिरु गुरू थिरु साचा बीचारु ॥ सुरि नर नाथह नाथु तू निधारा आधारु ॥ सरबे थान थनंतरी तू दाता दातारु ॥ जह देखा तह एकु तू अंतु न पारावारु ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ गुर सबदी वीचारि ॥ अणमंगिआ दानु देवसी वडा अगम अपारु ॥ ३४ ॥ दइआ दानु दइआलु तू करि करि देखणहारु ॥ दइआ करहि प्रभ मेलि लैहि खिन महि ढाहि उसारि ॥ दाना तू बीना तुही दाना कै सिरि दानु ॥ दालद भंजन दुख दलण गुरमुखि गिआनु धिआनु ॥ ३५ ॥ धनि गइऐ बहि झूरीऐ धन महि चीतु गवार ॥ धनु विरली सचु संचिआ निरमलु नामु पिआरि ॥ धनु गइआ ता जाण देहि जे राचहि रंगि एक ॥ मनु दीजै सिरु सउपीऐ भी करते की टेक ॥ धंधा धावत रहि गए मन महि सबदु अनंदु ॥ दुरजन ते साजन भए भेटे गुर गोविंद ॥ बनु बनु फिरती ढूढती बसतु रही घरि बारि ॥ सतिगुरि मेली मिलि रही जनम मरण दुखु निवारि ॥ ३६ ॥ नाना करत न छूटीऐ विणु गुण जम पुरि जाहि ॥ ना तिसु एहु

जिसने प्रभु नाम दिया है मैं उसी की सेवा करूंगी और उसी पर बलिहारी जाऊँगी। जिसने बनाया है वही गिराएगा भी और उसके बिना अन्य कोई नहीं है। गुरु की कृपा से मैं उस प्रभु को याद रखूं तो मेरे तन में कभी भी दुख नहीं लगेगा।। ३१ ।। इस संसार में ना तो कोई मेरा है इसलिये मैं किसको पकडूं ; यहाँ कोई ना किसी का हुआ है ना होगा। आवागमन में ही यहाँ व्यक्ति भटकता रहता है और उसे द्वैतभाव का रोग प्रभावित करता रहता है। प्रभु-नाम से विहीन व्यक्ति यहां रेत की दीवार की तरह गिरते रहते हैं। प्रभु नाम के बिना वे भला कैसे छूटेंगे और अन्ततः उन्हें रसातल में ही जाना होता है। ऐसा व्यक्ति उस अगणित सच्चे प्रभु को गिनतियों के माध्यम से गिनने की कोशिश करता है। ऐसा व्यक्ति अज्ञानी और गतिहीन होता है और गुरु बिना इसे ज्ञान नहीं हो सकता। प्रभु से बिछुड़े जीव रबाब वाद्य की टूटी तार की तरह हैं जिनमें अब टूट जाने के कारण स्वर नहीं निकलता। हे नानक, प्रभु ही अवसर बनाकर बिछुड़े हुओं को अपने से मिला लेता है।। ३२ ।। यह शरीर वृक्ष है, मन पक्षी है और पाँचों ज्ञान-इन्द्रियाँ इस पर अन्य पक्षी हैं। ये पाँचों जब तक एक प्रभु में लीन होकर तत्व ज्ञान का दाना चुगते रहते हैं तो उन्हें जाल जरा भी नहीं छू पाता परन्तु अधिक दानों को देखकर जल्दी-जल्दी जब ये उड़ पड़ते हैं तब वे फन्दे में पड़ जाते हैं; उनके पंख टूट जाते हैं और लालच के अवगुण के कारण उन पर मुसीबत आ पड़ती है। बिना सत्य भाव अपनाए कैसे छूटा जा सकता है और प्रभु की नाम रूपी मणि तो उस प्रभु की कृपा से ही प्राप्त होती है। वह जब स्वयं मुक्त करता है तभी छुटकारा मिलता है और वह मालिक आप ही सबसे बड़ा है। जब वह स्वयं कृपा करता है तो गुरु की कृपा से व्यक्ति मुक्त हो जाता है। उस प्रभु के अपने हाथ में सभी प्रकार का बड़प्पन है और वह जिसे चाहता है उसे ही प्रदान करता है।। ३३ ।। जब व्यक्ति स्थान से च्युत हो जाता है तो वह थर-थर काँपने लगता है। स्थान वाला और सम्मान वाला एक सच्चा प्रभु ही है। उस प्रभु के साथ बने रहने से कभी भी काम नहीं बिगड़ता। वह प्रभु स्थिर है, गुरु स्थिर है और सच्चा विचार स्थिर है। हे प्रभु, तू देवताओं का, मनुष्यों का, नाथों का भी नाथ है और तू ही बेआसरा लोगों का आसरा है। तू ही सभी स्थानों में बना रहने वाला है और तू ही दाता दान देने वाला है। मैं जिधर देखता हूँ एक तू ही दिखाई देता है और तेरे ओर-छोर के रहस्य को नहीं जा सकता है। शब्द-गुरु के चिंतन के फलस्वरूप वह सभी स्थानों में रमण करता हुआ प्रतीत होता है ; वही महान, अगम्य और अपार है जो बिना माँगे ही दान देता चला जाता है।। ३४ ।। हे दया करने वाले दयालु प्रभु, तू ही सब कुछ करके उसकी देखभाल भी करने वाला है। तू दया करता है तो हे प्रभु, तू मिला लेता है और तू ही क्षण भर में गिराता और मिलाता रहता है। तू ही सब कुछ जानने वाला और देखने वाला है और तू ही सभी दाताओं का दाता है। तू ही दरिद्रता का नाश करने वाला, दुखों को नष्ट करने वाला, तू ही गुरमुख का ज्ञान और ध्यान है।। ३५ ।। धन के चले जाने से बहुत दुख होता है क्योंकि गँवार व्यक्ति का चित्त तो सदैव धन में ही लगा रहता है। बिरले लोगों ने ही प्रेम के माध्यम से पवित्र नाम रूपी सच्चा धन इकट्ठा किया है। यदि एक प्रभु के रंग में जीव रंगा रहता है तो वह चले गये धन को चला ही जाने देता है अर्थात् उसे कोई दुख नहीं होता। मन को अर्पण करके सिर को सौंप कर उस प्रभु का ही आसरा बनाए रखना चाहिए। जब मन में शब्द का आनन्द आ बसा तो अनेकों धन्धे करते रहने से मन रुक गया। दुर्जन व्यक्ति भी अब सज्जन बन गए हैं क्योंकि अब प्रभु गुरु से मिलाप हो गया है। जिस दुर्लभ वस्तु को मैं वनों में ढूँढती फिरती थी वह वस्तु घर में ही पड़ी हुई मिल गयी। सच्चे गुरु के मिलाने से मैं अब उस प्रियतम प्रभु से मिल गई हूँ और मेरे जन्म-मरण का दुख समाप्त हो गया है।। ३६ ।। कई प्रकार के कर्मकाण्ड करते रहने से नहीं प्राप्त होती और गुणों से विहीन बने रहने पर यमपुरी में जाना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति का न

न ओहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ विणु नावै निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥ थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ ना साजन से रंगुले किसु पहि करी पुकार ॥ नानक प्रिउ प्रिउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ जिनि विछोड़ी सो मेलसी गुर कै हेति अपारि ॥ ३७ ॥ पापु बुरा पापी कउ पिआरा ॥ पापि लदे पापे पासारा ॥ परहरि पापु पछाणै आपु ॥ ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ नरकि पड़ंतउ किउ रहै किउ बंचै जमकालु ॥ किउ आवण जाणा वीसरै झूठु बुरा खै कालु ॥ मनु जंजाली वेड़िआ भी जंजाला माहि ॥ विणु नावै किउ छूटीऐ पापे पचहि पचाहि ॥ ३८ ॥ फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ फाथा चोग चुगै नही बूझै ॥ सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥ फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ इक रंगि रचै रहै लिव लाइ ॥ इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥ ३९ ॥ बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ ॥ बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ बाबुल कै घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ बिरलो गिआनी बूझणउ सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥ ४० ॥ भनि भनि घड़ीऐ घड़ि घड़ि भजै ढाहि उसारै उसरे ढाहै ॥ सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ [illegible] रहै ॥ भरमि भुलाने भए दिवाने विणु भागा किआ पाईऐ ॥
गुरम[illegible] प्रभि पकड़ी जिन खिंचै तिन जाईऐ ॥ हरि गुण गाइ
न पछोताईऐ ॥ भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता
भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस निरासा तरीऐ ॥
जीवतिआ इव मरीऐ ॥ ४१ ॥ माइआ माइआ
[illegible] थे ॥ हंसु चलै उठि डुमणो माइआ भूली आथि ॥
[illegible] चलहि नालि ॥ मन महि मनु उलटो मरै

और ना ही परलोक सँवरता है और अवगुणों में भटकता वह पछताता रहता है। उस व्यक्ति के पास ना तो ज्ञान ध्यान होता है और ना ही उसे धर्म का पता होता है। बिना प्रभु के नाम के व्यक्ति निर्भय कैसे हो सकता है और अभिमान के दुख को मैं भला क्या समझ सकती हूँ। मैं कैसे उस तक पहुँच सकती हूँ क्योंकि ना तो मेरा हाथ वहाँ तक पहुँच सकता और ना ही मैं पार हो सकती हूँ। ना ही मुझे प्यार करने वाले मेरे साजन हैं तो मैं भला किसके सामने पुकार लगाऊँ। हे नानक, यदि मैं प्रिय को पुकार लगाती रहूँ तो वह मिलाने वाला प्रभु मुझे मिला लेगा। जिसने वियोग पैदा किया है वही गुरु के अपार प्रेम के माध्यम से मुझे मिला देगा।। ३७ ।। पाप बुरा होता है परन्तु पापी को बहुत प्यारा होता है। पापी व्यक्ति पाप का बोझ ही लादे रहता है और पाप के माध्यम से ही व्यवहार का आडम्बर बनाए रहता है। जब वह पाप को त्यागकर अपने आप को पहचान लेता है तब उसे कोई भी शोक वियोग और संताप नहीं सताता। जीव नरक में पड़ने से कैसे दूर रहे और कैसे यमकाल से बचा रह सकता है; इसका आना जाना कैसे समाप्त हो सकता है क्योंकि झूठ इसके लिये अत्यन्त बुरा है और यही इसे मार डालने वाला काल है। मन जंजालों में घिरा हुआ स्वयं भी जंजालों में पड़ा रहता है। प्रभु नाम के बिना कैसे छुटकारा होगा और जीव पापों में पड़े हुए मरते खपते रहते हैं।। ३८ ।। कौए की चित्त वृत्ति वाला जीव बार-बार फन्दे में फँसला रहता है और फिर पछताता रहता है कि अब यह क्या हो गया। दाना चुगने के लोभ में वह फँस गया है इस तथ्य को वह नही बूझता परन्तु यदि उसे सच्चा गुरु मिल जाए तो उसे अपनी आँखों से सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लग जाता है। जिस प्रकार मछली मौत के जाल में फँस जाती है उसी प्रकार फँसा हुआ जीव दाता गुरु के बिना मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। यह बार-बार आता और जाता रहता है परन्तु जो उस प्रभु में लौ लगाते है वे उसके एक ही रंग में लीन बने रहते हैं। इस प्रकार वे मुक्त बने रहते हैं और फिर उन्हें फन्दे में नहीं पड़ना पड़ता।। ३६ ।। शरीर से बिछुड़ी हुई रूह को यह शरीर भाई-भाई करके आवाजें देता है पर वह रूह अब इसे पहचानती भी नहीं। वह भाई रूपी आत्मा तो अपने घर की तरफ चल देती है और यह देही रूपी बहन उसके दुख में जल मरती है। पिता के घर में जीव रूपी लड़की विवाह के योग्य है। वह जीव रूपी लड़की प्रभु रूपी लड़के के प्यार में लीन बनी हुई है परन्तु उसे प्राप्त नहीं कर पाती। हे सुन्दर कामिनी, यदि तू वास्तव में अपने उस वर को प्राप्त करना चाहती है तो सच्चे गुरु का सुमिरन करती रह। कोई बिरला ज्ञानी ही इस बात को बूझ पाता है कि सच्चा गुरु ही उस सच्चे प्रभु से मिलाता है। सभी बड़प्पन प्रभु के हाथ में हैं, वह जिन्हें चाहता है उन्हें ही देता है। यदि कोई गुरमुख बन जाए तो ऐसा ही कोई बिरला गुरमुख गुरु की वाणी का चिंतन करता है। यह वाणी उस महान सर्वव्यापक प्रभु की है जो अपने वास्तविक घर में निवास प्रदान करती है।। ४० ।। वह तोड़ता है बनाता है, बनाता है फिर तोड़ता है। वह गिराता है फिर निर्माण करता है और रचना करता है तथा फिर नष्ट कर देता है। संसार सागर को भरकर यह उसे सुखा भी देता है और फिर भरकर अर्थात् जीवों को पैदा करके वह समर्थ बेपरवाह प्रभु उनका पालन-पोषण भी करता है। भ्रमों में भूले जीव यहाँ पागल बने हैं ; बिना भाग्य के भला क्या प्राप्त किया जा सकता है। गुरमुख बनकर जब प्रभु के ज्ञान की डोरी को पकड़ लिया तो वह जिधर खींचता है उसी तरफ जाना होता है। जो प्रभु के गुण गाते हुए सदा उसके रंग में रंगे रहते है उन्हें फिर पछताना नहीं पड़ता। भ-जीव उसको खोजते हैं और जब गुरमुख बनकर उसको बूझ लेते हैं तो अपने वास्तविक ठिकाने पर निवास पा जाते हैं। यह भवजल का मार्ग बहुत विषम है और आशाओं में निराश बने रहकर इससे पार जाया जाता है। गुरु की कृपा से जब व्यक्ति स्वयं को पहचान जाता है तब यह जीवित रहते हुए ही अधिकारों के संदर्भ में मर जाता है।। ४१ ।। माया-माया की चीख पुकार लगाते हुए लोग मर जाते हैं परन्तु यह माया किसी के साथ नहीं जाती। जीव रूपी हंस उदास होकर चल पड़ता है और माया यहीं पर रहकर उसे भुला देती है। झूठे मन को यम ने दुखी किया है और मन के अवगुण मन के साथ ही चलते रहते हैं। इस मन के साथ यदि गुण हों तो यह संसार की

जे गुण होवहि नालि ॥ मेरी मेरी करि मुए विणु नावै दुखु भालि ॥ गड़ मंदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु ॥ नानक सचे नाम विणु झूठा आवण जाणु ॥ आपे चतुरु सरूपु है आपे जाणु सुजाणु ॥ ४२ ॥ जो आवहि से जाहि फुनि आइ गए पछुताहि ॥ लख चउरासीह मेदनी घटै न वधै उताहि ॥ से जन उबरे जिन हरि भाइआ ॥ धंधा मुआ विगूती माइआ ॥ जो दीसै सो चालसी किस कउ मीतु करेउ ॥ जीउ समपउ आपणा तनु मनु आगै देउ ॥ असथिरु करता तू धणी तिस ही की मै ओट ॥ गुण की मारी हउ मुई सबदि रती मनि चोट ॥ ४३ ॥ राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फकीरु ॥ वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर ॥ राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ॥ मै तनि अवगण झुरि मुई विणु गुण किउ घरि जाह ॥ गुणीआ गुण ले प्रभ मिले किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ तिन ही जैसी थी रहां जपि जपि रिदै मुरारि ॥ अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥ विणु सतगुर गुण न जापनी जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ ४४ ॥ लसकरीआ घर संमले आए वजहु लिखाइ ॥ कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइ ॥ लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥ गड़ि दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥ चाकरु कहीऐ खसम का सउहे उतर देइ ॥ वजहु गवाए आपणा तखति न बैसहि सेइ ॥ प्रीतम हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ आपि करे किसु आखीऐ अवरु न कोइ करेइ ॥ ४५ ॥ बीजउ सूझै को नही बहै दुलीचा पाइ ॥ नरक निवारणु नरह नरु साचउ साचै नाइ ॥ वणु त्रिणु ढूढत फिरि रही मन महि करउ बीचारु ॥ लाल रतन बहु माणकी सतिगुर हाथि भंडारु ॥ ऊतमु होवा प्रभु मिलै इक मनि एकै भाइ ॥ नानक प्रीतम रसि मिले लाहा लै परथाइ ॥ रचना राचि जिनि रची जिनि सिरिआ आकारु ॥ गुरमुखि बेअंतु धिआईऐ अंतु न पारावारु ॥ ४६ ॥ ड़ाड़ै रूड़ा हरि जीउ सोई ॥ तिसु बिनु राजा अवरु न कोई ॥ ड़ाड़ै गारुड़ु तुम सुणहु हरि वसै मन माहि ॥ गुर परसादी हरि पाईऐ मतु को भरमि भुलाहि ॥ सो साहु साचा जिसु हरि धनु रासि ॥ गुरमुखि पूरा तिसु साबासि ॥ रूड़ी बाणी

ओर से उलट कर विषय-विकारों के प्रति मर जाता है। प्रभु नाम के बिना दुखों को ढूँढते हुए मेरी-मेरी करते लोग मर खप जाते हैं। किले, मंदिर, महल, इत्यादि जो एक खेल की तरह नष्ट हो जाने वाले हैं वे भला अब कहाँ हैं। हे नानक, प्रभु के सच्चे नाम के बिना यह आना जाना तो झूठा ही है। वह प्रभु स्वयं ही चतुर, सुन्दर स्वरूप वाला है और वह सयाना सब कुछ स्वयं ही जानने वाला है।। ४२ ।। जो इस संसार में आते हैं उन्हें वापस मुड़कर जाना ही होता है और इस आवागमन में ही वे पछताते रहते हैं। उनके लिए तो ये चौरासी लाख योनियों वाली धरती है जहाँ ना तो उनकी योनियाँ घटती हैं ना बढ़ती हैं अर्थात् उन्हें इन योनियों से पार जाना ही होता है। जिनको प्रभु अच्छा लगा है उन्हीं सेवकों का उद्धार हुआ है और जब माया मोह नष्ट हो जाते हैं तो दुनिया के धन्धे समाप्त हो जाते हैं। यहाँ किसको मित्र बनाया जाए क्योंकि जो भी दिखाई देने वाला है वह चलायमान है। यहाँ तो यही ठीक है कि अपने प्राण उस प्रभु को सौंप दूं और तन मन उसके आगे रख दूं। हे मेरे मालिक कर्ता प्रभु, तू ही यहाँ पर स्थिर है और मुझे तेरा ही आसरा है। प्रभु के गुणों द्वारा मारा हुआ अहंकार मन पर शब्द की चोट लगने से शब्द में ही लीन हो जाता है।। ४३ ।। इस संसार में कोई राजा, राव, कंगाल, अमीर और फकीर बाकी नहीं बचता ; सबको अपनी बारी से जाना होता है और कोई भी यहाँ ठहर नहीं सकता। यहाँ के बाद आगे जाने का मार्ग बहुत भयानक है जिसमें पर्वत और अथाह सागर रास्ते में पड़ते हैं। मेरा तन तो अवगुणों के कारण चिन्ताओं में पड़ा है क्योंकि मैं जानती हूँ कि गुण विहीन होकर मैं भला कैसे अपने मूल घर में पहुँच सकूँगी। गुणवान लोग तो गुणों को अपने साथ लेकर प्रभु से मिलते हैं और मैं कैसे प्रेम धारण करके उस प्रभु को मिलूं। बार-बार हृदय में उस प्रभु का सुमिरन करते हुए मुझे उन गुणवानों जैसा ही बने रहना चाहिये। अवगुणों से तो मैं भरी हुई हूँ परन्तु कुछ गुण भी मेरे साथ ही बसते हैं। सच्चे गुरु के बिना और शब्द का चिंतन किये बिना उन गुणों को नहीं जाना जा सकता।। ४४ ।। इस जीवन का खेल खेलने वाले लोगों ने अपने-अपने पैंतरे सम्भाल लिए हैं और वे जो माथे पर ही देनदारी का लेख लिखाकर आए हैं वे अपने बल से उस प्रभु के कार्य में लीन बने रहते हैं और अंततः उन्हें लाभ प्राप्त होता है। उन्होंने ममता लोभ आदि बुराइयों को मन से भुला दिया है और वे शरीर रूपी किले में उस सच्चे प्रभु को पुकार लगाते हैं तथा कभी भी हारकर वापस नहीं आते। मालिक का नौकर भी कहलाए और मालिक को सामने से जवाब भी देता रहे तो वह अपनी मेहनत की कमाई भी गँवा लेता है और ऊँची पदवी भी प्राप्त नहीं कर पाता। सभी बड़प्पन उस प्रियतम प्रभु के हाथ में हैं ; उसे जो अच्छा लगता है वह उसी को देता है। वह स्वयं सब कुछ करता है अन्य कोई कुछ नहीं कर सकता इसलिए उसके बारे में किसके आगे पुकार लगाई जाए।। ४५ ।। मुझे अन्य कोई ऐसा सुझाई नहीं पड़ता जो प्रभु की तरह आसन बिछा कर यहाँ अटल होकर बैठ सके। जीवों के नरक को नष्ट करने वाला जीवों का मालिक और सदैव बना रहने वाला एक प्रभु ही है जो सच्चे नाम का सुमिरन करने से प्राप्त होता है। उसको मैं जंगलों और वनों में भी ढूँढती हुई थक गई हूँ और मन में सोचती हूँ कि वास्तव में प्रभु नाम रूपी लाल रहने वाले मोतियों का खजाना तो सच्चे गुरु के हाथ में है। यदि मैं एक मन होकर एक ही भाव में लीन होकर शुद्ध आत्मा बन जाऊँ तो मुझे प्रभु मिल जाएगा। हे नानक, जो जीव प्रियतम प्रभु के प्यार में लीन हैं वे उस लोक का लाभ भी कमा लेते हैं। जिस प्रभु ने यह रचना बनाई है और इस संसार के ढाँचे का निर्माण किया है गुरमुख बनकर ही उस अनन्त प्रभु का सुमिरन किया जाता है और उस प्रभु का कोई ओर-छोर नहीं है।। ४६ ।। हे पंडित, वह प्रभु सुन्दर हैं और उसके बिना अन्य कोई भी राजा नहीं। तू मन को वश में करने के लिये शब्द गुरु रूपी मंत्र सुन जिससे प्रभु मन में आ बसेगा। गुरु की कृपा से ही प्रभु प्राप्त होता है और जीव को अन्य भ्रमों में नहीं भटकते रहना चाहिये। वही सच्चा साहूकार है जिसके पास प्रभु नाम की रासपूंजी है। गुरमुख ही पूर्ण पुरुष है और उसी को ही धन्य कहा जाता है। सुन्दर वाणी के माध्यम से

हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु पाइआ नारि ॥ ४७ ॥ सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥ साहु सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ सचिआरी सचु संचिआ साचउ नामु अमोलु ॥ हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ साजनु मीतु सुजाणु तू तू सरवरु तू हंसु ॥ साचउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी तिसु ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु ॥ बिखिआ अंम्रितु एकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥ ४८ ॥ खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥ गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥ खसमु पछाणै आपणा खूलै बंधु न पाइ ॥ सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख भाइ ॥ खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ मनि तनि मुखि जापै सदा गुण अंतरि मनि धीर ॥ हउमै खपै खपाइसी बीजउ वथु विकारु ॥ जंत उपाइ विचि पाइअनु करता अलगु अपारु ॥ ४९ ॥ स्रिसटे भेउ न जाणै कोइ ॥ स्रिसटा करै सु निहचउ होइ ॥ संपै कउ ईसरु धिआईऐ ॥ संपै पुरबि लिखे की पाईऐ ॥ संपै कारणि चाकर चोर ॥ संपै साथि न चालै होर ॥ बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ हरि रसु पीवै छुटै निदानि ॥ ५० ॥ हेरत हेरत हे सखी होइ रही हैरानु ॥ हउ हउ करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ हार डोर कंकन घणे करि थाकी सीगारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि सिउ प्रीति पिआरु ॥ हरि बिनु किनि सुखु पाइआ देखहु मनि बीचारि ॥ हरि पड़णा हरि बुझणा हरि सिउ रखहु पिआरु ॥ हरि जपीऐ हरि धिआईऐ हरि का नामु अधारु ॥ ५१ ॥ लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥ करते हथि वडिआईआ बूझहु गुर बीचारि ॥ लिखिआ फेरि न सकीऐ जिउ भावी तिउ सारि ॥ नदरि तेरी सुखु पाइआ नानक सबदु वीचारि ॥ मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥ जि पुरखु नदरि न आवई तिस का किआ करि कहिआ जाइ ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइ ॥ ५२ ॥ पाधा पड़िआ आखीऐ बिदिआ

और शब्द गुरु के चिंतन के द्वारा ही उस प्रभु को प्राप्त किया जाता है। जब अहंकार भाव चला जाता है तो सभी दुख कट जाते हैं तथा जीव स्त्री प्रभु रूपी वर को प्राप्त कर लेती है।। ४७ ।। सोना चाँदी इकट्ठा किया जाता है परन्तु यह धन-सम्पदा कच्ची और विष की राख के समान है। इस प्रकार के धन को इकट्ठा करके जो साहूकार कहलाता है वह दुविधा में पड़ा भटकता रहता है। सच्चे लोगों ने तो सत्य का संचय किया है और प्रभु का सच्चा नाम ही वास्तव में अमूल्य पदार्थ है। वह प्रभु ही निर्मल और उज्जवल है और उसी का सम्मान और उसी के बोल सच्चे हैं। हे प्रभु, तू ही हमारा सज्जन मित्र और सुजान पुरुष है और तू ही सरोवर है तथा तू ही उसमें तैरने वाला हंस है। जिनके मन में सच्चा प्रियतम बस गया है मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। यह मोहिनी ममता और माया जिसने बनाई है वही इसके बारे में जानता है। जो सुजान पुरुष होते हैं वे ही इस रहस्य को समझते हैं कि विष और अमृत अर्थात् सुख और दुख एक समान ही हैं।। ४८ ।। क्षमा भाव से विहीन बने हुए अभिमानी लाखों करोड़ों की गिनती में इस धरती पर मर-खप गए। उनकी तो गिनती ही नहीं हो सकती इसलिये उन्हें क्या गिना जाए ; अनन्त लोग मर खप गए हैं। जिन्होंने अपने मालिक को पहचान लिया है उनके बन्धन खुल जाते हैं। हे पंडित, शब्द के माध्यम से तू पवित्र और खरा होकर प्रभु के स्थान में प्रवेश पा सकेगा और क्षमा और सत्य का सुख तेरा स्वभाव बन जाएगा। तू ध्यान रूपी सच्चे धन को खर्च; और फिर तू स्वयं ही स्थिर होकर इस शरीर में बसा रहेगा। तेरा मन, तन और मुख सदा प्रभु के गुणों का सुमिरन करते रहेंगे और तेरे मन में सदा धैर्य बना रहेगा। अहंकार में पड़ा जीव संतप्त बना रहता है और विकारों की फसल ही बोता है। प्रभु ने जीवों को उत्पन्न करके स्वयं को उनमें स्थित किया है और वह प्रभु अलिप्त और अपरम्पार है।। ४६ ।। सृष्टि की रचना करने वाले सृष्टा प्रभु का रहस्य कोई नहीं जानता और वह रचनाकार जो कुछ करता है वह निश्चित रूप से होता ही है। सम्पत्ति के लिये उस प्रभु की आराधना की जाती है परन्तु यह सम्पत्ति तो उतनी ही मिलती है जितनी प्रभु ने पहले से ही भाग्य में लिखी होती है। सम्पत्ति के लिये व्यक्ति नौकरी और चोरी करता है परन्तु सम्पत्ति अंत में आगे साथ नहीं चलती। सच्चे हुए बिना प्रभु के दरबार में सम्मान नहीं मिलता और अंत में प्रभु के नाम रस को प्राप्त करके ही जीव मुक्ति प्राप्त करता है।। ५० ।। उसको और उसके ज्ञान को खोजती हुई हे सखी, मैं भटक रही हूँ। अहंकार करती हुई ही मैं मर गई हूँ परन्तु वास्तव में शब्द के माध्यम से सुमिरन करते हुए ही मन में ज्ञान उत्पन्न हुआ है। कई कंगन हार और डोरियाँ आदि का शृंगार करते हुए मैं थक गयी हूँ। अंत में अपने प्रियतम से मिलकर ही मैंने सुख प्राप्त किया है और सभी गुणों को गले में हार की भाँति धारण किया है। हे नानक, गुरमुख बनकर ही प्रभु से प्रीति और प्यार बना रहता है। मन में इस बात को विचार कर देख लो कि प्रभु के बिना भला किसने सुख प्राप्त किया है। प्रभु को पढ़ो, प्रभु को ही समझो और प्रभु से ही प्रेम बनाए रखो। प्रभु का ही सुमिरन करो, प्रभु की ही आराधना करो तथा प्रभु नाम को ही जीवन का आसरा बनाए रखो।। ५१ ।। हे सखी, जो भाग्यलेख कर्ता प्रभु ने लिखा है वह मिट नहीं सकता। उस प्रभु रूपी मूल कारण ने यह सब कुछ बनाया है और वह कृपा करके ही हृदय में अपने पाँव धरता है। गुरु के इस विचार को समझ लो कि उस कर्ता प्रभु के हाथ ही महिमा है। उसका लिखा मिटाया नहीं जा सकता इसलिए हे प्रभु, जैसा तुझे अच्छा लगता है तू वैसे ही जीवों की सम्भाल कर। तेरी कृपा दृष्टि से ही सुख प्राप्त हुआ है और हे नानक, तू शब्द का ही चिंतन करता रह। भूले भटके और मर खप गए मनमुख शब्द गुरु के चिंतन से ही पार उत्तर गये हैं । जो सर्वव्यापक प्रभु नजर नहीं आता उसका क्या कह कर बखान किया जाए। मैं उस सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मुझे हृदय में ही वह प्रभु दिखा दिया है।। ५२ ।। पढ़ा लिखा पंडित उसे कहते हैं तो जो अपने ज्ञान और विद्या में

बिचरै सहजि सुभाइ ॥ बिदिआ सोधै ततु लहै राम नाम लिव लाइ ॥ मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ मूरखु सबदु न चीनई सूझ बूझ नह काइ ॥ ५३ ॥ पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ नामु समालहु नामु संगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम नामु गलि हारु ॥ ५४ ॥ १ ॥

रामकली महला १ सिध गोसटि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥ तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥ मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥ नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥ साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन तुमे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ ॥ साचु कहउ अरदासि हमारी हउ संत जना बलि जाओ ॥ कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो ॥ नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥ २ ॥ घटि घटि बैसि निरंतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाए ॥ सहजे आए हुकमि सिधाए नानक सदा रजाए ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु ऐसी गुरमति पाए ॥ गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥ ३ ॥ दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥ चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥ आपे आखै आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥ साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै ॥ ४ ॥ जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥ सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ रहहि इकांति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो ॥ अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥ ५ ॥ सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारो ॥ रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ॥ इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै नानक नामु अधारो ॥ आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥ ६ ॥ हाटी बाटी रहहि निराले रूखि बिरखि उदिआने ॥ कंद मूलु अहारो

सहज स्वाभाविक रूप से ही शान्तिपूर्वक विचरण करता रहे। अपनी विद्या को सोचता समझता हुआ और उसमें शोधन करता हुआ वास्तविकता को खोजे तथा प्रभु नाम में अपनी लौ लगाए रखे। मनमुख व्यक्ति तो विद्या बेचता है और इस प्रकार विष कमाता है और विष ही खाता रहता है। मूर्ख व्यक्तियों को शब्द की शक्ति की पहचान नहीं होती और उन्हें किसी प्रकार की भी सूझ बूझ नहीं होती।। ५३ ।। उसी पंडित को गुरमुख कहा जाता है जो अपने शिष्यों को सुमति प्रदान करे। वह ही उन्हें बताता है कि संसार में लाभ प्राप्त करने के लिये प्रभु नाम का ही सुमिरन करो और प्रभु नाम रूपी धन ही इकट्ठा करो। मन में सच्चा होना ही वास्तव में लिखने वाली सच्ची पट्टी है। उसी पर शब्द रूपी सार तत्व लिखना चाहिये। हे नानक, वही पढ़ा लिखा पंडित और दूर दृष्टि वाला सयाना व्यक्ति होता है जिसने प्रभु नाम को गले का हार बना लिया है अर्थात् जिसका प्रेम प्रभु में लगा है।। ५४ ।। १ ।।

रामकली महला १ सिध गोसटि (सिद्ध गोष्ठी)* १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

सिद्ध जन आसन लगाकर सभा में बैठे हैं और इस सभा में प्रभु की जय-जयकार चल रही है। हमारी तो उस प्रभु के आगे विनती है जो सच्चा एवं अपरम्पार है। मैं तो उस प्रभु के आगे ही अपना मस्तक काटकर अर्पण कर दूं और उसे ही तन मन भेंट कर दूं। हे नानक, प्रभु रूपी सन्त के मिलने से ही सत्य प्राप्त होता है और सहज भाव से ही यश मिल जाता है।। १ ।। (हे सिद्ध पुरुषो) क्या इधर-उधर भ्रमण करते रहने से सच्चे और पवित्र हुआ जा सकता है। वास्तव में सच्चे शब्द को अंगीकार किये बिना किसी प्रकार की भी मुक्ति नहीं मिलती।। १ ।। रहाउ ।। सिद्ध पूछते हैं कि तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है ; तुम्हारा जीवन मार्ग क्या है और आपका यहाँ आने का प्रयोजन क्या है। मैं सच्च कहता हूँ और मेरी आप लोगों के सामने वितनी है कि मैं तो शान्त पुरुषों पर ही बलिहारी जाता हूँ। योगी पूछते हैं कि हे बालक, तू कहाँ रहता हैं, कहाँ से आया है और कहाँ जा रहा है। नानक का कथन है कि योगी पूछता है, हे वैराग्यवान, तुम्हारा मत क्या है।। २ ।। सच्चे गुरु की आज्ञा में चलते हुए हम घट-घट में विराजमान प्रभु की याद में लीन होकर निरन्तर शान्त बने रहते हैं। सहज स्वभाविक रूप से ही इधर आ गये हैं और प्रभु के हुकुम के अर्न्तगत ही यहाँ से चले जाएंगे ; हे नानक, हम तो सदा ही उस प्रभु की रज़ा में रहते हैं। हमने तो ऐसी गुरु मति पायी है कि आसन पर बैठा रहने वाला वह प्रभु ही स्थिर है। गुरमुख बना व्यक्ति इस रहस्य को बूझता है अपने आपको पहचानता हैं और सत्य में लीन बना रहता है।। ३ ।। (सिद्ध प्रश्न करते हैं) इस संसार को बहुत भयानक और ना तैरा जा सकने वाला सागर कहा गया हैं ; इसे कैसे पार किया जा सकता है। सिद्ध चरपट कहता है कि हे अवधूत नानक, तुम हमें इस विषय पर अपना विचार बताओ। गुरु नानक उत्तर देते हैं जो तू कह रहा है मुझे पता है कि तू स्वयं उसे समझ भी रहा है ; ऐसे प्रश्नकर्त्ता को भला क्या उत्तर दिया जाए। मैं सच कहता हूँ कि तुम भी अपने ढंग से इसको पार कर चुके हो ; तेरे मार्ग में भला मैं दोष क्यों निकालूं।। ४ ।। (परन्तु मेरा जीवन मार्ग यह है कि) जिस प्रकार कमल जल में बना रहकर उससे अलिप्त बना रहता है और मुर्गाबी जल में रहती हुई अपने आपको भीगने नहीं देती उसी प्रकार सुरति को शब्द में लीन करके, प्रभु नाम का बखान करते हुए अर्थात संसार में रहते हुए परन्तु संसारी ना बनकर संसार सागर को पार किया जाता है। जो व्यक्ति एकाग्र बना रहता है, जिसके मन में एक प्रभु ही बसा रहता है तथा जो आशाओं के बीच तटस्थ बना रहता है तथा जो उस अगम्य अगोचर प्रभु को स्वयं भी देखता है और दूसरों को भी अनुभव करवा देता है नानक तो उसी का दास है।। ५ ।। (सिद्धों का प्रश्न) हे स्वामी नानक, हमारी विनती सुनो क्योंकि हम तुमसे सत्य विचार और जानना चाहते हैं। आप बुरा ना मनाएं और धैर्यपूर्वक हमें उत्तर दें कि गुरु का अर्थात् प्रभु का द्वार कैसे प्राप्त किया जाता है। नानक का उत्तर है - यह चंचल मन सत्य के घर में स्थिर हो जाता है यदि हे नानक, यह प्रभु नाम का ही आसरा ले ले। यह कर्ता प्रभु स्वयं ही मेल करवा देता है और सत्य से प्रेम बन जाता है।। ६ ।। हम तो शहर बाजार के रास्तों से दूर ही निराले रूप में वृक्षों और जंगलों में बसते हैं। कन्द मूल का

* विस्तार के लिए परिशिष्ट 5 देखें

खाईऐ अउधू बोलै गिआने ॥ तीरथि नाईऐ सुखु फलु पाईऐ मैलु न लागै काई ॥ गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साई ॥ ७ ॥ हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डुोलाई ॥ बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न जाई ॥ हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥ खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥ ८ ॥ दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥ बारह अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पंथा ॥ इन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ ॥ नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ ॥ ९ ॥ अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥ कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ खिंथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै एकु हरी ॥ साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥ १० ॥ ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥ कांइआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥ सतु संतोखु संजमु है नालि ॥ नानक गुरमुखि नामु समालि ॥ ११ ॥ कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥ कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥ कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥ कवनु सु त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥ १२ ॥ घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥ अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥ मनमुखि बिनसै आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥ १३ ॥ किउ करि बाधा सरपनि खाधा ॥ किउ करि खोइआ किउ करि लाधा ॥ किउ करि निरमलु किउ करि अंधिआरा ॥ इहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥ १४ ॥ दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥ मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥ सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ नानक हउमै मेटि समाइ ॥ १५ ॥ सुंन निरंतरि दीजै बंधु ॥ उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥ सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥ नानक साचे भावै साचा ॥ १६ ॥ किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी ॥ किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥ किसु वखर के तुम वणजारे ॥ किउ करि साथु लंघावहु पारे ॥ १७ ॥ गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥ दरसन कै ताई भेख निवासी ॥ साच वखर के हम वणजारे ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥ १८ ॥ कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ ॥ काहे कउ तुझु

आहार खाते हैं और पहुँचे हुए अवधूत योगी हमें ज्ञान प्रदान करते हैं। हम लोग तीर्थों पर स्नान करते हैं ; सुख रूपी फल प्राप्त करते हैं तथा हमें विषय विकारों की मैल तनिक भी नहीं छू पाती। धरती को धारण करने वाले प्रभु का पुत्र लोहारीपा (लुईपाद, लुईपा और मत्स्येन्द्र नाथ आदि इसी के नाम हैं) कहता है कि यही हमारे योग की युक्ति और जीवन का ढंग है।। ७ ।। हे योगी, हाट बाजार में रहते हुए भी अविद्या की नींद नहीं आनी चाहिये और पराये घरों पर अपने चित्त को नहीं ललचाना चाहिये। प्रभु-नाम के बिना मन को स्थिरता नहीं मिलेगी और हे नानक, भूख नहीं जा सकेगी। हे योगियो मुझे तो गुरु ने मेरे हृदय में ही ये तीर्थ वाले सभी नगर दिखा दिये हैं और सहज भाव में ही बने रहकर मुझे सत्य का व्यापार सिखा दिया है। अब मैं खण्डित निद्रा और थोड़े से आहार का सेवन करता हूँ तथा हे नानक, यही मेरा तत्व चिंतन है।। ८ ।। योगियों का सुझाव - हे योगी, तुम हमारे दर्शन का वेश अर्थात् मुद्रा झोली और गुदड़ी को धारण कर लो। हमारे बारह सम्प्रदायों में से और षटदर्शनों में एक योग दर्शन को तुम अंगीकार कर लो। हे भले पुरुष, इस विधि से ही मन को समझाया जाता है और फिर जन्म मरण की चोटें नहीं खानी पड़ती । (परन्तु नानक का कथन है कि) हे योगी पुरुषो-योग की वास्तविक युक्ति तो कोई गुरमुख बनकर ही बूझ सकता है।। ९ ।। मेरे अन्तर्मन में निरन्तर बसने वाला शब्द मेरी मुद्रा है जो मेरे अहंकार और ममता को दूर कर देने वाला है। यही मेरे काम, क्रोध और अहंकार का निवारक है तथा शब्द गुरु के माध्यम से ही इसकी समझ पड़ती है। प्रभु को सर्वत्र व्याप्त देखना ही मेरी गुदड़ी और झोली है और हे नानक, वह एक प्रभु ही मुझे पार उतारने वाला है। अपने सच्चे नाम तथा न्याय के कारण वह प्रभु सच्चा है और परख कर कही हुई उस परम गुरु की बात खरी ही निकलती है।। १० ।। सांसारिक विषय विकारों की तरफ से उल्टा मेरा मन मेरा खप्पर है और पाँचों तत्वों के दैवी गुण ग्रहण करना मेरी टोपी है। शरीर का जागरूक बने रहना ही मेरी कुशा का आसन है और यम को वश में रखना मेरी लंगोटी है। इनके अतिरिक्त सत्य - सन्तोष और संयम मेरे साथी हैं और हे नानक, गुरमुख बनकर मैं प्रभु नाम को मन में सम्भाले रहता हूँ।। ११ ।। (प्रश्न) गुप्त कौन है और मुक्त कौन बना है तथा ऐसा कौन है जो अन्दर बाहर से सदैव उस प्रभु से जुड़ा रहता है। कौन यहाँ आता है और यहाँ से जाता है तथा कौन है जो तीनों लोकों में समाया रहता है।। १२ ।। जो घट-घट में है वही प्रभु गुप्त है और गुरमुख व्यक्ति ही मुक्त व्यक्ति है जो अन्दर बाहर से शब्द के माध्यम से उस प्रभु से जुड़ा हुआ है। मनमुख तो आता जाता और विनष्ट होता रहता है परन्तु हे नानक, गुरमुख बना व्यक्ति ही सत्य में समाया रहता है।। १३ ।। यह जीव क्यों कर बन्धनों में है और कैसे इसे माया रूपी सर्पिणी ने खा रखा है। इसने अपने आप को क्यों गँवा रखा है और इसने कैसे उस प्रभु को खोजा है। यह जीव कैसे निर्मल होता है और कैसे अंधकार का रूप बन जाता है। इस तत्व का जो चिंतन कर सके वही हमारा गुरु है।। २४ ।। (उत्तर) दुर्मति ने ही इसे बाँध रखा है और माया के झमेलों ने इसे खा डाला है। मनमुख व्यक्ति सदैव प्रभु को गँवाता ही रहता है और गुरमुख व्यक्ति उसे पा लेता है। जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो अंधकार समाप्त हो जाता है और हे नानक, अहंकार मिटाकर यह जीव उस प्रभु में लीन हो जाता है।। १५ ।। स्थिरता की अवस्था का यदि निरंतर बंध लगाया जाए तो ना तो यह मन इधर-उधर उड़ता है और ना ही शरीर क्षीण होता है। अपने हृदय की सहज गुफा में ही उस सच्चे प्रभु को जाना जाए और हे नानक, उस सच्चे प्रभु को सत्य ही अच्छा लगता है।। १६ ।। (प्रश्न) तुमने किस कारण घर त्याग दिया है और उदासीन हो गये हो। किस कारण से तुम इस वेश को धारण करने वाले बने हो। तुम किस पदार्थ के व्यापारी हो और अपने साथियों को तुम कैसे पार उतारोगे।। १७।। गुरमुखों को खोजने के लिए ही मैं उदासीन होकर उन्हें खोज रहा हूँ और उनका दर्शन करने के लिये ही मैंने यह वेश धारण किया हैं। हम तो सत्य रूपी पदार्थ के व्यापारी हैं ; और हे नानक, गुरमुख बने व्यक्ति ही अपने आप संसार सागर से पार उतर जाते हैं।। १८ ।। हे नर श्रेष्ठ, तुने किस प्रकार अपने जीवन को इस प्रकार बदल दिया है

इहु मनु लाइआ ॥ कितु बिधि आसा मनसा खाई ॥ कितु बिधि जोति निरंतरि पाई ॥ बिनु दंता किउ खाईऐ सारु ॥ नानक साचा करहु बीचारु ॥ १९ ॥ सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ ॥ अनहति राते इहु मनु लाइआ ॥ मनसा आसा सबदि जलाई ॥ गुरमुखि जोति निरंतरि पाई ॥ त्रै गुण मेटे खाईऐ सारु ॥ नानक तारे तारणहारु ॥ २० ॥ आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुंन कहा घर वासो ॥ गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन निवासो ॥ काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥ सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥ जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥ २१ ॥ कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥ एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाई ॥ किउ ततै अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥ आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई ॥ पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥ २२ ॥ आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुंन निरंतरि वासु लीआ ॥ अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सरब जीआ ॥ गुर बचनी अविगति समाईऐ ततु निरंजनु सहजि लहै ॥ नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥ हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति सचु जाणै सोई ॥ आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥ २३ ॥ अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥ सतिगुर परचै परम पदु पाईऐ साचै सबदि समाइ लीआ ॥ एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि कीआ ॥ सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब दइआ ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ ॥ २४ ॥ साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥ झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥ आवा गउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥ एका

और किस प्रकार तूने किसमें अपने मन के ध्यान को लगा रखा है। किस विधि से तुमने आशाओं और मानसिक तृष्णाओं को खा लिया है और निरन्तर बनी रहने वाली परमात्मा की ज्योति को तुमने किस विधि से प्राप्त कर लिया है दाँतों के बिना लोहे जैसे संसार को खाकर उसका आनन्द कैसे लिया जा सकता है। हे नानक, तुम इस तथ्य पर सच्चा विचार कहो।। १९ ।। सच्चे गुरु के यहाँ जन्म लेने से अर्थात् उसके पास पहुँच जाने से मैंने आवागमन मिटा दिया है और आत्मा के अनहद संगीत में लीन होकर मैंने ये अपना मन उसी ओर लगा दिया है। शब्द के माध्यम से ही मैंने अपनी आशाएँ और तृष्णाएँ जला दी हैं तथा गुरमुख बनकर मैंने उस निरंतर बनी रहने वाली परम जोति को प्राप्त कर लिया। तीनों गुणों को मिटा कर लोहे जैसे संसार को जीतकर खाया जा सकता है और हे नानक, वह पार उतारने वाला प्रभु ही पार उतार देता है।। २० ।। रचना के प्रारम्भ के बारे में विचार कहो और यह बताओ कि शून्य रूप में उस प्रभु का निवास कहाँ था। ज्ञान की कौन सी मुद्रा कही जाती है और घट-घट में किसका निवास बताया जाता है। काल की ठोकर को कैसे नष्ट किया जा सकता है और किस प्रकार निर्भय प्रभु के स्थान पर पहुँचा जा सकता है। सहज और सन्तोष का ठिकाना जानकर भी जीव के अन्य शत्रुओं को कैसे मिटाया जाए। (उत्तर) शब्द-गुरु के माध्यम से अहंकार रूपी विष को मार दिया जाए तो अपने मूल स्वरूप में निवास प्राप्त हो जाता है। जिसने यह रचना रची है उसे जो शब्द के माध्यम से पहचान जाता है नानक तो उसी का दास है।। २१ ।। यह जीव कहाँ से आता है और कहाँ जाता है और आने जाने के दौरान ये कहाँ पर समाया रहता है। इस विचार का जो अर्थ बता दे वही पूर्ण गुरु है और उसे ही तिल मात्र लोभ नहीं है। कैसे उस अव्यक्त प्रभु के तत्व को जाना जा सकता है और कैसे प्यार के माध्यम से गुरमुख बना जाता है। वह प्रभु स्वयं ही सुरति है और स्वयं ही कर्ता प्रभु है। हे नानक, उसके इस रूप का विचार करके बताओ। (उत्तर) जीव प्रभु के हुकुम में ही आता है हुकुम में ही जाता है और हुकुम में ही लीन बना रहता है। पूर्ण गुरु के माध्यम से वह सत्य का आचरण बनाता है और शब्द के माध्यम से ही उस प्रभु की अवस्था और सीमा का अनुमान प्राप्त होता है।। २२ ।। रचना के प्रारम्भ से पहले का विचार तो आश्चर्य ही आश्चर्य कहा जा सकता है जब शून्य स्वरूप अर्थात इच्छा रहित प्रभु ने अपने आप में अपना निवास बनाया हुआ था। उसकी मुद्रा किसी की कल्पना से रहित थी और वह घट-घट में सत्य स्वरूप में बसने वाला प्रभु गुरु रूपी ज्ञान के रूप में जाना जाता था। गुरु के उपदेश से ही उस अव्यक्त प्रभु में लीन हुआ जाता है और वह तत्व निरंजन स्वाभाविक ही प्राप्त होता है। हे नानक, उसे जानने के लिये कोई अन्य कर्मकाण्ड नहीं करना पड़ता और उसका सिक्ख सेवक बनकर जो उसका सुमिरन करता है वही उसे खोज लेता है। वह हुकुम रूप में ही विस्माद अर्थात् आश्चर्य स्वरूप है और जो व्यक्ति हुकुम को पहचान लेता है वह जीवन के ढंग और सत्य को जान जाता है। जो अपने अहं भाव को मिटा कर अलिप्त हो जाता है तथा जिसके हृदय में सत्य होता है उसी को योगी कहा जाता है।। २३ ।। उस अव्यक्त प्रभु से ही निर्मलता उत्पन्न हुई और गुणों से परे रहने वाला वह प्रभु गुणों से युक्त बन गया। सच्चे गुरु से सन्तुष्टि हो जाने के बाद परमपद पाया जाता है और जीव सत्य शब्द में लीन हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने अहंकार और द्वैतभाव को दूर करके केवल उस एक सत्य को ही जानता मानता है। ऐसा योगी शब्द गुरु को पहचान पाता है और उसका हृदय कमल प्रकाशित हो उठता है। जब जीवित बने रहकर ही व्यक्ति विकारों के संदर्भ में मर जाता है तो उसे सब कुछ सुझाई देने लग जाता है तथा उसके हृदय में सभी के लिये दयाभाव जाग जाता है। हे नानक, उसी को ही बड़प्पन प्राप्त होता है जो अपने आप को सभी जीवों के रूप में पहचानता है।। २४ ।। ऐसा गुरमुख व्यक्ति सत्य से ही उत्पन्न होता है सत्य में ही लीन हो जाता है तथा सत्य और पवित्रता का ही रूप हो जाता है ; अन्य झूठे व्यक्ति तो इस संसार में आते हैं परन्तु उन्हें कोई ठिकाना नहीं मिलता और द्वैतभाव में डूबे हुए वे आवागमन में ही पड़े रहते हैं। शब्द-गुरु के माध्यम से आवागमन मिटता है और वह प्रभु स्वयं ही परख कर जीवों को क्षमा करता रहता है।

बेदन दूजै बिआपी नामु रसाइणु वीसरिआ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए गुर कै सबदि सु मुकतु भइआ ॥ नानक तारे तारणहारा हउमै दूजा परहरिआ ॥ २५ ॥ मनमुखि भूलै जम की काणि ॥ पर घरु जोहै हाणे हाणि ॥ मनमुखि भरमि भवै बेबाणि ॥ वेमारगि मूसै मंत्रि मसाणि ॥ सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥ नानक साचि रते सुखु जाणि ॥ २६ ॥ गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥ गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥ गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥ गुरमुखि पवित्रु परम पदु पावै ॥ गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥ २७ ॥ गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥ गुरमुखि परचै तरीऐ तारी ॥ गुरमुखि परचै सु सबदि गिआनी ॥ गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥ गुरमुखि पाईऐ अलख अपारु ॥ नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥ २८ ॥ गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥ गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥ गुरमुखि जपीऐ अंतरि पिआरि ॥ गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥ सबदि भेदि जाणै जाणाई ॥ नानक हउमै जालि समाई ॥ २९ ॥ गुरमुखि धरती साचै साजी ॥ तिस महि ओपति खपति सु बाजी ॥ गुर कै सबदि रपै रंगु लाइ ॥ साचि रतउ पति सिउ घरि जाइ ॥ साच सबद बिनु पति नही पावै ॥ नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥ ३० ॥ गुरमुखि असट सिधी सभि बुधी ॥ गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥ गुरमुखि सर अपसर बिधि जाणै ॥ गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥ गुरमुखि तारे पारि उतारे ॥ नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥ ३१ ॥ नामे राते हउमै जाइ ॥ नामि रते सचि रहे समाइ ॥ नामि रते जोग जुगति बीचारु ॥ नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥ नामि रते त्रिभवण सोझी होइ ॥ नानक नामि रते सदा सुखु होइ ॥ ३२ ॥ नामि रते सिध गोसटि होइ ॥ नामि रते सदा तपु होइ ॥ नामि रते सचु करणी सारु ॥ नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥ बिनु नावै बोलै सभु वेकारु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ३३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ जोग जुगति सचि रहै समाइ ॥ बारह महि जोगी भरमाए संनिआसी छिअ चारि ॥ गुर कै सबदि जो

जब प्रभु-नाम रूपी रसायन भूल जाती है तो द्वैतभाव के प्रभाव के कारण व्यक्ति को दुख और पीड़ा प्रभावित करती है। इस रहस्य को वही बूझता है जिसे वह प्रभु स्वयं समझाता है और ऐसा व्यक्ति ही शब्द-गुरु के माध्यम से बन्धन मुक्त होता है। हे नानक, वह पार उतारने वाला प्रभु ही पार उतारता है और हमारे अहंकार और द्वैतभाव को दूर करता है।। २५ ।। मनमुख व्यक्ति यम का मोहताज बना भटकता रहता है। वह पराये घर के धन और स्त्री को ताकता रहता है जोकि घाटे ही घाटे का काम है। मनमुख व्यक्ति भ्रमों में पड़ा जादू टोने के चक्कर में निर्जन स्थानों पर भी भटकता रहता है और इस प्रकार शमशान आदि में मंत्र पढ़कर कुमार्ग पर पड़ा व्यक्ति लूटा और ठगा जाता है। वह शब्द को नहीं पहचानता और बुरी बातें कहता करता रहता है। हे नानक, सुख तो सत्य में लीन होकर ही जाना जाता है।। २६।। गुरमुख व्यक्ति उस सच्चे प्रभु के भय में बना रहता है और गुरु की वाणी के माध्यम से असाध्य मन को साध लेता है अर्थात् उबड़ खाबड़ मन को सुन्दर बना लेता है। गुरमुख व्यक्ति निर्मल होकर प्रभु के गुण गाता है तथा गुरमुख ही पवित्र परमपद को प्राप्त कर लेता है। गुरमुख अपने रोम-रोम के माध्यम से तन मन से उस प्रभु का सुमिरन करता है और हे नानक, गुरमुख ही सत्य में लीन बना रहता है।। २७ ।। गुरमुख बना व्यक्ति इस प्रकार सन्तुष्ट हो जाता है जिस प्रकार अन्य लोग ज्ञान का चिंतन करते हुए सन्तुष्ट बने रहना चाहते हैं। गुरमुख के रूप में सन्तुष्ट व्यक्ति संसार सागर से तैर जाने वाला होता है। गुरमुख बनकर सन्तुष्ट हुआ व्यक्ति ही शब्द के माध्यम से ज्ञानवान होता है और गुरमुख बने सन्तुष्ट व्यक्ति ने ही आन्तरिक जीवन की विधि को जाना होता है। गुरमुख बनकर ही उस अदृष्ट अपरम्पर प्रभु को प्राप्त किया जाता है और हे नानक, वास्तव में गुरमुख होना ही मुक्ति का द्वार है।। २८ ।। गुरमुख उस अकथनीय प्रभु का अपने विचारों के माध्यम से कथन करता है और गुरमुख अपने परिवार में रहता हुआ अपने धर्म को निभाए चला जाता है । गुरमुख बनकर और हृदय में प्रेम धारण करके उस प्रभु का सुमिरन किया जाए क्योंकि गुरमुख बनकर ही शब्द के अनुरूप आचरण प्राप्त किया जाता है। शब्द के रहस्य को अनुभव करके वह उसे स्वयं जानता है और दूसरों को भी बताता है। हे नानक, वह अपने अहंकार को जलाकर उस प्रभु में लीन हो जाता है।। २६ ।। उस सच्चे प्रभु ने इस धरती की रचना गुरमुखों के लिये ही की है और इस धरती पर जीवों का पैदा होना तथा मरना उसका एक खेल है। गुरमुख शब्द-गुरु में लीन होकर उसी में रंगा रहता है और सत्य में समाया हुआ वह सम्मानपूर्वक अपने मूल घर में प्रवेश कर लेता है। जीव सच्चे शब्द के बिना सम्मान नहीं प्राप्त कर सकता इसलिये हे नानक, प्रभु-नाम के बिना वह सत्य में कैसे लीन हो सकता है।। ३० ।। गुरमुख बनकर आठों सिद्धियाँ तथा सभी प्रकार की बुद्धियाँ प्राप्त होती हैं और गुरमुख बने व्यक्ति को सत्य की समझ आ जाने से वह भव सागर से पार उतर जाता है। गुरमुख व्यक्ति ही अच्छे बुरे अवसर की और उसकी विधि को जानने वाला होता है और गुरमुख ही प्रवृत्ति (ग्रहण करना) और निवृत्ति अर्थात त्यागने का रहस्य पहचानता है। गुरमुख स्वयं पार उतर जाता है, दूसरों को भी पार उतारता है परन्तु यह सारा पार उतारा गुरमुख बना व्यक्ति शब्द के माध्यम से ही करता है।। ३१ ।। प्रभु नाम में लीन होने से अहंकार चला जाता है और नाम में लीन व्यक्ति ही सत्य में समाया रहता है। नाम में लीन बने रहने से ही योग की युक्ति का वास्तविक चिंतन होता है और नाम में लीन होकर व्यक्ति मोक्ष के द्वार को प्राप्त करता है। नाम में लीन व्यक्ति को तीनों लोकों की सूझ प्राप्त होती है। हे नानक, नाम में लीन व्यक्ति को सदैव सुख प्राप्त होता है।। ३२ ।। नाम में लीन होकर ही कोई गोष्ठी सिद्ध और सफल होती है और नाम में लीन बने रहना ही सदैव तपस्या में बने रहने के समान है। सत्य आचरण का सार तत्व नाम में ही लीन बने रहना है और गुणों तथा ज्ञान का चिंतन भी नाम लीनता ही है। प्रभु नाम से विहीन बने जो लोग भी बोलते हैं वह सब व्यर्थ है। हे नानक, जो नाम मे लीन हैं उन्हीं की जय-जयकार होती है।। ३३ ।। पूर्ण गुरु से ही नाम प्राप्त किया जाता है तथा सत्य में लीन बने रहना ही वास्तव में योग की युक्ति है। योगी बारह सम्प्रदायों में तथा संन्यासी दस सम्प्रदायों में बँट कर भटक रहे हैं परन्तु वास्तव में

मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥ बिनु सबदै सभि दूजै लागे देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रखिआ उर धारि ॥ ३४ ॥ गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइ ॥ गुरमुखि परखै रतनु सुभाइ ॥ गुरमुखि साची कार कमाइ ॥ गुरमुखि साचे मनु पतीआइ ॥ गुरमुखि अलखु लखाए तिसु भावै ॥ नानक गुरमुखि चोट न खावै ॥ ३५ ॥ गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥ गुरमुखि भउ भंजनु परधानु ॥ गुरमुखि करणी कार कराए ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाए ॥ ३६ ॥ गुरमुखि सासत्र सिम्रिति बेद ॥ गुरमुखि पावै घटि घटि भेद ॥ गुरमुखि वैर विरोध गवावै ॥ गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ गुरमुखि राम नाम रंगि राता ॥ नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥ ३७ ॥ बिनु गुर भरमै आवै जाइ ॥ बिनु गुर घाल न पवई थाइ ॥ बिनु गुर मनूआ अति डोलाइ ॥ बिनु गुर त्रिपति नही बिखु खाइ ॥ बिनु गुर बिसीअरु डसै मरि वाट ॥ नानक गुर बिनु घाटे घाट ॥ ३८ ॥ जिसु गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥ मुकति महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥ गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥ तनु हटड़ी इहु मनु वणजारा ॥ नानक सहजे सचु वापारा ॥ ३९ ॥ गुरमुखि बांधिओ सेतु बिधातै ॥ लंका लूटी दैत संतापै ॥ रामचंदि मारिओ अहि रावणु ॥ भेदु बभीखण गुरमुखि परचाइणु ॥ गुरमुखि साइरि पाहण तारे ॥ गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥ ४० ॥ गुरमुखि चूकै आवण जाणु ॥ गुरमुखि दरगह पावै माणु ॥ गुरमुखि खोटे खरे पछाणु ॥ गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ गुरमुखि दरगह सिफति समाइ ॥ नानक गुरमुखि बंधु न पाइ ॥ ४१ ॥ गुरमुखि नामु निरंजन पाए ॥ गुरमुखि हउमै सबदि जलाए ॥ गुरमुखि साचे के गुण गाए ॥ गुरमुखि साचै रहै समाए ॥ गुरमुखि साचि नामि पति ऊतम होइ ॥ नानक गुरमुखि सगल भवण की सोझी होइ ॥ ४२ ॥ कवण मूलु कवण मति वेला ॥ तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥ कवण कथा ले रहहु निराले ॥ बोलै नानकु सुणहु तुम बाले ॥ एसु कथा का देइ बीचारु ॥ भवजलु

जो शब्द-गुरु में ही खुद को मिटा देते हैं वे ही मुक्ति के द्वार को प्राप्त करते हैं। इस बात को हृदय में विचारकर देख लो कि शब्द से विहीन सभी लोग द्वैतभाव में ही पड़े हैं। हे नानक, वे भाग्यशाली ही बड़े लोग हैं जिन्होंने सत्य को हृदय में धारण कर रखा है।। ३४ ।। गुरमुख नाम रत्न में ही अपनी लौ लगाये रहता है और गुरमुख स्वाभाविक रूप से ही उस नाम रूपी रत्न को पहचान जाता है। गुरमुख ही सच्चा आचरण करता है और गुरमुख का मन सत्य में ही सन्तुष्ट बना रहता है। जब उस प्रभु को अच्छा लगता है तभी वह गुरमुख बने व्यक्ति को अपने अदृष्ट रूप की झलक देता है। हे नानक, गुरमुख कभी भी काल की चोट नहीं खाता।। ३५ ।। गुरमुख बनकर ही प्रभु नाम, दान और वास्तवकि स्नान के गुण प्राप्त होते हैं और गुरमुख ही सहज स्वभाविक ध्यान में लीन बना रहता है। गुरमुख व्यक्ति को ही प्रभु दरबार में सम्मान मिलता है और गुरमुख व्यक्ति ही भय का नाश करने वाला तथा प्रमुख व्यक्ति बन जाता है। गुरमुख से ही वह प्रभु करने योग्य सभी कार्य करवाता है और हे नानक, गुरमुख को ही वह मिलता है और अपने में मिला लेता है।। ३६ ।। गुरमुख व्यक्ति शास्त्र, स्मृतियों और वेदों के ज्ञान को जानता ही है; वह घट-घट के रहस्य को भी जान जाता है। गुरमुख सभी विरोधों और शत्रुताओं को छोड़ देता है और गुरमुख सांसारिक लाभ हानि की गणनाओं को भी समाप्त कर देता है। गुरमुख बना व्यक्ति प्रभु नाम के रंग में लीन बना रहता है और हे नानक, गुरमुख व्यक्ति ने ही वास्तव में अपने मालिक को पहचाना होता है।। ३७ ।। गुरु से विहीन व्यक्ति भ्रमों मे पड़ा भटकता रहता है और गुरु के बिना की हुई मेहनत सफल नहीं होती। गुरु विहीन व्यक्ति का मन अत्यन्त डोलता ही रहता है ; गुरु के बिना सन्तुष्टि नहीं होती। गुरु के बिना माया रूपी सर्प डंसता रहता है और व्यक्ति जीवन का सफर करता हुआ आधे रास्ते में ही मर जाता है अर्थात माया उसके मन को मार देती है। हे नानक, गुरु बिना तो घाटा ही घाटा है।।३८।। जिसे गुरु मिल जाता है वह उसे पार उतार देता है ; अवगुणों को मिटा देता है और गुणों के माध्यम से उसका उद्धार कर देता है। शब्द-गुरु के चिंतन से ही महान सुख और मुक्ति प्राप्त होती है तथा गुरमुख कभी भी किसी भी कार्य क्षेत्र में हारता नहीं। यह शरीर एक दुकान है और मन इसमें व्यापारी है। हे नानक, इसी में ही सहज भाव से सत्य का व्यापार किया जाता है।। ३९ ।। विधाता प्रभु ने गुरमुख के लिये अपने लक्ष्य तक पहुँचने के वास्ते नाम रूपी पुल बना दिया है। इसी नाम रूपी पुल के माध्यम से ही लंका लूटी गई और काम, क्रोध आदि के दैत्य दुखी हो गए। गुरमुख रूपी राम चन्द्र ने अहंकार रूपी रावण को मारा और विभीषण का भेद को बताना वास्तव में उस का गुरमुख बनकर ज्ञानवान होना ही है। पत्थर बने जीव भी गुरमुख बनकर संसार सागर से पार उतर जाते हैं और गुरमुख बने हुए करोड़ों व्यक्तियों का उद्धार हो चुका है।। ४० ।। गुरमुख का आवागमन चुक जाता है और गुरमुख को प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। गुरमुख को ही खरे-खोटे की पहचान होती है और गुरमुख का ध्यान उस प्रभु में सहज स्वाभाविक रूप से ही लगा रहता है। गुणानुवाद के माध्यम से गुरमुख व्यक्ति प्रभु दरबार में स्थिर बना रहता है और हे नानक, गुरमुख व्यक्ति के सामने कोई रुकावट नहीं आती।। ४१ ।। गुरमुख व्यक्ति ही निरंजन प्रभु का नाम प्राप्त करता हैं और गुरमुख ही शब्द के माध्यम से अहंकार को जलाकर नष्ट कर देता है। गुरमुख ही सच्चे गुरमुख के गुण गाता है और गुरमुख ही सदा सत्य में लीन बना रहता है। सच्चे नाम के माध्यम से गुरमुख का सम्मान सबसे ऊँचा होता है और हे नानक, गुरमुख व्यक्ति को ही सभी भुवनों की सूझ प्राप्त हो जाती है।। ४२ ।। (प्रश्न) इस जीवन का मूल अर्थात आरम्भ कहाँ है और यह समय किसकी शिक्षा लेने का है। तेरा गुरु कौन है जिसका तू चेला है। किन विचारों को अपनाकर तुम अलिप्त बने रहते हो। हे बालक नानक, तुम सुनो और इस बात को हमें बताओ।

सबदि लंघावणहारु ॥ ४३ ॥ पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥ सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ अकथ कथा ले रहउ निराला ॥ नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ गुरमुखि हउमै अगनि निवारी ॥ ४४ ॥ मैण के दंत किउ खाईऐ सारु ॥ जितु गरबु जाइ सु कवणु आहारु ॥ हिवै का घरु मंदरु अगनि पिराहनु ॥ कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ इत उत किस कउ जाणि समावै ॥ कवन धिआनु मनु मनहि समावै ॥ ४५ ॥ हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ दूजा मेटै एको होवै ॥ जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ सबदु कमाईऐ खाईऐ सारु ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥ ४६ ॥ सच भै राता गरबु निवारै ॥ एको जाता सबदु वीचारै ॥ सबदु वसै सचु अंतरि हीआ ॥ तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥ कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥ नानक नदरी नदरि पिआरे ॥ ४७ ॥ कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइआ ॥ कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥ कवन मुखि कालु जोहत नित रहै ॥ कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ कवनु जोधु जो कालु संघारै ॥ बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥ ४८ ॥ सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥ ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥ सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥ आपे पारि उतारणहारा ॥ गुर परचै मनु साचि समाइ ॥ प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥ ४९ ॥ नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥ बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥ ततो ततु मिलै मनु मानै ॥ दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥ बोलै पवना गगनु गरजै ॥ नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥ ५० ॥ अंतरि सुंनं बाहरि सुंनं त्रिभवण सुंन मसुंनं ॥ चउथे सुंनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुंनं ॥ घटि घटि सुंन का जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ जो जनु नाम निरंजन राता ॥ नानक सोई पुरखु बिधाता ॥ ५१ ॥ सुंनो सुंनु कहै सभु कोई ॥ अनहत सुंनु कहा ते होई ॥ अनहत सुंनि रते से कैसे ॥ जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥ नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥ ५२ ॥ नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ तह अनहत सुंन वजावहि तूरे ॥ साचे राचे देखि हजूरे ॥ घटि

शब्द को ही संसार सागर से पार करने वाला जो तुमने बताया है इस तथ्य का विचार भी हमें बताओ।। ४३ ।। (उत्तर) प्राण रूप में वायु ही इस सारे अस्तित्व का मूल आधार है और यह समय सच्चे गुरु की शिक्षा ग्रहण करने का है। मेरा सच्चा गुरु शब्द है और शब्द में सुरति का लगातार लीन बने रहना ही उसका चेला होना है। उस अकथनीय प्रभु की सत्य कथा को हृदय में लेकर मैं अलिप्त अवस्था में बना रहता हूँ और हे नानक, युगों-युगान्तरों में धरती का पालन कर्ता वह प्रभु ही गुरु है। केवल शब्द ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से प्रभु की कथा का चिंतन होता है और व्यक्ति गुरमुख बनकर अहंकार की अग्नि का नाश कर देता है।। ४४ ।। (प्रश्न) मोम के दाँतों से लोहा कैसे खाया जा सकता है और वह कौन सा आहार है जिससे अभिमान समाप्त हो जाता है। यह शरीर रूपी घर तो बर्फ का घर है और इसका लिबास अग्नि का है अर्थात् तामसिक मन इस नाशवान शरीर में रहता है और जैसे बर्फ को अग्नि गला देती है वैसे ही इस शरीर रूपी घर के साथ यह मन व्यवहार करता है। वह कौन सी गुफा है जहां मन स्थिर बना रह सकता है। इधर-उधर वह किसको जानता हुआ उसमें लीन बना रहे और ऐसा कौन सा ध्यान है जिससे यह मन अपने अंदर ही सिमटा रहे।। ४५ ।। (उत्तर) अहंकार और मैं मैं की भावना को अन्तर्मन से दूर करके व्यक्ति जब द्वैतभाव मिटा देता है वह सबके साथ एक रूप हो जाता है। यह संसार तो मनमुख और गँवार व्यक्ति के लिये ही कड़ा हैं ; जब शब्द के अनुरूप आचरण बनाया जाता है तो संसार रूपी लोहा स्वाभाविक रूप से ही खा लिया जाता है। हृदय में और बाहर सब ओर जब एक प्रभु को ही जाना जाता है तो हे नानक, सच्चे गुरु की रज़ा में तृष्णाओं की अग्नि मर जाती है।। ४६ ।। सत्य प्रभु के भय में लीन होकर अहंकार का निवारण किया जाता है और शब्द के चिंतन से ही उस एक प्रभु को जाना जाता है। सत्य शब्द जब अन्तर्मन में बस जाता है तो तन मन शीतल होकर उस प्रभु के रंग में रंगा जाता है। यह शब्द काम, क्रोध और विषय-विकारों की अग्नि का निवारण करता है और हे नानक, ऐसा सब कुछ उस प्रभु की कृपादृष्टि से ही होता है।। ४७ ।। (प्रश्न) किस प्रकार मन रूपी चन्द्रमा ठंडक का घर और गुफा की तरह अंधकार वाला बना रहता है और किस प्रकार ज्ञान का सूर्य निकल कर प्रचंड होता है। किस प्रकार काल की दृष्टि से बचा जाता है और किस प्रकार बुद्धि से गुरमुख बना जाता है और सम्मान प्राप्त होता है। ऐसा कौन सा शूरवीर है जो काल को मार डालता है। नानक इन प्रश्नों का विचारपूर्वक अपनी वाणी के माध्यम से उत्तर दो।। ४८ ।। (उत्तर) शब्द का उच्चारण करते ही चन्द्रमा रूपी मन की क्षीण ज्योति अपार ज्योति में बदल जाती है और जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होकर अपना अंधेरा दूर करता है उसी प्रकार मन रूपी चन्द्रमा का अंधकार दूर हो जाता है। हे योगियो, प्रभु नाम का आसरा लेकर सुख और दुख को समान भाव से जानो ; वह प्रभु स्वयं ही सब को पार उतारने वाला है। गुरु से सन्तुष्टि प्राप्त करके मन सत्य में लीन हो जाता है और नानक विनती करता है कि इस प्रकार काल व्यक्ति को खाता नहीं है।। ४६ ।। प्रभु का नाम तत्व ही सर्वशिरोमणि है और प्रभु-नाम से विहीन लोगों को काल का दुख और संताप भोगना पड़ता है। जब जीव तत्व परमात्म तत्व से मिल जाता है तो मन सन्तुष्ट हो जाता है ; फिर द्वैतभाव चला जाता है ओर केवल एक प्रभु नाम के घर में ही मन एकाग्र हो जाता है। अब जीवन की लहर चलने लगती है और गगन का दशम द्वार गरजने लगता है अर्थात् प्रभु मिलाप की अवस्था और अधिक बलवान हो जाती है। हे नानक, मन स्थिर हो जाता है और स्वभाविक रूप से ही इसका मेल प्रभु से हो जाता है।। ५० ।। जीव के अन्दर भी शून्य रूप प्रभु है बाहर भी शून्य रूप प्रभु है और तीनों लोकों में शून्य और स्थिर अवस्था में वह व्याप्त है। अन्दर बाहर और तीनों लोकों के शून्य से उपर उठकर जो चौथे पद को प्राप्त कर लेते हैं अर्थात चौथे सर्वातिशायी शून्य को जान जाते है उनको पाप और पुण्य नहीं लगता। जो घट-घट में बसते हुए शून्य का रहस्य जान जाता है वही स्वयं आदि पुरुष प्रभु निरंजन का रूप हो जाता है। जो व्यक्ति उस अलिप्त प्रभु के नाम में लीन बना रहता है। हे नानक, वही विधाता प्रभु का रूप हो जाता है।। ५१ ।। प्रत्येक व्यक्ति प्रभु की शून्य अवस्था की बात तो करता है, परन्तु सदैव स्थिर शून्य अवस्था भला कैसे प्राप्त हो सकती है। जो अनहद शून्य में लीन हो जाते हैं वे कैसे होते हैं। इस सदर्भ में यह कहा जा सकता है कि वे जिससे उत्पन्न होते हैं उसके जैसे ही बन जाते हैं; वे न जन्म लेते हैं ना मरते हैं और ना आते जाते हैं। हे नानक, ऐसे गुरमुख व्यक्ति मन को समझा लेते हैं।। ५२ ।। जब शरीर के नौ गोलकों को भर कर दसवें द्वार रूपी सरोवर में इनके बहाव को डाल दिया जाता है तो गुरमुख व्यक्ति एक रस शून्य अवस्था के वाद्य बजाते हैं अर्थात अब उनके अन्दर और संकल्प विकल्प नहीं उठते। इस अवस्था के लोग निरन्तर बने रहने वाले प्रभु को अपने आस-पास ही देखकर उसी में टिके रहते हैं।

घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥ गुपती बाणी परगटु होइ ॥ नानक परखि लए सचु सोइ ॥ ५३ ॥ सहज भाइ मिलीऐ सुखु होवै ॥ गुरमुखि जागै नीद न सोवै ॥ सुंन सबदु अपरंपरि धारै ॥ कहते मुकतु सबदि निसतारै ॥ गुर की दीखिआ से सचि राते ॥ नानक आपु गवाइ मिलण नही भ्राते ॥ ५४ ॥ कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥ किउ ततु न बूझै चोटा खाइ ॥ जम दरि बाधे कोइ न राखै ॥ बिनु सबदै नाही पति साखै ॥ किउ करि बूझै पावै पारु ॥ नानक मनमुखि न बुझै गवारु ॥ ५५ ॥ कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ ततु न चीनै मनमुखु जलि जाइ ॥ दुरमति विछुड़ि चोटा खाइ ॥ मानै हुकमु सभे गुण गिआन ॥ नानक दरगह पावै मानु ॥ ५६ ॥ साचु वखरु धनु पलै होइ ॥ आपि तरै तारे भी सोइ ॥ सहजि रता बूझै पति होइ ॥ ता की कीमति करै न कोइ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ नानक पारि परै सच भाइ ॥ ५७ ॥ सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥ त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिसु कहु कवनु अधारो ॥ बोलै खेलै असथिरु होवै किउ करि अलखु लखाए ॥ सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपणे मन समझाए ॥ गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै करि नदरी मेलि मिलाए ॥ आपे दाना आपे बीना पूरै भागि समाए ॥ ५८ ॥ सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥ पवन का वासा सुंन निवासा अकल कला धर सोई ॥ नदरि करे सबदु घट महि वसै विचहु भरमु गवाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी नामो मंनि वसाए ॥ सबदि गुरू भव सागरु तरीऐ इत उत एको जाणै ॥ चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै ॥ ५९ ॥ त्रै सत अंगुल वाई अउधू सुंन सचु आहारो ॥ गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै चीनै अलख अपारो ॥ त्रै गुण मेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ता हरि नामि लगै पिआरो ॥ सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलखु लखाए ॥ नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतिगुर सबदि समाए ॥ ६० ॥ मन का जीउ पवनु कथीअले पवनु कहा रसु खाई ॥ गिआन की मुद्रा कवन अउधू

उन्हें अब वह सच्चा प्रभु घट-घट में व्याप्त दिखाई देता है। इस प्रकार जिसके अन्दर दैवी जीवन की अप्रकट लय प्रकट हो जाती है, हे नानक, ऐसे जीव उस सच्चे प्रभु के मूल्य और महानता को जान जाते हैं।। ५३ ।। स्वभाविक रूप से ही प्रभु से मिलाप होने पर सुख प्राप्त होता है और गुरमुख व्यक्ति अज्ञान की निद्रा में ना सोकर सदैव सावधान बना रहता है। शून्य शब्द अर्थात अनहद नाद उसे अपरम्पर प्रभु में स्थित किए रहते हैं। वह प्रभु नाम का उच्चारण करता हुआ मुक्त हो जाता है और शब्द के माध्यम से पार उतर जाता है। जो सत्य के माध्यम से गुरु की शिक्षा में लीन हो जाते हैं हे नानक, वे अहंकार भाव गँवा कर प्रभु से मिलते हैं और अब उन्हें कोई भी भ्रांन्ति नहीं रहती।। ५४ ।। (प्रश्न) जो कुबुद्धि के बोल बोलता है उसका ठिकाना कहाँ होगा। यह जीव क्यों सार तत्व को नहीं बूझता और चोटें खाता रहता है। यम के द्वार पर इस बँधे हुए की कोई भी रक्षा नहीं करता और वास्तव में शब्द से विहीन बने हुए इसकी ना तो कोई साख होती है ना कोई सम्मान होता है। यह कैसे इस रहस्य को जाने और पार हो जाए ; हे नानक, मनमुख बना व्यक्ति गँवार बना रहकर इस बात को नहीं जानता।। ५५ ।। शब्द-गुरु के चिंतन के फलस्वरूप ही दुर्बुधि मिटती है और सच्चे गुरु से भेंट होने पर ही मोक्ष का द्वार दिखाई देता है। मनमुख व्यक्ति तत्व को नहीं पहचानता और अंततः मर खप जाता है। दुर्मति में वह प्रभु से बिछुड़कर चोटें खाता रहता है। यदि वह प्रभु के हुकुम को मानता रहे तो सारे गुण और ज्ञान उसके पास रहते हैं और हे नानक, वह प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करता है।। ५६ ।। सत्य रूपी पदार्थ का धन उसके पल्ले में होता है और वह स्वयं तो तैरता ही है अन्यों को भी पार उतार देता है। पूर्ण ब्रह्म में लीन होकर वह उसे बूझ लेता है और उसका सम्मान होता है। उसके मूल्य को फिर आँका नहीं जाता। अब वह जिधर देखता है उधर उसको सबमें समाया प्रभु दिखता है और हे नानक, सत्य को चाहता हुआ वह इस संसार सागर से पार उतर जाता है।। ५७ ।। (प्रश्न) उस सुन्दर शब्द का निवास कहाँ पर कहा जाता है जिसके माध्यम से संसार सागर को तैर लिया जाता है। दस अंगुल तक बाहर आने वाली प्राण वायु का भला अन्दर आधार क्या है। जो जीव सत्ता अन्दर बोलती खेलती है वह कैसे स्थिर बनी रहे और उस अदृष्ट प्रभु को समझ ले। नानक कहता है कि हे स्वामी, मैंने इस प्रकार अपने मन को समझाया है। गुरमुख बनकर शब्द के माध्यम से सत्य में लौ लगती है और जब वह कृपा दृष्टि करता है तो उससे मेल मिलाप हो जाता है। वह प्रभु स्वयं ही जानने वाला और सब कुछ देखने वाला है। भरपूर भाग्य के फलस्वरूप ही उसमें लीन हुआ जाता है।। ५८ ।। उस सुन्दर शब्द का निवास तो निरन्तर अन्दर बाहर बना है और जिधर भी हम देखते हैं उधर वह ही दिखाई देता है। जिस प्रकार पवन का वास है उसी प्रकार शून्य का भी निवास है अर्थात प्रभु पवन की तरह सर्वव्यापक है। जैसे पवन सर्वव्यापक है प्रभु भी अपनी कलाओं समेत सर्वव्यापक है परन्तु फिर भी उसमें किसी कला की बनावट नजर नहीं आती। प्रभु कृपा दृष्टि करे तो शब्द हृदय में आ बसता है और अन्तर्मन से भ्रम नष्ट हो जाता है। वाणी, तन और मन निर्मल हो जाते हैं और नाम मन में आ बसता है। शब्द-गुरु को यहाँ वहाँ एक ही रूप में जानकर संसार सागर को पार किया जाता है और उस शब्द-गुरु रूप प्रभु को कोई भी वर्ण, चिन्ह, छाया, माया इत्यादि नहीं है तथा हे नानक, शब्द को पहचानना ही वास्तव में उसको पहचानना है।। ५९ ।। हे योगी, दस अंगुल बाहर आने वाले श्वासों के माध्यम से प्रभु नाम का जाप करना और सत्य बोलना यही प्राणों का आसरा है। गुरमुख तत्व का मंथन करता है और उस अदृष्ट अपार प्रभु को पहचान लेता है। शब्द को मन में बसाकर जब वह तीनों गुणों को मिटा देता है तो मन का अहंकार भी समाप्त हो जाता है। जब अन्दर बाहर उस एक प्रभु को ही जाना जाता है तो उस प्रभु नाम में प्रेम लग जाता है। जब प्रभु अपने आपको दिखाता है तो जीव उस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है जो ईड़ा पिंगला, सुषुम्ना में श्वास के अभ्यास के साथ प्राप्त होता है। हे नानक, इन तीनों नाड़ियों की साधनाओं से उपर सच्चा गुरु परमात्मा है जिसमें शब्द के माध्यम से लीन हुआ जाता है।। ६० ।। मन का प्राण पवन को कहा जाता है परन्तु पवन को रसपूर्ण आहार कहाँ से मिलता है। हे अवधूत, ज्ञान की मुद्रा अर्थात मर्यादा अर्थात साधन कौन सा है और

सिध की कवन कमाई ॥ बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ सबदि रते अंम्रित रसु पाइआ साचे रहे अघाई ॥ कवन बुधि जितु असथिरु रहीऐ कितु भोजनि त्रिपतासै ॥ नानक दुखु सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥ ६१ ॥ रंगि न राता रसि नही माता ॥ बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥ बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥ अकथ कथा ले सम करि रहै ॥ तउ नानक आतम राम कउ लहै ॥ ६२ ॥ गुर परसादी रंगे राता ॥ अंम्रितु पीआ साचे माता ॥ गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ अपिउ पीओ आतम सुखु धारी ॥ सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥ नानक बूझै को वीचारी ॥ ६३ ॥ इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥ कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥ आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै धावतु वरजि रहाए ॥ किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजि समावै ॥ ६४ ॥ इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ नाभि पवनु घरि आसणि बैसै गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥ सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै त्रिभवण जोति सु सबदि लहै ॥ खावै दूख भूख साचे की साचे ही त्रिपतासि रहै ॥ अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ नानकु आखै सचु सुभाखै सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥ ६५ ॥ जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥ नाभि कमल असथंभु न होतो ता पवनु कवन घरि सहता ॥ रूपु न होतो रेख न काई ता सबदि कहा लिव लाई ॥ रकतु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ वरनु भेखु असरूपु न जापी किउ करि जापसि साचा ॥ नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥ ६६ ॥ हिरदा देह न होती अउधू तउ मनु सुंनि रहै बैरागी ॥ नाभि कमलु असथंभु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥ रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ गउनु गगनु जब तबहि न

सिद्ध व्यक्ति की वास्तविक कमायी क्या है। शब्द के बिना हे योगी, आनन्द नहीं आता और अहंकार में बने रहकर प्यास नहीं बुझती। शब्द में लीन बने रहने से ही अमृत रस प्राप्त होता है और सत्य में बने रहकर ही तृप्ति बनी रहती है। वह कौन सी बुद्धि है जिससे स्थिर बना रहा जाता है और कौन से भोजन से वास्तविक तृप्ति प्राप्त होती है। हे नानक, जब सुख दुख समान रूप से लगता है तो सच्चे गुरु के माध्यम से मन स्थिर हो जाता है और काल जीव को खाता नहीं।। ६१ ।। जिसका हरि रंग में मन नहीं लगा और ना ही वह हरि रस में लीन हुआ है वह शब्द गुरु के बिना जलता हुआ संतप्त बना रहता है। उसने शब्द का गायन नहीं किया इसलिये यह मान लो कि उसने शरीरिक संयम भी नहीं अपनाया। सत्य की उसने आराधना नहीं की इसलिये उसने अपने प्राणायम भी नहीं किया है। यदि वह उस प्रभु की अकथनीय कथा को कहता हुआ सुख दुख में समान भाव से रहता है तो हे नानक, वही वास्तव में अपनी आत्मा में प्रभु को खोज लेता है।। ६२ ।। गुरु की कृपा से वह प्रभु के रंग में लीन होता है और अमृत पीकर सत्य में मस्त हो जाता है। गुरु का चिंतन करता है कि और उसकी आन्तरिक अग्नि दूर हो जाती है ; वह अमृत पान करता है और आत्म सुख को धारण किये रहता है। गुरमुख बनकर उसने सत्य की अराधना की होती है और वह संसार सागर से पार हो जाता है। हे नानक, इस रहस्य को बिरला विचारवान ही समझ पाता है।। ६३ ।। (प्रश्न) यह हाथी रूपी मन कहाँ बसता है और यह श्वास रूपी पवन कहाँ निवास करती है। हे अवधूत (नानक), यह शब्द कहाँ बसता है जिसके माध्यम से मन की भटकन समाप्त हो जाती है। (उत्तर) यदि प्रभु कृपा दृष्टि करे तो सच्चे गुरु से मिला देता है और यह मन अपने मूल (जोति) स्वरूप में स्थित हो जाता है। जब यह मन स्वयं ही अहंकार को खा लेता है तो वह निर्मल हो जाता है अर्थात इसका भागना दौड़ना रुक जाता है। (प्रश्न) यह अपने मूल स्वभाव को और आत्मतत्व को किस तरह जाने और पहचाने ; किस प्रकार ठंडे और जड़ चन्द्रमा रूपी अन्तकरण में सूर्य रूपी उर्जा का प्रवेश हो। (उत्तर) हे नानक, जब यह जीव गुरमुख बनकर अन्तर्मन से अहंकार खो देता है तो यह अपने सहज स्वभाव में लीन हो जाता है।। ६४ ।। यह मन स्थिर हृदय में निवास करता है और गुरमुख बनकर अपने मूल को पहचानता है। यह नाभि रूपी घर में श्वास अर्थात् पवन के आसन पर बैठा रहता है और गुरमुख बनकर इसके सारतत्व को खोजा और देखा जाता है। जब वह शब्द रूपी प्रभु जो निरंतर बना रहने वाला है हृदय घर में आ जाए तो तीनों लोकों में बसने वाली प्रभु की ज्योति शब्द के माध्यम से मिल जाती है। उस सच्चे प्रभु की भूख (जिज्ञासा) ही सभी दुखों को खा जाती है और सत्य में ही तृप्ति बनी रहती है। इस अनहद वाणी (शब्द) को गुरमुख बनकर ही जाना जाता है और कोई बिरला ही उसके अर्थ को समझता है। नानक कहता है और सत्य कहता है कि यदि सत्य में मन को रंगा जाए तो यह रंग कभी भी नहीं छूटता।। ६५ ।। (प्रश्न) यदि यह हृदय और शरीर ना होता तो फिर भला यह मन कहाँ रहता। यदि नाभि कमल (मूलाधार) का स्तम्भ ना होता तो ये पवन रूपी श्वास किस स्थान में स्थित बने रहते। जब कोई भी रूप और आकार नहीं था तो लौ लगाने वाला यह शब्द कहाँ निवास करता। यदि रक्त और बिन्दु से बना यह शरीर ही नहीं होता तो फिर शब्द रूपी प्रभु की सीमा और कीमत कैसे जानी जाती। जब कोई वर्ण, वेश और स्वरूप ही नहीं था तो सच्चे प्रभु का जाप अथवा सुमिरन कैसे किया जाता। (उत्तर) हे नानक, उस प्रभु के नाम में लीन अर्थात उसके गुणों को प्रेम करने वाले के लिये वह प्रभु हर समय हर स्थान पर सत्य के रूप में ही दिखाई देता रहता है।। ६६ ।। (उत्तर की और व्याख्या) यदि यह हृदय और शरीर ना होता तो हे अवधूत योगी, यह मन वैराग्यवान होकर परमशून्य, निर्गुण परब्रह्म में ही लीन बना रहता। यदि नाभि कमल का आधार भी ना होता तो ये श्वास रूपी पवन अपने मूल स्वरूप में ही लीन बनी रहती। जब कोई रूप रेखा जाति प्रजाति ना होती तो तत्व रूप शब्द तब उस कुल रहित प्रभु में ही स्थित बना रहता। जब आवागमन, आकाश आदि कुछ भी ना

होतउ त्रिभवण जोति आपे निरंकारु ॥ वरनु भेखु असरूपु सु एको एको सबदु विडाणी ॥ साच बिना सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥ ६७ ॥ कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥ हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिऐ दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥ नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥ ६८ ॥ गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ ॥ गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥ गुरमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइ ॥ गुरमुखि निज घरि वासा होइ ॥ गुरमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥ गुरमुखि नानक एको जाणै ॥ ६९ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइआ न जाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ ॥ बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि ॥ नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥ ७० ॥ गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ गुरमुखि साचु रखिआ उर धारि ॥ गुरमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥ गुरमुखि दरगह न आवै हारि ॥ गुरमुखि मेलि मिलाए सुो जाणै ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै ॥ ७१ ॥ सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होई ॥ नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥ बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥ सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥ करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥ ७२ ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै ॥ साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥ मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥ अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥ नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥ ७३ ॥ १ ॥

होता तो तीनों लोकों में वह निराकार प्रभु ज्योति स्वरूप में ही फैला रहता। वर्णों, वेशों और रूपों से परे वह एक ही प्रभु आश्चर्यपूर्ण शब्द के रूप में ही है। हे नानक, उस सत्य शब्द ब्रह्म को जाने बिना कोई भी पवित्र और सच्चा नहीं हो सकता तथा यह कथा वार्ता भी वास्तव में अकथनीय है।। ६७ ।। (प्रश्न) हे बलशाली नानक, अब यह बताओ कि किस-किस विधि से यह संसार उत्पन्न होता है और किस किस दुख के कारण यह नष्ट होता रहता है। (उत्तर) हे बलवान योगी, यह संसार घोर अहंकार में ही उत्पन्न होता है और प्रभु-नाम भूल जाने से ही यह दुख पाता और विनष्ट हो जाता है। यदि व्यक्ति गुरमुख हो जाए तो वह ज्ञान तत्व का चिंतन करता है और शब्द के माध्यम से अहंकार को जला देता है। अब उसका तन मन निर्मल हो जाता है उसकी वाणी निर्मल हो जाती है और वह सत्य में लीन बना रहता है। वह नाम में ही लीन बना रहकर वैराग्यवान बना रहता है और उसने सत्य को हृदय में धारण किया होता है। हे नानक, प्रभु-नाम अर्थात उसके गुणों को जाने और धारण किये बिना कभी भी योग नहीं हो सकता ; इस तथ्य को तुम हृदय में अच्छी तरह विचार कर देख लो।। ६८ ।। कोई बिरला ही गुरमुख बनकर सत्य शब्द का चिंतन करता है। गुरमुख के लिये ही सच्ची वाणी प्रगट होती है। गुरमुख का ही मन उसमें भीगता है और कोई बिरला ही उस रहस्य को समझता है। गुरमुख का ही वास्तव में अपने मूल घर अर्थात् स्वरूप में निवास होता है। गुरमुख व्यक्ति ही योगी बनकर योग की वास्तविक विधि को जान लेता है और हे नानक, गुरमुख तो केवल उस एक प्रभु को ही जानता मानता है।। ६९ ।। सच्चे गुरु (प्रभु) के सुमिरन के बिना योग नहीं होता और सच्चे गुरु से भेंट किये बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती। सच्चे गुरु के मिलाप के बिना प्रभु नाम भी नहीं पाया जा सकता और सच्चे गुरु से मिले बिना महा दुख मिलता ही रहता है। सच्चे गुरु के मिलाप से विहीन व्यक्ति के लिये अहंकार का घोर अंधकार ही बना रहता है और हे नानक, उस गुरु के बिना व्यक्ति अपने जीवन को हारकर मर खप जाता है।। ७० ।। अहंकार को मारकर गुरमुख अपने मन को जीत लेता है और गुरमुख ने सदैव सत्य को ही अपने हृदय में धारण किया होता है। यम को मारकर अर्थात् मौत का भय समाप्त करके गुरमुख ने इस संसार को जीत लिया होता है और गुरमुख प्रभु के दरबार में कभी हारकर नहीं लौटता। गुरमुख व्यक्ति का संयोग बनाकर वह उसका मेल मिलाता है और इसकी विधि को वह खुद ही जानता है। हे नानक, गुरमुख ही शब्द के माध्यम से अपने को और उस प्रभु को पहचानता है।। ७१ ।। हे अवधूत योगी, तू इस सारी गोष्ठी के सार तत्व को सुन ले कि प्रभु नाम के बिना योग सम्पन्न नहीं होता। जो नाम में रंगे हुए सदैव उसी में मस्त बने रहते है उनको प्रभु नाम के माध्यम से ही सुख प्राप्त होता है। प्रभु-नाम से ही सब कुछ प्रकट होता है और प्रभु नाम से ही सूझ बुद्धि प्राप्त होती है। प्रभु-नाम से विहीन अनेकों लोग अनेकों प्रकार के स्वांग बनाए रहते हैं और वह सच्चा प्रभु स्वयं ही उन्हें भटकाता रहता है। हे योगी, सच्चे गुरु से ही नाम प्राप्त किया जाता है और योग की युक्ति समझ आती है। हे नानक, सभी लोग मन में विचार कर देख लो कि प्रभु-नाम के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती।। ७२ ।। हे प्रभु, तेरी अवस्था और तेरी सीमा को तो केवल तू ही जानता है ; उसका भला कोई क्या बखान कर सकता है। तू स्वयं ही गुप्त रूप से बना रहता है, तू स्वयं ही प्रकट हो जाता है और तू स्वयं ही सभी रंगों का आनन्द लेता है। अनेकों साधक सिद्ध तथा कथित गुरु और चेले तेरे हुकुम के अन्तर्गत ही तुझे खोजते फिर रहे हैं। वे तेरे नाम को प्राप्त करने की भिक्षा माँगते है और तेरे दर्शन के लिये कुर्बान होने को तैयार बने रहते हैं। अविनाशी प्रभु ने यह सारा खेल स्वयं ही बनाया है परन्तु गुरमुख बनकर ही इसकी समझ पड़ती है। हे नानक, सभी युगों में वह प्रभु स्वयं ही कार्यशील है और उसके बिना अन्य कोई नहीं है।। ७३ ।। १ ।।

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली की वार महला ३ ॥ जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥ सलोकु मः ३ ॥ सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाए भाउ ॥ नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥ हउमै एहो बीजु है सहसा गइआ विलाइ ॥ ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे सो खाइ ॥ अंभै सेती अंभु रलिआ बहुड़ि न निकसिआ जाइ ॥ नानक गुरमुखि चलतु है वेखहु लोका आइ ॥ लोकु कि वेखै बपुड़ा जिस नो सोझी नाहि ॥ जिसु वेखाले सो वेखै जिसु वसिआ मन माहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजे दुखु खाइ ॥ दुख विचि जंमै दुखि मरै हउमै करत विहाइ ॥ आवणु जाणु न सुझई अंधा अंधु कमाइ ॥ जो देवै तिसै न जाणई दिते कउ लपटाइ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥ २ ॥ मः ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिस नो आपे मेले सोइ ॥ सुखै एहु बिबेकु है अंतरु निरमलु होइ ॥ अगिआन का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइ ॥ नानक एको नदरी आइआ जह देखा तह सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जांई ॥ सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥ आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥ चंदु सूरजु दुइ चानणे पूरी बणत बणाई ॥ आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई ॥ १ ॥ वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सलोकु ॥ कबीर महिदी करि के घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पुछीआ कबहू न लाई पाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ नानक महिदी करि कै रखिआ सो सहु नदरि करेइ ॥ आपे पीसै आपे घसै आपे ही लाइ लएइ ॥ इहु पिरम पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वेकी स्रिसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइ समाही ॥ आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ॥ सभना तेरा जोरु है जिउ भावै तिवै चलाही ॥ तुधु जेवड मै नाहि को किसु आखि सुणाई ॥ २ ॥ सलोकु मः ३ ॥ भरमि

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। रामकली की वार महला ३ ।।

इस वार (रचना) को पूरवाण राजपूत के बहादुर पुत्रों जोधा और बीरा की वार की धुन पर गाने का आदेश है।।

श्लोक महला ३।। सच्चा गुरु पूर्ण शान्ति का खेत है और जिसे वह इस खेत के साथ प्यार करवाता है वही इसमें प्रभु नाम रूपी बीज बोता है, नाम भी इसमें से उत्पन्न होता है और अन्त में इसको बोने वाला व्यक्ति इसी में लीन हो जाता है। अहंकार भय और संशय का बीज है इसलिये समझदार व्यक्ति ना तो ऐसे बीज बोता है और ना ही उसे उगने देता है ; प्रभु जो उसे देता है वह उसी को खाता है। जल जल में मिलकर फिर उससे अलग नही हो सकता। हे नानक, गुरमुखों के कौतुक अर्थात जीवन के खेल भी कुछ ऐसे ही होते हैं जिन्हें ऐ दुनियां के लोगो, उनके पास आकर ध्यान से देखो। परन्तु जिसे समझ ही नहीं है वह बेचारा लोग उसे क्या देखेगा। प्रभु जिसे दिखाता है वही देख पाता है और उसी के मन में प्रभु बसा होता है।। १ ।। महला ३ ।। मनमुख व्यक्ति दुख का खेत है जिसमें वह दुख ही बोता है और दुख ही खाता है। दुख में वह जन्म लेता है दुख में ही वह मर जाता है और अहंकार में ही अपनी सारी आयु व्यतीत कर देता है। उसे आवागमन की कोई चिंता नहीं होती और अंधा बना वह अज्ञान की कमाई ही करता रहता है। जो प्रभु देने वाला है उसे वह जानता नहीं और उसके दिये हुए पदार्थों से ही यह लिपटा रहता है। हे नानक, पहले से ही जो प्रभु की ओर से हुकुम लिखा है उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता।। २ ।। महला ३ ।। जिसे वह स्वयं मिला देता है उसे सच्चे गुरु से मिलकर सदैव सुख ही प्राप्त होता रहता है। सुख के पीछे विवेक ज्ञान यह है कि व्यक्ति का अन्तर्मन पवित्र हो जाता है। अज्ञान का भ्रम कट जाता है और ज्ञान प्राप्त हो जाता है। हे नानक, अब तो वह एक प्रभु ही नजर आने लगता है और जिधर भी देखा जाता है उधर वह ही दिखाई देता है।। ३ ।। पउड़ी।। सच्चे प्रभु ने यह संसार रूपी तख्त अपने बैठने के स्थान के तौर पर बनाया है। शब्द-गुरु के माध्यम से यही बताया जाता है कि वह प्रभु सब कुछ स्वयं ही है। उसी ने ही सारी कुदरत (प्रकृति) की रचना की है और उसे ही अपना महल तथा लोगों के लिये सराय के रूप में बनाया है। चन्द्रमा और सूर्य उसने दो दीपक बनाकर अपने कार्य को सम्पूर्ण किया है। वह स्वयं ही देखता सुनता है और शब्द गुरु के माध्यम से उसका सुमिरन किया जाता है।। १ ।। हे सच्चे सम्राट प्रभु, तू धन्य है और तू अपने सच्चे नाम के कारण ही सच्चा न्याय करने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। श्लोक।। कबीर का कथन है कि मैंने अपने को मेंहदी की तरह बार-बार पीसकर अर्थात बहुत मेहनत करते हुए अपने जीवन को बनाए रखा परन्तु हे मेरे प्रियतम, तूने तो कभी मेरी ओर ध्यान ही नहीं दिया और मुझे कभी भी अपने चरणों से नहीं लगाया।। १ ।। महला ३ ।। हे नानक, हमने तो अपने आपको मेंहदी बनाकर रख दिया है और जब उसकी कृपा होगी वह स्वयं ही इस मेंहदी को पीसकर घिस कर लगा लेगा अर्थात वह जब भी प्रसन्न होकर स्वीकार करता है तो इसे अपनी साधना ना मानकर उसकी कृपा ही समझनी चाहिये। यह प्रेम का प्याला तो उस मालिक का है वह जिसे चाहता है उसे ही देता है।। २ ।। पउड़ी।। अनेक प्रकार की सृष्टि उसने उत्पन्न की है और यह सारी सृष्टि उसके हुकुम में ही आती जाती है और उसी में लीन होती रहती है। वह स्वयं उसे देखकर प्रसन्न होकर रहता है और उसके बिना अन्य कोई नहीं है। हे प्रभु, तुझे जैसा अच्छा लगता है तू उसे वैसे ही बचा ले और शब्द गुरु के माध्यम से उसका रहस्य समझा दे। सबमें तेरा ही बल कार्यशील है तू जैसे उन्हें चाहता है चलाता है। तेरे बराबर अन्य कोई भी नहीं है इसलिये मैं किसके आगे पुकार लगाऊँ।। २ ।। श्लोक महला ३ ।। मैंने भ्रमों में भटकती

भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥ सो सहु सांति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥ गुर परसादी हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उर धारि ॥ नानक घरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती करतारि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ धंधा धावत दिनु गइआ रैणि गवाई सोइ ॥ कूड़ु बोलि बिखु खाइआ मनमुखि चलिआ रोइ ॥ सिरै उपरि जम डंडु है दूजै भाइ पति खोइ ॥ हरि नामु कदे न चेतिओ फिरि आवण जाणा होइ ॥ गुर परसादी हरि मनि वसै जम डंडु न लागै कोइ ॥ नानक सहजे मिलि रहै करमि परापति होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इकि आपणी सिफती लाइअनु दे सतिगुर मती ॥ इकना नो नाउ बखसिओनु असथिरु हरि सती ॥ पउणु पाणी बैसंतरो हुकमि करहि भगती ॥ एना नो भउ अगला पूरी बणत बणती ॥ सभु इको हुकमु वरतदा मंनिऐ सुखु पाई ॥ ३ ॥ सलोकु ॥ कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ किउ करि इहु मनु मारीऐ किउ करि मिरतकु होइ ॥ कहिआ सबदु न मानई हउमै छडै न कोइ ॥ गुर परसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइ ॥ नानक जिस नो बखसे तिसु मिलै तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ २ ॥ मः ३ ॥ जीवत मरणा सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइ ॥ भै का संजमु जे करे दारू भाउ लाएइ ॥ अनदिनु गुण गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ दूजा भाउ रचाइओनु त्रै गुण वरतारा ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाइअनु हुकमि कमावनि कारा ॥ पंडित पड़दे जोतकी ना बूझहि बीचारा ॥ सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजणहारा ॥ जिसु भावै तिसु बखसि लैहि सचि सबदि समाई ॥ ४ ॥ सलोकु मः ३ ॥ मन का झूठा झूठु कमावै ॥ माइआ नो फिरै तपा सदावै ॥ भरमे भूला सभि तीरथ गहै ॥ ओहु तपा कैसे परम गति लहै ॥ गुर परसादी को सचु कमावै ॥ नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सो तपा जि इहु तपु घाले ॥ सतिगुर नो मिलै सबदु समाले ॥ सतिगुर की सेवा इहु तपु परवाणु ॥ नानक सो तपा दरगहि पावै माणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ राति दिनसु उपाइअनु संसार

हुई ने सारा संसार छान मारा है और मैं ढूँढ-ढूँढ कर थक गयी हूँ। वह प्रियतम शान्ति प्रदान नहीं करता और उसके आगे कोई चारा भी नहीं चलता। गुरु की कृपा से ही प्रभु का सुमिरन किया जाता है। और उसे हृदय में धारण करके रखा जाता है। हे नानक, जब कर्ता प्रभु ने कृपा कर दी तो मुझे घर बैठे ही वह प्रियतम मिल गया है।। १ ।। महला ३ ।। दौड़ते भागते हुए ही दिन बीत गया और रात सोकर गँवा दी गई। झूठ बोलते हुए व्यक्ति ज़हर खाता रहा और मनमुख बनकर रोता हुआ यहाँ से चला जाता है। ऐसे व्यक्ति के सिर पर यम का डंडा बना ही रहता है और वह द्वैतभाव में पड़ा अपना सम्मान गँवा देता है। उसने प्रभु-नाम का सुमिरन कभी भी नहीं किया होता इसलिये उसका आवागमन बना ही रहता है। गुरु की कृपा से जब प्रभु मन में बस जाता है तो फिर उसे यम का डंडा स्पर्श नहीं करता। हे नानक, स्वभाविक रूप से ही जीव का प्रभु से मिलाप होता है और ऐसा उस प्रभु की कृपा से ही होता है।। २ ।। पउड़ी ।। सच्चे गुरु के माध्यम से बुद्धि प्रदान करके अनेकों को उसने अपने गुणानुवाद में लगा लिया है। अनेकों को उस स्थिर और सत्य स्वरूप प्रभु ने अपना नाम प्रदान कर दिया है। पवन, पानी, अग्नि सभी उस प्रभु के हुकुम में ही प्रभु की भक्ति कर रहे हैं। इन सबको उस प्रभु का भय बना रहता है और प्रभु ने ही इस प्रकार की विधि और रचना बनाई हुई है। सब में एक उस प्रभु का हुकुम ही कार्यशील है जिसे मानने से सुख प्राप्त होता है।। ३ ।। श्लोक।। हे कबीर, प्रभु की जाँच परख ऐसी है कि झूठा व्यक्ति उसके सामने ठहर नहीं पाता। प्रभु की कसौटी पर वही खरा उतरता है जो सांसारिकता की ओर से मर कर आध्यत्मिकता में जीवित बना रह कर मर जीवा बन जाता है।। १ ।। महला ३ ।। इस मन को कैसे मारा जाए और कैसे सांसारिकता के संदर्भ में मृतक बना जाए। यह कहे हुए उपदेश को मानता नहीं और किसी चीज का भी अभिमान छोड़ता नहीं। गुरु की कृपा से जिसका अभिमान छूट जाए वही वास्तव में जीवन-मुक्त (मरजीवा) हो जाता है। हे नानक, जिस पर कृपा करे उसी को ही यह पद प्राप्त होता है और उसे फिर कोई भी रूकावट सामने नही आती।। २ ।। महला ३ ।। जीवित बने हुए मरने की बात तो सभी कहते हैं परन्तु यह जीवन-मुक्ति होती कैसे है। यदि प्रभु-भय का संयम अपनाया जाए और प्रेम रूपी औषधि को लिया जाए ; स्वभाविक सुख में बना हुआ यदि हर दिन उस प्रभु के गुणों का गायन करे तो प्रभु नाम के माध्यम से इस विष रूपी संसार सागर को यह जीव पार कर जाता है। हे नानक, जिस पर प्रभु कृपा करता है वही गुरमुख बनकर जीवन-मुक्ति प्राप्त करता है।। ३ ।। पउड़ी ।। प्रभु ने ही द्वैतभाव की रचना की है और रजो, तमो, सतो आदि तीनों गुणों को कार्यशील किया है। उस प्रभु ने ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश को उत्पन्न किया है जो उस प्रभु के हुकुम में ही काम कर रहें है। पंडित और ज्योतिषी पढ़ते रहते हैं परन्तु उस प्रभु के चिंतन के सार तत्व को नहीं जान पाते। हे सच्चे रचना कर्ता प्रभु, यह सब तेरा ही खेल है। जो तुझे भा जाता है तू उसी पर कृपा करके उसे क्षमा कर देता है और वह सत्य शब्द में लीन हो जाता है।। ४ ।। श्लोक महला ३ ।। मन से झूठा व्यक्ति झूठा आचरण ही करता है ; दौड़ता भागता तो वह धन सम्पदा के लिये है परन्तु अपने आपको तपस्वी कहलाता है। भ्रमों में भटकता हुआ वह सभी तीर्थों का आसरा पकड़े रहता है। इस प्रकार का तपस्वी भला परम गति को कैसे प्राप्त कर सकता है। गुरु की कृपा से ही कोई सत्याचरण वाला बनता है और हे नानक, ऐसा तपस्वी मोक्ष प्राप्त कर लेता है।। १ ।। महला ३ ।। तपस्वी वह है जो इस प्रकार की तपस्या करे कि सच्चे गुरु को मिलकर शब्द को हृदय में सम्भाले रहे अर्थात् प्रभु-नाम का सुमिरन करता रहे। सच्चे गुरु की सेवा, वह तपस्या है जो स्वीकृत होती है और हे नानक, वह तपस्वी प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त करता है।। २ ।। पउड़ी ।। सांसारिक व्यवहार के लिये प्रभु ने रात और दिन बनाए हैं।

की वरतणि ॥ गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासणि ॥ हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि त्रिणि ॥ सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि ॥ सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥ ५ ॥ सलोक मः ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ तिस दै दितै नानका तेहो जेहा धरमु ॥ अभै निरंजनु परम पदु ता का भूखा होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥ उदरै कारणि आपणे बहले भेख करेनि ॥ अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥ भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंबरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ॥ घरु दरु सभो सचु है जिसु विचि सचा नाउ ॥ सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ ॥ सचा आपि तखतु सचा बहि सचा करे निआउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई ॥ ६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ रैणाइर माहि अनंतु है कूड़ी आवै जाइ ॥ भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥ नानक नउ निधि पाईऐ जे चलै तिसै रजाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सहजे सतिगुरु न सेविओ विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ रसना हरि रसु न चखिओ कमलु न होइओ परगासु ॥ बिखु खाधी मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ इकसु हरि के नाम विणु ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ जा आपे नदरि करे प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु ॥ ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरू की कबहि न छोडै पासु ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै तिव हरि गुणतासु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ॥ सिम्रिति सासत साजिअनु पाप पुंन गणत गणीनी ॥ जिसु बुझाए सो बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई ॥ ७ ॥ सलोक मः ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ जो सहि रते आपणे तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥ भै पइऐ

गुरु की मति में चलते हुए हृदय में प्रकाश होता है और अंधकार का विनाश हो जाता है। प्रभु के हुकुम में ही सब कुछ बनाया गया है और वह प्रभु ही वनों और तिनके-तिनके में बसा हुआ है। सब कुछ वह प्रभु स्वयं ही है इसलिये गुरमुख बनकर सदैव प्रभु-नाम का जाप करते रहो। शब्द के माध्यम से ही उसके रहस्य का पता लगता है और वह सच्चा प्रभु स्वयं ही इस तथ्य को समझाता है।। ५ ।। श्लोक महला ३ ।। साधु अथवा द्वार पर आकर माँगने वाला फकीर उसको नहीं कहा जाता है जिसके चित्त में भ्रम बना हुआ है। हे नानक, ऐसे साधु को दान देने का फल भी भ्रम को उत्पन्न करने वाला है अर्थात बुरा ही होता है। जो उस अभय, और प्रभु के परम पद का भूखा होता है और उसी का दान भी माँगता है तो हे नानक, इस प्रकार का भोजन देने और लेने वाला कोई बिरला ही होता है।। १ ।। महला ३ ।। साधु उन्हें नहीं कहा जाता जो दूसरों के घरों में जाकर भोजन करते हैं। ये तो अपने पेट के लिये अनेकों वेशों को धारण करने वाले होते हैं। हे नानक, वास्तविक साधु तो वे हैं जो अपनी आत्मा में प्रवेश करते हैं ; वही अपने मालिक को खोज लेते हैं और अपने वास्तविक घर अर्थात मूल स्वरूप में निवास बनाए रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। आकाश, धरती से वियुक्त किया हुआ है और इन दोनों के बीच में हर वस्तु को उस प्रभु ने अपना सच्चा आसरा प्रदान किया है। उस प्रभु का घर द्वार सभी कुछ सत्य है और उस सबमें सच्चा नाम ही स्थित है। सब ओर उस प्रभु का सच्चा हुकुम ही कार्यशील है और गुरमुख बनकर ही उस सत्य में लीन हुआ जाता है। वह प्रभु स्वयं सत्य है उसका सिंहासन भी सत्य है और उसी पर वह सत्य प्रभु बैठकर न्याय करता है। सभी ओर सत्य ही सत्य कार्यशील है और गुरमुख बनकर समझ में ना आने वाला अदृष्ट सत्य भी समझ आ जाता है।। ६ ।। श्लोक मः ३ ।। संसार रूपी समुद्र में वह अनन्त प्रभु व्याप्त है तथा आवागमन में पड़ी हुई यह सृष्टि झूठी अर्थात नाशवान है। यह अपनी ही इच्छा में चलती रहती है और इसीलिये इसे बहुत अधिक सजा भी मिलती है। वास्तव में इस संसार समुद्र में ही सब कुछ है परन्तु प्रभु की कृपा से ही इसमें से कुछ पल्ले पड़ता है। हे नानक, यदि उस प्रभु की रज़ा में चला जाए तो इसी में से नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं।। १ ।। महला ३ ।। स्वाभाविक रूप से ही अर्थात प्रेमपूर्ण होकर जिसने सच्चे गुरु का सुमिरन नहीं किया उसका जीवन अहंकार में ही विनष्ट हो जाता है। उसकी जीभ हरि रस का पान नहीं कर पाती और उसका हृदय कमल खिल नहीं पाता। विषय विकारों का ज़हर खाते हुए मनमुख व्यक्ति मर जाता है और माया के मोह में पड़ा वह नष्ट हो जाता है। एक प्रभु के नाम से विहीन बने रहने वाले का जीवन और निवास दोनों ही धिक्कार योग्य हैं। यदि सच्चा प्रभु स्वयं कृपा दृष्टि करे तो ऐसा व्यक्ति भी प्रभु के सेवकों का सेवक बना रहता है। फिर वह सच्चे गुरु की सदैव सेवा करता रहता है और कभी भी सच्चे गुरु का साथ नहीं छोड़ता। जिस प्रकार जल में कमल अलिप्त बना रहता है उसी तरह प्रभु का सेवक भी गृहस्थ में बना रहकर भी गृहस्थ जीवन की सभी जिम्मेदारियाँ निभाता हुआ उनसे अलिप्त बना रहता है। हे नानक, प्रभु के सेवक का सब कुछ किया कराया तो वही होता है जैसा गुणों के भण्डार उस प्रभु को अच्छा लगता है।। २ ।। पउड़ी ।। छत्तीस युगों अर्थात अनेकों युगों तक घोर अंधकार था और उस प्रभु ने स्वयं ही उपक्रम (उद्यम) किया। स्वयं ही उसने सृष्टि की उत्पत्ति की और स्वयं ही इसमें चलते रहने की दिव्य बुद्धि इसे प्रदान की। पाप और पुण्यों की गिनती करने वाले स्मृतियों, शास्त्रों आदि की रचना उसी ने की परन्तु वह जिसे इस रहस्य को समझाता है वही इसे समझ पाता है और वही सच्चे शब्द के माध्यम से सन्तुष्ट बना रहता है। प्रभु स्वयं ही सबमें कार्यशील है और स्वयं ही कृपा करके अपने से मिला लेता है।। ७ ।। श्लोक महला ३ ।। यह शरीर सभी रक्त ही रक्त है और रक्त के बिना यह शरीर स्थित नहीं बना रह सकता। जो व्यक्ति अपने प्रियतम प्रभु में लीन बने हुए हैं उनमें वास्तव में लोभ रूपी रक्त नहीं होता। जब प्रभु के भय में रहा जाता है तो अभिमान से फूला हुआ यह शरीर कमजोर पड़ता है और इसमें से लोभ रूपी रक्त निकल जाता है।

तनु खीणु होइ लोभ रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जो रते हरि रंगु लाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥ गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ॥ भरमु गइआ ता जागिआ चूका अगिआन अंधारु ॥ तिस नो रूपु अति अगला जिसु हरि नालि पिआरु ॥ सदा रवै पिरु आपणा सोभावंती नारि ॥ मनमुखि सीगारु न जाणनी जासनि जनमु सभु हारि ॥ बिनु हरि भगती सीगारु करहि नित जंमहि होइ खुआरु ॥ सैसारै विचि सोभ न पाइनी अगै जि करे सु जाणै करतारु ॥ नानक सचा एकु है दुहु विचि है संसारु ॥ चंगै मंदै आपि लाइअनु सो करनि जि आपि कराए करतारु ॥ २ ॥ मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे सांति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ तिन जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिनी सतिगुर सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपि अलिपतु सदा रहै होरि धंधै सभि धावहि ॥ आपि निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ गुरमुखि सुखु पावहि ॥ निज घरि वासा पाईऐ सचि सिफति समावहि ॥ सचा गहिर गंभीरु है गुर सबदि बुझाई ॥ ८ ॥ सलोक मः ३ ॥ सचा नामु धिआइ तू सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमु न बूझै सचु ॥ नानक हरि का भाणा मंने सो भगतु होइ विणु मंने कचु निकचु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणनी ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ ओइ थाउ कुथाउ न जाणनी उन अंतरि लोभु विकारु ॥ ओइ आपणै सुआइ आइ बहि गला करहि ओना मारे जमु जंदारु ॥ अगै दरगह लेखै मंगिऐ मारि खुआरु कीचहि कूड़िआर ॥ एह कूड़ै की मलु किउ उतरै कोई कढहु इहु वीचारु ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए सभि किलविख कटणहारु ॥ नामु जपे नामो आराधे

जिस प्रकार अग्नि में पड़ी धातु शुद्ध हो जाती है उसी प्रकार प्रभु का भय दुर्मति की मैल को नष्ट कर देता है। हे नानक, ऐसे व्यक्ति ही सुन्दर हैं जो प्रभु के प्रेम रंग में लीन बने हैं।। १ ।। महला ३ ।। रामकली रागु में गायन किया हुआ प्रभु का गुणानुवाद जब मन में बस जाता है तो वास्तव में सच्चा शृंगार हो जाता है। शब्द गुरु के माध्यम से जब हृदय कमल खिल उठता है तो प्रभु भक्ति का भण्डार जीव को सौंप देता है। जब जीव का भ्रम छूट जाता है तो वह सावधान हो जाता है तथा उसके हृदय का अज्ञान रूपी अंधकार समाप्त हो जाता है। जिसका प्रभु के साथ प्यार बन जाता है वह अत्यन्त रूपवान हो जाता है। ऐसी सुन्दर जीव स्त्री सदैव अपने प्रियतम प्रभु के साथ रमण करती रहती है। मनमुख व्यक्ति इस प्रकार के शृंगार को नहीं जानते और उन सबको इस जीवन को हार कर यहाँ से जाना होता है। प्रभु की भक्ति से विहीन बने रहकर जो शृंगार करते हैं वे सदैव जन्मते-मरते हुए ख्वार होकर भटकते रहते हैं। संसार में उनको शोभा प्राप्त नहीं होती और आगे तो उनके साथ जो किया जाता है वह कर्ता प्रभु ही जानता है। हे नानक, जन्म मरण के चक्र में पड़ा तो यह संसार ही है और सदा स्थिर बना रहने वाला सत्य वह एक प्रभु ही है। अच्छे बुरे सबको प्रभु ने स्वयं ही कार्यो में लगाया है और वे भी वही करते है जो कर्ता प्रभु स्वयं कराता है।। २ ।। महला ३ ।। सच्चे गुरु के सुमिरन के बिना शान्ति नहीं आती और द्वैतभाव नहीं जाता। बेशक हम कितनी ही कामनाएं करते रहें लेकिन प्रभु की कृपा के बिना कुछ भी नहीं पाया जा सकता। जिनके अर्न्तमन में लोभ रूपी विकार बना है वे द्वैतभाव में पड़े भटकते रहते हैं। उनका जन्म लेना और मरना समाप्त नहीं होता और अहंकार में पड़े वे दुखी बने रहते हैं। जिन्होंने सच्चे गुरु में अपना चित्त लगा लिया है उनको किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। उन्हें ना तो यम का बुलावा आता है और ना ही वे किसी प्रकार का दुख सहते हैं। हे नानक, ऐसे व्यक्ति गुरमुख बनकर पार उतर जाते हैं और सत्य शब्द में लीन बने रहते हैं।। ३ ।। पउड़ी ।। प्रभु स्वयं तो सदैव अलिप्त बना रहता है तथा अन्य सभी धन्धों में पड़े हुए दौड़ भाग लगाए रहते हैं। वह प्रभु स्वयं तो दृढ़ और अटल है परन्तु अन्य सभी आते जाते रहते हैं। प्रभु नाम का सदैव जाप करते रहना चाहिये क्योंकि गुरमुख बने व्यक्ति ही सुख प्राप्त करते रहते हैं। वे ही अपने मूलस्वरूप में निवास प्राप्त कर लेते है और प्रभु के सच्चे गुणानुवाद में लीन बने रहते हैं। वह सच्चा प्रभु गहन और गम्भीर है ; उसे शब्द गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है।। ८ ।। श्लोक महला ३ ।। हे जीव, तू सच्चे नाम का ही सुमिरन कर क्योंकि सबमें वह सत्य ही कार्यशील है। हे नानक, जो प्रभु के हुकुम को जान जाता है वह ही सच्चा फल प्राप्त करता है। मुँह से तो व्यक्ति अनेकों बातें करता घूमता रहता है परन्तु उस प्रभु के हुकुम की सत्यता (अटलता) को नहीं समझता। हे नानक, प्रभु के हुकुम को जो मान लेता है वही सच्चा भक्त होता है अन्यथा बिना उस प्रभु को माने हुए सब कुछ कच्चा ही कच्चा बना रहता है।। १ ।। महला ३ ।। मनमुख व्यक्ति तो वास्तव में बोलना भी नही जानते क्योंकि उनके अन्दर काम, क्रोध और अहंकार बना रहता है। वे अच्छा बुरा भी नहीं जानते क्योंकि उनके अन्दर लोभ का विकार प्रबल बना रहता है। वे अपने स्वार्थ के लिये आकर, बैठकर बातें करते रहते हैं परन्तु अन्ततः उन्हें जालिम यम मार ही डालता है। जब आगे प्रभु दरबार में जीवन का लेखा जोखा माँगा जाता है तो ऐसे झूठे व्यक्तियों को मार मार कर फिर भटकाया जाता है। इस झूठे व्यक्ति की मल कैसे साफ हो इस बात को कोई विचार पूर्वक बताओ। सच्चा गुरु ही जब मिले तो वह प्रभु-नाम का सुमिरन कराये क्योंकि प्रभु-नाम ही सब पापों को काटने वाला है। जब प्रभु-नाम का ही जाप करे और प्रभु-नाम का ही सुमिरन करे तो

तिसु जन कउ करहु सभि नमसकारु ॥ मलु कूड़ी नामि उतारीअनु जपि नामु होआ सचिआरु ॥ जन नानक जिस दे एहि चलत हहि सो जीवउ देवणहारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तुधु जेवडु दाता नाहि किसु आखि सुणाईऐ ॥ गुर परसादी पाइ जिथहु हउमै जाईऐ ॥ रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ ॥ जिस नो बखसे तिसु देइ आपि लए मिलाईऐ ॥ घट अंतरि अंम्रितु रखिओनु गुरमुखि किसै पिआई ॥ ९ ॥ सलोक मः ३ ॥ बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥ जि सतिगुर भावै सु मंनि लैनि सेई करम करेनि ॥ जाइ पुछहु सिम्रिति सासत बिआस सुक नारद बचन सभ स्रिसटि करेनि ॥ सचै लाइ सचि लगे सदा सचु समालेनि ॥ नानक आए से परवाणु भए जि सगले कुल तारेनि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥ ओइ भाणै चलनि आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥ कूड़ु कुसतु कमावदे पर निंदा सदा करेनि ॥ ओइ आपि डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेनि ॥ नानक जितु ओइ लाए तितु लगे उइ बपुड़े किआ करेनि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभ नदरी अंदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ इकि कूड़ि कुसति लाइअनु मनमुख विगूती ॥ गुरमुखि सदा धिआईऐ अंदरि हरि प्रीती ॥ जिन कउ पोतै पुंनु है तिन्ह वाति सिपीती ॥ नानक नामु धिआईऐ सचु सिफति सनाई ॥ १० ॥ सलोकु मः १ ॥ सती पापु करि सतु कमाहि ॥ गुर दीखिआ घरि देवण जाहि ॥ इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ ॥ भावै आवउ भावै जाउ ॥ सासतु बेदु न मानै कोइ ॥ आपो आपै पूजा होइ ॥ काजी होइ कै बहै निआइ ॥ फेरे तसबी करे खुदाइ ॥ वढी लै कै हकु गवाए ॥ जे को पुछै ता पड़ि सुणाइ ॥ तुरक मंत्रु कनि रिदै समाहि ॥ लोक मुहावहि चाड़ी खाहि ॥ चउका दे कै सुचा होइ ॥ ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ जोगी गिरही जटा बिभूत ॥ आगै पाछै रोवहि पूत ॥ जोगु न पाइआ जुगति गवाई ॥ कितु कारणि सिरि छाई पाई ॥ नानक कलि का एहु परवाणु ॥ आपे आखणु आपे जाणु ॥ १ ॥ मः १ ॥ हिंदू कै घरि हिंदू आवै ॥ सूतु जनेऊ पड़ि गलि पावै ॥ सूतु पाइ करे बुरिआई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ मुसलमानु

ऐसे व्यक्ति को सभी प्रणाम करते हैं। झूठ का मल प्रभु-नाम से ही साफ किया जाता है और ऐसा व्यक्ति प्रभु नाम का सुमिरन करता हुआ सचिआर बन जाता है। हे दास नानक, यह खेल जिसके बनाए हुए हैं उस दाता प्रभु में लीन होकर सदैव जीवित बने रहो॥२॥पउड़ी॥ तेरे जैसा अन्य दाता कोई नहीं है इसलिये तेरे अलावा हम किसके आगे पुकार लगाएं। गुरु की कृपा से ही वह पाया जाता है और गुरु की कृपा से ही अहंकार चला जाता है। वह सब प्रकार के रसों और विषैले पदार्थो से उपर बना रहता है और उसी की शोभा बड़ी है। जिस पर कृपा करे वह उसी को देता है और वह स्वयं ही अपने से मिला लेता है। उसने हृदय के अन्दर ही अमृत रखा है और वह किसी गुरमुख को ही उसका पान कराता है॥ ६ ॥ श्लोक महला ३ ॥ जो पुत्र सपूत होते हैं वे अपने बाबा लोगों की अर्थात बुजुर्गों की कथाओं और वार्ताओं का अवश्य वर्णन करते रहते हैं। जो सच्चे गुरु को भाता है वे उसे मान लेते हैं और वे वैसा ही कर्म करते रहते है। सारी सृष्टि को उपदेश देने वाले नारद, शुकदेव, व्यास, स्मृतियों तथा शास्त्रों से भी पूछ कर देख लो वे सब यही बात बताएंगे। हे नानक, ऐसे सपूतों का इस सृष्टि में आना सफल होता है जो अपने सारे वंश को भी संसार सागर से पार उतार देते हैं॥ १ ॥ महला ३ ॥ जिसका गुरु अन्धा (अज्ञानी) है उसके सिक्ख (चेले) भी अन्धा काम ही करते हैं। वे सदैव अपनी मर्जी में ही चलते हैं और सदैव झूठ ही झूठ बोलते हैं। वे झूठ और असत्य का आचरण करते हुए सदैव पराई निन्दा करते रहते हैं। पराई निन्दा करने वाले वे स्वयं तो डूबते ही हैं साथ ही साथ अपने सारे वंश को भी डूबो देते हैं। हे नानक, वे बेचारे भी क्या करें, प्रभु ने जिधर उन्हें लगाया है वे उधर ही लगे हैं॥ २ ॥ पउड़ी॥ उस प्रभु ने जितनी सृष्टि बनाई है सारी को वह अपनी नजर के नीचे बनाए रखता है। कईयों को उसने झूठ और असत्य कार्यो में लगा रखा है और वे मनमुख सदैव नष्ट होते रहते हैं। अन्तर्मन में प्रेम लगाकर तथा गुरमुख बनकर सदैव उसका सुमिरन किया जाता है। जिनके अपने पल्ले वास्तविक पुण्य है उनके मुँह में सदैव प्रभु का गुणानुवाद बना रहता है। हे नानक, प्रभु के सच्चे गुणानुवाद के माध्मय से उस प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है॥ १० ॥ श्लोक महला १॥ तथाकथित दानी पाप द्वारा इकट्ठे किये धन के माध्यम से दान देने का ढोंग करते है; गुरु चेलों के घर में शिक्षा देने जाते हैं। स्त्री और पुरुष का प्रेम भी कमाए हुए धन के कारण ही है और यदि धन नहीं है तो दोनों में से कोई भी किधर आता जाता रहे एक दूसरे की परवाह नहीं करते। शास्त्र और वेद को भी वास्तविक रूप में कोई नहीं मानता और सभी अपने-अपने स्वार्थ की पूजा करते हैं। काजी बना बैठा व्यक्ति न्याय का ढोंग करता है और माला फेरता हुआ खुदा-खुदा कहता रहता है। रिश्वत लेकर वह दूसरे के हक को समाप्त कर देता है और यदि कोई उसके ऐसे आचरण के लिये पूछ बैठता है तो वह धर्म ग्रन्थों में से अपने कुकृत्य के पक्ष में कोई ना कोई पंकित पढ़ कर सुना देता है। विदेशी तुर्कों के मन्त्र (कलमा) को लोगों ने अपने हृदय में धारण किया है और एक दूसरे की चुगली करते हुए लोग एक दूसरे को लूट रहे हैं। ऐसा कोई बिरला ही हिन्दू होगा जो चौका देता हुआ वास्तव में आचरण और हृदय से पवित्र है। योगी भी घर गृहस्थी का आनन्द लेते हुए जटाओं में भभूत लगाए रहते हैं और उनके चेले (पुत्र) उनके आगे पीछे रोते चीखते रहते हैं। इन्होंने योग को नहीं समझा है और योग की युक्ति को भी नष्ट कर डाला है। किस कारण से इन्होंने सिर पर राख डाल रखी है। हे नानक, कलियुग का तो यही मापदण्ड बन गया है कि जो कहने वाला है वह स्वयं यह माने बैठा है कि वह सब कुछ जानता है॥ १ ॥ महला १ ॥ हिन्दू के घर में ब्राह्मण हिन्दू आता है और मन्त्र आदि पढ़कर सूत का जनेउ गले में डाल जाता है। सूत को धारण करके लोगों की बुराई की जाती है और इस प्रकार किया हुआ स्नान आदि कहीं भी सफल नहीं होता। मुसलमान भी अपनी प्रशंसा करता रहता है परन्तु वास्तविक गुरु पीर के बिना वह भी प्रभु के दरबार में स्वीकृत नहीं होता। उस प्रभु का रास्ता पूछ-पूछकर कोई बिरला ही वहाँ पहुँचता है और

करे वडिआई ॥ विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥ करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई ॥ मुंद्रा पाइ फिरै संसारि ॥ जिथै किथै सिरजणहारु ॥ जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ चीरी आई ढिल न काऊ ॥ एथै जाणै सु जाइ सिञाणै ॥ होरु फकड़ु हिंदू मुसलमाणै ॥ सभना का दरि लेखा होइ ॥ करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ सचो सचु वखाणै कोइ ॥ नानक अगै पुछ न होइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटु गड़ु ॥ अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु ॥ हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिड़ु ॥ मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कड़ु ॥ सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई ॥ ११ ॥ सलोक मः १ ॥ ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि ॥ ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥ ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिस नो देइ तिसु आइ मिलै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ सभि घट मेरे हउ सभना अंदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावै कउणु ॥ जिसहि भुलाई पंध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥ १ ॥ मः १ ॥ सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥ पुंन दान का करे सरीरु ॥ सो गिरही गंगा का नीरु ॥ बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ २ ॥ मः १ ॥ सो अउधूती जो धूपै आपु ॥ भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ अउहठ पटण महि भीखिआ करै ॥ सो अउधूती सिव पुरि चड़ै ॥ बोलै गोरखु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ३ ॥ मः १ ॥ सो उदासी जि पाले उदासु ॥ अरध उरध करे निरंजन वासु ॥ चंद सूरज की पाए गंढि ॥ तिसु उदासी का पड़ै न कंधु ॥ बोलै गोपी चंदु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ४ ॥ मः १ ॥ सो पाखंडी जि काइआ पखाले ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजाले ॥ सुपनै बिंदु न देई

सच्चे आचरण के बिना कोई भी स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सकता। योगी के घर पर मैं उससे योग की युक्ति के बारे में पूछने जाता हूँ तो वह बताता हैं कि उस प्रभु के कारण ही हमने कानों में मुद्राएँ धारण कर रखी हैं। मुद्राएँ पहनकर वह उस प्रभु के लिये संसार में भटकता है परन्तु वह सृजनहार प्रभु तो यहाँ वहाँ सब स्थानों मे ही है। वास्तव में जितने भी प्राणी हैं वे सभी अपने-अपने हिसाब से राहगीर (पथिक) ही हैं। जब जिसे मौत की चिट्ठी (बुलाहट) आ गई तो उसे यहाँ से जाने में जरा सी भी देर नहीं लगेगी। जो इस लोक में उस प्रभु को जानता है उस लोक में भी उसी की पहचान होती है अन्यथा हिन्दु, मुसलमान होना व्यर्थ की बातें हैं। उसके द्वार पर सबका लेखा-जोखा होता है और सच्चे आचरण के बिना कोई भी संसार सागर से पार नहीं उतरता। यदि कोई सत्य में लीन होकर सत्य का ही बखान करता हुआ उसी के अनुसार आचरण बनाए रहता है तो उसकी आगे पहुँचने पर कोई जाँच पड़ताल नहीं होती।। २ ।। पउडी।। इस शरीर रूपी मजबूत किले को तो उस प्रभु का घर ही कहना चाहिये। इसके अन्दर ही रत्न, जवाहिरात आदि हैं और गुरमुख व्यक्ति प्रभु-नाम के माध्यम से इनके बारे में जान लेता है। प्रभु का घर यह शरीर अत्यन्त सुन्दर है इसलिये हे जीव, तू प्रभु नाम का सुमिरन करता रह। मनमुख व्यक्ति तो स्वयं ही भटकते रहते हैं और धन सम्पदा के मोह मे दुखी बने रहते हैं। सब लोगों का मालिक एक प्रभु है और पूर्ण भाग्य से ही उसे पाया जाता है।। ११ ।। श्लोक महला १ ।। दुखी होने में और सुखों में लीन बने रहने में तथा पानी के जीव जन्तुओं की तरह रहने में भी कोई सिद्धि की बात नहीं। सिर के केशों को मुंडवाने से भी कोई सिद्धि नहीं है और देश देशान्तरों में भटकने तथा पढ़ने-पढ़ाने में भी कोई सत्य-सिद्धि नहीं है। वृक्षों, पत्थरों की तरह स्थिर होने में भी कोई सिद्धि नहीं है और जो अपने आपको कटवाते रहते हैं वे वास्तव में दुख ही सहते हैं कोई सिद्धि प्राप्त नहीं करते। जंजीरों से बँधे हाथी को भी कोई सिद्धि नहीं मिलती और इधर-उधर घास चरती गाय को भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। वास्तव में जिस प्रभु के हाथ में सिद्धियाँ है यदि वह स्वयं देता है और जिसे देता है उसे ही प्राप्त होती हैं। हे नानक, बड़प्पन उसी को प्राप्त होता है जिसके हृदय में शब्द रमण करता रहता है अर्थात जो प्रभु का सुमिरन करता है। प्रभु का कथन है कि घट-घट में मैं बसता हूँ और ये सभी हृदय मेरे ही हैं परन्तु वह जिसे भटकाता है उसके बारे मे उसे क्या कहा जाए। जिसे वह रास्ता दिखा देता है उसे भला भटकाने वाला कौन रह जाता है और जिसे प्रारम्भ से ही रास्ता भटका दिया है तो फिर उसे रास्ता दिखाने वाला कौन बचता है।। १ ।। महला १ ।। वास्तव में गृहस्थी वह है जो इन्द्रियों पर काबू रखता हो; वह जप, तप और संयम की भिक्षा माँगता है। दान और पुण्य को वह अपना शरीर समझता है और वास्तव में ऐसा गृहस्थी गंगा जल की तरह शुद्ध और पवित्र होता है। वह सत्य स्वरूप ईश्वर के ही नाम का सुमिरन करता रहता है और उसका ईश्वर रूपी परम तत्व रूप रेखा और आकार से परे होता है।। २ ।। वास्तविक अवधूत (विरक्त योगी) वह है जो अपने अभिमान भाव को जला डाले। अपने कष्टों को ही भिक्षा का भोजन बनाकर स्वीकार करे। वह हृदय रूपी नगर में ही ज्ञान की भिक्षा माँगे तो ऐसा विरक्त अवधूत वास्तव में प्रभु के देश में जा पहुँचता है। गोरख सत्य स्वरूप परमात्मा का ही सुमिरन करता है जिसका परमतत्व रूप में कोई आकार नहीं होता।। ३ ।। महला १ ।। वास्तव में तटस्थ और उदासीन वह है जो हृदय से आशाओं के प्रति उदासीन बना रहता है। वह नीचे उपर सब ओर उस प्रभु के वास को ही अनुभव करे। अपने अन्दर चाँद और सूरज अर्थात् शान्ति और ज्ञान की उष्णता पैदा करे तब इस प्रकार के उदासीन व्यक्ति की शरीर रूपी दीवार कभी गिरती नहीं। गोपीचन्द योगी उस सत्य स्वरूप परमतत्व की बात कहता है जिसका कोई रूप और आकार नहीं होता।। ४ ।। महला १ ।। वास्तव में सफाई करने वाला वह है जो शरीर को पापों से बचाए रखता है अर्थात उसे स्वच्छ बनाए रहता है। वह शरीर की तृष्णा रूपी अग्नियों में से ही परब्रह्म का ज्ञान प्रज्जवलित करता है। स्वप्न में भी अपने शरीर की शक्ति को

झरणा ॥ तिसु पाखंडी जरा न मरणा ॥ बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ५ ॥ मः १ ॥ सो बैरागी जि उलटे ब्रहमु ॥ गगन मंडल महि रोपै थंमु ॥ अहिनिसि अंतरि रहै धिआनि ॥ ते बैरागी सत समानि ॥ बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ परम तंत महि रेख न रूपु ॥ ६ ॥ मः १ ॥ किउ मरै मंदा किउ जीवै जुगति ॥ कंन पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ आसति नासति एको नाउ ॥ कउणु सु अखरु जितु रहै हिआउ ॥ धूप छाव जे सम करि सहै ॥ ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ छिअ वरतारे वरतहि पूत ॥ ना संसारी ना अउधूत ॥ निरंकारि जो रहै समाइ ॥ काहे भीखिआ मंगणि जाइ ॥ ७ ॥ पउड़ी ॥ हरि मंदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥ मानस देह गुर बचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ॥ बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता ॥ मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता ॥ सभ महि इकु वरतदा गुर सबदी पाइआ जाई ॥ १२ ॥ सलोक मः ३ ॥ मूरखु होवै सो सुणै मूरख का कहणा ॥ मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ मूरखु ओहु जि मुगधु है अहंकारे मरणा ॥ एतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ गुरमुखि होइ सु करे वीचारु ओसु अलिपतो रहणा ॥ हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जो देइ सु सहणा ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥ लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥ तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥ अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥ कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ हरि की कीमति ना पवै किछु कहणु न जापै ॥ गुर परसादी सालाहीऐ हरि भगती रापै ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहंकारु गवापै ॥ सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई ॥ १३ ॥ सलोकु मः १ ॥ सहंसर दान दे इंद्रु रोआइआ ॥ परस रामु रोवै घरि आइआ ॥ अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ ऐसी दरगह मिलै सजाइ ॥ रोवै रामु

नष्ट ना होने दे ऐसे शरीर को धोने सँवारने वाले को फिर बुढ़ापा और मौत नहीं आती। चरपट योगी भी सत्य स्वरूप परमात्मा का सुमिरन करता है जिसका परमतत्व रूप में कोई आकार नहीं होता ।। ५ ।। महला १ ।। असली बैरागी वो है जो ब्रह्म को अपने मन की तरफ उल्टा कर ले आए और उसे अपने गगन मंडल में अर्थात दशम द्वार में स्तम्भ रूप में धारण कर ले। दिन रात वह अपने अन्दर ध्यान में लीन बना रहे तो ऐसा वैरागी सत्य परमात्मा का ही रूप हो जाता है। भरथरी योगी भी सत्य रूप प्रभु का ही सुमिरन करता है जो परम तत्व है और जिसकी कोई रूप रेखा नहीं है।। ६ ।। महला १ ।। कान फड़वाकर योगियों का भोजन खाने से क्या लाभ है। इससे बुराई कैसे मर सकती है और वास्तविक जीवन की युक्ति कैसे प्राप्त हो सकती है। एक प्रभु का नाम ही संसार से पहले और संसार के अस्तित्व में आने के बाद स्थित बना रहता है। वह कौन सा अक्षर है जिससे हृदय शान्त बनकर टिका रहे। हे योगी, यदि धूप और छाँव को अर्थात सुख और दुख को तू समान रूप से सहता रहे तभी नानक कहता है कि ऐसा योगी ही वास्तव में अपने गुरु का सुमिरन करता रहता है। योगियों के चेले तो केवल छः वेशों में ही कार्यशील बनकर लीन बने हुए हैं। वास्तव में ना वे संसारी व्यक्ति हैं और ना वे विरक्त हैं। जो व्यक्ति वास्तव में प्रभु में लीन बना है वह भला कहीं पर भी भिक्षा माँगने क्यों जाएगा अर्थात उसे भिक्षा माँगने की जरूरत ही नहीं रहेगी और वह स्वयं काम करता हुआ अपनी रोजी रोटी कमाएगा।। ७।। पउड़ी।। प्रभु का घर वही कहा जाता है जहाँ जाकर प्रभु को जाना जाता है। गुरु के उपदेश से वह इसी मानव जीवन में ही प्राप्त हो जाता है और उस प्रभु को सभी आत्माओं में पहचान लिया जाता है। उसे बाहर तो बिल्कुल ही नहीं खोजना चाहिए क्योंकि वह विधाता प्रभु घर में ही है। मनमुख व्यक्ति प्रभु के घर के सारतत्व को नहीं जानता और उसने अपना जीवन गँवा दिया होता है। वह एक प्रभु सबमें कार्यशील है और उसे शब्द गुरु के माध्यम से ही पाया जाता है।। १२ ।। श्लोक महला ३ ।। जो मूर्ख होता है वह मूर्ख की ही बात सुनता है। मूर्ख का आचरण कैसा होता है और मूर्ख के लक्षण क्या होते हैं ? मूर्ख वह व्यक्ति है जो है तो अज्ञानी परन्तु अपने अभिमान में ही मरता खपता रहता हैं। वह सदा दुख ही कमाता है और दुख में ही बना रहता है। जब कोई प्यारा व्यक्ति कुएँ में गिर रहा हो तो उसके लिए कुछ ना कुछ संयम अभ्यास तो करना ही चाहिये। गुरमुख व्यक्ति वह है जो उस गिरे हुए व्यक्ति को देखकर अपने बारे में भी सोचता है और उसके गिरने के कारणों को खोजकर उनसे दूर बना रहता है। वह प्रभु-नाम का जाप करके अपना उद्धार करता है और उसके साथ डूबते हुए भी पार उतर जाते हैं। हे नानक, जो उस प्रभु को अच्छा लगता है वह वही करता है और वह प्रभु जो दुख-सुख देता है वह उसे सहन करता है।।१ ।। महला १ ।। नानक कहता है कि हे मन, एक अच्छी और वास्तविक शिक्षा को सुन ले; परमात्मा तो अपना बही खाता खोलकर बैठा है और वह तुझसे एक एक पल का हिसाब माँगेगा। जो उससे बागी बने रहे हैं उन्हें आवाज़ें पड़ेंगी और उनसे उनके बाकी बचे पाप पुण्यों का हिसाब लिया जाएगा। मौत का देवता इजराइल चारों तरफ घूमेगा और जीव को फिर फँसे हुए को कहीं भी आने जाने का मार्ग सुझाई नहीं देगा। हे नानक, झूठ का तो नाश होता है तथा अंत में सत्य के माध्यम से ही बचाव होता है।। २ ।। पउड़ी।। यह सारा संसार प्रभु का ही शरीर है और स्वयं प्रभु ही सबमें रमण कर रहा है। प्रभु का मूल्य नहीं आँका जा सकता और उसके बारे में कुछ कहते भी नहीं बनता। गुरु की कृपा से ही उसका गुणानुवाद होता है और व्यक्ति प्रभु भक्ति में रंग जाता है। उसका तन मन हरा भरा हो उठता है और उसका अहंकार दूर हो जाता है। यह सब प्रभु का ही खेल है जो वह किसी गुरमुख को ही समझाता है।। १३ ।। श्लोक महला १ ।। स्त्री के हज़ारों गुप्तागों के शाप का दान पाकर इन्द्र रो पड़ा था और राम द्वारा परशुराम का बल खींच लेने से वह भी रोता हुआ अपने घर वापस आया था। भिक्षा में दी लीद को खुद ही खाता हुआ राजा अज रो पड़ा था। उसे प्रभु के दरबार में ऐसी ही सजा मिली थी। देश निकाला अर्थात् बनवास मिलने पर राम चन्द्र भी

निकाला भइआ ॥ सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥ रोवै दहसिरु लंक गवाइ ॥ जिनि सीता आदी डउरू वाइ ॥ रोवहि पांडव भए मजूर ॥ जिन कै सुआमी रहत हदूरि ॥ रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥ एकी कारणि पापी भइआ ॥ रोवहि सेख मसाइक पीर ॥ अंति कालि मतु लागै भीड़ ॥ रोवहि राजे कंन पड़ाइ ॥ घरि घरि मागहि भीखिआ जाइ ॥ रोवहि किरपन संचहि धनु जाइ ॥ पंडित रोवहि गिआनु गवाइ ॥ बाली रोवै नाहि भतारु ॥ नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥ अउरी करम न लेखै लाइ ॥ १ ॥ मः २ ॥ जपु तपु सभु किछु मंनिऐ अवरि कारा सभि बादि ॥ नानक मंनिआ मंनीऐ बुझीऐ गुर परसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ काइआ हंस धुरि मेलु करतै लिखि पाइआ ॥ सभ महि गुपतु वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ॥ गुण गावै गुण उचरै गुण माहि समाइआ ॥ सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ॥ सभु किछु आपे आपि है आपि देइ वडिआई ॥ १४ ॥ सलोक मः २ ॥ नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥ रतना सार न जाणई आवै आपु लखाइ ॥ १ ॥ मः २ ॥ रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥ वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥ जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥ रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥ बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥ अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥ तितु घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥ सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥ १५ ॥ सलोक मः २ ॥ अंधे कै राहि दसिऐ अंधा होइ सु जाइ ॥ होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ि पाइ ॥ अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥ अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥ १ ॥ मः २ ॥ साहिबि अंधा जो कीआ करे सुजाखा होइ ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोइ ॥ जिथै सु वसतु न जापई आपे वरतउ जाणि ॥ नानक गाहकु किउ लए सकै न वसतु पछाणि ॥ २ ॥ मः २ ॥ सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥ नानक हुकमु न बुझई

व्यथित हो कर रोने लगे थे क्योंकि सीता और लक्ष्मण से बिछुड़ना पड़ा था। वह दस सिरों वाला रावण लंका को गँवा कर रोया था जो साधु वेश में डमरू बजाते हुए सीता का हरण करके ले आया था। मजदूरी करते हुए वे पांडव भी रोते रहे जिनके साथ हमेशा स्वामी के रूप में कृष्ण बने रहते थे। राजा जनमेजय भी रास्ता भटक जाने के कारण रो उठा और केवल एक ग़लती के कारण वह पापी बन गया। शेख और पीर आदि भी इसीलिए रोते रहते हैं कि अन्तिम समय में कोई मुश्किल ना आ खड़ी हो। अनेकों राजा (गोपीचन्द, भरथरी आदि) कान फड़वाकर योगियों का वेश धारण करके रोते चिल्लाते रहे और घर-घर जाकर भिक्षा माँगते रहे। कंजूस व्यक्ति इसलिये रोता है कि उसे संचित किया हुआ धन जाता दिखाई देता है और अपने ज्ञान को गँवाकर पंडित व्यक्ति भी अन्ततः रोता ही है। जिसका पति नहीं रहता वह जवान स्त्री भी रोती है अतः हे नानक, ध्यानपूर्वक देखा जाए तो यह सारा संसार ही दुखी है। केवल वही इस संसार को जीत कर यहाँ से जाता है जो प्रभु नाम का मनन, सुमिरन करता है। अन्य कोई भी कर्म किसी लेखे जोखे में नहीं आता।। १ ।। महला २ ।। प्रभु के नाम के सुमिरन में ही जप, तप आदि सभी कर्मकाण्ड आ जाते हैं तथा अन्य सब कुछ तो वास्तव में व्यर्थ ही है। हे नानक, केवल माने हुए को ही हृदय में माना जाता है और गुरु की कृपा से ही उसके बारे में जाना जाता है।। २ ।। पउड़ी।। इस शरीर और आत्मा का मिलाप तो प्रभु ने आरम्भ से स्वयं ही लिखा है। वह प्रभु गुप्त रूप से सबमें कार्यशील है और वह गुरमुख बनने के बाद ही व्यक्ति के हृदय में प्रकट होता है। ऐसा गुरमुख उसके गुण गाता है, उसके गुणों का उच्चारण करता है और उसके गुणों में ही लीन हो जाता है। वह सच्ची वाणी के माध्यम से स्वयं सत्य रूप हो पाता है और अन्य लोगों को भी सच्चे गुरु से मिला देता है। वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ है और जीव को स्वयं ही बड़प्पन प्रदान करता है।। १४ ।। श्लोक महला २ ।। हे नानक, जो स्वयं तो अँधा (अज्ञानी) है और रत्नों की परख करने के लिये चला जाता है वह रत्नों के महत्व को जान नहीं पाता अपितु अपनी पोल खुलवाकर वापस चला आता है।। १ ।। महला २ ।। नाम रूपी रत्नों की पोटली केवल रत्नों को जानने वाला गुरु ही खोलता है। उस नाम पदार्थ वाले गुरु और उनका व्यापार वाले गुरमुखों के मन को वह पोटली भा जाती हैं क्योंकि ऐसे रत्नों की शोभा तो उन्हीं के पास अच्छी लगती है। हे नानक, गुण जिनके पास हैं वे ही नाम रूपी रत्न एवं माणिकों का व्यापार करते हैं और जो रत्नों के मूल्य को नहीं जानते वे अन्धों की तरह संसार में सिर धुनते हुए भटकते रहते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। इस शरीर रूपी किले मे नौ दरवाज़े हैं और दसवां द्वार इसमें गुप्त रखा हुआ है। इस किले के वज्र के समान कठोर (अज्ञान के) द्वार खुलते नहीं और इन्हें केवल शब्द-गुरु के माध्यम से ही खोला जाता है। इसके अन्दर ही अनहद वाद्यों की धुन बजती रहती है जिसे शब्द-गुरु के माध्यम से ही सुना जाता है। ऐसे हृदय के अन्दर ही प्रभु का प्रकाश होता है और भक्ति के माध्यम से ही उससे मिलाप होता है। जिस प्रभु ने स्वयं यह सारी रचना की है वही एक प्रभु सबमें कार्यशील बना रहता है।। १५ ।। श्लोक महला २ ।। किसी अन्धे के द्वारा बताए रास्ते पर वही जाता है जो स्वयं अंधा (अज्ञानी) होता है। हे नानक, जिसके पास (ज्ञान की) आँखें है वो भला ग़लत रास्ते पर क्यों जाएगा। अंधे उन्हें नहीं कहा जाता जिनके चेहरे पर आँखें नहीं हैं; हे नानक, अंधे वे हैं जो अपने मालिक प्रभु के मार्ग से दूर भटके रहते हैं।। १ ।। महला २ ।। जिस साहिब प्रभु ने व्यक्ति को अन्धा (अज्ञानी) बना दिया है वही यदि स्वयं करे तो अंधा व्यक्ति आँखों वाला (ज्ञानवान) हो जाता है। अंधा व्यक्ति तो जैसा जानता है वैसा ही करता रहता है, बेशक उसे कोई सौ बार कहता सुनता रहे। जहाँ वास्तविक पदार्थ (नाम) को नहीं पहचाना जाता वहाँ यही मानना चाहिए कि अहंकार भावना कार्यशील बनी हुई है। हे नानक, जो ग्राहक किसी वस्तु को पहचान भी नहीं पाता वह उसको भला कैसे ले सकेगा।। २ ।। महला २ ।। जो हुकुम को मानता हुआ अज्ञानी बना है उसे भला अंधा कैसे कहा जा सकता है। हे नानक, जो प्रभु के हुकुम को नहीं जानता मानता उसे ही वास्तव में अंधा कहा जाता है।। ३ ।। पउड़ी।। इस शरीर में अनेकों किले और सभी

अंधा कहीऐ सोइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ काइआ अंदरि गड़ु कोटु है सभि दिसंतर देसा ॥ आपे ताड़ी लाईअनु सभ महि परवेसा ॥ आपे स्रिसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ गुर सेवा ते जाणिआ सचु परगटीएसा ॥ सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥ १६ ॥ सलोक मः १ ॥ सावणु राति अहाड़ु दिहु कामु क्रोधु दुइ खेत ॥ लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे खाइ ॥ नानक लेखै मंगिऐ अउतु जणेदा जाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥ हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥ नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥ नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥ दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मथि ततु कढोलै ॥ अंतरि परगासु घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥ १७ ॥ सलोक मः २ ॥ नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥ सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक इहु जीउ मछुली झीवरु त्रिसना कालु ॥ मनूआ अंधु न चेतई पड़ै अचिंता जालु ॥ नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ नदरि करे जे आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता ॥ सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ अंतरि त्रिसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ आपे मेलि मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ वेलि पिंञाइआ कति वुणाइआ ॥ कटि कुटि करि खुंबि चड़ाइआ ॥ लोहा वढे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥ इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥ होइ पुराणा कपड़ु पाटै सूई धागा गंढै ॥ माहु पखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु

देश देशान्तर हैं। प्रभु ने स्वयं ही समाधि में लीन होकर इन सबमें प्रवेश किया है। स्वयं ही संसार बनाकर उसमें प्रछन्न रूप से अपने आपको स्थित किया हुआ है। वह ऐसा प्रकट सत्य है जिसे गुरु की सेवा के माध्यम से ही जाना जाता है। गुरु ने ही यह सूझ बुद्धि प्रदान की है कि यह सारा संसार उस सत्य प्रभु के कारण सत्य ही सत्य है।। १६ ।। श्लोक महला १ ।। सावन और आषाढ़ की फसलें रात और दिन हैं इनमें काम, क्रोध दो खेतों के रूप में बने हुए हैं, ममता इसकी देख भाल करने वाली, झूठ इसका बीज है और हल चलाने वाला इसका मोह है। विकारों का चिंतन ही इसका हल है और प्रभु के हुकुम में ही यह अपनी फसल की ढेरी लगाए रहता है हे नानक, इस प्रकार की ढेरी बनाने वाला मालिक व्यक्ति इस संसार से बिना नाम छोड़े हुए ही चला जाता हैं और आगे प्रभु दरबार में भी उससे लेखा-जोखा माँगा जाता है।। १ ।। महला १ ।। प्रभु का भय जब धरती होती है, पवित्रता का पानी उसमें लगाया जाता है तथा सत्य और सन्तोष के बैल वहाँ उपस्थित बने रहते हैं; जब विनम्रता का हल बनाया जाता है और चित्त को हलवाहा और प्रभु नाम का सुमिरन देख भाल करने वाला बना रहता है तथा प्रभु मिलाप के अवसर को ही अच्छा अवसर माना जाता है; जब प्रभु-नाम का बीज इसमें बोया जाता है तो उस प्रभु की कृपा की ढेरी लग जाती है तथा सारा संसार झूठा लगने लगता है। हे नानक, इस प्रकार की खेती करने वाले गुरमुख पर प्रभु की कृपा दृष्टि होती है और उसके वियोग के सारे दुख दूर हो जाते हैं।। २ ।। पउड़ी।। मनमुख व्यक्ति मोह के घोर अंधकार में पड़ा द्वैतभाव में ही बोलता बकता रहता है। जिस प्रकार पानी का ही मन्थन करते रहने से मेहनत व्यर्थ जाती है उसी प्रकार द्वैतभाव सदैव दुख ही ढोता रहता है। गुरमुख बनकर जब नाम का सुमिरन और मन्थन किया जाता है तो उसमें से सार तत्व प्रभु को जान लिया जाता है। इस प्रकार जब प्रभु को पा लिया जाता है तो अन्तर्मन प्रकाशित हो उठता है तथा हृदय भी खिल उठता है; परन्तु वह प्रभु स्वयं ही भ्रमों में भटकाता है और उसके बारें में कुछ भी कहा नहीं जा सकता।। १७ ।। श्लोक महला २ ।। हे नानक, तुम चिन्ता मत करो क्योंकि सबकी चिन्ता करने वाला तो वह प्रभु ही है। पानी में भी उसने जो जीव जन्तु पैदा किए हैं उनको भी वह उनका भोजन देता है। वहाँ पर ना कोई दुकानदारी है और ना कोई खेतीबाड़ी करता है। वहाँ ना कोई सौदेबाजी होती है और ना कोई लेता देता है। वह प्रभु वहाँ जल में जीवों का आहार अन्य जीवों को बना देता है। जो उसने समुद्र में जीव पैदा किये है वह वहाँ पर भी उनकी खोज खबर लेता रहता है और उनका पालन पोषण करता रहता है। इसलिए हे नानक, तुम चिन्ता मत करो क्योंकि सबकी चिन्ता उस प्रभु को है।। १ ।। महला १ ।। हे नानक, यह जीव मछली है और तृष्णा रूपी काल मछुआरा है। इस जीव रूपी मछली का अंधा मन सावधान नहीं रहता और इसकी लापरवाही के क्षणों में ही इस पर मछुआरे का जाल आ पड़ता है। हे नानक, यह लापरवाह चित्त यहाँ से चिन्ताओं में बँधा ही प्रस्थान करता है। प्रभु यदि कृपा दृष्टि करे तो स्वयं ही यह उसे अपने से मिला लेता है।। २ ।। पउड़ी।। वे व्यक्ति जिन्होंने प्रभु रस को पी लिया है वे सदा सच्चे बने रहते है। ऐसे गुरमुख व्यक्तियों के मन में सत्य का निवास होता है क्योंकि उन्होंने सत्य को ही अपनाया होता है। सब कुछ इस हृदय रूपी घर में ही है परन्तु भाग्यशाली व्यक्ति ही इसे प्राप्त करते हैं। जब प्रभु के गुणों का गायन किया जाता है तो अन्तर्मन की तृष्णा मर जाती है। वह प्रभु स्वयं ही मेल मिलाता है और स्वयं ही सूझ बुद्धि प्रदान करता है।। १८ ।। श्लोक महला १ ।। कपास को पहले धुना और बेला जाता है फिर उसे कात बुन कर कपड़ा बनाया जाता है। काट छाँट कर उसे भट्ठी में चढ़ाया जाता है। दर्जी की कैंची उसे टुकड़े करती है और सुई धागे से उसकी सिलाई की जाती हैं। इसी प्रकार टुकड़े को चुका सम्मान प्रभु के गुणानुवाद के सुई धागे से फिर सी कर इकट्ठा कर लिया जाता है और हे नानक, जीवित बने रहा जाता है। पुराना होने पर जब वस्त्र फट जाता है तो सुई धागा उसकी फिर सिलाई कर देते हैं। ऐसा कपड़ा महीनों तक नहीं चलता और थोड़े समय के लिये

हंढै ॥ सचु पुराणा होवै नाही सीता कदे न पाटै ॥ नानक साहिबु सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥ १ ॥ मः १ ॥ सच की काती सचु सभु सारु ॥ घाड़त तिस की अपर अपार ॥ सबदे साण रखाई लाइ ॥ गुण की थेकै विचि समाइ ॥ तिस दा कुठा होवै सेखु ॥ लोहू लबु निकथा वेखु ॥ होइ हलालु लगै हकि जाइ ॥ नानक दरि दीदारि समाइ ॥ २ ॥ मः १ ॥ कमरि कटारा बंकुड़ा बंके का असवारु ॥ गरबु न कीजै नानका मतु सिरि आवै भारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सो सतसंगति सबदि मिलै जो गुरमुखि चलै ॥ सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै ॥ भगत सोहनि गुण गावदे गुरमति अचलै ॥ रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै ॥ आपे मेलि मिलाइदा आपे देइ वडिआई ॥ १९ ॥ सलोक मः ३ ॥ आसा अंदरि सभु को कोइ निरासा होइ ॥ नानक जो मरि जीविआ सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ ना किछु आसा हथि है केउ निरासा होइ ॥ किआ करे एह बपुड़ी जां भुोलाए सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ध्रिगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ॥ प्रभु दाता दातार निहचलु एहु धनु ॥ सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ॥ अंतरजामी अगमु रसना एकु भनु ॥ रवि रहिआ सरबति नानकु बलि जाई ॥ २० ॥ सलोकु मः १ ॥ सरवर हंस धुरे ही मेला खसमै एवै भाणा ॥ सरवर अंदरि हीरा मोती सो हंसा का खाणा ॥ बगुला कागु न रहई सरवरि जे होवै अति सिआणा ॥ ओना रिजकु न पइओ ओथै ओन्हा होरो खाणा ॥ सचि कमाणै सचो पाईऐ कूड़ै कूड़ा माणा ॥ नानक तिन कौ सतिगुरु मिलिआ जिना धुरे पैया परवाणा ॥ १ ॥ मः १ ॥ साहिबु मेरा उजला जे को चिति करेइ ॥ नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो देइ ॥ नानक सोई सेवीऐ जितु सेविऐ दुखु जाइ ॥ अवगुण वंञनि गुण रवहि मनि सुखु वसै आइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु ॥ आपे ही उपदेसदा गुरमुखि पतीआईअनु ॥ इकि आपे उझड़ि पाइअनु इकि भगती लाइअनु ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी आपे नाइ लाईअनु ॥ नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पहनने योग्य रहता है परन्तु सत्य कभी भी पुराना नहीं होता; यह ना कभी फटता है और ना ही इसकी बार-बार सिलाई करनी पड़ती है। हे नानक, यह मालिक तो सच्चा ही सच्चा है परन्तु जब उसका सुमिरन किया जाए तभी वह अनुभव में आता है।। १ ।। मः १ ।। सत्य की छुरी पूरे लोहे रूपी सत्य के साथ बनी हो तो उसकी रचना वास्तव में अपर-अपार सुन्दर होती है। उसे धार बनाने के लिये शब्द के पत्थर पर रगड़ा जाए और उसे गुणों की म्यान में रखा जाए। यदि कोई शेख इस प्रकार की छुरी से धीरे-धीरे कटा हुआ हो तो उसके अन्दर से लोभ रूपी रक्त निकल जाता है। इस प्रकार से हलाल होकर वह उस प्रभु के चरणों में जा लगता है और हे नानक उस प्रभु के द्वार पर उसके दर्शन करता हुआ उसी में लीन हो जाता है।। २ ।। महला १ ।। व्यक्ति ने सुन्दर तलवार कमर में बाँध रखी है और वह बाँके घोड़े पर सवार भी है परन्तु हे नानक, उसे अहंकार नहीं करना चाहिये क्योंकि कहीं उसके सिर पर इस पाप का बोझ और ना बढ़ जाए।। ३ ।। पउड़ी।। जो गुरमुख होकर इस जीवन में चलता है वह शब्द के माध्यम से सत्संगति में बना हुआ प्रभु से मिल जाता है। जिनके पास खर्चने के लिये प्रभु नाम का धन है वे सच्चे हैं और सत्य का सुमिरन करते हैं। गुरु की मति में अटल बने हुए ऐसे ही भक्त प्रभु के गुण गाते हुए शोभायमान बने रहते हैं। प्रभु-नाम रूपी रत्न का विचार उनके मन में बसा होता है और वे शब्द-गुरु में लीन होकर भले व्यक्ति बने रहते हैं। वह प्रभु स्वयं ही मेल मिलाता है और स्वयं ही बड़प्पन प्रदान करता है।। १६ ।। श्लोक महला ३ ।। सभी आशाओं में लगे हुए हैं और कोई बिरला ही आशाओं से परे बना रहने वाला होता है। हे नानक, जो आशाओं के प्रति मरकर जीवित बना रहता है उसी का आना सफल होता है।। १ ।। महला ३ ।। आशा के हाथ में कुछ नहीं है फिर भला आशाओं से परे कैसे रहा जा सकता है। यदि वह प्रभु ही भटकाता रहे तो यह जीव आत्मा बेचारी क्या करे।। २ ।। पउड़ी।। सच्चे प्रभु-नाम के बिना इस संसार में जीना बेकार है। वह प्रभु दाताओं का भी दाता है और वही एक अटल धन है। जो श्वास के साथ उसका सुमिरन करता है वही व्यक्ति पवित्र होता है। वह प्रभु अगम्य और अन्तर्यामी है इसलिये हे मेरी जीभ, तू केवल उस एक प्रभु-नाम का ही सुमिरन कर। नानक उस पर बलिहारी जाता है जो प्रभु सर्वत्र व्याप्त बना हुआ है।। २० ।। श्लोक मः १ ।। सरोवर और हंस अर्थात गुरु और गुरमुख का मिलाप तो प्रभु की इच्छा के अनुसार प्रारम्भ से ही बना हुआ है। गुरु रूपी सरोवर में ही हीरे मोती होते हैं और वे ही हंसों का भोजन होते हैं। बगुले और कौए जो बहुत अधिक चतुर होते हैं वे ऐसे सरोवर पर नहीं रहते। उनको वहाँ भोजन नहीं मिलता क्योंकि उन्होंने तो अन्य कुछ ही खाना होता है। सत्य की कमाई करने पर सत्य प्राप्त होता है और झूठे व्यक्ति को अपने झूठ पर ही अभिमान बना रहता है। हे नानक, सच्चा गुरु उनको ही मिलता है जिनके लिये प्रारम्भ से ही प्रभु का हुकुम लिखा होता है।। १ ।। महला १ ।। यदि कोई हृदय में याद रखे तो मेरा साहिब प्रभु उज्जवल रूप में उस हृदय में बना रहता है। हे नानक, जो सदैव देता रहता है उस प्रभु का ही सुमिरन करते रहना चाहिये। हे नानक, उसका सुमिरन करना चाहिये जिसको याद करने से दुख दूर हो जाता है, अवगुण चले जाते हैं, गुण हृदय में आ बसते हैं और मन में सुख का निवास हो जाता है।। २ ।। पउड़ी।। समाधि में लीन वह प्रभु स्वयं ही सबमें कार्यशील है। वह स्वयं ही उपदेश देता है और गुरमुख बने व्यक्ति उससे सन्तुष्ट होते हैं। कईयों को वह उजाड़ राहों पर भटकाता है और कईयों को वह भक्ति में लगाए रहता है। वह जिसे समझाता है वही समझता है और वह स्वयं ही सबको अपने नाम में लीन करता है। हे नानक, उसी के नाम का सुमिरन किया जाना चाहिए जिसका बड़प्पन महान है।। २१ ।। १ ।। शुद्ध।।

रामकली की वार महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ५ ॥ जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंत्रु द्रिड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ इकु सजणु सभि सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ बादि ॥ साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि ॥ जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुर कै परसादि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ आपे पूरा साहु आपे ही खटिआ ॥ आपे करि पासारु आपे रंग रटिआ ॥ कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रहमटिआ ॥ अगम अथाह बेअंत परै परटिआ ॥ आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ कोइ न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ सचा साहिबु आपि गुरमुखि परगटिआ ॥ १ ॥ सलोकु मः ५ ॥ सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतिगुरु देहु दिखालि ॥ हउ तिसु देवा मनु आपणा नित हिरदै रखा समालि ॥ इकसु सतिगुर बाहरा ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइओनु जिन सद ही वरतै नालि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मेरै अंतरि लोचा मिलण की किउ पावा प्रभ तोहि ॥ कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो मेले प्रीतमु मोहि ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ देवणहारु दातारु कितु मुखि सालाहीऐ ॥ जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीऐ ॥ कोइ न किस ही वसि सभना इक धर ॥ पाले बालक वागि दे कै आपि कर ॥ करदा अनद बिनोद किछू न जाणीऐ ॥ सरब धार समरथ हउ तिसु कुरबाणीऐ ॥ गाईऐ राति दिनंतु गावण जोगिआ ॥ जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥ २ ॥ सलोक मः ५ ॥ भीड़हु मोकलाई कीतीअनु सभ रखे कुटंबै नालि ॥ कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ प्रभु मात पिता कंठि लाइदा लहुड़े बालक पालि ॥ दइआल होए सभ जीअ जंत्र हरि

रामकली की वार महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

श्लोक महला ५ ।। मैंने जैसा उस सच्चे गुरु के बारे में सुन रखा था देखने पर मैंने उसे वैसा ही पाया है। वह बिछुड़े हुओं को प्रभु से मिलाता है और प्रभु के दरबार में वह एक वकील का कार्य करता है। वह प्रभु नाम के मन्त्र को हृदय में पक्का करवाता है और अहंकार के रोग को काट देता है। हे नानक, सच्चा गुरु उन्हें मिलाया जाता है जिनका प्रारम्भ से ही ऐसा संयोग लिखा होता है।। १ ।। महला ५ ।। जब वह प्रभु सज्जन मित्र बन जाए तो सभी मित्र हो जाते हैं और यदि एक प्रभु ही शत्रु हो जाए तो बाकी सभी भी झगड़ा करने वाले हो जाते हैं। पूर्ण गुरु ने मुझे यह दिखा दिया है कि प्रभु नाम के बिना सब कुछ व्यर्थ है। प्रभु से टूटा हुआ दुर्जन व्यक्ति भटकता रहता है क्योंकि वह द्वैतभाव के स्वाद में लगा रहता है। दास नानक ने तो सच्चे गुरु की कृपा से प्रभु को जान लिया है।। २ ।। पउड़ी।। उस रचना करने वाले ने स्वयं ही यह सब कुछ बनाया है। वह स्वयं ही पूर्ण साहूकार है और स्वयं ही सब कुछ कमाने वाला है। उसने स्वयं ही सारा फैलाव फैलाया है और स्वयं ही उस प्रकार के रंगों में मिला है। उस प्रभु की शक्ति की कीमत नहीं आँकी जा सकती। वह अगम्य, अथाह और अनन्त प्रभु परे से परे है। वह स्वयं ही बड़ा सम्राट है और स्वयं ही अपना मन्त्री भी है। कोई भी नहीं जानता कि उसका स्थान और उसका मूल्य कितना है। वह साहिब स्वयं सच्चा है और गुरमुख बनने पर ही हृदय में प्रकट होता है।। १ ।। श्लोक महला ५ ।। हे मेरे सज्जन प्रियतम, मुझे सच्चे गुरु के दर्शन करा दो। मैं उसे अपना मन अर्पण कर दूँगा और सदैव उसको हृदय में सम्भाले रखूँगा। एक सच्चे गुरु से विहीन होकर इस संसार में जीने को धिक्कार है। दास नानक को सच्चा गुरु उन लोगों ने मिला दिया है जिनके पास वह सदैव बना रहता है।। १ ।। महला ५ ।। मेरे अन्तर्मन में तुझे मिलने की लालसा बनी हुई है; हे प्रभु, मैं तुझे कैसे प्राप्त करूं। कोई ऐसा मित्र ढूंढ लिया जाए जो मुझे मेरे प्रियतम से मिला दे। पूर्ण गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है और अब मैं जिधर देखता हूँ उधर वह ही दिखाई देता है। दास नानक ने तो उस प्रभु का सुमिरन किया है जिसके जितना बड़ा अन्य कोई नहीं।। २ ।। पउड़ी।। सब कुछ देने वाला दाता वह प्रभु है। उसकी प्रशंसा भला किस मुँह से की जाए। जिस पर कृपा करके वह उसकी रक्षा करता है उसे वह उसकी रोजी भी पहुँचाता है। यहाँ किसी के बस में कुछ नहीं है और सबका आसरा वह एक प्रभु ही है। वह अपना हाथ देकर सबका बच्चों की तरह पालन पोषण करता है। वह आनन्दपूर्वक विनोद करता है और उसके बारे में कुछ भी नहीं जाना जा सकता है। सबका आधार वह समर्थ प्रभु है और मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। वह महिमा करने योग्य है और रात दिन उसी का गुणानुवाद करते रहना चाहिये। जिन्होंने गुरु के चरणों को पकड़ लिया है उन्होंने ही प्रभु रस का उपभोग किया है।। २ ।। श्लोक महला ५ ।। तूने मुसीबत और तंगी से खुलासा करके हमें और सारे परिवार को बचा लिया है। वह कामों को स्वयं ही सँवारता है और हे जीव, ऐसे प्रभु को सदैव याद रख। माता पिता के रूप में छोटे-छोटे बच्चों को पालता हुआ प्रभु उन्हें गले से लगाए रहता है। जब प्रभु ने कृपा दृष्टि की तो हे नानक, सभी जीव जन्तु भी हम पर दयालु हो गए हैं।।

नानक नदरि निहाल ॥ १ ॥ मः ५ ॥ विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा के दुख ॥ देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥ गुरि वणु तिणु हरिआ कीतिआ नानक किआ मनुख ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सो ऐसा दातारु मनहु न वीसरै ॥ घड़ी न मुहतु चसा तिसु बिनु ना सरै ॥ अंतरि बाहरि संगि किआ को लुकि करै ॥ जिसु पति रखै आपि सो भवजलु तरै ॥ भगतु गिआनी तपा जिसु किरपा करै ॥ सो पूरा परधानु जिस नो बलु धरै ॥ जिसहि जराए आपि सोई अजरु जरै ॥ तिस ही मिलिआ सचु मंत्रु गुर मनि धरै ॥ ३ ॥ सलोकु मः ५ ॥ धंनु सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाइ ॥ धंनु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ ॥ जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन सद बलिहारै जाउ ॥ तिन की धूड़ि हम बाछदे करमी पलै पाइ ॥ जो रते रंगि गोविद कै हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ आखा बिरथा जीअ की हरि सजणु मेलहु राइ ॥ गुरि पूरै मेलाइआ जनम मरण दुखु जाइ ॥ जन नानक पाइआ अगम रूपु अनत न काहू जाइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ धंनु सु वेला घड़ी धंनु धनु मूरतु पलु सारु ॥ धंनु सु दिनसु संजोगड़ा जितु डिठा गुर दरसारु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ हरि पाइआ अगम अपारु ॥ हउमै तुटा मोहड़ा इकु सचु नामु आधारु ॥ जनु नानकु लगा सेव हरि उधरिआ सगल संसारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सिफति सलाहणु भगति विरले दितीअनु ॥ सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न लीतीअनु ॥ जिस नो लगा रंगु से रंगि रतिआ ॥ ओना इको नामु अधारु इका उन भतिआ ॥ ओना पिछै जगु भुंचै भोगई ॥ ओना पिआरा रबु ओनाहा जोगई ॥ जिसु मिलिआ गुरु आइ तिनि प्रभु जाणिआ ॥ हउ बलिहारी तिन जि खसमै भाणिआ ॥ ४ ॥ सलोक मः ५ ॥ हरि इकसै नालि मै दोसती हरि इकसै नालि मै रंगु ॥ हरि इको मेरा सजणो हरि इकसै नालि मै संगु ॥ हरि इकसै नालि मै गोसटे मुहु मैला करै न भंगु ॥ जाणै बिरथा जीअ की कदे न मोड़ै रंगु ॥ हरि इको मेरा मसलती भंनण घड़न समरथु ॥ हरि इको मेरा दातारु है सिरि दातिआ जग हथु ॥ हरि इकसै दी मै टेक है जो सिरि सभना समरथु ॥ सतिगुरि संतु मिलाइआ

१ ।। महला ५ ।। तेरे बिना अन्य कुछ भी माँगना सब दुखों में से बड़ा दुख है। हे प्रभु, मुझे अपना नाम दे ताकि मुझे सन्तोष आ जाए और मेरे मन की भूख समाप्त हो जाए। गुरु ने ही वन और वन का तिनका-तिनका हरा भरा कर दिया है; हे नानक, मुझ मनुष्य को हरा भरा करना उसके लिये कौन सी बड़ी बात है।। २ ।। पउड़ी।। वह ऐसा दाता प्रभु है जो मन से भूलता नहीं। एक घड़ी, मुहूर्त और पल भर भी उस प्रभु के बिना काम नहीं चलता। छिपकर कुछ भी करने से क्या होगा क्योंकि अन्दर बाहर तो वह साथ ही बना हुआ है। प्रभु जिसके सम्मान की स्वयं रक्षा करता है वह संसार सागर को पार कर जाता है। जिस पर प्रभु कृपा करता है वही भक्त है ज्ञानवान है और सच्चा तपस्वी है। जिसे प्रभु स्वयं बलशाली बना देता है वही पूर्ण और प्रमुख व्यक्ति बन जाता है। जिसे वह सहन करने की शक्ति देता है वही उसकी असह्य शक्ति को सहन कर पाता है। जिसने मन में गुरु का उपदेश धारण कर लिया है उसी को ही सत्य रूपी प्रभु मिलता है।। ३ ।। श्लोक महला ५ ।। वही राग सुन्दर हैं जिनका आलाप करने से सब प्रकार की प्यास समाप्त हो जाती है। वे जीव ही सुहावने हैं जो गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का जाप करते हैं। जिन्होंने एक मन से उस एक प्रभु का सुमिरन किया है मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता हूँ। हम उनकी चरण धूलि की कामना करते हैं और प्रभु की कृपा से ही वह हमें प्राप्त हो सकती है। जो प्रभु के रंग में लीन हो गए हैं मैं उनपर बलिहारी जाता हूँ। उनके पास मैं अपने हृदय की व्यथा कहता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हरि के मित्रो, मुझे उस प्रभु राजा से मिला दो। पूर्ण गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है और मेरा जन्म-मरण का दुख चला गया है। दास नानक ने उस अगम्य रूप वाले प्रभु को पा लिया है और वह अब अन्य कहीं नहीं जाता।। १ ।। महला ५ ।। वह समय और घड़ी, मुहूर्त और पल सर्वश्रेष्ठ है; वह दिन और वह अवसर भी धन्य है जब मैंने गुरु का दर्शन प्राप्त कर लिया। उस अगम्य, अपरम्पर प्रभु को पाकर मेरे मन की इच्छाएँ पूरी हो गईं हैं। मेरा अहंकार का मोह टूट गया है और प्रभु का सच्चा नाम ही मेरा आधार (आसरा) बन गया है। दास नानक तो प्रभु की सेवा में लग गया है जिसकी सेवा में लगने से सारे संसार का उद्धार हो जाता है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु ने बिरले भक्तों को ही कीर्ति का गायन और गुणानुवाद प्रदान किया है। जिनको उसने भक्ति के अधिकार सौंप दिए हैं उनकी फिर उसने कभी जाँच पड़ताल नहीं की। जिन्हें प्रभु का रंग लग गया वे उसके प्रेम के रंग में लीन बने रहते हैं। एक प्रभु नाम ही उनका आसरा होता है और वही एक उनका भोजन भी होता है। उन्हीं के कारण सारा संसार भी खाता और भोगता है। उन्हें प्रभु प्यारा लगता है और वास्तव में प्रभु उन्हीं के योग्य होता हैं। जिसे गुरु आकर मिल गया उसने प्रभु को जान लिया। मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ जो अपने मालिक को अच्छे लगते हैं।। ४ ।। श्लोक महला ५ ।। मेरी तो एक प्रभु के साथ मित्रता है और उस एक के साथ ही मेरा प्यार है। वह एक प्रभु ही मेरा सज्जन है और उस एक प्रभु के साथ ही मैं बना रहता हूँ। उस एक प्रभु के साथ ही मेरी विचार चर्चा है और वह कभी भी मुझसे ना तो मुँह मोड़ता है और ना ही मुझसे अप्रसन्न होता है। वह मेरे हृदय की व्यथा को जानता है और कभी भी मेरे प्रेम का तिरस्कार नहीं करता। वह एक प्रभु ही मेरा सलाहकार है और वही सब कुछ तोड़ने और बनाने में समर्थ है। वह प्रभु ही मेरा दाता है और वही संसार के दाताओं के सिर पर हाथ रखता है। मुझे तो एक प्रभु की ही टेक है जो सबसे उपर बलशाली है। उसी ने ही माथे पर हाथ रखकर मुझे सच्चा गुरु रूपी शान्त

मसतकि धरि कै हथु ॥ वडा साहिबु गुरू मिलाइआ जिनि तारिआ सगल जगतु ॥ मन कीआ इछा पूरीआ पाइआ धुरि संजोग ॥ नानक पाइआ सचु नामु सद ही भोगे भोग ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ॥ वेखदिआ ही भजि जानि कदे न पाइनि बंधु ॥ जिचरु पैननि खावन्हे तिचरु रखनि गंढु ॥ जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गंधु ॥ जीअ की सार न जाणनी मनमुख अगिआनी अंधु ॥ कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ॥ अंधे आपु न जाणनी फकड़ु पिटनि धंधु ॥ झूठै मोहि लपटाइआ हउ हउ करत बिहंधु ॥ क्रिपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ ॥ जन नानक से जन उबरे जो सतिगुर सरणि परे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो रते दीदार सेई सचु हाकु ॥ जिनी जाता खसमु किउ लभै तिना खाकु ॥ मनु मैला वेकारु होवै संगि पाकु ॥ दिसै सचा महलु खुलै भरम ताकु ॥ जिसहि दिखाले महलु तिसु न मिलै धाकु ॥ मनु तनु होइ निहालु बिंदक नदरि झाकु ॥ नउ निधि नामु निधानु गुर कै सबदि लागु ॥ तिसै मिलै संत खाकु मसतकि जिसै भागु ॥ ५ ॥ सलोक मः ५ ॥ हरणाखी कू सचु वैणु सुणाई जो तउ करे उधारणु ॥ सुंदर बचन तुम सुणहु छबीली पिरु तैडा मन साधारणु ॥ दुरजन सेती नेहु रचाइओ दसि विखा मै कारणु ॥ ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी ॥ पिरु छैलु छबीला छडि गवाइओ दुरमति करमि विहूणी ॥ ना हउ भुली ना हउ चुकी ना मै नाही दोसा ॥ जितु हउ लाई तितु हउ लगी तू सुणि सचु संदेसा ॥ साई सुोहागणि साई भागणि जै पिरि किरपा धारी ॥ पिरि अउगण तिस के सभि गवाए गल सेती लाइ सवारी ॥ करमहीण धन करै बिनंती कदि नानक आवै वारी ॥ सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ काहे मन तू डोलता हरि मनसा पूरणहारु ॥ सतिगुरु पुरखु धिआइ तू सभि दुख विसारणहारु ॥ हरि नामा आराधि मन सभि किलविख जाहि विकार ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन रंगु लगा निरंकार ॥ ओनी छडिआ माइआ सुआवड़ा धनु संचिआ नामु अपारु ॥ अठे पहर इकतै लिवै मंनेनि

पुरुष मिला दिया है। गुरु ने मुझे वह बड़ा मालिक मिला दिया है जिसने सारे संसार को पार उतार दिया है। जो मिलाप प्रभु की ओर से लिखा है मैंने प्राप्त कर लिया है और मेरे मन की इच्छाएँ पूरी हो गईं हैं। नानक ने तो प्रभु का सच्चा नाम प्राप्त कर लिया है और वह सदैव मिलाप का आनन्द ही लेता रहता है।। १ ।। महला ५ ।। मनमुख व्यक्ति की दोस्ती तो धन दौलत का ही सम्बन्ध है। धन दौलत को देखते ही वे इधर उधर भाग खड़े होते हैं और कभी भी एक बात पर स्थिर नहीं रहते। जब तक खाना पहनना साथ साथ चलता रहता है वे तब तक ही मेल मिलाप रखते हैं। जिस दिन खाने-पीने को कुछ नहीं बचता उसी दिन वे बुरा भला बोलने लगते हैं। वे आत्मा के महत्व के बारे में कुछ नहीं जानते और मनमुख बने हुए अज्ञानी और अन्धे ही रहते हैं। जिस प्रकार कीचड़ के साथ एक पत्थर को दूसरे पत्थर से नहीं जोड़ा जा सकता वैसे ही झूठा व्यक्ति किसी के साथ नहीं जुड़ता। अन्धा व्यक्ति अपने आप को भी नहीं पहचानता और व्यर्थ के धन्धों में ही मरता खपता रहता है। झूठा व्यक्ति तो मोह में लिपटा रहता है और मैं-मैं करते हुए ही उसकी आयु व्यतीत होती रहती है। जिस पर प्रभु अपनी कृपा करता है प्रारम्भ में ही उसके अच्छे भाग्य बना देता है। हे दास नानक, उन व्यक्तियों का ही उद्धार होता है जो सच्चे गुरु की शरण में आ पड़ते हैं।। २ ।। पउड़ी।। जो प्रभु के दर्शनों में लीन हैं उन्हें ही सच्चे कहा जाता है। जिन्होंने मालिक को जान लिया है उनके चरणों की धूलि कैसे प्राप्त हो। विकारों वाला मैला मन ऐसे व्यक्तियों के साथ लगकर पवित्र हो जाता है अब प्रभु का सच्चा स्थान दिखाई देने लगता है और भ्रम के दरवाजे खुल जाते हैं। प्रभु जिसे अपना स्थान दिखा देता है उसे फिर वहाँ से धक्के नहीं खाने पड़ते। यदि वह तनिक सी भी कृपा दृष्टि के साथ देख ले तो मन तन प्रसन्न हो उठता है। शब्द-गुरु में लीन होने से नवनिधियाँ और प्रभु-नाम का भण्डार प्राप्त हो जाता है। जिसके माथे पर भाग्य लेख होते हैं उसे ही शान्त पुरुषों की चरण धूलि प्राप्त होती है।। ५ ।। श्लोक महला ५ ।। हे हिरन जैसी आँखों वाली, तुझे मैं वह सच्ची बात सुनाता हूँ जो तेरा उद्धार करने वाली है। हे सुन्दरी, तुम मेरे सुन्दर वचनों को सुनो कि तेरा प्रियतम ही तेरे मन का आसरा है। फिर तूने दुर्जन व्यक्तियों के साथ स्नेह क्यों लगा रखा है मुझे इसका कारण बता। (उत्तर) मैं किसी बात में भी कम नहीं हूँ परन्तु उस सुन्दर छैल छबीले प्रियतम प्रभु को अपनी दुर्मति के कारण छोड़कर भाग्यविहीन बन गई हूँ। परन्तु मेरा भी इसमें क्या दोष है। हे बहन, तू सच्ची बात सुन कि उसने जिधर मुझे लगा दिया है मैं उधर लग गई हूँ। वही वास्तविक सुहागिन और भाग्यशाली है जिस पर प्रियतम प्रभु ने कृपा कर दी है। प्रियतम प्रभु ने ही उसके सभी दोष दूर कर दिए हैं और अपने गले लगाकर उसे सँवार दिया है। भाग्यहीन स्त्री विनती करती है कि हे नानक, मुझ पर कृपा दृष्टि करने की मेरी बारी कब आएगी। सभी सुहागिन स्त्रियाँ तो प्रियतम प्रभु के साथ रंगरलियाँ कर रही हैं अतः हे प्रभु, मुझे भी एक रात (जीवन) प्रदान कर दो।। १ ।। महला ५ ।। हे मन, तू क्यों घबराता है। वह प्रभु सभी इच्छाओं को पूरा करने वाला है। तू सच्चे गुरु रूपी सर्वव्यापक प्रभु का सुमिरन कर; वह सभी दुखों को दूर करने वाला हैं। हे मन, तू प्रभु-नाम का सुमिरन कर, तेरे सभी पाप और विकार चले जाएँगे। पहले से ही जिनके भाग्य में लिखा होता है उनका प्रेम ही उस प्रभु से लगा रहता है। उन्होंने धन दौलत का स्वार्थ त्याग दिया होता है और प्रभु-नाम रूपी अपार धन का संचय कर लिया होता है। आठों प्रहर वे एक प्रभु में ही लौ लगाए

हुकमु अपारु ॥ जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु मनि पिआरु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु तू आवहि चिति तिस नो सदा सुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ जिसु तू आवहि चिति तिसु कि काड़िआ ॥ जिस दा करता मित्रु सभि काज सवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥ जिसु तू आवहि चिति बहुता तिसु धनु ॥ जिसु तू आवहि चिति सो वड परवारिआ ॥ जिसु तू आवहि चिति तिनि कुल उधारिआ ॥ ६ ॥ सलोक मः ५ ॥ अंदरहु अंना बाहरहु अंना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ देही धोवै चक्र बणाए माइआ नो बहु धावै ॥ अंदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ नींद विआपिआ कामि संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ बैसनो नामु करम हउ जुगता तुह कुटे किआ फलु पावै ॥ हंसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै ॥ जा हंस सभा वीचारु करि देखनि ता बगा नालि जोड़ु कदे न आवै ॥ हंसा हीरा मोती चुगणा बगु डडा भालण जावै ॥ उडरिआ वेचारा बगुला मतु होवै मंञु लखावै ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि एवै भावै ॥ सतिगुरु सरवरु रतनी भरपूरे जिसु प्रापति सो पावै ॥ सिख हंस सरवरि इकठे होए सतिगुर कै हुकमावै ॥ रतन पदारथ माणक सरवरि भरपूरे खाइ खरचि रहे तोटि न आवै ॥ सरवर हंसु दूरि न होई करते एवै भावै ॥ जन नानक जिस दै मसतकि भागु धुरि लिखिआ सो सिखु गुरू पहि आवै ॥ आपि तरिआ कुटंब सभि तारे सभा स्रिसटि छडावै ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पंडितु आखाए बहुती राही कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ अंदरि मोहु नित भरमि विआपिआ तिसटसि नाही देहा ॥ कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइआ की नित जोहा ॥ सचु कहै ता छोहो आवै अंतरि बहुता रोहा ॥ विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा मनि लागा तिसु मोहा ॥ ठगै सेती ठगु रलि आइआ साथु भि इको जेहा ॥ सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कढै तां उघड़ि आइआ लोहा ॥ बहुतेरी थाई रलाइ रलाइ दिता उघड़िआ पड़दा अगै आइ खलोहा ॥ सतिगुर की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥ सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ नानक

रहते है और उसके अपार हुकुम को मानते रहते हैं। दास नानक तो एक ही दान माँगता है कि हे प्रभु, मुझे दर्शन दो और मेरे मन में प्रेम पैदा करो।। २ ।। पउड़ी।। जिसे तू हृदय में याद रहता है उसको सदैव सुख ही सुख मिलता है। जिसके चित्त में तेरी याद बनी रहती है उसे यम भी दुख नहीं दे पाता। तेरी याद को चित्त में बनाए रखने वाले को भला किस बात की चिन्ता है। वह कर्ता प्रभु जिसका मित्र है उसके सभी काम सँवर जाते हैं। वह सेवक स्वीकृत और सफल होता है जिसके चित्त में हे प्रभु, तेरी याद बनी रहती है। जिसके चित्त में तू बसा रहता है उसे बहुत धन सम्पदा प्राप्त होती है। तुझे चित्त में बनाए रखने वाले का परिवार विशाल होता है और जिसके चित्त में तू याद रहता है उसने अपने कुल का भी उद्धार कर दिया होता है।। ६ ।। श्लोक महला ५ ।। जो अन्दर से अन्धे हैं वे बाहर से भी अन्धे अज्ञानी हैं और झूठ के ही गीत गाते रहते हैं। वे शरीर को धोते हैं, उस पर चक्र आदि के चिन्ह बनाते हैं और धन सम्पदा के लिये दौड़ते भागते रहते हैं। उनके अन्तर्मन की मैल नहीं उतरती और अहंकार में पड़े हुए वे बार-बार आते जाते रहते हैं। अज्ञान की नींद में लीन और काम वासना से संतप्त व्यक्ति मुँह से प्रभु का नाम लेता रहता है। नाम तो वैष्णव रखा है पर अहंकार से भरे कार्मो में लीन बना रहता है; चावल के छिलकों को कूटते जाने से भला क्या फल मिलेगा। हंसों के बीच में बैठा बगुला हंस नहीं बन जाता और हमेशा मछली में ही अपना ध्यान लगाए रहता है। जब हंस लोग विचार पूर्वक इधर-उधर देखते हैं तो पाते हैं कि उनका मेलजोल बगुलों से कभी नहीं हो सकता। हंसों ने तो हीरे मोती चुगने होते हैं और बगुला मछलियाँ और छोटे मेढकों को ढूँढने के लिए इधर-उधर आता जाता रहता है। बगुला भी बेचारा यह सोचकर वहाँ से उड़ चलता है कि कहीं मेरी पोल यहाँ ना खुल जाए। यदि प्रभु को यही भाता है तो फिर भला किसे दोष दिया जाए ; उसने तो जिसको जहाँ लगाया है वह वहीं लगा है। सच्चा गुरु रूपी सरोवर तो रत्नों से भरपूर है परन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में जिसकी कोई प्राप्ति होती है वही इन रत्नों को प्राप्त करता है। सच्चे गुरु के हुकुम में सिक्ख रूपी हंस सरोवर पर इकट्ठा हुए हैं। इस गुरु रूपी सरोवर में रत्न पदार्थ और माणिक आदि इतनी भरपूर मात्रा में हैं कि ये सब खाते खर्चते रहें तब भी उसमें कोई कमी नहीं आती। हंस उस सरोवर से कभी भी दूर नहीं होते और यही प्रभु को अच्छा भी लगता है। हे दास नानक, जिसके माथे पर प्रारम्भ से ही लेख लिखा है वही सिक्ख गुरु के पास आ पहुँचता है। वह स्वयं तो पार उतर जाता है, सारे परिवार को भी पार उतार देता है और सारी सृष्टि को भी मुक्त करा देता है।। १ ।। महला ५ ।। अनेकों मार्गों (शास्त्रों) का ज्ञाता होने के कारण व्यक्ति पंडित कहलाता है और दाल के रूप में पत्थर के दाने की तरह हो जाता है जो ना गलता है और ना ही चबा कर उसका स्वाद लिया जा सकता है। उसके अन्तर्मन में मोह और भ्रम सदा बने रहते हैं और उसका शरीर किसी स्थान पर स्थिर नहीं बना रहता। वह झूठ में ही आता है और झूठ में ही चला जाता है और वह सदैव धन सम्पदा के लिये ही देखता रहता है। जब वह सत्य बोलता है तो उसे बहुत खीझ आती है और उसके मन में बहुत क्रोध बना रहता है। उस पर दुर्मति का और कुबुद्धि का भाव बना रहता है और उस मूर्ख का मन मोह में लगा रहता है। वह विकार रूपी ठगों के साथ मिलकर ठग बन जाता है और इनका संग साथ भी एक जैसा ही हो जाता है। जब सच्चा गुरु रूपी सुनार उसे अपनी परख की आँखों से देखता है तो सोना बने हुए इस ठग व्यक्ति का लोहे वाला रूप उभर कर उसके सामने आ जाता है। इसने अपने आपको बहुत स्थानों पर मिला-मिला कर प्रस्तुत किया होता है परन्तु सब जगह इसकी पोल खुल जाती है। सच्चे गुरु की शरण में यदि यह आ जाए तो यह राख बना हुआ व्यक्ति भी सोना बन जाता है। शत्रुता के भाव से रहित सच्चे गुरु के लिये पुत्र और शत्रु एक समान ही होते हैं; सच्चा गुरु अवगुणों को काट कर देही को शुद्ध कर देता है। हे नानक,

जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुर नालि सनेहा ॥ अंम्रित बाणी सतिगुर पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥ आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुखु होहा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो तुधु भाणा जंतु सो तुधु बुझई ॥ जो तुधु भाणा जंतु सु दरगह सिझई ॥ जिस नो तेरी नदरि हउमै तिसु गई ॥ जिस नो तू संतुसटु कलमल तिसु खई ॥ जिस कै सुआमी वलि निरभउ सो भई ॥ जिस नो तू किरपालु सचा सो थिअई ॥ जिस नो तेरी मइआ न पोहै अगनई ॥ तिस नो सदा दइआलु जिनि गुर ते मति लई ॥ ७ ॥ सलोक मः ५ ॥ करि किरपा किरपाल आपे बखसि लै ॥ सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाइ पै ॥ मन तन अंतरि वसु दूखा नासु होइ ॥ हथ देइ आपि रखु विआपै भउ न कोइ ॥ गुण गावा दिनु रैणि एतै कंमि लाइ ॥ संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइ ॥ सरब निरंतरि खसमु एको रवि रहिआ ॥ गुर परसादी सचु सचो सचु लहिआ ॥ दइआ करहु दइआल अपणी सिफति देहु ॥ दरसनु देखि निहाल नानक प्रीति एह ॥ १ ॥ मः ५ ॥ एको जपीऐ मनै माहि इकस की सरणाइ ॥ इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइ ॥ इको दाता मंगीऐ सभु किछु पलै पाइ ॥ मनि तनि सासि गिरासि प्रभु इको इकु धिआइ ॥ अंम्रितु नामु निधानु सचु गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वडभागी ते संत जन जिन मनि वुठा आइ ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ दूजा कोई नाहि ॥ नामु धिआई नामु उचरा नानक खसम रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस नो तू रखवाला मारे तिसु कउणु ॥ जिस नो तू रखवाला जिता तिनै भैणु ॥ जिस नो तेरा अंगु तिसु मुखु उजला ॥ जिस नो तेरा अंगु सु निरमली हूं निरमला ॥ जिस नो तेरी नदरि न लेखा पुछीऐ ॥ जिस नो तेरी खुसी तिनि नउ निधि भुंचीऐ ॥ जिस नो तू प्रभ वलि तिसु किआ मुहछंदगी जिस नो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी ॥ ८ ॥ सलोक महला ५ ॥ होहु क्रिपाल सुआमी मेरे संतां संगि विहावे ॥ तुधहु भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदे न चुकनि हावे ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अवघटि घट घाट ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कोइ न बंधै वाट ॥ २ ॥ पउड़ी ॥

जिसके माथे पर प्रारम्भ से ही लिखा हो उसी का ही सच्चे गुरु के साथ प्रेम बना रहता है। सच्चे गुरु की अमृतवाणी उसके हृदय में ही बसती है जिसपर वह गुरु कृपालु होता है। ऐसे व्यक्ति का आना जाना समाप्त हो जाता है और उसे सदैव सुख ही सुख मिलता है।। २ ।। पउड़ी।। जो जीव तुझे अच्छा लग जाता है वही तुझे जान पाता है। जो जीव तुझे अच्छा लगता है वही तेरे दरबार में सफल होता है। जिस पर तेरी कृपा दृष्टि होती है उसका अहंकार समाप्त हो जाता है। जिस पर तू प्रसन्न होता है उसके सभी पापों का नाश हो जाता है। वह मालिक जिसके पक्ष में होता है वह निर्भय हो जाता है। जिस पर तू कृपालु होता है हे प्रभु, वही सच्चा होता है। जिस पर तेरी कृपा होती है उसे साँसारिकता की आग छू नहीं सकती। जिसने गुरु से सुबुद्धि प्राप्त कर ली है वह प्रभु सदैव उस पर दयालु बना रहता है।। ७ ।। श्लोक महला ५ ।। हे कृपालु प्रभु, कृपा करो और मुझे क्षमा कर दो। मैं सच्चे गुरु के चरणों में पड़कर सदैव तेरे नाम का सुमिरन करता रहूँ। तू मेरे मन और तन में बस जा ताकि मेरे दुखों का नाश हो जाए। तू मुझे अपना हाथ देकर बचा ले ताकि मुझे किसी प्रकार का भी भय प्रभावित ना कर सके। मैं दिन रात तेरे गुण गाता रहूँ, तू मुझे इसी काम में लगाए रख। शान्त पुरुषों की संगत में मेरा अहंकार का रोग चला जाए। सभी का सदैव मालिक बने रहने वाला प्रभु सबमें व्याप्त बना हुआ है। गुरु की कृपा से मैंने सच्चे हरि को पूर्णतया सत्य रूप में पहचान लिया है। हे दयालु प्रभु, दया करो और मुझे अपना गुणानुवाद प्रदान करो। नानक का तो इसी बात में प्रेम है कि तेरे दर्शन को देखकर मैं आनन्दित बना रहूँ।। १ ।। महला ५ ।। उस एक प्रभु का ही मन में सुमिरन करना चाहिए और उस प्रभु की ही शरण में बने रहना चाहिए। हे जीव, तू उस एक के साथ ही प्रेम कर क्योंकि तेरा अन्य कोई ठिकाना नहीं। एक ही दाता से यदि माँगा जाए तो सब कुछ प्राप्त हो जाता है। हे जीव, तन मन और प्रत्येक श्वास ग्रास के साथ तू केवल एक प्रभु का ही सुमिरन कर। प्रभु का अमृत नाम सत्य का भण्डार है जिसे गुरमुख बनकर ही पाया जाता है। वे सन्तजन भाग्यशाली हैं जिनके मन में उस प्रभु ने निवास बना लिया है। वह प्रभु ही जल स्थल और अन्तरिक्ष में व्याप्त है; उसके बिना दूसरा कोई नहीं है। हे नानक, मैं तो प्रभु-नाम का ही सुमिरन करूं और प्रभु की रज़ा में उसके नाम का उच्चारण करता रहूँ।। २ ।। पउड़ी।। जिसका तू रक्षक है उसे कौन मार सकता है। जिसका तू रखवाला है उसने तीनों लोकों को जीत लिया है। जिसके पक्ष में तू है उसका मुख उज्जवल बना रहता है और जिसके साथ तू है वह पवित्रता से भी ज्यादा पवित्र हो जाता है। जिस पर तेरी कृपा दृष्टि है उससे लेखा जोखा नहीं पूछा जाता और जिस पर तू प्रसन्न होता है वह नवनिधियों के भण्डारों का सुख भोगता है। हे प्रभु, जिसके पक्ष में तू है उसे भला फिर किसी की मोहताजी कैसे हो सकती है और जिसपर तेरी कृपा है वह ही तेरी बंदगी में लगा है।। ८ ।। श्लोक महला ५ ।। हे प्रभु, मुझ पर कृपा करो ताकि मेरा जीवन शान्त पुरुषों के साथ व्यतीत हो। जो तुझे भूल जाते हैं वे जन्मते और मरते रहते हैं तथा उनके दुख कभी समाप्त नहीं होते।। १ ।। महला ५ ।। अपने सच्चे गुरु प्रभु का सुमिरन करते रहो चाहे कठिन रास्ता हो, घाटी हो अथवा पार उतारने का घाट हो अर्थात सर्वत्र उस प्रभु का जाप करते रहो। प्रभु-नाम का सुमिरन करते रहने से मार्ग में कोई भी रुकावट नहीं आती।। २ ।। पउड़ी।।

तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुणि के जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अंम्रितु सेइ खाहि ॥ कलि महि एहो पुंनु गुण गोविंद गाहि ॥ सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥ ९ ॥ सलोक मः ५ ॥ दूजा तिसु न बुझाइहु पारब्रहम नामु देहु आधारु ॥ अगमु अगोचरु साहिबो समरथु सचु दातारु ॥ तू निहचलु निरवैरु सचु सचा तुधु दरबारु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ अंतु न पारावारु ॥ प्रभु छोडि होरु जि मंगणा सभु बिखिआ रस छारु ॥ से सुखीए सचु साह से जिन सचा बिउहारु ॥ जिना लगी प्रीति प्रभ नाम सहज सुख सारु ॥ नानक इकु आराधे संतन रेणारु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ अनद सूख बिस्राम नित हरि का कीरतनु गाइ ॥ अवर सिआणप छाडि देहि नानक उधरसि नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥ ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥ ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ ॥ ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ ॥ ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥ ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥ सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥ तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥ १० ॥ सलोक मः ५ ॥ आपे वैदु आपि नाराइणु ॥ एहि वैद जीअ का दुखु लाइण ॥ गुर का सबदु अंम्रित रसु खाइण ॥ नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइण ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हुकमि उछलै हुकमे रहै ॥ हुकमे दुखु सुखु सम करि सहै ॥ हुकमे नामु जपै दिनु राति ॥ नानक जिस नो होवै दाति ॥ हुकमि मरै हुकमे ही जीवै ॥ हुकमे नान्हा वडा थीवै ॥ हुकमे सोग हरख आनंद ॥ हुकमे जपै निरोधर गुर मंत ॥ हुकमे आवणु जाणु रहाए ॥ नानक जा कउ भगती लाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हउ तिसु ढाढी कुरबाणु जि तेरा सेवदारु ॥ हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार ॥ सो ढाढी धनु धंनु जिसु लोड़े निरंकारु ॥ सो ढाढी भागठु जिसु सचा दुआर बारु ॥ ओहु ढाढी तुधु धिआइ कलाणे दिनु रैणार ॥ मंगै अंम्रित नामु न आवै कदे हारि ॥ कपड़ु भोजनु सचु रहदा लिवै धार ॥ सो ढाढी

जहाँ कोई भी नहीं होता वहाँ पर भी तू ही समर्थ रूप से विद्यमान रहता है। माँ के पेट की अग्नि में भी तेरी ही रक्षा काम करती है। तेरे नाम को सुनकर यम के दूत भी छोड़कर भाग खड़े होते हैं। यह संसार सागर बहुत ही विषम और गहरा है, इसे शब्द-गुरु के माध्यम से ही पार किया जाता है। जिन्हें वास्तविक प्यास लगती है वे ही अमृत का पान करते हैं। कलियुग में यही पुण्य देने वाला गुण है कि धरती के स्वामी उस प्रभु का चिन्तन मनन करते रहो। सब पर कृपा करने वाला वह प्रभु प्रत्येक श्वास के साथ हमारा ध्यान रखता है। जो श्रद्धापूर्वक हे प्रभु, तेरी शरण में आ जाता है वह खाली हाथ नहीं लौटता।। ८ ।। श्लोक महला ५ । हे प्रभु, जिसे तू नाम का आसरा देता है उसे अब कोई दूसरा मत दिखाओ। तू अगम्य, अगोचर साहिब है और समर्थ सच्चा दान देने वाला है। तू अटल शत्रु भाव से विहीन और सच्चा है तथा तेरा दरबार भी सच्चा है। तेरा मूल्य नहीं आँका जा सकता क्योंकि तेरे ओर-छोर का कुछ भी पता नहीं चलता। प्रभु को छोड़कर जो कुछ भी अन्य माँगा जाता है ऐसे सभी रस विष और राख के समान हैं। वे साहूकार ही सच्चे और सुखी हैं जिनका व्यवहार सच्चा है। जिनको प्रभु नाम की प्रीति लग गई है उन्हें सहज आनन्द की वास्तविकता पता लग जाती है। नानक तो केवल उस एक प्रभु की ही आराधना करता है और शान्त पुरुषों की चरण धूलि बना रहता है।। १ ।। महला ५ ।। प्रभु का कीर्तन करते रहने से आनन्द, सुख और सदा शान्ति प्राप्त होती रहती है। हे नानक, तुम अन्य चतुराईयों को छोड़ दो क्योंकि तेरा उद्धार केवल प्रभु-नाम से ही होगा।। २ ।। पउड़ी।। संसार से नफरत करने से भी तू वश में नहीं आ सकता, वेदों के पठन-पाठन से तू वश में नहीं आता, तीर्थ स्नान करते रहने से भी तू वश में नहीं आता और ना धरती पर दौड़ते-भागते रहने से ही तू वश में आता है। किसी चतुराई से भी तू वश में नहीं आता और बहुत दान देने से भी तू वश में नहीं किया जाता। हे अगम्य, अगोचर प्रभु, यह सब कुछ तेरे ही वश में है; तू भक्तों के वश में है और भक्तों का बल भी तू ही है।। १० ।। श्लोक महला ५ ।। वह प्रभु स्वयं ही सबका वैद्य है। यह साँसारिक वैद्य तो आत्मा के दुखों को लगाने वाले होते हैं। शब्द-गुरु का अमृत रस ही खाने लायक भोजन है और हे नानक, यह जिसके मन मे बस जाता है उसके सभी दुख मिट जाते हैं।। १ ।। महला ५ ।। हुकुम के अन्तर्गत ही व्यक्ति इधर-उधर उछलता कूदता है और हुकुम में ही स्थिर होकर बैठता है। हुकुम के अन्तर्गत ही वह दुख और सुख को समान भाव से सहन करता है। उस प्रभु के हुकुम में ही वह दिन रात प्रभु-नाम का सुमिरन करता है और हे नानक, ऐसा वही कर पाता है जिसको प्रभु की ओर से यह दान प्राप्त होता है। हुकुम में ही व्यक्ति मरता है, जीता है और हुकुम में ही वह छोटा और बड़ा बनता है। हुकुम में ही शोक, हर्ष और आनन्द बना रहता हैं और हुकुम में ही जीव सभी दुखों को रोकने वाला गुरु मन्त्र जपता रहता है। हुकुम में ही आवागमन समाप्त होता है परन्तु हे नानक, यह उसी के साथ होता है जिसको वह अपनी भक्ति में लीन कर देता है।। २ ।। पउड़ी।। मैं उस गुणानुवाद करने वाले पर कुर्बान जाता हूँ जो तेरा सेवक है। जो गायक तेरे अपार गुणों का गायन करता है मैं उस पर भी बलिहारी जाता हूँ। निराकार प्रभु जिसे चाहता है मैं उस गुणानुवादक को धन्य और सफल मानता हूँ। वह गायक भी भाग्यशाली है जिसके पास प्रभु का सच्चा ठिकाना है। ऐसा गायक ही तेरा सुमिरन करता है और दिन रात तेरा गुणानुवाद करता है। वह केवल अमृत नाम ही माँगता है और जीवन की बाजी में कभी हार कर नहीं लौटता। उसका कपड़ा और भोजन सत्य ही होता है और उसने हृदय में प्रभु की लौ लगाई होती है। प्रभु का वही गायक

गुणवंतु जिस नो प्रभ पिआरु ॥ ११ ॥ सलोक मः ५ ॥ अंम्रित बाणी अमिउ रसु अंम्रितु हरि का नाउ ॥ मनि तनि हिरदै सिमरि हरि आठ पहर गुण गाउ ॥ उपदेसु सुणहु तुम गुरसिखहु सचा इहै सुआउ ॥ जनमु पदारथु सफलु होइ मन महि लाइहु भाउ ॥ सूख सहज आनदु घणा प्रभ जपतिआ दुखु जाइ ॥ नानक नामु जपत सुखु ऊपजै दरगह पाईऐ थाउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक नामु धिआईऐ गुरु पूरा मति देइ ॥ भाणै जप तप संजमो भाणै ही कढि लेइ ॥ भाणै जोनि भवाईऐ भाणै बखस करेइ ॥ भाणै दुखु सुखु भोगीऐ भाणै करम करेइ ॥ भाणै मिटी साजि कै भाणै जोति धरेइ ॥ भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनहि करेइ ॥ भाणै नरकि सुरगि अउतारे भाणै धरणि परेइ ॥ भाणै ही जिसु भगती लाए नानक विरले हे ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडिआई सचे नाम की हउ जीवा सुणि सुणे ॥ पसू परेत अगिआन उधारे इक खणे ॥ दिनसु रैणि तेरा नाउ सदा सद जापीऐ ॥ त्रिसना भुख विकराल नाइ तेरै ध्रापीऐ ॥ रोगु सोगु दुखु वंञै जिसु नाउ मनि वसै ॥ तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ खंड ब्रहमंड बेअंत उधारणहारिआ ॥ तेरी सोभा तुधु सचे मेरे पिआरिआ ॥ १२ ॥ सलोक मः ५ ॥ मित्रु पिआरा नानक जी मै छडि गवाइआ रंगि कसुंभै भुली ॥ तउ सजण की मै कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ ससु विराइणि नानक जीउ ससुरा वादी जेठो पउ पउ लूहै ॥ हभे भसु पुणेदे वतनु जा मै सजणु तूहै ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु दरदु निवारणो ॥ जिसु तू वुठा चिति तिसु कदे न हारणो ॥ जिसु मिलिआ पूरा गुरू सु सरपर तारणो ॥ जिस नो लाए सचि तिसु सचु सम्हालणो ॥ जिसु आइआ हथि निधानु सु रहिआ भालणो ॥ जिस नो इको रंगु भगतु सो जानणो ॥ ओहु सभना की रेणु बिरही चारणो ॥ सभि तेरे चोज विडाण सभु तेरा कारणो ॥ १३ ॥ सलोक मः ५ ॥ उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥ हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ फिरदी फिरदी नानक जीउ हउ फावी थीई बहुतु दिसावर पंधा ॥ ता हउ सुखि सुखाली सुती जा गुर

गुणवान है जिसके हृदय में प्रभु का प्यार बना रहता है।। ११ ।। श्लोक महला ५ ।। प्रभु की वाणी अमृत है। उसका रस अमृत है और प्रभु का नाम भी अमृत है। हे जीव, तू तन, मन और हृदय से उसका सुमिरन कर और आठों प्रहर प्रभु का गुणानुवाद कर। हे गुरु के सिक्खो, तुम इस उपदेश को ध्यान से सुन लो कि वास्तव में जीवन का सच्चा प्रयोजन यही है। मन में ऐसा प्रेम उत्पन्न करो कि यह मिला हुआ जीवन रूपी पदार्थ सफल हो जाए। प्रभु का जाप करने से सुख सहज और अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है तथा दुख चला जाता है। हे नानक, प्रभु नाम के सुमिरन से सुख उत्पन्न होता है और प्रभु दरबार में स्थान प्राप्त हो जाता है।। १ ।। महला ५ ।। हे नानक, पूर्ण गुरु यही उपदेश देता है कि प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाना चाहिए। उसकी आज्ञा में ही जीव जप, तप संयम आदि कर्म करता है और प्रभु अपनी रज़ा में ही इन कर्मकाण्ड के बन्धनों से उसे मुक्त कर देता है। उसकी आज्ञा में ही जीव योनियों में भटकाया जाता है और उसकी आज्ञा में ही उसकी कृपा होती है। उसकी आज्ञा में ही दुख-सुख भोगा जाता है और उसकी आज्ञा में ही कर्म किए जाते हैं। उसकी आज्ञा में ही मिट्टी रूपी शरीर की सृजना होती है और उसकी आज्ञा में ही उसमें प्रभु की ज्योति रखी जाती है। अपनी आज्ञा में ही वह सभी भोगों को भोगवाता है और अपनी आज्ञा में ही वह इन सबको रोक भी देता है। प्रभु की आज्ञा में ही नरक स्वर्ग में जीव को भेजा जाता है और उसकी आज्ञा से ही वह धरती पर आता और नष्ट होता है। हे नानक, वे बिरले लोग ही हैं जिन्हें प्रभु की आज्ञा में उसकी भक्ति में वह स्वयं ही लगाता है।। २ ।। पउड़ी।। मैं प्रभु के सच्चे नाम की महिमा सुन-सुनकर जीवित बना रहता हूँ क्योंकि वही एक क्षण भर में पशु एवं प्रेत चित्तवृत्ति वाले अज्ञानियों का उद्धार कर देता है। दिन रात सदैव तेरे नाम का ही सुमिरन किया जाता है और तृष्णा तथा विकराल भूख तेरे नाम से ही समाप्त होती है। जिसके हृदय में तेरा नाम बसता है उसके रोग, शोक और दुख दूर हो जाते हैं। जो शब्द-गुरु में आनन्द लेता रहता है उसे ही सब प्रकार के लाल एवं रत्न आदि प्राप्त हो जाते हैं। हे सबका उद्धार करने वाले प्रभु, तेरे ब्रह्माण्ड एवं उनके खण्ड अनन्त हैं ; हे मेरे प्यारे सच्चे प्रभु, तेरी महिमा तो तुझ से ही जानी जाती है।। १२ ।। श्लोक महला ५ ।। हे नानक, माया के जाल में मैंने उस प्यारे मित्र प्रभु को भूलकर उसे गँवा दिया है और मैं माया के कच्चे रंग में रंगी हुई भटक गई हूँ। तेरे जैसे सज्जन का हे प्रभु, मैंने महत्व नहीं जाना परन्तु तेरे बिना तो मेरा आधी दमड़ी भी मोल नहीं है।। १ ।। महला ५ ।। अविद्या रूपी मेरी सास मेरी शत्रु है, मेरा देह-प्रेम झगड़ालू ससुर है और जेठ रूपी यमराज मुझे बार-बार जलाता रहता है परन्तु हे प्रभु यदि तू मेरा मित्र हो जाए तो ये सभी खाक छानते भटकते रहेंगे अर्थात फिर मुझे इनकी परवाह नहीं।। २ ।। पउड़ी।। जिसके हृदय में तू बस गया है उसकी पीड़ा दूर हो गई। जिसके हृदय में तू बस गया है वह कभी भी हारता नहीं। जिसे पूर्ण गुरु मिल गया है वह आवश्यक रूप से पार उतर जाता है। जिसे प्रभु सत्य में लीन करता है वह सत्य का ही सुमिरन करता रहता है। जिसके हाथ में प्रभु नाम का भण्डार आ जाता है वह इधर-उधर भटकने से बच जाता है। एक ही रंग में रंगे रहने वाले को भक्त के रूप में जाना जाता है और वही सबकी चरणधूलि बनकर सबके चरणों का प्रेमी हो जाता है। हे प्रभु, ये सब तेरे ही कौतुक है और तू ही इस सबका कारण है।। १३ ।। श्लोक महला ५ ।। हे नानक, मैंने प्रशांसा और निन्दा आदि सब कुछ छोड़ दिया है और अपने अहंकार को भी त्याग दिया है। जब मैंने सभी सम्बन्धों को झूठा देख लिया तभी मैं हे प्रभु, तेरे आँचल में आ लगी हूँ।। १ ।। महला ५ ।। हे नानक, भटकती-भटकती मैं पागल हो गई हूँ क्योंकि संसार में अनेकों ही रास्ते हैं जिनमें सही मार्ग का मुझे पता नहीं। मैं तो तब ही सुखपूर्वक सो सकी हूँ जब मुझे

मिलि सजणु मै लधा ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभे दुख संताप जां तुधहु भुलीऐ ॥ जे कीचनि लख उपाव तां कही न घुलीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सु निरधनु कांढीऐ ॥ जिस नो विसरै नाउ सु जोनी हांढीऐ ॥ जिसु खसमु न आवै चिति तिसु जमु डंडु दे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति रोगी से गणे ॥ जिसु खसमु न आवी चिति सु खरो अहंकारीआ ॥ सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ ॥ १४ ॥ सलोक मः ५ ॥ तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ॥ घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पाव सुहावे जां तउ धिरि जुलदे सीसु सुहावा चरणी ॥ मुखु सुहावा जां तउ जसु गावै जीउ पइआ तउ सरणी ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मिलि नारी सतसंगि मंगलु गावीआ ॥ घर का होआ बंधानु बहुड़ि न धावीआ ॥ बिनठी दुरमति दुरतु सोइ कूड़ावीआ ॥ सीलवंति परधानि रिदै सचावीआ ॥ अंतरि बाहरि इकु इक रीतावीआ ॥ मनि दरसन की पिआस चरण दासावीआ ॥ सोभा बणी सीगारु खसमि जां रावीआ ॥ मिलीआ आइ संजोगि जां तिसु भावीआ ॥ १५ ॥ सलोक मः ५ ॥ हभि गुण तैडे नानक जीउ मै कू थीए मै निरगुण ते किआ होवै ॥ तउ जेवडु दातारु न कोई जाचकु सदा जाचोवै ॥ १ ॥ मः ५ ॥ देह छिजंदड़ी ऊण मझूणा गुरि सजणि जीउ धराइआ ॥ हभे सुख सुहेलड़ा सुता जिता जगु सबाइआ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडा तेरा दरबारु सचा तुधु तखतु ॥ सिरि साहा पातिसाहु निहचलु चउरु छतु ॥ जो भावै पारब्रहम सोई सचु निआउ ॥ जे भावै पारब्रहम निथावे मिलै थाउ ॥ जो कीन्ही करतारि साई भली गल ॥ जिन्ही पछाता खसमु से दरगाह मल ॥ सही तेरा फुरमानु किनै न फेरीऐ ॥ कारण करण करीम कुदरति तेरीऐ ॥ १६ ॥ सलोक मः ५ ॥ सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपंदड़ी लाली ॥ पंधि जुलंदड़ी मेरा अंदरु ठंढा गुर दरसनु देखि निहाली ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हठ मंझाहू मै माणकु लधा ॥ मुलि न घिधा मै कू सतिगुरि दिता ॥ ढूंढ वञाई थीआ थिता ॥ जनमु पदारथु नानक जिता ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ॥ जिसु गुर मिलि कमलु प्रगासिआ सो अनदिनु जागा ॥ लगा रंगु

मेरा मित्र गुरु प्राप्त हो गया है।। २ ।। पउड़ी।। जब तुझे भुला दिया जाता है तो सभी दुख और संताप दुखी करने लगते हैं; फिर भला लाखों उपाय किए जाएँ परन्तु जीव इन दुख और रोगों से ठीक नहीं हो पाता। प्रभु नाम को भुला देने वाले को निर्धन कहा जाता है और जिसे प्रभु नाम भूल जाता है वही योनियों को भोगता रहता है। जिसे प्रभु मन में याद नहीं आता यम उसे ही दण्ड देता है; जिसे वह मालिक याद नहीं आता उसकी गिनती रोगियों में की जाती है। चित्त में मालिक को ना याद करने वाले को बहुत बड़े अहंकारी के रूप में जाना जाता है; नाम को भुलाने वाले को ही इस संसार में दुखी कहा जाता है।। १४ ।। श्लोक महला ५।। हे प्रभु, तेरे रूप वाला मैंने कोई नहीं देखा और तू ही नानक के मन को अच्छा लगने वाला है। मैं उस बिचौलिये मित्र गुरु पर बार बार बलिहारी जाता हूँ जिससे मिलकर मैंने उस प्रभु पति को पहचान लिया है।। १ ।। महला ५ ।। मेरे पाँव तभी सुन्दर हैं यदि वे तुम्हारी तरफ चलें और मेरा सिर तेरे चरणों में ही शोभा पाता है। तेरा यश गाने से ही मेरा मुख सुन्दर है और तेरी शरण में आने से ही मेरी आत्मा शोभायमान बनती है।। २ ।। पउड़ी।। सत्संगी जीव स्त्रियों ने मिलकर उसके मंगलगीत गाए हैं जिससे हृदय में ही स्थिरता प्राप्त हो गई है और फिर इधर-उधर नहीं भटकना पड़ा है। दुर्मति और पाप विनष्ट हो गए हैं और झूठ अब दूर-दूर तक पास नहीं आता। जीव स्त्री अब शुभ आचरण वाली और प्रमुख बन गई है तथा उसके हृदय में सत्य बस गया है। वह अन्दर बाहर अर्थात मन में और बाहरी आचरण में एक ही युक्ति अपनाए रहती है अर्थात उसकी करनी और कथनी में कोई अन्तर नहीं रह गया। तेरे चरणों की ऐसी दासियों को अब मन में तेरे चरणों की प्यास बनी रहती है। जब इन्होंने अपने मालिक के साथ रमण कर लिया है इनकी शोभा और इनका शृंगार सार्थक हो गया है। जब उस प्रभु को अच्छा लगा तभी संयोग वश हे प्रभु, ये तुझसे आ.मिली हैं।। १५ ।। श्लोक महला ५ ।। नानक का कथन है कि हे प्रभु, तेरे ही सभी गुण मुझे मिले हैं अन्यथा मुझ गुण विहीन से भला क्या हो सकता था। तेरे जैसा दाता अन्य कोई नहीं है और यह याचक तो सदैव तुझसे माँगता ही रहता है।। १ ।। महला ५ ।। मेरा शरीर क्षीण हो गया है, मेरा शरीर, क्षीण खाली और चिंतातुर हो गया है परन्तु उस सज्जन गुरु के माध्यम से मुझे कुछ धैर्य मिला है। अब सारा संसार सुखी होकर निश्चिंत बनकर प्रभु के ध्यान की नींद में सो गया है।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तेरा दरबार बड़ा है और तेरा सिहांसन भी महान है। तेरा चँवर और छत्र अटल है और तू सम्राटों का भी सम्राट है। जो परब्रह्म प्रभु को भाता है वही सच्चा न्याय है और यदि प्रभु को ही अच्छा लगे तो स्थान विहीन जीव को भी आसरा मिल जाता है। जो कर्ता प्रभु ने की है वही बात अच्छी है और जिन्होंने उस मालिक को पहचान लिया है वही प्रभु के दरबार में सुरक्षित स्थान प्राप्त करते हैं। तेरी आज्ञा सच्ची है और कोई भी उसे टाल नहीं सकता। हे सभी कारणों के कारण कृपालु प्रभु, यह सब तेरा ही खेल है।। १६ ।। श्लोक महला ५ ।। तेरी महिमा सुनते हुए मेरा मन-तन खिल उठा है और तेरे नाम का सुमिरन करने से मुझ पर प्रेम का लाल रंग चढ़ गया है। तेरे मार्ग पर चलने से मेरा हृदय शीतल हो गया है और गुरु के दर्शन को देखकर मैं प्रसन्न हो उठी हूँ।। १ ।। महला ५ ।। मैंने अपने हृदय में ही प्रभु नाम रूपी माणिक्य को ढूँढ लिया है परन्तु वास्तव में मैंने यह मोल नहीं लिया अपितु मुझे तो सच्चे गुरु ने यह स्वयं प्रदान किया है। अब मेरी भटकन समाप्त हो गई है और मुझे स्थिरता मिल गई है। हे नानक, इस प्रकार इस जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को मैंने जीत लिया है।। २ ।। पउड़ी।। जिसके मस्तक पर भाग्य लेख लिखा हो वही प्रभु सेवा में लगता है और गुरु से मिलकर जिसका हृदय-कमल खिल उठा है वही सदैव जागृत बना रहता है। जिसका प्रेम

चरणारबिंद सभु भ्रमु भउ भागा ॥ आतमु जिता गुरमती आगंजत पागा ॥ जिसहि धिआइआ पारब्रहमु सो कलि महि तागा ॥ साधू संगति निरमला अठसठि मजनागा ॥ जिसु प्रभु मिलिआ आपणा सो पुरखु सभागा ॥ नानक तिसु बलिहारणै जिसु एवड भागा ॥ १७ ॥ सलोक मः ५ ॥ जां पिरु अंदरि तां धन बाहरि ॥ जां पिरु बाहरि तां धन माहरि ॥ बिनु नावै बहु फेर फिराहरि ॥ सतिगुरि संगि दिखाइआ जाहरि ॥ जन नानक सचे सचि समाहरि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ॥ नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडी हू वडा अपारु तेरा मरतबा ॥ रंग परंग अनेक न जापन्हि करतबा ॥ जीआ अंदरि जीउ सभु किछु जाणला ॥ सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥ तेरै घरि आनंदु वधाई तुधु घरि ॥ माणु महता तेजु आपणा आपि जरि ॥ सरब कला भरपूरु दिसै जत कता ॥ नानक दासनि दासु तुधु आगै बिनवता ॥ १८ ॥ सलोक मः ५ ॥ छतड़े बाजार सोहनि विचि वपारीए ॥ वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धणी ॥ १ ॥ महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सफलिउ बिरखु सुहावड़ा हरि सफल अंम्रिता ॥ मनु लोचै उन्ह मिलण कउ किउ वंञै घिता ॥ वरना चिहना बाहरा ओहु अगमु अजिता ॥ ओहु पिआरा जीअ का जो खोल्है भिता ॥ सेवा करी तुसाड़ीआ मै दसिहु मिता ॥ कुरबाणी वंञा वारणै बले बलि किता ॥ दसनि संत पिआरिआ सुणहु लाइ चिता ॥ जिसु लिखिआ नानक दास तिसु नाउ अंम्रितु सतिगुरि दिता ॥ १९ ॥ सलोक महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥ १ ॥ महला ५ ॥ कबीर चावल कारणे तुख कउ मुहली लाइ ॥ संगि कुसंगी बैसते तब पूछे धरम राइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही वड परवारु आपि इकातीआ ॥ आपणी कीमति आपि आपे ही जातीआ ॥ सभु किछु आपे आपि आपि उपंनिआ ॥ आपणा कीता आपि आपि वरंनिआ ॥ धंनु सु तेरा थानु जिथै तू वुठा ॥

प्रभु के चरण कमलों में लग गया है उसका सारा भ्रम और भय भाग खड़ा हुआ है। उसने गुरु के उपदेश के माध्यम से आत्मा को जीत लिया है कभी ना टूटने वाला प्रभु रूपी धागा उसने पहन लिया है। जिसने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है वह ही इस कलियुग में स्थित बना हुआ है। वह साधसंगति में ऐसे ही निर्मल बना रहता है कि मानो उसने अड़सठ तीर्थों का स्नान कर लिया है। जिसे अपना प्रभु मिल गया है वह व्यक्ति वास्तव मे भाग्यशाली है। जिसका इस प्रकार का भाग्य है नानक तो उस पर बलिहारी जाता है।। १७ ।। श्लोक महला ५ ।। जब प्रिय प्रभु अन्दर था तो माया रूपी स्त्री बाहर हो गई और जब प्रिय हृदय से बाहर निकल आया तो माया रूपी स्त्री हर बात में चौधरानी और चतुर बनकर अन्दर स्थित हो गई है। सच्चे गुरु के बिना तो भटकना ही भटकना है। सच्चे गुरु ने उस प्रभु को प्रत्यक्ष रूप में अन्दर ही दिखा दिया है और हे नानक, उसके सेवक उस सत्य प्रभु में ही लीन हो गए हैं।। १ ।। महला ५ ।। जीव अनेकों यत्न करता रहता है परन्तु उस एक प्रभु के लिये उससे प्रयत्न नहीं होता। हे नानक, जिस प्रयत्न से सारे संसार का उद्धार होता है उसके महत्व को कोई बिरला ही जान पाता है।। २ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तेरी पदवी बहुत बड़े से बड़ी एवं अपरम्पार है। तेरे बनाए अनेकों रंग-बिरंगे जीव हैं परन्तु उन्हें तेरे कौतुक याद नहीं रहते। तू सभी जीवों में उनका जीवन होकर सब कुछ जानने वाले के रूप में स्थित है। यहाँ सब कुछ तेरे वश में है और संसार रूपी यह तेरा घर बहुत ही अच्छा है। तेरे इस संसार रूपी घर में आनन्द और बधाईयां हैं। यहाँ तेरा ही सम्मान और तेज है जिसे तू स्वयं ही सन्तुलित रूप से सहन करता रहता है। तू यंत्र-तंत्र सभी शक्तियों से भरपूर दिखाई देता रहता है ; नानक तो तेरे दासों का भी दास है जो तेरे आगे विनती कर रहा है।। १८ ।। श्लोक महला ५ ।। आकाश रूपी छत से ढके हुए ये सभी ब्रह्माण्ड मानों बाजार हैं और प्रभु को खोजने वाले भक्तजन इसमें व्यापारी बने घूम रहे हैं। यहाँ एक प्रभु-नाम का अपरम्पार सौदा है जिसका हे नानक, जो लाभ प्राप्त करता है वही वास्तविक धनवान बनता है।। १ ।। महला ५ ।। हे कबीर, यहाँ हमारा कोई नहीं है और हम भी किसी के नहीं हैं। जिसने यह रचना बनाई है इस रचना सहित हमें तो उसी में लीन हो जाना है।। २ ।। पउड़ी।। वह प्रभु एक सुन्दर वृक्ष है और उसी को नाम रूपी अमृत फल लगता है। मन उस प्रभु से मिलना चाहता है परन्तु उसके नाम फल को कैसे प्राप्त किया जाए। वह वर्णो और चिन्हों से परे अगम्य और अजेय है। इस आत्मा का प्यारा वह प्रभु ही है जो सभी रहस्यों को प्रकट करता है। हे मेरे मित्र, मुझे बताओ ताकि मैं तुम्हारी सेवा ही करता रहूँ। मैं तुम पर कुर्बान जाता हूँ और बार-बार बलिहारी जाता हूँ। प्यारे शान्त पुरुष उसका तरीका बताते हैं जिसे सभी ध्यान लगाकर सुनो। हे दास नानक, जिसके भाग्य में प्रभु ने लिख दिया है सच्चे गुरु ने यह नाम-अमृत उसे ही प्रदान किया है।। १६ ।। श्लोक महला ५ ।। हे कबीर, यह शरीर रूपी धरती तो साधु-पुरुषों की है परन्तु इसमें चोरों ने बैठकर इस पर अधिकार जमा लिया है। साधु पुरुषों की संगति में तो लाभ ही लाभ है और साधु पुरुषों की संगति में रहने से इस शरीर रूपी धरती पर विकार रूपी चोरों के आ बसने पर भी उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।। १ ।। महला ५ ।। हे कबीर, चावल के कारण उसके छिल्के को भी आवश्यक रूप से चोटें खानी पड़ती हैं। इस प्रकार यदि कुसंगी के साथ संगति की जाएगी तब धर्मराज आवश्यक रूप में जाँच पड़ताल तो करेगा ही अर्थात् सत्संगति में बुरे व्यक्ति भी लाभ उठा सकते हैं और कुसंगति में पड़कर अच्छे भले आदमी भी नुकसान उठाकर ही वहाँ से निकलते हैं।। २ ।। पउड़ी ।। बड़े परिवार वाला हे प्रभु, तू स्वयं ही है और स्वयं एक ही है। अपने महत्व को तू स्वयं ही जानता है। तू स्वयं सब कुछ है और तूने स्वयं को ही उत्पन्न किया है। अपने सब कुछ किए हुए का वर्णन भी स्वयं तूने ही किया है। जहाँ तू बस रहा है तेरा वह स्थान धन्य हैं और

धंनु सु तेरे भगत जिन्ही सचु तूं डिठा ॥ जिस नो तेरी दइआ सलाहे सोइ तुधु ॥ जिसु गुर भेटे नानक निरमल सोई सुधु ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बागु ॥ जो नर पीरि निवाजिआ तिन्हा अंच न लाग ॥ १ ॥ मः ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ विरले केई पाईअन्हि जिन्हा पिआरे नेह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जपु तपु संजमु दइआ धरमु जिसु देहि सु पाए ॥ जिसु बुझाइहि अगनि आपि सो नामु धिआए ॥ अंतरजामी अगम पुरखु इक द्रिसटि दिखाए ॥ साधसंगति कै आसरै प्रभ सिउ रंगु लाए ॥ अउगण कटि मुखु उजला हरि नामि तराए ॥ जनम मरण भउ कटिओनु फिरि जोनि न पाए ॥ अंध कूप ते काढिअनु लड़ु आपि फड़ाए ॥ नानक बखसि मिलाइअनु रखे गलि लाए ॥ २१ ॥ सलोक मः ५ ॥ मुहबति जिसु खुदाइ दी रता रंगि चलूलि ॥ नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूलि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ अंदरु विधा सचि नाइ बाहरि भी सचु डिठोमि ॥ नानक रविआ हभ थाइ वणि त्रिणि त्रिभवणि रोमि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे कीतो रचनु आपे ही रतिआ ॥ आपे होइओ इकु आपे बहु भतिआ ॥ आपे सभना मंझि आपे बाहरा ॥ आपे जाणहि दूरि आपे ही जाहरा ॥ आपे होवहि गुपतु आपे परगटीऐ ॥ कीमति किसै न पाइ तेरी थटीऐ ॥ गहिर गंभीरु अथाहु अपारु अगणतु तूं ॥ नानक वरतै इकु इको इकु तूं ॥ २२ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु ॥

रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥ नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥ मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥ गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ १ ॥ लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि

तेरे भक्तजन धन्य हैं जिन्होंने सत्य रूप में तुझे देखा है। जिस पर तेरी दया होती है वही तेरा गुणानुवाद करता है। हे नानक, जिसे गुरु मिल जाता है वही निर्मल और शुद्ध व्यक्ति होता है।। २० ।। श्लोक महला ५ ।। हे फरीद, यह धरती विभिन्न रंगों वाली और सुन्दर है जिसमें दुख देने वाला माया रूपी बाग खिला हुआ है। परन्तु जिन व्यक्तियों पर उनके गुरु और पीरों ने कृपा कर दी है उन्हें इसकी जरा सी भी आँच नहीं लगती।। १ ।। महला ५ ।। हे फरीद, यह आयु और यह शरीर बहुत ही सुन्दर और सुहावने हैं परन्तु जिनका उस प्यारे प्रभु के साथ प्रेम होता है यह उन बिरलों को ही प्राप्त होते हैं।। २ ।। पउड़ी।। जप, तप, संयम, दया और धर्म जिसे वह प्रभु देता है वही प्राप्त करता है। जिस जीव की तृष्णा रूपी अग्नि उसने स्वयं बुझा दी है वह प्रभु-नाम का सुमिरन करता है। वह अन्तर्यामी और अगम्य प्रभु कृपा की एक दृष्टि से ही जब देख लेता है तो साधसंगति के आसरे में उस प्रभु से प्रेम लग जाता है। अवगुण कट जाते हैं मुख उज्जवल हो जाता है और प्रभु-नाम पार उतार देता है। ऐसे व्यक्ति का जन्म-मरण का भय कट जाता है और वह फिर योनियों में नहीं पड़ता। अज्ञान के अंधे कुएँ से वह प्रभु अपना आँचल पकड़ा कर व्यक्ति को बाहर निकाल लेता है। हे नानक, कृपा करके वह अपने से मिला लेता है और जीव को अपने गले से लगाए रहता है।। २१ ।। श्लोक महला ५ ।। जिसे खुदा से मोहब्बत हो गई है वह उसके प्रेम के गाढ़े लाल रंग में रंगा रहता है। हे नानक, ऐसे पाने वाले व्यक्ति बिरले ही होते हैं और उनका तो मूल्य ही नहीं आँका जा सकता।। १ ।। महला ५ ।। जिनका अन्तर्मन सच्चे नाम के साथ बिंध गया है और जो बाहर भी उसे सत्य रूप में देखते हैं हे नानक, उनके लिये तो वन, तृण, त्रिभुवन और रोम-रोम अर्थात सभी स्थानों में वह प्रभु ही व्याप्त बना हुआ है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु ने स्वयं ही यह रचना की है और स्वयं ही उसमें लीन बना है। वह स्वयं ही एक है और स्वयं ही अनेक रूपों में बना हुआ है। स्वयं ही वह सबके अन्दर है और स्वयं ही वह बाहर सब ओर है। वह स्वयं ही दूर जाना जाता है और स्वयं ही प्रत्यक्ष-रूप में सामने बना रहता है। वह स्वयं ही गुप्त बना रहता है और स्वयं ही प्रकट रूप में विद्यमान रहता है। हे प्रभु, तेरी रचना का कोई भी मोल नहीं आँक सकता अर्थात उसका ओर -छोर नहीं जान सकता। तू गहरा, गम्भीर, अथाह, अपरम्पर और सभी गणनाओं से परे है। हे नानक, वह एक ही सब ओर कार्यशील है और वह एक ही केवल एक है।। २२ ।। १ ।। २ ।। शुद्ध।।

रामकली की वार

राय बलवंड तथा डोम सत्ता ने कही १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जब वह कर्ता प्रभु स्वयं न्यायपूर्ण फैसला कर दे तो उसके हुकुम को कैसे नापा तौला जा सकता है अर्थात उसके हुकुम को कौन मोड़ सकता है। दैवी गुण सच्चे भाई बहन हैं परन्तु सफलता उसी को मिलती है जिसको प्रभु स्वयं दान देता है अर्थात वास्तविक रिश्ता तो सच्चे गुणों के कारण पक्का होता है और इसीलिये लहणा को गुरु अंगद के रूप में वरीयता देकर गद्दी दे दी गई और पुत्रों को छोड़ दिया गया। नानक ने गुरमति का राज्य स्थापित किया और सत्य रूपी किले का त्याग की नींव पर निर्माण किया है। भाई लहणा के सिर पर गुरु अंगद के रूप में गुरु गद्दी का छत्र स्थापित कर दिया गया और उन्होंने भी प्रभु का गुणानुवाद करते हुए अमृत का पान किया है। आत्मदेव प्रभु ने ज्ञान रूपी खडग की शक्ति वाला आध्यत्मिक बल गुरु अंगद देव को प्रदान किया। गुरु नानक ने सही सलामत अर्थात जीवित रहते हुए ही अपने शिष्य के सामने माथा टेका और जीवन में ही उसे तिलक लगाकर कार्यभार सौंप दिया।। १ ।। गुरु नानक के स्थान पर अब लहणा अर्थात गुरु अंगद के राज तिलक की घोषणा और दुहाई चारों और फैल गयी। वही ज्योति है और उसे प्रकाशित करने का ढंग भी वही है; मालिक गुरु ने तो केवल शरीर ही बदला है। गुरु की उपदेश रूपी दुकान को संभालकर अब वह बैठ गया है और उसी पर अब निरंजन प्रभु का छत्र झूल रहा है।

जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन्ह मुरटीऐ ॥ दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥ २ ॥ जिनि कीती सो मंनणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥ दरि दरवेसु खसंम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अम्रितु खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥ ३ ॥ होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥ नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥ माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ चउदह रतन निकालिअनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ सिखां पुत्रां घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ जां सुधोसु तां लहणा टिकिओनु ॥ ४ ॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वर्हिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथ न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥ नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ निंदा तेरी जो करे सो वंञै चूरु ॥ नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि वसाइआ

जो गुरु ने कहा है दूसरा गुरु अब वही कर रहा है और प्रभु के साथ मिलाप करने का स्वादहीन शिला को चाटने जैसा मार्ग उसने अपना लिया है। शब्द-गुरु का लंगर चल रहा है और उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आती है। उस मालिक ने जो दान दिया है उसे वह स्वयं ही खाते हैं और अच्छी तरह दूसरों को बाँटते भी हैं। उसके दरबार में ही उस मालिक प्रभु का गुणानुवाद होता है और आकाश और सूर्य आदि के ईश्वरीय मण्डल से ज्योति प्रसारित होती रहती है अर्थात ज्ञान का प्रसार होता रहता है। तेरे जैसे सच्चे सम्राट को देखकर तो जन्मों-जन्मों की मैल कट जाती है। गुरु नानक ने जो गुरु अंगद को गुरु मानने का सत्य आदेश दे दिया है तो कोई भला गुरु के इस बोल से कैसे मुँह फेर सकता है। पुत्रों ने गुरु के हुकुम को नहीं माना और स्थापित किये हुए पीर गुरु अंगद देव से मुँह फेर लिया। उनके दिल खोटे हो गए और वे विद्रोही रूप में पाप का भार सिर पर उठाते हुए इधर-उधर भटक रहे हैं। गुरु नानक ने जो कहा वही गुरु अंगद ने किया और जिसने गुरु के उपदेश के मुताबिक कार्य किया वही गद्दी पर स्थित कर दिया गया। लहणा जी और गुरु नानक जी के पुत्रों में से कौन हारा और कौन जीता है अर्थात लहणा-गुरु अंगद जीत गए।। २ ।। जिसने हुकुम के अनुसार कार्य किया वह मानने योग्य हो गया। जवास के दाने और चावलों में से श्रेष्ठ कौन है अर्थात् चावल श्रेष्ठ माने जाएँगे उसी प्रकार गुरु अंगद और गुरु नानक के पुत्रों के बीच गुरु अंगद ही श्रेष्ठ थे। धर्मराज वह देवता है जो दोनों ओर के गुण देखकर तर्कपूर्ण ढंग से न्याय करता है कि वास्तव में गुरु अंगद बहुत बड़े हैं। जो सच्चा गुरु कहता है वही सच्चा प्रभु कर देता है और उसकी कही बात तुरन्त पूर्ण हो जाती है। गुरु अंगद की घोषणा चारों ओर हो गई है और कर्ता प्रभु ने सत्य रूप में उसकी पुष्टि भी कर दी है। नानक ही अपनी काया को पलटकर गुरु अंगद के रूप में पेड़ की सैंकड़ों डालियों जैसी फैलाव वाली संगति में सिहांसन पर बैठ गया। अब उसके द्वार पर सिक्ख संगति खड़ी हुई सेवा कर रही है और वहाँ जंग लगे हुए लोगों की मैल छूट गयी है। उस प्रभु मालिक के द्वार पर गुरु नाम के दान का याचक बना हुआ है। प्रभु का सच्चा नाम सुमिरन के कारण गुरु अंगद के मुँह पर वह लाली को बनाए हुए है। हे बलवंड, खीवी जी (गुरु अंगद देव जी की पत्नी) भी बड़ी भली है और वे ऐसी हैं जैसे घने पत्तों की सुखदायक छाया हो। प्रभु-नाम की दौलत लंगर के रूप में बाँटी जा रही है। आध्यात्मिक जीवन देने वाला नाम रस जैसे बाँटा जाता है वैसे ही माता खीवी के लंगर में घी युक्त खीर परोसी जा रही है। यहाँ पहुँच कर गुरु के सिक्खों के मुख तो खिल गए हैं परन्तु मनमुख व्यक्तियों के चेहरे ईर्ष्या के कारण पीले पड़ गए हैं। जब गुरु अंगद जी ने मर्दों वाली कठिन मेहनत की, तभी वे अपने मालिक सच्चे गुरु के द्वार पर स्वीकृत हुए। माता खीवी का पति (गुरु अंगद) वह है जिसने सारी धरती का भार अपने सिर पर उठाया हुआ है।। ३ ।। संसार कह रहा है कि गुरु नानक ने क्या कर दिया और उल्टी गंगा बहा दी अर्थात् अपने चेले को माथा टेक दिया। गुरु नानक ने जगत के नाथ और महापुरुष के रूप में बहुत ऊँचा बोल बोल दिया है अर्थात चेले को गुरु बना दिया है। उस गुरु ने अपनी ऊँची सुरति को मथानी बनाकर अपने मन रूपी वासुकी नाग को रस्सा बनाकर शब्द का मंथन किया है; उस गुरु ने शब्द रूपी समुद्र में से दैवीय गुण रूपी चौदह रत्न निकाले हैं और इस संसार को चमका कर सुन्दर बना दिया है। ऐसा करिश्मा किया है कि पहले तो उन्होंने गुरु अंगद के विशाल शरीर को ठोक बजाकर देखा और फिर गुरु अंगद को सबसे ऊँचा बनाकर उनके सिर पर गद्दी का छत्र धारण करा दिया जो उन्हें आकाश तक ले गया है। उनकी ज्योति गुरु अंगद की ज्योति में मिल गई और दोनों एक दूसरे में एक रूप हो गए। हे सारी संगति, सब अच्छी तरह देख लो कि गुरु नानक ने अपने सिक्खों और पुत्रों को परखकर जब उनको शुद्ध रूप बनाया तब उन्होंने अपने स्थान पर सुयोग्य लहणा अर्थात् गुरु अंगद देव को चुना।। ४ ।। फिर बाबा फेरू जी के पुत्र गुरु अंगद ने खडूर कस्बे की रौनक को बढ़ाया। अन्य जगत तो बहुत अहंकार करता है परन्तु हे गुरु तेरे पास जप, तप, संयम होने के कारण तेरा स्वभाव वैसा ही बना रहा। जिस प्रकार पानी को शैवाल तबाह कर देती है वैसे ही व्यक्ति को लोभ और ममता नाश कर देते हैं। गुरु के दरबार में प्रभु-नाम की वर्षा होते रहने से हे गुरु अंगद, तेरे पर प्राकृतिक रूप से ही सौंदर्य की झलक दिखाई देती रहती है। तू वह समुद्र है जो शीतल है और जिसकी गहराई को नहीं नापा जा सकता। संसार के खजाने के रूप में प्रभु का नाम रूपी खजाना तेरे हृदय में भरपूर रूप से भरा हुआ है। जो व्यक्ति तेरी निन्दा करता है वह स्वयं ही चूर-चूर हो जाता है। सांसारिक व्यक्तियों को तो पास के पदार्थ ही दिखाई देते हैं परन्तु तुझे आगे होने वाला भी सब कुछ दिखाई देता है।

फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ ५ ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाइओ सत दा जस हंदा बाणु ॥ कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रै भाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे कुंडां सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥ आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जां तू सुघड़ु सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक हंदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥ ६ ॥ धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न पारावारिआ ॥ जिन्ही तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥ धंनु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ गुरु डिठा तां मनु साधारिआ ॥ ७ ॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ आपीन्है आपु साजिओनु आपे ही थंम्हि खलोआ ॥ आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥ उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ जिन्ही गुरू न सेविओ मनमुखा पइआ मोआ ॥ दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ ८ ॥ १ ॥

रामकली बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काइआ कलालनि लाहनि मेलउ गुर का सबदु गुड़ु कीनु रे ॥

हे भाई, फिर बाबा फेरू के पुत्र सच्चे गुरु ने खडूर में पहुँचकर उसे आबाद कर दिया।। ५ ।। तेरे माथे का तेज, तेरा सिहांसन और तेरा दरबार भी वैसा ही है और पिता (गुरु अंगद) और दादा (गुरु नानक) जैसा पौत्र (गुरु अमरदास) ही सबके द्वारा मानने योग्य है। इसने भी आध्यात्मिक बल को मन को बाँधने के लिये रस्से के रूप में प्रयुक्त किया है, ऊँची सुरति रूपी सुमेरू पर्वत को मथानी बनाकर शब्द-गुरु रूपी समुद्र का मंथन किया। उस शब्द रूपी समुद्र में से इसने चौदह रत्न निकाल कर संसार में आध्यात्मिक जीवन का प्रकाश पैदा किया है। इसने सहज अवस्था को घोड़ा बनाया है, विकारों की ओर से इन्द्रियों को रोके रखने की शक्तियों को काठी बनाया है, पवित्र आचरण के कमान को इसने कसा है और प्रभु के गुणानुवाद के तीर को हाथ में पकड़ा है। संसार में विकारों का घोर अंधकार था जिसमें गुरु अमरदास अनन्त किरणों वाला सूर्य उग आया है। इसने सत्य के बल के साथ ही खेती को जमाया और सत्य को ही उसकी रक्षा के लिये प्रयुक्त किया है। हे गुरु, तेरे लंगर में भी सदैव खाने के लिये घी, मैदा आदि उत्तम पदार्थों का प्रयोग हो रहा है। जिस व्यक्ति ने अपने मन में तेरा शब्द टिका लिया है उसको चारों दिशाओं की सूझ प्राप्त हो गई है। हे गुरु, जिस पर कृपा दृष्टि करके तूने उसे शब्द रूपी पार पत्र दे दिया है उसका जीवन-मरण का चक्र तूने समाप्त कर दिया है। वह सुजान प्रभु स्वयं गुरु अमरदास के रूप में संसार में आ पहुँचा है। यह विकारों के तूफान में डोलता नहीं और सुमेरु पर्वत की तरह अटल बना रहता है। यह जीवों के हृदय की पीड़ा जानने वाला अन्तर्यामी गुरु है। हे सदैव स्थिर राज वाले सच्चे सम्राट, मैं तेरा क्या गुणानुवाद करूं, तू सुन्दर आत्मा वाला और सयाना है। मुझ सत्ते को तो तेरा वही दान अच्छा लगता है जो तुझे भाता है। गुरु नानक वाला छत्र गुरु अमरदास के सिर पर देखकर सारी संगति हैरान हो रही है। पौत्र गुरु अमरदास भी पिता गुरु अंगद और दादा गुरु नानक के समान ही है क्योंकि इसके माथे पर भी वही नूर है, इसका सिंहासन भी वही है और इसका दरबार भी पहले गुरु साहिबान वाला ही है।। ६ ।। गुरु रामदास धन्य-धन्य हैं; जिस प्रभु ने उनका सृजन किया है उसी ने उनको बड़प्पन भी प्रदान किया। उस सृजनकर्ता प्रभु ने गुरु को अपना आधार देकर अपनी करामात को पूरा कर दिया। सिक्खों और संगत ने उन्हें परब्रह्म का रूप जानकर उनको प्रणाम किया। हे गुरु, तू अटल, अथाह और अतुलनीय है तथा तेरा ओर-छोर नहीं जाना जाता। जिन्होंने प्रेम पूर्वक तेरी सेवा की है उन्हें तूने पार उतार दिया है। तृष्णा, लोभ, काम, क्रोध, मोह आदि को तूने उनके साथ रहने वाले अन्य विकारों समेत मारकर भगा दिया है। तेरा स्थान धन्य है और तेरे साथ आगे चलने वाली भव्यता भी सच्ची और स्थायी है। नानक भी तू ही है, लहणा (गुरु अंगद) भी तू ही है और तुझे ही गुरु अमरदास जाना जाता है। हे गुरु, मैंने तेरा दर्शन किया तो मेरे मन को आसरा मिल गया।। ७।। पहले चार गुरुओं ने अपने-अपने समय में संसार को प्रकाशित किया है और अब पाँचवां (गुरु अरजन देव) भी उन्हीं का रूप बन गया है। इसने अपने आपको स्वयं ही परिश्रम एवं विनम्रता पूर्वक इस पदवी के योग्य बनाया है और स्वयं एक (प्रकाश) स्तम्भ की तरह स्थापित हुआ है। वह स्वयं ही अपनी पट्टी और कलम है और स्वयं ही उस पट्टी पर लिखने वाला लेखक भी है। सारी संगति आ रही है और जा रही है परन्तु यह सदैव नवीन रूप में बना रहने वाला है। गुरु अरजन सिंहासन पर बैठा है और सच्चे गुरु (परमात्मा) का आकाश रूपी तम्बू उसकी चमक से खिल उठा है। पूर्व से पश्चिम तक चारों दिशाओं मे उसने अपना प्रकाश फैला दिया है। जिन्होंने ऐसे गुरु की सेवा और सुमिरन नहीं किया ऐसे मनमुख व्यक्ति मृतक के समान हो गए हैं। सच्चे प्रभु की सच्ची भेंट है कि हे गुरु, तेरे कौतुक दोगुने-चौगुने हैं। पहले चार गुरुओं ने अपने-अपने समय में संसार को प्रकाशित किया है और अब पाँचवा (गुरु अरजन देव) भी उन्हीं का रूप बन गया है।। ८ ।। १ ।।

रामकली वाणी भक्तों की कबीर जी   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

इस शरीर को मैं शराब बनाने का घड़ा और अन्य सामग्री इकट्ठी करूं जिसमें शब्द-गुरु को गुड़ के तौर पर प्रयुक्त किया जाए;

त्रिसना कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥ १ ॥ कोई है रे संतु सहज सुख अंतरि जा कउ जपु तपु देउ दलाली रे ॥ एक बूंद भरि तनु मनु देवउ जो मदु देइ कलाली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवन चतुर दस भाठी कीन्ही ब्रहम अगनि तनि जारी रे ॥ मुद्रा मदक सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे ॥ २ ॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम रवि ससि गहनै देउ रे ॥ सुरति पिआल सुधा रसु अंम्रितु एहु महा रसु पेउ रे ॥ ३ ॥ निझर धार चुऐ अति निरमल इह रस मनूआ रातो रे ॥ कहि कबीर सगले मद छूछे इहै महा रसु साचो रे ॥ ४ ॥ १ ॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥ सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥ १ ॥ अउधू मेरा मनु मतवारा ॥ उनमद चढा मदन रसु चाखिआ त्रिभवन भइआ उजिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ कामु क्रोधु दुइ कीए जलेता छूटि गई संसारी ॥ २ ॥ प्रगट प्रगास गिआन गुर गंमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न कबहू जाई ॥ ३ ॥ २ ॥ तूं मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी ॥ ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥ १ ॥ अब तब जब कब तुही तुही ॥ हम तुअ परसादि सुखी सद ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोरे भरोसे मगहर बसिओ मेरे तन की तपति बुझाई ॥ पहिले दरसनु मगहर पाइओ फुनि कासी बसे आई ॥ २ ॥ जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी ॥ हम निरधन जिउ इहु धनु पाइआ मरते फूटि गुमानी ॥ ३ ॥ करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥ अजै सु चोभ कउ बिलल बिलाते नरके घोर पचाही ॥ ४ ॥ कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ हम काहू की काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥ ५ ॥ अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ॥ राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥ ६ ॥ ३ ॥ संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी ॥ दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी ॥ १ ॥ हम कूकर तेरे दरबारि ॥ भउकहि

तृष्णा, काम, क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या आदि को छोटा-छोटा काटकर छिलकों के रूप में डाला जाए।। १ ।। कोई ऐसा सन्त अपने सहज सुख में लीन है जिसको इस सबके बदले में मैं अपना जप तप दे सकूं। मैं उसे सब कुछ दे दूंगा जो ऐसे मटके की शराब मुझे एक बूँद भर भी प्रदान कर दे।। १ ।। रहाउ ।। चौदह लोकों को भट्ठी बनाया गया है और ब्रह्म की ज्योति को अपने अन्दर प्रकाशित करने के रूप में मैंने आग जलाई है। मटकी को उपर से बंद करने वाला ढक्कन मैंने सहज धुन को बनाया है और अपने एकाग्र ध्यान को मैंने उस गीले कपड़े के तौर पर प्रयुक्त किया है जो मेरे शरीर रूपी बर्तन को ठंडा रखता है। ऐसी शराब के लिये मैं अपने सभी तीर्थ, व्रत, नियम, शौच, संयम, सूर्य, चन्द्र आदि गिरवी रखने को तैयार हूँ। सुरति को मैंने प्याला बनाया है और अमृत के सामने इस रस को मैं उसमें पीता हूँ।। ३ ।। निरन्तर चलने वाली धारा के रूप में यह आध्यात्मिक शराब अत्यन्त निर्मल रूप में टपकती रहती है और मेरा मन इस रस में लीन बना रहता है। कबीर का कथन है कि सभी प्रकार की शराब व्यर्थ है और केवल उपर्युक्त महा रस ही सच्चा रस है।। ४ ।। १ ।। अपने ज्ञान को गुड़ बना और अपने ध्यान को महुए के फूल मान; प्रेम रूपी भट्ठी बना और मन को निरन्तर एकाग्र रूप से चलने वाली धारा बना। जब सहज भाव में लीनता को सुषुम्ना नाड़ी बनाया जाता है तब पीने वाला इस आध्यात्मिक शराब को पीता है। हे योगीजनों, मेरा मन तो मतवाला हो गया है। जब इसने आनन्दित करने वाले रस को चख लिया है तो इस पर मस्ती चढ़ गई है और बेहोश होने के बजाए इसके लिए तीनों लोकों में प्रकाश भर उठा है।। १ ।। रहाउ ।। धरती और आकाश रूपी दो पाटों को जोड़कर इसने भट्ठी बनाई है अर्थात विश्व की वास्तविकता को बूझना ही इसने भट्ठी के रूप में जाना है। काम, क्रोध दोनों को ही इसने ईधन बनाया है और अब इसकी सारी सांसारिकता छूट गई है।। २ ।। गुरु के पास जाने से इसमें ज्ञान का प्रकाश हो गया है और सच्चे गुरु से इसने वास्तविक चेतनता प्राप्त कर ली है। दास कबीर तो उस प्रभु के उस नशे में लीन बना है जो कभी भी उतरता नहीं है।। ३ ।। २ ।। हे मेरे मालिक प्रभु, तू ही मेरा सुमेरु पर्वत है और मैंने अब तेरा आसरा पकड़ा है। ना तो तुम डोलते हो ना ही हम गिरते है; हे प्रभु, तूने मेरी लाज रख ली है।। १ ।। अब तब आगे और पीछे हे प्रभु, सदैव तू ही तू है। तेरी की कृपा से हम सदैव सुखी बने हुए हैं।। १ ।। रहाउ ।। तेरे भरोसे पर ही मैं (काशी छोड़कर) मगहर में आ बसा हूँ और मेरे तन की तृष्णा बुझ गई है। हे प्रभु, मैंने तो तेरा दर्शन पहले ही मगहर में पा लिया था और उसके बाद मैं काशी में आकर बसा था।। २ ।। जैसा मगहर है हमने तो काशी को भी वैसा ही जाना और माना है। हम तो निर्धन हैं जिन्होंने तेरा दर्शन रूपी धन प्राप्त कर लिया है परन्तु काशीवास करने वाले अहंकारी फूट-फूट कर रोते, बिलखते और मरते रहते हैं।। ३ ।। जो व्यक्ति अभिमान करता है उसे अभिमान के कांटे चुभते ही रहते हैं और उसके इन काँटों को निकालने वाला कोई नहीं होता। पूरे जीवन भर वह उसकी चुभन के कारण रोता भटकता रहता है और अन्त में घोर नरक में मरता खपता रहता है।। ४ ।। यह बेचारा नरक और स्वर्ग क्या है; सन्तजनों ने तो इन दोनों को ही रद्द कर दिया है। अपने गुरु की कृपा के कारण हम तो किसी के भी मोहताज नहीं रह गए।। ५ ।। हम तो अब ऊँचे आध्यात्मिक सिंहासन पर विराजमान हो गए है जहाँ हमें परमात्मा मिल गया है। मेरा प्रभु और मैं कबीर इस प्रकार एक रूप हो गए हैं कि अब हमें कोई पहचान भी नहीं सकता।। ६ ।। ३ ।। मेरी खबरदारी और कोतवालपन का यही कर्तव्य है कि मैं सन्तजनों को आदर देता हूँ और दुष्ट लोगों को दण्ड देता हूँ। हे प्रभु, दिन रात मैं तेरे चरण दबाता हूँ और अपने केशों का चँवर बनाकर तुझ पर डुलाता हूँ।। १ ।। हम तो तेरे दरबार के कुत्ते हैं

आगै बदनु पसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई ॥ तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई ॥ २ ॥ दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई ॥ साधू होइ सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ॥ ३ ॥ कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि ॥ गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्हारि ॥ ४ ॥ कबीरि दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतकि भागु ॥ अंम्रित रसु जिनि पाइआ थिरु ता का सोहागु ॥ ५ ॥ ४ ॥ जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥ जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ पंडितु हरि न कहै ॥ १ ॥ काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ॥ रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपन ऊच नीच घरि भोजनु हठे करम करि उदरु भरहि ॥ चउदस अमावस रचि रचि मांगहि कर दीपकु लै कूपि परहि ॥ २ ॥ तूं ब्रहमनु मै कासीक जुलहा मुहि तोहि बराबरी कैसे कै बनहि ॥ हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पांडे डूबि मरहि ॥ ३ ॥ ५ ॥ तरवरु एकु अनंत डार साखा पुहप पत्र रस भरीआ ॥ इह अंम्रित की बाड़ी है रे तिनि हरि पूरै करीआ ॥ १ ॥ जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥ अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले उर धरिआ ॥ सोरह मधे पवनु झकोरिआ आकासे फरु फरिआ ॥ २ ॥ सहज सुंनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥ कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥ ३ ॥ ६ ॥ मुंद्रा मोनि दइआ करि झोली पत्र का करहु बीचारु रे ॥ खिंथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ॥ १ ॥ ऐसा जोगु कमावहु जोगी ॥ जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि बिभूति चढावउ अपुनी सिंगी सुरति मिलाई ॥ करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की किंगुरी बजाई ॥ २ ॥ पंच ततु लै हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ॥ ३ ॥ ७ ॥ कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ भव निधि तरन तारन चिंतामनि इक

अब इस जन्म में यह कर्म लेख मिटाया नहीं जा सकता अर्थात् हम तो तेरे सेवक ही बने रहेंगे। तेरे द्वार पर तो सहज की धुन बजती रहती है और मेरे माथे पर भी तेरा सेवक होने का चिन्ह बना हुआ है।। २ ।। जिन पर अपने मालिक के वफादार सिपाही होने का चिन्ह लगा रहता है वे ही मालिक के पक्ष में जूझते हैं परन्तु जिन्होंने यह चिन्ह प्राप्त नहीं किया वे कठिन समय में भाग खड़े होते हैं। जो वास्तविक साधु होता है वह भक्तिभाव के कारण पहचाना जाता है और प्रभु भी उसे अपने भण्डार में बनाए रखता है।। ३ ।। शरीर रूपी मकान में हृदय रूपी कोठरी है जो विचार और चिंतन के माध्यम से परम कोठरी बन जाती है। गुरु ने कबीर को प्रभु-नाम रूपी पदार्थ यह कहकर दिया है कि इस पदार्थ को हृदय रूपी कोठरी में सम्भाल कर रख लो।। ४ ।। कबीर ने वह वस्तु संसार को दी है परन्तु प्राप्त उन्होंने ही की है जिनके मस्तक पर भाग्य लेख लिखे हैं। जिन्होंने इस अमृत रस को पा लिया है उन जीव स्त्रियों का सुहाग सदा स्थिर और जीवित बना रहने वाला हो जाता है।।५ ।।४ ।।ब्राह्मण जिस प्रभु के मुँह से वेद और गायत्री को निकला हुआ मानता है वह उसे क्यों भुला देता है। जिस प्रभु के चरणों में सारा संसार आ लगता है यह पंडित उस प्रभु के नाम का उच्चारण क्यों नहीं करता।। १ ।। हे मेरे ब्राह्मण, तू क्यों प्रभु नाम का सुमिरन नहीं करता। राम का नाम ना बोलकर हे पंडित, तुम क्यों नरक को भरने में लगे हो।। १ ।। रहाउ ।। अपने आपको तू ऊँचा कहता है परन्तु तथाकथित नीचों के घर भोजन करता है; तू तो यह सारे कर्म पेट भरने के लिये जबरदस्ती किए जा रहा है। चौदस और अमावस के दिन तो तू बड़ी लगन के साथ माँगता फिरता है और यह ऐसा लगता है कि हाथ में दीपक होते हुए भी तू कुएँ में गिरता चला जाता है।। २ ।। तू ब्राह्मण है और मैं काशी का जुलाहा हूँ; तेरी मेरी बराबरी भला कैसे हो सकती है। हमारे यहाँ तो राम नाम कहकर सभी बच निकले हैं परन्तु अपने ज्ञान और वेद के भरोसे पड़ा रहने के कारण हे पंडित, तू तो डूबकर मर गया है।।३ ।।५ ।।वह प्रभु रूपी वृक्ष एक है; इसमें संसार के जीव अनेकों डालियाँ, फूल और जीवन रस से भरे पत्तों के समान हैं। अरे पंडित, यह संसार अमृत रूपी बाग है जिसे उस पूर्ण प्रभु ने बनाया है।। १ ।। मैंने तो उस राजा एवं सर्वत्र रमण करने वाले प्रभु की वास्तविक कहानी को जान लिया है। उस प्रभु ने ही हमारे अन्दर अपनी ज्योति प्रकाशित की है परन्तु किसी बिरले गुरमुख ने ही इस रहस्य को जाना है।। १ ।। रहाउ ।। ब्रह्म रूप फूल का रसिक जीव रूपी भँवरा बारह पत्तियों वाले हृदयकमल में टिका हुआ है। वह श्वासों को सोलह पत्तियों वाले दशम द्वार में ले जाकर आनन्द लेता है अर्थात एकाग्रता के माध्यम से वह गगनमंडल में पंख फड़फड़ाता हुआ आनन्दपूर्वक उड़ता रहता है। सम्पूर्ण शान्त समाधि की सहज अवस्था में प्रभु रूपी एक पौधा उत्पन्न होता है जो शरीर रूपी धरती का बादल बनकर तृष्णाओं को समाप्त कर देता है। कबीर कहता है कि हम तो उसके सेवक हैं जिसने प्रभु रूपी इस वृक्ष को देख लिया।।३ ।।६ ।। चित्त को शान्त करने को मुद्रा बनाओ, दया को अपनी झोली बनाओ और विचार चिंतन को अपना भिक्षा पात्र बनाओ। विषय विकारों की ओर से शरीर को सिलकर मोड़ लेना अपना चोला बनाओ और प्रभु-नाम को अपने जीवन का आधार अर्थात भोजन बनाओ।। १ ।। हे योगी, तुम इस प्रकार की योग साधना करो तभी तुम गुरमुख बनकर जप, तप और संयम का आनन्द लेने वाले बन सकोगे।। १ ।। रहाउ ।। अपनी बुद्धि को भभूत के तौर पर मल लो और प्रभु में सुरति लीन करने को अपनी सिंगी बनाओ ; शरीर रूपी नगरी में वैराग्यवान बनकर चलते फिरते रहो और अपने मन की वीणा को बजाते रहो।। २ ।। पाँचों तत्वों के सत्वगुण को अपने हृदय में बसाए रखो ताकि निरन्तर समाधि में बने रह सको। कबीर कहता है कि हे सन्तजनों, मेरी बात को सुन लो और धर्म और दया को अपना सुन्दर बगीचा बना लो ताकि तुम आनन्द पूर्वक वहाँ रह सको।।३ ।।७ ।।हे जीव, तुझे इस संसार में किस काम के लिये बनाया गया है और जीवन पाकर तूने कौन सा फल प्राप्त किया है। संसार सागर से पार उतारने वाले चिन्तामणि प्रभु में तूने एक

निमख न इहु मनु लाइआ ॥ १ ॥ गोबिंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिनि प्रभि जीउ पिंडु था दीआ तिस की भाउ भगति नही साधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर ती निंदा पर अपबादु न छूटै ॥ आवा गवनु होतु है फुनि फुनि इहु परसंगु न तूटै ॥ २ ॥ जिह घरि कथा होत हरि संतन इक निमख न कीन्हो मै फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा ॥ ३ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए संपै मो माही ॥ दइआ धरमु अरु गुर की सेवा ए सुपनंतरि नाही ॥ ४ ॥ दीन दइआल क्रिपाल दमोदर भगति बछल भै हारी ॥ कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुम्हारी ॥ ५ ॥ ८ ॥ जिह सिमरनि होइ मुकति दुआरु ॥ जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥ अनहद बजहि सदा भरपूर ॥ १ ॥ ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥ बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह सिमरनि नाही ननकारु ॥ मुकति करै उतरै बहु भारु ॥ नमसकारु करि हिरदै माहि ॥ फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥ २ ॥ जिह सिमरनि करहि तू केल ॥ दीपकु बांधि धरिओ बिनु तेल ॥ सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥ ३ ॥ जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥ सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥ सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ गुर परसादी उतरहि पारि ॥ ४ ॥ जिह सिमरनि नाही तुहि कानि ॥ मंदरि सोवहि पटंबर तानि ॥ सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ सो सिमरनु तू अनदिनु पीउ ॥ ५ ॥ जिह सिमरनि तेरी जाइ बलाइ ॥ जिह सिमरनि तुझु पोहै न माइ ॥ सिमरि सिमरि हरि हरि मनि गाईऐ ॥ इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईऐ ॥ ६ ॥ सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥ ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ जागु सोइ सिमरन रस भोग ॥ हरि सिमरनु पाईऐ संजोग ॥ ७ ॥ जिह सिमरनि नाही तुझु भार ॥ सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ कहि कबीर जा का नही अंतु ॥ तिस के आगे तंतु न मंतु ॥ ८ ॥ ९ ॥

रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

बंधचि बंधनु पाइआ ॥ मुकतै गुरि अनलु बुझाइआ ॥ जब नख सिख

क्षण के लिये भी मन को नहीं लगाया।। १ ।। हे प्रभु, हम तो ऐसे अपराधी है कि जिस प्रभु ने यह शरीर और प्राण दिए हैं उसकी प्रेमा भक्ति को हमने कभी भी साधना के रूप में नहीं अपनाया।। १ ।। रहाउ ।। पराया धन, पराया तन, पराई स्त्री, पराई निन्दा और वाद-विवाद तो हमसे छूटा ही नहीं। इसी कारण बार-बार हमारा आवागमन बना रहता है और यह कहानी कभी समाप्त ही नहीं होती।। २ ।। जहाँ प्रभु के शान्त पुरुषों की कथा वार्ता होती हो मैंने एक क्षण के लिये भी वहाँ फेरी नहीं लगाई। विषय विकारों में लिप्त चोर, बुरे व्यक्ति, शराबी आदि के साथ ही सदा अपना बसेरा बनाए रखता हूँ।। ३ ।। मेरे पास काम, क्रोध, माया, अभिमान, ईर्ष्या की सम्पत्ति ही है। दया, धर्म और गुरु सेवा तो मेरे सपने में भी नहीं आती।। ४ ।। हे दीनदयालु, कृपालु प्रभु, तुम भक्त वत्सल तथा भय दूर करने वाले हो; कबीर कहता है कि अपने सेवक को कठिनाई से बचा लो क्योंकि प्रभु, मैं तो तुम्हारी ही सेवा करता हूँ।। ५ ।। ८ ।। जिसके सुमिरन से मुक्ति का द्वार दिख जाता है उसी के सुमिरन से तू प्रभु के चरणों में पहुँच जाएगा और संसार रूपी समुद्र में तू नहीं भटकेगा। जो अवस्था निर्भय बनाती है इसमें पहुँच कर जीव आध्यात्मिक आनन्द के बाजे बजाता है। वे वाद्य सदैव भरपूर रूप से तुझे आनन्दित करते रहेंगे।। १ ।। हे भाई, तू ऐसा ही सुमिरन मन में करता रह क्योंकि सुमिरन के बिना किसी भी तरीके से मुक्ति नहीं मिल सकती।। १ ।। रहाउ ।। जिसके सुमिरन से तुझे कहीं रुकावट नहीं पड़ेगी; वह सुमिरन तुझे मुक्त कर देगा और विकारों का बोझ तेरे मन से उतर जाएगा। अपने हृदय में उस प्रभु को प्रणाम करते रहो और ऐसा करने से तुझे बार-बार यहाँ आना नहीं पड़ेगा।। २ ।। जिस सुमिरन के बल पर तू चिन्ता-मुक्त होकर क्रीड़ा कर रहा है, तेरे अन्तर्मन में ज्ञान का दीपक विकारों के बिना जलता रहता है। ऐसा ज्ञान का दीपक व्यक्ति को संसार में अमर कर देता है और काम, क्रोध आदि के विष को मारकर बाहर निकाल देता है।। ३ ।। जिस सुमिरन के कारण तेरी ऊँची आध्यात्मिक अवस्था बनती है उस सुमिरन को तू सदैव गले का हार बनाकर रख। ऐसा सुमिरन करता रह और उसे अपने गले से कभी दूर मत कर। गुरु की कृपा से तू पार उतर जाएगा।। ४ ।। हे भाई, जिस सुमिरन के कारण तू किसी का मोहताज नहीं रहता, अपने घर में निश्चिंत होकर सोता है, तेरे हृदय में सुख है और तेरे प्राण सदैव खिले रहते हैं हे भाई, ऐसा सुमिरन रूपी अमृत तू हर समय पीता रह।। ५ ।। जिस सुमिरन के कारण तेरी सभी विपत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं, जिस सुमिरन के कारण तुझे माया स्पर्श नहीं करती, हे भाई, उस प्रभु का सुमिरन करते हुए सदैव मन में उसका गुणानुवाद करते रहना चाहिए। यह सुमिरन सच्चे गुरु से प्राप्त होता है। दिन रात सदैव प्रभु का सुमिरन करता रह और उठते-बैठते श्वास-ग्रास के साथ इसमें लगा रह। जागते हुए सोते हुए सुमिरन रूपी रस का भोग लगाते रहो, परन्तु प्रभु सुमिरन भी भाग्य से ही मिलता है। जिस सुमिरन के कारण तुझ पर से विकारों का बोझ उतर जाएगा प्रभु नाम के उस सुमिरन को अपने जीवन का आसरा बना। कबीर का कथन है कि जिस प्रभु का ओर-छोर नहीं पाया जा सकता उसके सामने कोई तन्त्र-मन्त्र भी नहीं चल सकता ।। ८ ।। ६।।

रामकली घरु २ वाणी कबीर जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

बन्धनकारी माया ने बन्धन डाल दिया परन्तु मुक्त गुरु ने तृष्णा रूपी अग्नि को बुझा दिया। जब नाखून से लेकर सिर तक अर्थात पूर्ण तौर पर

इहु मनु चीन्हा ॥ तब अंतरि मजनु कीन्हा ॥ १ ॥ पवनपति उनमनि रहनु खरा ॥ नही मिरतु न जनमु जरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उलटी ले सकति सहारं ॥ पैसीले गगन मझारं ॥ बेधीअले चक्र भुअंगा ॥ भेटीअले राइ निसंगा ॥ २ ॥ चूकीअले मोह मइआसा ॥ ससि कीनो सूर गिरासा ॥ जब कुंभकु भरिपुरि लीणा ॥ तह बाजे अनहद बीणा ॥ ३ ॥ बकतै बकि सबदु सुनाइआ ॥ सुनतै सुनि मंनि बसाइआ ॥ करि करता उतरसि पारं ॥ कहै कबीरा सारं ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ चंदु सूरजु दुइ जोति सरूपु ॥ जोती अंतरि ब्रहमु अनूपु ॥ १ ॥ करु रे गिआनी ब्रहम बीचारु ॥ जोती अंतरि धरिआ पसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ॥ कहै कबीरु निरंजन अलेखु ॥ २ ॥ २ ॥ ११ ॥ दुनीआ हुसीआर बेदार जागत मुसीअत हउ रे भाई ॥ निगम हुसीआर पहरूआ देखत जमु ले जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नींबु भइओ आंबु आंबु भइओ नींबा केला पाका झारि ॥ नालीएर फलु सेबरि पाका मूरख मुगध गवार ॥ १ ॥ हरि भइओ खांडु रेतु महि बिखरिओ हसंती चुनिओ न जाई ॥ कहि कमीर कुल जाति पांति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १२ ॥

बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ॥ पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ॥ १ ॥ मनु राम नामा बेधीअले ॥ जैसे कनिक कला चितु मांडीअले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनीले कुंभु भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरीए ॥ हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राखीअले ॥ २ ॥ मंदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन छाडीअले ॥ पांच कोस पर गऊ चरावत चीतु सु बछरा राखीअले ॥ ३ ॥ कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन बालकु पालन पउढीअले ॥ अंतरि बाहरि काज बिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले ॥ ४ ॥ १ ॥ बेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो ॥

इस मन को पहचान लिया तब मैंने अन्तर्मन में ही स्नान कर लिया।। १ ।। पवन के स्वामी मन का निवास ठीक सहज अवस्था में हो गया है इसलिये अब ना मृत्यु है ना जन्म है ना बुढ़ापा है।। १ ।। रहाउ ।। माया की ओर से उलट कर अब मन स्थिरता में आ गया है और गगन मण्डल अर्थात दशम द्वार में स्थिति हो गई है। सर्पिणी, कुण्डिलिनी के चक्र बिंध गए हैं और अब प्रभु से बिना किसी संदेह मिलाप हो गया है।। २ ।। माया और मोह दूर हो गया है और चन्द्रमा अर्थात् मन की शान्ति ने सूर्य रूपी अहंकार को समाप्त कर दिया है। जब कुम्भक की तरह मन की वृत्ति सम्पूर्ण प्रभु में लग गई तो पूर्ण आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त हो गया।। ३ ।। वक्ता गुरु ने कहकर शब्द सुना दिया है जिसे सुनते ही जिज्ञासु ने उसे अपने मन में बसा लिया है। उस कर्ता का सुमिरन कर करके पार उतरा जाता है और कबीर वास्तविक तत्व की बात कह रहा है।। ४ ।। १ ।। १० ।। चन्द्रमा सूर्य दोनों प्रकाश का स्वरूप हैं और उस प्रकाश में ही अनुपम ब्रह्म स्थित बना रहता है।। १ ।। हे ज्ञानवान जीव, उस ब्रह्म का विचार और चिंतन कर जिसने अपनी ज्योति में सारे संसार का विस्तार बनाया है।। १ ।। रहाउ ।। चमकते हुए रत्न को देखकर मैं प्रभु रूपी वास्तविक हीरे को प्रणाम करता हूँ क्योंकि उसी ने रत्न को चमक दी है। कबीर कहता है कि वह प्रभु माया की कालिमा से रहित और सभी लेखों से परे है।। २ ।। २ ।। ११ ।। यह संसार बहुत ही होशियार और खबरदार है परन्तु हे भाई, तुम जागते हुए भी लूटे जा रहे हो। वेद, शास्त्रों जैसे होशियार पहरेदार के देखते-देखते हुए भी यम सबको लिये जा रहा है।। १ ।। रहाउ ।। कर्मकाण्डों में फंसे अनजान लोगों को निंबू का पौधा आम दिखाई देता है और आम का पेड़ उन्हें नीम दिखाई देता है। पका हुआ केला इन्हें साड़ी मालूम पड़ता है और सेमल इनको नारियल दिखाई पड़ता है, अर्थात कर्मकाण्ड करवाने वाले जो इन्हें दिखा देते हैं ये उसी को देखने लग जाते हैं।। १ ।। प्रभु ऐसी शक्कर है जो रेत में बिखरी है और हाथी बनकर अर्थात अभिमानी बनकर नहीं खाया जा सकता। कबीर का कथन है कि कुल जाति और श्रेणी के अभिमान को त्यागकर चींटी जैसे विनम्र होकर उसे चुन-चुनकर खाया जाता है।। २ ।। ३ ।। १२ ।।

वाणी नामदेव जी की रामकली घरु १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

कागज ले आया गया जिसे काटकर पतंग बनाई गई और फिर उसे आसमान में उड़ाया जाता है। उड़ाने वाला अपने मित्रों के साथ बातचीत भी करता जाता है परन्तु उसका मन पतंग की डोरी पर ही केन्द्रित बना रहता है।। १ ।। मन राम नाम में बिंधा है और यह वैसे ही है जैसे सोने का कारीगर सुनार बनाई जाने वाली कलाकृति पर हमेशा मन टिकाए रहता है।। १ ।। रहाउ ।। राजकुमारियाँ अपने नगर में पानी का घड़ा भरती हैं; हंसती हैं, विनोद करती हैं और विचारों का आदान-प्रदान करती रहती है परन्तु उन सबका ध्यान अपनी अपनी गागर में टिका रहता है।। २ ।। एक ऐसा शहर है जिसके दस दरवाजे हैं और जिसमें गायों को चरने के लिये छोड़ा जाता है। गाय चाहे पाँच कोस की दूरी पर चर रही हो परन्तु अपना चित्त बछड़े में लगाए रखती है।। ३ ।। नामदेव कहता है कि हे त्रिलोचन सुनो, माँ बच्चे को पालने में डालकर अन्दर-बाहर घर के काम में व्यस्त बनी रहती है परन्तु बच्चे पर वह हमेशा मन टिकाए रखती है।।४ ।।१ ।।वेद, पुराण और अनन्त शास्त्रों के मैं गीत कवित्त आदि नही गाऊंगा अर्थात कर्मकाण्डों में नहीं पडूंगा तथा

अखंड मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो ॥ १ ॥ बैरागी रामहि गावउगो ॥ सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहाउगो ॥ चंदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥ २ ॥ तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ॥ अठसठि तीरथ गुरू दिखाए घट ही भीतरि न्हाउगो ॥ ३ ॥ पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो ॥ नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुंन समाधि समाउगो ॥ ४ ॥ २ ॥ माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥ हम नही होते तुम नही होते कवनु कहां ते आइआ ॥ १ ॥ राम कोइ न किस ही केरा ॥ जैसे तरवरि पंखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ ॥ सासतु न होता बेदु न होता करमु कहां ते आइआ ॥ २ ॥ खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥ नामा प्रणवै परम ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ रामकली घरु २ ॥ बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥ असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ १ ॥ छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥ हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुंभि जउ केदार न्हाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥ कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ २ ॥ असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै ॥ आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥ ३ ॥ मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥ जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंम्रितु पीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥

रामकली बाणी रविदास जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥ लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ

अखण्डमण्डल वाले निराकार प्रभु में लीन होकर आनन्द की बांसुरी बजाता रहूँगा।। १ ।। वैराग्यवान बनकर मैं राम के गुण गाऊँगा और शब्द के माध्यम से तीनों गुणों की अवस्था से परे जाकर उस अनहद में लीन बना रहकर कुल रहित प्रभु के घर में स्थिर बना रहूँगा।। १ ।। रहाउ ।। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना में लगाए गए पवन के बँधों को छोड़ दिया जाएगा तथा चन्द्र सूर्य दोनों को समान भाव से जानते हुए हम उस परब्रह्म की ज्योति में मिल जाएँगे।। २ ।। तीर्थो का दर्शन करके वहाँ स्नान के लिये नहीं बैठा रहूँगा और जीव जन्तुओं को नहीं सताऊँगा। गुरु ने अड़सठ तीर्थ मुझे अन्दर ही दिखा दिए है इसलिये तीर्थों पर स्नान करने के बजाए मैं अपने हृदय में ही प्रभु नाम में स्नान करूंगा।। ३ ।। पाँचों विकार व्यक्ति की शोभा बढ़ाने वाले माने जाते हैं परन्तु मैं इनके माध्यम से भला भला नहीं कहलवाऊंगा। नामदेव कहता है कि मेरा चित्त प्रभु में लीन हो गया है और मैं अब निर्विकार शून्य समाधि में ही लीन हो जाऊँगा।। ४ ।। २ ।। जब माँ-बाप कोई नहीं था, ना शरीर था और ना उसके कर्म थे; हम नहीं थे, तुम नहीं थे तो भला कैसे पता चले कि कौन कहाँ से आया है।। १ ।। हे प्रभु, यहाँ कोई किसी का नहीं है और सब का जीवन वैसा ही क्षणिक है जैसे पक्षियों का वृक्ष पर बसेरा क्षणिक होता है।। १ ।। रहाउ ।। जब चन्द्र नहीं था सूर्य नहीं था और पानी तथा पवन को भी उस प्रभु शक्ति ने अपने में लीन किया हुआ था ; जब शास्त्र और वेद नहीं थे तो यह कर्म (और कर्मफल) कहाँ से आ गया।। २ ।। खेचर, भूचर और तुलसी माला से किया गया जप तप तो मुझे गुरु कृपा के फलस्वरूप ही प्राप्त हो गया। नामदेव विनती करता है कि वह प्रभु ही परम तत्व है और सच्चे गुरु के रूप में वही सब ओर प्रकट दिखाई देता रहता है।। ३ ।। ३ ।। रामकली घरु २ ।। बनारस में बैठा तपस्या करता रहे और व्यक्ति बेशक उलट कर तीर्थों पर मरता रहे, अपने आप को जला डाले और अनेकों कायाकल्प के व्रत अपनाता रहे; बेशक व्यक्ति अवश्मेध यज्ञ करता रहे और फल आदि में छिपाकर सोने का गुप्तदान भी करता रहे परन्तु फिर भी यह सब कर्मकाण्ड प्रभु नाम के बराबर नहीं पहुँच पाता।। १ ।। हे मेरे पाखंडी मन, तू कपट करना छोड़ दे और प्रभु नाम का सदैव सुमिरन करता रह।। १ ।। रहाउ ।। बेशक गंगा, गोदावरी के तट पर जाया जाए और कुम्भ के समय बेशक केदार, गोमती आदि पर स्नान करते हुए हजारों गायों का दान किया जाए; बेशक व्यक्ति करोड़ों तीर्थों का दर्शन करे और अपने शरीर को हिमालय में गला डाले तब भी यह सब कुछ राम नाम के बराबर नहीं पहुँच सकता।। २ ।। घोड़ों का दान, हाथियों का दान, सेज समेत स्त्री और भूमि आदि के दान बेशक रोज किए जाएँ ; अपने आपको अर्पण कर दिया जाए और बेशक अपने भार के बाराबर सोने का दान दे दिया जाए तब भी यह सब प्रभु-नाम के बराबर नहीं पहुँच पाता।। ३ ।। मन में क्रोध ना किया जाए और यम को दोष ना देते हुए निर्मल मोक्ष पद की पहचान की जानी चाहिए। दशरथ राजा का पुत्र मेरे लिए प्रभु है (क्योंकि प्रभु कृपा से उसने महान कार्य किए हैं) अतः नामदेव विनती पूर्वक कहता है कि हे जीव, तुझे प्रभु-नाम का अमृत समान तत्व रस पीते रहना चाहिए।। ४ ।। ४।।

रामकली वाणी रविदास जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हम पढ़ते भी हैं चिंतन भी करते हैं प्रभु के नाम को सुनते भी हैं परन्तु फिर भी ज्ञान और प्रेम स्वरूप प्रभु का दर्शन नहीं होता। जब तक लोहा, पारस पत्थर के स्पर्श में ना आए तब तक भला वह

पारसहि न परसै ॥ १ ॥ देव संसै गांठि न छूटै ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥ २ ॥ कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥ ३ ॥ १ ॥

रामकली बाणी बेणी जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई ॥ बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥ १ ॥ संतहु तहा निरंजन रामु है ॥ गुर गमि चीनै बिरला कोइ ॥ तहां निरंजनु रमईआ होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देव सथानै किआ नीसाणी ॥ तह बाजे सबद अनाहद बाणी ॥ तह चंदु न सूरजु पउणु न पाणी ॥ साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥ २ ॥ उपजै गिआनु दुरमति छीजै ॥ अंम्रित रसि गगनंतरि भीजै ॥ एसु कला जो जाणै भेउ ॥ भेटै तासु परम गुरदेउ ॥ ३ ॥ दसम दुआरा अगम अपारा परम पुरख की घाटी ॥ ऊपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती ॥ ४ ॥ जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥ तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥ बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ मनूआ उलटि सुंन महि गहै ॥ ५ ॥ जागतु रहै न अलीआ भाखै ॥ पाचउ इंद्री बसि करि राखै ॥ गुर की साखी राखै चीति ॥ मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥ ६ ॥ कर पलव साखा बीचारे ॥ अपना जनमु न जूऐ हारे ॥ असुर नदी का बंधै मूलु ॥ पछिम फेरि चड़ावै सूरु ॥ अजरु जरै सु निझरु झरै ॥ जगंनाथ सिउ गोसटि करै ॥ ७ ॥ चउमुख दीवा जोति दुआर ॥ पलू अनत मूलु बिचकारि ॥ सरब कला ले आपे रहै ॥ मनु माणकु रतना महि गुहै ॥ ८ ॥ मसतकि पदमु दुआलै मणी ॥ माहि निरंजनु त्रिभवण धणी ॥ पंच सबद निरमाइल बाजे ॥ ढुलके चवर संख घन गाजे ॥ दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥ बेणी जाचै तेरा नामु ॥ ९ ॥ १ ॥

शुद्ध सोना कैसे बन सकता है।। १ ।। हे प्रभु, मेरे मन के संशय की गांठें नहीं खुलती हैं। काम, क्रोध, माया, अभिमान ईर्ष्या आदि पाँचों ने मिलकर मुझे लूट लिया है।। १ ।। रहाउ ।। हम बहुत बड़े कवि हैं, हम कुलीन हैं; हम पंडित, योगी, संन्यासी हैं; हम ज्ञानी, गुणवान, शूरवीर और दाता हैं यह अहंकार की भावना हममें से कभी भी नष्ट नहीं होती।। २ ।। रविदास सबसे कहता है परन्तु कोई इसे नहीं समझ पाता और पागलों की तरह सभी भूले हुए भटक रहे हैं। मुझे तो नारायण प्रभु के नाम का ही आसरा है और वही मेरे जीवन का प्राण धन है।। ३ ।। १ ।।

रामकली वाणी बेणी जी की   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना ये तीनों व्यक्ति के अन्तर्मन में ही एक ही स्थान पर स्थित हैं। हृदय में ही त्रिवेणी का संगम और प्रयाग है जिसमें मन स्नान करता रहता है।। १ ।। हे सन्तजनों, हृदय में ही वह निरंजन प्रभु है और कोई बिरला ही गुरु तक पहुँच कर अर्थात गुरमुख बनकर इस तथ्य को पहचान पाता है कि हृदय में ही प्रभु रमण कर रहा है।। १ ।। रहाउ ।। ऐसे देव स्थान की क्या निशानी है। वहाँ सदैव अनहद शब्द की वाणी बजती रहती है। वहाँ चाँद, सूर्य, पवन, पानी अर्थात बाहरी कर्मकाण्ड की आवश्यकता नहीं होती। ऐसी शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति जागृत हो उठता है और गुरमुख बनकर ऐसी शिक्षा को जाना जाता है।। २ ।। ऐसी शिक्षा के फलस्वरूप दुर्मति नष्ट हो जाती है और ज्ञान उत्पन्न हो जाता है तथा दशम द्वार के अमृत रस से व्यक्ति भीग उठता है। इस कला के रहस्य को जो जान जाता है उस परम गुरुदेव प्रभु से उसका मिलाप हो जाता हैं।। ३ ।। यह दशम द्वार अगम्य एवं अपार है और यही वास्तव में परम पुरुष परमात्मा के निवास स्थान वाली घाटी है। मनुष्य एक श्रेष्ठ दुकान के रूप में सबसे उपर है और मनुष्य के शरीर के सबसे उपर उसका सिर रूपी सुरक्षित स्थान है और उस सिर में भी मस्तिष्क (मन) रूपी पदार्थ संभाल कर रखने के लिए परमात्मा ने दिया है ।। ४ ।। जो ज्ञानवान बनकर सावधान बना रहता है वह कभी भी आलस्य की निद्रा में सोता नहीं। उसकी समाधि में तीनों गुणों वाले तीनों लोक लोप हो जाते हैं अर्थात उनका उस पर कोई प्रभाव नहीं रहता। प्रभु के नाम रूपी सबके हृदय में सदैव बने रहने वाले बीज मंत्र का जाप करते हुए यदि व्यक्ति अपने हृदय में ही अपना निवास बनाए रखे तो यह मन साँसारिकता की ओर से उलटकर उस शून्य प्रभु में अपनी पकड़ बना लेता है।। ५ ।। जो सावधान बना रहता है वह झूठ नहीं बोलता और पाँचों इन्द्रियों को वश में रखता है। वह गुरु की शिक्षा को चित में धारण किये रहता है और अपने मन और तन को प्रभु प्रेम में अर्पण कर देता है।। ६ ।। व्यक्ति अपने हाथों को उस प्रभु रूपी वृक्ष के पत्ते और शरीर को उस प्रभु की शाखा मान ले तो ऐसा व्यक्ति अपना यह जीवन जुए की बाजी की तरह हारता नहीं। बुरे कर्म रूपी नदी के मूल उद्गम को ही बंद कर दे और सूर्य को पश्चिम की ओर से उगा दे अर्थात साँसारिकता की मोह माया को उलटा दे, वही व्यक्ति उस निर्झर झरने का आनन्द लेता हुआ असहनीय प्रभु कृपा को हृदय में बसाता हुआ उस प्रभु से वार्तालाप करता रहता है।। ७ ।। उस दशम द्वार में चारों ओर प्रकाश करने वाला दीपक जल रहा है। संसार का मूल प्रभु बीचों बीच है और यह संसार रूपी पल्लव (पत्ते) उसके चारों और स्थित हैं। वह अपनी सारी कलाओं समेत स्थित बना रहता है और जीव भी यह अनुभव करके अपने मन को उसके माणिक रूपी नाम में लीन कर देता है।। ८ ।। व्यक्ति के मस्तक में ही वह विशाल प्रभु रूपी कमल है और उसके चारों ओर मणियाँ ही मणियाँ है। उसी विशाल कमल में तीनों लोकों का स्वामी प्रभु विराजमान बना रहता है। वहीं पवित्र पाँचों प्रकार के शब्दों की धुन बजती रहती है और वहीं शंख, बादल की तरह गरजता है और चँवर डुलाता रहता है। गुरमुख बनकर जिसे ज्ञान मिल जाता है वह विकार रूपी दैत्यों का दलन कर देता है। हे प्रभु, बेणी तो केवल तेरे नाम की याचना करता है।। ९ ।। १ ।।

रागु नट नाराइन महला ४

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ॥ कोटि कोटि दोख बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहि आराधहि सेवक भाइ खरे ॥ किलबिख दोख गए सभ नीकरि जिउ पानी मैलु हरे ॥ १ ॥ खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ पंच दोख असाध नगर महि इकु खिनु पलु दूरि करे ॥ २ ॥ वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के भगत हरे ॥ तिन की संगति देहि प्रभ जाचउ मै मूड़ मुगध निसतरे ॥ ३ ॥ क्रिपा क्रिपा धारि जगजीवन रखि लेवहु सरनि परे ॥ नानकु जनु तुमरी सरनाई हरि राखहु लाज हरे ॥ ४ ॥ १ ॥ नट महला ४ ॥ राम जपि जन रामै नामि रले ॥ राम नामु जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि क्रिपले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि अगम अगोचरु सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥ हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बलले ॥ १ ॥ पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दलले ॥ विचि देही दोख असाध पंच धातू हरि कीए खिन परले ॥ २ ॥ हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥ उनवै घनु धन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥ ३ ॥ हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवह देखि हरि मिले ॥ जन नानक हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥ ४ ॥ २ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

रागु नट नाराइन महला ४

हे मेरे मन, दिन रात प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता रह। तूने करोड़ों पाप किए हैं परन्तु प्रभु ने इन सबको एक तरफ हटा दिया है।। १ ।। रहाउ ।। जो प्रभु के नाम का जाप और आराधना करते हैं वे ही सेवा भाव में खरे उतरते हैं। उनके पापों के दोष उसी प्रकार निकल जाते हैं जैसे पानी मैल को साफ कर देता है।। १ ।। वे हर क्षण उस प्रभु का गुणानुवाद करते हैं और मुख से प्रभु -नाम का ही उच्चारण करते रहते हैं। इस शरीर रूपी नगर के पाँच असाध्य रोगों को वह एक क्षण में ही दूर कर देता है।। २ ।। बड़े भाग्यशाली प्रभु का नाम सुमिरन करने वाले ही प्रभु के भक्त होते हैं। हे प्रभु, मुझे उनकी संगति प्रदान करो ताकि मैं मूर्ख व्यक्ति भी पार उतर जाऊँ।। ३ ।। हे संसार के जीवन प्रभु, कृपा धारण करो और मुझ शरण पड़े की रक्षा कर लो। दास नानक तो तुम्हारी शरण में है इसलिये हे प्रभु, मेरी लाज रख लो।।४ ।।१ ।।नट महला ४ ।। हे प्रभु के सेवको, प्रभु-नाम में लीन होकर प्रभु-नाम का ही सुमिरन करो। जिन्होंने गुरु के वचनों को मानते हुए राम नाम का सुमिरन किया है प्रभु ने उन पर कृपा बनाए रखी है।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु अगम्य, अगोचर स्वामी है और उसके सेवक उसका सुमिरन करते हुए उसमें वैसे ही लीन हो जाते हैं जैसे पानी-पानी में मिलकर एक हो जाता है। प्रभु के शान्त पुरुषों से मिलाप के बाद उन्होंने प्रभु-नाम के रस को पा लिया है और हम प्रभु के सेवकों पर बार-बार बलिहारी जाते हैं।। १ ।। उस पुरुषोत्तम प्रभु के नाम का जिस भी सेवक ने गायन किया है उसकी दरिद्रता और दुख प्रभु ने दूर कर दिए हैं। इस शरीर में असाध्य पाँच दोष मजबूत धातु की तरह से टिके हुए हैं परन्तु प्रभु ने उन्हें क्षण भर में ही नष्ट कर दिया है।। २ ।। जैसे कमल चन्द्रमा को देखकर खिल उठता है इसी प्रकार मुझे खिला देने वाली प्रीति प्रभु के सन्तजनों ने मेरे मन मे लगा दी है। अब प्रभु रूपी बादल घनघोर रूप में बरसने के लिए मेरी ओर झुका हुआ है और मेरा मन रूपी मोर और उससे सम्बन्धित अन्य भावनाएं प्रसन्न होकर खिल उठी हैं।। ३ ।। हमारे प्रभु ने ही यह इच्छा हमारे अन्दर जागृत की है और अब तो हम प्रभु को मिलकर ही जीवित बने रह सकते हैं। दास नानक को तो प्रभु ने अपना नाम रूपी नशा लगा दिया है इसलिए हे प्रभु, अब आनन्द पूर्वक हमें अपने से मिला लो।। ४ ।। २ ।। नट महला ४ ।। हे मेरे

मन जपि हरि हरि नामु सखे ॥ गुर परसादी हरि नामु धिआइओ हम सतिगुर चरन पखे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम जगंनाथ जगदीसुर हम पापी सरनि रखे ॥ तुम वड पुरख दीन दुख भंजन हरि दीओ नामु मुखे ॥ १ ॥ हरि गुन ऊच नीच हम गाए गुर सतिगुर संगि सखे ॥ जिउ चंदन संगि बसै निंमु बिरखा गुन चंदन के बसखे ॥ २ ॥ हमरे अवगन बिखिआ बिखै के बहु बार बार निमखे ॥ अवगनिआरे पाथर भारे हरि तारे संगि जनखे ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम हरि राखहु सुआमी सभ तिन के पाप क्रिखे ॥ जन नानक के दइआल प्रभ सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे ॥ ४ ॥ ३ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि राम रंगे ॥ हरि हरि क्रिपा करी जगदीसुरि हरि धिआइओ जन पगि लगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के भूल चूक हम अब आए प्रभ सरनगे ॥ तुम सरणागति प्रतिपालक सुआमी हम राखहु वड पापगे ॥ १ ॥ तुमरी संगति हरि को को न उधरिओ प्रभ कीए पतित पवगे ॥ गुन गावत छीपा दुसटारिओ प्रभि राखी पैज जनगे ॥ २ ॥ जो तुमरे गुन गावहि सुआमी हउ बलि बलि बलि तिनगे ॥ भवन भवन पवित्र सभि कीए जह धूरि परी जन पगे ॥ ३ ॥ तुमरे गुन प्रभ कहि न सकहि हम तुम वड वड पुरख वडगे ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु हम सेवह तुम जन पगे ॥ ४ ॥ ४ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि नामु मने ॥ जगंनाथि किरपा प्रभि धारी मति गुरमति नाम बने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन हरि जसु हरि हरि गाइओ उपदेसि गुरू गुर सुने ॥ किलबिख पाप नाम हरि काटे जिव खेत क्रिसानि लुने ॥ १ ॥ तुमरी उपमा तुम ही प्रभ जानहु हम कहि न सकहि हरि गुने ॥ जैसे तुम तैसे प्रभ तुम ही गुन जानहु प्रभ अपुने ॥ २ ॥ माइआ फास बंध बहु बंधे हरि जपिओ खुल खुलने ॥ जिउ जल कुंचरु तदूऐ बांधिओ हरि चेतिओ मोख मुखने ॥ ३ ॥ सुआमी पारब्रहम परमेसरु तुम खोजहु जुग जुगने ॥ तुमरी थाह पाई नही पावै जन नानक के प्रभ वडने ॥ ४ ॥ ५ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन कलि कीरति हरि प्रवणे ॥ हरि हरि

मन, सखा रूप उस प्रभु के नाम का सुमिरन करता रह। गुरु की कृपा से हमने प्रभु-नाम का सुमिरन किया है और सच्चे गुरु के चरणों को धोया है।। १ ।। रहाउ ।। वह जगदीश्वर और सारे संसार का नाथ प्रभु सर्वोत्तम है जिसने हम पापियों को अपनी शरण में रखा है। हे प्रभु, तुम ही महान हो, दीनों के दुखों का नाश करने वाले हो और हे प्रभु, तूने ही अपना नाम हमारे मुख में स्थित किया है।। १ ।। हमने ऊँचे-नीचे ढंग से सच्चे सतुगुरु की संगति में प्रभु के गुणों का गायन किया। जैसे चंदन के साथ रहने से नीम के वृक्ष में भी चंदन के गुण आ जाते हैं ऐसा ही कुछ हमारे भी साथ हुआ है।। २ ।। हमारे सभी अवगुण विषय विकारों के हैं जिन्हें हर क्षण बार बार हमने किया है। हम अवगुणों से भरे हुए भारी पत्थर हैं परन्तु प्रभु ने हमे अपने भक्तजनों के साथ पार उतार लिया है।। ३ ।। हे प्रभु स्वामी, जिनको तुम बचा लेते हो उनके सभी पाप खींच कर दूर कर दिए जाते हैं। दास नानक के दयालु स्वामी प्रभु, तुमने तो हिरण्यकश्यप जैसे दुष्टों को भी पार उतार दिया है।। ४ ।। ३ ।। नट महला ४ ।। हे मेरे मन, प्रभु के रंग में लीन होकर तू प्रभु का सुमिरन कर। उस प्रभु ने हम पर कृपा की है और हमने प्रभु के भक्तों के चरणों में लगकर उस प्रभु का सुमिरन किया है।। १ ।। रहाउ ।। जन्मों-जन्मों के भूले भटके हम अब प्रभु की शरण में आ गए हैं। तुम पालन करने वाले स्वामी हो, हम तुम्हारे शरणगत हैं इसलिये हम बड़े पापियों की तुम रक्षा करो।। १ ।। तुम्हारी संगति में हे प्रभु, किस-किस का उद्धार नहीं हुआ हैं; प्रभु ने तो पतितों को सदैव ही पवित्र बनाया है। प्रभु के गुण गाते हुए छीपी नामदेव को दुष्ट कहकर बाहर निकाल दिया गया था परन्तु प्रभु ने अपने सेवक के सम्मान को बचा लिया था।। २ ।। हे प्रभु, जो तुम्हारे गुण गाते है मैं उन पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। मेरे ऐसे सेवकों की चरण धूलि जहाँ भी जा पड़ी है वे सभी घर स्थान पवित्र हो गए हैं।। ३ ।। हे प्रभु, तुम इतने विशाल और महान हो कि तुम्हारे गुणों का कथन हम नहीं कर सकते। दास नानक पर हे प्रभु, कृपा धारण करो क्योंकि हम तो तुम्हारे सेवकों के चरणों की सेवा कर रहे हैं।। ४ ।। ४ ।। नट महला ४ ।। हे मेरे मन, तू उस प्रभु को मानते हुए उसके नाम का सुमिरन करता रह। संसार के स्वामी प्रभु ने कृपा की तो हमारी मति भी गुरु की शिक्षा के माध्यम से प्रभु-नाम वाली बन गई है।। १ ।। रहाउ ।। गुरु से उपदेश लेकर और सुनकर प्रभु के सेवक प्रभु के यश का गुणानुवाद करते हैं। प्रभु-नाम ने ही सभी दोषों और पापों को उसी प्रकार काट दिया है जैसे किसान खेती को काट लेता है। १ ।। तुम्हारी महिमा तो हे प्रभु, केवल तुम्हीं जानते हो; हरि गुणों का वर्णन हम तो कर ही नहीं सकते। हे प्रभु, केवल तुम ही अपने जैसे हो और तुम ही अपने गुणों को जानते हो।। २ ।। हम माया के बन्धनों में अनेक प्रकार से बंधे हैं परन्तु प्रभु के सुमिरन के फलस्वरूप हमारे बन्धन वैसे ही भली प्रकार खुल गए हैं जिस प्रकार हाथी को घड़ियाल ने पानी में पकड़ लिया था परन्तु प्रभु के सुमिरन से ही उसकी मुक्ति हो गई थी।। ३ ।। हे स्वामी परब्रह्म प्रभु, हम युगों-युगों से तुम्हें खोज रहे हैं। दास नानक के प्रभु तुम इतने बड़े हो कि तुम्हारे ओर-छोर को पाया नहीं जा सकता।। ४ ।। ५ ।। नट महला ४ ।। हे मेरे मन, कलियुग में केवल प्रभु की कीर्ति का गायन ही स्वीकार होता है। जब दयालु प्रभु ने

दइआलि दइआ प्रभ धारी लगि सतिगुर हरि जपणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि तुम वड अगम अगोचर सुआमी सभि धिआवहि हरि रुड़णे ॥ जिन कउ तुम्हरे वड कटाख है ते गुरमुखि हरि सिमरणे ॥ १ ॥ इहु परपंचु कीआ प्रभ सुआमी सभु जगजीवनु जुगणे ॥ जिउ सललै सलल उठहि बहु लहरी मिलि सललै सलल समणे ॥ २ ॥ जो प्रभ कीआ सु तुम ही जानहु हम नह जाणी हरि गहणे ॥ हम बारिक कउ रिद उसतति धारहु हम करह प्रभू सिमरणे ॥ ३ ॥ तुम जल निधि हरि मान सरोवर जो सेवै सभ फलणे ॥ जनु नानकु हरि हरि हरि हरि बांछै हरि देवहु करि क्रिपणे ॥ ४ ॥ ६ ॥

नट नाराइन महला ४ पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन सेव सफल हरि घाल ॥ ले गुर पग रेन रवाल ॥ सभि दालिद भंजि दुख दाल ॥ हरि हो हो हो नदरि निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का ग्रिहु हरि आपि सवारिओ हरि रंग रंग महल बेअंत लाल लाल हरि लाल ॥ हरि आपनी क्रिपा करी आपि ग्रिहि आइओ हम हरि की गुर कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ हरि आवते की खबरि गुरि पाई मनि तनि आनदो आनंद भए हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥ जनु नानकु हरि हरि मिले भए गलतान हाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥ नट महला ४ ॥ मन मिलु संतसंगति सुभवंती ॥ सुनि अकथ कथा सुखवंती ॥ सभ किलबिख पाप लहंती ॥ हरि हो हो हो लिखतु लिखंती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुग विचि ऊतम मति गुरमति कथा भजंती ॥ जिनि जनि सुणी मनी है जिनि जनि तिसु जन कै हउ कुरबानंती ॥ १ ॥ हरि अकथ कथा का जिनि रसु चाखिआ तिसु जन सभ भूख लहंती ॥ नानक जन हरि कथा सुणि त्रिपते जपि हरि हरि हरि होवंती ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥ नट महला ४ ॥ कोई आनि सुनावै हरि की हरि गाल ॥ तिस कउ हउ बलि बलि बाल ॥ सो हरि जनु है भल

दया को धारण किया तो हम भी सच्चे गुरु की संगति में बैठकर प्रभु का सुमिरन कर रहे हैं।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, तुम बड़े अगम्य और अगोचर स्वामी हो और सभी उस सुन्दर प्रभु का सुमिरन करते हैं। जिन पर तुम्हारी विशाल कृपा दृष्टि है वे गुरमुख ही प्रभु का सुमिरन करते हैं।। १ ।। हे स्वामी प्रभु, तुमने इस सृष्टि का प्रपंच रचा है और हे संसार के जीवन, तू ही सबमें बसा हुआ है। जिस प्रकार पानी में से बहुत ही लहरें उठती हैं और फिर पानी में समा जाता है इसी प्रकार यह सृष्टि है जो उस प्रभु से ही निकलती है और प्रभु में समा जाती है।। २ ।। हे प्रभु, जो तुमने किया है उसके बारे में तुम ही जानते हो; हम उस प्रभु की गहराई को नहीं जान सकते। हम बच्चे हैं और हे प्रभु, अपनी स्तुति तुम हमारे हृदय में धारण कराओ ताकि हम प्रभु का सुमिरन करते रहें।। ३ ।। हे प्रभु, तुम अनन्त जल के भण्डार वह मानसरोवर हो जिसकी जो भी सेवा करता है उसे सभी फल प्राप्त होते हैं। दास नानक तो बार-बार प्रभु को ही मानता है और हे प्रभु, तुम कृपा करके उसे दर्शन दे दो।। ४ ।। ६ ।।

नट नाराइन महला ४ पड़ताल   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरे मन, प्रभु की सेवा करके तू अपनी मेहनत सफल कर। तू गुरु के चरणों की धूलि प्राप्त कर और सभी दरिद्रताओं और दुखों का नाश कर दे। हे प्रभु, तू कृपादृष्टि से हमें प्रसन्न कर दे।। १ ।। रहाउ ।। यह शरीर रूपी घर प्रभु का है जिसने उसे स्वयं ही सँवारा है। यह ऐसा रंगमहल है जिसमें गुणों के अनन्त हीरे लाल लगे हुए हैं। प्रभु ने अपनी कृपा की और वह स्वयं हमारे शरीर रूपी घर में स्थित हुआ है और गुरु ने हरि प्रभु के पास हमारी वकालत की है, हम प्रभु का दर्शन करके अत्यन्त आनन्दित हो उठे हैं।। १ ।।प्रभु के आने की खबर गुरु ने जब हमें दी और हमने उस प्रिय प्रभु के आने की बात सुनी तो हम आनन्दित और अत्यन्त आनन्दित हो उठे। दास नानक प्रभु से मिलकर उसी में लीन हो गया है और उसकी अवस्था पूर्ण प्रसन्नता वाली हो गयी।।२ ।।१ ।।७ ।।नट महला ४ ।।हे मन, तू शोभायुक्त संत संगति से मिल और वहाँ प्रभु की सुखदायक अकथनीय कथा को सुन। वह संगति सब दोषों और पापों को दूर कर देती है परन्तु वह प्रभु लिखे हुए भाग्य लेख के अनुसार ही मिलता है।। १ ।। रहाउ ।। इस कलियुग में प्रभु का गुणानुवाद ही उत्तम है और प्रभु की कीर्ति वाले स्थान पर गुरु के उपदेश की कथा वार्ता चलती है। जिस प्रभु के सेवक ने भी उसको सुना और माना है उस सेवक पर मैं कुर्बान जाता हूँ।। १ ।। प्रभु की अकथनीय कथा का रस जिसने चख लिया है उस सेवक की सब प्रकार की भूख समाप्त हो जाती है। हे नानक, प्रभु के सेवक तो प्रभु की कथा सुनकर तृप्त हो जाते हैं और प्रभु का सुमिरन करते हुए वे प्रभु ही बन जाते हैं।।२ ।।२ ।।८ ।।नट महला ४ ।। कोई उस प्रभु की बात आकर मुझे सुना दे तो मैं उस पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। प्रभु का वह सेवक ही भला व्यक्ति है।

भाल ॥ हरि हो हो हो मेलि निहाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का मारगु गुर संति बताइओ गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥ अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा नालि ॥ जन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥

रागु नट नाराइन महला ५   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी सोई जनु तेरा जिसु ऊपरि रुच आवै ॥ क्रिपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै ॥ १ ॥ कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जनु सोई निज भगता जिसु ऊपरि रंगु लावै ॥ २ ॥ साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु बिसरावै ॥ संतसंगि लगि एहु सुखु पाइओ हरि गुन सद ही गावै ॥ ३ ॥ देखिओ अचरजु महा मंगल रूप किछु आन नही दिसटावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै ॥ ४ ॥ १ ॥

नट नाराइन महला ५ दुपदे   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ मन मीठ तुहारो कीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगिआ मानि जानि सुखु पाइआ सुनि सुनि नामु तुहारो जीओ ॥ ईहां ऊहा हरि तुम ही तुम ही इहु गुर ते मंत्रु द्रिड़ीओ ॥ १ ॥ जब ते जानि पाई एह बाता तब कुसल खेम सभ थीओ ॥ साधसंगि नानक परगासिओ आन नाही रे बीओ ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥ नट महला ५ ॥ जा कउ भई तुमारी धीर ॥ जम की त्रास मिटी सुखु पाइआ निकसी हउमै पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपति बुझानी अंम्रित बानी त्रिपते जिउ बारिक खीर ॥ मात पिता साजन संत

ऐसे व्यक्ति से मेल मिलाकर प्रभु प्रसन्न कर देता है।। १ ।। रहाउ ।। गुरु के सन्त पुरुष ने मुझे प्रभु का मार्ग दिखाया और गुरु ने ही प्रभु के मार्ग पर चलने की रीति और विधि मुझे दिखाई है। अन्तर्मन का कपट समाप्त कर दो और हे मेरे गुर सिक्खो, निष्कपटता और सरलता का आचरण बनाओ ; यही प्रभु के लिए की हुई साधना है और इसी साधना से तुम पूर्णरूप से आनन्दित बने रहोगे।। १ ।। मेरे प्रभु को गुरु के वही सिक्ख भाते हैं जिन्होंने प्रभु को सदैव अपने साथ ही समझा। प्रभु ने ही दास नानक को यह मति प्रदान की है कि तुम प्रभु को अपने निकट ही देखते हुए परम आनन्दित बने रहो।। २ ।। ३ ।। ६ ।।

रागु नट नाराइन महला ५   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, मैं क्या जानता हूँ कि तुझे क्या अच्छा लगता है; मेरे मन में तेरे दर्शनों की बहुत प्यास बनी हुई है।। १ ।। रहाउ ।। वही व्यक्ति ज्ञानवान और तेरा सेवक है जिसपर तेरी प्रसन्नता बनी रहती है। हे विधाता पुरुष, जिसपर तुम कृपा करते हो वही सदैव तुम्हारा सुमिरन करता रहता है।। १ ।। कोई ऐसा योग, ज्ञान, ध्यान और गुण नहीं है जो तुझे प्रसन्न कर सकता हो ; वही सेवक तेरा अपना भक्त है जिस पर तू प्रेम बनाए रखता है।। २ ।। वही बुद्धि मति और सयानापन सार्थक है जो क्षण भर के लिए भी प्रभु को विस्मृत नहीं होने देती। सन्तों की संगति में बैठकर मैंने सदैव प्रभु के गुण गाने का ही सुख प्राप्त कर लिया है।। ३ ।। उस परम आश्चर्य और महा मंगल रूप प्रभु को जब मैंने देख लिया तो फिर अन्य कुछ भी मेरी नजर में टिकता नहीं। नानक कहता है कि गुरु ने विकारों का जंग मुझ पर से उतार दिया है और इसके बाद भला गर्भ योनि में कैसे आया जा सकता है।। ४ ।। १ ।।

नट नाराइन महला ५ दोपदे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैंने तो कभी भी किसी को शिकायत नहीं लगाई और मेरे मन को सदैव तुम्हारा किया ही अच्छा लगता है।। १ ।। रहाउ ।। मैंने तुम्हारी आज्ञा मानकर जानकर सुख पाया और तुम्हारा नाम सुन-सुनकर ही मैं आध्यात्मिक तौर पर जीवित बना रहता हूँ। गुरु के इस उपदेश को ही मैंने मन में पक्का कर लिया है कि यहाँ वहाँ अर्थात सब स्थानों में हे प्रभु, तुम ही तुम हो।। १ ।। जबसे मैंने इस तथ्य को जान लिया है तभी से सब ओर कुशल क्षेम बना हुआ है। हे नानक, साधसंगति में वह प्रभु प्रकाशित हो उठा है और अब उसके बिना अन्य कोई नहीं है।। २ ।। १ ।। २।। नट महला ५ ।। हे प्रभु, जिसे तुम्हारा आसरा मिल गया उसका यम का भय मिट गया है। उसने सुख पा लिया है और उसके अहंकार की पीड़ा समाप्त हो गई है।। १ ।। रहाउ ।। अमृत वाणी ने उसकी तृष्णा की अग्नि बुझा दी है। वह उसी तरह तृप्त हो गया है जैसे बच्चा दूध पीकर तृप्त हो जाता है। प्रभु के शान्त पुरुष

मेरे संत सहाई बीर ॥ १ ॥ खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ बिसम भए नानक जसु गावत ठाकुर गुनी गहीर ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ नट महला ५ ॥ अपना जनु आपहि आपि उधारिओ ॥ आठ पहर जन कै संगि बसिओ मन ते नाहि बिसारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु पेखिओ दास का कुलु न बिचारिओ ॥ करि किरपा नामु हरि दीओ सहजि सुभाइ सवारिओ ॥ १ ॥ महा बिखमु अगनि का सागरु तिस ते पारि उतारिओ ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो पुनह पुनह बलिहारिओ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ नट महला ५ ॥ हरि हरि मन महि नामु कहिओ ॥ कोटि अप्राध मिटहि खिन भीतरि ता का दुखु न रहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी साधू संगि लहिओ ॥ सगल तिआगि एक लिव लागी हरि हरि चरन गहिओ ॥ १ ॥ कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरनि पइओ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना कहु नानक अनदु भइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ५ ॥ नट महला ५ ॥ चरन कमल संगि लागी डोरी ॥ सुख सागर करि परम गति मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंचला गहाइओ जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की खोरी ॥ जसु गावत भगति रसु उपजिओ माइआ की जाली तोरी ॥ १ ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि आन न पेखउ होरी ॥ नानक मेलि लीओ दासु अपुना प्रीति न कबहू थोरी ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥ नट महला ५ ॥ मेरे मन जपु जपि हरि नाराइण ॥ कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइण ॥ पूरन पूरि रहे किरपा निधि घटि घटि दिसटि समाइणु ॥ १ ॥ जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइण ॥ दुइ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै तेरे दासनि दास दसाइणु ॥ २ ॥ ६ ॥ ७ ॥ नट महला ५ ॥ मेरै सरबसु नामु निधानु ॥ करि किरपा साधू संगि मिलिओ सतिगुरि दीनो दानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ कीरतनु पूरन गिआनु ॥ कामु क्रोधु लोभु खंड खंड कीन्हे बिनसिओ मूड़ अभिमानु ॥ १ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा प्रभ अंतरजामी जानु ॥ चरन कमल सरनि सुख सागर नानकु सद कुरबानु ॥ २ ॥ ७ ॥ ८ ॥

हमारे पिता-माता सज्जन और सहायता करने वाले भाई बन्धु हैं।। १ ।। धरती के स्वामी प्रभु रूपी हीरे ने हमारी आत्मा रूपी हीरे को बींध दिया है जिससे हमारी भ्रमों की दीवार हमारे सामने से हट गई है। हे नानक, गहरे गुणों वाले प्रभु का यश गाते हुए हम विस्मयपूर्ण बन गए हैं।। २ ।। २ ।। ३ ।। नट महला ५ ।। प्रभु ने अपने सेवक का स्वयं ही उद्धार कर दिया है। वह आठों प्रहर सेवक के साथ ही बसता रहा है और प्रभु ने उसे मन से नहीं भुलाया।। १ ।। रहाउ ।। उसने वर्ण, चिन्ह आदि कुछ भी नहीं देखा और अपने दास के कुल वंश आदि का भी कोई विचार नहीं किया। उस प्रभु ने कृपा करके अपना नाम उसे प्रदान किया और सहज स्वभाविक रूप से ही उसके जीवन को सँवार दिया है।। १ ।। यह संसार महा विषम अग्नि का सागर है। प्रभु ने उससे पार उतार दिया। नानक उस प्रभु को देख देख कर ही खिल उठा है और बार बार उस पर बलिहारी जाता है।। २ ।। ३ ।। ४ ।। नट महला ५।। जब मैंने प्रभु के नाम को अपने मन में याद किया तो क्षण भर में ही मेरे करोड़ों अपराध मिट गए और मुझे उनमें से किसी का भी दुख नहीं रहा।। १ ।। रहाउ ।। मैं उसे खोजता-खोजता बैरागी बना रहा परन्तु वह मुझे साधसंगति में प्राप्त हुआ है। मैंने सब कुछ त्यागकर उस एक प्रभु में लौ लगाई और प्रभु के चरणों को मैंने पकड़ लिया है।। १ ।। उसका यश कहने और सुनने वाले मुक्त हो जाते हैं और जो-जो उसकी शरण में आ जाता है वह पार उतर जाता है। नानक का कथन है कि अपने स्वामी प्रभु का सुमिरन करते हुए ही आनन्दित हुआ जाता है।। २ ।। ४ ।। ५ ।। नट महला ५ ।। मेरी सुरति की डोर प्रभु के चरण कमलों के साथ जुड़ गई है; हे सुखों के सागर प्रभु, मुझे परम गति प्रदान कर दो।। १ ।। रहाउ ।। तुमने अपने सेवक को अपना आँचल पकड़ाया है और सेवक का मन प्रेम की खुमारी में बिंध गया है। तुम्हारा यश गाते हुए जब भक्ति का रस उत्पन्न हुआ तो माया मोह का सारा जाल टूट गया है।। १ ।। वह कृपा का समुद्र प्रभु सर्वत्र व्याप्त दिखाई देता है और मैं अब अन्य किसी को नहीं देखता। हे नानक, प्रभु ने अपने दास को अपने से मिला लिया है और अब उसके प्रेम में कोई कमी नहीं आती।। २ ।। ५ ।। ६ ।। नट महला ५ ।। हे मेरे मन, प्रभु नारायण का जाप करता रह। हे प्रभु, तुम कभी भी मेरे मन से मत भूलो और मैं आठों प्रहर तुम्हारे गुण गाता रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। मैं साधु पुरुषों की चरण धूलि में रोज स्नान करूं क्योंकि उनकी चरण धूलि सभी रोगों और पापों को दूर करने वाली है। वह कृपा का समुद्र प्रभु पूर्ण रूप से सबमें व्याप्त है और वह प्रत्येक शरीर में लीन हुआ दिखाई देता है।। १ ।। जाप, तपस्या और लाखों-करोड़ों पूजा विधियाँ प्रभु के सुमिरन की बराबरी नहीं कर सकती। दोनों हाथ जोड़कर नानक यही दान माँगता है कि मैं तेरे दासों के दासों का दास बना रहूँ।। २ ।। ६ ।। ७ ।। नट महला ५ ।। मेरा सर्वस्व प्रभु के नाम का भण्डार ही है। प्रभु ने कृपा की और साधसंगति में यह नाम मुझे प्राप्त हुआ और सच्चे गुरु ने इसे दान रूप में मुझे दे दिया है।। १ ।। रहाउ ।। वह प्रभु सुख दाता है दुखों का नाश करने वाला है इसलिए उस पूर्ण ज्ञान स्वरूप प्रभु की कीर्ति का गायन करते रहो। उसके गुणानुवाद के फलस्वरूप काम, क्रोध लोभ टुकड़े-टुकड़े होकर रह गए हैं और मूर्ख अभिमान भी विनष्ट हो गया है।। १ ।। हे अन्तर्यामी और सब कुछ जानने वाले प्रभु, मैं तेरे गुणों का क्या कहकर बखान कर सकता हूँ। हे सुखों के सागर प्रभु, मैं तो तेरे चरण कमलों की शरण में हूँ और नानक तो सदैव तुझ पर कुर्बान जाता है।। २ ।। ७ ।। ८ ।।

नट महला ५ ॥ हउ वारि वारि जाउ गुर गोपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि निरगुन तुम पूरन दाते दीना नाथ दइआल ॥ १ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत जीअ प्रान धन माल ॥ २ ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै नानक दरस निहाल ॥ ३ ॥ ८ ॥ ९ ॥

नट पड़ताल महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कोऊ है मेरो साजनु मीतु ॥ हरि नामु सुनावै नीत ॥ बिनसै दुखु बिपरीति ॥ सभु अरपउ मनु तनु चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई विरला आपन कीत ॥ संगि चरन कमल मनु सीत ॥ करि किरपा हरि जसु दीत ॥ १ ॥ हरि भजि जनमु पदारथु जीत ॥ कोटि पतित होहि पुनीत ॥ नानक दास बलि बलि कीत ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥ १९ ॥

नट असटपदीआ महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

राम मेरे मनि तनि नामु अधारे ॥ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु सेवा मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि मनि धिआवहु मै हरि हरि नामु पिआरे ॥ दीन दइआल भए प्रभ ठाकुर गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ मधसूदन जगजीवन माधो मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ इक बिनउ बेनती करउ गुर आगै मै साधू चरन पखारे ॥ २ ॥ सहस नेत्र नेत्र है प्रभ कउ प्रभु एको पुरखु निरारे ॥ सहस मूरति एको प्रभु ठाकुरु प्रभु एको गुरमति तारे ॥ ३ ॥ गुरमति नामु दमोदरु पाइआ हरि हरि नामु उरि धारे ॥ हरि हरि कथा बनी अति मीठी जिउ गूंगा गटक सम्हारे ॥ ४ ॥ रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे ॥ जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अन रस साद बिसारे ॥ ५ ॥ गुरमति राम नामु धनु पाइआ सुणि कहतिआ पाप निवारे ॥ धरम राइ जमु नेड़ि न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे ॥ ६ ॥ सास सास सास है जेते मै गुरमति नामु सम्हारे ॥ सासु सासु जाइ नामै बिनु सो बिरथा सासु बिकारे ॥ ७ ॥ क्रिपा क्रिपा करि दीन प्रभ सरनी मोकउ

नट महला ५ ।। मैं प्रभु गुरु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। मैं गुण विहीन हूँ और हे दीनानाथ दयालु प्रभु, तुम पूर्ण दाता हो।। १ ।। उठते, बैठते, जागते तुम ही मेरी आत्मा और प्राणों का धन दौलत हो।। २ ।। मेरे मन में तेरे दर्शनों की बहुत प्यास बनी है तथा हे नानक, मुझे दर्शन देकर आनन्दित बना दो।। ३ ।। ८ ।। ६ ।।

नट पड़ताल महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मेरा कोई ऐसा सज्जन मित्र है जो मुझे सदैव प्रभु-नाम सुनाता रहे ताकि उल्टा चलने के स्वभाव के फलस्वरूप पैदा हुआ मेरा दुख नष्ट हो जाए। मैं ऐसे मित्र को मन, तन, चित्त सब कुछ अर्पण कर दूं।। १ ।। रहाउ ।। ऐसा कोई बिरला ही प्रभु ने अपना बनाया है जिसका मन प्रभु के चरण कमलों के साथ पिरोया है। प्रभु ने ही कृपा करके उसे यह यश प्रदान किया है।। १ ।। हे जीव, तू प्रभु का सुमिरन कर और इस जीवन रूपी अमूल्य पदार्थ को जीत ले। करोड़ों पतित प्रभु के गुणानुवाद से पवित्र हो जाते हैं। नानक तो दास रूप में उस पर बार बार बलिहारी जा चुका है।। २ ।। १ ।। १० ।। १६ ।।

नट अष्टपदियाँ महला ४ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, मेरे मन तन का आधार तो यह नाम ही है। इसकी सेवा के बिना तो मैं क्षण भर भी जीवित नहीं बना रह सकता और गुरु के उपदेश के द्वारा मैं प्रभु नाम को याद करता रहता हूँ।। १ ।। रहाउ।। मुझे प्रभु का नाम प्यारा है इसलिए हे मन, तू बार-बार प्रभु-नाम का ही सुमिरन करता रह। जब शब्द-गुरु के माध्यम से मैंने अपने आप को संवार लिया है तो वह प्रभु मुझ दीन पर दयालु हो गया है।। १ ।। वह मधुसूदन जगत का जीवन और माधव कहा जाने वाला मेरा मालिक प्रभु, अगम्य एवं अपरम्पर है। एक विनती मैं गुरु के आगे करता हूँ कि मुझे ऐसा दान दो ताकि मैं साधु पुरुषों के चरणों की सेवा करता रहूँ।। २ ।। वह प्रभु एक ही निराला सर्वव्यापक पुरुष है जिसके हजारों-हजार नेत्र हैं। गुरु के उपदेश के माध्यम से वह एक ही प्रभु सबको पार उतारने वाला है और जीवों की यह हजारों मूर्तियाँ उस एक प्रभु की ही हैं।। ३ ।। प्रभु के नाम को हृदय में धारण करने से और गुरमति के माध्यम से नाम रूपी प्रभु को मैंने पा लिया है। अब प्रभु की कथा अत्यन्त मीठी लगने लग गई है और अब मैं उसका आनन्द गूंगे द्वारा आनन्दित होकर खाते जाने के समान लेता हूँ।। ४ ।। जीव तो द्वैतभाव में अन्य स्वाद चखता रहता है ; वे स्वाद लोभ तथा अन्य विकारों के हैं तथा अत्यन्त फीके हैं। जो गुरमुख बनकर राम नाम का स्वाद चख लेते हैं वे अन्य सभी स्वाद भूल जाते हैं।। ५ ।। गुरमति के माध्यम से मैंने राम नाम रूपी वह धन पा लिया है जिसके सुनने और कहने से सभी पाप दूर हो जाते हैं। धर्मराज का दूत मेरे प्रभु के प्यारे सेवकों के पास भी नहीं आता।। ६ ।। जितने भी श्वास हैं मैं उनके और गुरमति के माध्यम से प्रभु-नाम को ही हृदय में सम्भाले रहता हूँ। जो भी श्वास प्रभु नाम के बिना आता जाता है वह व्यर्थ और बेकार है।। ७ ।। हे प्रभु, कृपा कर क्योंकि यह दीन तुम्हारी शरण में है और मुझे

हरि जन मेलि पिआरे ॥ नानक दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥ ८ ॥ १ ॥ नट महला ४ ॥ राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ क्रिपा क्रिपा करि गुरू मिलाए हम पाहन सबदि गुर तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर नामु द्रिड़ाए अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ नामै सुरति वजी है दह दिसि हरि मुसकी मुसक गंधारे ॥ १ ॥ तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ गावत गावत हरि गुन गाए गुन गावत गुरि निसतारे ॥ २ ॥ बिबेकु गुरू गुरू समदरसी तिसु मिलीऐ संक उतारे ॥ सतिगुर मिलिऐ परम पदु पाइआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥ ३ ॥ पाखंड पाखंड करि करि भरमे लोभु पाख़ंडु जगि बुरिआरे ॥ हलति पलति दुखदाई होवहि जमकालु खड़ा सिरि मारे ॥ ४ ॥ उगवै दिनसु आलु जालु सम्हालै बिखु माइआ के बिसथारे ॥ आई रैनि भइआ सुपनंतरु बिखु सुपनै भी दुख सारे ॥ ५ ॥ कलरु खेतु लै कूड़ु जमाइआ सभ कूड़ै के खलवारे ॥ साकत नर सभि भूख भुखाने दरि ठाढे जम जंदारे ॥ ६ ॥ मनमुख करजु चड़िआ बिखु भारी उतरै सबदु वीचारे ॥ जितने करज करज के मंगीए करि सेवक पगि लगि वारे ॥ ७ ॥ जगंनाथ सभि जंत्र उपाए नकि खीनी सभ नथहारे ॥ नानक प्रभु खिंचै तिव चलीऐ जिउ भावै राम पिआरे ॥ ८ ॥ २ ॥ नट महला ४ ॥ राम हरि अंम्रित सरि नावारे ॥ सतिगुरि गिआनु मजनु है नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति का गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ परस नपरस भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥ १ ॥ अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे ॥ मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी जमकंकर मारि बिदारे ॥ २ ॥ मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ सतसंगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥ ३ ॥ जब लगु जीउ पिंडु है साबतु तब लगि किछु न समारे ॥ जब घर मंदरि आगि लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे ॥ ४ ॥ साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥ साकत बचन बिछूआ जिउ डसीऐ तजि साकत परै परारे

प्रभु के प्यारे सेवकों से मिला दो। तेरे दासों का दास नानक कहता है कि हम तो तेरे सेवकों के पानी भरने वाले हैं।। ८ ।। १ ।। नट महला ४ ।। हे प्रभु, हम तो गुणों से विहीन पत्थर हैं। जब कृपा करके गुरु ने हमें अपने से मिलाया है तो हम पत्थर भी शब्द-गुरु के कारण पार उतर गए हैं।। १ ।। रहाउ ।। सच्चे गुरु ने हमें उस नाम का सुमिरन करवाया जो अत्यन्त मीठा और चन्दन का भी शुद्ध चंदन है अर्थात अत्यन्त ठंडा और सुगन्धित है। प्रभु नाम के कारण ही मेरी सुरति दसों दिशाओं में फैली हुई है अर्थात मुझे सारा ज्ञान हो गया है; उस सुगन्धित प्रभु की गन्ध सब ओर फैली हुई है।। १ ।। हे प्रभु, तेरी गुणातीत कथा वार्ता अत्यन्त मीठी है और गुरु के उत्तम उपदेश को मैंने हृदय में सम्भाल लिया। गाते-गाते ही मैंने प्रभु के गुण गाए हैं और उसके गुण गाने से प्रभु गुरु ने मेरा उद्धार कर दिया है।। २ ।। यह गुरु ही विवेक है यह विवेक ही गुरु है और यह गुरु समदर्शी है इसे बिना किसी संदेह के मिलना चाहिए। सच्चे गुरु के मिलने से ही हमने परम पद पा लिया है और मैं सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ।। ३ ।। अनेकों पाखंड करते हुए हम भटकते रहे क्योंकि लोभ और पाखंड तो सारे संसार में बुरे से बुरे हैं। इनके कारण यह लोक और परलोक दुखदायक हो जाता है तथा मौत रूपी यम सिर पर खड़ा होकर मारता है।। ४ ।। जीव दिन निकलते ही घर के धन्धों में जुट जाते हैं परन्तु यह सब माया के प्रसार का विष ही सिद्ध होते हैं। रात आती है और जीव स्वप्न में भी माया और दुखों को ही सम्भाले रहता है।। ५ ।। चूने वाली मिट्टी के खेत में जब झूठ को बोया जाएगा तो उसकी खलिहान भी झूठी ही बनेगी। प्रभु से बिछुड़े लोग सभी भूखे बने रहते हैं और निर्दयी यम के दरवाजे पर खड़े रहते हैं।। ६ ।। मनमुख व्यक्ति पर विषय विकारों के विष का भारी कर्ज़ा चढ़ा रहता है जो शब्द के चिन्तन से ही उतरता है। शब्द चिन्तन के कारण कितना भी कर्ज़ और कर्ज़ माँगने वाले यमदूत आदि थे उन्हें प्रभु ने अब सेवक बनाकर चरणों में डाल दिया है।। ७ ।। प्रभु ने ही सब जीवों को उत्पन्न किया है और इनकी नाक मे नकेल डालकर सब को अपने अधीन किया है। हे नानक, प्रभु अब जिधर खींचता है और उस प्यारे प्रभु को जैसी आशा होती है हमें उधर ही चलना पड़ता है।। ८ ।। २ ।। नट महला ४ ।। प्रभु ने हमें अमृत के सरोवर में स्नान कराया है। सच्चे गुरु के ज्ञान का स्नान अत्यन्त उत्तम है क्योंकि सच्चे गुरु से मिलकर सभी पाप उतर जाते हैं।। १ ।। रहाउ ।। संगति का गुण बहुत अधिक है क्योंकि गणिका के साथ रहता हुआ तोता राम-राम पढ़कर पार उतर गया। जब कृष्ण ने अस्पर्श्य दासी कुब्जा को स्पर्श कर दिया तो वे उसे अपने साथ बैकुण्ठ धाम ही ले गए।। १ ।। अंतिम समय में जब अजामिल ने अपने पुत्र को नारायण-नारायण कहकर पुकार लगाई तो मेरे प्रभु के मन को ऐसी भा गयी कि उसने यमदूत को मारकर भगा दिया।। २ ।। लोग कथन तो करते हैं और बोल बोलकर लोगों को सुनाते भी हैं परन्तु जो भी बोलते हैं उस पर विचार नहीं करते। जब सत्संगति प्राप्त होती है तो व्यक्ति का निश्चय दृढ़ हो जाता है और प्रभु नाम के फलस्वरूप उसका पार उतारा हो जाता है।। ३ ।। जीव का जब तक यह शरीर स्वस्थ बना रहता है तब तक यह किसी को भी याद नहीं करता परन्तु जब इस घर रूपी मकान को आग लग जाती है तब यह जीव कुँआ खोदता है और उसमें से पानी निकाल कर आग बुझाने का प्रयत्न करता है।। ४ ।। हे मन, प्रभु से टूटे हुए उन लोगों से कभी भी मेल मिलाप मत करो जिन्होंने प्रभु नाम को भुला दिया है। ऐसे शाक्त लोगों की बातें बिच्छू की तरह डसती हैं इसलिये प्रभु से टूटे ऐसे लोगों को दूर ही रखना चाहिए

॥ ५ ॥ लगि लगि प्रीति बहु प्रीति लगाई लगि साधू संगि सवारे ॥ गुर के बचन सति सति करि माने मेरे ठाकुर बहुतु पिआरे ॥ ६ ॥ पूरबि जनमि परचून कमाए हरि हरि हरि नामि पिआरे ॥ गुर प्रसादि अंम्रित रसु पाइआ रसु गावै रसु वीचारे ॥ ७ ॥ हरि हरि रूप रंग सभि तेरे मेरे लालन लाल गुलारे ॥ जैसा रंगु देहि सो होवै किआ नानक जंत विचारे ॥ ८ ॥ ३ ॥ नट महला ४ ॥ राम गुर सरनि प्रभू रखवारे ॥ जिउ कुंचरु तदूऐ पकरि चलाइओ करि ऊपरु कढि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि धारे ॥ मेरे प्रभि सरधा भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥ १ ॥ हरि हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रहम पसारे ॥ एकु पुरखु इकु नदरी आवै सभ एका नदरि निहारे ॥ २ ॥ हरि प्रभु ठाकुरु रविआ सभ ठाई सभु चेरी जगतु समारे ॥ आपि दइआलु दइआ दानु देवै विचि पाथर कीरे कारे ॥ ३ ॥ अंतरि वासु बहुतु मुसकाई भ्रमि भूला मिरगु सिंङ्हारे ॥ बनु बनु ढूढि ढूढि फिरि थाकी गुरि पूरै घरि निसतारे ॥ ४ ॥ बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥ गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ ५ ॥ सभु है ब्रहमु ब्रहमु है पसरिआ मनि बीजिआ खावारे ॥ जिउ जन चंद्रहांसु दुखिआ ध्रिसटबुधीं अपुना घरु लूकी जारे ॥ ६ ॥ प्रभ कउ जनु अंतरि रिद लोचै प्रभ जन के सास निहारे ॥ क्रिपा क्रिपा करि भगति द्रिड़ाए जन पीछै जगु निसतारे ॥ ७ ॥ आपन आपि आपि प्रभु ठाकुरु प्रभु आपे स्रिसटि सवारे ॥ जन नानक आपे आपि सभु वरतै करि क्रिपा आपि निसतारे ॥ ८ ॥ ४ ॥ नट महला ४ ॥ राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ जिउ पकरि द्रोपती दुसटां आनी हरि हरि लाज निवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा जाचिक जन तेरे इकु मागउ दानु पिआरे ॥ सतिगुर की नित सरधा लागी मोकउ हरि गुरु मेलि सवारे ॥ १ ॥ साकत करम पाणी जिउ मथीऐ नित पाणी झोल झुलारे ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ कढि माखन के गटकारे ॥ २ ॥ नित नित काइआ मजनु कीआ नित मलि मलि

।। ५ ।। व्यक्ति ने बहुत प्रकार से साँसारिक धन्धों में प्रीति बनाई है परन्तु साधु पुरुषों के साथ लगे रहने से ही उनका जीवन सँवरता है। जो गुरु के वचनों को सत्य रूप में मानता है वही मेरे प्रभु का बहुत प्यारा व्यक्ति होता है।। ६ ।। पहले जन्म में प्रभु के प्यारे नाम की थोड़ी बहुत कमाई की थी उसी के कारण अब मैंने गुरु कृपा से अमृत रस पा लिया है। उस रस का ही मैं गायन करता हूँ और उस रस का ही चिन्तन करता हूँ।। ७ ।। हे प्रभु, ये रूप रंग सब तेरे ही हैं और हे मेरे सुन्दर लाल यह प्रेम का गाढ़ा लाल रंग तेरा ही है। तू जैसा रंग देता है वैसा ही वह बन जाता है अन्यथा हे नानक, यह जीव भला तुम्हारे सामने क्या है।। ८ ।। ३ ।। नट महला ४ ।। प्रभु गुरु की शरण में आने पर प्रभु रखवाला बन जाता है। यह ऐसे ही होता है जैसे हाथी को घड़ियाल ने पकड़ लिया था परन्तु प्रभु ने हाथ देकर उसे बचा लिया।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के सेवक बहुत ही उत्तम हैं क्योंकि मन में श्रद्धा भाव से वह प्रभु को धारण किये रहते हैं। मेरे प्रभु के मन में श्रद्धा भक्ति अच्छी लगती है और वह अपने सेवक की लाज को बचाता रहता है।। १ ।। प्रभु का सेवक सेवा में लगा रहता है और सब तरफ उस परमात्मा के विस्तार को ही देखता है। उसे वह एक सर्वव्यापक प्रभु ही नजर आता है और वह सबको एक समान दृष्टि से देखता है।। २ ।। वह प्रभु सब स्थानों में व्याप्त है और इस संसार को अपना सेवक मानता हुआ इसकी सम्भाल करता है। वह दयालु बनकर पत्थरों में बैठे हुए छोटे-छोटे कीड़ों को भी दान देता रहता है।। ३ ।। कस्तूरी हिरण के अन्दर ही है जो उसे सुगन्धित करती रहती है परन्तु वह उसकी खोज में भटकता हुआ इधर-उधर सींग मारता रहता है। मैं वनों में खोज-खोज कर थक गई हूँ परन्तु पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय रूपी घर में ही मेरा पार उतारा कर दिया है।। ४ ।। वाणी (शब्द) गुरु है और गुरु ही वाणी है (शब्द है)। इस शब्द रूपी वाणी में ही अमृत फैला हुआ है। गुरु इस शब्द रूपी वाणी का उच्चारण करता है जिसे सच्चा सेवक स्वीकार करता है और ऐसे सेवक का ही गुरु प्रत्यक्ष रूप में उद्धार कर देता है।। ५ ।। सब कुछ ब्रह्म है, ब्रह्म का ही प्रसार है तथा यह मन अपना बोया हुआ ही काटता और खाता है। धृष्ट बुद्धि नामक व्यक्ति द्वारा चन्द्रहांस को मरवाने की इच्छा रखने पर धृष्ट बुद्धि का पुत्र मदन सिंह गलती से ही मार डाला गया और चन्द्रहास को राज्य प्राप्त हो गया। इस प्रकार धृष्ट बुद्धि बने लोग अपने घर को ही आग लगा कर जलाते रहते हैं।। ६ ।। प्रभु का सेवक तो हृदय में प्रभ की कामना करता रहता है और वह प्रभु अपने सेवक के प्रत्येक श्वास को देखता रहता है। वह कृपा करके अपनी भक्ति को सेवकों के मन में पक्का करता रहता है और सेवकों के कारण ही संसार का पार उतारा हो जाता है।। ७ ।। वह प्रभु अपने आप में स्वयं ही स्वामी है और स्वयं ही सारी सृष्टि को सँवारता बनाता रहता है। हे दास नानक, वह स्वयं ही सब ओर कार्यशील है और स्वयं ही कृपा करके सबको पार उतारता है।। ८ ।। ४ ।। नट महला ४ ।। हे प्रभु, कृपा करके हमारा उसी प्रकार उद्धार कर लो जैसे दुष्टों ने द्रौपदी को पकड़ मँगाया था और प्रभु ने उसके नग्न होने की लज्जा से उसे बचा लिया था।। १ ।। रहाउ ।। हे प्रभु, अपने याचक सेवक पर कृपा करो। मैं तुमसे एक ही दान माँगता हूँ। सच्चे गुरु का प्रेम मेरे मन में लग गया है मुझे प्रभु गुरु से मिला कर मेरा जीवन सँवार दो।। १ ।। प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति अपने कर्मों के पानी का मंथन करता रहता है परन्तु उसमें से सदैव पानी ही निकलता है मक्खन आदि नहीं। सत्संगति से मिलकर हमने परम पद पा लिया है और सत्संगति के फल प्रभु नाम रूपी मक्खन को पूरे स्वाद सहित खाया है।। २ ।। सदैव मैं शरीर का स्नान करता रहा

देह सवारे ॥ मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए सभ फोकट चार सीगारे ॥ ३ ॥ मटकि मटकि चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै सतिगुर अलखु लखारे ॥ ४ ॥ नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभु एको पुरखु मुरारे ॥ संत जना की रेनु मनि भाई मिलि हरि जन हरि निसतारे ॥ ५ ॥ ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ सरधा सरधा उपाइ मिलाए मोकउ हरि गुर गुरि निसतारे ॥ ६ ॥ पवन सूतु सभु नीका करिआ सतिगुरि सबदु वीचारे ॥ निज घरि जाइ अंम्रित रसु पीआ बिनु नैना जगतु निहारे ॥ ७ ॥ तउ गुन ईस बरनि नही साकउ तुम मंदर हम निक कीरे ॥ नानक क्रिपा करहु गुर मेलहु मै रामु जपत मनु धीरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ नट महला ४ ॥ मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ हम पापी बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू पुरख साध जन पाए इक बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना भूख निवारे ॥ १ ॥ पचै पतंगु म्रिग भ्रिंग कुंचर मीन इक इंद्री पकरि सघारे ॥ पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे ॥ २ ॥ सासत्र बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ राम नामु पड़हु गति पावहु सतसंगति गुरि निसतारे ॥ ३ ॥ प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥ मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥ ४ ॥ साकत कउ अंम्रित बहु सिंचहु सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कढै बिखु खारे ॥ ५ ॥ संतन संत साध मिलि रहीऐ गुण बोलहि परउपकारे ॥ संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ जल मिलि कमल सवारे ॥ ६ ॥ लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे ॥ मेरे ठाकुर कै दीबानि खबरि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥ ७ ॥ राखु राखु राखु प्रभ मेरे मै राखहु किरपा धारे ॥ नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निसतारे ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

और सदैव मैं मल-मल कर इस देही को सँवारता रहा हूँ ; यदि मेरे सच्चे गुरु के मन को मेरी बातें अच्छी नहीं लगी तो मेरे सारे सुन्दर श्रृंगार व्यर्थ ही हो गए हैं।। ३ ।। हे मेरी सखी सहेली, तू मेरे प्रभु के गुणों को मन में सम्भालती हुई मटक मटक कर मौज से इस जीवन मार्ग पर चलती रह। गुरमुख बनी हुई की यह सेवा मेरे प्रभु के मन को भा गई है और मेरे सच्चे गुरु ने उस अलख प्रभु को मुझे दिखा दिया है।। ४ ।। यहाँ सभी जीव रूपी नारियों का पुरुष वह प्रभु है और संसार के सभी जीव उस पुरुष की स्त्रियाँ हैं। सन्त पुरुषों की चरण धूलि मेरे मन को भा गई है और प्रभु के सेवकों से मिलने पर प्रभु ने मेरा उद्धार कर दिया है।। ५ ।। मैंने गाँव-गाँव और सभी शहरों में उस प्रभु को ढूँढा परन्तु वह प्रभु उस के सेवकों ने मुझे हृदय में ही दिखा दिया। मेरे हृदय में श्रद्धा उत्पन्न करके मुझे प्रभु के सेवकों ने मिला दिया है और प्रभु-गुरु ने मेरा उद्धार कर दिया है।। ६ ।। मेरे प्राणों का सूत (आधार) प्रभु ने अच्छा बना दिया है और यह सब सच्चे गुरु के माध्यम से शब्द के चिंतन के कारण हुआ है। मैंने अपने हृदय रूपी घर में स्थित होकर अमृतरस का पान कर लिया है और इन साँसारिक आँखों के बिना ज्ञान चक्षुओं के माध्यम से इस संसार की वास्तविकता को देख लिया है।। ७ ।। हे प्रभु, तुम्हारे गुणों का वर्णन हम नहीं कर सकते क्योंकि तुम एक विशाल महल हो और हम उसमें एक छोटे से कीड़े के समान हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु, कृपा करके मुझे गुरु से मिला दो क्योंकि प्रभु नाम के सुमिरन से ही मेरे मन को धैर्य मिलता है।। ८ ।। ५ ।। नट महला ४ ।। हे मेरे मन, उस अगम्य, अपार प्रभु का भजन कर। हम पापी और गुण विहीन हैं; गुरु ने कृपा करके हमें पार उतार लिया है।। १ ।। रहाउ ।। उस साधु पुरुष प्रभु को साधु जनों ने पा लिया है और हे मेरे प्यारे गुरु, मैं तेरे सामने विनती करता हूँ। तुम मुझे प्रभु नाम के धन की पूँजी दे दो जो सभी तृष्णाओं और भूख का निवारण करने वाली है।। १ ।। पतंगा, मृग, भँवरा, हाथी और मछली केवल एक इन्द्रिय के स्वाद में ही पकड़ा कर मार डाले जाते हैं परन्तु इस मानव शरीर में तो बलशाली पाँच भूत अर्थात पाँच विकार बसते हैं। इसके पापों का निवारण तो सच्चा गुरु ही कर सकता है।। २ ।। नारद मुनि यह पुकार पुकार कर कह रहा है कि मैंने शास्त्र और वेद खोज-खोज कर पढ़ लिए हैं और सबका सारांश यही है कि प्रभु के नाम का सुमिरन और गहन अध्ययन करने से ही गति प्राप्त होती है और गुरु सत्संगति के माध्यम से ही जीव पार उतारता है।। ३ ।। मेरे प्रियतम प्रभु से मेरी ऐसी प्रीति लगी है जैसे कमल सूर्य की ओर देखता ही रहता है। जब घने बादल नीचे की ओर बरसने के लिये झुक जाते हैं तो पर्वतों पर मोर खुशी से नाच उठते हैं।। ४ ।। प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति पर अमृत छिड़कने का भी यही प्रभाव होता है कि मानो किसी वृक्ष की डालियों फलों को विष पूर्ण बना दिया गया हो। पापी व्यक्ति के साथ भले व्यक्ति जैसे-जैसे नम्रता का व्यवहार करते हैं वह और अधिक कटाक्ष करता हुआ अपने अन्दर से विष रूपी कड़वे वचन निकालता रहता है।। ५ ।। सन्तों के सन्त उस साधु प्रभु पुरुष के साथ मिल बैठना चाहिए क्योंकि वह परोपकारी बोल बोलता है। शान्त पुरुष को जब कोई शान्त पुरुष मिलता है तो मन उसी प्रकार खिल उठता है जैसे जल से मिलकर कमल सुन्दर रूप धारण कर लेता है।। ६ ।। लोभ लहर कुत्ते के पागलपन के समान है जो काटकर सबको पागल और बीमार कर देता है। मेरे प्रभु के दरबार में जब ऐसी खबर पहुँचती है तो गुरु ज्ञान के खडग से ऐसे पागलो को मार डालता है।। ७ ।। हे प्रभु, मेरी रक्षा करो और कृपा धारण करके मुझे बचा लो। हे नानक, मुझे अन्य कोई आसरा नहीं है और मुझे सच्चा गुरु प्रभु ही पार उतारने वाला है।। ८ ।। ६ ।। छः शब्दों को जोड़ १ ।।

राग़ु माली गउड़ा महला ४

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

अनिक जतन करि रहे हरि अंतु नाही पाइआ ॥ हरि अगम अगम अगाधि बोधि आदेसु हरि प्रभ राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु नित झगरते झगराइआ ॥ हम राखु राखु दीन तेरे हरि सरनि हरि प्रभ आइआ ॥ १ ॥ सरणागती प्रभ पालते हरि भगति वछलु नाइआ ॥ प्रहिलादु जनु हरनाखि पकरिआ हरि राखि लीओ तराइआ ॥ २ ॥ हरि चेति रे मन महलु पावण सभ दूख भंजनु राइआ ॥ भउ जनम मरन निवारि ठाकुर हरि गुरमती प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ हरि पतित पावन नामु सुआमी भउ भगत भंजनु गाइआ ॥ हरि हारु हरि उरि धारिओ जन नानक नामि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नामु सुखदाता ॥ सतसंगति मिलि हरि सादु आइआ गुरमुखि ब्रहमु पछाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ गुरि मिलिऐ हरि प्रभु जाता ॥ दुरमति मैलु गई सभ नीकरि हरि अंम्रिति हरि सरि नाता ॥ १ ॥ धनु धनु साध जिन्ही हरि प्रभु पाइआ तिन्ह पूछउ हरि की बाता ॥ पाइ लगउ नित करउ जुदरीआ हरि मेलहु करमि बिधाता ॥ २ ॥ लिलाट लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु तनु राता ॥ हरि प्रभ आइ मिले सुखु पाइआ सभ किलविख पाप गवाता ॥ ३ ॥ राम रसाइणु जिन्ह गुरमति पाइआ तिन्ह की ऊतम बाता ॥ तिन की पंक पाईऐ वडभागी जन नानकु चरनि पराता ॥ ४ ॥ २ ॥

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

रागु माली गउड़ा महला ४

हम अनेकों यत्न करके थक गए हैं परन्तु प्रभु के रहस्य को नहीं पाया जा सका। वह प्रभु अगम्य एवं अगाध ज्ञान स्वरूप है; उस राजा प्रभु को नमस्कार है।। १ ।। रहाउ ।। काम, क्रोध, लोभ, मोह के झगड़े में पड़े जीव सदैव झगड़ते रहते हैं। हे प्रभु, हम तेरे दीन हैं। हमारी रक्षा करो क्योंकि हे हरि प्रभु, हम तुम्हारी शरण में आ गए हैं। तुम शरण आए हुए की पालना करते हो और हे प्रभु, तुम्हारा नाम भक्तवत्सल है। तेरे सेवक प्रहलाद को हिरण्यकश्यप ने मारने के लिये पकड़ लिया था परन्तु हे हरि तुमने उसे बचाकर संसार सागर से पार उतार दिया।। २ ।। उस प्रभु का स्थान पाने के लिये हे मेरे मन, उस प्रभु का सुमिरन कर क्योंकि सभी दुखों को नष्ट करने वाला वही सम्राट है। वह प्रभु जन्म-मरण के भय का निवारण करने वाला है और उसे गुरमति के माध्यम से ही पाया जाता है।। ३ ।। प्रभु का नाम पतित पावन है और भक्तों ने भय को नष्ट करने के लिए उसका गायन किया है। प्रभु रूपी हार को हृदय में धारण करके दास नानक उसके नाम में ही लीन हो गया है।। ४ ।। १ ।। माली गउड़ा महला ४ ।। हे मन, सुखदाता राम नाम का जाप कर। सत्संगति से मिलकर प्रभु का स्वाद आता है और गुरमुख बनकर ही ब्रह्म को पहचाना जाता है।। १ ।। रहाउ ।। बड़े भाग्य से गुरु का दर्शन प्राप्त होता है और गुरु के मिलाप से ही हरि प्रभु को जाना जाता है। दुर्मति की मैल अब निकल गई है और हमने प्रभु के अमृत सरोवर में स्नान कर लिया है।। १ ।। वे साधु धन्य हैं जिन्होंने हरि प्रभु को पा लिया है और उन्हीं से ही मैं अब प्रभु की बातें पूछता हूँ । मैं उनके पाँव पड़ता हूँ और सदा उनसे विनती करता हूँ कि मुझे कर्म विधाता प्रभु से मिला दो।। २ ।। भाग्य लेख के अनुसार मैंने साधु गुरु को पा लिया है और गुरु के उपदेश में मेरा मन तन लीन हो गया है। वह प्रभु मुझे जब मिल गया तो मैंने सुख प्राप्त कर लिया और सभी दोषों और पापों को दूर कर दिया है।। ३ ।। गुरमति के अनुरूप चलने पर जिन्होंने राम रसायन पा लिया है उनकी बातें सर्वश्रेष्ठ हैं। उनकी चरण धूलि बड़े भाग्य से पायी जाती है और दास नानक तो उनके चरणों में ही पड़ा है।। ४ ।। २ ।।

माली गउड़ा महला ४ ॥ सभि सिध साधिक मुनि जना मनि भावनी हरि धिआइओ ॥ अपरंपरो पारब्रहमु सुआमी हरि अलखु गुरू लखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम नीच मधिम करम कीए नही चेतिओ हरि राइओ ॥ हरि आनि मेलिओ सतिगुरू खिनु बंध मुकति कराइओ ॥ १ ॥ प्रभि मसतके धुरि लीखिआ गुरमती हरि लिव लाइओ ॥ पंच सबद दरगह बाजिआ हरि मिलिओ मंगलु गाइओ ॥ २ ॥ पतित पावनु नामु नरहरि मंदभागीआं नही भाइओ ॥ ते गरभ जोनी गालीअहि जिउ लोनु जलहि गलाइओ ॥ ३ ॥ मति देहि हरि प्रभ अगम ठाकुर गुर चरन मनु मै लाइओ ॥ हरि राम नामै रहउ लागो जन नानक नामि समाइओ ॥ ४ ॥ ३ ॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि रसि लागा ॥ कमल प्रगासु भइआ गुरु पाइआ हरि जपिओ भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइओ गुरमति जागा ॥ किलबिख खीन भए सांति आई हरि उर धारिओ वडभागा ॥ १ ॥ मनमुखु रंगु कसुंभु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा ॥ खिन महि बिनसि जाइ परतापै डंडु धरम राइ का लागा ॥ २ ॥ सतसंगति प्रीति साध अति गूड़ी जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ॥ काइआ कापरु चीर बहु फारे हरि रंगु न लहै सभागा ॥ ३ ॥ हरि चार्हिओ रंगु मिलै गुरु सोभा हरि रंगि चलूलै रांगा ॥ जन नानकु तिन के चरन पखारै जो हरि चरनी जनु लागा ॥ ४ ॥ ४ ॥ माली गउड़ा महला ४ ॥ मेरे मन भजु हरि हरि नामु गुपाला ॥ मेरा मनु तनु लीनु भइआ राम नामै मति गुरमति राम रसाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति नामु धिआईऐ हरि हरि मनि जपीऐ हरि जपमाला ॥ जिन्ह कै मसतकि लीखिआ हरि मिलिआ हरि बनमाला ॥ १ ॥ जिन्ह हरि नामु धिआइआ तिन्ह चूके सरब जंजाला ॥ तिन्ह जमु नेड़ि न आवई गुरि राखे हरि रखवाला ॥ २ ॥ हम बारिक किछू न जाणहू हरि मात पिता प्रतिपाला ॥ करु माइआ अगनि नित मेलते गुरि राखे दीन दइआला ॥ ३ ॥ बहु मैले निरमल होइआ सभ किलबिख हरि जसि जाला ॥ मनि अनदु भइआ गुरु पाइआ जन नानक सबदि निहाला ॥ ४ ॥ ५ ॥ माली गउड़ा महला ४ ॥

माली गउड़ा महला ४ ।। सिद्ध, साधक और मुनिजनों ने मन की श्रद्धा के साथ प्रभु का सुमिरन किया। वह स्वामी परब्रह्म अपरम्पर एवं अदृष्ट है जिसे गुरु ने मुझे दिखा दिया है।। १ ।। रहाउ ।। हम नीचों ने बुरे कर्म किए हैं तथा उस प्रभु का सुमिरन नहीं किया है। प्रभु ने हमे सच्चे गुरु से मिला दिया है जिसने क्षण भर में ही हमें बन्धन मुक्त करा दिया है।। १ ।। प्रभु ने प्रारम्भ से ही मस्तक पर लिख दिया था और गुरु के उपदेश के माध्यम से हमने प्रभु में लौ लगा ली है। पाँच प्रकार के शब्द उसके दरबार में बजते हैं और प्रभु से मिलाप होने पर हमने खुशी के गीत गाए हैं।। २ ।। प्रभु का नाम पतितों को पावन करने वाला है लेकिन भाग्यहीनों को यह अच्छा नहीं लगता। वे गर्भ योनि में इसी प्रकार गलते रहते हैं जैसे नमक पानी में गल जाता है।। ३ ।। हे अगम्य ठाकुर प्रभु, हमें बुद्धि प्रदान कर ताकि हम गुरु के चरणों में मन को लगाए रखें। मैं प्रभु नाम में लगा रहूँ और दास नानक नाम में ही समाया रहे।। ४ ।। ३ ।। माली गउड़ा महला ४ ।। मेरा मन जब राम नाम के रस में लीन हो गया है तो मेरा हृदय कमल खिल उठा है; मैंने गुरु को पा लिया है तथा प्रभु के जाप के फलस्वरूप मेरा भ्रम और भय भाग खड़ा हुआ है।। १ ।। रहाउ ।। मेरा हृदय प्रभु के भय और प्रेम भक्ति में लग गया है जिससे गुरु की मति में चलते हुए सोया मन जग गया है। मेरे पाप छिन्न हो गये हैं, मुझे शान्ति प्राप्त हो गई है और बड़े भाग्य से मैंने प्रभु को हृदय में धारण कर लिया है।। १ ।। मनमुख कुसुम्भ के फूल के रंग जैसा कच्चा है और वह चार दिन तक ही खिले रहने वाले फूल की तरह अस्थायी बना रहता है। वह क्षण भर में विनष्ट होकर दुखी बना रहता है और धर्मराज का दण्ड उसे भोगना पड़ता है।। २ ।। साधु पुरुषों की संतुसंगति की प्रीति उसी प्रकार गाढ़ी होती है जैसे मजीठ का रंग पक्की तरह लग जाता है। शरीर रूपी कपड़ा जिसे प्रभु नाम का मजीठ रंग चढ़ा होता है वह टुकड़े-टुकड़े हो जाने पर भी अपना रंग नहीं छोड़ता अर्थात दुखित अवस्था में होने पर भी वह खिला रहता है।। ३ ।। गुरु की महिमा का यह रंग प्रभु ने चढ़ा दिया है और जीव को प्रेम के गाढ़े रंग में रंग दिया है। दास नानक तो उन सेवकों के चरण धोता है जो प्रभु के चरणों में लगे हुए हैं।। ४ ।। ४ ।। माली गउड़ा महला ४ ।। हे मेरे मन, धरती के स्वामी उस प्रभु के नाम का सुमिरन कर। मेरा मन तन प्रभु नाम में लीन हो गया है और गुरु की मति के माध्यम से मुझे वह प्रभु रस पूर्ण लग रहा है।। १ ।। रहाउ।। गुरु मति में चलते हुए प्रभु नाम का सुमिरन किया जाना चाहिए और मन की माला से उस प्रभु का जाप करते रहना चाहिए। जिनके मस्तक पर लिखा हुआ है वह बनवारी प्रभु उन्हें मिला हुआ है।। १ ।। जिन्होंने प्रभु नाम का सुमिरन किया है उनके सभी झंझट समाप्त हो गए हैं। यम तो उनके पास भी नहीं आता और गुरु के माध्यम से प्रभु उनका रक्षक बन गया है।। २ ।। हम बालक तो उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं; वह प्रभु ही हमारा माता पिता और प्रतिपालक है। माया रूपी अग्नि में मन रूपी हाथ हम डालते रहते थे परन्तु दीनदयालु गुरु ने हमारी रक्षा की।। ३ ।। हम बहुत मैले थे परन्तु अब निर्मल हो गए हैं और हमारे सभी पाप प्रभु यश के कारण जल गए हैं। गुरु के प्राप्त होने से मन आनन्दित हो उठा है और दास नानक शब्द के माध्यम से पूर्ण प्रसन्न बना है।।४ ।।५ ।।माली गउड़ा महला ४।।

मेरे मन हरि भजु सभ किलबिख काट ॥ हरि हरि उर धारिओ गुरि पूरै मेरा सीसु कीजै गुर वाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रभ की मै बात सुनावै तिसु मनु देवउ कटि काट ॥ हरि साजनु मेलिओ गुरि पूरै गुर बचनि बिकानो हटि हाट ॥ १ ॥ मकर प्रागि दानु बहु कीआ सरीरु दीओ अध काटि ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न पावै बहु कंचनु दीजै कटि काट ॥ २ ॥ हरि कीरति गुरमति जसु गाइओ मनि उघरे कपट कपाट ॥ त्रिकुटी फोरि भरमु भउ भागा लज भानी मटुकी माट ॥ ३ ॥ कलजुगि गुरु पूरा तिन पाइआ जिन धुरि मसतकि लिखे लिलाट ॥ जन नानक रसु अंम्रितु पीआ सभ लाथी भूख तिखाट ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

माली गउड़ा महला ५   १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

रे मन टहल हरि सुख सार ॥ अवर टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिना मसतकि लीखिआ ते मिले संगार ॥ संसारु भउजलु तारिआ हरि संत पुरख अपार ॥ १ ॥ नित चरन सेवहु साध के तजि लोभ मोह बिकार ॥ सभ तजहु दूजी आसड़ी रखु आस इक निरंकार ॥ २ ॥ इकि भरमि भूले साकता बिनु गुर अंध अंधार ॥ धुरि होवना सु होइआ को न मेटणहार ॥ ३ ॥ अगम रूपु गोबिंद का अनिक नाम अपार ॥ धनु धंनु ते जन नानका जिन हरि नामा उरि धारे ॥ ४ ॥ १ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ राम नाम कउ नमसकार ॥ जासु जपत होवत उधार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि मिटहि धंध ॥ जा कै सिमरनि छूटहि बंध ॥ जा कै सिमरनि मूरख चतुर ॥ जा कै सिमरनि कुलह उधर ॥ १ ॥ जा कै सिमरनि भउ दुख हरै ॥ जा कै सिमरनि अपदा टरै ॥ जा कै सिमरनि मुचत पाप ॥ जा कै सिमरनि नही संताप ॥ २ ॥ जा कै सिमरनि रिद बिगास ॥ जा कै सिमरनि कवला दासि ॥ जा कै सिमरनि निधि निधान ॥ जा कै सिमरनि तरे निदान ॥ ३ ॥ पतित पावनु नामु हरी ॥ कोटि भगत उधारु करी ॥ हरि दास दासा दीनु सरन ॥ नानक माथा संत चरन ॥ ४ ॥ २ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ ऐसो सहाई हरि को नाम ॥ साधसंगति भजु पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूडत कउ जैसे बेड़ी

हे मेरे मन, प्रभु का सुमिरन कर और वह सुमिरन ही सब पापों को काटने वाला है। पूर्ण गुरु ने उस प्रभु को मेरे हृदय में धारण करा दिया और ऐसे पूर्ण गुरु के मार्ग पर मेरा सिर टिका रहे।। १ ।। रहाउ ।। जो मेरे प्रभु की बात सुनाए उसे मैं अपना मन काट कर अर्पण कर दूँ। पूर्ण गुरु ने उस पूर्णसज्जन से मिला दिया और गुरु के उपदेश के लिए तो मैं हर दुकान पर बिका हूँ अर्थात गुरु का गुलाम हूँ।। १ ।। मकर राशि में प्रयाग राज पर जाकर बहुत दान किया और शरीर को भी अधबीच से कटवा दिया परन्तु प्रभु नाम के बिना कोई मुक्ति नही पा सकता बेशक इतना ही सोना काट-काटकर दे दिया जाए।। २ ।। प्रभु की कीर्ति करते हुए गुरु की मति के माध्यम से प्रभु यश का गायन किया तो हमारे मन के कपटी द्वार खुल गए हैं। तीनों गुणों का भ्रम तोड़कर मेरा भ्रम और भय भाग गए हैं और लोक लाज की कच्ची मटकी अब फूट गई है।। ३ ।। कलियुग मे उसी ने पूर्ण गुरु प्राप्त किया है जिसके मस्तक पर प्रारम्भ से ही लेख लिखा हुआ था। दास नानक ने तो अमृत रस का पान किया है इससे इसकी सारी भूख और प्यास समाप्त हो गई है।। ४ ।। ६ ।। छका १ ।।

माली गउड़ा महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरे मन, प्रभु की सेवा में ही वास्तविक सुख विद्यमान है। अन्य सभी सेवा झूठी हैं जिनमें सदैव यम सिर पर मारता रहता है।। १ ।। रहाउ ।। जिनके मस्तक पर लिखा है वे ही सत्संगति में मिलते हैं। उस अपरम्पर प्रभु सन्त ने भयानक संसार सागर से उन्हें पार उतार लिया है।। १ ।। लोभ, मोह और विकारों को त्याग कर सदैव साधु पुरुषों के चरणों की सेवा करते रहो। एक निराकार प्रभु पर ही आशा बनाए रखो और दूसरी सभी आशाओं को त्याग दो।। २ ।। प्रभु से टूटे लोग भ्रमों में पड़े भटकते रहते हैं क्योंकि गुरु के बिना तो अंधेरा ही अंधेरा है। जो प्रभु की ओर से ही लिखा है वहीं होता है और उसे कोई भी मिटा नहीं सकता।। ३ ।। उस प्रभु का रूप अगम्य है और उसका अनेक प्रकार का नाम अपरम्पार है। हे दास नानक, वे लोग धन्य हैं जिन्होंने प्रभु-नाम को हृदय में धारण कर रखा है।। ४ ।। १ ।। माली गउड़ा महला ५ ।। उस प्रभु-नाम को नमस्कार है जिसके सुमिरन से उद्धार हो जाता है।। १ ।। रहाउ ।। जिसके सुमिरन से झंझट मिट जाते हैं; जिसके सुमिरन से बन्धन छूट जाते हैं; जिसके सुमिरन से मूर्ख भी चतुर हो जाता है; जिसके सुमिरन से पूरे कुल का उद्धार हो जाता है।। १ ।। जिसके सुमिरन से भय और दुख दूर हो जाते है; जिसके सुमिरन से विपत्ति टल जाती है; जिसके सुमिरन से पाप नष्ट हो जाते हैं; जिसके सुमिरन से आन्तरिक दुख समाप्त हो जाते हैं।। २ ।। जिसके सुमिरन से हृदय खिल उठता है; जिसके सुमिरन से लक्ष्मी दासी बन जाती है; जिसके सुमिरन से सभी भण्डार और खज़ाने मिल जाते हैं; जिसके सुमिरन से अंततः जीव पार उतर जाते हैं।। ३ ।। प्रभु का वह नाम पतितपावन है और करोड़ों भक्तों का वह उद्धार करने वाला है। मैं दीन उस प्रभु के दासों की शरण में आया हूँ और हे नानक, मेरा माथा सन्तों के चरणों पर टिका हुआ है।। ४ ।। २ ।। माली गउड़ा महला ५ ।। प्रभु का नाम ऐसा सहायक है कि यदि साधसंगत में उसका सुमिरन किया जाए तो सभी कामनाएँ पूरी हो जाती है। ।। १ ।। रहाउ ।। डूबते हुए को जैसे नाव मिल

मिलत ॥ बूझत दीपक मिलत तिलत ॥ जलत अगनी मिलत नीर ॥ जैसे बारिक मुखहि खीर ॥ १ ॥ जैसे रण महि सखा भ्रात ॥ जैसे भूखे भोजन मात ॥ जैसे किरखहि बरस मेघ ॥ जैसे पालन सरनि सेंघ ॥ २ ॥ गरुड़ मुखि नही सरप त्रास ॥ सूआ पिंजरि नही खाइ बिलासु ॥ जैसो आंडो हिरदे माहि ॥ जैसो दानो चकी दराहि ॥ ३ ॥ बहुतु ओपमा थोर कही ॥ हरि अगम अगम अगाधि तुही ॥ ऊच मूचौ बहु अपार ॥ सिमरत नानक तरे सार ॥ ४ ॥ ३ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ इही हमारै सफल काज ॥ अपुने दास कउ लेहु निवाजि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन संतह माथ मोर ॥ नैनि दरसु पेखउ निसि भोर ॥ हसत हमरे संत टहल ॥ प्रान मनु धनु संत बहल ॥ १ ॥ संतसंगि मेरे मन की प्रीति ॥ संत गुन बसहि मेरै चीति ॥ संत आगिआ मनहि मीठ ॥ मेरा कमलु बिगसै संत डीठ ॥ २ ॥ संतसंगि मेरा होइ निवासु ॥ संतन की मोहि बहुतु पिआस ॥ संत बचन मेरे मनहि मंत ॥ संत प्रसादि मेरे बिखै हंत ॥ ३ ॥ मुकति जुगति एहा निधान ॥ प्रभ दइआल मोहि देवहु दान ॥ नानक कउ प्रभ दइआ धारि ॥ चरन संतन के मेरे रिदे मझारि ॥ ४ ॥ ४ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ सभ कै संगी नाही दूरि ॥ करन करावन हाजरा हजूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनत जीओ जासु नामु ॥ दुख बिनसे सुख कीओ बिस्रामु ॥ सगल निधि हरि हरि हरे ॥ मुनि जन ता की सेव करे ॥ १ ॥ जा कै घरि सगले समाहि ॥ जिस ते बिरथा कोइ नाहि ॥ जीअ जंत्र करे प्रतिपाल ॥ सदा सदा सेवहु किरपाल ॥ २ ॥ सदा धरमु जा कै दीबाणि ॥ बेमुहताज नही किछु काणि ॥ सभ किछु करना आपन आपि ॥ रे मन मेरे तू ता कउ जापि ॥ ३ ॥ साधसंगति कउ हउ बलिहार ॥ जासु मिलि होवै उधारु ॥ नाम संगि मन तनहि रात ॥ नानक कउ प्रभि करी दाति ॥ ४ ॥ ५ ॥

माली गउड़ा महला ५ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ हरि समरथ की सरना ॥ जीउ पिंडु धनु रासि मेरी प्रभ एक कारन करना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुखु पाईऐ जीवणै का मूलु ॥ रवि रहिआ सरबत ठाई सूखमो असथूल ॥

जाए ; बुझते दीपक को तेल मिल जाए, अग्नि में जलते हुए को पानी मिल जाए और जैसे बालक को पीने के लिये दूध मिल जाए इसी प्रकार प्रभु प्राप्त हो जाने से जीव प्रसन्न हो उठता है।। १ ।। जिस प्रकार युद्ध में भाई ही मित्र होता है, जैसे भूखे को माँ द्वारा दिया भोजन ही प्रसन्न करता है, जैसे खेती को बादल के बरसने से सहायता मिलती है और जिस प्रकार शेर की शरण में आने से अन्य जीवों से डर नहीं रहता और पालन पोषण होता है उसी प्रकार प्रभु की शरण है।। २ ।। लोक विश्वास के अनुसार यदि गारुड़ मन्त्र मुँह में हो तो साँप का डर नहीं रहता और तोता यदि पिंजरे में हो तो बिल्ली उसे नहीं खा सकती। कूंज अपने अण्डों की याद हृदय में बनाए रहती है और उसके बच्चों को नुकसान नहीं पहुँचता और जिस प्रकार चक्की की कीली के साथ लगे अनाज के दाने इसमें से बच जाते हैं उसी प्रकार परमात्मा की शरण का प्रभाव है।। ३ ।। हे प्रभु, तेरी महिमा तो बहुत है लेकिन मैं थोड़ी ही कह सका हूँ; हे प्रभु, तुम ही अगम्य, अथाह हो जिसका ओर छोर नहीं पाया जा सकता। तुम बहुत ही ऊँचे से ऊँचे हो और हे नानक, तुम्हारा सुमिरन करने से तो लोहा भी तैर कर पार उतर जाता है।। ४ ।। ३ ।। माली गउड़ा महला ५ ।। हमारे लिये तो यही फलदायक काम है कि हे प्रभु, अपने दास पर कृपा बनाए रखो।। १ ।। रहाउ ।। शान्त पुरुषों के चरणों पर मेरा माथा टिका हुआ है और रात दिन मैं अपनी आँखों से उनका दर्शन करता रहता हूँ। हमारे हाथ सन्तजनों की सेवा में लगे रहते हैं और प्राण मन, धन, इन शान्त पुरुषों के लिए ही अर्पण हैं।। १ ।। शान्त पुरुषों के साथ मेरे मन का प्रेम लगा हुआ है और इन्हीं सन्त पुरुषों के गुण मेरे हृदय में बसे हैं। सन्त पुरुषों की आज्ञा मेरे मन को मीठी लगती है और इन शान्त पुरुषों को देखकर मेरा हृदय कमल खिल उठता है।। २ ।। सन्तों की संगति में मेरा निवास बना रहे ; इन सन्तजनों की मेरे मन में बहुत अधिक प्यास बनी रहती है। सन्तों के वचन ही मेरे मन के लिये उपदेश हैं और इन सन्तपुरुषों की कृपा से मेरे विषय-विकार नष्ट हो जाते हैं।। ३ ।। सन्तों की संगति ही मेरी मुक्ति की विधि और सुखों का खजाना है। हे दयालु प्रभु, मुझे यही दान दे दो। हे प्रभु, नानक के लिये दया धारण करो ताकि मेरे हृदय में शान्त पुरुषों के चरण बसते रहें।। ४ ।। ४ ।। माली गउड़ा महला ५ ।। हे प्रभु, तुम सबके संगी हो और किसी से भी दूर नहीं हो। तुम ही करने कराने वाले और सदैव हाजिर बने रहने वाले सर्वत्र व्याप्त हो।। १ ।। रहाउ ।। उसके नाम को सुनने से दुख नष्ट हो जाते हैं और सुखों में ठिकाना मिल जाता है; जिस प्रभु में सब प्रकार की धन सम्पदा स्थित है मुनिजन भी उसी की सेवा करते हैं।। १ ।। जिसके हृदय में सभी लीन बने हुए हैं, जिससे बाहर कोई भी नहीं, जो सभी जीव जन्तुओं का पालन पोषण करता है उस कृपालु प्रभु का सदैव सुमिरन करते रहो।। २ ।। जिसके दरबार में सदैव धर्म का न्याय होता है और जो किसी का मोहताज नहीं और ना उसमें कोई कमी है; वह स्वयं ही सब कुछ करने वाला है ; इसलिये हे मेरे मन, तू उसी का जाप कर।। ३ ।। साधसंगति पर मैं बलिहारी जाता हूँ क्योंकि उससे मिलकर उद्धार हो जाता है। प्रभु नाम में मन तन लीन बना रहता है और हे नानक, प्रभु ने ही कृपा पूर्वक यह दान दिया हुआ है।। ४ ।। ५ ।।

माली गउड़ा महला ५ दोपदे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैं प्रभु की शरण में आ गया हूँ; वही मेरा शरीर और प्राण है धन और रासपूंजी है और वह एक प्रभु ही करने-कराने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। वही हमारे जीवन का मूल है और उसी का सुमिरन करते रहने से सदैव सुख प्राप्त किया जाता है। सूक्ष्म से स्थूल बना वही सर्वत्र रमण कर रहा है।।

१ ॥ आल जाल बिकार तजि सभि हरि गुना निति गाउ ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै देहु अपना नाउ ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ प्रभ समरथ देव अपार ॥ कउनु जानै चलित तेरे किछु अंतु नाही पार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक खिनहि थापि उथापदा घड़ि भंनि करनैहारु ॥ जेत कीन उपारजना प्रभु दानु देइ दातार ॥ १ ॥ हरि सरनि आइओ दासु तेरा प्रभ ऊच अगम मुरार ॥ कढि लेहु भउजल बिखम ते जनु नानकु सद बलिहार ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥ माली गउड़ा महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे गोपाल ॥ दीन बांधव भगति वछल सदा सदा क्रिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि तूहै प्रभ बिना नाही कोइ ॥ पूरि रहिआ सगल मंडल एकु सुआमी सोइ ॥ १ ॥ करनि हरि जसु नेत्र दरसनु रसनि हरि गुन गाउ ॥ बलिहारि जाए सदा नानकु देहु अपणा नाउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥ ६ ॥ १४ ॥

माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै ॥ मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनि धनि मेघा रोमावली ॥ धनि धनि क्रिसन ओढै कांबली ॥ १ ॥ धनि धनि तू माता देवकी ॥ जिह ग्रिह रमईआ कवलापती ॥ २ ॥ धनि धनि बन खंड बिंद्राबना ॥ जह खेलै स्री नाराइना ॥ ३ ॥ बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ नामे का सुआमी आनद करै ॥ ४ ॥ १ ॥ मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ सांवलीओ बीठुलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले ॥ दुहसासन की सभा द्रोपती अंबर लेत उबारीअले ॥ १ ॥ गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥ ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥ २ ॥ २ ॥ सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ राम बिना को बोलै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥ असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥ १ ॥ एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥ प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥ २ ॥ ३ ॥

१ ।। सभी झंझटो और विकारों को छोड़कर सदैव प्रभु के गुण गाते रहो। नानक तो हाथ जोड़कर यही दान माँगता है कि हे प्रभु, मुझे अपना नाम प्रदान करो।। २ ।। १ ।। ६ ।। माली गउड़ा महला ५ ।। हे प्रभु, तुम समर्थ एवं अपरम्पार देव हो; तेरे कौतुकों को कौन जान सकता है और तेरा कोई भी ओर-छोर नहीं है।। १ ।। रहाउ ।। तू एक क्षण में ही बनाता, बिगाड़ता, स्थापित करता और विस्मादित कर देता है। तूने जितनी भी सृष्टि उत्पन्न की है तू उस सबको प्रभु रूप और दाता रूप होकर दान देता रहता है।। १ ।। हे ऊँचे अगम्य दुष्टों के शत्रु प्रभु, तेरा दास तेरी शरण में आया है। दास नानक तो सदैव तुझ पर बलिहारी जाता रहता है, इसे तो इस भंयकर संसार सागर से बाहर निकाल ले।। २ ।। २ ।। ७ ।। माली गउड़ा महला ५ ।। मेरे मन तन में तो वह धरती का रक्षक प्रभु बस रहा है जो दीनबन्धु, भक्तवत्सल और सदैव कृपालु बना रहने वाला है।। १ ।। रहाउ ।। आदि अन्त, मध्य में हे प्रभु, तू ही है और तेरे बिना अन्य कोई नहीं। वह एक ही स्वामी प्रभु सभी लोकों में भरपूर रूप से व्याप्त है।। १ ।। कानों द्वारा हरि यश, नेत्रों द्वारा प्रभु दर्शन और जीभ द्वारा उस प्रभु के गुण गाते रहो। नानक तो सदैव तुम पर बलिहारी जाता है अतः हे प्रभु, उसे अपना नाम प्रदान कर दो।। २ ।। ३ ।। ८ ।। ६ ।। १४ ।।

माली गउड़ा वाणी भक्त नामदेव जी की   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु रूपी बज रही वीणा धन्य है और अनहत धुन भी मधुर मधुर प्रकट हो रही है।। १ ।। रहाउ ।। उस भेड़े की रोमावली अर्थात ऊन भी धन्य-धन्य है जिसकी कम्बली वह धन्य पुरुष कृष्ण ओढ़े है।। १ ।। हे माता देवकी, तू भी धन्य है जिसके घर में वह प्रभु रमण कर रहा है।। २ ।। वृन्दावन के वन भी धन्य हैं जहाँ श्री नारायण स्वयं खेलते रहे।। ३ ।। वह बांसुरी बजाता है और गायों को चराता रहता है अर्थात सभी जीवों के अन्तर्मन में उसी की संगीत लहरी है और गाय रूपी सभी जीवों का भरण-पोषण वही करता है और ऐसा करता हुआ नामदेव का स्वामी प्रभु आनन्दित बना रहता है।। ४ ।। १ ।। हे मेरे पिता प्रभु, तू केशव रूप में धन्य है, तू ही साँवला और बीठल है।। १ ।। रहाउ ।। तुम चक्र धारण करके गजराज के प्राणों का उद्धार करने के लिये बैकुण्ठ से चलकर यहाँ आए थे। तुमने सभा में द्रौपदी के वस्त्रों को उतारते समय द्रौपदी को दुशासन से बचा लिया था। गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या को तुमने पार उतार दिया और पता नहीं और कितनों को पार उतार कर तुमने पवित्र कर दिया है। ऐसा ही अधम और तथाकथित नीच जाति का नामदेव तुम्हारी शरण में आया है।। २ ।। २ ।। सबके हृदय में प्रभु राम ही बोल रहा है और राम के बिना अन्य कौन बोल रहा है।। १ ।। रहाउ।। हाथी और चीटीं दोनों एक ही मिट्टी के वैसे ही बने हैं जैसे (एक ही मिट्टी के) बर्तन अनेकों प्रकार के होते हैं। एक स्थान पर स्थित पेड़ों, दो पैरों पर चलने वालों तथा कीड़े पतंगों के घट-घट में वह प्रभु ही समाया है।। १ ।। उस एक अनन्त प्रभु पर ही आशा लगाए रखो तथा अन्य सभी आशाओं का त्याग कर दो। नामदेव विनती करता है कि हे प्रभु, अब मैं निष्काम हो गया हूँ इसलिये अब मेरे लिये ना तो कोई मालिक है और ना कोई दास है अर्थात् स्वामी और दास अब एक रूप हो गए हैं।। २ ।। ३ ।।

रागु मारू महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥ सबद ॥ पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि ॥ खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े ॥ जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले ॥ १ ॥ बाबा मै करमहीण कूड़िआर ॥ नामु न पाइआ तेरा अंधा भरमि भूला मनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ ॥ सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखि विहाइ ॥ २ ॥ विछुड़िआ का किआ वीछुड़े मिलिआ का किआ मेलु ॥ साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥ ३ ॥ संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू महला १ ॥ मिलि मात पिता पिंडु कमाइआ ॥ तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ लिखु दाति जोति वडिआई ॥ मिलि माइआ सुरति गवाई ॥ १ ॥ मूरख मन काहे करसहि माणा ॥ उठि चलणा खसमै भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जति साद सहज सुखु होई ॥ घर छडणे रहै न कोई ॥ किछु खाजै किछु धरि जाईऐ ॥ जे बाहुड़ि दुनीआ आईऐ ॥ २ ॥ सजु काइआ पटु हढाए ॥ फुरमाइसि बहुतु चलाए ॥ करि सेज सुखाली सोवै ॥ हथी पउदी काहे रोवै ॥ ३ ॥ घर

१ ओअंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।।

रागु मारू महला १ घरु १ चौपदे

श्लोक।। हे मेरे साजन प्रभु, मैं सदैव तेरे चरणों की धूलि बना रहूँ। हे नानक, मैं तुम्हारी शरण में पड़ा सदैव तुझे देखता रहूँ।। १ ।। शब्द।। जिन्हें रात के पिछले प्रहर अर्थात भोर में प्रभु का बुलावा मिलता है वे ही उस मालिक के नाम का सुमिरन करते हैं। उनके स्वागत के लिये तम्बू, छत्र, रथ आदि सदैव तैयार रहते हैं अर्थात उनको बड़प्पन मिलता है। हे प्रभु, जिन्होंने तेरे नाम का सुमिरन किया है उनको तू बुलाकर सब कुछ देता है।। १ ।। हे बाबा, मैं तो कर्महीन और झूठा हूँ। मुझे तेरा नाम नहीं मिला और इसीलिये मेरा मन अन्धा बनकर भ्रमों में भूला हुआ है।। १ ।। रहाउ ।। साँसारिक स्वादों के कारण हे मेरी माँ पहले के ही लिखे दुख मुझमें प्रफुल्लित हो गए अर्थात बढ़ गए हैं। सुख तो कम हैं परन्तु दुख बहुत हैं और दुखों में ही मेरी आयु व्यतीत हो रही है।। २ ।। जो प्रभु से बिछुड़ गए हैं अब वे और क्या बिछुड़ेंगें अर्थात सबसे बड़ा वियोग यही है; इसी प्रकार जो प्रभु से मिले हुए हैं उनका भला और मिलाप क्या होगा। उन्हें तो उस मालिक का गुणानुवाद करना चाहिये जिसने ये जगत रचना का खेल बनाया है और जो इसे देख रहा है।। ३ ।। बड़े संयोग से इस शरीर के माध्यम से प्रभु से मेल हुआ था परन्तु यह शरीर भोगों में ही लीन हो गया। हे नानक, यह संयोग फिर भी हो सकता है कि बिछुड़ा हुआ वियोगी फिर उस प्रभु को मिल जाए।। ४ ।। १ ।। मारू महला १ ।। माता-पिता के मिलाप से यह शरीर बना और उस पर उस कर्ता प्रभु ने अपना भाग्य लेख अंकित कर दिया। वह लिखा हुआ दान तो परम ज्योति और प्रभु की महिमा का था परन्तु जीव ने माया से मिलकर प्रभु की याद को गँवा दिया है।। १ ।। हे मूर्ख मन, तू क्यों अभिमान करता है क्योंकि उस मालिक की रजा में एक दिन यहाँ से उठकर चले जाना है।। १ ।। रहाउ ।। तू स्वादों को छोड़ दे तो स्वभाविक रूप से ही तुझे सुख प्राप्त हो जाएगा क्योंकि यह घर तो छोड़ना ही छोड़ना है, यहाँ कोई भी स्थायी रूप से नही रहता। बेशक अभी तो कुछ खा पी लिया जाए परन्तु यदि फिर इस दुनिया में आना हुआ तो कुछ न कुछ बचा कर भी यहाँ छोड़ जाना चाहिए ।। २ ।। शरीर को सजाने वाले कपड़ों को तू पहनता रहा और बहुत से आदेश भी तू करता रहा। तू सुखदायक सेज पर भी सोता रहा परन्तु अब जब यम का हाथ तेरे पर आ पड़ा है तो तू क्यों रो रहा है।। ३ ।। एक तो तू घर गृहस्थी

घुंमणवाणी भाई ॥ पाप पथर तरणु न जाई ॥ भउ बेड़ा जीउ चड़ाऊ ॥ कहु नानक देवै काहू ॥ ४ ॥ २ ॥ मारू महला १ घरु १ ॥ करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥ १ ॥ चित चेतसि की नही बावरिआ ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥ रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥ २ ॥ काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥ कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई ॥ ३ ॥ भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥ एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥ ४ ॥ ३ ॥ मारू महला १ ॥ बिमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे ॥ पदमनि जावल जल रस संगति संगि दोख नही रे ॥ १ ॥ दादर तू कबहि न जानसि रे ॥ भखसि सिबालु बससि निरमल जल अंम्रितु न लखसि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे ॥ चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे ॥ २ ॥ अंम्रित खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे ॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे ॥ ३ ॥ पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने ॥ अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे ॥ ४ ॥ इकि पाखंडी नामि न राचहि इकि हरि हरि चरणी रे ॥ पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे ॥ ५ ॥ ४ ॥ मारू महला १ ॥ सलोकु ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरनी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ नानक जिसु मसतकि भाग ॥ १ ॥ सबदु ॥ सखी सहेली गरबि गहेली ॥ सुणि सह की इक बात सुहेली ॥ १ ॥ जो मै बेदन सा किसु आखा माई ॥ हरि बिनु जीउ न रहै कैसे राखा माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ दोहागणि खरी रंञाणी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुताणी ॥ २ ॥ तू दाना साहिबु सिरि मेरा ॥ खिजमति करी जनु बंदा तेरा ॥ ३ ॥ भणति नानकु अंदेसा एही ॥ बिनु दरसन कैसे रवउ सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥

के भँवरे में हे मेरे भाई, पड़ा रहा दूसरे पापों के पत्थर तूने साथ ले लिए जिनके कारण संसार सागर को तैरा नहीं जा सकता। प्रभु की भय रूपी नाव पर अपने जीव को तू चढ़ा ले परन्तु नानक का कथन है कि इस प्रकार की नाव वह किसी बिरले को ही देता है।। ४ ।। २ ।। मारू महला १ घरु १ ।। आचरण हमारा कागज है और उस कागज पर लिखने का साधन दवात हमारा मन है। इस कागज पर ही हम बुरे और भले दो प्रकार के लेख लिखते हैं। जिस प्रकार का आचरण वह प्रभु करवाता है उसी प्रकार से हम चलते जाते हैं; हे प्रभु, तेरे गुणों का रहस्य नहीं जाना जा सकता।। १ ।। हे बावले, तू अपने हृदय में उसका सुमिरन क्यों नहीं कर रहा है। प्रभु को भुला देने से ही तेरे सभी गुण नष्ट हो गए हैं।। १ ।। रहाउ।। दिन रात हमें फंसाने के लिये धन्धों का जाल बिछा है और जितनी भी घड़ियाँ हैं उतने ही हमारे लिए फंदे बनते रहते हैं अर्थात हर क्षण हम बुरे कामों में फंसते रहते हैं। सदैव फंसे हुए भी हम सुख पूर्वक पापों का चुग्गा चुगते रहते हैं; इसलिये हे मूर्ख, किन गुणों के कारण हम मुक्त हो सकेंगे।। २ ।। काया रूपी भट्ठी में मन रूपी लोहा है और पाँचों विकारों की अग्नि इसे लगी हुई है। पापों के रूप में इस पर और कोयले पड़ते रहते हैं और मन जलता रहता है। प्रभु नाम का चिंतन ही सँडसी का काम करता है जो विकारों की अग्नि में जल रहे मन को बाहर निकाल लेता है।। ३ ।। यह काला बना हुआ मन फिर सोना हो सकता है यदि उसे गुरु प्राप्त हो जाए। प्रभु एक नाम रूपी अमृत दे देता है और हे नानक, यह शरीर अर्थात जीवन भटकने से रुक कर शान्त हो जाता है।। ४ ।। ३ ।। मारू महला १ ।। पवित्र तालाब में पवित्र जल बसता है जिसमें कमल और सेवाल दोनों ही होते हैं। कमल, सेवाल और पानी की संगति में रहता हुआ भी दोनों से अलिप्त बना रहता है।। १ ।। परन्तु हे मेंढक, तू कुछ भी नहीं जानता; तू निर्मल जल में रहता हुआ सेवाल तो खाता रहता है परन्तु अमृत जल की विशेषता को नहीं जानता।। १ ।। रहाउ ।। हे मेंढक, तू सदैव जल में रहता है और भँवरे वहां निवास नहीं करते परन्तु फिर भी कमल के गुणों की चर्चा में सदैव मस्त बने रहते हैं। चन्द्रमा को देखकर कुमुदिनी खिलती हुई झुकी रहती है और उसकी प्रसन्नता का कारण चन्द्रमा की महिमा को अनुभव करना होता है अर्थात् प्रभु के प्यारे उसके प्रेम में विनम्र होकर जीते रहते हैं।। २ ।। पानी में ही अपने आपको चतुर समझने वाले मेंढक, तू इस बात को देख ले कि दूध में अमृत समान मीठा शहद आदि पड़ा होता है परन्तु गाय के थन को लगी हुई चीचड़ि दूध ना पीकर रक्त चूसने में ही प्रीति लगाए रखती है। इसी प्रकार हे जीव, तू अपना स्वभाव छोड़कर मल पदार्थ खाता रहता है।। ३ ।। इसी प्रकार पंडित के संग रहते हुए मूर्ख व्यक्ति भी वेद और शास्त्र को सुनते रहते हैं (परन्तु उन पर कोई असर नहीं होता)। हे जीव, कुत्ते की टेढ़ी पूंछ की तरह तू अपना स्वभाव कभी भी नहीं छोड़ता।। ४ ।। कई पाखण्डी प्रभु-नाम में लीन बने हैं और कई प्रभु के चरणों में लगे हुए हैं। इन सभी को पहले का लिखा हुआ भाग्य लेख प्राप्त होता है इसलिये हे नानक, तू अपनी जीभ से प्रभु नाम का जाप कर।। ५ ।। ४ ।। मारू महला १ ।। श्लोक ।। प्रभु के चरणों में मन लगाने से असंख्य पतित पवित्र हो जाते हैं। प्रभु नाम ही अड़सठ तीर्थों के समान है परन्तु हे नानक, जिसके माथे पर भाग्यलेख लिखा रहता है यह उसी को प्राप्त होता है।। १ ।। शब्द।। मेरी सभी सखी सहेलियाँ अहंकार ग्रस्त हैं परन्तु हे मेरी सत्संगी सहेली, पति प्रभु की एक सुखदायक बात तो सुन ले।। १ ।। हे माँ, जो पीड़ा मुझे है मैं किससे कहूँ ; प्रभु के बिना मेरे प्राण नहीं बचते और मैं इनकी कैसे रक्षा करूं।। १ ।। रहाउ ।। मैं दुहागिन स्त्री बहुत ही दुखी हूँ और मेरी वही स्थिति है जैसे यौवन चला जाने पर स्त्री पछताती रहती है।। २ ।। तू देने वाला मेरा मालिक बहुत ऊँचा है। दास तो तेरा सेवक है इसलिए तेरी ही सेवा में झुका है।। ३ ।। नानक कहता है कि मुझे यही चिन्ता है कि बिना उस प्यारे के दर्शन से मैं उसके साथ कैसे आनन्द का उपभोग करूं।। ४ ।। ५ ।।

मारू महला १ ॥ मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥ गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा ॥ १ ॥ तेरे लाले किआ चतुराई ॥ साहिब का हुकमु न करणा जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मा लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ ॥ लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ ॥ २ ॥ पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥ पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥ ३ ॥ लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई ॥ आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु विणु मुकति न पाई ॥ ४ ॥ ६ ॥ मारू महला १ ॥ कोई आखै भूतना को कहै बेताला ॥ कोई आखै आदमी नानकु वेचारा ॥ १ ॥ भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना ॥ हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥ एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ ॥ २ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ ॥ ३ ॥ तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु ॥ मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु ॥ ४ ॥ ७ ॥ मारू महला १ ॥ इहु धनु सरब रहिआ भरपूरि ॥ मनमुख फिरहि सि जाणहि दूरि ॥ १ ॥ सो धनु वखरु नामु रिदै हमारै ॥ जिसु तू देहि तिसै निसतारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ न इहु धनु जलै न तसकरु लै जाइ ॥ न इहु धनु डूबै न इसु धन कउ मिलै सजाइ ॥ २ ॥ इसु धन की देखहु वडिआई ॥ सहजे माते अनदिनु जाई ॥ ३ ॥ इक बात अनूप सुनहु नर भाई ॥ इसु धन बिनु कहहु किनै परम गति पाई ॥ ४ ॥ भणति नानकु अकथ की कथा सुणाए ॥ सतिगुरु मिलै त इहै धनु पाए ॥ ५ ॥ ८ ॥ मारू महला १ ॥ सूर सरु सोसि लै सोम सरु पोखि लै जुगति करि मरतु सु सनबंधु कीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥ १ ॥ मूड़े काइचे भरमि भुला ॥ नह चीनिआ परमानंदु बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अजर गहु जारि लै अमर गहु मारि लै भ्राति तजि छोडि तउ अपिउ पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति

मारू महला १ ।। मैं तो खरीदा गुलाम हूँ और तेरा सेवक होने के कारण मेरा नाम सौभाग्यशाली है। गुरु के उपदेश के कारण मैं तो प्रभु के लिये बाजार में बिका हुआ हूँ और जिधर मुझे मेरे प्रभु ने लगाया है मैं उधर लगा हुआ हूँ। तेरे सेवक के पास भला कौन सी चतुराई हो सकती है; मुझसे तो तेरा हुकुम अच्छी तरह माना भी नहीं जाता।। १ ।। रहाउ ।। मेरी माँ भी तेरी सेवक है, पिता भी सेवक है और मैं उस सेवक का ही पुत्र हूँ अर्थात मेरी रग-रग में तेरा सेवकपन है। मेरी माँ, मेरे पिता दिन रात तेरे लिये नाचते गाते हैं और हे राजा, मैं भी तेरी ही भक्ति में लीन बना रहता हूँ।। २ ।। हे प्रभु, यदि तू पीए तो मैं तेरे लिये पानी ले आऊँ और यदि तुझे कुछ खाना हो तो मैं तेरे लिये पिसान पीस दूं। मैं तुझे पंखा डुलाऊँ, तेरे चरणों को धोऊँ और तेरे नाम का जाप करता रहूँ।। ३ ।। नानक तो तेरे दिए हुए दान के अनुरूप काम न करने वाला सेवक है; तूने ही उसे बड़पप्न प्रदान किया हुआ है। तू आदि काल, युगादिकाल से ही दयालु दाता है और तेरे बिना मुक्ति नहीं पाई जाती।। ४ ।। ६ ।। मारू महला १ ।। कोई मुझे भूत कहता है कोई बेताल कहता हैं; कोई कहता है कि यह व्यक्ति बेचारा नानक है।। १ ।। प्रभु का दीवाना होकर मैं नानक बावला हो गया हूँ। प्रभु के बिना मैंने अन्य किसी को भी नहीं जाना माना है।। १ ।। रहाउ ।। वास्तव में दीवाना उसे कहा जाता है जो प्रभु के भय में अर्थात संयम में रहता हुआ दीवाना बना रहे। दीवाना वही है जो एक प्रभु के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं जानता।। २ ।। तेरा दीवाना तो उसे जाना जाता है जो उस एक प्रभु की ही सेवा करता रहता है। ऐसा व्यक्ति उस मालिक के हुकुम को पहचान लेता है और उसके पास अन्य चतुराईयाँ कोई नहीं होती।। ३ ।। दीवाना तो तब कहा जाता है जब व्यक्ति का प्रभु के साथ वास्तव में प्यार हो। ऐसा व्यक्ति अपने आप को तो बुरा ही जानता है तथा उसके लिये बाकी सारा संसार भला ही होता है।। ४ ।। ७ ।। मारू महला १ ।। प्रभु रूपी नाम का धन सभी जगह व्याप्त है परन्तु जो मनमुख भटकते रहते हैं वे इसे अपने से दूर ही मानते हैं।। १ ।। ऐसा नाम धन रूपी पदार्थ हमारे हृदय में बसा है और हे प्रभु, इसको जिसे तू देता है यह उसी को पार उतारता है।। १ ।। रहाउ।। यह धन ना तो जलाया जा सकता है और ना ही इसे चोर ले जा सकता है। यह धन ना तो डूबता है और इसे रखने वाले को ना कोई सजा मिलती है।। २ ।। ऐसे धनवान व्यक्ति की महिमा देखो कि नामधन में लीन होने से व्यक्ति प्रत्येक दिन सहज भाव में लीन बना रहता है।। ३ ।। हे मानव बन्धु, एक सुन्दर बात सुनो कि इस धन के बिना भला कोई परमगति प्राप्त कर सका है अर्थात कोई नहीं कर सका।। ४ ।। नानक उस अकथनीय प्रभु की बात करता हुआ कहता है कि यदि सच्चा गुरु मिल जाए तभी यह धन प्राप्त किया जाता है।। ५ ।। ८ ।। मारू महला १ ।। सूर्य के स्वर को अर्थात अपने अन्दर के तमोगुणी स्वभाव को समाप्त कर दे और चन्द्रमा के स्वर अर्थात सतोगुणी स्वभाव को बलशाली बना ले और जीवन की विधि बनाकर सारे संसार के साथ अपना अच्छा सम्बन्ध बना ले। इस प्रकार मछली जैसे चपल और चंचल मन को जब स्थिर कर लिया जाता है तो फिर ना तो आत्मा इधर-उधर भटकती है और ना ही यह शरीर रूपी दीवार कमज़ोर पड़ती है।। १ ।। हे मूर्ख, तू क्यों भ्रमों में भूला है और तूने परम आनन्द तथा परम वैराग्य रूपी उस प्रभु को भी नहीं पहचाना है।। १ ।। रहाउ ।। असह्य माया को पकड़कर जला दे और कभी ना मरने वाले मन को मारकर तथा भ्रमों को त्यागकर तू अमृत का पान कर ले। इस प्रकार मछली जैसे चपल और चंचल

मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥ २ ॥ भणति नानकु जनो रवै जे हरि मनो मन पवन सिउ अंम्रितु पीजै ॥ मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥ ३ ॥ ९ ॥ मारू महला १ ॥ माइआ मुई न मनु मुआ सरु लहरी मै मतु ॥ बोहिथु जल सिरि तरि टिकै साचा वखरु जितु ॥ माणकु मन महि मनु मारसी सचि न लागै कतु ॥ राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु दूरि न देखु ॥ सरब जोति जगजीवना सिरि सिरि साचा लेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमा बिसनु रिखी मुनी संकरु इंदु तपै भेखारी ॥ मानै हुकमु सोहै दरि साचै आकी मरहि अफारी ॥ जंगम जोध जती संनिआसी गुरि पूरै वीचारी ॥ बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि सेवा करणी सारी ॥ २ ॥ निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु निंमाणिआ तू माणु ॥ अंधुलै माणकु गुरु पकड़िआ निताणिआ तू ताणु ॥ होम जपा नही जाणिआ गुरमती साचु पछाणु ॥ नाम बिना नाही दरि ढोई झूठा आवण जाणु ॥ ३ ॥ साचा नामु सलाहीऐ साचे ते त्रिपति होइ ॥ गिआन रतनि मनु माजीऐ बहुड़ि न मैला होइ ॥ जब लगु साहिबु मनि वसै तब लगु बिघनु न होइ ॥ नानक सिरु दे छुटीऐ मनि तनि साचा सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ मारू महला १ ॥ जोगी जुगति नामु निरमाइलु ता कै मैलु न राती ॥ प्रीतम नाथु सदा सचु संगे जनम मरण गति बीती ॥ १ ॥ गुसाई तेरा कहा नामु कैसे जाती ॥ जा तउ भीतरि महलि बुलावहि पूछउ बात निरंती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमणु ब्रहम गिआन इसनानी हरि गुण पूजे पाती ॥ एको नामु एकु नाराइण त्रिभवण एका जोती ॥ २ ॥ जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु अजाची ॥ एको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥ ३ ॥ दोवै सिरे सतिगुरु निबेड़े सो बूझै जिसु एक लिव लागी जीअहु रहै निभराती ॥ सबदु वसाए भरमु चुकाए सदा सेवकु दिनु राती ॥ ४ ॥ ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ॥ गुर बचनी बाहरि घरि एको नानकु भइआ उदासी ॥ ५ ॥ ११ ॥

मन को जब स्थिर कर लिया जाता है तो फिर ना तो आत्मा इधर-उधर भटकती है और ना यह शरीर रूपी दीवार कमजोर पड़ती जब।। २ ।। नानक कहता है कि मन में प्रभु का सुमिरन करता रहने वाला सेवक अपने श्वासों के साथ अमृत का पान करता रहता है। इस प्रकार मछली जैसे चपल और चंचल मन को जब स्थिर किया जाता है तो फिर ना तो आत्मा इधर-उधर भटकती है और ना ही यह शरीर रूपी दीवार नष्ट होती है।। ३ ।। ६ ।। मारू महला १ ।। ना तो माया मारी जा सकी ना मन ही मर सका और यह संसार सागर मदमस्त लहरों वाला बना हुआ है। वह शरीर रूपी जहाज़ जिसके अन्दर प्रभु नाम का पदार्थ भरा है इस सागर के जल पर तैर कर स्थिरता से पार हो जाता है। प्रभु नाम रूपी माणिक जो मन के अन्दर ही है मन को वश में लाता है। सत्य के कारण इसमें कहीं भी कोई दरार नहीं पड़ती। जीवात्मा रूपी राजा अपने गुणों के कारण ही सर्वोच्च सिहांसन पर विराजमान होता है और प्रभु के भय के अन्तर्गत वह सत्य, सन्तोष, दया, धर्म, धैर्य आदि पाँचों गुणों में रंगा रहता है।। १ ।। हे बाबा, उस सच्चे प्रभु को दूर मत जानो। वह जगजीवन प्रभु सबका प्राण है और सच्चे लेख के रूप में वह सबके मस्तक पर लिखा हुआ है।। १ ।। रहाउ ।। ब्रह्मा, विष्णु, ऋषि-मुनि, शंकर, इन्द्र और तपस्वी तेरे सामने हे प्रभु, याचक हैं। जो तेरे हुकुम को मानता है वह तेरे द्वार पर शोभा पाता है और इनमें से जो भी तेरे हुकुम को नहीं मानता वह अपने अभिमान में ही मर खप जाता है। पूर्ण गुरु ने यह विचार किया है कि जंगम, योगी, शूरवीर और यति तथा संन्यासी आदि कोई भी सेवा के बिना कभी भी फल नहीं पा सका है और सेवा ही सारे आचरण का सार तत्व है।। २ ।। हे प्रभु, तू निर्धनों का धन है, गुरु विहीनों का गुरु है और कमज़ोरों का तू ही मान सम्मान है। मुझ अन्धे अज्ञानी ने तो गुरु रूपी माणिक को पकड़ लिया है क्योंकि हे प्रभु, तू ही बलहीनों का बल है। होम, यज्ञ, जाप आदि के माध्यम से वह प्रभु नहीं जाना जाता। उस सत्य की पहचान तो गुरमति के फलस्वरूप ही होती है। प्रभु नाम के बिना उसके द्वार पर ठिकाना नहीं मिलता और यह आवागमन तो वास्तव में झूठ ही झूठ है।। ३ ।। प्रभु के सच्चे नाम का गुणानुवाद करना चाहिए क्योंकि वास्तविक सन्तुष्टि सत्य से ही होती है। जब ज्ञान रूपी रत्न से मन को मांजा जाता है अर्थात स्वच्छ किया जाता है तो वह फिर कभी मैला नहीं होता। जब तक वह प्रभु मन में बसता रहता है तब तक कोई भी रुकावट सामने नहीं आती। हे नानक, उस प्रभु को सिर अर्थात सर्वस्व अर्पण करके ही मुक्त हुआ जा सकता है और अपने मन और तन में उस सत्य प्रभु को बसाया जाता है।। ४ ।। १० ।। मारू महला १ ।। वह योगी जिसकी युक्ति पवित्र प्रभु का नाम है उसे जरा भी मैल नहीं लगती। जिसके साथ सत्य रूपी प्रियतम बना है उसके जन्म मरण की अवस्था बीती हुई बात हो जाती है।। १ ।। हे प्रभु, तेरा नाम कैसा है और इसे कैसे जाना जाता है। तू किस प्रकार अपने स्थान के अन्दर बुलाता है मैं इस अभेदता की बात तुमसे पूछता हूँ।। १ ।। रहाउ ।। ब्रह्म ज्ञान को जानने वाला वास्तविक ब्राह्मण है जिसका स्नान ब्रह्म को जानने में ही है; प्रभु का गुणानुवाद उसकी फूल पत्तों के साथ पूजा करना है। उस एक ही प्रभु का एक ही नाम और तीनों लोकों में उसकी एक ही ज्योति को मानना वास्तव में ब्रह्मज्ञान है।। २ ।। उसकी जीभ उसकी डंडी है, यह हृदय उसका पलड़ा है और उस पर तौला जा सकने वाला प्रभु-नाम तौला जाता है। प्रभु का हाट बाजार रूपी संसार एक जैसा ही है तथा वह प्रभु ही वहाँ सर्वश्रेष्ठ साहूकार है और गुरमुख व्यापारी भी वहां एक ही जैसे हैं।। ३ ।। इस लोक और परलोक को वह सच्चा गुरु ही सँवारता है और इस तथ्य को वही बूझता है जिसकी एक प्रभु में लौ लगी है और जिसका हृदय अब भ्रान्तिपूर्ण नहीं रहता। वह शब्द को हृदय में बसा देता है, अपने भ्रमों को दूर कर देता है और सदैव दिन रात सेवक बना रहता है।। ४ ।। सबसे उपर गगन मण्डल है, वहीं पर धरती के रक्षक प्रभु का निवास है और उस अगम्य से मिलाने वाला गुरु रूपी आत्मा है। गुरु के उपदेश के माध्यम से अब मुझे घर और बाहर वह एक ही प्रभु दिखाई देता है इसलिये अब नानक वास्तविक रूप से त्यागी हो गया है।। ५ ।। ११ ।।

रागु मारू महला १ घरु ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥ सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥ प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥ १ ॥ जिस नो साचा सिफती लाए ॥ गुरमुखि विरले किसै बुझाए ॥ अंम्रित की सार सोई जाणै जि अंम्रित का वापारी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिर सेती धन प्रेमु रचाए ॥ गुर कै सबदि तथा चितु लाए ॥ सहज सेती धन खरी सुहेली त्रिसना तिखा निवारी जीउ ॥ २ ॥ सहसा तोड़े भरमु चुकाए ॥ सहजे सिफती धणखु चड़ाए ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे सुंदरि जोगाधारी जीउ ॥ ३ ॥ हउमै जलिआ मनहु विसारे ॥ जम पुरि वजहि खड़ग करारे ॥ अब कै कहिऐ नामु न मिलई तू सहु जीअड़े भारी जीउ ॥ ४ ॥ माइआ ममता पवहि खिआली ॥ जम पुरि फासहिगा जम जाली ॥ हेत के बंधन तोड़ि न साकहि ता जमु करे खुआरी जीउ ॥ ५ ॥ ना हउ करता ना मै कीआ ॥ अंम्रितु नामु सतिगुरि दीआ ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा नानक सरणि तुमारी जीउ ॥ ६ ॥ १ ॥ १२ ॥

मारू महला ३ घरु १ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ॥ सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा ॥ १ ॥ बाबा देहि वसा सच गावा ॥ जा ते सहजे सहजि समावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई सगल विकारा ॥ इहु फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इहु संसारा ॥ २ ॥ इंद्री धातु सबल कहीअत है इंद्री किस ते होई ॥ आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै कोई ॥ ३ ॥ गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥ जो तिसु भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥ ४ ॥ भणति नानकु लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना ॥ तासु तासु धरम राइ जपतु है पए सचे की सरना ॥ ५ ॥ १ ॥ मारू महला ३ ॥ आवण जाणा ना थीऐ निज घरि वासा होइ ॥ सचु

रागु मारू महला १ घरु ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिसको प्रभु दर्शन की पीड़ा सता रही हो वही दिन रात सावधान बना रहता है और अज्ञान की नींद में सोता नहीं। प्रेम के बाण जिसके हृदय में लग गए हों साँसारिक वैद्य भला उसका क्या इलाज कर सकता है।। १ ।। जिसको सच्चा प्रभु गुणानुवाद में लगा देता है ऐसे किसी बिरले गुरमुख को ही यह बात समझ आती है; वास्तव में वही अमृत के महत्व को जान पाता है जो अमृत का ही व्यापारी होता है।। १ ।। रहाउ ।। प्रियतम के साथ जीव स्त्री प्रेम लगाती है और शब्द-गुरु के माध्यम से सिक्ख भी यदि प्रभु के साथ मन लगाए तो सहज स्वभाविक अवस्था में पहुँची जीव स्त्री सुखी हो जाती है और उसकी तृष्णा की प्यास दूर हो जाती है।। २ ।। यदि संदेहों को तोड़कर भ्रम दूर कर ले, सहज स्वभाव में जाकर प्रभु के गुणानुवाद रूपी धनुष को तान ले और शब्द-गुरु के माध्यम से विकारों के प्रति मर कर-मन को मार ले तो यही वास्तव में प्रभु से मिलने का सुन्दर आधार और आसरा बन जाता है।। ३ ।। अहंकार में जला हुआ व्यक्ति मन से प्रभु को भुला देता है और यम पुरी में उसे शस्त्रों की करारी मार सहनी पड़ती है। अब वहाँ पुकार-पुकार कर माँगने से प्रभु नाम नहीं मिलता इसलिए हे जीव, अब तो तुझे भारी सजा सहन करनी ही पड़ेगी।। ४ ।। तू माया और ममता के विचारों में पड़ा रहता है इसलिये तू यमपुरी में यम के जाल में अवश्य ही फंसेगा। मोह के बन्धनों को क्योंकि तू तोड़ न सका इसलिये यम तुझे ख्वार करता ही रहेगा।। ५ ।। मैं ना तो कुछ अभी कर सकने वाला हूँ और ना ही मैंने पहले कुछ किया है; मुझे तो सच्चे गुरु ने अमृत नाम प्रदान किया है, हे प्रभु, जिसे तू दे देता है उसे और प्रयत्न करने की क्या जरूरत है; नानक तो अब तुम्हारी शरण में आ गया है।। ६ ।। १ ।। १२ ।।

मारू महला ३ घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, तू मुझे जहाँ बैठाएगा मैं वही बैठूँगा और जहाँ तू भेजेगा मैं वही जाऊँगा। इस संसार रूपी नगरी में एक प्रभु ही राजा है और यहाँ के सभी स्थान पवित्र हैं।। १ ।। हे प्रभु, मुझे यहाँ निवास दे ताकि मैं सत्य का गुणानुवाद करता रहूँ और इसी से स्वाभाविक रूप में ही पूर्ण शान्ति और आनन्द की अवस्था में लीन हो जाऊँ।। १ ।। रहाउ।। मोह में पड़कर परस्पर मेल जोल में ही बुरे भले की पहचान कराई है और यह मोह ही समस्त विकारों का कारण है परन्तु यह भी उस मालिक की आज्ञा में ही होता है और उसकी आज्ञा में ही यह संसार में कार्यशील है।। २ ।। धातु रूप इन्द्रिय बहुत सबल कही जाती है परन्तु काम वासना को जगाने वाली यह इन्द्रिय भला किससे पैदा हुई; वह कर्ता प्रभु ही इस खेल को रचाता है और इस तथ्य को कोई बिरला ही जान पाता है।। ३ ।। गुरु की कृपा से जब एक प्रभु में ही लौ लग गई तभी दुविधा का विनाश होता है और जो प्रभु को अच्छा लगता है जब उसे सत्य जानकर मान लिया जाता है तो यम का फँदा कट जाता है।। ४ ।। नानक का कथन है कि जब मन का अभिमान ही समाप्त हो गया तो फिर भला लेखा कौन माँग सकता है। हम तो ऐसे सत्य प्रभु की शरण में पड़ गए जिससे डरता हुआ धर्मराज भी उसका सुमिरन करता हैं।। ५ ।। १ ।। मारू महला ३ ।। अब हमारा आवागमन नहीं होता और अपने मूल घर में हमारा निवास हो गया है। प्रभु ने ही यह सत्य

खजाना बखसिआ आपे जाणै सोइ ॥ १ ॥ ए मन हरि जीउ चेति तू मनहु
तजि विकार ॥ गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐथै
नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥ जोनी सभि भवाईअनि बिसटा माहि
समाइ ॥ २ ॥ वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥ अनदिनु सची
भगति करि सचा लए मिलाइ ॥ ३ ॥ आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे नदरि
करेइ ॥ नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ ४ ॥ २ ॥ मारू
महला ३ ॥ पिछले गुनह बखसाइ जीउ अब तू मारगि पाइ ॥ हरि की
चरणी लागि रहा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुरमुखि नामु हरि धिआइ ॥
सदा हरि चरणी लागि रहा इक मनि एकै भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना मै जाति
न पति है ना मै थेहु न थाउ ॥ सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ
समझाइ ॥ २ ॥ इहु मनु लालच करदा फिरै लालचि लागा जाइ ॥ धंधै कूड़ि
विआपिआ जम पुरि चोटा खाइ ॥ ३ ॥ नानक सभु किछु आपे आपि है
दूजा नाही कोइ ॥ भगति खजाना बखसिओनु गुरमुखा सुखु होइ ॥ ४ ॥ ३ ॥
मारू महला ३ ॥ सचि रते से टोलि लहु से विरले संसारि ॥ तिन मिलिआ
मुखु उजला जपि नामु मुरारि ॥ १ ॥ बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ॥ सतिगुरु
अपना पुछि देखु लेहु वखरु भालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु सचा सभ सेवदी धुरि भागि
मिलावा होइ ॥ गुरमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि सचु सोइ ॥ २ ॥ इकि
भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ॥ ओना विचि आपि वरतदा
करणा किछू न जाइ ॥ ३ ॥ जिसु नालि जोरु न चलई खले कीचै अरदासि ॥
नानक गुरमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ मारू
महला ३ ॥ मारू ते सीतलु करे मनूरहु कंचनु होइ ॥ सो साचा सालाहीऐ तिसु
जेवडु अवरु न कोइ ॥ १ ॥ मेरे मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ॥ सतिगुर
कै बचनि अराधि तू अनदिनु गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि एको जाणीऐ
जा सतिगुरु देइ बुझाइ ॥ सो सतिगुरु सालाहीऐ जिदू एह सोझी पाइ ॥ २ ॥
सतिगुरु छोडि दूजै लगे किआ करनि अगै जाइ ॥ जम पुरि बधे मारीअहि बहुती

रूपी खजाना हमें प्रदान किया है और इसके बारे में वह स्वयं ही जानता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू अपने मन से विकारों को त्याग दे और प्रभु का सुमिरन कर। शब्द-गुरु की तू आराधना कर; तेरा सत्य प्रभु से प्यार लग जाएगा।। १ ।। रहाउ।। इस जीवन में प्रभु नाम को भूले हुए को फिर कहीं भी आसरा नहीं मिलेगा। तुझे सभी योनियों में भटकाया जाएगा और तू विष्ठा में ही लीन हो जाएगा।। २ ।। हे माँ, पहले से ही भाग्य में लिखा होने के कारण बड़े भाग्य से मैंने गुरु को प्राप्त किया है। इसलिए अब सदैव सच्ची भक्ति करते हुए मुझे उस सच्चे प्रभु से मिलाप करना है।। ३ ।। उस प्रभु ने स्वयं ही सृष्टि की रचना की है और वह स्वयं ही कृपा दृष्टि करता है। हे नानक, प्रभु नाम में ही बड़प्पन है और वह उसी को देता है जो उसे अच्छा लगता हैं।। ४ ।। २ ।। मारू महला ३ ।। हे जीव, तू पिछले पापों को माफ करवा ले और अब ठीक रास्ते पर पहुँच जा। अपने अन्तर्मन से अभिमान समाप्त करके प्रभु के चरणों में तुझे लगा रहना चाहिए।। १ ।। हे मेरे मन, तू गुरमुख बनकर प्रभु-नाम का सुमिरन कर; तू एक मन और एक ही भाव से सदैव प्रभु के चरणों में लगा रह।। १ ।। रहाउ।। मेरी ना तो कोई जाति विशेष है, ना ही मेरा सम्मान है और ना ही मेरा कोई ठौर-ठिकाना है। तूने अपने शब्द से बींध कर ही मेरे भ्रम को काटा है और गुरु के माध्यम से मुझे अपने नाम को समझने की शक्ति दी है।। २ ।। यह मन लालच करता हुआ भटकता है और लालच में लगा रहता है। धन्धों में लगा हुआ झूठ से ही यह भरा रहता है और यमपुरी में यह चोटें खाता रहता है।। ३ ।। हे नानक, वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ है उसके समान दूसरा कोई नहीं। उसी ने गुरमुख व्यक्तियों को भक्ति का भण्डार प्रदान किया हैं जिससे उन्हें सदैव सुख बना रहता है।। ४ ।। ३ ।। मारू महला ३ ।। जो सत्य में लीन हैं उन्हें ढूंढ लो, वे तो इस संसार में बिरले ही हैं। उनको मिलने से मुख उज्जवल होता है और प्रभु-नाम का सुमिरन किया जाता है।। १ ।। हे बाबा, तू सच्चे साहिब प्रभु को हृदय में याद करता रह। अपने सच्चे गुरु से पूछ कर देख लो और प्रभु रूपी सौदे को अर्थात जीवन के परम उद्देश्य को खोज लो।। १ ।। रहाउ।। सारी सृष्टि उस एक प्रभु का ही सुमिरन करती है और प्रभु के दरबार से ही भाग्य लेख लिखा हो तो उससे मिलाप होता है। जो गुरमुख बनकर उससे मिल जाते हैं वे कभी नहीं बिछुड़ते और उस सत्य प्रभु को पा लेते हैं।। २ ।। कई ऐसे भी हैं जो भक्ति के महत्व को नहीं जानते और मनमुख बने हुए भ्रमों में भटकते रहते हैं। उनमें भी वह प्रभु ही कार्यशील है और वे स्वयं कुछ भी नही कर पाते।। ३ ।। जिस (प्रभु) पर जोर ना चलता हो उसके सामने खड़े होकर तो अरदास (प्रार्थना) ही की जानी चाहिए। हे नानक, यदि गुरमुख बनकर प्रभु-नाम मन में बसा लिया जाए तो वह उस अरदास को सुनकर शाबाश देता है।। ४ ।। ४ ।। मारू महला ३ ।। मरुस्थल को वह शीतल कर देता है और लोहे की राख उसके कारण सोना बन जाती है। उस सच्चे प्रभु का ही गुणानुवाद करना चाहिए जिसके जैसा अन्य कोई ना हो।। १ ।। हे मेरे मन, सदैव प्रभु-नाम का ही सुमिरन कर; सच्चे गुरु के उपदेश को तू याद रख और सदैव प्रभु के ही गुण गाता रह।। १ ।। रहाउ।। जब सच्चा गुरु समझा देता है तो गुरमुख बनकर उस एक प्रभु को ही जाना जाता है। उस सच्चे गुरु का ही गुणानुवाद करना चाहिए जिसके माध्यम से ही यह समझ आती है।। २ ।। सच्चे गुरु को छोड़कर जो द्वैतभाव में लगे रहते हैं वे भला परलोक में क्या करने जाएँगे अर्थात इसी लोक में भटकते रहेंगे। यमपुरी में उन्हें बाँधकर मारा जाता है और उनको बहुत अधिक

मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ मेरा प्रभु वेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ नानक तिसु सरणाई भजि पउ आपे बखसि मिलाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मारू महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपिओ नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि सरणि परे ॥ दालदु भंजि सुदामे मिलिओ भगती भाइ तरे ॥ भगति वछलु हरि नामु क्रितारथु गुरमुखि क्रिपा करे ॥ १ ॥ मेरे मन नामु जपत उधरे ॥ ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥ नामा जैदेउ कबीरु त्रिलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥ गुरमुखि नामि लगे से उधरे सभि किलबिख पाप टरे ॥ २ ॥ जो जो नामु जपै अपराधी सभि तिन के दोख परहरे ॥ बेसुआ रवत अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नाराइणु नरहरे ॥ नामु जपत उग्रसैणि गति पाई तोड़ि बंधन मुकति करे ॥ ३ ॥ जन कउ आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥ सेवक पैज रखै मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥ जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिओ नामु हरे ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू महला ४ ॥ सिध समाधि जपिओ लिव लाई साधिक मुनि जपिआ ॥ जती सती संतोखी धिआइआ मुखि इंद्रादिक रविआ ॥ सरणि परे जपिओ ते भाए गुरमुखि पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरे मन नामु जपत तरिआ ॥ धंना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरि नर गण गंधरबे जपिओ रिखि बपुरै हरि गाइआ ॥ संकरि ब्रहमै देवी जपिओ मुखि हरि हरि नामु जपिआ ॥ हरि हरि नामि जिना मनु भीना ते गुरमुखि पारि पइआ ॥ २ ॥ कोटि कोटि तेतीस धिआइओ हरि जपतिआ अंतु न पाइआ ॥ बेद पुराण सिम्रिति हरि जपिआ मुखि पंडित हरि गाइआ ॥ नामु रसालु जिना मनि वसिआ ते गुरमुखि पारि पाइआ ॥ ३ ॥ अनत तरंगी नामु जिन जपिआ मै गणत न करि सकिआ ॥ गोबिदु क्रिपा करे थाइ पाए जो हरि प्रभ मनि भाइआ ॥ गुरि धारि क्रिपा हरि नामु द्रिड़ाइओ जन नानक नामु लइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

सज़ा मिलती है।। ३ ।। मेरा प्रभु तो बेपरवाह है और उसे तिल भर भी लालच नहीं। हे नानक, भागकर उसकी शरण में आ जा वह स्वयं ही तुझे क्षमा करके अपने में मिला लेगा।। ४ ।। ५ ।।

मारू महला ४ घरु २ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जनक के शिष्य शुकदेव ने अपने गुरु के उपदेश के फलस्वरूप प्रभु नाम का जाप किया और प्रभु की शरण में पड़ा रहा। सुदामा की दरिद्रता नष्ट करके वह (प्रभु) उसे मिला और उसकी भक्ति भावना के कारण उसको पार उतार दिया। प्रभु नाम भक्तवत्सल और कृतार्थ करने वाला है तथा प्रभु गुरमुख बने व्यक्ति पर ही कृपा करता है।। १ ।। हे मेरे मन, नाम सुमिरन से ही उद्धार होता है; ध्रुव, प्रहलाद, दासी पुत्र विदुर गुरमुख बनकर ही प्रभु नाम के माध्यम से पार उतर गए हैं।। १ ।। रहाउ।। कलियुग में प्रभु-नाम ही प्रमुख पदार्थ है जिसे पाकर भक्तजन पार उतर गए हैं। नामदेव, जयदेव, कबीर, त्रिलोचन और रविदास आदि सबके प्रभु नाम के कारण ही दोष नष्ट हो गए हैं। गुरमुख बनकर जो प्रभु नाम में लीन हो गए हैं उनका उद्धार हो गया है और उनके सभी दोष और पाप समाप्त हो गए हैं।। २ ।। जिन अपराधियों ने भी प्रभु-नाम का सुमिरन किया है उनके सभी पाप दूर हो जाते हैं। वेश्या के साथ रमण करने वाला अजामिल नारायण प्रभु का मुख से उच्चारण करने पर अन्ततः पार उतर गया। कंस के पिता उग्रसेन ने भी प्रभु के नाम का सुमिरन करने से ही गति प्राप्त की और उसके बन्धनों को तोड़कर उसे मुक्त कर दिया गया।। ३ ।। प्रभु स्वयं अंगीकार करके अपने सेवकों पर कृपा करता है। मेरा प्रभु अपने सेवकों के सम्मान की रक्षा करता है और जो उसकी शरण में आ जाते है उनका उद्धार हो जाता है। हे नानक, अपने दासों पर प्रभु कृपा धारण करता है और उनके हृदय में प्रभु-नाम को टिका देता है।। ४ ।। १ ।। मारू महला ४ ।। सिद्ध और साधक मुनियों ने समाधि में लौ लगाकर उस एक प्रभु के ही नाम का जाप किया है। यतियों, त्यागियों, सन्तोषी व्यक्तियों और इन्द्र आदि ने भी अपने मुख से प्रभु नाम का ही सुमिरन किया है। जब उन्होंने प्रभु की शरण में पड़कर प्रभु नाम का सुमिरन किया तो वे को अच्छे लगने लगे और वे गुरमुख बनकर संसार सागर से पार उतर गए हैं।। १ ।। हे मेरे मन, हर व्यक्ति नाम का सुमिरन करके ही पार उतरा है। धन्ना जाट और जीवन के पहले भाग में लूटपाट करने वाला वालमीकी भी गुरमुख बनकर पार उतर गया।। १ ।। रहाउ ।। देवता, मानव, गण-गन्धर्व और बेचारे ऋषियों आदि ने भी उस प्रभु का ही जाप किया है और उसी का ही यश गाया है। शंकर, ब्रह्मा और देवी ने भी उसी का जाप किया है और मुख से प्रभु-नाम का ही सुमिरन किया है। प्रभु-नाम में जिनका मन भीग गया है वे गुरमुख बनकर पार उतर गए हैं।। २ ।। तैंतीस करोड़ देवताओं ने भी उसी का सुमिरन किया है और सुमिरन करते हुए भी उसके वास्तविक रहस्य को नहीं जान पाए। वेद, पुराण, स्मृति आदि ने भी प्रभु को ही जपा है और पंडितजनों ने भी मुख से उसी प्रभु का गुणानुवाद किया। रसों का पुंज प्रभु नाम जिनके मन में बस गया है वे गुरमुख पार उतर गए हैं।। ३ ।। अनन्त लहरों वाले प्रभु के नाम का जिन्होंने सुमिरन किया है मैं तो उनकी गिनती भी नहीं कर सका। प्रभु कृपा करता है और उस जीव की मेहनत को सफल बनाता है जो प्रभु के मन को भा गया होता है। गुरु ने कृपा करके प्रभु नाम को मन में पक्का कर लिया है और दास नानक ने उस नाम को प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। २ ।।

मारू महला ४ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु निधानु लै गुरमति हरि पति पाइ ॥ हलति पलति नालि चलदा हरि अंते लए छडाइ ॥ जिथै अवघट गलीआ भीड़ीआ तिथै हरि हरि मुकति कराइ ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा मै हरि हरि नामु द्रिड़ाइ ॥ मेरा मात पिता सुत बंधपो मै हरि बिनु अवरु न माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै हरि बिरही हरि नामु है कोई आणि मिलावै माइ ॥ तिसु आगै मै जोदड़ी मेरा प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआल प्रभु हरि मेले ढिल न पाइ ॥ २ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ से भागहीण मरि जाइ ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मरि जंमहि आवै जाइ ॥ ओइ जम दरि बधे मारीअहि हरि दरगह मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ तू प्रभु हम सरणागती मोकउ मेलि लैहु हरि राइ ॥ हरि धारि क्रिपा जगजीवना गुर सतिगुर की सरणाइ ॥ हरि जीउ आपि दइआलु होइ जन नानक हरि मेलाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥ मारू महला ४ ॥ हउ पूंजी नामु दसाइदा को दसे हरि धनु रासि ॥ हउ तिसु विटहु खन खंनीऐ मै मेले हरि प्रभ पासि ॥ मै अंतरि प्रेमु पिरंम का किउ सजणु मिलै मिलासि ॥ १ ॥ मन पिआरिआ मित्रा मै हरि हरि नामु धनु रासि ॥ गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि धीरक हरि साबासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि आपि मिलाइ गुरू मै दसे हरि धनु रासि ॥ बिनु गुर प्रेमु न लभई जन वेखहु मनि निरजासि ॥ हरि गुर विचि आपु रखिआ हरि मेले गुर साबासि ॥ २ ॥ सागर भगति भंडार हरि पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुरु तुठा खोलि देइ मुखि गुरमुखि हरि परगासि ॥ मनमुखि भाग विहूणिआ तिख मुईआ कंधी पासि ॥ ३ ॥ गुरु दाता दातारु है हउ मागउ दानु गुर पासि ॥ चिरी विछुंना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस ॥ गुर भावै सुणि बेनती जन नानक की अरदासि ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि हरि कथा सुणाइ प्रभ गुरमति हरि रिदै समाणी ॥ जपि हरि हरि कथा वडभागीआ हरि उतम पदु

मारू महला ४ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु नाम के भण्डार को प्राप्त करके गुरमति के माध्यम से प्रभु का सम्मान प्राप्त कर। वह प्रभु ही इस लोक और परलोक में साथ चलता है और अंत में मुक्त करा देता हैं। जहाँ बहुत ही कठिन मार्ग और तंग गलियाँ है वहाँ प्रभु बन्धन मुक्त कर देता है।। १ ।। हे मेरे सच्चे गुरु, मुझे उस प्रभु नाम को पक्की तरह समझा दो। हे मेरी माँ, मेरा माता, पिता, पुत्र, बन्धु, प्रभु ही है और उस प्रभु के बिना मेरा अन्य कोई नहीं है।। १ ।। रहाउ।। मैं प्रभु का प्यारा हूँ और प्रभु नाम का ही मुझे विरह है; हे माँ, कोई आकर मुझे उस प्रभु से मिला दे। उसके सामने मेरी बहुत ही परिश्रमपूर्ण की हुई मिन्नत है जो मुझे मेरे प्रभु से मिला दे। वह सच्चा गुरु प्रभु दयालु और सर्वव्यापक है जो प्रभु से मिलाने में जरा भी देर नहीं करता।। २ ।। जिन्होंने प्रभु नाम का सुमिरन नहीं किया वे भाग्यहीन बने हुए ही मर जाते हैं; वे बार बार योनियों मे भटकते हैं, जन्मते-मरते हैं और आते जाते रहते हैं। यम के द्वार पर बाँधकर उन्हें मारा जाता है और प्रभु के दरबार में भी उन्हें सजा मिलती है।। ३ ।। हे प्रभु, हम तेरी शरण मे हैं और हे प्रभु सम्राट, मुझे अपने से मिला ले। हे जगजीवन प्रभु, हम पर कृपा करो क्योंकि हम सच्चे गुरु की शरण में आ गए हैं। प्रभु स्वयं दयालु होता है और हे नानक, सेवकों को अपने से मिला लेता है।। ४ ।। १ ।। ३ ।। मारू महला ४ ।। मैं प्रभु नाम की रासपूंजी के बारे में पूछता हूँ, कोई मुझे उस प्रभु धन रूपी पूँजी के बारे में बताए। जो मुझे प्रभु से मिला दे मैं उस पर टुकड़े टुकड़े होकर कुर्बान जाता हूँ। इस प्रकार मुझे मेरा साजन मिल सकता है क्योंकि मेरे अन्तर्मन में उस प्रियतम के लिये प्रेम भर चुका है।। १ ।। हे मेरे प्यारे मित्र मन, मेरे पास तो प्रभु नाम के धन की ही रासपूंजी है। पूर्ण गुरु ने मेरे मन में प्रभु-नाम को पक्का किया है जिससे मेरे मन को धैर्य मिला है और मैं प्रभु को धन्य कहता हूँ।। १ ।। रहाउ।। गुरु स्वयं ही प्रभु से मिलाता है और मुझे प्रभु रूपी धन राशि का पता बताता है। हे सेवकजनों, मन में निर्णय पूर्वक जान लो कि गुरु के बिना प्रेम स्वरूप प्रभु का पता नही लगता। प्रभु ने गुरु में ही अपने आप को स्थित किया होता है और धन्य तथा शाबाश कहने योग्य गुरु ही प्रभु से मिलाता है।। २ ।। समुद्रों जितने भक्ति के भण्डार उस सच्चे गुरु प्रभु के पास ही हैं। सच्चा गुरु कृपालु होकर उन भण्डारों को खोल देता है और गुरमुख बने व्यक्तियों को प्रभु के प्रकाश के माध्यम से प्रकाशित कर देता है। मनमुख व्यक्ति तो ऐसे भाग्यहीन हैं कि वे पानी के किनारे पर भी प्यासे मर जाते हैं।। ३ ।। गुरु ही दाताओं का दाता है और मैं गुरु के पास ही यह दान माँगता हूँ कि बहुत देर से बिछुड़े हुए मुझ को उस प्रभु से मिला दे क्योंकि मै तन-मन में बहुत बड़ी आशा लेकर आया हूँ। हे नानक, सेवकों की अरदास सुनकर वह गुरु के मन को भा जाती है (और वह कृपा करता है) ।। ४ ।। २ ।। ४ ।। मारू महला ४ ।। प्रभु की कथा सुनाते रहने से गुरु की मति के माध्यम से वह प्रभु हृदय में समा जाता है। हे भाग्यशाली जीव, तुम प्रभु की कथा का जाप करो क्योंकि प्रभु के माध्यम से ही उत्तम

निरबाणी ॥ गुरमुखा मनि परतीति है गुरि पूरै नामि समाणी ॥ १ ॥ मन मेरे मै हरि हरि कथा मनि भाणी ॥ हरि हरि कथा नित सदा करि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनु तनु खोजि ढंढोलिआ किउ पाईऐ अकथ कहाणी ॥ संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ॥ मेरै मनि तनि नामु अधारु हरि मै मेले पुरखु सुजाणी ॥ २ ॥ गुर पुरखै पुरखु मिलाइ प्रभ मिलि सुरती सुरति समाणी ॥ वडभागी गुरु सेविआ हरि पाइआ सुघड़ सुजाणी ॥ मनमुख भाग विहूणिआ तिन दुखी रैणि विहाणी ॥ ३ ॥ हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि दीजै अंम्रित बाणी ॥ सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी ॥ जन नानक सरणागती करि किरपा नामि समाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हरि मनि राखु ॥ मिलि संगति सरधा ऊपजै गुर सबदी हरि रसु चाखु ॥ सभु मनु तनु हरिआ होइआ गुरबाणी हरि गुण भाखु ॥ १ ॥ मन पिआरिआ मित्रा हरि हरि नाम रसु चाखु ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हलति पलति पति राखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि कीरति गुरमुखि चाखु ॥ तनु धरती हरि बीजीऐ विचि संगति हरि प्रभ राखु ॥ अंम्रितु हरि हरि नामु है गुरि पूरै हरि रसु चाखु ॥ २ ॥ मनमुख त्रिसना भरि रहे मनि आसा दह दिस बहु लाखु ॥ बिनु नावै ध्रिगु जीवदे विचि बिसटा मनमुख राखु ॥ ओइ आवहि जाहि भवाईअहि बहु जोनी दुरगंध भाखु ॥ ३ ॥ त्राहि त्राहि सरणागती हरि दइआ धारि प्रभ राखु ॥ संतसंगति मेलापु करि हरि नामु मिलै पति साखु ॥ हरि हरि नामु धनु पाइआ जन नानक गुरमति भाखु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मारू महला ४ घरु ५ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि भगति भरे भंडारा ॥ गुरमुखि रामु करे निसतारा ॥ जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी सो हरि के गुण गावै जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि क्रिपा करे बनवाली ॥ हरि हिरदै सदा सदा समाली ॥ हरि हरि नामु

निर्वाण पद प्राप्त होता है। गुरमुख व्यक्तियों के मन में प्रभु का प्रेम है और यह प्रीति पूर्ण गुरु प्रभु के नाम के माध्यम से हृदय में समाती है।। १ ।। हे मेरे मन, मुझको हरि की कथा ही अच्छी लगती है तू सदैव प्रभु की कथा वार्ता ही कहता रह क्योंकि गुरमुख के लिये यही अकथनीय बात है।। १ ।। रहाउ।। मैंने तन मन को भली प्रकार से खोज लिया है परन्तु उस प्रभु की अकथनीय वार्ता को नहीं जाना जा सकता। सन्तजनों के साथ मिलकर उसे पाया जाता है और उसकी अकथनीय मन को भाने वाली कथा सुनी कही जाती है। मेरे तन मन का आसरा प्रभु नाम ही है और मुझे सयाने पुरुष-गुरु ने उससे मिला दिया है।। २ ।। गुरु पुरुष ने परम पुरुष से मिला दिया है और उसे मिलकर हमारी सुरति उस सुरति वाले प्रभु में लीन हो गई है। बड़े भाग्य से हमने गुरु की सेवा की है और सुन्दर सुजान प्रभु को पा लिया है। मनमुख व्यक्ति भाग्य विहीन होते हैं और उनकी जीवन रूपी रात दुखों में ही बीतती है।। ३ ।। हे प्रभु, हम तेरे द्वार के दीन याचक हैं तू हमें अपनी अमृतवाणी प्रदान कर। सच्चा गुरु-प्रभु मेरा मित्र है और हे प्रभु, मुझे सुन्दर सुजान लोगों से ही मिलाओ। दास नानक तो तुम्हारी शरण में आया है और तुम्हारी कृपा से ही इसे प्रभु नाम में लीन होना है।। ४ ।। ३ ।। ५ ।। मारू महला ४ ।। प्रभु के वैराग्य वाला प्रेम लगा है और बड़े भाग्यशाली बनकर उस प्रभु को अपने मन में बसाए रख। सत्संगति में मिलकर श्रद्धा उत्पन्न होती है और हे जीव, तू शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु रस का पान कर। तेरा मन तन हरा भरा हो गया है, तू गुरबाणी के माध्यम से प्रभु के गुणों का उच्चारण कर।। १ ।। हे मेरे प्यारे मित्र मन, तू प्रभु के नाम रस को चख ले। पूर्ण गुरु के माध्यम से ही प्रभु पाया जाता है जो इस लोक और परलोक में हमारे सम्मान की रक्षा करता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु के नाम का सुमिरन गुरमुख बनकर और प्रभु का गुणानुवाद रूपी रस चख कर करना चाहिए। तन रूपी धरती पर प्रभु रूपी बीज बोया जाता है और वह प्रभु सदैव संगति में ही निवास बनाए रखता है। प्रभु का नाम ही अमृत है और इस प्रभु रस को पूर्ण गुरु के माध्यम से चखा जाता है।। २ ।। मनमुख व्यक्ति तृष्णाओं से भरे रहते हैं और उनके मन में दसों दिशाओं की लाखों आशाएँ बनी रहती हैं। प्रभु नाम से विहीन होकर वे धिक्कार योग्य जीवन जीते हैं। मनमुख बने हुए लोगों को गन्दगी में ही रखा जाता है। वे आवागमन में पड़े भटकते रहते हैं और अनेकों योनियों की दुर्गंध खाते रहते हैं।। ३ ।। मैं "बचा लो, बचा लो" कहता हुआ हे प्रभु, तुम्हारी शरण में आया हूँ; तुम दया करके मुझे बचा लो। जब सन्त पुरुषों की संगति से मिलाप हो जाता है तो प्रभु नाम का भरोसा और सम्मान प्राप्त हो जाता है। दास नानक ने तो गुरु के उपदेश का उच्चारण करते हुए प्रभु रूपी नाम धन को प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। ४ ।। ६ ।।

मारू महला ४ घरु ५   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु की भक्ति ही सभी भण्डार भरती है और प्रभु गुरमुख बने व्यक्ति का ही पार उतारा करता है। जिस पर मेरा स्वामी प्रभु कृपा कर दे वही प्रभु का गुणानुवाद करता है।। १ ।। प्रभु ही कृपा करता है जिससे सदैव उस प्रभु को ही हृदय में याद किया जाता है। हे मेरे मन, प्रभु नाम का ही जाप करो क्योंकि प्रभु नाम का जाप ही हमें मुक्त कराता है।। १ ।। रहाउ।।

जपहु मेरे जीअड़े जपि हरि हरि नामु छडावै जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागरु अंम्रितु हरि नाउ ॥ मंगत जनु जाचै हरि देहु पसाउ ॥ हरि सति सति सदा हरि सति हरि सति मेरै मनि भावै जीउ ॥ २ ॥ नवे छिद्र स्रवहि अपवित्रा ॥ बोलि हरि नाम पवित्र सभि किता ॥ जे हरि सुप्रसंनु होवै मेरा सुआमी हरि सिमरत मलु लहि जावै जीउ ॥ ३ ॥ माइआ मोहु बिखमु है भारी ॥ किउ तरीऐ दुतरु संसारी ॥ सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा जपि हरि हरि पारि लंघावै जीउ ॥ ४ ॥ तू सरबत्र तेरा सभु कोई ॥ जो तू करहि सोई प्रभ होई ॥ जनु नानकु गुण गावै बेचारा हरि भावै हरि थाइ पावै जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥ ७ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे ॥ सभि किलविख काटै हरि तेरे ॥ हरि धनु राखहु हरि धनु संचहु हरि चलदिआ नालि सखाई जीउ ॥ १ ॥ जिस नो क्रिपा करे सो धिआवै ॥ नित हरि जपु जापै जपि हरि सुखु पावै ॥ गुर परसादी हरि रसु आवै जपि हरि हरि पारि लंघाई जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ निरंकारु सति नामु ॥ जग महि स्रेसटु ऊतम कामु ॥ दुसमन दूत जमकालु ठेह मारउ हरि सेवक नेड़ि न जाई जीउ ॥ २ ॥ जिसु उपरि हरि का मनु मानिआ ॥ सो सेवकु चहु जुग चहु कुंट जानिआ ॥ जे उस का बुरा कहै कोई पापी तिसु जमकंकरु खाई जीउ ॥ ३ ॥ सभ महि एकु निरंजन करता ॥ सभि करि करि वेखै अपणे चलता ॥ जिसु हरि राखै तिसु कउणु मारै जिसु करता आपि छडाई जीउ ॥ ४ ॥ हउ अनदिनु नामु लई करतारे ॥ जिनि सेवक भगत सभे निसतारे ॥ दस अठ चारि वेद सभि पूछहु जन नानक नामु छडाई जीउ ॥ ५ ॥ २ ॥ ८ ॥

मारू महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

डरपै धरति अकासु नख्यत्रा सिर ऊपरि अमरु करारा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा ॥ १ ॥ एका निरभउ बात सुनी ॥ सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिलि गाइ गुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देहधार अरु देवा डरपहि सिध साधिक डरि मुइआ ॥ लख चउरासीह मरि मरि जनमे फिरि फिरि

प्रभु का अमृत नाम सुखों का सागर है। तेरा सेवक याचक बनकर उसकी याचना करता है; हे प्रभु, तुम कृपा करके प्रदान करो। प्रभु सत्य है, सदैव सत्य रूप है और वह प्रभु रूपी सत्य ही मेरे मन को अच्छा लगता है।। २ ।। शरीर के नौ छिद्र बहते रहते हैं और अपवित्र बने रहते हैं परन्तु प्रभु नाम का उच्चारण करके इन सबको पवित्र कर दिया गया है। यदि मेरा स्वामी प्रभु प्रसन्न हो जाए तो प्रभु का सुमिरन करने से इनकी मैल दूर हो जाती है।। ३ ।। माया मोह बहुत ही अधिक विषम है और इस ना तैरे जा सकने वाले संसार को कैसे तैरा जा सकता है। सच्चा प्रभु सच्चे गुरु के रूप में जहाज़ देता है जो प्रभु-नाम का सुमिरन करता हुआ पार उतार देता है। तू सब स्थानों में है और सब कोई तेरे ही हैं। हे प्रभु, जो तू करता है वास्तव में वही होता है। दास नानक तो विनम्र बनकर उसके गुण गाता है परन्तु यदि प्रभु को अच्छा लगे तभी उसका गुणानुवाद सफल होता है।। ५ ।। १ ।। ७ ।। मारू महला ४ ।। हे मेरे मन, प्रभु-नाम का सुमिरन करो; प्रभु तेरे सभी पापों को नष्ट कर देगा। प्रभु रूपी धन को अपने पास रखो, प्रभु रूपी धन को ही इकट्ठा करते रहो क्योंकि चलते हुए लोगों के साथ प्रभु ही सहायक होता है।। १ ।। जिस पर प्रभु कृपा करता है वही प्रभु नाम की आराधना करता है। जीव सदैव प्रभु के नाम का जाप जपता हुआ प्रभु रूपी सुख प्राप्त करता है। गुरु की कृपा से हरि रस प्राप्त होता है और प्रभु का जाप ही पार उतार देता है।। १ ।। रहाउ।। वह सच्चा नाम निर्भय एवं निराकार है। नाम का जाप करना ही इस संसार में श्रेष्ठ और उत्तम कर्म है। अब मैं शत्रु, यमदूत और यमकाल को देखते ही मार डालता हूँ और वे प्रभु के सेवक के पास भी नहीं आते।। २ ।। जिस पर प्रभु का मन सन्तुष्ट हो गया उस सेवक को तो चारों युगों और चारों दिशाओं में जाना जाता है। यदि कोई पापी उस सेवक का बुरा करता और उसके बारे में बुरा कहता है तो उसे यूमदूत खा ही जाता है।। ३ ।। सबमें वह एक निरंजन कर्ता प्रभु ही है और वह अपने कौतुक करता हुआ सबके माध्यम से उन्हें देखता रहता है। जिसे कर्ता प्रभु स्वयं छुड़ा लेता है और जिसे प्रभु स्वयं बचा लेता है उसे भला कौन मार सकता है।। ४ ।। मैं तो सदैव उस कर्ता प्रभु का ही नाम लेता रहता हूँ जिसने सेवक और भक्त सबका पार उतारा कर दिया। अठारह पुराण और चारों वेद सब की गवाही ले लो वे यही कहेंगे कि हे दास नानक, प्रभु नाम ही छुड़ा लेने वाला अर्थात मुक्ति दिलाने वाला होता है।। ५ ।। २ ।। ८ ।।

मारू महला ५ घरु २।। १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

धरती, आकाश, नक्षत्र सभी डरते हैं क्योंकि इन सबके सिर के उपर प्रभु का कड़ा हुकुम कार्यशील बना रहता है। पवन, पानी, अग्नि भी डरते है और बेचारा इन्द्र भी डरता है।। १ ।। हमने तो यह बात सुनी है कि केवल एक प्रभु ही निर्भय है। वही व्यक्ति सदैव सुखी और सन्तुष्ट बना रहता है जो गुरु से मिलकर उस प्रभु के गुणों का गायन करता है।। १ ।। रहाउ ।। देहधारी मनुष्य और देवता भी डरते हैं तथा सिद्ध साधक तो उस प्रभु के डर में मरे जाते हैं। चौरासी लाख जीव मर-मर कर जन्मते हैं और बार-बार

जोनी जोइआ ॥ २ ॥ राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप उपाइआ ॥ छल बपुरी इह कउला डरपै अति डरपै धरम राइआ ॥ ३ ॥ सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥ कहु नानक भगतन का संगी भगत सोहहि दरबारा ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू महला ५ ॥ पांच बरख को अनाथु ध्रू बारिकु हरि सिमरत अमर अटारे ॥ पुत्र हेति नाराइणु कहिओ जमकंकर मारि बिदारे ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥ मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥ एक निमख मन माहि अराधिओ गजपति पारि उतारे ॥ २ ॥ कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ बिदरु दासी सुतु भइओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥ ३ ॥ कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ आइओ साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥ ४ ॥ २ ॥ मारू महला ५ ॥ वित नवित भ्रमिओ बहु भाती अनिक जतन करि धाए ॥ जो जो करम कीए हउ हउमै ते ते भए अजाए ॥ १ ॥ अवर दिन काहू काज न लाए ॥ सो दिनु मोकउ दीजै प्रभ जीउ जा दिन हरि जसु गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुत्र कलत्र ग्रिह देखि पसारा इस ही महि उरझाए ॥ माइआ मद चाखि भए उदमाते हरि हरि कबहु न गाए ॥ २ ॥ इह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु संतन नही पाए ॥ तुम दातार वडे प्रभ संम्रथ मागन कउ दानु आए ॥ ३ ॥ तिआगिओ सगला मानु महता दास रेण सरणाए ॥ कहु नानक हरि मिलि भए एकै महा अनंद सुख पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ मारू महला ५ ॥ कवन थान धीरिओ है नामा कवन बसतु अहंकारा ॥ कवन चिहन सुनि ऊपरि छोहिओ मुख ते सुनि करि गारा ॥ १ ॥ सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइओ ॥ एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ पंच तत मिलि भइओ संजोगा इन महि कवन दुराते ॥ २ ॥ जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ जनम मरणु उस ही कउ है रे ओहा आवै जाई ॥ ३ ॥ बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ भणति नानकु जब खेलु

योनियों में हांके जाते हैं।। २ ।। रजोगुणी, सतोगुणी, तमोगुणी कितने ही रूपों में उत्पन्न जीव उस प्रभु के हुकुम में डरते रहते हैं। माया लक्ष्मी जो स्वयं छल का रूप है वह भी डरती रहती है और धर्मराज तो अत्यन्त भयभीत रहता है।। ३ ।। जितनी भी सामग्री है उसमें डर व्याप्त बना हुआ है और बिना भय के वह कर्ता प्रभु ही है। नानक कहता है कि वह प्रभु ही भक्तों का संगी साथी है और भक्तजन ही उस प्रभु के दरबार में शोभायमान बने रहते हैं।। ४ ।। १ ।। मारू महला ५ ।। पाँच वर्ष का अनाथ बालक ध्रुव प्रभु का सुमिरन करने से अमर पद को प्राप्त कर गया। अजामिल ने पुत्र के स्नेह के कारण नारायण नाम लेकर उसे पुकारा तो यम के दूत मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए।। १ ।। हे मेरे प्रभु, तुमने अनगिनत लोगों का उद्धार किया है। मैं थोड़ी सी बुद्धि वाला दीन और गुण विहीन तेरे द्वार पर तेरी शरण में आ पड़ा हूँ।। १ ।। रहाउ।। बुरी से बुरी चीजों को भी खा जाने वाला वालमीकि भी पार उतर गया और कृष्ण को मारने वाले शिकारी जैसे बेचारे लोग भी पार उतर गए हैं। गजराज ने एक क्षण भर के लिये मन में प्रभु की आराधना की और वह भी पार उतर गया।। २ ।। प्रहलाद भक्त की भी प्रभु ने रक्षा की और हिरण्यकश्यप को नाखुनों से ही फाड़ डाला। दासी पुत्र विदुर भी प्रभु के कारण पवित्र हो गया और उसके समस्त कुल उज्जवल हो गए।। ३ ।। मैं तो झूठे मोह में मग्न पड़ा हूँ। भला मैं अपने कौन-कौन से अपराध बताऊं। नानक तो प्रभु का आसरा लेकर प्रभु की शरण में आ गया है इसलिये हे प्रभु, मुझे लम्बी भुजा करके अपने हाथ से पकड़ लो।। ४ ।। २ ।। मारू महला ५ ।। धन के लिये मैं बहुत तरीकों से भागा दौड़ा हूँ और अनेकों यत्न करके मैं चलता रहा हूँ परन्तु अहंकार वश होकर जितने भी कर्म किये हैं वे सब व्यर्थ हो गए हैं।। १ ।। अन्य दिनों को तो मैं किसी काम नहीं लाया इसलिये हे प्रभु, मुझे वही दिन प्रदान करो जिस दिन मैं हरि यश का गायन करता रहूँ।। १ ।। रहाउ।। पुत्र, स्त्री और घर का प्रपंच देखकर हम इसी में ही उलझे रहे। माया के अभिमान को चखकर हम मदमस्त हो गए हैं और हमने कभी भी प्रभु यश का गायन नहीं किया।। २ ।। इस प्रकार हमने बहुत विधियों से उस प्रभु को खोजा परन्तु सन्तजनों के बिना उसे पा नहीं सके। हे प्रभु, तुम बड़े दाता और समर्थ हो; हम यह दान माँगने के लिए तुम्हारे पास आ गए हैं।। ३ ।। हमने अपने सभी अभिमान और महत्व को त्याग दिया है और तेरे दासों की चरण धूलि बनकर तेरी शरण में आ गए हैं। नानक का कथन है कि हम प्रभु से मिलकर एक रूप हो गए हैं और उसके महा आनन्द और सुख को प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। ३ ।। मारू महला ५ ।। यह महिमा और बड़प्पन कहाँ टिके हुए हैं और इस अहंकार का निवास कहाँ हैं। मुँह से गालियाँ सुनकर तुझे कौन सा घाव लगा है जिससे हे जीव तू इतना क्रोधित बना है।। १ ।। अरे भाई सुन, तू कौन है और कहाँ से आया है। तू इतना भी नहीं जानता कि तेरे पास यहाँ कितना समय है; तुझे चले जाने की तो खबर भी नहीं दी जाएगी अर्थात अचानक ही यहाँ से ले जाया जाएगा।। १ ।। रहाउ।। पवन और पानी बहुत सहनशील हैं और निःसन्देह धरती क्षमाशील है। पाँचों तत्वों का संयोग ही बना है और यह सृष्टि पैदा हुई है; तो इनमें भला कौन सी बुरी बात है।। २ ।। जिस विधाता पुरुष ने यह रचना रची है और इसमें अहंकार को डाल दिया है; वास्तव में यह जन्म-मरण तो उसी का हो रहा है और वह प्रभु ही आता जाता रहता है।। ३ ।। इस रचना में कोई भी वर्ण और चिन्ह साथी नहीं है। यह सारा प्रपंच झूठा ही है। नानक कहता है कि वह जब अपने खेल

उझारै तब एकै एकंकारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ मारू महला ५ ॥ मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न घालिओ ॥ नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिओ ॥ १ ॥ सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥ जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिओ ॥ सहजु अनंदु रखिओ ग्रिह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ ॥ २ ॥ आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिओ ॥ जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता ॥ धंनु सेवकु सफलु ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता ॥ ४ ॥ ५ ॥ मारू महला ५ ॥ खुलिआ करमु क्रिपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥ स्रमु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥ १ ॥ अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥ चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥ सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइओ दूराई ॥ २ ॥ सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए संत सहाई ॥ पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई ॥ ३ ॥ निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण ओटाई ॥ नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥ ४ ॥ ६ ॥ मारू महला ५ ॥ जो समरथु सरब गुण नाइकु तिस कउ कबहु न गावसि रे ॥ छोडि जाइ खिन भीतरि ता कउ उआ कउ फिरि फिरि धावसि रे ॥ १ ॥ अपुने प्रभ कउ किउ न समारसि रे ॥ बैरी संगि रंग रसि रचिआ तिसु सिउ जीअरा जारसि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै नामि सुनिऐ जमु छोडै ता की सरणि न पावसि रे ॥ काढि देइ सिआल बपुरे कउ ता की ओट टिकावसि रे ॥ २ ॥ जिस का जासु सुनत भव तरीऐ ता सिउ रंगु न लावसि रे ॥ थोरी बात अलप सुपने की बहुरि बहुरि अटकावसि रे ॥ ३ ॥ भइओ प्रसादु क्रिपा निधि ठाकुर संतसंगि पति पाई ॥ कहु नानक त्रै गुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भए सहाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ मारू महला ५ ॥ अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिओ ॥ हसत पाव झरे खिन भीतरि

को उजाड़ देता है तब सब कुछ फिर एक ही आकार प्रभु रूप हो जाता है।। ४ ।। ४।। मारू महला ५ ।। अभिमान, मोह और लोभ के विकार बने हुए हैं परन्तु हमने प्रभु के बिना दूसरे किसी को भी हृदय में नही आने दिया है। हमने प्रभु-नाम रूपी रत्न के गुणों का व्यापार किया है और प्रभु नाम के सौदे को लादकर हम चल पड़े हैं।। १ ।। अंततः सेवक के प्रेम ने ही साथ दिया है। इस प्रीति के रहते हुए जीवन में तो हमने उस मालिक की सेवा की है और यहाँ से चलते ही उसे अपने चित्त में बनाए रखा।। १ ।। रहाउ।। उस प्रभु ने हमें जो आज्ञा की हमने उससे मुँह नहीं मोड़ा। यदि उसने हमें अपने घर में रक्खा तो वहाँ भी हमने स्वाभाविक आनन्द का अनुभव किया और यदि उसने उठने को कहा तो मैं उठकर दौड़ पड़ा।। २ ।। यदि भूख भी लगी तो उसकी आज्ञा में रहते हुए हमने उसे सुखदायक माना तथा हर्ष और शोक को बिल्कुल ही नहीं जाना। प्रभु की जो आज्ञा हुई उसको हमने माथे पर रखकर माना है।। ३ ।। प्रभु अपने सेवक पर कृपालु हो गया तो उसका यह लोक और परलोक सँवर गया है। हे नानक, वह सेवक धन्य और उसका आना सफल है जिसने अपने प्रभु को पहचान लिया है।। ४ ।। ५ ।। मारू महला ५ ।। हमारा भाग्य खुल गया और प्रभु की कृपा हो गई जिस कारण मैं प्रभु का गुणानुवाद कर रहा हूँ। मेरी भाग दौड़ खत्म हो गई, मैंने विश्राम प्राप्त कर लिया और मेरी सारी भागदौड़ समाप्त हो गई है।। १ ।। अब मैंने आध्यात्मिक जीवन के पद को प्राप्त कर लिया है और शान्त पुरुषों की शरण में आने से वह विधाता पुरुष मेरे मन में याद आता रहता है।। १ ।। रहाउ।। मेरे काम, क्रोध, लोभ, मोह सभी दूर हो गए हैं और मेरे सारे शत्रु भी मुझसे परे हो गए हैं। वह प्रभु सदैव प्रत्यक्ष रूप में विराजमान है और वह कभी भी दूर नहीं होता।। २ ।। शान्त पुरुषों के सहायक बन जाने से हमें सुख, शीतलता और श्रद्धा पूर्णरूप से प्राप्त हो गए हैं। प्रभु ने पतितों को क्षण भर में ही पवित्र कर दिया है और उसकी महिमा का कथन नहीं किया जा सकता है।। ३ ।। प्रभु के चरणों का आसरा लेकर हम निर्भय हो गए हैं और हमने अपने सभी भय नष्ट कर लिए हैं। रात दिन लौ लगाकर नानक तो उस ठाकुर प्रभु का यश गाता रहता है।। ४ ।। ६ ।। मारू महला ५ ।। हे जीव, तू उसका कभी भी गुणानुवाद नहीं करता जो प्रभु समर्थ और सारे गुणों का मालिक है। तू बार-बार उसी तरफ दौड़ता है जिसे क्षण भर में ही छोड़ देना है।। १ ।। अरे तू अपने प्रभु को क्यों नहीं याद करता। तू अपने शत्रुओं के साथ प्रेम में लीन है इसीलिये तेरे प्राण जल रहे हैं।। १ ।। रहाउ।। जिसका नाम सुनने से यम दौड़ जाते हैं तू उसकी शरण में नहीं जाता। तू आलस्य रूपी नीच गीदड़ को अपने अन्दर से निकाल दे और उस प्रभु के आसरे में स्थिर हो जा।। २ ।। जिसका यश सुनने मात्र से संसार सागर से पार उतर जाया जाता है तू उसके साथ अपना प्रेम नहीं लगाता। स्वप्न की तरह यह सृष्टि छोटी सी बात है और तू बार-बार उसी में ही अटका रहता है।। ३ ।। कृपा के भण्डार उस प्रभु की कृपा हुई तो शान्त पुरुषों की संगति में मैंने सम्मान प्राप्त कर लिया और नानक का कथन है कि जब प्रभु ने मेरी सहायता की तो मेरे तीनों गुण और भ्रम समाप्त हो गए हैं।। ४ ।। ७ ।। मारू महला ५ ।। वह अन्तर्यामी प्रभु सभी विधियों को जानता है; उससे भला क्या छिपाया जा सकता है। क्षण भर में ही हाथ पाँव मर जाते हैं और

अगनि संगि लै जारिओ ॥ १ ॥ मूड़े तै मन ते रामु बिसारिओ ॥ लूणु खाइ करहि हरामखोरी पेखत नैन बिदारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असाध रोगु उपजिओ तन भीतरि टरत न काहू टारिओ ॥ प्रभ बिसरत महा दुखु पाइओ इहु नानक ततु बीचारिओ ॥ २ ॥ ८ ॥ मारू महला ५ ॥ चरन कमल प्रभ राखे चीति ॥ हरि गुण गावह नीता नीत ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोऊ ॥ आदि मधि अंति है सोऊ ॥ १ ॥ संतन की ओट आपे आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै वसि है सगल संसारु ॥ आपे आपि आपि निरंकारु ॥ नानक गहिओ साचा सोइ ॥ सुखु पाइआ फिरि दूखु न होइ ॥ २ ॥ ९ ॥

मारू महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

प्रान सुखदाता जीअ सुखदाता तुम काहे बिसारिओ अगिआनथ ॥ होछा मदु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ ॥ १ ॥ रे नर ऐसी करहि इआनथ ॥ तजि सारंगधर भ्रमि तू भूला मोहि लपटिओ दासी संगि सानथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरणीधरु तिआगि नीच कुल सेवहि हउ हउ करत बिहावथ ॥ फोकट करम करहि अगिआनी मनमुखि अंध कहावथ ॥ २ ॥ सति होता असति करि मानिआ जो बिनसत सो निहचलु जानथ ॥ पर की कउ अपनी करि पकरी ऐसे भूल भुलानथ ॥ ३ ॥ खत्री ब्राहमण सूद वैस सभ एकै नामि तरानथ ॥ गुरु नानकु उपदेसु कहतु है जो सुनै सो पारि परानथ ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥ मारू महला ५ ॥ गुपतु करता संगि सो प्रभु डहकावए मनुखाइ ॥ बिसारि हरि जीउ बिखै भोगहि तपत थंम गलि लाइ ॥ १ ॥ रे नर काइ पर ग्रिहि जाइ ॥ कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नही सुनिओ धरम राइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिकार पाथर गलहि बाधे निंद पोट सिराइ ॥ महा सागरु समुदु लंघना पारि न परना जाइ ॥ २ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि बिआपिओ नेत्र रखे फिराइ ॥ सीसु उठावन न कबहू मिलई महा दुतर माइ ॥ ३ ॥ सूरु मुकता ससी मुकता ब्रहम गिआनी अलिपाइ ॥ सुभावत जैसे बैसंतर अलिपत सदा निरमलाइ ॥ ४ ॥ जिसु करमु खुलिआ तिसु लहिआ पड़दा जिनि गुर पहि मंनिआ

जीव को अग्नि में जला दिया जाता है।। १ ।। हे मूर्ख, तूने मन से प्रभु को भुला दिया है। तू उसका नमक खाकर हरामखोरी कर रहा है; देखते ही देखते तुझे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा।। १ ।। रहाउ।। तेरे शरीर में ठीक ना होने वाला रोग पैदा हो गया है और यह रोग ला-इलाज है। नानक ने तो यही सार तत्व जाना है कि प्रभु को भुला देने से हे जीव, तूने महादुख पाया है।। २ ।। ८ ।। मारू महला ५ ।। जब प्रभु के चरण कमलों को चित्त में बसा लिया जाता है तो सदैव प्रभु के गुणों का ही गायन किया जाता है; उसके बिना दूसरा कोई भी नहीं और सृष्टि के आदि में मध्य में तथा अन्त में केवल वह ही बना रहने वाला है।। १ ।। वह परमात्मा स्वयं ही सन्त पुरुषों का आसरा है।। १ ।। रहाउ।। सारा संसार जिसके बस में है वह निराकार प्रभु स्वयं ही सब कुछ है। नानक ने तो उसी सच्चे प्रभु को पकड़ लिया है और उसी से उसने सुख प्राप्त किया है तथा अब फिर कभी भी दुख नहीं होता।। २ ।। ६ ।।

मारू महला ५ घरु ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे अज्ञानी जीव, प्राणों को सुख देने वाले उस प्रभु को तुमने क्यों भुला दिया है। संसार के विकारों का घटिया नशा पीकर तुम पागल बने हुए हो और इस दुर्लभ जीवन को तुमने व्यर्थ ही गँवा दिया है।। १ ।। हे मानव, तू ऐसी नासमझी का काम क्यों कर रहा है कि तुमने प्रभु को त्याग दिया है ; तू भ्रमों में भूला हुआ है, मोह में लिपटा है और दासी माया के साथ तुमने रिश्तेदारी बना रखी है।। १ ।। रहाउ ।। धरती को धारण करने वाले प्रभु को त्यागकर तू नीचता से सम्बन्ध बनाने वाली वन सम्पदा की सेवा करता है और मैं-मैं करते हुए ही तेरी आयु व्यतीत होती है। हे अज्ञानी, तू पाखण्डी कर्मकाण्ड करता रहता है और इसीलिये अन्धा मनमुख कहलाता है।। २ ।। जो सत्य और अटल है उसे तो तूने झूठा माना है और जो नष्ट होने वाला है उसे तूने अचल माना हुआ है। तू ऐसे भ्रमों में भूला है कि पराई वस्तु को अपनी जानकर उसे पकड़े रहता है।। ३ ।। क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र और वैश्य सभी केवल एक प्रभु के नाम के कारण ही पार उतरते हैं। गुरु नानक ने जो उपदेश दिया है जो उसे सुनता है वह पार उतर जाता है।। ४ ।। १ ।। १० ।। मारू महला ५ ।। जो तू काम छिपकर करता है उसमें भी वो प्रभु तेरे साथ ही होता है इसलिये तू केवल मनुष्यों को ही धोखा दे सकता है। तू प्रभु को भुलाकर विषय-विकारों का भोग करता है और वास्तव में तपे हुए खम्भे को गले लगाए रखने जैसा काम करता है।। १ ।। हे मानव, तू पराये घर की ओर क्यों जाता है। यह वासना रूपी काम अत्यन्त मैला, कठोर और गधे के समान हैं; क्या तुमने कभी धर्मराज के बारे में नहीं सुना अर्थात क्या तुझे यम का भय नहीं है।। १ ।। रहाउ।। विकारों के पत्थर तूने गले से बाँध रखे हैं और निंदा की गठरी तूने सिर पर रखी है। इस स्थिति में तुझे संसार रूपी महासागर पार करना है; तू पार नहीं कर सकेगा।। २ ।। काम, क्रोध, लोभ, मोह तुझमें भरे हुए हैं और तूने इन सबकी ओर से आँखें फेर रखी हैं। उस भयानक माया की ओर से तो तुझे सिर उठाने का कभी भी अवसर नहीं मिलता अर्थात तू उसमें पूर्ण रूप से लीन है।। ३ ।। सूर्य और चाँद की तरह ब्रह्मज्ञानी मुक्त और अलिप्त बना रहता है ; इसी प्रकार अग्नि भी स्वाभाविक रूप से अलिप्त और निर्मल बनी रहती है (हाँलाकि वह गन्दी चीजों को भी जलाकर शुद्ध करती रहती है)।। ४ ।। जिसका भाग्य खुल गया और जिसने प्रेम पूर्वक गुरु के हुकुम को मान लिया उसका भ्रम का पर्दा उतर जाता है

सुभाइ ॥ गुरि मंत्रु अवखधु नामु दीना जन नानक संकट जोनि न पाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रे नर इन बिधि पारि पराइ ॥ धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ ॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥ ११ ॥ मारू महला ५ ॥ बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ अनभउ अचरज रूपु प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥ १ ॥ मानकु पाइओ रे पाइओ हरि पूरा पाइआ था ॥ मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरू दिवाइआ था ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अदिसटु अगोचरु पारब्रहमु मिलि साधू अकथु कथाइआ था ॥ अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ तह अंम्रित नामु चुआइआ था ॥ २ ॥ तोटि नाही मनि त्रिसना बूझी अखुट भंडार समाइआ था ॥ चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ु घड़िओ रसु पाइआ था ॥ ३ ॥ सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ था ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मारू महला ५ ॥ जिसहि साजि निवाजिआ तिसहि सिउ रुच नाहि ॥ आन रूती आन बोईऐ फलु न फूलै ताहि ॥ १ ॥ रे मन वत्र बीजण नाउ ॥ बोइ खेती लाइ मनूआ भलो समउ सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोइ खहड़ा भरमु मन का सतिगुर सरणी जाइ ॥ करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥ २ ॥ भाउ लागा गोबिद सिउ घाल पाई थाइ ॥ खेति मेरै जंमिआ निखुटि न कबहू जाइ ॥ ३ ॥ पाइआ अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ कहु नानक सुखु पाइआ त्रिपति रहे आघाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥ मारू महला ५ ॥ फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥ काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥ १ ॥ आवण जाणु रहिओ ॥ तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि गए निगहार ॥ जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार ॥ २ ॥ चूका भारा करम का होए निहकरमा ॥ सागर ते कंढै चड़े गुरि कीने धरमा ॥ ३ ॥ सचु थानु सचु बैठका सचु सुआउ बणाइआ ॥ सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४ ॥ मारू महला ५ ॥

गुरु ने प्रभु-नाम रूपी मन्त्र की ऐसी औषधि दी है कि दास नानक अब योनियों के दुखों में नहीं पड़ता।। ५ ।। २ ।। हे मानव, तू इस विधि से पार उतर जा। द्वैतभाव को त्याग कर और विकारों के संदर्भ में मर कर तू प्रभु का सुमिरन करता रह।। रहाउ दूसरा ।। २ ।। ११ ।। मारू महला ५ ।। प्रभु को बाहर खोजने के काम से मैं मुक्त हो गया हूँ क्योंकि गुरु ने मुझे प्रभु मेरे हृदय में ही दिखा दिया है। मैंने प्रभु का आश्चर्य अनुभव रूपी ज्ञान स्वरूप जब देख लिया तो मेरा मन उसे छोड़कर अब अन्यत्र कहीं भी नहीं जाता है।। १ ।। प्रभु नाम रूपी हीरा मैंने पा लिया और उसी के कारण पूर्ण प्रभु को भी पा लिया है। उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता क्योंकि वह अमूल्य है तथा गुरु ने ही कृपा करके उसे दिलाया है।। १ ।। रहाउ।। साधु पुरुषों से मिलकर उस अदृष्ट, अगोचर, परब्रह्म प्रभु की अकथनीय कथा वार्ता को मैंने सुना और मेरे दशम द्वार में अनहद शब्द का नाद रूपी अमृत नाम टपकने लग गया है।। २ ।। अब मुझे कोई कमी नहीं, मेरा मन अपनी तृष्णा को समाप्त कर प्रभु नाम के अक्षय भण्डार में लीन हो गया है। गुरु के चरणों की मैंने सेवा की और बेसुरे मन को मैंने सँवार लिया तथा प्रभु-नाम के रस को प्राप्त कर लिया है।। ३ ।। पूर्ण शान्ति की अवस्था में ही मैं आता जाता हूँ और मेरा मन अपने मूल स्वभाव में ही क्रीड़ा करता रहता है। नानक का कथन है कि गुरु ने हमारे भ्रम को खो दिया है और तभी हमने प्रभु के दरबार में स्थान प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। ३ ।। १२।। मारू महला ५ ।। जिसने तेरी सृजना करके तुझ पर कृपा की तेरा अब उसमें ही प्यार नहीं है। यदि मौसम कुछ हो और बोया कुछ और ही जाए तो उस बीज को कोई फूल और फल नही लगते।। १ ।। हे मन, यह नाम बोने का अवसर है तू मन लगाकर इस खेती में नाम बो दे क्योंकि यही समय भला और लाभदायक है।। १ ।। रहाउ।। मन का भ्रम और जिद छोड़ दे तथा सच्चे गुरु की शरण में चला जा। जिसके भाग्य में ऐसा प्रारम्भ से ही लिखा है वही इस प्रकार का काम करता है।। २ ।। जब प्रभु से मेरा प्रेम लग गया तो मेरी मेहनत सफल हो गई है। मेरे हृदय रूपी खेत में प्रभु नाम का अंकुर जम गया है और वह कभी भी नष्ट नहीं होगा। मैंने नाम रूपी अमूल्य पदार्थ पा लिया है जिसे छोड़कर मैं अब कहीं भी नहीं जाता हूँ। नानक का कथन है कि मैंने सुख प्राप्त कर लिया है और अब मैं पूर्ण रूप से तृप्त होकर संतुष्ट हूँ।। ४ ।। ४ ।। १३ ।। मारू महला ५ ।। मेरे भ्रम का अण्डा फूट गया है और मेरे मन में पूर्ण प्रकाश फैल गया है। मेरे पाँव से भ्रमों की बेड़ियाँ काट दी गई हैं और गुरु ने मुझे पूर्ण रूप से मुक्त कर दिया है। अब मेरा आवागमन समाप्त हो गया है। गुरु ने मुझे शीतल प्रभु नाम प्रदान कर दिया है इसलिये मेरे हृदय का खौलता हुआ विशाल कड़ाहा अब शान्त हो गया है।। १ ।। रहाउ।। जबसे साधसंगति मुझे प्राप्त हो गई है तब से मेरी सदैव निगरानी करते रहने वाले यमदूत मुझे छोड़ गए हैं। जिस प्रभु ने रुकावट डाली थी जब उसी ने उसे हटा दिया है तो अब कोतवाल बना यमदूत क्या करेगा।। २ ।। कर्मो का लदा हुआ बोझ चुक गया है और अब मैं निष्कर्म हो गया हूँ। गुरु ने अपना कर्तव्य कर्म निभाते हुए मुझे संसार सागर के किनारे पर ला खड़ा किया है।। ३ ।। यह संसार सच्चा स्थान और सच्चा कर्म स्थल है और प्रभु ने भी इस जीवन का सच्चा ही प्रयोजन बनाया है। सत्य ही यहाँ पूंजी है, सत्य ही यहाँ सौदा है जिसे नानक ने हृदय रूपी घर में ही प्राप्त कर लिया है।। ४ ।। ५ ।। १४ ।। मारू महला ५ ।।

बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा ॥ मोनी होइ बैठा इकांती हिरदै कलपन गाठा ॥ होइ उदासी ग्रिहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा ॥ १ ॥ जीअ की कै पहि बात कहा ॥ आपि मुकतु मोकउ प्रभु मेले ऐसो कहा लहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपसी करि कै देही साधी मनूआ दह दिस धाना ॥ ब्रहमचारि ब्रहमचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना ॥ संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु बिगाना ॥ २ ॥ घूंघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥ बरत नेम करम खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥ गीत नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥ ३ ॥ हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निरमल हरि के संता ॥ तिन की धूड़ि पाए मनु मेरा जा दइआ करे भगवंता ॥ कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ तां उतरी मन की चिंता ॥ ४ ॥ मेरा अंतरजामी हरि राइआ ॥ सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरि गए बकबाइआ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ६ ॥ १५ ॥ मारू महला ५ ॥ कोटि लाख सरब को राजा जिसु हिरदै नामु तुमारा ॥ जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरि से मरि जनमहि गावारा ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर ही पति राखु ॥ चीति आवहि तब ही पति पूरी बिसरत रलीऐ खाकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप रंग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥ हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥ २ ॥ माइआ रंग बिरंग खिनै महि जिउ बादर की छाइआ ॥ से लाल भए गूड़ै रंगि राते जिन गुर मिलि हरि हरि गाइआ ॥ ३ ॥ ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ नामो वडिआई सोभा नानक खसमु पिआरा ॥ ४ ॥ ७ ॥ १६ ॥

मारू महला ५ घरु ४ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

ओअंकारि उतपाती ॥ कीआ दिनसु सभ राती ॥ वणु त्रिणु त्रिभवण पाणी ॥ चारि बेद चारे खाणी ॥ खंड दीप सभि लोआ ॥ एक कवावै ते सभि होआ ॥ १ ॥ करणैहारा बूझहु रे ॥ सतिगुरु मिलै त सूझै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण कीआ पसारा ॥ नरक सुरग अवतारा ॥ हउमै आवै जाई ॥ मनु टिकणु न

पंडित अपने मुख से वेदों का उच्चारण तो करता है परन्तु उन पर आचरण करने के लिए वह ढीला ही है। व्यक्ति मौन धारण करके एकान्त में बैठा है परन्तु उसके हृदय में भी कल्पना की अनेक गाँठे पड़ी हैं। उदासीन होकर घर को त्यागकर व्यक्ति चल पड़ा है परन्तु उसकी भाग दौड़ अभी भी समाप्त नहीं हुई है।। १ ।। अपने मन की बात किससे कहूँ। मैं ऐसा व्यक्ति कहाँ खोजूं जो स्वयं मुक्त हो और मुझे भी प्रभु से मिला दे।। १ ।। रहाउ।। तपस्या कर करके इस शरीर की साधना की गई परन्तु मन फिर भी दसों दिशाओं में दौड़ता ही रहा है। ब्रह्मचारी ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया परन्तु उसके हृदय में भी अभिमान भरा ही रहता है। संन्यासी होकर तीर्थों पर भ्रमण किया गया परन्तु उसके मन में भी मूर्खता वाला क्रोध बना ही रहा है।। २ ।। घुंघरू बाँध कर प्रभु के नाचने वाले दास तो बन गए परन्तु वास्तव में यह तो केवल रोटियों के लिये किया हुआ उपाय मात्र ही है। व्यक्ति ने व्रत नियम, षटकर्म आदि को अपनाया परन्तु उसका यह वेश इत्यादि भी केवल दिखावा बनकर रह गया। उसने गीत, संगीत, राग आदि का मुख से तो उच्चारण किया परन्तु उसका भी मन प्रभु के गुणों का गायन नहीं कर सका है।। ३ ।। खुशी, गमी, लोभ, मोह से रहित निर्मल बने हुए व्यक्ति ही प्रभु के सन्त होते हैं और यदि प्रभु दया करे तो मेरा मन उनकी चरण धूलि पा सकता है। नानक कहता है कि जब मुझे पूर्ण गुरु मिल गया तो मेरे मन की चिंता समाप्त हो गई है।। ४ ।। मेरा राजन प्रभु अन्तर्यामी है। वह मेरे मन की सभी बातों को जानता है और अब सब व्यर्थ की बातें मुझे भूल गई हैं।। १ ।। रहाउ दूसरा।। ६ ।। १५ ।। मारू महला ५ ।। जिसके हृदय में हे प्रभु, तुम्हारा नाम है वह लाखों करोड़ों अपितु सबका ही राजा है। हे मेरे सच्चे गुरु, जिसको तूने अपना नाम नहीं दिया वे गँवार लोग मरते-जन्मते रहते हैं।। १ ।। हे मेरे सच्चे गुरु, हमारे सम्मान की रक्षा कर। तेरा याद आना ही हमारा पूर्ण सम्मान है और तुझे भूलते ही हम मिट्टी में मिल जाते हैं।। १ ।। रहाउ।। रूप, रंग, खुशी और मन के भोग सभी विकारों के ही दोष हैं। प्रभु का नाम ही कल्याण करने वाला सुखों का भण्डार है और यही सर्वश्रेष्ठ स्वाभाविक सुख है।। २ ।। माया तो क्षण भर में वैसी ही रंग बिरंगी बनती रहती है जैसे बादल की छाया क्षणिक होती है। वे ही प्रभु प्रेम के गाढ़े रंग में रंगे हुए हैं जिन्होंने गुरु से मिलकर प्रभु का गुणानुवाद किया है।। ३ ।। प्रभु सबसे ऊँचा है और अपरम्पार है तथा उसका दरबार भी अगम्य है। हे नानक, वह मालिक ही सबसे प्यारा है और उसी के नाम का बड़प्पन और उसी के नाम की शोभा है।। ४ ।। ७ ।। १६ ।।

मारू महला ५ घरु ४ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

उस ओअंकार प्रभु से ही सारी उत्पत्ति हुई है और उसी ने ही दिन तथा रात को बनाया है। जंगल तिनके, तीनों लोक, जल, चारों वेद, चारों जीवन को उत्पन्न करने वाले स्रोत, खण्ड, द्वीप और सभी लोक उसके एक हुकुम के फलस्वरूप ही पैदा हुए हैं।। १ ।। अरे भाई, उस करने वाले कर्ता प्रभु को जानो परन्तु यदि सच्चा गुरु मिले तभी इन सबके बारे में पता चलता है।। १ ।। रहाउ।। उसने ही तीनों (रज, तम, सत) का विस्तार किया है तथा नरक, स्वर्ग और अवतारों की भी रचना की है। जीव अहंकार में ही भटकता रहता है और इसका मन जरा भी स्थिर नहीं होता।

पावै राई ॥ बाझु गुरू गुबारा ॥ मिलि सतिगुर निसतारा ॥ २ ॥ हउ हउ करम कमाणे ॥ ते ते बंध गलाणे ॥ मेरी मेरी धारी ॥ ओहा पैरि लोहारी ॥ सो गुर मिलि एकु पछाणै ॥ जिसु होवै भागु मथाणै ॥ ३ ॥ सो मिलिआ जि हरि मनि भाइआ ॥ सो भूला जि प्रभू भुलाइआ ॥ नह आपहु मूरखु गिआनी ॥ जि करावै सु नामु वखानी ॥ तेरा अंतु न पारावारा ॥ जन नानक सद बलिहारा ॥ ४ ॥ १ ॥ १७ ॥ मारू महला ५ ॥ मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ ॥ लोभि विआपी झूठी दुनीआ ॥ मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार सगल ले छलीआ ॥ १ ॥ निरभउ निरंकारु दइअलीआ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपलीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकै स्रमु करि गाडी गडहै ॥ एकहि सुपनै दामु न छडहै ॥ राजु कमाइ करी जिनि थैली ता कै संगि न चंचलि चलीआ ॥ २ ॥ एकहि प्राण पिंड ते पिआरी ॥ एक संची तजि बाप महतारी ॥ सुत मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न होई खलीआ ॥ ३ ॥ होइ अउधूत बैठे लाइ तारी ॥ जोगी जती पंडित बीचारी ॥ ग्रिहि मड़ी मसाणी बन महि बसते ऊठि तिना कै लागी पलीआ ॥ ४ ॥ काटे बंधन ठाकुरि जा के ॥ हरि हरि नामु बसिओ जीअ ता कै ॥ साधसंगि भए जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलीआ ॥ ५ ॥ २ ॥ १८ ॥ मारू महला ५ ॥ सिमरहु एकु निरंजन सोऊ ॥ जा ते बिरथा जात न कोऊ ॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपारिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारिआ ॥ सोई बिधाता खिनु खिनु जपीऐ ॥ जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥ चरण कमल उर अंतरि धारहु ॥ बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ करण पलाह मिटहि बिललाटा ॥ जपि गोविद भरमु भउ फाटा ॥ साधसंगि विरला को पाए ॥ नानकु ता कै बलि बलि जाए ॥ १ ॥ राम नामु मनि तनि आधारा ॥ जो सिमरै तिस का निसतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ वसतु सति करि मानी ॥ हितु लाइओ सठ मूड़ अगिआनी ॥ काम क्रोध लोभ मद माता ॥ कउडी बदलै जनमु गवाता ॥ अपना छोडि पराइऐ राता ॥ माइआ मद मन तन संगि जाता ॥ त्रिसन न बूझै करत कलोला ॥ ऊणी आस मिथिआ सभि बोला ॥ आवत इकेला जात इकेला ॥

गुरु के बिना घोर अंधकार है और सच्चे गुरु से मिलकर ही जीव पार उतरता है।। २ ।। अहंकारवश होकर जितने भी कर्म किए जाते हैं वे सब गले का बन्धन बनते जाते हैं। जिसने मेरी-मेरी की रट लगा रखी है वह मेरी मेरी ही उसके पाँव की बेड़ी है। गुरु से मिलकर वही उस एक प्रभु को पहचानता है जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखा हुआ हो।। ३ ।। जो प्रभु के मन को भा जाता है वही उससे मिलता है और जिसे प्रभु भुला देता है वही भ्रमों में भूला हुआ समझा जाता है। अपने आप में ना कोई मूर्ख है ना ज्ञानवान है; वह जिस प्रकार करवाता है व्यक्ति का वही नाम लोगों मे प्रसिद्ध हो जाता है। हे प्रभु, तेरे ओर-छोर को नहीं जाना जा सकता और दास नानक तो सदैव तुझ पर बलिहारी ही जाता रहता है।। ४ ।। १ ।। १७ ।। मारू महला ५ ।। मोहिनी माया ने तीन गुणों वाले संसार को मोहित कर रखा है और यह झूठी दुनिया लोभ में ही लीन बनी हुई है। जिसे यह मेरी-मेरी कहकर इकट्ठा करता रहता है वही अंतिम समय में सबको छल कर चली जाती है।। १ ।। वह दयालु प्रभु ही निर्भय एवं निराकार है; वह ही सम्पूर्ण जीव जन्तुओं का पालन-पोषण करता है।। १ ।। रहाउ।। किसी ने तो मेहनत के साथ इकट्ठी करके इस धन रूपी माया को गड्ढे में दबा दिया है और कोई ऐसा भी है जो सपने में भी रुपये पैसे को नहीं छोड़ता। जिन्होंने राज करते हुए इसे अपनी थैलियों में बंद करके रखा तो भी यह चलायमान धन सम्पदा उनके साथ नहीं चल सकी।। २ ।। कईयों को यह अपने शरीर और प्राणों से भी प्यारी होती है और कईयों ने तो माँ बाप को छोड़कर इसको इकट्ठा किया होता है। पुत्र, मित्र और भाईयों से छिपाकर भी इसे रखा गया है परन्तु फिर भी अंतिम समय में यह छिपाने वाले व्यक्ति के साथ खड़ी नहीं होती अर्थात उससे मुँह फेर लेती है।। ३ ।। जो अवधूत बनकर समाधि लगाए रहते हैं, जो योगी यति, पंडित और विचारवान है, जो शमशानों में घर बनाकर और वनों में बसते हैं, यह माया उनके पीछे भी पड़ी रहती है।। ४ ।। प्रभु ने जिसके बन्धन काट दिए हैं उसके हृदय में परमात्मा का नाम बस गया है। साधसंगति में प्रभु के सेवकों ने मुक्त होकर परम गति पा ली है और नानक तो उसकी कृपादृष्टि से आनन्दित हो उठा है।। ५ ।। २ ।। १८ ।। मारू महला ५ ।। उस एक निरंजन प्रभु का ही सुमिरन करो जिससे कोई भी खाली नहीं जाता। माता के गर्भ में जिसने पालन पोषण किया और जिसने यह प्राण और शरीर देकर इसे सजाया और सँवारा है उस विधाता प्रभु का प्रत्येक क्षण जाप करना चाहिये। उसका सुमिरन करने से सभी अवगुण छिप जाते हैं। हृदय में उसके चरण कमलों को धारण करो। विषय विकारों के जंगल से जीव को बचा लो। करुणापूर्ण रोना-धोना और चीख-पुकार मिट जाती है तथा प्रभु का जाप करने से भ्रम और भय नष्ट हो जाते हैं। किसी बिरले को ही साधसंगति प्राप्त होती है और नानक तो उस पर बार-बार बलिहारी जाता है।। १ ।। प्रभु-नाम ही तन और मन का आसरा है तथा जो उसका सुमिरन करता है उसका पार उतारा हो जाता है।। १ ।। रहाउ।। मिथ्या पदार्थों को सत्य माना हुआ है और अज्ञानी मूर्ख व्यक्ति ने उन्हीं के साथ प्रेम लगाया है। काम, क्रोध और लोभ के अभिमान में ही व्यक्ति मस्त बना है और एक कौड़ी के बदले में सारा जीवन गँवा देता है। अपना धनमाल छोड़कर यह पराए माल में लीन बना हुआ है और इसकी धन सम्पदा का अभिमान इसके तन मन के साथ ही बना रहता है। यह सुख भोग रहा है परन्तु सुख की तृष्णा नहीं बुझती। इसकी आशाएं भी घटिया हैं और इसके वचन भी झूठे हैं। यह अकेला ही आता है और अकेला ही यहाँ से जाता है।

हम तुम संगि झूठे सभि बोला ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइओ ॥ २ ॥ पसु पंखी भूत अरु प्रेता ॥ बहु बिधि जोनी फिरत अनेता ॥ जह जानो तह रहनु न पावै ॥ थान बिहून उठि उठि फिरि धावै ॥ मनि तनि बासना बहुतु बिसथारा ॥ अहंमेव मूठो बेचारा ॥ अनिक दोख अरु बहुतु सजाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ प्रभ बिसरत नरक महि पाइआ ॥ तह मात न बंधु न मीत न जाइआ ॥ जिस कउ होत क्रिपाल सुआमी ॥ सो जनु नानक पारगरामी ॥ ३ ॥ भ्रमत भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ दीना नाथ जगत पित माइआ ॥ प्रभ दइआल दुख दरद बिदारण ॥ जिसु भावै तिस ही निसतारण ॥ अंध कूप ते काढनहारा ॥ प्रेम भगति होवत निसतारा ॥ साध रूप अपना तनु धारिआ ॥ महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ जप तप संजम इस ते किछु नाही ॥ आदि अंति प्रभ अगम अगाही ॥ नामु देहि मागै दासु तेरा ॥ हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १९ ॥ मारू महला ५ ॥ कत कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥ १ ॥ ऐसी जानि पाई ॥ सरणि सूरो गुर दाता राखै आपि वडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥ २ ॥ अपने कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥ ३ ॥ नानकु दीनु नामु मागै दुतीआ भरमु चुकाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २० ॥ मारू महला ५ ॥ मेरा ठाकुरु अति भारा ॥ मोहि सेवकु बेचारा ॥ १ ॥ मोहनु लालु मेरा प्रीतम मन प्राना ॥ मोकउ देहु दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगले मै देखे जोई ॥ बीजउ अवरु न कोई ॥ २ ॥ जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ है होसी आहे ॥ ३ ॥ दइआ मोहि कीजै देवा ॥ नानक लागो सेवा ॥ ४ ॥ ५ ॥ २१ ॥ मारू महला ५ ॥ पतित उधारन तारन बलि बलि बले बलि जाईऐ ॥ ऐसा कोई भेटै संतु जितु हरि हरे हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ मोकउ कोइ न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ एहा ओट आधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब धारन प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ तुमरी बिधि तुम ही जानहु तुम जल हम मीना ॥ २ ॥ पूरन बिसथीरन सुआमी आहि आइओ पाछै ॥ सगलो भू मंडल खंडल प्रभ

हमारे तुम्हारे सबके साथ यह झूठ ही बोलता है। यह ठग बूटी लोगों को खिलाकर उन्हें माया के भ्रमों में भटका देता है। हे नानक, संस्कारों के फलस्वरूप बना इसका स्वभाव मिटता नहीं।। २ ।। पशु पक्षी, भूत और प्रेत झूठे बने हुए अनेकों योनियों में भटकते हैं। यह जहाँ भी जाता है वहाँ स्थिर नहीं रह पाता और स्थान विहीन बनकर यह उठ-उठकर फिर भागता फिरता है। इसके तन मन की वासनाओं का विस्तार बहुत बड़ा है और यह बेचारा अपने अहंकार में ही लूटा जा रहा है। अनेकों ही दोष हैं और उनकी अनेकों ही सजाएं हैं। उन सबकी कीमत आँकी नहीं जा सकती। प्रभु को भूलते ही जीव नरक में जा पड़ता है और वहाँ फिर ना कोई माता ना कोई बन्धु ना कोई मित्र और ना कोई स्त्री होती है। जिस पर प्रभु कृपालु हो जाए हे नानक, वही सेवक पार उतर जाता है।। ३ ।। भटकता-भटकता हुआ अब यह प्रभु की शरण में आ गया है तथा यह दीनानाथ सारे संसार का माता और पिता है। दयालु प्रभु ही सारे दुख दर्द को दूर करने वाला है और जिसे वह चाहता है उसी का ही पार उतारा करता है। संसार रूपी अन्धे कुएँ से निकालने वाला प्रभु है और प्रेमा भक्ति के कारण ही पार उतारा होता है। प्रभु स्वयं ही साधु रूप धारण करता है और तृष्णाओं की महाअग्नि से स्वयं ही उबार लेता है। इस जीव के पास ना जप है ना तप है और ना ही संयम है। सृष्टि के आदि और अंत में अगम्य अथाह प्रभु ही स्थित बना रहता है। तेरा दास तुमसे नाम का दान माँगता है। हे नानक, प्रभु के अध्यात्म में लीन होने वाला जीवन पद ही मेरा लक्ष्य है।। ४ ।। ३ ।। १६ ।। हे लोगो, किसलिए मुझे ठग रहे हो, मुझ दीन पर तो अब प्रभु की कृपा है।। १ ।। यह बात मैंने जान ली है कि शरण देने वाला दाता गुरु बलशाली है और वह स्वयं ही अपने बड़प्पन की रक्षा करता है।। १ ।। रहाउ।। वह सदैव सुखदाई बना रहने वाला प्रभु भक्तों की बात को मान लेने वाला है।। २ ।। मुझ पर तो यही कृपा करो कि मैं एक प्रभु का नाम ही सुमिरन करता रहूँ।। ३ ।। दीन नानक तो प्रभु-नाम ही माँगता है और चाहता है कि उसका द्वैतभाव समाप्त हो जाए।। ४ ।। ४ ।। २० ।। मारू महला ५ ।। मेरा मालिक अत्यन्त बलशाली है और मैं तो एक बेचारा सेवक हूँ।। १ ।। मेरा प्रियतम प्रभु मेरे मन और प्राणों का प्यार है। हे प्रभु, मुझे प्रेम का ही दान दो।। १ ।। रहाउ।। मैंने सबको उलट-पलट कर देख लिया, अब मैं अन्य किसी को अपने हृदय में स्थान नहीं देता।। २ ।। प्रभु जीवों का पालन-पोषण करके उन्हें रोज़ी देता है। वह प्रभु पहले भी था अब भी है और भविष्य में भी बना रहेगा।। ३ ।। हे प्रभु, मुझ पर दया करो क्योंकि नानक तुम्हारी सेवा में लग गया है।। ४ ।। ५ ।। २१ ।। मारू महला ५ ।। पतितों का उद्धार करने वाले और पार उतार देने वाले प्रभु पर बार-बार बलिहारी जाना चाहिए। कोई ऐसा पुरुष मिल जाए जिसके माध्यम से बार-बार प्रभु का ही सुमिरन हम करते रहें। मैं तुम्हारा दास कहा जाता हूँ परन्तु मुझे कोई नहीं जानता। तुम्हारा दास होना ही मेरा आसरा है।। १ ।। रहाउ।। सबको आसरा देने वाले और सबके पालनहार, मैं दीन एक विनती करता हूँ। तुम्हारे ढंग तरीके तो तुम ही जानते हो; तुम ही हमारे जल हो और हम तुम्हारी मछलियाँ हैं।। २ ।। उस प्रभु का विस्तार सम्पूर्ण है

तुम ही आछै ॥ ३ ॥ अटल अखइओ देवा मोहन अलख अपारा ॥ दानु पावउ संता संगु नानक रेनु दासारा ॥ ४ ॥ ६ ॥ २२ ॥ मारू महला ५ ॥ त्रिपति आघाए संता ॥ गुर जाने जिन मंता ॥ ता की किछु कहनु न जाई ॥ जा कउ नाम बडाई ॥ १ ॥ लालु अमोला लालो ॥ अगह अतोला नामो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अविगत सिउ मानिआ मानो ॥ गुरमुखि ततु गिआनो ॥ पेखत सगल धिआनो ॥ तजिओ मन ते अभिमानो ॥ २ ॥ निहचलु तिन का ठाणा ॥ गुर ते महलु पछाणा ॥ अनदिनु गुर मिलि जागे ॥ हरि की सेवा लागे ॥ ३ ॥ पूरन त्रिपति अघाए ॥ सहज समाधि सुभाए ॥ हरि भंडारु हाथि आइआ ॥ नानक गुर ते पाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ २३ ॥

मारू महला ५ घरु ६ दुपदे १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

छोडि सगल सिआणपा मिलि साध तिआगि गुमानु ॥ अवरु सभु किछु मिथिआ रसना राम राम वखानु ॥ १ ॥ मेरे मन करन सुणि हरि नामु ॥ मिटहि अघ तेरे जनम जनम के कवनु बपुरो जामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूख दीन न भउ बिआपै मिलै सुख बिस्रामु ॥ गुर प्रसादि नानकु बखानै हरि भजनु ततु गिआनु ॥ २ ॥ १ ॥ २४ ॥ मारू महला ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से होत देखे खेह ॥ पुत्र मित्र बिलास बनिता तूटते ए नेह ॥ १ ॥ मेरे मन नामु नित नित लेह ॥ जलत नाही अगनि सागर सूखु मनि तनि देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरख छाइआ जैसे बिनसत पवन झूलत मेह ॥ हरि भगति द्रिड़ु मिलु साध नानक तेरै कामि आवत एह ॥ २ ॥ २ ॥ २५ ॥ मारू महला ५ ॥ पुरखु पूरन सुखह दाता संगि बसतो नीत ॥ मरै न आवै न जाइ बिनसै बिआपत उसन न सीत ॥ १ ॥ मेरे मन नाम सिउ करि प्रीति ॥ चेति मन महि हरि हरि निधाना एह निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपाल दइआल गोपाल गोबिद जो जपै तिसु सीधि ॥ नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक तिसु संगि बीधि ॥ २ ॥ ३ ॥ २६ ॥ मारू महला ५ ॥ चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ॥ चरण सरण भजु संगि साधू

सारी धरती के मण्डल और खण्ड हे प्रभु, तुम ही हो।।३ ।।तुम अटल, अक्षय, अलख और अपार मोहन प्रभु हो। सन्त पुरुषों के संग रहने से दान प्राप्त होता है और हे नानक, मैं तो दासों की ही चरण धूलि हूँ।। ४ ।। ६ ।। २२ ।। मारू महला ५।। वे शान्त पुरुष तृप्त होकर सन्तुष्ट हो गए हैं जिन्होंने गुरु के उपदेश को समझ लिया है। जिसको प्रभु नाम का बड़प्पन मिला है उनके बारे में तो कुछ भी नहीं कहा जा सकता।। १ ।। वह प्यारा प्रभु अमूल्य है और उसका नाम ना पकड़ा जा सकने वाला और ना तौला जा सकने वाला है।। १ ।। रहाउ।। अव्यक्त के साथ जिसका मन मान गया है गुरमुख बनकर वही तत्व ज्ञान को जान जाता है। सब कुछ देखते हुए भी उसका ध्यान प्रभु में लगा रहता है क्योंकि उसने मन से अभिमान को त्याग दिया होता है।। २ ।। उनका ठिकाना पक्का बन जाता है और गुरु के माध्यम से वे अपने वास्तविक घर को अर्थात वास्तविक स्वरूप को पहचान जाते हैं। गुरु से मिलकर वे सदैव सावधान बने रहते हैं और प्रभु की सेवा में लग जाते हैं।। ३ ।। वे पूर्ण रूप से तृप्त होकर सन्तुष्ट हो जाते हैं और स्वभाविक रूप में ही सहज समाधि में लीन बने रहते हैं। प्रभु रूपी भण्डार उनके हाथ लग जाता है और हे नानक गुरु से ही उन्होंने इसे प्राप्त किया होता है।। ४ ।। ७ ।। २३ ।।

मारू महला ५ घरु ६ दोपदे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे जीव, तू समस्त चतुराईयों को छोड़कर साधु पुरुषों से मिलकर अभिमान त्याग दे। अन्य सब कुछ झूठ है तू अपनी जीभ से प्रभु नाम का ही बखान करता रह।। १ ।। हे मेरे मन, तू कानों से प्रभु नाम को सुन। तेरे जन्मों जन्मों के पाप मिट जाएंगे और फिर ये बेचारा यमदूत तुम्हारे सामने कौन है।। १ ।। रहाउ।। तुझे दुख, दीनता और भय प्रभावित नहीं करेंगे तथा तुझे सुख और शान्ति प्राप्त हो जाएगी। गुरु की कृपा से नानक कहता है कि प्रभु सुमिरन ही तत्व ज्ञान है।। २ ।। १ ।। २४ ।। मारू महला ५ ।। जिन्होंने प्रभु नाम भुला दिया उन्हें हमने मिट्टी बनते देखा है। पुत्र, मित्र और स्त्री के साथ विलास करते हुओं का प्रेम शीघ्र ही टूट जाता है।। १ ।। हे मेरे मन, सदैव प्रभु नाम का सुमिरन कर इससे तू अग्नि के सागर में नहीं जलेगा और तेरे तन मन को सुख मिलेगा।। १ ।। रहाउ।। जैसे वृक्ष की छाया नष्ट हो जाती है और पवन बादलों को उड़ाकर ले जाती है उसी प्रकार माया का व्यवहार है। हे नानक, साधु पुरुषों से मिलकर तू प्रभु भक्ति को पक्का करता रह क्योंकि यही तेरे काम आने वाली है।। २ ।। २ ।। २५ ।। मारू महला ५ ।। वह पूर्ण पुरुष सुखों का दाता प्रभु सदैव हमारे साथ ही बसता है। वह ना मरता है ना आता है ना जाता है ना विनष्ट होता है और उसे ना तो गर्मी लगती है ना सर्दी लगती है।। १ ।। हे मेरे मन, प्रभु नाम से प्रीति कर; अपने हृदय में सुखों के घर प्रभु को याद कर क्योंकि जीवन की वास्तविक निर्मल रीति यही है।। १ ।। रहाउ।। कृपालु, दयालु, गोपाल, गोबिन्द प्रभु को जो जपता है उसे सीधी सफलता प्राप्त होती है। वह प्रभु सदैव ताज़ा नवीन चतुर और सुन्दर बना रहने वाला है। अतः नानक का मन उसके साथ बिंध गया है।। २ ।। ३ ।। २६ ।। मारू महला ५ ।। चलते, बैठते, सोते, जागते गुरु के उपदेश को हृदय में याद करते रहो। प्रभु के चरणों की शरण में रहकर साधुजनों के संग प्रभु का सुमिरन कर

भव सागर उतरहि पारि ॥ १ ॥ मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि सिउ अवर सगल विसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥ गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥ २ ॥ ४ ॥ २७ ॥ मारू महला ५ ॥ तजि आपु बिनसी तापु रेण साधू थीउ ॥ तिसहि परापति नामु तेरा करि क्रिपा जिसु दीउ ॥ १ ॥ मेरे मन नामु अंम्रितु पीउ ॥ आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु इक रस रंग नामा नामि लागी लीउ ॥ मीतु साजनु सखा बंधपु हरि एकु नानक कीउ ॥ २ ॥ ५ ॥ २८ ॥ मारू महला ५ ॥ प्रतिपालि माता उदरि राखै लगनि देत न सेक ॥ सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि बिबेक ॥ १ ॥ मेरे मन नाम की करि टेक ॥ तिसहि बूझु जिनि तू कीआ प्रभु करण कारण एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख ॥ सिमरि हरि हरि सदा नानक तरे कई अनेक ॥ २ ॥ ६ ॥ २९ ॥ मारू महला ५ ॥ पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु ॥ महा भउजल माहि तुलहो जा को लिखिओ माथ ॥ १ ॥ डूबे नाम बिनु घन साथ ॥ करण कारणु चिति न आवै दे करि राखै हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति गुण उचारण हरि नाम अंम्रित पाथ ॥ करहु क्रिपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥ २ ॥ ७ ॥ ३० ॥

मारू अंजुली महला ५ घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ पंच धातु करि पुतला कीआ ॥ साहै कै फुरमाइअड़े जी देही विचि जीउ आइ पइआ ॥ १ ॥ जिथै अगनि भखै भड़हारे ॥ ऊरध मुख महा गुबारे ॥ सासि सासि समाले सोई ओथै खसमि छडाए लइआ ॥ २ ॥ विचहु गरभै निकलि आइआ ॥ खसमु विसारि दुनी चितु लाइआ ॥ आवै जाइ भवाईऐ जोनी रहणु न कितही थाइ भइआ ॥ ३ ॥ मिहरवानि रखि लइअनु आपे ॥ जीअ जंत सभि तिस के थापे ॥ जनमु पदारथु जिणि चलिआ नानक आइआ सो

ताकि तू संसार सागर से पार उतर जाए।। १ ।। हे मेरे मन, तू प्रभु नाम को हृदय में धारण कर। प्रभु से तू अपने मन में प्रीति लगा ले और अन्य सबको भुला दे।। १ ।। रहाउ।। यह जीव, मन, तन, प्राण सब कुछ प्रभु का ही है इसलिये तू अपने अभिमान को दूर कर दे। प्रभु नाम का सुमिरन कर तेरे सभी उद्देश्य पूरे हो जाएंगे और हे नानक, तू कभी भी हारेगा नहीं।। २ ।। ४ ।। २७ ।। मारू महला ५ ।। तू अपना अभिमान त्याग दे और साधु पुरुषों की चरण धूलि बन जा। तेरे सभी सन्ताप विनष्ट हो जाएंगे। तेरा नाम उसी को प्राप्त होता है जिसे कृपा करके तू देता है।। १ ।। हे मेरे मन, तू नाम रूपी अमृत का पान कर अन्य सभी ओछे स्वादों को भुला दे और युगों युगों तक अमर बना रह।। १ ।। रहाउ।। एक रस नाम के रंग में हमारी लौ लग गई है और नानक ने एक प्रभु को ही अपना मित्र साजन, सखा और बन्धु बना लिया है।। २ ।। ५ ।। २८ ।। मारू महला ५ ।। माता के पेट में भी वह बच्चे का पालन करता है और उसे जरा सी भी आँच नहीं लगने देता। वही स्वामी प्रभु तुझे संसार में भी बचाता है ; तू अपनी विचार वाली विवेक बुद्धि से इस रहस्य को जान ले।। १ ।। हे मेरे मन, तू नाम का ही आसरा ले। उस प्रभु को जान जिसने तुझे बनाया है और वह एक प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला है।। १ ।। रहाउ।। तू सभी पाखण्डों और चतुराईयों को छोड़कर मन में सावधान हो जा क्योंकि हे नानक, सदैव प्रभु का सुमिरन करते हुए अनेकों लोग पार उतर गए हैं।। २ ।। ६ ।। २६ ।। मारू महला ५ ।। जिसका नाम पतितपावन है वही अनाथों का नाथ प्रभु है। संसार रूपी भयानक सागर में वही बेड़ा है परन्तु वह मिलता उसे है जिसके माथे पर लेख लिखा होता है।। १ ।। लोगों के बहुत से समूह प्रभु-नाम के बिना डूब गए हैं। वह करण-कारण प्रभु याद नहीं आता जो हाथ देकर हमें बचाए रहता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु-नाम के लिये अमृत मार्ग यही है कि साधसंगति में बैठकर उसका गुणानुवाद किया जाए। हे प्रभु, कृपा करो ताकि नानक तो तुम्हारे उपदेश सुनकर ही जीवित बना रहे।। २ ।। ७ ।। ३० ।।

मारू अंजुली महला ५ घरु ७   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु से मिलना और बिछुड़ना तो प्रारम्भ से ही हुए हुकुम के अनुसार होता है। इस शरीर को पाँच तत्वों का पुतला बनाया गया है और उस प्रभु के हुकुम में ही इस शरीर में प्राण डाला गया है।। १ ।। जहाँ भट्ठी की तरह अग्नि जलती है वहाँ घोर अंधकार में यह उल्टा मुँह करके प्रत्येक सांस के साथ उस प्रभु का सुमिरन करता रहता है तथा वहाँ भी वह मालिक उसे बचा लेता है।। २ ।। जब यह गर्भ से निकल आता है तो यह उस मालिक को भूलकर संसार में अपना मन लगा लेता है। फलस्वरूप इसे रहने का कोई पक्का ठिकाना नहीं मिलता और यह आवागमन में भटकता रहता है।। ३ ।। कृपालु प्रभु ने इसे स्वयं ही बचा लिया है क्योंकि ये जीव जन्तु सब उसी के ही बनाए हैं। यह जीवन रूपी अमूल्य वस्तु को जीत कर यहाँ से चल पड़ता है और हे नानक, ऐसे व्यक्ति का ही

परवाणु थिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥ मारू महला ५ ॥ वैदो न वाई भैणो न भाई एको सहाई रामु हे ॥ १ ॥ कीता जिसो होवै पापां मलो धोवै सो सिमरहु परधानु हे ॥ २ ॥ घटि घटि वासी सरब निवासी असथिरु जा का थानु हे ॥ ३ ॥ आवै न जावै संगे समावै पूरन जा का कामु हे ॥ ४ ॥ भगत जना का राखणहारा ॥ संत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥ ५ ॥ २ ॥ ३२ ॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मारू महला ९ ॥ हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥ ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥ १ ॥ जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥ कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ मारू महला ९ ॥ अब मै कहा करउ री माई ॥ सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥ राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥ १ ॥ जो संपति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥ २ ॥ २ ॥ मारू महला ९ ॥ माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥ माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥ कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥ १ ॥ इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥ सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥ २ ॥ ३ ॥

मारू असटपदीआ महला १ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका ॥ अठसठि तीरथ बहु घणा भ्रमि थाके भेखा ॥ साचो साहिबु निरमलो मनि मानै एका ॥ १ ॥ तू अजरावरु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ नामु रसाइणु भाइ लै

इस संसार में आना सफल हो जाता है।। ४ ।। १ ।। ३१ ।। मारू महला ५ ।। यहाँ ना तो कोई वैद्य है, ना कोई इकरार करके रक्षा करने वाला है, ना कोई भाई है ना कोई बहन है; यहाँ एक प्रभु ही सहायक है।। १ ।। जिसका किया हुआ सब कुछ होता है, जो पापों की मैल धो देता है केवल उसी प्रमुख का ही सुमिरन करते रहो।। २ ।। जिसका स्थान अटल है वह प्रभु ही घट-घट में बसने वाला और सब में विद्यमान बना रहने वाला है।। ३ ।। उसके सभी कार्य पूर्ण होते हैं; वह साथ ही बना रहता है और कहीं भी आता जाता नहीं।। ४ ।। भक्तजनों की वह रक्षा करने वाला है और सन्त लोग उस प्राण आधार का सुमिरन करके ही जीवति बने रहते हैं। वह समर्थ स्वामी सब कुछ करने कराने वाला है और नानक तो उस पर बलिहारी जाता है।। ५ ।। २ ।। ३२ ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।। मारू महला ९

प्रभु का नाम सदैव सुख देने वाला है। इसी का सुमिरन करके अजामिल का उद्धार हुआ है और गणिका को भी परम गति प्राप्त हुई है।। १ ।। रहाउ।। पाँचाली (द्रौपदी) को दुर्योधन की राज सभा में जब प्रभु नाम याद आया तो करुणामय प्रभु ने उसके दुख को दूर कर दिया और अपने बड़प्पन को और अधिक बड़ा कर लिया।। १ ।। जिस व्यक्ति ने भी उस कृपानिधि प्रभु का यश गाया है वह उसी का सहायक बना है। नानक कहता है कि मैंने तो उसी भरोसे हे प्रभु, तेरी शरण को आ पकड़ा है।। २ ।। १ ।। मारू महला ९ ।। हे माँ, अब मैं क्या करूं। सारा जीवन मैंने विषय-विकारों में खो दिया है और कभी भी उस प्रभु कन्हैया का सुमिरन नहीं किया।। १ ।। रहाउ।। जब काल का फंदा गले में आ पड़ा है तो मेरी सारी सुध भूल गयी है। राम नाम के बिना अब इस संकट में कौन सहायक हो सकता है।। १ ।। जिस सम्पत्ति को मैंने अपना माना था वह तो क्षण भर में ही पराई हो गई है। नानक कहता है कि मैं मन में सदैव यही कुछ सोचता रहा और मैंने कभी भी हरि यश का गायन नहीं किया।। २ ।। २ ।। मारू महला ९ ।। हे माँ, मैंने मन के अभिमान को त्याग दिया है। मेरा जीवन तो माया के अभिमान में ही बीत गया है और मैं तो कभी भी सुमिरन में नहीं लगा।। १ ।। रहाउ।। जब यम का डंडा मेरे सिर पर पड़ा तब मैं सोते हुए से जगा हूँ। अब पछताने से क्या होता है क्योंकि अब तो भाग कर भी नहीं बचा जा सकता।। १ ।। जब मेरे मन में यह चिंता पैदा हो गई तब मैंने गुरु के चरणों में प्रेम लगाया है। हे नानक, मेरा जीवन सफल तभी हुआ है जब मैं प्रभु यश में लीन हो गया हूँ।। २ ।। ३ ।।

मारू अष्टपदियाँ महला १ घरु १ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वेद पुरान का कथन करते हुए और इन्हें सुनते हुए अनेकों मुनिजन थक हार चुके हैं। अड़सठ तीर्थों पर बहुत अधिक घूम-घूम कर विभिन्न प्रकार के वेशों वाले लोग भी थक गए हैं। तू सच्चा साहिब निर्मल है और उस एक प्रभु में लगकर मन सन्तुष्ट होता है।। १ ।। जरा मरण से परे हे प्रभु, तू ही है और बाकी सब तो चलायमान हैं। जो प्रभु नाम रूपी रसायन को प्रेम पूर्वक

परहरि दुखु भारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि पड़ीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा ॥ अठसठि तीरथ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥ २ ॥ जलु बिलोवै जलु मथै ततु लोड़ै अंधु अगिआना ॥ गुरमती दधि मथीऐ अंम्रितु पाईऐ नामु निधाना ॥ मनमुख ततु न जाणनी पसू माहि समाना ॥ ३ ॥ हउमै मेरा मरी मरु मरि जंमै वारो वार ॥ गुर कै सबदे जे मरै फिरि मरै न दूजी वार ॥ गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥ ४ ॥ सचा वखरु नामु है सचा वापारा ॥ लाहा नामु संसारि है गुरमती बीचारा ॥ दूजै भाइ कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥ ५ ॥ साची संगति थानु सचु सचे घर बारा ॥ सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा ॥ सची बाणी संतोखिआ सचा सबदु वीचारा ॥ ६ ॥ रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ मोटा नाउ धराईऐ गलि अउगण भारा ॥ माणस दाति न होवई तू दाता सारा ॥ ७ ॥ अगम अगोचरु तू धणी अविगतु अपारा ॥ गुर सबदी दरु जोईऐ मुकते भंडारा ॥ नानक मेलु न चूकई साचे वापारा ॥ ८ ॥ १ ॥ मारू महला १ ॥ बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि ॥ कंधी दिसि न आवई ना उरवारु न पारु ॥ वंझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥ १ ॥ बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ गुर परसादी उबरे सचा नामु समालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरू है बोहिथा सबदि लंघावणहारु ॥ तिथै पवणु न पावको ना जलु ना आकारु ॥ तिथै सचा सचि नाइ भवजल तारणहारु ॥ २ ॥ गुरमुखि लंघे से पारि पए सचे सिउ लिव लाइ ॥ आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ ॥ गुरमती सहजु ऊपजै सचे रहै समाइ ॥ ३ ॥ सपु पिड़ाई पाईऐ बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ पूरबि लिखिआ पाईऐ किस नो दीजै दोसु ॥ गुरमुखि गारड़ु जे सुणे मंने नाउ संतोसु ॥ ४ ॥ मागरमछु फहाईऐ कुंडी जालु वताइ ॥ दुरमति फाथा फाहीऐ फिरि फिरि पछोताइ ॥ जंमण मरणु न सुझई किरतु न मेटिआ जाइ ॥ ५ ॥ हउमै बिखु पाइ जगतु उपाइआ सबदु वसै बिखु जाइ ॥ जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ ॥ जीवन

लेता है वह अपने भारी दुखों को भी दूर कर लेता है।। १ ।। रहाउ।। प्रभु को ही पढ़ना और प्रभु को ही समझना चाहिए क्योंकि गुरु के उपदेश के अनुरूप चलकर प्रभु नाम के माध्यम से ही उद्धार होता है। पूर्ण गुरु की मति भी पूर्ण है और वह पूर्ण शब्द का ही चिन्तन करता है। प्रभु नाम ही अड़सठ तीर्थों के समान है और यही पापों को काटने वाला है।। २ ।। जीव जल को ही बिलोता और जल का ही मंथन करता हुआ अन्धा अज्ञानी बनकर उसमें से मक्खन रूपी तत्व प्राप्त करना चाहता है। गुरु के वेश के माध्यम से यदि शब्द रूपी दही का मन्थन किया जाए तो अमृत नाम का भण्डार रूपी मक्खन अवश्य निकलता है। मनमुख व्यक्ति तत्व की इस बात को नहीं जानते और पशु स्वभाव में ही लीन बने रहते हैं।। ३ ।। जो अहंकार और मेरेपन की मौत मरता है वह बार-बार जन्मता और मरता रहता है। शब्द-गुरु के अन्तर्गत जो मरता है फिर उसे दूसरी बार नही मरना पड़ता। गुरु के उपदेश से प्रभु मन में बसता है और वही सारे कुल का उद्धार करने वाला होता है।। ४ ।। सच्चा सौदा तो प्रभु-नाम का ही है और उसी का व्यापार भी सच्चा है। इस संसार में गुरु के उपदेश का चिंतन यही है कि प्रभु-नाम को ही लाभ का सौदा माना जाए। द्वैतभाव में लीन होकर आचरण करने से इस संसार मे सदैव घाटा ही बना रहता है।। ५ ।। प्रभु की सच्ची संगत, उसका स्थान और उसका घर बार सच्चा है। उसका प्रेम और भोजन भी सच्चा है और उसका सच्चा नाम ही सब का आसरा है। उसकी सच्ची वाणी और सच्चे शब्द के चिन्तन से ही व्यक्ति सन्तुष्ट होता है।। ६ ।। ऐसा अनुभव करने वाले बादशाहतों का सुख भोगते हैं और सुख-दुख को नष्ट कर देते हैं। जो अपने नाम को बहुत बड़ा करके बताते हैं उन्होंने भारी अवगुणों को अपने गले में डाल रखा है। व्यक्ति कोई दान नहीं दे सकता क्योंकि वास्तविक दाता तो हे प्रभु, तू ही है।। ७ ।। तू अगम्य, अगोचर, अपरम्पार और अव्यक्त मालिक है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही तेरे द्वार को खोजा जाता है और वहीं से मुक्ति का भण्डार प्राप्त होता है। हे नानक, तुझ से मिलकर फिर दूरी नहीं बनती और यही वास्तव में सच्चा व्यापार है।। ८ ।। १ ।। मारू महला १ ।। विषय-विकारों का जहाज लादकर इस संसार सागर में ठेल दिया गया है। समुद्र का आर पार और कोई किनारा दिखाई नहीं देता। इस जहाज में ना तो किसी के हाथ में बाँस है और ना ही यहाँ कोई मल्लाह है; इस सागर का जल अत्यन्त भयानक है॥१॥हे बाबा, यह संसार तो महाजाल में फँसा है। सच्चे नाम का सुमिरन करके गुरु कृपा से इसका उद्धार होता है॥१ ॥रहाउ।। सच्चा गुरु वास्तविक जहाज है और शब्द पार उतारने वाला है। ऐसे जहाज़ में ना तो हवा होती है ना अग्नि होती है और ना ही जल का भयानक आकार होता है। वहाँ तो संसार सागर से पार उतारने वाला केवल सच्चा प्रभु और उसका सच्चा नाम ही होता है।। २ ।। गुरमुख बनकर और सच्चे प्रभु में लौ लगाकर जो उसमें गए हैं वे पार उतर गए हैं। उन्होंने अपनी ज्योति को उस परम ज्योति में मिलाकर आवागमन को दूर कर दिया है। गुरमत के माध्यम से ही सहज भाव उत्पन्न होता है और जीव सत्य में लीन बना रहता है।।२।। यदि साँप को पिटारी में भी डाल दिया जाए तब भी उसके अन्दर का ज़हर और क्रोध जाता नहीं। इसी प्रकार यदि जीव भी कई वेश धारण कर ले तब भी उसके अन्दर का विष और क्रोध बना ही रहता है। सब कुछ पहले से लिखे अनुसार ही प्राप्त किया जाता है; उसके लिये किसे दोष दिया जाए। गुरमुख बनकर यदि प्रभु नाम के गारूडी मन्त्र को सुना जाए तभी शान्ति प्राप्त होती है॥४॥कुंडी और जाल लगाकर मगरमच्छ को भी पकड़ लिया जाता है। जीव दुर्मति के फंदे में फँसा बार-बार पछताता रहता है। उसे जीवन मरण का कुछ भी पता नहीं रहता परन्तु उसके किए हुए कर्मों के फल को मिटाया नहीं जा सकता॥५॥अहंकार रूपी विष इसमें डालकर संसार को उत्पन्न किया गया है; इसमें यदि शब्द का निवास हो जाए तो विष दूर हो जाता है। फिर इसे बुढ़ापा दुख नहीं देता और यह सत्य में लौ लगाए रहता है।

मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥ ६ ॥ धंधै धावत जगु बाधिआ ना बूझै वीचारु ॥ जंमण मरणु विसारिआ मनमुख मुगधु गवारु ॥ गुरि राखे से उबरे सचा सबदु वीचारि ॥ ७ ॥ सूहटु पिंजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥ सचु चुगै अंम्रितु पीऐ उडै त एका वार ॥ गुरि मिलिऐ खसमु पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥ मारू महला १ ॥ सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥ जिस कै डरि भै भागीऐ अंम्रितु ता को नाउ ॥ मारहि राखहि एकु तू बीजउ नाही थाउ ॥ १ ॥ बाबा मै कुचीलु काचउ मतिहीन ॥ नाम बिना को कछु नही गुरि पूरै पूरी मति कीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवगणि सुभर गुण नही बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ सहजि सबदि सुखु ऊपजै बिनु भागा धनु नाहि ॥ जिन कै नामु न मनि वसै से बाधे दूख सहाहि ॥ २ ॥ जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि ॥ आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥ विछुड़िआ मेला नही दूखु घणो जम दुआरि ॥ ३ ॥ अगै किआ जाणा नाहि मै भूले तू समझाइ ॥ भूले मारगु जो दसे तिस कै लागउ पाइ ॥ गुर बिनु दाता को नही कीमति कहणु न जाइ ॥ ४ ॥ साजनु देखा ता गलि मिला साचु पठाइओ लेखु ॥ मुखि धिमाणै धन खड़ी गुरमुखि आखी देखु ॥ तुधु भावै तू मनि वसहि नदरी करमि विसेखु ॥ ५ ॥ भूख पिआसो जे भवै किआ तिसु मागउ देइ ॥ बीजउ सूझै को नही मनि तनि पूरनु देइ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपि वडाई देइ ॥ ६ ॥ नगरी नाइकु नवतनो बालकु लील अनूपु ॥ नारि न पुरखु न पंखणू साचउ चतुरु सरूपु ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ तू दीपकु तू धूपु ॥ ७ ॥ गीत साद चाखे सुणे बाद साद तनि रोगु ॥ सचु भावै साचउ चवै छूटै सोग विजोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो तिसु भावै सु होगु ॥ ८ ॥ ३ ॥ मारू महला १ ॥ साची कार कमावणी होरि लालच बादि ॥ इहु मनु साचै मोहिआ जिहवा सचि सादि ॥ बिनु नावै को रसु नही होरि चलहि बिखु लादि ॥ १ ॥ ऐसा लाला मेरे लाल को सुणि खसम हमारे ॥ जिउ फुरमावहि तिउ चला सचु लाल पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु लाले चाकरी गोले सिरि मीरा ॥ गुर बचनी मनु वेचिआ सबदि मनु

जिसके अन्दर से अभिमान निकल जाता है उसी को ही जीवन मुक्त कहा जाता है।। ६ ।। झंझटो में दौड़ता-भागता संसार सच्चे विचार को नहीं जानता और बन्धनों में बँध जाता है। इसने जीने-मरने को भुला दिया है और यह गँवार मनमुख बन गया है। गुरु ने जिनकी रक्षा की है सच्चे शब्द के चिन्तन मनन के फलस्वरूप उन्ही का उद्धार हुआ।। ७ ।। प्रेम के पिंजरे में पड़ा तोता प्रेम के बोल ही बोलता है। वह सत्य ही चुगता है, अमृत का पान करता है और एक ही बार उसकी मौत होती है। गुरु से मिलकर ही उस मालिक को पहचाना जाता है और नानक का कथन है कि मोक्ष के द्वार का भी गुरु मिलाप के बाद ही पता लगता है।। ८ ।। २ ।। मारू महला १ ।। शब्द से ही मौत को मार दे अन्यथा इस मौत से भागकर मैं कहाँ जा सकता हूँ। जिसके डर से सभी भय भाग जाते हैं वह प्रभु का अमृत नाम ही है। मारने बचाने वाला एक तू ही है दूसरा कोई नहीं है।। १ ।। हे बाबा, मैं मैला, कच्चा और मति विहीन प्रभु-नाम के बिना कुछ भी नहीं हूँ। पूर्ण गुरु ने मुझे यही पूर्ण मति प्रदान की है।। १ ।। रहाउ।। मैं अवगुणों से पूरा भरा हुआ हूँ, मुझमें कोई गुण नहीं है और गुण विहीन होकर मैं भला कैसे अपने मूल घर तक पहुँच सकता हूँ। सहज शब्द के माध्यम से ही सुख उत्पन्न होता है और भाग्य के बिना यह शब्द रूपी धन प्राप्त नही होता। जिनके हृदय में नाम नहीं बसता वे बंधे हुए दुख सहते रहते हैं।। २ ।। जिन्होंने प्रभु नाम भुला दिया है वे भला संसार में किस लिए आए हैं। उनको आगे पीछे कहीं भी सुख नहीं क्योंकि वे तो राख की लदी हुई गाड़ी की तरह हैं; उन बिछुड़े हुओं का मिलाप नहीं होता और यम के द्वार पर उन्हें बहुत अधिक दुख सहना पड़ता है।। ३ ।। आगे के बारे में मैं कुछ नहीं जानता इसलिये मुझ भूले हुए को हे प्रभु, तू समझा दे। मुझ रास्ता भूले हुए को जो राह दिखा दे मैं उसके चरण स्पर्श करता हूँ। गुरु के बिना कोई भी दाता नहीं और उसके मूल्य को नहीं आँका जा सकता।। ४ ।। उस साजन प्रभु को देखूं तो उससे गले मिलूं, इस आशय की यह सच्ची चिट्ठी उसको भेजी गई है। चिंता में डूबी हुई जीव रूपी स्त्री खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही है परन्तु हे जीव स्त्री, तू चिन्ताओं को छोड़कर गुरमुख बनकर अपनी आँखों को खोलकर उस प्रभु को देख ले। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तो तभी तू मन में बसता है और जीव पर तेरी विशेष कृपा दृष्टि होती है।। ५ ।। जो स्वयं भूखा प्यासा भटक रहा है उससे भला क्या माँगा जाए और वह क्या दे सकता है। मुझे अन्य कोई भी सुझाई नहीं पड़ता जो तन और मन से सम्पूर्ण हो। जिस प्रभु ने यह संसार उत्पन्न किया है वही इस की देखभाल करता है और वही इसको बड़प्पन प्रदान करता है।। ६ ।। इस शरीर रूपी नगरी का मालिक वह सदैव नवीन बना रहने वाला निर्दोष बालक रूपी प्रभु है जिसकी लीला अनुपम है। वह ना स्त्री है ना पुरुष है ना पक्षी है अपितु वह तो सच्चा, सयाना और सुन्दर रूप वाला है। जो उसे भाता है वही होता है; हे प्रभु, तू ही दीपक है और तू ही सुगन्ध देने वाली धूप बत्ती है।। ७ ।। हमने गीतों और अनेक स्वादों को चखा और वह सुना है परन्तु ये सभी स्वाद व्यर्थ हैं और तन में रोग उत्पन्न करने वाले हैं। जिसे सत्य अच्छा लगता है और सत्य ही बोलता है उसके सभी प्रकार के शोक और वियोग समाप्त हो जाते हैं। हे नानक, मुझे कभी भी प्रभु का नाम ना भूले परन्तु जो उस प्रभु को अच्छा लगता है होता वही है।। ८ ।। ३ ।। मारू महला १ ।। सच्ची कमाई ही की जानी चाहिए तथा अन्य सभी लालच व्यर्थ हैं। उस सच्चे प्रभु ने अब इस मन को मोह लिया है और हमारी जीभ को भी अब सत्य का स्वाद लग गया है। प्रभु नाम के बिना अब अन्य कोई रस नहीं है तथा अन्य सब कुछ तो विष को लादकर चलने के समान है।। १ ।। हे मेरे मालिक, तू मेरी बात सुन ले क्योंकि अपने प्यारे प्रभु का मेरे जैसा नौकर और कोई नहीं है। हे सच्चे और प्यारे प्रभु, तेरा जैसे आदेश हो मैं वैसे ही चलता हूँ।। १ ।। रहाउ।। नौकर ने तो दिन रात सेवा करते रहना हैं क्योंकि सेवक के लिए सिर पर तो मालिक बना ही रहता है। जब गुरु के उपदेश के माध्यम से मैंने मन को बेच दिया तो उसके उपदेश से मेरे मन

धीरा ॥ गुर पूरे साबासि है काटै मन पीरा ॥ २ ॥ लाला गोला धणी को किआ कहउ वडिआईऐ ॥ भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईऐ ॥ विछुड़िआ कउ मेलि लए गुर कउ बलि जाईऐ ॥ ३ ॥ लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ मनु तनु तेरा तू प्रभू सचु धीरक धुर की ॥ ४ ॥ साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ चिति सचै वितो सचा साचा रसु चाखिआ ॥ साचै घरि साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥ ५ ॥ मनमुख कउ आलसु घणो फाथे ओजाड़ी ॥ फाथा चुगै नित चोगड़ी लगि बंधु विगाड़ी ॥ गुर परसादी मुकतु होइ साचे निज ताड़ी ॥ ६ ॥ अनहति लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ बिनु साचे जीउ जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ बादि कारा सभि छोडीआ साची तरु तारी ॥ ७ ॥ जिनी नामु विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥ लालै लालचु तिआगिआ पाइआ हरि नाउ ॥ तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥ ८ ॥ ४ ॥ मारू महला १ ॥ लालै गारबु छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ खसमि मिलिऐ सुखु पाइआ कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ गुर परसादी उबरे हरि की सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाले नो सिरि कार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ लालै हुकमु पछाणिआ सदा रहै रजाई ॥ आपे मीरा बखसि लए वडी वडिआई ॥ २ ॥ आपि सचा सभु सचु है गुर सबदि बुझाई ॥ तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ बिनु सेवा किनै न पाइआ दूजै भरमि खुआई ॥ ३ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा साहु तिनै विचि पाइआ ॥ जा क्रिपा करे ता सेवीऐ सेवि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु गवाए ॥ बंधन तूटहि मुकति होइ त्रिसना अगनि बुझाए ॥ सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाए ॥ ५ ॥ लाले विचि गुणु किछु नही लाला अवगणिआरु ॥ तुधु जेवडु दाता को नही तू बखसणहारु ॥ तेरा हुकमु लाला मंने एह करणी सारु ॥ ६ ॥ गुरु सागरु अंम्रित सरु जो इछे सो फलु पाए ॥ नामु

में धैर्य बँध गया है। उस पूर्ण गुरु को धन्यवाद है जिसने मेरे मन की पीड़ा को समाप्त कर दिया है।। २ ।। उस मालिक के सेवक के बड़प्पन का भला क्या बखान किया जा सकता है। वह पूर्ण मालिक अपनी रज़ा में ही कृपा करता है और सत्य की कमाई की जाती है। ऐसे गुरु पर बलिहारी जाना चाहिए जो बिछुड़े हुओं को मिला लेता है।। ३ ।। गुरु की मति सुन्दर होने के कारण उसके सेवक की मति भी अच्छी बन गई है। उसकी सुरति शोभायुक्त बन जाती है परन्तु गुरु को छोड़कर मनमुख बने रहने वाले व्यक्ति की मति धूमिल ही बनी रहती है। हे प्रभु, यह मन और तन तेरा ही है और सत्य हमें प्रारम्भ से ही धैर्य देने वाला बना हुआ है।। ४ ।। सत्य में ही हमारा उठना बैठना होता है और सत्य ही हमारा भोजन एवं बोलचाल है। चित्त में सत्य होने के कारण ऐसे व्यक्ति का धन भी सच्चा होता है और वह स्वाद भी सच्चे रस का ही चखता रहता है। जिनकी वाणी गुरु के उपदेश के माध्यम से सुन्दर बन गई है उनको सच्चे प्रभु ने सत्य के घर में ही निवास दिया हुआ है।। ५ ।। मनमुख व्यक्ति गहरे आलस्य में डूबा अकेला बना रहकर माया के फन्दे में फँसा रहता है। माया में ही वह सदा खाता पीता रहता है और माया के साथ लगकर ही उसने अपना सम्बन्ध प्रभु से बिगाड़ लिया होता है। गुरु की कृपा से वह भी मुक्त हो जाता है और अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो जाता है।। ६ ।। प्रभु का सेवक अपने मालिक के प्रेम में लगातार बिंधा रहता है सत्य से विहीन होकर तो वह झूठा विकारों में ग्रस्त होकर जलता रहता है, परन्तु सत्य के कारण उसने सभी व्यर्थ के धन्धों को छोड़ दिया है। हे जीव, तुम भी इसी प्रकार सत्य के माध्यम से पार उतर जाओ।। ७ । प्रभु नाम को भुला देने वालों का कोई ठौर ठिकाना नहीं होता परन्तु सेवक ने तो लालच त्यागकर प्रभु नाम प्राप्त कर लिया होता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु, यदि तू कृपा करे और अपने से मुझे मिला ले तो मैं सदैव तुझ पर बलिहारी जाता हूँ।। ८ ।। ४ ।। मारू महला १ ।। गुरु से शान्ति का पाठ पढ़कर और गुरु के अनुशासन में बना रहकर अब इस सेवक ने सारा अहंकार त्याग दिया। इस सेवक ने उस मालिक को पहचान लिया है कि उसका बड़प्पन महान है। उस मालिक से मिलकर ही ऐसा सुख प्राप्त हुआ है कि उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता।। १ ।। यह सेवक तो उस मालिक प्रभु का ही गुलाम है और सारा बड़प्पन उस मालिक का ही है। गुरु की कृपा से ही प्रभु की शरण में आकर हम पार उतर गए हैं।। १ ।। रहाउ।। प्रभु का हुकुम मानने का आदेश तो सेवक के सिर पर ही है तथा इस सेवक ने उसके हुकुम को पहचान लिया है और सदैव उसकी रज़ा में ही प्रसन्न बना रहता है। वह मालिक स्वयं ही क्षमा करता रहता है क्योंकि उसका बड़प्पन महान है।। २ ।। वह स्वयं सच्चा है और उसका किया हुआ भी सत्य है परन्तु यह तथ्य शब्द-गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है। हे प्रभु, तेरी सेवा वही करता है जिसे तू इस ओर लगा लेता है। सेवा के बिना कोई भी उसे नहीं पा सका है तथा ऐसा व्यक्ति द्वैतभाव में ख्वार होता रहता है।। ३ ।। जो प्रभु सदैव बढ़-चढ़कर देता रहता है उसे भला मन से क्यों भुलाया जाए। यह शरीर और प्राण उसी का ही है और उसी ने ही इसमें श्वासों को डाला है। यदि प्रभु कृपा करे तो उसका सुमिरन किया जाता है और उसका सुमिरन करके ही जीव सत्य में लीन होता है।। ४ ।। सेवक वही है जो जीवन मे ही विकारों की ओर से मरकर अपने अन्तर्मन के अभिमान को गँवा देता है। वह मुक्त होकर बन्धन तोड़ देता है और अपनी तृष्णा रूपी अग्नि को बुझा देता है। सबमें उस प्रभु-नाम का भण्डार स्थित है परन्तु गुरमुख बनकर कोई बिरला ही उसे प्राप्त करता है।। ५ ।। इस सेवक में तो कोई भी गुण नहीं है और यह सेवक तो अवगुणों वाला है। हे प्रभु, तेरे जैसा दाता कोई नहीं है और तू ही क्षमा शील है। सेवक के लिये तो यही श्रेष्ठ कर्म है कि वह तेरा हुकुम मानता रहे।। ६ ।। गुरु तो विशाल सागर है, अमृत का सरोवर है और हर व्यक्ति उससे मनोबांछित फल प्राप्त करता है। प्रभु-नाम

पदारथु अमरु है हिरदै मंनि वसाए ॥ गुर सेवा सदा सुखु है जिस नो हुकमु मनाए ॥ ७ ॥ सुइना रुपा सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ नानक नामि रते से निरमले साचै रहे समाई ॥ ८ ॥ ५ ॥ मारू महला १ ॥ हुकमु भइआ रहणा नही धुरि फाटे चीरै ॥ एहु मनु अवगणि बाधिआ सहु देह सरीरै ॥ पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥ १ ॥ किउ रहीऐ उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥ जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तू राखहि तिउ रहा जो देहि सु खाउ ॥ जिउ तू चलावहि तिउ चला मुखि अंम्रित नाउ ॥ मेरे ठाकुर हथि वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥ २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करि देखै सोई ॥ जिनि कीआ सो मनि वसै मै अवरु न कोई ॥ सो साचा सालाहीऐ साची पति होई ॥ ३ ॥ पंडितु पड़ि न पहुचई बहु आल जंजाला ॥ पाप पुंन दुइ संगमे खुधिआ जमकाला ॥ विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥ ४ ॥ जिन की लेखै पति पवै से पूरे भाई ॥ पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥ ५ ॥ खार समुद्रु ढंढोलीऐ इकु मणीआ पावै ॥ दुइ दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ गुरु सागरु सति सेवीऐ दे तोटि न आवै ॥ ६ ॥ मेरे प्रभ भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ मैला ऊजलु ता थीऐ पारस संगि भीजै ॥ वंनी साचे लाल की किनि कीमति कीजै ॥ ७ ॥ भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ पूछउ बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने ॥ नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥ ८ ॥ ६ ॥ मारू महला १ ॥ मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ ग्रिह धरमु गवाए सतिगुरु न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका त्रिसना होइ वधेरै ॥ काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे ढोरै ॥ १ ॥ बाबा ऐसी रवत रवै संनिआसी ॥ गुर कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते त्रिपतासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोली गेरू रंगु चड़ाइआ वसत्र भेख भेखारी ॥ कापड़ फारि बनाई खिंथा झोली माइआधारी ॥ घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥ भरमि भुलाणा सबदु न चीनै जूऐ

रूपी पदार्थ नित्य बना रहने वाला है और गुरमुख व्यक्ति इसे हृदय और मन में बसाए रहता है। गुरु की सेवा ही सदैव सुख देने वाली होती है परन्तु यह सेवा करता वही है जिस से प्रभु का हुकुम करवाता है।। ७ ।। सोना चाँदी सभी माया के रूप हैं और ये सब भी मिट्टी में मिल जाने वाले हैं। इस तथ्य को सच्चे गुरु ने समझाया है कि प्रभु-नाम के बिना कुछ भी साथ नहीं चलता। हे नानक, जो प्रभु नाम में लीन हैं वे ही निर्मल हैं और सत्य में स्थित बने रहते हैं।। ८ ।। ५ ।। मारू महला १ ।। जब प्रभु की ओर से फटी हुई मौत की चिट्ठी आ गई तो समझ लो उसका हुकुम आ पहुँचा है और अब यहाँ रहा नहीं जा सकेगा। हे जीव, तेरा यह मन अवगुणों में बँधा है इसलिये तुझे अपने शरीर पर दुख सहने ही पड़ेंगे। मुझ फकीर के तो सभी अपराध पूर्ण गुरु के माध्यम से ही क्षमा किए जा सकेंगे।। १ ।। हे जीव, शब्द के चिन्तन को समझ ले कि यहाँ पर कैसे रहा जा सकता है; क्योंकि यहाँ से तो उठकर जाना ही जाना है। यह प्रारम्भ से ही आदेश है कि हे प्रभु, जिसे तू मिलाता है वही तुझसे आ मिलता है।। १ ।। रहाउ।। तू जैसा रखेगा मैं वैसा ही रहूँगा और तू जो देता है मैं वही खाता हूँ। तू जैसे चलाता है मैं तेरे अमृत नाम का सुमिरन करता हुआ वैसे ही चला चलता हूँ। मेरे प्रभु के हाथ में ही सब प्रकार का बड़प्पन है और मेरे मन में यही प्रबल इच्छा है कि हे प्रभु, मुझे अपने से मिला लो।। २ ।। प्रभु के पैदा किये हुए इस विश्व की क्या प्रशंसा की जाए क्योंकि वह प्रभु ही इसे पैदा करके देख-भाल करता है। जिस प्रभु ने यह संसार बनाया है वह मेरे मन में बसता रहे क्योंकि उसके बिना अन्य कोई भी नहीं हैं। उस सच्चे का गुणानुवाद करने से सच्चा सम्मान प्राप्त होता है।। ३ ।। बहुत ऊल-जलूल पढ़-पढ़कर कोई भी पंडित उस प्रभु तक नहीं पहुंच सकता। वह तो पाप और पुण्य के बन्धनों में फँसा यम के दुखों की भूख को सहता रहता है। जिसका पूर्ण प्रभु रक्षक हो जाए उसको वियोग और भय भूल ही जाता है।। ४ ।। जो उस प्रभु के लेखे में सम्मान योग्य हैं हे भाई, वे ही पूर्ण व्यक्ति हैं। उन पूर्ण पुरुषों की मति भी पूर्ण होती है और उनका बड़प्पन भी सच्चा होता है। उससे लेने वाले तो थक जाते हैं परन्तु उस देने वाले के पास कोई भी कमी नही आती।। ५ ।। खारे समुद्र को यदि खोजा जाए तो एक आधा रत्न मिल जाता है जो दो चार दिन ही सुन्दर बना रहता है और अन्ततः मिट्टी हो जाता है। गुरु ऐसा रत्नों का समुद्र है कि सत्य का सुमिरन करने से वह देता ही चला जाता है परन्तु उसमें कभी भी कोई कमी नहीं आती।। ६ ।। जो मेरे प्रभु को भाते हैं वही उज्ज्वल हैं अन्यथा सभी मैल से भरे हुए बने रहते हैं। जब गुरु रूपी पारस के साथ जीव अभिन्न हो जाता है तभी वह मैले से उज्ज्वल बन जाता है। नाम रूपी सच्चे प्रभु के प्राप्त होने से व्यक्ति पर ऐसा रंग चढ़ता है कि उसके मूल्य को आँका नहीं जा सकता।। ७ ।। विभिन्न वेशों के माध्यम से, तीर्थ और दान करने से उसके रहस्य को नही जाना जा सकता है। वेदों का पाठ करने वालों से भी पूछ लो कि इस तथ्य को माने बिना यह सारी सृष्टि ही विकारों द्वारा लूटी जा रही है। हे नानक, उसकी कीमत वही जान सकता है जिसे पूर्ण गुरु और उसका ज्ञान प्राप्त हो गया है।। ८ ।। ६ ।। मारू महला १ ।। मनमुख व्यक्ति किसी झूठे आवेश में घर त्यागकर भटकता रहता है और दूसरों के घर पर ध्यान लगाए रहता है। वह गृहस्थ धर्म को भी छोड़ देता है, सच्चे गुरु से भी मिलाप नहीं करता तथा दुर्मति के भँवर में पड़ा रहता है। वह पाठ पूजा करता हुआ देश देशान्तरों में भटकता रहता है जिससे उसकी तृष्णा और अधिक बढ़ती जाती है। यह नश्वर शरीर थोड़े समय के लिए है और उस थोड़े समय में वह शब्द रूपी प्रभु को ना पहचान कर पशुओं की तरह अपना पेट भरते रहने में लगा रहता है।। १ ।। हे बाबा, संन्यासी व्यक्ति तो इस प्रकार के जीवन ढंग को अपनाए कि उसकी लौ एक शब्द-गुरु में ही लगी रहे और वह तेरे नाम में लीन होकर तृप्त बना रहे।। १ ।। रहाउ ।। लाल रंग को घोलकर वस्त्रों पर चढ़ाकर संन्यासी भिखारी का वेश बनाकर घूमता है। कपड़े को फाड़कर माया में लीन बने रहने वाला संन्यासी अपनी गुदड़ी और झोली बना लेता है। वह घर-घर जाकर माँगता रहता है और संसार को उपदेश देता रहता है; उसका मन अन्धा है और उसने अपना सम्मान गँवा लिया होता है। भ्रमों में भूला हुआ वह शब्द को नहीं पहचानता और जुए

बाजी हारी ॥ २ ॥ अंतरि अगनि न गुर बिनु बूझै बाहरि पूअर तापै ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ॥ निंदा करि करि नरक निवासी अंतरि आतम जापै ॥ अठसठि तीरथ भरमि विगूचहि किउ मलु धोपै पापै ॥ ३ ॥ छाणी खाकु बिभूत चड़ाई माइआ का मगु जोहै ॥ अंतरि बाहरि एकु न जाणै साचु कहे ते छोहै ॥ पाठु पड़ै मुखि झूठो बोलै निगुरे की मति ओहै ॥ नामु न जपई किउ सुखु पावै बिनु नावै किउ सोहै ॥ ४ ॥ मूंडु मुडाइ जटा सिख बाधी मोनि रहै अभिमाना ॥ मनूआ डोलै दह दिस धावै बिनु रत आतम गिआना ॥ अंम्रितु छोडि महा बिखु पीवै माइआ का देवाना ॥ किरतु न मिटई हुकमु न बूझै पसूआ माहि समाना ॥ ५ ॥ हाथ कमंडलु कापड़ीआ मनि त्रिसना उपजी भारी ॥ इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइआ पर नारी ॥ सिख करे करि सबदु न चीनै लंपटु है बाजारी ॥ अंतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥ ६ ॥ सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥ छादन भोजन की आस न करई अचिंतु मिलै सो पाए ॥ बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै तामसु नामि जलाए ॥ धनु गिरही संनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाए ॥ ७ ॥ आस निरास रहै संनिआसी एकसु सिउ लिव लाए ॥ हरि रसु पीवै ता साति आवै निज घरि ताड़ी लाए ॥ मनूआ न डोलै गुरमुखि बूझै धावतु वरजि रहाए ॥ ग्रिह सरीरु गुरमती खोजे नामु पदारथु पाए ॥ ८ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु सरेसट नामि रते वीचारी ॥ खाणी बाणी गगन पताली जंता जोति तुमारी ॥ सभि सुख मुकति नाम धुनि बाणी सचु नामु उर धारी ॥ नाम बिना नही छूटसि नानक साची तरु तू तारी ॥ ९ ॥ ७ ॥ मारू महला १ ॥ मात पिता संजोगि उपाए रकतु बिंदु मिलि पिंडु करे ॥ अंतरि गरभ उरधि लिव लागी सो प्रभु सारे दाति करे ॥ १ ॥ संसारु भवजलु किउ तरै ॥ गुरमुखि नामु निरंजनु पाईऐ अफरिओ भारु अफारु टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ते गुण विसरि गए अपराधी मै बउरा किआ करउ हरे ॥ तू दाता दइआलु सभै सिरि अहिनिसि दाति समारि करे ॥ २ ॥ चारि पदारथ लै जगि जनमिआ

में हारने की तरह अपने जीवन की बाजी को हार जाता है।। २ ।। व्यक्ति बाहर अग्नि जलाकर तपस्या करता है परन्तु उसके अन्तर्मन की अग्नि गुरु के बिना बुझती नहीं। गुरु की सेवा के बिना भक्ति नहीं होती और व्यक्ति भला अपने आपको कैसे पहचान सकता है। निंदा कर-करके व्यक्ति नरक का निवासी बनता है और उसके अन्दर ज्ञान का गहरा अंधकार बना रहता है। अड़सठ तीर्थों पर भटक कर व्यक्ति ख्वार होता है और इस प्रकार भला उसके पापों का फल कैसे धुल सकता है।। ३ ।। उसने खाक छानी है, राख को शरीर पर मला है और वह माया का रास्ता भी देखता रहता है। वह अन्दर बाहर उस एक प्रभु को नहीं जानता और जब उसे सत्य से अवगत कराया जाता है तो वह क्रोधित होता है। गुरु विहीन व्यक्ति की बुद्धि ही ऐसी ही है कि वह पाठ भी पढ़ता है और मुख से झूठ ही झूठ बोलता है। वह प्रभु-नाम का जाप नहीं करता इसलिये कैसे वह सुख प्राप्त कर सकता है ; प्रभु नाम से विहीन होकर वह भला कैसे शोभायुक्त बन सकता है।। ५ ।। सिर के बाल मुंडवाकर व्यक्ति ने जटाओं की चोटी बना ली है और मौन बना रहकर भी अभिमान से भरा हुआ उसका मन डोलता हुआ दसों दिशाओं में भागता रहता है क्योंकि वह आध्यात्मिक ज्ञान के प्रेम से विहीन बना रहता है। धन सम्पदा के लिये बावला व्यक्ति अमृत छोड़कर महा विष को पीता रहता है। यह प्रभु के हुकुम को नहीं बूझता इसलिये यह संस्कारों के फलस्वरूप बना हुआ अपना स्वभाव भी नहीं छोड़ता और इस प्रकार पशुओं में शामिल बना रहता है।। ५ ।। हाथ में कमण्डल लिये बेशक व्यक्ति फटे पुराने कपड़े पहन कर फकीर बना रहता है परन्तु उसके मन में बहुत भारी तृष्णा बनी ही रहती है। उसने स्त्री को तो त्याग दिया है परन्तु काम वासना के अधीन उसका मन पराई स्त्री में लगा रहता है। वह उपदेश तो देता है परन्तु शब्द को नहीं पहचानता इसलिये वह बाजार में इधर-उधर भटकने वाला लम्पट बना रहता है। अन्तर्मन में तो उसके विष भरा रहता है परन्तु बाहर से वह शान्त बना रहता है; इसलिये इसे यम भी ख्वार करता रहता है।। ६ ।। संन्यासी वही है जो अपने अन्दर से अभिमान त्यागकर सच्चे गुरु की सेवा करे। वस्त्र और भोजन की आशा ना करे और जो बिना माँगे ही मिलता जाए उसे प्राप्त करता रहे। वह व्यर्थ की बकवास ना करे, क्षमा रूपी धन इकट्ठा करे और अपने तामसिक स्वभाव को प्रभु नाम में जला दे। वह गृहस्थी संन्यासी और योगी धन्य है जो प्रभु चरणों में अपने चित्त को लगाता है।। ७ ।। आशाओं में भी तटस्थ बना रहने वाला संन्यासी उस एक प्रभु में ही अपनी लौ लगाता है। जब वह प्रभु रस का पान करता है तो उसे शान्ति प्राप्त होती है तथा वह अपने वास्तविक घर अर्थात प्रभु में समाधि लगाए रहता है। गुरमुख बनकर वह रहस्य को जान लेता है, उसका मन चंचल नहीं बनता और दौड़ते हुए मन को वह रोक कर रखता है। शरीर रूपी घर को गुरमति के माध्यम से वह खोजता है और प्रभु के नाम रूपी पदार्थ को प्राप्त कर लेता है।। ८ ।। ब्रह्मा, विष्णु, महेश इसलिये श्रेष्ठ माने जाते हैं क्योंकि वे प्रभु नाम में चिंतन पूर्वक लीन बने रहते हैं। जीवन के चारों स्रोतों, उनकी वाणियों, आकाश पाताल एवं सारे जीवों में हे प्रभु, तुम्हारी ही ज्योति स्थित है। सभी प्रकार की मुक्ति के सुख प्रभु-नाम और वाणी के उच्चारण में ही हैं और इसीलिए मैं सच्चे नाम को हृदय में धारण करता हूँ। हे नानक, प्रभु के नाम के बिना कोई भी मुक्त नहीं होता इसलिये तू सत्य के माध्यम से अपना पार उतारा कर ले।। ६ ।। ७ ।। मारू महला १ ।। माता पिता के संयोग से रक्त और बिन्दु के मिलने से यह शरीर बना है। माता के पेट में उल्टे पड़े हुए को जिस प्रभु की लगन लगी थी वही प्रभु बाहर भी सम्भाल करता है और दान देता चला जाता है।। १ ।। यह संसार रूपी सागर कैसे पार किया जाता है। गुरमुख बनकर उस प्रभु का नाम प्राप्त किया जाता है और अभिमानी पापी के पापों का भार टल जाता है।। १ ।। रहाउ।। मुझ पापी को प्रभु के गुण भूल गए है; हे प्रभु, मैं पागल अब क्या करूं। तू सबसे ऊपर दयालु दाता है और दिन-रात दान देता हुआ सबका ख्याल करता है।। २ ।। जीव तो चारों पदार्थों को लेकर इस संसार में पैदा हुआ था परन्तु इस

सिव सकती घरि वासु धरे ॥ लागी भूख माइआ मगु जोहै मुकति पदारथु मोहि खरे ॥ ३ ॥ करण पलाव करे नही पावै इत उत ढूढत थाकि परे ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विआपे कूड़ कुटंब सिउ प्रीति करे ॥ ४ ॥ खावै भोगै सुणि सुणि देखै पहिरि दिखावै काल घरे ॥ बिनु गुर सबद न आपु पछाणै बिनु हरि नाम न कालु टरे ॥ ५ ॥ जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥ तनु धनु बिनसै सहसै सहसा फिरि पछुतावै मुखि धूरि परे ॥ ६ ॥ बिरधि भइआ जोबनु तनु खिसिआ कफु कंठु बिरूधो नैन्हु नीरु ढरे ॥ चरण रहे कर कंपण लागे साकत रामु न रिदै हरे ॥ ७ ॥ सुरति गई काली हू धउले किसै न भावै रखिओ घरे ॥ बिसरत नाम ऐसे दोख लागहि जमु मारि समारे नरकि खरे ॥ ८ ॥ पूरब जनम को लेखु न मिटई जनमि मरै का कउ दोसु धरे ॥ बिनु गुर बादि जीवणु होरु मरणा बिनु गुर सबदै जनमु जरे ॥ ९ ॥ खुसी खुआर भए रस भोगण फोकट करम विकार करे ॥ नामु बिसारि लोभि मूलु खोइओ सिरि धरम राइ का डंडु परे ॥ १० ॥ गुरमुखि राम नाम गुण गावहि जा कउ हरि प्रभु नदरि करे ॥ ते निरमल पुरख अपरंपर पूरे ते जग महि गुर गोविंद हरे ॥ ११ ॥ हरि सिमरहु गुर बचन समारहु संगति हरि जन भाउ करे ॥ हरि जन गुरु परधानु दुआरै नानक तिन जन की रेणु हरे ॥ १२ ॥ ८ ॥

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

मारू काफी महला १ घरु २ ॥ आवउ वंञउ डुंमणी किती मित्र करेउ ॥ सा धन ढोई न लहै वाढी किउ धीरेउ ॥ १ ॥ मैडा मनु रता आपनड़े पिर नालि ॥ हउ घोलि घुमाई खंनीऐ कीती हिक भोरी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पेईअड़ै डोहागणी साहुरड़ै किउ जाउ ॥ मै गलि अउगण मुठड़ी बिनु पिर झूरि मराउ ॥ २ ॥ पेईअड़ै पिरु संमला साहुरड़ै घरि वासु ॥ सुखि सवंधि सोहागणी पिरु पाइआ गुणतासु ॥ ३ ॥ लेफु निहाली पट की कापड़ु अंगि बणाइ ॥ पिरु मुती डोहागणी तिन डुखी रैणि

जीव का निवास माया के घर में हो गया है।। ३ ।। यह बहुत इधर-उधर हाथ पाँव मारता है परन्तु कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाता और थक कर गिर पड़ता है। काम, क्रोध, अहंकार इसको दबाए रहता है और नाशवान परिवार के साथ यह प्रीति बनाए रखता है।। ४ ।। यह खाता, भोगता और सुन सुनकर देखता और इस मौत के घर संसार में पहरावे पहन-पहनकर दिखाता रहता है। शब्द-गुरु के बिना यह अपने आपको नहीं पहचानता और प्रभु नाम के बिना काल इसके सिर से टलता नहीं।। ५ ।। मोह और अहंकार में जितने लोग भी भूले हुए भटक रहे हैं उन मेरी-मेरी करते हुओं से काल सब कुछ छीनकर ले जाता है। भ्रम रूप यह तन और धन नष्ट हो जाता है और फिर यह भ्रम भी दूर हो जाता है कि ये सदैव बने रहेंगे। अब यह मूर्ख व्यक्ति पछताता है और इसके मुख पर मिट्टी ही पड़ती है।। ६ ।। जब व्यक्ति वृद्ध हो जाता है तो उसके शरीर का यौवन नष्ट हो जाता है; उसका गला कफ से बन्द पड़ा रहता है और उसके नैनों से पानी बहता रहता है। उसके पाँव और हाथ काँपने लगते हैं परन्तु प्रभु से टूटे व्यक्ति के हृदय में प्रभु नाम नहीं बसता।। ७ ।। काले से बाल सफेद हो गए, सुरति क्षीण हो गई और अब किसी को घर में रखना अच्छा नहीं लगता। प्रभु-नाम को भूल जाने से ऐसे दोष उत्पन्न हो जाते हैं कि यम मार-मार कर काबू में करते हुए जीव को नरक में ले जाता है।। ८ ।। पूर्व जन्मों के लेख मिटते नहीं हैं; व्यक्ति जन्म लेता है और मरता है परन्तु इसमें किस पर दोष लगाया जा सकता है। गुरु बिना जीवन व्यर्थ है और मरने के समान ही है; शब्द गुरु के बिना यह जीवन व्यर्थ ही जलता हुआ नष्ट होता रहता है।। ६ ।। खुशियों में ख्वार होता व्यक्ति रसों को भोगता हुआ अनेक प्रकार के विकारों वाले कर्म करता रहता है। प्रभु के नाम को भुलाकर और लोभ में लीन होकर इसने अपना मूलधन भी गँवा लिया है और अब इसके सिर पर धर्मराज का डंडा गिरता है।। १० ।। गुरमुख बनकर वही राम नाम के गुण गाता है जिस पर हरि प्रभु अपनी कृपा दृष्टि करता है। ऐसे पुरुष ही निर्मल हैं, पूर्ण है, अपरम्पार हैं और वे ही संसार में हरि गोविन्द का रूप हैं।। ११ ।। प्रेम पूर्वक प्रभु के सेवकों की संगति करो प्रभु का सुमिरन करते हुए गुरु के उपदेश को मन में सम्भाल कर रखो। प्रभु के सेवकों का गुरु उस प्रभु के द्वार पर प्रमुख बना रहता है और नानक तो प्रभु के ऐसे सेवकों की चरण धूलि है।। १२ ।। ८ ।।

१ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मारू काफी महला १ घरु २।। मैं द्वैतभाव में फँसी हुई आती जाती रहती हूँ और कितने ही लोगों को अपना मित्र बनाती हूँ परन्तु ऐसी स्त्री को आसरा नहीं मिलता और उस बिछुड़ी हुई जीव स्त्री को धैर्य कैसे आ सकता है।। १ ।। मेरा मन अपने प्रियतम के साथ लीन बना है। यदि तू एक क्षण भर के लिये कृपा दृष्टि से मुझे देख ले तो मैं टुकड़े-टुकड़े होकर तुझ पर बलिहारी जाती रहूँ।। १ ।। रहाउ ।। मैं इस पिता के घर में अर्थात इस जीवन में दुहागिन बनी हुई हूँ तो फिर भला ससुराल में पति के यहाँ कैसे जा सकती हूँ। अवगुणों में लुटी हुई मैं उस प्रीतम के बिना पछताती हुई मरी जाती हूँ।। २ ।। यदि इस संसार में मैं उस प्रियतम को याद करती रहूँ तभी मेरा निवास ससुराल में सुखपूर्ण हो सकता है। ऐसी सुहागिन स्त्रियाँ जिन्होंने गुणों के भण्डार प्रभु के पा लिया है वे सुखपूर्वक सोती हैं।। ३ ।। रजाई और गद्दा सुन्दर रेशम का बनाकर और शरीर पर अच्छे वस्त्र धारण करने पर भी प्रियतम द्वारा छोड़ी दुहागिन स्त्रियों की रात

बिहाइ ॥ ४ ॥ किती चखउ साडड़े किती वेस करेउ ॥ पिर बिनु जोबनु बादि गइअमु वाढी झूरेदी झूरेउ ॥ ५ ॥ सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचारि ॥ सचे सचा बैहणा नदरी नदरि पिआरि ॥ ६ ॥ गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहारु ॥ गुरमुखि बूझै जाणीऐ हउमै गरबु निवारि ॥ ७ ॥ तउ भावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ कितीआह ॥ नानक नाहु न वीछुड़े तिन सचै रतड़ीआह ॥ ८ ॥ १ ॥ ९ ॥ मारू महला १ ॥ ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ॥ सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ गुर बिनु एता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु दितमु मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह ॥ आवनि वंञनि ना रहनि पूर भरे पहीआह ॥ २ ॥ मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥ साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ ॥ ३ ॥ साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु ॥ सचि विछोड़ा ना थीऐ सो सहु रंगि रवंतु ॥ ४ ॥ सभे रुती चंगीआ जितु सचे सिउ नेहु ॥ सा धन कंतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु ॥ ५ ॥ पतणि कूके पातणी वंञहु ध्रुकि विलाड़ि ॥ पारि पवंदड़े डिठु मै सतिगुर बोहिथि चाड़ि ॥ ६ ॥ हिकनी लदिआ हिकि लदि गए हिकि भारे भर नालि ॥ जिनी सचु वणंजिआ से सचे प्रभ नालि ॥ ७ ॥ ना हम चंगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ ॥ नानक हउमै मारीऐ सचे जेहड़ा सोइ ॥ ८ ॥ २ ॥ १० ॥ मारू महला १ ॥ ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥ सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥ १ ॥ बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥ तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरखु सिआणा एकु है एक जोति दुइ नाउ ॥ मूरखा सिरि मूरखु है जि मंने नाही नाउ ॥ २ ॥ गुर दुआरै नाउ पाईऐ बिनु सतिगुर पलै न पाइ ॥ सतिगुर कै भाणै मनि वसै ता अहिनिसि रहै लिव लाइ ॥ ३ ॥ राजं रंगं रूपं मालं जोबनु ते जूआरी ॥ हुकमी बाधे पासै खेलहि चउपड़ि एका सारी ॥ ४ ॥ जगि चतुरु सिआणा भरमि भुलाणा नाउ पंडित पड़हि गावारी ॥ नाउ विसारहि

दुखों में ही बीतती है।। ४ ।। कितने ही स्वादों को चखा जाए और कितने ही वेश धारण किए जाएँ परन्तु प्रियतम के बिना यौवन व्यर्थ ही चला जाता है और उससे बिछुड़ी हुई जीव-स्त्री पछताती ही रहती है।। ५ ।। सच्चे प्रभु का उपदेश गुरु के विचार के द्वारा सुना जाता है। उस सच्चे प्रभु का स्थान भी सच्चा है और उसकी कृपा दृष्टि होने से ही उसके प्रेम में लीन हुआ जाता है। उस प्रभु को देखने के लिये ज्ञानी पुरुष के पास सत्य का सुरमा होता है। गुरमुख बनकर ही और अहंकार का निवारण करके उस प्रभु को बूझा और जाना जाता है।। ७ ।। हे प्रभु, जो तुझे अच्छी लगती हैं वे तेरे जैसी ही हैं परन्तु मेरे जैसी तो कई भटक रही हैं। सत्य में लीन बनी उन जीव स्त्रियों का पति कभी उनसे बिछुड़ता नहीं।। ८ ।। १ ।। ९ ।। मारू महला १ ।। बहन, भाभी और सास इत्यादि में से कोई भी नहीं बचता। सच्चा सम्बन्ध तो प्रभु का ही है जो कभी नहीं टूटता और सत्संग रूपी सखियों में गुरु हमें उससे मिलाता है।। १ ।। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाती हूँ और सदैव बलिहारी जाती रहती हूँ। गुरु के बिना मैं भटक-भटक कर बहुत थक गई हूँ परन्तु गुरु ने मुझे अपने साथ मिलाकर पति प्रभु से मिला दिया है।। १ ।। रहाउ।। बुआ, नानी, मौसी, देवर, जेठानी आदि आते और जाते रहते हैं, ये स्थिर नहीं बने रहते और इनके झुण्ड जीवन के रास्ते पर बने ही रहते हैं।। २ ।। मामा, मामी, भाई, बाप, माँ आदि मेहमानों के काफिले चलने के लिये लदे हुए हैं। इस प्रकार संसार सागर में आवागमन की भीड़ बनी ही रहती है।। ३ ।। सत्य के रंग में रंगा हुआ हे सखी, हमारा प्रभु पति है। जो उस पति के रंग में रंगी हैं उसका उस सत्य से वियोग नहीं होता।। ४ ।। वे सभी मौसम अच्छे हैं जिनमें उस सच्चे प्रभु से प्रेम बना रहता है। जिस जीव स्त्री ने पति प्रभु को पहचान लिया है वह दिन रात सुख पूर्वक सोई रहती है।। ५ ।। घाट पर खड़ा गुरु रूपी नाविक पुकार-पुकार कर कह रहा है कि दौड़कर इस संसार सागर से पार उतर जाओ। सच्चे गुरु के जहाज पर चढ़कर पार जाते हुए मैंने कईयों को देखा है।। ६ ।। कई सवार हो गए हैं और कई होकर चल दिए हैं तथा कई अपने पापो के बोझ के साथ बहुत भारी बने हुए हैं। जिन्होंने सत्य का व्यापार किया है वे सच्चे पुरुष ही प्रभु के साथ बने रहते हैं।। ७ ।। हम ना तो अपने आपको अच्छा कहते हैं और ना ही हमें कोई बुरा दिखाई देता है। हे नानक, जिसने अहंकार को मार लिया है वह उस सच्चे प्रभु जैसा ही हो गया है।। ८ ।। २ ।। १० ।। मारू महला १ ।। अपने आप में ना तो कोई मूर्ख है और ना ही किसी को सयाना समझा जाता है। मैं तो सदैव प्रभु के प्रेम में रंगा हुआ हर दिन उसके नाम का सुमिरन करता रहता हूँ।। १ ।। हे बाबा, मैं तो मूर्ख हूँ और तेरे नाम पर बलिहारी जाता हूँ। तू ही कर्ता प्रभु है और तू ही सब कुछ जानने देखने वाला है तथा तेरे नाम के माध्यम से ही मैं पार उतर सकता हूँ।। १ ।। रहाउ।। मूर्ख और बुद्धिमान दोनों एक ही हैं क्योंकि इनके नाम अलग-अलग दो हैं परन्तु इनमें ज्योति तो एक ही है। जो प्रभु के नाम को नहीं मानता वही मूर्खों में सबसे बड़ा मूर्ख है।। २ ।। गुरु के द्वार पर ही प्रभु-नाम प्राप्त होता है और सच्चे गुरु के बिना वह नहीं मिलता। यदि सच्चे गुरु की रज़ा में वह मन में बस जाए तो रात दिन उस प्रभु में ही लौ लगी रहती है।। ३ ।। राज, रंग, रूप, सम्पति, यौवन ये सब जुआरी हैं। ये सभी अस्थिर हैं और प्रभु के हुकुम में बँधे हुए उसकी चौपड़ की गोलियाँ बनकर जीवन की बाजी खेल रहे हैं।। ४ ।। संसार बहुत चतुर और सयाना है और इसीलिये भ्रमों में भूला हुआ हैं; यहाँ नाम तो लोगों का पंडित है परन्तु वे पढ़े हुए भी मूर्ख ही बने रहते हैं। वे प्रभु-नाम को भूलकर

बेदु समालहि बिखु भूले लेखारी ॥ ५ ॥ कलर खेती तरवर कंठे बागा पहिरहि कजलु झरै ॥ एहु संसारु तिसै की कोठी जो पैसै सो गरबि जरै ॥ ६ ॥ रयति राजे कहा सबाए दुहु अंतरि सो जासी ॥ कहत नानकु गुर सचे की पउड़ी रहसी अलखु निवासी ॥ ७ ॥ ३ ॥ ११ ॥

मारू महला ३ घरु ५ असटपदी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिस नो प्रेमु मंनि वसाए ॥ साचै सबदि सहजि सुभाए ॥ एहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी जीउ ॥ १ ॥ आपे मेले आपि मिलाए ॥ आपणा पिआरु आपे लाए ॥ प्रेम की सार सोई जाणै जिस नो नदरि तुमारी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिब द्रिसटि जागै भरमु चुकाए ॥ गुर परसादि परम पदु पाए ॥ सो जोगी इह जुगति पछाणै गुर कै सबदि बीचारी जीउ ॥ २ ॥ संजोगी धन पिर मेला होवै ॥ गुरमति विचहु दुरमति खोवै ॥ रंग सिउ नित रलीआ माणै अपणे कंत पिआरी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बाझहु वैदु न कोई ॥ आपे आपि निरंजनु सोई ॥ सतिगुर मिलिऐ मरै मंदा होवै गिआन बीचारी जीउ ॥ ४ ॥ एहु सबदु सारु जिस नो लाए ॥ गुरमुखि त्रिसना भुख गवाए ॥ आपण लीआ किछू न पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ ॥ ५ ॥ अगम निगमु सतिगुरू दिखाइआ ॥ करि किरपा अपनै घरि आइआ ॥ अंजन माहि निरंजनु जाता जिन कउ नदरि तुमारी जीउ ॥ ६ ॥ गुरमुखि होवै सो ततु पाए ॥ आपणा आपु विचहु गवाए ॥ सतिगुर बाझहु सभु धंधु कमावै वेखहु मनि वीचारी जीउ ॥ ७ ॥ इकि भ्रमि भूले फिरहि अहंकारी ॥ इकना गुरमुखि हउमै मारी ॥ सचै सबदि रते बैरागी होरि भरमि भुले गावारी जीउ ॥ ८ ॥ गुरमुखि जिनी नामु न पाइआ ॥ मनमुखि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अगै विणु नावै को बेली नाही बूझै गुर बीचारी जीउ ॥ ९ ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता ॥ गुरि पूरै जुग चारे जाता ॥ जिसु तू देवहि सोई पाए नानक ततु बीचारी जीउ ॥ १० ॥ १ ॥

वेदों को मन में सम्भाले रहते हैं और इस प्रकार के लोग विषय विकारों में भूले हुए विद्वान लेखक बने रहते हैं ।। ५ ।। नदी के किनारे वृक्ष, क्षार वाली धरती पर खेती स्थायी नहीं होती; सफेद कपड़े पहनकर उस पर यदि कालिख झड़ती रहती है तो वह सफेद नही बना रह सकता। यह संसार भी तृष्णा की ऐसी कोठी है जिसमें जो भी आता है वह अभिमान में जलता रहता है।। ६ ।। प्रजा और राजा सब कहाँ चले गए अर्थात ये भी स्थिर नहीं हैं और जो भी द्वैतभाव में है उसे यहाँ से जाना ही जाना है। नानक का कथन है कि सच्चे गुरु का यही उपदेश है कि यहाँ केवल वह एक अदृष्ट प्रभु ही सदैव स्थायी निवास बनाए रखने वाला है।। ७ ।। ३ ।। ११ ।।

मारू महला ३ घरु ५ अष्टपदी १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिसके मन में प्रेम लगा देता है वह सच्चे शब्द के माध्यम से अपने सहज स्वभाव को पहचान लेता है। इस प्रेम की पीड़ा को वह प्रभु ही जानता है तथा अन्य कोई इसकी औषधि नहीं जान सकता।। १ ।। वह प्रभु स्वयं ही मिलता मिलाता है और अपना प्रेम स्वयं ही लगाता है। जिस पर हे प्रभु, तुम्हारी कृपा दृष्टि होती है वही प्रेम के महत्व को जान पाता है।। १ ।। रहाउ।। जब भ्रम समाप्त हो जाते हैं तो दिव्य दृष्टि जग जाती है; गुरु कृपा से जीव परम पद को प्राप्त कर लेता है। वास्तविक योगी वही है जो शब्द-गुरु के चिन्तन के फलस्वरूप इस युक्ति को पहचानने वाला होता है।। २ ।। संयोगवश ही जीव रूपी स्त्री का प्रभु प्रियतम से मिलाप होता है और जीव के अन्तर्मन में से गुरमति के फलस्वरूप दुर्मति नष्ट हो जाती है। ऐसी जीव स्त्री उसके प्रेम में सदैव आनन्द का उपभोग करती है और अपने प्रियतम की प्यारी बनी रहती है।। ३ ।। सच्चे गुरु के बिना अन्य कोई वैद्य नहीं है और वह निंरजन प्रभु सब कुछ स्वयं ही है। सच्चे गुरु को मिलने से बुराई नष्ट हो जाती है और ज्ञान का चिंतन पैदा हो जाता है।। ४ ।। यह श्रेष्ठ शब्द जिसके मन को बींध लेता है वह गुरमुख बनकर तृष्णा और भूख को नष्ट कर देता है। अपना किया तो कुछ भी नही मिलता और जो कुछ भी मिलता है वह प्रभु की कला और कृपा को धारण करने से ही प्राप्त होता है।। ५ ।। वेदों और तन्त्र ग्रन्थों का सार तत्व सच्चे गुरु ने दिखा दिया है और प्रभु कृपा करके हमारे हृदय रूपी घर में आ बैठा है। हे प्रभु, जिनपर तुम्हारी कृपा दृष्टि हो गई है उन्होंने ही इस कालिमा पूर्ण संसार में उस निरंजन प्रभु को पहचाना है।। ६ ।। जो गुरमुख बन जाता है वही सार तत्व को पा जाता है और अपने अहंकार को अपने अन्तर्मन से गँवा देता है। सच्चे गुरु के बिना तो सब बेगारी के धन्धों में लगे रहते हैं। इस तथ्य को मन में अच्छी तरह विचार कर देख लेना चाहिए।। ७ ।। कई भ्रमों में भूले हुए अहंकारी बन कर भटकते रहते हैं और कईयों ने गुरमुख बनकर अहंकार को मार दिया होता है। सच्चे वैराग्यवान तो उसके सत्य शब्द में लीन बने रहते हैं और अन्य गँवार बने भ्रमों में भटकते रहते हैं।। ८ ।। जिन्होंने गुरमुख बनकर प्रभु नाम प्राप्त नहीं किया वे मनमुख हैं और उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया। गुरु के चिन्तन को जानने के बाद ही यह समझ आती है कि परलोक में प्रभु-नाम के बिना कोई भी मित्र नहीं हैं।। ६ ।। प्रभु का अमृत नाम सदैव सुख देने वाला है और पूर्ण गुरु के माध्यम से इसे चारों युगों में जाना जाता है। हे प्रभु, जिसे तू देता है वही इसको प्राप्त करता है; और हे नानक, वही व्यक्ति तत्व चिंतन करने वाला बन जाता है।। १० ।। १ ।।

मारू महला ५ घरु ३ असटपदीआ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥
लख चउरासीह भ्रमते भ्ररते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥ १ ॥ रे मूड़े तू होछै रसि लपटाइओ ॥ अंम्रितु संगि बसतु है तेरै बिखिआ सिउ उरझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवेहर बनजनि आइओ कालरु लादि चलाइओ ॥ २ ॥ जिह घर महि तुधु रहना बसना सो घरु चीति न आइओ ॥ ३ ॥ अटल अखंड प्राण सुखदाई इक निमख नही तुझु गाइओ ॥ ४ ॥ जहा जाणा सो थानु विसारिओ इक निमख नही मनु लाइओ ॥ ५ ॥ पुत्र कलत्र ग्रिह देखि समग्री इस ही महि उरझाइओ ॥ ६ ॥ जितु को लाइओ तित ही लागा तैसे करम कमाइओ ॥ ७ ॥ जउ भइओ क्रिपालु ता साधसंगु पाइआ जन नानक ब्रहमु धिआइओ ॥ ८ ॥ १ ॥ मारू महला ५ ॥ करि अनुग्रहु राखि लीनो भइओ साधू संगु ॥ हरि नाम रसु रसना उचारै मिसट गूड़ा रंगु ॥ १ ॥ मेरे मान को असथानु ॥ मीत साजन सखा बंधपु अंतरजामी जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संसार सागरु जिनि उपाइओ सरणि प्रभ की गही ॥ गुर प्रसादी प्रभु अराधे जमकंकरु किछु न कही ॥ २ ॥ मोख मुकति दुआरि जा कै संत रिदा भंडारु ॥ जीअ जुगति सुजाणु सुआमी सदा राखणहारु ॥ ३ ॥ दूख दरद कलेस बिनसहि जिसु बसै मन माहि ॥ मिरतु नरकु असथान बिखड़े बिखु न पोहै ताहि ॥ ४ ॥ रिधि सिधि नव निधि जा कै अंम्रिता परवाह ॥ आदि अंते मधि पूरन ऊच अगम अगाह ॥ ५ ॥ सिध साधिक देव मुनि जन बेद करहि उचारु ॥ सिमरि सुआमी सुख सहजि भुंचहि नही अंतु पारावारु ॥ ६ ॥ अनिक प्राछत मिटहि खिन महि रिदै जपि भगवान ॥ पावना ते महा पावन कोटि दान इसनान ॥ ७ ॥ बल बुधि सुधि पराण सरबसु संतना की रासि ॥ बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि ॥ ८ ॥ २ ॥ मारू महला ५ ॥ ससत्रि तीखणि काटि डारिओ मनि न कीनो रोसु ॥ काजु उआ को ले सवारिओ तिलु न दीनो दोसु ॥ १ ॥ मन मेरे राम रउ नित नीति ॥ दइआल देव क्रिपाल गोबिंद सुनि संतना

मारू महला ५ घरु ३ अष्टपदियाँ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

चौरासी लाख योनियों में भटकते भटकते अब इस दुर्लभ मानव जनम को प्राप्त किया गया है।। १ ।। हे मूर्ख, तू ओछे रसों में ही लिपटा हुआ है। प्रभु रूपी अमृत तेरे साथ बसता है परन्तु तू माया के विष में ही फँसा है।। १ ।। रहाउ।। तू आया तो यहाँ रत्न और जवाहिरों का व्यापार करने के लिये था परन्तु तू घटिया मिट्टी को ही लाद कर यहां से चल पड़ा है।। २ ।। जिस घर में तुझे अंतिम रूप से रहना और बसना है तुझे उस घर का तो विचार ही नहीं आया।। ३।। वह अटल, अखण्ड और प्राणों को सुख देने वाला परमात्मा है जिस का तूने एक क्षण के लिये भी गुणानुवाद नहीं किया है।। ४ ।। जहाँ तुझे जाना है उस स्थान को तूने भुला दिया और एक क्षण के लिये भी उसमें अपना मन नहीं लगाया।। ५।। पुत्र, स्त्री, घर और सामान आदि को देखकर तू इसी में ही उल्झा है।। ६ ।। तुझे कोई जिधर भी लगा देता है तू उधर ही लग जाता है और उसी प्रकार के कर्म करता रहता है।। ७ ।। जब प्रभु कृपालु हुआ तो तूने साधसंगति प्राप्त की है और हे नानक, प्रभु के सेवकों ने तो उस परमात्मा का ही सुमिरन किया है।। ८ ।। १ ।। मारू महला ५।। साधु पुरुषों के साथ मेरी संगति हो गई है और प्रभु ने कृपा करके मुझे बचा लिया है। मेरी जीभ अब रस लेकर प्रभु-नाम का उच्चारण करती है और यह रस गाढ़ा और अत्यन्त मीठा है।। १ ।। मेरे मन का ठिकाना वह प्रभु ही है; वही मेरा मीत, सज्जन, सखा, बन्धु, अन्तर्यामी है।। १ ।। रहाउ।। जिसने यह संसार सागर पैदा किया है मैंने तो उस प्रभु की शरण पकड़ ली है। गुरु की कृपा से प्रभु का सुमिरन किया है इससे अब यम का दूत मुझे कुछ भी नहीं कहता।। २ ।। जिसके पास मोक्ष और मुक्ति का द्वार है और जो शान्त हृदय का भण्डार है वही जीवन की युक्ति बताने वाला सयाना स्वामी है जो सदैव हमारी रक्षा करता है।। ३ ।। वह जिसके मन में बस जाता है उसके दुख दर्द और क्लेश नष्ट हो जाते हैं। मृत्यु, नरक, भयानक स्थान और विष आदि उसका स्पर्श भी नहीं कर पाते।। ४ ।। जिसके पास ऋद्धियाँ सिद्धियाँ, नवनिधियाँ और अमृत का प्रवाह है वह प्रभु ही आदि, अन्त, मध्य में पूर्ण बना रहने वाला ऊँचा, अगम्य और ना जाना जा सकने वाला है।। ५ ।। सिद्ध, साधक, देवता, मुनिजन और वेद आदि उसी का उच्चारण करते हैं। उस परमात्मा का कोई ओर-छोर नहीं है, जिसका सुमिरन करके ये सब सहज सुख का आनन्द लेते हैं।। ६ ।। क्षण भर में ही अनेकों पाप तब मिट जाते हैं जब हृदय में भगवान का जाप किया जाता है। वह करोड़ों दान और स्नानों से भी पवित्र और महापवित्र है।। ७ ।। वह बल, बुद्धि, सुरति, प्राण, सर्वस्व और सन्तजनों की रास पूंजी है। नानक की तो यही अरदास है कि हे प्रभु, तू एक क्षण के लिये भी मुझे ना भूले।। ८ ।। २ ।। मारू महला ५ ।। वृक्ष को तीखे औजारों से काटा जाता है परन्तु वह मन में क्रोध नही लाता उल्टा वह काटने वाले का काम सँवारता है और उसे तिल मात्र भी दोष नहीं देता।। १ ।। हे मेरे मन, सदैव प्रभु नाम का सुमिरन कर। दयालु, देव, कृपालु प्रभु का सुमिरन कर और सन्त पुरुषों के जीवन की

की रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि ॥ महा सागरु नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि ॥ २ ॥ चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥ बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥ ३ ॥ ऊच नीच बिकार सुक्रित संलगन सभ सुख छत्र ॥ मित्र सत्रु न कछू जानै सरब जीअ समत ॥ ४ ॥ करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास ॥ पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइओ बिखादु ॥ ५ ॥ सीत मंद सुगंध चलिओ सरब थान समान ॥ जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न संका मान ॥ ६ ॥ सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥ ७ ॥ चरण सरण सनाथ इहु मनु रंगि राते लाल ॥ गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल ॥ ८ ॥ ३ ॥

मारू महला ५ घरु ४ असटपदीआ   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चादना चादनु आंगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥ १ ॥ आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥ २ ॥ तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥ ३ ॥ मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥ ४ ॥ जागना जागनु नीका हरि कीरतन महि जागना ॥ ५ ॥ लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥ ६ ॥ इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥ ७ ॥ कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥

मारू महला ५ ॥ आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु स्रवन सुनावना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गावना ॥ १ ॥ संत क्रिपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥ २ ॥ भगत दइआ ते बुधि परगासै दुरमति दूख तजावना ॥ ३ ॥ दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥ ४ ॥ नउ निधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै मनि भावना ॥ ५ ॥ संत बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥ ६ ॥ मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै संता संगि समावना ॥ ७ ॥ कहु नानक गुरि चलतु दिखाइआ मन मधे हरि हरि रावना ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

विधि के बारे में सुनता रह।। १ ।। रहाउ।। नाव को अपने पैरों के नीचे दबाकर व्यक्ति बैठता है और अपने शरीर की थकावट दूर करता है। महासागर उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाता और वह जल्दी ही पार उतर जाता है।। २ ।। चन्दन, अगर, कपूर आदि के लेप से धरती को कोई प्रेम नहीं है। विष्ठा, मूत्र और बार-बार खोदे जाने पर भी उसके मन में कोई विरोध पैदा नहीं होता।। ३ ।। आकाश ऊँचे-नीचे, बुरे-अच्छे, सबके लिए एक जैसा सुख देने वाला छत्र है। वह मित्र, शत्रु किसी को नहीं मानता और सब जीवों के लिये एक जैसा बना रहता है।। ४ ।। सूर्य का प्रचंड प्रकाश प्रकट होता है और अंधकार का विनाश हो जाता है। उसकी किरणें पवित्र अपवित्र सबको समान रूप से लगती हैं और ऐसा करते हुए उसके मन को कोई दुख नहीं होता।। ५ ।। शीतल मन्द-मन्द चलने वाली सुगन्धित वायु सब स्थानों में समान रूप से चलती है। वह जहाँ कहीं भी जो कुछ भी होता है उसे स्पर्श करती है और ऐसा करते हुए वह तिल मात्र भी शंका और संकोच नहीं मानती।। ६ ।। अच्छे बुरे किसी विचार के साथ भी जो अग्नि के पास आता है उसका पाला दूर हो जाता है। अग्नि अपना पराया कुछ नहीं जानती और सदैव स्वभाविक रूप से कार्य करती रहती है।। ७ ।। मेरा यह मन उस प्रभु के चरण-शरण में आकर सनाथ हो गया है उस प्रभु के रंग में रंग गया है। हे नानक, उस प्रभु के गुण सदा गाओ ताकि वह प्रभु कृपा कर दे।। ८ ।। ३ ।।

मारू महला ५ घरु ४ अष्टपदियाँ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

चाँदनी में से सबसे अच्छी चाँदनी वह है जिससे हृदय रूपी आँगन में प्रभु का प्रकाश हो जाए।। १ ।। सुमिरन में से वही सुमिरन उत्तम है जिसमें प्रभु नाम की आराधना की जाए।। २ ।। त्याग में से उत्तम त्याग वही है जिसमें काम, क्रोध, लोभ को त्यागा जाए।। ३ ।। माँगने में सबसे उत्तम माँगना वही है जिसमें गुरु से हरि यश को माँगा जाए।। ४ ।। जागते रहने में वही जागरण उत्तम है जिसमें प्रभु की कीर्ति का गायन करते हुए जागा जाए।। ५ ।। लगाने में सबसे उत्तम लगाव वही है जिसमें गुरु के चरणों में मन लगा रहे।। ६ ।। यह विधि उसे ही प्राप्त होती है जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखा होता है।। ७ ।। नानक का कथन है कि जो प्रभु की शरण में आ गया उसके लिये सब कुछ ही उत्तम है।। ८ ।। १ ।। ४ ।। मारू महला ५ ।। हे शान्त पुरुषो, तुम हमारे यहाँ आओ ताकि हरि यश का सुनना सुनाना हो सके ।। १ ।। रहाउ।। तुम्हारे आने से मेरा मन तन हरा भरा हो जाता है और तुम्हारे साथ हरि यश का गायन होता है।। १ ।। शान्त पुरुषों की कृपा से प्रभु हृदय में बसता है और द्वैतभाव मिट जाता है।। २ ।। भक्तजनों की दया से बुद्धि प्रकाशमान हो उठती है और दुर्मति का दुख दूर हो जाता है।। ३ ।। तुम्हारे दर्शन करते ही जीवन पवित्र हो जाता है और फिर गर्भ योनि में नहीं आना पड़ता।। ४ ।। नवनिधियाँ, ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ उन्हीं को प्राप्त होती हैं जो तुम्हारे मन को भा जाते हैं।। ५ ।। शान्त पुरुषों के बिना मेरा अन्य कोई ठिकाना नहीं है और मुझे किसी दूसरी जगह जाने का पता भी नहीं हैं।। ६ ।। मुझ गुण विहीन को तो कोई भी नहीं बचाता और मैं शान्त पुरुषों की संगति में ही लीन बना रहता हूँ।। ७ ।। नानक का कथन है कि गुरु ने एक ऐसा खेल दिखा दिया है कि मन के अन्दर ही अब मैंने प्रभु मिलाप का सुख प्राप्त कर लिया है।। ८ ।। २ ।। ५ ।।

मारू महला ५ ॥ जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि जपि सद जीवना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीवना जितु मनु आघावै नामु अंम्रित रसु पीवना ॥ १ ॥ खावना जितु भूख न लागै संतोखि सदा त्रिपतीवना ॥ २ ॥ पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥ ३ ॥ भोगना मन मधे हरि रसु संतसंगति महि लीवना ॥ ४ ॥ बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती संगि सीवना ॥ ५ ॥ मातिआ हरि रस महि राते तिसु बहुड़ि न कबहू अउखीवना ॥ ६ ॥ मिलिओ तिसु सरब निधाना प्रभि क्रिपालि जिसु दीवना ॥ ७ ॥ सुखु नानक संतन की सेवा चरण संत धोइ पीवना ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

मारू महला ५ घरु ८ अंजुलीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु ग्रिहि बहुतु तिसै ग्रिहि चिंता ॥ जिसु ग्रिहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥ १ ॥ ग्रिह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीऐ ॥ २ ॥ जागत सूता भरमि विगूता ॥ बिनु गुर मुकति न होईऐ मीता ॥ साधसंगि तुटहि हउ बंधन एको एकु निहालीऐ ॥ ३ ॥ करम करै त बंधा नह करै त निंदा ॥ मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा ॥ गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीऐ ॥ ४ ॥ संसारै महि सहसा बिआपै ॥ अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै ओहु बालक वागी पालीऐ ॥ ५ ॥ छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ इस ही महि जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीऐ ॥ ६ ॥ जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥ जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ ॥ ७ ॥ जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ करि करि वेखै अपणे जचना ॥ नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीऐ ॥ ८ ॥ १ ॥ ७ ॥ मारू महला ५ ॥ बिरखै हेठि सभि जंत इकठे ॥ इकि तते इकि बोलनि मिठे ॥ असतु उदोतु भइआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥ १ ॥ पाप करेदड़ सरपर मुठे ॥ अजराईलि फड़े फड़ि कुटे ॥

मारू महला ५ ।। सफल जीवन वही जीवन है जिसमें प्रभु नाम सुनकर उसका जाप करके सदैव जीवित रहा जाए।। १ ।। रहाउ।। कीया भी वही जाए जिससे मन तृप्त हो जाए और प्रभु नाम के अमृत रस को ही पीया जाए।। १ ।। खाया भी कुछ ऐसा ही जाए जिसमें फिर भूख ना लगे और सन्तुष्ट होकर सदा के लिये तृप्त हो जाया जाए।। २ ।। पहनना वही सफल है कि हे हरि, मेरा सम्मान बना रहे और मैं नंगा ना होऊँ।। ३ ।। भोग वह है कि हृदय में सन्त संगति के माध्यम से नाम रस का आनन्द लिया जाए।। ४ ।। सूई और धागा लाए बिना ही मन को प्रभु की भक्ति के साथ सिल दिया जाए।। ५ ।। प्रभु के नाम रस में मस्त होकर व्यक्ति कभी किसी नशे की कमी महसूस नहीं करता।। ६ ।। कृपालु प्रभु ने जिसे दे दिया उसे सब प्रकार के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं।। ७ ।। हे नानक, सुख तो सन्तों की सेवा में हैं और मैं तो साधु पुरुषों के चरण धोकर पीता रहता हूँ।। ८ ।। ३ ।। ६ ।।

मारू महला ५ घरु ८ अंजुलियाँ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिसके घर में धन सम्पति बहुत है उसी के घर में चिंता बनी रहती है। जिसके घर में यह कम है वह इसे बढ़ाने के लिये भटकता फिरता है। इन दोनों अवस्थाओं से जो मुक्त होता है वही सुखी जाना जाता है।। १ ।। बहुत प्रकार से वेदों का पाठ करके खोजबीन कर ली गई है कि गृहस्थी और राज के ऐश्वर्य में नरक ही नरक हैं; उदासीन बने रहने से क्रोध बढ़ता है परन्तु जो शरीर में रहता हुआ शरीर से अलिप्त बना रहता है उसी व्यक्ति का परिश्रम इस जीवन में सफल होता है।। २ ।। जो शरीरिक रूप से जागता हुआ भी अज्ञान में सोकर भ्रमों में भटकता रहता है मेरा वह मित्र गुरु के बिना मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता है। साधसंगति में ही अहंकार का बन्धन टूटता है और उस एक ही प्रभु को देखा जाता है।। ३ ।। कर्म करने पर व्यक्ति बन्धनों में पड़ता है और ना करें तो लोग निन्दा करते हैं। मोह में लीन बने हुए मन को चिंता सताती रहती है। गुरु की कृपा से यदि सुख और दुख को समान भाव से जाना जाए तो घर घर में प्रभु को अनुभव किया जाता है।। ४ ।। सारे संसार को शंका और भ्रम चिपका हुआ है इसलिये उस अगोचर प्रभु की अकथनीय कथा का पता नहीं चलता। वह जिसे समझाता है वही समझ पाता है और वह प्रभु सबको अपने बच्चों की तरह पालता सम्भालता है।। ५ ।। व्यक्ति यदि माया को छोड़ बैठे तब भी यह छूटती नहीं। यदि वह उसे इकट्ठा करता है तो इसके मन में भय बना रहता है। माया के अन्दर ही रहने वाले जिस व्यक्ति के सम्मान की परमात्मा रक्षा कर ले ऐसे साधु व्यक्ति पर तो चँवर डुलाया जाता है।। ६ ।। शूरवीर वही है जो विकारों के संदर्भ में मरना जानता है। जो पलायनवादी है वह बार-बार योनियों में भटकता रहता है। प्रभु के कीए हुए को जो व्यक्ति भला मानता हैं वह हुकुम को बूझता हुआ दुर्मति को जला देता है।। ७ ।। प्रभु जिधर लगाता है हमें उधर की लगना होता है और उसे जो जचता है वह वही कर करके देखता रहता है। नानक को पूर्ण सुख देने वाले दाता प्रभु यदि तू अपना नाम प्रदान कर दे तो हम उसका सुमिरन करते रहें।। ८ ।। १ ।। ७ ।। मारू महला ५ ।। संसार रूपी वृक्ष के नीचे सभी जीव इकट्ठा हो गए हैं। उनमें से कुछ क्रोध वालें है और कुछ मीठा बोलने वाले हैं। जैसे ही उनके जीवन का सूर्य अस्त होता है और नया सूर्य निकलने वाला होता है वैसे ही वे जीवन रूपी रात्रि बिताकर उठकर यहाँ से चल पड़ते हैं।। १ ।। जो पाप करते हैं वे अवश्य लूट लिये जाते हैं। मौत का फरिश्ता उन्हें पकड़कर कचोटता है।

दोजकि पाए सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ ॥ २ ॥ संगि न कोई भईआ बेबा ॥ मालु जोबनु धनु छोडि वञेसा ॥ करण करीम न जातो करता तिल पीड़े जिउ घाणीआ ॥ ३ ॥ खुसि खुसि लैदा वसतु पराई ॥ वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ दुनीआ लबि पइआ खात अंदरि अगली गल न जाणीआ ॥ ४ ॥ जमि जमि मरै मरै फिरि जंमै ॥ बहुतु सजाइ पइआ देसि लंमै ॥ जिनि कीता तिसै न जाणी अंधा ता दुखु सहै पराणीआ ॥ ५ ॥ खालक थावहु भुला मुठा ॥ दुनीआ खेलु बुरा रुठ तुठा ॥ सिदकु सबूरी संतु न मिलिओ वतै आपण भाणीआ ॥ ६ ॥ मउला खेल करे सभि आपे ॥ इकि कढे इकि लहरि विआपे ॥ जिउ नचाए तिउ तिउ नचनि सिरि सिरि किरत विहाणीआ ॥ ७ ॥ मिहर करे ता खसमु धिआई ॥ संता संगति नरकि न पाई ॥ अंम्रित नाम दानु नानक कउ गुण गीता नित वखाणीआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥ २० ॥

मारू सोलहे महला १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥ जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु रहणा तुम सिउ किआ मुकराई हे ॥ १ ॥ आपि उपाए आपि खपाए ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ आपे वीचारी गुणकारी आपे मारगि लाई हे ॥ २ ॥ आपे दाना आपे बीना ॥ आपे आपु उपाइ पतीना ॥ आपे पउणु पाणी बैसंतरु आपे मेलि मिलाई हे ॥ ३ ॥ आपे ससि सूरा पूरो पूरा ॥ आपे गिआनि धिआनि गुरु सूरा ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचे सिउ लिव लाई हे ॥ ४ ॥ आपे पुरखु आपे ही नारी ॥ आपे पासा आपे सारी ॥ आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे कीमति पाई हे ॥ ५ ॥ आपे भवरु फुलु फलु तरवरु ॥ आपे जलु थलु सागरु सरवरु ॥ आपे मछु कछु करणीकरु तेरा रूपु न लखणा जाई हे ॥ ६ ॥ आपे दिनसु आपे ही रैणी ॥ आपि पतीजै गुर की बैणी ॥ आदि जुगादि अनाहदि अनदिनु घटि घटि सबदु रजाई हे ॥ ७ ॥ आपे रतनु अनूपु अमोलो ॥ आपे परखे पूरा तोलो ॥

वह रचना करने वाला प्रभु उन्हें नरक में डालता है और बनिया बनकर उनसे हिसाब माँगता है।। २ ।। अब कोई भाई और बहन साथ नहीं होता तथा धन माल और यौवन को छोड़कर जीव यहाँ से चला जाता है। उस सब कुछ करने वाले करीम प्रभु को उसने नही जाना। उसको ऐसे पेरा जाता है जैसे घानी में तिल को पेरा जाता है। तू दूसरों की वस्तुओं को छीन-छीन कर ले लेता है और यह नहीं जानता कि तेरा खुदा तुझे तेरे साथ ही देख और सुन रहा है। संसार के लोभ ने तुझे गड्ढे में गिराया है और तूने आगे की बात को नही समझा है।। ४ ।। जीव जन्म लेता है मरता है फिर जन्म लेता है। यह बहुत बड़ी सजा है और जीव जन्म-मरण के लम्बे रास्ते पर पड़ जाता है। जिसने पैदा किया है यह अन्धा उसे नहीं जानता और इस प्रकार प्राणी दुख सहता रहता है।। ५ ।। प्रभु की ओर से भूलकर जीव लूटा गया है। संसार का खेल ऐसा बुरा है कि इसमें जीव माया के प्रभाव में कभी रूठता है कभी मान जाता है। यह जीव सन्तोष और सब्र को धारण करने वाले गुरु रूपी संत को तो मिलता नहीं और अपनी ही मर्जी के अनुसार व्यवहार करता रहता है।। ६ ।। वह प्रभु सब अपने खेल आप ही करता रहता है; कईयों को तो वह निकाल लेता है और कईयों को माया की लहर मे डुबोता रहता है। वह प्रभु जैसे नचाता है जीव वैसे वैसे ही नाचते हैं और हर एक के उपर उसके संस्कार कार्यशील बने रहते हैं।। ७ ।। यदि प्रभु कृपा करे तो मैं अपने मालिक की आराधना करूं और सन्त पुरुषों की संगति में पड़कर नरक में ना जाऊँ। नानक को तो प्रभु के अमृत नाम का दान मिल गया है और इसलिये वह सदैव उसके गुणों के गीत गाता रहता है।। ८ ।। २ ।। ८ ।। १२ ।। २० ।।

मारू सोलहे महला १   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह सत्य रूपी सच्चा प्रभु एक ही है उसके बिना अन्य कोई नहीं। जिसने सृष्टि की रचना की है उसी ने ही फिर इसका नाश भी किया है। तुझे जैसा भाता है वैसे ही हमें रख, तुम्हारे सामने भला कैसे ना-नुकुर की जा सकती है।।१।। वह स्वयं ही उत्पन्न करता है स्वयं ही नाश करता है; स्वयं ही वह सबको धन्धों में लगाता है। वह स्वयं ही विचारवान और गुणवान है और स्वयं ही जीवों को रास्ते पर डालता है।। २ ।। वह स्वयं ही जानने वाला और देखने वाला है; स्वयं ही वह उत्पन्न करता और प्रसन्न होने वाला भी है। वह स्वयं ही पवन, पानी और अग्नि है और स्वयं ही मेल मिलाने वाला है।। ३ ।। वह स्वयं ही चन्द्रमा, सूर्य और पूर्ण गुरु है; स्वयं ही ज्ञान, ध्यान लगाने वाला शूरवीर गुरु है। यदि उस सच्चे प्रभु में लौ लगाई जाए तो काल का जाल और यम जीव की ओर देख भी नहीं पाता।। ४ ।। वह स्वयं ही पुरुष और स्वयं ही स्त्री है; स्वयं ही पासा और स्वयं ही चौपड़ भी है। वह स्वयं ही संसार को अखाड़ा बनाकर इसमें खेल करता है और स्वयं ही अपना मूल्य जानता है।। ५ ।। वह स्वयं ही भँवरा, फूल, फल और वृक्ष है और स्वयं ही जल, स्थल, सागर और सरोवर भी है। वह स्वयं ही मछली, कछुआ और करने-कराने वाला प्रभु है। हे प्रभु, तेरे रूप का वर्णन नहीं किया जा सकता।। ६ ।। दिन और रात वह स्वयं है और गुरु के वचनों के माध्यम से वह स्वयं ही प्रसन्न होता है। वह आदि, युगादि सभी सीमाओं से परे और सदैव रज़ा रूपी शब्द बनकर घट-घट में स्थित बना रहता है।। ७ ।। वह स्वयं ही अनुपम एवं अमूल्य रत्न है; वह स्वयं ही परखता है और स्वयं ही तौल में भी पूरा उतरता है।

आपे किस ही कसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥ ८ ॥ आपे धनखु आपे सरबाणा ॥ आपे सुघड़ु सरूपु सिआणा ॥ कहता बकता सुणता सोई आपे बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ पउणु गुरू पाणी पित जाता ॥ उदर संजोगी धरती माता ॥ रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई हे ॥ १० ॥ आपे मछुली आपे जाला ॥ आपे गऊ आपे रखवाला ॥ सरब जीआ जगि जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥ ११ ॥ आपे जोगी आपे भोगी ॥ आपे रसीआ परम संजोगी ॥ आपे वेबाणी निरंकारी निरभउ ताड़ी लाई हे ॥ १२ ॥ खाणी बाणी तुझहि समाणी ॥ जो दीसै सभ आवण जाणी ॥ सेई साह सचे वापारी सतिगुरि बूझ बुझाई हे ॥ १३ ॥ सबदु बुझाए सतिगुरु पूरा ॥ सरब कला साचे भरपूरा ॥ अफरिओ वेपरवाहु सदा तू ना तिसु तिलु न तमाई हे ॥ १४ ॥ कालु बिकालु भए देवाने ॥ सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ आपे मुकति त्रिपति वरदाता भगति भाइ मनि भाई हे ॥ १५ ॥ आपि निरालमु गुर गम गिआना ॥ जो दीसै तुझ माहि समाना ॥ नानकु नीचु भिखिआ दरि जाचै मै दीजै नामु वडाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥ मारू महला १ ॥ आपे धरती धउलु अकासं ॥ आपे साचे गुण परगासं ॥ जती सती संतोखी आपे आपे कार कमाई हे ॥ १ ॥ जिसु करणा सो करि करि वेखै ॥ कोइ न मेटै साचे लेखै ॥ आपे करे कराए आपे आपे दे वडिआई हे ॥ २ ॥ पंच चोर चंचल चितु चालहि ॥ पर घर जोहहि घरु नही भालहि ॥ काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥ ३ ॥ गुर ते बूझै त्रिभवणु सूझै ॥ मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ जो तुधु सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ॥ ४ ॥ आपे सुरगु मछु पइआला ॥ आपे जोति सरूपी बाला ॥ जटा बिकट बिकराल सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे ॥ ५ ॥ बेद कतेबी भेदु न जाता ॥ ना तिसु मात पिता सुत भ्राता ॥ सगले सैल उपाइ समाए अलखु न लखणा जाई हे ॥ ६ ॥ करि करि थाकी मीत घनेरे ॥ कोइ न काटै अवगुण मेरे ॥ सुरि नर नाथु साहिबु सभना सिरि भाइ मिलै भउ जाई हे ॥ ७ ॥ भूले चूके मारगि पावहि ॥ आपि भुलाइ तूहै समझावहि ॥ बिनु नावै मै अवरु न दीसै

स्वयं ही वह कसौटी प्रदान करता है और स्वयं ही हे भाई, लेने-देने वाला भी है।। ८ ।। प्रभु स्वयं ही धनुष और स्वयं ही तीर चलाने वाला है; वह स्वयं ही सुन्दर स्वरूप वाला और सयाना है। कहने-सुनने वाला वह स्वयं ही है और उसने स्वयं ही यह रचना रची है।। ६ ।। पवन, गुरु और पानी को पिता जाना गया है और अपने पेट से सभी कुछ पैदा करने वाली होने के कारण धरती माता है। दिन और रात दोनों धाय और सेवक हैं जिनके माध्यम से संसार को खेल खिलाया जा रहा है।। १० ।। वह स्वयं ही मछली और स्वयं ही जाल है; वह स्वयं ही गाय है और स्वयं ही उसका रक्षक है। हे प्रभु, जैसा तुमने चाहा है सभी जीवों में तुम्हारा ही प्रकाश विद्यमान है।। ११ ।। वह स्वयं ही योगी और स्वयं ही भोगी है; स्वयं ही रसिक है और स्वयं ही मेल मिलाने वाला हैं। वह वाणी से परे निराकार और निर्भय रूप में समाधि में स्थित बना है।। १२ ।। जीवन के स्रोत और जीवों की सभी बोलियाँ तुझ में ही समाहित हो जाती हैं और हे प्रभु, जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब कुछ चलायमान है। जिनको सच्चे गुरु ने समझ प्रदान कर दी है वे ही साहूकार और सच्चे व्यापारी हैं।। १३ ।। पूर्ण सच्चा गुरु ही शब्द के रहस्य को समझाता है क्योंकि सच्चा शब्द ही सभी कलाओं से परिपूर्ण हैं। ना पकड़ा जा सकने वाला सदैव बेपरवाह बना रहने वाला हे प्रभु, तू ही है और तुझे तिल मात्र भी लालच नहीं है।। १४ ।। जिन्होंने शब्द के स्वाभाविक रस को अन्तर्मन में चख लिया है उनके लिये मौत और जन्म अब बावलों के समान हो गए हैं। वह प्रभु स्वयं ही मुक्ति और सन्तुष्टि का वरदान देने वाला है और भक्तिभावना ही उसके मन को भाती है।। १५ ।। उस अलिप्त प्रभु का ज्ञान गुरु को मिलकर ही प्राप्त होता है और हे प्रभु, जो कुछ भी दृष्टमान है वह सब तुझ में ही समाया है। विनम्र नानक तो तेरे द्वार पर भिक्षा माँग रहा है कि मुझे अपने नाम का बड़प्पन प्रदान करो।। १६ ।। १ ।। मारू महला १ ।। वह स्वयं ही धरती और स्वयं ही तथाकथित धरती को थामने वाला बैल और आकाश है; वह स्वयं ही सत्य रूपी गुण के रूप में प्रकाशमान है। यति, त्यागी और सन्तुष्ट बना रहने वाला वह स्वयं ही है और स्वयं ही सब कार्य करने वाला है।। १ ।। जिस प्रभु ने जो करना है वह कर-करके उसे देख रहा है और उसके लिखे हुए सच्चे लेखों को कोई नहीं मिटा सकता। वह स्वयं ही सब कुछ करता-कराता है और स्वयं ही बड़प्पन प्रदान करता है।। २ ।। इस चंचल चित्त में विकार रूपी पाँच चोर इसे भटकाते रहते हैं और पराए घरों में ताँक-झाँक तो ये लगाए रहते हैं परन्तु अपने वास्तविक घर को ये नहीं खोज पाते। शरीर रूपी नगर तो गिरकर ढेर हो जाएगा और जीव शब्द से विहीन बना रहकर अपना सम्मान खोकर यहाँ से चला जाता है।। ३ ।। गुरु के समझाने पर तीनों लोकों का पता चल जाता है और जीव मन की वासनाओं को मारकर मन से ही युद्ध करने लग जाता है। हे प्रभु, जो तेरा सुमिरन करते हैं वे तेरे ही जैसे हो जाते हैं और तू निर्भय रूप में उनका बचपन से ही मित्र बना रहता है।। ४ ।। तू स्वयं ही स्वर्ग, मातृलोक और पाताललोक है; तू स्वयं ही प्रकाश और शक्ति से भरा हुआ जवान है। तू ही विकट जटाओं वाला विकराल स्वरूप वाला है और तू ही ऐसे सुन्दर रूपवाला है कि तेरी कोई भी रूप रेखा नहीं कही जा सकती।। ५ ।। वेदों और कतेबों ने भी उसके रहस्य को नहीं जाना है क्योंकि ना तो उसका कोई माता पिता है ना ही उसका कोई पुत्र और भाई है। समस्त पर्वत उसी ने पैदा करके नष्ट कीए हैं और उस अदृष्ट प्रभु को जाना नहीं जा सकता।। ६ ।। मैं अनेकों गहरे मित्र बनाकर थक गई हूँ परन्तु कोई भी मेरे अवगुणों को समाप्त नहीं कर पाता। देवता मनुष्य और नाथ आदि सबके सिर पर उसका नियंत्रण है; वह प्रेम से मिलता है और तभी हमारा भय दूर होता है।। ७ ।। भूले भटकों हुओं को सीधे रास्ते पर डालता है और स्वयं ही उन्हें भटका कर उन्हें समझाता है। प्रभु नाम के बिना मुझे अन्य कोई भी

नावहु गति मिति पाई हे ॥ ८ ॥ गंगा जमुना केल केदारा ॥ कासी कांती पुरी दुआरा ॥ गंगा सागरु बेणी संगमु अठसठि अंकि समाई हे ॥ ९ ॥ आपे सिध साधिकु वीचारी ॥ आपे राजनु पंचा कारी ॥ तखति बहै अदली प्रभु आपे भरमु भेदु भउ जाई हे ॥ १० ॥ आपे काजी आपे मुला ॥ आपि अभुलु न कबहू भुला ॥ आपे मिहर दइआपति दाता ना किसै को बैराई हे ॥ ११ ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ सभसै दाता तिलु न तमाई ॥ भरपुरि धारि रहिआ निहकेवलु गुपतु प्रगटु सभ ठाई हे ॥ १२ ॥ किआ सालाही अगम अपारै ॥ साचे सिरजणहार मुरारै ॥ जिस नो नदरि करे तिसु मेले मेलि मिलै मेलाई हे ॥ १३ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु दुआरै ॥ ऊभे सेवहि अलख अपारै ॥ होर केती दरि दीसै बिललादी मै गणत न आवै काई हे ॥ १४ ॥ साची कीरति साची बाणी ॥ होर न दीसै बेद पुराणी ॥ पूंजी साचु सचे गुण गावा मै धर होर न काई हे ॥ १५ ॥ जुगु जुगु साचा है भी होसी ॥ कउणु न मूआ कउणु न मरसी ॥ नानकु नीचु कहै बेनंती दरि देखहु लिव लाई हे ॥ १६ ॥ २ ॥ मारू महला १ ॥ दूजी दुरमति अंनी बोली ॥ काम क्रोध की कची चोली ॥ घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु पिर नीद न पाई हे ॥ १ ॥ अंतरि अगनि जलै भड़कारे ॥ मनमुखु तके कुंडा चारे ॥ बिनु सतिगुर सेवे किउ सुखु पाईऐ साचे हाथि वडाई हे ॥ २ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु निवारे ॥ तसकर पंच सबदि संघारे ॥ गिआन खड़गु लै मन सिउ लूझै मनसा मनहि समाई हे ॥ ३ ॥ मा की रकतु पिता बिदु धारा ॥ मूरति सूरति करि आपारा ॥ जोति दाति जेती सभ तेरी तू करता सभ ठाई हे ॥ ४ ॥ तुझ ही कीआ जंमण मरणा ॥ गुर ते समझ पड़ी किआ डरणा ॥ तू दइआलु दइआ करि देखहि दुखु दरदु सरीरहु जाई हे ॥ ५ ॥ निज घरि बैसि रहे भउ खाइआ ॥ धावत राखे ठाकि रहाइआ ॥ कमल बिगास हरे सर सुभर आतम रामु सखाई हे ॥ ६ ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ किउ रहीऐ चलणा परथाए ॥ सचा अमरु सचे अमरा पुरि सो सचु मिलै वडाई हे ॥ ७ ॥ आपि उपाइआ जगतु सबाइआ ॥ जिनि सिरिआ

दिखाई नहीं देता और प्रभु नाम से ही गति और मर्यादा प्राप्त होती है।। ८ ।। गंगा, यमुना, कृष्ण की क्रीड़ा करने का स्थान वृन्दावन, केदार नाथ, काशी, काँति (काँची), द्वारकापुरी, गंगासागर और त्रिवेणी संगम आदि अड़सठ तीर्थ हे प्रभु, तेरी ही गोद में लीन बने हुए हैं।। ९ ।। तू स्वयं ही सिद्ध, साधक और चिन्तक है; राजन और अपनी सलाहकार परिषद बनाने वाला भी तू ही है। वह न्याय कर्ता प्रभु स्वयं ही सिंहासन पर बैठता है और उसके सामने भ्रम, भेद तथा भय समाप्त हो जाते हैं।। १० ।। वह स्वयं ही काज़ी और मुल्ला है और स्वयं ही कभी भी कुछ भी ना भूलने वाला है। वह स्वयं ही कृपालु, दयालु और दाता है तथा किसी का भी शत्रु नहीं है।। ११ ।। जिसे वह क्षमा कर देता है उसी को ही वह बड़प्पन प्रदान करता है और सबको देने वाले उस दाता प्रभु को तिल मात्र भी लालच नहीं है। वह शुद्ध स्वरूप में सब में परिपूर्ण बना है और वही सब स्थानों में गुप्त और प्रकट रूप में विद्यमान है।। १२ ।। उस अगम्य, अपरम्पर प्रभु की क्या प्रशंसा की जाए; वह प्रभु ही सच्चा सृजनकर्ता है। जिस पर कृपा दृष्टि करता है उसी को मिला लेता है और सभी मेल मिलाने वाला वह प्रभु ही है।। १३ ।। हे प्रभु, तेरे द्वार पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश तुझ अपरम्पर अदृष्ट प्रभु का खड़े होकर सुमिरन करते रहते हैं। अन्य कितने ही तेरे द्वार पर पुकारते हुए दिखाई देते हैं; मैं उन्हें गिन नहीं सकता।। १४ ।। तेरी महिमा और तेरी वाणी सच्ची है और वेद पुराणों में भी अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता। सत्य ही तेरे लिए रासपूंजी है; मैं उस सच्चे के ही गुण गाता रहूँ क्योंकि मेरा अन्य कोई आसरा नहीं है।। १५ ।। युगों युगों में वही सत्य प्रभु है। वह वर्तमान में भी है और भविष्य में भी बना रहेगा। इस संसार में भला कौन मरा नहीं हैं और कौन ऐसा है जो नहीं मरेगा। नीच नानक तो यही विनती करता है कि मैं तुझमें लौ लगाकर तेरे द्वार को ही देखता रहूँ।। १६ ।। २ ।। मारू महला १ ।। द्वैतभाव की दुर्मति अंधी और बहरी है जिसने काम और क्रोध के कच्चे चोले को पहन रखा है। अपने अन्तर्मन में ही पति और उसके प्रेम को यह अनजान जीव स्त्री नहीं जानती; प्रियतम के बिना भला इसे सुख की नींद कैसे आएगी।। १ ।। मनमुख व्यक्ति चारों दिशाओं में आशाएं लगाए रहता है और उसके अन्दर तृष्णा की अग्नि जलती और भड़कती रहती है। सच्चे गुरु का सुमिरन किये बिना भला सुख कैसे पाया जा सकता है क्योंकि सारे बड़प्पन उस सच्चे प्रभु के ही हाथ में हैं।। २ ।। व्यक्ति काम, क्रोध और अहंकार को त्याग दे; शब्द के माध्यम से पाँचों चोरों को मार डाले तथा ज्ञान के खड्ग से मन से युद्ध करे तब मन की वासनाएं मन में ही समाकर समाप्त हो जाती हैं।। ३ ।। माँ के रक्त और पिता के बिन्दु की धारा से जीवन का अधार सुन्दर स्वरूप बना है ; इसके अन्दर की ज्योति हे प्रभु, तेरा ही दिया हुआ दान है और तू कर्ता ही सभी स्थानों में स्थित है।। ४ ।। तूने ही यह जीवन और मौत बनाई हैं और अब गुरु के माध्यम से जब मुझे इसकी समझ आ गई है तो फिर भला डर अब कैसा बना रहेगा। हे दयालु प्रभु, तुम दया दृष्टि से मुझे देखो जिससे मेरे शरीर का दुख दर्द चला जाता है।। ५ ।। तेरे वास्तविक स्वरूप को पहचान कर व्यक्ति भय मिटाकर जब अपनी अन्तरात्मा में स्थित हो जाता है तो वह दौड़ते हुए मन को रोककर स्थिर कर लेता है। अब उसका हृदयकमल खिल उठता है और इन्द्रिय रूपी सरोवर हरा भरा होकर प्रेम से परिपूर्ण हो जाता है अर्थात प्रभु मित्र बन जाने से वह पूर्ण रूप से आनन्दित हो जाता है।। ६ ।। सभी इस भू-मण्डल पर मरने की तिथि लिखाकर ही आते हैं और जब यहाँ से परलोक गमन करना ही है तो फिर यहाँ सदैव रहने की बात को क्यों सोचा जाए। उस प्रभु का हुकुम सच्चा है और वह सच्चा प्रभु अमर पुरी में अमर होकर सदैव विद्यमान बना रहता है ; जिन्हें वह सत्य प्राप्त हो जाता है उनकी महिमा और शोभा बढ़ जाती है।। ७ ।। स्वयं ही उसने सारा संसार उत्पन्न किया है और जिसने उसे बनाया है

तिनि धंधै लाइआ ॥ सचे ऊपरि अवर न दीसै साचे कीमति पाई हे ॥ ८ ॥ ऐथै गोइलड़ा दिन चारे ॥ खेलु तमासा धुंधूकारे ॥ बाजी खेलि गए बाजीगर जिउ निसि सुपनै भखलाई हे ॥ ९ ॥ तिन कउ तखति मिली वडिआई ॥ निरभउ मनि वसिआ लिव लाई ॥ खंडी ब्रहमंडी पाताली पुरीई त्रिभवण ताड़ी लाई हे ॥ १० ॥ साची नगरी तखतु सचावा ॥ गुरमुखि साचु मिलै सुखु पावा ॥ साचे साचै तखति वडाई हउमै गणत गवाई हे ॥ ११ ॥ गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥ किउ सुखु पावै दूऐ तीऐ ॥ निरमलु एकु निरंजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे ॥ १२ ॥ जुगि जुगि विरली गुरमुखि जाता ॥ साचा रवि रहिआ मनु राता ॥ तिस की ओट गही सुखु पाइआ मनि तनि मैलु न काई हे ॥ १३ ॥ जीभ रसाइणि साचै राती ॥ हरि प्रभु संगी भउ न भराती ॥ स्रवण स्रोत रजे गुरबाणी जोती जोति मिलाई हे ॥ १४ ॥ रखि रखि पैर धरे पउ धरणा ॥ जत कत देखउ तेरी सरणा ॥ दुखु सुखु देहि तूहै मनि भावहि तुझ ही सिउ बणि आई हे ॥ १५ ॥ अंत कालि को बेली नाही ॥ गुरमुखि जाता तुधु सालाही ॥ नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ मारू महला १ ॥ आदि जुगादी अपर अपारे ॥ आदि निरंजन खसम हमारे ॥ साचे जोग जुगति वीचारी साचे ताड़ी लाई हे ॥ १ ॥ केतड़िआ जुग धुंधूकारै ॥ ताड़ी लाई सिरजणहारै ॥ सचु नामु सची वडिआई साचै तखति वडाई हे ॥ २ ॥ सतजुगि सतु संतोखु सरीरा ॥ सति सति वरतै गहिर गंभीरा ॥ सचा साहिबु सचु परखै साचै हुकमि चलाई हे ॥ ३ ॥ सत संतोखी सतिगुरु पूरा ॥ गुर का सबदु मने सो सूरा ॥ साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥ ४ ॥ सतजुगि साचु कहै सभु कोई ॥ सचि वरतै साचा सोई ॥ मनि मुखि साचु भरम भउ भंजनु गुरमुखि साचु सखाई हे ॥ ५ ॥ त्रेतै धरम कला इक चूकी ॥ तीनि चरण इक दुबिधा सूकी ॥ गुरमुखि होवै सु साचु वखाणै मनमुखि पचै अवाई हे ॥ ६ ॥ मनमुखि कदे न दरगह सीझै ॥ बिनु सबदै किउ अंतरु रीझै ॥ बाधे आवहि बाधे जावहि सोझी बूझ न काई हे ॥ ७ ॥ दइआ दुआपुरि अधी होई ॥

उसने ही उसे विभिन्न धन्धों में लगाया हुआ है। उस सत्य प्रभु के उपर अन्य कोई दिखाई नहीं देता और कोई सच्चा व्यक्ति ही उसकी महिमा को जान सकता है।। ८ ।। जीव तो यहाँ चरवाहा बनकर चार दिन के लिए आया है और इस अंधकार में तो खेल तमाशा बना ही रहता है। जीव रूपी बाजीगर यहाँ अपनी पारी को खेलकर वैसे ही चला जाता है जैसे वह सपने में सब कुछ सत्य मानता हुआ बड़बड़ाता रहता है।। ९ ।। लौ लगाने के बाद वह निर्भय प्रभु जिनके मन में बस गया है उन्हें ही उस प्रभु का सिंहासन और शोभा प्राप्त होती है। उस प्रभु ने ही खण्डों, ब्रह्माण्डों, पातालों पुरियों और तीनों लोकों में समाधि लगा रखी है अर्थात वही इन सबमें बस रहा है।। १० ।। शरीर रूपी नगर और इसमें हृदय रूपी सिंहासन सत्य ही है। गुरमुख बनकर यदि उस सत्य से मिलाप किया जाए तभी सुख प्राप्त होता है। उस सच्चे के सच्चे सिंहासन पर सच्चा बड़प्पन प्राप्त होता है तथा अहंकार एवं गणनाओं को त्याग दिया जाता है।। ११ ।। गणनाओं को करते रहने से इस जीव के लिये संदेह बने ही रहते हैं। द्वैतभाव और तीनों गुणों में बने रहने से भला सुख कैसे प्राप्त किया जा सकता है। वह निरंजन दाता और निर्मल प्रभु एक ही है और पूर्ण गुरु के माध्यम से ही उसके मिलाप का सम्मान प्राप्त होता है।। १२ ।। प्रत्येक युग में किसी बिरले गुरमुख ने ही उसे जाना है और उसी के मन में लीन होकर वह सच्चा प्रभु रमण करता रहता है। जब उस प्रभु का आसरा पकड़ लिया जाता है तभी सुख प्राप्त होता है और तन मन में फिर मैल नहीं बचती।। १३ ।। रसों का पान करने वाली जीभ उस सच्चे प्रभु में लीन हो जाती है और हरि प्रभु के संगी साथी बन जाने से फिर भय और भ्रान्ति नहीं बनी रहती। गुरु की वाणी सुनकर सुनने वाले कान सन्तुष्ट हो जाते हैं और जीव की ज्योति उस परम ज्योति में मिल जाती है।। १४ ।। धरती पर अर्थात इस जीवन में बहुत सोच-सोचकर कदम उठाए जाते हैं और हे प्रभु, मैं जहाँ कही भी देखता हूँ तुम्हारी शरण को खोजता हूँ। अपने मन को अच्छे लगने वाले दुख और सुख तू ही देता है और तेरे साथ ही मेरी प्रीति बनी हुई है।। १५ ।। अंतिम समय में कोई भी मित्र नहीं बनता और गुरमुख बनकर ही मैंने तेरे गुणानुवाद को जाना है। नानक ने तो तेरे नाम में लीन होकर पूर्ण प्रेम भाव से अपने मूल स्वरूप अर्थात प्रभु में ही ध्यान लगाया है।। १६ ।। ३ ।। मारू महला १ ।। आदिकाल और युगों के प्रारम्भ में वह अपरम्पार आदि निरंजन हमारे मालिक के रूप में प्रभु ही है। हे सच्चे प्रभु, तेरे साथ जुड़ने की विधि को मैं विचार रहा हूँ और तुझ सच्चे में ही मैंने ध्यान लगाया है।। १ ।। कितने ही युगों तक धुन्ध का अंधकार बना रहा और उस सृजनकर्ता प्रभु ने अपने आप को समाधि में स्थिर बनाये रखा। उसका नाम सच्चा है, उसकी महिमा सच्ची है और उसके सिंहासन का बड़प्पन भी सच्चा है।। २ ।। फिर सतयुग उत्पन्न किया गया और इस युग में मानव का शरीर, सत्य और सन्तोष का साकार रूप था। बहुत ही गहन और गम्भीर रूप से सत्य ही कार्यशील था। वह सच्चा प्रभु सत्य ही परखता है और सत्य आदेश के माध्यम से ही सारा कार्य व्यवहार चलाता है।। ३ ।। सत्य और सन्तोष को धारण करने वाला सच्चा गुरु प्रभु सर्वगुण पूर्ण है और शब्द-गुरु इस को मानने वाला ही वास्तव में शूरवीर है। उस सच्चे दरबार में सच्चे प्रभु का निवास बना रहता है और जीव उसके हुकुम को रजा के रूप में मानता रहता है।। ४ ।। सतयुग में सभी सत्यवादी थे। वहाँ सभी सत्य का व्यवहार ही करते थे। लोगों के मन और मुख में भ्रम और भय को नष्ट करने वाला सत्य ही था और गुरमुख व्यक्तियों का सखा भी सत्य ही था।। ५ ।। त्रेता में धर्म की एक शक्ति समाप्त हो गई और धर्म के तीन पैर रह गए और एक दुविधा प्रबल हो उठी। इसमें भी जो गुरमुख थे वे सत्य पुरुषों के रूप में जाने जाते थे और मनमुख व्यक्ति व्यर्थ की बातों में ही मरते खपते रहते थे।। ६ ।। मनमुख व्यक्ति प्रभु के समक्ष कभी सफल नहीं होते और भला शब्द से विहीन बने रहकर हृदय कैसे प्रसन्न रह सकता है। वे बँधे हुए आते हैं बँधे हुए ही चले जाते है; उनको किसी प्रकार की सूझ-बूझ नहीं होती।। ७ ।। दया रूपी बल के निकल जाने से द्वापर में धर्म की शक्ति आधी ही रह गई

गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ दुइ पग धरमु धरे धरणीधर गुरमुखि साचु तिथाई हे ॥ ८ ॥ राजे धरमु करहि परथाए ॥ आसा बंधे दानु कराए ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई थाके करम कमाई हे ॥ ९ ॥ करम धरम करि मुकति मंगाही ॥ मुकति पदारथु सबदि सलाही ॥ बिनु गुर सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥ १० ॥ माइआ ममता छोडी न जाई ॥ से छूटे सचु कार कमाई ॥ अहिनिसि भगति रते वीचारी ठाकुर सिउ बणि आई हे ॥ ११ ॥ इकि जप तप करि करि तीरथ नावहि ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि ॥ हठि निग्रहि अपतीजु न भीजै बिनु हरि गुर किनि पति पाई हे ॥ १२ ॥ कली काल महि इक कल राखी ॥ बिनु गुर पूरे किनै न भाखी ॥ मनमुखि कूड़ु वरतै वरतारा बिनु सतिगुर भरमु न जाई हे ॥ १३ ॥ सतिगुरु वेपरवाहु सिरंदा ॥ ना जम काणि न छंदा बंदा ॥ जो तिसु सेवे सो अबिनासी ना तिसु कालु संताई हे ॥ १४ ॥ गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ गुरमुखि कोटि असंख उधारे ॥ सरब जीआ जगजीवनु दाता निरभउ मैलु न काई हे ॥ १५ ॥ सगले जाचहि गुर भंडारी ॥ आपि निरंजनु अलख अपारी ॥ नानकु साचु कहै प्रभ जाचै मै दीजै साचु रजाई हे ॥ १६ ॥ ४ ॥ मारू महला १ ॥ साचै मेले सबदि मिलाए ॥ जा तिसु भाणा सहजि समाए ॥ त्रिभवण जोति धरी परमेसरि अवरु न दूजा भाई हे ॥ १ ॥ जिस के चाकर तिस की सेवा ॥ सबदि पतीजै अलख अभेवा ॥ भगता का गुणकारी करता बखसि लए वडिआई हे ॥ २ ॥ देदे तोटि न आवै साचे ॥ लै लै मुकरि पउदे काचे ॥ मूलु न बूझहि साचि न रीझहि दूजै भरमि भुलाई हे ॥ ३ ॥ गुरमुखि जागि रहे दिन राती ॥ साचे की लिव गुरमति जाती ॥ मनमुख सोइ रहे से लूटे गुरमुखि साबतु भाई हे ॥ ४ ॥ कूड़े आवै कूड़े जावै ॥ कूड़े राती कूड़ु कमावै ॥ सबदि मिले से दरगह पैधे गुरमुखि सुरति समाई हे ॥ ५ ॥ कूड़ि मुठी ठगी ठगवाड़ी ॥ जिउ वाड़ी ओजाड़ि उजाड़ी ॥ नाम बिना किछु सादि न लागै हरि बिसरिऐ दुखु पाई हे ॥ ६ ॥ भोजनु साचु मिलै आघाई ॥ नाम रतनु साची वडिआई ॥ चीनै आपु पछाणै सोई जोती जोति

इस तथ्य को कोई बिरला गुरमुख ही पहचानता है। धरती को धारण करने वाले तथाकथित बैल के अब दो ही पैर रह गए और गुरमुख व्यक्ति उन में सत्य को विद्यमान मानते रहे।। ८ ।। अब राजा धर्म का कार्य किसी कामना के अधीन होकर करता था और दान भी किसी आशा से बँधकर ही देता था। प्रभु नाम के बिना किसी की भी मुक्ति नही हुई और सभी कर्मकाण्डों को करते हुए थक जाते हैं।। ६ ।। धर्मकर्म करते हुए वे मुक्ति माँगते रहे हैं परन्तु मुक्ति तो शब्द के माध्यम से प्रभु का गुणानुवाद करने से ही मिलती है। शब्द गुरु के बिना मुक्ति नहीं मिलती बेशक कोई कितने ही प्रपंचों में भटकता फिरे।। १० ।। माया और ममता को छोड़ा नहीं जाता और मुक्ति केवल उन्हीं को मिलती है जो सत्याचरण करते हुए कमाई करते हैं। ऐसे व्यक्ति दिन रात भक्ति में लीन बने रहते हैं और वास्तव में उन्हीं का ही अपने प्रभु से पूरा तालमेल बना हुआ होता है।। ११ ।। अनेकों ही जप तप करते हुए तीर्थों पर स्नान करते रहते हैं; हे प्रभु, जैसा तुझे अच्छा लगता है तू वैसे ही उनको चलाता है। हठ पूर्वक इन्द्रियों को रोके रखने से यह मन ना तो प्रेम में भीगता है और ना ही सन्तुष्ट होता है; प्रभु गुरु को प्राप्त किए बिना भला कौन सम्मान प्राप्त कर सका है।। १२ ।। कलियुग में धर्म की केवल एक ही कला बची जिसे पूर्ण गुरु के बिना अन्य किसी ने नहीं बताया। मनमुखों ने झूठ का ही कार्य व्यापार इसमें चला रखा है और सच्चे गुरु के बिना व्यक्ति का भ्रम दूर नहीं होता।। १३ ।। सच्चा गुरु प्रभु बेपरवाह और सृजनकर्ता है जिसे ना तो यम का भय है और ना ही उसे मनुष्यों की मोहताजी है। जो उसका सुमिरन करता है वह स्वयं ही अविनाशी बन जाता है और उसे काल भी दुख नहीं देता।। १४ ।। प्रभु ने अपने आपको गुरु में स्थित किया है और गुरमुख गुरु ने करोड़ों और असंख्य लोगों का उद्धार किया है। वह जगजीवन दाता सभी जीवों के लिए है और उस निर्भय प्रभु में जरा सी भी मैल नहीं है।। १५ ।। सभी गुरु के भण्डार में से याचना करते हैं और प्रभु स्वयं निरंजन, अपरम्पर और समझ में ना आने वाला है। नानक सत्य कहता हुआ प्रभु से याचना करता है कि हे प्रभु मुझे सत्य को रज़ा के तौर पर मानने की शक्ति प्रदान करो।। १६ ।। ४ ।। मारू महला १ ।। उस सच्चे प्रभु से शब्द के माध्यम से ही मेल मिलाप होता है और यदि उसे अच्छा लगता है तो जीव शान्त और स्वाभाविक अवस्था में स्थित हो जाता है। उस परमेश्वर ने तीनों लोकों में अपनी ज्योति फैलाई है और उसके बिना दूसरा कोई नहीं है।। १ ।। हम तो जिसके नौकर हैं उसी की सेवा करते हैं और वह अदृष्ट रहस्यातीत प्रभु शब्द के माध्यम से प्रसन्न होता है। वह कर्ता प्रभु भक्तों का भला करने वाला है और यह उसका बड़प्पन है कि वह सबको क्षमा कर देता है।। २ ।। देने वाले उस सच्चे प्रभु के पास कोई कमी नहीं आती परन्तु कच्चे लोग उससे ले-लेकर मुकरते रहते हैं। वे ना तो अपने मूल को जानते हैं ना ही वे सत्य में प्रसन्न होते हैं अपितु वे द्वैतभाव में पड़े हुए भ्रमों में भूले भटके रहते हैं।। ३ ।। गुरमुख तो रात दिन जगते हुए सावधान बने रहते है; गुरमति के माध्यम से ही उस सच्चे प्रभु की लौ के बारे में जाना जाता है। सोते रहने वाले मनमुख लुटते रहते हैं और हे भाई, गुरमुख व्यक्ति सही सलामत बने रहते हैं।। ४ ।। व्यक्ति झूठा ही आता है झूठा ही चला जाता है और झूठ में लीन बना वह झूठ का ही आचरण करता है। जो शब्द के माध्यम से प्रभु से मिल जाते है वे उसके दरबार में ठिकाना पा जाते हैं; गुरमुख की सुरति तो उस प्रभु में लीन बनी रहती है।। ५ ।। यह सृष्टि ठगों के बाड़े में पड़ी हुई ठगी गई है। जीव इस तरह से उजड़ गया है जैसे पशु बगीचे को उजाड़ देते हैं। प्रभु नाम के बिना कुछ भी स्वाद नहीं लगता और प्रभु को भुलाकर जीव दुख ही पाता है।। ६ ।। सत्य का भोजन मिले तब व्यक्ति तृप्त होता है क्योंकि प्रभु नाम रूपी रत्न की महिमा सच्ची होती है। जो स्वयं को पहचान जाता है वह प्रभु को भी जान जाता है और उसकी ज्योति परम ज्योति में

मिलाई हे ॥ ७ ॥ नावहु भुली चोटा खाए ॥ बहुतु सिआणप भरमु न जाए ॥ पचि पचि मुए अचेत न चेतहि अजगरि भारि लदाई हे ॥ ८ ॥ बिनु बाद बिरोधहि कोई नाही ॥ मै देखालिहु तिसु सालाही ॥ मनु तनु अरपि मिलै जगजीवनु हरि सिउ बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ प्रभ की गति मिति कोइ न पावै ॥ जे को वडा कहाइ वडाई खावै ॥ साचे साहिब तोटि न दाती सगली तिनहि उपाई हे ॥ १० ॥ वडी वडिआई वेपरवाहे ॥ आपि उपाए दानु समाहे ॥ आपि दइआलु दूरि नही दाता मिलिआ सहजि रजाई हे ॥ ११ ॥ इकि सोगी इकि रोगि विआपे ॥ जो किछु करे सु आपे आपे ॥ भगति भाउ गुर की मति पूरी अनहदि सबदि लखाई हे ॥ १२ ॥ इकि नागे भूखे भवहि भवाए ॥ इकि हठु करि मरहि न कीमति पाए ॥ गति अविगत की सार न जाणै बूझै सबदु कमाई हे ॥ १३ ॥ इकि तीरथि नावहि अंनु न खावहि ॥ इकि अगनि जलावहि देह खपावहि ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई कितु बिधि पारि लंघाई हे ॥ १४ ॥ गुरमति छोडहि उझड़ि जाई ॥ मनमुखि रामु न जपै अवाई ॥ पचि पचि बूडहि कूड़ु कमावहि कूड़ि कालु बैराई हे ॥ १५ ॥ हुकमे आवै हुकमे जावै ॥ बूझै हुकमु सो साचि समावै ॥ नानक साचु मिलै मनि भावै गुरमुखि कार कमाई हे ॥ १६ ॥ ५ ॥ मारू महला १ ॥ आपे करता पुरखु बिधाता ॥ जिनि आपे आपि उपाइ पछाता ॥ आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे स्रिसटि उपाई हे ॥ १ ॥ आपे नेड़ै नाही दूरे ॥ बूझहि गुरमुखि से जन पूरे ॥ तिन की संगति अहिनिसि लाहा गुर संगति एह वडाई हे ॥ २ ॥ जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे ॥ हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ उसतति करहि परहरि दुखु दालदु जिन नाही चिंत पराई हे ॥ ३ ॥ ओइ जागत रहहि न सूते दीसहि ॥ संगति कुल तारे साचु परीसहि ॥ कलिमल मैलु नाही ते निरमल ओइ रहहि भगति लिव लाई हे ॥ ४ ॥ बूझहु हरि जन सतिगुर बाणी ॥ एहु जोबनु सासु है देह पुराणी ॥ आजु कालि मरि जाईऐ प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे ॥ ५ ॥ छोडहु प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥ कूड़ु मारे कालु उछाहाड़ा ॥ साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै

मिल जाती है।। ७ ।। प्रभु-नाम को भूली हुई सृष्टि दुख उठाती है और बहुत सयानेपन के बावजूद उसका भ्रम समाप्त नहीं होता। मर खप कर नासमझ लोग मरते रहते हैं और अजगर जैसे भारी पापों को लादे फिरते हैं परन्तु प्रभु नाम के प्रति चेतते नहीं।। ८ ।। विवाद और विरोध से खाली तो कोई भी नहीं है। यदि कोई है तो मुझे दिखा दो मैं उसकी प्रशंसा करूंगा। मैं उसे मन तन अर्पण कर दूं जिससे जगत को जीवन देने वाला प्रभु मुझे मिल जाए और प्रभु के साथ मेरा कार्य व्यवहार बना रहे।। ९ ।। प्रभु का ओर-छोर कोई नहीं पा सकता और यदि कोई अपने आपको बड़ा कहलाता है तो उसका बड़ापन ही उसे खा जाता है। सच्चे साहिब के दान में कोई कमी नहीं आती और उसी ने ही सारी सृष्टि पैदा की हुई है।। १० ।। उस बेपरवाह की महिमा महान है। वह स्वयं ही जीवों को पैदा करता है और उन्हें अपना दान भी पहुँचाता है। वह दाता दयालु प्रभु दूर नहीं है और वह स्वाभाविक रूप से ही मिल जाता है।। ११ ।। कई शोक में डूबे हैं और कई रोगों से त्रस्त हैं। वह प्रभु जो भी करता है स्वयं ही करता है। गुरु का भक्ति भाव और उसकी मति पूर्ण होती है तथा यह बात अनहद शब्द के माध्यम से ही समझ आती है।। १२ ।। कई नंगे भूखे भटकते फिरते हैं और कई हठपूर्वक साधना करते हुए मर जाते हैं और उस प्रभु की कीमत वे नहीं जान पाते। वे अच्छे बुरे की पहचान नहीं कर पाते क्योंकि उसे शब्द को आचरण में उतार कर ही जाना जाता है।। १३ ।। कई तीर्थों पर स्नान करते हैं, अन्न नही खाते, अग्नि जलाकर देह को दुखी करते हैं परन्तु राम नाम के बिना मुक्ति नहीं होती; हे प्रभु, किस विधि से हम पार उतर सकेंगे।। १४ ।। जो गुरमति को छोड़ देते हैं वे कुमार्ग पर चले जाते हैं, मनमुख व्यक्ति प्रभु नाम का जाप नहीं करते और बेलगाम बने रहते हैं। वे माया में लीन होकर डूबते रहते हैं, झूठ ही कमाते हैं और झूठ रूपी काल ही उनका शत्रु बन जाता है।। १५ ।। जीव हुकुम में आता है हुकुम में जाता है और जो हुकुम को बूझ लेता है वही सत्य में लीन हो जाता है। हे नानक, सत्य मिल जाए तो प्रभु के मन को जीव भा जाता है और गुरमुख बनकर जीव कार्यशील बना रहता है।। १६ ।। ५ ।। मारू महला १ ।। वह विधाता कर्ता पुरुष स्वयं ही है जिसने स्वयं ही उत्पन्न करके स्वयं ही सबको जाना है। वह प्रभु ही सच्चा गुरु है, वह प्रभु ही स्वयं सेवक है और उस प्रभु ने स्वयं सृष्टि रचना की है।। १ ।। वह स्वयं पास ही है दूर नहीं है और जो गुरमुख बनकर इस बात को जान लेता है वही सेवक पूर्ण सेवक होता है। उसकी संगति में तो दिन रात लाभ ही लाभ है क्योंकि गुरु की संगति का यही बड़प्पन है।। २ ।। हे प्रभु, तेरे शान्त पुरुष सभी युगों में भले हैं क्योंकि वे अपनी जीभ से आनन्दित होकर प्रभु के गुण गाते रहते हैं। वे स्तुति करते हैं, दुख-दरिद्रता को दूर करते हैं और उन्हें किसी पराए से कोई भय नहीं होता।। ३ ।। वे सदैव सावधान बने रहते हैं और कभी भी अज्ञान के अंधकार में सोते नहीं। सत्य को लोगों मे बाँटकर अपनी संगति और उसके कुलों को पार उतार देते हैं। पापों की मैल उन पर नही होती, वे निर्मल बने रहते हैं और प्रभु-भक्ति में अपनी लौ लगाए रहते हैं।। ४ ।। हे प्रभु के सेवको, सच्चे गुरु की वाणी को समझ लो; यह यौवन श्वास और शरीर आदि सब कुछ पुराना हो जाने वाला है। हे प्राणी, तू आजकल में मर ही जाएगा इसलिये हृदय में प्रभु के जाप को जपता रह।। ५ ।। हे प्राणी, झूठ जैसे बुरे भाव को छोड़ दे क्योंकि झूठे व्यक्ति का काल बनकर उसे उछल-उछल कर मारता है। प्रभु से टूटे हुए लोग झूठ में ही मरते खपते हैं क्योंकि उनके मन में अहंकार

दुहु मारगि पचै पचाई हे ॥ ६ ॥ छोडिहु निंदा ताति पराई ॥ पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥ मिलि सतसंगति नामु सलाहहु आतम रामु सखाई हे ॥ ७ ॥ छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥ हउमै धंधु छोडहु लंपटाई ॥ सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु इउ तरीऐ भवजलु भाई हे ॥ ८ ॥ आगै बिमल नदी अगनि बिखु झेला ॥ तिथै अवरु न कोई जीउ इकेला ॥ भड़ भड़ अगनि सागरु दे लहरी पड़ि दझहि मनमुख ताई हे ॥ ९ ॥ गुर पहि मुकति दानु दे भाणै ॥ जिनि पाइआ सोई बिधि जाणै ॥ जिन पाइआ तिन पूछहु भाई सुखु सतिगुर सेव कमाई हे ॥ १० ॥ गुर बिनु उरझि मरहि बेकारा ॥ जमु सिरि मारे करे खुआरा ॥ बाधे मुकति नाही नर निंदक डूबहि निंद पराई हे ॥ ११ ॥ बोलहु साचु पछाणहु अंदरि ॥ दूरि नाही देखहु करि नंदरि ॥ बिघनु नाही गुरमुखि तरु तारी इउ भवजलु पारि लंघाई हे ॥ १२ ॥ देही अंदरि नामु निवासी ॥ आपे करता है अबिनासी ॥ ना जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै सबदि रजाई हे ॥ १३ ॥ ओहु निरमलु है नाही अंधिआरा ॥ ओहु आपे तखति बहै सचिआरा ॥ साकत कूड़े बंधि भवाईअहि मरि जनमहि आई जाई हे ॥ १४ ॥ गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ॥ ओइ बैसहि तखति सु सबदु वीचारे ॥ ततु लहहि अंतरगति जाणहि सतसंगति साचु वडाई हे ॥ १५ ॥ आपि तरै जनु पितरा तारे ॥ संगति मुकति सु पारि उतारे ॥ नानकु तिस का लाला गोला जिनि गुरमुखि हरि लिव लाई हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ मारू महला १ ॥ केते जुग वरते गुबारै ॥ ताड़ी लाई अपर अपारै ॥ धुंधूकारि निरालमु बैठा ना तदि धंधु पसारा हे ॥ १ ॥ जुग छतीह तिनै वरताए ॥ जिउ तिसु भाणा तिवै चलाए ॥ तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे ॥ २ ॥ गुपते बूझहु जुग चतुआरे ॥ घटि घटि वरतै उदर मझारे ॥ जुगु जुगु एका एकी वरतै कोई बूझै गुर वीचारा हे ॥ ३ ॥ बिंदु रकतु मिलि पिंडु सरीआ ॥ पउणु पाणी अगनी मिलि जीआ ॥ आपे चोज करे रंग महली होर माइआ मोह पसारा हे ॥ ४ ॥ गरभ कुंडल महि उरध धिआनी ॥ आपे जाणै अंतरजामी ॥ सासि

होता है; द्वैत के मार्ग पर चलते हुए वे मर खप जाते हैं।। ६ ।। पराई निन्दा और ईर्ष्या को छोड़ दो क्योंकि पढ़-पढ़कर अन्दर ही जलते रहने से शान्ति प्राप्त नहीं होती। सत्संगति में मिल बैठकर प्रभु-नाम की स्तुति करो क्योंकि यही आत्मा की सखी सहेली है।। ७ ।। काम, क्रोध और बुराई छोड़ दो तथा अहंकार वाले व्यर्थ के धन्धे और लम्पटता को भी त्याग दो। सच्चे गुरु की शरण में पड़ोगे तो उद्धार होगा और हे भाई, इस प्रकार संसार सागर में से तैरा जा सकेगा।। ८ ।। आगे शुद्ध अग्नि की ही नदी है जिसमें से विष की लपटें निकलती रहती है। वहाँ अन्य कोई नही होता और जीव को अकेला ही रहना होता है। अग्नि के सागर में से भड़भड़ाती लहरें उठती हैं और मनमुख व्यक्ति उसमें पड़कर जल जाते हैं।। ६ ।। गुरु के पास मुक्ति है परन्तु वह उसे अपनी मर्जी से ही दान में देता है। जिसने इस दान को पा लिया है वही इसकी विधि को जानता है। हे भाई, जिसने पा लिया है उसी से इसकी विधि पूछो क्योंकि वास्तविक सुख तो सच्चे गुरु की सेवा करने में ही है।। १० ।। गुरु के बिना जीव व्यर्थ में ही उलझकर मर जाता है और यम उसे मारकर भटकाता रहता है। निन्दक व्यक्ति की बन्धनों के कारण मुक्ति नहीं होती और वह पराई निन्दा में ही डूब जाता है।। ११ ।। सत्य बोलो और उस प्रभु को अपने अन्दर ही पहचान लो। थोड़ी सी नजर उठाकर देखो वह प्रभु दूर नहीं है। गुरमुख बनकर तैरने से पार जाने में कोई भी रुकावट नहीं आती और इस प्रकार जीव संसार सागर से पार उतार लिया जाता है।। १२ ।। इस शरीर में प्रभु नाम बसता है और वह अविनाशी प्रभु स्वयं ही कर्ता है। यह आत्मा ना मरती है ना मारी जा सकती है; वह प्रभु तो अपने हुकुम के माध्यम से इसकी रचना करके इसकी देखभाल भी करता रहता है।। १३ ।। वह प्रभु निर्मल है अंधकार नहीं; वह सच्चा प्रभु स्वयं ही हृदय रूपी सिंहासन पर विराजमान रहता है। प्रभु से टूटे लोगों को बांधकर भटकाया जाता है और वे मरते-जन्मते आते-जाते रहते हैं।। १४ ।। गुरु के सेवक सच्चे गुरु प्रभु के प्यारे होते हैं। वे शब्द का चिंतन करके प्रभु के साथ उसके सिंहासन पर ही विराजमान होते हैं। वे सारतत्व को जानते हैं पर उस प्रभु को भी अपने अन्दर ही पहचानते है; सत्संगति की यही सत्य रूपी महिमा है।। १५ ।। प्रभु का सेवक स्वयं तो पार उतरता ही है वह अपने पितरों को भी पार उतार लेता है। उसकी संगति भी मुक्त हो जाती है और वह उसे भी पार उतार लेता है। नानक तो उसका गुलाम और सेवक है जिसने गुरमुख बनकर प्रभु में अपनी लौ लगाई है।। १६ ।। ६ ।। मारू महला १ ।। कितने ही युगों तक घोर अंधकार बना रहा और वह अपरम्पार प्रभु समाधि में लीन बना रहा। उस घोर धुन्ध में वह अलिप्त होकर बैठा रहा और उस समय ना तो कोई धन्धा था और ना ही किसी प्रकार का फैलाव था।। १ ।। छत्तीस युग उसी ने ही कार्यशील किये और जैसा उसे अच्छा लगा वैसे ही उसने इन्हें बनाया चलाया। उसके बराबर का अन्य कोई नहीं दिखाई देता और वह प्रभु स्वयं ही अपर अपार है।। २ ।। चारों युगों में वह प्रछन्न रूप से कार्यशील था। वह घट-घट में और प्रत्येक हृदय में गतिशील बना हुआ था। सभी युगों में वह एक प्रभु ही कार्यशील बना रहता है और गुरु के इस विचार को कोई बिरला ही बूझता है।। ३ ।। पिता का बिन्दु और माता के रक्त से मिलकर इस शरीर की रचना हुई। पवन-पानी और अग्नि ने मिलकर जीवन को खड़ा कर दिया है। वह स्वयं ही इस शरीर रूपी रंग महल में खेल खेलता रहता है बाकी अन्य सब कुछ तो माया मोह का ही प्रसार है।। ४ ।। माता के गर्भ में यह जीव उल्टा लटक कर प्रभु में ध्यान टिकाए रहता है। वह अन्तर्यामी प्रभु स्वयं ही इसकी स्थिति को जानता है।

सासि सचु नामु समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥ ५ ॥ चारि पदारथ लै जगि आइआ ॥ सिव सकती घरि वासा पाइआ ॥ एकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै नामु विसारा हे ॥ ६ ॥ बालकु मरै बालक की लीला ॥ कहि कहि रोवहि बालु रंगीला ॥ जिस का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा हे ॥ ७ ॥ भरि जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ मेरा मेरा करि रोवीजै ॥ माइआ कारणि रोइ विगूचहि ध्रिगु जीवणु संसारा हे ॥ ८ ॥ काली हू फुनि धउले आए ॥ विणु नावै गथु गइआ गवाए ॥ दुरमति अंधुला बिनसि बिनासै मूठे रोइ पूकारा हे ॥ ९ ॥ आपु वीचारि न रोवै कोई ॥ सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ बिनु गुर बजर कपाट न खूलहि सबदि मिलै निसतारा हे ॥ १० ॥ बिरधि भइआ तनु छीजै देही ॥ रामु न जपई अंति सनेही ॥ नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा हे ॥ ११ ॥ नामु विसारि चलै कूड़िआरो ॥ आवत जात पड़ै सिरि छारो ॥ साहुरड़ै घरि वासु न पाए पेईअड़ै सिरि मारा हे ॥ १२ ॥ खाजै पैझै रली करीजै ॥ बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ सर अपसर की सार न जाणै जमु मारे किआ चारा हे ॥ १३ ॥ परविरती नरविरति पछाणै ॥ गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥ किस ही मंदा आखि न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥ १४ ॥ साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ साच सबदि पैझै पति होई ॥ आपे बखसि लए तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे ॥ १५ ॥ गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ जुगह जुगंतर की बिधि जाणै ॥ नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥ १६ ॥ १ ॥ ७ ॥ मारू महला १ ॥ हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ जिनि तनु मनु दीआ सुरति समोई ॥ सरब जीआ प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना हे ॥ १ ॥ गुरु सरवरु हम हंस पिआरे ॥ सागर महि रतन लाल बहु सारे ॥ मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥ २ ॥ हरि अगम अगाहु अगाधि निराला ॥ हरि अंतु न पाईऐ गुर गोपाला ॥ सतिगुर मति तारे तारणहारा मेलि लए रंगि लीना हे ॥ ३ ॥ सतिगुर बाझहु मुकति किनेही ॥ ओहु आदि जुगादी राम सनेही ॥ दरगह मुकति करे

जीव माँ के पेट में प्रत्येक श्वास के साथ प्रभु के सच्चे नाम को याद करता रहता है।। ५ ।। चार पदार्थों को प्राप्त करने का आदर्श लेकर यह जीव इस संसार में आया है परन्तु इसका निवास प्रभु की माया के घर में बन गया है। एक प्रभु को भुलाकर यह खेल का मैदान हार जाता है क्योंकि इस अन्धे जीव ने प्रभु नाम को विस्मृत का दिया होता है।। ६ ।। जब बालक मर जाता है तो उस बच्चे के खेलों को याद किया जाता है और उस बच्चे को बहुत सुन्दर कह कर उसे रोया जाता है। रोने वाला जीव तो भूला हुआ है क्योंकि यह बालक तो जिसका था उसने उसे वापस ले लिया।। ७ ।। भरी हुई जवानी में मर कर क्या किया जा सकेगा। वास्तव में मेरा-मेरा करके रोया ही जाएगा। माया के कारण ही सभी रोते हुए भटकते रहते हैं और ऐसा जीवन तो इस संसार में धिक्कार है।। ८ ।। बाल काले से सफेद हो गए तथा जीव प्रभु नाम से विहीन होकर अपनी रास पूँजी की गाँठ गँवाकर यहाँ से चला जाता है। दुर्मति वाला अन्धा व्यक्ति खुद भी नष्ट होता है दूसरों को भी नष्ट करता है और लूटे जाने पर रोता पुकारता रहता है।। ६ ।। अपने आप के बारें में सोचकर कोई भी नहीं रोता और सच्चे गुरु से मिलने पर ही यह सूझ बुद्धि प्राप्त होती है। गुरु के बिना वज्र जैसे कठोर भ्रम के किवाड़ खुलते नहीं और जीव का पार उतारा तो केवल शब्द के माध्यम से ही होता है।। १० ।। जब व्यक्ति वृद्ध हो जाता है तो उसका शरीर क्षीण होता चला जाता हैं परन्तु यह फिर भी अंतिम समय में मित्र बनने वाले प्रभु नाम का सुमिरन नहीं करता। प्रभु के नाम को भुला कर और काला मुँह लेकर जीव उस प्रभु के दरबार में जाता है और झूठा बना भटकता रहता है।। ११ ।। प्रभु नाम को भुलाकर झूठा व्यक्ति यहाँ से चला जाता है और आवागमन में पड़े हुए ऐसे व्यक्ति के सिर पर मिट्टी पड़ती रहती है। उसे ससुराल में निवास प्राप्त नहीं होता और इस लोक में भी उसे सिर पर मार ही पड़ती है।। १२ ।। वह खाता पीता रंगरलियाँ करता है और हृदय से भक्ति करने के बिना वह व्यर्थ ही मरता खपता रहता है। उसे अच्छे बुरे की सूझ नहीं होती और अब जब यम उसे मारता है तो फिर उसके सामने कोई चारा नहीं चलता।। १३ ।। जो प्रवृत्ति और निवृत्ति के वास्तविक अर्थ को जानता है वह गुरु की संगति में बना रहकर अपने हृदय में ही शब्द को पहचान जाता है। सत्याचरण वाला व्यक्ति खरा बनकर खरा रहता है और किसी को भी बुरा कहकर यहाँ से नहीं जाता।। १४ ।। सत्य के बिना अन्य कोई द्वार भी सफलता नहीं दिलाता। जब व्यक्ति शब्द के सार को समझ जाता है तब उसे सम्मान प्राप्त होता है। वह जिसे चाहता है स्वयं ही उस पर कृपा कर देता है और उसके अभिमान का निवारण हो जाता है।। १५ ।। गुरु की कृपा से जीव प्रभु के हुकुम को पहचानता है और युगों-युगान्तरों की युक्तियों को जान जाता है। हे नानक, प्रभु नाम का जाप करो और तैर कर पार उतर जाओ परन्तु यह भी जान लो कि सत्य ही पार उतारने वाला है।। १६ ।। १ ।। ७ ।। मारू महला १ ।। प्रभु सा मित्र मेरा कोई नहीं है जिसने मुझे तन मन दिया है और मुझ में सुरति डाली है। वह सभी जीवों का पालन करके उन्हें सम्भालता है और वह सब कुछ देखने वाला बड़ा मालिक अन्दर ही स्थित है।। १ ।। गुरु सरोवर है और हम उनके प्यारे हंस है और इस सागर में बहुत से गुण रूपी लाल और रत्न है। मोती, माणिक, हीरे हरि यश का गायन करने से प्राप्त होते हैं और मन तन प्रसन्न हो जाता है।। २ ।। प्रभु अगम्य, अथाह और निराला है और उस गुरु प्रभु का रहस्य नहीं जाना जा सकता। सच्चा गुरु अपनी मति के माध्यम से पार उतार लेता है और उससे मिलाकर उसके प्रेम में लीन कर देता है।। ३ ।। सच्चे गुरु के बिना भला कैसे मुक्ति मिल सकेगी। सच्चा गुरु ही आदि, युगादि से प्रभु का साथी है। वह प्रभु के दरबार में कृपा करके मुक्ति

करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥ ४ ॥ सतिगुरु दाता मुकति कराए ॥ सभि रोग गवाए अंम्रित रसु पाए ॥ जमु जागाति नाही करु लागै जिसु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥ ५ ॥ काइआ हंस प्रीति बहु धारी ॥ ओहु जोगी पुरखु ओह सुंदरि नारी ॥ अहिनिसि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे ॥ ६ ॥ स्रिसटि उपाइ रहे प्रभ छाजै ॥ पउण पाणी बैसंतरु गाजै ॥ मनूआ डोलै दूत संगति मिलि सो पाए जो किछु कीना हे ॥ ७ ॥ नामु विसारि दोख दुख सहीऐ ॥ हुकमु भइआ चलणा किउ रहीऐ ॥ नरक कूप महि गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥ ८ ॥ चउरासीह नरक साकतु भोगाईऐ ॥ जैसा कीचै तैसो पाईऐ ॥ सतिगुर बाझहु मुकति न होई किरति बाधा ग्रसि दीना हे ॥ ९ ॥ खंडे धार गली अति भीड़ी ॥ लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिनु हरि रस मुकति न कीना हे ॥ १० ॥ मीत सखे केते जग माही ॥ बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ गुर की सेवा मुकति पराइणि अनदिनु कीरतनु कीना हे ॥ ११ ॥ कूड़ु छोडि साचे कउ धावहु ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु ॥ साच वखर के वापारी विरले लै लाहा सउदा कीना हे ॥ १२ ॥ हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ दरसनु पावहु सहजि महलहु ॥ गुरमुखि खोजि लहहि जन पूरे इउ समदरसी चीना हे ॥ १३ ॥ प्रभ बेअंत गुरमति को पावहि ॥ गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु इउ आतम रामै लीना हे ॥ १४ ॥ नारद सारद सेवक तेरे ॥ त्रिभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥ सभ तेरी कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥ १५ ॥ इकि दरि सेवहि दरदु वञाए ॥ ओइ दरगह पैधे सतिगुरू छडाए ॥ हउमै बंधन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ॥ १६ ॥ सतिगुर मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ जितु प्रभु पावहु गणत न काई ॥ हउमै मारि करहु गुर सेवा जन नानक हरि रंगि भीना हे ॥ १७ ॥ २ ॥ ८ ॥ मारू महला १ ॥ असुर सघारण रामु हमारा ॥ घटि घटि रमईआ रामु पिआरा ॥ नाले अलखु न लखीऐ मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥ १ ॥ गुरमुखि

प्रदान करता है और हमारे किये हुए अवगुणों को क्षमा कर देता है।। ४ ।। दाता सच्चा गुरु मुक्ति करवा देता है, सब रोग मिटा देता है और अमृत रस दिला देता है। जिस व्यक्ति के हृदय की अग्नि बुझ गई है और जिसका हृदय शान्त हो गया है यम रूपी टैक्स लेने वाला अब उससे कोई कर नही लेता।। ५ ।। इस शरीर रूपी हंस ने बहुत सी वस्तुओं मे प्रेम लगा रखा है। इस शरीर में जीवात्मा तो योगी है और यह शरीर सुन्दर स्त्री की तरह है। यह जीव आनन्द का उपभोग वाला बनकर इस शरीर को भोगता है परन्तु शरीर रूपी स्त्री से दूर जाते समय अर्थात मौत के समय यह उससे सलाह भी नहीं करता और वैसे ही चल देता है।। ६ ।। प्रभु सृष्टि उत्पन्न करके उसमें व्याप्त हो रहा है और इस शरीर में पवन, पानी, अग्नि के कारण ही यह शरीर चैतन्य बना रहता है। विकारों की संगति में पड़कर यह मन चंचल बना रहता है; वही प्राप्त करता है जो कुछ इसने किया होता है।। ७ ।। प्रभु नाम को भुलाकर पापों और दुखों को सहन करना पड़ता है और जब यहाँ से चलने का हुकुम आ गया तो फिर भला यहाँ कैसे रहा जा सकता है। अब जीव नरक के कुएँ में गोते खाता हुआ वैसे ही तड़पता रहता है जैसे पानी से बाहर आने पर मछली तड़पती है।। ८ ।। चौरासी लाख प्रकार के नरक प्रभु से टूटे हुए व्यक्ति को भोगने पड़ते हैं क्योंकि जैसा किया जाता है वैसा ही फल मिल जाता हैं। सच्चे गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती और कर्मो का बँधा हुआ व्यक्ति बन्धनों में पड़ा रहता है।। ६ ।। आत्मा ने जहाँ से जाना है वह गली बहुत ही तंग और खड़ग की धार जैसी तीखी है। वहां तिलों की तरह पेर कर हर कर्म का लेखा जोखा किया जाता है। माता, पिता, स्त्री, पुत्र वहां कोई भी संगी नहीं होता। वहां प्रभु-नाम के रस के बिना मुक्ति नहीं होती।। १० ।। इस संसार में अनेकों ही मित्र और सखा बनाए जाते हैं परन्तु गुरु परमेश्वर के बिना कोई सहायक नहीं होता। मुक्ति का साधन तो गुरु की सेवा ही है या फिर प्रत्येक दिन प्रभु का गुणानुवाद करना ही है।। ११ ।। झूठ को छोड़कर सत्य की ओर दौड़ो और मनोवांछित फल प्राप्त कर लो। कोई बिरला ही यह जानकर सत्य पदार्थ का व्यापारी बन जाता है और वह लाभ पहुंचाने वाला सौदा खरीद लेता है।। १२ ।। प्रभु नाम का सौदा लेकर यहाँ से चलो और स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के ठिकाने पर उसके दर्शन होंगे। गुरमुख बनकर सेवक पूर्ण प्रभु को खोज लेता है और इस प्रकार उस समदर्शी को पहचान जाता है।। १३ ।। गुरमति के माध्यम से कोई बिरला ही उस अनन्त प्रभु को पाता है और शब्द गुरु के माध्यम से मन को समझा देता है। सच्चे गुरु की वाणी को सत्य रूप में समझो और इस प्रकार उस प्रभु में लीन बने रहो।। १४ ।। नारद और सरस्वती आदि हे प्रभु, तेरे ही सेवक हैं और तीनों लोकों में बड़े से बड़े भी तेरे सेवक ही हैं। ये सब तेरी ही शक्ति के प्रकटीकरण है; तू सबका दाता है और ये सब तेरे ही कारण उत्पन्न हुए हैं।। १५ ।। कई तेरे द्वार पर खड़े होकर सुमिरन करते और अपने दुख दूर करते हैं। उन्हें तेरे दरबार में बड़प्पन मिलता है और सच्चा गुरु उन्हें मुक्त करा देता है। सच्चा गुरु ही अहंकार के बन्धनों को तोड़ता है और चंचल चित को भागने दौड़ने नहीं देता।। १६ ।। ऐसी विधि की पहचान कर लो जिससे सच्चा गुरु मिल जाए, प्रभु प्राप्त हो जाए और कर्मो का लेखा जोखा समाप्त हो जाए। अहंकार को मारकर गुरु की सेवा करो और दास नानक तो प्रभु के प्रेम रंग में भीग गया है।। १७ ।। २ ।। ८ ।। मारू महला १ ।। हमारा प्रभु विकार रूपी दैत्यों को मारने वाला है और वह प्यारा प्रभु घट-घट में रमण करने वाला है। वह अदृष्ट प्रभु हमारे साथ ही है परन्तु हम उसे बिल्कुल ही समझ नहीं पाते; गुरमुख बनकर वह अन्दर ही लिखा (बयान किया) हुआ चिन्तन के माध्यम से विचार रूप में प्राप्त हो जाता है।। १ ।।

साधू सरणि तुमारी ॥ करि किरपा प्रभि पारि उतारी ॥ अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु पारि उतारा हे ॥ २ ॥ मनमुख अंधुले सोझी नाही ॥ आवहि जाहि मरहि मरि जाही ॥ पूरबि लिखिआ लेखु न मिटई जम दरि अंधु खुआरा हे ॥ ३ ॥ इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि ॥ किरत के बाधे पाप कमावहि ॥ अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अहंकारा हे ॥ ४ ॥ पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा ॥ पर पिर राती खसमु विसारा ॥ जिउ बेसुआ पूत बापु को कहीऐ तिउ फोकट कार विकारा हे ॥ ५ ॥ प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे ॥ नरकि पचहि अगिआन अंधेरे ॥ धरम राइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे ॥ ६ ॥ सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ अपतु पसू मनमुखु बेताला ॥ आसा मनसा कूड़ु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥ ७ ॥ मसतकि भारु कलर सिरि भारा ॥ किउ करि भवजलु लंघसि पारा ॥ सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥ ८ ॥ पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ जम के फाहे सतिगुरि तोड़े गुरमुखि ततु बीचारा हे ॥ ९ ॥ कुड़ि मुठी चालै बहु राही ॥ मनमुखु दाझै पड़ि पड़ि भाही ॥ अंम्रित नामु गुरू वड दाणा नामु जपहु सुख सारा हे ॥ १० ॥ सतिगुरु तुठा सचु द्रिड़ाए ॥ सभि दुख मेटे मारगि पाए ॥ कंडा पाइ न गडई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥ ११ ॥ खेहू खेह रलै तनु छीजै ॥ मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥ करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे ॥ १२ ॥ माइआ बिखु भुइअंगम नाले ॥ इनि दुबिधा घर बहुते गाले ॥ सतिगुर बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे ॥ १३ ॥ साकत माइआ कउ बहु धावहि ॥ नामु विसारि कहा सुखु पावहि ॥ त्रिहु गुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा हे ॥ १४ ॥ कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥ भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥ मनि तनि झूठे कूड़ु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥ १५ ॥ सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥ राम नामु दे सरणि परेकै ॥ हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे ॥ १६ ॥

गुरमुख अथवा साधु वह है जो तेरी शरण में आता है। प्रभु उसे ही कृपा करके पार उतार देता है। विषय विकारों की अग्नि के पानी से भरा हुआ संसार सागर अत्यन्त गहरा है और इसमें से सच्चा गुरु प्रभु ही पार उतारता है।। २ ।। अज्ञानी मनमुख को समझ नहीं होती और वह आवागमन में पड़ा मरता रहता है। पूर्व में ही लिखे हुए लेख मिटते नहीं और यम के द्वार पर अन्धा बना व्यक्ति ख्वार होता रहता है।। ३ ।। कई आते-जाते रहते हैं और अपने मूल घर अर्थात परमात्मा के पास स्थान नहीं पाते। अपने कर्मों के बँधे हुए ही वे पाप करते रहते हैं। ऐसे अन्धे लोगों को कोई सूझ बूझ नहीं होती क्योंकि वे लोभ और अहंकार के बुरे विकारों में फँसे रहते हैं।। ४ ।। प्रियतम के बिना भला उस स्त्री को शृंगार करना क्या शोभा देता है। उसने अपने मालिक को भुलाकर पराए पुरुष के साथ रमण करना होता है। जैसे वेश्या के पुत्र का पिता किसे कहा जा सकता है अर्थात किसी को भी नहीं इसी प्रकार उस जीव स्त्री के भी सभी कर्मकाण्ड व्यर्थ और निकम्मे होते हैं।। ५ ।। मन रूपी प्रेत के पिंजरे रूपी शरीर में अनेकों दुख विद्यमान बने रहते हैं। इन्हीं दुखों के कारण अज्ञान के अंधकार में जीव नरक में पड़े हुए मरते खपते रहते हैं। जिन्होंने प्रभु नाम को भुला दिया है, धर्मराज का उन जीवों की ओर कुछ ना कुछ बाकी बना ही रहता है।। ६ ।। इस संसार में पाप का सूर्य तपता है और उसमें से विषय-विकार रूपी अग्नि की लपटें निकलती रहती हैं। इसीलिये व्यक्ति मनमुख, सम्मानहीन, पशु और भूत बन गया है। आशाओं और तृष्णाओं का रोग बहुत बुरा है जिससे व्यक्ति झूठ का आचरण ही करता रहता है।। ७ ।। पाप रूपी मिट्टी का भार सिर पर उठाए रहता है और फिर भला वह संसार सागर से कैसे पार उतर सकता है। सच्चा गुरु तो आदि युगादि से ही वह जहाज है जो प्रभु नाम के माध्यम से जीवों को पार उतार देता है ।। ८ ।। पुत्र, स्त्री और संसार का प्रेम माया मोह का फैला हुआ प्रसार ही है। गुरमुख बनकर ही यह तत्व विचार समझ आता है कि सच्चा गुरु ही यम के फँदों को तोड़ने वाला है।। ९ ।। झूठ की ठगी हुई दुनिया एक प्रभु के मार्ग को छोड़कर अन्य मार्गों पर चलती रहती है। मनमुख व्यक्ति अग्नि में पड़ा हुआ जलता ही रहता है। प्रभु का अमृत नाम ही महान गुरु है इसलिये हे जीव, उस नाम का सुमिरन करो वही सारे सुखों का सार है।। १० ।। सच्चा गुरु प्रसन्न होकर सत्य को हृदय में दृढ़ बनाता है। वही सभी दुख मिटाकर जीव को सीधे रास्ते पर डालता है। जिसका रक्षक सच्चा गुरु बन जाता है उसके पाँव में तो काँटा तक नहीं चुभता।। ११ ।। मिट्टी रूपी शरीर मिट्टी में मिल जाता है और यह तन सदैव टूटता हुआ दिखाई देता है परन्तु फिर भी पत्थर की तरह बने हुए मनमुख का मन प्रभु नाम में नहीं भीगता। वह इधर-उधर बहुत हाथ पाँव मारता है। अनेकों प्रलाप करता है परन्तु फिर भी नरक स्वर्ग में आने जाने में ही पड़ा रहता है।। १२ ।। मन रूपी साँप को माया रूपी जहर लिपटा हुआ है और इस दुविधा ने ही अनेकों घरों को बरबाद कर डाला है। सच्चे गुरु के बिना प्रेम उत्पन्न नहीं होता और भक्ति में लीन होकर ही व्यक्ति का मन सन्तुष्ट होता है।। १३ ।। प्रभु से टूटे हुए लोग धन सम्पदा के लिये अनेकों प्रकार से भागते दौड़ते हैं परन्तु प्रभु के नाम को भुलाकर वे भला कहाँ सुख प्राप्त कर सके हैं। वे तीनों गुणों के अन्तर्गत ही मरते-खपते रहते हैं और उनका पार उतारा नहीं होता।। १४ ।। कुत्ते और सूअर को झूठा ही कहा जाता है क्योंकि एक तो भौंकता हुआ मर जाता है और दूसरा भौं-भौं करता और दौड़ता भागता हुआ थक हार जाता है। मन तन से झूठे व्यक्ति झूठे कर्म ही करते हैं और दुर्मति के कारण प्रभु के दरबार में हार जाते हैं।। १५ ।। सच्चा गुरु मिले तो मन को वह स्थिर कर देता है। शरण में आए हुए को वह प्रभु का नाम देता है। प्रभु धन रूपी अमूल्य नाम वह प्रदान करता है क्योंकि प्रभु के दरबार में तो प्रभु का गुणानुवाद ही माना जाता है।। १६ ।।

राम नामु साधू सरणाई ॥ सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलणहारा हे ॥ १७ ॥ ३ ॥ ९ ॥ मारू महला १ ॥ घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ रामु जपहु अंतरगति धिआने ॥ लालच छोडि रचहु अपरंपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥ १ ॥ जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै ॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे ॥ २ ॥ हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा ॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥ अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥ ३ ॥ राम नामु गुर बचनी बोलहु ॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु ॥ गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे ॥ ४ ॥ सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ॥ ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ॥ अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा ॥ जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे ॥ ६ ॥ पंच ततु मिलि काइआ कीनी ॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥ ७ ॥ सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥ ८ ॥ साकत कूड़ कपट महि टेका ॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका ॥ बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥ ९ ॥ साकत जम की काणि न चूकै ॥ जम का डंडु न कबहू मूकै ॥ बाकी धरम राइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे ॥ १० ॥ बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ हउमै करता भवजलि परिआ ॥ बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे ॥ ११ ॥ गुर की दाति न मेटै कोई ॥ जिसु बखसे तिसु तारे सोई ॥ जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे ॥ १२ ॥ गुर ते भूले आवहु जावहु ॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे ॥ १३ ॥ सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥ सो जाणै जिनि दातै दीए ॥ किस कउ दोसु देहि तू प्राणी

प्रभु नाम और साधु पुरुषों की शरण तथा सच्चे गुरु के उपदेश के माध्यम से उस परमात्मा का ओर छोर और उसकी मर्यादा को जाना जाता है। हे नानक, तू अपने मन से कह कि प्रभु का ही जाप कर क्योंकि प्रभु ही वास्तव में मेल मिलाने वाला होता है।। १७ ।। ३ ।। ६ ।। मारू महला १ ।। हे मूर्ख, और अनजान मन, तू अपने वास्तविक घर में ही टिका रह और अपने अन्दर ही ध्यान लगाकर प्रभु का जाप करता रह। लालच छोड़कर उस अपरम्पर प्रभु में लीन हो जा क्योंकि इस तरह तू मुक्ति का द्वार पा लेगा।। १ ।। जिसको भूलने से यम ढूँढने लग जाता है, सभी सुख चले जाते हैं और आगे दुख ही दुख मिलते हैं, हे गुरमुख जीव, तू उस राम नाम का ही जाप कर क्योंकि यही परम तत्व का सारांश है।। २ ।। प्रभु नाम के मीठे रस का जाप करो क्योंकि गुरमुख बनकर ही अन्तर्मन में प्रभु रस को देखा जाता है। दिन रात प्रभु के प्रेम में रंगे रहो यही सारे जप, तप और संयमों का सारांश है।। ३ ।। गुरु के उपदेश के माध्यम से राम नाम का सुमिरन करो और शान्त पुरुषों की सभा में इस रस को खोजते रहो। गुरमति के माध्यम से अपने वास्तविक घर को जान लो जिससे तुम फिर गर्भ योनि में नहीं आओगे।। ४ ।। सत्य रूपी तीर्थ पर स्नान करो, प्रभु के गुण गाओ, परम तत्व का विचार करो और उस प्रभु में लौ लगाए रखो। इस प्रकार अंतिम समय में यम तुम्हें देख भी नहीं सकेगा क्योंकि तुम प्यारे प्रभु के नाम का सुमिरन करते रहोगे।। ५ ।। वह सच्चा गुरु और सबमें रमण करने वाला प्रभु बहुत महान और बड़ा दाता है। जिसके अन्तर्मन में सत्य होता है वही शब्द के माध्यम से उसमें लीन हो जाता है। जिसे सच्चा गुरु अपने से मिलाकर उस प्रभु से मिलाता है उसका यम का भय और बोझ चुक जाता है।। ६ ।। पाँच तत्वों को मिलाकर यह शरीर बनाया गया और इसमें प्रभु रत्न को इसकी पहचान बनाया गया। आत्मा ही प्रभु है और परमात्मा ही आत्मा है परन्तु वह परमात्मा शब्द के चिंतन के फलस्वरूप ही पाया जाता है।। ७ ।। हे भाई, सत्य और सन्तोष में बने रहो, क्षमा को पकड़े रहो और सच्चे गुरु की शरण में आते रहो। आत्मा को पहचान कर उस परमात्मा को पहचान लो और गुरु की संगति में ही तुम्हारा पार उतारा हो सकेगा।। ८ ।। प्रभु से टूटे व्यक्ति का आसरा झूठ और कपट ही होते हैं ; वह अनेक प्रकार से रात दिन निन्दा करता रहता है। प्रभु के सुमिरन के बिना वह बार बार गर्भ योनि और नरकों में आता जाता रहता है। ।। ६ ।। पदार्थवादी व्यक्ति के लिये यम का भय कभी समाप्त नहीं होता और यम का दण्ड उसके लिये कभी भी मिटता नहीं। अहंकार युक्त जीव के सिर पर बहुत बड़ा बोझ होता है और धर्मराज का भी उसकी ओर हिसाब बाकी ही बना रहता है।। १० ।। गुरु के बिना भला कौन सा पदार्थवादी पार उतर सका है। वह अहंकार करता हुआ संसार सागर में ही पड़ा रहता है। गुरु के बिना कोई भी पार नहीं उतरता इसलिये पार उतारने वाले उस प्रभु का ही सुमिरन करते रहना चाहिये।। ११ ।। गुरु के दिये हुए दान को कोई नष्ट नहीं कर सकता और जिस पर गुरु कृपा करता है वह उसी को पार उतारता है। जन्म-मरण का दुख उसके पास भी नहीं आता क्योंकि उसके मन में अपरम्पर प्रभु बसा रहता है।। १२ ।। गुरु को भूलकर आवागमन में पड़े रहोगे, जन्मते-मरते रहोगे और फिर पाप कमाते रहोगे। प्रभु से वियुक्त मूर्ख अचेत व्यक्ति सावधान नहीं होता परन्तु जब दुखों में पड़ता है तो फिर प्रभु को पुकारता है।। १३ ।। सुख और दुख सब पूर्व जन्मों के ही कीए हुए कार्य हैं और जिस दाता प्रभु ने इन्हें हमें दिया है वही इनके बारे में जानता है। हे प्राणी, अब तू किसे दोष देता है ;

सहु अपणा कीआ करारा हे ॥ १४ ॥ हउमै ममता करदा आइआ ॥ आसा मनसा बंधि चलाइआ ॥ मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥ १५ ॥ हरि की भगति करहु जन भाई ॥ अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे ॥ १६ ॥ हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ॥ नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥ १७ ॥ ४ ॥ १० ॥ मारू महला १ ॥ सरणि परे गुरदेव तुमारी ॥ तू समरथु दइआलु मुरारी ॥ तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥ १ ॥ तू आदि जुगादि करहि प्रतिपाला ॥ घटि घटि रूपु अनूपु दइआला ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ कमाता हे ॥ २ ॥ अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ आपे लेवै आपे देवै तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥ ३ ॥ जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥ पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ ॥ देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपतु रहाता हे ॥ ४ ॥ चारि नदी अगनी असराला ॥ कोई गुरमुखि बूझै सबदि निराला ॥ साकत दुरमति डूबहि दाझहि गुरि राखे हरि लिव राता हे ॥ ५ ॥ अपु तेजु वाइ प्रिथमी आकासा ॥ तिन महि पंच ततु घरि वासा ॥ सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता तजि माइआ हउमै भ्राता हे ॥ ६ ॥ इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ अंतरि चोरु मुहै घरु मंदरु इनि साकति दूतु न जाता हे ॥ ७ ॥ दुंदर दूत भूत भीहाले ॥ खिंचोताणि करहि बेताले ॥ सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे ॥ ८ ॥ कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता हे ॥ ९ ॥ जम दरि बाधे मिलहि सजाई ॥ तिसु अपराधी गति नही काई ॥ करण पलाव करे बिललावै जिउ कुंडी मीनु पराता हे ॥ १० ॥ साकतु फासी पड़ै इकेला ॥ जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥ राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि जाता हे ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ ऐथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥ राम नामु देवै करि किरपा

अपने किये हुए कर्मों का प्रचंड दुख तुझे भोगना ही पड़ेगा।। १४ ।। तू सदैव अहंकार और मेरा-मेरा करता रहा है; आशाओं और तृष्णओं में बँधा तू चलता रहा है। मेरी मेरी करता हुआ तू यहाँ से क्या लेकर जा रहा है ; तूने सिर्फ विषयों की और विकारों की राख ही लादी हुई है।। १५ ।। हे भाई, प्रभु की भक्ति सेवक बनकर करते रहो। उस अकथनीय प्रभु का सुमिरन करते रहो और मन को मन में ही लीन किये रहो अर्थात उसकी वृत्तियों को अन्दर ही रोके रहो। उठकर भागते हुए मन को उसके मूल स्वरूप में ही रोके रहो जिससे दुखों को काटने वाला प्रभु तुम्हारे दुख मिटा देगा।। १६ ।। पूर्ण गुरु प्रभु का आसरा मैंने पहचान लिया है। गुरमुख व्यक्ति ने गुरु पारायण होकर ही अपनी लौ को प्रभु में लगाया। हे नानक, प्रभु की ही मति सर्वोत्तम है, प्रभु ही कृपा करता है और हमारा पार उतारा होता है।। १७ ।। ४ ।। १० ।। मारू महला १ ।। हे गुरुदेव, हम तुम्हारी शरण में आ गए हैं और हे प्रभु, तू ही समर्थ और दयालु है। तेरे खेलों को कोई नहीं जानता और तू ही पूर्ण विधाता पुरुष है।। १ ।। तू आदि युगादि से सबका पालन कर रहा है और घर घर में तेरा ही सुन्दर एवं अनुपम रूप स्थित है। तुझे जैसे अच्छा लगता है तू वैसे ही सबको चलाता है और सब तेरा ही कीया हुआ कमाया जाता है।। २ ।। प्रभु की सुन्दर ज्योति हमारे अन्दर है और प्रभु सारे शरीरों को भोगता हुआ उनके स्वाद का आनन्द लेता है। वह स्वयं ही लेता है स्वयं ही देता है और तीनों लोकों तथा सारे संसार का दाता प्रभु है।। ३ ।। संसार उत्पन्न करके उसने एक खेल रच दिया है और पवन-पानी तथा अग्नि को इस जीव के अन्दर डाल दिया है। इसके शरीर रूपी नगर के नौ दरवाजे हैं और इसमें दसवाँ द्वार गुप्त रखा हुआ है।। ४ ।। इस संसार में भयानक अग्नि की चार (हिंसा, मोह, लोभ और क्रोध की) नदियाँ हैं। कोई गुरमुख बनकर ही इस तथ्य को बूझता है और शब्द के माध्यम से निर्लेप बना रहता है। प्रभु से टूटे हुए लोग दुर्मति के कारण जलते डूबते रहते हैं परन्तु प्रभु में लौ लगाने से गुरु उनकी रक्षा कर लेता है।। ५ ।। जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश आदि पंच तत्वों में गुरमुख व्यक्ति सत्वगुण वाले स्वभाव के कारण अपना सफल निवास बनाए रहते हैं। गुरमुख व्यक्ति सच्चे गुरु के उपदेश के रंग में रंगा रहता है और उसने माया, अहंकार और भ्रांति को त्याग दिया होता है।। ६ ।। शब्द में सन्तुष्ट होकर यह मन भीगता है और हे जीव, प्रभु नाम के बिना भला कौन सा आसरा लिया जा सकता है। अहंकार रूपी चोर, घर रूपी शरीर को लूट रहा है परन्तु प्रभु से टूटे लोगों ने उस दूत को पहचाना नहीं है।। ७ ।। ये दूत बहुत शोर मचाने वाले और भूतों की तरह भयानक हैं। ये बेतालों की तरह झगड़ा मचाए रहते हैं। शब्द में सुरति लीन किये बिना जीव आवागमन में पड़ा रहता है और अपना सम्मान खोकर आता-जाता रहता है।। ८ ।। यह शरीर झूठा, रेत की तरह तथा राख की तरह एक ढेरी है। हे जीव, प्रभु नाम के बिना तेरा सम्मान कैसे सुरक्षित रहेगा। तुझ बँधे हुए को चारों युगों में भी मुक्ति नहीं मिलेगी क्योंकि यमदूत ने तुझे पहचान लिया है।। ९ ।। यम के द्वार पर बँधे हुए को सजा मिलती है और उस अपराधी का बहुत बुरा हाल होता है। वह मिन्नत और चीख पुकार लगाता हुआ उसी तरह तड़फता है जैसे मछली कुँडी में फँसी हुई तड़फती है।। १० ।। प्रभु से टूटा हुआ व्यक्ति अकेला ही फँदे में फँसा रहता है और उस अंधे और दुखी को यम ने अपने वश में कर लिया होता है। प्रभु नाम के बिना उसे मुक्ति की समझ नहीं आती और वह आजकल करता हुआ ही मर खप जाता है।। ११ ।। सच्चे गुरु के बिना कोई भी बचाने वाला नहीं है और हे जीव यहाँ और वहाँ वह प्रभु ही रक्षा करने वाला है। वह प्रभु ही कृपा करके राम नाम प्रदान करता है और इस प्रकार

इउ सलले सलल मिलाता हे ॥ १२ ॥ 'भूले सिख गुरू समझाए ॥ उझड़ि जादे मारगि पाए ॥ तिसु गुर सेवि सदा दिनु राती दुख भंजन संगि सखाता हे ॥ १३ ॥ गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ ब्रहमै इंद्रि महेसि न जाणी ॥ सतिगुरु अलखु कहहु किउ लखीऐ जिसु बखसे तिसहि पछाता हे ॥ १४ ॥ अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥ गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥ अहिनिसि निरमल जोति सबाई घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥ १५ ॥ भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥ जिनि चाखिआ तिनि दरसनु डीठा ॥ दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा मारि समाता हे ॥ १६ ॥ सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥ तिन घट घट अंतरि ब्रहमु पछाना ॥ नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता हे ॥ १७ ॥ ५ ॥ ११ ॥ मारू महला १ ॥ साचे साहिब सिरजणहारे ॥ जिनि धर चक्र धरे वीचारे ॥ आपे करता करि करि वेखै साचा वेपरवाहा हे ॥ १ ॥ वेकी वेकी जंत उपाए ॥ दुइ पंदी दुइ राह चलाए ॥ गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि लाहा हे ॥ २ ॥ पड़हि मनमुख परु बिधि नही जाना ॥ नामु न बूझहि भरमि भुलाना ॥ लै कै वढी देनि उगाही दुरमति का गलि फाहा हे ॥ ३ ॥ सिम्रिति सासत्र पड़हि पुराणा ॥ वादु वखाणहि ततु न जाणा ॥ विणु गुर पूरे ततु न पाईऐ सच सूचे सचु राहा हे ॥ ४ ॥ सभ सालाहे सुणि सुणि आखै ॥ आपे दाना सचु पराखै ॥ जिन कउ नदरि करे प्रभु अपनी गुरमुखि सबदु सलाहा हे ॥ ५ ॥ सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ सुणि कहीऐ को अंतु न जाणी ॥ जा कउ अलखु लखाए आपे अकथ कथा बुधि ताहा हे ॥ ६ ॥ जनमे कउ वाजहि वाधाए ॥ सोहिलड़े अगिआनी गाए ॥ जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु पइआ सिरि साहा हे ॥ ७ ॥ संजोगु विजोगु मेरै प्रभि कीए ॥ स्रिसटि उपाइ दुखा सुख दीए ॥ दुख सुख ही ते भए निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥ ८ ॥ नीके साचे के वापारी ॥ सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ सचा वखरु जिसु धनु पलै सबदि सचै ओमाहा हे ॥ ९ ॥ काची सउदी तोटा आवै ॥ गुरमुखि वणजु करे प्रभ भावै ॥ पूंजी साबतु रासि सलामति

जीव रूपी पानी उस प्रभु रूपी जल में मिलकर एक हो जाता है।। १२ ।। भटके हुए सिक्खों को गुरु ने समझाया है और उन भटकते हुओं को सीधे रास्ते पर डाला है। दिन रात उस गुरु की सेवा करो क्योंकि वही दुख दूर करने वाला और साथ चलने वाला बन्धु बनता है।। १३ ।। साधारण व्यक्ति गुरु की भक्ति भी क्या कर सकते हैं क्योंकि ब्रह्मा इन्द्र और महेश ने भी इस विधि को नहीं जाना है। वह अदृष्ट सच्चा गुरु प्रभु कैसे जाना जा सकता है; जिस पर कृपा हो वही उसे पहचानता है।। १४ ।। अन्तर्मन में प्रेम होने से दर्शन प्राप्त होते हैं और गुरु की वाणी से प्रेम जब होता है तो वही गुरु का स्पर्श बन जाता है। गुरमुख व्यक्ति को दिन रात सबमें निर्मल प्रकाश दिखाई देता है और उसके हृदय में भी ज्ञान का दीपक जलता हुआ अनुभव होता है।। १५ ।। ज्ञान का भोजन मीठा और महारस देने वाला है तथा जिसने उसे चख लिया है उसे दर्शन प्राप्त हो गए हैं। उसका दर्शन करके अन्य प्रेमी भी उससे मिलते हैं और मन आशाओं को समाप्त करके अपने में ही लीन हो जाता है।। १६ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करने वाले ही व्यक्ति प्रमुख होते हैं और उन्होंने घट-घट में ब्रह्म को पहचान लिया होता है। जिन्होंने सच्चे गुरु हरि प्रभु को जान लिया है नानक का कथन है कि हे प्रभु, उसे हरि यश और प्रभु के सेवकों की संगति प्रदान करो।। १७ ।। ५ ।। ११ ।। मारू महला १ ।। वह सच्चा साहिब सृजनकर्ता है और उसने चक्राकार धरती को बड़े विचारपूर्वक उठाया हुआ है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करके देखता रहता है और वही सच्चा प्रभु बेपरवाह है।। १ ।। उसने भिन्न-भिन्न प्रकार के जीव उत्पन्न किए हैं। शिक्षा ग्रहण करने वाले गुरमुख और उनके विपरीत मनमुख तथा इसी प्रकार अच्छे और बुरे दो रास्ते उसने चलाए हैं। पूर्ण गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती इसलिए हे जीव, तेरा लाभ इसी में है कि सच्चे प्रभु के नाम का सुमिरन कर ।। २ ।। मनमुख व्यक्ति पढ़ता तो है परन्तु जीवन की विधि को नहीं जानता। वह प्रभु नाम को नहीं बूझता और भ्रमों में भटकता रहता है। मनमुख व्यक्ति रिश्वत लेकर गवाहियाँ देते हैं और इस प्रकार दुर्मति का फँदा उनके गले में पड़ा रहता है।। ३ ।। वे स्मृतियों, शास्त्रों और पुराणों को पढ़ते हैं; उन पर वाद विवाद भी करते हैं परन्तु सार तत्व को नहीं जानते। पूर्ण गुरु के बिना सार तत्व को नहीं जाना जाता और सच्चे और पवित्र लोगों ने सत्य को अपना रास्ता बनाया होता है।। ४ ।। सभी प्रशंसा करते हैं और सुन-सुनकर उस प्रभु के बारे में कहते हैं परन्तु वह सयाना प्रभु स्वयं ही सत्य की परख करता है। प्रभु जिन पर कृपा दृष्टि करता है वे ही गुरमुख बनकर शब्द के माध्यम से उस प्रभु का गुणानुवाद करते हैं। जीव सुन सुनकर बहुत कुछ कहता है परन्तु सुनने और कहने से उसके रहस्य को नहीं जाना जाता। जिस को प्रभु स्वयं ही अपने आपको दिखा देता है, उसी की बुद्धि उस प्रभु की अकथनीय कथा कहने योग्य हो जाती है।। ६ ।। जीव के जन्म लेने पर बधाईयाँ बजती हैं और अज्ञानी लोग खुशी के गीत गाते हैं। जिसने जन्म लिया है उसने अवश्य मरना है और जिस प्रकार के कर्म हैं वैसे ही मौत का दिन भी लिखा है।। ७ ।। संयोग और वियोग तो मेरे प्रभु ने उत्पन्न किया है; और सृष्टि को उत्पन्न करके सुख-दुख भी उसी ने दिए हैं। गुरमुख व्यक्ति सुख-दुख से अलिप्त बने रहते हैं और उनका शील स्वभाव ही उनके लिये रक्षा करने वाली लोहे की पोशाक बन जाता है।। ८ ।। सत्य के व्यापारी सुन्दर होते हैं और गुरु से विचार-विमर्श करके वे सच्चा सौदा ले लेते हैं। जिनके पास सच्चा सौदा रूपी धन है सच्चे शब्द के माध्यम से उनके हृदय में उत्साह बना रहता है।। ९ ।। कच्चा सौदा लेने से हानि प्राप्त होती है और गुरमुख व्यक्ति जो व्यापार करता है वह प्रभु को अच्छा लगता है। उनकी रास पूंजी सलामत बनी रहती है और उनका

चूका जम का फाहा हे ॥ १० ॥ सभु को बोलै आपण भाणै ॥ मनमुखु दूजै बोलि
न जाणै ॥ अंधुले की मति अंधली बोली आइ गइआ दुखु ताहा हे ॥ ११ ॥
दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ दूखु न मिटै बिनु गुर की सरणा ॥ दूखी
उपजै दूखी बिनसै किआ लै आइआ किआ लै जाहा हे ॥ १२ ॥ सची
करणी गुर की सिरकारा ॥ आवणु जाणु नही जम धारा ॥ डाल छोडि ततु
मूलु पराता मनि साचा ओमाहा हे ॥ १३ ॥ हरि के लोग नही जमु मारै ॥ ना
दुखु देखहि पंथि करारै ॥ राम नामु घट अंतरि पूजा अवरु न दूजा काहा
हे ॥ १४ ॥ ओड़ु न कथनै सिफति सजाई ॥ जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥
दरगह पैधे जानि सुहेले हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥ १५ ॥ किआ कहीऐ गुण
कथहि घनेरे ॥ अंतु न पावहि वडे वडेरे ॥ नानक साचु मिलै पति राखहु तू सिरि
साहा पातिसाहा हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ १२ ॥ मारू महला १ दखणी ॥ काइआ
नगरु नगर गड़ अंदरि ॥ साचा वासा पुरि गगनंदरि ॥ असथिरु थानु सदा निरमाइलु
आपे आपु उपाइदा ॥ १ ॥ अंदरि कोट छजे हटनाले ॥ आपे लेवै वसतु समाले ॥
बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै गुर सबदी खोलाइदा ॥ २ ॥ भीतरि कोट गुफा घर
जाई ॥ नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥ दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु
लखाइदा ॥ ३ ॥ पउण पाणी अगनी इक वासा ॥ आपे कीतो खेलु तमासा ॥
बलदी जलि निवरै किरपा ते आपे जल निधि पाइदा ॥ ४ ॥ धरति उपाइ धरी
धरम साला ॥ उतपति परलउ आपि निराला ॥ पवणै खेलु कीआ सभ थाई
कला खिंचि ढाहाइदा ॥ ५ ॥ भार अठारह मालणि तेरी ॥ चउरु ढुलै पवणै लै
फेरी ॥ चंदु सूरजु दुइ दीपक राखे ससि घरि सूरु समाइदा ॥ ६ ॥ पंखी पंच
उडरि नही धावहि ॥ सफलिओ बिरखु अंम्रित फलु पावहि ॥ गुरमुखि सहजि
रवै गुण गावै हरि रसु चोग चुगाइदा ॥ ७ ॥ झिलमिलि झिलकै चंदु न
तारा ॥ सूरज किरणि न बिजुलि गैणारा ॥ अकथी कथउ चिहनु नही कोई
पूरि रहिआ मनि भाइदा ॥ ८ ॥ पसरी किरणि जोति उजिआला ॥ करि
करि देखै आपि दइआला ॥ अनहद रुण झुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि

यम का फँदा नष्ट हो जाता है।। १० ।। सब कोई अपनी मर्जी के अनुसार बोलता है और द्वैतभाव में पड़े मनमुख तो बोलना भी नहीं जानते। अंधे व्यक्ति की मति और बोली अंधी होती है और उसे आने जाने का दुख लगा रहता है।। ११ ।। दुख में ही व्यक्ति जन्मता है और दुख में ही मर जाता है ; गुरु की शरण में आए बिना इसका दुख मिटता नहीं। यह दुख में ही पैदा होता है, दुख में ही नष्ट होता है ; यह क्या लेकर आया था और यहाँ से क्या लेकर जाता है।। १२ ।। जो गुरु के अनुशासन में रहते हैं उनके कर्म सत्यशील होते हैं। उन पर यम के कानून की कोई भी धारा नहीं लगती। उन्होंने डालियों को छोड़कर प्रभु रूपी वृक्ष की जड़ को पहचाना है और इसीलिए उनके मन में सच्चा उत्साह है।। १३ ।। यम प्रभु के लोगों को नहीं मारता और भयानक रास्ते पर उन्हें दुख नहीं देखने पड़ते। उनके हृदय में प्रभु नाम की पूजा चलती रहती है और उन्हें अन्य कोई दिखाई नहीं देता।। १४ ।। प्रभु के हरि यश के कथन की कोई सीमा नहीं होती। जैसा तुझे अच्छा लगता है हमें तेरी रज़ा में ही रहना होता है। प्रभु दरबार में वे ही स्थित होते हैं और वे ही सुखी होते है जो सच्चे प्रभु के हुकुम में चलते हैं।। १५ ।। प्रभु के गुणों के बारे में क्या कहा जाए। उसके गुणों का कथन अनेकों लोग करते हैं परन्तु बड़े से बड़े लोग भी उसके रहस्य को नहीं जानते। हे नानक, हमें सत्य से मिलाकर हमारी इज़्ज़त बचा लो क्योंकि तुम ही राजाओं से भी बड़े राजा सम्राट हो।। १६ ।। ६ ।। १२ ।। मारू महला १ दक्खिनी।। नगरों और किलों में से शरीर भी एक नगर है और इसमें सच्चे प्रभु का निवास गगन पुरी में अर्थात दशम द्वार में होता है। उस सदैव निर्मल बने रहने वाले का स्थान स्थिर होता है और वह स्वयं ही अपने आपको उत्पन्न करता है।। १ ।। इसी के अन्दर किले छज्जे और दुकानें आदि हैं और उसमें वह स्वयं ही वस्तुओं को लेता और सम्भालता है। इस नगरी के दरवाज़े वज्र के समान जड़े हैं और शब्द गुरु के माध्यम से ही वह इन्हें खोलता है।। २ ।। शरीर रूपी किले में दशम द्वार रूपी गुफा है जहाँ प्रभु ने अपना स्थान बना रखा है। अपने हुकुम और रजा में उसने इस शरीर के नौ द्वार बना दिए हैं। दसवें द्वार में वह अदृष्ट अपरम्पर प्रभु बसता है और उस अदृष्ट को वह स्वयं ही समझाता दिखाता है।। ३ ।। पवन, पानी और अग्नि वाले इस शरीर में उस एक प्रभु का ही निवास है जिसने स्वयं ही सारा खेल तमाशा बनाया है। जो जलती हुई अग्नि पानी से बुझती है वही अग्नि (बड़वानल) उसने समुद्र में डाली है।। ४ ।। धरती को उत्पन्न करके उसने धर्म की कमाई का स्थान अर्थात धर्मशाला बना दिया। वह रचना पैदा करता है, प्रलय करता है परन्तु स्वयं फिर भी निराला बना रहता है। जीव में श्वास चलाकर उसने खेल बनाया है और जब वह अपनी शक्ति इसमे से खींच लेता है तो सारा खेल ढेर हो जाता है।। ५ ।। अठारह भार वाली अर्थात अत्यन्त भारी यह वनस्पति तेरी मालिन है। पवन जो चक्कर लगाता है वह मानो तुझे चँवर डुलाता रहता है। चंद्र और सूर्य उसने दो दीपक बनाए हैं और चन्द्रमा के घर में सूर्य आता है अर्थात चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश लेता है।। ६ ।। गुरमुख रूपी वृक्ष के ज्ञान इन्द्रिय रूपी पक्षी उड़कर कहीं भी नहीं जाते। गुरमुख सफल वृक्ष है और व्यक्ति उससे अमृत फल प्राप्त करते हैं। गुरमुख स्वाभाविक रूप से ही टिक कर उस प्रभु का गुणानुवाद करता है और प्रभु नाम के रस के दाने को चुगता है।। ७ ।। बेशक चाँद और तारे नहीं है परन्तु प्रभु की चमक झलकती रहती है। वहाँ इतना प्रकाश है कि बेशक सूर्य की किरण वहाँ नहीं होती परन्तु आकाश में विद्युत जैसा प्रकाश बना रहता है। मैं तो उस अकथनीय अवस्था का वर्णन कर रहा हूँ जिसका कोई चक्र चिन्ह नहीं है और जिस अवस्था में वह प्रभु भरपूर रूप से मन को भाता है।। ८ ।। जब प्रभु के ज्ञान की किरण फैलती है तो उसकी ज्योति से चारों और उजाला हो जाता है। वह दयालु प्रभु स्वयं ही यह सब उत्पन्न करके उसे देखता रहता है। अनहद नाद की झंकार की धुन सदैव बजती रहती है और निर्भय होकर प्रभु यह धुन

वाइदा ॥ ९ ॥ अनहदु वाजे भ्रमु भउ भाजे ॥ सगल बिआपि रहिआ प्रभु छाजे ॥ सभ तेरी तू गुरमुखि जाता दरि सोहै गुण गाइदा ॥ १० ॥ आदि निरंजनु निरमलु सोई ॥ अवरु न जाणा दूजा कोई ॥ एकंकारु वसै मनि भावै हउमै गरबु गवाइदा ॥ ११ ॥ अंम्रितु पीआ सतिगुरि दीआ ॥ अवरु न जाणा दूआ तीआ ॥ एको एकु सु अपर परंपरु परखि खजानै पाइदा ॥ १२ ॥ गिआनु धिआनु सचु गहिर गंभीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा चीरा ॥ जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइदा ॥ १३ ॥ करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ॥ वेपरवाह अखुट भंडारै ॥ तू दइआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइदा ॥ १४ ॥ आपे देखि दिखावै आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ आपे जोड़ि विछोड़े करता आपे मारि जीवाइदा ॥ १५ ॥ जेती है तेती तुधु अंदरि ॥ देखहि आपि बैसि बिज मंदरि ॥ नानकु साचु कहै बेनंती हरि दरसनि सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ १३ ॥ मारू महला १ ॥ दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥ भाइ भगति साचे गुण गावा ॥ तुधु भाणे तू भावहि करते आपे रसन रसाइदा ॥ १ ॥ सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥ मुकतु भए हरि दास तुमारे ॥ आपु गवाइ तेरै रंगि राते अनदिनु नामु धिआइदा ॥ २ ॥ ईसरु ब्रहमा देवी देवा ॥ इंद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ जती सती केते बनवासी अंतु न कोई पाइदा ॥ ३ ॥ विणु जाणाए कोइ न जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह लवाइदा ॥ ४ ॥ जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ मनमुखु आपु गणाए रोवै ॥ नावहु भुला ठउर न पाए आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ ५ ॥ निरमल काइआ ऊजल हंसा ॥ तिसु विचि नामु निरंजन अंसा ॥ सगले दूख अंम्रितु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइदा ॥ ६ ॥ बहु सादहु दूखु परापति होवै ॥ भोगहु रोग सु अंति विगोवै ॥ हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइदा ॥ ७ ॥ गिआन विहूणी भवै सबाई ॥ साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ निरभउ सबदु गुरू सचु जाता जोती जोति मिलाइदा ॥ ८ ॥ अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ खिन महि ढाहे फेरि उसारे ॥ रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि

बजाता रहता है। जब अनहद नाद बजता है तो भ्रम और भय भाग खड़े होते हैं और फिर प्रभु सब ओर छाया हुआ अनुभव होता है। यह सारी सृष्टि तेरी है और गुरमुख व्यक्ति ने ही तुझे जाना है और तेरे द्वार पर वही तेरे गुण गाता हुआ शोभायमान बना रहता है।। १० ।। आदि निरंजन और निर्मल वह प्रभु ही है और उसके बिना मैं दूसरे किसी को नहीं जानता। एक रस परमात्मा जब मन में बसता है तो मन को भाता है और फिर वह प्रभु व्यक्ति के अहंकार को नष्ट कर देता है।। ११ ।। सच्चे गुरु ने जो दिया उस अमृत का मैंने दान किया और अब मैं दूसरे तीसरे को नहीं जानता। वह अपरम्पर प्रभु एक ही है और सबको परखकर वह अपने खजाने में डाल लेता है।। १२ ।। ज्ञान ध्यान बहुत गहरा, गम्भीर और सत्य है और हे प्रभु, तेरे विस्तार को कोई नहीं जान पाता। जितनी भी सृष्टि है सब तेरे से ही याचना करती है परन्तु जिस पर तेरी कृपा होती है वही तुझसे कुछ प्राप्त करता है।। १३ ।। हे बेपरवाह और अक्षय भण्डार प्रभु, सारा धर्म-कर्म और सत्य तेरे ही हाथ है। तू सदा दयालु, कृपालु बना रहने वाला प्रभु है और तू स्वयं मेल मिलाता रहता है।। १४।। वह स्वयं ही देखता-दिखाता है और स्वयं ही स्थापना करके नष्ट भी कर देता है। स्वयं ही वह कर्ता प्रभु मिलाता है, वियोग में डाल देता है और स्वयं ही मारकर जीवित भी कर देता है।। १५ ।। जितनी भी सृष्टि है सब तुझमें ही है और तू स्वयं ही अपने प्रकाशमान स्थान पर बैठकर इसे देखता है। नानक तो एक सच्ची विनती करता है कि वह तो प्रभु के दर्शन में ही सुख प्राप्त करता है।। १६ ।। १ ।। १३ ।। मारू महला १ ।। यदि तुझे भा जाऊँ तो तभी तेरे दर्शन पा सकता हूँ और तेरी प्रेम भक्ति में ही सच्चे गुण गा सकता हूँ। तुझे भा जाए तो हे कर्ता प्रभु, हम तुझे अच्छे लगते है और तू स्वयं ही हमारी जीभ में रस पैदा करता है।। १ ।। भक्तजन प्रभु के दरबार में शोभा पाते हैं और हे प्रभु, तुम्हारे दास तो मुक्त हो गए हैं। वे अपना अहंकार भाव गंवाकर तेरे प्रेम में लीन हो गए हैं और प्रत्येक दिन तेरे ही नाम का सुमिरन करते हैं।। २ ।। शिव, ब्रह्मा, देवी-देवता, इन्द्र, तपस्वी, मुनि सब तेरी ही सेवा में लगे रहते हैं। अनेकों ही यति, त्यागी और बनवासी हैं परन्तु तेरे रहस्य को कोई नहीं जान पाता।। ३ ।। बिना समझाए कोई नहीं जानता और वह प्रभु जो कुछ करता है अपनी इच्छा से ही करता है। उसने चौरासी लाख योनियों में जीव उत्पन्न किए परन्तु सब उसी की आज्ञा में सांस लेते हैं।। ४ ।। जो उसे अच्छा लगता है वह निश्चित रूप से हो जाता है; मनमुख व्यक्ति अपनी ही गिनती करवाता है और रोता रहता है। प्रभु नाम को भूला वह कहीं भी ठिकाना नहीं पाता तथा आवागमन में पड़ा दुख उठाता रहता है।। ५ ।। यह काया पवित्र है और इसमें जीव रूपी हंस भी उज्जवल है। उसमें अलिप्त हरि का अंश उसका नाम स्थित है। जो सभी दुख अमृत के समान पी जाता है वह फिर अधिक दुख प्राप्त नहीं करता।। ६ ।। बहुत से स्वादों में लगे रहने से दुख मिलता है और भोग से रोग मिलते हैं तथा अंत में जीव ख्वार ही होता है। खुशी में से ही ऐसा शोक उत्पन्न होता है जो कभी मिटता नहीं और प्रभु की रजा को ना मानने से जीव भटकता रहता है।। ७ ।। ज्ञान से विहीन होकर यह सारी दुनियाँ भटकती रहती है वह सच्चा प्रभु तो अपनी लौ में लीन होकर सबमें रमण कर रहा है। जिसने निर्भय होकर शब्द-गुरु को सत्य रूप में स्वीकार कर लिया है वह अपनी ज्योति को परम ज्योति में मिला लेता है।। ८ ।। वह प्रभु अटल, अडोल, अतुलनीय है और क्षण भर में ही नष्ट करके फिर उत्पन्न कर देता है। उसकी कोई रूप रेखा और सीमा तथा कीमत नहीं है; जीव शब्द द्वारा

भेदि पतीआइदा ॥ ९ ॥ हम दासन के दास पिआरे ॥ साधिक साच भले वीचारे ॥ मंने नाउ सोई जिणि जासी आपे साचु द्रिड़ाइदा ॥ १० ॥ पलै साचु सचे सचिआरा ॥ साचे भावै सबदु पिआरा ॥ त्रिभवणि साचु कला धरि थापी साचे ही पतीआइदा ॥ ११ ॥ वडा वडा आखै सभु कोई ॥ गुर बिनु सोझी किनै न होई ॥ साचि मिलै सो साचे भाए ना वीछुड़ि दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ धुरहु विछुंने धाही रुंने ॥ मरि मरि जनमहि मुहलति पुंने ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई मेलि न पछोताइदा ॥ १३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे त्रिपता आपे मुकता ॥ आपे मुकति दानु मुकतीसरु ममता मोहु चुकाइदा ॥ १४ ॥ दाना कै सिरि दानु वीचारा ॥ करण कारण समरथु अपारा ॥ करि करि वेखै कीता अपणा करणी कार कराइदा ॥ १५ ॥ से गुण गावहि साचे भावहि ॥ तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ॥ नानकु साचु कहै बेनंती मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ २ ॥ १४ ॥

मारू महला १ ॥ अरबद नरबद धुंधूकारा ॥ धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ १ ॥ खाणी न बाणी पउण न पाणी ॥ ओपति खपति न आवण जाणी ॥ खंड पताल सपत नही सागर नदी न नीरु वहाइदा ॥ २ ॥ ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥ दोजकु भिसतु नही खै काला ॥ नरकु सुरगु नही जंमणु मरणा ना को आइ न जाइदा ॥ ३ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ॥ अवरु न दीसै एको सोई ॥ नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना को दुखु सुखु पाइदा ॥ ४ ॥ ना तदि जती सती बनवासी ॥ ना तदि सिध साधिक सुखवासी ॥ जोगी जंगम भेखु न कोई ना को नाथु कहाइदा ॥ ५ ॥ जप तप संजम ना ब्रत पूजा ॥ ना को आखि वखाणै दूजा ॥ आपे आपि उपाइ विगसै आपे कीमति पाइदा ॥ ६ ॥ ना सुचि संजमु तुलसी माला ॥ गोपी कानु न गऊ गुोआला ॥ तंतु मंतु पाखंडु न कोई ना को वंसु वजाइदा ॥ ७ ॥ करम धरम नही माइआ माखी ॥ जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ ममता जालु कालु नही माथै ना को किसै धिआइदा ॥ ८ ॥ निंदु बिंदु नही जीउ न जिंदो ॥ ना तदि गोरखु ना माछिंदो ॥ ना तदि

बिंध कर ही शान्त होता है।। ९ ।। हमें प्रभु के दासों के दास भी प्यारे लगते हैं क्योंकि वे साधक हैं, सच्चे हैं और भले विचारों वाले हैं। जो प्रभु नाम का मनन कर लेता है वही यहाँ से जीत कर जाता है तथा वह प्रभु स्वयं ही सत्य को याद करता रहता है।। १० ।। जिसके पास सत्य है वही सत्यशील और सचिआर है। सच्चे व्यक्ति को ही शब्द प्यारा लगता है। प्रभु ने तीनों लोकों में सत्य को एक शक्ति के रूप में स्थित किया है और सत्य में लीन व्यक्ति ही सन्तुष्ट बना रहता है।। ११ ।। सब उस परमात्मा को बड़ा, बहुत बड़ा कहते हैं परन्तु गुरु के बिना उसकी समझ किसी को नहीं पड़ती। जो सत्य से मिल जाते हैं वे ही उस सच्चे प्रभु को अच्छे लगते हैं और वे फिर उससे कभी ना बिछुड़ कर दुख नहीं उठाते।। १२ ।। जो प्रारम्भ से ही बिछुड़े हैं वे चीख चीख कर रोते रहते हैं। जीवन का समय बीत जाने पर वे मर मर कर जन्म लेते रहते है। जिस पर प्रभु कृपा करता है उसे वह बड़प्पन प्रदान करता है तथा अपने से मिलाकर उसे कोई पछतावा नहीं होता।। १३ ।। प्रभु स्वयं ही कर्ता और स्वयं ही भोगने वाला है। वह स्वयं ही तृप्त करने वाला है और स्वयं ही मुक्त करने वाला है। मुक्ति का दान देने वाला वह मुक्तेश्वर प्रभु ममता और मोह दूर कर देता है।। १४ ।। तेरा दिया दान सब दानों में श्रेष्ठ जाना जाता है। तू ही करने कराने वाला समर्थ एवं अपरम्पर प्रभु है। तू अपना किया हुआ देखता रहता है और सबसे अपने कर्मों के अनुरूप काम करवाता रहता है।। १५ ।। जो सच्चे को भा जाते हैं वे ही उसके गुण गाते हैं। वे तुझसे ही पैदा होते हैं और तुझमें ही समा जाते है। नानक एक सच्ची विनती करता है कि वास्तव में सच्चे प्रभु से मिलकर जीव सुख प्राप्त करता है।। १६ ।। २ ।। १४ ।। मारू महला १ ।। अरबों-खरबों से भी अधिक समय तक धुन्ध रूपी अंधकार बना रहा। उस समय ना धरती थी ना आकाश था; केवल एक प्रभु का हुकुम ही व्याप्त था। उस समय ना दिन था ना रात थी ना चन्द्र था ना सूर्य था और परमात्मा शून्य समाधि में लीन था।। १ ।। उस समय ना जीवन के स्रोत थे, ना वाणी थी ना हवा थी, ना पानी था ना उत्पति थी ना नाश था और ना ही आवागमन था। विश्व के अनेकों खण्ड, पाताल, सातों सागर, नदियाँ बहता पानी कुछ भी नहीं था।। २ ।। तब ना तो स्वर्ग था ना यह धरती थी, ना पाताल था, ना नरक था ना स्वर्ग था और ना ही मारने वाला काल था। नरक, स्वर्ग, जीना-मरना कुछ नहीं था और ना ही कोई आता था और ना ही कोई कहीं जाता था।। ३ ।। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि कोई भी नहीं थे और उस एक परमात्मा के सिवा अन्य कोई भी नहीं था। नारी पुरुष, जाति, जन्म आदि कुछ भी नहीं था और ना कोई दुख और सुख प्राप्त करता था।। ४ ।। यति, त्यागी, बनवासी, सिद्ध साधक और सुख से रहने वाले भोगी आदि कोई भी नहीं थे। ना कोई योगी था, ना कोई जंगम था, ना कोई सम्प्रदाय था, और ना ही कोई अपने आपको नाथ कहलवाता था।। ५ ।। जप, तप, संयम, व्रत, पूजा आदि कुछ भी नहीं थे और ना ही कोई द्वैतभाव का अनुभव तथा वर्णन करने वाला था। वह अपने आप से अपने आपको उत्पन्न करके प्रसन्न बना हुआ था और अपने मूल्य को आँकने वाला भी स्वयं ही है।। ६ ।। शौच अर्थात पवित्रता की भावना, संयम, तुलसी की माला, गोपी, कृष्ण, गाय, ग्वाला आदि कुछ भी नहीं था। तन्त्र मन्त्र का पाखंड भी नहीं था और ना ही कोई बासुँरी बजाने वाला था।। ७ ।। धर्म कर्म और माया रूपी मक्खी भी नहीं थी तथा जाति जन्म भी किसी ओर दिखाई नहीं देता था। ममता का जाल और माथे का काल भी नहीं था और ना ही कोई किसी का सुमिरन करता था।। ८ ।। ना किसी की निंदा थी और ना ही रद्द करने की भावना थी, ना जीव था ना उसके प्राण थे, ना उस समय गोरखनाथ था और ना ही मछन्दरनाथ था। ज्ञान ध्यान, वंशावली आदि कुछ भी नहीं थे

गिआनु धिआनु कुल ओपति ना को गणत गणाइदा ॥ ९ ॥ वरन भेख नही ब्रहमण खत्री ॥ देउ न देहुरा गऊ गाइत्री ॥ होम जग नही तीरथि नावणु ना को पूजा लाइदा ॥ १० ॥ ना को मुला ना को काजी ॥ ना को सेखु मसाइकु हाजी ॥ रईअति राउ न हउमै दुनीआ ना को कहणु कहाइदा ॥ ११ ॥ भाउ न भगती ना सिव सकती ॥ साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥ आपे साहु आपे वणजारा साचे एहो भाइदा ॥ १२ ॥ बेद कतेब न सिंम्रिति सासत ॥ पाठ पुराण उदै नही आसत ॥ कहता बकता आपि अगोचरु आपे अलखु लखाइदा ॥ १३ ॥ जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥ बाझु कला आडाणु रहाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए माइआ मोहु वधाइदा ॥ १४ ॥ विरले कउ गुरि सबदु सुणाइआ ॥ करि करि देखै हुकमु सबाइआ ॥ खंड ब्रहमंड पाताल अरंभे गुपतहु परगटी आइदा ॥ १५ ॥ ता का अंतु न जाणै कोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ नानक साचि रते बिसमादी बिसम भए गुण गाइदा ॥ १६ ॥ ३ ॥ १५ ॥ मारू महला १ ॥ आपे आपु उपाइ निराला ॥ साचा थानु कीओ दइआला ॥ पउण पाणी अगनी का बंधनु काइआ कोटु रचाइदा ॥ १ ॥ नउ घर थापे थापणहारै ॥ दसवै वासा अलख अपारै ॥ साइर सपत भरे जलि निरमलि गुरमुखि मैलु न लाइदा ॥ २ ॥ रवि ससि दीपक जोति सबाई ॥ आपे करि वेखै वडिआई ॥ जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥ ३ ॥ गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ पूरै तोलि तोलै वणजारा ॥ आपे रतनु विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥ ४ ॥ कीमति पाई पावणहारै ॥ वेपरवाह पूरे भंडारै ॥ सरब कला ले आपे रहिआ गुरमुखि किसै बुझाइदा ॥ ५ ॥ नदरि करे पूरा गुरु भेटै ॥ जम जंदारु न मारै फेटै ॥ जिउ जल अंतरि कमलु बिगासी आपे बिगसि धिआइदा ॥ ६ ॥ आपे वरखै अंम्रित धारा ॥ रतन जवेहर लाल अपारा ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ प्रेम पदारथु पाइदा ॥ ७ ॥ प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥ कब ही न घाटसि पूरा तोलो ॥ सचे का वापारी होवै सचो सउदा पाइदा ॥ ८ ॥ सचा सउदा विरला को पाए ॥ पूरा सतिगुरु

और ना ही कर्मों का कोई लेखा जोखा था।। ६ ।। वर्ण, वेश, ब्राह्मण, क्षत्रिय, देवता, मंदिर, गाय, गायत्री आदि कुछ भी नहीं थे। ना होम था ना यज्ञ था ना तीर्थ स्थान था और ना कोई पूजा में लगा होता था।। १० ।। मुल्ला, काज़ी, शेख और हाजी आदि कोई नहीं था। ना प्रजा थी ना राजा था ना दुनियाँ का अहंकार था और ना कोई कहने-कहाने वाला था।। ११ ।। प्रेम भक्ति, शिव और शक्ति, साजन मित्र, बिन्दु और रक्त का मेल आदि कुछ भी नहीं था। वह प्रभु स्वयं ही साहूकार है और स्वयं ही व्यापारी है; सब कुछ होना ही उस सच्चे प्रभु को अच्छा लगता है।। १२ ।। वेद, कतेब, स्मृति, शास्त्र, पुराणों का पाठ, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि कुछ भी नहीं था। कहने-कहाने वाला वह अगोचर प्रभु स्वयं ही था और स्वयं ही अपने आपको देखता था।। १३ ।। जब उसको अच्छा लगा तब उसने संसार उत्पन्न कर दिया और बिना किसी शक्ति के संसार के इस फैलाव को स्थिरता प्रदान की। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को उत्पन्न करके माया मोह का प्रसार कर दिया।। १४ ।। किसी बिरले को ही प्रभु गुरु में अपना शब्द (उपदेश) सुनाया और वह प्रभु सब कुछ अपने हुकुम (विधान) में ही कर-करके उसे देखता रहता है। उसने खण्ड, ब्राह्मण्डों और पातालों की सृष्टि की और गुप्त से प्रकट होकर सामने आया।। १५ ।। उसके रहस्य को कोई नहीं जान सकता और पूर्ण गुरु से ही उसकी समझ पड़ती है। हे नानक, जो सत्य में लीन हो गया वह आश्चर्य रूप होकर आनन्दित बना रहकर उसका गुणानुवाद करता रहता है।। १६ ।। ३ ।। १५ ।। मारू महला १ ।। वह निराला प्रभु स्वयं ही उत्पन्न करता है और उस दयालु ने यह संसार अपना सच्चा निवास स्थान बना लिया। उसने पवन, पानी, अग्नि आदि को बाँध मिलाकर शरीर रूपी किलों की रचना की।। १ ।। उस बनाने वाले ने इस किले के नौ दरवाजे बनाए हैं और दसवें द्वार में उस अदृष्ट प्रभु ने अपना निवास बनाया है। गुरमुख व्यक्ति में स्थित सात सरोवर (पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि) नाम रूपी निर्मल जल से भर दिए हैं और अब वह जल मैला नहीं होता।। २ ।। सूर्य, चन्द्र रूपी जो दीपक हैं उनमें उसी की ज्योति है। वह स्वयं ही अपनी महिमा को करता और देखता रहता है। ज्योति स्वरूप वह प्रभु सदैव सुख देने वाला है और सच्चा बनकर ही व्यक्ति शोभा प्राप्त करता है।। ३ ।। इस शरीर रूपी किले में ही बाजार, नगर और व्यापार के काम चलते रहते हैं। वह व्यापारी प्रभु सब कुछ पूरा तौलता रहता है। वह स्वयं ही नाम रूपी रत्न खरीदता है। स्वयं ही उसे लेता है और स्वयं ही उसका मूल्य आंकता है।। ४ ।। वह मूल्य आँकने वाला ही मूल्य आँकता है और वह प्रभु बेपरवाह है तथा उसके भण्डार भरे हुए है। सभी कलाएं उसके पास है और उनके बारे में वह किसी गुरमुख को बताता है।। ५ ।। यदि वह कृपा दृष्टि करे तो पूर्ण गुरु से मिलाप होता है तथा फिर निर्दयी यम चोट नहीं मारता। जिस प्रकार जल में कमल स्वभाविक रूप से खिला रहता है इसी प्रकार वह स्वयं खिलकर सुमिरन करता रहता है।। ६ ।। वह स्वयं ही अमृतधारा के रूप में वर्षा करता है और अपार, रत्न, जवाहर और लाल उसी के हैं। सच्चा गुरु मिले तो उस पूर्ण प्रभु को पाया जाता है और वह प्रभु प्रेम पदार्थ के फलस्वरूप ही मिलता है।। ७ ।। वह अमूल्य प्रेम पदार्थ लेता है, पूरा तौलता है और उसे कभी भी घाटा नहीं होता। वह सत्य का ही व्यापारी है और सच्चा सौदा ही अपने पास रखता है।। ८ ।। कोई बिरला ही सच्चा सौदा प्राप्त करता है

मिलै मिलाए ॥ गुरमुखि होइ सु हुकमु पछाणै मानै हुकमु समाइदा ॥ ९ ॥
हुकमे आइआ हुकमि समाइआ ॥ हुकमे दीसै जगतु उपाइआ ॥ हुकमे सुरगु मछु
पइआला हुकमे कला रहाइदा ॥ १० ॥ हुकमे धरती धउल सिरि भारं ॥ हुकमे
पउण पाणी गैणारं ॥ हुकमे सिव सकती घरि वासा हुकमे खेल खेलाइदा ॥ ११ ॥
हुकमे आडाणे आगासी ॥ हुकमे जल थल त्रिभवण वासी ॥ हुकमे सास गिरास
सदा फुनि हुकमे देखि दिखाइदा ॥ १२ ॥ हुकमि उपाए दस अउतारा ॥ देव
दानव अगणत अपारा ॥ मानै हुकमु सु दरगह पैझै साचि मिलाइ समाइदा ॥ १३ ॥
हुकमे जुग छतीह गुदारे ॥ हुकमे सिध साधिक वीचारे ॥ आपि नाथु नथीं सभ
जा की बखसे मुकति कराइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु गड़ै महि राजा ॥ नेब खवास
भला दरवाजा ॥ मिथिआ लोभु नाही घरि वासा लबि पापि पछुताइदा ॥ १५ ॥
सतु संतोखु नगर महि कारी ॥ जतु सतु संजमु सरणि मुरारी ॥ नानक सहजि
मिलै जगजीवनु गुर सबदी पति पाइदा ॥ १६ ॥ ४ ॥ १६ ॥ मारू महला १ ॥
सुंन कला अपरंपरि धारी ॥ आपि निरालमु अपर अपारी ॥ आपे कुदरति
करि करि देखै सुंनहु सुंनु उपाइदा ॥ १ ॥ पउणु पाणी सुंनै ते साजे ॥ स्रिसटि उपाइ
काइआ गड़ राजे ॥ अगनि पाणी जीउ जोति तुमारी सुंने कला रहाइदा ॥ २ ॥
सुंनहु ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ सुंने वरते जुग सबाए ॥ इसु पद वीचारे सो
जनु पूरा तिसु मिलीऐ भरमु चुकाइदा ॥ ३ ॥ सुंनहु सपत सरोवर थापे ॥
जिनि साजे वीचारे आपे ॥ तितु सत सरि मनूआ गुरमुखि नावै फिरि बाहुड़ि जोनि
न पाइदा ॥ ४ ॥ सुंनहु चंदु सूरजु गैणारे ॥ तिस की जोति त्रिभवण सारे ॥ सुंने
अलख अपार निरालमु सुंने ताड़ी लाइदा ॥ ५ ॥ सुंनहु धरति अकासु उपाए ॥
बिनु थंमा राखे सचु कल पाए ॥ त्रिभवण साजि मेखुली माइआ आपि उपाइ
खपाइदा ॥ ६ ॥ सुंनहु खाणी सुंनहु बाणी ॥ सुंनहु उपजी सुंनि समाणी ॥ उतभुजु
चलतु कीआ सिरि करतै बिसमादु सबदि देखाइदा ॥ ७ ॥ सुंनहु राति दिनसु
दुइ कीए ॥ ओपति खपति सुखा दुख दीए ॥ सुख दुख ही ते अमरु अतीता गुरमुखि

और पूर्ण सच्चे गुरु से मिलता है। जीव गुरमुख बनता हैं तो उसके हुकुम को पहचानता है और उसके हुकुम को मानकर उस सच्चे प्रभु में ही लीन हो जाता है।। ६ ।। जीव हुकुम में ही आता है और उसके हुकुम में ही लीन हो जाता है। हुकुम में ही उत्पन्न की हुई सृष्टि चारों ओर दिखाई देती है। हुकुम में ही स्वर्ग, धरती, पाताल बनते हैं और अपने हुकुम में ही वह इनमें अपनी शक्ति स्थित करता है।। १० ।। हुकुम में ही धरती और धरती को सिर पर धारण किए रहने वाला तथाकथित बैल बना हुआ है और उस प्रभु के हुकुम में ही पवन, पानी और आकाश कार्यशील बने रहते हैं। जीवात्मा का माया शक्ति के साथ मेल भी उसके हुकुम में ही होता है और वह हुकुम में ही इन सबको खेल खिलाता रहता है।। ११ ।। हुकुम में ही आकाश फैला है और उसके हुकुम के अन्तर्गत जल स्थल और तीनों लोको में बसने वाले जीव कार्यशील बने रहते हैं। हुकुम में ही वह श्वास और खाने के लिए ग्रास सदैव देता रहता है और पुनः हुकुम में ही वह देखता और दिखाता रहता है।। १२ ।। परमात्मा ने अपने हुकुम में ही दस अवतार देव, दानव और अनगिनत अन्यों को उत्पन्न किया। जो उस प्रभु के हुकुम को मानता है वह उसके दरबार में सम्मान प्राप्त करता है और उसे सत्य के माध्यम से अपने में लीन कर लेता है।। १३ ।। छत्तीसों युग प्रभु ने अपने ही हुकुम में लीन होकर व्यतीत किए और उसके हुकुम में ही साधना करने वाले और चिंतन करने वाले सिद्ध साधक हुए हैं। वह स्वयं ही सबका नाथ है और यह रचना उसी की नकेल में नियंत्रित है; इसमें जिस पर वह कृपा कर देता है उसी को मुक्त कर देता है।। १४ ।। काया रूपी किले में मन रूपी राजा है। कर्म इन्द्रियाँ और ज्ञान इन्द्रियाँ इस राजा के नायब और खास सेवक हैं तथा इस किले का भला सा द्वार मुँह है। झूठा लोभ करने वालों को प्रभु के घर में निवास नहीं मिलता और लोभ के माध्यम से पापी बने हुए वे पछताते रहते हैं।। १५ ।। सत्य और सन्तोष भी इसी नगर में सेवक है जो मन रूपी राजा को यति, त्यागी, संयमी बनाते हुए उसे प्रभु की शरण की ओर ले जाते हैं। हे नानक, सहज स्वभाव में बने रहने से ही परमात्मा मिलता है और जीव शब्द गुरु के माध्यम से सम्मान प्राप्त करता है।। १६ ।। ४ ।। १६ ।। मारू महला १ ।। उस अपरम्पार प्रभु ने शून्य समाधि धारण की थी और वह निराला प्रभु स्वयं में स्थित स्वयं ही था। वह अपनी रचना को उत्पन्न करके स्वयं ही देखता है और अपनी शून्य समाधि में से ही रचना रूपी शून्य उत्पन्न करता रहता है।। १ ।। शून्य से ही पवन, पानी की रचना की गई है और इसी से ही सृष्टि उत्पन्न करके शरीर रूपी किले और मन रूपी राजाओं को पैदा किया गया है। अग्नि, पानी आदि तत्वों में हे प्रभु, तेरी ज्योति रूपी जीव आत्मा को तूने रख दिया है और पुनः सारी शक्ति तूने शून्य में ही स्थित की है।। २ ।। शून्य से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश तूने पैदा किए हैं और सभी युगों मे शून्य ही कार्यशील है। इस पद को जो भली प्रकार चिंतन कर ले वही सेवक अपने आप में पूरा है और उससे मिलकर ही व्यक्ति का भ्रम समाप्त होता है।। ३ ।। शून्य से ही उसने सातों समुद्र बनाए हैं और जिसने उन्हें बनाया है वह स्वयं ही इनका चिंतन भी करता है। पाँचों ज्ञान इन्द्रिय मन और बुद्धि इन सातों सरोवरों में जब गुरमुख बनकर व्यक्ति स्नान करता है तो फिर योनियों में नहीं आता जाता।। ४ ।। शून्य से ही चाँद, सूर्य, आकाश बने हैं और इस शून्य का प्रकाश ही तीनों लोकों में है। शून्य ही अदृष्ट, अपार निरंजन एवं निर्माण प्रभु है जो शुन्य समाधि में लीन बना रहता है। ।। ५ ।। शून्य में से ही धरती और आकाश उत्पन्न किए गए और इन्हें बिना किसी स्तम्भ के आधार के ही सत्य की शक्ति में डालकर स्थित किया है। माया रूपी रस्सी से इन तीनों लोकों को उसने बाँधा है और वह स्वयं इन्हें उत्पन्न करके इन्हें नष्ट करता है।। ६ ।। शून्य से ही जीवन के स्रोत और वाणियाँ पैदा हुई हैं। ये शून्य से उत्पन्न होकर शून्य में ही लीन हो जाती हैं। वनस्पति को उत्पन्न करने का खेल कार्यशील किया और अपने परम आश्चर्य रूपी शब्द के माध्यम से इसे कार्यशील बनाया है।। ७ ।। शून्य से ही दोनों दिन-रात पैदा किए गए ; इसी से ही उत्पत्ति, प्रलय, सुख दुख दिया गया। गुरमुख बना व्यक्ति सुख-दुख से अलिप्त हो जाता

निज घरु पाइदा ॥ ८ ॥ साम वेदु रिगु जुजरु अथरबणु ॥ ब्रहमे मुखि माइआ है त्रै गुण ॥ ता की कीमति कहि न सकै को तिउ बोले जिउ बोलाइदा ॥ ९ ॥ सुंनहु सपत पाताल उपाए ॥ सुंनहु भवण रखे लिव लाए ॥ आपे कारणु कीआ अपरंपरि सभु तेरो कीआ कमाइदा ॥ १० ॥ रज तम सत कल तेरी छाइआ ॥ जनम मरण हउमै दुखु पाइआ ॥ जिस नो क्रिपा करे हरि गुरमुखि गुणि चउथै मुकति कराइदा ॥ ११ ॥ सुंनहु उपजे दस अवतारा ॥ स्रिसटि उपाइ कीआ पासारा ॥ देव दानव गण गंधरब साजे सभि लिखिआ करम कमाइदा ॥ १२ ॥ गुरमुखि समझै रोगु न होई ॥ इह गुर की पउड़ी जाणै जनु कोई ॥ जुगह जुगंतरि मुकति पराइण सो मुकति भइआ पति पाइदा ॥ १३ ॥ पंच ततु सुंनहु परगासा ॥ देह संजोगी करम अभिआसा ॥ बुरा भला दुइ मसतकि लीखे पापु पुंनु बीजाइदा ॥ १४ ॥ ऊतम सतिगुर पुरख निराले ॥ सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु गुरू ते पाईऐ पूरै भागि मिलाइदा ॥ १५ ॥ इसु मन माइआ कउ नेहु घनेरा ॥ कोई बूझहु गिआनी करहु निबेरा ॥ आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूड़ु कमाइदा ॥ १६ ॥ सतिगुर ते पाए वीचारा ॥ सुंन समाधि सचे घर बारा ॥ नानक निरमल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥ १७ ॥ ५ ॥ १७ ॥ मारू महला १ ॥ जह देखा तह दीन दइआला ॥ आइ न जाई प्रभु किरपाला ॥ जीआ अंदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राइआ ॥ १ ॥ जगु तिस की छाइआ जिसु बापु न माइआ ॥ ना तिसु भैण न भराउ कमाइआ ॥ ना तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावरु मनि भाइआ ॥ २ ॥ तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥ तू पुरखु अलेख अगंम निराला ॥ सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज भाइ लिव लाइआ ॥ ३ ॥ त्रै वरताइ चउथै घरि वासा ॥ काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥ निरमल जोति सरब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइआ ॥ ४ ॥ ऊतम जन संत भले हरि पिआरे ॥ हरि रस माते पारि उतारे ॥ नानक रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइआ ॥ ५ ॥ तू अंतरजामी

है और अपना वास्तविक ठिकाना प्रभु का महल प्राप्त कर लेता है।। ८ ।। ऋग, साम, यजुर और अथर्ववेद चारों ही ब्रह्मा के मुख से निकले हुए त्रिगुणात्मक माया रूप ही थे। उस प्रभु का मुल्याकंन कोई नहीं कर सकता और वह जैसे बुलाता है जीव वैसे ही बोलता है।। ९ ।। शून्य से ही सातों पाताल पैदा किए गए और शून्य ही लौ लगाता हुआ जीव को भटकने से रोके रहता है। उस अपरम्पार मूल कारण प्रभु ने ही संसार के सभी कारणों को बनाया है और सभी तेरे किए हुए के अनुरूप ही कार्यशील बने रहते हैं।। १० ।। रज, तम और सतोगुण की शक्ति सब तेरी ही छाया है और तूने ही जन्म-मरण तथा अहंकार का दुख इस संसार में डाला है। वह प्रभु रूपी गुरमुख जिस पर कृपा कर देता है वह तीनों गुणों से उपर उठकर चौथे पद में मुक्त कर दिया जाता है।। ११ ।। शून्य से ही दस अवतार और सृष्टि का सारा प्रसार उत्पन्न हुआ। शून्य प्रभु ने ही देव दानव, गण गन्धर्व उत्पन्न किए जो सभी लिखे भाग्य लेखों के अनुसार कर्म करते रहते हैं।। १२ ।। गुरमुख बनकर जो समझदार हो जाता है उसे कोई रोग नहीं होता परन्तु गुरु के इस मार्ग को कोई बिरला सेवक ही जान पाता है। युगों-युगों से यह जीव मुक्ति की ओर उन्मुख बना रहता है और जो मुक्त हो जाता है वही प्रभु की समझ सम्मान प्राप्त करता है।। १३ ।। शून्य से ही पाँचों तत्व प्रकाशित होते हैं और इन्हीं तत्वों के संयोग से शरीर बनकर कर्मो का अभ्यास करता है। बुरा भला दोनों इसके माथे पर लिखे रहते हैं तथा पाप और पुण्य को यह स्वयं ही बोता है।। १४ ।। वह सच्चा गुरु निराला पुरुष सर्वोत्तम है जो शब्द में लीन होकर प्रभु रस में मस्त बना रहता हैं। ऋद्धि, बुद्धि, सिद्धि तथा ज्ञान गुरु से प्राप्त होता है और पूर्ण भाग्य होने से ही गुरु से मिलाप होता है।। १५ ।। इस मन को माया के साथ बहुत अधिक स्नेह है; कोई ज्ञानी व्यक्ति इस तथ्य को बूझ ले और इस झगड़े को निपटा दे क्योंकि जीव लोभी बनकर आशाओं, इच्छाओं, अहंकार और भ्रमों में पड़ा झूठे आचरण को ही अपनाए रहता है।। १६ ।। यह जीव जब सच्चे गुरु से विचार प्राप्त करता है तो यह सत्य प्रभु के साथ पूर्ण स्थिरता देने वाली समाधि में लीन बना रहता है। हे नानक, यह शब्द की धुन में प्रभु के उस निर्मल नाद को सुनता है और सत्य रूपी राम नाम में लीन बना रहता हैं।। १७ ।। ५ ।। १७ ।। मारू महला १ ।। मैं जिधर देखता हूँ वह दीनदयालु दिखाई देता है और वह कृपालु प्रभु ना तो आता है और ना कहीं जाता है। उसी की दी युक्ति सभी जीवों में बनी रहती है और वह अलिप्त प्रभु सदैव ज्यों का त्यों स्थिर बना रहता है ।। १ ।। यह संसार उसका प्रतिबिम्ब है जिस प्रभु का माता पिता कोई नहीं है अर्थात जो स्वयंभू है। उसने किसी को बहन और भाई भी नहीं बनाया, ना वह उत्पन्न होता है ना नष्ट होता है, ना उसकी कोई जाति होती है ; इसीलिये जरा मरण से उपर बना रहने वाला वह प्रभु मेरे मन को अच्छा लगता है।। २ ।। हे सबमें रमण करने वाले प्रभु, तू कालातीत है और तेरे सिर पर काल का भय नहीं बना रहता। तू अदृष्ट, अगम्य और निराले रूप में सबमें बसा रहने वाला है। तू सत्य सन्तोष वाला है। तेरा शब्द अत्यन्त शीतलता देने वाला है और तुझमें लौ लगाने से तू सहज स्वभाविक रूप से प्राप्त हो जाता है।। ३ ।। तूने तीनों गुणों का सृष्टि रूप में विस्तार किया है और तीनों गुणों से उपर चौथी अवस्था में तू स्वयं निवास करता है। जन्म-मरण को तूने एक ही ग्रास में खा लिया है। निर्मल ज्योति के रूप में सारे संसार का जीवन वह प्रभु गुरु ने अनहद शब्द के रूप में हमें दिखा दिया है।। ४ ।। प्रभु के सेवक उत्तम और शान्त पुरुष हैं और वे प्रभु के प्यारे बने रहते हैं। प्रभु के रस में ही लीन ऐसे लोगों को पार उतार दिया जाता है। नानक तो ऐसे संत सेवकों की चरण धूलि है और गुरु की कृपा से ऐसे सेवकों की संगति में रहते हुए ही प्रभु को पाया जाता है।। ५ ।। तू अन्तर्यामी है और

जीअ सभि तेरे ॥ तू दाता हम सेवक तेरे ॥ अंम्रित नामु क्रिपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइआ ॥ ६ ॥ पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ ॥ आतम राम पाए सुखु थीआ ॥ करम करतूति अंम्रित फलु लागा हरि नाम रतनु मनि पाइआ ॥ ७ ॥ ना तिसु भूख पिआस मनु मानिआ ॥ सरब निरंजनु घटि घटि जानिआ ॥ अंम्रित रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइ सुभाइआ ॥ ८ ॥ अधिआतम करम करे दिनु राती ॥ निरमल जोति निरंतरि जाती ॥ सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसालु वजाइआ ॥ ९ ॥ बेणु रसाल वजावै सोई ॥ जा की त्रिभवण सोझी होई ॥ नानक बूझहु इह बिधि गुरमति हरि राम नामि लिव लाइआ ॥ १० ॥ ऐसे जन विरले संसारे ॥ गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ॥ आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ ॥ ११ ॥ घरु दरु मंदरु जाणै सोई ॥ जिसु पूरे गुर ते सोझी होई ॥ काइआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइआ ॥ १२ ॥ चतुर दस हाट दीवे दुइ साखी ॥ सेवक पंच नाही बिखु चाखी ॥ अंतरि वसतु अनूप निरमोलक गुरि मिलिऐ हरि धनु पाइआ ॥ १३ ॥ तखति बहै तखतै की लाइक ॥ पंच समाए गुरमति पाइक ॥ आदि जुगादी है भी होसी सहसा भरमु चुकाइआ ॥ १४ ॥ तखति सलामु होवै दिनु राती ॥ इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती ॥ नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अंति सखाई पाइआ ॥ १५ ॥ १ ॥ १८ ॥ मारू महला १ ॥ हरि धनु संचहु रे जन भाई ॥ सतिगुर सेवि रहहु सरणाई ॥ तसकरु चोरु न लागै ता कउ धुनि उपजै सबदि जगाइआ ॥ १ ॥ तू एकंकारु निरालमु राजा ॥ तू आपि सवारहि जन के काजा ॥ अमरु अडोलु अपारु अमोलकु हरि असथिर थानि सुहाइआ ॥ २ ॥ देही नगरी ऊतम थाना ॥ पंच लोक वसहि परधाना ॥ ऊपरि एकंकारु निरालमु सुंन समाधि लगाइआ ॥ ३ ॥ देही नगरी नउ दरवाजे ॥ सिरि सिरि करणैहारै साजे ॥ दसवै पुरखु अतीतु निराला आपे अलखु लखाइआ ॥ ४ ॥ पुरखु अलेखु सचे दीवाना ॥ हुकमि चलाए सचु नीसाना ॥ नानक खोजि लहहु घरु अपना हरि

ये सभी जीव तेरे ही हैं। हे प्रभु, तू दाता है और हम तेरे सेवक हैं। कृपा करके हमें तुम अपना अमृत नाम प्रदान कर दो क्योंकि गुरु के माध्यम से हमने ज्ञान रत्न रूपी दीपक का प्रकाश किया है।। ६ ।। पाँचों तत्वों से इस तन को बनाया गया है और सभी आत्माओं में रमे हुए प्रभु को पाकर हमें सुख प्राप्त हुआ है। हमारे कर्मों के कारनामों को प्रभु नाम रूपी अमृत फल लगा है और यह नाम रत्न हमने मन में ही प्राप्त किया है।। ७ ।। जिसका मन प्रभु नाम में सन्तुष्ट हो जाता है उसे फिर तृष्णाओं की भूख और प्यास नहीं रहती और वह घट-घट में उस प्रभु को ही देखता है। वह वास्तविक वैराग्यवान होकर अमृत रस में लीन बना रहता है और गुरमति में लीन होकर सहज स्वभाव वाला बन जाता है।। ८ ।। जो दिन रात आध्यात्मिक ज्ञान की साधना के कर्म में लगा रहता है उसने ही उस प्रभु की निर्मल और निरंतर ज्योति को जान लिया होता है। उसकी जीभ रसों के घर शब्द की रसदायक बासुँरी बजाती रहती है। यह रसदायक बासुँरी वही बजाता है जिसको तीनों लोकों की समझ आ जाती है। हे नानक, गुरमति को इस विधि से जान लो क्योंकि यही विधि राम नाम से लौ लगाने वाली होती है।। १० ।। ऐसे सेवक संसार में बिरले हैं जो शब्द-गुरु का गहन चिंतन करते हैं और अलिप्त बने रहते हैं। वे स्वयं पार उतरते हैं, अपनी संगति में रहने वालों के कुलों को पार उतार देते हैं और संसार में उन्हीं का जीवन सफल होता है।। ११ ।। वे ही वास्तव में इस शरीर रूपी प्रभु के घर उसके द्वार और उसके महल को जानते हैं जिन्हें पूर्ण गुरु से समझ प्राप्त हो गई होती है। इसी शरीर रूपी किले में उस विशाल महल के निवासी सच्चे प्रभु का निवास होता है और उस सच्चे प्रभु ने इसी में ही सच्चे हृदय रूपी सिंहासन की रचना की है।। १२ ।। चौदह भवन और चाँद सूरज रूपी दोनों दीपक इस बात के साक्षी हैं कि प्रभु के सेवक रूपी पँचों ने कभी भी विष रूपी माया को नहीं चखा होता है। उनके अन्दर अनुपम और अमूल्य प्रभु-नाम रूपी वस्तु स्थित बनी रहती है जो वास्तव में गुरु को मिलकर ही प्रभु धन के रूप में प्राप्त होती है।। १३ ।। हृदय रूपी सिंहासन पर वही बैठता है जो उसके योग्य होता है। उसने काम, क्रोध आदि पाँचों विकारों को गुरमति की प्रचंड अग्नि में जला दिया होता है। आदि-युगादि से वह प्रभु ही है और वह ही बना रहेगा; इस तथ्य को वही समझता है जिसने अपने संदेहो और भ्रमों को समाप्त कर लिया होता है।। १४ ।। सिंहासन पर बैठे हुए को दिन रात प्रणाम होते हैं और सत्य के इस बड़प्पन को गुरमति में लौ लगाने से ही जाना जाता है। हे नानक, प्रभु नाम के जाप की तैराकी के माध्यम से ही अन्त में सहायता करने वाला प्रभु पाया जाता है।। १५ ।। १ ।। १८ ।। मारू महला १ ।। हे प्रभु के सेवक भाइयो, प्रभु धन का संचय करो। सच्चे गुरु की सेवा करके उसकी शरण में बने रहो। ऐसे धन को विचार रूपी चोर नहीं चुरा सकते और शब्द की धुन में जीव सदैव जागृत बना रहता है।। १ ।। निराला सम्राट हे प्रभु, केवल एक तू ही है और तू ही अपने सेवकों के काम सँवारता है। तू अमर है, अडोल है अपार और अमूल्य है और हे प्रभु, तू स्थिरता के ठिकाने पर शोभायामान बना रहता है।। २ ।। शरीर रूपी वह नगरी उत्तम स्थान है जिसमें सत्य, सन्तोष, दया आदि प्रधान पाँचों लोग बसते रहते हैं। इस सबके उपर सदैव वह एक ओअंकार अलिप्त बना हुआ शून्य समाधि में लीन स्थित बना रहता है।। ३ ।। इस शरीर रूपी नगरी में नौ दरवाजे हैं और हर एक को इस कर्ता प्रभु ने बनाया है। दसवें द्वार में वह अतीत और निराला पुरुष अर्थात सबमें रमण करने वाला प्रभु विद्यमान बना रहता है और अदृष्ट वह प्रभु स्वयं ही खुद को दिखाता है।। ४ ।। सभी लेखों से परे वह प्रभु सत्य की संगति में बैठा हुआ सत्य के चिन्ह वाला अपना हुकुम कार्यशील बनाए रहता है। हे नानक, इस नगरी में तुम भी अपने वास्तविक ठिकाने को खोज लो क्योंकि

आतम राम नामु पाइआ ॥ ५ ॥ सरब निरंजन पुरखु सुजाना ॥ अदलु करे गुर गिआन समाना ॥ कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु चुकाइआ ॥ ६ ॥ सचै थानि वसै निरंकारा ॥ आपि पछाणै सबदु वीचारा ॥ सचै महलि निवासु निरंतरि आवण जाणु चुकाइआ ॥ ७ ॥ ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥ जोगी सबदु अनाहदु वावै ॥ पंच सबद झुणकारु निरालमु प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ॥ ८ ॥ भउ बैरागा सहजि समाता ॥ हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ अंजनु सारि निरंजनु जाणै सरब निरंजनु राइआ ॥ ९ ॥ दुख भै भंजनु प्रभु अबिनासी ॥ रोग कटे काटी जम फासी ॥ नानक हरि प्रभु सो भउ भंजनु गुरि मिलिऐ हरि प्रभु पाइआ ॥ १० ॥ कालै कवलु निरंजनु जाणै ॥ बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ आपे जाणै आपि पछाणै सभु तिस का चोजु सबाइआ ॥ ११ ॥ आपे साहु आपे वणजारा ॥ आपे परखे परखणहारा ॥ आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति पाइआ ॥ १२ ॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ पुरखु अतीतु वसै निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ ॥ १३ ॥ प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ आसा माहि निरालमु जोनी अकुल निरंजनु गाइआ ॥ १४ ॥ हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥ आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ नानक हरि जसु हरि गुण लाहा सतसंगति सचु फलु पाइआ ॥ १५ ॥ २ ॥ १९ ॥ मारू महला १ ॥ सचु कहहु सचै घरि रहणा ॥ जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लंघाइआ ॥ १ ॥ हउमै ममता लोभ बिनासनु ॥ नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ ऊपरि परै परै अपरंपरु जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ २ ॥ गुरमति लेवहु हरि लिव तरीऐ ॥ अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ ॥ जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरु न दुतीआ गाइआ ॥ ३ ॥ सचु हरि नामु सचु है सरणा ॥ सचु गुर सबदु जितै लगि तरणा ॥ अकथु कथै देखै अपरंपरु फुनि गरभि न जोनी जाइआ ॥ ४ ॥ सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥ मूल मंत्र हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा

प्रभु ने आत्मा और नाम के रूप में यह ठिकाना सबमें बनाया है।। ५ ।। वह परमात्मा सबके लिए निर्लेप है और सुजान बना घट-घट में विराज रहा है। वह न्याय करता है और गुरु के ज्ञान में समाया रहता है। काम, क्रोध को तो वह गर्दन से पकड़ कर मार देता है तथा अहंकार और लोभ को दूर कर देता है।। ६ ।। वह निराकार प्रभु सच्चे स्थान में बसता है और शब्द के चिंतन के माध्यम से यह जीव उसे स्वयं पहचान लेता है। सच्चे स्थान पर उसका निवास सदा बना रहता है और वह आवागमन को समाप्त कर देने वाला है।। ७ ।। जब मन स्थिर बना रहता है तो वासना की पवन उसे उड़ा नहीं सकती। जीव सच्चा योगी बनकर अनहद शब्द को बजाता रहता है। पाँच प्रकार के शब्दों की मीठी-मीठी सुन्दर झंकार प्रभु स्वयं ही बजाकर सुनाता रहता है।। ८ ।। उसके भय और वैराग्य में जीव स्वाभाविक रूप में ही उसमें लीन हो जाता है तथा अहंकार त्यागकर अनहद नाद में रंग जाता है। ज्ञान के अंजन का प्रयोग करके उस निरंजन के सार तत्त्व को जान जाता है और यह भी मान लेता है कि सर्वत्र वह निरंजन प्रभु ही समाया है।। ६ ।। अविनाशी प्रभु दुख और भय का नाश करने वाला है। उसने रोग काट दिए हैं और यम के फंदे को भी नष्ट कर दिया है। हे नानक, वह हरि प्रभु भय का नाश करने वाला है और गुरु के मिलने से ही उस प्रभु को पाया जाता है।। १० ।। जो प्रभु को जान जाता है वह काल को भी खा जाता है और शब्द को पहचान कर वह प्रभु की कृपा को जान जाता है। वह स्वयं ही सबको जानता पहचानता है और संसार का यह सारा कौतुक पूर्ण खेल उसी का ही है।। ११ ।। वह स्वयं ही साहूकार और व्यापारी है तथा परखने वाला बनकर स्वयं ही जाँच परख करता है। वह स्वयं ही कसौटी पर रगड़ कर रखता है और स्वयं ही मूल्य निर्धारण करता है।। १२ ।। उस दयालु प्रभु ने कृपा की है और घट-घट में वह प्रभु ही बसता है। वह अतीत प्रभु अलिप्त होकर बसता है और बलशाली गुरु ही उस प्रभु से मिलाता है।। १३ ।। वह प्रभु सयाना, सब कुछ देखने वाला हमारे अहंकार को मिटाता है और द्वैतभाव को मिटाकर केवल एक का ही दर्शन कराता है। ऐसा देखने वाला मनुष्य योनि में पड़ा हुआ भी आशाओं में निर्लिप्त बना रहता है और उस अकुल निरंजन प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है।। १४ ।। अहंकार मिटाकर शब्द के माध्यम से सुख प्राप्त होता है और जो अपने मन आत्मा में चिन्तन के द्वारा झांकता है उसे ही ज्ञानवान कहा जाता है। हे नानक, प्रभु के यश के गायन से प्रभु के गुणों का लाभ प्राप्त होता है और सत्संगति में सच्चा फल पाया जाता है।। १५ ।। २ ।। १६ ।। मारू महला १ ।। यदि सत्य के घर में निवास बनाना है तो सत्य बोलते रहो। यदि इस भवसागर को तैर कर पार जाना है तो जीवित रहते हुए ही विकारों की ओर से मर जाओ। गुरु ही जहाज है, गुरु ही नाव है, गुरु ही बेड़ा है और हे मन, तू प्रभु का जाप कर क्योंकि यह जाप ही तुझे पार उतारेगा।। १ ।। अहंकार ममता तथा लोभ विनाश करने वाले हैं। जब नौ द्वारों से व्यक्ति मुक्त हो जाता है तो दसवें द्वार में आसन लगाता है। सबके सिर पर बना रहने वाला वह अपरम्पर प्रभु परे से परे है जो अपने से स्वयं ही उत्पन्न हुआ है।। २ ।। गुरमति को प्राप्त करो और प्रभु में लौ लगाकर संसार सागर से पार उतर जाओ। दाँव पेचों से रहित उस प्रभु का गायन करने से फिर भला यम से डरने की क्या जरूरत है। जब उस अकथनीय प्रभु का कथन किया जाता है तो परे से परे वह प्रभु देखता रहता है और फिर जीव गर्भ योनि में नहीं जाता।। ४ ।। सच्चे आचरण के बिना सत्य और सन्तोष नहीं पाया जाता; जीव गुरु के बिना मुक्त नहीं होता और आवागमन में पड़ा रहता है। प्रभु-नाम ही मूल मन्त्र है और रसों का घर है; हे नानक, तू उसको कहता रह और उस पूर्ण प्रभु को

पाइआ ॥ ५ ॥ सच बिनु भवजलु जाइ न तरिआ ॥ एहु समुंदु अथाहु महा बिखु भरिआ ॥ रहै अतीतु गुरमति ले ऊपरि हरि निरभउ कै घरि पाइआ ॥ ६ ॥ झूठी जग हित की चतुराई ॥ बिलम न लागै आवै जाई ॥ नामु विसारि चलहि अभिमानी उपजै बिनसि खपाइआ ॥ ७ ॥ उपजहि बिनसहि बंधन बंधे ॥ हउमै माइआ के गलि फंधे ॥ जिसु राम नामु नाही मति गुरमति सो जम पुरि बंधि चलाइआ ॥ ८ ॥ गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईऐ ॥ बिनु गुर राम नामु किउ धिआईऐ ॥ गुरमति लेहु तरहु भव दुतरु मुकति भए सुखु पाइआ ॥ ९ ॥ गुरमति क्रिसनि गोवरधन धारे ॥ गुरमति साइरि पाहण तारे ॥ गुरमति लेहु परम पदु पाईऐ नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ १० ॥ गुरमति लेहु तरहु सचु तारी ॥ आतम चीनहु रिदै मुरारी ॥ जम के फाहे काटहि हरि जपि अकुल निरंजनु पाइआ ॥ ११ ॥ गुरमति पंच सखे गुर भाई ॥ गुरमति अगनि निवारि समाई ॥ मनि मुखि नामु जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइआ ॥ १२ ॥ गुरमुखि बूझै सबदि पतीजै ॥ उसतति निंदा किस की कीजै ॥ चीनहु आपु जपहु जगदीसरु हरि जगंनाथु मनि भाइआ ॥ १३ ॥ जो ब्रहमंडि खंडि सो जाणहु ॥ गुरमुखि बूझहु सबदि पछाणहु ॥ घटि घटि भोगे भोगणहारा रहै अतीतु सबाइआ ॥ १४ ॥ गुरमति बोलहु हरि जसु सूचा ॥ गुरमति आखी देखहु ऊचा ॥ स्रवणी नामु सुणै हरि बाणी नानक हरि रंगि रंगाइआ ॥ १५ ॥ ३ ॥ २० ॥ मारू महला १ ॥ कामु क्रोधु परहरु पर निंदा ॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा ॥ भ्रम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ ॥ १ ॥ निसि दामनि जिउ चमकि चंदाइणु देखै ॥ अहिनिसि जोति निरंतरि पेखै ॥ आनंद रूपु अनूपु सरूपा गुरि पूरै देखाइआ ॥ २ ॥ सतिगुर मिलहु आपे प्रभु तारे ॥ ससि घरि सूरु दीपकु गैणारे ॥ देखि अदिसटु रहहु लिव लागी सभु त्रिभवणि ब्रहमु सबाइआ ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु पाए त्रिसना भउ जाए ॥ अनभउ पदु पावै आपु गवाए ॥ ऊची पदवी ऊचो ऊचा निरमल सबदु कमाइआ ॥ ४ ॥ अद्रिसट अगोचरु नामु अपारा ॥

प्राप्त कर ले।। ५ ।। सत्य के बिना संसार सागर को पार नहीं किया जा सकता क्योंकि यह अथाह समुद्र घोर विष से भरा रहता है। गुरमति को अपना कर विषय-विकारों से ऊपर और अतीत बना जाता है तथा प्रभु को निर्भय बन कर पाया जाता है।। ६ ।। संसार के मोह की चतुराई झूठी है और क्षण भर में ही आकर चली जाती है। अभिमानी व्यक्ति प्रभु नाम को भुलाकर चलते रहते हैं और उत्पन्न होकर विनष्ट होते हुए मरते-खपते रहते हैं।। ७ ।। जीव जन्मते, विनष्ट होते बन्धनों में बँधे होते है और अहंकार रूपी माया के फंदे उनके गले में पड़े रहते हैं। जिसकी मति में गुरु की मति नही समाती और राम नाम का संचार नहीं होता उसे बाँधकर यमपुरी की ओर धकेल दिया जाता है।। ८ ।। गुरु के बिना मोक्ष कैसे पाया जा सकता है और गुरु के बिना राम नाम का सुमिरन कैसे प्राप्त किया जा सकता है। गुरु के बिना राम नाम का सुमिरन कैसे किया जा सकता है। गुरु की मति प्राप्त करके इस भंयकर संसार सागर को पार किया जाता है और मुक्त होकर सुख प्राप्त किया जाता है।। ६ ।। गुरु से मति प्राप्त करके अर्थात प्रभु से बल लेकर कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी ऊँगली पर धारण कर लिया था। गुरु मति के बल से ही समुद्र पर पत्थर तैरा दिए गए थे। हे जीव, गुरमति धारण कर इसी से परम पद प्राप्त होता है और हे नानक, गुरु ही भ्रम का निवारण करता है।। १० ।। गुरमति को प्राप्त करके सत्य की तैराकी के द्वारा संसार सागर पार कर जाओ तथा आत्मा और हृदय में उस प्रभु की पहचान कर लो। प्रभु का जाप करके यम के फँदों को काट दिया जाता है और कुलातीत निरंजन प्रभु को पा लिया जाता है।। ११ ।। संत मित्र और गुरु भाई का परस्पर सम्बन्ध गुरमति के माध्यम से ही होता है। गुरु की मति ही तृष्णा अग्नि दूर करके समाप्त कर देती है। मन और मुख से परमात्मा के नाम का जाप करो ताकि हृदय के अन्दर ही उस अदृष्ट प्रभु को देखा जा सके।। १२ ।। गुरमुख उसे जानता है और शब्द में उसका मन प्रसन्न हो उठता है इसलिये अब किसकी स्तुति और किसकी निंदा की जाए। अपने आपको पहचानों और प्रभु का सुमिरन करो जिससे संसार का मालिक प्रभु मन को भाता रहे।। १३ ।। जो खण्डों, ब्रह्माण्डों में स्थित है उसे जानो तथा गुरमुख बनकर उसे शब्द के माध्यम से बूझो और पहचानो। वह भोगने वाला प्रभु घट-घट में भोगता हुआ भी सबसे अतीत बना रहता है।। १४ ।। गुरु की मति अंगीकार करते हुए पवित्र हरि यश का उच्चारण करो और गुरु की मति के माध्यम से ऊँचा देखने का उपक्रम करो। जिसने कानों से प्रभु-नाम और उसकी वाणी सुनी है हे नानक, वह प्रभु के रंग में रंग गया है।। १५ ।। ३ ।। २० ।। मारू महला १।। काम, क्रोध, पराई निन्दा छोड़ते हुए ममता, लोभ इत्यादि त्यागकर निश्चिंत हो जाओ। भ्रम की जंजीर तोड़कर आजाद होने से हृदय के अंदर ही प्रभु के नाम रस को प्राप्त किया जाता है।। १ ।। रात के समय बिजली की चमक के साथ जैसे प्रकाश को देखा जाता है, उसी प्रकार दिन रात उस प्रभु की निरन्तर ज्योति को देखते रहना चाहिये। वह प्रभु अनहद स्वरूप अनुपम है और पूर्ण गुरु ही उसे दिखाता है।। २ ।। सच्चे गुरु से मिलने पर प्रभु स्वयं ही पार उतार देता है। व्यक्ति के हृदय रूपी आकाश के चंद्रमा में गुरु के ज्ञान रूपी सूर्य का दीपक प्रकाशित हो उठता है। उस अदृष्ट प्रभु को सब ओर देखकर उसमें लौ लगाए रखो और यह मान लो कि तीनों लोकों में सर्वत्र वह ब्रह्म ही लीन है।। ३ ।। अमृतरस प्राप्त करने से तृष्णा और भय चले जाते हैं और अपने अन्तर्मन का अहंकार गँवा कर अभय पद प्राप्त कर लिया जाता है। निर्मल शब्द को जीवन में उतारने से ऊँची से ऊँची पदवी प्राप्त होती है।। ४ ।। प्रभु का अपरम्पर नाम अदृष्ट एवं इन्द्रियातीत है।

अति रसु मीठा नामु पिआरा ॥ नानक कउ जुगि जुगि हरि जसु दीजै हरि जपीऐ अंतु न पाइआ ॥ ५ ॥ अंतरि नामु परापति हीरा ॥ हरि जपते मनु मन ते धीरा ॥ दुघट घट भउ भंजनु पाईऐ बाहुड़ि जनमि न जाइआ ॥ ६ ॥ भगति हेति गुर सबदि तरंगा ॥ हरि जसु नामु पदारथु मंगा ॥ हरि भावै गुर मेलि मिलाए हरि तारे जगतु सबाइआ ॥ ७ ॥ जिनि जपु जपिओ सतिगुर मति वा के ॥ जमकंकर कालु सेवक पग ता के ॥ ऊतम संगति गति मिति ऊतम जगु भउजलु पारि तराइआ ॥ ८ ॥ इहु भवजलु जगतु सबदि गुर तरीऐ ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि जरीऐ ॥ पंच बाण ले जम कउ मारै गगनंतरि धणखु चड़ाइआ ॥ ९ ॥ साकत नरि सबद सुरति किउ पाईऐ ॥ सबद सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥ नानक गुरमुखि मुकति पराइणु हरि पूरै भागि मिलाइआ ॥ १० ॥ निरभउ सतिगुरु है रखवाला ॥ भगति परापति गुर गोपाला ॥ धुनि अनंद अनाहदु वाजै गुर सबदि निरंजनु पाइआ ॥ ११ ॥ निरभउ सो सिरि नाही लेखा ॥ आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥ आपि अतीतु अजोनी संभउ नानक गुरमति सो पाइआ ॥ १२ ॥ अंतर की गति सतिगुरु जाणै ॥ सो निरभउ गुर सबदि पछाणै ॥ अंतरु देखि निरंतरि बूझै अनत न मनु डोलाइआ ॥ १३ ॥ निरभउ सो अभ अंतरि वसिआ ॥ अहिनिसि नामि निरंजन रसिआ ॥ नानक हरि जसु संगति पाईऐ हरि सहजे सहजि मिलाइआ ॥ १४ ॥ अंतरि बाहरि सो प्रभु जाणै ॥ रहै अलिपतु चलते घरि आणै ॥ ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अंम्रित रसु पाइआ ॥ १५ ॥ ४ ॥ २१ ॥ मारू महला १ ॥ कुदरति करनैहार अपारा ॥ कीते का नाही किहु चारा ॥ जीअ उपाइ रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥ १ ॥ हुकमु चलाइ रहिआ भरपूरे ॥ किसु नेड़ै किसु आखां दूरे ॥ गुपत प्रगट हरि घटि घटि देखहु वरतै ताकु सबाइआ ॥ २ ॥ जिस कउ मेले सुरति समाए ॥ गुर सबदी हरि नामु धिआए ॥ आनद रूप अनूप अगोचर गुर मिलिऐ भरमु जाइआ ॥ ३ ॥ मन तन धन ते नामु पिआरा ॥ अंति सखाई चलणवारा ॥

वह प्यारा नाम अत्यन्त मीठे रस वाला है। नानक को तो हे प्रभु, हर युग में हरि यश ही प्रदान कर क्योंकि प्रभु के जाप से ही पता लगता है कि उसका ओर-छोर नहीं जाना जा सकता।। ५ ।। प्रभु नाम रूपी हीरा मन मे ही प्राप्त होता है और प्रभु का सुमिरन करते हुए मन को मन से ही धैर्य प्राप्त हो जाता है। भयानक रास्ते के भय को दूर करने वाले प्रभु को पा लिया जाता है और फिर जन्मों में जाना नहीं होता।। ६ ।। भक्ति के लिये ही शब्द-गुरु की लहर की मैं याचना करता हूँ और प्रभु नाम के यश के पदार्थ को हे प्रभु, तुझसे माँगता हूँ। प्रभु को जब भाता है वह गुरु से मिला देता है और प्रभु ही सारे संसार को पार उतारने वाला है।। ७ ।। जिसने प्रभु नाम का पाठ जपा है उसे गुरु की मति प्राप्त हो गई है। यम का सेवक अर्थात काल उसके चरणों का सेवक बन जाता है। उत्तम संगति से व्यक्ति का कार्यकलाप और मर्यादा उत्तम हो जाती है और इस प्रकार इस संसार महासागर से पार उतर जाता है।। ८ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से ही इस संसार सागर को पार किया जाता है और अन्तर्मन की दुविधा मन में ही जला दी जाती है। पाँच शुभ गुणों के बाण (सत्य, सन्तोष, दया, धर्म और धैर्य) से यम को मारा जाता है और दशम् द्वार रूपी गगन में यम को मारने के लिये धनुष को कसा जाता है।। ६ ।। प्रभु से टूटे व्यक्ति शब्द और सुरति कैसे प्राप्त कर सकते हैं; सुरति और शब्द के बिना आवागमन बना ही रहता है। हे नानक, गुरमुख व्यक्ति ही मुक्ति के लिये प्रयत्नशील रहता है और पूर्ण भाग्य होने के कारण वह प्रभु से मिल कर एक हो जाता है।। १० ।। निर्भय सच्चा गुरु हमारा रक्षक है। गुरु प्रभु के माध्यम से ही भक्ति प्राप्त होती है। शब्द-गुरु को प्रभु रूप में पा लेने से आनन्द देने वाली अनहद धुन बजती रहती है।। ११ ।। जिसके सिर पर कोई लेख नहीं है वह प्रभु ही निर्भय है जो स्वयं अलेख है और जिसे उसकी रचना में ही देखा जाता है। वह अतीत, अयोनि एवं स्वयंभू है और हे नानक, गुरमति के माध्यम से उसे पाया जाता है।। १२ ।। अन्तर्मन की अवस्था को तो सच्चा गुरु ही जानता है और वह निर्भय गुरु शब्द-गुरु को पहचानता है। प्रभु को हृदय में ही देखकर वह सदैव उसे बूझता रहता है और अब मन अन्यत्र नहीं भटकता।। १३ ।। वह निर्भय प्रभु हृदय के अन्दर बस गया है और मेरा हृदय दिन रात उसके नाम निरंजन के रस में रसपूर्ण हो गया है। हे नानक, प्रभु गुणानुवाद संगति में ही पाया जाता है और प्रभु स्वाभाविक रूप से ही मिल जाता है।। १४ ।। यदि अन्दर बाहर उस प्रभु को जाना जाए तथा जीव भटकते हुए मन को अलिप्त बनाए हुए असली ठिकाने पर स्थित कर दे; उस आदि प्रभु को ही जो तीनों लोकों में सर्वत्र रमा है सबसे उपर मानता रहे तो हे नानक, जीव सत्य रूपी अमृत रस को पा लेता है।। १५ ।। ४ ।। २१ ।। मारू महला १ ।। वह सारी सृष्टि का रचयिता अपरम्पर प्रभु है और उसके बनाए जीवों का उसके सामने कोई बल नहीं चलता। उसने जीवों को उत्पन्न करके सबको रोज़ी दी है और हर एक को अपने हुकुम में ही गतिशील किया है। अपने हुकुम में सबको गतिशील करके वह भरपूर रूप से व्याप्त है इसलिये किसे उसके पास कहा जाए और किसे दूर कहा जाए। उस गुप्त और प्रकट प्रभु को प्रत्येक हृदय में देखो और यह जान लो कि वह सबमें बहुत विचारपूर्वक गतिशील है।। २ ।। जिसे वह मिला देता है उसकी सुरति में समा जाता है। ऐसा व्यक्ति शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु नाम का सुमिरन करता है। वह आनन्द रूप अनुपम और इन्द्रियों से दूर हो जाता है क्योंकि गुरु को मिलने से उसका भ्रम समाप्त हो जाता है।। ३ ।। मुझे तो मन, तन और धन से बढ़कर प्रभु नाम प्यारा है क्योंकि अंतिम समय में चलते समय वहीं सखा बनकर हमारी सहायता करने वाला है।

मोह पसार नही संगि बेली बिनु हरि गुर किनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ जिस कउ नदरि करे गुरु पूरा ॥ सबदि मिलाए गुरमति सूरा ॥ नानक गुर के चरन सरेवहु जिनि भूला मारगि पाइआ ॥ ५ ॥ संत जनां हरि धनु जसु पिआरा ॥ गुरमति पाइआ नामु तुमारा ॥ जाचिकु सेव करे दरि हरि कै हरि दरगह जसु गाइआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु मिलै त महलि बुलाए ॥ साची दरगह गति पति पाए ॥ साकत ठउर नाही हरि मंदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥ ७ ॥ सेवहु सतिगुर समुंदु अथाहा ॥ पावहु नामु रतनु धनु लाहा ॥ बिखिआ मलु जाइ अंम्रित सरि नावहु गुर सर संतोखु पाइआ ॥ ८ ॥ सतिगुर सेवहु संक न कीजै ॥ आसा माहि निरासु रहीजै ॥ संसा दूख बिनासनु सेवहु फिरि बाहुड़ि रोगु न लाइआ ॥ ९ ॥ साचे भावै तिसु वडीआए ॥ कउनु सु दूजा तिसु समझाए ॥ हरि गुर मूरति एका वरतै नानक हरि गुर भाइआ ॥ १० ॥ वाचहि पुसतक वेद पुरानां ॥ इक बहि सुनहि सुनावहि कानां ॥ अजगर कपटु कहहु किउ खुल्है बिनु सतिगुर ततु न पाइआ ॥ ११ ॥ करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥ अंतरि क्रोधु चंडालु सु हउमै ॥ पाखंड कीने जोगु न पाईऐ बिनु सतिगुर अलखु न पाइआ ॥ १२ ॥ तीरथ वरत नेम करहि उदिआना ॥ जतु सतु संजमु कथहि गिआना ॥ राम नाम बिनु किउ सुखु पाईऐ बिनु सतिगुर भरमु न जाइआ ॥ १३ ॥ निउली करम भुइअंगम भाठी ॥ रेचक कुंभक पूरक मन हाठी ॥ पाखंड धरमु प्रीति नही हरि सउ गुर सबद महा रसु पाइआ ॥ १४ ॥ कुदरति देखि रहे मनु मानिआ ॥ गुर सबदी सभु ब्रहमु पछानिआ ॥ नानक आतम रामु सबाइआ गुर सतिगुर अलखु लखाइआ ॥ १५ ॥ ५ ॥ २२ ॥

मारू सोलहे महला ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हुकमी सहजे स्रिसटि उपाई ॥ करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ आपे करे कराए आपे हुकमे रहिआ समाई हे ॥ १ ॥ माइआ मोहु जगतु गुबारा ॥ गुरमुखि बूझै को वीचारा ॥ आपे नदरि करे

मोह आदि का प्रसार संगी साथी नहीं बनता और प्रभु-गुरु के बिना भला कौन सुख पा सका है।। ४ ।। पूर्ण गुरु जिस पर कृपा दृष्टि कर देता है वही शब्द के माध्यम से उस प्रभु से मिल जाता है और गुरमति के अनुसार वही वास्तविक शूरवीर होता है। हे नानक, गुरु के चरणों की सेवा करो जिसने भूले हुए जीव को सही रास्ते पर डाल दिया है।। ५ ।। शान्त पुरुषों को प्रभु रूपी धन का यश ही प्यारा लगता है और गुरमति के माध्यम से हे प्रभु, उन्होंने तुम्हारा नाम प्राप्त कर लिया होता है। तेरे याचक प्रभु के द्वार पर सुमिरन करते हैं और प्रभु के दरबार में ही उसके यश का गायन करते हैं।। ६ ।। सच्चा गुरु यदि मिल जाए तो प्रभु अपने महल में बुला लेता है और जीव उसके सच्चे दरबार में बल और सम्मान प्राप्त कर लेता है। प्रभु से टूटे हुए लोगों को प्रभु के स्थान पर ठिकाना नहीं मिलता और जन्मते-मरते हुए वे दुख प्राप्त करते रहते हैं।। ७ ।। अथाह समुद्र जैसे सच्चे गुरु की सेवा करो और लाभ के रूप में प्रभु नाम रूपी रत्न प्राप्त कर लो। अमृत के सरोवर के माध्यम से विषयों की मैल उतर जाती है और सन्तोष प्राप्त करने के लिए हे जीव, तुम गुरु रूपी सरोवर में स्नान करो।। ८ ।। संकोच छोड़कर सच्चे गुरु की सेवा करो तथा आशाओं में लीन उनसे तटस्थ बने रहो। शंकाओं और दुखों का विनाश करने वाले प्रभु का सुमिरन करो तो फिर तुम्हें कोई भी रोग नहीं लगेगा।। ९ ।। सच्चे प्रभु को अच्छा लगे तभी उसकी महिमा का बखान होता है और उस प्रभु को कहने लायक दूसरा कोई भी नहीं है। प्रभु ही साक्षात गुरु है। वह एक ही सब ओर कार्यशील है; नानक को तो वह प्रभु-गुरु ही अच्छा लगता है।। १० ।। कई वेद और पुराणों जैसी पुस्तकें पढ़ते हैं और कई उनको कानों से सुनते सुनाते हैं परन्तु (भ्रम के) इन बहुत बड़े कपाटों (दरवाजों) का रहस्य कैसे खुल सकता है; वास्तव में सच्चे गुरु के बिना उस परम तत्व को नहीं जाना जा सकता।। ११ ।। जीव भस्म और भभूत शरीर पर लगाता है परन्तु उसके अन्तर्मन में क्रोध और अहंकार का चाण्डाल बसा ही रहता है। पाखण्ड करने से योग प्राप्त नही होता और सच्चे गुरु के बिना उस अदृष्ट प्रभु को प्राप्त नहीं किया जा सकता।। १२ ।। व्यक्ति तीर्थ व्रत और जंगलों में अनेकों संयमों का पालन करता है; वहीं वह यतीत्व, त्याग और संयम अपनाता हुआ ज्ञान की बातें करता रहता है परन्तु प्रभु नाम के बिना सुख कैसे पाया जा सकता है और सच्चे गुरु के बिना भ्रम समाप्त नहीं होता।। १३ ।। न्योली कर्म और कुण्डलिनी जगाने के उपक्रम, रेचक, कुम्भक, पूरक आदि कर्म मन के हठ के कारण किए जाते हैं। ये सभी पाखण्ड के धर्म-कर्म हैं और ये प्रभु से प्रेम पैदा नहीं करते; शब्द-गुरु से ही प्रभु-नाम के महारस को प्राप्त किया जाता है।। १४ ।। उस प्रभु को सारी सृष्टि में देखकर मन सन्तुष्ट बना रहता है और शब्द-गुरु के माध्यम से सब में परमात्मा को देखा जाता है। हे नानक, सभी आत्माओं में वह प्रभु बसता है और प्रभु रूपी गुरु ही उस अदृष्ट को अनुभव कराता है।। १५ ।। ५ ।। २२ ।।

मारू सोलहे महला ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु ने स्वाभाविक रूप से अपने हुकुम में इस सृष्टि को उत्पन्न किया है और इसे पैदा कर करके वह अपनी महिमा को स्वयं ही देखता रहता है। वह स्वयं ही सब कुछ करता कराता है और अपने हुकुम में ही अपने आपमें लीन बना रहता है।। १ ।। माया, मोह इस संसार में घोर अंधकार की तरह हैं और इस विचार को कोई बिरला गुरमुख ही

सो पाए आपे मेलि मिलाई हे ॥ २ ॥ आपे मेले दे वडिआई ॥ गुर परसादी कीमति पाई ॥ मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआई हे ॥ ३ ॥ हउमै माइआ विचे पाई ॥ मनमुख भूले पति गवाई ॥ गुरमुखि होवै सो नाइ राचै साचै रहिआ समाई हे ॥ ४ ॥ गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइआ ॥ मनसा मारि मन माहि समाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता आपे देइ बुझाई हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवे आपु गवाए ॥ मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए ॥ अंतरि पिआरु भगती राता सहजि मते बणि आई हे ॥ ६ ॥ दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ जिस नो लाए सोई बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई हे ॥ ७ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ जरा जमु तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे ॥ ८ ॥ त्रिसना अगनि जलै संसारा ॥ जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ मनमुखु ठउर न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे ॥ ९ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ सचै नामि सदा लिव लागी ॥ अंतरि नामु रविआ निहकेवलु त्रिसना सबदि बुझाई हे ॥ १० ॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ सचै सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे ॥ ११ ॥ सबदु बुझै सो मैलु चुकाए ॥ निरमल नामु वसै मनि आए ॥ सतिगुरु अपणा सद ही सेवहि हउमै विचहु जाई हे ॥ १२ ॥ गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ सतिगुर सेवे की वडिआई त्रिसना भूख गवाई हे ॥ १३ ॥ आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ गिआन विहूणा किछू न सूझै ॥ गुर की दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे ॥ १४ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ ॥ सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई हे ॥ १५ ॥ अपणी नदरि करे सो पाए ॥ सचै सबदि ताड़ी चितु लए ॥ नानक दासु कहै बेनंती भीखिआ नामु दरि पाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥ मारू महला ३ ॥ एको एकु वरतै सभु सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ एको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे ॥ १ ॥ लख चउरासीह

बूझता है। जिस पर वह स्वयं कृपा दृष्टि करता है वही उसे प्राप्त करता है और वह प्रभु स्वयं ही यह संयोग बनाता है।। २ ।। जिसे बड़प्पन प्रदान करके वह स्वयं ही मिलाता है वही गुरु की कृपा से उसके मूल्य को जान पाता है। अनेकों मनमुख व्यक्ति चीख पुकार लगाते हुए द्वैतभाव में ख्वार होते हुए भटकते रहते हैं।।३।। जीव के अन्दर ही माया और अहंकार को स्थापित किया गया है और मनमुख व्यक्ति इधर उधर भटकते हुए अपने सम्मान को गँवा लेते है। जो गुरमुख होता है वही प्रभु-नाम में लीन होता है और उस सत्य में समाया रहता है।। ४ ।। गुरु से ही प्रभु-नाम रूपी रत्न का ज्ञान प्राप्त किया जाता है और जीव इच्छाओं को समाप्त करके मन में ही शान्ति खोजकर उसमें लीन हो जाता है। वह कर्ता प्रभु ही सभी खेल खेलता रहता है और स्वयं ही यह सूझ बुद्धि प्रदान करता है।। ५ ।। सच्चे गुरु के सुमिरन से व्यक्ति अहंकार गँवाता है और प्रियतम प्रभु से मिलकर शब्द के माध्यम से सुख प्राप्त करता है। उसके अन्तर्मन में प्रेम होता है, वह भक्ति के रंग में लीन होता है और अपने स्वाभाविक रूप में स्थिर होने के लिये उसका अवसर बन जाता है।। ६ ।। दुखों का निवारण करने वाला प्रभु गुरु द्वारा ही जाना जाता है और जब उसे जान लिया जाता है तो जगत का जीवन दाता प्रभु स्वयं ही मिल जाता है। जिसे वह यह प्रेम लगाता है वही उसे जान पाता है और उसके मन का भय और भ्रम समाप्त हो जाता है।। ७ ।। गुरमुख व्यक्तियों की संगति के माध्यम से वह स्वयं ही सब कुछ देता है और गुरमुख सच्चे शब्द के माध्यम से सच्चे गुरु प्रभु का सुमिरन करता है। बुढ़ापा और यम ऐसे व्यक्ति को देख भी नहीं सकते जिसकी प्रीति सच्चे प्रभु के साथ बन जाती है।। ८ ।। यह संसार तृष्णा की अग्नि में जल रहा है और अनेकों विकारों में जलता हुआ यह मर खप रहा है। मनमुख व्यक्ति कभी भी ठिकाना नहीं पाता। ऐसा रहस्य सच्चे गुरु ने ही हमें समझाया है।। ९ ।। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे बड़े भाग्य वाले हैं और उनकी लौ सदैव सच्चे नाम में ही लगी रहती है। उनके हृदय में शुद्ध प्रभु का नाम भी बसा रहता है और शब्द के माध्यम से उनकी तृष्णा बुझ जाती है।। १० ।। कोई बिरला गुरमुख ही पहचानता है कि प्रभु का शब्द भी सच्चा है और उसकी वाणी भी सच्ची है। जो वैराग्यवान सच्चे शब्द में लीन हो जाते हैं उनका आवागमन समाप्त हो जाता है।। ११ ।। शब्द को बूझने वाला अपने हृदय की मैल नष्ट कर देता है और प्रभु का निर्मल नाम उसके मन में आ बसता है। वह अपने सच्चे गुरु को सदैव याद रखता है और उसके अन्तर्मन का अभिमान उसके मन में से समाप्त हो जाता है।। १२ ।। गुरु से जब यह जान जाता है तभी उसे प्रभु के द्वार की समझ आती है। प्रभु-नाम से विहीन व्यक्ति तो व्यर्थ ही बातें करता हुआ झगड़ता रहता है। सच्चे गुरु के सुमिरन की यह महिमा है कि हमारी तृष्णा और भूख समाप्त हो गई है।। १३ ।। जब प्रभु कृपा करके स्वयं मिलता है तभी व्यक्ति सारे रहस्य जान जाता है परन्तु ज्ञान से विहीन व्यक्ति को कुछ भी पता नहीं चलता। गुरु की कृपा जिसके मन के अन्दर है उसी ने ही शब्द में लीन होकर इसी वाणी का उच्चारण किया है।। १४ ।। जो प्रारम्भ से ही लिखा है जीव उन्हीं कर्मों को करता रहता है और प्रभु की ओर से किये हुए हुकुम को कोई नहीं मिटा सकता। सत्संगति में तो उन्हीं का निवास होता है जिनके माथे पर प्रभु की ओर से लिखा होता है।। १५ ।। जिस पर अपनी कृपा करता है वही उसे प्राप्त करता है तथा वही सच्चे शब्द के माध्यम से समाधि में ध्यान लगाता है। दास नानक तो यही विनती करता है कि उसने प्रभु के द्वार पर ही प्रभु नाम की भिक्षा प्राप्त की है।। १६ ।। १ ।। मारू महला ३ ।। वह एक प्रभु ही सबमें कार्यशील है इस तथ्य को कोई बिरला गुरमुख ही बूझता है। वह एक प्रभु ही सबमें रमण कर रहा है तथा उसके बिना अन्य कोई नहीं है।। १ ।। चौरासी लाख

जीअ उपाए ॥ गिआनी धिआनी आखि सुणाए ॥ सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे ॥ २ ॥ माइआ मोहु अंधु अंधारा ॥ हउमै मेरा पसरिआ पासारा ॥ अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु सांति न होई हे ॥ ३ ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ सचा हुकमु सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥ ४ ॥ आपे लाइ लए सो लागै ॥ गुर परसादी जम का भउ भागै ॥ अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥ ५ ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ पुरबि लिखिआ सो मेटणा न जाए ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु जाता ॥ आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ॥ हउमै मारि त्रिसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे ॥ ७ ॥ काइआ कुटंबु मोहु न बूझै ॥ गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥ ८ ॥ मनमुख धातु दूजै है लागा ॥ जनमत की न मूओ आभागा ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे ॥ ९ ॥ काइआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥ जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥ १० ॥ पंच दूत काइआ संघारहि ॥ मरि मरि जंमहि सबदु न वीचारहि ॥ अंतरि माइआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि न होई हे ॥ ११ ॥ इकि पंचा मारि सबदि है लागे ॥ सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे ॥ अंतरि साचु रवहि रंगि राते सहजि समावै सोई हे ॥ १२ ॥ गुर की चाल गुरू ते जापै ॥ पूरा सेवकु सबदि सिञापै ॥ सदा सबदु रवै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे ॥ १३ ॥ हउमै मारे सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उरि धारे ॥ एकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे होइ सु होई हे ॥ १४ ॥ बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ ॥ गुरमुखि बूझै सचि समाइआ ॥ सचा सेवि सबदि सच राते हउमै सबदे खोई हे ॥ १५ ॥ आपे गुणदाता बीचारी ॥ गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ नानक नामि समावहि साचे साचे ते पति होई हे ॥ १६ ॥ २ ॥ मारू महला ३ ॥ जगजीवनु साचा एको दाता ॥ गुर

जीव उसने उत्पन्न किए हैं और उनमें कई ज्ञानी ध्यानी भी कहे सुने जाते हैं। वह सबको ही रोजी देता है ; उस प्रभु के मूल्य को और अधिक बताना असंभव है।। २।। माया मोह का घोर अंधकार है तथा अहंकार और मैं-मेरा का विस्तार चारों और फैला है। जीव सदा दिन रात विकारों में जलते रहते हैं और गुरु के बिना इन्हें शान्ति नहीं मिल सकती।। ३ ।। वह स्वयं ही मिलाता है और स्वयं ही दूर कर देता है; वह स्वयं ही स्थापना करता है और स्वयं ही नाश भी कर देता है। उसी का हुकुम और सृष्टि का विस्तार सच्चा है अन्य कोई भी हुकुम (विधान) को लागू नहीं कर सकते।। ४ ।। जिन्हें वह स्वयं लगा लेता है वे उसमें लग जाते हैं और गुरु की कृपा से उनका यम का भय भाग जाता है उनके अन्दर सुख देने वाला शब्द विद्यमान बना रहता है और कोई गुरमुख ही इस रहस्य को जान पाता है।। ५ ।। वह स्वयं ही मिलाप का संयोग बनाता है परन्तु पहले के लिखे लेखों को मिटाया नहीं जा सकता। गुरमुख ही दिन रात भक्ति और सेवा में लीन बना रहता है।। ६ ।। सच्चे गुरु के सुमिरन में सदैव सुख को जाना जाता है और इस प्रकार सबको दान देने वाला प्रभु स्वयं आ मिलता है। उसके मिलाप के फलस्वरूप अहंकार को मारकर तृष्णा रूपी अग्नि का निवारण होता है और शब्द को समझकर सुख प्राप्त होता है।। ७ ।। यह शरीर परिवार और उसके मोह के कारण कुछ भी नहीं जान पाता परन्तु यदि यह गुरमुख बन जाए तो इसे कहा हुआ सब कुछ समझ आ जाता है। गुरमुख व्यक्ति दिन-रात प्रभु-नाम का सुमिरन करता है और अपने प्रियतम से मिलकर उसे सुख प्राप्त होता है।। ८ ।। मनमुख व्यक्ति द्वैतभाव में लगा रहता है और ऐसा भाग्यहीन व्यक्ति जन्म लेते ही मर क्यों ना गया; आवागमन में पड़े हुए ने इस जन्म को व्यर्थ ही गँवा दिया है; गुरु के बिना उसकी मुक्ति नहीं हो सकती।। ६ ।। अहंकार की मैल लगाकर इस शरीर को अशुद्ध किया है और जीव यदि इसे सौ बार भी धो ले तब भी इसकी मैल नहीं जाती। शब्द में इसे यदि अच्छी प्रकार से धो लिया जाए तो यह फिर कभी भी मैली नहीं होती।। १० ।। विकार आदि पाँचों दूत इस शरीर को नष्ट करते रहते हैं और यह शरीर शब्द का चिंतन ना करके बार-बार मरकर जन्म लेता रहता है। इसके अन्दर माया मोह का घोर अंधकार बना रहता है और सपने की तरह यह सदैव सुध बुध भूला रहता है।। ११ ।। कई ऐसे भी हैं जो पाँचों विकारों को समाप्त करके शब्द में लीन हो जाते हैं; ऐसे भाग्यशालियों को सच्चा गुरु आ मिलता है। जो अपने अन्दर सत्य में लीन बने रहते हैं वे ही अपने मूल स्वाभाविक रूप में समाहित हो जाते हैं।। १२ ।। गुरु की विधि तो गुरु से ही पता चलती है और गुरु का पूर्ण सेवक शब्द के माध्यम से गुरु और उसकी विधि को पहचान लेता है। उसके हृदय में सदैव शब्द का सुमिरन चलता रहता है और वही अपनी जीभ से सत्य का स्वाद चखता रहता है।। १३ ।। शब्द के माध्यम से वह अहंकार का निवारण करके उसे मार देता है और प्रभु के नाम को हृदय में धारण किए रहता है। उस एक प्रभु के बिना मैं तो अन्य किसी को नहीं जानता और स्वाभाविक रूप से ही जो होना है उसे होना ही है।। १४ ।। सच्चे गुरु के बिना कोई भी स्वाभाविक अवस्था प्राप्त नहीं कर सका है। गुरमुख इस बात को समझकर सत्य में लीन हो जाता है। सच्चे प्रभु का सुमिरन करके शब्द के माध्यम से उस सत्य में लीन हुआ जाता है और शब्द के माध्यम से ही अहंकार को खो दिया जाता है।। १५ ।। वह गुणदाता प्रभु स्वयं ही विचारवान है और गुरमुख को वह जीवन का खेल खेलने के लिये पक्की गोटियाँ देता है। हे नानक, जो जीव उस सच्चे प्रभु के नाम में लीन हो जाते हैं उस सच्चे प्रभु के द्वारा उनका सम्मान बना रहता है।। १६ ।। २ ।। मारू महला ३ ।। संसार को जीवन देने वाला वह एक ही सच्चा दाता है। गुरु की

सेवा ते सबदि पछाता ॥ एको अमरु एका पतिसाही जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥ १ ॥ सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता ॥ आपे आइ मिलिआ सुखदाता ॥ रसना सबदि रती गुण गावै दरि साचै पति पाई हे ॥ २ ॥ गुरमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ मनमुखि निंदकि पति गवाई ॥ नामि रते परम हंस बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥ ३ ॥ सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ सतिगुरु आखि सुणाए सूरा ॥ काइआ अंदरि अंम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे ॥ ४ ॥ पड़ि पंडितु अवरा समझाए ॥ घर जलते की खबरि न पाए ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ पड़ि थाके सांति न आई हे ॥ ५ ॥ इकि भसम लगाइ फिरहि भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे ॥ ६ ॥ इकि ग्रिह कुटंब महि सदा उदासी ॥ सबदि मुए हरि नामि निवासी ॥ अनदिनु सदा रहहि रंगि राते भै भाइ भगति चितु लाई हे ॥ ७ ॥ मनमुखु निंदा करि करि विगुता ॥ अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता ॥ जमकालु तिसु कदे न छोडै अंति गइआ पछुताई हे ॥ ८ ॥ सचै सबदि सची पति होई ॥ बिनु नावै मुकति न पावै कोई ॥ बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई हे ॥ ९ ॥ इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ इकि अहिनिसि नामि रते निरंकारी ॥ जिस नो आपि मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाई हे ॥ १० ॥ इसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ इकि मनूआ मारि मनै सिउ लूझहि ॥ साचै सबदि रते इक रंगी साचै सबदि मिलाई हे ॥ ११ ॥ आपे सिरजे दे वडिआई ॥ आपे भाणै देइ मिलाई ॥ आपे नदरि करे मनि वसिआ मेरै प्रभि इउ फुरमाई हे ॥ १२ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ मनमुख सेवि न जाणनि काचे ॥ आपे करता करि करि वेखै जिउ भावै तिउ लाई हे ॥ १३ ॥ जुगि जुगि साचा एको दाता ॥ पूरै भागि गुर सबदु पछाता ॥ सबदि मिले से विछुड़े नाही नदरी सहजि मिलाई हे ॥ १४ ॥ हउमै माइआ मैलु कमाइआ ॥ मरि मरि जंमहि दूजा भाइआ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे ॥ १५ ॥

सेवा से ही और शब्द के माध्यम से उसे पहचाना जाता है। उस एक का ही हुकुम चलता है, उस एक का ही साम्राज्य है और उसी ने युगों-युगों से सबको काम धन्धे मे लगा रखा है।। १ ।। जिसने स्वयं को पहचान लिया वहीं सेवक निर्मल है और सुखदाता प्रभु उसे स्वयं आकर मिलता है। शब्द में लीन उसकी जीभ प्रभु का गुणानुवाद करती है और उसी ने ही उस सत्य के द्वार पर सम्मान प्राप्त किया होता है।। २ ।। गुरमुख बनकर ही प्रभु नाम की महिमा प्राप्त होती है और मनमुख निंदा करते हुए अपने सम्मान को गँवाता रहता है। प्रभु नाम मे लीन होकर ही व्यक्ति ब्रह्मज्ञानी और वास्तविक रूप में वैराग्यवान बनता है तथा अपने वास्तविक स्थान प्रभु मे समाधि लगाए रहता है।। ३ ।। पूर्ण सेवक वही है जो शब्द के माध्यम से अपने अहं भाव को मार देता है। शूरवीर सच्चा गुरु इसी तथ्य को कहता और सुनाता रहता है। इस शरीर के अन्दर ही सच्चा अमृत का सरोवर है और मन प्रेम भावना से स्वाभाविक रूप में ही इस अमृत का पान करता रहता है।। ४ ।। पंडित अध्ययन करता है, दूसरों को समझाता है परन्तु अपने हृदय रूपी घर के जलते रहने की उसे खबर तक नहीं होती। सच्चे गुरु की सेवा के बिना प्रभु नाम प्राप्त नहीं होता; व्यक्ति पढ़-पढ़कर थक तो सकता है परन्तु केवल पढ़ने मात्र से उसे शान्ति प्राप्त नहीं होती।। ५ ।। कई शरीर में राख लगाकर और विशेष वेश धारण करके भटक रहे हैं। शब्द-विहीन होकर भला कौन अपने अहंकार को मार सका है। ऐसे वेशों को धारण करने वाले दिन रात जलते रहते हैं और वेशों के भ्रम मे ही भटकते रहते हैं।। ६ ।। कई घर परिवार में बने रहकर ही सदैव अलिप्त बने रहते हैं और शब्द के माध्यम से अहंकार को मारकर वे प्रभु नाम में निवास बनाए रखते हैं। वे सदैव प्रभु के रंग में रंगे रहते हैं और उसके भय और प्रेम में उसकी भक्ति में ध्यान लगाए रहते हैं।। ७ ।। मनमुख व्यक्ति निंदा कर-करके भटकता रहता है क्योंकि उसके अन्तर्मन में लोभ रूपी कुत्ता भौंकता रहता है। यम काल उसे कभी नहीं छोड़ता और अंत में वह पछताता हुआ यहाँ से जाता है।। ८ ।। सच्चे शब्द के माध्यम से सच्चा सम्मान ही प्राप्त होता है और प्रभु-नाम से विहीन होकर किसी को भी मुक्ति प्राप्त नहीं होती। प्रभु ने कुछ ऐसा प्रबन्ध किया है कि सच्चे गुरु के बिना कोई भी प्रभु नाम प्राप्त नहीं कर सकता।। ९ ।। अनेकों ही सिद्ध साधक और चिंतक हैं और अनेकों ही उस निराकार प्रभु के नाम में लीन बने रहते हैं। जिसे प्रभु स्वयं मिलाता है वही उस प्रभु को जान पाता है और भक्ति भावना के फलस्वरूप ही उसका भय समाप्त होता है।। १० ।। जीव स्नान, दान आदि करता हुआ भी उस प्रभु को नहीं जान पाता। कई ऐसे भी हैं जो मन के विकारों को मार कर मन से लड़ते रहते हैं परन्तु सदैव एक ही रंग में उस एक प्रभु की लगन लगाए रखने वाले जीव उसके सच्चे शब्द में लीन बने रहते हैं और सच्चे शब्द के माध्यम से अपने आपको उस प्रभु में मिला लेते हैं।।११।। वह स्वयं ही सृजन करके सृष्टि को बड़प्पन प्रदान करता है । अपनी ही इच्छा से वह जीवों को अपने में मिला लेता है । मेरे प्रभु ने तो यही आदेश दिया है कि वह जब स्वयं कृपा दृष्टि करता है तभी मन में आकर बसता है।। १२ ।। सच्चे सेवक वही हैं जो सच्चे गुरु की सेवा करते हैं ; मनमुख बने हुए कच्चे व्यक्ति तो सेवा भावना को जानते ही नहीं। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ कर-करके देखता रहता है और उसे जो अच्छा लगता है जीव को उसी ओर लगा लेता है।। १३ ।। युगों-युगों में वह एक ही दाता प्रभु सच्चा है जिसे पूर्ण भाग्यशाली बनकर शब्द-गुरु के माध्यम से पहचाना जाता है। जो शब्द के माध्यम से मिलते है वे बिछुड़ते नहीं और उसकी कृपा दृष्टि के कारण ही स्वाभाविक रूप से उनका मेल मिलाप होता है।।१४।। जीव अहंकार और माया की मैल की कमाई करता है तथा द्वैतभाव में पड़ा मर-मर कर जन्म लेता रहता है। हे मन, ध्यान लगाकर यह अच्छी तरह देख लो कि सच्चे गुरु का सुमिरन किए बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती।। १५ ।।

जो तिसु भावै सोई करसी ॥ आपहु होआ ना किछु होसी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई दरि साचै पति पाई हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ मारू महला ३ ॥ जो आइआ सो सभु को जासी ॥ दूजै भाइ बाधा जम फासी ॥ सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे साचि समाई हे ॥ १ ॥ आपे करता करि करि वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी अंधु कमाई हे ॥ २ ॥ मनमुख सहसा बूझ न पाई ॥ मरि मरि जंमै जनमु गवाई ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे ॥ ३ ॥ धंधै धावत मनु भइआ मनूरा ॥ फिरि होवै कंचनु भेटै गुरु पूरा ॥ आपे बखसि लए सुखु पाए पूरै सबदि मिलाई हे ॥ ४ ॥ दुरमति झूठी बुरी बुरिआरि ॥ अउगणिआरी अउगणिआरि ॥ कची मति फीका मुखि बोलै दुरमति नामु न पाई हे ॥ ५ ॥ अउगणिआरी कंत न भावै ॥ मन की जूठी जूठु कमावै ॥ पिर का साउ न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न पाई हे ॥ ६ ॥ दुरमति खोटी खोटु कमावै ॥ सीगारु करे पिर खसम न भावै ॥ गुणवंती सदा पिरु रावै सतिगुरि मेलि मिलाई हे ॥ ७ ॥ आपे हुकमु करे सभु वेखै ॥ इकना बखसि लए धुरि लेखै ॥ अनदिनु नामि रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे ॥ ८ ॥ हउमै धातु मोह रसि लाई ॥ गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ॥ आपे मेलै आपे करि वेखै बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे ॥ ९ ॥ इकि सबदु बीचारि सदा जन जागे ॥ इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ आपे करे कराए आपे होरु करणा किछू न जाई हे ॥ १० ॥ कालु मारि गुर सबदि निवारे ॥ हरि का नामु रखै उर धारे ॥ सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै नामि समाई हे ॥ ११ ॥ दूजै भाइ फिरै देवानी ॥ माइआ मोहि दुख माहि समानी ॥ बहुते भेख करै नह पाए बिनु सतिगुर सुखु न पाई हे ॥ १२ ॥ किस नो कहीऐ जा आपि कराए ॥ जितु भावै तितु राहि चलाए ॥ आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै तिवै चलाई हे ॥ १३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ आपे संजमु आपे जुगता ॥ आपे निरमलु मिहरवानु मधुसूदनु जिस दा हुकमु न मेटिआ जाई हे ॥ १४ ॥ से वडभागी जिनी एको जाता ॥

जो उसे अच्छा लगेगा वह वही करेगा। वह स्वयं ही अपने आप से उत्पन्न हुआ है और ऐसा अन्य कोई भी नहीं हो सकेगा। हे नानक, प्रभु-नाम से ही महिमा प्राप्त होती है और उस सत्य प्रभु के द्वार पर सम्मान पाया जाता है।। १६ ।। ३ ।। मारू महला ३ ।। जो भी यहाँ आया है सबको यहाँ से जाना है। द्वैतभाव मे बँधा जीव यम के फंदे में पड़ा रहता है। जिनकी रक्षा सच्चे गुरु ने की है उनका उद्धार हुआ है और वे सच्चे बनकर सत्य में लीन बने रहते हैं।। १ ।। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ कर करके देखता है और जिस पर वह कृपा दृष्टि करता है वही सेवक उसके लेखे में स्वीकार होता है। गुरुओं को ज्ञान के माध्यम से सब कुछ पता चलता रहता है परन्तु अज्ञानी अंधा होकर आचरण करता रहता है।। २ ।। मनमुख व्यक्ति भ्रम में पड़ा रहता है इसलिये उसे समझ नहीं पड़ती। वह मर-मरकर जन्मता रहता है और जीवन को गँवा देता है। नाम में लीन होकर गुरमुख सुख प्राप्त करता है और स्वाभाविक रूप से ही सत्य में लीन बना रहता है।। ३ ।। साँसारिक धन्धों में दौड़ता मन लोहे की राख की तरह हो जाता है परन्तु पूर्ण गुरु से मिलाप करने पर वह दुबारा सोना बन जाता है। जब वह क्षमा कर देता है तो जीव सुख प्राप्त करता है और शब्द के माध्यम से उस प्रभु के साथ मिल जाता है।। ४ ।। दुर्मति झूठी, बुरी और बुराईयाँ पैदा करने वाली है। यह अवगुणों को पैदा करने वाली अवगुणों से भरी होती है। अवगुणों से भरी कच्ची मति मुख से फीका बोलती है और दुर्मति कभी भी नाम प्राप्त नहीं कर सकती।। ५ ।। अवगुणों से भरी को प्रियतम नहीं मिलता और वह मन का झूठा आचरण ही करती है। प्रियतम के स्वाद को अर्थात उसकी मर्जी को यह मूर्ख नहीं जानती और गुरु के बिना इसे समझ नहीं आती।। ६ ।। दुर्मति खोटी होती है और कपट ही कमाती है। वह अनेकों प्रकार से शृंगार करती है परन्तु प्रियतम मालिक को अच्छी नहीं लगती। गुणों वाली बुद्धि सदैव प्रियतम के सुख का उपभोग करती है और सच्चे गुरु ने उसे अपने साथ मिलाकर प्रभु के साथ मिला दिया है।। ७ ।। स्वयं ही हुकुम देकर वह सब कुछ देखता रहता है। कईयों को प्रभु की ओर से लिखे लेखों के अनुसार वह स्वयं ही क्षमा कर देता है। सदैव नाम में लीन होकर सत्य पाया जाता है और वह प्रभु स्वयं ही मिलाप करवा देता है।। ८ ।। अहंकार वाली माया जीव को मोह के रस में लगाती है परन्तु गुरमुख व्यक्ति की सच्ची लौ अपने स्वाभाविक स्वरूप में स्थित होकर शान्ति में लीन बनी रहती है। वह स्वयं ही मिलाता है, उत्पन्न करके देखता है और उस सच्चे गुरु के बिना कोई भी रहस्य बूझा नहीं जाता।। ९ ।। कई सेवक शब्द का चिंतन करते हुए सदैव सावधान बने रहते हैं और कई अभागे माया के मोह में सोते रहते हैं। वह स्वयं ही सब कुछ करता कराता है तथा अन्य किसी से कुछ भी नहीं किया जाता।। १० ।। काल को मारकर शब्द-गुरु उसको दूर कर देता है और जीव प्रभु-नाम को हृदय में धारण किए रहता है। सच्चे गुरु की सेवा से सुख प्राप्त होता है और प्रभु के नाम में लीन हुआ जाता है।। ११ ।। यह सृष्टि द्वैतभाव में पागल बनी भटक रही है और इस प्रकार माया मोह के दुख में समाई रहती है। लोग अनेकों वेश धारण करते हैं परन्तु प्रभु को नहीं पाए होते है; सच्चे गुरु के बिना सुख नहीं पाया जाता।।१२ ।। जब वह स्वयं सब कुछ कराता है तो फिर भला किसको कुछ कहा जाए। जैसा उसे भाता है वह उसी मार्ग पर हमें चलाता है। वह सुखदाता प्रभु स्वयं कृपालु है और जैसा उसे अच्छा लगता है वह हमें वैसे ही चलाता है।। १३ ।। वह स्वयं ही करता और भोगता है। स्वयं ही संयम और संयम की विधि भी है। वह कृपालु प्रभु स्वयं ही निर्मल है और उसके हुकुम को मिटाया नहीं जा सकता।। १४ ।। जिन्होंने एक ही प्रभु को जान लिया है वे भाग्यशाली हैं।।

घटि घटि वसि रहिआ जगजीवनु दाता ॥ इक थै गुपतु परगटु है आपे गुरमुखि भ्रमु भउ जाई हे ॥ १५ ॥ गुरमुखि हरि जीउ एको जाता ॥ अंतरि नामु सबदि पछाता ॥ जिसु तू देहि सोई जनु पाए नानक नामि वडाई हे ॥ १६ ॥ ४ ॥ मारू महला ३ ॥ सचु सालाही गहिर गंभीरै ॥ सभु जगु है तिस ही कै चीरै ॥ सभि घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे ॥ १ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ आपे आइ वसिआ घट अंतरि तूटी जम की फासी हे ॥ २ ॥ किसु सेवी तै किसु सालाही ॥ सतिगुरु सेवी सबदि सालाही ॥ सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी हे ॥ ३ ॥ देही काची कागद मिकदारा ॥ बूंद पवै बिनसै ढहत न लागै बारा ॥ कंचन काइआ गुरमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे ॥ ४ ॥ सचा चउका सुरति की कारा ॥ हरि नामु भोजनु सचु आधारा ॥ सदा त्रिपति पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे ॥ ५ ॥ हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे ॥ हरि गुण गावहि अनदिनु जागे ॥ साचा सूखु सदा तिन अंतरि रसना हरि रसि रासी हे ॥ ६ ॥ हरि नामु चेता अवरु न पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥ पूरै गुरि सभु सचु दिखाइआ सचै नामि निवासी हे ॥ ७ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनी फिरि फिरि आइआ ॥ आपि भूला जा खसमि भुलाइआ ॥ हरि जीउ मिलै ता गुरमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी हे ॥ ८ ॥ कामि क्रोधि भरे हम अपराधी ॥ किआ मुहु लै बोलह ना हम गुण न सेवा साधी ॥ डुबदे पाथर मेलि लैहु तुम आपे साचु नामु अबिनासी हे ॥ ९ ॥ ना कोई करे न करणै जोगा ॥ आपे करहि करावहि सु होइगा ॥ आपे बखसि लैहि सुखु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥ १० ॥ इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ॥ हरि साचे सेती वणजु वापारा ॥ सचु धनु जंमिआ तोटि न आवै अंतरि नामु निवासी हे ॥ ११ ॥ हरि जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै ॥ आपे बखसि लैहि नामु दीजै ॥ गुरमुखि होवै सो पति पाए इकतु नामि निवासी हे ॥ १२ ॥ अंतरि हरि धनु समझ न होई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥ १३ ॥ अनल वाउ भरमि

वे जानते हैं कि जग-जीवन-दाता प्रभु घट-घट में बस रहा है। वे यह भी मानते हैं कि वह एक ही प्रभु स्वयं गुप्त और प्रकट दोनों रूपों में है; गुरमुख व्यक्ति का भ्रम और भय समाप्त हो जाता है।। १५ ।। गुरमुख व्यक्ति उस एक प्रभु को ही जानता है और अपने अन्तर्मन में प्रभु नाम और शब्द को पहचानता है। हे प्रभु, जिसे तू देता है वही सेवक प्राप्त करता है और हे नानक, नाम की ही वास्तविक महिमा है।। १६ ।। ४ ।। मारू महला ३ ।। मैं सत्य और गहरे तथा गम्भीर प्रभु की स्तुति करता हूँ क्योंकि सारा संसार उसी के वश में है। यह परमात्मा सभी शरीरों को दिन रात भोगता रहता है और स्वयं ही सुख में निवास बनाए रहता है।। १ ।। सच्चे न्याय के कारण वह साहिब सच्चा है और गुरु की कृपा से ही वह मन में बसता है। वह स्वयं ही हृदय में आ बसता है और यम का फँदा टूट जाता है।। २ ।। मैं कैसे तुम्हारा सुमिरन और गुणानुवाद करूं; सच्चे गुरु का सुमिरन तो गुणानुवाद करते हुए शब्द के माध्यम से होता है। सच्चे शब्द में लीन होने से सदैव उत्तम मति बन जाती है और अन्तर्मन का कमल खिल उठता है।। ३ ।। यह शरीर कागज की तरह कच्चा है और इस पर माया रूपी पानी की बूंद पड़ते ही विनष्ट हो जाता है तथा इसे गिरते हुए जरा सी देर नहीं लगती। दूसरी ओर जिसके अन्तर्मन में नाम का निवास है उस गुरमुख व्यक्ति का शरीर सोने जैसा सुन्दर माना जाता है।। ४ ।। उनका चौका भी सत्य का है और उस चौके में सुरति की लकीरें खीचीं होती हैं। प्रभु-नाम ही उनका भजन होता है और सत्य ही उनका आसरा होता है। पवित्र और पावन बने रहकर वे व्यक्ति सदैव तृप्त बने रहते हैं जिनके हृदय में प्रभु-नाम का निवास होता है।। ५ ।। जो सच्चे प्रभु में लीन हैं मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। सच्चे व्यक्ति ही प्रभु के गुण गाते हैं और सदैव सावधान बने रहते हैं। उनके अन्तर्मन में सदैव सच्चा सुख बना रहता है और उनकी जीभ प्रभु के रस से रस पूर्ण बनी रहती है।। ६ ।। मैं प्रभु-नाम ही याद रखता हूँ तथा अन्य किसी की भी पूजा नहीं करता। मैं तो केवल एक प्रभु का ही सुमिरन करता हूँ ; किसी भी दूसरे का नहीं करता। पूर्ण गुरु ने सब ओर सत्य दिखा दिया है और सच्चे नाम में ही अब मेरा निवास बन गया है।। ७ ।। योनियों में भटकता मैं बार-बार यहाँ आया हूँ; मैं स्वयं भूला हूँ अथवा उस मालिक ने मुझे भटका दिया है। जब प्रभु मिलता है तो गुरमुख ही उसको जानता है और अविनाशी शब्द को भी पहचान लेता है।। ८ ।। हम अपराधी काम क्रोध से भरे हुए क्या मुँह लेकर बात करें क्योंकि हममें ना तो गुण हैं ना हमने सेवा साधना की है। हे प्रभु, तुम्हारा सच्चा नाम ही अविनाशी हैं। तुम हम जैसे डूबते हुए पत्थरों को अपने से मिला लो।। ९ ।। कोई ना तो कुछ कर सकता है ना ही करता है। जो तू स्वयं करे कराएगा वही होगा। यदि तू स्वयं क्षमा कर दे तो जीव सुख पा सकता है और सदैव प्रभु नाम में ही उसका निवास बना रह सकता है।। १० ।। यह शरीर धरती है जिसमें अपरम्पार शब्द का बीज बो दो और सच्चे प्रभु के साथ ही लेन-देन का व्यापार करो । जब सत्य रूपी धन अन्दर स्थित हो जाता है तो उसमें फिर कभी भी कमी नहीं आती ।। ११ ।। हे प्रभु, मुझे अवगुणी को गुण दे दो । वह प्रभु अपना नाम प्रदान करके स्वयं ही क्षमा कर देता हैं। जो गुरमुख होता है वही सम्मान प्राप्त करता है और एक प्रभु नाम में ही निवास बनाए रखता है।। १२ ।। जीव के हृदय में ही हरि रूपी धन है परन्तु जीव को इस बात का पता ही नहीं है। गुरु की कृपा से कोई बिरला ही इस बात को जानता है। जो गुरमुख होता है वही इस धन को प्राप्त करता है और सदैव प्रभु-नाम में ही अपना निवास बनाए रखता है।। १३ ।। तृष्णा रूपी अग्नि को वासना रूपी हवा भ्रमों में

भुलाई ॥ माइआ मोहि सुधि न काई ॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥ १४ ॥ मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ अपणा घरु न समालहि अंति विगूते ॥ पर निंदा करहि बहु चिंता जालै दुखे दुखि निवासी हे ॥ १५ ॥ आपे करतै कार कराई ॥ आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ नानक नामि रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥ १६ ॥ ५ ॥ मारू महला ३ ॥ एको सेवी सदा थिरु साचा ॥ दूजै लागा सभु जगु काचा ॥ गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥ १ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाता ॥ आपे लाइ लए जगजीवनु दाता ॥ आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इहु मनु भीजै हे ॥ २ ॥ माइआ लहरि सबदि निवारी ॥ इहु मनु निरमलु हउमै मारी ॥ सहजे गुण गावै रंगि राता रसना रामु रवीजै हे ॥ ३ ॥ मेरी मेरी करत विहाणी ॥ मनमुखि न बूझै फिरै इआणी ॥ जमकालु घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥ ४ ॥ अंतरि लोभु करै नही बूझै ॥ सिर ऊपरि जमकालु न सूझै ॥ ऐथै कमाणा सु अगै आइआ अंतकालि किआ कीजै हे ॥ ५ ॥ जो सचि लागे तिन साची सोइ ॥ दूजै लागे मनमुखि रोइ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपे गुण महि भीजै हे ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि सदा जनु सोहै ॥ नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ॥ माइआ मोह मैलु पतंगु न लागै गुरमती हरि नामि भीजै हे ॥ ७ ॥ सभना विचि वरतै इकु सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ नाइ साचै अंम्रितु पीजै हे ॥ ८ ॥ किलबिख दूख निवारणहारा ॥ गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ॥ सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥ ९ ॥ माइआ अगनि जलै संसारे ॥ गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ अंतरि सांति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे ॥ १० ॥ इंद्र इंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ जमु न छोडै बहु करम कमावहि ॥ सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईऐ हरि हरि रसना पीजै हे ॥ ११ ॥ मनमुखि अंतरि भगति न होई ॥ गुरमुखि भगति सांति सुखु होई ॥ पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमति अंतरु भीजै हे ॥ १२ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु वीचारी ॥ त्रै गुण

भटकाए रहती है। माया-मोह के कारण जीव को किसी बात की भी होश नहीं रहती। अंधे मनमुख को कुछ भी सुझाई नहीं पड़ता; गुरमति के माध्यम से ही उसके हृदय में नाम प्रकाशित होता है।। १४ ।। मनमुख अहंकार रूपी माया में बेहोश पड़े रहते हैं। वे अपने घर को नहीं सम्भालते और अन्त में ख्वार होते हैं। पराई निंदा करते हुए वे बहुत सी चिन्ताओं में जलते रहते हैं और दुख ही दुख में उनका निवास बना रहता है।। १५ ।। उस कर्ता प्रभु ने स्वयं ही सारा कार्य किया है और स्वयं ही वह गुरमुख बनाकर अपना रहस्य समझा देता है। हे नानक, नाम में रंग कर ही मन निर्मल होता है और नाम के माध्यम से ही नाम में निवास बना रहता है।। १६ ।। ५ ।। मारू महला ३ ।। मैं एक प्रभु का ही सुमिरन करता हूँ जो सदैव स्थिर रहने वाला और सच्चा है। द्वैतभाव में लगा सारा संसार कच्चा ही है। गुरमति के माध्यम से सदैव सत्य की प्रशंसा की जाती है और सत्य में ही वास्तविक सुख प्राप्त होता है।। १ ।। तेरे गुण बहुत से हैं हे प्रभु, मैंने तो तेरे एक गुण को भी नहीं जाना है। वह जगजीवन दाता आप ही अपनी ओर लगा लेता है। वह बड़प्पन प्रदान करके स्वयं ही क्षमा कर लेता है और जीव का मन गुरु की मति में भीग उठता है।। २ ।। शब्द के माध्यम से ही माया की लहर को जब दूर किया जाता है तो अहंकार को मारकर यह मन निर्मल हो जाता है। जीव अब स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के प्रेम में लीन होकर उसके गुण गाता है और उसकी जीभ राम नाम का ही सुमिरन करती है।। ३ ।। मेरी-मेरी करते हुए यह सारी आयु व्यतीत हो गई; मनमुख इस बात को नहीं जानता और अनजान बना भटकता रहता है। यम काल तो हर घड़ी और मुहूर्त को बाँचता रहता है और इस प्रकार प्रत्येक दिन जीव की आयु घटती ही जाती है।। ४ ।। मन लोभ करता है और इसके परिणाम को नहीं जानता; सिर पर खड़ा यम काल इसे दिखाई नहीं देता। जैसा आचरण यहाँ किया गया वही आगे जाने पर सामने आता है; हे जीव, अन्तकाल में तू क्या कर सकेगा।। ५ ।। जो सत्य में लीन होते हैं उनकी शोभा भी सच्ची होती है। द्वैतभाव में लीन मनमुख रोते रहते हैं। दोनों लोकों का मालिक तो वह प्रभु ही है और वह स्वयं गुणों में ही प्रसन्न होता है।। ६ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से सेवक सदैव शोभायमान बना रहता है और प्रभु के नाम रसायन में यह मन मोहित बना रहता है। अब इसे माया मोह की जरा भी मैल नहीं लगती और गुरमति के माध्यम से यह प्रभु नाम में भीगा रहता है।। ७ ।। सब में वह एक प्रभु ही कार्यशील है और गुरु की कृपा से वह प्रकट होता है। अहंकार को मारकर सदा बना रहने वाला सुख पाया जाता है और सच्चे नाम में ही लीन होकर अमृत पान किया जाता है।। ८ ।। पापों और दुखो को दूर करने वाला प्रभु गुरमुख व्यक्ति ने शब्द के चिंतन के माध्यम से याद रखा है। वह प्रभु ही सब कुछ में कार्यशील है और गुरमुख का तन मन उसमें भीगा रहता है।। ६ ।। माया की अग्नि इस संसार में जल रही है। गुरमुख व्यक्ति शब्द के माध्यम से उस अग्नि का निवारण कर लेता है। उसके हृदय में शान्ति और सदैव सुख बना रहता है क्योंकि वह गुरमति के माध्यम से नाम प्राप्त करता रहता है।। १० ।। इन्द्रासन पर बैठा इन्द्र भी यम का भय मानता रहता है। वह अनेकों कर्म करता है परन्तु यम उसे भी छोड़ता नहीं। सच्चे गुरु से यदि मिलाप हो जाए तो मुक्ति पाई जाती है और यह जीभ प्रभु के रस का पान करती रहती है।। ११ ।। मनमुख व्यक्ति के हृदय में भक्ति नहीं होती परन्तु गुरमुख की भक्ति शान्ति और सुख देने वाली होती है। प्रभु की यह वाणी सदैव पवित्र और पावन है और गुरमति के कारण ही अन्तर्मन इसमें भीगा रहता है।। १२ ।। बेचारे ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों गुणों में बँधे हुए हैं और

बधक मुकति निरारी ॥ गुरमुखि गिआनु एको है जाता अनदिनु नामु रवीजै हे ॥ १३ ॥ बेद पड़हि हरि नामु न बूझहि ॥ माइआ कारणि पड़ि पड़ि लूझहि ॥ अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउ करि दुतरु तरीजै हे ॥ १४ ॥ बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ॥ पुंनु पापु सभु बेदि द्रिड़ाइआ गुरमुखि अंम्रितु पीजै हे ॥ १५ ॥ आपे साचा एको सोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥ १६ ॥ ६ ॥ मारू महला ३ ॥ सचै सचा तखतु रचाइआ ॥ निज घरि वसिआ तिथै मोहु न माइआ ॥ सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥ १ ॥ सचा सउदा सचु वापारा ॥ न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥ सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥ २ ॥ सचै लाए से जन लागे ॥ अंतरि सबदु मसतकि वडभागे ॥ सचै सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे ॥ ३ ॥ सचो सचा सचु सालाही ॥ एको वेखा दूजा नाही ॥ गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥ ४ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइआ ॥ सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥ ५ ॥ माइआ मोहु सभु आपे कीना ॥ गुरमुखि विरलै किन ही चीना ॥ गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी हे ॥ ६ ॥ कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई ॥ हउमै त्रिसना सबदि बुझाई ॥ गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै मारि निवारी हे ॥ ७ ॥ सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥ सचै सबदे सचि सुहावै ॥ ऐथै साचे से दरि साचे नदरी नदरि सवारी हे ॥ ८ ॥ बिनु साचे जो दूजै लाइआ ॥ माइआ मोह दुख सबाइआ ॥ बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे ॥ ९ ॥ साचा सबदु जिना मनि भाइआ ॥ पूरबि लिखिआ तिनी कमाइआ ॥ सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥ १० ॥ गुर की सेवा मीठी लागी ॥ अनदिनु सूख सहज समाधी ॥ हरि हरि करतिआ मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे ॥ ११ ॥ से जन सुखीए सतिगुर सचे लाए ॥ आपे भाणे आपि मिलाए ॥ सतिगुर राखे से जन उबरे

मुक्ति उनसे दूर ही बनी हुई है। गुरमुख का ज्ञान तो यही है कि वह केवल एक प्रभु को ही जानता है और वह हर रोज प्रभु नाम का ही सुमिरन करता है।। १३ ।। लोग वेद पढ़ते हैं परन्तु उसमें प्रभु-नाम को नहीं समझ पाते। धन के लिये पढ़ पढ़कर वे परस्पर झगड़ते रहते हैं। उन अज्ञानी अन्धों के हृदय में मैल है इसलिये वे इस भयानक सागर को कैसे पार कर सकते हैं।। १४ ।। सभी लोग वेदों के विभिन्न वादों का बखान करते हैं जिससे उनका अन्तर्मन भीगता नहीं और ना ही वे शब्द को पहचान पाते हैं। वेदों ने तो पाप पुण्य का विचार ही पक्का किया है परन्तु गुरमुख ने तो नाम रूपी अमृत को पीना होता है।। १५ ।। वह एक ही प्रभु सच्चा है और उसके बिना दूसरा कोई भी नहीं हैं। हे नानक, प्रभु नाम में लीन होकर ही मन सच्चा होता है और परम सत्य का सुमिरन करता रहता है।। १६ ।। ६ ।। मारू महला ३ ।। सच्चे प्रभु ने इस रचना को अपना सच्चा सिंहासन बनाया है और वह अपने स्वरूप में वहाँ उस पर विराजमान है जहाँ मोह माया आदि कुछ नहीं होता। वहाँ सदैव सत्य ही हृदय में बसा रहता है और गुरमुख बनकर ही वहाँ श्रेष्ठ काम किए जाते हैं।। १ ।। जब सत्य का सौदा और सत्य का व्यापार होता है तो वहाँ ना तो भ्रम होता है और ना ही द्वैतभाव का प्रसार होता है। सत्य रूपी धन को कमाने पर कभी कमी नहीं आती। कोई विचारवान ही इस तथ्य को बूझता है।। २ ।। जिन्हें सत्य में लगा दिया गया है वे ही सेवक उसमें लगे हुए हैं। जिनके हृदय में शब्द है उनके माथे पर अच्छे भाग्य लेख हैं। सत्य शब्द के माध्यम से वे सदैव प्रभु के गुण गाते रहते हैं और ऐसे विचारवान शब्द में ही लीन बने रहते हैं।। ३ ।। सत्य से उत्पन्न वह सच्चा प्रभु सत्य ही है और मैं उसी की स्तुति करता हूँ। मैं केवल एक प्रभु को ही देखता हूँ दूसरे किसी को नहीं। गुरमति के माध्यम से ऊँची से ऊँची अवस्था प्राप्त होती है और ज्ञान रूपी रत्न के द्वारा अहंकार को मार लिया जाता है।। ४ ।। शब्द के माध्यम से माया मोह को जला दिया जाता है परन्तु हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तभी सत्य मन में बसता है। उस सत्य प्रभु के सभी काम सच्चे हैं और सच्चे आचरण से ही अहंकार तथा तृष्णा दूर की जाती है।। ५ ।। माया मोह आदि सब उस प्रभु ने स्वयं ही बनाए हैं और किसी बिरले ने ही गुरमुख बनकर इस तथ्य को पहचाना है। जो गुरमुख होता है वह सत्य का आचरण करता है और उसका किया कार्य श्रेष्ठ कार्य बन जाता है।। ६ ।। जो मेरे प्रभु को अच्छा लगता है वही कार्य करने योग्य होता है और उसी से अहंकार और तृष्णा शब्द के माध्यम से समाप्त हो जाती है। गुरमति सदैव ही अन्तर्मन को शीतल करती है और अहंकार को मारकर उसका निवारण कर देती है।। ७ ।। जो सत्य में लीन बने रहते हैं उन्हें सब कुछ अच्छा लगता है। सच्चे शब्द के माध्यम से वे सत्य में शोभायमान बने रहते हैं। जो यहाँ सच्चे हैं वे उस प्रभु के द्वार पर भी सच्चे ही होते हैं और कृपालु प्रभु ने ही उन्हें अपनी कृपा दृष्टि से सँवार लिया होता है।। ८ ।। सत्य से विहीन जो द्वैतभाव में लगते हैं वे माया मोह में हर प्रकार के दुख सहते हैं। गुरु के बिना सुख और दुख का पता नहीं लगता परन्तु माया मोह का भारी दुख बना ही रहता है।। ९ ।। सच्चा शब्द जिनके मन को भा गया है उन्होंने पहले से लिखे भाग्य लेख के अनुरूप कार्य किया है। वे सत्य की ही आराधना और सुमिरन करते हैं और विचारवान बनकर सत्य में ही लीन हो जाते हैं।। १० ।। जिन्हें गुरु की सेवा मीठी लगती है वे सदैव स्वाभाविक सुख की समाधि में लीन बने रहते हैं। प्रभु-प्रभु करते हुए उनका मन निर्मल हो जाता है और उन्हें गुरु की सेवा ही प्यारी लगने लगती है। ११ ।। सच्चे गुरु ने जिन्हें सत्य की ओर उन्मुख कर दिया है वे सेवक ही इस संसार में सुखी हैं। वे स्वयं ही प्रभु को अच्छे लगते हैं और वह स्वयं ही उन्हें अपने से मिला लेता है। जिनकी रक्षा सच्चे गुरु ने की है उन्हीं सेवकों का उद्धार हुआ है;

होर माइआ मोह खुआरी हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि साचा सबदि पछाता ॥ ना तिसु कुटंबु ना तिसु माता ॥ एको एकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥ १३ ॥ हउमै मेरा दूजा भाइआ ॥ किछु न चलै धुरि खसमि लिखि पाइआ ॥ गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥ १४ ॥ जा तू देहि सदा सुखु पाए ॥ साचै सबदे साचु कमाए ॥ अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥ १५ ॥ आपे वेखै हुकमि चलाए ॥ अपणा भाणा आपि कराए ॥ नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे ॥ १६ ॥ ७ ॥ मारू महला ३ ॥ आपे आपु उपाइ उपंना ॥ सभ महि वरतै एकु परछंना ॥ सभना सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे ॥ १ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महेसु उपाए ॥ सिरि सिरि धंधै आपे लाए ॥ जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥ २ ॥ आवा गउणु है संसारा ॥ माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ थिरु साचा सालाही सद ही जिनि गुर का सबदु पछाता हे ॥ ३ ॥ इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ ॥ डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ ॥ अंम्रित फल तिन जन कउ लागे जो बोलहि अंम्रित बाता हे ॥ ४ ॥ हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ तू सभना देखहि तोलहि तोल ॥ जिउ भावै तिउ राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे ॥ ५ ॥ जा तुधु भाणा ता सची कारै लाए ॥ अवगण छोडि गुण माहि समाए ॥ गुण महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥ ६ ॥ जह देखा तह एको सोई ॥ दूजी दुरमति सबदे खोई ॥ एकसु महि प्रभु एकु समाणा अपणै रंगि सद राता हे ॥ ७ ॥ काइआ कमलु है कुमलाणा ॥ मनमुखु सबदु न बुझै इआणा ॥ गुर परसादी काइआ खोजे पाए जगजीवनु दाता हे ॥ ८ ॥ कोट गही के पाप निवारे ॥ सदा हरि जीउ राखै उर धारे ॥ जो इछे सोई फलु पाए जिउ रंगु मजीठै राता हे ॥ ९ ॥ मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ॥ गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता हे ॥ १० ॥ मनमुखु कार करे सभि दुख सबाए ॥ अंतरि सबदु नाही किउ दरि जाए ॥ गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे

बाकी अन्य तो माया मोह में भटकते रहते हैं।। १२ ।। गुरमुख बनकर सच्चे शब्द के माध्यम से उस सच्चे प्रभु को पहचाना जाता है जिसका ना कोई परिवार है और ना ही पैदा करने वाली कोई माँ है। वह प्रभु सबके अन्तर्मन में एक ही रूप में व्याप्त है और वही सभी जीवों का आसरा है।। १३ ।। अहंकार और मेरा-मेरा द्वैतभाव है अर्थात एक प्रभु को छोड़कर किसी अन्य के साथ प्यार है। इनमें से कोई भी साथ नहीं चलता। यह तथ्य प्रभु ने प्रारम्भ से ही लिखा है। सच्चे गुरु के माध्यम से सत्य का आचरण बनाया जाता है और सत्य ही दुख का निवारण करता है।। १४ ।। जब तू देता है तभी सदैव सुख पाया जाता है और सच्चे शब्द के माध्यम से सत्य का आचरण किया जाता है। जिसके अन्दर सच्चा प्रभु है और जिसका मन तन सच्चा है वह प्रभु उसी के भक्ति भण्डारों को भरता रहता है।। १५ ।। वह स्वयं ही देखता और हुक्म को कार्यशील करता है और जैसा उसे भाता है वह वैसा ही करता है। हे नानक, वे ही नाम में लीन वैराग्यवान हैं जिनका मन तन और जीभ प्रभु नाम में ही लीन होकर संवरी रहती है।। १६ ।। ७ ।। मारू महला ३ ।। उसने अपने आपको स्वयं से उत्पन्न किया है और प्रछन्न रूप से वह एक ही प्रभु सबमें व्याप्त है। जिन्होंने अपने आपको पहचान लिया हैं वे जानते हैं कि प्रभु संसार का जीवन बनकर सबकी सम्भाल करता है।। १ ।। जिसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को उत्पन्न किया है उसी ने उन्हें अपने-अपने काम में लगाया है। जिसे चाहता है उसे वह स्वयं ही मिला लेता है और ऐसे व्यक्ति ही गुरमुख हैं जिन्होंने केवल उस एक प्रभु को जाना है।। २ ।। यह संसार तो आवागमन है और सदैव माया मोह इत्यादि अनेक विकारों में ही लीन बना रहता है। जिन्होंने शब्द-गुरु को पहचान लिया है वे ही सदैव उस स्थिर प्रभु की स्तुति का गान करते रहते हैं।। ३ ।। जिन्होंने परमात्मा रूपी मूल को पाने का प्रयत्न किया है उन्होंने ही सुख प्राप्त किया है और जो डाली रूप अन्य इष्टों के पीछे लगे रहते हैं उन्होंने तो अपने जन्म को व्यर्थ ही गँवा दिया है। ऐसे व्यक्तियों को ही अमृत फल प्राप्त होते हैं जो अमृत की भाषा बोलते हैं।। ४ ।। हम क्या बोलें हमारे में तो कोई भी गुण नहीं है। तू सबको देखता है और सबके कर्मों को तौलता भी रहता है। तुझे जैसा अच्छा लगे हमें वैसे ही रहना होता है; गुरमुख बनकर ही उस एक प्रभु को जाना जाता है।। ५ ।। जब तुझे अच्छा लगता है तो तू सच्चे कामों में हमें लगाता है तथा जीव अवगुणों को छोड़कर गुणों में लीन हो जाता है। गुणों में तो वह एक निर्मल सच्चा प्रभु ही बसता है जिसे शब्द-गुरु के माध्यम से पहचाना जाता है।। ६ ।। जिधर भी देखा जाता है वह एक ही दिखाई देता है और शब्द के माध्यम से व्यक्ति द्वैतभाव और दुर्मति खो देता है। जब मन द्वैतभाव को छोड़कर एक प्रभु को ही मानने वाली अवस्था में आ गया तो उसमें एक प्रभु ही समा जाता है।। ७ ।। मूर्ख मनमुख शब्द को नहीं जानता और उसका शरीर रूपी कमल मुरझा जाता है। गुरु की कृपा से जब व्यक्ति अपने शरीर को खोजता है तो उसी में ही वह संसार के जीवन प्रभु को पा जाता है।। ८ ।। पापों के द्वारा पकड़े हुए इस शरीर रूपी किले के पापों का वह निवारण कर देता है यदि उस प्रभु को सदैव हृदय में धारण करके रखा जाए। फिर यह जीव मनोवांछित फल प्राप्त करता है और मजीठ के रंग जैसे प्रेम के रंग में रंग जाता है।। ९ ।। मनमुख व्यक्ति ज्ञान की बातें तो करता है परन्तु उसे ज्ञान नहीं होता और उस भटकते हुए को कोई भी ठिकाना नहीं मिलता। गुरमुख का ज्ञान तो यही है कि वह सदैव प्रभु की प्रशांसा करता है और हर युग में उस एक प्रभु को ही कार्यशील मानता है।। १० ।। मनमुख का किया काम हर प्रकार का दुख ही होता है। उसके हृदय में शब्द नहीं है, फिर भला वह क्यों प्रभु के द्वार पर जा सकेगा। गुरमुख के मन में सच्चा शब्द बसता है और वह सदैव सुखदाता प्रभु का सुमिरन करता रहता है

॥ ११ ॥ जह देखा तू सभनी थाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ नामो नामु धिआईऐ सदा सद इहु मनु नामे राता हे ॥ १२ ॥ नामे राता पवितु सरीरा ॥ बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा ॥ आवहि जावहि नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥ १३ ॥ पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ विणु नावै मुकति किनै न पाई ॥ नामे नामि मिलै वडिआई सहजि रहै रंगि राता हे ॥ १४ ॥ काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी ॥ बिनु सबदै चूकै नही फेरी ॥ साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥ १५ ॥ जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ साचा सबदु वसै मनि आए ॥ नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै साचु पछाता हे ॥ १६ ॥ ८ ॥ मारू सोलहे ३ ॥ आपे करता सभु जिसु करणा ॥ जीअ जंत सभि तेरी सरणा ॥ आपे गुपतु वरतै सभ अंतरि गुर कै सबदि पछाता हे ॥ १ ॥ हरि के भगति भरे भंडारा ॥ आपे बखसे सबदि वीचारा ॥ जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥ २ ॥ आपे हीरा रतनु अमोलो ॥ आपे नदरी तोले तोलो ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥ ३ ॥ जिस नो नदरि होवै धुरि तेरी ॥ मरै न जंमै चूकै फेरी ॥ साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि एको जाता हे ॥ ४ ॥ माइआ मोहि सभु जगतु उपाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु देव सबाइआ ॥ जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआन मती पछाता हे ॥ ५ ॥ पाप पुंन वरतै संसारा ॥ हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ॥ गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे ॥ ६ ॥ किरतु न कोई मेटणहारा ॥ गुर कै सबदे मोख दुआरा ॥ पूरबि लिखिआ सो फलु पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे ॥ ७ ॥ माइआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै ॥ दूजै भाइ घणा दुखु आगै ॥ मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंतकालि पछुताता हे ॥ ८ ॥ हरि कै भाणै हरि गुण गाए ॥ सभि किलबिख काटे दूख सबाए ॥ हरि निरमलु निरमल है बाणी हरि सेती मनु राता हे ॥ ९ ॥ जिस नो नदरि करे सो गुण निधि पाए ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए ॥ गुण अवगण का एको दाता गुरमुखि विरली जाता हे ॥ १० ॥ मेरा प्रभु निरमलु अति अपारा ॥ आपे मेलै गुर सबदि

।। ११ ।। जहाँ भी देखता हूँ सभी स्थानों पर तू ही विद्यमान है और पूर्ण गुरु ने मुझे यह सूझ बुद्धि प्रदान की है। सदैव उस प्रभु के नाम का ही सुमिरन यदि करते रहें तो यह मन उस नाम में ही लीन हो जाता है।। १२ ।। प्रभु नाम में लीन शरीर ही पवित्र है और प्रभु नाम से विहीन लोग तो पानी के बिना भी डूब कर नष्ट हो चुके होते हैं। वे आते-जाते हैं और प्रभु नाम को नहीं बूझते परन्तु कई ऐसे भी हैं जिन्होंने गुरमुख बनकर शब्द की पहचान कर ली होती है।। १३ ।। पूर्ण सच्चे गुरु ने हमें यह पहेली समझा दी है कि प्रभु नाम के बिना किसी को भी मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकी है। प्रभु-नाम में ही बड़प्पन मिलता है और जीव स्वाभाविक रूप से ही प्रभु प्रेम में रंगा रहता है।। १४ ।। यह शरीर रूपी नगर ध्वस्त होकर ढेर बन जाता है और शब्द के बिना इसका आवागमन समाप्त नहीं होता। जिन गुरमुखों ने उस एक प्रभु को ही जान लिया है वे सत्य का ही गुणानुवाद करते हैं और सत्य में लीन हो जाते हैं।। १५ ।। जिस पर प्रभु कृपा करता है वही उसे पाता है और सच्चा शब्द उसी के मन में आ बसता है। हे नानक, जो प्रभु-नाम में लीन हो गए हैं वे स्वयं ही निराकार बन गए हैं और प्रभु के सच्चे द्वार पर पहुँच कर उन्होंने सच की पहचान कर ली है।। १६ ।। ८ ।। मारू सोहले ३ ।। वह स्वयं ही कर्ता है जिसने सब कुछ करना होता है और हे प्रभु, सभी जीव तेरी ही शरण में है। गुप्त रूप से वह सबके अन्दर कार्यशील है और शब्द-गुरु के माध्यम से ही उसे पहचाना जाता है।। १ ।। प्रभु के भक्तों के भण्डार भरे रहते हैं और वह प्रभु स्वयं ही उन्हें शब्द का चिंतन दान स्वरूप देता है। हे प्रभु, जो तुझे अच्छा लगता है वे वैसा ही करते हैं और उनका मन सत्य के साथ लीन बना रहता है।। २ ।। वह स्वयं ही अमूल्य रत्न और हीरा है और स्वयं ही अपनी कृपादृष्टि से सबको तौल लेता है। हे प्रभु, ये सभी जीव तुम्हारी शरण में है और तुम्हारी कृपा से ही इन्होंने अपने आपको पहचान लिया है।। ३ ।। हे प्रभु, जिस पर प्रारम्भ से ही तेरी कृपा दृष्टि हो वह ना तो मरता है ना जन्मता है और उसका आवागमन समाप्त हो जाता है। वह सच्चे प्रभु के दिन-रात गुण गाता है और युगों-युगों में उस एक प्रभु को ही कार्यशील जानता है।। ४ ।। ब्रह्मा, विष्णु सभी देवता और सारा संसार हे प्रभु, माया मोह से भरकर तूने उत्पन्न किया। जो तुझे अच्छे लगते हैं वे ही प्रभु -नाम में लीन हो जाते हैं और ज्ञान वाली मति के माध्यम से तुझे पहचान जाते हैं।। ५ ।। पाप और पुण्य संसार में व्याप्त है और यहाँ हर्ष, शोक आदि भारी दुख भी विद्यमान हैं। जो गुरमुख बन जाते हैं वे ही सुख प्राप्त करते हैं और उन गुरमुखों ने ही प्रभु-नाम को पहचाना होता है।। ६ ।। कर्मों के फल को मिटाने वाला कोई नहीं है परन्तु शब्द-गुरु के माध्यम से ही मोक्ष का द्वार दिखाई पड़ता है। जिन्होंने अपने अहंकार को मारकर अपने आपको पहचान लिया है उन्होंने पहले से लिखे हुए लेखों का फल प्राप्त कर लिया है।। ७ ।। माया मोह में लीन रहने से प्रभु में ध्यान नहीं लगता और द्वैतभाव में पड़ा जीव परलोक में बहुत अधिक दुख प्राप्त करता है। मनमुख व्यक्ति अनेकों वेश धारण कर भ्रमो में भटकते रहते हैं और अंतिम समय में पछताते हैं।। ८ ।। प्रभु के चाहने पर ही जीव प्रभु के गुण गाता है और उसके सभी पाप और दुख कट जाते हैं। प्रभु निर्मल है और उसकी वाणी निर्मल है और प्रभु का गुणानुवाद करने वाले जीव का मन प्रभु में ही लीन बना रहता है।। ९ ।। जिस पर प्रभु कृपा दृष्टि करता है वही गुणों के खजाने पा जाता है; उसका अहंकार और मैं, मेरे का भाव समाप्त तो जाता है। गुणों, अवगुणों का दाता वह एक ही प्रभु है जिसे कोई बिरला गुरमुख ही जान पाता है।। १० ।। मेरा निर्मल प्रभु अपरम्पार है और शब्द-गुरु के चिंतन के फलस्वरूप वह स्वयं ही अपने से मिला लेता

वीचारा ॥ आपे बखसे सचु द्रिड़ाए मनु तनु साचै राता हे ॥ ११ ॥ मनु तनु मैला विचि जोति अपारा ॥ गुरमति बूझै करि वीचारा ॥ हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे ॥ १२ ॥ गड़ काइआ अंदरि बहु हट बाजारा ॥ तिसु विचि नामु है अति अपारा ॥ गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे ॥ १३ ॥ रतनु अमोलकु अगम अपारा ॥ कीमति कवणु करे वेचारा ॥ गुर कै सबदे तोलि तोलाए अंतरि सबदि पछाता हे ॥ १४ ॥ सिम्रिति सासत्र बहुतु बिसथारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे ॥ १५ ॥ आपे करता करे कराए ॥ सची बाणी सचु द्रिड़ाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई जुगि जुगि एको जाता हे ॥ १६ ॥ ९ ॥ मारू महला ३ ॥ सो सचु सेविहु सिरजणहारा ॥ सबदे दूख निवारणहारा ॥ अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम अथाहा हे ॥ १ ॥ आपे सचा सचु वरताए ॥ इकि जन साचै आपे लाए ॥ साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे ॥ २ ॥ धुरि भगता मेले आपि मिलाए ॥ सची भगती आपे लाए ॥ साची बाणी सदा गुण गावै इसु जनमै का लाहा हे ॥ ३ ॥ गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि ॥ एकस बिनु को अवरु न जाणहि ॥ सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा हे ॥ ४ ॥ आपे साजे स्रिसटि उपाए ॥ विरले कउ गुर सबदु बुझाए ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे जम का फाहा हे ॥ ५ ॥ भंनै घड़े सवारे साजे ॥ माइआ मोहि दूजै जंत पाजे ॥ मनमुख फिरहि सदा अंधु कमावहि जम का जेवड़ा गलि फाहा हे ॥ ६ ॥ आपे बखसे गुर सेवा लाए ॥ गुरमती नामु मंनि वसाए ॥ अनदिनु नामु धिआए साचा इसु जग महि नामो लाहा हे ॥ ७ ॥ आपे सचा सची नाई ॥ गुरमुखि देवै मंनि वसाई ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि चूका काहा हे ॥ ८ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ सदा सबदि सालाही गुणदाता लेखा कोइ न मंगै ताहा हे ॥ ९ ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा ॥ अंतु न पावहि अलख अभेवा ॥ जिन कउ नदरि करहि तू अपणी गुरमुखि

है। वह स्वयं ही क्षमा करता है, सत्य को मन में पक्का करता है और मन तन सत्य में लीन हो जाता है।। ११ ।। इस मैले तन और मन में उस अपरम्पार प्रभु की ज्योति है जिसे विचार पूर्वक गुरमति के माध्यम से समझा जाता है। अहंकार को मारकर मन सदा के लिए निर्मल हो जाता है और जीभ उस सुखदाता प्रभु का सुमिरन करती रहती है।। १२ ।। शरीर रूपी किले में बहुत सी दुकानें और बाजार हैं और उस सब में प्रभु का प्यारा नाम रखा है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही जीव उसके द्वार पर शोभा प्राप्त करता है और अपने अहंकार को मारकर उसे पहचान लेता है। १३ ।। शरीर में अमूल्य, अगम्य एवं अपार रत्न हैं जिनके मूल्य का तो कोई विचार भी नहीं कर सकता। शब्द-गुरु के माध्यम से ही इन सबको तौला जाता है और शब्द के माध्यम से ही अन्तर्मन में इनकी पहचान होती है।। १४ ।। स्मृतियों एवं शास्त्रों का विस्तार माया मोह का पसरा हुआ विस्तार ही है। मूर्ख लोग इसे पढ़ते हैं परन्तु शब्द के रहस्य को नहीं जानते ; इस रहस्य को कोई बिरला गुरमुख ही जानता है।। १५ ।। वह कर्ता स्वयं ही सब कुछ करता कराता है और सच्ची वाणी के माध्यम से सत्य को हृदय में पक्का करता है। हे नानक, प्रभु नाम के माध्यम से ही शोभा प्राप्त होती है और युगों-युगों में उस एक प्रभु को ही जाना जाता है।। १६ ।। ६ ।। मारू महला ३ ।। उस सत्य का सुमिरन करो जो सृजनहार है और शब्द के माध्यम से दुखों को दूर करने वाला है। जो अगम्य, अगोचर है उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता क्योंकि वह प्रभु स्वयं ही अथाह है और इन्द्रियों का विषय नहीं है।। १ ।। वह सच्चा प्रभु स्वयं ही सत्य को कार्यशील करता है और वह अपने सेवकों को स्वयं ही सत्य में लगा लेता है। वे सत्य का ही सुमिरन करते हैं, सत्य का ही आचरण करते हैं और सत्य के माध्यम से प्रभु नाम में लीन हो जाते हैं।। २ ।। भक्तों को गुरु से ही वह मिल जाता है और अपने आप में मिला लेता है। वह स्वयं ही उन्हें अपनी सच्ची भक्ति में लगा लेता है। इस जीवन का यही लाभ है कि भक्त सच्ची वाणी के गुण सदैव गाते रहते हैं।। ३ ।। गुरमुख व्यक्ति व्यापार करते हैं परन्तु अपने पराए को पहचान लेते हैं। वे एक प्रभु के बिना अन्य किसी को नहीं जानते। प्रभु सच्चा साहूकार है और उसके व्यापारी भी सच्चे हैं जो प्रभु-नाम की पूँजी खरीदते हैं।। ४ ।। वह स्वयं ही सृजना करके सृष्टि उत्पन्न करता है और किसी बिरले को ही शब्द-गुरु का रहस्य समझाता है। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे ही सच्चे सेवक हैं और यम का फँदा काट लेते हैं।। ५ ।। तोड़ता, बनाता, सँवारता, सजाता वह स्वयं प्रभु ही है और द्वैतभाव में पड़े जीवों को माया मोह में लगाए रहता है। मनमुख भटकते हुए सदैव अंधकार अथवा अज्ञान ही कमाते हैं और यम का रस्सा उनके गले का फँदा होता है।। ६ ।। गुरु सेवा में लगाकर स्वयं ही क्षमा कर देता है और गुरु की मति के माध्यम से नाम मन मे बसा देता है। जीव हृदय में सदैव प्रभु-नाम का सुमिरन करता है क्योंकि इस संसार में नाम ही एक बहुत बड़ा लाभ है।। ७ ।। वह स्वयं सच्चा है और उसका नाम भी सच्चा है। गुरमुख बनकर व्यक्ति उस नाम को अपने मन में बसा लेता है। जिन सेवको के हृदय में नाम बस गया है वे शोभायुक्त बने रहते हैं और उनके सिर पर पड़ा झंझट-झगड़ा समाप्त हो जाता है।। ८ ।। उस अगम्य, अगोचर का मूल्य कोई नहीं जान सका परन्तु वह गुरु की कृपा से मन में बस जाता है। शब्द के माध्यम से सदैव उस गुण दाता प्रभु का यदि गुणानुवाद किया जाए तो उस व्यक्ति से कोई भी लेखा जोखा नहीं माँगता।। ९ ।। ब्रह्मा, विष्णु, शिव सब उस प्रभु की सेवा में हैं और उस अदृष्ट एवं रहस्यातीत प्रभु की सीमा नहीं जान पाते। हे प्रभु, जिनपर तू अपनी कृपादृष्टि करता है उन्हें गुरमुख

अलखु लखाहा हे ॥ १० ॥ पूरै सतिगुरि सोझी पाई ॥ एको नामु मंनि वसाई ॥ नामु जपी तै नामु धिआई महलु पाइ गुण गाहा हे ॥ ११ ॥ सेवक सेवहि मंनि हुकमु अपारा ॥ मनमुख हुकम न जाणहि सारा ॥ हुकमे मंने हुकमे वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥ १२ ॥ गुर परसादी हुकमु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ नामे राता सदा बैरागी नामु रतनु मनि ताहा हे ॥ १३ ॥ सभ जग महि वरतै एको सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सबदु सलाहहि से जन निरमल निज घरि वासा ताहा हे ॥ १४ ॥ सदा भगत तेरी सरणाई ॥ अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ जिउ तुधु भावहि तिउ तू राखहि गुरमुखि नामु धिआहा हे ॥ १५ ॥ सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ सचे साहिब तेरै मनि भावा ॥ नानकु साचु कहै बेनंती सचु देवहु सचि समाहा हे ॥ १६ ॥ १ ॥ १० ॥ मारू महला ३ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ अनदिनु साचि नामि लिव लागी ॥ सदा सुखदाता रविआ घट अंतरि सबदि सचै ओमाहा हे ॥ १ ॥ नदरि करे ता गुरू मिलाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि ओमाहा हे ॥ २ ॥ क्रिपा करे ता मेलि मिलाए ॥ हउमै ममता सबदि जलाए ॥ सदा मुकतु रहै इक रंगी नाही किसै नालि काहा हे ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥ बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥ जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥ ४ ॥ दुखु सुखु करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ दूजा भाउ आपि वरताइआ ॥ गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥ ५ ॥ से मनमुख जो सबदु न पछाणहि ॥ गुर के भै की सार न जाणहि ॥ भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लएगा साहा हे ॥ ६ ॥ अफरिओ जमु मारिआ न जाई ॥ गुर कै सबदे नेड़ि न आई ॥ सबदु सुणे ता दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥ ७ ॥ हरि जीउ की है सभ सिरकारा ॥ एहु जमु किआ करे विचारा ॥ हुकमी बंदा हुकमु कमावै हुकमे कढदा साहा हे ॥ ८ ॥ गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥ गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा ॥ गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा हे ॥ ९ ॥ गुरमुखि जाता

बनाकर अपने अदृष्ट स्वरूप की अनुभूति करा देता है।। १० ।। पूर्ण सच्चे गुरु ने ही यह समझ प्रदान की है और एक प्रभु के नाम को मन में बसा दिया है। मैं तेरा नाम जपूं, नाम की आराधना करूं और प्रभु पति के घर में स्थान पाकर उसके गुणों का चिंतन करती रहूँ।। ११ ।। प्रभु के सेवक उसके अपार हुकुम को मानकर उसका सुमिरन करते है परन्तु मनमुख व्यक्ति हुकुम के महत्व को नहीं जानते। जो हुकुम को मानते हैं उन्हें हुकुम में ही बड़प्पन मिलता है और हुकुम में ही वे बेपरवाह बने रहते है।। १२ ।। गुरु की कृपा से जो हुकुम को पहचान लेता है वह दौड़ते हुए मन को रोककर प्रभु के साथ लीन होने की अवस्था में उसे टिका लेता है। प्रभु नाम में लीन व्यक्ति सदैव वैराग्यवान बना रहता है और उसके हृदय में प्रभु नाम का रत्न विद्यमान रहता है।। १३ ।। सारे संसार में वह एक प्रभु ही कार्यशील है और गुरु की कृपा से ही वह प्रकट दिखाई देता है। जो शब्द की स्तुति करते हैं वे सेवक निर्मल होते हैं और उन का निवास अपने वास्तविक घर परमात्मा में बना रहता है।। १४ ।। भक्त सदैव तेरी शरण में रहते हैं और हे अगम्य, अगोचर प्रभु, तेरा मूल्य नहीं आँका जा सकता। जैसा तुझे अच्छा लगता है तू जीवों को वैसे ही रखता है और गुरमुख बनकर ही प्रभु नाम का सुमिरन किया जाता है।। १५ ।। मैं सदैव तेरे गुण गाता रहूँ और हे सच्चे साहिब, तेरे मन को भाता रहूँ। नानक तो एक सच्ची विनती करता है कि हे प्रभु, मुझे सत्य प्रदान कर ताकि मैं सत्य में ही लीन हो जाऊँ।। १६ ।। १ ।। १० ।। मारू महला ३ ।। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे भाग्यशाली हैं और उनकी लौ सदैव सच्चे नाम में लगी रहती है। सदा सुख देने वाला प्रभु उनके हृदय में रमण करता रहता है और शब्द के माध्यम से सत्य का प्रेम उन्हें बना रहता है।। १ ।। कृपा दृष्टि करे तो गुरु प्रभु से मिला देता है और प्रभु नाम को मन में बसा देता है। शब्द के माध्यम से सदैव सुख देने वाला प्रभु मन में बस जाता है और मन उत्साहित बना रहता है।। २ ।। यदि वह कृपा करे तो मेल मिला देता है तथा अहंकार ममता आदि को शब्द के माध्यम से जला देता है। वह एक ही रंग में रंगा रहकर सदैव मुक्त बना रहता है और उसका किसी के साथ भी कोई विवाद नहीं होता।। ३ ।। सच्चे गुरु के सुमिरन के बिना घोर अंधकार बना रहता है और शब्द के बिना कोई भी पार नहीं उतर सकता। जो शब्द में लीन हैं वे महा वैराग्यवान है और उन्हें सच्चे शब्द के माध्यम से ही लाभ प्राप्त होता है।। ४ ।। कर्ता प्रभु ने सुख और दुख तो प्रारम्भ से ही लिख दिया होता है और उसने ही द्वैतभाव को भी फैलाया है। जो गुरमुख होता है वही अलिप्त होकर कार्यशील बना रहता है तथा मनमुख व्यक्ति का तो जरा भी भरोसा नहीं किया जा सकता।। ५ ।। मनमुख वे हैं जो शब्द को नहीं पहचानते और गुरु के भय के महत्व को नहीं जानते। उसके भय के बिना निर्भय सत्य को कैसे पाया जा सकता है और इस प्रकार यम तो सांसों को निकाल ही लेगा।। ६ ।। विकराल यम को मारा नहीं जा सकता परन्तु शब्द-गुरु के पास होने से वह पास नहीं आता। शब्द सुनकर वह दूर से ही भाग खड़ा होता है कि कहीं बेपरवाह प्रभु उसे मार ही ना दे।। ७ ।। सब ओर प्रभु की ही हुकूमत है और फिर भला यह यम क्या कर सकता है। यह यम भी तो हुकुम का ही बंदा है इसलिये यह हुकुम में ही आचरण करता है और हुकुम में ही श्वास निकाल लेता है।। ८ ।। गुरमुख जानता है कि उस सच्चे प्रभु ने ही सभी आकारों की रचना की है। गुरमुख यह भी जानता है कि फैला हुआ यह विस्तार उस प्रभु का ही है। जो गुरमुख होता है वही सत्य को बूझता है और सच्चे शब्द के माध्यम से उसे सुख मिलता है।। ६ ।। गुरमुख बनकर ही उस कर्म विधाता प्रभु को जाना जाता

करमि बिधाता ॥ जुग चारे गुर सबदि पछाता ॥ गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि समाहा हे ॥ १० ॥ गुरमुखि नामि सबदि सालाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ एक नामि जुग चारि उधारे सबदे नाम विसाहा हे ॥ ११ ॥ गुरमुखि सांति सदा सुखु पाए ॥ गुरमुखि हिरदै नामु वसाए ॥ गुरमुखि होवै सो नामु बूझै काटे दुरमति फाहा हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि उपजै साचि समावै ॥ ना मरि जंमै न जूनी पावै ॥ गुरमुखि सदा रहहि रंगि राते अनदिनु लैदे लाहा हे ॥ १३ ॥ गुरमुखि भगत सोहहि दरबारे ॥ सची बाणी सबदि सवारे ॥ अनदिनु गुण गावै दिनु राती सहज सेती घरि जाहा हे ॥ १४ ॥ सतिगुरु पूरा सबदु सुणाए ॥ अनदिनु भगति करहु लिव लाए ॥ हरि गुण गावहि सद ही निरमल निरमल गुण पातिसाहा हे ॥ १५ ॥ गुण का दाता सचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक जनु नामु सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे ॥ १६ ॥ २ ॥ ११ ॥ मारू महला ३ ॥ हरि जीउ सेविहु अगम अपारा ॥ तिस दा अंतु न पाईऐ पारावारा ॥ गुर परसादि रविआ घट अंतरि तितु घटि मति अगाहा हे ॥ १ ॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु संबाहा हे ॥ २ ॥ पूरै सतिगुरि बूझि बुझाइआ ॥ हुकमे ही सभु जगतु उपाइआ ॥ हुकमु मंने सोई सुखु पाए हुकमु सिरि साहा पातिसाहा हे ॥ ३ ॥ सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥ तिस दै सबदि निसतरै संसारा ॥ आपे करता करि करि वेखै देदा सास गिराहा हे ॥ ४ ॥ कोटि मधे किसहि बुझाए ॥ गुर कै सबदि रते रंगु लाए ॥ हरि सालाहहि सदा सुखदाता हरि बखसे भगति सलाहा हे ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ जो मरि जंमहि काचनि काचे ॥ अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु अथाहा हे ॥ ६ ॥ सतिगुरु पूरा साचु द्रिड़ाए ॥ सचै सबदि सदा गुण गाए ॥ गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे ॥ ७ ॥ सदा हदूरि गुरमुखि जापै ॥ सबदे सेवै सो जनु ध्रापै ॥ अनदिनु सेवहि सची बाणी सबदि सचै ओमाहा हे ॥ ८ ॥ अगिआनी अंधा बहु करम द्रिड़ाए ॥ मनहठि करम फिरि जोनी

है और चारों युगों में शब्द-गुरु की पहचान की जाती है। गुरमुख जन्मता-मरता नहीं और गुरमुख ही शब्द में लीन बना रहता है।। १० ।। गुरमुख नाम और शब्द के माध्यम से उस प्रभु का गुणानुवाद करता है जो अगम्य, अगोचर और बेपरवाह है। प्रभु का एक नाम ही चारों युगों में उद्धार करने वाला होता है और शब्द के माध्यम से ही प्रभु नाम का सौदा लिया जाता है।। ११ ।। शान्त बना गुरमुख सदैव सुख प्राप्त करता है और गुरमुख ही हृदय में प्रभु नाम को बसाता है। जो गुरमुख होता है वही प्रभु-नाम के रहस्य को जानता है और दुर्मति के बन्धन काट देता है।। १२ ।। गुरमुख सत्य से ही उत्पन्न होता है और सत्य में ही लीन हो जाता है। वह जन्मता-मरता नहीं और ना ही योनियों में आता है। गुरमुख व्यक्ति सदैव उस प्रभु के रंग में रंगे रहते हैं और सदैव लाभ कमाते रहते हैं।। १३ ।। प्रभु के दरबार में गुरमुख भक्त के रूप में शोभायमान रहते हैं और उनकी सच्ची वाणी शब्द के माध्यम से सँवारी हुई होती है। वे दिन रात उस प्रभु के गुण गाते हैं और स्वाभाविक रूप में ही अपने घर चले जाते हैं।। १४ ।। पूर्ण सच्चा गुरु ही शब्द सुनाता है कि हे लोगो, लौ लगाकर हर दिन उस प्रभु की भक्ति करो। जो प्रभु के गुण गाते हैं वे सदैव निर्मल बने रहते हैं ओर निर्मल गुणों के कारण वे सम्राट बने रहते हैं।। १५ ।। वह सच्चा प्रभु ही गुणों का दाता है इस बात को गुरमुख बनकर कोई बिरला ही बूझता है। दास तो हे नानक, प्रभु नाम के गुण गाने से खिला रहता है क्योंकि प्रभु नाम ही बेपरवाह है।। १६ ।। २ ।। ११ ।। मारू महला ३ ।। अगम्य, अपार प्रभु का सुमिरन करो क्योंकि उस प्रभु का रहस्य और सीमा नहीं जानी जा सकती। गुरु की कृपा से जिसके हृदय में वह बस गया है उसके हृदय में अनन्त मति उत्पन्न हो जाती है।। १ ।। सबमें वह एक प्रभु ही व्याप्त है और गुरु की कृपा से वह प्रकट होता है। संसार को जीवन देने वाला सबका पालन करता है और सबको रोज़ी पहुँचाता है।। २ ।। सच्चा गुरु स्वयं बूझकर दूसरों को समझाता है कि प्रभु के हुकुम से ही सारा संसार पैदा किया गया है। जो हुकुम मानता है वही सुख पाता है क्योंकि हुकुम ही सभी राजाओं और सम्राटों के सिर पर कार्यशील बना रहता है।। ३ ।। सच्चे सत्गुरु का शब्द अपरम्पार है और उसके शब्द के माध्यम से संसार पार उतर जाता है। वह कर्ता स्वयं ही पैदा कर करके देखता है और जीवों को श्वास और ग्रास देता रहता है।। ४ ।। करोड़ों में किसी बिरले को ही वह समझाता है और शब्द-गुरु में लीन होकर उन्हें उसके रंग में रंग देता है। ऐसे व्यक्ति सुखदाता प्रभु का सदैव गुणानुवाद करते रहते हैं और प्रभु भी उन्हें अपनी भक्ति और गुणानुवाद प्रदान कर देता है।। ५ ।। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे सेवक सच्चे हैं; जो मरते जन्मते रहते हैं वे कच्चे के कच्चे ही बने रहते हैं। वह प्रभु अगम्य, अगोचर, बेपरवाह भक्तवत्सल और अथाह हैं।। ६ ।। पूर्ण सच्चा गुरु सत्य को ही मन में पक्का करता है और सच्चे शब्द के माध्यम से सदैव गुण गाता रहता है। गुण दाता प्रभु ही सबके अन्दर कार्यशील है और सबके भाग्य में उनका अंतिम समय अंकित करता है।। ७।। गुरमुख व्यक्ति सदैव उस प्रभु के समक्ष ही बना रहता है और शब्द के सुमिरन से ही ऐसा सेवक सन्तुष्ट होता है। सदैव ऐसा सेवक सच्ची वाणी के माध्यम से सुमिरन करता है और सच्चे शब्द में उत्साहित बना रहता है।। ८ ।। अज्ञानी और अंधा व्यक्ति बहुत से कर्मकाण्डों को किए जाता है और मन के हठ से किए सभी कर्म उसे योनियों में

पाए ॥ बिखिआ कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥ ९ ॥ पूरा सतिगुरु भगति द्रिड़ाए ॥ गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ॥ मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा हे ॥ १० ॥ मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ गुर कै सबदि भगति निसतारणु ॥ मेरा प्रभु साचा सद ही साचा सिरि साहा पातिसाहा हे ॥ ११ ॥ से भगत सचे तेरै मनि भाए ॥ दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाए ॥ साची बाणी अनदिनु गावहि निरधन का नामु वेसाहा हे ॥ १२ ॥ जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ सभना सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥ १३ ॥ बिनु सबदै तुधुनो कोई न जाणी ॥ तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ आपे सबदु सदा गुरु दाता हरि नामु जपि संबाहा हे ॥ १४ ॥ तू आपे करता सिरजणहारा ॥ तेरा लिखिआ कोइ न मेटणहारा ॥ गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥ १५ ॥ भगत सचे तेरै दरवारे ॥ सबदे सेवनि भाइ पिआरे ॥ नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥ १६ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मारू महला ३ ॥ मेरै प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ ॥ कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥ आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस देही माहा हे ॥ १ ॥ वाजै पउणु तै आपि वजाए ॥ सिव सकती देही महि पाए ॥ गुर परसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥ २ ॥ अंधेरा चानणु आपे कीआ ॥ एको वरतै अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥ ३ ॥ अपणी गहण गति आपे जाणै ॥ होरु लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥ ४ ॥ देही अंदरि वसतु अपारा ॥ आपे कपट खुलावणहारा ॥ गुरमुखि सहजे अंम्रितु पीवै त्रिसना अगनि बुझाहा हे ॥ ५ ॥ सभि रस देही अंदरि पाए ॥ विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ॥ अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा हे ॥ ६ ॥ विणु चाखे सादु किसै न आइआ ॥ गुर कै सबदि अंम्रितु पीआइआ ॥ अंम्रितु पी अमरा पदु होए गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥ ७ ॥ आपु पछाणै सो सभि

डालते रहते हैं। अन्तर्मन के विष के कारण लोभ और ममता का आचरण वे करते हैं और दुर्मति के दोराहे पर खड़े रहते हैं।। ६ ।। पूर्ण सच्चा गुरु भक्ति करवाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से हरि नाम रूप को हृदय में बसाता है। मन, तन और हृदय में समाए हुए प्रभु के साथ मन भीग जाए तो तभी भक्ति और गुणानुवाद होता है।।१०।। मेरा सच्चा प्रभु काम, क्रोध आदि राक्षसों को मारने वाला है और शब्द-गुरु के माध्यम से ही भक्ति और पार उतारा होता है। मेरा सच्चा प्रभु सदैव सत्य रूप में बना रहने वाला है और सम्राटों का भी सम्राट है ।। ११ ।। जो तेरे द्वार पर कीर्ति गायन करते हैं और शब्द गुरु में शोभायमान बने रहते हैं वे भक्त ही सच्चे हैं और तेरे मन को भाते हैं। वे सदैव सच्ची वाणी का गायन करते हैं और तेरा नाम ही उन निर्धनों की साख है।। १२ ।। जिन्हें तू स्वयं मिलाकर फिर अपने से दूर नहीं करता वे शब्द-गुरु के माध्यम से सदैव तेरा गुणानुवाद करते रहते हैं। हे प्रभु, सबसे उपर एक तू ही है और शब्द के माध्यम से तेरे नाम का गुणानुवाद किया जाता है।। १३ ।। शब्द के बिना तुझे कोई नहीं जान पाता; तूने अपनी अकथनीय क्या स्वयं ही कही है। दाता गुरु के रूप में तू स्वयं ही शब्द है और स्वयं ही प्रभु नाम का जाप करके इस पूँजी को सबमें बाँटता है।। १४ ।। सृजना करने वाला कर्ता तू स्वयं ही है और तेरा लिखा कोई भी मिटाने वाला नहीं है। गुरमुखों को तू स्वयं ही अपना नाम प्रदान कर देता है और उन्हें फिर कोई भी भय और गणना का दुख नहीं होता।। १५ ।। सच्चे भक्त तेरे द्वार पर प्रेम भाव से शब्द का सुमिरन करते रहते हैं। हे नानक, ऐसे वैराग्यवान प्रभु-नाम में लीन बने रहते हैं और प्रभु-नाम में ही उनका किया हर कार्य शोभायमान बना रहता है।। १६ ।। ३ ।। १२ ।। मारू महला ३ ।। मेरे सच्चे प्रभु ने एक ऐसा खेल बनाया है कि कोई भी किसी अन्य जैसा पैदा नहीं किया। वह स्वयं ही सबमें अन्तर बनाए रखता है और उन्हें देख-देखकर प्रसन्न होता रहता है; हे जीव, सभी प्रकार के रस इस शरीर में ही विद्यमान हैं।। १ ।। शरीर में पवन का बाजा तूने ही बजाया है अर्थात् तूने ही श्वास इसमें डाले हैं; आत्मा और माया की शक्ति का मेल भी तूने ही इस शरीर में डाला है। गुरु की कृपा से यदि माया की ओर से उलट जाया जाए तो व्यक्ति को शब्द के रूप में ज्ञान रत्न प्राप्त हो जाता है अर्थात् उसे कोई भ्रम नही रहता।। २ ।। अंधकार और प्रकाश अर्थात अज्ञान और ज्ञान तूने स्वयं ही बनाया है और यह भी जनवाया है कि उस एक प्रभु के सिवा दूसरा कोई भी व्याप्त नहीं है। गुरु की कृपा से जीव अपने आपको पहचानता है, उसका हृदय कमल खिल उठता है और वह बुद्धि पूर्ण बन जाता है।। ३ ।। अपनी गहराई और अपनी गति वह स्वयं ही जानता है; अन्य लोग तो सुन-सुनकर कहते और बखान करते हैं। ज्ञानवान व्यक्ति ही गुरमुख बनकर उसको सच्चे गुणानुवाद के फलस्वरूप बूझ पाता है।। ४ ।। इस देही रूपी नगरी में अनेकों वस्तुएँ हैं परन्तु इसके कपाट (दरवाजे) खुलवाने वाला वह प्रभु स्वयं ही है। गुरमुख बनकर ही जो स्वाभाविक रूप से अमृत पान करता है उसकी तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है।। ५ ।। जीव सभी रसों को इस देही में ही जान जाता है परन्तु इस रहस्य को वह किसी बिरले को ही शब्द-गुरु के माध्यम से समझाता है । जब जीव अपने अन्तर्मन में ही खोजता है तो शब्द का गुणानुवाद करता है और फिर भला उसे बाहर जाने की क्या जरूरत रहेगी।। ६ ।। उस अमृत को चखे बिना किसी को भी उसका स्वाद नहीं आता और शब्द-गुरु के माध्यम से ही उस अमृत का पान किया जाता है। जो अमृत को पीकर अमर पद प्राप्त कर लेते हैं शब्द गुरु के माध्यम से उन्हीं को जीवन का वास्तविक रस प्राप्त होता है।। ७ ।। जो स्वयं को पहचान लेता है वह सभी

गुण जाणै ॥ गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु चुकाहा हे ॥ ८ ॥ गुर सेवा ते सभु किछु पाए ॥ हउमै मेरा आपु गवाए ॥ आपे क्रिपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा हे ॥ ९ ॥ गुर का सबदु अंम्रित है बाणी ॥ अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ हरि हरि सचा वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे ॥ १० ॥ सेवक सेवहि सबदि सलाहहि ॥ सदा रंगि राते हरि गुण गावहि ॥ आपे बखसे सबदि मिलाए परमल वासु मनि ताहा हे ॥ ११ ॥ सबदे अकथु कथे सालाहे ॥ मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे ॥ आपे गुणदाता सबदि मिलाए सबदै का रसु ताहा हे ॥ १२ ॥ मनमुखु भूला ठउर न पाए ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाए ॥ बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै दुखु ताहा हे ॥ १३ ॥ आपे आपि आपि सालाहे ॥ तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे ॥ तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे अलखु अथाहा हे ॥ १४ ॥ बिनु गुर दाते कोइ न पाए ॥ लख कोटी जे करम कमाए ॥ गुर किरपा ते घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे ॥ १५ ॥ से जन मिले धुरि आपि मिलाए ॥ साची बाणी सबदि सुहाए ॥ नानक जनु गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥ १६ ॥ ४ ॥ १३ ॥ मारू महला ३ ॥ निहचलु एकु सदा सचु सोई ॥ पूरे गुर ते सोझी होई ॥ हरि रसि भीने सदा धिआइनि गुरमति सीलु संनाहा हे ॥ १ ॥ अंदरि रंगु सदा सचिआरा ॥ गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा ॥ नउ निधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे ॥ २ ॥ रईअति राजे दुरमति दोई ॥ बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई ॥ एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे ॥ ३ ॥ आवणु जाणा रखै न कोई ॥ जंमणु मरणु तिसै ते होई ॥ गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे ॥ ४ ॥ सचु संजमु सतिगुरू दुआरै ॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा हे ॥ ५ ॥ हउमै मोहु उपजै संसारा ॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा हे ॥ ६ ॥ सचा अमरु सबदि सुहाइआ ॥ पंच सबद मिलि

गुणों को जान लेता हैं और शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु-नाम का बखान करता है। वह दिन रात प्रभु नाम में लीन बना रहता है और उसने माया मोह को दूर कर दिया होता है।। ८ ।। गुरु की सेवा में सब कुछ प्राप्त हो जाता है और व्यक्ति अहंकार और ममता भाव को स्वयं ही त्याग देता है। सुख देने वाला दाता प्रभु स्वयं ही कृपा करता है और जीव शब्द-गुरु में शोभायमान बना रहता है।। ९ ।। शब्द-गुरु अमृत है, अमृत के समान वाणी है जो सदैव प्रभु के नाम का ही बखान करती है। जिस हृदय में सच्चा प्रभु बस जाता है वही हृदय निर्मल हो जाता है।। १० ।। प्रभु के सेवक सुमिरन और शब्द के माध्यम से उसका गुणानुवाद करते हैं तथा सदैव उसके रंग में रंगे हुए प्रभु के गुण गाते रहते हैं। वह स्वयं ही बख्श कर शब्द के माध्यम से उन्हें अपने में मिला लेता है और उनके मन से चन्दन जैसी निर्मल सुगन्धि उठती रहती है।। ११ ।। शब्द के माध्यम से ही मेरें सच्चे बेपरवाह, अकथनीय प्रभु का कथन और गुणानुवाद किया जाता है। वह गुणदाता प्रभु स्वयं शब्द के माध्यम से जिसे अपने से मिला लेता है शब्द का रस उसी को प्राप्त होता है।। १२ ।। भटकता हुआ मनमुख व्यक्ति कोई ठिकाना नहीं पाता और जो प्रारम्भ से ही लिखा है उसके अनुरूप आचरण करता रहता है। विषयों में लीन होकर ऐसे व्यक्ति विषयों के जहर में ही उसे खोजते रहते हैं और उन्हें ही जन्म लेने और मरने का दुख लगा रहता है।। १३ ।। वह स्वयं ही अपना गुण गाता है और हे प्रभु, तेरे गुण तो तेरे में ही हैं। तू स्वयं सच्चा है तेरी वाणी सच्ची है और तू स्वयं ही रहस्यपूर्ण और अथाह है।। १४ ।। दाता गुरु के बिना कोई भी कुछ नहीं पा सका है बेशक लाखों करोड़ों कर्मकाण्डों को वह करता रहे। गुरु की कृपा से ही वह हृदय में आ बसा है और शब्द के माध्यम से उस प्रभु का गुणानुवाद किया जाता है।। १५ ।। जिन्हें प्रारम्भ से ही प्रभु ने मिलाया होता है वे सेवक ही उससे मिल पाते हैं और वे ही सच्ची वाणी और शब्द से शोभायमान बने रहते हैं। दास नानक तो सदैव उस सच्चे प्रभु के गुण गाता है और गुण गाता हुआ ही उस गुणों वाले प्रभु में लीन हो जाएगा।। १६ ।। ४ ।। १३ ।। मारू महला ३ ।। एक सत्य रूप प्रभु ही सदैव अटल है और इस तथ्य का पता पूर्ण गुरु से ही चलता है। पता करने वाले व्यक्ति प्रभु रस में भीगे हुए सदैव उसका सुमिरन करते हैं और गुरमति का शील आचरण उनका रक्षा कवच होता है।। १ ।। जिनके अन्दर उस सच्चे प्रभु का रंग लगा रहता है शब्द-गुरु के माध्यम से उन्हें प्रभु-नाम प्यारा लगता रहता है। नवनिधियों का भण्डार प्रभु नाम उनके हृदय में बस जाता है और उन्होंने माया का लालच छोड़ दिया होता है।। २ ।। द्वैतभाव और दुर्मति में ही राजा और प्रजा दोनों ही लीन बने हुए हैं। सच्चे गुरु का सुमिरन किए बिना वे एक भाव में अर्थात् प्रभु में स्थिर नहीं हो पाएंगे। जब वे एक प्रभु का सुमिरन करेंगे तो सदैव सुख प्राप्त करेंगे और तब उनका राज भी अटल हो जाएगा।। ३ ।। आवागमन से तो कोई नहीं बचा सकता और उसी से ही जन्म-मरण चलता रहता है। हे जीव, गुरमुख बनकर उस सच्चे प्रभु का सुमिरन करो तो उसी से ही गति और मुक्ति पा जाओगे।। ४ ।। सत्य और संयम सच्चे गुरु के द्वार पर ही प्राप्त होता है और अहंकार तथा क्रोध का निवारण शब्द के माध्यम से किया जाता है। सच्चे गुरु का सुमिरन करके सदैव सुख पाया जाता है तथा ऐसे व्यक्ति के पास ही शील और सन्तोष होता है।। ५ ।। अहंकार और मोह में ही यह संसार और इसके सम्बन्ध उत्पन्न होते हैं तथा प्रभु नाम को भुलाकर यह संसार विनष्ट हो जाता है। सच्चे गुरु के सुमिरन के बिना प्रभु नाम की प्राप्ति नहीं होती और इस संसार में प्रभु का सच्चा नाम ही वास्तविक लाभ है।। ६ ।। शब्द में लीन होकर ही प्रभु का सच्चा हुकुम सुन्दर लगता है। ऐसी अवस्था में ही पाँचों प्रकार के शब्द मिलकर आध्यात्मिक आनन्द का

वाजा वाइआ ॥ सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे ॥ ७ ॥ खिन महि हसै खिन महि रोवै ॥ दूजी दुरमति कारजु न होवै ॥ संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे ॥ ८ ॥ जीवन मुकति गुर सबदु कमाए ॥ हरि सिउ सद ही रहै समाए ॥ गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥ ९ ॥ रस कस खाए पिंडु वधाए ॥ भेख करै गुर सबदु न कमाए ॥ अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे ॥ १० ॥ बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि ॥ घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि ॥ गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे ॥ ११ ॥ घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ मनमुख अंधे सादु न पावहि ॥ अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे ॥ १२ ॥ मनमुख देही भरमु भतारो ॥ दुरमति मरै नित होइ खुआरो ॥ कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे ॥ १३ ॥ कंचन देही सबदु भतारो ॥ अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥ महला अंदरि गैर महलु पाए भाणा बुझि समाहा हे ॥ १४ ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ तिसु आगै नही किसै का चारा ॥ आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु अथाहा हे ॥ १५ ॥ जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥ नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥ १६ ॥ ५ ॥ १४ ॥ मारू महला ३ ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु आपारु ॥ गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा पाइदा ॥ १ ॥ गुरमुखि मनूआ उलटि परावै ॥ गुरमुखि बाणी नादु वजावै ॥ गुरमुखि सचि रते बैरागी निज घरि वासा पाइदा ॥ २ ॥ गुर की साखी अंम्रित भाखी ॥ सचै सबदे सचु सुभाखी ॥ सदा सचि रंगि राता मनु मेरा सचे सचि समाइदा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु निरमलु सत सरि नावै ॥ मैलु न लागै सचि समावै ॥ सचो सचु कमावै सद ही सची भगति द्रिड़ाइदा ॥ ४ ॥ गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥ गुरमुखि सचु कमावै करणी ॥ सद ही सचु कहै दिनु राती अवरा सचु कहाइदा ॥ ५ ॥ गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥ गुरमुखि सचो सचु वखाणी ॥ गुरमुखि सद सेवहि

वाद्य बजाते हैं। सच्चे नाम का कार्य ही सदैव सुख देने वाला होता है, अन्यथा शब्द के बिना भला किया हुआ काम कैसा काम हो सकता है।। ७ ।। क्षण भर में ही जीव हँसता है और क्षण भर में ही रो पड़ता है क्योंकि द्वैतभाव वाली खोटी बुद्धि के कारण उसका कोई भी काम पूरा नहीं होता। संयोग और वियोग अर्थात मिलना और बिछुड़ना उस कर्ता प्रभु ने पहले ही लिख कर डाला है इसलिये किए हुए संस्कारों का फल टलता नहीं।। ८ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से जीवन-मुक्ति प्राप्त कर ली जाती है और जीव सदैव प्रभु में ही लीन बना रहता है। गुरु की कृपा से उसे बड़प्पन मिलता है परन्तु अहंकार का रोग उसे नहीं लगता।। ९ ।। वह भक्ष्य-अभक्ष्य खाकर इस शरीर को बढ़ाता जाता है; अनेको वेश धारण करता है परन्तु शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण नहीं बनाता। ऐसे व्यक्ति के हृदय में भारी रोग और दुख बना रहता है तथा वह विषय विकारों की विष्ठा में ही पड़ा रहता है।। १० ।। लोग वेद पढ़ते हैं और वाद-विवादों की बातें करते हैं परन्तु हृदय में ही परमात्मा है शब्द के माध्यम से उसे नहीं पहचानते। जो गुरमुख होता है वही तत्व का मन्थन करता है और उसी की जीभ पर प्रभु रस रूप में विद्यमान बना रहता है।। १२ ।। मनमुख व्यक्ति के शरीर का मालिक (पति) भ्रम बना रहता है और दुर्मति में मनमुख मरता-खपता हुआ सदैव ख्वार होता रहता है। उसने काम क्रोध और द्वैतभाव में अपने मन को लगाया होता है तथा उसे सपने में भी सुख नहीं मिल पाता।। १३ ।। गुरमुख व्यक्ति के सोने जैसे शरीर का मालिक शब्द होता है और वह सदैव प्रभु प्यार के भोग का आनन्द लेता रहता है। वह अपने हृदय में ही उस स्थानातीत प्रभु को पा जाता है और उसके हुकुम को बूझता हुआ उसी में लीन हो जाता है।। १४ ।। वह देने वाला प्रभु स्वयं ही देता है और उसके सामने किसी का जोर नहीं चलता। वह स्वयं ही कृपा करके शब्द के माध्यम से अपने से मिला लेता है और उस प्रभु के शब्द की गहराई नहीं नापी जा सकती।। १५ ।। यह प्राण और शरीर सब उसी का है और वही सच्चा साहिब मेरा मालिक है। हे नानक, गुरबाणी के माध्यम से मैंने प्रभु को पा लिया है और उसी का सुमिरन करता हुआ उसी में लीन बना रहता हूँ।। १६ ।। ५ ।। १४ ।। मारू महला ३ ।। गुरमुख बनना ही नाद, वेद और चिन्तन को जानना है। गुरमुख ही अपम्पार ज्ञान और ध्यान है। जो कार्य गुरमुख करता है वह प्रभु को अच्छा लगता है और गुरमुख ही उस पूर्ण प्रभु को प्राप्त करता है।। १ ।। गुरमुख माया की ओर से मन को उलटा कर मन को रोके रहता है और गुरमुख ही वाणी का नाद बजाता रहता है। गुरमुख सत्य के माध्यम से वैराग्य मे लीन होकर अपने मूल स्थान परमात्मा में निवास प्राप्त कर लेता है।। २ ।। गुरु की शिक्षा को अमृत के समान कहा गया है और सच्चे शब्द के माध्यम से सत्य का उच्चारण किया गया है। अब मेरा मन सदैव सत्य के रंग में रंगा रहता है और सत्य के माध्यम से उस परम सत्य में लीन हो गया है।। ३ ।। गुरमुख निर्मल मन से सत्य के सरोवर में स्नान करता है; उसे मैल नहीं लगती और वह सत्य में लीन हो जाता है। वह सदैव सत्य का आचरण ही करता है और सच्ची भक्ति ही लोगों के हृदय में पक्की करता है।। ४ ।। गुरमुख के वचनों में सत्य और आँखों में भी सत्य होता है अर्थात वह सत्य ही बोलता और सत्य ही देखता है। गुरमुख व्यक्ति ही सत्य के अनुरूप आचरण बनाए रखता है। वह सदैव स्वयं भी सत्य बोलता है और दूसरों को भी सत्य बुलवाता है।। ५ ।। गुरमुख की वाणी सच्ची और उत्तम होती है और गुरमुख शुद्ध सत्य का ही बखान करता है। गुरमुख सदैव

सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥ ३ ॥ गुरमुखि होवै सु सोझी पाए ॥ हउमै माइआ भरमु गवाए ॥ गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरि गुण गाइदा ॥ ७ ॥ गुरमुखि सचु संजमु करणी सारु ॥ गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ भाइ भगति सदा रंगि राता आपु गवाइ समाइदा ॥ ८ ॥ गुरमुखि होवै मनु खोजि सुणाए ॥ सचै नामि सदा लिव लाए ॥ जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥ ९ ॥ जा तिसु भावै सतिगुरू मिलाए ॥ जा तिसु भावै ता मंनि वसाए ॥ आपणै भाणै सदा रंगि राता भाणै मंनि वसाइदा ॥ १० ॥ मनहठि करम करे सो छीजै ॥ बहुते भेख करे नही भीजै ॥ बिखिआ राते दुखु कमावहि दुखे दुखि समाइदा ॥ ११ ॥ गुरमुखि होवै सो सुखु कमाए ॥ मरण जीवण की सोझी पाए ॥ मरणु जीवणु जो सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥ १२ ॥ गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥ आवण जाणा सबदु पछाणु ॥ मरै न जंमै ना दुखु पाए मन ही मनहि समाइदा ॥ १३ ॥ से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ ॥ हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥ १४ ॥ आपे करे कराए आपे ॥ आपे वेखै थापि उथापि ॥ गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥ १५ ॥ गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ नानक नामि रते वीचारी नामे नामि समाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ १५ ॥ मारू महला ३ ॥ आपे स्रिसटि हुकमि सभ साजी ॥ आपे थापि उथापि निवाजी ॥ आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥ १ ॥ काइआ कोटु है आकारा ॥ माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥ २ ॥ काइआ कंचन कोटु अपारा ॥ जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ गुरमुखि गावै सदा गुण साचे मिलि प्रीतम सुखु पाइदा ॥ ३ ॥ काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥ ४ ॥ सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ सबदे बूझै आपु सवारे ॥ आपे करे कराए करता आपे मंनि वसाइदा ॥ ५ ॥ निरमल भगति है निराली ॥ मनु तनु धोवहि

सत्य का ही सुमिरन करता है और गुरमुख ही सच्चा उपदेश देता है।। ६ ।। जो गुरमुख होता है वही सूझ बुद्धि प्राप्त करता है तथा अहंकार माया और भ्रम को त्याग देता है। गुरु की ओर जाने वाली सीढ़ी ऊँची और उत्तम है क्योंकि गुरु उस सच्चे प्रभु के द्वार पर प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है।। ७ ।। गुरमुख सत्य और संयम वाला श्रेष्ट आचरण करता है और गुरमुख ही मोक्ष का द्वार भी प्राप्त करता है। वह प्रेम और भक्ति के रंग में अपने अहंकार भाव को मिटाकर सदैव रंगा रहकर उस प्रभु में लीन बना रहता है।। ८ ।। गुरमुख होकर व्यक्ति मन को खोजकर उसे समझाता है और उस प्रभु के सच्चे नाम में सदैव अपनी लौ लगाए रहता है। जो प्रभु को भाता है वह वही करेगा और वही उसके मन को अच्छा लगने वाला है।। ६ ।। यदि उसे भा जाए तो सच्चे गुरु से मिला देता है और यदि उसको अच्छा लगे तो अपना नाम मन में बसा देता है। अपने हुकुम में ही वह सदैव रंगा रहता है और जीव उसके हुकुम को मानकर ही उसे हृदय में बसाता है।। १० ।। जो मन के हठ के कारण कर्म करता हे वह नष्ट हो जाता है; अनेकों प्रकार के वेश धारण करने पर भी उसका मन भीगता नहीं। ऐसे व्यक्ति विषयों में लीन होकर दुख पैदा करने वाला आचरण करते रहते हैं और दुख ही दुख में पड़े रहते है।। ११ ।। गुरमुख होकर व्यक्ति सुख पूर्ण आचरण करता है तथा जीने-मरने के रहस्य को जान जाता है। जो जीवन और मरण को समान भाव से जानता है वही मेरे प्रभु के मन को भाता है।। १२ ।। जो गुरमुख होकर मरते हैं वे प्रभु के सामने स्वीकृत होते हैं और उनका जन्म लेना और मरना प्रभु के हुकुम में ही जाना जाता है। वे मरते-जन्मते भी दुख नहीं प्राप्त करते और उनका मन अर्थात उनकी ज्योति उस प्रभु की ज्योति में लीन बनी रहती है।। १३ ।। जिन्होंने अन्तर्मन से अहंकार और मोह समाप्त कर सच्चा गुरु प्राप्त कर लिया है वे भाग्यशाली हैं। उनका मन निर्मल होता है उन्हें फिर मैल नहीं लगती और वे सच्चे प्रभु के द्वार पर सम्मान प्राप्त करते हैं।। १४ ।। वह प्रभु स्वयं ही करता कराता है और स्वयं ही स्थापित करके उखाड़ भी फेंकता है। गुरमुख की सेवा ही मेरे प्रभु को अच्छी लगती है और वह सत्य को सुनकर ही उसे स्वीकार करता है।। १५ ।। गुरमुख सत्य पर ही चलता है और निर्मल बना गुरमुख विषयों की मैल अपने से लगने नहीं देता। हे नानक, गुरमुख नाम में रंगा हुआ विचारवान है और वह नाम में ही लीन हो जाता है।। १६ ।। १ ।। १५ ।। मारू महला ३ ।। उसने स्वयं ही सृष्टि की हुकुम के माध्यम से सृजना की है, स्वयं ही उसे बनाया है, स्वयं ही उसको नष्ट किया है और स्वयं ही उस पर कृपा की है। वह सच्चा प्रभु स्वयं ही न्याय करता है और सच्चे लोगों को सत्य के माध्यम से अपने से मिला लेता है।। १ ।। यह शरीर एक किले का आकार है इसमें माया और मोह का विस्तार बना है। शब्द के बिना यह राख की ढेरी है और यह राख में ही मिला दी जाती है।। २ ।। यह शरीर सोने का एक महान किला है जिसमें अपरम्पार शब्द रमण कर रहा है। गुरमुख इसमें सदैव सच्चे प्रभु के गुण गाता है और उस प्रियतम से मिलकर सुख प्राप्त करता रहता है।। ३।। यह शरीर प्रभु का घर है जिसे प्रभु स्वयं सुन्दर बनाता है; इस शरीर में ही प्रभु निवास करता है। इस शरीर रूपी किले में ही शब्द गुरु के माध्यम से व्यापारी भक्त व्यापार करते हैं और उन पर कृपा दृष्टि करके वह उन्हें अपने से मिला लेता है।। ४ ।। जिसने क्रोध त्याग दिया वही पवित्र है, वही शब्द के माध्यम से सब कुछ जान जाता है और वही अपने आप को सुन्दर बना लेता है। वह कर्ता प्रभु ही सब कुछ करने कराने वाला है और वह स्वयं ही अपने आपको जीव के मन में बसाता है।। ५ ।। पवित्र भक्ति निराली है जिसमें शब्द के चिंतन के माध्यम से तन और मन को धोया जाता

सबदि वीचारी ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता करि किरपा भगति कराइदा ॥ ६ ॥ इसु मन मंदर महि मनूआ धावै ॥ सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु कराइदा ॥ ७ ॥ आपि अपरंपरु आपि वीचारी ॥ आपे मेले करणी सारी ॥ किआ को कार करे वेचारा आपे बखसि मिलाइदा ॥ ८ ॥ आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ सचै सबदि महाबल सूरा ॥ आपे मेले दे वडिआई सचे सिउ चितु लाइदा ॥ ९ ॥ घर ही अंदरि साचा सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा ॥ १० ॥ दिसंतरु भवै अंतरु नही भाले ॥ माइआ मोहि बधा जमकाले ॥ जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ भरमाइदा ॥ ११ ॥ जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥ जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥ गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइआ सचे सचि समाइदा ॥ १२ ॥ काम करोधु सबल संसारा ॥ बहु करम कमावहि सभु दुख का पसारा ॥ सतिगुर सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ पउणु पाणी है बैसंतरु ॥ माइआ मोहु वरतै सभ अंतरि ॥ जिनि कीते जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा ॥ १४ ॥ इकि माइआ मोहि गरबि विआपे ॥ हउमै होइ रहे है आपे ॥ जमकालै की खबरि न पाई अंति गइआ पछुताइदा ॥ १५ ॥ जिनि उपाए सो बिधि जाणै ॥ गुरमुखि देवै सबदु पछाणै ॥ नानक दासु कहै बेनंती सचि नामि चितु लाइदा ॥ १६ ॥ २ ॥ १६ ॥ मारू महला ३ ॥ आदि जुगादि दइआपति दाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ तुधुनो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा ॥ १ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा ॥ २ ॥ है भी साचा होसी सोई ॥ आपे साजे अवरु न कोई ॥ सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥ ३ ॥ अगम अगोचरु अलख अपारा ॥ कोइ न जाणै तेरा परवारा ॥ आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा ॥ ४ ॥ पाताल पुरीआ लोअ

है। जीव इसमें सदैव प्रभु के रंग में रंगा रहता है और प्रभु उस पर कृपा करके उससे भक्ति करवाता है।। ६ ।। इस शरीर में यह मन इधर-उधर भटकता है और सुख को पुआल की तरह छोड़कर बहुत दुख पाता है। सच्चे गुरु से मिलाप के बिना जीव ठिकाना नहीं पाता और वह प्रभु स्वयं ही यह खेल चलाता रहता है।। ७ ।। वह प्रभु स्वयं ही अपरम्पार और विचारवान है और वह स्वयं ही अच्छे कर्मो का अवसर बनाता रहता है। बेचारा व्यक्ति भला क्या कर सकता है ; वह प्रभु स्वयं ही क्षमा करते हुए जीव को अपने से मिला लेता है।।८।। प्रभु स्वयं ही सच्चे गुरु से मिलाप करवाता है और सत्य शब्द के माध्यम से महाबली और शूरवीर बना रहता है। बड़प्पन प्रदान करके वह स्वयं ही मिला लेता है और जीव का हृदय सत्य मे लगा लेता है।। ६ ।। वह सच्चा प्रभु हृदय में ही है इस तथ्य को गुरमुख बनकर कोई बिरला ही बूझता है। गुरमुख के हृदय में ही प्रभु-नाम का भण्डार बसा रहता है और वह अपनी जीभ से प्रभु नाम का सुमिरन करता रहता है।। १० ।। देशान्तरों में तो वह भटकता रहता है परन्तु यह जीव अन्तर्मन में नहीं खोजता। माया और मोह में बँधा यह जीव यमकाल के हाथ में आ जाता है। यम का फँदा कभी नहीं टूटता और द्वैतभाव में जीव भटकता रहता है।। ११ ।। जप, तप, संयम आदि तब तक कुछ भी नहीं है जब तक शब्द को आचरण में ना उतारा जाए। शब्द-गुरु से मिलाप होने पर ही सत्य पाया जाता है और सत्य में लीन हुआ जाता है।। १२ ।। संसार में माया मोह बलवान है इन्हीं के वश में पड़ा जीव अनेकों कर्म करता है परन्तु वे सब दुख का विस्तार ही बन जाते हैं। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वही सुख पाते हैं क्योंकि सच्चा गुरु सच्चे शब्द के माध्यम से उन्हें अपने से मिला लेता है।। १३ ।। पवन, पानी, अग्नि माया से बने शरीर में सबके अन्दर माया मोह कार्यशील बना है। जिसने ये सब बनाए हैं जब जीव उसे पहचान जाता है तो माया मोह समाप्त हो जाते हैं।। १४ ।। कईयों पर माया मोह और अहंकार का प्रभाव बना रहता है और वे स्वयं ही अहंकार का रूप बन जाते हैं। यम काल की उन्हें कभी याद नहीं आती और अन्त में यहाँ से जाता हुआ जीव पछताता है।। १५ ।। जिसने पैदा किया है वही जीवन की मुक्ति जानता है और गुरमुख बने व्यक्ति को शब्द की पहचान के बाद प्रभु वह विधि बताता है। दास नानक तो एक विनती करता है कि हे प्रभु, सच्चे नाम में हमारा चित्त लगाए रखो।। १६ ।। २ ।। १६ ।। मारू महला ३ ।। आदि, युगादि में बने रहने वाले दयापति दाता प्रभु को पूर्ण गुरु के उपदेश के माध्यम से पहचाना जाता है। जो तेरा सुमिरन करते हैं वे तुझ में ही समा जाते हैं और तू स्वयं ही उनसे मेल मिलाता रहता है।। १ ।। हे अगम्य, अगोचर प्रभु, तेरी कीमत को हमने नही जाना; ये सभी जीव जन्तु तेरी ही शरण में हैं। तुझे जैसा अच्छा लगे तू उसी प्रकार इन्हें चलाता है और तू स्वयं ही इन्हें सीधे रास्ते पर डालता है।। २ ।। वह प्रभु है भी और सत्य रूप में वह बना भी रहेगा; वह स्वयं ही पैदा करता है अन्य कोई नहीं। सब की खोजखबर वह सुखदाता प्रभु रखता है और स्वयं ही सबको रोजी पहुँचाता है।। ३ ।। हे अगम्य, अगोचर और अदृष्ट अपरम्पार प्रभु, तेरे ओर-छोर को कोई नहीं जानता। तू अपने आप को स्वयं पहचानता है और तुझे गुरमति के माध्यम से ही समझा जाता है।। ४ ।। पाताल, पुरियाँ, लोक और सभी प्रकार के

आकारा ॥ तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥ ५ ॥ हुकमै बूझै सु हुकमु सलाहे ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा ॥ ६ ॥ अनदिनु आरजा छिजदी जाए ॥ रैणि दिनसु दुइ साखी आए ॥ मनमुखु अंधु न चेतै मूड़ा सिर ऊपरि कालु रूआइदा ॥ ७ ॥ मनु तनु सीतलु गुर चरणी लागा ॥ अंतरि भरमु गइआ भउ भागा ॥ सदा अनंदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥ ८ ॥ जिनि तू जाता करम बिधाता ॥ पूरै भागि गुर सबदि पछाता ॥ जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥ ९ ॥ मनु कठोरु दूजै भाइ लागा ॥ भरमे भूला फिरै अभागा ॥ करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा ॥ १० ॥ लख चउरासीह आपि उपाए ॥ मानस जनमि गुर भगति द्रिड़ाए ॥ बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा विचि फिरि पाइदा ॥ ११ ॥ करमु होवै गुरु भगति द्रिड़ाए ॥ विणु करमा किउ पाइआ जाए ॥ आपे करे कराए करता जिउ भावै तिवै चलाइदा ॥ १२ ॥ सिम्रिति सासत अंतु न जाणै ॥ मूरखु अंधा ततु न पछाणै ॥ आपे करे कराए करता आपे भरमि भुलाइदा ॥ १३ ॥ सभु किछु आपे आपि कराए ॥ आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि बुझाइदा ॥ १४ ॥ सचा साहिबु गहिर गंभीरा ॥ सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि मंनि वसाइदा ॥ १५ ॥ आपि निरालमु होर धंधै लोई ॥ गुर परसादी बूझै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमती मेलि मिलाइदा ॥ १६ ॥ ३ ॥ १७ ॥ मारू महला ३ ॥ जुग छतीह कीओ गुबारा ॥ तू आपे जाणहि सिरजणहारा ॥ होर किआ को कहै कि आखि वखाणै तू आपे कीमति पाइदा ॥ १ ॥ ओअंकारि सभ स्रिसटि उपाई ॥ सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥ आपे वेक करे सभि साचा आपे भंनि घड़ाइदा ॥ २ ॥ बाजीगरि इक बाजी पाई ॥ पूरे गुर ते नदरी आई ॥ सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइदा ॥ ३ ॥ बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ आपि वजाए वजावणहारा ॥ घटि घटि पउणु वहै

आकारों में तेरा प्रबल हुकुम कार्यशील बना रहता है। हुकुम से ही जीव बनते हैं, हुकुम में ही वह इन्हें नष्ट करता है और हुकुम में ही अपने से मेल मिलाता है।। ५ ।। जो हुकुम को बूझते हैं वे हुकुम का गुणानुवाद करते हैं। वह प्रभु जो अगम्य और अगोचर है वह बेपरवाह भी है। तू जैसी मति प्रदान करता है वैसा ही हो जाता है और हे प्रभु, तुझे शब्द के माध्यम से ही जाना जाता है।। ६ ।। प्रतिदिन आयु घटती रहती है इस तथ्य के रात और दिन दोनों गवाह हैं। सिर पर जब काल खड़ा हो जाता है तो वह उसे रुलाता है परन्तु यह अज्ञानी मनमुख फिर भी सावधान नहीं होता।। ७ ।। गुरु के चरणों में लगने से मन तन शीतल हो जाता है, हृदय का भ्रम नष्ट हो जाता है और भय भाग जाता है। सदा आनन्द में बने जीव सच्चे प्रभु के गुण गाते हैं और वह प्रभु ही सच्ची वाणी बुलवाता है।। ८ ।। हे कर्म विधाता प्रभु, जिन्होंने तुझे जान लिया है उन्होंने पूर्ण भाग्यशाली होकर शब्द के माध्यम से तुझे पहचान लिया है। उनकी जाति, सम्मान, सच्चाई वह सच्चा प्रभु ही है जो अहंकार को मारकर अपने से मिला लेता है।। ९ ।। यह कठोर मन द्वैतभाव में लगा हुआ भ्रमों में भूलकर तथा अभागा बनकर भटकता रहता है। यदि उस पर कृपा हो जाए तो वह सच्चे गुरु का सुमिरन करता है और स्वाभाविक रूप से ही सुख प्राप्त करता रहता है।। १० ।। चौरासी लाख जीवों को प्रभु ने स्वयं उत्पन्न किया है और मनुष्य के जन्म में यह उससे गुरु की भक्ति करवाता है। भक्ति के बिना तो विष्ठा में ही निवास बना रहता है और जीव बार-बार विष्ठा में ही पड़ा रहता है।। ११ ।। प्रभु-कृपा हो तो गुरु की भक्ति मन में पक्की होती है। उसकी कृपा के बिना भला प्रभु को कैसे पाया जा सकता है। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता कराता है तथा जैसे चाहता है वैसे ही जीवों को चलाता रहता है।। १२ ।। स्मृतियाँ और शास्त्र उसके रहस्य को नहीं जानते तथा अज्ञानी मूर्ख जीव भी सार तत्व को नहीं पहचानता। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता कराता है और स्वयं ही जीवों को भ्रमों में भटकाता रहता है।। १३ ।। प्रभु सब कुछ स्वयं ही करता कराता है और स्वयं ही हर एक को अपने-अपने धन्धे में लगाए रहता है। वह स्वयं ही बनाकर नष्ट करता है और गुरमुख को यह बात स्वयं ही समझाता है।। १४ ।। सच्चा प्रभु गहरा और गम्भीर है और यदि मैं सदैव उसका गुणानुवाद करता रहूँ तभी मेरे मन को धैर्य मिलता है। उस अगम्य, अगोचर की कीमत को नहीं जाना जा सकता और जीव गुरमुख बनकर ही उसे अपने मन में बसाता है।। १५ ।। सारा संसार धन्धो में लगा है केवल वह आप ही अलिप्त बना रहता है। गुरु की कृपा से कोई बिरला ही इस तथ्य को बूझता है। हे नानक, जब प्रभु-नाम हृदय में बस जाए तो गुरुमति के अनुरूप चलकर प्रभु से मेल हो जाता है। १६ ।। ३ ।। १७ ।। मारू महला ३ ।। छत्तीस युगों तक तूने घोर अंधकार बनाए रखा परन्तु सृजनहार प्रभु, तू इस रहस्य को स्वयं ही जानता है अन्य कोई क्या कहे और कैसे बखान करे ; तू स्वयं ही इस सबका मूल्यांकन करता है।। १ ।। ओअंकार परमात्मा ने सारी सृष्टि उत्पन्न की और हे प्रभु, यह सब खेल तमाशा तेरा ही बड़प्पन है। तू स्वयं ही सबको अलग-अलग कर देता है और हे सच्चे प्रभु, तू स्वयं ही तोड़ता और बनाता भी है।। २ ।। प्रभु रूपी बाजीगर ने एक खेल बनाया है जो पूर्ण गुरु के माध्यम से ही नजर आता है। उसे देखकर जीव सदैव अलिप्त बना रहता है और शब्द गुरु के माध्यम से उस सच्चे प्रभु में चित्त लगाता है।। ३ ।। शरीर रूपी बाजे अपनी-अपनी धुनों को आकार दे रहे हैं परन्तु इन सबको वह बजाने वाला प्रभु स्वयं ही बजाता है। घट-घट में एक ही जैसा श्वास चलता है

इक रंगी मिलि पवणै सभ वजाइदा ॥ ४ ॥ करता करे सु निहचउ होवै ॥ गुर के सबदे हउमै खोवै ॥ गुर परसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥ ५ ॥ गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही ॥ नामु मंनि वसै नामो सालाही ॥ नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥ ६ ॥ बिनु नावै सभ दुखु संसारा ॥ बहु करम कमावहि वधहि विकारा ॥ नामु न सेवहि किउ सुखु पाईऐ बिनु नावै दुखु पाइदा ॥ ७ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ गुर परसादी किसै बुझाए ॥ गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि मुकती कै घरि पाइदा ॥ ८ ॥ गणत गणै सो जलै संसारा ॥ सहसा मूलि न चुकै विकारा ॥ गुरमुखि होवै सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा ॥ ९ ॥ जे सचु देइ त पाए कोई ॥ गुर परसादी परगटु होई ॥ सचु नामु सालाहे रंगि राता गुर किरपा ते सुखु पाइदा ॥ १० ॥ जपु तपु संजमु नामु पिआरा ॥ किलविख काटे काटणहारा ॥ हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा ॥ ११ ॥ अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाए ॥ मैले करम करे दुखु पाए ॥ कूड़ो कूड़ु करे वापारा कूड़ु बोलि दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ निरमल बाणी को मंनि वसाए ॥ गुर परसादी सहसा जाए ॥ गुर कै भाणै चलै दिनु राती नामु चेति सुखु पाइदा ॥ १३ ॥ आपि सिरंदा सचा सोई ॥ आपि उपाइ खपाए सोई ॥ गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ १४ ॥ अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई ॥ कामि करोधि जलै सभु कोई ॥ सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥ १५ ॥ मेरा तेरा तुधु आपे कीआ ॥ सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ॥ नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मंनि वसाइदा ॥ १६ ॥ ४ ॥ १८ ॥

मारू महला ३ ॥ हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ ओसु तिलु न तमाइ वेपरवाहा ॥ तिस नो अपड़ि न सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा ॥ १ ॥ जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ तिसु बिनु दाता अवरु न कोई ॥ जिस नो नाम दानु करे सो पाए गुर सबदी मेलाइदा ॥ २ ॥ चउदह भवण तेरे हटनाले ॥ सतिगुरि दिखाए अंतरि नाले ॥ नावै का वापारी होवै गुर सबदी को

और उस श्वास से मिलकर ये धुनें अन्दर बजती रहती हैं।। ४ ।। जो कर्ता प्रभु करता है वह अवश्य होता है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही जीव अहंकार को खो देता है। गुरु की कृपा से यह किसी को बड़प्पन प्रदान करता है और वह फिर प्रभु नाम का ही सुमिरन करता रहता है।। ५ ।। गुरु के सुमिरन जैसा अन्य लाभ कोई भी नहीं है क्योंकि नाम मन में बस जाता है और नाम के माध्यम से उस प्रभु का गुणानुवाद चलता रहता है। नाम से ही वह सुखदाता प्रभु मिलता है और नाम से ही जीव लाभ प्राप्त करता है।। ६ ।। नाम के बिना इस संसार में सभी दुख ही दुख है; नाम विहीन व्यक्ति अनेकों कर्मकाण्ड करते हैं जिससे विकार बढ़ते ही जाते हैं। नाम का सुमिरन ना करने से सुख कैसे पाया जा सकता है; यह जीव नाम के बिना दुख ही प्राप्त करता है।। ७ ।। प्रभु स्वयं ही करता कराता है और गुरु की कृपा से यह रहस्य किसी बिरले को ही सहझाया जाता है। जो गुरमुख होते हैं वे बन्धनों को तोड़ देते हैं और मुक्ति के घर में प्रवेश कर जाते हैं।। ८ ।। जो गणनाओं में पड़े रहते हैं वे संसार में जलते ही रहते हैं। उनके विकार और भय बिल्कुल ही दूर नहीं होते। जो गुरमुख होता है वही गणनाओं को समाप्त करके सत्य में लीन हो जाता है।। ९ ।। यदि सत्य तू किसी को दे तभी वह प्राप्त करता है तथा गुरु की कृपा से यह रहस्य प्रकट होता है। जीव सच्चे नाम की प्रशंसा करके ही उसके प्रेम के रंग में रंगा रहता है और गुरु की कृपा से ही सुख प्राप्त करता है।। १० ।। प्रभु का प्यारा नाम ही जप, तप और संयम है और यही पाप काटने वाला है। प्रभु के नाम के फलस्वरूप तन मन शीतल होता है और जीव स्वाभाविक रूप से ही सहज भाव में लीन हो जाता है।। ११ ।। अन्तर्मन में लोभ लेकर मैला मन सबको मैल लगाता है; यह मैले कर्म करता है और दुख प्राप्त करता है। यह झूठ का ही व्यापार करता है और झूठ बोलकर दुख पाता रहता है।। १२ ।। निर्मल वाणी को जो मन में बसा लेता है गुरु की कृपा से उसका संशय दूर हो जाता है। वह दिन-रात गुरु की आज्ञा में ही चलता है और नाम का सुमिरन करके सुख प्राप्त करता रहता है।। १३ ।। सृजनहार प्रभु ही सच्चा है जो स्वयं ही उत्पन्न करता और नष्ट करता है। जो गुरमुख बन जाता है वह सदैव गुणानुवाद करता है तथा सच्चे प्रभु से मिलकर सुख प्राप्त करता रहता है।। १४ ।। अनेकों प्रयत्न करने पर भी विषयों की वासनाएं वश में नही आती और हर कोई काम, क्रोध में जलता रहता है। सच्चे गुरु का सुमिरन करने से मन वश में आता है और मन को मारने से यह मन मन में ही लीन हो जाता है अर्थात् इसकी भटकन समाप्त हो जाती है।। १५ ।। मेरा और तेरा की भावना हे प्रभु, स्वयं तूने ही उत्पन्न की है। सभी तेरे जीव हैं और सब तेरे ही प्राणी हैं। हे नानक, तू प्रभु के नाम को सदैव हृदय में धारण किए रह क्योंकि वह प्रभु गुरु की मति के फलस्वरूप ही मन में बसता है।। १६ ।। ४ ।। १८ ।। मारू महला ३ ।। वह दाता प्रभु अगम्य एवं अथाह है और उस बेपरवाह को तिल मात्र भी लालच नहीं है। उस प्रभु तक कोई नहीं पहुँच सकता परन्तु यदि वह स्वयं चाहे तो मेल मिला देता है।। १ ।। वह जो भी करता है वह अवश्य होता है; उस प्रभु के बिना अन्य कोई भी दाता नहीं है। जिसे नाम का दान वह कर देता है वही उसे पाता है और वहीं शब्द गुरु के माध्यम से मिलता है।। २ ।। चौदह लोक तेरे बाजार हैं जो वास्तव में अन्दर ही हैं। सच्चा गुरु उन्हें अन्तर्मन में ही दिखा देता है। प्रभु नाम का जो व्यापारी होता है ऐसा कोई बिरला ही शब्द-गुरु

पाइदा ॥ ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ सहज अनंदा ॥ हिरदै आइ वुठा गोविंदा ॥ सहजे भगति करे दिनु राती आपे भगति कराइदा ॥ ४ ॥ सतिगुर ते विछुड़े तिनी दुखु पाइआ ॥ अनदिनु मारीअहि दुखु सबाइआ ॥ मथे काले महलु न पावहि दुख ही विचि दुखु पाइदा ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ सहज भाइ सची लिव लागी ॥ सचो सचु कमावहि सद ही सचै मेलि मिलाइदा ॥ ६ ॥ जिस नो सचा देइ सु पाए ॥ अंतरि साचु भरमु चुकाए ॥ सचु सचै का आपे दाता जिसु देवै सो सचु पाइदा ॥ ७ ॥ आपे करता सभना का सोई ॥ जिस नो आपि बुझाए बूझै कोई ॥ आपे बखसे दे वडिआई आपे मेलि मिलाइदा ॥ ८ ॥ हउमै करदिआ जनमु गवाइआ ॥ आगै मोहु न चूकै माइआ ॥ अगै जमकालु लेखा लेवै जिउ तिल घाणी पीड़ाइदा ॥ ९ ॥ पूरै भागि गुर सेवा होई ॥ नदरि करे ता सेवे कोई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै महलि सचै सुखु पाइदा ॥ १० ॥ तिन सुखु पाइआ जो तुधु भाए ॥ पूरै भागि गुर सेवा लाए ॥ तेरै हथि है सभ वडिआई जिसु देवहि सो पाइदा ॥ ११ ॥ अंदरि परगासु गुरू ते पाए ॥ नामु पदारथु मंनि वसाए ॥ गिआन रतनु सदा घटि चानणु अगिआन अंधेरु गवाइदा ॥ १२ ॥ अगिआनी अंधे दूजै लागे ॥ बिनु पाणी डुबि मूए अभागे ॥ चलदिआ घरु दरु नदरि न आवै जम दरि बाधा दुखु पाइदा ॥ १३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गिआनी धिआनी पूछहु कोई ॥ सतिगुरु सेवे तिसु मिलै वडिआई दरि सचै सोभा पाइदा ॥ १४ ॥ सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाए ॥ ममता काटि सचि लिव लाए ॥ सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा पाइदा ॥ १५ ॥ आपे करे कराए करता ॥ सबदि मरै सोई जनु मुकता ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥ १६ ॥ ५ ॥ १९ ॥ मारू महला ३ ॥ जो तुधु करणा सो करि पाइआ ॥ भाणे विचि को विरला आइआ ॥ भाणा मंने सो सुखु पाए भाणे विचि सुखु पाइदा ॥ १ ॥ गुरमुखि तेरा भाणा भावै ॥ सहजे ही सुखु सचु कमावै ॥ भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आपि मनाइदा ॥ २ ॥ तेरा भाणा मंने सु मिलै तुधु

के माध्यम से उसे पा लेता है।। ३ ।। सच्चे गुरु का सुमिरन करने से स्वाभाविक आनन्द प्राप्त होता है और हृदय में वह गोविन्द प्रभु आ बसता है। अब जीव स्वाभाविक रूप से ही दिन रात उसकी भक्ति करता है और वह स्वयं ही अपनी भक्ति करवाता है।। ४ ।। जो सच्चे गुरु से बिछुड़े हैं उन्होंने दुख ही दुख पाया है और दुख में ही पड़े हुओं को दिन रात मारा जाता है। उनके माथे काले हो जाते हैं, उन्हें कोई और ठौर-ठिकाना नही मिलता और दुख में ही पड़े हुए वे दुख प्राप्त करते रहते हैं।। ५ ।। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते है वे भाग्यशाली हैं और स्वभाविक रूप से ही उनकी सच्ची लौ उसमें लगी रहती है। वे सदैव सत्य का आचरण ही करते रहते हैं और गुरु उन्हें अपने साथ मिलाकर सच्चे प्रभु के साथ मिला देता है।। ६ ।। वह सच्चा प्रभु जिसे देता है वही पाता है और अन्तर्मन में सत्य होने से भ्रम नष्ट हो जाता है। सत्य और सत्य पर आचरण करने वाले का दाता प्रभु स्वयं ही है और वही जिसे सत्य देता है वह उसे प्राप्त करता है।। ७ ।। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही सबका है; जिसे वह स्वयं समझाता है इस तथ्य को वही समझता है। वह बड़प्पन प्रदान करके स्वयं ही कृपा करता है और स्वयं ही अपने आपसे मिला लेता है।। ८ ।। अहंकार करते हुए ने जीवन व्यतीत कर लिया परन्तु आगे चलने पर भी इसका माया मोह समाप्त नहीं होता। उस लोक में यमकाल इससे लेखा माँगता है और इसे इस प्रकार पेरा जाता है जैसे घानी में तिल को पेरा जाता है।। ६ ।। पूर्ण भाग्य से ही गुरु की सेवा होती है और प्रभु कृपा दृष्टि करे तभी कोई उसकी सेवा करता है। यमकाल उसके पास नहीं आ पाता और वह प्रभु के ठिकाने पर सुख प्राप्त करता रहता है।। १० ।। जो तुझे भाते हैं उन्होंने ही सुख प्राप्त किया है और पूर्ण भाग्य के साथ वे गुरु की सेवा में लग गए हैं। हे प्रभु, सब बड़प्पन तेरे हाथ में ही है; जिसे तू देता है वही प्राप्त करता है।। ११ ।। हृदय में प्रकाश गुरु से प्राप्त होता है और गुरु ही नाम रूपी अमूल्य पदार्थ मन में बसा देता है। ज्ञान रत्न के कारण सदैव हृदय में प्रकाश बना रहता है और अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है।। १२ ।। अंधे अज्ञानी लोग द्वैतभाव में लीन बने रहते हैं और ये अभागे लोग बिना पानी के डूब मरते हैं। यहाँ से चलते समय इन्हें अपने वास्तविक घर उसका द्वार नजर नहीं आता और यम के द्वार पर बँधे हुए ये लोग दुख पाते रहते हैं।। १३ ।। सच्चे गुरु के सुमिरन के बिना मुक्ति नहीं होगी। यह बात बेशक किसी भी ज्ञानी-ध्यानी से पूछ लो। सच्चे गुरु का सुमिरन करने वाले को ही बड़प्पन प्राप्त होता है और वही सच्चे प्रभु के द्वार पर भी शोभा प्राप्त करता है।। १४ ।। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करता है उसे वह प्रभु स्वयं ही मिला लेता है तथा उसकी ममता को नष्ट करके सत्य में उसकी लौ लगा लेता है। ऐसा व्यापारी अब सदैव सत्य का व्यापार करता है और प्रभु-नाम का लाभ प्राप्त करता है।। १४ ।। करने वाला वह प्रभु ही सब कुछ करता कराता है और शब्द के माध्यम से जो विषय विकारों के संदर्भ में मर जाता है वही सेवक मुक्त कहा जाता है। हे नानक, जब हृदय में प्रभु नाम बस जाता है तो नाम के माध्यम से ही प्रभु-नाम की आराधना की जाती है।। १६ ।। ५ ।। १६ ।। मारू महला ३ ।। हे प्रभु, जो तूने करना है वह तूने कर दिया है; परन्तु प्रभु की रज़ा में कोई बिरला ही चल पाता है। जो रज़ा को मानता है वह सुख प्राप्त करता है और वास्तव में उस प्रभु की रज़ा में ही सुख प्राप्त होता है।। १ ।। गुरमुख व्यक्ति को तेरी रज़ा ही अच्छी लगती है और इसीलिये स्वाभाविक रूप से ही वह सुख देने वाला और सत्य पूर्ण आचरण करता है। तेरी रज़ा को जानने के इच्छुक बहुत हैं परन्तु हे प्रभु, तू अपनी रज़ा आप ही मना लेता है।। २ ।। जो तेरी रज़ा को मानते हैं वे तुझसे आ मिलते हैं

आए ॥ जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाए ॥ भाणे विचि वडी वडिआई भाणा किसहि कराइदा ॥ ३ ॥ जा तिसु भावै ता गुरू मिलाए ॥ गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥ तुधु आपणै भाणै सभ स्रिसटि उपाई जिस नो भाणा देहि तिसु भाइदा ॥ ४ ॥ मनमुखु अंधु करे चतुराई ॥ भाणा न मंने बहुतु दुखु पाई ॥ भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न कबहू पाइदा ॥ ५ ॥ सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ सतिगुर की सेवा धुरि फुरमाई ॥ सतिगुर सेवे ता नामु पाए नामे ही सुखु पाइदा ॥ ६ ॥ सभ नावहु उपजै नावहु छीजै ॥ गुर किरपा से मनु तनु भीजै ॥ रसना नामु धिआए रसि भीजै रस ही ते रसु पाइदा ॥ ७ ॥ महलै अंदरि महलु को पाए ॥ गुर कै सबदि सचि चितु लाए ॥ जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए सचे सचि मिलाइदा ॥ ८ ॥ नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ॥ माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ॥ बिनु नावै मनु तनु है कुसटी नरके वासा पाइदा ॥ ९ ॥ नामि रते तिन निरमल देहा ॥ निरमल हंसा सदा सुखु नेहा ॥ नामु सलाहि सदा सुखु पाइआ निज घरि वासा पाइदा ॥ १० ॥ सभु को वणजु करे वापारा ॥ विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥ नागो आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥ ११ ॥ जिस नो नामु देइ सो पाए ॥ गुर कै सबदि हरि मंनि वसाए ॥ गुर किरपा ते नामु वसिआ घट अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥ १२ ॥ नावै नो लोचै जेती सभ आई ॥ नाउ तिना मिलै धुरि पुरबि कमाई ॥ जिनी नाउ पाइआ से वडभागी गुर कै सबदि मिलाइदा ॥ १३ ॥ काइआ कोटु अति अपारा ॥ तिसु विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥ सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥ १४ ॥ अंतर घर बंके थानु सुहाइआ ॥ गुरमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ॥ इतु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मंनि वसाइदा ॥ १५ ॥ मेरै करतै इक बणत बणाई ॥ इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ नानक नामु वणजहि रंगि राते गुरमुखि को नामु पाइदा ॥ १६ ॥ ६ ॥ २० ॥ मारू महला ३ ॥ काइआ कंचनु सबदु वीचारा ॥ तिथै हरि वसै जिस दा अंतु न पारावारा ॥ अनदिनु हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ

और जिन्हें तुम्हारी इच्छा अच्छी लगती है वे तुझमें ही समाहित हो जाते हैं। तेरी इच्छा में ही महान बड़प्पन है परन्तु तेरी यह इच्छा किसी बिरले के माध्यम से ही कार्यशील होती है।। ३ ।। यदि उसे अच्छा लगता है तो वह गुरु से मिलाप करा देता है और व्यक्ति गुरमुख बनकर नाम पदार्थ को पा लेता है। अपनी इच्छा से ही तूने यह सृष्टि उत्पन्न की है और जिसे अपनी इस रज़ा में तू रखता है उसे ही यह तेरी इच्छा अच्छी लगती है।। ४ ।। अंधा मनमुख व्यक्ति बहुत सी चतुराईयाँ करता रहता है; वह हरि इच्छा को नहीं मानता और बहुत दुख पाता रहता है। भ्रमों में भटका हुआ वह आता-जाता रहता है और कभी भी अपने वास्तविक घर अर्थात् परमात्मा के ठिकाने को प्राप्त नहीं कर पाता।। ५ ।। बड़प्पन प्रदान करके सच्चा गुरु अपने से मिला लेता है और सच्चे गुरु की सेवा का तो प्रभु की ओर से ही आदेश है। जो सच्चे गुरु की सेवा करता है वही नाम प्राप्त करता है और उसे प्रभु-नाम में ही सुख प्राप्त होता है ।। ६ ।। सब कुछ नाम से ही उपजता है और नाम में ही नष्ट हो जाता है; व्यक्ति का मन तन केवल गुरु कृपा से ही भीगता है। जीभ प्रभु नाम की आराधना करके उसके रस में भीगती है और उस के रस में ही जीवन का रस प्राप्त होता है।। ७ ।। शरीर रूपी महल के अन्दर कोई बिरला ही प्रभु का महल प्राप्त करता है और शब्द-गुरु को सत्य के माध्यम से चित्त में धारण करता है। जिसे वह सत्य प्रदान करता है वही सत्य प्राप्त करता है और सत्य के माध्यम से उस परम सत्य में लीन हो जाता है।। ८ ।। जीव ने प्रभु नाम को भुला कर मन तन का दुख इकट्ठा कर लिया है तथा माया मोह जैसे सभी रोगों की कमाई कर ली है। प्रभु नाम के बिना मन तन कोढ़ी के समान है और जीव नरक में ही निवास पाता है।। ९ ।। जो नाम मे रंग जाते हैं उनका शरीर निर्मल हो जाता है, उनकी आत्मा निर्मल हो जाती है और उन्हें सदैव सुख और स्नेह मिलता रहता है। प्रभु नाम का गुणानुवाद करके उन्होंने सदैव बना रहने वाला सुख पाया होता है और इस प्रकार वे अपने वास्तविक घर अर्थात परमात्मा में निवास पा लेते हैं।। १० ।। सभी लोग व्यापार करते हैं परन्तु प्रभु नाम के बिना सारे संसार में घाटा ही घाटा है। जीव नंगा आया था नंगा ही यहाँ से जाएगा और प्रभु नाम के बिना दुख प्राप्त करता रहेगा।। ११ ।। प्रभु जिसे नाम देता है वह उसी को मिलता है और शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु ही मन में बस जाता है। गुरु की कृपा से हृदय में नाम बस जाता है और प्रभु के नाम से ही उसके नाम का सुमिरन किया जाता है।। १२ ।। जितनी भी सृष्टि इस धरती पर आई है वह सारी प्रभु-नाम की इच्छा बनाए हुए है परन्तु नाम उन्हीं को मिलता है जिन्होंने प्रारम्भ से ही ऐसा आचरण बनाया होता है। जिन्हें नाम मिल गया वे भाग्यशाली हैं और वे शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु से मिल जाते है।। १३ ।। शरीर रूपी यह किला अत्यन्त विशाल है जिसमें बैठकर प्रभु चिंतन करता है। उस प्रभु का न्याय और कार्य व्यापार सच्चा है और वह अटल रूप से इस शरीर रूपी किले में बैठा हुआ निवास बनाए रखता है।। १४ ।। इस किले में ही मन, बुद्धि आदि सुहावने स्थान बने हुए हैं और किसी बिरले गुरमुख ने ही इन स्थानों के रहस्य को जाना है। जो इस किले में साथी बनकर उस सच्चे प्रभु का सुमिरन करने का साथ निभाता है वही उस सच्चे प्रभु को मन में बसा लेता है।। १५ ।। मेरे कर्ता प्रभु ने एक सुन्दर अवसर बनाया है कि इस शरीर में ही सभी वस्तुएँ डाल दी हैं। प्रभु के रंग में रंगे इस नाम का व्यापार करते हैं और हे नानक, कोई गुरमुख बनकर ही प्रभु-नाम को प्राप्त करता है।। १६ ।। ६ ।। २० ।। मारू महला ३ ।। शब्द का गहन चिंतन किया जाए तो यह शरीर सोने जैसा हो जाता है। फिर पता लग जाता है कि इस शरीर में प्रभु का निवास है जिसका कोई भी रहस्य नहीं जान पाता क्योंकि उसका कोई ओर-छोर नहीं है। सदैव उस प्रभु का सुमिरन सच्ची वाणी के माध्यम से करते रहो; शब्द के माध्यम से

सबदि मिलाइदा ॥ १ ॥ हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ गुर के सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥ तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥ २ ॥ हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा ॥ गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा ॥ ३ ॥ सो जनु साचा जि अंतरु भाले ॥ गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥ गिआन अंजनु पाए गुर सबदी नदरी नदरि मिलाइदा ॥ ४ ॥ वडै भागि इहु सरीरु पाइआ ॥ माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ बिनु सबदै सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥ ५ ॥ इकि कितु आए जनमु गवाए ॥ मनमुख लागे दूजै भाए ॥ एह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिऐ पछुताइदा ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि पवित्रु सरीरा ॥ तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि मंनि वसाइदा ॥ ७ ॥ हउमै गणत गुर सबदि निवारे ॥ हरि जीउ हिरदै रखहु उर धारे ॥ गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥ ८ ॥ सो चेते जिसु आपि चेताए ॥ गुर कै सबदि वसै मनि आए ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपे आपु समाइदा ॥ ९ ॥ जिनि मन विचि वथु पाई सोई जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥ १० ॥ एह काइआ पवितु है सरीरु ॥ गुर सबदी चेतै गुणी गहीरु ॥ अनदिनु गुण गावै रंगि राता गुण कहि गुणी समाइदा ॥ ११ ॥ एहु सरीरु सभ मूलु है माइआ ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाइआ ॥ हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेते दुखु पाइदा ॥ १२ ॥ जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ काइआ हंसु निरमलु दरि सचै जाणु ॥ हरि सेवे हरि मंनि वसाए सोहै हरि गुण गाइदा ॥ १३ ॥ बिनु भागा गुरु सेविआ न जाइ ॥ मनमुख भूले मुए बिललाइ ॥ जिन कउ नदरि होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा ॥ १४ ॥ काइआ कोटु पके हटनाले ॥ गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ हरि का नामु धिआइ दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा ॥ १५ ॥ आपे सचा है सुखदाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ नानक नामु सलाहे साचा पूरे भागि को पाइदा

ही प्रभु मिला करता है।। १ ।। जो प्रभु का सुमिरन करते हैं मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। हे जीव, शब्द गुरु के माध्यम से तुम उनसे मेल मिलाप पैदा करो। ऐसे व्यक्तियों की चरण धूलि माथे पर लगाई गई कि जीव सत्संगति में बैठकर प्रभु का गुणानुवाद करता रहता है।। २ ।। यदि प्रभु को अच्छा लगे तभी मैं प्रभु के गुण गा सकता हूँ और तभी शब्द के माध्यम से अन्तर्मन में जाना हुआ प्रभु-नाम सुहावना लगता है। गुरबाणी की महिमा चारों दिशाओं में सुनी जाती है और उसे सुनकर जीव सच्चे नाम में लीन हो जाता है।। ३ ।। वही सेवक सच्चा है जो अन्तर्मन में प्रभु को खोजता है और शब्द-गुरु के माध्यम से प्राप्त प्रभु की कृपा दृष्टि के कारण आनन्दित बना रहता है। शब्द गुरु के माध्यम से ही वह ज्ञान अंजन प्राप्त करता है और प्रभु की कृपा दृष्टि से प्रभु उसे अपने साथ मिला लेता है।। ४ ।। बड़ा भाग्य होने से ही यह मानव शरीर प्राप्त हुआ और बड़े भाग्य से ही इस मानव जीवन में शब्द में चित्त लीन होता है। शब्द के बिना सब अहंकार है इस तथ्य को भी वह प्रभु किसी गुरमुख को ही समझाता है।। ५ ।। अनेकों ही यहाँ आए तो किसी और काम से थे लेकिन प्रभु सुमिरन के उस काम को ना करके उन्होंने इस जीवन को व्यर्थ ही गँवा दिया है। मनमुख व्यक्ति द्वैतभाव में ही लगे रहते हैं। बीता हुआ समय फिर हाथ नहीं आता और पाँव फिसल जाने के बाद गिरकर मरता हुआ व्यक्ति पछताता ही रह जाता है।। ६ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से शरीर पवित्र हो जाता है और पता लग जाता है कि इस शरीर में ही गहरे गुणों वाला सत्य प्रभु बसता है। अब व्यक्ति सब ओर सत्य ही देखता है और सत्य ही सुनकर प्रभु को मन में बसाता है।। ७ ।। शब्द-गुरु ही अहंकार की गणनाओं को नष्ट करता है और यह बताता है कि प्रभु को सदैव हृदय में धारण करके रखना चाहिए। शब्द-गुरु के माध्यम से अब व्यक्ति उस प्रभु का गुणानुवाद करता है तथा उस सच्चे प्रभु से मिलकर सुख प्राप्त करता रहता है।। ८ ।। सावधान वही होते हैं जिन्हें प्रभु स्वयं सावधान करता है। शब्द-गुरु के माध्यम से प्रभु उनके मन में आ बसता है। वह स्वयं ही देखता है स्वयं ही बूझता है और स्वयं ही अपने आप में लीन बना रहता है।। ६ ।। जिसने नाम रूपी वस्तु मन में डाल ली है वही उसके आनन्द को जानता है और शब्द-गुरु के माध्यम से अपने आपको पहचान लेता है। जो स्वयं को पहचानता है वही सेवक मित्र है तथा अब वह वाणी रूपी शब्द सुनाता रहता है।। १० ।। यह काया वास्तव में पवित्र शरीर है और यह शब्द-गुरु के माध्यम से गहरे गुणों वाले प्रभु के प्रति चेतन होती है। ऐसा व्यक्ति सदैव प्रभु के रंग में रंगा हुआ उसके गुणों का गायन करता है और उसके गुणों को कहता हुआ गुण वाले प्रभु में लीन हो जाता है।। ११ ।। यह शरीर उस समय माया का भी मूल स्थान बन जाता है जब यह द्वैतभाव में पड़ा भ्रमों मे भटकता रहता है। इस अवस्था में वह प्रभु का सुमिरन ना करके सदैव दुख पाता है और प्रभु सुमिरन से विहीन बनकर दुख पाता ही जाता है।। १२ ।। जो सच्चे गुरु का सुमिरन करते हैं वे स्वीकृत हो जाते है और उनका शरीर शुद्ध आत्मा वाला बनकर सच्चे प्रभु के द्वार को जान जाता है। वह प्रभु का ही सुमिरन करता है, प्रभु को ही मन में बसाता है और प्रभु के गुण गाता हुआ शोभायमान बना रहता है।। १३ ।। अच्छे भाग्य के बिना गुरु की सेवा नहीं की जाती और मनमुख व्यक्ति उसे भूले हुए तथा विलाप करते हुए मर जाते हैं। गुरु की कृपा दृष्टि जिस पर हो जाए प्रभु स्वयं उन्हें अपने से मिला लेता है।। १४ ।। शरीर रूपी इस किले में पक्के बाजार बने हुए हैं परन्तु यह मिलने वाले पदार्थें में से गुरमुख व्यक्ति नाम रूपी वस्तु सम्भाल कर ले लेता है। वह दिन रात प्रभु-नाम का सुमिरन करके उत्तम पदवी प्राप्त कर लेता है।। १५ ।। वह सुख दाता प्रभु सच्चा है और पूर्ण गुरु के उपदेश के माध्यम से ही उसे पहचाना जाता है। नानक तो उस प्रभु के नाम का गुणानुवाद करता है जो सच्चा नाम किसी पूर्ण भाग्यशाली व्यक्ति को ही प्राप्त होता है।।

॥ १६ ॥ ७ ॥ २१ ॥ मारू महला ३ ॥ निरंकारि आकारु उपाइआ ॥ माइआ मोहु हुकमि बणाइआ ॥ आपे खेल करे सभि करता सुणि साचा मंनि वसाइदा ॥ १ ॥ माइआ माई त्रै गुण परसूति जमाइआ ॥ चारे बेद ब्रहमे नो फुरमाइआ ॥ वर्हे माह वार थिती करि इसु जग महि सोझी पाइदा ॥ २ ॥ गुर सेवा ते करणी सार ॥ राम नामु राखहु उरि धार ॥ गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥ ३ ॥ वेदु पड़ै अनदिनु वाद समाले ॥ नामु न चेतै बधा जमकाले ॥ दूजै भाइ सदा दुखु पाए त्रै गुण भरमि भुलाइदा ॥ ४ ॥ गुरमुखि एकसु सिउ लिव लाए ॥ त्रिबिधि मनसा मनहि समाए ॥ साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा ॥ ५ ॥ जो धुरि राते से हुणि राते ॥ गुर परसादी सहजे माते ॥ सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा ॥ ६ ॥ माइआ मोहि भरमि न पाए ॥ दूजै भाइ लगा दुखु पाए ॥ सूहा रंगु दिन थोड़े होवै इसु जादे बिलम न लाइदा ॥ ७ ॥ एहु मनु भै भाइ रंगाए ॥ इतु रंगि साचे माहि समाए ॥ पूरै भागि को इहु रंगु पाए गुरमती रंगु चड़ाइदा ॥ ८ ॥ मनमुखु बहुतु करे अभिमानु ॥ दरगह कब ही न पावै मानु ॥ दूजै लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझे दुखु पाइदा ॥ ९ ॥ मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर परसादी हरि मिलै मिलाइआ ॥ सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु पाइदा ॥ १० ॥ इसु काइआ की कीमति किनै न पाई ॥ मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई ॥ गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा ॥ ११ ॥ काइआ विचि तोटा काइआ विचि लाहा ॥ गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ॥ गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाए सहजे सहजि मिलाइदा ॥ १२ ॥ सचा महलु सचे भंडारा ॥ आपे देवै देवणहारा ॥ गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेले कीमति पाइदा ॥ १३ ॥ काइआ विचि वसतु कीमति नही पाई ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ जिस दा हटु सोई वथु जाणै गुरमुखि देइ न पछोताइदा ॥ १४ ॥ हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई ॥ गुर परसादी पाइआ जाई ॥ आपे मेलि मिलाए आपे सबदे सहजि समाइदा ॥ १५ ॥

१६ ॥ ७ ॥ २१ ॥ मारू महला ३ ॥ निराकार प्रभु ने साकार सृष्टि उत्पन्न की और माया मोह आदि अपने हुकुम के अन्तर्गत ही उसने पैदा किए हैं। वह कर्ता प्रभु स्वयं ही अपने खेल खेलता रहता है और उस सच्चे प्रभु के बारे में सुनकर उसे मन को बसाया जाता है॥ १ ॥ माया रूपी स्त्री को गर्भ धारण कराके प्रभु ने तीनों गुण उत्पन्न किए हैं अर्थात सत्व, रजस और तमस गुण वाला संसार पैदा किया है। उसी ने ही चारों वेदों का उपदेश ब्रह्मा को दिया। उसी ने ही वर्ष, महीने, वार, तिथियाँ, इत्यादि उत्पन्न करके इस संसार में बुद्धि तत्व डाला है॥ २ ॥ गुरु की सेवा से आचरण की श्रेष्ठता प्राप्त होती है इसलिए प्रभु-नाम को ही हृदय में धारण किए रहा। सारे संसार में गुरु की वाणी की ही महिमा फैली हुई है और इस वाणी के माध्यम से ही प्रभु नाम पाया जाता है॥ ३ ॥ व्यक्ति वेद पढ़ता तो है और दिन-रात वाद-विवाद भी करता है परन्तु प्रभु-नाम का सुमिरन ना करने से यम काल द्वारा बँधा रहता है। द्वैतभाव में पड़ा वह सदैव दुख पाता है और तीनों गुणों के भ्रमों में भटकता रहता है॥ ४ ॥ गुरमुख व्यक्ति केवल एक प्रभु में ही लौ लगाता है और तीनों गुणों से उत्पन्न इच्छाओं को मन में ही समाप्त किए रहता है। सच्चे शब्द के माध्यम से वह माया मोह समाप्त करके सदैव मुक्त बना रहता है॥ ५ ॥ जो प्रारम्भ से ही प्रभु-नाम में लीन हैं वे इस जीवन में भी उसमें लीन ही बने रहते हैं तथा गुरु की कृपा से सहज भाव में मस्त बने रहते हैं। उन्होंने सच्चे गुरु की सेवा करके प्रभु को पा लिया होता है और उन्हें सदैव वह स्वयं ही अपने आपसे मिला लेता है॥ ६ ॥ माया मोह और भ्रमों में पड़ा व्यक्ति उस प्रभु को प्राप्त नहीं कर पाता और द्वैतभाव में पड़ा दुख प्राप्त करता है। लाल दिखाई देने वाला रंग तो थोड़े दिन का होता है और ऐसे प्रेम के रंग को छूटते हुए देरी नहीं लगती॥ ७ ॥ यह मन प्रभु के भय और प्रेम में जब रंग जाता है तो ऐसे रंग के माध्यम से वह सत्य में लीन हो जाता है। पूर्ण भाग्य से ही यह रंग प्राप्त होता है और गुरु की मति अर्थात गुरमति के माध्यम से यह प्रेम रंग चढ़ता है॥ ८ ॥ मनमुख व्यक्ति बहुत अभिमान करता है और वह इस प्रकार प्रभु के दरबार में कभी भी सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता। उसने द्वैतभाव में लगकर जीवन गँवा दिया होता है और इस रहस्य को बूझे बिना वह दुखी ही बना रहता है॥ ९ ॥ मेरे प्रभु ने मेरे अन्तर्मन में स्वयं अपने आपको छिपा रखा है और गुरु की कृपा से ही इस प्रभु से मेरा मेल-मिलाप होता है। वह प्रभु सच्चा है। उसका कार्य व्यवहार अर्थात व्यापार सच्चा है और वही अमूल्य नाम हमारे हृदय में बसता है॥ १० ॥ मेरे प्रभु ने कुछ ऐसा संयोग बनाया है कि इस शरीर के मूल्य को भी कोई नहीं आँक सका। जो गुरमुख होता है वही काया को विकारों से निर्मल बनाए रखता है और इस प्रकार जीव को प्रभु स्वयं ही अपने आपसे मिला लेता है॥ ११ ॥ शरीर में ही हानि और शरीर में ही लाभ हैं परन्तु इन हानि-लाभों से उपर उठकर गुरमुख व्यक्ति उस बेपरवाह को इसमें खोजता है। गुरमुख व्यक्ति ऐसे व्यापार में सदा सुख प्राप्त करता है और स्वाभाविक रूप से ही सहज अवस्था में बना रहकर अपने आपको प्रभु से मिला लेता है॥ १२ ॥ उस प्रभु का स्थान और भण्डार दोनों ही सच्चे हैं और वह स्वयं ही सब कुछ देने वाला है। गुरमुख बनकर व्यक्ति उस सुखदाता प्रभु का गुणानुवाद करता है और अपने मन को उसमें मिलाकर उसके मूल्य को जानने लगता है॥ १३ ॥ शरीर में ही नाम रूपी वस्तु है परन्तु व्यक्ति ने उसके मूल्य को नहीं जाना; वह प्रभु स्वयं ही गुरमुख व्यक्ति को यह बड़प्पन प्रदान करता है। जिसकी यह दुकान है वही इसकी वस्तुओं को जानता है और गुरमुख को देते हुए वह कभी पछताता नहीं॥ १४ ॥ प्रभु ही सबमें समाया है और इसे गुरु की कृपा से ही प्राप्त किया जाता है। गुरु स्वयं ही अपने से मिलाकर उस प्रभु से मिला देता है और जीव शब्द के माध्यम से सहज भाव में लीन हो जाता है॥ १५ ॥

आपे सचा सबदि मिलाए ॥ सबदे विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही सुखु पाइदा ॥ १६ ॥ ८ ॥ २२ ॥ मारू महला ३ ॥ अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ आपे मिहरवान अगम अथाहे ॥ अपड़ि कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ ॥ १ ॥ तुधुनो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ गुर के सबदे सचि समावहि ॥ अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ ॥ २ ॥ सबदि मरहि से मरणु सवारहि ॥ हरि के गुण हिरदै उर धारहि ॥ जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि जीउ मेले आपि मिलाए ॥ गुर कै सबदे आपु गवाए ॥ अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग महि लाहा पाइआ ॥ ४ ॥ तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ अंतु न पारा कीमति नही पाई ॥ आपे दइआ करे सुखदाता गुण महि गुणी समाइआ ॥ ५ ॥ इसु जग महि मोहु है पासारा ॥ मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ॥ धंधै धावतु जनमु गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ ॥ ६ ॥ करमु होवै ता सतिगुरु पाए ॥ हउमै मैलु सबदि जलाए ॥ मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ ७ ॥ तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥ कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ ॥ ८ ॥ नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ ना को होआ तोलणहारा ॥ आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ ॥ ९ ॥ सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ तू आपे मेलि बहालहि पासि ॥ सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइआ ॥ १० ॥ जतु सतु संजमु जि सचु कमावै ॥ इहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ॥ इसु बिखु महि अंम्रितु परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइआ ॥ ११ ॥ जिस नो बुझाए सोई बूझै ॥ हरि गुण गावै अंदरु सूझै ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाए सहजे ही सचु पाइआ ॥ १२ ॥ बिनु करमा होर फिरै घनेरी ॥ मरि मरि जंमै चुकै न फेरी ॥ बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइआ ॥ १३ ॥ बहुते भेख करे भेखधारी ॥ बिनु सबदै हउमै किनै न मारी ॥ जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ समाइआ ॥ १४ ॥ अगिआनु त्रिसना इसु तनहि जलाए ॥

वह स्वयं ही सच्चे शब्द से मिलाता है और शब्द के माध्यम से ही अन्तर्मन के भ्रम को समाप्त कर देता है। हे नानक, प्रभु नाम से ही बड़प्पन प्राप्त होता है और नाम के माध्यम से ही सुख प्राप्त किया जाता है।। १६ ।। ८ ।। २२।। मारू महला ३ ।। अगम्य, अगोचर, बेपरवाह प्रभु स्वयं ही मेहरबान सुखातीत और अथाह है। उस तक कोई नहीं पहुँच सकता और उससे मिलाप शब्द-गुरु के माध्यम से ही होता है।। १ ।। जो तुझे अच्छे लगते हैं वे ही तेरा सुमिरन करते हैं और शब्द-गुरु के माध्यम से सत्य में लीन बने रहते हैं। वे दिन रात तेरे गुणों का ही सुमिरन करते रहते है और उनकी जीभ को प्रभु-नाम का रस ही अच्छा लगता है।। २ ।। जो शब्द के माध्यम से विकारों के संदर्भ में मर जाते हैं वे अपने मरण को भी सँवार लेते हैं तथा प्रभु के गुणों को हृदय में धारण कर लेते हैं। वे प्रभु के चरणों में लगकर अपना जीवन सफल कर लेते हैं और उनका द्वैतभाव नष्ट हो चुका होता है।। ३ ।। प्रभु स्वयं ही अपने आपसे मिलाता है और जीव शब्द-गुरु के माध्यम से ही अपने अहंकार को दूर करता है। ऐसे व्यक्ति सदैव प्रभु की भक्ति में लगे रहते हैं और इस संसार में वे ही लाभ प्राप्त करते हैं।। ४ ।। तेरे गुणों का मैं बखान करता हूँ पर वे कहे नहीं जा सकते। उनका ना कोई अन्त है ना कोई ओर-छोर है तथा उनके मूल्य को नहीं आँका जा सकता। वह सुखदाता प्रभु स्वयं ही दया करता है और जीव गुणों के माध्यम से उस गुणवान प्रभु में लीन हो जाता है।। ५ ।। इस संसार में मोह का ही प्रताप है और अज्ञानी मनमुख के लिये तो यहाँ घोर अंधकार ही अंधकार है। जीवों ने यहाँ सांसारिक धन्धों की भाग दौड़ में ही जीवन गँवा दिया है और प्रभु नाम के बिना दुख ही पाया है ।।६।। उसकी कृपा हो तो जीव सच्चा गुरु प्राप्त करते हैं और शब्द के माध्यम से अहंकार की मैल को जला देते हैं। ज्ञान के रत्न के प्रकाश में उनका मन निर्मल हो जाता है और अज्ञान के अंधकार को वे दूर कर देते हैं।। ७ ।। हे प्रभु, तेरे अनेकों नाम हैं परन्तु हमने उनका मूल्य नहीं जाना। हे प्रभु, अपना सच्चा नाम हमारे हृदय में बसा दे। हे प्रभु, तेरा मूल्य कौन आँक सकता है और तू तो अपने आनन्द में स्वयं ही लीन है।। ८ ।। तेरा अमूल्य नाम अगम्य और अपार है जिसका मूल्यांकन करने वाला अभी तक कोई भी पैदा नहीं हुआ। तू स्वयं ही इसे तौलता है और शब्द-गुरु के माध्यम से मिलाकर इसका मूल्यांकन करता है।। ६ ।। तेरे सेवक तेरा सुमिरन करते हुए तेरे सामने अरदास करते हैं और उन्हें तू स्वयं ही अपने से मिलाकर अपने पास बिठाता है। प्रभु सभी जीवों को सुख देने वाला दाता है और पूर्ण भाग्य के कारण ही उसका सुमिरन किया जाता है।। १० ।। सत्य पर आचरण करना ही यति होना, त्यागी होना और संयमशील होना है। यदि यह प्रभु के गुण गाए तभी यह मन निर्मल होता है मेरे प्रभु को यदि भा जाए तो इस विष रूपी मायावी संसार से भी अमृत प्राप्त हो सकता है।। ११ ।। जिसे वह समझाता है वही समझ पाता है तथा वही प्रभु के गुण गाता है तथा उसी के अन्तर्मन में रहस्य की समझ आती है। वह अहंकार और ममता को रोक कर ही स्वाभाविक रूप से ही सत्य को प्राप्त कर लेता है।। १२ ।। भाग्यहीन अनेकों लोग भटक रहे हैं; वे मर-मर कर जन्म लेते रहते हैं परन्तु फिर भी उनका आवागमन समाप्त नहीं होता। विषय विकारों में लीन व्यक्ति विकारपूर्ण आचरण ही करता है और इस प्रकार वह कभी सुख प्राप्त नहीं करता।। १३ ।। वेशों को धारण करने वाले अनेकों वेश बनाए रहते हैं परन्तु शब्द के बिना कोई भी अपने अहंकार को नहीं मार सका। यदि वह जीवित रहते हुए ही विकारों के संदर्भ में मर जाए तभी वह मुक्ति प्राप्त करता है और सच्चे नाम में लीन होता है।। १४ ।। अज्ञान की तृष्णा इस शरीर को जलाती रहती है परन्तु

तिस दी बूझै जि गुर सबदु कमाए ॥ तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइआ ॥ १५ ॥ सचा साहिबु सची वडिआई ॥ गुर परसादी विरलै पाई ॥ नानकु एक कहै बेनंती नामे नामि समाइआ ॥ १६ ॥ १ ॥ २३ ॥ मारू महला ३ ॥ नदरी भगता लैहु मिलाए ॥ भगत सलाहनि सदा लिव लाए ॥ तउ सरणाई उबरहि करते आपे मेलि मिलाइआ ॥ १ ॥ पूरै सबदि भगति सुहाई ॥ अंतरि सुखु तेरै मनि भाई ॥ मनु तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइआ ॥ २ ॥ हउमै विचि सद जलै सरीरा ॥ करमु होवै भेटे गुरु पूरा ॥ अंतरि अगिआनु सबदि बुझाए सतिगुर ते सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ मनमुखु अंधा अंधु कमाए ॥ बहु संकट जोनी भरमाए ॥ जम का जेवड़ा कदे न काटै अंते बहु दुखु पाइआ ॥ ४ ॥ आवण जाणा सबदि निवारे ॥ सचु नामु रखै उर धारे ॥ गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइ समाइआ ॥ ५ ॥ आवण जाणै परज विगोई ॥ बिनु सतिगुर थिरु कोइ न होई ॥ अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति मिलाइआ ॥ ६ ॥ पंच दूत चितवहि विकारा ॥ माइआ मोह का एहु पसारा ॥ सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पंच दूत वसि आइआ ॥ ७ ॥ बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥ फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ सतिगुर भेटे सचु द्रिड़ाए सचु नामु मनि भाइआ ॥ ८ ॥ साचा दरु साचा दरवारा ॥ सचे सेवहि सबदि पिआरा ॥ सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइआ ॥ ९ ॥ घरै अंदरि को घरु पाए ॥ गुर कै सबदे सहजि सुभाए ॥ ओथै सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइआ ॥ १० ॥ दूजै भाइ दुसटा का वासा ॥ भउदे फिरहि बहु मोह पिआसा ॥ कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइआ ॥ ११ ॥ सतिगुर बाझहु संगति न होई ॥ बिनु सबदे पारु न पाए कोई ॥ सहजे गुण रवहि दिनु राती जोती जोति मिलाइआ ॥ १२ ॥ काइआ बिरखु पंखी विचि वासा ॥ अंम्रितु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥ उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइआ ॥ १३ ॥ काइआ सोधहि सबदु वीचारहि ॥ मोह टगउरी भरमु निवारहि ॥ आपे क्रिपा करे सुखदाता आपे मेलि

यह तृष्णा उसकी ही समाप्त होती है जो शब्द-गुरु के अनुरूप आचरण बनाता है। उसी का तन मन शीतल होता है और उसके क्रोध का निवारण हो जाता हैं जो अहंकार को मारकर उस प्रभु में लीन हो जाता है।। १५ ।। उस सच्चे प्रभु की शोभा भी सच्ची है और गुरु की कृपा से वह किसी बिरले को ही प्राप्त हुई है। नानक तो यही विनती करता है कि वह शब्द-गुरु के माध्यम से ही प्रभु में लीन बना रहे।। १६ ।। १ ।। २३ ।। मारू महला ३ ।। हे प्रभु, अपनी कृपा दृष्टि से भक्तों को अपने साथ मिला ले क्योंकि सदैव अपनी लौ लगाकर भक्त तुम्हारा गुणानुवाद करते रहते हैं। हे कर्ता प्रभु, तेरी शरण में ही इनका उद्धार होता है और तू स्वयं ही इनका मेल सम्भव बनाता है।। १ ।। उस पूर्ण प्रभु के शब्द के माध्यम से भक्ति सुहानी लगती है और हे भाई, तेरे अन्तर्मन में सुख बन जाता है। मेरा मन और तन सच्ची भक्ति में लीन बना है और मेरा चित्त उस सच्चे प्रभु में ही लगा है।। २ ।। यह शरीर सदैव अहंकार में जलता रहता है परन्तु यदि तेरी कृपा हो जाए तो पूर्ण गुरु से मिलाप हो जाता है। अन्तर्मन का अज्ञान शब्द के माध्यम से समाप्त होता है और सच्चे गुरु से ही सुख प्राप्त किया जाता है।। ३ ।। अज्ञानी मनमुख अज्ञान का ही आचरण करता है और योनियों में भटकता हुआ बहुत से दुख भोगता रहता है। यम का फन्दा वह कभी भी नहीं काट पाता और अन्त में बहुत दुख उठाता रहता है।। ४ ।। शब्द ही उसके आवागमन को मिटाता है और इस प्रकार वह प्रभु के सच्चे नाम को हृदय में धारण किये रहता है। मन को मार कर वह शब्द-गुरु में लीन होता है और इस प्रकार अहंकार को दूर करके प्रभु में समा जाता है।। ५ ।। आवागमन में ही यह सृष्टि नष्ट होती रहती है और सच्चे गुरु के बिना यहाँ कोई भी स्थिर नहीं बना रहता। जिसके हृदय में शब्द की ज्योति बनी है वहाँ सुख का निवास होता है और व्यक्ति की ज्योति परम ज्योति में मिल जाती है।। ६ ।। माया मोह का ऐसा विस्तार बना है कि काम, क्रोध आदि पाँचों दूत विकारों की बात ही सोचा करते हैं। सच्चे गुरु का यदि सुमिरन किया जाए तभी जीव मुक्त होता है और पाँचों दूत वश में आ जाते हैं।। ७ ।। गुरु के बिना मोह का घोर अंधकार बना रहता है और जीव बार-बार उसी में ही डूब कर भटकता रहता है। सच्चे गुरु से मिलाप के बाद वह सत्य को पक्की तरह से हृदय में धारण करता है और प्रभु का सच्चा नाम उसके मन को भा जाता है।। ८ ।। उस प्रभु का द्वार और दरबार सच्चा है। सच्चे व्यक्ति ही शब्द के माध्यम से उस प्यारे प्रभु का सुमिरन करते हैं। हे प्रभु, तेरी सच्ची धुन है और तेरे गुणों का गायन भी सच्चा है और जीव उन्हें गाता हुआ सत्य में ही लीन हो जाता है। ६ ।। इस शरीर रूपी घर में प्रभु के ठिकाने को कोई बिरला ही जान पाता है और शब्द-गुरु के माध्यम से अपने सहज स्वभाव में स्थित होता है। उस ठिकाने पर शोक और वियोग प्रभावित नहीं करता और जीव स्वाभाविक रूप से ही सहजभाव में लीन हो जाता है।। १० ।। द्वैतभाव में दुष्टों का निवास होता है जो घोर मोह की प्यास में भटकते फिरते हैं; वे बुरी संगति में बैठकर सदैव दुख पाते हैं और दुख से दुख ही उत्पन्न करते हैं।। ११ ।। सच्चे गुरु के बिना वास्तविक संगति नहीं बनती और शब्द के बिना कोई भी पार नहीं उतर पाता। स्वाभाविक रूप से ही जीव प्रभु के गुणों का दिन-रात सुमिरन करते हैं और उनकी ज्योति को प्रभु अपनी ज्योति के साथ मिला लेता है।। १२ ।। इस शरीर रूपी वृक्ष पर मन रूपी पक्षी का निवास है जो शब्द-गुरु में लीन रहकर यदि अमृत नाम को चुगता रहता है तो उसे इधर-उधर उड़कर बिल्कुल नहीं जाना पड़ता और वह स्थिर होकर अपने अन्दर ही निवास प्राप्त कर लेता है।। १३ ।। जो शब्द का चिंतन करते हैं वे काया को निर्मल बना लेते हैं और मोह की ठगबूटी के कारण बने हुए भ्रम का निवारण कर लेते हैं। सुखदाता प्रभु स्वयं ही उन पर कृपा करता है और स्वयं ही मेल-मिलाप का अवसर

मिलाइआ ॥ १४ ॥ सद ही नेड़ै दूरि न जाणहु ॥ गुर कै सबदि नजीकि पछाणहु ॥ बिगसै कमलु किरणि परगासै परगटु करि देखाइआ ॥ १५ ॥ आपे करता सचा सोई ॥ आपे मारि जीवाले अवरु न कोई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपु गवाइ सुखु पाइआ ॥ १६ ॥ २ ॥ २४ ॥

मारू सोलहे महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सचा आपि सवारणहारा ॥ अवर न सूझसि बीजी कारा ॥ गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि सहजे सचि समाई हे ॥ १ ॥ सभना सचु वसै मन माही ॥ गुर परसादी सहजि समाही ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ गुर चरणी चितु लाई हे ॥ २ ॥ सतिगुरु है गिआनु सतिगुरु है पूजा ॥ सतिगुरु सेवी अवरु न दूजा ॥ सतिगुर ते नामु रतन धनु पाइआ सतिगुर की सेवा भाई हे ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ॥ आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ॥ नानक तिन की फिरि गति होवै जि गुरमुखि रहहि सरणाई हे ॥ ४ ॥ गुरमुखि प्रीति सदा है साची ॥ सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ॥ होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ॥ ५ ॥ अंम्रित रसु सतिगुरू चुआइआ ॥ दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ ॥ तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी सहजे सहजि समाई हे ॥ ६ ॥ जिन कउ करतै धुरि लिखि पाई ॥ अनदिनु गुरु गुरु करत विहाई ॥ बिनु सतिगुर को सीझै नाही गुर चरणी चितु लाई हे ॥ ७ ॥ जिसु भावै तिसु आपे देइ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लेइ ॥ आपे क्रिपा करे नामु देवै नानक नामि समाई हे ॥ ८ ॥ गिआन रतनु मनि परगटु भइआ ॥ नामु पदारथु सहजे लइआ ॥ एह वडिआई गुर ते पाई सतिगुर कउ सद बलि जाई हे ॥ ९ ॥ प्रगटिआ सूरु निसि मिटिआ अंधिआरा ॥ अगिआनु मिटिआ गुर रतनि अपारा ॥ सतिगुर गिआनु रतनु अति भारी करमि मिलै सुखु पाई हे ॥ १० ॥ गुरमुखि नामु प्रगटी है सोइ ॥ चहु जुगि निरमलु हछा लोइ ॥ नामे नामि रते सुखु पाइआ नामि रहिआ लिव लाई हे ॥ ११ ॥ गुरमुखि नामु परापति होवै ॥ सहजे जागै सहजे

बना लेता है।। १४ ।। प्रभु सदैव पास में ही है इसे दूर मत समझो और शब्द-गुरु के माध्यम से उसकी पहचान नजदीक ही अर्थात अपने आस पास ही कर लो। तुम्हारा हृदय कमल खिल उठेगा और ज्ञान की किरण तुम्हें प्रकाशित कर देगी और प्रकट रूप से तुम उसे देख सकोगे।। १५ ।। वह सच्चा प्रभु ही स्वयं कर्ता है; वह स्वयं ही मारता और जीवित करता है तथा उसके बिना अन्य कोई नहीं है। हे नानक, प्रभु-नाम से ही बड़प्पन प्राप्त होता है और अपने अहंकार को गँवा कर ही सुख प्राप्त किया जाता है।। १६ ।। २ ।। २४ ।।

मारू सोलहे महला ४   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

प्रभु गुरमुख व्यक्ति को स्वय ही सँवारता है और प्रभु से दूर ले जाने वाला कोई भी दूसरा काम उसे सुझाई नहीं पड़ता। गुरमुख व्यक्ति के हृदय में सत्य बसता है और स्वाभाविक रूप से ही वह सत्य में लीन हो जाता है।। १ ।। सबके हृदय में सत्य बस रहा है और गुरु की कृपा से सभी अपने स्वाभाविक रूप में लीन हो जाते हैं। गुरु का सुमिरन करते हुए सदैव सुख पाया जाता है और गुरु के चरणों में ही चित्त लगाया जाता है।। २ ।। सच्चा गुरु ही ज्ञान है और सच्चा गुरु ही पूजा है इसलिये हमें सब को छोड़कर सच्चे गुरु का ही सुमिरन करना चाहिये। सच्चे गुरु से ही नाम रूपी धन पाया जाता है और सच्चे गुरु की सेवा ही मुझे अच्छी लगी है।। ३ ।। सच्चे गुरु के बिना जो द्वैतभाव में लगे रहते हैं वे आवागमन में भटकते हुए अभागे होकर मर जाते हैं। हे नानक, उनकी भी मुक्ति हो जाती है यदि वे गुरमुख व्यक्ति की शरण में आ जाएँ।। ४ ।। गुरमुख व्यक्ति की प्रीति सदैव सच्ची होती है और सच्चे गुरु से मैं अतुलनीय प्रभु-नाम माँगता हूँ। हे प्रभु, दया करते हुए कृपा करो और मुझे गुरु की शरण में बनाए रखो।। ५ ।। सच्चे गुरु ने अमृत रस प्रदान किया है जो दसवें द्वार के आध्यत्मिक मंडल में प्रगट हो गया है। उस आध्यात्मिक मंडल में अनहद शब्द और वाणी की धुन बजती रहती है और जीव स्वाभाविक रूप से ही सहज भाव में लीन हो जाता है।। ६ ।। जिनको कर्ता प्रभु ने शुरू से ही लिख दिया है प्रतिदिन गुरु-गुरु करते हुए ही उनकी आयु व्यतीत हो जाती है। सच्चे गुरु के बिना कोई भी सफल नहीं होता इसलिये गुरु के चरणों में हमने चित्त लगा लिया है।। ७ ।। जो भा जाता है उसे प्रभु स्वयं ही दे देता है और गुरमुख बनकर वह नाम पदार्थ को प्राप्त करता है। स्वयं ही कृपा करके वह प्रभु-नाम प्रदान करता है और अन्त में नानक नाम में ही लीन हो गया है।। ८ ।। ज्ञान रूपी रत्न जब मन में प्रकट हो गया तो नाम रूपी महान पदार्थ स्वाभाविक ही मिल गया है। यह शोभा तो हमें गुरु से ही प्राप्त हुई है इसलिये हम सदैव सच्चे गुरु पर बलिहारी जाते हैं।। ६ ।। ज्ञान का सूर्य प्रकट हो गया और अज्ञान की रात्रि का अंधकार मिट गया है। गुरु रूपी रत्न से अज्ञान मिट गया है। ज्ञान रत्न रूपी सच्चा गुरु अत्यन्त महान है जो प्रभु की कृपा से ही मिलता है और उसी से ही सुख प्राप्त किया जाता है।। १० ।। गुरमुख को ही नाम की शोभा प्रकट होती है और वह चारों युगों में और सभी लोकों में निर्मल और अच्छा बन जाता है। नाम के माध्यम से ही प्रभु में लीन होकर सुख पाया जाता है और अब जीव नाम में ही लौ लगाए रहता है।। ११ ।। गुरमुख व्यक्ति को ही नाम प्राप्त होता है और अब वह स्वाभाविक रूप से ही जागता और

सोवै ॥ गुरमुखि नामि समाइ समावै नानक नामु धिआई हे ॥ १२ ॥ भगता मुखि अंम्रित है बाणी ॥ गुरमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥ हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥ १३ ॥ हम मूरख अगिआन गिआनु किछु नाही ॥ सतिगुर ते समझ पड़ी मन माही ॥ होहु दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई हे ॥ १४ ॥ जिनि सतिगुरु जाता तिनि एकु पछाता ॥ सरबे रवि रहिआ सुखदाता ॥ आतमु चीनि परम पदु पाइआ सेवा सुरति समाई हे ॥ १५ ॥ जिन कउ आदि मिली वडिआई ॥ सतिगुरु मनि वसिआ लिव लाई ॥ आपि मिलिआ जगजीवनु दाता नानक अंकि समाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥ मारू महला ४ ॥ हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी ॥ सरबे रवि रहिआ घट वासी ॥ तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥ १ ॥ जा कउ राखै हरि राखणहारा ॥ ता कउ कोइ न साकसि मारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी हे ॥ २ ॥ जा जापै किछु किथाऊ नाही ॥ ता करता भरपूरि समाही ॥ सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे ॥ ३ ॥ जो जीआ की वेदन जाणै ॥ तिसु साहिब कै हउ कुरबाणै ॥ तिसु आगै जन करि बेनंती जो सरब सुखा का दाणी हे ॥ ४ ॥ जो जीऐ की सार न जाणै ॥ तिसु सिउ किछु न कहीऐ अजाणै ॥ मूरख सिउ नह लूझु पराणी हरि जपीऐ पदु निरबाणी हे ॥ ५ ॥ ना करि चिंत चिंता है करते ॥ हरि देवै जलि थलि जंता सभतै ॥ अचिंत दानु देइ प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे ॥ ६ ॥ ना करि आस मीत सुत भाई ॥ ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ बिनु हरि नावै को बेली नाही हरि जपीऐ सारंगपाणी हे ॥ ७ ॥ अनदिनु नामु जपहु बनवारी ॥ सभ आसा मनसा पूरै थारी ॥ जन नानक नामु जपहु भव खंडनु सुखि सहजे रैणि विहाणी हे ॥ ८ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइ पूछहु वेद पुराणी हे ॥ ९ ॥ जिसु हरि सेवा लाए सोई जनु लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु

सोता है। गुरमुख नाम में लीन होकर प्रभु में लीन हो जाता हैं और नानक ने भी नाम का ही सुमिरन किया है।। १२ ।। भक्तों के मुख में उस प्रभु की अमृत वाणी ही रहती है और गुरमुख व्यक्ति प्रभु नाम को कह-कहकर उसका वर्णन करते हैं। प्रभु का सुमिरन करते हुए मन सदैव खिला रहता है और मन प्रभु चरणों में लगा रहता है।। १३ ।। हम मूर्ख और अज्ञानी हैं तथा हमें कुछ भी ज्ञान नहीं; सच्चे गुरु से ही हमारे मन को यह समझ आ सकी है। हे प्रभु, दयालु होकर कृपा करो और हमें सच्चे गुरु की सेवा में लगा दो।। १४ ।। जिसने सच्चे गुरु को जान लिया है उसने एक प्रभु को पहचान लिया है और उसके लिये सुखदाता प्रभु ही सबमें रमण करने वाला है। उन्होंने अपनी आत्मा में ही उसे पहचानकर परम पद प्राप्त कर लिया है और उनकी सुरति सेवा करने में ही लीन बनी रहती है।। १५ ।। जिनको प्रभु की ओर से ही शोभा प्राप्त हो गई है सच्चा गुरु उनकी लौ के कारण उनके मन में आ बसा है। उन्हें जगतजीवन दाता स्वयं ही आ मिला है और नानक तो उस प्रभु की गोदी में लीन हो गया है।। १६ ।। १ ।। मारू महला ४ ।। प्रभु अगम्य, अगोचर और सदैव अविनाशी बना रहकर सब हृदयों मे बसा रहता है। उसके बिना अन्य कोई दाता नहीं है इसलिए हे प्राणी, उस प्रभु की ही वन्दना तथा सेवा करते रहो।। १ ।। वह रक्षक प्रभु जिसकी रक्षा करता है उसे कोई भी नहीं मार सकता। हे सन्तजनों, ऐसे प्रभु का सुमिरन करो जिसकी वाणी सर्वोत्तम है।। २ ।। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी भी जगह और कुछ भी नहीं है और केवल कर्ता प्रभु ही भरपूर रूप से समाया हुआ है। जिसने प्राणी के सूखे हृदय को फिर हरा-भरा कर दिया उस कौतुक करने वाले प्रभु का ही सुमिरन करते रहो।। ३ ।। मैं उस मालिक पर कुर्बान जाता हूँ जो जीवों की वेदना को जानने वाला है। हे प्रभु के सेवक, उसके आगे विनती करो जो सब सुखों का दान देने वाला है।।४।। जो किसी के हृदय की खबर ही नहीं रखता उस मूर्ख को कुछ भी नहीं कहना चाहिए। हे प्राणी, मूर्ख व्यक्ति से झगड़ा मत करो और उस निर्वाण पद रूपी प्रभु का सुमिरन करते रहो।। ५ ।। हे जीव, तू चिंता मत कर। वह कर्ता प्रभु चिन्ता करने वाला है। जल, स्थल में सभी जीवों को वह प्रभु ही देता है। पत्थरों के कीड़ों को पत्थरों में भी स्वयं ही वह प्रभु दान देता है।। ६ ।। तू किसी मित्र, पुत्र और भाई से आशा मत लगाए रह और ना ही किसी साहूकार के व्यवहार की पराई आशा बनाए रख क्योंकि प्रभु नाम के बिना कोई साथी नहीं है इसलिए उस प्रभु का ही सुमिरन करते रहना चाहिए।। ७ ।। रोज़ाना उस प्रभु का ही नाम जपो जिससे तुम्हारी सभी आशाऐं और इच्छाएं पूरी हो जाएँ। हे दास नानक, उस भवखंडन प्रभु के नाम का जाप करते रहो जिससे जीवन रूपी रात्रि सहज सुख में व्यतीत हो जाए।। ८ ।। जिसने प्रभु का सुमिरन किया उसने सुख प्राप्त कर लिया है और स्वाभाविक रूप से ही वह प्रभु नाम में लीन हो गया है। जो उसकी शरण में आ जाता है वह उसके सम्मान की रक्षा करता है इस तथ्य को तो वेदों और पुराणों से भी जाना जा सकता है।। ९ ।। वही सेवक प्रभु की सेवा में लगता है जिसे प्रभु सेवा में लगाता है; शब्द-गुरु के माध्यम से उसका भ्रम और भय भाग खड़ा होता है। ऐसा व्यक्ति घर में रहता हुआ भी वैसे ही अलिप्त बना रहता है जैसे जल में कमल

रहै विचि पाणी हे ॥ १० ॥ विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ सो तपु पूरा साई सेवा जो हरि मेरे मनि भाणी हे ॥ ११ ॥ हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ तू सरब जीआ का अंतरजामी ॥ हउ मागउ दानु तुझै पहि करते हरि अनदिनु नामु वखाणी हे ॥ १२ ॥ किस ही जोरु अहंकार बोलण का ॥ किस ही जोरु दीबान माइआ का ॥ मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै निमाणी हे ॥ १३ ॥ निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ जिन का पखु करहि तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥ १४ ॥ हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइआ ॥ तिनी गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ बिनु सेवा पछोताणी हे ॥ १५ ॥ तू सभ महि वरतहि हरि जगंनाथु ॥ सो हरि जपै जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ हरि की सरणि पइआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥ १६ ॥ २ ॥

मारू सोलहे महला ५   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कला उपाइ धरी जिनि धरणा ॥ गगनु रहाइआ हुकमे चरणा ॥ अगनि उपाइ ईधन महि बाधी सो प्रभु राखै भाई हे ॥ १ ॥ जीअ जंत कउ रिजकु संबाहे ॥ करण कारण समरथ आपाहे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥ २ ॥ मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ सासि ग्रासि होइ संगि समालिआ ॥ सदा सदा जपीऐ सो प्रीतमु वडी जिसु वडिआई हे ॥ ३ ॥ सुलतान खान करे खिन कीरे ॥ गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ गरब निवारण सरब सधारण किछु कीमति कही न जाई हे ॥ ४ ॥ सो पतिवंता सो धनवंता ॥ जिसु मनि वसिआ हरि भगवंता ॥ मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इह स्रिसटि उपाई हे ॥ ५ ॥ प्रभ आए सरणा भउ नही करणा ॥ साधसंगति निहचउ है तरणा ॥ मन बच करम अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥ ६ ॥ गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ जनम मरण की जोनि न भविआ ॥ दूख बिनास कीआ सुखि डेरा जा त्रिपति रहे आघाई हे ॥ ७ ॥ मीतु हमारा सोई

अलेप बना रहता है।। १० ।। अहंकार में की हुई सेवा सफल नहीं मानी जाती और जीव जन्मता, मरता आवागमन में पड़ा ही रहता है। वही तपस्या और वही सेवा पूर्ण मानी जाती है जो मेरे प्रभु के मन को भा जाती है।। ११ ।। हे स्वामी, मैं तेरे कौन से गुणों का बखान करूं, तू तो सभी जीवों का अन्तर्यामी है। हे प्रभु, मैं तुझसे यही दान माँगता हूँ कि मैं प्रतिदिन प्रभु-नाम का ही उच्चारण करता रहूँ।। १२ ।। किसी को तो बहुत बोलते चले जाने का अहंकार है और किसी का जोर तथा आसरा धन सम्पदा का है। मेरा तो प्रभु के बिना दूसरा कोई आसरा नहीं है; हे कर्ता प्रभु, मुझ बलहीन की रक्षा कर।। १३ ।। तुझे अच्छा लग जाए तो तू सम्मान विहीन लोगों का भी सम्मान करता है; अन्य कितने ही लोग झख मारते हुए आवागमन में पड़े रहते हैं। हे प्रभु, तू जिसके पक्ष में हो जाता है उनकी कही हुई बात तू ही सबसे उपर ले आता है अर्थात उन्हीं की बात मानी जाती है।। १४ ।। जिन्होंने सदैव प्रभु-नाम का सुमिरन किया है उन्होंने गुरु की कृपा से परम पद प्राप्त कर लिया है तथा जिन्होंने सेवा नहीं की वे पछतावे में पड़े रहते हैं।। १५ ।। हे जगत के नाथ प्रभु, तू सबमें कार्यशील बना है; प्रभु का जाप वही करता है जिसके माथे पर गुरु का हाथ रखा होता है। प्रभु की शरण में आने से ही प्रभु का जाप होता है और दास नानक तो प्रभु के दासों का भी दास है।। १६ ।। २।।

मारू सोलहे महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जिसने जीवन-शक्ति को पैदा करके धरती को स्थापित किया है, आकाश को अपने हुकुम रूप चरणों में टिका रखा है, अग्नि को उत्पन्न करके लकड़ी में बाँधकर रखा है वही प्रभु, हे भाई, हमारी रक्षा करता है।। १ ।। जीव जन्तुओं को रोज़ी देने वाला, स्वयं ही सब कुछ करने-कराने में समर्थ और क्षण भर में स्थापित करके नष्ट कर देने वाला प्रभु ही हे जीव, तेरा सहायक है।। २ ।। उस प्रियतम प्रभु का सदैव जाप करना चाहिए जिसकी शोभा महान है, जिसने माता के गर्भ में ही जीव का पालन पोषण किया है और जिसने प्रत्येक श्वास और ग्रास बनकर हमारी सम्भाल की है।। ३ ।। बड़े बड़े सुल्तानों और खानों को वह छोटे-छोटे कीड़े बना देता है और गरीबों पर कृपा करके वह प्रभु उन्हें अमीर बना देता है। वह प्रभु अहंकार का निवारण करने वाला और सर्वसाधारण में वैसा ही बना रहने वाला है; उसके मूल्य को नहीं आँका जा सकता।। ४ ।। जिसके मन में वह प्रभु बस गया है वही सम्मानपूर्ण और धनवान है। जिस प्रभु ने सृष्टि को उत्पन्न किया है वही हमारा भाई, बन्धु, पुत्र, माता और पिता है।। ५ ।। जब प्रभु की शरण में आ गए तो फिर कोई भय नहीं रहता और साधसंगति के माध्यम से तो आवश्यक रूप से पार उतरना ही है। जो मन, वचन और कर्म से उस कर्त्ता प्रभु का सुमिरन करता रहता है उसको कभी भी कोई सजा नहीं मिलती।। ६ ।। वह गुण निधान प्रभु जिसने तन मन से याद किया है वह फिर जन्म-मरण की योनियों में नहीं भटकता। यदि वह तृप्त बना रहकर प्रसन्तापूर्वक चलता रहे तो दुख विनष्ट होकर उसके पास सुखों का डेरा लग जाता है। ।। ७ ।। वही प्रभु हमारा मित्र है जो

सुआमी ॥ थान थनंतरि अंतरजामी ॥ सिमरि सिमरि पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे ॥ ८ ॥ हरि का नामु कोटि लख बाहा ॥ हरि जसु कीरतनु संगि धनु ताहा ॥ गिआन खड़गु करि किरपा दीना दूत मारे करि धाई हे ॥ ९ ॥ हरि का जापु जपहु जपु जपने ॥ जीति आवहु वसहु घरि अपने ॥ लख चउरासीह नरक न देखहु रसकि रसकि गुण गाई हे ॥ १० ॥ खंड ब्रहमंड उधारणहारा ॥ ऊच अथाह अगंम अपारा ॥ जिस नो क्रिपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥ ११ ॥ बंधन तोड़ि लीए प्रभि मोले ॥ करि किरपा कीने घर गोले ॥ अनहद रुण झुणकारु सहज धुनि साची कार कमाई हे ॥ १२ ॥ मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥ बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै जग महि सोभ सुहाई हे ॥ १३ ॥ जै जै कारु जपहु जगदीसै ॥ बलि बलि जाई प्रभ अपुने ईसै ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न दीसै एका जगति सबाई हे ॥ १४ ॥ सति सति सति प्रभु जाता ॥ गुर परसादि सदा मनु राता ॥ सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे एकंकारि समाई हे ॥ १५ ॥ भगत जना का प्रीतमु पिआरा ॥ सभै उधारणु खसमु हमारा ॥ सिमरि नामु पुंनी सभ इछा जन नानक पैज रखाई हे ॥ १६ ॥ १ ॥

मारू सोलहे महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

संगी जोगी नारि लपटाणी ॥ उरझि रही रंग रस माणी ॥ किरत संजोगी भए इकत्रा करते भोग बिलासा हे ॥ १ ॥ जो पिरु करै सु धन ततु मानै ॥ पिरु धनहि सीगारि रखै संगानै ॥ मिलि एकत्र वसहि दिनु राती प्रिउ दे धनहि दिलासा हे ॥ २ ॥ धन मागै प्रिउ बहु बिधि धावै ॥ जो पावै सो आणि दिखावै ॥ एक वसतु कउ पहुचि न साकै धन रहती भूख पिआसा हे ॥ ३ ॥ धन करै बिनउ दोऊ कर जोरै ॥ प्रिअ परदेसि न जाहु वसहु घरि मोरै ॥ ऐसा बणजु करहु ग्रिह भीतरि जितु उतरै भूख पिआसा हे ॥ ४ ॥ सगले करम धरम जुग साधा ॥ बिनु हरि रस सुखु तिलु नही लाधा ॥ भई क्रिपा नानक सतसंगे तउ

सभी स्थानों में अन्तर्यामी बनकर स्थित है। हे जीव, तू उस पूर्ण परमेश्वर का सुमिरन करता रह क्योंकि वही चिन्ताओं और गणनाओं को मिटाने वाला है।। ८ ।। प्रभु के नाम में लाखों करोड़ों भुजाओं की शक्ति है और प्रभु गुणानुवाद का कीर्तन उसके साथ धन के रूप में है। प्रभु ने कृपा करके ज्ञान का खड्ग जीव को दिया है जिससे वह विकार रूपी दूतों पर धावा करके उन्हें मार लेता है।। ६ ।। किसी अन्य जाप के स्थान पर प्रभु नाम का ही जाप करो और इस प्रकार संसार के खेल को जीतकर अपने मूल घर परमात्मा में निवास बना लो। रस लेकर प्रभु के गुणों का गायन करो और चौरासी लाख नरकों को देखने की नौबत मत आने दो।। १० ।। खण्डों, ब्रह्माण्डों का उद्धार करने वाला वह प्रभु ऊँचा, अथाह, अगम्य एवं अपरम्पार है। प्रभु जिस पर अपनी कृपा करे वही सेवक उसकी आराधना करता है।। ११ ।। बन्धनों को तोड़कर प्रभु ने मुझे मोल ले लिया है और कृपा करके अपना गुलाम बना लिया है। उसके अनहद नाद की झंकार स्वाभाविक रूप से ही बजती रहती है और प्रभु का सेवक सत्य को जीवन में उतारने में लगा रहता है।। १२ ।। हे प्रभु ,जबसे मन में तुम्हारा प्रेम बन गया है मेरी चतुराई और अहंकार का विनाश हो गया है। मुझे मेरे अपने प्रभु ने अपने साथ मिला लिया है और इस संसार में मेरी शोभा बन गई है।। १३ ।। उस प्रभु की जय-जयकार करते हुए उसका सुमिरन करो और मैं तो अपने प्रभु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ। उसके बिना दूसरा कोई दिखाई नहीं देता और सारे संसार में सबमें केवल एक वही रमण कर रहा है।। १४ ।। मैंने उस प्रभु को सत्य के रूप में ही जाना है और गुरु की कृपा से मेरा मन सदैव उसी में ही लीन बना है। तेरे सेवक उसका सुमिरन करते हुए आध्यात्मिक तौर पर जीवित बने रहते हैं और उस एक ही ओअंकार प्रभु मे लीन बने रहते हैं।। १५ ।। वह प्रभु भक्तों का प्यारा प्रियतम है और वह हमारा मालिक सब का उद्धार करने वाला है। उसके नाम का सुमिरन करके हमारी सभी इच्छाएं पूरी हो गई है और उसी ने ही दास नानक की इज़्ज़त बचा ली है।। १६ ।। १ ।।

मारू सोलहे महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

यह देही जीवात्मा को अपना संगी बनाकर उसके साथ लिपटी हुई उसी में उलझकर रंगों और रसों का भोग कर रही है। कर्मों के संस्कारों के माध्यम से मिलकर देह और जीवात्मा इकट्ठे हो गए हैं तथा भोग विलास में लगे हैं।। १ ।। जो प्रियतम करता है वह जीव स्त्री तत्काल मान जाती है और प्रियतम भी देही रूपी स्त्री का शृंगार बनाकर उसे अपने साथ रखता हैं। ये दोनों इकट्ठे होकर दिन रात साथ ही बसते हैं तथा प्रियतम जीव स्त्री को दिलासा देता रहता है।। २ ।। देह रूपी स्त्री धन मांगती है और जीवात्मा रूपी प्रियतम अनेकों विधियों से दौड़ता भागता रहता है तथा जो कुछ भी पाता है वह देही के सामने रख देता है। केवल एक नाम रूपी पदार्थ तक यह पहुँच नहीं पाता और यह शरीर रूपी स्त्री भूखी प्यासी ही बनी रहती है।। ३ ।। देही रूपी स्त्री दोनों हाथ जोड़कर विनती करती है कि हे प्रियतम, तुम मुझे छोड़कर परदेस मत जाओ और मेरे घर में ही बसते रहो। इस शरीर रूपी घर में ही ऐसा व्यापार करो जिससे सारी भूख प्यास समाप्त हो जाए।। ४ ।। सभी प्रकार के धर्म-कर्म और योग की साधनाएँ मैंने की परन्तु हरि रस के बिना मुझे तिल मात्र भी सुख प्राप्त नहीं हुआ। हे नानक, जब सतसंगति में प्रभु की कृपा हुई तब

धन पिर अनंद उलासा हे ॥ ५ ॥ धन अंधी पिरु चपलु सिआना ॥ पंच ततु का रचनु रचाना ॥ जिसु वखर कउ तुम आए हहु सो पाइओ सतिगुर पासा हे ॥ ६ ॥ धन कहै तू वसु मै नाले ॥ प्रिअ सुखवासी बाल गुपाले ॥ तुझै बिना हउ कित ही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे ॥ ७ ॥ पिरि कहिआ हउ हुकमी बंदा ॥ ओहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न छंदा ॥ जिचरु राखै तिचरु तुम संगि रहणा जा सदे त ऊठि सिधासा हे ॥ ८ ॥ जउ प्रिअ बचन कहे धन साचे ॥ धन कछू न समझै चंचलि काचे ॥ बहुरि बहुरि पिर ही संगु मागै ओहु बात जानै करि हासा हे ॥ ९ ॥ आई आगिआ पिरहु बुलाइआ ॥ ना धन पुछी न मता पकाइआ ॥ ऊठि सिधाइओ छूटरि माटी देखु नानक मिथन मोहासा हे ॥ १० ॥ रे मन लोभी सुणि मन मेरे ॥ सतिगुरु सेवि दिनु राति सदेरे ॥ बिनु सतिगुर पचि मूए साकत निगुरे गलि जम फासा हे ॥ ११ ॥ मनमुखि आवै मनमुखि जावै ॥ मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ जितने नरक से मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥ १२ ॥ गुरमुखि सोइ जि हरि जीउ भाइआ ॥ तिसु कउणु मिटावै जि प्रभि पहिराइआ ॥ सदा अनंदु करे आनंदी जिसु सिरपाउ पइआ गलि खासा हे ॥ १३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ सरणि के दाते बचन के सूरे ॥ ऐसा प्रभु मिलिआ सुखदाता विछुड़ि न कत ही जासा हे ॥ १४ ॥ गुण निधान किछु कीम न पाई ॥ घटि घटि पूरि रहिओ सभ ठाई ॥ नानक सरणि दीन दुख भंजन हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥ १५ ॥ १ ॥ २ ॥

मारू सोलहे महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

करै अनंदु अनंदी मेरा ॥ घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु नाही को दूजा हे ॥ १ ॥ हरखवंत आनंत दइआला ॥ प्रगटि रहिओ प्रभु सरब उजाला ॥ रूप करे करि वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥ २ ॥ आपे कुदरति करे वीचारा ॥ आपे ही सचु करे पसारा ॥ आपे खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥ ३ ॥ साचा तखतु सची पातिसाही ॥ सचु खजीना

यह शरीर रूपी स्त्री और आत्मा रूपी प्रियतम आनन्द और उल्लास में स्थित हो गए हैं। अज्ञानता के कारण देही रूपी स्त्री अन्धी बनी है परन्तु आत्मा रूपी प्रियतम चंचल और सयाना है। उसी ने ही ये पाँचों तत्वों की रचना रचाई हुई है। हे भाई, जिस सौदे के लिए तुम यहाँ आए हो उसे सच्चे गुरु के पास से ही प्राप्त किया जाता है।। ६ ।। देही रूपी स्त्री आत्मा रूपी पति को कहती है तुम मेरे साथ ही बसते रहो परन्तु प्रियतम आत्मा सुख में बसे रहने वाले बच्चों की तरह चंचल है। हे प्रिय, तेरे बिना मैं किसी भी योग्य नहीं हूँ अतः तू मुझे वचन दे कि तू मुझे छोड़कर नहीं जाएगा।। ७ ।। जीवात्मा कहती है कि मैं तो हुकुम का बाँधा हुआ जीव हूँ। वह मेरा मालिक महान है जिसे किसी का भी डर और मोहताजी नहीं है। जब तक वह रखेगा मुझे तभी तक तेरे साथ रहना है और जब वह प्रभु बुला लेगा तो मुझे उठकर जाना ही होगा।। ८ ।। प्रियतम आत्मा ने जो देह रूपी स्त्री से सच्चे वचन कहे वह स्त्री उसमें से कुछ भी नहीं समझती और चंचल बनी हुई अस्थिर बनी रहती है। यह बार -बार प्रियतम का साथ ही माँगती है परन्तु प्रियतम इस बात को हँसी मज़ाक ही मानता है।। ६ ।। जब प्रभु का आदेश आ गया तो प्रियतम को बुला लिया गया; ना तो देह रूपी स्त्री को पूछा गया और ना ही उससे कोई सलाह ली गई। वह इस मिट्टी की देह को त्यागी हुई स्त्री जानकर चल पड़ा अतः हे नानक, तू देख ले कि यह मोह झूठा ही था।। १० ।। हे मेरे लोभी मन, तू मेरी बात सुन ले और दिन रात सदैव उस सच्चे गुरु परमात्मा का सुमिरन करता रह। सच्चे गुरु से विहीन बने हुए प्रभु से टूटे हुए जीव मर खप गए हैं और गुरु विहीनों के गले में यम का फँदा पड़ा रहता है।। ११ ।। मनमुख व्यक्ति इस संसार में आता है, यहाँ से चला जाता है और मनमुख उन्हें भोगता है तथा गुरमुख पर उनका जरा सा भी प्रभाव नहीं पड़ता।। १२ ।। गुरमुख वही हैं जो प्रभु को अच्छे लगते हैं। जिसे प्रभु आदर देता है उसे भला कौन नष्ट कर सकता है। जिसको प्रभु की ओर से गले में विशेष सम्मान वस्त्र पहनाया गया है वह आनन्दित व्यक्ति सदैव आनन्द में लीन बना रहता है।। १३ ।। मैं पूरे सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ क्योंकि वही शरण का दाता है और वचन का पक्का शूरवीर है। ऐसा सच्चा गुरु प्रभु जब मिल जाता है तो वह सुखदाता फिर बिछुड़कर कहीं नहीं जाता।। १४ ।। गुणों के भण्डार उस प्रभु की कीमत को जरा सा भी नहीं जाना जा सकता। वह घट-घट में और सभी स्थानों में परिपूर्ण बना रहता है। नानक तो दीनों के दुखों को दूर करने वाले उस प्रभु की शरण में है और हे प्रभु, मैं तो तेरे दासों की भी चरण धूलि हूँ।।१५ ।।१।।२।।

मारू सोलहे महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह आनन्द रूप मेरा प्रभु स्वयं ही आनन्दित बना रहता है; वह घट-घट में विराजमान है और हर एक के कर्मों के अनुसार ही उसका निपटारा करता है। वह साहूकारों से भी बड़ा सच्चा मालिक है और उसकी तरह का दूसरा कोई नहीं है।। १ ।। वह प्रसन्न बना रहने वाला दयालु अनन्त है। वही सबमें प्रकाश बनकर प्रकट बना रहता है। रूप और आकारों की रचना करके वह उन्हें देखकर खिला रहता है और स्वयं ही अपनी पूजा करता रहता है अर्थात प्रभु कभी तो पूज्य होने का स्वाँग भरता है और कभी पुजारी होने का खेल खेलता है।। २ ।। अपनी शक्ति का विचार वह स्वयं ही करता है और स्वयं ही प्रसार करता है। दिन रात वह स्वयं ही जीवों को खेल खिलाता रहता है और स्वयं ही उन्हें सुन-सुनकर प्रसन्न होता रहता है।। ३ ।। उसका सिंहासन भी सच्चा है और उसका राज्य विस्तार भी सत्य है। सत्य ही उसका खजाना है

साचा साही ॥ आपे सचु धारिओ सभु साचा सचे सचि वरतीजा हे ॥ ४ ॥ सचु तपावसु सचे केरा ॥ साचा थानु सदा प्रभ तेरा ॥ सची कुदरति सची बाणी सचु साहिब सुखु कीजा हे ॥ ५ ॥ एको आपि तूहै वड राजा ॥ हुकमि सचे कै पूरे काजा ॥ अंतरि बाहरि सभु किछु जाणै आपे ही आपि पतीजा हे ॥ ६ ॥ तू वड रसीआ तू वड भोगी ॥ तू निरबाणु तूहै ही जोगी ॥ सरब सूख सहज घरि तेरै अमिउ तेरी द्रिसटीजा हे ॥ ७ ॥ तेरी दाति तुझै ते होवै ॥ देहि दानु सभसै जंत लोऐ ॥ तोटि न आवै पूर भंडारै त्रिपति रहे आघीजा हे ॥ ८ ॥ जाचहि सिध साधिक बनवासी ॥ जाचहि जती सती सुखवासी ॥ इकु दातारु सगल है जाचिक देहि दानु स्रिसटीजा हे ॥ ९ ॥ करहि भगति अरु रंग अपारा ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ भारो तोलु बेअंत सुआमी हुकमु मंनि भगतीजा हे ॥ १० ॥ जिसु देहि दरसु सोई तुधु जाणै ॥ ओहु गुर कै सबदि सदा रंग माणै ॥ चतुरु सरूपु सिआणा सोई जो मनि तेरै भावीजा हे ॥ ११ ॥ जिसु चीति आवहि सो वेपरवाहा ॥ जिसु चीति आवहि सो साचा साहा ॥ जिसु चीति आवहि तिसु भउ केहा अवरु कहा किछु कीजा हे ॥ १२ ॥ त्रिसना बूझी अंतरु ठंढा ॥ गुरि पूरे लै तूटा गंढा ॥ सुरति सबदु रिद अंतरि जागी अमिउ झोलि झोलि पीजा हे ॥ १३ ॥ मरै नाही सद सद ही जीवै ॥ अमरु भइआ अबिनासी थीवै ॥ ना को आवै ना को जावै गुरि दूरि कीआ भरमीजा हे ॥ १४ ॥ पूरे गुर की पूरी बाणी ॥ पूरै लागा पूरे माहि समाणी ॥ चड़ै सवाइआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे ॥ १५ ॥ बारहा कंचनु सुधु कराइआ ॥ नदरि सराफ वंनी सचड़ाइआ ॥ परखि खजानै पाइआ सराफी फिरि नाही ताईजा हे ॥ १६ ॥ अंम्रित नामु तुमारा सुआमी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ संतसंगि महा सुखु पाइआ देखि दरसनु इहु मनु भीजा हे ॥ १७ ॥ १ ॥ ३ ॥

मारू महला ५ सोलहे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु गोपालु गुरु गोविंदा ॥ गुरु दइआलु सदा बखसिंदा ॥ गुरु सासत सिम्रिति खटु करमा

और वह ही सच्चा साहूकार है। उस सत्य प्रभु ने ही पूर्ण सत्य को धारण कर रखा है और उस सच्चे प्रभु से सत्य ही कार्यशील बना रहता है।। ४ ।। उस सच्चे का न्याय भी सच्चा है और हे प्रभु, तेरा स्थान भी सदैव सच्चा बना रहने वाला है। तेरी शक्ति और वाणी दोनों ही सच्चे हैं और सच्चे साहिब के रूप में तुमने सब ओर सुख कर दिया है।। ५ ।। एक तू ही बड़ा राजा है और सच्चे हुकुम के रूप में तेरे सभी कार्य पूर्ण बने रहते हैं। अन्दर बाहर तू ही सब कुछ जानता है और तू अपने आप ही अपने आप से प्रसन्न बना रहता है।। ६ ।। तू ही बड़ा रसिक और महान भोगी है। तू ही अलेप बना रहने वाला है और तू ही योगी है। तेरे घर में ही सभी सुख और सहजभाव हैं तथा तेरी ही दृष्टि से अमृत झरता रहता है।। ७ ।। तेरा दान केवल तू ही कर सकता है और तू ही सभी लोकों के जीवों को दान देता है। तेरे भण्डार भरे रहते हैं; उनमें कोई भी कमी नहीं आती और तू सदैव तृप्त बना रहता है।। ८ ।। सिद्ध, साधक और वनवासी सभी तुझसे याचना करते हैं; यति त्यागी और सुखों में भोग करने वाले भी तुझ से ही माँगते हैं। दाता तो एक प्रभु ही है और याचक सभी हैं; हे प्रभु, तू सारी सृष्टि को दान देता रह।। ६ ।। तू ही भक्ति के अनेकों रंगों को कार्यशील करता है और तू ही क्षणभर में बनाकर बिगाड़ने वाला है। तू अनन्त स्वामी अत्यन्त भारी है और तेरा हुकुम मानकर ही तेरे भक्त कहलाया जाता है।। १० ।। जिसे तूने दर्शन दिया है वही तुझे जानता है और वही शब्द गुरु के माध्यम से सदैव प्रभु प्रेम का आनन्द लेता रहता है। वही चतुर, सुन्दर और सयाना है जो तेरे मन को भा जाता है।। ११ ।। जो तुझे चित्त में बनाए रहता है वह बेपरवाह हो जाता है। जिसे तू याद रहता है वही सच्चा साहूकार हो जाता है। जिसे तू याद रहता है उसे फिर भला कैसा भय और कोई भला उसका क्या कर सकता है।। १२ ।। जिसकी तृष्णा बुझ गई उसका अन्तर्मन ठण्डा हो जाता है और पूर्ण गुरु से मिलकर वह टूटा व्यक्ति फिर प्रभु से जुड़ जाता है। उसकी सुरति और शब्द हृदय के अन्दर जग जाते हैं और वह भरपूर रूप से आनन्दित होकर अमृत का पान करता है।। १३ ।। ऐसा व्यक्ति मरता नहीं सदैव जीवित ही बना रहता है और अमर होकर अविनाशी हो जाता है। गुरु इस भ्रम को दूर कर देता है कि वास्तव में ना तो कोई कहीं आता है और ना कोई कहीं जाता है अर्थात् आत्म रूप में वह परमात्मा ही सब ओर सदैव व्याप्त बना रहता है।। १४ ।। पूर्ण गुरु की वाणी भी पूर्ण है। वह पूर्ण को ही समझ आती है और पूर्ण में ही समा जाती है। उसका रंग सदैव बढ़ता चढ़ता रहता है और कभी तनिक सा भी अपने प्रभाव में कम नहीं होता।। १५ ।। सोने को पूर्ण शुद्ध जब कर लिया जाता है तो वह गुरु रूपी सर्राफ की दृष्टि में सच्चा साबित हो जाता है। वह गुरु रूपी सर्राफ उसे परख कर अपने खजाने में डाल लेता है और अब उसे फिर गर्म करके तपाया नहीं जाता।। १६ ।। हे स्वामी, तुम्हारा नाम अमृत है और दास नानक सदैव उस पर कुर्बान जाता है। सन्त पुरुषों की संगति में मैंने महान सुख प्राप्त किया है और उनके दर्शन करके यह मन प्रसन्न हो उठा है।। १७ ।। १ ।। ३ ।।

मारू महला ५ सोलहे   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

गुरु ही धरती का पालन करने वाला है, गुरु ही गोविन्द परमात्मा है, गुरु ही दयालु है और गुरु ही सदैव दान देने वाला है। शास्त्र, स्मृति और षटकर्म सब कुछ गुरु है

गुरु पवित्रु असथाना हे ॥ १ ॥ गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ गुरु सिमरत जम संगि न फासहि ॥ गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥ २ ॥ गुर का सेवकु नरकि न जाए ॥ गुर का सेवकु पारब्रहमु धिआए ॥ गुर का सेवकु साधसंगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥ ३ ॥ गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥ कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै मानां हे ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु गुरू दिखाइआ ॥ भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥ गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर द्रिड़ाइआ गिआनां हे ॥ ५ ॥ गुरि द्रिसटाइआ सभनी ठांई ॥ जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ ऊच ऊन सभ एक समानां मनि लागा सहजि धिआना हे ॥ ६ ॥ गुरि मिलिऐ सभ त्रिसन बुझाई ॥ गुरि मिलिऐ नह जोहै माई ॥ सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अंम्रितु पी मानां हे ॥ ७ ॥ गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ आपि सुणी तै आपि वखाणी ॥ जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानां हे ॥ ८ ॥ सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥ जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानां हे ॥ ९ ॥ १ ॥ ४ ॥

मारू सोलहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा ॥ सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ वरनु जाति चिहनु नही कोई सभ हुकमे स्रिसटि उपाइदा ॥ १ ॥ लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥ २ ॥ कीता होवै तिसु किआ कहीऐ ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ ॥ जिसु आपि भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा ॥ ३ ॥ हरख सोग का नगरु इहु कीआ ॥ से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥ त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा ॥ ४ ॥ अनिक करम कीए बहुतेरे ॥ जो कीजै सो बंधनु पैरे ॥ कुरुता बीजु बीजे नही जंमै सभु लाहा मूलु गवाइदा ॥ ५ ॥ कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि जपीऐ लाइ धिआना ॥

और गुरु ही पवित्र स्थान है।। १ ।। गुरु के सुमिरन से सभी पाप भाग खड़े होते हैं और गुरु का सुमिरन करते हुए को यम के साथ फँसना नहीं पड़ता। गुरु के सुमिरन से मन निर्मल हो जाता है और गुरु ही हमारे अभिमान को समाप्त कर देता है।। २ ।। गुरु का सेवक नरक में नहीं जाता और गुरु का सेवक परब्रह्म प्रभु का सुमिरन करता रहता है। साधसंगति भी गुरु के सेवक को ही प्राप्त होती है और गुरु ही सदैव आध्यात्मिक जीवन का दान जीवों को देता रहता हैं।। ३ ।। गुरु के द्वार पर ही प्रभु का कीर्तन सुनना चाहिए और सच्चे गुरु से मिलाप करके हरि यश को मुख से कहते रहना चाहिए। सच्चा गुरु ही कलह और क्लेश मिटाता है और वह प्रभु ही अपने दरबार में बड़प्पन प्रदान करता है।। ४ ।। गुरु ही अगम्य, अगोचर प्रभु दिखा देता है और भूले हुए को सही मार्ग पर सच्चा गुरु ही डालता है। गुरु के सेवक को भक्ति के कारण कोई भी विघ्न नहीं पड़ता क्योंकि उसे गुरु ने प्रभु का पूर्ण ज्ञान हृदय में पक्का किया होता है।। ५ ।। गुरु ने ही परमात्मा को सब स्थानों में बसा हुआ दिखा दिया है और बता दिया है कि जल-स्थल अर्थात सब में वह धरती का मालिक प्रभु ही व्याप्त है। ऊँचा और नीचा सब उसके लिये एक समान है और यह जानकर मेरा मन उसके सहज ध्यान में लीन हो गया है।। ६ ।। गुरु को मिलने से सभी तृष्णाएँ बुझ जाती हैं और गुरु से मिलाप हो जाने पर फिर माया दुख नहीं देती। पूर्ण गुरु ने ही सत्य और सन्तोष प्रदान किया है और गुरु ने ही अमृत नाम दिया है और अन्यों को पिलाया है।। ७ ।। गुरु की वाणी सब में व्याप्त हो जाती है और वह गुरु स्वयं ही सुनता है और स्वयं ही उसका उच्चारण करता है। जिस-जिसने उसका जाप किया है वही पार उतर गए हैं और उन्होंने ही उसके अटल स्थान को प्राप्त कर लिया है।। ८ ।। सच्चे गुरु की महिमा तो सच्चा गुरु ही जानता है और वह जो कुछ भी करता है अपनी मर्जी से करता है। तेरे सेवक तो साधु पुरुषों की चरण धूलि की याचना करते हैं और हे नानक, सदैव उस पर कुर्बान होते रहते हैं।। ६ ।। १ ।। ४ ।।

मारू सोलहे महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

वह माया की कालिमा से रहित आदि प्रभु निराकार है और सबमें अलिप्त होकर कार्यशील है। उसका कोई वर्ण, जाति या चिन्ह विशेष नहीं है। वह अपने ही हुकुम रूपी विधान के अन्तर्गत सृष्टि उत्पन्न करता रहता है।। १ ।। सभी चौरासी लाख योनियों में प्रभु ने मानव को ही बड़प्पन प्रदान किया है कि वह प्रभु से मिल सके। परन्तु इस अवसर से जो व्यक्ति चूक जाता है वह आवागमन में पड़ा दुख प्राप्त करता रहता है।। २ ।। जो प्रभु का किया हुआ है उस किए हुए की प्रशंसा भला क्या की जाए; गुरमुख बनकर प्रभु नाम रूपी पदार्थ को ग्रहण करना चाहिये। प्रभु जिसे स्वयं फँसाता है वही भटकता है और वही समझदार बन जाता है जिसे वह स्वयं समझ देता है।। ३ ।। यह शरीर रूपी नगर हर्ष और शोक का मिला जुला रूप है और इस संसार सागर से वही पार होता है जो सच्चे गुरु की शरण में आ जाता है। वही गुरमुख शोभा प्राप्त करता है जो तीनों गुणों से अलिप्त बना रहे।। ४ ।। जीव अनेकों कर्म करता है परन्तु जो-जो भी कर्म यह करता जाता है वे इसके पैरों के बन्धन बन जाते हैं। बेमौसम का बीज बोने से वह बीज अंकुरित नहीं होता और इस प्रकार यह जीव अपना मूल धन और लाभ दोनों ही गँवा लेता है।। ५ ।। कलियुग में तो प्रभु की कीर्ति का गान ही प्रमुख है तथा गुरमुख उसी में ध्यान लगाकर उसका जाप करता है।

आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥ ६ ॥ खंड पताल दीप सभि लोआ ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥ ७ ॥ हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥ भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥ ८ ॥ इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै ॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै ॥ देहु दरसु जितु मनु त्रिपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥ ९ ॥ रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥ हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा ॥ १० ॥ जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी ॥ तिथै हरि धिआईऐ सारिंगपाणी ॥ जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥ ११ ॥ वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा ॥ काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा ॥ १२ ॥ हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥ बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ॥ हउमै जाइ त एको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा ॥ १३ ॥ हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥ अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥ १४ ॥ अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥ गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा ॥ १५ ॥ तू आपे करता कारण करणा ॥ स्रिसटि उपाइ धरी सभ धरणा ॥ जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा ॥ १६ ॥ १ ॥ ५ ॥

मारू सोलहे महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

जो दीसै सो एको तूहै ॥ बाणी तेरी स्रवणि सुणीऐ ॥ दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा ॥ १ ॥ आपि चितारे अपणा कीआ ॥ आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ आपि उपाइ रचिओनु पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥ २ ॥ इकि उपाए वड दरवारी ॥ इकि उदासी इकि घर बारी ॥

गुरमुख व्यक्ति स्वयं तो पार उतरता ही है वह अपनी समस्त कुलों को भी पार उतार देता है और प्रभु दरबार में सम्मान सहित प्रवेश करता है।। ३ ।। द्वीप, खण्ड, पाताल और सभी लोकों को प्रभु ने काल के वश में ही डाला हुआ है। वह एक अविनाशी प्रभु ही अटल है और जो उसका सुमिरन करता है वह भी अटल हो जाता है।। ७ ।। प्रभु का सेवक भी प्रभु जैसा ही हो जाता है और मानव देह में बना रहने से उसमें और प्रभु में कोई अन्तर मत समझो। जिस प्रकार पानी में अनेकों प्रकार से बहुत सी लहरें उठती हैं और पानी फिर पानी में ही लीन हो जाता है इसी प्रकार प्रभु का सेवक भी प्रभु में समाया रहता है।। ८ ।। एक याचक तो प्रभु के द्वार पर उससे दान माँग रहा है और यदि प्रभु को अच्छा लगे तो तभी वह कृपा करेगा। हे प्रभु, दर्शन दो जिससे मेरा मन सन्तुष्ट होता है और प्रभु के कीर्तन में स्थिर होता है।। ६ ।। वह सुन्दर मालिक किसी भी प्रकार से वश में नहीं आता। प्रभु वही करता है जो प्रभु के शान्त पुरुषों को भाता है। जो वे करना चाहते हैं वही करा लेते हैं और उन्हें प्रभु के द्वार पर कोई भी रुकावट नहीं आती।। १० ।। जहाँ प्राणी को कोई मुसीबत की घड़ी आ बनती है वहाँ उस प्रभु का सुमिरन किया जाना चाहिए। जहाँ पुत्र, स्त्री और कोई मित्र नहीं होता वहाँ प्रभु स्वयं ही हमें छुड़वा लेता है ।। ११ ।। वह बड़ा प्रभु अगम्य एवं अथाह है; उस बेपरवाह प्रभु से किस प्रकार मिला जाए। हमारे भ्रमों की रस्सी को काटकर जिसने हमें सही मार्ग पर डाला है वह प्रभु संगति में ही बसता है।। १२ ।। सेवक उसी को कहा जाता है जो प्रभु के हुकुम के रहस्य को जान जाता है और बुरे भले को समान भाव से सहन करता है। जब अहंकार चला जाता है तो उस एक प्रभु की समझ आ जाती है और ऐसा गुरमुख अपने स्वाभाविक रूप में लीन हो जाता है।। १३ ।। प्रभु के भक्त सदैव सुख में निवास करते हैं, वे बच्चे की तरह सरल स्वभाव के होते है; वे त्यागी भी होते हैं और वे तटस्थ भी होते हैं। जिस प्रकार पिता अपने पुत्र से लाड प्यार करता है इसी प्रकार वह प्रभु भी अनेकों कौतुक और प्रेम के खेल खेलता रहता है।। १४ ।। उस अगम्य और अगोचर प्रभु का मूल्य नहीं आँका जा सकता और उससे तभी मिला जाता है यदि वह अपने से मिला ले। गुरमुख बने हुए उन्हीं सेवकों के सम्मुख प्रभु प्रत्यक्ष होता है जिनके भाग्य में प्रारम्भ से ही प्रभु का यह लेख लिखा होता है।। १५ ।। हे कर्ता प्रभु, तू स्वयं ही कारण है और स्वयं ही सब कुछ करने वाला है; तूने ही सृष्टि उत्पन्न करके सारी धरतियों को सम्भाला है। दास नानक तो प्रभु के द्वार पर उसकी शरण में आ गया है ; यदि प्रभु को भा जाएगा तो वह उसकी लाज भी रख लेगा।। १६ ।। १ ।। ५

मारू सोलहे महला ५   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जो दिखाई देता है वह तू ही है और तेरी ही वाणी को कानों से सुना जाता है। मुझे तो दूसरा कोई भी दिखाई नहीं देता और इस सारी सृष्टि को केवल तुम्हारा ही आसरा है।। १ ।। अपने किये हुए का वह स्वयं ही ध्यान रखता है और वह प्रभु स्वयं अपने आपसे उत्पन्न हुआ है। उसने अपने को उत्पन्न करके सारे संसार के विस्तार की रचना की और स्वयं ही प्रत्येक जीव की सम्भाल करता है।। २ ।। उसने कई बड़े दरबारों वाले पैदा किये और कई उदासीन

इकि भूखे इकि त्रिपति अघाए सभसै तेरा पारणा ॥ ३ ॥ आपे सति सति सति साचा ॥ ओति पोति भगतन संगि राचा ॥ आपे गुपतु आपे है परगटु अपणा आपु पसारणा ॥ ४ ॥ सदा सदा सद होवणहारा ॥ ऊचा अगमु अथाहु अपारा ॥ ऊणे भरे भरे भरि ऊणे एहि चलत सुआमी के कारणा ॥ ५ ॥ मुखि सालाही सचे साहा ॥ नैणी पेखा अगम अथाहा ॥ करनी सुणि सुणि मनु तनु हरिआ मेरे साहिब सगल उधारणा ॥ ६ ॥ करि करि वेखहि कीता अपणा ॥ जीअ जंत सोई है जपणा ॥ अपणी कुदरति आपे जाणै नदरी नदरि निहालणा ॥ ७ ॥ संत सभा जह बैसहि प्रभ पासे ॥ अनंद मंगल हरि चलत तमासे ॥ गुण गावहि अनहद धुनि बाणी तह नानक दासु चितारणा ॥ ८ ॥ आवणु जाणा सभु चलतु तुमारा ॥ करि करि देखै खेलु अपारा ॥ आपि उपाए उपावणहारा अपणा कीआ पालणा ॥ ९ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ दुइ कर जोड़ि सिमरउ दिनु राती मेरे सुआमी अगम अपारणा ॥ १० ॥ तुधु बिनु दूजे किसु सालाही ॥ एको एकु जपी मन माही ॥ हुकमु बूझि जन भए निहाला इह भगता की घालणा ॥ ११ ॥ गुर उपदेसि जपीऐ मनि साचा ॥ गुर उपदेसि राम रंगि राचा ॥ गुर उपदेसि तुटहि सभि बंधन इहु भरमु मोहु परजालणा ॥ १२ ॥ जह राखै सोई सुख थाना ॥ सहजे होइ सोई भल माना ॥ बिनसे बैर नाही को बैरी सभु एको है भालणा ॥ १३ ॥ डर चूके बिनसे अंधिआरे ॥ प्रगट भए प्रभ पुरख निरारे ॥ आपु छोडि पए सरणाई जिस का सा तिसु घालणा ॥ १४ ॥ ऐसा को वडभागी आइआ ॥ आठ पहर जिनि खसमु धिआइआ ॥ तिसु जन कै संगि तरै सभु कोई सो परवार सधारणा ॥ १५ ॥ इह बखसीस खसम ते पावा ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवा ॥ नामु जपी नामि सहजि समावा नामु नानक मिलै उचारणा ॥ १६ ॥ १ ॥ ६ ॥ मारू महला ५ ॥ सूरति देखि न भूलु गवारा ॥ मिथन मोहारा झूठु पसारा ॥ जग महि कोई रहणु न पाए निहचलु एकु नाराइणा ॥ १ ॥ गुर पूरे की पउ सरणाई ॥ मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥ एको मंत्रु द्रिड़ाए अउखधु सचु नामु रिद

तथा कई घरबारी जीव उत्पन्न किए। कई एक भूखे बने रहते हैं कई तृप्त होकर सन्तुष्ट बने रहते हैं परन्तु हे प्रभु, सबको तेरा ही भरोसा है।। ३ ।। वह प्रभु सत्य, सत्य और सत्य ही है जो भक्तों के साथ ओत-प्रोत होकर उन्हीं में लीन बना रहता है। वह स्वयं ही गुप्त है, स्वयं ही प्रकट है और स्वयं ही अपने आप का विस्तार करता है।। ४ ।। वह सदैव ही बना रहने वाला ऊँचा, अगम्य, अथाह और अपरम्पार है। वह खाली को तो भर देता है और भरे हुए को खाली भी कर देता है; ये ही उस स्वामी के किए जाने वाले कौतुक हैं।। ५ ।। मैं अपने मुख से उस सच्चे प्रभु का गुणानुवाद करता हूँ और आँखों से उस अगम्य और अथाह का दर्शन करता हूँ। कानों से सुन-सुनकर मेरा मन तन हरा-भरा हो उठा है और मेरा मालिक प्रभु सबका ही उद्धार करने वाला है।। ६ ।। वह अपनी की हुई रचना को प्रसन्नतापूर्वक देखता रहता है और सभी जीवों को उसी का सुमिरन ही करना है। अपनी शक्ति को तो वह स्वयं ही जानता है परन्तु कृपा दृष्टि करने वाला वह प्रभु एक दृष्टि में ही जीव जन्तुओं को आनन्दित कर देता है।। ७ ।। जहाँ सन्तजन सभा बनाकर बैठते हैं वहाँ प्रभु पास ही होता है। वहीं पर आनन्द मंगल और प्रभु के खेल तमाशे वाले कौतुकपूर्ण कार्य चलते रहते हैं। भक्त जन अनहद की धुन और वाणी के माध्यम से जहाँ प्रभु के गुण गाते हैं वहीं पर दास नानक भी उसका सुमिरन करता है।। ८ ।। यह आवागमन सब तुम्हारा ही खेल है और तुम ऐसे अनेकों खेल-खेलकर देखते रहते हो। वह रचयिता प्रभु स्वयं ही रचना करता है और अपने किए हुए का पालन-पोषण भी करता है।। ९ ।। हे प्रभु, तेरी खबर सुन-सुनकर मैं जीवित बना रहता हूँ और सदैव तुझ पर बलिहारी जाता रहता हूँ। हे मेरे अगम्य एवं अपरम्पर स्वामी, मैं दोनों हाथ जोड़कर दिन रात तेरा सुमिरन करता रहता हूँ।। १० ।। तेरे बिना मैं अन्य किसका गुणानुवाद करूं इसलिये मैं अपने मन में केवल एक प्रभु का ही सुमिरन करता रहता हूँ। भक्तजनों की कमाई तो यही है कि तेरे यह सेवक तेरे हुकुम को बूझकर आनन्दित हो गए हैं।। ११ ।। मन में उस सच्चे गुरु का सच्चा उपदेश याद रखना चाहिए और गुरु के उपदेश के फलस्वरूप ही व्यक्ति सबमें रमण करने वाले उस प्रभु में लीन हो जाता है। गुरु के उपदेश के कारण सभी बन्धन टूट जाते हैं और भ्रम तथा मोह अच्छी तरह जलकर नष्ट हो जाते हैं।। १२ ।। वह जहाँ रखे वहीं सुख का स्थान है और जो स्वाभाविक रूप से होता है उसी को ही भला मानना चाहिए। इस प्रकार सभी शत्रु विनष्ट हो जाते हैं ; अब कोई भी शत्रु नहीं लगता और सबको एक प्रभु के रूप में ही देखा जाता है।। १३ ।। जब अज्ञान का अन्धकार नष्ट हो जाता है तो भय समाप्त हो जाता है तथा अलेप प्रभु हृदय में प्रकट हो जाता है। अब हम अपना अभिमान छोड़कर उसकी शरण में आ गए हैं और वास्तव में हम जिसके थे उसी ने ही हमें इंस ओर भेजा है।। १४ ।। ऐसा कोई भाग्यशाली इस संसार में आया है जिसने आठों प्रहर अपने मालिक का ही सुमिरन किया है। ऐसे व्यक्ति की संगति में सब कोई पार उतर जाते हैं और वह अपने परिवार को भी अच्छा बना लेता है।। १५ ।। यह दान मैं उस मालिक से ही प्राप्त करता हूँ और इसीलिए आठों प्रहर हाथ जोड़कर उसका सुमिरन करता हूँ। उस प्रभु के नाम का सुमिरन करते हुए मैं स्वाभाविक रूप से ही उसके नाम में लीन हो जाऊँ और हे नानक, मुझे उच्चारण करने के लिए उसका नाम ही प्राप्त हो।। १६ ।। १ ।। ६ ।। मारू महला ५ ।। बाहर की सूरत को देखकर हे मूर्ख व्यक्ति, तू भुलावे में मत पड़ क्योंकि यह मोह और इसका विस्तार सभी झूठे हैं। इस संसार में कोई रह नहीं पाता और यहाँ केवल एक प्रभु ही अटल बना रहने वाला है।। १ ।। तू पूर्ण गुरु की शरण में आ जा और तेरे मोह, शोक एवं सभी भ्रम मिट जाएंगे। गुरु केवल एक ही प्रभु का जाप हृदय में पक्का करता है जो औषधि के रूप में काम करता है

गाइणा ॥ २ ॥ जिसु नामै कउ तरसहि बहु देवा ॥ सगल भगत जा की करदे सेवा ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजनु सो गुर पूरे ते पाइणा ॥ ३ ॥ होरु दुआरा कोइ न सूझै ॥ त्रिभवण धावै ता किछू न बूझै ॥ सतिगुरु साहु भंडारु नाम जिसु इहु रतनु तिसै ते पाइणा ॥ ४ ॥ जा की धूरि करे पुनीता ॥ सुरि नर देव न पावहि मीता ॥ सति पुरखु सतिगुरु परमेसरु जिसु भेटत पारि पराइणा ॥ ५ ॥ पारजातु लोड़हि मन पिआरे ॥ कामधेनु सोही दरबारे ॥ त्रिपति संतोखु सेवा गुर पूरे नामु कमाइ रसाइणा ॥ ६ ॥ गुर कै सबदि मरहि पंच धातू ॥ भै पारब्रहम होवहि निरमला तू ॥ पारसु जब भेटै गुरु पूरा ता पारसु परसि दिखाइणा ॥ ७ ॥ कई बैकुंठ नाही लवै लागे ॥ मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे ॥ एकंकारु सतिगुर ते पाईऐ हउ बलि बलि गुर दरसाइणा ॥ ८ ॥ गुर की सेव न जाणै कोई ॥ गुरु पारब्रहमु अगोचरु सोई ॥ जिस नो लाइ लए सो सेवकु जिसु वडभाग मथाइणा ॥ ९ ॥ गुर की महिमा बेद न जाणहि ॥ तुछ मात सुणि सुणि वखाणहि ॥ पारब्रहम अपरंपर सतिगुर जिसु सिमरत मनु सीतलाइणा ॥ १० ॥ जा की सोइ सुणी मनु जीवै ॥ रिदै वसै ता ठंढा थीवै ॥ गुरु मुखहु अलाए ता सोभा पाए तिसु जम कै पंथि न पाइणा ॥ ११ ॥ संतन की सरणाई पड़िआ ॥ जीउ प्राण धनु आगै धरिआ ॥ सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइआ किरमाइणा ॥ १२ ॥ निरगुण कउ संगि लेहु रलाए ॥ करि किरपा मोहि टहलै लाए ॥ पखा फेरउ पीसउ संत आगै चरण धोइ सुखु पाइणा ॥ १३ ॥ बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइआ ॥ तुमरी क्रिपा ते तुम सरणाइआ ॥ सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा ॥ १४ ॥ भए क्रिपाल गुसाई मेरे ॥ दरसनु पाइआ सतिगुर पूरे ॥ सूख सहज सदा आनंदा नानक दास दसाइणा ॥ १५ ॥ २ ॥ ७ ॥

मारू सोलहे महला ५ १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरै धरती अरु आकासा ॥ सिमरहि चंद सूरज गुणतासा ॥ पउण पाणी

और व्यक्ति को बताता है कि प्रभु का सच्चा नाम ही हृदय में गायन करना है।। २ ।। जिस प्रभु नाम को अनेकों देवता तरसते रहते हैं, सारे भक्त भी जिसकी सेवा करते हैं, नाथों के नाथ और दीनों के दुख दूर करने वाले उस प्रभु को पूर्ण गुरु के माध्यम से ही पाया जाता है।। ३ ।। अन्य कोई भी द्वार दिखाई नहीं देता और जब जीव तीनों लोकों में दौड़ता रहता है तो इसे कुछ भी समझ नहीं पड़ती। सच्चा गुरु प्रभु नाम का भण्डार भी है और साहूकार भी है तथा यह रत्न उसी से प्राप्त किया जाता है।। ४ ।। जिसकी चरण धूलि पवित्र बना देती है, हे मित्र, उस धूलि को उत्तम पुरुष और देवता भी प्राप्त नहीं कर पाते। सच्चा पुरुष और सच्चा गुरु परमेश्वर ही है जिसके मिलाप से संसार सागर से पार हुआ जाता है। हे मेरे प्यारे मन, यदि तू सारी इच्छाओं को पूरा करने वाले पारिजात वृक्ष को चाहता है तथा सभी कामनाओं को पूरा करने वाली तथाकथित कामधेनु भी अपने द्वार पर शोभायमान देखना चाहता है तो तृप्त और सन्तुष्ट होकर पूर्ण गुरु की सेवा कर और रसों के घर प्रभु नाम को जीवन में उतार।। ६ ।। शब्द-गुरु के माध्यम से ही पाँचों विकार नष्ट होते हैं और परब्रह्म प्रभु के भय में हे जीव, तू निर्मल हो जाता है। जब पूर्ण गुरु जैसा पारस मिल जाए तो उसका स्पर्श करके व्यक्ति पारस जैसा ही दिखाई देने लग जाता है।। ७ ।। अनेकों बैकुण्ठ भी उसकी बराबरी तक नहीं पहुँच पाते और ज्ञानवान व्यक्ति तो बेचारी मुक्ति को भी त्याग देता है। उस एक ओअंकार प्रभु को सच्चे गुरु से पाया जाता है और इसीलिए मैं गुरु के दर्शन पर बलिहारी जाता हूँ।। ८ ।। गुरु की सेवा के बारे में कोई नहीं जानता; गुरु परब्रह्म ही है जो इन्द्रियों का विषय नहीं। जिसके बड़े भाग्य होते हैं उसे ही वह अपनी ओर लगाता है और वही सेवक कहलाता है।। ९ ।। गुरु की महिमा तो वेद भी नहीं जानते और सुन-सुनकर थोड़ा सा उसका वर्णन करते हैं। सच्चा गुरु अपरम्पार प्रभु है जिसका सुमिरन करने से मन शीतल हो जाता है।। १० ।। जिसकी शोभा सुनने से मन आध्यात्मिक रूप से जीवित बना रहता है वह प्रभु जब हृदय में बस जाता है तो हृदय शीतल हो जाता है। गुरमुख बनकर यदि उसका सुमिरन किया जाए तो तभी शोभा प्राप्त होती है और ऐसा व्यक्ति फिर यम के मार्ग पर नहीं जाता।। ११ ।। मैं तो सन्तजनों की शरण में आ पड़ा हूँ तथा मैंने अपना धन और प्राण उसके आगे समर्पित कर दिया है। हे प्रभु, तुम मुझ कीट पर दया करो क्योंकि मुझे तुम्हारी सेवा और सुमिरन के बारे में कुछ भी पता नहीं।। १२ ।। मुझ गुण विहीन को अपनी संगति में शामिल कर लो और कृपा करके मुझे अपनी सेवा में लगा लो। मैं तो शान्त पुरुष के सामने पँखा डुलाता हूँ और चक्की पीसता हूँ और उसके चरण धोकर ही मुझे सुख प्राप्त होता है।। १३ ।। अनेकों द्वारों पर मैं भटकता-भटकता वापिस आया हूँ और तुम्हारी कृपा से ही मैं तुम्हारी शरण में आ पड़ा हूँ। हे नाम का दान देने वाले प्रभु, मुझे सदैव शान्त पुरुषों की संगति में बनाए रखो।। १४ ।। धरती का स्वामी मेरा प्रभु जब कृपालु हुआ तो मैंने पूर्ण सच्चे गुरु का दर्शन प्राप्त कर लिया। अब सदैव मैं सुख और अपने स्वाभाविक रूप में स्थिर होकर आनन्द ले रहा हूँ और हे नानक, मैं तो प्रभु के दासों का भी दास बन गया हूँ।। १५ ।। २ ।। ७ ।।

मारू सोलहे महला ५   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

धरती और आकाश भी उस प्रभु का सुमिरन करते हैं और चाँद सूरज भी गुणों के भण्डार उस प्रभु की आराधना करते हैं। पवन

बैसंतर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ॥ १ ॥ सिमरहि खंड दीप सभि लोआ ॥ सिमरहि पाताल पुरीआ सचु सोआ ॥ सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥ २ ॥ सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥ सिमरहि देवते कोड़ि तेतीसा ॥ सिमरहि जख्यि दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥ ३ ॥ सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ सिमरहि बन परबत अउधूता ॥ लता बली साख सभ सिमरहि रवि रहिआ सुआमी सभ मना ॥ ४ ॥ सिमरहि थूल सूखम सभि जंता ॥ सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥ गुपत प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥ ५ ॥ सिमरहि नर नारी आसरमा ॥ सिमरहि जाति जोति सभि वरना ॥ सिमरहि गुणी चतुर सभि बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥ ६ ॥ सिमरहि घड़ी मूरत पल निमखा ॥ सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ सिमरहि सउण सासत्र संजोगा अलखु न लखीऐ इकु खिना ॥ ७ ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा जिसु भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना ॥ ८ ॥ जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ पूरै करमि गुर का जपु जपना ॥ सरब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुड़ि न जोनी भरमि रुना ॥ ९ ॥ गुर का सबदु वसै मनि जा कै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ सूख सहज आनंद नाम रसु अनहद बाणी सहज धुना ॥ १० ॥ सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ॥ पारब्रहमु जा कै मनि वूठा सो पूर करंमा ना छिना ॥ ११ ॥ जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ अवरु न कहीऐ दूजा कोई ॥ गुर गिआन अंजनि काटिओ भ्रमु सगला अवरु न दीसै एक बिना ॥ १२ ॥ ऊचे ते ऊचा दरबारा ॥ कहणु न जाई अंतु न पारा ॥ गहिर गंभीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥ १३ ॥ तू करता तेरा सभु कीआ ॥ तुझु बिनु अवरु न कोई बीआ ॥ आदि मधि अंति प्रभु तूहै सगल पसारा तुम तना ॥ १४ ॥ जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गावै ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन जो स्रवणी प्रभ का जसु सुना ॥ १५ ॥ तू सभना का सभु को तेरा ॥ साचे साहिब गहिर गंभीरा ॥

अग्नि और सभी उत्पन्न हुई सृष्टियाँ उसका सुमिरन करती रहती हैं।। १ ।। द्वीप, खण्ड और सभी लोक उसका सुमिरन करते हैं और उस सच्चे प्रभु को पाताल, पुरियाँ आदि सभी याद करते हैं। जीवन के सभी स्रोत अपनी-अपनी वाणियों के माध्यम से तथा प्रभु के सभी सेवक उसका सुमिरन करते हैं।। २ ।। ब्रह्मा, विष्णु और महेश सब उसका सुमिरन करते हैं और तैंतीस करोड़ देवता भी उसी की आराधना करते हैं। यक्ष, दैत्य इत्यादि सभी उसका सुमिरन करते हैं; उसका यश अनगिनत है जिसे गिना नहीं जा सकता।। ३ ।। पशु, पक्षी एवं सभी तत्व, वन, पर्वत और अवधूत गण सभी उसी का सुमिरन करते हैं। लताएं, बेलें, शाखाएं सभी उस प्रभु का सुमिरन करते हैं जो सबके मन में रमण कर रहा है।। ४ ।। सूक्ष्म और स्थूल सभी जीव उसका सुमिरन करते हैं और प्रभु के उपदेश को सभी सिद्ध और साधक याद करते रहते हैं। गुप्त और प्रकट रूप में बने रहने वाले सभी जीव मेरे उस प्रभु का सुमिरन करते हैं जो सभी लोकों का मालिक हैं।। ५ ।। चारों आश्रमों के स्त्री पुरुष और सभी जाति और वर्णो के लोग उसका सुमिरन करते हैं। गुणी, चतुर और तत्व वेता लोग दिन रात उसका सुमिरन करते हैं।। ६ ।। काल के घटक, घड़ी, मुहूर्त, पल और निमेष भी उसका सुमिरन करते हैं तथा जीवन मरण स्वच्छता एवं शौच भी उसे ही याद करते हैं। शकुन आदि संयोगों को बताने वाले शास्त्र आदि भी उसी का सुमिरन करते हैं परन्तु उस अदृष्ट प्रभु को एक क्षण भर के लिये भी नहीं देखा जा सकता।। ७ ।। वह स्वामी प्रभु सब कुछ करने-कराने वाला है और सबके हृदय की बातें जानने वाला है। कृपा करके हे प्रभु, जिसे तुम भक्ति में लगा लेते हो, यह जीवन रूपी पदार्थ उसके द्वारा जीत लिया जाता है।। ८ ।। जिसके मन में अपना प्रभु बस गया, पूर्ण भाग्य वाला बनकर वह गुरु का सुमिरन करता रहता है। उसी ने ही सबमें बसने वाले प्रभु को जान लिया है और वह बार-बार योनियों में भटकता हुआ रोता नहीं रहता। जिसके मन में शब्द-गुरु बस गया है उसका दुख दर्द और भ्रम भाग खड़ा हुआ। स्वाभाविक रूप से ही उसे सुख, आनन्द, नाम का रस और अनहद वाणी की सहज धुन प्राप्त हो जाती है।। १० ।। धनवान वही है जिसने प्रभु का सुमिरन किया है और सम्मान योग्य वही है जिसने साधसंगति प्राप्त कर ली है। परब्रह्म प्रभु जिसके मन में बस गया है वही पूर्ण भाग्यशाली है और फिर वह छिपा नहीं रहता।। ११ ।। धरती, जल और अन्तरिक्ष में वही स्वामी है और उसके बिना अन्य दूसरा कोई भी नहीं जाना जाता। गुरु के ज्ञान रूपी अंजन के साथ सभी भ्रम काट दिए जाते हैं और उस एक के बिना अब अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता।। १२ ।। उस प्रभु का दरबार ऊँचे से ऊँचा है और उसके ओर-छोर के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। वह स्वामी गहरा, गम्भीर, अथाह एवं अतुलनीय है; उसे भला कैसे तौला जाए।। १३ ।। तू कर्ता प्रभु है और सब कुछ तेरा ही किया हुआ है; तेरे बिना दूसरा कोई भी नहीं। सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त में हे प्रभु, तू ही है और यह सारा प्रसार ही तुम्हारा शरीर है।। १४ ।। जो साधसंगति में प्रभु का गुणानुवाद करता है यमदूत उसके पास भी नहीं आ पाता। जिसने अपने कानों से प्रभु के यश को सुन लिया है उसके मन की सभी इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं।। १५ ।। हे सच्चे गहरे और गम्भीर प्रभु, तू सबका है और सब कोई तेरे ही हैं।

कहु नानक सेई जन ऊतम जो भावहि सुआमी तुम मना ॥ १६ ॥ १ ॥ ८ ॥
मारू महला ५ ॥ प्रभ समरथ सरब सुख दाना ॥ सिमरउ नामु होहु मिहरवाना ॥
हरि दाता जीअ जंत भेखारी जनु बांछै जाचंगना ॥ १ ॥ मागउ जन धूरि
परम गति पावउ ॥ जनम जनम की मैलु मिटावउ ॥ दीरघ रोग मिटहि हरि
अउखधि हरि निरमलि रापै मंगना ॥ २ ॥ स्रवणी सुणउ बिमल जसु
सुआमी ॥ एका ओट तजउ बिखु कामी ॥ निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे
करि सुक्रितु नाही संगना ॥ ३ ॥ रसना गुण गावै हरि तेरे ॥ मिटहि कमाते
अवगुण मेरे ॥ सिमरि सिमरि सुआमी मनु जीवै पंच दूत तजि तंगना ॥ ४ ॥
चरन कमल जपि बोहिथि चरीऐ ॥ संतसंगि मिलि सागरु तरीऐ ॥ अरचा
बंदन हरि समत निवासी बाहुड़ि जोनि न नंगना ॥ ५ ॥ दास दासन को करि
लेहु गुोपाला ॥ क्रिपा निधान दीन दइआला ॥ सखा सहाई पूरन परमेसुर मिलु
कदे न होवी भंगना ॥ ६ ॥ मनु तनु अरपि धरी हरि आगै ॥ जनम जनम का
सोइआ जागै ॥ जिस का सा सोई प्रतिपालकु हति तिआगी हउमै हंतना ॥ ७ ॥
जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥ घटि घटि रविआ अछल सुआमी ॥ भरम भीति
खोई गुरि पूरै एकु रविआ सरबंगना ॥ ८ ॥ जत कत पेखउ प्रभ सुख
सागर ॥ हरि तोटि भंडार नाही रतनागर ॥ अगह अगाह किछु मिति नही
पाईऐ सो बूझै जिसु किरपंगना ॥ ९ ॥ छाती सीतल मनु तनु ठंढा ॥ जनम
मरण की मिटवी डंझा ॥ करु गहि काढि लीए प्रभि अपुनै अमिओ धारि
द्रिसटंगना ॥ १० ॥ एको एकु रविआ सभ ठाई ॥ तिसु बिनु दूजा कोई
नाही ॥ आदि मधि अंति प्रभु रविआ त्रिसन बुझी भरमंगना ॥ ११ ॥ गुरु
परमेसरु गुरु गोबिंदु ॥ गुरु करता गुरु सद बखसंदु ॥ गुर जपु जापि जपत
फलु पाइआ गिआन दीपकु संत संगना ॥ १२ ॥ जो पेखा सो सभु किछु
सुआमी ॥ जो सुनणा सो प्रभ की बानी ॥ जो कीनो सो तुमहि कराइओ
सरणि सहाई संतह तना ॥ १३ ॥ जाचकु जाचै तुमहि अराधै ॥ पतित पावन
पूरन प्रभ साधै ॥ एको दानु सरब सुख गुण निधि आन मंगन निहकिंचना ॥ १४ ॥

नानक का कथन है कि वे ही सेवक उत्तम है जो हे मेरे स्वामी, तेरे मन को भा जाते हैं।। १६ ।। १ ।। ८ ।। मारू महला ५ ।। समर्थ प्रभु ही सभी सुखों का दान देने वाला है और हे प्रभु, तू कृपा कर जिससे मैं तुम्हारे नाम का सुमिरन करता रहूँ। प्रभु दाता है और ये सभी जीव जन्तु भिखारी है; प्रभु का सेवक तो केवल उस प्रभु से ही दान माँगना चाहता है।। १ ।। मैं प्रभु के सेवकों की चरण धूलि माँगता हूँ जिसके कारण ऊँची से ऊँची गति प्राप्त होती है और जन्मों जन्मान्तरों की मैल मिट जाती है। प्रभु नाम रूपी औषधि से बहुत बड़े-बड़े रोग मिट जाते हैं; इसलिये मैं प्रभु के रंग में रंगे जाने की कामना करता हूँ।। २ ।। कानों से उस प्रभु के पवित्र यश को सुनूं तथा विषयों और कामनाओं को त्यागकर उस एक प्रभु का आसरा देखता रहूँ। झुक-झुक कर मैं तेरे दासों के चरणों को छूता रहूँ और शुभ कर्म करने में लाज का अनुभव ना करूं।। ३ ।। मेरी जीभ हे प्रभु, तेरे गुण गाती है जिससे मेरे कमाए हुए अवगुण नष्ट हो जाते हैं। उस प्रभु का सुमिरन करते हुए ही तथा पाँचों विकारों को त्यागकर ही मेरा मन आध्यात्मिक तौर से जीवित बना रहे।। ४ ।। प्रभु के चरण कमलों का सुमिरन करके प्रभु-नाम के जहाज पर चढ़ जाया जाए तथा सन्त पुरुषों की संगति से मिलकर संसार सागर को पार कर लिया जाए। एक समान व्याप्त बने रहने वाले प्रभु को जानना ही उसकी अर्चना और वन्दना है और इस प्रकार योनियाँ प्राप्त करके भी जीव नंगा अर्थात् बेइज़्ज़त नहीं होता।। ५ ।। हे प्रभु, तू हमें अपने दासों का दास बना ले क्योंकि तू ही कृपा का भण्डार और दीन दयालु है। हे पूर्ण परमेश्वर, तू ही हमारा साथी, सहायता करने वाला मित्र है, तुझसे मिलकर कभी भी जीव नष्ट नहीं होता ।। ६ ।। प्रभु के सामने जब मन तन अर्पण कर दिया जाता है तो जन्मों-जन्मान्तरों का अज्ञान में सोया जीव सावधान हो जाता है। यह जीव जिसका था वही इसकी पालना करता है और इस तथ्य को जानकर यह अपने अहंकार को त्यागकर जीव को मार डालने वाले अहंकार का त्याग कर देता है।। ७ ।। जल, स्थल अर्थात् सब में वह अन्तर्यामी प्रभु परिपूर्ण रूप से बना है और छला ना जा सकने वाला वह मालिक घट-घट में रमण करता रहता है। पूर्ण गुरु ही भ्रमों की दीवार को नष्ट करता है और उसी से पता लगता है कि सबमें वह एक प्रभु ही रमण कर रहा है।। ८ ।। जिधर भी मैं देखता हूँ सुखों का सागर वह प्रभु ही दिखाई देता है; रत्नों के उसके भण्डार में कभी भी कमी नहीं आती। गहन, अगाध उस प्रभु की सीमा को नही जाना जा सकता और केवल वही उस रहस्य को जानता है जिस पर उसकी कृपा होती है।। ६ ।। मेरी छाती शीतल हो गई है तथा मन तन ठंडा हो गया है; अब मेरे जन्म-मरण का भटकाव मिट गया है क्योंकि हाथ से पकड़कर प्रभु ने मुझे बाहर निकाल लिया है और अमृत धारण करने वाली दृष्टि से मुझे देख लिया है।। १० ।। वह एक प्रभु ही सब स्थानों में बस रहा है और उसके बिना दूसरा कोई भी नही है। सृष्टि के आदि मध्य और अन्त में वही प्रभु व्याप्त है और यह जानकर मेरी तृष्णा और भ्रम दूर हो गए हैं।। ११ ।। गुरु परमेश्वर है, गुरु ही गोविन्द है, गुरु ही कर्ता है और गुरु ही सदैव क्षमाशील है। गुरु के सुमिरन से ही मैंने फल प्राप्त किया है और सन्तपुरुषों की संगति में ज्ञान का दीपक प्राप्त हो गया है।। १२ ।। मैं जो कुछ भी देखता हूँ वह सब कुछ प्रभु ही है तथा जो कुछ भी मैं सुनता हूँ वह प्रभु की वाणी ही है। सन्तजन तेरे पुत्र हैं और हे प्रभु, जो कुछ हमने किया है वह तुमने ही कराया है और तेरी शरण में ही हमें सहायता प्राप्त हुई है।। १३ ।। यह याचक तो यही माँगता है कि तुम्हारी ही आराधना करता रहूँ। हे प्रभु, तू ही पतितों को पूर्ण रूप से पावन और शुद्ध करने वाला है। हे सब सुखों और गुणों के भण्डार प्रभु, मैं तुझसे एक ही दान माँगता हूँ तथा अन्य और कुछ भी नहीं माँगता।। १४ ।।

काइआ पात्रु प्रभु करणैहारा ॥ लगी लागि संत संगारा ॥ निरमल सोइ बणी हरि बाणी मनु नामि मजीठै रंगना ॥ १५ ॥ सोलह कला संपूरन फलिआ ॥ अनत कला होइ ठाकुरु चड़िआ ॥ अनद बिनोद हरि नामि सुख नानक अंम्रित रसु हरि भुंचना ॥ १६ ॥ २ ॥ ९ ॥

मारू सोलहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तू साहिबु हउ सेवकु कीता ॥ जीउ पिंडु सभु तेरा दीता ॥ करन करावन सभु तूहै तूहै है नाही किछु असाड़ा ॥ १ ॥ तुमहि पठाए ता जग महि आए ॥ जो तुधु भाणा से करम कमाए ॥ तुझ ते बाहरि किछू न होआ ता भी नाही किछु काड़ा ॥ २ ॥ ऊहा हुकमु तुमारा सुणीऐ ॥ ईहा हरि जसु तेरा भणीऐ ॥ आपे लेख अलेखै आपे तुम सिउ नाही किछु झाड़ा ॥ ३ ॥ तू पिता सभि बारिक थारे ॥ जिउ खेलावहि तिउ खेलणहारे ॥ उझड़ मारगु सभु तुम ही कीना चलै नाही को वेपाड़ा ॥ ४ ॥ इकि बैसाइ रखे ग्रिह अंतरि ॥ इकि पठाए देस दिसंतरि ॥ इक ही कउ घासु इक ही कउ राजा इन महि कहीऐ किआ कूड़ा ॥ ५ ॥ कवन सु मुकती कवन सु नरका ॥ कवनु सैसारी कवनु सु भगता ॥ कवन सु दाना कवनु सु होछा कवन सु सुरता कवनु जड़ा ॥ ६ ॥ हुकमे मुकती हुकमे नरका ॥ हुकमि सैसारी हुकमे भगता ॥ हुकमे होछा हुकमे दाना दूजा नाही अवरु धड़ा ॥ ७ ॥ सागरु कीना अति तुम भारा ॥ इकि खड़े रसातलि करि मनमुख गावारा ॥ इकना पारि लंघावहि आपे सतिगुरु जिन का सचु बेड़ा ॥ ८ ॥ कउतकु कालु इहु हुकमि पठाइआ ॥ जीअ जंत ओपाइ समाइआ ॥ वेखै विगसै सभि रंग माणे रचनु कीना इकु आखाड़ा ॥ ९ ॥ वडा साहिबु वडी नाई ॥ वड दातारु वडी जिसु जाई ॥ अगम अगोचरु बेअंत अतोला है नाही किछु आहाड़ा ॥ १० ॥ कीमति कोइ न जाणै दूजा ॥ आपे आपि निरंजन पूजा ॥ आपि सु गिआनी आपि धिआनी आपि सतवंता अति गाड़ा ॥ ११ ॥ केतड़िआ दिन गुपतु कहाइआ ॥ केतड़िआ दिन सुंनि समाइआ ॥ केतड़िआ दिन धुंधूकारा आपे करता परगटड़ा ॥ १२ ॥ आपे सकती सबलु

यह शरीर रूपी बर्तन बनाने वाला प्रभु ही है और इस पर शान्त पुरुषों की संगति का अच्छा प्रभाव पड़ा है। इसकी शोभा निर्मल बनी है क्योंकि यह मन प्रभु की वाणी के माध्यम से प्रभु नाम के मजीठ रंग अर्थात पक्के रंग में रंगा गया है ।। १५ ।। जब अनन्त कलाओं वाला वह प्रभु मेरे हृदय में प्रकट हो गया तो मेरी आत्मा पूर्ण ज्ञान वाली हो गई और मुझे सम्पूर्ण फल प्राप्त हो गया है। आनन्द और तमाशे प्रभु नाम में ही सुख देने वाले हैं और हे नानक, मैं तो प्रभु-नाम में अमृत रस को रसपूर्ण होकर भोगता हूँ।। १६ ।। २ ।। ६ ।।

मारू सोलहे महला ५   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

तू मेरा मालिक है और मैंने अपने आपको तेरा सेवक बना लिया है; तूने ही मुझे प्राण और शरीर तथा सब कुछ दिया है। मेरा तो यहाँ कुछ भी नहीं है। हे प्रभु, सब कुछ तू ही करने-कराने वाला है।। १ ।। तुमने भेजा तभी हम संसार में आए हैं तथा जो तुझे अच्छा लगता है वे ही कर्म हम करते जाते हैं। तुझसे बाहर तो कुछ भी नहीं होता अब इसलिये हमें किसी प्रकार की चिंता नहीं है।। २ ।। कहीं तो तुम्हारा हुकुम सुनाई देता है और कहीं हे प्रभु, तेरे यश का बखान किया जाता है। तुम स्वयं ही लेख लिखने वाले हो, स्वयं ही सभी लेखों से मुक्त करने वाले हो और इसीलिये हमारा तुमसे कोई झगड़ा नहीं है।। ३ ।। तू पिता है और सभी जीव तेरे बच्चे हैं; तू जैसे खेलाता है ये वैसे ही खेलते रहते हैं। कुमार्ग भी सब तुमने ही बनाए हैं और कोई स्वयं उस पर नहीं चलता अर्थात् तू ही जीवों को उन पर चला देता है।। ४ ।। कईयों को तो तूने घर में ही बिठा रखा है और कईयो को देश-देशान्तरों में भेज रखा है। कईयों को तो घास खोदने वाला और कईयों को तूने राजा बना रखा है; बताओ भला इनमें झूठ क्या है।। ५ ।। मुक्त कौन है और नरक में जाने वाला कौन है। सांसारिक व्यक्ति कौन है और भक्त कौन है इस संसार में सयाना कौन है और ओछा कौन है; कौन यहाँ सूझ बुद्धि वाला है और कौन यहाँ मूर्ख है।। ६ ।। हुकुम में ही जीव मुक्त होता है और हुकुम में ही नरक में पड़ता है। प्रभु के हुकुम में ही जीव संसारी बनता है और हुकुम में ही भक्त बना रहता है। प्रभु के हुकुम में ही यह ओछा बनता है और उसके हुकुम में ही यह समझदार बनता है; इसका अन्य कोई भी पक्ष नहीं है।। ७ ।। संसार सागर तुमने अत्यन्त बड़ा बनाया है और इसमें कईयों को मनमुख और गँवार बनाकर तूने रसातल के नरक में खड़ा कर रखा है। जिनको सच्चे गुरु के माध्यम से सत्य का बेड़ा मिल गया है ऐसे कईयों को तू पार भी उतार देता है।। ८ ।। यह खेल सब उसी के हुकुम का भेजा और किया हुआ है कि वह जीवों को उत्पन्न करके उन्हें समाप्त भी करता रहता है। वह देखता है, खिला रहता है और उसने एक ऐसा संसार रूपी अखाड़ा बनाया है जिसमें वह सभी रंगों के आनन्द लेता रहता है।। ६ ।। अपने बड़े नाम के कारण ही वह मालिक प्रभु बड़ा है। वह बड़ा दाता है जिसका स्थान भी बड़ा है। वह अगम्य, अगोचर, अनन्त और तौला ना जा सकने वाला है इसलिये उसका कोई भी तौल माप नहीं है।। १० ।। उसके मूल्य को दूसरा कोई नहीं जान सकता क्योंकि वह प्रभु केवल स्वयं ही अपने आप तक पहुँच पाता है। वह स्वयं ही ज्ञानी है, स्वयं ही ध्यानी है, स्वयं ही सत्तापूर्ण है और स्वयं ही अत्यन्त गहरा है।। ११ ।। कितने ही दिनों तक वह गुप्त रूप में स्थित बना रहा और कितने ही दिनों तक वह शून्य अवस्था में लीन बना रहा। कितने दिनों तक वह गहन धुन्ध के रूप में बना रहा और फिर उसने कर्ता रूप में अपने आपको प्रकट किया।। १२ ।। माया शक्ति का सबल रूप भी वह स्वयं ही

कहाइआ ॥ आपे सूरा अमरु चलाइआ ॥ आपे सिव वरताईअनु अंतरि आपे सीतलु ठारु गड़ा ॥ १३ ॥ जिसहि निवाजे गुरमुखि साजे ॥ नामु वसै तिसु अनहद वाजे ॥ तिस ही सुखु तिस ही ठकुराई तिसहि न आवै जमु नेड़ा ॥ १४ ॥ कीमति कागद कही न जाई ॥ कहु नानक बेअंत गुसाई ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई हाथि तिसै कै नेबेड़ा ॥ १५ ॥ तिसहि सरीकु नाही रे कोई ॥ किस ही बुतै जबाबु न होई ॥ नानक का प्रभु आपे आपे करि करि वेखै चोज खड़ा ॥ १६ ॥ १ ॥ १० ॥ मारू महला ५ ॥ अचुत पारब्रहम परमेसुर अंतरजामी ॥ मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ रिखीकेस गोवरधन धारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥ १ ॥ मोहन माधव क्रिस्न मुरारे ॥ जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ जगजीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥ २ ॥ धरणीधर ईस नरसिंघ नाराइण ॥ दाड़ा अग्रे प्रिथमि धराइण ॥ बावन रूपु कीआ तुधु करते सभ ही सेती है चंगा ॥ ३ ॥ स्री रामचंद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिआ ॥ सहस नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥ ४ ॥ भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ गोपी नाथु सगल है साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥ ५ ॥ मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥ द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ कमलाकंत करहि कंतूहल अनद बिनोदी निहसंगा ॥ ६ ॥ अमोध दरसन आजूनी संभउ ॥ अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥ अबिनासी अबिगत अगोचर सभु किछु तुझ ही है लगा ॥ ७ ॥ स्रीरंग बैकुंठ के वासी ॥ मछु कछु कूरमु आगिआ अउतरासी ॥ केसव चलत करहि निराले कीता लोड़हि सो होइगा ॥ ८ ॥ निराहारी निरवैरु समाइआ ॥ धारि खेलु चतुरभुजु कहाइआ ॥ सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु सुनत सभ मोहैगा ॥ ९ ॥ बनमाला बिभूखन कमल नैन ॥ सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥ संख चक्र गदा है धारी महा सारथी सतसंगा ॥ १० ॥ पीत पीतंबर त्रिभवण धणी ॥ जगंनाथु गोपालु मुखि भणी ॥ सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥ ११ ॥ निहकंटकु निहकेवलु कहीऐ ॥ धनंजै जलि थलि है

कहलाता है और स्वयं ही शूरवीर होकर अपना हुकुम चलाता है। उसी ने अन्तर्मन में सुख और शान्ति बनाई है और वह स्वयं ओले की भाँति शीतल एवं ठंडा है।। १३ ।। जिसे प्रभु सम्मान दे दे और गुरमुख बना दे उसी के अन्तर्मन में नाम का निवास हो जाता है और अनहद शब्द बजने लगता है। उसी को ही सुख प्राप्त होता है। उसी की सरदारी बनती है और यम उसके पास भी नहीं आता।। १४ ।। कागज़ पर उसका मूल्य आँका नहीं जा सकता; नानक का कथन है कि धरती का स्वामी वह प्रभु अनन्त है। आदि में, मध्य में और अन्त में वही प्रभु बना रहता है जिसके हाथ में सब कुछ निपटाने की शक्ति होती है।। १५ ।। उसका मुकाबला करने वाला हमने कोई नहीं देखा और किसी भी बहाने (तरीके) से उस प्रभु का जवाब नहीं ढूँढा जा सकता। नानक का प्रभु तो स्वयं ही सब कुछ है और वह अपने खेल तमाशे करता हुआ खड़ा खड़ा ही उन्हें देखता रहता है।। १६ ।। १ ।। १० ।। मारू महला ५ ।। वह परब्रह्म अन्तर्यामी परमेश्वर अटल एवं अविनाशी है। उसी को मधुसूदन, दामोदर और सबका मालिक कहा जाता है। उसी को सारे संसार की इन्द्रियों के मालिक के रूप में ऋषिकेश कहा जाता है और वह परमात्मा ही गोवर्धन पर्वत को उठाने वाला है; मनोहर बाँसुरी बजाने वाला वह प्रभु ही है, जो प्रेम से भरा रहता है।। १ ।। मोहन, माधव, कृष्ण मुरारी के रूप में उस जगदीश्वर प्रभु ने असुरों का सँहार किया माना जाता है। वह इस संसार का जीवन अविनाशी प्रभु है और घट-घट में सबके साथ ही बना रहता है।। २ ।। उसे धरती को धारण करने वाला ईश्वर, नरसिंह, नारायण, वाराह और पृथ्वी को धारण करने वाला कहा जाता है। हे प्रभु, तुझे वामन रूप बनाने वाला भी कहा जाता है और तू सबके लिये ही अच्छा है।। ३ ।। तू वह निराकार राम चन्द्र भी कहा जाता है जिसे बनवारी चक्रपाणि के अनुपम के रूप में भी जाना जाता है। तेरे हजारों नेत्र हैं और हजारों ही प्रतिबिम्ब हैं; तू एक ही दाता है और सब तुझसे ही माँगते हैं।। ४ ।। अनाथों का नाथ तू भक्त वत्सल है और सबके साथ बना रहने वाला गोपीनाथ भी तुझे ही कहते हैं। सबमें बसने वाले दाता प्रभु मैं तेरे गुणों के भेदों का वर्णन नहीं कर सकता।। ५ ।। मुक्तिदाता, मनोहर, लक्ष्मीपति, द्रौपदी की लाज बचाकर उसका उद्धार करने वाला भी तुझे ही कहा जाता है। सब प्रकार की धन सम्पदा का स्वामी बनकर हे प्रभु, तू बिना किसी भय के आनन्द विनोद के कौतुकों में लगा रहता है। वह प्रभु अयोनि, स्वयंभू अर्थात स्वयं से ही प्रकाशित होने वाला है जिसके दर्शन सभी फल देने वाले हैं। उसका स्वरूप कालातीत (अकाल) है जो कभी भी नष्ट नहीं होता। अविनाशी, अव्यक्त, अगोचर आदि सभी विशेषण हे प्रभु, तुझ पर ही अच्छे लगते हैं।। ७ ।। तुझे ही बैकुण्ठ का वासी श्रीरंग कहा जाता है और तुझे ही मत्स्य कच्छप और कूर्म के रूप में अवतार लेने वाला जाना जाता है। सुन्दर केशों वाला केशव बनकर तू अनोखे खेल खेलता है और जो तू चाहता है वास्तव में वही होता है।। ८ ।। निराहारी और निरवैर बनकर तू ही सबमें लीन है और संसार के इस खेल को धारण करने वाला चतुर्भुज तुझे ही कहा जाता है। तू ही सुन्दर साँवला रूप धारण करने वाला है और तेरी बाँसुरी सुनकर सभी मोहित हो जाते हैं।। ९ ।। वैजयन्ती माला और कमलनयन तेरे आभूषण हैं तथा तेरे कुण्डल और मुकुट तथा वीणा भी सुन्दर हैं। शंख, चक्र, गदाधारी तथा महासारथी जो सदैव साथ बना रहने वाला है तुझे ही कहा जाता है।। १० ।। तीनों लोकों का मालिक पीताम्बर धारण करने वाला तू ही है और तुझे ही जगन्नाथ, गोपाल कहा जाता है। धनुषधारी, भगवान, बीठल आदि तुझे इतने नामों से जाना जाता है कि तेरे सभी अंगों और नामों की मैं गिनती नहीं कर सकता।। ११ ।। तुझे ही निष्कंटक अर्थात् दुखों से रहित और शुद्ध स्वरूप कहा जाता है। धन सम्पदा को जीतने वाला धनंजय भी तू ही है जो जल,

महीऐ ॥ मिरत लोक पइआल समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥ १२ ॥ पतित पावन दुख भै भंजनु ॥ अहंकार निवारणु है भव खंडनु ॥ भगती तोखित दीन क्रिपाला गुणे न कित ही है भिगा ॥ १३ ॥ निरंकारु अछल अडोलो ॥ जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥ १४ ॥ आपे गोपी आपे काना ॥ आपे गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रंगा ॥ १५ ॥ एक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फनी सेख अंतु न जानै ॥ नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ कहि संगा ॥ १६ ॥ ओट गही जगत पित सरणाइआ ॥ भै भइआनक जमदूत दुतर है माइआ ॥ होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध संतन कै संगि संगा ॥ १७ ॥ द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ इकु मागउ दानु गोबिद संत रेना ॥ मसतकि लाइ परम पदु पावउ जिसु प्रापति सो पावैगा ॥ १८ ॥ जिन कउ क्रिपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ सगल नाम निधानु तिन पाइआ अनहद सबद मनि वाजंगा ॥ १९ ॥ किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ सति नामु तेरा परा पूरबला ॥ कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा ॥ २० ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ नानक दासु दासन को करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा ॥ २१ ॥ २ ॥ ११ ॥ मारू महला ५ ॥ अलह अगम खुदाई बंदे ॥ छोडि खिआल दुनीआ के धंधे ॥ होइ पै खाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु दरा ॥ १ ॥ सचु निवाज यकीन मुसला ॥ मनसा मारि निवारिहु आसा ॥ देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा ॥ २ ॥ सरा सरीअति ले कंमावहु ॥ तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥ मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा ॥ ३ ॥ कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ दस अउरात रखहु बद राही ॥ पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥ ४ ॥ मका मिहर रोजा पै खाका ॥ भिसतु पीर लफज कमाइ अंदाजा ॥ हूर नूर मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आला हुजरा ॥ ५ ॥

स्थल और अन्तरिक्ष में परिपूर्ण बना हुआ है। मृत्यु लोक, पाताल लोक सभी तेरे ही पास हैं और तेरा वास्तविक स्थान सदैव अटल बना रहने वाला हैं।। १२ ।। दुखों का नाश करने वाला तू ही पतित पावन है और तू ही हमारे अहंकार का निवारण करके आवागमन के चक्र को तोड़ने वाला है। भक्ति के द्वारा हे दीन दयालु प्रभु, तू प्रसन्न होता है तथा अन्य किसी भी गुण के कारण तेरा मन भीगकर प्रसन्न नहीं होता।। १३ ।। तू निराकार अछल और अटल है तथा ज्योति स्वरूप में तू सारे संसार को खिला हुआ रखता है। तू उसी को मिलता है जिसे तू स्वयं मिला लेता है ; कोई अपने आप तुझे प्राप्त नहीं कर सकता।। १४ ।। तू स्वयं ही गोपी है, स्वयं ही कृष्ण है और स्वयं ही वनों में (जीव रूपी) गऊओं को चराने वाला है। तू स्वयं उत्पन्न करता है, स्वयं नष्ट करता है और इस सृष्टि से तुझे तिल मात्र भी मोह का लेप नहीं है। मेरी जीभ एक है और यह भला तेरे कितने गुणों का बखान कर सकती है। तेरा ओर-छोर तो हजारों फनों वाला शेष नाग भी नहीं जानता। तथाकथित शेषनाग दिन रात नए से नए तेरे नामों का जाप करता रहता है परन्तु हे प्रभु, तेरे एक गुण का भी वह बखान नहीं कर पाता।। १६ ।। मैंने तो जगत के पिता प्रभु का आसरा पकड़कर उसकी शरण ले ली है क्योंकि भयानक यमदूतों का और विषम माया का भय जीव को सदैव बना ही रहता है। हे प्रभु, अपनी रजा में ही कृपा करके हमारी रक्षा कर लो और साधु सन्त पुरुषों की संगति में बनाए रखो।। १७ ।। जो कुछ भी दृष्टमान है वह सब नाशवान है। मैं तो प्रभु से सन्तों की चरणधूलि का ही एक दान माँगता हूँ। इसे ही मस्तक पर लगाकर परमपद पाया जाता हैं और जिसके लेखों में इस चरण धूलि का प्रावधान बना हुआ है वही इसे प्राप्त करता है।। १८ ।। सुखदाता प्रभु ने जिन पर कृपा की उनके हृदय में साधु पुरुषों के चरण धारण करवा दिए हैं। प्रभु-नाम का सम्पूर्ण खज़ाना वह प्राप्त कर लेता है और उसके मन में अनहद शब्द की धुन बजती रहती है।। १६ ।। वह जीभ तो तेरे किए हुए कामों के फलस्वरूप जाने जाते नामों का ही कथन करती है परन्तु तेरा वास्तविक नाम तो सत्य नाम ही है। नानक का कथन है कि भक्तजन तेरी शरण में आ पड़े हैं; तू दर्शन दे ताकि मन में तेरा प्रेम बना ही रहे।। २० ।। तेरी गति और सीमा तो तू ही जानता है और तू स्वयं ही कहता है और स्वयं ही उसका बखान करता है। हे प्रभु, यदि तुझे अच्छा लगे तो हमें अपने दासों के साथ बनाए रखो और उन दासों का भी दास हमें कर दो।। २१ ।। २ ।। ११ ।। मारू महला ५ ।। हे अगम्य खुदा के बंदे जीव, तू दुनिया के साँसारिक विचारों और धन्धों को छोड़ दे। तू चरणों की धूलि होकर एक फकीर और मुसाफिर बना रह क्योंकि इसी प्रकार का दरवेश उस प्रभु के द्वार पर स्वीकृत होता है।। १ ।। सत्य को नमाज बनाओ और अपने विश्वास को नमाज पढ़ने वाली चटाई (मुसल्ला) बनाओ। इच्छाओं को समाप्त करके आशाओं का त्याग कर दो। शरीर को मसजिद बनाओ और मन को उसमें मुल्लाह समझा जाए; इस प्रकार अच्छी तरह पवित्र होना ही खुदाई कलमा माना जाना चाहिए।। २ ।। प्रभु-नाम पर आचरण बनाना शरह शरियत है और वैराग्यवान होकर खुदा को खोजना ही तरीकत है। मारीफत यह है कि हे अबदाल फकीर, मन को शान्त किया जाए और उस हकीकत की अवस्था में पहुँचा जाए जिससे फिर जन्म मरण नहीं होता।। ३ ।। कुरान और कतेब को हृदय में धारण कर अच्छे आचरण को बनाओ और दस औरत रूपी इन्द्रियों को बदी के रास्ते पर जाने से रोके रहो। अपने विश्वास के बल पर काम, क्रोध आदि पाँच मर्दो को बाँध कर रखो और दान देने को ही सबूरी अर्थात् सन्तोष का भाव बनाए रखों। ऐसा सन्तोष ही स्वीकार्य होगा।। ४ ।। उसकी कृपा ही मक्का है और लोगों की चरण धूलि बनना ही रोजा है। गुरु पीर के हुकुम को पूरे तौर पर जीवन में उतारना ही बहिश्त है। खुदा की बन्दगी (सुमिरन) ही हूर, नूर और सुगन्ध है और बन्दगी करने के लिये खुदा का घर ही सबसे उत्तम स्थान है अर्थात् सारी दुनियाँ को ही खुदा का घर माना जाए।। ५ ।।

सचु कमावै सोई काजी ॥ जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ सो मुला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥ ६ ॥ सभे वखत सभे करि वेला ॥ खालकु यादि दिलै महि मउला ॥ तसबी यादि करहु दस मरदनु सुंनति सीलु बंधानि बरा ॥ ७ ॥ दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ खिलखाना बिरादर हमू जंजाला ॥ मीर मलक उमरे फानाइआ एक मुकाम खुदाइ दरा ॥ ८ ॥ अवलि सिफति दूजी साबूरी ॥ तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥ पंजवै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि वखत तेरे अपरपरा ॥ ९ ॥ सगली जानि करहु मउदीफा ॥ बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥ खुदाइ एकु बुझि देवहु बांगां बुरगू बरखुरदार खरा ॥ १० ॥ हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा ॥ पीरु पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोज ठरा ॥ ११ ॥ काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ रंग तमासे माणि हकीना ॥ नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा ॥ १२ ॥ मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥ दुनीआ रंग न आवै नेड़ै जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥ १३ ॥ जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ सोई मरदु मरदु मरदाना ॥ सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥ १४ ॥ कुदरति कादर करण करीमा ॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥ १५ ॥ ३ ॥ १२ ॥ मारू महला ५ ॥ पारब्रहम सभ ऊच बिराजे ॥ आपे थापि उथापे साजे ॥ प्रभ की सरणि गहत सुखु पाईऐ किछु भउ न विआपै बाल का ॥ १ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ रकत किरम महि नही संघारिआ ॥ अपना सिमरनु दे प्रतिपालिआ ओहु सगल घटा का मालका ॥ २ ॥ चरण कमल सरणाई आइआ ॥ साधसंगि है हरि जसु गाइआ ॥ जनम मरण सभि दूख निवारे जपि हरि हरि भउ नही काल का ॥ ३ ॥ समरथ अकथ अगोचर देवा ॥ जीअ जंत सभि ता की सेवा ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज बहु परकारी पालका ॥ ४ ॥ तिसहि परापति होइ निधाना ॥ राम नाम रसु अंतरि माना ॥ करु गहि लीने अंध कूप

काजी वह है जो सत्य का आचरण बनाता है और हाजी वह है जो अपने हृदय को शुद्ध बनाए रखता है। नापाक कामो को दूर बनाए रखने वाला ही मुल्ला है और दरवेश वह है जिसका आसरा केवल खुदा का गुणानुवाद करना ही है।। ६ ।। सारे समय को उस प्रभु का ही समय जानो और उस खालिक प्रभु का सुमिरन करते हुए हृदय में प्रसन्न बने रहो। दस इन्द्रियों को नियन्त्रण करने की माला बनाकर उस खुदा को याद रखो तथा शील और नियन्त्रण में बने रहने को ही सुन्नत मानो।। ७ ।। थोड़े समय के लिये भी उसे अपने दिल में झाँक कर देख लो और घरबार, भाई बन्धुओं को फँदों के तौर पर महसूस करो। अमीर, मलिक बादशाह सभी नाशवान हैं और सदैव अटल बना रहने वाला मुकाम तो केवल एक खुदा का द्वार ही है।। ८ ।। पहली नमाज गुणानुवाद और दूसरी सन्तोष धारण करने की है। तीसरी विनम्रता और चौथी दान देना सिखाने वाली है। पाँचों इन्द्रियों को बिखरने ना देकर एक ही जगह टिकाए रखना पाँचवी नमाज है और ये पाँचों समय तेरे लिये बड़े से बड़े और खूबसूरत हैं।। ९ ।। सबमें खुदा को देखना ही वजीफा का पाठ है। बुरे कर्म छोड़ना ही हाथ में लोटा पकड़ना है। एक खुदा को ही सब ओर मानते हुए एक अच्छा बरखुर्दार होने के नाद को बजाते रहो।। १० ।। हक हलाल के खाने को ही खाओ और दरिया की तरह दिल को बड़ा बनाकर उसकी मैल धो डालो। जो गुरु पीर को पहचानता है वही बहिश्त का हकदार है और मौत का फरिश्ता (अजराईल) उसे दोज़ख़ (नर्क) में नहीं धकेलता।। ११ ।। अच्छे कर्म ही तेरे शरीर की परीक्षा है और तेरे विश्वास की पहचान है। इस प्रकार के आचरण से तू खुदा रूपी हक के रंग तमाशों का उपभोग कर। नापाक मन को पवित्र करना यही खुदा की हदीस है और साबत सूरत बने रहना ही सिर पर दस्तार (पगड़ी) सजाने का अर्थात् सम्मान प्राप्त करने का वसीला (साधन) हैं।। १२ ।। मुसलमान वही हैं जिसका दिल मोम की तरह नरम हो और अपने अन्तर्मन की मैल को जो दिल से धो देने वाला हो। वह वैसा ही पवित्र होता है जैसे फूल, रेशम, घी और मृग का चर्म पवित्र होते हैं; वह दुनिया के राग रंग के पास भी नहीं जाता।। १३ ।। जिस पर उस मेहरबान खुदा की कृपा होती है वही वास्तव में मर्दों में श्रेष्ठ मर्द कहा जाता है। वही शेख और हाज़ी के रूप में जाना जाता है जिस व्यक्ति पर उस प्रभु की कृपादृष्टि हो जाती है।। १४ ।। उस कादिर की कुदरत को, उस करीम खुदा के किए हुए कामों को, रहम करने वाले प्रभु के गुण और प्रेम को, हक, हुकुम और खुदाई, सच के रहस्य को जानकर हे नानक, व्यक्ति बन्धनों से मुक्ति पाकर संसार सागर से तैर कर पार हो जाता है।। १५ ।। ३ ।। १२ ।। मारू महला ५ ।। परब्रह्म प्रभु सबसे उच्च स्थान पर विराजमान है; वह स्वयं ही स्थापना करता है, स्वयं ही उखाड़ फेंकता है और फिर स्वयं ही दोबारा बना देता है। प्रभु की शरण पकड़ते ही सुख प्राप्त हो जाता है और फिर माया के प्रभाव का भय जरा भी नहीं रहता।। १ ।। जिसने गर्भ की अग्नि में तेरा उद्धार किया है और माँ के रक्त के कृमि के रूप में रहते हुए तुझ को नहीं मारा, वही प्रभु सम्पूर्ण शरीरों का मालिक है जिसने अपना सुमिरन देकर तुम्हारा पालन पोषण किया है।। २ ।। मैं तेरे चरण कमलों की शरण में आ गया हूँ और साधसंगति में मैंने हरि यश का गायन किया है। प्रभु का सुमिरन करते हुए काल का भय नहीं रहता और जन्म-मरण के सभी दुख दूर हो जाते हैं।। ३ ।। वह अदृष्ट, समर्थ एवं अकथनीय प्रभु है तथा जीव जन्तु सब उसी की सेवा में लगे हैं। अण्डे से पैदा होने वाले, माता के गर्भ से पैदा होने वाले, पसीने से पैदा होने वाले और वनस्पति से पैदा होने वाले जीवों का पालन पोषण करने वाला वह प्रभु ही है।। ४ ।। सुखों का घर वह प्रभु उसी को मिलता है जो राम नाम के रस का आनन्द हृदय में ही लेता रहता है। उसने हमारा हाथ पकड़कर हमें अज्ञान के अन्धे कुएं से निकाल लिया है;

ते विरले केई सालका ॥ ५ ॥ आदि अंति मधि प्रभु सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥ भ्रमु भउ मिटिआ साधसंग ते दालिद न कोई घालका ॥ ६ ॥ ऊतम बाणी गाउ गुोपाला ॥ साधसंगति की मंगहु रवाला ॥ बासन मेटि निबासन होईऐ कलमल सगले जालका ॥ ७ ॥ संता की इह रीति निराली ॥ पारब्रहम करि देखहि नाली ॥ सासि सासि आराधनि हरि हरि किउ सिमरत कीजै आलका ॥ ८ ॥ जह देखा तह अंतरजामी ॥ निमख न विसरहु प्रभ मेरे सुआमी ॥ सिमरि सिमरि जीवहि तेरे दासा बनि जलि पूरन थालका ॥ ९ ॥ तती वाउ न ता कउ लागै ॥ सिमरत नामु अनदिनु जागै ॥ अनद बिनोद करे हरि सिमरनु तिसु माइआ संगि न तालका ॥ १० ॥ रोग सोग दूख तिसु नाही ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाही ॥ आपणा नामु देहि प्रभ प्रीतम सुणि बेनंती खालका ॥ ११ ॥ नाम रतनु तेरा है पिआरे ॥ रंगि रते तेरै दास अपारे ॥ तेरै रंगि रते तुधु जेहे विरले केई भालका ॥ १२ ॥ तिन की धूड़ि मांगै मनु मेरा ॥ जिन विसरहि नाही काहू बेरा ॥ तिन कै संगि परम पदु पाई सदा संगी हरि नालका ॥ १३ ॥ साजनु मीतु पिआरा सोई ॥ एकु द्रिड़ाए दुरमति खोई ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजाए तिसु जन कउ उपदेसु निरमालका ॥ १४ ॥ तुधु विणु नाही कोई मेरा ॥ गुरि पकड़ाए प्रभ के पैरा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे जिनि खंडिआ भरमु अनालका ॥ १५ ॥ सासि सासि प्रभु बिसरै नाही ॥ आठ पहर हरि हरि कउ धिआई ॥ नानक संत तेरै रंगि राते तू समरथु वडालका ॥ १६ ॥ ४ ॥ १३ ॥

मारू महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चरन कमल हिरदै नित धारी ॥ गुरु पूरा खिनु खिनु नमसकारी ॥ तनु मनु अरपि धरी सभु आगै जग महि नामु सुहावणा ॥ १ ॥ सो ठाकुरु किउ मनहु विसारे ॥ जीउ पिंडु दे साजि सवारे ॥ सासि गरासि समाले करता कीता अपणा पावणा ॥ २ ॥ जा ते बिरथा कोऊ नाही ॥ आठ पहर हरि रखु मन माही ॥

मार्ग दर्शन करने वाले कोई बिरले ही होते हैं।। ५ ।। सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त में वह प्रभु ही बना रहता है और जो कर्ता प्रभु स्वयं करता है वही होता है। साधसंगति के कारण मेरा भ्रम और भय मिट गया है और मुझे नष्ट करने वाली दरिद्रता अब नहीं रह गई है।। ६ ।। धरती के रक्षक उस प्रभु की उत्तम वाणी का गायन करो और साधसंगति की चरण धूलि माँगते रहो। वासनाओं को मिटा कर वासना रहित होकर जीने से समस्त पाप जल जाते हैं।। ७ ।। सन्तपुरुषों की यही निराली रीत है कि परब्रह्म प्रभु को वे हमेशा अपने साथ ही देखते हैं। वे प्रत्येक श्वास के साथ उस प्रभु की आराधना करते हैं इसलिये हे जीव, उसका सुमिरन करने में आलस्य क्यों करता है।। ८ ।। जहाँ भी मैं देखता हूँ अन्तर्यामी प्रभु वहीं दिखाई देता है और हे मेरे स्वामी प्रभु, मुझे निमेष मात्र के लिये भी मत भूलो। वनों में, जल में और सम्पूर्ण स्थल में पूर्ण रूप से व्याप्त हे प्रभु, तेरे सेवक तेरा ही सुमिरन करके जीवित बने रहते हैं।। ९ ।। जो प्रभु-नाम का सुमिरन करते हुए प्रतिदिन सावधान बने रहते हैं उन्हें तो दुख देने वाली गर्म हवा भी नहीं छूती। ऐसे व्यक्ति प्रभु का सुमिरन करते हुए विनोद पूर्ण बने रहते हैं और उनका सम्बन्ध माया के साथ नहीं रहता।। १० ।। साधसंगति में जो प्रभु की कीर्ति का गायन करते हैं उन्हें रोग, शोक और दुख नहीं होता। हे खालिक अर्थात् कर्ता प्रभु, मेरी एक विनती सुनकर मुझे अपना नाम प्रदान कर दे।। ११ ।। हे प्यारे प्रभु, तेरा नाम वह रत्न है जिसके प्रेम में तेरे अनेकों दास लीन बने हुए हैं। तेरे रंग में रंगे और तुझ जैसे ही बने कोई बिरले ही पाए जाते हैं।। १२ ।। मेरा मन उनकी चरण धूलि माँगता है जिन्हें किसी भी समय प्रभु भूलता नहीं। उन्हीं की संगति में परम पद पाया जाता है क्योंकि प्रभु सदैव उनका संगी बनकर उनके साथ रहता है।। १३ ।। साजन और प्यारा मित्र वही है जो हमारी दुर्मति दूर करके एक प्रभु का नाम ही हृदय में पक्का करता है। जो काम, क्रोध, अहंकार को दूर करवा देता है उस सेवक का उपदेश निर्मल होता है।। १४ ।। गुरु ने मुझे प्रभु के चरण पकड़ा दिए हैं और हे प्रभु, अब तेरे बिना मेरा कोई नहीं है। मैं उस सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसने मुझे बाहर से चिपके हुए भ्रमों का खण्डन करके उन्हें मुझसे दूर कर दिया है। मैं आठों प्रहर उस प्रभु का सुमिरन करूं और मेरे किसी भी श्वास के समय मुझे प्रभु विस्मृत ना हो। नानक का कथन है कि हे प्रभु, तू ही समर्थ और महान है तथा तेरे शान्त पुरुष तेरे प्रेम के रंग में ही रंगे रहते हैं।। १६ ।। ४ ।। १३ ।।

मारू महला ५   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

मैं चरण कमलों को सदैव हृदय में धारण किए रहूँ और पूर्ण गुरु को प्रत्येक क्षण प्रणाम करता रहूँ। इस संसार में प्रभु का नाम ही सुहाना लगने वाला है इसलिये मैं तन मन को अर्पण करके सब कुछ उस प्रभु के आगे रख दूं।।१।। जिसने प्राण और शरीर देकर हमारी रचना करके हमें सँवार दिया है उस मालिक को मन से क्यों भुलाया जाए। खाते-पीते हुए प्रत्येक श्वास के साथ वह कर्ता हमें सम्भाले रहता है परन्तु फिर भी हम अपने किये कर्मों का ही फल पाते हैं।। २ ।। उसके पास से कोई भी खाली नहीं आता इसलिये आठों प्रहर उस प्रभु को ही अपने मन में बसाए रखो।

साधसंगि भजु अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा ॥ ३ ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि ॥ नामु निधानु सहज सुखु नउ निधि ॥ सरब कलिआण जे मन महि चाहहि मिलि साधू सुआमी रावणा ॥ ४ ॥ सासत सिंम्रिति बेद वखाणी ॥ जनमु पदारथु जीतु पराणी ॥ कामु क्रोधु निंदा परहरीऐ हरि रसना नानक गावणा ॥ ५ ॥ जिसु रूपु न रेखिआ कुलु नही जाती ॥ पूरन पूरि रहिआ दिनु राती ॥ जो जो जपै सोई वडभागी बहुड़ि न जोनी पावणा ॥ ६ ॥ जिस नो बिसरै पुरखु बिधाता ॥ जलता फिरै रहै नित ताता ॥ अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥ ७ ॥ जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥ मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥ तिस सिउ प्रीति छाडि अन राता काहू सिरै न लावणा ॥ ८ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे ॥ घटि घटि वसहि सभन कै नेरे ॥ हाथि हमारै कछूऐ नाही जिसु जणाइहि तिसै जणावणा ॥ ९ ॥ जा कै मसतकि धुरि लिखि पाइआ ॥ तिस ही पुरख न विआपै माइआ ॥ नानक दास सदा सरणाई दूसर लवै न लावणा ॥ १० ॥ आगिआ दूख सूख सभि कीने ॥ अंम्रित नामु बिरलै ही चीने ॥ ता की कीमति कहणु न जाई जत कत ओही समावणा ॥ ११ ॥ सोई भगतु सोई वड दाता ॥ सोई पूरन पुरखु बिधाता ॥ बाल सहाई सोई तेरा जो तेरै मनि भावणा ॥ १२ ॥ मिरतु दूख सूख लिखि पाए ॥ तिलु नही बधहि घटहि न घटाए ॥ सोई होइ जि करते भावै कहि कै आपु वञावणा ॥ १३ ॥ अंध कूप ते सेई काढे ॥ जनम जनम के टूटे गांढे ॥ किरपा धारि रखे करि अपुने मिलि साधू गोबिंदु धिआवणा ॥ १४ ॥ तेरी कीमति कहणु न जाई ॥ अचरज रूपु वडी वडिआई ॥ भगति दानु मंगै जनु तेरा नानक बलि बलि जावणा ॥ १५ ॥ १ ॥ १४ ॥ २२ ॥ २४ ॥ २ ॥ १४ ॥ ६२ ॥

मारू वार महला ३   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ विणु गाहक गुणु वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥ गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥

साधसंगति में उस अटल अविनाशी प्रभु का सुमिरन कर जिससे तुझे प्रभु दरबार में शोभा प्राप्त हो जाएगी।। ३ ।। चारों पुरुषार्थ और अठारहों सिद्धियाँ, नवनिधियाँ और आत्मा का स्वाभाविक सुख उस प्रभु नाम के भण्डार में ही स्थित है। हे जीव, यदि तू अपने मन में सभी प्रकार का सुख चाहता है तो साधु पुरुषों के साथ मिल बैठकर स्वामी प्रभु का सुमिरन कर।। ४ ।। शास्त्रों, स्मृतियों और वेदों में कहा गया है कि मानव जीवन जैसे दुर्लभ पदार्थ को हे प्राणी, तू जीत ले। इस जीवन के काम, क्रोध, निंदा आदि को त्यागकर हे नानक, अपनी जीभ से प्रभु का ही गुणानुवाद करना चाहिये।। ५ ।। जिसका रूप आकार, कुल और जाति नहीं है वह प्रभु सदैव सब ओर परिपूर्ण रूप से व्याप्त है। जो-जो उसका सुमिरन करता है वह भाग्यशाली होता है और फिर योनियों में नहीं पड़ता।। ६ ।। रचना करने वाला प्रभु जिसको विस्मृत हो जाता है वह जलता हुआ सदैव भटकता रहता है। एहसान फरामोश को तो कोई भी अपने पास नहीं रखता और वह घोर नर्क मे ही डाला जाता है।। ७ ।। जिसने जीव, प्राण, तन और धन की रचना की है और माता के गर्भ में रखकर भी कृपा पूर्वक रक्षा की है यह जीव उससे प्रेम छोड़कर अन्यों के साथ लीन बना रहता है और यह नहीं जानता कि किसी और ने पार नहीं लगाना है।। ८ ।। हे मेरे मालिक और घट-घट में तथा सबके पास ही बसने वाले प्रभु मुझ पर कृपा करो। हमारे हाथ में कुछ नहीं है और इस रहस्य को जिसे तू बताता है वही जानता है।। ९ ।। जिसके माथे पर प्रभु ने प्रारम्भ से ही लेख लिख दिया उस व्यक्ति को माया प्रभावित नही करती। दास नानक तो सदैव उस प्रभु की शरण में ही रहता है तथा दूसरे किसी को भी अपने पास नहीं आने देता।। १० ।। प्रभु ने अपनी आज्ञा में ही सभी सुख दुख उत्पन्न किए हैं और किसी बिरले ने ही प्रभु के अमृत नाम को पहचाना है। उस प्रभु के मूल्य को आँका नहीं जा सकता और यहाँ वहाँ अर्थात् सब तरफ वह प्रभु ही व्याप्त बना है।। ११ ।। वह ही भक्त है और वह ही बड़ा दाता है; वह प्रभु ही पूर्ण पुरुष और विधाता है। बचपन से ही वह तेरा सहायक है और वह ही तेरे मन को अच्छा लगना चाहिए।। १२ ।। मृत्यु, दुख, सुख सब लिखकर उसने जीव के अन्दर डाल दिए है जिनमें से तिल मात्र भी ना बढ़ सकता है और ना घटाने से घट सकता है। जो कर्ता को भाता है वही होता है और स्वयं अपने आपको कर्ता कहलाने से जीव को ख्वार ही होना पड़ता है।। १३ ।। माया के अन्धे कुएँ में से वह प्रभु ही निकालता है और जन्मों-जन्मान्तरों के टूटे हुए सम्बन्ध फिर जोड़ देता है। कृपा धारण करके उसने हमें अपना बनाया है और हम साधुजनों से मिलकर उस प्रभु की आराधना करते हैं।। १४ ।। तेरा मूल्य नहीं आँका जा सकता और तेरी शोभा महान है तथा तेरा रूप आश्चर्यजनक है। तेरा सेवक तुझसे भक्ति का दान माँगता है और नानक उस पर बार-बार बलिहारी जाता है।। १५ ।। १ ।। १४ ।। २२ ।। २४ ।। २ ।। १४ ।। ६२।।

मारू वार महला ३   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

श्लोक महला १।। गुण के ग्राहक के बिना यदि गुण को बेचा जाए तो गुण बहुत सस्ते में ही चला जाता है और यदि गुण का वास्तविक ग्राहक अर्थात गुण की परख करने वाला मिल जाए तो वही गुण लाखों में बिकता है।

गुण ते गुण मिलि पाईऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ मोुलि अमोुलु न पाईऐ वणजि न लीजै हाटि ॥ नानक पूरा तोलु है कबहु न होवै घाटि ॥ १ ॥ मः ४ ॥ नाम विहूणे भरमसहि आवहि जावहि नीत ॥ इकि बांधे इकि ढीलिआ इकि सुखीए हरि प्रीति ॥ नानक सचा मंनि लै सचु करणी सचु रीति ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा ॥ दूजा भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥ हरि का नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ॥ सच संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ॥ सभु सचो सचु वरतदा सचु सिरजणहारा ॥ १ ॥ सलोकु मः ३ ॥ केदारा रागा विचि जाणीऐ भाई सबदे करे पिआरु ॥ सतसंगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ॥ विचहु मलु कटे आपणी कुला का करे उधारु ॥ गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥ नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरू न छोडै आपणा दूजै न धरे पिआरु ॥ १ ॥ मः ४ ॥ सागरु देखउ डरि मरउ भै तेरै डरु नाहि ॥ गुर कै सबदि संतोखीआ नानक बिगसा नाइ ॥ २ ॥ मः ४ ॥ चड़ि बोहिथै चालसउ सागरु लहरी देइ ॥ ठाक न सचै बोहिथै जे गुरु धीरक देइ ॥ तितु दरि जाइ उतारीआ गुरु दिसै सावधानु ॥ नानक नदरी पाईऐ दरगह चलै मानु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ निहकंटक राजु भुंचि तू गुरमुखि सचु कमाई ॥ सचै तखति बैठा निआउ करि सतसंगति मेलि मिलाई ॥ सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई ॥ ऐथै सुखदाता मनि वसै अंति होइ सखाई ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई ॥ २ ॥ सलोकु मः १ ॥ भूली भूली मै फिरी पाधरु कहै न कोइ ॥ पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु काटै मेरा कोइ ॥ सतिगुरु साचा मनि वसै साजनु उत ही ठाइ ॥ नानक मनु त्रिपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपे करणी कार आपि आपे करे रजाइ ॥ आपे किस ही बखसि लए आपे कार कमाइ ॥ नानक चानणु गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ माइआ वेखि न भुलु तू मनमुख मूरखा ॥ चलदिआ नालि न चलई सभु झूठु दरबु लखा ॥ अगिआनी अंधु न बूझई सिर ऊपरि जम खड़गु कलरखा ॥ गुर परसादी उबरे

यदि सच्चे गुरु में लीन होकर रहा जाए तो गुण वाले के मिलाप के साथ उससे गुण प्राप्त होता है। अमूल्य धन मोल में नहीं खरीदे जा सकते और ना ही उन्हें किसी दुकान से प्राप्त किया जा सकता है। हे नानक, उस प्रभु का तौल ऐसा पूरा है कि उसमें कभी भी कमी नहीं आती।। १ ।। महला ४ ।। प्रभु नाम से विहीन लोग सदैव आते-जाते हुए भटकते रहते हैं। कई तो बन्धनों में बँधे हैं, कईयों ने बन्धनों को ढीला किया हुआ है और अनेकों ऐसे भी हैं जो प्रभु की प्रीति में सुखी बने हुए है। हे नानक, तू यह सत्य रूप से मान ले कि उस प्रभु का कर्म और उस कर्म की विधि दोनों ही सच्चे हैं।। २ ।। पउड़ी।। गुरु से ज्ञान रूपी अत्यन्त मजबूत खड्ग मैंने प्राप्त किया है और.उससे लोभ, मोह, अहंकार तथा द्वैतभाव के भ्रमों के किले को नष्ट कर दिया है। शब्द-गुरु के चिंतन के फलस्वरूप प्रभु का नाम मेरे हृदय में बस गया है। सत्य, संयम और उत्तम बुद्धि के कारण अब प्रभु मुझे प्यारा लगने लगा है और मैं मानने लग गया हूँ कि वह सच्चा सृजनहार प्रभु सत्य रूप में ही सबमें कार्यशील है।। १ ।। श्लोक महला ३ ।। यदि शब्द के साथ प्यार किया जाए तभी गाया हुआ राग केदारा श्रेष्ठ बन जाता है अन्यथा नहीं। सत्य से प्रेम लगाने पर सत्संगति के माध्यम से वह सत्य रूपी प्रभु मिलता ही रहता है। प्रभु प्रेम अन्तर्मन की मैल काट देता है और सभी कुलों का उद्धार कर देता है। जीव को चाहिए कि वह गुणों की रासपूंजी इकट्ठी करे और अवगुणों को मारकर बाहर निकाल दे। हे नानक, उसे ही प्रभु से मिला हुआ जाना जाता है जो अपने गुरु को नहीं छोड़ता और किसी अन्य से प्रेम नहीं डालता।। १ ।। महला ४ ।। संसार सागर को देखता हूँ तो मैं डर कर मर जाता हूँ परन्तु तेरे भय (अनुशासन) में बंधे रहने से साँसारिक भय नहीं बना रहता। शब्द-गुरु में ही सन्तुष्ट रहा जाता है और हे नानक, मैं प्रभु नाम में ही खिलता हूँ।। २ ।। महला ४ ।। यदि साधारण जहाज पर चढ़ा जाए तो समुद्र बड़ी-बड़ी लहरों से डराता रहता है परन्तु यदि गुरु ज्ञान के सच्चे जहाज पर सवार हुआ जाए जिसमें गुरु जैसा धैर्य देने वाला साथ हो तो वह उस प्रभु के द्वार पर जाकर उतार देता है; इस प्रकार गुरु सदैव सावधान दिखाई देता रहता है। हे नानक, उस प्रभु की कृपा दृष्टि से ही गुरु प्राप्त होता है और प्रभु दरबार में सम्मान मिलता है।। ३ ।। पउड़ी ।। गुरमुख बनकर सत्य का आचरण करते हुए हे जीव, तू सब प्रकार के दुखों से विहीन निष्कंटक राज का सुख प्राप्त कर। वह प्रभु सच्चे सिंहासन पर न्याय करने वाले के रूप में बैठा है और सत्संगति के माध्यम से ही उससे मेल मिलाप होता है। उसका सच्चा उपदेश प्रभु का सुमिरन करना है और सुमिरन के माध्यम से ही प्रभु से प्रीति लगती है। यहाँ सुखदाता प्रभु मन में बसने से वही अंत में मित्र बना रहता है। गुरु के द्वारा ही यह समझ प्राप्त हुई है और प्रभु के साथ मेरी प्रीति लग गई है।। २ ।। श्लोक महला १ ।। मैं भूली भटकती घूम रही हूँ परन्तु कोई भी मुझे रास्ता नहीं बताता। मुझे किसी सयाने व्यक्ति से पूछ लेना चाहिए कि कौन मेरा दुख काट सकता है। यदि सच्चा गुरु मन में बस जाए तो वह प्रभु मित्र भी वहीं बसता हुआ दिखाई देता है। हे नानक, प्रभु के गुणानुवाद तथा सच्चे नाम के माध्यम से ही मन तृप्त होता है।। १ ।। महला ३ ।। वह स्वयं ही कार्य है स्वयं ही अपनी रज़ा में वह कार्य कराने वाला भी है। कईयों को स्वयं ही क्षमा कर देता है और स्वयं ही उनका काम भी कर देता है। हे नानक, यदि गुरु रूपी प्रकाश मिल जाए तो मैं विष रूपी काया के दुख प्रभु नाम के माध्यम से जला डालूं।। २ ।। पउड़ी।। हे मूर्ख मन, तू माया के प्रसार को देखकर अपने होश मत भूल क्योंकि यह झूठा दिखने वाला द्रव्य यहाँ से जाने वाला है और यह साथ नहीं जाता। अज्ञानी अन्धा व्यक्ति इस बात को नहीं जानता कि उसके सिर पर यम का भयानक खड्ग स्थित बना हुआ है। गुरु की कृपा से केवल वे ही बच पाए हैं

जिन हरि रसु चखा ॥ आपि कराए करे आपि आपे हरि रखा ॥ ३ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥ कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥ नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ त्रिभवण ढूढी सजणा हउमै बुरी जगति ॥ ना झुरु हीअड़े सचु चउ नानक सचो सचु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ गुरमुखि आपे बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥ आपे भगती लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥ सनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥ ऐथै ओथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ धंनु धंनु से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे ॥ ४ ॥ सलोकु मः १ ॥ महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ जे गुण होवनि ता पिरु रवै नानक अवगुण मुंध ॥ १ ॥ मः १ ॥ साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ नानक अहिनिसि सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ ॥ गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥ हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस ठाकि रहाइआ ॥ हरि रसु पी सदा त्रिपति भए फिरि त्रिसना भुख गवाइआ ॥ ५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ पिर खुसीए धन रावीए धन उरि नामु सीगारु ॥ नानक धन आगै खड़ी सोभावंती नारि ॥ १ ॥ मः १ ॥ ससुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक धंनु सोहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥ जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥ एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥ कीता किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई ॥ निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥ ६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीऐ ॥ जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि अपार कै ॥ नानक गुर परसादी छुटीऐ जे चितु लगै सचि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि का नामु अमोलु है

जिन्होंने हरि रस चख लिया है। वह प्रभु ही सब कुछ करता कराता है और स्वयं ही सब की रक्षा करता है।। ३ ।। श्लोक महला ३ ।। जिन्हें गुरु नहीं मिला तथा जिन्हें इस बात का भय नहीं है वे आवागमन के घोर दुख सहन करते रहते हैं और उनकी चिन्ता कभी समाप्त नहीं होती। जैसे कपड़े धोने वाले कपड़ो को पछाड़-पछाड़ कर पीटते हैं अथवा घड़ियाल घण्टों को बजाता हुआ पीटा जाता है इसी प्रकार हे नानक, प्रभु के सच्चे नाम बिना व्यक्ति के सिर से झंझट समाप्त नहीं होते।। १ ।। महला ३ ।। हे मित्र, मैंने तीनों लोकों में खोजकर देख लिया है कि इस संसार में अहंकार बुरा विकार है। हे मेरे मन, तू पछतावा मत कर और सच बोल। हे नानक, सब ओर सत्य ही सत्य है।। २ ।। पउड़ी।। गुरमुख जो प्रभु-नाम में लीन बने हैं उन्हें प्रभु ने स्वयं ही क्षमा कर दिया। उन्हें उसने स्वयं ही भक्ति में लगा दिया है और शब्द गुरु का चिन्ह उनमें से प्रकट होता रहता है। वे प्रभु के सम्मुख बने हुए सदा सुन्दर लगते हैं और उसके द्वार पर उन्हें सच्चा माना जाता है। जिन्होंने प्रभु को पहचान लिया है वे यहां वहाँ सदैव मुक्त बने रहते हैं। जिन्होंने प्रभु का सुमिरन किया है वे सेवक धन्य हैं और मैं उनपर कुर्बान जाता हूँ।। ४ ।। श्लोक महला १ ।। अपने शरीर पर अभिमान करने वाली स्त्री अच्छे आचरण वाली नहीं होती; और मन से काली ही बनी रहती है। यदि उसमे गुण होते हो वह प्रियतम प्रभु के साथ रमण करती। इसलिये हे नानक, वह जीव स्त्री अवगुणों वाली है।। १ ।। महला १ ।। सच्ची शीलवान, संयम वाली और अपने परिवार में पूरा उतरने वाली हे नानक दिन-रात सदैव भली रहने वाली वही स्त्री है जिसको अपने प्रियतम के साथ प्यार होता है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु के नाम का भण्डार प्राप्त करने से मैंने अपने आपको पहचान लिया है। प्रभु ने कृपा करके गुरु के उपदेश के माध्यम से अर्थात शब्द-गुरु के द्वारा मुझे अपने से मिला लिया। गुरु की वाणी निर्मल है और इसे हरि रस के रूप में पी लिया जाता है। जिन्होंने हरि रस को चख लिया है बाकी सभी रस उनसे दूर हो गए हैं। हरि रस पीकर जीव सन्तुष्ट हो जाते हैं और फिर उनकी तृष्णा और भूख समाप्त हो जाती है।। ५ ।। श्लोक महला ३ ।। प्रभु अपने आनन्द में ही जीव रूपी उस स्त्री के साथ रमण करता है जिसके हृदय में प्रभु नाम रूपी शृंगार बना रहता है। हे नानक, ऐसी स्त्री शोभायमान स्त्री बनकर सबसे आगे खड़ी रहती है।। १ ।। महला १ ।। इस संसार और उस संसार अर्थात मायके और ससुराल दोनों ही स्थानों पर जीव स्त्री उस प्रभु मालिक की है और वह प्रभु प्रीति अगम्य एवं अथाह है। हे नानक, वह सुहागिन धन्य है जो उस बेपरवाह प्रभु को भा जाती है।। २ ।। पउड़ी।। सिंहासन पर वही राजा बैठे जो सिंहासन के योग्य हो; जिन्होंने सत्य को पहचान लिया है वे ही सच्चे राजा है। धरती के इन राजाओं को राजा नहीं कहा जाता क्योंकि ये द्वैतभाव में पड़े हुए दुखी होते रहते हैं। उसके पैदा किये जीवो का तथा वस्तुओं का गुणानुवाद क्या किया जाए क्योंकि इन्हें तो जाते समय जरा भी देर नहीं लगती। सदैव अटल बना रहने वाला केवल एक प्रभु ही है और जो गुरमुख इस रहस्य को बूझ लेता है वह भी अटल अमर हो जाता है।। ६ ।। श्लोक महला ३ ।। सबका प्रियतम प्रभु एक ही है और उस प्रियतम प्रभु से विहीन कोई नहीं है। हे नानक, सुहागिन वही है जो सच्चे गुरु में लीन बनी रहती है।।१ ।।महला ३ ।। जब तक मन में अनेकों लहरें उठती रहेंगी तब तक प्रभु के द्वार पर छुटकारा कैसे होगा। यदि उस अपरम्पार प्रभु के गाढ़े और सच्चे रंग में अपने आपको रंग लिया जाए तो हे नानक, सत्य में चित्त लगाने के कारण गुरु की कृपा से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।। २ ।। पउड़ी ।। प्रभु का नाम अमूल्य है

किउ कीमति कीजै ॥ आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥ गुर सबदी कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥ आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजि सवीजै ॥ ७ ॥ सलोकु मः १ ॥ ना मैला ना धुंधला ना भगवा ना कचु ॥ नानक लालो लालु है सचै रता सचु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै खंडि ॥ नानक तरवरु एकु है एको फुलु भिरंगु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना ॥ हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥ गिआनीआ का इहु महतु है मन माहि समाना ॥ हरि जीउ का महलु पाइआ सचु लाइ धिआना ॥ जिन गुर परसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना ॥ ८ ॥ सलोकु मः ३ ॥ जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिआ लेउ ॥ दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥ भिखिआ नामु संतोखु मड़ी सदा सचु है नालि ॥ भेखी हाथ न लधीआ सभ बधी जमकालि ॥ नानक गला झूठीआ सचा नामु समालि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु सेविहु न कोइ ॥ ऐसा सतिगुरु लोड़ि लहु जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइ ॥ सचु द्रिड़ाए सचु दिड़ु सचा ओहु सबदु देइ ॥ हिरदै जिस दै सचु है तनु मनु भी सचा होइ ॥ नानक सचै हुकमि मंनिऐ सची वडिआई देइ ॥ सचे माहि समावसी जिस नो नदरि करेइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सूरे एहि न आखीअहि अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥ अंधे आपु न पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥ अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥ हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि ॥ अहंकारि मुए से विगती गए मरि जनमहि फिरि आवहि ॥ ९ ॥ सलोकु मः ३ ॥ कागउ होइ न ऊजला लोहे नाव न पारु ॥ पिरम पदारथु मंनि लै धंनु सवारणहारु ॥ हुकमु पछाणै ऊजला सिरि कासट लोहा पारि ॥ त्रिसना छोडै भै वसै नानक करणी सारु ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मारू मारण जो गए मारि न सकहि गवार ॥ नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि ॥ एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ ॥ नानक मन ही कउ मनु मारसी जे सतिगुरु भेटै

फिर भला उसका मूल्य क्यों आँका जाए। सारी सृष्टि की रचना जिसने स्वयं की है और वह स्वयं ही उसमें कार्यशील है। गुरमुख बनकर सदैव उसका गुणानुवाद करना ही वास्तव में उसका सच्चा मूल्य निर्धारण है। शब्द-गुरु के माध्यम से हृदय कमल खिल जाता है अतः इस प्रकार प्रभु के नाम का रस ही पीते रहना चाहिये। इसी तरह आवागमन रुक जाता है और जीव स्वाभाविक सुख में ही सुख की नींद सोता है।। ७ ।। श्लोक महला १ ।। ना मैला, ना धुंधला ना ही भगवा और ना ही इन सबके कारण माया का कच्चा रंग मुझ पर चढ़ा है। हे नानक, मुझे तो प्रभु-नाम की लाली के कारण पूर्ण आनन्द प्राप्त हुआ है क्योंकि मेरा सत्य उस प्रभु रूपी सत्य के साथ मिलकर उसी में लीन हो गया है।। १ ।। महला ३ ।। स्वाभाविक अवस्था में वनस्पति में फल फूल की प्राप्ति है तथा गुरमुख रूपी भँवरा भय दूर करके इसमें निवास बना लेता है। हे नानक, पौधा तो प्रभु है उसका नाम फूल है और गुरमुख भँवरा बनकर उसमें लीन हो जाता है।। २ ।। पउड़ी ।। जो सेवक मन का मुकाबला करते हैं वे ही प्रमुख शूरवीर हैं। जिन्होंने अपने आपको पहचान लिया है वे सदैव प्रभु में लीन बने रहते हैं। ज्ञानवान पुरुषों का यही बड़प्पन है कि प्रभु उनके मन में समाया रहता है। उन्होंने सत्य में ध्यान लगा लिया है और इस प्रकार उन्होंने प्रभु के स्थान को प्राप्त कर लिया है। जिन्होंने गुरु की कृपा से मनको जीत लिया है उन्होंने वास्तव में संसार को ही जीत लिया है।। ८ ।। श्लोक महला ३ ।। यदि मैं योगी बनकर संसार में भटकता रहूँ और घर-घर जाकर भिक्षा लेता रहूँ तो जब प्रभु दरबार में इसी लीए हुए का हिसाब होगा तो मैं किस-किस को उत्तर दूंगा। मैंने तो प्रभु-नाम को ही भिक्षा बनाया है और सन्तोष को शरीर रूपी घर बनाया है और सदैव सत्य को अपने साथ रखा है। केवल वेश धारण करने वाले को वास्तविकता का पता नहीं चलता और इस प्रकार यह सारी सृष्टि यम काल के द्वारा बाँधी हुई पड़ी है। हे नानक, संसार की सभी बातें झूठी हैं इसलिये तू सच्चे नाम को ही हृदय में सम्भाल कर रख।। १ ।। महला ३ ।। जिस द्वार पर बने रहने से लेखा माँगा जाता है ऐसे द्वार को मन में नहीं लाना चाहिए। ऐसे सच्चे गुरु को ढूँढ लो जिसके जैसा अन्य कोई नहीं। उसकी शरण में आने से छुटकारा होता है और कोई भी लेखा नहीं माँगता। वह स्वयं सत्य को समझता है और उस सत्य के बारे में दूसरों को भी समझाता है; वही प्रभु सच्चा शब्द प्रदान करता है। जिसके हृदय मे सत्य है उसका तन मन भी सच्चा होता है। अतः हे नानक, उस सच्चे के हुकुम को मानना चाहिए जो सच्चा बड़प्पन प्रदान करता है। जिस पर कृपा दृष्टि करता है वही उस सच्चे प्रभु में लीन हो जाता है।। २ ।। पउड़ी।। वे शूरवीर नहीं कहे जाते जो अहंकार में ही मरकर दुख पाते रहते हैं। वे अन्धे अज्ञानी व्यक्ति अपने आपको नहीं पहचानते और द्वैतभाव में ही मर खप जाते हैं। अत्यन्त क्रोधित होकर वे लड़ते-झगड़ते रहते हैं और यहाँ वहाँ दुख ही दुख पाते रहते हैं। वेद भी यही पुकार कर सुनाते हैं कि प्रभु को अहंकार अच्छा नहीं लगता। जो अहंकार भाव में ही मर जाते है उनकी गति नहीं होती और वे मरते-जन्मते आते-जाते रहते हैं ।। ९ ।। श्लोक महला ३ ।। कौआ कभी उज्जवल हँस नहीं बनता और लोहे की नाव से पार नहीं उतरा जा सकता। यदि हम प्रभु के नाम रूपी पदार्थ पर मन लगा लें तो वह धन्य प्रभु स्वयं ही सब कुछ सँवार देता है। हुकुम को पहचान कर जीव उज्जवल हो जाता है और जिस प्रकार लकड़ी की नाव के साथ लोहा भी पार हो जाता है उसी प्रकार पापी भी प्रभु नाम को आधार बना कर उबर जाता है। हे नानक, सारे कर्मों से श्रेष्ठ कर्म यही है कि तृष्णा को छोड़ा जाए और प्रभु के भय में बने रहा जाए।। १ ।। महला ३ ।। जो मरुस्थल और जंगल आदि में मन को मारने गए वे गँवार मन को मार नहीं सके। हे नानक, यदि मन को शान्त करना है तो शब्द गुरु के चिंतन से ही यह शान्त होगा। बेशक सभी चाहते हैं परन्तु यह मन मारने से मरता नहीं। हे नानक, यदि सच्चे गुरु से मिलाप हो जाए तो यह मन ही समझदार बनकर अपने वासनापूर्ण रूप में बने हुए मन को मार देता है

सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाईओनु विचि सकति सिव वासा ॥ सकती किनै न पाइओ फिरि जनमि बिनासा ॥ गुरि सेविऐ साति पाईऐ जपि सास गिरासा ॥ सिम्रिति सासत सोधि देखु ऊतम हरि दासा ॥ नानक नाम बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥ १० ॥ सलोकु मः ३ ॥ होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नव खंड मधे पूजीआ अपणै चजि वीचारि ॥ मतु सचा अखरु भुलि जाइ चउकै भिटै न कोइ ॥ झूठे चउके नानका सचा एको सोइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ आपि उपाए करे आपि आपे नदरि करेइ ॥ आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोई ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ कंटकु कालु एकु है होरु कंटकु न सूझै ॥ अफिरओ जग महि वरतदा पापी सिउ लूझै ॥ गुर सबदी हरि भेदीऐ हरि जपि हरि बूझै ॥ सो हरि सरणाई छुटीऐ जो मन सिउ जूझै ॥ मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥ ११ ॥ सलोकु मः १ ॥ हुकमि रजाई साखती दरगह सचु कबूलु ॥ साहिबु लेखा मंगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥ दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि ॥ इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥ १ ॥ मः १ ॥ अलगउ जोइ मधूकड़उ सारंगपाणि सबाइ ॥ हीरै हीरा बेधिआ नानक कंठि सुभाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुख कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ॥ खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥ फिरि वेला हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥ तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥ सभ तेरी तुधु छडावणी सभ तुधै लागे ॥ १२ ॥ सलोकु मः १ ॥ सरबे जोइ अगछमी दूखु घनेरो आथि ॥ कालरु लादसि सरु लाघणउ लाभु न पूंजी साथि ॥ १ ॥ मः १ ॥ पूंजी साचउ नामु तू अखुटउ दरबु अपारु ॥ नानक वखरु निरमलउ धंनु साहु वापारु ॥ २ ॥ मः १ ॥ पूरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि ॥ माथै ऊभै जमु मारसी नानक मेलणु नामि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ आपे पिंडु सवारिओनु विचि नव निधि नामु ॥ इकि आपे भरमि भुलाइअनु तिन निहफल कामु ॥ इकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतम रामु ॥ इकनी सुणि कै मंनिआ हरि ऊतम कामु ॥ अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु ॥ १३ ॥ सलोकु मः १ ॥

।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु ने यह लोक और परलोक, यह धरती और आकाश उत्पन्न किया है और माया रूपी शक्ति में शिव रूपी जीव का निवास कराया है। माया में फँसा हुआ कोई भी उस प्रभु को नहीं पा सका है और उसका जीवन तो विनष्ट ही होता है। गुरु का सुमिरन करते हुए शान्ति प्राप्त होती है और उसका जाप खाते-पीते करते रहना चाहिए। स्मृतियाँ और शास्त्रों को खोजकर देखलो वहाँ यही पता चलेगा कि प्रभु का दास ही सबसे उत्तम है। हे नानक, प्रभु नाम के बिना कुछ भी स्थिर नहीं है इसलिये मैं उस नाम पर बलिहारी जाता हूँ।। १० ।। श्लोक महला ३ ।। मैं पंडित और ज्योतिषी बनकर चारों वेदों का पाठ करता रहूँ और अपने कर्मकाण्डी आचरण के कारण नवखण्ड पृथ्वी पर पूजा जाऊँ। तेरे होते हुए यह सच्ची बात मुझे ना भूल जाए कि चौके आदि में कुछ भी स्पर्श करने से खराब नहीं होता क्योंकि चौके तो झूठे होते हैं। हे नानक, केवल एक प्रभु ही सच्चा है ।। १ ।। महला ३ ।। वह स्वयं ही उत्पन्न करता है और स्वयं ही कृपा दृष्टि करता है। नानक का कथन है कि वह सच्चा प्रभु ही स्वयं बड़प्पन प्रदान करता है।। २ ।। पउड़ी।। दुखदाई तो एक काल ही है अन्य और कोई दुख देने वाला तो मुझे सूझता नहीं। यह ना टलने वाला बनके संसार में व्याप्त है और पापी व्यक्ति के साथ जूझता रहता है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही प्रभु में लीन हुआ जाता है और प्रभु का सुमिरन करने से ही प्रभु के बारे में समझ आती है। जो मन से युद्ध करता रहता है वह प्रभु की शरण में आकर मुक्त हो जाता है। जब व्यक्ति मन में चिंतन करता हुआ प्रभु का जाप करता है तो वह प्रभु के दरबार में सफल हो जाता है।। ११ ।। श्लोक महला १ ।। रज़ा वाले प्रभु के हुकुम में रहने से प्रभु के साथ प्रेम बन जाता है और प्रभु के दरबार में सत्य स्वीकार हो जाता है। हे जीव, तू दुनियां को देखकर भ्रम में मत पड़ जा क्योंकि वह प्रभु तुझसे तेरे कर्मों का हिसाब माँगेगा। दिल की निगरानी करना और इसे सीधे रास्ते पर चलाये रखना ही वास्तव में दरवेशी अथवा फकीरी है। हे नानक, जब प्रभु से इश्क-मोहब्बत कर लिया जाता है तो यह लेखा प्रभु के पास ही होता है धर्मराज कुछ नहीं कर सकता।। १ ।। महला १ ।। जो व्यक्ति अलेप होकर फकीर की तरह रहता है और भँवरे की तरह सभी स्थानों पर घूम घूम कर सार तत्व ग्रहण करने वाला बन जाता है वह सबमें प्रभु को देखता है, उसका मन रूपी हीरा प्रभु नाम रूपी हीरे से बिंध जाता है और हे नानक, स्वभाविक ही उसके हृदय रूपी गले में प्रभु आ बसता है।। २ ।। पउड़ी।। माया मोह में लगे हुए मनमुख को काल डराता रहता है। जो द्वैतभाव में ठगे जाते हैं काल उन्हें क्षण भर में पछाड़ कर मार देता है। हे जीव, यम का डंडा लगने पर फिर बीता हुआ समय हाथ नहीं आएगा। जो प्रभु में लौ लगाकर सावधान हो जाते हैं उन्हें यम का दण्ड नहीं लगता। हे प्रभु, यह सारी रचना तेरी ही है, तूने ही इसे छुड़वाना है और ये सब तेरी ही शरण में आ पड़े हैं।। १२ ।। श्लोक महला १ ।। हे जीव, सबमें स्थिर बने रहने वाले प्रभु को देख क्योंकि माया को देखते रहने से बहुत अधिक दुख उठाना पड़ता है। व्यक्ति घटिया मिट्टी को लादे हुए है और इसे संसार सागर से पार जाना है; परन्तु ना इसके पास रासपूँजी है और ना इसे कोई लाभ होने वाला है।। १ ।। महला १ ।। सच्चे नाम को ही पूंजी बना ले क्योंकि यही अपार द्रव्य (धन) का ना समाप्त होने वाला भण्डार है। प्रभु नाम रूपी पदार्थ निर्मल है और हे नानक, इसका व्यापार करने वाला साहूकार भी धन्य है।। २ ।। महला १ ।। पूर्व जन्मों की प्रभु से लगी प्रीति की पहचान कर लो और उस सबसे बड़े मालिक प्रभु का आनन्दपूर्वक उपभोग करो। प्रभु नाम से मिलाप होने पर हे नानक, तू यम को भी सीधा मुँह पर मार सकेगा।। ३ ।। पउड़ी ।। प्रभु ने स्वयं ही सँवार कर इस शरीर को बनाया है और इसमें नवनिधियाँ रूपी प्रभु नाम स्थापित किया है। कई तो स्वयं ही भ्रमों में पड़े हुए भटक रहे हैं और उनके सभी कार्य निष्फल ही होते हैं। कईयों ने गुरमुख बनकर अपनी आत्मा में ही उस प्रभु को जान लिया है। कईयों ने तो यह सुनकर ही मान लिया है कि प्रभु से प्रेम ही सबसे उत्तमकार्य है। इसी से उनके अन्तर्मन में प्रभु का प्रेम उत्पन्न हो गया है और उन्होंने प्रभु के नाम रूपी गुण का सदैव गान किया है।। १३ ।। श्लोक महला १ ।।

भोलतणि भै मनि वसै हेकै पाधर हीडु ॥ अति डाहपणि दुखु घणो तीने थाव भरीडु ॥ १ ॥ मः १ ॥ मांदलु बेदि सि बाजणो घणो धड़ीऐ जोइ ॥ नानक नामु समालि तू बीजउ अवरु न कोइ ॥ २ ॥ मः १ ॥ सागरु गुणी अथाहु किनि हाथाला देखीऐ ॥ वडा वेपरवाहु सतिगुरु मिलै त पारि पवा ॥ मझ भरि दुख बदुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिनी अंदरु भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥ जो इछनि सो पाइदे हरि नामु धिआवै ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै सो हरि गुण गावै ॥ धरम राइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥ हरि नामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै ॥ १४ ॥ सलोकु मः १ ॥ सुणीऐ एकु वखाणीऐ सुरगि मिरति पइआलि ॥ हुकमु न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नालि ॥ कउणु मूआ कउणु मारसी कउणु आवै कउणु जाइ ॥ कउणु रहसी नानका किस की सुरति समाइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ हउ मुआ मै मारिआ पउणु वहै दरीआउ ॥ त्रिसना थकी नानका जा मनु रता नाइ ॥ लोइण रते लोइणी कंनी सुरति समाइ ॥ जीभ रसाइणि चूनड़ी रती लाल लवाइ ॥ अंदरु मुसकि झकोलिआ कीमति कही न जाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥ एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥ हरि जन नेड़ि न आवई जमकंकर जमकलै ॥ से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥ हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥ १५ ॥ सलोकु मः ३ ॥ मनमुख वापारै सार न जाणनी बिखु विहाझहि बिखु संग्रहहि बिख सिउ धरहि पिआरु ॥ बाहरहु पंडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥ हरि सिउ चितु न लाइनी वादी धरनि पिआरु ॥ वादा कीआ करनि कहाणीआ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ जग महि राम नामु हरि निरमला होरु मैला सभु आकारु ॥ नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥ १ ॥ मः ३ ॥ दुखु लगा बिनु सेविऐ हुकमु मंने दुखु जाइ ॥ आपे दाता सुखै दा आपे देइ सजाइ ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु किछु तिसै रजाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ हरि नाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै त्रिपति नाही ॥ दूजै भरमि भुलाइआ

भोलापन बनाए रखने से प्रभु का भय मन में बसता है यही उससे मिलने का एक रास्ता है और यही एक विधि भी है। अत्यन्त जलन और ईर्ष्या में पड़े रहना बहुत दुखी होना है क्योंकि इससे मन वाणी और शरीर तीनों ही भ्रष्ट हो जाते हैं।। १ ।। महला १ ।। जो जीवन में बहुत से पक्ष-विपक्ष करता बनाता रहता है उसके लिये तो वेद में भी वही पक्षपात का ढोल बज रहा प्रतीत होता है। हे नानक, तू प्रभु के नाम को हृदय में सम्भाल क्योंकि इसके बिना दूसरा कोई नहीं है।। २ ।। महला १ ।। यह संसार सागर तो तीनों गुणों से संयुक्त होकर अथाह बना है, इसकी गहराई की तह को कैसे देखा जाए। यदि मुझे बड़ा बेपरवाह सच्चा गुरु मिल जाए तो तभी मैं इससे पार उतर सकता हूँ। संसार दुखों से भरा पड़ा है परन्तु हे नानक, प्रभु के सच्चे नाम के बिना किसी की भूख भी समाप्त नहीं होती।। ३ ।। पउड़ी ।। शब्द गुरु को सुहावना मानते हुए जिन्होने उसे अपने अन्दर ही खोजा है वे प्रभु के नाम का सुमिरन करते हुए मनोवांछित फल प्राप्त करते हैं। जिस पर प्रभु कृपा करे उसे गुरु मिल जाता है और वही प्रभु के गुण गाता है धर्मराज उनका मित्र बन जाता है और वह उन्हें यम के मार्ग पर नहीं जाने देता। वह दिन रात प्रभु-नाम का सुमिरन करता है और प्रभु-नाम में ही समा जाता है।। १४ ।। श्लोक महला १ ।। स्वर्ग में, मृत्यु लोक में और पाताल लोक में एक प्रभु को ही सुना जाता है और उस एक का ही बखान होता है। प्रभु का वह आदेश मिटाया नहीं जा सकता जो उसने प्रारम्भ से ही जीव के साथ लिख दिया है। इस संसार में कौन मरता है, कौन मारने वाला है और कौन यहाँ से जाता है। कौन यहाँ आनन्द प्राप्त करता है और हे नानक, किसकी यहाँ सुरति प्रभु में लीन बनी रहती है।। १ ।। महला १ ।। जीव अहंकार के कारण मरता है और उसकी ममता उसे मारती है; जीव के श्वास नदी की तरह चलते रहते हैं अर्थात् हमारा अहं ही जन्मता-मरता रहता है और श्वासों के कारण ही जीवन चलता रहता है। हे नानक, जिसका मन प्रभु नाम में लीन हो गया उसकी तृष्णा समाप्त हो गई है। आँखें तो नेत्रों वाले प्रभु में और सुरति कानों में समा जाती है अर्थात जीव की सुरति कानों द्वारा हरि यश सुनने में लीन हो जाती है। रोगों को नाश करने वाली औषधि अर्थात प्रभु नाम का रस चूसने वाली जीभ प्रभु का जाप करके लाल रंग की हो गई है अर्थात पूर्ण प्रेममय हो गई है। मेरा अन्तर्मन सुगन्धि में पूर्ण तरह से डूब कर सुगन्धित हो गया है और उसके मूल्य को आँका नहीं जा सकता।। २ ।। पउड़ी।। इस युग में प्रभु-नाम ही सुखों का भण्डार है और नाम ही यहाँ से साथ चलता है। खाने खर्चने पर भी इस अक्षय भण्डार में कोई कमी नहीं आती। यमकाल और यमदूत प्रभु के सेवक के पास भी नहीं आते। वही सच्चे साहूकार और व्यापारी हैं जिनके पास प्रभु रूपी धन है। यदि प्रभु स्वयं ही दे तो प्रभु की कृपा से प्रभु को प्राप्त किया जाता है।। १५ ।। श्लोक महला ३ ।। मनमुख व्यक्ति को वास्तविक व्यापार की समझ नहीं होती। वह विष ही खरीदता है विष ही इकट्ठा करता है और विष के साथ ही प्यार बनाए रहता है। ऐसे व्यक्ति बाहर से तो विद्वान पंडित कहलाते हैं परन्तु मन मे वे मूर्ख और गँवार माने जाते हैं। वे प्रभु में तो चित्त तो लगाते नहीं परन्तु वाद-विवादों से प्रेम बनाए रखते हैं। वे झगड़ों की कथाएँ कहते रहते हैं और झूठ बोल-बोलकर अपने भोजन का गुजारा चलाते रहते हैं। इस संसार में राम नाम ही प्रभु का निर्मल नाम है तथा बाकी सारा आकार मैला ही मैला है। हे नानक, जो प्रभु के नाम को याद नहीं करते वे गँवार मैले बने रहकर मर जाते हैं।। १ ।। महला ३ ।। प्रभु का सुमिरन ना करने के कारण दुख लगता है और प्रभु का हुकुम मानने से दुख चला जाता है। सुख का दाता वह स्वयं ही है और जीव को सजा देने वाला भी वह आप ही है। हे नानक, ऐसा जान लेना चाहिए कि सब कुछ उस प्रभु की रजा में ही हो रहा है।। २ ।। पउड़ी।। प्रभु-नाम से विहीन यह जगत वास्तव में निर्धन है और नाम के बिना इसकी सन्तुष्टि नहीं होती। यह द्वैतभाव और भ्रमों में भटकता

हउमै दुखु पाही ॥ बिनु करमा किछू न पाईऐ जे बहुतु लोचाही ॥ आवै जाइ जंमै मरै गुर सबदि छुटाही ॥ आपि करै किसु आखीऐ दूजा को नाही ॥ १६ ॥ सलोकु मः ३ ॥ इसु जग महि संती धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ इसु धन की कीमति कही न जाइ ॥ इतु धनि पाइऐ भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ जिंन्हा कउ धुरि लिखिआ तिनी पाइआ आइ ॥ मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥ अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ सांति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ॥ सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥ नानक विणु सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ॥ सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ जिनि उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥ एको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ खाणा सबदु चंगिआईआ जितु खाधै सदा त्रिपति होइ ॥ पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा ओहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥ सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जिस नो आपि विखाले सोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंतरि जपु तपु संजमो गुर सबदी जापै ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै अगिआनु गवापै ॥ अंदरु अंम्रिति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि ध्रापै ॥ हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥ १७ ॥ सलोकु मः ३ ॥ लोकु अवगणा की बंन्है गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ ॥ गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ गुर परसादी गुण पाईअन्हि जिस नो नदरि करेइ ॥ १ ॥ मः ३ ॥ गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते करतारि ॥ नानक हुकमि मंनिऐ सुखु पाईऐ गुर सबदी वीचारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥ गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥ खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु निआउ ॥ अंम्रित का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥ १८ ॥ सलोक मः १ ॥ हउ मै करी

रहता है तथा अहंकार में लीन बना यह दुख पाता रहता है। प्रभु की कृपा के बिना बेशक कितनी भी इच्छा की जाए कुछ भी प्राप्त नहीं होता। इसका आना जाना, जन्मना मरना चलता रहता है और शब्द-गुरु के माध्यम से ही इसका छुटकारा होता है। वह प्रभु स्वयं ही कर्ता है और अन्य किसी को क्या कहा जाए क्योंकि दूसरा तो कोई अन्य है ही नहीं।। १६ ।। श्लोक महला ३ ।। इस संसार में उन्हीं शान्त पुरुषों ने नाम धन की कमाई की है जिन्हें सच्चा गुरु प्रभु आन मिला है। सच्चा गुरु ही सत्य को हृदय में धारण करवाता है और इस धन की कीमत को तो बताया ही नहीं जा सकता। इस धन को पाने से ही भूख समाप्त हो जाती है और सुख मन में आ बसता है। प्रारम्भ से ही जिनके भाग्य में लिखा है उन्होंने ही इस संसार में आकर इसे प्राप्त किया है। यह मनमुख संसार तो निर्धन् है और धन सम्पदा के लिए ही चीख-पुकार लगाए रहता है। यह हर रोज तथा सदैव भटकता रहता है परन्तु इसकी भूख कभी नहीं जाती। इसे शान्ति प्राप्त नहीं होती और ना ही इसके मन में सुख का निवास होता है। यह सदैव चिन्ताओं में पड़ा रहता है और इसका संशय कभी भी समाप्त नहीं होता। हे नानक, सच्चे गुरु के बिना इसकी मति घूमी हुई है; जब यह सच्चे गुरु को मिलेगा तभी वह शब्द के अनुरूप आचरण बना पाएगा। ऐसा करने से यह सदैव सुख में बना रहेगा और सच्चे प्रभु में लीन हो जाएगा।। १ ।। महला ३ ।। जिसने धरती को पैदा किया है वही इसकी सम्भाल करता है इसलिए हे भाइयो, उस एक प्रभु का ही सुमिरन करो क्योंकि उसके बिना अन्य कोई नहीं है। गुण रूपी शब्द का खाना खाने से व्यक्ति सदैव तृप्त बना रहता है। प्रभु का गुणानुवाद उसका वस्त्र बन जाता है जो सदैव उज्जवल बना रहता है और कभी मैला नहीं होता। स्वाभाविक रूप से ही जो सत्य रूपी धन कमाया जाता है उसमें कभी भी कमी नहीं आती। शरीर का शृंगार शब्द है जिससे सदैव सुख प्राप्त होता रहता है। हे नानक, इस रहस्य को वही गुरमुख जानता है जिसे प्रभु स्वयं समझा देता है।। २ ।। पउड़ी।। अन्दर के जप, तप और संयम की क्रिया की समझ शब्द-गुरु के माध्यम से ही आती है। प्रभु के नाम का सुमिरन करने से अहंकार रूपी अज्ञान दूर हो जाता है। व्यक्ति के अन्दर आत्मा में ही परिपूर्ण अमृत स्थित है जिसको चखने से ही उसके स्वाद का पता लगता है। जिन्होंने उसे चख लिया है वे निर्मल हो गए हैं और हरि रस पीने के कारण वे पूर्ण तृप्त हो गए हैं। प्रभु ने कृपा करके जब यह खिलाया तो फिर काल का दुख नहीं लगा।। १७ ।। श्लोक महला ३ ।। लोग अवगुणों की गठरी बाँधते रहते है परन्तु गुण को कोई नहीं लेता। हे नानक, गुण का ग्राहक तो कोई बिरला ही होता है। गुरु की कृपा से वही गुण प्राप्त करता है जिस पर प्रभु स्वयं कृपा दृष्टि करता है।। १ ।। महला ३ ।। क्योंकि कर्ता प्रभु ने इन्हें बनाया है इसलिये गुण और अवगुण एक समान ही है। हे नानक, शब्द गुरु के चिंतन में लीन रहकर और उस प्रभु का हुकुम मानकर ही सुख प्राप्त किया जाता है।। २ ।। पउड़ी।। हमारे अन्दर ही प्रभु रूपी राजा और हृदय रूपी उसका सिंहासन है जिस पर बैठकर वह स्वयं ही न्याय करता है। शब्द-गुरु के माध्यम से ही उसके द्वार को और सबके आश्रय रूपी उसके ठिकाने को अन्दर ही देखा जाता है। सच्चे और खरे लोगों को तो शुद्ध सिक्के की तरह परख कर उस प्रभु के भण्डार में शामिल कर लिया जाता है परन्तु खोटे व्यक्तियों को कोई स्थान नहीं मिलता। सत्य ही सब ओर कार्यशील बना रहता है और उस प्रभु का न्याय भी सच्चा होता है। जब मन में प्रभु का नाम बस जाता है तो उसके नाम अमृत के रस का स्वाद भी आने लग जाता है।। १८ ।। श्लोक महला १ ।। जब मैं अहंकार करता हूँ

तां तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥ बूझहु गिआनी बूझणा एह अकथ कथा मन माहि ॥ बिनु गुर ततु न पाईऐ अलखु वसै सभ माहि ॥ सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जां सबदु वसै मन माहि ॥ आपु गइआ भ्रमु भउ गइआ जनम मरन दुख जाहि ॥ गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥ नानक सोहं हंसा जपु जापहु त्रिभवण तिसै समाहि ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मनु माणकु जिनि परखिआ गुर सबदी वीचारि ॥ से जन विरले जाणीअहि कलजुग विचि संसारि ॥ आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै दुबिधा मारि ॥ नानक नामि रते दुतरु तरे भउजलु बिखमु संसारु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ मनमुख अंदरु न भालनी मुठे अहंमते ॥ चारे कुंडां भवि थके अंदरि तिख तते ॥ सिंम्रिति सासत न सोधनी मनमुख विगुते ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ हरि नामु हरि सते ॥ ततु गिआनु वीचारिआ हरि जपि हरि गते ॥ १९ ॥ सलोक मः २ ॥ आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥ तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥ १ ॥ मः १ ॥ जिनि कीआ तिनि देखिआ आपे जाणै सोइ ॥ किस नो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभु कोइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभे थोक विसारि इको मितु करि ॥ मनु तनु होइ निहालु पापा दहै हरि ॥ आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥ सचु नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ॥ नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि ॥ २० ॥ सलोक मः ५ ॥ माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमा दंम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंम ॥ १ ॥ मः ५ ॥ माइआ साथि न चलई किआ लपटावहि अंध ॥ गुर के चरण धिआइ तू तूटहि माइआ बंध ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ भाणै हुकमु मनाइओनु भाणै सुखु पाइआ ॥ भाणै सतिगुरु मेलिओनु भाणै सचु धिआइआ ॥ भाणे जेवड होर दाति नाही सचु आखि सुणाइआ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सचु कमाइआ ॥ नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु उपाइआ ॥ २१ ॥ सलोक मः ३ ॥ जिन कउ अंदरि गिआनु नही भै की नाही बिंद ॥ नानक मुइआ का किआ मारणा जि आपि मारे गोविंद ॥ १ ॥ मः ३ ॥ मन की पत्री वाचणी सुखी हू सुखु सारु ॥ सो ब्राहमणु भला आखीऐ जि बूझै ब्रहमु बीचारु ॥ हरि सालाहे

तो तू मुझ में नहीं होता और जब तू मेरे हृदय में प्रत्यक्ष होता है तो अहंकार समाप्त हो चुका होता है। हे ज्ञानवान लोगो, इस अकथनीय कथा को यदि बूझ सकते हो तो मन में इसके रहस्य को जान लो। गुरु के बिना इस वास्तविकता का पता नहीं चलता कि वह अदृष्ट प्रभु सबके अन्दर ही बसता है। सच्चे गुरु के मिलने से अथवा मन में शब्द के निवास से ही इस रहस्य को जाना जाता है। जब अहंकार चला जाता है तो भ्रम और भय भी चला जाता है तथा जन्म-मरण का दुख भी दूर हो जाता है। गुरमति के माध्यम से ही वह अदृष्ट प्रभु देखा जाता है और उत्तम मति के फलस्वरूप ही जीव पार उतरता है। हे नानक, वह मैं ही हूँ और मैं वही हूँ अर्थात प्रभु लीनता वाले जाप को जपो क्योंकि तीनों लोक उस प्रभु में ही लीन बने हैं।। १ ।। महला ३ ।। जिन्होंने शब्द गुरु के चिंतन के फलस्वरूप मन रूपी माणिक को परख लिया है ऐसे व्यक्ति कलियुग के इस संसार में बिरले ही जाने जाते हैं। अपने अहंकार और दुविधा को मारकर इस जीव ने अपने वास्तविक स्वरूप को स्वयं ही देख लिया है। हे नानक, जो प्रभु नाम में लीन हो गए हैं उन्होंने संसार रूपी भयानक ना तैरें जा सकने वाले सागर को पार कर लिया है।। २ ।। पउड़ी।। अहंकार में ठगे हुए मनमुख व्यक्ति उस प्रभु को अपने अन्तर्मन में नहीं खोजते। अन्दर से अपनी तृष्णा में जलते हुए चारों दिशाओं में भटक-भटक कर थक गए हैं। मनमुख व्यक्ति स्मृतियों, शास्त्रों इत्यादि धार्मिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन नहीं करते और इस प्रकार नष्ट होते रहते हैं। गुरु के बिना किसी ने भी सत्य प्रभु का नाम प्राप्त नहीं किया है। प्रभु के जाप से ही तत्व ज्ञान का चिंतन होता है और उसका सुमिरन करते रहने से ही व्यक्ति की मुक्ति होती है।। १९ ।। श्लोक महला २ ।। वह प्रभु स्वयं ही जानता, स्वयं ही करता है और स्वयं ही हमारे कार्यों को ठीक रखता है। हे नानक, उसी के सामने खड़े होकर अरदास प्रार्थना करनी चाहिए।। १ ।। महला १ ।। जिस प्रभु ने इस संसार को बनाया है वह स्वयं इसकी देखभाल भी करता है और वह स्वयं ही इसके बारे में पूरी तरह जानता है। हे नानक, जब सब कुछ जीव के अन्दर ही व्याप्त है तो फिर अन्य किसी को क्या कहा जाए।। २ ।। पउड़ी।। तू सबको भुलाकर केवल एक प्रभु को ही मित्र बना जिससे तेरा मन तन आनन्दित हो जाएगा और वह प्रभु तेरे पाप जला कर नष्ट कर देगा। तेरा आवागमन समाप्त हो जाएगा और फिर ना तेरा जन्म होगा ना तेरी मौत होगी। सच्चे नाम का आधार प्राप्त हो जाने से तुझे शोक मोह में जलना नहीं पड़ेगा। हे नानक, प्रभु का नाम ही विशाल भण्डार है जिसे तू मन में इकट्ठा करता रह।। २० ।। श्लोक महला ५ ।। जीव के हृदय से धन दौलत नहीं भूलती और यह मन धन ही धन माँगता रहता है। हे नानक, क्योंकि इसके भाग्य अच्छे नहीं हैं इसलिये इसके चित्त में प्रभु की याद नहीं आती।। १ ।। महला ५ ।। हे अन्धे अज्ञानी, यह माया तेरे साथ नहीं चलने वाली इसलिये तू क्यों इससे लिपट रहा है। तू गुरु के चरणों का सुमिरन कर ताकि माया के तेरे बन्धन टूट जाएँ ।।२।। पउड़ी।। अपनी रज़ा में ही उसने हमें अपना हुकुम मनाया है और उसकी रज़ा में ही हमने सुख प्राप्त किया है। उसकी रज़ा में ही उसने सच्चे गुरु से मिलाया है और जब उसे अच्छा लगा है तभी हमने सत्य की आराधना की है। उसकी रज़ा जैसा अन्य कोई दान नहीं है यह सत्य हमने कहकर लोगों को सुना दिया है और सत्य पर आचरण वही करते हैं जिनके भाग्य लेख में पहले से ही लिखा होता है। हे नानक, हम तो उसकी शरण में है जिसने इस संसार को उत्पन्न किया है।। २१ ।। श्लोक महला ३ ।। जिनके अन्तर्मन में ज्ञान नहीं है और जिन्हें जरा भी प्रभु का भय नहीं है हे नानक, ऐसे मरे हुए लोगों को क्या मारा जाए जिन्हें स्वयं प्रभु ने ही मार रखा है।। १ ।। महला ३ ।। हे तिथियों और मुहूर्तों का पोथी पत्रा बाँचने वाले पंडित, सब सुखों में श्रेष्ठ सुख यही है कि सदैव अपने मन को ही पढ़ते हुए उसका ध्यान रखा जाए । जो ब्रह्म विचार के रहस्य को जान लेता है वास्तव में उसी ब्राह्मण को भला कहा जाता है।

हरि पड़े गुर कै सबदि वीचारि ॥ आइआ ओहु परवाणु है जि कुल का करे उधारु ॥ अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु कमावणा बिखिआ नालि पिआरु ॥ अंदरि सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ॥ नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे करि करि वेखदा आपे सभु सचा ॥ जो हुकमु न बूझै खसम का सोई नरु कचा ॥ जितु भावै तितु लाइदा गुरमुखि हरि सचा ॥ सभना का साहिबु एकु है गुर सबदी रचा ॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभि तिस दे जचा ॥ जिउ नानक आपि नचाइदा तिव ही को नचा ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु ॥

मारू वार महला ५ डखणे मः ५   १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि ॥ नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नीहु महिंजा तऊ नालि बिआ नेह कूड़ावे डेखु ॥ कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥ २ ॥ मः ५ ॥ उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु ॥ काजलु हारु तमोल रसु बिनु पसे हभि रस छारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु सचु सभु धारिआ ॥ गुरमुखि कीतो थाटु सिरजि संसारिआ ॥ हरि आगिआ होए बेद पापु पुंनु वीचारिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण बिसथारिआ ॥ नव खंड प्रिथमी साजि हरि रंग सवारिआ ॥ वेकी जंत उपाइ अंतरि कल धारिआ ॥ तेरा अंतु न जाणै कोइ सचु सिरजणहारिआ ॥ तू जाणहि सभ बिधि आपि गुरमुखि निसतारिआ ॥ १ ॥ डखणे मः ५ ॥ जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी ना वेछोड़ि ॥ जीउ महिंजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ दुरजन तू जलु भाहड़ी विछोड़े मरि जाहि ॥ कंता तू सउ सेजड़ी मैडा हभो दुखु उलाहि ॥ २ ॥ मः ५ ॥ दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमै रोगु ॥ सजणु सचा पातिसाहु जिसु मिलि कीचै भोगु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू अगम दइआलु बेअंतु तेरी कीमति कहै कउणु ॥ तुधु सिरजिआ सभु संसारु तू नाइकु सगल भउण ॥ तेरी कुदरति कोइ न जाणै मेरे ठाकुर सगल रउण ॥ तुधु अपड़ि कोइ न सकै तू अबिनासी जग

वही शब्द-गुरु का गहरा विचार करके प्रभु का गुणानुवाद करता है और प्रभु को ही सब ओर पढ़ता रहता है। उसका यहाँ आना सफल और स्वीकार्य है जो अपने सारे कुल का उद्धार कर देता है। शब्द के अनुरूप आचरण ही सर्वश्रेष्ठ है तथा परलोक में जाति की श्रेष्ठता के बारे में नही पूछा जाता। बाकी सब कुछ पढ़ना, आचरण करना झूठा है और विषय विकारों के साथ प्यार करने के समान है। मनमुख अन्तर्मन में सुखी नहीं होता और जीवन भर ख्वार होता रहता है। हे नानक, जिन्होंने गुरु के साथ अपार प्रेम किया है और जो प्रभु नाम में लीन हो गए हैं उन्हीं का उद्धार होता है।। २ ।। पउड़ी ।। वह सच्चा प्रभु स्वयं ही सब कुछ कर करके उसकी देख भाल करता रहता है। जो उस मालिक की आज्ञा नहीं समझता वही जीव कच्चा और हल्का माना जाता है। वह सच्चा प्रभु गुरमुख बने व्यक्ति को जिस ओर स्वयं चाहता है उधर लगा देता है। शब्द-गुरु के साथ एक रूप बना हुआ वह प्रभु सब लोगों का एक ही मालिक है। गुरमुख बनकर सदैव उसका गुणानुवाद करना चाहिए क्योंकि इस संसार में सब कुछ उसी का ही खेल और कौतुक है। हे नानक, वह जिस प्रकार स्वयं नचाता है हर किसी को उसी तरह नाचना होता है।। २२ ।। १ ।। शुद्ध अर्थात् मूल के साथ मिलान करके शुद्ध किया हुआ ठीक है।

मारू वार महला ५ डखणे (पहले के पंजाब के दक्षिण में प्रयुक्त मुल्तानी शब्दों के साथ भरपूर बोली में लिखे हुए श्लोक) महला ५ १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे मेरे सज्जन मित्र, तू बता यदि तू कहे तो मैं अपना सिर उतार कर अर्पण कर दूं। मेरी आँखे तो तरस रही हैं कि कब तेरा दीदार होगा ।। १ ।। महला ५ ।। मेरा प्यार तो तेरे साथ है और अन्य सभी प्यार मैंने झूठे देखे हैं। जब तक मैं अपने प्रियतम को ना देख लूं ये कपड़े और भोग सभी मुझे डरावने लगते हैं।। २ ।। महला ५ ।। मैं भोर में ही हे मेरे प्रियतम, उठती हूँ ताकि तेरा दर्शन कर सकूं; तेरे दीदार के बिना मेरा काजल, हार शृंगार, पान का रस इत्यादि सब कुछ राख के समान है।। ३ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तू सच्चा साहिब है जो सत्य रूप में ही सबको धारण किए हुए है। इस संसार की सृजना करके तूने इसे गुरमुख बनने का स्थान बनाया है। प्रभु की आज्ञा से ही वेदों की रचना हुई जिनमें पाप और पुण्य का चिंतन किया गया है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और प्रकृति के तीनों गुणों की सृजना भी तूने ही करके इनका विस्तार किया। नवखण्ड पृथ्वी की रचना करके हे प्रभु, तूने प्रेमपूर्वक उसे सँवारा है। अनेकों प्रकार के जीव उस पर उत्पन्न कर उनके अन्दर अपनी शक्ति स्थित की है। हे सच्चे सृजनकर्ता प्रभु, तेरे रहस्य को कोई नहीं जानता। तू सब विधियाँ स्वयं ही जानता है और स्वयं ही जीवों को गुरमुख बनाकर उनका पार उतारा करता है।। १ ।। डखणे महला ५ ।। यदि तू वास्तव में हम लोगों का मित्र है तो हमें एक क्षण के लिये भी अपने से दूर ना कर। मेरे हृदय को तूने मोहित कर लिया है परन्तु हे मेरे प्यारे, मैं कब तुझे देख सकूँगा।। १ ।। महला ५ ।। हे दुर्जन व्यक्ति, तू जलती आग में जल जा और हे वियोग, तू तो मर ही जा। हे मेरे प्रियतम, तू मेरी सेज पर सो जा और इस प्रकार मेरे सारे दुख दूर कर दे।। २ ।। महला ५ ।। द्वैतभाव ही वास्तव में दुर्जन है तथा अहंकार का रोग ही वास्तव में वियोग हैं। वह सच्चा सम्राट प्रभु ही हमारा प्रियतम सज्जन है जिसके साथ मिलकर भोग किया जाता है।। ३ ।। पउड़ी ।। हे प्रभु, तू अगम्य, दयालु और अनन्त है, तेरा मूल्य कौन आँक सकता है। तूने ही सारे संसार की सृजना की है और तू ही समस्त लोकों का मालिक है। हे सबमें रमण करने वाले मेरे मालिक, तेरी शक्ति को तथा तेरी लीला को कोई नहीं जानता। तेरे तक कोई भी नहीं पहुँच

उधरण ॥ तुधु थापे चारे जुग तू करता सगल धरण ॥ तुधु आवण जाणा कीआ तुधु लेपु न लगै त्रिण ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु लावहि सतिगुर चरण ॥ तू होरतु उपाइ न लभही अबिनासी स्रिसटि करण ॥ २ ॥ डखणे मः ५ ॥ जे तू वतहि अंङणे हभ धरति सुहावी होइ ॥ हिकसु कंतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हभे टोल सुहावणे सहु बैठा अंङणु मलि ॥ पही न वंञै बिरथड़ा जो घरि आवै चलि ॥ २ ॥ मः ५ ॥ सेज विछाई कंत कू कीआ हभु सीगारु ॥ इती मंझि न समावई जे गलि पहिरा हारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तू पारब्रहमु परमेसरु जोनि न आवही ॥ तू हुकमी साजहि स्रिसटि साजि समावही ॥ तेरा रूपु न जाई लखिआ किउ तुझहि धिआवही ॥ तू सभ महि वरतहि आपि कुदरति देखावही ॥ तेरी भगति भरे भंडार तोटि न आवही ॥ एहि रतन जवेहर लाल कीम न पावही ॥ जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु सतिगुर सेवा लावही ॥ तिसु कदे न आवै तोटि जो हरि गुण गावही ॥ ३ ॥ डखणे मः ५ ॥ जा मू पसी हठ मै पिरी महिजै नालि ॥ हभे डुख उलाहिअमु नानक नदरि निहालि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक बैठा भखे वाउ लंमे सेवहि दरु खड़ा ॥ पिरीए तू जाणु महिजा साउ जोई साई मुहु खड़ा ॥ २ ॥ मः ५ ॥ किआ गालाइओ भूछ पर वेलि न जोहे कंत तू ॥ नानक फुला संदी वाड़ि खिड़िआ हभु संसारु जिउ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ सुघड़ु सुजाणु सरूपु तू सभ महि वरतंता ॥ तू आपे ठाकुरु सेवको आपे पूजंता ॥ दाना बीना आपि तू आपे सतवंता ॥ जती सती प्रभु निरमला मेरे हरि भगवंता ॥ सभु ब्रहम पसारु पसारिओ आपे खेलंता ॥ इहु आवा गवणु रचाइओ करि चोज देखंता ॥ तिसु बाहुड़ि गरभि न पावही जिसु देवहि गुर मंता ॥ जिउ आपि चलावहि तिउ चलदे किछु वसि न जंता ॥ ४ ॥ डखणे मः ५ ॥ कुरीए कुरीए वैदिआ तलि गाड़ा महरेरु ॥ वेखे छिटड़ि थीवदो जामि खिसंदो पेरु ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सचु जाणै कचु वैदिओ तू आघू आघे सलवे ॥ नानक आतसड़ी मंझि नैणू बिआ ढलि पबणि जिउ जुंमिओ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ भोरे भोरे रूहड़े सेवेदे आलकु ॥ मुदति पई चिराणीआ फिरि कडू आवै

सकता; तू ही अविनाशी और संसार का उद्धार करने वाला है। तूने ही चारों युगों की सृष्टि की है और सभी धरतियों का कर्ता भी तू ही है। आवागमन का खेल बेशक तूने ही बनाया है परन्तु तू तिल मात्र भी इसमें लिप्त नहीं होता। जिस पर तू स्वयं दयालु हो जाता है तू उसे सच्चे गुरु के चरणों में लगा देता है। हे अविनाशी और सृष्टि के सृजनहार, तू अन्य (कर्मकाण्डी) उपायों से नहीं खोजा जा सकता।। २ ।। डखणे महला ५ ।। यदि तू मेरे हृदय रूपी आँगन में आ जाए तो सारी धरती सुहावनी हो जाएगी क्योंकि एक प्रियतम के बिना मेरी तो कोई बात ही नहीं पूछता।। १ ।। महला ५ ।। सभी पदार्थ मुझे सुन्दर लग रहे हैं क्योंकि मेरा मालिक मेरे हृदय रूपी आँगन में आकर बैठ गया है। जो प्रभु के घर में चल कर आता है ऐसा कोई भी जिज्ञासु उसके घर से खाली नहीं जाता।। २ ।। महला ५ ।। मैंने अपने प्रियतम प्रभु के लिये सेज बिछा दी है और सारा श्रृंगार कर लिया है; अब तो मुझसे यह भी सहन नहीं होता कि मैं गले में हार पहनूँ क्योंकि यह हार भी प्रियतम से दूरी का कारण बनता है।। ३ ।। पउड़ी।। हे परब्रह्म परमेश्वर, तू योनियों में नहीं आता। तू अपने हुकुम में ही सृष्टि की सृजना करता है और उसे बनाकर उसमें लीन बना रहता है। तेरा सुमिरन कैसे किया जाए क्योंकि तेरे रूप को इन साँसारिक आँखों से देखा नहीं जा सकता। सब में तू ही कार्यशील है और सबके माध्यम से तू अपनी शक्ति दिखाता रहता है। तेरी भक्ति से ही हमारे भण्डार भरे रहते हैं और उनमें कोई कमी नहीं आती। यही हमारे लिए रत्न, जवाहिर और मणियाँ है जिनका मूल्य नहीं आँका जा सकता। जिस पर प्रभु स्वयं दयालु होता है उसे स्वयं सच्चे गुरु की सेवा में लगा लेता है। जो प्रभु के गुण गाते हैं उन्हें कभी कोई कमी नहीं आती।। ३ ।। डखणे महला ५ ।। यदि मैं अपने हृदय में देखूँ तो मेरा पति प्रभु मुझे अपने साथ ही दिखाई देता है। हे नानक, उसने अपनी कृपा दृष्टि से मुझे आनन्दित करके मेरे सभी दुख दूर कर दिए हैं।। १ ।। महला ५ ।। हे नानक, तूने प्रभु की ओर ध्यान लगा रखा है और बहुत समय से उसके द्वार पर खड़ा तू उसकी सेवा कर रहा है। हे प्रियतम, तुम मेरे खड़े होने के अभिप्राय को जानते हो कि मैं क्यों खड़ा हूँ ; मेरा स्वार्थ यही है कि मैं उस मालिक के मुख को देख रहा हूँ।। २ ।। महला ५ ।। हे मूर्ख, तू क्या बातें करता है; यदि पराई स्त्री की ओर ना देखे तो तभी तू वास्तविक मालिक रूपी पति है। हे नानक, तू देख ले कि यह सारा संसार ही खिला हुआ है और तू केवल एक की तरफ ही ज्यादा देख कर अपने आपको क्यों बाँधे जा रहा है।। ३ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तु सुघड़, सुजान, सुन्दर रूप वाला है और तू ही सबमें कार्यशील है। तू स्वयं ही ठाकुर है स्वयं ही सेवक है और स्वयं ही पूजा करने वाला है। सब कुछ देखने और जानने वाला सत्य स्वरूप हे प्रभु, तू स्वयं ही है। हे मेरे प्रभु, तू यति, त्यागी और निर्मल बना रहने वाला मेरा भगवान है। उस परब्रह्म ने ही इस सारे प्रसार का विस्तार किया है और वह स्वयं ही यह खेल खेलने वाला है। उसी ने ही आवागमन पैदा किया है और इसे बनाकर वह इसके कौतुकों को देखता रहता है। जिसे तू उपदेश दे देता है उसे तू फिर गर्भ योनियों में नहीं डालता। हे प्रभु, जैसे तू चलाता है वैसे ही ये जीव चलते हैं क्योंकि इन जीवों के वश में कुछ नहीं है।। ४ ।। डखणे महला ५ । हे संसार रूपी नदी के किनारे की पगडंडी पर चलते जाने वाले जीव, तेरे पाँव के नीचे तो बहुत बड़ी खाई बनी है। देखना यदि तेरा कही पाँव खिसक गया तो तेरा जीवन दागदार हो जाएगा।। १ ।। महला ५ ।। तू कच्चे को सच्चा जानकर आगे-आगे ही चलता जा रहा है। हे नानक, जैसे आग में मक्खन नहीं रह सकता और दूसरा उदाहरण यह है कि जैसे चार पत्तों वाली चौपत्ती (नीलोफर) गलकर नष्ट हो जाती है उसी तरह तू भी नष्ट हो जाएगा।। २ ।। महला ५ ।। हे भोले और भूले हुए जीव, तू प्रभु के सुमिरन में सुस्ती दिखा रहा है। तुझे यह अवसर तो कब का ही मिला हुआ है और यदि तू इसमें प्रभु सुमिरन नहीं करता तो फिर यह मौसम अर्थात यह जीवन कब मिल सकेगा

रुति ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ ए माणस जाणहि दूरि तू वरतहि जाहरा ॥ तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥ तू सभ देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ किआ आराधे जिहवा इक तू अबिनासी अपरपरा ॥ जिसु मेलहि सतिगुरु आपि तिस के सभि कुल तरा ॥ सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥ ५ ॥ डखणे मः ५ ॥ गहडड़ड़ा त्रिणि छाइआ गाफल जलिओहु भाहि ॥ जिना भाग मथाहड़ै तिन उसताद पनाहि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि मउजूदु ॥ बाझहु सतिगुर आपणे बैठा झाकु दरूद ॥ २ ॥ मः ५ ॥ नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥ जिनी गुरू मनाइआ रजि रजि सेई खाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तुधु जग महि खेलु रचाइआ विचि हउमै पाईआ ॥ एकु मंदरु पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ दस नारी इकु पुरखु करि दसे सादि लुोभाईआ ॥ एनि माइआ मोहणी मोहीआ नित फिरहि भरमाईआ ॥ हाठा दोवै कीतीओ सिव सकति वरताईआ ॥ सिव अगै सकती हारिआ एवै हरि भाईआ ॥ इकि विचहु ही तुधु रखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ जल विचहु बिंबु उठालिओ जल माहि समाईआ ॥ ६ ॥ डखणे मः ५ ॥ आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सजणु मैडा चाईआ हभ कही दा मितु ॥ हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चितु ॥ २ ॥ मः ५ ॥ गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ ॥ सोई सुहावा थानु जिथै पिरीए नानक जी तू वुठिआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥ तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥ सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावंदा ॥ ७ ॥ डखणे मः ५ ॥ डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ फिरदा

।। ३ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तेरा रूप आकार नहीं है और तू चारों वर्णों से भी परे हैं। ये मनुष्य तो तुझे दूर जानते हैं परन्तु तू प्रत्यक्ष रूप से सबमें कार्यशील है। सभी शरीरों को भोगने वाला तू ही है परन्तु तू फिर भी इनमें लिप्त नहीं होता। आनन्द स्वरूप तू अनन्त रूप से सर्वव्यापक है और ज्योति रूप में सबमें समाया है। हे रचनहार प्रभु, तू ही सभी देवों में सबमें बड़ा देव अर्थात सर्वोत्तम परम आत्मा है। तू तो अविनाशी और परे से परे है इसलिये मेरी यह एक जीभ भला तेरी आराधना कैसे करे। जिन्हें तू स्वयं सच्चे गुरु से मिला देता है उनके सभी कुल पार उतर जाते हैं। तेरे सभी सेवक तो तेरी सेवा करते हैं और सेवक नानक तो तेरे ही द्वार पर खड़ा है।। ५ ।। डखणे महला ५ ।। जीव ने घास का छप्पर अपने रहने के लिए बनाया है परन्तु वह अज्ञान के कारण बेखबर बना रहा तथा विषय विकारों की आग से वह छप्पर जल गया है। जिनके माथे पर भाग्य लेख लिखे हैं उन्हें ही गुरु की शरण मिलती है।। १ ।। महला ५ ।। हे नानक, पीसकर, पकाकर और सजाकर बेशक खाना रख दिया जाए परन्तु यदि सच्चे गुरु रूपी पीर की कृपा नहीं हुई तो व्यक्ति सदैव इधर-उधर झाँकता ही रहता है कि कब दरूद (किसी पर्व पर भोजन भेंट में चढ़ाने समय पढ़ी जाने वाली दुआ जो खाने से पहले पढ़ी जाती है) पढ़ा जाए और कब रोटी खाने के मिले। सच्चे गुरु रूपी पीर की कृपा के बिना यह प्रयत्न व्यर्थ ही जाएगा ।। २ ।। महला ५ ।। हे नानक, बहुत बड़ी-बड़ी मीठी रोटी (रोट) पकाई गई और उन्हें थाली में भी रख लिया गया है परन्तु जिन्होंने अपने गुरु को सन्तुष्ट कर लिया वे ही इन्हें पेट भरकर खा पाते हैं।। ३ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, तूने संसार में यह खेल रचाया है और इसमें अहंकार को डाल दिया है। इस एक घर रूपी संसार में तूने काम क्रोध आदि पाँच चोर बना दिए है जो सदैव बुराई में ही लगे रहते हैं। दस इन्द्रिय रूपी नाड़ियाँ और मन रूपी एक पुरुष तूने पैदा किया है और ये सभी स्वादों के लोभ में पड़े रहते हैं। इस मोहिनी माया ने सबको मोह रखा है और सभी भ्रमों में दौड़ते हुए भटक रहे हैं। तूने गुरमुखों और मनमुखों वाले दो विपरीत मार्ग बना दिये हैं तथा जीव, माया दोनों को बना दिया है। जीवात्मा के सामने माया हारती ही है और ऐसा ही प्रभु को अच्छा भी लगता है। जो सत्संगति में मिल जाते हैं उनको हे प्रभु, तूने माया के बीच से बचा लिया। तूने अपने जल के समान स्वरूप में से जीव रूपी बुलबुलों को पैदा किया है जो फिर जल में ही लीन हो जाते हैं।। ६ ।। डखणे महला ५ ।। हे जीव, तू आगे की तरफ देखता रह और फिर अपना मुँह पीछे की ओर ना कर अर्थात पीछे किए हुए कर्मों को ही देखकर मत पछताता रह। हे नानक, इस जीवन रूपी अवसर को सफल कर ले क्योंकि यह जन्म फिर नहीं मिलेगा।। १ ।। महला ५ ।। मेरा सज्जन प्रभु तो बहुत ही उत्साहित करने वाला है और वह सबका ही मित्र है। सभी उसे अपना ही मानते हैं और वह भी किसी का दिल नहीं दुखाता।। २ ।। महला ५ ।। मैंने उस प्रछन्न प्रभु को खोज लिया है और वह मेरे अन्दर मेरे माथे में ही प्रकट हो गया है। हे नानक, वही स्थान सुहावना है जहाँ मेरा प्रियतम आकर बस गया।। ३ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, जब तू मेरे पक्ष में है तो फिर मुझे भला किसका मोहताज़ होने की जरूरत है। मैं तेरा सेवक हूँ और तूने मुझे सब कुछ ही दे रखा है। मैं खाता खर्चता रहता हूँ परन्तु, मुझे धन की कोई कमी नहीं आती। इस धरती पर चौरासी लाख योनियाँ सब तेरी ही सेवा करती है। तूने शत्रुओं को भी मेरा मित्र बना दिया है और वे भी अब मेरा बुरा नहीं चाहते। प्रभु कृपालु हो जाए तो फिर जीवन का लेखा जोखा कोई नहीं पूछता। उस प्रभु गुरु को मिलकर मैं आनन्दित हो गया हूँ और मैंने सुख प्राप्त कर लिया है। यदि तुझे भा जाए तो मेरे सभी काम सँवर जाते हैं।। ७ ।। डखणे महला ५ ।। हे मेरे मालिक, तेरा मुख कैसा है; मैं तो तेरे दर्शनों का अभिलाषी हूँ।

किते हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ दुखीआ दरद घणे वेदन जाणे तू धणी ॥ जाणा लख भवे पिरी डिखंदो ता जीवसा ॥ २ ॥ मः ५ ॥ ढहदी जाइ करारि वहणि वहंदे मै डिठिआ ॥ सेई रहे अमाण जिना सतिगुरु भेटिआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिसु जन तेरी भुख है तिसु दुखु न विआपै ॥ जिनि जनि गुरमुखि बुझिआ सु चहु कुंडी जापै ॥ जो नरु उस की सरणी परै तिसु कंबहि पापै ॥ जनम जनम की मलु उतरै गुर धूड़ी नापै ॥ जिनि हरि भाणा मंनिआ तिसु सोगु न संतापै ॥ हरि जीउ तू सभना का मितु है सभि जाणहि आपै ॥ ऐसी सोभा जनै की जेवडु हरि परतापै ॥ सभ अंतरि जन वरताइआ हरि जन ते जापै ॥ ८ ॥ डखणे मः ५ ॥ जिना पिछै हउ गई से मै पिछै भी रविआसु ॥ जिना की मै आसड़ी तिना महिजी आस ॥ १ ॥ मः ५ ॥ गिली गिली रोडड़ी भउदी भवि भवि आइ ॥ जो बैठे से फाथिआ उबरे भाग मथाइ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ डिठा हभ मझाहि खाली कोइ न जाणीऐ ॥ तै सखी भाग मथाहि जिनी मेरा सजणु राविआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हउ ढाढी दरि गुण गावदा जे हरि प्रभ भावै ॥ प्रभु मेरा थिर थावरी होर आवै जावै ॥ सो मंगा दानु गोसाईआ जितु भुख लहि जावै ॥ प्रभ जीउ देवहु दरसनु आपणा जितु ढाढी त्रिपतावै ॥ अरदासि सुणी दातारि प्रभि ढाढी कउ महलि बुलावै ॥ प्रभ देखदिआ दुख भुख गई ढाढी कउ मंगणु चिति न आवै ॥ सभे इछा पूरीआ लगि प्रभ कै पावै ॥ हउ निरगुणु ढाढी बखसिओनु प्रभि पुरखि वेदावै ॥ ९ ॥ डखणे मः ५ ॥ जा छुटे ता खाकु तू सुंञी कंतु न जाणही ॥ दुरजन सेती नेहु तू कै गुणि हरि रंगु माणही ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥ २ ॥ मः ५ ॥ रते रंगि पारब्रहम कै मनु तनु अति गुलालु ॥ नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥ ३ ॥ पवड़ी ॥ हरि जीउ जा तू मेरा मित्रु है ता किआ मै काड़ा ॥ जिनी ठगी जगु ठगिआ से तुधु मारि निवाड़ा ॥ गुरि भउजलु पारि लंघाइआ जिता पावाड़ा ॥ गुरमती सभि रस भोगदा वडा आखाड़ा ॥ सभि इंद्रीआ वसि करि दितीओ सतवंता साड़ा ॥

पता नहीं मैं किस हाल में भटक रहा था परन्तु जब मैंने तुझे देखा तो मेरा मन सन्तुष्ट हो गया।। १ ।। महला ५ ।। इस दुखियारे को तो अनेकों कष्ट हैं परन्तु हे मेरे मालिक, तू ही मेरी पीड़ा जानता हैं। बेशक मैं लाखों इलाज जानता होऊँ परन्तु मैं तो तभी जीवित बचूँगा जब मैं आपके दर्शन कर लूँगा।। २ ।। महला ५ ।। संसार रूपी बहती हुई नदी का गिरता हुआ किनारा मैंने देखा है, उस पर पड़े हुए वे ही सुरक्षित बचे हैं जिन्होंने सच्चे गुरु से भेंट कर ली हैं।। ३ ।। पउड़ी।। जिस सेवक को तेरी ही भूख बनी है उसे फिर कोई दुख नहीं होता। जिन गुरमुखों ने उस प्रभु को जान लिया है वे चारों दिशाओं में प्रसिद्ध हो जाते हैं। ऐसी गुरमुखों की शरण में जो लोग आ जाते हैं तो पाप भी उनसे काँपने लगते हैं। जो गुरु की चरण धूलि में स्नान करता है उनके जन्मों-जन्मों की मैल उतर जाती है। जिन्होंने प्रभु की रज़ा को मान लिया है उन्हें शोक और संताप नहीं होता। हे प्रभु, तू ही सबका मित्र है और तू स्वयं ही सब कुछ जानता हैं। जितना प्रभु का प्रताप है वैसी ही शोभा प्रभु के सेवक की भी बन जाती है। वह सबमें अपने सेवक को प्रसिद्ध बना देता है और प्रभु अपने सेवकों की शोभा से ही स्वयं जाना जाता है।। ८ ।। डखणे महला ५ ।। माँगने के लिये जिनके पास मैं गई, वे खुद माँगने वाले निकले और मेरे पीछे दौड़ते रहे। जिन पर मैंने आशा लगा रखी थी वे मुझ पर आस लगाए बैठे हैं।। १ ।। महला ५ ।। गीली-गीली गुड़ की डली पर जीव रूपी मक्खी उड़ती रहती है। जो मक्खियाँ उस माया रूपी गुड़ पर बैठ जाती हैं वे वहीं फँस जाती है और जिनके माथे पर भाग्य लेख लिखा होता है वे बच जाती हैं।। २ ।। महला ५ ।। उस प्रभु को सब जीवों में मैंने देखा है और किसी को भी उससे खाली नहीं जाना जाता। हे मेरी सखी, तेरे माथे पर भाग्य लेख ही हैं जिनके कारण तूने मेरे उस प्रियतम प्रभु के साथ रमण किया है।। ३ ।। पउड़ी।। मैं गायक तो उस प्रभु के द्वार पर, यदि प्रभु को अच्छा लगे तो उसके गुण गाता हूँ। मेरा प्रभु ही सदैव स्थिर बना रहने वाला है अन्य सभी तो आने जाने वाले ही हैं। हे धरती के स्वामी प्रभु, मैं प्रभु-नाम का वह दान माँगता हूँ जिससे मेरी भूख समाप्त हो जाए। हे प्रभु, मुझे अपना दर्शन दो जिससे यह विनम्र गायक तृप्त हो जाए। उस दाता प्रभु ने मेरी पुकार सुन ली और इस विनम्र गायक को अपने स्थान पर बुला लिया। प्रभु को देखते ही सारी भूख और दुख नष्ट हो गए और इस गायक को कुछ भी माँगने की सुध-बुध ही ना रही। प्रभु के चरणों से लगकर इसकी सभी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। मुझ गुण विहीन, विनम्र गुणानुवाद करने वाले गायक को समर्थ प्रभु ने सब कुछ बख्श (दे) दिया है।। ९ ।। डखणे महला ५ ।। जब आत्मा तुझसे छूट जाएगी तो तू मिट्टी हो जाएगी। इस तथ्य को हे मेरी सूनी देही, तू ना समझते हुए उस प्रभु के साथ तू प्रेम नहीं लगाती। जब तेरा प्रेम ही बुरे व्यक्तियों और विकारों के साथ है तू भला किस गुण के कारण प्रभु के प्रेम का आनन्द ले सकती है।। १ ।। महला ५ ।। हे नानक, जिसके बिना एक घड़ी भर भी जीवित नहीं रहा जा सकता और जिसे भुलाकर हमारा एक क्षण भर के लिये भी काम नहीं चलता उससे हे मन, क्यों रूठा जाए जो सदैव हमारी ही चिन्ता करता रहता है।। २ ।। महला ५ ।। जो परब्रह्म प्रभु के रंग में रंगे हुए हैं उनका तन मन प्रेम में अत्यन्त लाल हो जाता है। हे नानक, प्रभु-नाम के बिना जितने भी अन्य विचार हैं वे सब मलीन ही हैं।। ३ ।। पउड़ी।। हे प्रभु, जब तू मेरा मित्र है तो मुझे फिर किस बात की चिन्ता हैं। जिन ठगों ने इस संसार को ठगा हुआ है तूने उन्हें मारकर दूर कर दिया है। गुरु के माध्यम से मैं संसार सागर से पार उतार दिया गया हूँ और साँसारिक झगड़ों को मैंने जीत लिया है। इस संसार रूपी बड़े अखाड़े में गुरमति के माध्यम से ही सभी रसों का भोग किया जाता है। जब वह प्रभु हमारा हो गया तो उसने ही कृपा करके सभी इन्द्रियों को हमारे वश में कर दिया है।

जितु लाईअनि तितै लगदीआ नह खिंजोताड़ा ॥ जो इछी सो फलु पाइदा गुरि अंदरि वाड़ा ॥ गुरु नानकु तुठा भाइरहु हरि वसदा नेड़ा ॥ १० ॥ डखणे मः ५ ॥ जा मूं आवहि चिति तू ता हभे सुख लहाउ ॥ नानक मन ही मंझि रंगावला पिरी तहिजा नाउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ कपड़ भोग विकार ए हभे ही छार ॥ खाकु लोड़ेदा तंनि खे जो रते दीदार ॥ २ ॥ मः ५ ॥ किआ तकहि बिआ पास करि हीअड़े हिकु अधारु ॥ थीउ संतन की रेणु जितु लभी सुख दातारु ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ विणु करमा हरि जीउ न पाईऐ बिनु सतिगुर मनूआ न लगै ॥ धरमु धीरा कलि अंदरे इहु पापी मूलि न तगै ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए इक घड़ी मुहतु न लगै ॥ चारे जुग मै सोधिआ विणु संगति अहंकारु न भगै ॥ हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ॥ तिचरु थाह न पावई जिचरु साहिब सिउ मन भंगै ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिसु घरि दीबाणु अभगै ॥ हरि किरपा ते सुखु पाइआ गुर सतिगुर चरणी लगै ॥ ११ ॥ डखणे मः ५ ॥ लोड़ीदो हभ जाइ सो मीरा मीरंन सिरि ॥ हठ मंझाहू सो धणी चउदो मुखि अलाइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ माणिकू मोहि माउ डिंना धणी अपाहि ॥ हिआउ महिजा ठंढड़ा मुखहु सचु अलाइ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ मू थीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा ॥ जे डेखै हिक वार ता सुख कीमा हू बाहरे ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ मनु लोचै हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ ॥ मै लख विड़ते साहिबा जे बिंद बोलाईआ ॥ मै चारे कुंडा भालीआ तुधु जेवडु न साईआ ॥ मै दसिहु मारगु संतहो किउ प्रभू मिलाईआ ॥ मनु अरपिहु हउमै तजहु इतु पंथि जुलाईआ ॥ नित सेविहु साहिबु आपणा सतसंगि मिलाईआ ॥ सभे आसा पूरीआ गुर महलि बुलाईआ ॥ तुधु जेवडु होरु न सुझई मेरे मित्र गोसाईआ ॥ १२ ॥ डखणे मः ५ ॥ मू थीआऊ तखतु पिरी महिंजे पातिसाह ॥ पाव मिलावे कोलि कवल जिवै बिगसावदो ॥ १ ॥ मः ५ ॥ पिरीआ संदड़ी भुख मू लावण थी विथरा ॥ जाणु मिठाई इख बेई पीड़े ना हुटै ॥ २ ॥ मः ५ ॥ ठगा नीहु मत्रोड़ि जाणु गंध्रबा नगरी ॥ सुख घटाऊ डूइ इसु पंधाणू घर घणे ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ अकल कला नह पाईऐ प्रभु अलख अलेखं ॥

अब जिधर इन्हें लगाया जाता है वे उधर ही लगती हैं और कोई भी खींचतान नहीं करती। गुरु ने इन्हें अन्तर्मुखी बना दिया है इसलिये मैं जो भी इच्छा करता हूँ उसका का फल प्राप्त कर लेता हूँ। हे भाइयो, जब से गुरु नानक मुझ पर प्रसन्न हुआ तो प्रभु मुझे पास बसता हुआ ही दिखाई देता है।। १० ।। डखणे महला ५ ।। जब तू मेरे हृदय में याद रहता है तो मुझे सभी सुख मिलते हैं। हे नानक, वह सुन्दर प्रभु मन में ही रहता है और प्रियतम ही उसका नाम है।। १ ।। महला ५ ।। कपड़े, भोग विकार ये सब राख के समान ही हैं। जो प्रभु के दीदार में रंगे हैं मैं तो उनके चरणों की धूलि खोजता फिर रहा हूँ ।। २ ।। महला ५ ।। हे मेरे मन, तू दूसरी ओर क्या देख रहा है केवल उस एक प्रभु को ही तू अपना आसरा बना। तू शान्त पुरुषों की चरणधूलि बन जा जिससे तुझे सुख देने वाला दाता मिल जाएगा।। ३ ।। पउड़ी।। बिना भाग्य के प्रभु नहीं मिलता और सच्चे गुरु के बिना मन स्थिर नहीं होता। कलियुग में केवल धर्म ही स्थिर बना रहने वाला है परन्तु पापी व्यक्ति इसके साथ बिल्कुल ही नहीं जुड़ता इसीलिये यह इस हाथ करता है और उस हाथ उसका फल प्राप्त करने में इसे एक घड़ी और मुहूर्त का समय भी नहीं लगता। चारों युगों में मैंने खोज लिया है कि सत्संगति के बिना अहंकार दूर नहीं होता। साधु पुरुषों की सत्संगति के बिना अहंकार तो बिल्कुल ही दूर नहीं होता। जब तक प्रभु की ओर से मन विमुख है तब तक वह कहीं भी ठिकाना नहीं पा सकता। जिन सेवकों ने गुरमुख बनकर उसका सुमिरन किया है उनके अन्तर्मन में ही उस प्रभु का अटूट आसरा बना रहता है। सच्चे गुरु के चरणों में लगकर और प्रभु की कृपा से मैंने सुख प्राप्त कर लिया है।। ११ ।। डखणे महला ५ ।। मैं उस राजाओं के राजा प्रभु को सभी स्थानों में ढूँढता हूँ परन्तु वह तो हृदय में ही बोल रहा है और मुँह खोलकर हमें बुला रहा है (परन्तु हम लोग सुनते ही नहीं हैं)।। १ ।। महला ५ ।। हे माँ, उस मालिक ने स्वयं ही मुझे नाम रूपी माणिक दिया है। मेरा हृदय उस सच्चे प्रभु का सुमिरन करके ठंडा हो गया है।। २ ।। महला ५ ।। मैं स्वयं तो सेज बन जाऊँ और अपनी आँखों को उस प्रियतम का बिछौना बना दूँ, यदि वह एक बार भी मेरी ओर देख ले तो मुझे अमूल्य सुख प्राप्त हो जाते हैं।। ३ ।। पउड़ी।। मेरा मन प्रभु का दर्शन करना चाहता है परन्तु उसका दर्शन कैसे किया जाए। यदि तू एक क्षण के लिये भी मुझे बुला ले, मुझसे बात कर ले तो समझो मैने हे मेरे मालिक, लाखों की कमाई कर ली। मैंने चारों दिशाओं को खोज लिया है परन्तु हे मेरे मालिक, तेरे जैसा कोई नहीं है। हे संत पुरुषो, मुझे वह मार्ग बताओ जिससे प्रभु को मिला जा सके। अहंकार का त्याग करके मन को अर्पण कर देने वाले मार्ग पर चलो और सदैव अपने मालिक का यदि सुमिरन करते रहो तो सत्संगति के माध्यम से उससे मिलाप होता है। उस गुरु प्रभु ने मुझे अपने महल में बुला लिया है इसलिये मेरी सभी आशाएँ पूरी हो गई हैं। हे धरती के स्वामी मेरे मित्र प्रभु, तेरे जैसा अन्य कोई भी मुझे सुझाई नहीं पड़ता।। १२ ।। डखणे महला ५ ।। यदि मेरा प्रियतम मेरा सम्राट बन जाए तो मैं उसके बैठने के लिये सिंहासन बन जाऊँ। जब वह अपने चरण मुझसे स्पर्श करे तो मैं कमल के फूल की तरह आनन्द से पूर्ण होकर खिल उठूँ।। १ ।। महला ५ ।। यदि प्यारे को भूख लगे तो मैं नमकीन भोजन बनके उसके सामने बिखर जाऊँ। तू इस बात को जान ले कि मैं गन्ने की वह मिठास हूँ जो बार-बार पेरे जाने पर भी समाप्त नहीं होती।। २ ।। महला ५ ।। हे जीव, तू काम, क्रोध आदि ठगों से अपनी प्रीति तोड़ ले और इस संसार को आसमान में नजर आने वाली झूठी गन्धर्व नगरी के समान छलावा ही समझ। यहाँ सुख तो घड़ी दो घड़ी का ही है और यहाँ के मुसाफिर के लिये योनियों रूपी अनेक घर हैं।। ३ ।। पउड़ी।। प्रभु अच्छी से अच्छी कला के माध्यम से भी प्राप्त नहीं होता क्योंकि वह अदृष्ट और अनन्त है।

खटु दरसन भ्रमते फिरहि नह मिलीऐ भेखं ॥ वरत करहि चंद्राइणा से किते न लेखं ॥ बेद पड़हि संपूरना ततु सार न पेखं ॥ तिलकु कढहि इसनानु करि अंतरि कालेखं ॥ भेखी प्रभू न लभई विणु सची सिखं ॥ भूला मारगि सो पवै जिसु धुरि मसतकि लेखं ॥ तिनि जनमु सवारिआ आपणा जिनि गुरु अखी देखं ॥ १३ ॥ डखणे मः ५ ॥ सो निवाहू गडि जो चलाऊ न थीऐ ॥ कार कूड़ावी छडि संमलु सचु धणी ॥ १ ॥ मः ५ ॥ हभ समाणी जोति जिउ जल घटाऊ चंद्रमा ॥ परगटु थीआ आपि नानक मसतकि लिखिआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ मुख सुहावे नामु चउ आठ पहर गुण गाउ ॥ नानक दरगह मंनीअहि मिली निथावे थाउ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ बाहर भेखि न पाईऐ प्रभु अंतरजामी ॥ इकसु हरि जीउ बाहरी सभ फिरै निकामी ॥ मनु रता कुटंब सिउ नित गरबि फिरामी ॥ फिरहि गुमानी जग महि किआ गरबहि दामी ॥ चलदिआ नालि न चलई खिन जाइ बिलामी ॥ बिचरदे फिरहि संसार महि हरि जी हुकामी ॥ करमु खुला गुरु पाइआ हरि मिलिआ सुआमी ॥ जो जनु हरि का सेवको हरि तिस की कामी ॥ १४ ॥ डखणे मः ५ ॥ मुखहु अलाए हभ मरणु पछाणंदो कोइ ॥ नानक तिना खाकु जिना यकीना हिक सिउ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जाणु वसंदो मंझि पछाणू को हेकड़ो ॥ तै तनि पड़दा नाहि नानक जै गुरु भेटिआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ मतड़ी कांढकु आह पाव धोवंदो पीवसा ॥ मू तनि प्रेमु अथाह पसण कू सचा धणी ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ निरभउ नामु विसारिआ नालि माइआ रचा ॥ आवै जाइ भवाईऐ बहु जोनी नचा ॥ बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु कचा ॥ अंदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥ वैरु करे निरवैर नालि झूठे लालचा ॥ मारिआ सचै पातिसाहि वेखि धुरि करमचा ॥ जमदूती है हेरिआ दुख ही महि पचा ॥ होआ तपावसु धरम का नानक दरि सचा ॥ १५ ॥ डखणे मः ५ ॥ परभाते प्रभ नामु जपि गुर के चरण धिआइ ॥ जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ देह अंधारी अंधु सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनंमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥ २ ॥ मः ५ ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥

छः दर्शनों वाले भी उसके लिये भटकते फिरते हैं क्योंकि उसे वेशों के पाखण्ड के माध्यम से नहीं मिला जा सकता। जो चन्द्रायण आदि व्रत रखते हैं वे किसी भी काम नहीं आते। लोग सम्पूर्ण वेदों का पाठ तो करते हैं परन्तु उसके सार तत्व को नहीं देख पाते। वे स्नान करके तिलक तो लगाते हैं परन्तु उनके अन्तर्मन में कालिमा ही भरी रहती है। सच्ची शिक्षा से विहीन बने रहकर पाखण्डियों को प्रभु नहीं मिल पाता। जिसके माथे पर प्रारम्भ से ही लेख लिखे हों वह भटक कर भी सीधे रास्ते पर आ जाता है। उन्होंने ही अपने जीवन को सँवार लिया है जिन्होंने गुरु को अपनी आँखों से देख लिया है।। १३ ।। डखणे महला ५ ।। ऐसा निभने वाला अपना साथी बना जो चलायमान ना हो; तू झूठे कार्य व्यापार को छोड़ दे और सच्चे मालिक को अपने हृदय में सम्भाल ले।। १ ।। महला ५ ।। जिस प्रकार सब घड़ों में एक ही चन्द्रमा दिखाई देता है उसी तरह सब जीवों में उसी की ज्योति समाई हुई है परन्तु वह स्वयं प्रकट उसी के लिए होता है हे नानक, जिसके माथे पर भाग्य लेख लिखा हुआ हो।। २ ।। महला ५ ।। अपने शोभायमान मुख से उसके नाम का उच्चारण कर और आठों पहर उसके गुण गाता रह। हे नानक, तेरा प्रभु दरबार में मान सम्मान'होगा और तुझ आसरा विहीन को आसरा मिल जाएगा।। ३ ।। पउड़ी।। बाहर के पाखण्डों से उसे नहीं पाया जा सकता क्योंकि प्रभु अन्तर्यामी है। जो भी प्रभु से विहीन होते हैं वे सभी निकम्मे बनकर घूमते रहते हैं। जिनका मन केवल कुटुम्भ में ही फंसा रहता है वे सदैव अहंकारी बनकर ही भटकते रहते है। वे संसार में अभिमानी होकर घूमते हैं जिन्हें अपने धन का बहुत अभिमान होता है। यह धन सम्पत्ति चलते हुओं के साथ नहीं चलती और थोड़े समय में ही चली जाती है। ऐसे लोग प्रभु के हुकुम में ही इस संसार में भटकते फिरते हैं। जब भाग्य उदित हो गया तो गुरु प्राप्त हो गया तथा वह स्वामी प्रभु भी मिल जाता है। जो व्यक्ति प्रभु का सेवक है प्रभु उसके काम आता है।। १४ ।। डखणे महला ५ ।। मुख से तो सभी बातें करते हैं परन्तु मरने की वास्तविकता को कोई बिरला ही पहचानता है। जिनका विश्वास एक प्रभु पर है नानक तो उनकी चरण धूलि की याचना करता है।। १ ।। महला ५ ।। यह कोई बिरला ही पहचान पाता है कि वह प्रभु हृदय के अन्दर ही बसता है। हे नानक, जिन्होंने गुरु से मिलाप कर लिया है उनके शरीर और प्रभु में फिर कोई भी दूरी अथवा पर्दा नहीं बना रहता।। २ ।। महला ५ ।। जो प्रभु के सम्बन्ध में मति प्रदान करे मैं उसके चरण धोकर पी जाऊं। उस सच्चे मालिक को देखने के लिए मेरे तन मन में अथाह प्रेम है।। ३ ।। पउड़ी।। जीव ने माया में लीन होकर उस निर्भय प्रभु के नाम को भुला दिया है। वह आवागमन में भटकता हुआ बहुत सी योनियों में नाचता रहता है। वह वचन करता है और वचन से खिसक कर सब कच्ची बातें ही बोलता रहता है। वह अन्दर से खोखला और झूठा होता है और झूठे कामों में लीन बना रहता है। झूठे लालचों में फँसकर वह निरवैर लोगों के साथ भी शत्रु भाव बनाए रहता है। उस सच्चे सम्राट प्रभु ने प्रारम्भ से ही ऐसा कर्म करने वाला उसे जानकर उसे मार ही डाला है अर्थात वह संसार में किसी काम का नहीं होता है। यमदूत उसे दुखी करते है और वह दुख में ही मर खप जाता है। हे नानक, उसके सच्चे द्वार पर धर्म का ही सच्चा न्याय होता है।। १५ ।। डखणे महला ५ ।। हे जीव, भोर में प्रभु नाम का जाप कर और गुरु के चरणों में ध्यान लगा। इस प्रकार सच्चे प्रभु के गुण गाने से तेरी जन्म-जन्म की मैल उतर जाएगी।। १ ।। महला ५ ।। प्रभु नाम से विहीन होने पर यह देही अंधकारमय और अन्धी हो जाती है। हे नानक, उसी का जीवन सफल होता है जिसके हृदय में सच्चा मालिक बसता है।। २ ।। महला ५ ।। इन आँखों से प्रभु की ज्योति मैंने सभी लोकों में देख ली है; इससे मेरी प्यास इतनी बढ़ गई है कि अब वह शान्त नहीं होती।

नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ॥ ओहु आपि तरिआ कुटंब सिउ सभु जगतु तराई ॥ ओनि हरि नामा धनु संचिआ सभ तिखा बुझाई ॥ ओनि छडे लालच दुनी के अंतरि लिव लाई ॥ ओसु सदा सदा घरि अनंदु है हरि सखा सहाई ॥ ओनि वैरी मित्र सम कीतिआ सभ नालि सुभाई ॥ होआ ओही अलु जग महि गुर गिआनु जपाई ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥ १६ ॥ डखणे मः ५ ॥ सचु सुहावा काढीऐ कूड़ै कूड़ी सोइ ॥ नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा ॥ सुतड़ी सो सहु डिठु तै सुपने हउ खंनीऐ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ सजण सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥ मंन मझाहू लखि तुधहु दूरि न सु पिरी ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥ बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥ रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ निहचलु सचु खुदाइ एकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥ १७ ॥ डखणे मः ५ ॥ डिठी हभ ढंढोलि हिकसु बाझु न कोइ ॥ आउ सजण तू मुखि लगु मेरा तनु मनु ठंढा होइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ आसकु आसा बाहरा मू मनि वडी आस ॥ आस निरासा हिकु तू हउ बलि बलि बलि गईआस ॥ २ ॥ मः ५ ॥ विछोड़ा सुणे डुखु विणु डिठे मरिओदि ॥ बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ तट तीरथ देव देवालिआ केदारु मथुरा कासी ॥ कोटि तेतीसा देवते सणु इंद्रै जासी ॥ सिम्रिति सासत्र बेद चारि खटु दरस समासी ॥ पोथी पंडित गीत कवित कवते भी जासी ॥ जती सती संनिआसीआ सभि कालै वासी ॥ मुनि जोगी दिगंबरा जमै सणु जासी ॥ जो दीसै सो विणसणा सभ बिनसि बिनासी ॥ थिरु पारब्रहमु परमेसरो सेवकु थिरु होसी ॥ १८ ॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ सै नंगे नह नंग भुखे लख न भुखिआ ॥ डुखे कोड़ि न डुख नानका पिरी पिखंदो सुभ दिसटि ॥

परन्तु हे नानक, वे (ज्ञान की) आँखें तो और ही है जिनसे मेरा प्रियतम प्रभु दिखाई देता है।। ३ ।। पउड़ी।। जिस सेवक ने गुरमुख बनकर उसका सुमिरन किया है उसने सभी सुख प्राप्त कर लिए हैं। वह स्वयं तो सारे परिवार समेत पार उतर ही गया है साथ ही साथ उसने सारे संसार को भी पार उतार दिया है। उसने प्रभु नाम के धन का संचय कर लिया है और उसकी सारी प्यास बुझ गई है। अन्तर्मन में उस प्रभु से लौ लगाकर उसने दुनिया के सभी लालच छोड़ दिए हैं। उसके हृदय रूपी घर में सदा आनन्द बना रहता है क्योंकि प्रभु उसका सखा बनकर उसकी सहायता करता है। अपने अच्छे स्वभाव के कारण उसने सभी शत्रुओं को मित्रों के समान बना लिया है। गुरु के ज्ञान का जाप करते हुए वही इस संसार में पूर्ण बना है। प्रभु की ओर से पहले ही लिखे भाग्य लेख का फल उसने पा लिया है और उसका प्रेम प्रभु से लग गया है।। १६ ।। डखणे महला ५ ।। सत्य को सुहावना कहा जाता है और झूठ की महिमा भी झूठी होती है। हे नानक, ऐसे लोग बिरले ही होते हैं जिनके पास सत्य की रासपूंजी होती है।। १ ।। महला ५ ।। उस सज्जन प्रभु का मुख अनुपम है जिसे मैं आठों प्रहर देखती ही रहूँ। मैंने सोई हुई ने उस प्रियतम को देखा और मैं सपने में देखे हुए उस प्रियतम पर बलिहारी जाती हूँ।। २ ।। महला ५ ।। उस सज्जन प्रभु को तो सत्य रूप में ही जानो अर्थात अनुभव करो क्योंकि उसके लिये मुख से कुछ भी कहना व्यर्थ और खोखला है। तू उसे अपने मन से ही देख क्योंकि वह प्रियतम तुझसे दूर नहीं है।। ३ ।। पउड़ी।। धरती, आकाश, पाताल, चन्द्र, सूर्य सभी विनष्ट हो जाने वाले हैं। बादशाह, साहूकार, अमीर, खान आदि सभी अपने घरों को गिराकर यहाँ से चल देंगे। कंगाल, अमीर, अहंकारी सभी इस लोक से चले जाएँगे। काजी और शेख आदि सभी यहाँ से उठ जाएंगे। पीर पैगम्बर, औलिया कोई भी यहां स्थिर नहीं रहेगा। रोजा, बाँग, नमाज, कतेब के वास्तविक रहस्य को बिना जाने ही सब यहाँ से चले जाएंगे। इस धरती की चौरासी लाख योनियाँ सब आवागमन में पड़ी रहेंगी केवल एक सच्चा खुदा ही अटल है और खुदा का बँदा (सेवक) भी अविनाशी है॥१७॥ डखणे महला ५ ।। मैंने सब कुछ खोजबीन कर देख लिया है कि उस एक प्रभु के बिना अन्य कोई नहीं है। हे मेरे सज्जन, तू आ, मैं तुझे सामने देखूँ और मेरा मन तन शीतल हो जाए।। १ ।। महला ५ ।। वास्तविक प्रेमी वह है जो कोई भी स्वार्थ नहीं रखता परन्तु मेरे मन में तो बड़ी बड़ी आशाएँ है। आशाओं से रहित तो हे प्रभु, केवल एक तू ही है; मैं बार-बार तुझ पर बलिहारी जाता हूँ।। २ ।। महला ५ ।। वियोग की तो बात सुनकर ही दुख लगता है परन्तु दर्शन के बिना तो मैं मरने जैसा ही हो जाता हूँ। अपने प्यारे के बिना वियोगी जीव को चैन नहीं पड़ता।। ३ ।। पउड़ी।। पवित्र नदियों के किनारों पर तीर्थ, देव-देवालय, केदार, मथुरा, काशी, इन्द्र समेत तैतीसों करोड़ देवता सब यहाँ से चले जाएंगे। स्मृतियाँ शास्त्र चारों वेद, छः दर्शन सभी अन्ततः लय हो जाएँगे। यति, पंडित, गीत, व्यक्ति, कवि आदि सभी यहाँ से चले जाएँगे। यति, त्यागी, संन्यासी सभी काल के वश में आ जाएंगे। मुनि, योगी, दिगम्बर सभी यम के साथ जाएँगे। जो कुछ भी दृष्टमान है उसे विनष्ट होना है और सब कुछ विनष्ट हो ही जाएगा। परब्रह्म परमेश्वर स्थिर है अथवा उसका सेवक यहाँ स्थिर बना रहेगा।। १८ ।। श्लोक डखणे महला ५।। सौ लोग नंगे हों तो उन्हें नंगापन महसूस नहीं होता; लाखों भूखे हो तो उन्हें भूख प्रतीत नहीं होती। यदि प्रभु की शुभ दृष्टि हो जाए तो करोड़ों दुखी भी दुख नहीं मानते।।

१ ॥ मः ५ ॥ सुख समूहा भोग भूमि सबाई को धणी ॥ नानक हभो रोगु मिरतक नाम विहूणिआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ हिकस कूं तू आहि पछाणू भी हिकु करि ॥ नानक आसड़ी निबाहि मानुख परथाई लजीवदो ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ निहचलु एकु नराइणो हरि अगम अगाधा ॥ निहचलु नामु निधानु है जिसु सिमरत हरि लाधा ॥ निहचलु कीरतनु गुण गोबिंद गुरमुखि गावाधा ॥ सचु धरमु तपु निहचलो दिनु रैनि अराधा ॥ दइआ धरमु तपु निहचलो जिसु करमि लिखाधा ॥ निहचलु मसतकि लेखु लिखिआ सो टलै न टलाधा ॥ निहचल संगति साध जन बचन निहचलु गुर साधा ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सदा सदा आराधा ॥ १९ ॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ जो डुबंदो आपि सो तराए किन्ह खे ॥ तारेदड़ो भी तारि नानक पिर सिउ रतिआ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ जिथै कोइ कथंनि नाउ सुणंदो मा पिरी ॥ मूं जुलाऊं तथि नानक पिरी पसंदो हरिओ थीओसि ॥ २ ॥ मः ५ ॥ मेरी मेरी किआ करहि पुत्र कलत्र सनेह ॥ नानक नाम विहूणीआ निमुणीआदी देह ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ नैनी देखउ गुर दरसनो गुर चरणी मथा ॥ पैरी मारगि गुर चलदा पखा फेरी हथा ॥ अकाल मूरति रिदै धिआइदा दिनु रैनि जपंथा ॥ मै छडिआ सगल अपाइणो भरवासै गुर समरथा ॥ गुरि बखसिआ नामु निधानु सभो दुखु लथा ॥ भोगहु भुंचहु भाईहो पलै नामु अगथा ॥ नामु दानु इसनानु दिड़ु सदा करहु गुर कथा ॥ सहजु भइआ प्रभु पाइआ जम का भउ लथा ॥ २० ॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ लगड़ीआ पिरीअंनि पेखंदीआ ना तिपीआ ॥ हभ मझाहू सो धणी बिआ न डिठो कोइ ॥ १ ॥ मः ५ ॥ कथड़ीआ संताह ते सुखाऊ पंधीआ ॥ नानक लधड़ीआ तिंनाह जिना भागु मथाहड़ै ॥ २ ॥ मः ५ ॥ डूंगरि जला थला भूमि बना फल कंदरा ॥ पाताला आकास पूरनु हभ घटा ॥ नानक पेखि जीओ इकतु सूति परोतीआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ हरि जी माता हरि जी पिता हरि जीउ प्रतिपालक ॥ हरि जी मेरी सार करे हम हरि के बालक ॥ सहजे सहजि खिलाइदा नही करदा आलक ॥ अउगणु को न चितारदा गल सेती लाइक ॥ मुहि मंगां सोई देवदा हरि पिता

महला ५ ।। बेशक कोई सभी सुख भोगने वाला और सारी धरती का मालिक बन जाए परन्तु हे नानक, प्रभु नाम से विहीन यह सब रोग ही है और वह व्यक्ति मुर्दा है।। २ ।। महला ५ ।। एक प्रभु को ही तू चाहता रह और उसे ही दोस्त बना। हे नानक, वही आशाएँ पूरी करता है तथा मनुष्य से माँग कर तो शर्मिन्दा ही होना पड़ता है।। ३ ।। पउड़ी।। वह अगम्य और अथाह एक प्रभु ही अटल बना रहने वाला है। उसके नाम का भण्डार भी अटल है जिसके सुमिरन से प्रभु मिल जाता है। उस प्रभु का गुणानुवाद तथा कीर्तन भी अटल बना रहने वाला है और इसका गायन गुरमुख लोग किया करते हैं। उसका धर्म और उसकी की हुई साधना भी सच्ची है और अटल बनी रहती है और मैंने उसका रात-दिन सुमिरन किया है। जिसके भाग्य में लिखा हो वही दया, धर्म और उसकी साधना को पक्के तौर से अपनाए रखता है। माथे पर लिखा उसका लेख भी अटल होता है और उसे टाला नहीं जा जकता। साधु पुरुषों की संगति भी अटल होती है और गुरु रूपी साधु के उपदेश भी अटल होते हैं। पहले से ही जिनके भाग्य में लिखा होता है वे सदैव उसका सुमिरन करते रहते हैं।। १६ ।। श्लोक डखणे महला ५ ।। जो खुद डूबा हुआ है वह भला किसे तैरा सकता है। हे नानक, प्रभु के साथ लीन बना ही स्वयं तैरता है और दूसरों को पार उतार देता है।। १ ।। महला ५ ।। जहाँ कोई भी मेरे प्रियतम प्रभु के नाम का कथन करता है अथवा उसे सुनता है मैं वहाँ जाऊँ और हे नानक, उस प्रियतम प्रभु के दर्शन करके हरा-भरा हो जाऊँ।। २ ।। महला ५ ।। मेरी-मेरी करता हुआ हे जीव, तू पुत्र और स्त्री के साथ क्या स्नेह बनाए रहता है। हे नानक, प्रभु-नाम से विहीन यह शरीर तो बिना बुनियाद के बना हुआ मकान ही है जो कभी भी नष्ट हो सकता है।। ३ ।। पउड़ी।। मैं आँखों से गुरु का दर्शन करता हूँ और गुरु के चरणों पर माथा रखता हूँ। पाँव से मैं गुरु के मार्ग पर चलता हूँ और हाथों से उसे पँखा डुलाता हूँ। दिन रात उस प्रभु का जाप करता हुआ मैं प्रभु के कालातीत स्वरूप का हृदय में सुमिरन करता हूँ। गुरु की शक्ति में भरोसा करते हुए मैंने अपना सम्पूर्ण अहंभाव त्याग दिया है। गुरु ने मुझे प्रभु-नाम का भण्डार प्रदान कर दिया है जिससे मेरा सम्पूर्ण दुख समाप्त हो गया है। हे भाईयो, अपने पास प्रभु के अकथनीय नाम का भण्डार रखकर उसका आनन्दपूर्वक उपभोग करो। नाम दान और वास्तविक स्नान के महत्व को हृदय में दृढ़ बनाए रखो और सदैव गुरु की कथा वार्ता करते रहो। पूर्ण आनन्द की स्थिति प्रभु को प्राप्त करने से बन जाती है और यम का भय निकल जाता है।। २० ।। श्लोक डखणे महला ५ ।। मेरी आँखें तो प्रियतम के साथ लगी हुई हैं परन्तु उसे देखकर वे तृप्त नहीं होती। सबमें शान्त पुरुषों की शिक्षादायक कथाएँ, सुख देने वाले रास्ते हैं। हे नानक, ये रास्ते उन्हें ही मिलते हैं जिनके माथे पर भाग्य लेख लिखा होता है।। २ ।। महला ५ ।। पर्वतों में, जल में, स्थल में, वन में, फलों में, गुफाओं में, पातालों में, आकाशों में सबमें वह प्रभु पूर्ण रूप से व्याप्त बना हुआ है। हे नानक, मैं तो उसी को देखकर जीवित बना रहता हूँ जिसने यह सब एक ही सूत्र में पिरोया हुआ है।। ३ ।। पउड़ी।। प्रभु ही मेरी माता पिता है और प्रभु ही मेरा पालन-पोषण करने वाला है। प्रभु ही मेरी खोज-खबर रखता है और हम प्रभु के ही बच्चे हैं। वह स्वाभाविक रूप से ही सबको खिलाता और खेलता रहता है और अपने इस कार्य में कभी भी सुस्ती नहीं करता। वह हमारे अवगुणों को याद नहीं रखता और हमें गले से लगा लेने वाला है। जो मैं मुँह से माँगता हूँ वह वही देता है और वही प्रभु मेरा पिता है जो

सुखदाइक ॥ गिआनु रासि नामु धनु सउपिओनु इसु सउदे लाइक ॥ साझी गुर नालि बहालिआ सरब सुख पाइक ॥ मै नालहु कदे न विछुड़ै हरि पिता सभना गला लाइक ॥ २१ ॥ सलोक डखणे मः ५ ॥ नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ॥ ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ नानक बिजुलीआ चमकंनि घुरन्हि घटा अति कालीआ ॥ बरसनि मेघ अपार नानक संगमि पिरी सुहंदीआ ॥ २ ॥ मः ५ ॥ जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे ॥ सेजड़ीआ सोइंन हीरे लाल जड़ंदीआ ॥ सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी ततीआ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा ॥ जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा ॥ बिनु करमा किछू न लभई जे फिरहि सभ धरणा ॥ गुर मिलि भउ गोविंद का भै डरु दूरि करणा ॥ भै ते बैरागु ऊपजै हरि खोजत फिरणा ॥ खोजत खोजत सहजु उपजिआ फिरि जनमि न मरणा ॥ हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा ॥ बोहिथु नानक देउ गुरु जिसु हरि चड़ाए तिसु भउजलु तरणा ॥ २२ ॥ सलोक मः ५ ॥ पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥ १ ॥ मः ५ ॥ मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि ॥ जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥ २ ॥ मः ५ ॥ जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥ भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै ॥ सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥ भंनण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै ॥ करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥ रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥ गहिर गभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥ सोई कंमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥ तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥ २३ ॥ १ ॥ २ ॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ की   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥ बूडहुगे परवार सकल सिउ रामु न जपहु अभागे

सुख देने वाला है। उसी ने मुझे इस सौदे के लायक बनाकर ज्ञान और प्रभु नाम की रासपूंजी सौंपी है। उस प्रभु ने मुझे गुरु के साथ साझेदार के रूप में स्थित कर दिया है जिससे सभी सुख मेरे सेवक बन गए हैं। सभी बातों में समर्थ मेरा पिता प्रभु मुझ से कभी भी बिछुड़ कर अलग ना हो।। २१ ।। श्लोक डखणे महला ५ ।। हे नानक, कच्चे लोगों के साथ तू अपना सम्बन्ध तोड़ दे और पक्के सज्जन, सन्त पुरुषों को खोज ले। कच्चे लोग तो जीवित रहते हुए ही दूरी बना लेते हैं परन्तु सन्त सज्जन मरने पर भी साथ नहीं छोड़ते।। १ ।। महला ५ ।। हे नानक, बिजलियाँ चमक रही है और काली घटाएं घिर कर गरज रही हैं। हे नानक, जिनका मिलाप प्रियतम के साथ हो गया है वे शोभायुक्त बनी रहती हैं और उन्हीं के लिये प्रभु प्रेम के बादल घनघोर रूप से बरसते रहते हैं।। २ ।। महला ५ ।। धरती के दरिया पानी से भरे हों और ठंडी-ठंडी हवा चल रही हो; सोने की सेज बनी हुई हो जिसमें हीरे और जवाहिरात जड़े हों और विवाह के समय धारण किए जाने वाले कपड़े पहने हुए हों परन्तु हे नानक, यह सब कुछ प्रभु पति के बिना दुखदायक ही है।। ३ ।। पउड़ी।। कर्ता प्रभु ने जो कुछ कर दिया है वही होता रहना है। प्राणी सैकड़ों तरीकों से भाग दौड़ करता है परन्तु प्राप्त वही होता है जो प्रारम्भ से ही लेना लिखा हुआ है। शुभ कर्मों के बिना बेशक सारी धरती पर भटका जाए तब भी कुछ प्राप्त नहीं होता। गुरु से मिलकर प्रभु का भय (संयम और प्रेम) प्राप्त होता है जिससे साँसारिक भय दूर हो जाता है। भय से ही वैराग्य, प्रेम उत्पन्न होता है जिससे फिर जन्म-मरण नहीं होता। हृदय में सुमिरन करके साधु पुरुषों की शरण प्राप्त की जाती है और हे नानक, गुरु ही वह प्रभु नाम का जहाज है जिस पर प्रभु जिसे चढ़ा देता है वही संसार सागर से पार उतर जाता है।। २२ ।। श्लोक महला ५ ।। जीवन की आशाओं को छोड़कर हे प्राणी, तू सबसे पहले (विषय विकारों के संदर्भ में) मरना स्वीकार कर; तू सबकी चरण धूलि बन जा और तब हमारे पास चला आ।। १ ।। महला ५ ।। अभिमान के भाव से मरे हुए को जीवित के रूप में जान ले और हे प्राणी, अहंकार में जीवित बने हुए को भी तू मुर्दा ही समझ। जिनका प्रेम एक प्रभु से ही है वे व्यक्ति ही प्रमुख और महत्वपूर्ण हैं।। २ ।। महला ५ ।। जिसके हृदय में परब्रह्म प्रभु बसता है, पीड़ा तो उसके पास भी नहीं आती। साँसारिक भूख और प्यास उसे प्रभावित नहीं करती और यम उनके पास नहीं आता।। ३ ।। पउड़ी ।। वह सच्चा सम्राट अडोल है और उसके मूल्य को नहीं आँका जा सकता। सिद्ध, साधक, ज्ञानी, ध्यानी आदि में से भला कौन तेरी महानता और विशालता को जान सकता है। तू ही सब कुछ तोड़ने बनाने में और उत्पत्ति तथा प्रल्य करने में समर्थ है। करने और कराने में वह प्रभु समर्थ है और घट-घट में बोलने वाला वही है। यह व्यक्ति क्यों चिंतित बना रहता है क्योंकि वह प्रभु ही सबको रोजी पहुँचाता रहता है। हे प्रभु, तू गहन, गम्भीर और अथाह है तेरे गुण और तेरा ज्ञान भी अमूल्य है जो प्रभु ने प्रारम्भ से ही निश्चित किया है जीव ने तो वही काम करना है। नानक तेरे गुणों का कथन करता है कि हे प्रभु, तुझसे बाहर तो इस विश्व में कुछ भी नहीं है।। २३ ।। १ ।। २ ।।

रागु मारू वाणी कबीर जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे पंडित, तुम किस कुमति के पीछे लग गए हो। तुम तो सारे परिवार सहित डूब जाओगे क्योंकि हे अभागे, तुम प्रभु नाम का सुमिरन नहीं कर रहे हो

॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥ १ ॥ जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥ २ ॥ मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥ ३ ॥ नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार ॥ जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥ १ ॥ सार सुखु पाईऐ रामा ॥ रंगि रवहु आतमै राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ मनु जीते जगु जीतिआ जां ते बिखिआ ते होइ उदासु ॥ २ ॥ अंजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु ॥ गिआन अंजनु जिह पाइआ ते लोइन परवानु ॥ ३ ॥ कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइ ॥ अंतरगति हरि भेटिआ अब मेरा मनु कतहू न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ तेरे कहने की गति किआ कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥ १ ॥ रामु जिह पाइआ राम ॥ ते भवहि न बारै बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ झूठा जगु डहकै घना दिन दुइ बरतन की आस ॥ राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥ २ ॥ गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइआ निरासु ॥ सभु सचु नदरी आइआ जउ आतम भइआ उदासु ॥ ३ ॥ राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि ॥ कहु कबीर कंचनु भइआ भ्रमु गइआ समुद्रै पारि ॥ ४ ॥ ३ ॥ उदक समुंद सलल की साखिआ नदी तरंग समावहिगे ॥ सुंनहि सुंनु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइ जावहिगे ॥ १ ॥ बहुरि हम काहे आवहिगे ॥ आवन जाना हुकमु तिसै का हुकमै बुझि समावहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब चूकै पंच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिगे ॥ दरसनु छोडि भए समदरसी एको नामु धिआवहिगे ॥ २ ॥ जित हम लाए तित ही लागे तैसे करम कमावहिगे ॥ हरि जी क्रिपा करे जउ अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥ ३ ॥ जीवत मरहु

।। १ ।। रहाउ।। वेद और पुराण पढ़ने का क्या लाभ है क्योंकि तेरे लिये तो ये वैसे ही हैं जैसे गधे पर चन्दन का बोझ लादा हुआ हो परन्तु गधे को उसकी सुगन्ध से कुछ लेना-देना नहीं होता। तूने राम नाम के रहस्य को तो जाना ही नहीं है, तू पार कैसे उतरेगा।। १ ।। यज्ञों के लिये किए हुए जीव-वध को तुम धर्म कहते हो, तो फिर भाई बताओ कि अधर्म क्या है। ऐसा करते हुए तुम अपने को श्रेष्ठ मुनि बताते हो तो फिर बताओ कसाई भला किसे कहा जाए॥२॥ मन के अन्धे तुम स्वयं तो कुछ जानते नहीं हो। अतः हे भाई, तुम किसे समझाते फिर रहे हो। धन के लिये तुम विद्या बेचते हो; तुम्हारा तो विशेष तौर से जीवन ही व्यर्थ चला जा रहा है।। ३ ।। नारद के वचनों को व्यास कहता है और तुम व्यास के पुत्र शुकदेव को भी पूछ लो। कबीर ठीक कह रहा है कि सबमें रमण करने वाले उस प्रभु में ही लीन होकर छूट सकोगे अन्यथा हे भाई, तुम तो अपने आपको डूबा हुआ ही समझो।। ४ ।। १ ।। जब तक मन से विकारों का त्याग नहीं किया जाता केवल वन में निवास बना लेने से प्रभु को कैसे मिला जा सकता है। जिसने घर को और धन को एक समान ही जाना है इस संसार में वे व्यक्ति ही पूर्ण हैं।। १ ।। वास्तविक सुख तो प्रभु में ही पाया जाता है इसलिये हृदय में प्रेम पूर्वक राम का सुमिरन करो।। १ ।। रहाउ।। जटाओं में भस्म लगाकर तुमने यह गुफा में निवास क्यों बना लिया है क्योंकि मन को जीतने से ही संसार जीता जाता है और तभी विषय-विकारों में रहते हुए उनसे अलेप बने रहा जाता है।। २ ।। सुरमा तो सभी आँखों में डालते हैं परन्तु अपनी-अपनी भावना में अन्तर होता है अर्थात कोई विकारों के वश में होकर सुन्दर दिखने के लिए और कोई दृष्टि को ठीक करने के लिये सुरमा आँखों में डालता है। इसी प्रकार ज्ञान रूपी अंजन कोई तो चतुराई बताने के लिए धारण करता है और जो वास्तव रूप में ज्ञानवान होने के लिये धारण करता है उसी की आँखें सफल होती हैं।। ३ ।। कबीर का कथन है कि गुरु ने ज्ञान देकर जब समझा दिया तो मैंने जान लिया है; अब मैं अन्तर मन में ही प्रभु को मिलता हूँ और अब मेरा मन कही भी नहीं दौड़ता भागता है।। ४ ।। २ ।। जो ऋद्धियों-सिद्धियों का ध्यान करने वाले हैं उनसे भला हमें क्या लेना देना। तेरी बातों को मैं मानूं, मुझे तो तेरी बातें करते हुए भी लज्जा का अनुभव होता है।। १ ।। हे राम, जिसने रमण करने वाले प्रभु को पा लिया है वे द्वार द्वार पर जाकर भटकते नहीं रहते।। १ ।। ये झूठा संसार दो दिन के व्यवहार की आशा में बहुत ही भटकता रहता है। जिन्होंने राम नाम के जल को पी लिया है उन्हें फिर कभी भी प्यास नहीं लगती।। २ ।। गुरु की कृपा से जिसने इस रहस्य को बूझ लिया है और आशाओं के प्रति अलिप्त हो गया है तथा जो आत्मिक रूप से मोह माया से उदासीन हो गया है उसे सम्पूर्ण सत्य का दर्शन हो गया है।। ३ ।। हर एक को पार उतारने वाले प्रभु के नाम का रस जिसने चख लिया है, कबीर का कथन है कि वह सोने जैसा हो गया है और उसका भ्रम ही चला गया है और वह संसार सागर से पार भी हो गया है।। ४ ।। ३ ।। समुद्र के पानी और नदी में लहर की तरह हे प्रभु, हम तुझमें लीन हो जाएँगे।। १ ।। रहाउ ।। जब पाँचों विकारों की रचना की भटकन को हम दूर कर लेंगे तब हमारे सभी भ्रम समाप्त हो जाएँगे। अब हम अलग-अलग दर्शनों, सम्प्रदायों और वेशों को छोड़कर समदर्शी बनकर केवल एक प्रभु-नाम का ही सुमिरन करेंगे।। २ ।। प्रभु जहाँ लगाएगा हम वहीं लगे रहेंगे और वैसे ही कर्म करते रहेंगे। यदि प्रभु अपनी कृपा करेगा तो हम शब्द-गुरु के माध्यम से उस प्रभु में लीन हो जाएँगे।। ३ ।। जीवित रहते हुए ही विकारों के संदर्भ में मरकर

मरहु फुनि जीवहु पुनरपि जनमु न होई ॥ कहु कबीर जो नामि समाने सुंन रहिआ लिव सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ जउ तुम्ह मोकउ दूरि करत हउ तउ तुम मुकति बतावहु ॥ एक अनेक होइ रहिओ सगल महि अब कैसे भरमावहु ॥ १ ॥ राम मोकउ तारि कहां लै जई है ॥ सोधउ मुकति कहा देउ कैसी करि प्रसादु मोहि पाई है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारन तरनु तबै लगु कहीऐ जब लगु ततु न जानिआ ॥ अब तउ बिमल भए घट ही महि कहि कबीर मनु मानिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ जिनि गड़ कोट कीए कंचन के छोडि गइआ सो रावनु ॥ १ ॥ काहे कीजतु है मनि भावनु ॥ जब जमु आइ केस ते पकरै तह हरि को नामु छडावन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु अकालु खसम का कीन्हा इहु परपंचु बधावनु ॥ कहि कबीर ते अंते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइनु ॥ २ ॥ ६ ॥ देही गावा जीउ धर महतउ बसहि पंच किरसाना ॥ नैनू नकटू स्रवनू रसपति इंद्री कहिआ न माना ॥ १ ॥ बाबा अब न बसउ इह गाउ ॥ घरी घरी का लेखा मागै काइथु चेतू नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरम राइ जब लेखा मागै बाकी निकसी भारी ॥ पंच क्रिसान वा भागि गए लै बाधिओ जीउ दरबारी ॥ २ ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु खेत ही करहु निबेरा ॥ अब की बार बखसि बंदे कउ बहुरि न भउजलि फेरा ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु मारू बाणी कबीर जीउ जी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनभउ किनै न देखिआ बैरागीअड़े ॥ बिनु भै अनभउ होइ वणाहंबै ॥ १ ॥ सहु हदूरि देखै तां भउ पवै बैरागीअड़े ॥ हुकमै बूझै त निरभउ होइ वणाहंबै ॥ २ ॥ हरि पाखंडु न कीजई बैरागीअड़े ॥ पाखंडि रता सभु लोकु वणाहंबै ॥ ३ ॥ त्रिसना पासु न छोडई बैरागीअड़े ॥ ममता जालिआ पिंडु वणाहंबै ॥ ४ ॥ चिंता जालि तनु जालिआ बैरागीअड़े ॥ जे मनु मिरतकु होइ वणाहंबै ॥ ५ ॥ सतिगुर बिनु बैरागु न होवई बैरागीअड़े ॥ जे लोचै सभु कोइ वणाहंबै ॥ ६ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बैरागीअड़े ॥ सहजे पावै सोइ वणाहंबै ॥ ७ ॥ कहु कबीर इक बेनती बैरागीअड़े ॥ मोकउ भउजलु पारि

यदि पुनः जीवित बना रहा जाए तो फिर दुबारा जन्म-मरण नहीं होता। कबीर कहता है जो प्रभु-नाम में लीन हो गए हैं वे ही अपनी लौ को उसकी शून्य समाधि में लगाए रखते हैं।। ४ ।। ४ ।। हे प्रभु, यदि तुम मुझे अपने से दूर करते हो तो बताओ भला यह किस प्रकार की मुक्ति है अर्थात मिलाप ही मेरी मुक्ति है। तू एक ही सबमें एक होकर कार्यशील है तो भला इसमें कौन सी भ्रम वाली बात है।। १ ।। हे प्रभु, मुझे पार उतारने के लिये कहाँ ले जा रहे हो। मैं पूछता हूँ और मुक्ति भला किस प्रकार की मुक्ति होती है और मुझे वह तुम कहाँ दोगे क्योंकि तुम्हारी कृपा से तो तुमसे मिलकर मुक्ति तो मैंने प्राप्त कर ली है अर्थात तुम्हारा मिलाप ही मेरी मुक्ति है।। १ ।। रहाउ।। यह पार उतारना और पार उतरना तभी तक कहा जाता है जब तक व्यक्ति सार तत्व को नहीं जानता। अब तो हम हृदय में ही निर्मल हो गए हैं और कबीर कहता है कि मन सन्तुष्ट हो चुका है।। २ ।। ५ ।। जिसने सोने के किले बनाए वह रावण भी उन्हें छोड़कर यहाँ से चला गया।। १ ।। इसलिये हे जीव, तू अपने मन को अच्छी लगने वाली बातें क्यों करता है। जब यम आकर बालों से पकड़ लेगा तब प्रभु का नाम ही तुझे छुड़ा सकेगा।। १ ।। रहाउ।। ना खाए जा सकने वाले काल को प्रभु ने ही बनाया है और उसी ने इस सारी सृष्टि का प्रपंच बाँधा है। कबीर कहता है कि अन्त में वे ही मुक्त होते हैं जिनके हृदय में रसों का भण्डार राम नाम है।। २ ।। ६ ।। इस शरीर रूपी गाँव में धरती का मालिक यह जीव है और इसमें काम, क्रोध आदि पाँच किसान बसते हैं। ये आँख, नाक, कान और जीभ आदि हैं तथा इन्द्रियों के रूप में किसी का कहना नहीं मानते।। १ ।। हे बाबा, अब मैं दुबारा इस गाँव में बसना नहीं चाहता हूँ अर्थात आवागमन से दूर जाना चाहता हूँ। यहाँ तो चित्रगुप्त नामक मुंशी घड़ी-घड़ी का हिसाब माँगता है।। १ ।। रहाउ।। धर्मराज जब लेखा माँगता हैं तो हमारी ओर भारी बकाया निकल आता है। ये पाँचों किसान तो भाग खड़े होते हैं और जीव को उस प्रभु के दरबारी बाँध लेते हैं।। २ ।। हे सन्तजनों, कबीर कहता है कि इस शरीर के रहते हुए ही इस सबका फैसला कर ले अर्थात अच्छे कर्म करो। हे प्रभु, इस बार तो तू मुझे क्षमा कर ताकि फिर मुझे इस संसार सागर के चक्कर में ना आना पड़े।।३ ।।७ ।।

रागु मारू वाणी कबीर जी की   १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे वैराग्यवान जीव, उस अनुभव किए जाने वाले प्रभु को किसी ने भी देखा नहीं। साँसारिक भय से रहित होकर ही प्रभु का अनुभव अथवा ज्ञान होता है।। १ ।। जब उस मालिक को प्रत्यक्ष देखा जाता है तभी प्रभु का डर-अनुशासन हृदय में धारण किया जाता है। उसके हुकुम को बूझ लेने से ही जीव निर्भय होता है।। २ ।। प्रभु दर्शन को हे मेरे बैरागी जीव, पाखंड का एक भाग मत बना। सभी लोग तो वास्तव में पाखंड में ही लीन बने हुए हैं।। ३ ।। हे बैरागी, तृष्णा कभी भी साथ नहीं छोड़ती और ममता भाव सारे शरीर को जलाता रहता है।। ४ ।। यदि अहंकार भाव के प्रति मन मर जाए तो चिन्ता को जलाकर तन की ममता को भी जलाया जा सकता है।। ५ ।। बेशक सभी चाहते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना हे बैरागी जीव, वास्तविक वैराग्य प्राप्त नहीं होता।। ६ ।। यदि प्रभु की कृपा हो जाए तो सच्चा गुरु मिल जाता है और सहजभाव में ही प्रभु को प्राप्त किया जाता है।। ७ ।। कबीर एक विनती करता है कि हे प्रभु, मुझे संसार सागर से पार

उतारि वणाहंबै ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥ राजन कउनु तुमारै आवै ॥ ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबु मोहि भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसती देखि भरम ते भूला स्री भगवानु न जानिआ ॥ तुमरो दूधु बिदर को पान्हो अंम्रितु करि मै मानिआ ॥ १ ॥ खीर समानि सागु मै पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी ॥ कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी ॥ २ ॥ ९ ॥ सलोक कबीर ॥ गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥ खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥ १ ॥ सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥ पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥ २ ॥ २ ॥

कबीर का सबदु रागु मारू बाणी नामदेउ जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥ मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥ १ ॥ राजा राम जपत को को न तरिओ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥ निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥ २ ॥ अंबरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥ नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥ ३ ॥ भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ ॥ नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो ॥ ४ ॥ १ ॥ मारू कबीर जीउ ॥ दीनु बिसारिओ रे दिवाने दीनु बिसारिओ रे ॥ पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ मनुखु जनमु है हारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति कबहू नही कीनी रचिओ धंधै झूठ ॥ सुआन सूकर बाइस जिवै भटकतु चालिओ ऊठि ॥ १ ॥ आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लग मात ॥ मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥ २ ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निंदा करते जनमु सिरानो कबहू न सिमरिओ रामु ॥ ३ ॥ कहि कबीर चेतै नही मूरखु मुगधु गवारु ॥ रामु नामु जानिओ नही कैसे उतरसि पारि ॥ ४ ॥ १ ॥

उतार ले।। ८।। १ ।। ८ ।। (कृष्ण कहते हैं कि हे राजन, दुर्योधन) तुम्हारे यहाँ भला कौन आये। मैंने विदुर का ऐसा प्रेम देखा है कि वह गरीब मुझे अच्छा लगता है।। १ ।। रहाउ।। हाथी आदि को देखकर तू भ्रमों में भूला है और तूने भगवान के ऐश्वर्य को नहीं समझा। तुम्हारा दूध और विदुर के पानी को एक समान मानकर मैंने उस पानी को ही अमृत माना है।। १ ।। उसका साग मुझे तुम्हारे दूध की तरह लगा और परमात्मा के गुण गाते हुए ही हमारी रात व्यतीत हो गई। कबीर का स्वामी तो अनेकों आनन्द और विनोदपूर्ण कौतुक करने वाला है और उसने कभी भी किसी की जाति के ऊँच नीच को नहीं माना है।। २ ।। ६ ।। श्लोक कबीर।। जब गगन में नगाड़ा बज उठा तो प्रेम के चिन्ह हृदय में घाव बन गए हैं अर्थात हृदय तिलमिला उठा है। धरती रूपी अखाड़ा शूरवीरों ने तैयार कर लिया है और अब तो यहाँ पर जूझने का अवसर है।। १ ।। यहाँ शूरवीर तो उसे पहचाना जाएगा जो दीनों और अनाथों के लिये लड़ाई करता है। ऐसा करते हुए बेशक वह टुकड़े-टुकड़े होकर कट मरे परन्तु वह इस युद्ध-क्षेत्र से कभी वह भागता नहीं।। २ ।। २।।

कबीर का शब्द

रागु मारू वाणी नामदेव जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

जब हम पति प्रभु की शरण में आ गये तो चारों प्रकार की मुक्तियां (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) और चारों प्रकार की सिद्धियाँ इकट्ठी होकर हमें मिल गई हैं। जब मैं मुक्त हो गया तो मैं चारों युगों में जाना जाता हूँ और प्रभु ने अपनी कीर्ति का छत्र मेरे माथे पर झुला दिया है।। १ ।। उस प्रभु राम का जाप करके भला कौन-कौन पार नहीं उतर सका है। गुरु का उपदेश लेकर और साधु पुरुषों की संगति में जो रहता है उसका नाम ही भगत-भगत कहा जाता है।। १ ।। रहाउ।। शंख, चक्र, माला और तिलक शोभयमान लगते हैं और इनके प्रताप को देखकर यम भी डर जाता है। उस प्रभु का बल जब अन्दर अन्तर्मन में गरजता है तो व्यक्ति निर्भय हो जाता है तथा उसका जन्म-मरण का संताप दूर हो जाता है।। २ ।। अंबरीष को भी प्रभु ने अभय पद प्रदान किया और विभीषण को लंका का राज दिया गया जो उसने बहुत अधिक समय तक किया। उस प्रभु ने सुदामा को नवनिधियाँ प्रदान कर दी और ध्रुव को ऐसा अटल कर दिया कि वह आज तक अस्थिर नहीं हो सका।। ३ ।। अपने भक्त का हित करने के लिये नरसिंह रूप धारण करके प्रभु ने हिरण्यकश्यप को मार डाला। नामदेव कहता है कि वह केशव प्रभु भक्ति के वश में होकर राजा बलि के द्वार पर द्वारपाल बन कर खड़ा है।। ४ ।। १ ।। मारू कबीर जी।। हे पागल मनुष्य, तूने अपने धर्म (कर्तव्य) को भुला दिया है। पेट भर कर तू पशु की तरह सोता है और यह मनुष्य जन्म तूने गँवा दिया है।। १ ।। रहाउ।। साधसंगति तूने कभी की नहीं और तू झूठ के धन्धों में ही लीन बना रहा है। कुत्ता, सूअर और कौए की तरह तू बना हुआ है तथा भटकता हुआ इस संसार से उठकर चला जाता है।। १ ।। अपने को तो बहुत बड़ा मानता है और दूसरों को तू लघु मात्राओं की तरह छोटे से समझता है। मन, वचन और कर्म से ऐसा मानने वालों को मैंने नरक में जाते हुए देखा है।। २ ।। कामी, क्रोधी, चतुर, छल करने वाले बाजीगर और बेकार लोगों ने दूसरों की निन्दा करते हुए ही जीवन व्यतीत कर दिया है तथा कभी भी राम का सुमिरन नहीं किया।। ३ ।। कबीर कहता है इस मूर्ख और गँवार को कभी भी होश नहीं आती; इसने राम नाम को जाना ही नहीं है तो भला यह कैसे पार उतर जाएगा।। ४ ।। १ ।।

राग़ु मारू बाणी जैदेउ जीउ की ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥ अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥ १ ॥ मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ तेरी दुबिधा द्रिसटि संमानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि संमानि आइआ ॥ बदति जैदेउ जैदेव कउ रंमिआ ब्रहमु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥ २ ॥ १ ॥ कबीरु ॥ मारू ॥ रामु सिमरु पछुताहिगा मन ॥ पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भरम भुलाहिगा ॥ धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिगा ॥ १ ॥ जउ जमु आइ केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिगा ॥ सिमरनु भजनु दइआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा ॥ २ ॥ धरम राइ जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिगा ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जांहिगा ॥ ३ ॥ १ ॥

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै ॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥ १ ॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥ २ ॥ १ ॥ मारू ॥ सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥ १ ॥ हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ अवर सभ छाडि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥ ३ ॥ २ ॥ १५ ॥

रागु मारू वाणी जयदेव जी की १ ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

(प्रभु के गुणानुवाद की कृपा से) बाएं स्वर में अर्थात चन्द्रनाड़ी में प्राण चढ़ गए हैं, उन्हें सुषुम्ना में रोके भी रखा गया है और दांयी नाड़ी के रास्ते सोलह बार 'ओ' का जाप करते हुए उन्हें उतार भी दिया गया अर्थात सारा प्राणायाम प्रभु के गुणानुवाद में ही है। इस आध्यात्मिक प्राणायाम के कारण कमजोर हो चुके मन के दुविधा भाव का बल टूट गया है और ना रुकने वाले मन का चंचल स्वभाव अब समाप्त हो गया है। यह भोला मन अब सुन्दर रचना वाला हो गया है और इस अवस्था में पहुँचकर इसने नाम रूपी अमृत का पान कर लिया है।। १ ।। हे मन, जगत के मूल प्रभु का गुणानुवाद करते हुए तेरा दुविधा ग्रस्त स्वभाव अब दुविधा रहित हो गया अर्थात तेरी दुविधाएँ खत्म हो गई हैं।। १ ।। रहाउ।। जयदेव कहता है कि यदि आराधाना के योग्य प्रभु की आराधना करें, यदि श्रद्धा के योग्य प्रभु में विश्वास बनाए रखें तो उसके साथ वैसे ही एकरूप हो जाया जाता है जैसे जल-जल में मिलकर एक रूप हो जाता है। हे जयदेव, प्रभु का सुमिरन करने से वासनाओं से रहित और बेपरवाह प्रभु मिल जाता है।। २ ।। १ ।। कबीर।। मारू।। हे मन, तू प्रभु का सुमिरन कर नहीं तो तू पछताता रहेगा। यह पापी जीव जो लोभ ही करता रहता है वह आजकल में ही यहाँ से उठ जाएगा।। १ ।। रहाउ।। लालच में लगकर तूने पूरे जीवन को गँवा दिया है और माया के भ्रमों में तू भूला रहा है। तू धन और यौवन का अभिमान ना कर क्योंकि तू समूचा ही कागज की तरह गल जाएगा।। १ ।। जब यम आकर केशों से पकड़कर तुझे पटकेगा तो उस दिन तेरा कुछ भी वश नहीं चलेगा। तूने सुमिरन, भजन और दया तो की नहीं हैं इसलिये तू मुँह पर चोटें खाता रहेगा।। २ ।। जब धर्मराज तुझसे लेखा माँगेगा तो तू कौन सा मुँह लेकर उसके सामने जाएगा। कबीर कहता है कि हे सन्तजनों, तुम इस बात को सुन लो कि जीव साधसंगति में ही पार उतर सकेगा।। ३ ।। १ ।।

रागु मारू वाणी रविदास जी की १ ओअंकार सतिगुरु प्रसादि।।

हे प्रभु, तुझ बिन ऐसी कृपा कौन कर सकता है। धरती का स्वामी तू गरीबों को सम्मान देने वाला है और उन्हें सम्मान देकर उनके माथे पर छत्र धारण कराने वाला है।। १ ।। रहाउ।। जिस व्यक्ति की छूत सारे जगत को लगती है अर्थात जिसे सभी अछूत समझते हैं तू उस पर ही कृपालु होता है। धरती का स्वामी मेरा गोविन्द प्रभु नीचों को ऊँचा कर देता है और ऐसा करते हुए किसी से डरता नहीं।। १ ।। नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना, सैन आदि सभी पार उतर गए हैं। रविदास कहता है कि सन्तजनों ध्यान से सुन लो कि वह प्रभु सब कुछ ही कर सकता है।। २ ।। १ ।। मारू।। सुखों का सागर पारिजात वृक्ष, चिन्तामणि और कामधेनु जिसके वश में हैं ; चारों पुरुषार्थ, आठों महासिद्धियाँ और नौ निधियाँ भी उसी के हाथ में हैं।। १ ।। हे मेरी जीभ, तू ऐसे प्रभु का जाप क्यों नहीं करती। तू अन्य सभी बातों और रचनाओं को छोड़ दे तथा उस प्रभु का ही जाप कर।। १ ।। रहाउ।। अनेकों कथाओं, पुराणों, वेदों, विधियों और सभी अक्षरों को विचार कर व्यास ने भी यही परमार्थ बताया है कि उपर्युक्त ये सभी चीजें प्रभु-नाम के बराबर नहीं हैं।। २ ।। स्वभाविक रूप से ही समाधि में लीन होकर हम दुखों से रहित हो गए हैं और बड़े भाग्य से हमारी लौ उस प्रभु में लग गई है। रविदास कहता है कि अलेप बनी रहने वाली बुद्धि प्राप्त करके इस दास का जन्म-मरण का भय भाग खड़ा हुआ है।। ३ ।। २ ।। १५ ।।